हिन्दी

विश्वकोष

बंगला विश्वकोषके सम्पादक

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव,

सिद्धान्त-वारिधि, शब्दरत्नाकर, एम, आर, ए, एस,

तथा हिन्दीके विद्वानों द्वारा सङ्कलित।

षष्ठ भाग

[खाड़िकि—घमनाद]

THE ENCYCLOPÆDIA INDICA

VOL. VI.

द्वापरके अन्तमें अग्निने ब्राह्मणके वेशमें अर्जुनके पास जा कर खाण्डव वन जला देनेके लिये प्रस्ताव किया। अग्निकी प्रार्थनासे मध्यम पाण्डवने उसमें सम्मति दी और श्रीकृष्णके सहारेसे खाण्डव वन जलाना प्रारम्भ किया। देवराजने दूतसे खाण्डवदाहकी बात सुन अर्जुनसे लड़ाई ठान दी। युद्धमें सेनाओंके साथ देवताओंको पराजय स्वीकार करना पड़ा। अर्जुनने विना किसी बाधासे खाण्डव दहन करके अपनी अक्षय कीर्ति स्थापन की। (कालिकापुराण ९० अ०)

बहुत पुराने समयसे भारतवासी खाण्डव-वनको जानते हैं। यजुर्वेदके तैत्तिरीय आरण्यक (५।१।१) और पञ्चविंशब्राह्मणमें (२५।३) उसका उल्लेख लगा है। पाण्डवोंने धृतराष्ट्रसे पांच गांवोंमें यही खाण्डव-प्रस्थ मिला था, अन्तको उन्होंने यहीं इन्द्रप्रस्थ स्थापन किया। (भारत, आदिपर्व) इन्द्रप्रस्थ देखो।

खाण्डवक (सं० त्रि०) खण्ड, चातुरर्थिक वुञ्। खण्ड-सम्बन्धीय।

खाण्डवप्रस्थ (सं० पु०) इन्द्रप्रस्थ, मौजूदा दिल्लीका एक किनारा। (भारत १।६१ अ०)

खाण्डवायन (सं० पु०) खाण्डवं तन्नामकं वनं अयनं [illegible] यस्य, बहुव्री०। खाण्डववनमें रहनेवाले ऋषि। (भारत १।११७ अ०)

खाण्डविक (सं० पु०) खाण्डवं मोदकादिशिल्पमस्य खाण्डव-ठञ्। लड्डू बनानेवाला, हलवाई। (भारत, आश्र० १ अ०)

खाण्डवी (सं० स्त्री०) एक पुरी। इसे चन्द्रवंशीय सुदर्शनराजने हिमालयके निकट बसाया था। खाण्डव देखो।

[illegible]वीरणक (सं० त्रि०) खण्डवीरणेन निर्वृत्तम्, [illegible] खाण्डवीरणनिवृत्त।

[illegible]क (सं० पु०) खण्डं मोदकादिकं शिल्पमस्य, १ हलवाई, कंदोई, मिठाई बनानेवाला। (क्ली०) [illegible]नां समूहः, खण्डिक-अञ्। खण्डिकादिभ्यश्च। पा [illegible] २ खण्डिक समूह।

[illegible] (सं० पु०) खाण्डिकेन प्रोक्तमधीयते, [illegible] पा। तित्तिरिवरतन्तु खण्डिकोखाञ्छण्। पा ४।३।१०२। [illegible] पढ़नेवाले।

खाण्डिक्य (सं० पु०) [illegible] कोई राजा। इन-के बापका नाम मितध्वज [illegible] था। खाण्डिक्य बड़े कर्म-तत्त्वज्ञ थे। (क्ली०) खण्डिकस्य भावः कर्म वा, खण्डिक-ष्यञ्। पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्। पा ५।१।१२८। २ खण्डिकका भाव, खण्डिकता, गुरुता, भारी [illegible]। ३ खण्डिकका कर्म।

खाण्डिति (सं० त्रि०) खण्डित-इञ्। खण्डितका सन्नि-हित (देशादि)।

खाण्डित्य (सं० त्रि०) [illegible] इत चातुरर्थिक-ण्य। खाण्डिति देखो।

खात् (सं० अव्य०) [illegible] इद, समझमें न आनेवाली आवाज।

खात (सं० क्ली०) खन [illegible]। १ खनन, खोदाई। कर्मणि क्त। २ पुष्करिणी, तालाब। ३ कूप, कूआं। ४ गर्त, गड्ढा। (त्रि०) खोदा हुआ।

खात (हिं० स्त्री०) १ मनुष्य का ढेर। यह खराब बनाने-के लिये रखा जाता है। २ मनुवा रखनेको जगह। ३ खाद, पांस। (त्रि०) ४ अपरिष्कृत, मैला।

खातक (सं० क्ली०) खात संज्ञायां कन्। १ परिखा, खाईं। (पु०) २ अधमर्ण, ऋणी, आसामी, रुपया उधार लेनेवाला। ३ [illegible] सेना विदारण करने-वाला, जो दुश्मनकी फौज [illegible] टिकने दे।

खातभू (सं० स्त्री०) खात [illegible] भूः। १ परिखा, खाईं। २ प्रतिकूप, कूएंका गड्ढा।

खातमा (फा० पु०) १ अन्त, छोर। २ मृत्यु, मौत। ३ सिरा।

खातव्यवहार (सं० पु०) खात [illegible] पुष्करिण्यादेः व्यवहारः दैर्घ्य विस्तारवेधादिभिरियत्ता निर्णयः ६-तत्। गणित-विशेष, एक हिसाब। इससे तालाब आदिका क्षेत्रफल निकलता है। लीलावतीमें खातव्यवहारकी प्रणाली इस प्रकारसे लिखी है—

जिस गणितसे खातका परिमाण ठहराया जाता, खातव्यवहार कहलाता है। किसी तरह तालाब भी चौकोना, तिकोना और गोल कई प्रकारका होता है। परन्तु लीला[illegible]आकार सुनीश्वरने इसे विशेष करके २ [illegible] है—विषम और सम। खातका ऊपरी [illegible] और नीचेका हिस्सा तल (पेंदा) कह[illegible] तह के दूरकी लम्बाई

चौड़ाई पेंदेकी लम्बाई चौड़ाईसे मिलती, इसको समता सम वा समवार कहलाती है। फिर जिसका मुख तलके बराबर लम्बा चौड़ा नहीं रहता, उसको सब कोई विषमखात कहता है। खातके गाम्भीर्यको वेध कहते हैं। जिस गड्ढेकी सब जगहकी लम्बाई, चौड़ाई और गहराई बराबर नहीं आती, उसकी सममिति निकाल कर प्रक्रिया की जाती है। लीलावतीमें सममिति करनेका उपाय इस प्रकारसे लिखा है—

गड्ढेमें जो कई एक जगहें छोटी बड़ी लगें, उनको सूतसे नापके अलग अलग रखना चाहिये। फिर सबको मिलाकर स्थानसंख्या अर्थात् नापी जानेवाली जगहोंके जोड़से भाग लगाते हैं। इसमें जो लब्ध आता, गड्ढेकी लम्बाईकी सममिति माना जाता है। इसी प्रकारसे चौड़ाई और गहराईकी असमानता होने पर उनकी भी सममिति बनानी पड़ती है।

उदाहरण—जिस गड्ढेकी लम्बाई तीन जगहोंमें १२, ११ और १० हाथ, चौड़ाई ३ स्थानों ७, ६ और ५ हाथ और वेध ३ मुकामों पर ४, ३ तथा २ हाथ हैं; उसकी सममिति बनाइये।
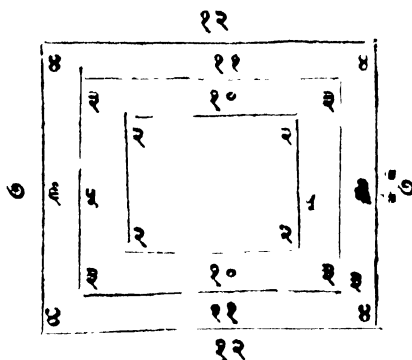
प्रक्रिया—तीनों जगहोंकी लम्बाई १२, ११ और १० का जोड़ ३३ है। इसको स्थानसंख्या ३से भाग करने पर ११ फल आता है। इसलिये इस खातके दैर्घ्यकी सममिति ११ हुई। इसी प्रकार स्थानत्रयके विस्तार ७, ६ और ५का योगफल १८ है। इसको स्थान संख्या ३से बांटने पर ६ लब्ध होता। सुतरां गड्ढेके विस्तारकी सममिति ६ निकली। फिर तीनों स्थानोंके वेध ४, ३ और २का योगफल ९ होता है। इसको ३ से भाग देने पर ३ ही लब्ध आवेगा। इसलिये गहराईकी सममिति ३ ठहरती है। सममिति करनेसे इस खातका आकार नीचे लिखा-जैसा होगा—
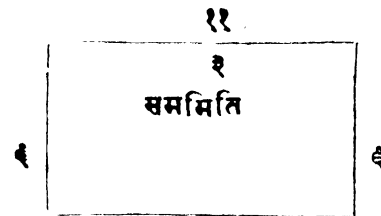
खातफल निर्णय करनेका उपाय—खातके क्षेत्रफलका वेधसे गुण करने पर जो फल आता, खातका घनफल कहलाता है।

उदाहरण—दिखलाये हुए खातका फल स्थिर करो।

प्रक्रिया—प्रदर्शित खातकी सममिति करने पर आयतक्षेत्रके नियमानुसार क्षेत्रफल ६६ ठहरता है। इसके वेधकी सममिति ३से गुण करने पर १९८ निकलेगा। इसलिये खातका फल १९८ घनहस्त है।

घनफल देखो।

विषमखातके फलनिर्णय करनेका नियम—मुखक्षेत्रफल, तलक्षेत्रफल और युतिज क्षेत्रफल (मुंहकी लम्बाई और पेंदेकी लम्बाईके जोड़की लम्बाई और मुंहकी चौड़ाई तथा पेंदकी चौड़ाईके जोड़का चौड़ाई मान करके हिसाब लगानेसे जो फल आता, युतिज क्षेत्रफल कहलाता है।) तीनों क्षेत्रफलोंको जोड़नेसे जो आवेगा, ६से वह बांट दिया जावेगा। इससे जो लब्ध निकलता, समक्षेत्रफल ठहरता है। फिर समक्षेत्रफलको वेधसे गुण करने पर मिलनेवाला फल ही खातका घनफल होता है।

उदाहरण—जिस विषम खातके मुखका विस्तार १०, तथा दैर्घ्य १२ और तलका विस्तार ५, दैर्घ्य ६ और वेध ७ है—उसका घनफल ठीक करो।

प्रक्रिया—मुखका क्षेत्रफल १२०, तलका क्षेत्रफल ३०; मुखका दैर्घ्य १२ और तलका दैर्घ्य ६ तथा दोनोंका योगफल १८; मुखका विस्तार १० और तलका विस्तार ५ तथा दोनोंका योगफल १५ है। इन्हीं दोनों योगफलोंको यथाक्रम दैर्घ्य और विस्तार कल्पना करने-

से युतिज क्षेत्रफल २७० निकलता है। इनका योग-फल (१२ + ३० + २७० = ४२०) ४२० है । इसको ६से बांटनेसे समक्षेत्रफल ७० आवेगा । इसको वेध ७से पूरण करने पर ४९० फल मिला । इसलिये खातका परिमाण ४९० घनहस्त होगा । बावड़ी, तालाव आदिका परिमाण प्रायश: इसीप्रकार निकालते हैं। क्योंकि उसका मुख और तल बराबर नहीं रहता ।
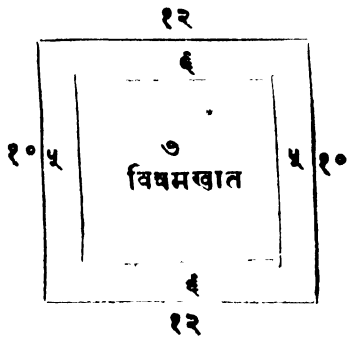
समभुज समखातका उदाहरण—जो गड्ढा १२ हाथ लम्बा, १२ हाथ चौड़ा और ८ हाथ गहरा है—उसका घनफल क्या आवेगा?
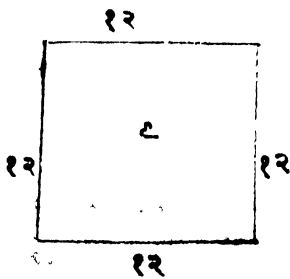
प्रक्रिया—क्षेत्रफल १४४को वेध ८ द्वारा गुण करनेसे फल ११५२ घनहस्त होगा ।

वृत्तखातका उदाहरण—जिस गोल गड्ढेका व्यास १० और वेध ५ हाथ है, उसका फल स्थिर करो ।

प्रक्रिया—वृत्तक्षेत्रके नियमानुसार प्रक्रिया करने पर सूक्ष्म परिधि $\frac{३९२७}{१२५}$ और सूक्ष्म क्षेत्रफल $\frac{३९२७}{५०}$ आता है। इसको वेध ५से गुण करने पर क्षेत्रफल $\frac{३९२७}{१०}$ होता है। जो गड्ढा अपने मुंहसे धीरे धीरे घटकर एकबारगी ही गुम हो जाता, सूचीखात कहलाता है। इस गड्ढेको समखात माननेसे आनेवाले फलका $\frac{१}{३}$ अंश ही सूचीखातका फल समझना चाहिये ।

उदाहरण—११ हाथ लम्बे, १२ हाथ चौड़े और ९ हाथ गहरे सूचीखातका फल कितना होगा ?

प्रक्रिया—इस समखातके फल १२९६को ३से भाग करने पर ४३२ फल मिलता है। इसलिये ४३२ ही उक्त सूचीखातका फल है।

जिस गोल तलावका व्यास १० और वेध ५ है, फल कितना निकलेगा ?

पहले दिखलाये हुए समवृत्त खातके क्षेत्रफल $\frac{३९२७}{१०}$ का ३से भाग करने पर $\frac{१३०९}{१०}$ उस गोलतलावका फल निकला । (लीलावती-खातव्यवहार)

खाता (हिं० पु०) १ बड़ी खत्ती, खाँ। २ हिसाब किताबकी बही। इसमें हरेक असामी या कारबारीका हिसाब रोज रोज ब्योरेवार लिखा जाता है । ३ विभाग, मद ।

खाति (सं० स्त्री०) खन भावे क्तिन् आत्व । खनन, खोदाई, खोदनेका काम ।

खातिक—दाक्षिणात्यकी एक जाति । बम्बई प्रदेशके विजयपुर शोलापुर अञ्चलमें यह लोग रहते हैं । कहीं कहीं खातिक सूर्यवंशी लाड़ भी कहलाते हैं। सम्भवतः यह गुजरातके सूर्यवंशियोंकी शाखा होंगे।

यह लोग मराठी भाषामें बातचीत करते हैं। और महाराष्ट्रसे आ कर इस अञ्चलमें बसे होंगे । इनमें सूर्यवंशी लाड़ और सुलतानी नामक श्रेणियां होती हैं। इन दोनों विभिन्न विभागोंमें खानापीना या शादी विवाह नहीं चलता।

खातिकोंमें शिङ्गणीकर, बुजरूकर, चंडुकाल, धर्मकवला, गोविन्दकर, प्रभुकर, राजपुरी प्रभृति उपाधि होती हैं। वरकन्या दोनोंका एक ही उपाधि रहनेसे विवाह नहीं करते।

परन्तु कोई कोई कर्णाटी या हिन्दी भी बोल सकता है। खातिक बकरी, भेंड़, भैंस आदि जन्तु पालते हैं। पत्थर और मट्टीसे घर बनाये जाते हैं। सबको साफ सुथरा रहना अच्छा लगता है। मैला कपड़ा कोई नहीं पहनता।

खेत जोतनेके लिये किसान खातिक बैल और घोड़े रखते हैं। रोटी, दाल, भात और तरकारी इनका प्रधान आहार है। सब लोग थोड़ा बहुत मांस मछली खा लेते हैं। इन्हें भेड़, हिरन, खरगोश, उल्लू, मुर्गी वगैरहका मांस खानेमें भी कोई आपत्ति नहीं। आश्विन मासकी 'काली नवमी' (महानवमी) तिथि इस जातिके महापर्वका दिन है। उस अवसर पर कितने ही लोग भवानीदेवीको पूजाके लिये भेड़ बलि चढ़ाते और बड़े समादरसे प्रसादी मांस खाते हैं। आश्विन मासके नवरात्रको अर्थात् महालयासे महानवमी पर्यन्त बड़ी धूमधाम रहती है। शिवरात्र और प्रति एकादशीको यह अपनी दूकानें बन्द रखते हैं। भाद्र मासकी गणेश-चतुर्थीको गणेशदेवकी प्रतिमूर्ति बना कर पूजी जाती है। दुर्गा, श्यामा, मारुती, सिधराय आदि इनको कुलदेवता हैं। हिन्दूशास्त्रोक्त पर्वके दिन यह भी उपवास आदि नियम पालन करते हैं। किसी देवताकी पूजा करनेसे पहले खातिक स्नान करके शुद्ध हो जाते और जल, चन्दन, पुष्प, नारिकेल, पूगफल, शर्करा, गुड़, छोहारा, कपूर और धूपदीप लेकर पूजा चढ़ाते हैं। ऊपर कहे हुए देवदेवियोंको छोड़ यह सूर्यनारायणकी भी उपासना करते हैं। इनमें प्रायः सभी मादकसेवी (नशाबाज) हैं। पूजा पार्वण आदिके समय हंसीखेलके लिये शराब, भांग, गांजा और अफीम न मिलनेसे मजा किरकिरा पड़ जाता है। पुरुष मस्तक पर चोटी रखते हैं। स्त्रियोंको लाल या काला कपड़ा और गहना पहनना अच्छा लगता है। सधवा स्त्रियां विवाहके पीछे बराबर 'मङ्गलसूत्र' पहने रहती हैं।

इनकी स्त्रियां प्रसवके पीछे १ पक्षसे १॥ मास तक सोवरसे नहीं निकलतीं। इस अवस्थामें प्रसूतिको गर्म रखनेके लिये चारपाईके नीचे पहले १५ दिन अंगीठीमें आग रखाते और गुड़, गिरी, सोंठ, पीपल, गोंद तथा छोहारा बुकनी करके मक्खनके साथ खिलाते हैं। घरकी बूढ़ी स्त्री ६ठें दिन षष्ठीमाताको पूज लेतीं और उसी रोज धात्रीको विदा कर देती हैं। बहुतोंके घरमें छठीको भाईबन्द और नातेदार रिश्तेदारोंका भोज होता है। १३वें दिनको पुत्रका नामकरण किया जाता है और पड़वाली स्त्रियां सूपमें पञ्चधान्य रखके लड़केकी गोद खिलाने पहुंचती हैं। ३ मास या ६ मासकी उम्रमें बच्चेका चूड़ाकरण होता है। विवाहका कोई समय बंधा नहीं है। १ मासकी बालिकासे लेकर १८ वर्षकी युवती तक व्याही जाती है। सब लोग बाल्यविवाहको अच्छा समझते हैं। कन्याको प्रथम ऋतुमती होने पर यह अशुचि नहीं मानते। पहले ५ दिनों अङ्गको धो कर कन्याके अच्छी तरह हलदी लगाते और ६ठें दिन नहलाते हैं। फिर शुभदिन देख कर उसे स्वामीका सहवास करनेको आज्ञा दी जाती है। इनका विवाहकी बातचीत ठहरानेमें पहले कन्याकर्ताका मतामत लेना पड़ता है। उनके कन्याका विवाह करने पर स्वीकृत होनेसे बरकर्ता कन्याकर्ताकी कुलदेवताके सामने २ नारियल, तीन पाव गिरी और ५ सेर चीनी भेंट करके उपस्थित स्वजातीयोंको सम्बोधन करके इस प्रकार वाक्यदान करते हैं—मेरे पुत्रके साथ इनकी कन्याका विवाह होगा। फिर उपस्थित ज्ञाति कुटुम्ब आदिको शक्कर और पान देकर विदा करना पड़ता है। शुभदिनको लग्न ठहराते हैं। इसी बीच बरकन्या दोनों एक दूसरेके घर आते जाते रहते हैं। बरकर्ताको ४ सेर शक्कर, ४ सेर गिरी, ३ पाव पोस्तदाना, ३ पाव सुपारी, २०० पान, कन्याके लिये ४ पञ्चियाएं चांदीकी बालियां और कमीज और पहननेके कपड़े देने पड़ते हैं। कहीं कहीं कन्याकर्ता अपनी लड़कीको गुरुदेवताके सामने बिठला उसकी गोदमें ५ सुपारी, ५ छोहरे, गिरीके ५ टुकड़े, ५ केले और ५ सेर चावल डालते और दामादको १ दुपट्टा और एक पगड़ी देते और आये हुए लोगोंको पान और शक्कर बांटते हैं। ज्योतिषी विवाहका शुभदिन ठहराता और कागजके

दो टुकड़ों पर वरकन्याका नाम लिख कर वरके नामका कागज वरकर्ता और कन्याके नामका कागज कन्याकर्ताको पकड़ाता है। यही दोनों कागज विवाहके समय तावीजमें रखके वर और कन्याके गलेमें बांध दिये जाते हैं। विवाहसे ४।५ दिन पहले एक चौकोर कुण्ड बनाके उसके चारों कोनों पर चारठो जलपात्र रखके सूतसे उसको चारों ओर लपेट देते हैं। वरके शरीरमें हलदी लगा उस कुण्डके पानीसे ही उसको नहलाया जाता है। इसी दिन वरकन्याके कन्यापक्षकी पूजा होती है। विवाहके दिन कुण्ड खोद कर वर तथा कन्याको नहलाते नये सफेद कपड़े पहनाते हैं। वर घोड़े पर चढ़के विवाह करने जाता है। वर मण्डपके नीचे पहुंच कन्याके सामने टोकरी पर और कन्या चक्की पर खड़ी होती है। हलदी लगाके स्नान करनेका कुण्ड जिस सूतसे लपेटते, उसीको कन्याके बायें और वरके दाहने हाथमें बांध देते हैं। विवाहके समय वर और कन्याके बीचमें कपड़ेका एक परदा लगा दिया जाता है। पुरोहित पूजा पाठ शेष करके आये हुए लोगोंके साथ नवदम्पतीको धान्य छोड़के आशीर्वाद देते हैं। दूसरे दिन सन्ध्याको वरकन्या दोनों बैल पर चढ़के निकलते हैं। चलते समय राहमें ग्रामदेवताको प्रणाम करना पड़ता है। वरके घर पहुंचने पर कन्याकी माता अपनी लड़कीको ले कर समधिन (वरकी माता) को सौंप जाती है। विवाहके पीछे तीसरे दिन कन्याके पिता जातिभोज करते और वरके पितामाताको कपड़े और दिखावके लिये एक रुपया देते हैं। ५वें दिन वरकर्ताको भी इसी प्रकारसे जातिभोज और मर्यादासे दूना रुपया देना पड़ता है।

इनमें बहुविवाहकी चाल तो है, किन्तु विधवा-विवाह नहीं होता। मराठोंके बीचमें रहनेवाले सभी खातिक शवदाह करते, परन्तु बिजयपुरके लोग मृतदेह गाड़ देते हैं। मुर्देको कब्र दे करके शववाहक दूबको हाथमें ले घरको लौट आते और मृत व्यक्तिके प्राणवायु निकलनेकी जगह उसको छोड़ जाते हैं। तीसरे दिन मृतव्यक्तिके आत्मीय कब्रके ऊपरी पत्थर पर आतपतण्डुल, चना, छोहारा, गिरी, गुड़, भात और रोटी लाकर रखते हैं। फिर लाशके साथ जानेवाला हरेक शख्स उस पर थोड़ा थोड़ा दूध छोड़ता है। यदि कौवा आकर इन चीजोंको नहीं खाता, इन्हें उठा कर गायको खिलाया जाता है और लाश ले जानेवाले कंधे पर घी और दही मला करके शुद्ध होते हैं। इनमें ११ दिन पीछे मुर्देकी रौप्य प्रतिमूर्ति बनानेकी चाल है। मूर्ति बन जाने पर कपड़ोंसे सजाके पूज्यपाद पूर्वपुरुषोंकी प्रतिमूर्तियोंके साथ पूजाके घरमें उठाकर रख दी जाती है। वैशाख मासकी अक्षयतृतीयाको नदीके तीर पर कम्बल बिछा और उस पर इन सभी प्रतिमूर्तियोंको रख कर धूम धड़ाकेसे श्राद्ध, पूजा और तर्पण आदि करते हैं। इस पितृकार्यमें जो जो व्यक्ति उपस्थित रहता, उसको निमन्त्रण करके खिलाना पड़ता है।

खातिर (अ० स्त्री०) १ समादर, सम्मान, इज्जत, मनुहार। (अव्य०) २ अर्थ, निमित्त, कारण, वास्ते, लिये।

खातिरख्वाह (फा० अव्य०—क्रि० वि०) इच्छानुरूप, मर्जीके मुवाफिक।

खातिरजमा (अ० स्त्री०) विश्वास, सन्तोष, तसल्ली भरोसा।

खातिरदार (फा० वि०) खातिर करनेवाला, जो खातिर करता हो।

खातिरदारी (फा० स्त्री०) मनुहार, आवभगत, खातिर करनेका काम।

खातिरी, खातिर देखो।

खातिरी (हिं० स्त्री०) नदी किनारेकी एक फसल। यह [illegible] ओससे या सींच सींच कर तैयार की जाती है।

खाती (हिं० स्त्री०) १ खत्ती, गड्ढा, खोंं। २ क्षुद्र पुष्करिणी, तलैया। ३ भूमिको खनन करनेवाली कोई जाति। ४ बढ़ई। (वि०) ५ खानेमें लगी हुई, जो खा रही हो।

खाती—एक हिन्दू जाति। यह लोग लकड़ीकी चीजें बनाते हैं। युक्तप्रदेशमें इन्हें बढ़ई और दाक्षिणात्यमें सुतार कहा जाता है। खाती शब्द राजपूतानेमें व्यवहृत है। इनकी विशेषतर, मेवाड़ी, पूर्बिया, दिल्लीवाल, जांगड़ो और बढ़ई आदि श्रेणियां प्रधान हैं। फिर विशो-

तरे १२०, मेवाड़े ५६, पूर्विये ५५, दिल्लीवाल ५६, बढ़ ८५८ और जांगड़ १४४४ शाखाओंमें विभक्त हुए हैं।

खाती, खाता देखो।

खात (सं॰ क्ली॰) खन-क्त्र् किञ्च। उषिखनिभ्यां किञ्च। उण् ४।१६१। १ खनित्र, खन्ता। २ खात, गड्ढा। ३ वन, जङ्गल। ४ सूत्र, धागा। ५ जलाधारविशेष, पानी रखनेका कोई पात्र

खाद (सं॰ पु॰ खाद भावे घञ्। भक्षण, खवाई।

खाद (हिं॰ स्त्री॰) पांस, खेतोंमें डाला जानेवाला गोवर इत्यादि। चूना, खड़िया आदि चीजें भी खादका काम देती है। खाद डालनेसे खेतकी उपज बढ़ जाती है। खेतकी हरेक चोजके लिये अलग अलग खाद पड़ती है। शहरोंकी म्युनिसपालिटियां अपना कूड़ा कर्कट इकट्ठा कर खाद जैसा बरतती हैं।

खादक (सं॰ त्रि॰) खाद-ण्वुल्। १ भक्षक, खानेवाला (मनु ५।५१) २ ऋणग्रहीता, कर्ज लेनेवाला।

"खादको वित्तहीनः स्यात् लग्नको वित्तवान् यदि।
मूलमस्य भवेद्देयम्॥" (नारद)

यदि ऋण लेनेवाला निर्धन और देनेवाला धनवान् हो, तो उसे मूल ही देना पड़ता है।

खादतमोदता (सं॰ स्त्री॰) खादत मोदत इत्युच्यते यस्यां क्रियायां मयूरव्यंसकादित्वात् समासः। एक क्रिया, खाना उड़ाना। इसमें भोजन और हर्षप्रकाश करनेकी अनुमति रहती है।

खादतवमता (सं॰ स्त्री॰) खादत वमत इत्युच्यते यस्यां क्रियायां मयूरव्यंसकादिवत् समासः। एक क्रिया खाना उगलना। इसमें भोजन और वमनको अनुमति होती है।

खादन (सं॰ पु॰) खादत्यनेन, खाद करणे ल्युट्। १ दन्त, दांत। (क्ली॰) भावे ल्युट्। २ आहार, खवाई।

खादनकोष्ठक (सं॰ क्ली॰) अश्वका हिस्सोवत भोजनपात्र, घोड़ेको दाना, घास खिलानेका दो हाथ ऊंचा बर्तन।

खादनीय (सं॰ त्रि॰) खाद-अनीयर्। भोजनीय, खाया जानेवाला।

खादर (हिं॰ पु॰) १ तराई, कछार, नीचे जमीन। इसमें बरसातका पानी बहुत दिन ठहरता है। खादर प्रायः नदी, झील आदिके तीर पड़ता है। २ चरागाह, गोचरभूमि।

खादि (वै॰ त्रि॰) खाद कर्मणि इन्। १ भक्ष्य, खाया जानेवाला। (पु॰) २ अलङ्कारविशेष, कोई गहना। (ऋक् १।१६६।९) ३ त्राणकर्ता, त्राता, बचानेवाला। (ऋक् १।१६८।३)

खादि (हिं॰ स्त्री॰) दोष, बुराई।

खादित (सं॰ त्रि॰) खाद कर्मणि क्त। भक्षित, खाया हुआ।

खादितव्य (सं॰ त्रि॰) खाद-तव्य। खादनीय, भक्ष्य, खाने लायक।

खादिम (अ॰ पु॰) सेवक, खिदमत करनेवाला। दरगाह वगैरहका रखवाला भी खादिम कहलाता है।

खादिम हुसेन खां—नवाब सीराज-उद्-दौलाके समय पुरनियाके एक सूबेदार। इन्होंने मीरजाफरको विद्रोही होने पर पुरनियामें घुसने न दिया था। इसीसे मीरजाफरके नवाब होने पर उनके पुत्र मीरन फौजके साथ खादिमको आक्रमण करने चले, यह डर कर भाग खड़े हुए। किन्तु अचानक डेरेमें बिजली गिरनेसे मीरन मर मिटे।

खादिर (सं॰ त्रि॰) खदिरस्य विकारः, खदिर-अण्। १ खदिर-निर्मित, खैरका बना हुआ। २ कत्थई। (पु॰) खदिरस्य अवयवः। ३ खदिरसार, कत्था। ४ विट्खदिर, पापरी कत्था।

खादिरक (सं॰ त्रि॰) खदिर चातुरर्थिक वुञ्। खदिर निर्वृत्त, खैरसे पैदा होनेवाला।

खादिरसार (सं॰ पु॰) खदिर विकारे अण् ततः कर्मधा॰। खदिरकचनिर्यास, कत्था। इसका संस्कृत पर्याय—खादिर, अङ्गतसार, मत्सार, रङ्गद और रञ्जन है। कत्था कड़वा, तीता, उष्ण, रुचिकर, दीपन और कफ, वात, व्रण तथा कण्ठका रोग दूर करनेवाला है। (राजनिघण्ट)

खादिरायण (सं॰ पु॰) खदिरस्य गोत्रापत्यम्, खदिर-फञ्। खदिर नामक ऋषिके वंशमें जन्मग्रहण करनेवाले।

खादिरेय (सं॰ त्रि॰) खादिरी-ढक्। स्त्रियादिभ्यो ढक्। पा ४।१।१२०। खादिरीसे उत्पन्न।

खादिरसार (सं० त्रि०) खादिरसारविशेषः इसो यस्य, बहुव्रो० । कटक युक्त । (सुश्रु ५।५८२)

खादी (सं० त्रि०) खादति, खाद-णिनि । १ भक्षक, खानेवाला । (मनु ४।७१) २ शत्रुओंको हिंसा करनेवाला, जो दुश्मनको मारता हो । ३ कटकयुक्त ।

खादी (हिं० स्त्री०) गजी, एक प्रकारका मोटा देशी कपड़ा । आज कल खादीका सम्मान बहुत बढ़ गया है । लोग विलायती मलमल और तनजेब छोड़ इसे पहनने लगी हैं । (वि०) २ खादि निकालनेवाला, जो ऐब ढूंढता है । ३ दूषित, ऐबी, खराब ।

खादुक (सं० त्रि०) खाद-उन् संज्ञायां कन् । हिंसालु, खूंखार, मार-काट करना हो जिसकी आदतमें दाखिल हो ।

खादोअर्णस् (वै० स्त्री०) खाद कर्मणि असुन् खादः खाद्यं अर्णो जलं यस्य, बहुव्रो० । नदी, दरया । (ऋक् ४।४५।२)

खाद्य (सं० त्रि०) खाद कर्मणि ण्यत् । १ भक्षणीय, खाया जाने वाला । (स्त्री०) अष्टविध आहारोंमें अन्यतम आहार, खानेकी चीज ।

खाद्यपत्नी (सं० स्त्री०) खदिरवृक्ष, खैरका पेड़ ।

खाधु, खाधुक—खाद देखो ।

खान्, खां देखो ।

खान (सं० स्त्री०) खे धातुनां अनेकार्थत्वात् भक्षणे भावे ल्युट् । १ भोजन, खाना । २ खनन, खोदाई ३ हिंसन, मारकाट ।

खान (हिं० स्त्री०) १ आकर, कान, खदान । २ कोल्हूका घर । इसमें तेलहन वगैरह डाल कर पेरा जाता है ।

खान—बङ्गालके वर्धमान जिलेका एक गांव । यह अक्षा० २३ं २०´ उ० और देशा० ८७ं ४६´ पू०को अवस्थित है । आबादी कोई १६०० होगी । खान ईष्ट-इण्डियन रेलवेका बड़ा जङ्क्शन है । यहां कार्ड लाइन लूप लाइनसे शाखारूपमें फूट चली है ।

खानक (सं० त्रि०) खन-ण्वुल । खनक, खोदनेवाला । (मनु) २ मेमार, राज ।

खानकाह (अ० स्त्री०) मठ, मुसलमान फकीरोंके रहनेकी जगह ।

खानखाना—हिन्दीके एक मुसलमान कवि । यह बेराम खानके बेटे थे । १५५६ ई०को इनका जन्म हुआ । यह केवल अरबी, फारसी, तुर्की आदि भाषाओंके ही विद्वान् न थे, परन्तु संस्कृत और व्रजभाषा भी पढ़े थे । अकबर बादशाह इन्हें बहुत चाहते थे । शिवसिंहने लिखा है कि यह श्लोक भी बनाते थे । उनके कवित्त और दोहे प्रशंसा योग्य हैं । नीतिके उन्होंने सबसे अच्छे दोहे कहे हैं । उनकी सभामें मिथिलाके लक्ष्मीनारायण कवि उपस्थित रहते थे । इनका नाम अब्दुल रहीम खानखाना नवाब था ।

खानखानान् (फा० पु०) १ सरदारोंका सरदार, उच्चपदाधिकारी । २ उपाधिविशेष, एक उपाधि । यह मुसलमान सरदारोंको मुगलोंकी अमलदारीमें मिलता था ।

खानगाह डोगरां—१ पञ्जाब प्रान्तके गुजरानवाला जिलेकी एक तहसील । यह अक्षा० ३१° ३१´ तथा ३१° ५८´ उ० और देशा० ७३° १४´ एवं ७४° ५´ पू०के बीच पड़ती है । क्षेत्रफल ८७३ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः २३७८४३ है । इस तहसीलकी जमीन अच्छी और चिनावकी नहरसे सिंचती है ।

२ पञ्जाब प्रान्तीय गुजरानवाला जिलेकी खानगाह तहसीलका सदर । यह अक्षा० ३१° ४८´ उ० और देशा० ७३° ४१´ पू०में पड़ता है । यहां प्रति वर्ष जून मासको मुसलमानोंके मकबरेका मेला लगता है । लोकसंख्या प्रायः ५३४८ है । इसमें कपास ओटनेका एक कारखाना भी है ।

खानगी (फा० वि०) १ अपना, घरू, दूसरेसे सरोकार न रखनेवाला । (स्त्री०) २ छोटी रण्डी ।

खानजादा (फा० पु०) १ धनवान्का पुत्र, अमीरका लड़का । २ उच्च कुलका व्यक्ति ।

खानदान (फा० पु०) वंश, घराना ।

खानदानी (फा० वि०) १ कुलीन, अच्छे घरानेवाला । २ पैतृक, पुश्तैनी, मौरूसी ।

खानदेश—बम्बई प्रान्तके मध्यस्थ विभागका एक जिला । यह अक्षा० २०° १६´ तथा २२° २´ उ० और देशा० ७३° ४५´ एवं ७६° २४´ पू०के बीच पड़ता है । इसका क्षेत्र-

फल १०४१ वर्गमील है। खानदेशके उत्तर सतपुरा पहाड़ और नर्मदा नदी, पूर्वको बरार और मध्यप्रदेशका नीमार जिला, दक्षिणको सातमाला, चांदोर या अजन्ठा पहाड़, दक्षिण-पश्चिम नासिक जिला और पश्चिमको बड़ोदा राज्य तथा रेवाकांठा एजेन्सीकी छोटी रियासत सागबारा है। ताप्ती नदी इस जिलाके उत्तर-पूर्व कोणमें आके पश्चिमकी ओरको बहती और इसके दो छोटे बड़े टुकड़े करती है। इनमें बड़ा टुकड़ा दक्षिणका पड़ता जो गिरना, बोरी और पांझर नदियोंके पानीसे सिंचता है। यहां खानदेशका १५० मील लम्बा मैदान है। यह नीमारके किनारेसे नन्दुरबार तक चला गया और उपजाऊ भूमिसे भरा है। इस प्रान्तमें बड़े बड़े शहर और गांव बसे जिनमें ग्रामके चारों ओर बागबगीचे लगे हैं। ग्रीष्मऋतुको छोड़ कर सभी समयमें खेत विभिन्न फसलोंसे लहराया करते हैं। उत्तरको सातपुरा पहाड़की तर्फ जमीन् ऊंची हो गयी है। बीचमें और पूर्व दिक्‌की भूमि प्रायः समान है। उत्तर और पश्चिममें घना जङ्गल है। उसमें भील लोग रहते, जो जङ्गली कन्दमूल फल खाकर जीवन निर्वाह और लकड़ी काट कर धनोपार्जन करते हैं। ताप्ती खानदेशमें घूम घूम १८० मील तक बही और १३ सहायक नदियोंकी धारा उसमें मिली है। परन्तु किसी नदीमें जहाजया नाव नहीं चल सकती और ताप्ती इतनी गहरी बहती है कि खेत सिंचनेको पानी लेनेमें बड़ी अड़चन पड़ती है। भुसावलमें रेलवेपुलके नीचे ऊपर दो झरने हैं। वर्षा ऋतुमें ताप्तीको संभा नहीं सकते, भुसावलके रेलवे पुलसे चलते फिरते हैं। इस जिलेके उत्तर-पश्चिम कोणमें ४५ मील तक नर्मदा फैली है। समयानुकूल नर्मदाकी राहसे लकड़ी समुद्र किनारे पहुंचायी जाती है। इस जिलेके नालोंमें भी बारहो महीने पानी भरा रहता है। चार बड़े पहाड़ोंके नाम—सातपुरा हत्ती, सातमाल, चांदोर या अजन्ठा और पश्चिमघाट। सर्गालना पर्वत खानदेशको नासिकसे अलग करता है। खानदेशका जङ्गल बहुत अच्छा है। इसमें कई प्रकारकी कीमती लकड़ी होती है।

वन्य पशु भी बहुत हैं। किन्तु शिकारकी भरमार होनेसे अब आगे उतने नहीं देख पड़ते। १७वें शताब्द तक इस जिलेके उत्तर पहाड़ी भूमिमें जङ्गली हाथी बच्चे देते रहे।

ऊंचाई भेदसे खानदेश जिलेका जलवायु विभिन्न पड़ता है। पश्चिमी पहाड़ों और जङ्गलोंमें और सतपुरामें पानी बहुत बरसता है, परन्तु बीचमें और दक्षिणको उसकी कमी रहती है। धुलिया नगरमें औसतको देखते २२ इञ्च वृष्टि होती है। लोगोंका स्वास्थ्य शीतकालको सबसे अच्छा और ग्रीष्मऋतुको बुरा रहता है। वर्षाके पीछे भूमि सूखनेसे मलेरिया बढ़ता है। पश्चिममें गर्मीको छोड़ कर दूसरे मौसम पर आबहवा बहुत बिगड़ जाती है।

खानदेशका पूर्वकालीन इतिहास ई०से १५० वर्ष पहलेसे १२९५ ई० तक लगा है। प्रथमोक्त समय बहुत पुराने शिलाफलकको पढ़के निकाला गया है। फिर १२९५ ई०को एकाएक मुसलमान बादशाह अला-उद्-दीन् दिल्लीसे खानदेश पहुंचे थे। महाभारतमें तुर्णमाल और असीरगढ़ नामक पार्वत्य दुर्गोंकी बात लिखी है। तुर्णमालके राजा पाण्डवोंसे लड़े थे। असीरगढ़ अश्वत्थामाका पुण्यपीठ जैसा माना जाता है। लोगोंमें प्रवाद है कि ई०से बहुत पहले यहां अवधसे गये राजपूत राज्य करते थे। आन्ध्रोंको उन्हीं राजपूतोंका वंशधर मानते हैं। थोड़े दिनके लिये पश्चिमके क्षत्रियोंने आन्ध्रोंको दबादिया था। ई० ५वें शताब्दको चालुक्यवंशने बल पकड़ा फिर स्थानीय राजाओंका राज्य चला। अला-उद्-दीनके खानदेश पहुंचते समय असीरगढ़के चौहान राजा राजत्व करते थे।

१७६० ई०को मराठोंके असीरगढ़ अधिकार करते समय यहां मुसलमानी अमलदारी रही। इसके बीचमें दिल्लीसे सूबेदार मुकर्रर होकर खानदेश शासन करते आते थे। मुहम्मद बीन तुगलकके अधीन १३२५से १३४६ तक बरारके एलिचपुरसे इसका शासनकार्य चला। १३७०से १६०० ई० तक फरूकी वंशके घरानेने इस प्रान्तका प्रबन्ध किया। वह नाममात्र गुजरातके सुलतानोंकी वश्यता मानते थे, वस्तुतः स्वाधीन रहे। १५९९ ई०को मुगल खानदेश पहुंचे थे। इसी

वर्षको अकबरने अपनी फौजके साथ खानदेश पर चढ़ाई की थी। उन्होंने असीरगढ़ अधिकार किया और शासनकर्ता राजा बहादुर खाँको गिरफ्तार करके ग्वालियरके कैदखानेमें भेज दिया। फिर खानदेश दिल्ली साम्राज्यमें मिलाया गया। १७वें शताब्दके मध्यभागको इसकी बड़ी बढ़ती हुई। १६७० ई०से मराठा आक्रमण आरम्भ हुए और सौ वर्षसे अधिक समय तक इसको भीतरी बाहरी सब प्रकारकी विपद् झेलनी पड़ी। शिवजीने दूसरी बार सूरतको तहस नहस करके चौथ मांगनेके लिये अपना एक अफसर खानदेश भेजा था। मराठोंने सालहेर किला जीत कर अपने कब्जे किया और खांड़ेराव दाभाड़ेने पश्चिमी पहाड़ोंमें अड्डा जमा दिया। फिर इस जिलेमें कई बार लूटमार हुई। शिवजी, शम्भुजी और औरङ्गजेबने बारी बारी इसको खूब लूटा खसोटा था। १७२० ई०को निजाम-उल्-मुल्कने खानदेश अपने राज्यमें मिलाया था। परन्तु १७६० ई०को मराठोंने उनके लड़केको यहांसे निकाल बाहर किया और पेशवाने इसका कुछ भाग होलकर और कुछ भाग संधियाको दे दिया।

१८०२ ई०को होलकरकी सेनाने इसका तहस नहस किया था। दो साल तक जमीनकी कोई परवा न की गयी और बरबादीके सबबसे कठोर दुर्भिक्षकी नौबत आ पड़ी। फिर दूसरे साल पेशवाकी बद इन्तजामीसे इनका दारिद्र और भी बढ़ गया। लोगोंने अपना अमनचैनका काम काज छोड़ दल बांधा और चारो ओर घूम घूम कर खूब लूटा मारा था। १८१८ ई०को इसी हालतमें यह जिला अंगरेजोंके हाथ आया। बहुत सालों तक बलवाई भील तङ्ग करते रहे। १८२५ ई०को आउटरामने भीलोंकी फौज खड़ी करके यह उपद्रव मिटाया था। १८५२ ई०को फिर सख्त बलवा उठ खड़ा हुआ और १८५७ ई०को भागोजी और काजरसिंह नायकके नेतृत्वमें भील लोग बिगड़ पड़े। किन्तु यह उपद्रव दबानेमें कोई बड़ी तकलीफ नहीं हुई।

खानदेशमें पत्थरके मन्दिर, कुण्ड और कूएं बहुत हैं। इनमें अधिकांश सम्भवतः १२वें या १३वें शताब्दके बने हैं। यह सब इमारतें पहाड़ोंको काट काट कर बनायी गयी हैं। कुछ स्थानोंके पत्थर इतने बड़े हैं, कि लोग देवताओंके हाथका बना समझते हैं। सिवा इसके खानदेशमें कुछ मुसलमानी इमारतें भी हैं, जिनमें सबसे बड़ी एरण्डोलकी मसजिद है। चालीसगांव तल्लुककी पीतलखोरा उपत्यकामें एक टूटा फूटा चैत्य और विहार है। यह बौद्धोंकी बहुत ही पुरानी इमारत है और सम्भवतः ईसासे २०० वर्ष पहले बनी होगी। दर्रेके नीचे पाटनका उजाड़ नगर है, जिसमें पुरानी कारीगरीके मन्दिर और शिलालिपियां वर्तमान हैं। फिर सामनेकी ओर पहाड़ पर दूसरी ओर पीछेकी बनी गुहाएं हैं। वाघलीके कृष्णमन्दिरमें दालानकी भीतरी दीवार पर तीन बढ़िया खुदा हुई तखतियां लगी हैं।

इस जिलेमें ३१ शहर और २६१४ गांव बसे हैं। लोकसंख्या १४२७३८२ होगी। प्रधान नगरोंके नाम हैं—धूलिया, भुसावल, धारनगांव, नसीराबाद, नन्दुरबार, चालीसगांव, भड़गांव, नासनेर, अदाबाद, चोपडा, जलगांव, पारोल, एरण्डोल, अमलनेर, फौजपुर, पाचोड़, नगरदेवर, भोड़वार। खानदेश जिलेके पश्चिमी भागकी आबादी बहुत हलकी है। परन्तु यावल और जलगांवकी बसती सबसे घनी लगती है। गुजराती खानदेशकी व्यापारिक भाषा है। किन्तु सरकारी दफतरों और स्कूलोंमें चलनेसे मराठी जबानका आदर बढ़ता जाता है। घरमें लोग खानदेशी या अहिराणी बोलते हैं, जो गुजराती, मराठी, नेमाड़ी और हिन्दुस्थानीकी खिचड़ी है।

कुनबी, भील, महार, मराठा, माली, कोली, ब्राह्मण, वाणी, राजपूत, धांगड़, बनजारा, तेली, सोनार, नाई, चमार, सुतार (बढ़ई), शिम्पी (दरजी) और मांग—खानदेशकी प्रधान जातियां हैं। कुनबी, पारधी, राजपूत और गूजरवानी खेती करते हैं। यहांके व्यापारी अधिकांश दूसरे प्रान्तोंसे आ आकर बसे हैं। आबादीमें आदिम अधिवासी और खानबदोश बहुत हैं। बहुतसे भील पुलिस कानष्टेबिलों और चौकीदारोंका काम करते हैं। निरधी शासनमात्राके नीचे रहनेवाले हैं।

पहले लोग उनसे बहुत डरते थे। बलवेके समय इन्होंने बड़े बड़े अत्याचार किये हैं। रेलवे और गाड़ियोंके चलनेसे बनजारोंकी बड़ी क्षति हुई है। खानदेशके अधिकांश मुसलमान शेख कहलाते हैं। सैकड़े पीछे ५०से ज्यादा आदमी खेती किसानी करते हैं।

भूमि विभिन्न प्रकारकी मिलती, कहीं उपजाऊ और कहीं जलकी पड़ती है। स्थानीय कृषक इसे चार भागोंमें बांटते हैं—काली पांढरी (सफेद), खारन और बुरकी (सफेद तथा मोनिया)।

खानदेशमें ज्वार और बाजरा बहुत बोया जाता है। ताप्ती उपत्यका और पश्चिम अञ्चलमें गेहूं भी खूब होता है। दालोंमें अरहर, चना, उड़द और मूंगकी खेती की जाती है। तेलहनमें तिल और अलसी प्रधान है। रुई हींगनघाट और धारवाड़के बीजसे उत्पन्न होती है। जहां सींचनेको पानी मिलता, जख थोड़ी बहुत लगा दी जाती है। मिर्च, सौंफ और धनिया खास मसाले हैं। फुलवाड़ियोंमें पानके भीट खूब लगाये जाते हैं।

खानदेश जिलेमें नीमार और बरारसे मंगाये गये अच्छे अच्छे गाय बैल देख पड़ते हैं। घोड़े छोटे और बेकाम होते हैं।

खेतोंकी सिंचाई गिरना और पांझर नदीके बांधों और झीलों और तालाबोंसे की जाती है। पश्चिम ऐसी कोई नदी नहीं है, जिसमें बांधके चिह्न न मिलें। इससे मालूम होता है कि पहले वहां कितने ही बांध थे। कई एक नहरें भी निकाली गयी हैं। जिलेके अधिकांश भागमें पानी ऊपर ही मिलता है। किन्तु सातपुरामें और ताप्तीसे ८।१० मीलके बीच १०० हाथ गहरे तक कूएं खोदने पड़ते हैं।

खानदेश कनाडाके पास बम्बई प्रान्तका सबसे बड़ा जङ्गली जिला है। कितना ही जङ्गल सरकारने लकड़ी और घासके लिये सुरक्षित रखा है। परन्तु यहां लकड़ीका खर्च पैदायशसे ज्यादा है। महुवा, साखू, बबूल और शीशम बहुत होता है।

यहां खनिज पदार्थ बहुत कम निकलते हैं। इमारती पत्थर हरेक जगह होता है। भुसावलके पास वाघर नदीगर्भमें सबसे बड़ी पत्थरकी खान है। काली मट्टीमें चूनेका कङ्कड़ निकलता है। रुईकी गांठे बांधने और कपास ओंटनेके कई कारखाने खानदेशमें चलते हैं। उनका मोटा कम्बल इस जिलेमें लगभग सब जगह बुना जाता है। १८७४ ई०को जलगांवमें रुई कातने और कपड़ा बुननेका एक कारखाना खुला था। भुसावलमें रेलवेका कारखाना है।

रफ्तनीकी सबसे बड़ी चीज रुई है। बम्बईके भाटिये स्थानीय व्यापारियों और किसानोंसे उसे खरीद गांठे बांध बांध सीधी विलायत भेज देते हैं। बाहर भेजी जानेवाली दूसरी चीजोंमें अनाज, तेलहन, मक्खन नील, मोम और शहद प्रधान है। बाहरसे नमक, मसाले, धातुओं, कपड़े, सूत और शक्करकी आमदनी होती है। जलगांव और भुसावलमें व्यापार बढ़ रहा है।

पहले खानदेशमें बड़ी सड़कें न थीं। पहले पहल बम्बई-आगरा-रोड बनाया गया, जो इस जिलेमें मालेगांव, धूलिया और शीरपुर होकर निकलता है। धूलियासे सूरत और म्हासवाड़की भी सड़क लगी है। यहां कुल ८५३ मील सड़क बनी; ३२५ मील पक्की है। ८५० मील तक उसकी दोनों तरफ पेड़ोंकी कतारें लगायी गयी हैं। इस जिलेके दक्षिणभागमें नान्दगांवसे भुसावल तक ११० मील ग्रेट इण्डियन-पेनिनसुला-रेलवे चलती है। भुसावलमें उसके बंट जानेसे एक शाखा जबलपुर और दूसरी नागपुरको जाती है। १९०० ई०को जलगांवसे अमलनेर और चालीसगांवसे सूरतमें रेलवे खुली थी। ताप्ती वेली-रेलवे सूरतसे अमलनेरको जाती है।

ताप्ती और छोटी छोटी नदियोंमें एकाएक भयानक बाढ़ आ सकती है। १९वें शताब्दको ६ बार बाढ़ आयी, जिससे इस जिलेने बड़ी हानि उठायी। १८२२ ई०को ताप्तीने ६५ गांव बहाये और पचास डुबाये थे। इससे ढाई लाख रुपयेका धक्का लगा। १८७२ ई०को पांझरमें बाढ़ आनेसे धूलियाके ५०० घर बह गये। नदीके सामनेका एक गांव गुम हुआ था। कुल १५२ गांवोंका नुकसान उठाना पड़ा और १६ लाखका माल असबाब बिगड़ गया।

दुर्गा देवी दुर्भिक्षको छोड़ कर जिसके कारण, कहते हैं, खान्देशकी आबादी बहुत घटी थी, १६२८ ई०को फिर अन्नकष्ट हुआ। १८०२-४ ई०को गेहूं रुपये सेर बिका था। कितने ही लोग मरे और बहुत खेत उजड़ गये। खानदेशकी यह दशा होलकरके हमलेसे हुई थी। १८९९ ई०को पानी न बरसनेसे ७९००० आदमी और ३८५००० मवेशी औसतसे ज्यादा काम आये।

खान्देश जिला १७ ताल्लुकोंमें बंटा है। मेहवास राज्यका प्रबन्ध भी इसी जिलेसे होता है। धूलियाके जिला और दौराजजके नीचे १० छोटे जज काम करते हैं। फौजदारी फैसलेके लिये ५० मजिष्ट्रेट हैं। अपराधोंमें चोरी, सेंध और डाका बहुत चलता है। किसान सीधो मालगुजारी सरकारको देते हैं। १८५२ ई०को इस जिलेका पैमायश होनेके समय बलवा खड़ा हुआ था, परन्तु मुखियोंके पकड़े जाने पर बन्द हो गया।

खान्देशमें २१ म्युनिसपालिटियां हैं—आमलनेर, पारोल, एरण्डोल, धरनगांव, भाडगांव, चोपड़ा, शीरपुर, सिन्धखेड, बेटवाड, सवाड, यावल, जलगांव, धूलिया, सोनगीर, तलोद, शाहाड, प्रकाश, नन्दुरवार, फ़ज़पुर और रावेर। इनकी औसत आमदनी ३ लाख रुपया है।

जिला पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टकी सहायता ३ असिष्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट, १ उम्मेदवारी करनेवाले असिष्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट और ४ इन्सपेक्टर करते हैं। कुल ३० थाने हैं। जिला जेल धूलियामें बना है।

बम्बई प्रान्तके २४ जिलोंमें लिखने पढ़नेके बारेमें खान्देशका दरजा बारहवां है। १८२१ ई०को सौमें प्रायः ५ आदमी साक्षर थे। अब शिक्षाकी बड़ी उन्नति हुई है।

खानपान (सं० क्ली०) धातू नामनेकार्थत्वात् खन भक्षणे का ट् खाना पा पाने ल्युट्, पानं खानञ्च पानञ्च तयोः समाहारः। भोजन और पान, खाना पीना।

(बाबर १०६ च०)

खान्पुर—बहावलपुर राज्य और पंजाबके अन्तर्गत खानपुर निजामतका सदर तहसील। यह अक्षा० २७° ४३´ तथा २८° ४´ उ० और देशा० ७०° २७´ एवं ७०° ५३´ पू० सिन्ध नदीके किनारे अवस्थित है। भूपरिमाण २४१५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १२०८१० है। यहां खानपुर, गरही इख़्तियार खां और नौशपुर शहर हैं। इसके दक्षिणमें बालुका प्रदेश, उत्तरमें ऊसर जमीन और सिन्धु-नदी-तटस्थ उर्वरा निम्नभूमि है। यह तहसील खजूर (खजूर) के लिये प्रसिद्ध है और उक्त राज्यका एक समृद्धिशाली स्थान है। यहांकी आमदनी प्रायः एक लाखसे कुछ अधिक होगी।

खानसामा (फा० पु०) भाण्डारी, रसोइया। यह अंगरेजों और मुसलमानोंके पास रहता है।

खाना (हिं० क्रि०) १ आहार करना, पेट भरना, मुंहमें डालना। २ मार डालना, शिकार करना। ३ काटना। ४ कुतरना, काटना। ५ चबाना। ६ बिगाड़ना, मिटाना। ७ उड़ाना। ८ झड़पना, मार बैठना। ९ खर्च करना, लगाना। १० रिशवत लेना, अधर्मसे रुपया कमाना। ११ अंटना, खपना। १२ छोड़ना, भूलना। १३ झेलना, उठाना।

खाना (फा० पु०) १ आलय, जगह, घर। २ कोष्ठक। ३ सन्दूक।

खानाकुल—बङ्गाल प्रान्तीय हुगली जिलेके आरामबाग उपविभागका एक गांव। यह अक्षा० २२° ४३´ उ० और देशा० ८७° ५२´ पू०में काना नदीके पश्चिमतट पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ८८६ होगी। पीतलकी कुछ चीजोंका यहां कारबार चलता और पास ही बढ़िया सूती कपड़ा बनता है। नदीके तट पर महादेवका एक बड़ा मन्दिर है।

खानाखराब (फा० वि०) १ चौपटचरन, घर बिगाड़नेवाला। २ आवारा, इधर उधर घूमनेवाला, जिसके रहनेकी जगह न हो।

खानाजङ्गी (फा० स्त्री०) गृहयुद्ध, आपसकी लड़ाई।

खानाजाद (फा० वि०) १ गृहजात, घरका पैदा। (पु०) २ दास, गुलाम।

खानातलाशी (फा० स्त्री०) घरकी ढूंढ खोज या देख

माल। खानातलाशी किसी छिपी चीज़को ढूंढनेके लिये होती है।

खानादारी (फा० स्त्री०) गार्हस्थ्य, गृहस्थी।

खानापीना (हिं०) खानपान देखो।

खानापुरी (हिं० स्त्री०) खाली जगहका भराव।

खानापुर—१ बम्बई प्रान्तके बेलगांव जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १५° २२´ तथा १५° ७´ उ० और देशा० ७४° ५´ एवं ७४° ४४´ के बीच पड़ता है। खानापुरका रकबा ६३३ वर्गमील और आबादी लगभग ८५५८६ है। इस देशमें दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिमको पहाड़ और जङ्गल है। खेतीका कहीं नाम नहीं। इसके उत्तर-पश्चिमस्थ पर्वत प्रधानतः उच्च लगते हैं। केन्द्रस्थल, उत्तर-पूर्व और पूर्वमें ज़मीन बहुत अच्छी है।

२ बम्बईके सतारा जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १७° ८´ तथा १७° २७´ उ० और देशा० ७४° १४´ एवं ७४° ५१´ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५१० वर्गमील और लोकसंख्या ८५८११ है। यहां बहुत कम जङ्गल है। यरला नदी खानापुरके उत्तरसे दक्षिणको कृष्णासे मिलनेके लिये निकल गयी है।

३ बम्बई प्रान्तीय सतारा जिलेके खानापुर तालुकका एक गांव। यह अक्षा० १७° १५´ उ० और देशा० ७४° ४३´ पू०में वीटासे लगभग १० पूर्वको अवस्थित है। इसकी जनसंख्या प्रायः ५२२८ है। भूपालगढ़के पास पड़नेसे यह पुराने समयमें अपने निकटस्थ प्रदेशका सदर रहा। नगरमें पत्थर और मट्टीकी दीवारों और बुर्जदार फाटकोंका भग्नावशेष विद्यमान है। इस गांवकी मसजिदमें अरबी और कनाड़ी भाषाके शिलाफलक लगे हैं।

खानाबदोश (फा० वि०) गृहहीन, उठल्लू, जहां तहां रह जानेवाला।

खानाशुमारी (फा० स्त्री०) गृहगणनाकार्य, मकानोंका शुमार लगानेका हालत।

खानि (सं० स्त्री०) खनिरेव पृषोदरादिवत् वृद्धिः। खनि, खदान।

खानिक (सं० क्लो०) खानेन खननेन निर्वृत्तम्, खन-ठञ्। १ कुड्यच्छेद्य, दीवारका गड्ढा। २ सन्ध, जवाहरात।

खानिल (सं० त्रि०) खानं खननं शिल्पत्वेनास्त्यस्य, खान बाहुलकात् इलच्। सन्धिचोर, नकबजन, सेंध लगानेवाला।

खानिष्क (सं० क्लो०) अति शुष्क मांस, बहुत सूखा हुआ गोश्त।

खानी (सं० स्त्री०) खनि वा ङीष्। खनि, खदान।

खानुआ—राजपूतानाके भरतपुर राज्यको रूपवास तहसीलका एक गांव। यह अक्षा० २७° २´ उ० और देशा० ७७° ३३´ पू०में बाणगङ्गाके नदीके वामतट निकट भरतपुर नगरसे प्रायः १३ मील दक्षिण अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १८५७ होगी। यहीं १५२७ ई०के मार्च मासको बाबर और मेवाड़-राणा संग्रामसिंहके अधीन राजपूत राजाओंके बीच घोर युद्ध हुआ। प्रथमतः बादशाहने हारने पर शराब न पीनेका शपथ लिया और सोने चांदीके आबखोरों और पियालोंका तोड़ करके गरीबोंमें बांट दिया था। परन्तु पीछेको राजपूतोंके हारने पर राणा ज़ख्मी हो करके मुश्किलसे भाग पाये और डूंगरपुरके रावल उदयसिंह काम आये।

खानोदक (सं० क्लो०) खानाय पानाय उदकं यत्र, बहुव्री०। नारिकेलफल, नारियल, डाभ।

खान्य (वै० त्रि०) खन-ण्यत्। खनन क्रिया आनेवाला, जो खुदने लायक हो। (लाट्या० श्रौ० ८।१।४।५)

खापगा (सं० स्त्री०) खस्य आकाशस्य आपगा, ६-तत्। गङ्गा, सुरसरि।

खापट (हिं० स्त्री०) भूमिविशेष, किसी किस्मकी जमीन्। इसमें लोहेका भाग अधिक रहता है। खापटकी मट्टी कड़ी और भारी पड़ती और पानी पड़नेसे लसलसाने लगती है। इसको केवल वर्षा ऋतुमें ही आकर्षण कर सकते हैं। खापटमें सिवा धानके और कुछ नहीं उपजता। इसकी मट्टी कापसा या काविस कहलाती है। काविससे कुम्हार बर्तन बनाया करते हैं।

खापा—मध्यप्रदेशके नागपुर जिलेकी रामटेक तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० २१° २५´ उ० और देशा० ७९°

२' पू०में कानहान नदी पर छिन्दवाड़ा सड़कसे ६ मील दूर अवस्थित है। लोकसंख्या कोई ७६१५ निकलेगी। इसमें बहुत अच्छे अच्छे बाग हैं। १८६७ ई०को यहां म्यु निसपालिटी हुई। कारखानोंकी छोड़ा छोड़ीमें स्थानीय लोगोंके कपड़ा बुननेका रोजगार मारा गया है। खापामें रंग रंगका सूती कपड़ा खास करके औरतोंके लिये बुना जाता है।

खाबड़खूबड़ (हिं० वि०) नीचा ऊंचा, खोबरसे भरा हुआ।

खाभा (हिं० पु०) पात्रविशेष, एक बर्तन। कोल्हूके नीचे बर्तनसे तेल इसीमें निकाला जाता है।

खाम (हिं० पु०) १ लिफाफा, कागजका चांगा। २ टांका, जोड़। ३ खम्भा। ४ मस्तूल।

खाम (फा० वि०) १ अपक्व, कच्चा। २ अदृढ़, जो मजबूत न हो। ३ अनुभवरहित, नातजर्बाकार, नौमिखिया।

खामखयाली (फा० स्त्री०) अविचार, गलतफहमी, बेवकूफी।

खामगांव—बरारके बुलदाना जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० २०° २६' तथा २०° ५५' उ० और देशा० ७६° ३२' एवं ७६° ४८' पू०के बीच अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ४४३ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: १०२८४८ है। पहले यह तालुक अकोला जिलेमें लगता था, परन्तु १९०५ ई०को बुलदानामें मिला दिया गया।

२ बरार प्रान्तीय बुलदाना जिलेके खामगांव तालुकका सदर। यह अक्षा० २०° ४३' उ० और देशा० ७६° ३८' पू०में अवस्थित है। इसकी आबादी कोई १८३४१ होगी। अमरावतीके बढ़नेसे पहले यह बरारमें रूईकी सबसे बड़ी मण्डी था। ८ मीलकी एक ष्टेट रेलवे जालम ष्टेशनमें इसको ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवेकी नागपुर-शाखासे मिलाती है। प्रति वृहस्पतिवारको बाजार लगता है। १८६७ ई०को यहां म्यु निसपालिटी हुई। इस नगरमें डेढ़ मील दूर किसी तालाबसे पानी आता है। खामगांवके कई बागोंमें अच्छी अच्छी नारङ्गियां और सबजियां होती हैं।

खामना (हिं० क्रि०) लिफाफेमें डालना, बन्द करना।

खामी (फा० स्त्री०) १ कचाई, लचरपन। २ नातजर्बाकारी, नौसिखियापन। ३ त्रुटि, कमी।

खामोश (फा० वि०) मौनी, चुप, जो बोलता न हो।

खामोशी (फा० स्त्री०) मौन, चुप्पी, न बोलनेकी हालत।

खाम्बाज (सं० पु०) एक राग। यह दीपकरागका पुत्र है। खाम्बाज सम्पूर्ण राग ठहरता और भैरव, मालकोष तथा बेलावलीके योगसे बनता है। इसमें गान्धार वादी और पञ्चम संवादी है। (सङ्गीतशास्त्र)

खाम्बावती (सं० स्त्री०) एक रागिणी। यह मालकोषकी पत्नी है। इसकी उत्पत्ति मालश्री और विहागड़ाके मेलसे होती है। खाम्बावतीका स्वरग्राम है—नि धा नि नि सा ऋ ग म। (सङ्गीत)

खाया (फा० पु०) अण्डकोष, फोता।

खायाबरदार (फा० वि०) चापलूस, गुलाम, कमीना, नौकर।

खायाबरदारी (फा० स्त्री०) चापलूसी, खुशामद, गुलामी।

खार (सं० पु०) खं आकाशं आधिक्येन ऋच्छति, ऋ-अण् उपपदस०। खारी परिमाण, ४ द्रोण।

खार (हिं० पु०) १ क्षार, नमक। २ सज्जी। ३ रेह। ४ धूलि, गर्द। ५ क्षुपविशेष, किसी किस्मकी झाड़ी। इससे खार निकलता है।

खार (फा० पु०) १ कण्टक, कांटा। २ खांग, मुर्गा तीतर वगैरहके पैरका तीखा नाखून। ४ विद्वेष, डाह, जलन।

खारक (हिं० पु०) छोहारा।

खारगोड़—बम्बई प्रान्तीय अहमदाबाद जिलेके वीरमगांव तालुकका एक गांव। यह अक्षा० २३° उ० और देशा० ७१° ५०' पू०में पड़ता है। लोकसंख्या प्राय: २१०८ है। यहांसे ६ मीलके फासले पर ऊरूमें १८८१-२ ई०को नमकका एक बड़ा कारखाना खुला था। इन दोनों स्थानोंके बीच रेलवे भी चलायी गयी है।

खारनादि (सं० पु०-स्त्री०) खरनादिन: अपत्यम्, खरनादिन्-इञ्। खरनादीका अपत्य।

खारपायण (सं० पु०) खरपस्य अपत्यम्, खरप-फक्। खरपके अपत्य।

खारवार—द्राविड़ देशीय जातिभेद। युक्तप्रदेशके मिर्जापुर जिलेकी ओर भी यह लोग बहुत रहते हैं। किसी समय इनको एक ऊंची जाति समझा जाता था। कहते हैं कि विहार-प्रान्तीय हजारीबाग जिलेका खैरागढ़ नामक स्थान खारवार-राजवंशने भी अपने नाम पर बसाया है। कोई कोई इन्हें क्षत्रियवर्ण बतलाता है।

खारवाल—एक हिन्दू जाति। यह लोग अधिकतर राजपूतानेमें रहते और मारवाड़में क्षार भूमिसे लवण प्रस्तुत करते हैं। नमकका कानून बन जानेसे खारवाल अब खेती आदि करके अपना काम चलाते हैं। कहते हैं बादशाह कुतुब-उद्दीन गोरीने जब इन्हें सताया, यह खारवाल बननेसे बच गये।

खारा (हिं० वि०) १ नमकीन, क्षार। २ कटु, कड़ुवा, खानेमें बुरा मालूम पड़नेवाला। (पु०) ३ वस्त्रभेद, धारीदार कोई कपड़ा। ४ घास भूसा वगैरह बांधनेका एक जालीदार बंधना। ५ आम तोड़नेका जालीदार थैला। ६ झावा, खांचा। यह बांस, सरकण्डे और रहंटे वगैरहका बनता है। ७ कोई बड़ा पिंजड़ा। यह बांसका बनता है। ८ कोई आसन। यह सरकण्ड आदिसे उलटे टोकरे जैसा बनाया जाता है। विवाहके समय खत्री लोग प्राय: वरकन्याको खारा पर ही बिठलाते हैं।

खारां—बलूचिस्तानके किलात राज्यका एक प्रकारसे स्वाधीन भाग। यह अक्षा० २६° ५२' तथा २८° १३' उ० और देशा० ६२° ४८' एवं ६६° ४' पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल १४२१० वर्गमील है। इसके उत्तर रासकोह पहाड़, दक्षिण सियाहां पर्वतश्रेणी, पूर्व गार पर्वत और पश्चिमको ईरानकी सीमा है। यह देश जङ्गली समझा जाते भी पहाड़ोंके नीचे और बद्दो तथा माशखेल नदियोंके पास जोतने बोनेकी अच्छी जमीन है। बाकी सब जगह रेतीली है। उसमें पहाड़ोंसे जा करके नदियां गिरतीं, परन्तु बालूको पार करके समुद्र तक नहीं पहुंच सकतीं। गरूक और कोराकां नदी भी बड़ी है। माशिरके बीजको दुर्भिक्षमें लोग खाते और कुलकुश्ताकी भी रोटी बनाते हैं। माशखेल नदीके पास जङ्गली गधोंके झुण्ड घूमा करते हैं। यहां सांप बहुत हैं। जूनसे सितम्बर मास तक बड़े जोरसे अन्धड़ चलता है। रातको खारांमें कभी गर्मी नहीं पड़ती।

खारांका प्राचीन इतिहास अविदित है। १७वीं शताब्दीके अन्तको खारांके नौशेरवानी सरदार इब्राहीम खां कन्दाहारके गिलजाई घरानेकी नौकरी करते थे। यह लोग अपनेको कियानी मलिकोंका वंशधर बतलाते हैं। १७३४ ई०के लगभग नादिरशाहने स्थानीय पुरदिल खांके विरुद्ध एक अभियान भेजा था। इस बातका प्रमाण मिलता कि नादिर शाहके समय खारां किरमानमें लगता था। परन्तु सम्भवत: १म नसीर खांने उसको किलातके अधीन किया और जब तक मीरखुदादाद खां और आजाद खांमें मेलजोल रहा, वह अफगानोंके हाथ नहीं लगा। इसके अंगरेजोंको मिलने पर सरदारको ६०००) रु० वार्षिक भत्ता बांधा गया। यहां मुसलमानोंके मकबरोंमें ऊंटों, घोड़ों और दूसरे जानवरोंकी तसवीरें बनी है। टेगवारके गवाचिगका मकबरा सबसे अच्छा है।

इसकी लोकसंख्या प्राय: ५५०० है। यहांके सभी लोग बंजारा हैं और चटाइयोंके झोपड़ों और कम्बलोंके खीमोंमें रहते हैं। खारां किलातमें सदर है, आबादी कोई १५०० होगी। लोगोंकी साधारण भाषा बलूची है, परन्तु पूर्वप्रान्तमें बरहुई भी बोलते हैं। सिवा खेतीके लोग ऊंट पैदा करने और जानवर रखनेका काम भी करते हैं। मुसलमान सुन्नी धर्मके होते हैं।

बाघुक और माशखेलमें खजूरके बाग हैं। यहांके ऊंट, भेड़ और बकरी अफगानस्तान तथा बलूचिस्तानको बिकने जाते हैं। बैलोंकी संख्या बहुत कम है। हामूं माशखेल और वादसुलतानमें अच्छा नमक होता है। यहांसे घी और ऊन बाहर भेजते और कपड़ा, तम्बाकू तथा अनाज मंगा लेते हैं।

खारांमें प्राय: पानी नहीं बरसता। खारांके सरदार कलातवाले पोलिटिकल एजेण्टके अधीन हैं। खारांकी आमदनी कोई १००००) रु० है।

खारि (सं० स्त्री०) खं आकाशं आरति, आ-र-क गौरादित्वात् ङीष् वा ह्रस्व:। धान्यादिका परिमाणविशेष, अनाजकी एक तौल। ४ आढ़कका द्रोण और ४ द्रोणकी खारी होती है। (वैद्यकनिघण्ट)

खारिक (सं० पु०-क्ली) एक वृक्ष और उसका फल। यह पुष्करतीर्थके पास महापारेवत कहलाता है।

खारिज (अ० वि०) १ वहिर्भूत, अलग किया हुवा। २ जो सुना न गया हो। एक असामीसे लेकर दूसरे असामीको जमीन् देनेका काम 'दाखिल खारिज' कहलाता है।

खारिन्धम (सं० त्रि०) खारीं धमति, खारी-ध्मा-खश् ह्रस्वः मुमादेशश्च। शस्यपरिमाणकारक, अनाज नापने या तौलनेवाला।

खारिन्धय (सं० त्रि०) खारीं धयति, खा-धा-खश् ह्रस्वः मुमागमश्च। खारी परिमित पान करनेवाला, जो ४ द्रोण पीता हो।

खारियां पञ्जाब प्रान्तके गुजरात जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३२° ३१´ तथा ३३° १´ उ० और देशा० ७३° ३५´ एवं ७४° १२´ पू०के बीच अवस्थित है। उत्तरपूर्वमें झेलमनदी इसको झेलम जिलेसे अलग करती है। इसका अधिकांश जङ्गली, जरायती और नालोंसे भरा है। पब्बीपहाड़ झेलम नदीके साथ साथ उत्तरपूर्व और दक्षिण-पश्चिमको चला गया है। लोकसंख्या प्रायः २४२-६८७ है।

खारिश (फा० स्त्री०) १ कण्डू, खुजली। २ खरखराहट।

खारिश्त, खारिश देखो।

खारिम्पच (सं० त्रि०) खारीं खारीपरिमितधान्यादिकं पचति, खारी-पच-खश् ह्रस्वः मुमादेशश्च। परिमाणे पचः। पा ३।२।३३। खारीपरिमित धान्यादिक पाक करनेवाला, जो ४ द्रोण भोजन बनाता हो।

खारी, खारि देखो।

खारी (हिं० स्त्री०) १ लवणभेद, किसी किस्मका नमक। २ छोटा खारा। (वि०) ३ नमकीन, खारा।

खारीक (सं० त्रि०) खारां खारीवाप्यमर्हति, खारी-ईकन्। खार्या ईकन्। पा ५।१।३३। १ खारीवाला, जिसमें ४ द्रोण बीज डाला जा सके। २ खारी-परिमित धान्यादि द्वारा क्रीत, ४ द्रोण अनाजसे खरीदा हुआ।

खारीमाट (हिं० पु०) नीलका रङ्ग बनानेका एक तरीका। किसी बड़े बर्तनमें ४ मन पानी भरके एक एक सेर नील, चूना और सज्जी छोड़ते और गुड़ डालकर उठाते हैं। गर्मीको १ दिन और जाड़ेको २ दिनमें खारीमाट उठ आता है। अति शीतकालको इसे आग पर भी चढ़ाया जाता है।

खारीवाप (सं० त्रि०) खारीं तत्परिमितं धान्यं उप्यते वप् आधारे घञ्। १ खारी परिमित धान्यादि वपन करने योग्य, जिसमें ४ द्रोण बीज पड़ सके। २ खारी-परिमित धान्य वपन करनेवाला, जो ४ द्रोण अनाज बोता हो। सिद्धान्तकौमुदीके मतानुसार स्त्रीलिङ्गमें खारीवाप शब्दके उत्तर टाप् होता है, परन्तु मुग्धबोधमें ङीप्‌का विधान है।

खारेपाटन—बम्बई प्रान्तीय रत्नगिरि जिलेके देवगढ़ सब-डिवीजनका एक नगर। इसकी लोकसंख्या कोई २८०० होगी। विजयदुर्ग नदीके कई मील हट जानेसे अब यह नगर बन्दरगाह नहीं रहा। नदीके किनारे किनारे बहुत दूर तक एक सड़क चली गयी है। इसकी चारो ओर मुसलमानोंकी कब्रें बनी हैं। पहले यह मुसलमानोंका एक बड़ा शहर था।

यहां प्रधानतः नमकका कामकाज होता है। सोमवारको बाजारमें बड़ी भीड़ लगती है। अङ्गरेजी शासनके आरम्भसे १८६८ ई० तक यह एक छोटे विभागका सदर रहा, परन्तु १८६८ ई०को देवगढ़ विभागका सदर बन गया। १६वीं शताब्दीके आरम्भकाल (१५१४ ई०) बारबोसाके कथनानुसार वह एक छोटा स्थान था और सबबारके जराजसे सस्ता चावल और तरकारी वहांसे खरीद ले जाते थे। उसी समय यहांका व्यापार बड़ा खारेपाटन डाकुओंका कब्जा बना था। १५७१ ई०को पोर्तगीजोंने उसको जला डाला। १७वीं शताब्दीको कई बार वह कोङ्कण सागर-तटका सबसे पक्का बन्दर बताया गया। १७१३ ई०को वह खण्डोजीराव अङ्गरियाके हाथ लगा और १७५६ ई० तक उन्हींके हाथमें रहा। १८१८ ई०को यह अङ्गरेजोंको सौंपा गया।

नगरके सामने किसी छोटी पहाड़ी पर एक एकड़ परिमित दुर्ग पर्यवसित है। १८५० ई०के उसके बुर्ज और दीवारें तोड़ दी गयीं। जामा मसजिदका ध्वंसा-

अशेष देखनेसे समझ पड़ता, कि वह एक बहुत बड़ी इमारत रही। वर्तमान नगरसे बाहर ईंटका एक बड़ा हौज है। इसके शिलाफलकमें लिखा है कि १६५८ ई०को किसी ब्राह्मणने इसे बनाया था। नगरके मध्यमें जो एक पत्थर गड़ा, हिन्दू और मुसलमानोंके महल्लोंकी सीमा समझा जाता है। नगरके मध्य कर्णाट जैनोंका निवास और एक जैन मन्दिर है।

खारुवां (हिं० पु०) १ किसी किस्मका रङ्ग। यह आलसे बनता और मोटे कपड़े रंगनेमें लगता है। २ मोटा लाल कपड़ा। यह कालपीमें बहुत बनता है।

खारेजा (हिं० पु०) कुसुमभेद। यह पञ्जाबमें बहुत उपजता और कंटीला रहता है। खारेजाका दाना छोटा पड़ता और किसी काममें नहीं लगता। इसके रङ्ग रङ्गके फूल आते जो देखनेमें बहुत सुहाते हैं। खारेजाका हिन्दी पर्याय—कंटियारी, बनबरे और वनकुसुम है।

खारेपथार—पूना जिलेकी एक अधित्यका। यह पुरन्धर गिरिदुर्गसे १४ मील पूर्व जेजुरी नामक गांवके पास एक पर्वतमें पड़ती है। इस पर बहुत पुराने समयका खंडोवा देवका मन्दिर है। लोग भक्तिसे इन खंडोवा देवकी पूजा करते हैं। पूनाके रहनेवालोंको विश्वास है कि वह हाथमें तलवार ले सबकी रक्षा करते हैं। खंडोवाकी मूर्तिके पास ही उनकी स्त्री मलसाबाईकी प्रतिमूर्ति है।

खारोद—मध्यप्रदेशके रायपुर जिलेका एक गांव। यह श्रीहरिनारायणम-गरसे ३ मील उत्तर पड़ता है। यहां लक्ष्मणेश्वर शिवलिङ्ग है। मन्दिर ऊंचे चबूतरे पर खड़ा है। इसमें ८३३ चेदि संवत्‌की एक शिलालिपि मिली है। कोई कोई कहता कि रत्नपुरके राजा ताम्रध्वजके भाई पद्मध्वजने वह मन्दिर बनाया था। यहां बहुतसे मन्दिरोंका ध्वंसावशेष पड़ा है। एक मन्दिरमें आदित्यदेव ७ घोड़ों पर चढ़े विराज रहे हैं। मन्दिर ईंट और पत्थरका बना है। कहते हैं कि रावणके भ्राता खर और दूषण वहां रहते थे। उन्होंके नामानुसार 'खारोद' नाम भी निकला है।

खाखीर (सं० पु०) खरस्य इदं खर-अण् खारं करोति प्रकाशयति, खार-कृ-अण् पृषोदरादिवत् अकार लोपे साधुः। गर्दभजातिका शब्द, गदहोंका रेंकना।

(भागवत ३।१७।११)

खार्जूर (सं० क्ली०) खर्जूरस्येदम्, खर्जूर-अण्। १ मद्यविशेष, किसी किस्मकी शराब। इसको बनानेकी प्रणाली यह है—कटहल, पकी खजूर, अदरक और सोमलताका रस मिला कर शराब पकानेके तरिकेसे पकाने पर जो शराब बनती खार्जूर ठहरती है। २ खर्जूरमद्य, खजूरका शराब। खार्जूर वातकोपन रुच्य, कफघ्न, लघु, कषाय, मधुर, हृद्य, सुगन्धि और इन्द्रियशोधन होता है। (सुश्रुत)

खार्जूरकर्ण (सं० पु०) खर्जूरकर्णस्यापत्यम्, खर्जूरकर्ण-अण्। खर्जूरकर्ण ऋषिके अपत्य।

खार्जूरसुरा (सं० स्त्री०) खार्जूर देखो।

खार्जूरायण (सं० पु०) खर्जूरस्य गोत्रापत्यं, खर्जूर-फक्। खर्जूर नामक ऋषिके गोत्रापत्य।

खार्वुजीय (सं० त्रि०) खर्वुजस्येदम्, खर्वुज-ठक्। १ खर्वुज सम्बन्धीय। (क्ली०) २ रसालविशेष।

(भावप्रकाश)

खाल (हिं० स्त्री०) १ त्वक्, चमड़ा, मनुष्य पशु आदिके देहका बहिरावरण। २ अधौड़ी, आधा चरसा। ३ भाथी धौंकनी। ४ शव, मुर्दा। ५ निम्नभूमि, नीची जमीन्। ६ खाड़ी। ७ अवकाश, खाली जगह। ८ गाम्भीर्य, गहराई। (पु०) ८ नाला।

खालत्य (सं० क्ली०) खलतेर्भावः, खलति-ष्यञ्। कपालरोग, खोपड़ीकी एक बीमारी। यह बालोंको गला देता है। (चरक)

खालफूंका (हिं० पु०) धौंकनी चलानेवाला, जो भाथी लगाता हो।

खालसा (हिं० वि०) १ एकाधिकृत, जो एक हीके इख्तियारमें हो। २ सरकारी।

खालसा—पञ्जाबका सिख सम्प्रदाय। सिख सम्प्रदाय नानकने चलाया था। गोविन्दने नानककी चलायी रीति नीतिमें फिर संस्कार किया।। इस तरह सिखोंमें दो दल हो गये। कुछ लोग गोविन्दके नये संस्कृत

विधानोंको मानते और कुछ पुराने मतके अनुसार ही चले जाते हैं। गोविन्दके नये विधानोंको माननेवाले ही 'खालसा' सम्प्रदायभुक्त हैं। परन्तु यह प्रभेद आज कल उठ गया है। 'खालसा' शब्द अरबीके 'खालिस' का अपभ्रंश है। इसका अर्थ पवित्र एवं शुद्ध है। सुतरां खालसा कहनेसे शुद्ध पवित्र और विशिष्ट व्यक्तिका बोध होता है। सिख इस शब्दका अर्थ कोई ईश्वरहस्यपूर्ण जैसा मानते हैं। यह भी नानकके आदि ग्रन्थको श्रद्धाभक्ति करते हैं। अब गोविन्दके संस्कृत नियमों पर लोगोंका उतना दृढ़ विश्वास नहीं रहा।

खालसा सम्प्रदायके लिये गोविन्दने जो नियम बनाये थे, उनमें 'पहल' अर्थात् अभिषेकक्रिया ही सबसे बड़ी है। पहलेकी चाल आज भी जारी है सिख धर्म अवलम्बन करनेसे पहले पात्रको सब बाल रखाना पड़ते हैं। दो-एक महीने बाद जब बाल बड़े बड़े हो जाते, पात्र नीले रङ्गके कपड़े पहन कर उपस्थित होता और उसे एक तलवार, एक बन्दूक, धनुर्बाण और माला देना पड़ता है। फिर गुरु और पात्र शर्बतसे हाथ-पांव धोते हैं। इसी शर्बतमें चीनी डालके तलवार या छुरेकी धारसे चलानेका नाम पहल है। इसके पीछे आदिग्रन्थसे पांच श्लोक पढ़ाये जाते हैं। प्रति श्लोक एक ही निश्वासमें पढ़ना और छुरीसे वही पानी मथना पड़ता है। फिर पात्र हाथ जोड़ कर ग्रन्थी वा पुरोहितका दिया हुआ वही पानी ग्रहण करता और उसे लेकर कपाल, मस्तक तथा दाढ़ी मूंछमें लगाता और कहा करता है—'वाह गुरुजीका खालसा वाह गुरुजीकी फतेह।' गोविन्द गुरु अपने आप पांच लोगोंके साथ इसी प्रथासे सिख धर्ममें अभिषिक्त हुए थे। फिर उन्होंने परस्परका पदधौत पहल जल पीया भी था। स्त्रियां भी इसी प्रकार पहलके पानीसे अभिषिक्त की जाती हैं। उन्हें केवल शर्बत उलटी छुरीसे चलाना पड़ता है। सिखोंमें बच्चोंका बहुत छोटी अवस्थामें ही यह अभिषेक हुआ करता है।

सिख, रणजित् सिंह, पंजाब आदि देखो।

खाला (हिं० वि०) निम्न, नीचा।

खाला (अ० स्त्री०) मौसी, मांकी बहन।

खालिक (सं० त्रि०) खल- इव, खल-ठक्। अङ्गुल्यादिभ्य ठक्। पा ५।३।१०८। खलके सदृश-पाजी-जैसा।

खालिक (अ० पु०) स्रष्टा, दुनियाको बनानेवाला।

खालिस (अ० वि०) विशुद्ध, खरा, बेमेल।

खाली (अ० वि०) १ रिक्त, रिता, जो भरा न हो। २ बेकाम, निठल्ला। ३ व्यर्थ, फिजूल। (क्रि० वि०) ४ अकेले, बिना किसीकी मददके। (पु०) ५ कोई ताल।

खालू (फा० पु०) मौसा, मौसिया, मांकी बहनका स्वामी।

खाले (हिं० क्रि०-वि०) नीचे, तले, गड्ढेमें।

खाल्यकायनि (सं० पु०-स्त्री०) खल्यकाया अपत्यम्, खल्यका-फिञ्। खल्यकाका अपत्य।

खाल्यायनि (सं० पु० स्त्री०) खल्या-फिञ्। खल्याका अपत्य।

खाव (हिं० स्त्री०) १ शून्य, खाली जगह। २ जहाजमें माल रखनेकी कोठरी।

खावन्दमीर—खावन्द शाह अमीरका एक पुत्र। इनका असल नाम गयासुद्दीन मुहम्मद-बिन्-हमीद-उद्दीन् खावन्द अमीर था।

किसीका मत है कि इनका जन्म १४७५ ई०को हिरात नगरमें हुवा। १४९८ ई०को इन्होंने 'रौजत् उस सफा' नामक फारसी ग्रन्थका सारसंग्रह करके 'खुला-सत्-उल् अखबार' नामक एक सुन्दर ग्रन्थ प्रणयन किया था। इस ग्रन्थके अतिरिक्त और कई एक ग्रन्थ बनाये यथा १ 'हबीब उस्स्यार' २ 'मसीर उल मुलुक' ३ 'अखबार-उल-अोखबार' ४ 'दस्तूर-उल वजरा' ५ 'मुका-रिम-उल-अखलाक' ६ 'मुन्तखिब तारीख', ७ 'वास गाफा' दगरायब-उल्-असबाव' ८ 'जवाहिर-उल-अखबार'। १५२७ ई०को जन्मभूमि हिरातमें घोर विप्लव हुआ; इसलिये हिरात छोड़ कर मौलाना साहब उद्दीन और मिर्ज़ा इब्राहीम कानूनी नामक दो विद्वानोंके साथ ये भारतवर्ष आये। १५७८ ई०को आगरा नगर आकर सम्राट् बाबरसे इन्होंने भेंट की और सम्राट्से सम्मान लाभ किया। तत्पश्चात् जब बाबर बङ्गाल पर आक्रमण करनेके लिये आये, तो खावन्दमीर भी उनके साथ थे। बाबरकी मृत्युके बाद इन्होंने हुमायूके नामानुसार

कानून हुमायूं नामक ग्रन्थ रचना किया। यह ग्रन्थ अबुल फजलके अकबोर नामेमें उद्धृत है। ये सम्राट् हुमायूंके साथ गुजरात भी गये थे। राहमें १५३५ ई०को इनका मृत्यु हुआ। शव दिल्ली ले जा करके अमीर खुसरुकी कब्रके पास इनका लड़ा गया।

खाविन्द (फा० पु०) १ पति, खसम। २ स्वामी, मालिक।

खावी (हिं० स्त्री०) वर्षके आरम्भमें नौकरोंको पहलेसे दिया जानेवाला धन वा अन्न।

खाश्मरी (सं० स्त्री०) गाम्भारी वृक्ष। काश्मरी देखो।

खास (अ० वि०) १ मुख्य, बड़ा। २ खाय, अपना। ३ स्वयं, खुद। ४ खालिस, विशुद्ध, ठेठ। (स्त्री०) ५ मोटे कपड़ेकी कोई थैली। इसमें चीनी डाल कर पीछे बोरेमें भरते हैं। ६ बनियोंके नमक चीनी वगैरह रखनेकी थैली।

खासकलम (अ० पु०) अपना लेखक, निराला मुंशी, प्रायवेट सेक्रेटरी।

खासगी (हिं० वि०) मालिकका, निजका, निराला।

खासतराश (फा० पु०) राजनापित, बादशाह या राजाके बाल बनानेवाला नाई।

खासतहसील (अ० स्त्री०) जिला तहसील, जिस तहसीलमें बड़ा हाकिम रहता हो।

खासदान (हिं० पु०) पानदान, पान रखनेका डब्बा।

खासनवीस (अ० पु०) खासकलम, अपनी ही लिखापढ़ी करनेका रखा हुआ मुंशी।

खासपुर—आसाम प्रान्तीय कछार जिलेके शिलचर उपविभागका एक ग्राम। यह अक्षा० २४° ५५' उ० और देशा० ८२° ५७' पू०में बरायल पहाड़के दक्षिण मुख पर अवस्थित है। १८वीं शताब्दीके आरम्भसे अन्तिम राजाके १८३०में मरने तक खासपुर कछारके राजाओंकी राजधानी रहा। १७८० ई० को कछारके राजा और उनके भाई ताम्रमयी गो प्रतिमामें प्रवेश करके हिन्दू क्षत्रिय बन गये। पहले राजधानीका निदर्शन ४ मन्दिरों, २ अन्य भवनों और ३ सरोवरोंके भग्नावशेषमें मिलता है।

खासबरदार (फा० पु०) राजाकी सवारीके आगे आगे चलनेवाला नौकर।

खासबाजार (फा० पु०) राजाके महलके पासका बाजार। राजा खास बाजारसे ही चीजें खरीदते हैं।

खासा (अ० पु०) १ राजभोग, बादशाहोंका खाना। २ राजाके चढ़नेका हाथी घोड़ा, बादशाहकी अपनी सवारीका जानवर। ३ वस्त्रविशेष, कोई सूती कपड़ा। यह पतला और सफेद होता है। ४ पिष्टकविशेष, किसी किस्मकी मोयनपड़ी पूरी।

खासा (हिं० वि०) १ उत्तम, अच्छा। २ नीरोग, तन्दुरुस्त। ३ मंझोला। ४ सुन्दर, सुडौला, देखनेमें भला। ५ सम्पूर्ण, पूरा। ६ उपयोगी, कारामद।

खासियत (अ० स्त्री०) १ स्वभाव, आदत। २ गुण, खूबी।

खासिया—आसामका एक जिला. यह अक्षा० २४° ५८' तथा २६° ७' उ० और देशा० ९०° ४५' एवं ९२° ५१' पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ६०२७ वर्गमील है। खासियाका २१६० वर्गमील भूभाग अंगरेजोंके अधिकारमें है। लोकसंख्या प्रायः २ लाख निकलेगी। खासिया जिलेका बड़ा शहर शिलङ्ग है।

खासिया और जयन्ती दो पहाड़ ब्रह्मपुत्र तथा सुर्मा नदीकी अववाहिकाके बीच पड़ते हैं। आजकल दोनों एक जिले जैसे गिने जाते हैं। खासिया जिलाके उत्तर कामरूप तथा नवगांव, पूर्वको नवगांव और कछार, दक्षिणको श्रीहट्ट (सिलहट) और पश्चिमको गारो पहाड़ है। फिर यह जिला ३ बड़े भागोंमें बंटा है—स्वाधीन खासिया पहाड़, ग्राम और बहादादार। सरदार और लिन्दो नामक कई एक अधिनायक खासिया अञ्चल शासन करते हैं।

अंगरेजोंके अधिकृत खासिया पहाड़में चौबीस परगने हैं—जिम्माङ्ग, लायत, सिङ्गोट, लायतकरो, वराराङ्ग वा बाहमङ्ग, लामकादिङ्ग, माव-बे-सरकार, मावसमाई, मिनतेङ्ग, मावमलुह, माव पुसकितियङ्ग, नोङ्ग जिरी, नोङ्गलिसक्रिन, नोङ्गवा, नोङ्गरियात, नोङ्गकरो, मुखिया, रामदायत, सायतसोपेन, तिङ्गरियाङ्ग, तिङ्गराङ्ग, तिरना, उमानिया, मरविसु और जतिमा।

जयन्तीमें नीचे लिखे २५ परगने लगते हैं—असबो, चपटुक (कुकी), दरङ्ग, जोवाई, लङ्गफलूट, लङ्गसो, लाकादोङ्ग, मोलगोरात, (मिकिर), मूलसोई (कुकी)

मासकूट, मौनसाव, नोङ्गकली, नोफ्लूत, नोङ्गखालौङ्ग, मरपू, मरतियाङ्ग, नोङ्गवा, नोङ्गजिङ्गी, रम्बोयङ्ग, रिमबाई, माइपुङ्ग (कुकी), सोतिङ्गा, शिलियङ्ग, मोमलङ्ग, सातपाथर और मङ्गपूङ्ग।

स्वाधीन खासिया पहाड़में सियम नामक अधिनायकों के अधीन भवाल या बरवा, चेरा, खायरिम, लङ्गकिम, मलाई सोहमत, महाराम, मारीव, मावइयङ्ग, माव सिनराम, मिल्लियम, नोङ्गसोफो, नोङ्गखलव, नोङ्गसपूङ्ग, नोङ्ग सतायम और रामबराई १५ परगने हैं। वह दादारोंके अधीन शासित होता है। सरदारोंके अधीन द्वारा नोङ्ग तिरमेन, जिरङ्ग, मावलङ्ग और मावदोन नोङ्गलोङ्ग पांच और लङ्गदोयोंके अधीन लानयवङ्ग, मावफलङ्ग नोङ्गलिवाई और मोहियङ्ग हैं।

खासिया पहाड़में वैसा जङ्गल नहीं है। नदीकी चालके अनुसार यहां एकके बाद दूसरी उपत्यका लगी है। यह सभी अधित्यकाएं केवल घासफूससे ढंकी है, बड़े बड़े पेड़ देख नहीं पड़ते। समुद्रपृष्ठसे २००० हाथ ऊंचे एक प्रकारका देवदारु वृक्ष मिलता है। पहाड़की ऊंची चोटी पर कड़ियोंके लायक यथेष्ट वृक्ष होते हैं। फिर भी खासियाके जङ्गलसे आय होनेका सुभीता नहीं पड़ता। पहाड़ोंके बीच बीच नदी नाले बहते हैं। उनमें डोंगियों पर लोग आया जाया करते हैं।

खासिया पहाड़का दक्षिण भाग चूनेके कङ्कड़से भरा है। पुराने समयसे खासियाका चूना बङ्गालमें कामकाजके लिये आता है। यहांसे प्रति वर्ष कोई ३ लाख रुपयेका चूना बाहर भेजा जाता है। खासियाके चेरापूंजी, लाकादोङ्ग और लावड़ आदि खानोंमें बढ़िया कोयला मिलता है। परन्तु उसे इकट्ठा करने और स्थानान्तरको भेजनेमें बहुत व्यय पड़नेसे लोगोंका प्रयोजन नहीं निकलता। पहाड़ोंके बीच बीच मिलावटी कच्चा लोहा पाया जाता है। यहांके लोग पानीकी धार और कोयलेके सहारे लोहा शुद्ध कर लेते हैं। पुराने समयसे खासिया लोग लोहा गलानेके लिये विख्यात हैं। विलायती लोहेकी आमदनीसे इनका यह काम काज भी मट्टीमें मिल गया है। यहां

अदरक, आलू आदि यथेष्ट उपजता है। वनमें हाथी, गैंडे, चीते, भैंसे, सुरागाय और नाना प्रकारके हिरन देख पड़ते हैं।

खासिया पहाड़में विविध गुहाएं और गह्वर हैं। उनमें चेरापूंजी और रूपनाथकी गुहा वर्णनीय है। रूपनाथमें एक प्रकाण्ड गह्वर है। बहुतोंको विश्वास है कि उसकी राह चीनको चले जाते हैं। लोग कहा करते कि उसी गह्वरसे होकर चीना सैन्य भारत पर चढ़ा था। इसके पास गुहामन्दिर है। उसमें हिन्दू देवदेवियोंकी नानाविध मूर्तियां खोदी गयी हैं।

कछारकी सीमा पर कपिली नदीके तीर एक ऊंचा झरना है।

यहां अधिकांश खासिया और सनतेङ्ग नामक जङ्गली लोग रहते हैं। दोनों जातियां असभ्य होते भी उन्नतिशील लगती हैं।

खासिया जिलेमें प्रायः २ लाख लोगोंका वास है। इसमें खासिया और सनतेङ्गोंकी संख्या १॥ लाखसे भी अधिक है।

खासिया और जयन्ती मिला कर आज कल एक जिला बन जाते भी पहले दोनों स्वतन्त्र-राज्य जैसे ही प्रसिद्ध थे। खासिया पहाड़ सियम सरदार आदिके अधीन रहा, परन्तु जयन्तीमें कोई राजा राजत्व करते थे। जयन्ती देखो।

१७६५ ई०को बङ्गालकी दीवानी मिलने पर अङ्गरेज कम्पनीकी दृष्टि श्रीहट्टकी ओर गयी। उस समय इस अञ्चलमें केवल जङ्गली लोग रहते थे। उनका आचार व्यवहार भारतके दूसरे लोगोंसे अलग था। उनका धर्म विश्वास दूसरी किसी जातिसे नहीं मिलता था। युरोपके बनियोंको यह देख कर लालच लगा कि वह प्रकृतिके कोलाहलमें प्राकृतिक महार्घ्य द्रव्य भोग करते थे। उन्होंने भी यहांसे चूना और नारङ्गी इकट्ठी करके काम काज खोला था। बहुतसे लोग कहा करते कि कलकत्तेके बाजारमें 'सिलहट चूना' नाम सुन करके युरोपीय वणिकोंने खासिया लोगोंमें मिलनेकी चेष्टा की थी।

१८२६ ई० को नोङ्गखलाव नामक स्थानके सरदारने

उत्तर आसाम और सुर्मा उपत्यकाके बीच आने जानेको राह बनानेको कई एक अंगरेजोंके साथ कोई प्रबन्ध किया था। उसी समय कुछ अङ्गरेज नोङ्खलाव नगरमें आकर रहने लगे। उनके साथ थोड़े बङ्गाली भी थे, जिनके दुर्व्यवहारसे खासिया लोग बिगड़ पड़े। इसीसे १८२८ ई० को ४थी अपरेलको खासियाओंने अङ्गरेजोंको आक्रमण किया था। इस युद्धमें अङ्गरेज कम्पनीके दो लेफटेनेण्ट और कई एक सिपाही मारे गये। फिर खासियोंका उत्पात धीरे धीरे बढ़ा था। बृटिश गवर्नमेण्ट अधिक ठहर न सकी। खासियाओंको दबानेके लिये दलका दल बृटिश सैन्य भेजा गया, परन्तु साहसी खासिया लोगोंने सहजमें वश्यता स्वीकार न की। धनुर्वाण मात्र उनका हथियार है। उसीके बल पर खासियाओंने सैकड़ों अङ्गरेजोंको मार डाला था। अनेक कष्टोंके पीछे १८३२ ई०को खासियाओंने वश्यता मानी।

१८३५ से १८५४ ई० तक नोङ्खलाव नगरमें एक राजनैतिक अङ्गरेजी कर्मचारी रहा, फिर वह चेरापूंजीको उठ गया।

जयन्ती पहाड़के लोग अपना परिचय 'पनार' जैसा देते और खासिया उन्हें 'सनतेङ्ग' जैसा पुकारते हैं। १८३५ ई० से वह भी बृटिश प्रजा जैसे समझे जाते हैं। इसी वर्षको जयन्तीराज राजेन्द्रसिंहने नवगांवसे कई लोगोंको पकड़ मंगा कर कालीमन्दिरमें बलि किया था। इसी दोषपर अङ्गरेज सरकारने उन्हें राज्यसे हटा दिया।

खासिया—आसाम विभागके अन्तर्गत खासिया पर्वतको रहनेवाली एक जाति। इनके मुंह और सारे अङ्गकी बनावट देख बहुतसे लोग मङ्गोलीय या तूरानी जातिको शाखा-जैसा अनुमान करते हैं। इसके शरीरका रङ्ग महरा कालामिला पीला लगता है। नाक चपटी, मुंह बैठा और ठीक बना हुआ, आंखें छोटी और काली, पुतलीके पास पीलापन और होंठ मोटे होते हैं। इनमें स्त्रीपुरुष दोनों बड़े बड़े बाल रखते, केवल निर्धन लोग सिर मुंडा डालते हैं। खासिया तेजस्वी और बलिष्ठ हैं। यह स्वभावसे ही विनयी, धीर और हास्यमुख होते हैं। इन्हें सदा सर्वदा परिश्रम करना अच्छा लगता है। खासिया उतने चतुर और शिल्पी नहीं हैं, परन्तु सीखनेसे सभी प्रकारके काम कर सकते हैं। दरिद्र लोग सभी कपड़ा घुटने तक कुर्ता पहनते हैं। जो अपेक्षाकृत धनी हैं, मत्थेपर सूती या रेशमी कपड़ा बांधते और चद्दर डालते हैं।

इनमें साधारणतः १५से १८ तक स्त्रियों और १८से २४ वर्ष तक पुरुषोंका विवाह हो जाता है। विवाहकी चाल बहुत सीधी है। किसी किसी स्थानमें वरकर्ता और कन्याकर्ता ही विवाह पक्का कर लेते हैं। सगाईके पीछे वर अपने भाईबन्दों और कुटुम्बियोंको साथ लेकर कन्याके घर आता और वहीं भोजन करके रातको लेट लगाता है। दूसरे दिन वह कन्याको अपने घर ले आता है। कन्याके साथ भी उसके कुटुम्बी आदि वर . घर पहुंच वैसे ही खाते पीते हैं। दो दिन वरके घर रहकर नव दम्पती कन्याके घर पहुंचते हैं। विवाह हो जाने पर वरको जीते जी श्वशुरके घर पर ही रहना पड़ता है। कोई विशेष कारण न आनेसे इनका विवाह बन्धन कैसे टूट सकता है। स्त्री यदि बांझ हो, तो मांबाप या दलके सरदारके सामने कारण दिखा करके विवाहका बन्धन तोड़ते हैं। इसी अवसर पर स्त्रीपुरुषको पांच कौड़ियां अदल बदल करनेको दी जाती हैं। फिर दोनोंसे पूछ कर उन्हें फेंक देते हैं। कौड़ियां फेंक देने पर विवाहका बन्धन सदाके लिये टूट जाता है। एक बार स्त्रीपुरुषका विवाह बन्धन टूट जानेसे फिर उनका एक दूसरेके साथ विवाह नहीं हो सकता। परन्तु भिन्न परिवारमें विवाह करनेकी क्षमता दोनोंको होती है। खासियाओंमें विधवा विवाह चलता है। किन्तु वह विवाहको प्रथा एकबारगी ही निषिद्ध है। छिनारा इनमें महापाप माना जाता है। जो ऐसे बुरे काममें लगा रहता, विशेष ताड़ना सहता है।

विवाहके पीछे पति श्वशुरके घर जाकर रहता। स्त्रीको वंशमर्यादाको बढ़ाया करता है। उसके पुत्र भी मातुल-वंश सम्भूत-जैसा परिचय देते हैं। पिताके वंशका कोई नाम नहीं रहता। विवाहमें

दूसरा जो कुछ पाता, उसके घरवालोंको मिल जाता है।

अभी खासिया ईंटकी दीवारी खड़ी करके घर आदि बनाते हैं। साधारण लोगोंके घर पत्थर, मट्टी या लकड़ीकी दीवारसे ही तैयार हो जाते हैं। खासिया चावल, मछली, सूअर आदिका मांस और शाक भाजी खाते हैं। स्त्री पुरुष दोनोंको दिन रात पान खाना अच्छा लगता है।

यह हिन्दुओंके धर्म अथवा ब्राह्मणोंकी बड़ाई बिलकुल नहीं मानते। सब लोग उपदेवताकी पूजा किया करते हैं। रोग होनेसे किसी प्रकारका औषध नहीं लिया जाता। जिस उपदेवताके प्रकोपसे रोग लगता, उसकी शान्तिके लिये बलि चढ़ा करता है। किसीका मृत्यु होनेसे यह शव दाह करते और उसका भस्म किसी बर्तन आदिमें भर कर मट्टीमें गाड़ रखते हैं। जहां यह भस्म गाड़ा जाता, चारों कानों पर चार पत्थर खड़े करके ऊपरसे एक चपटा पत्थर दबा देते हैं। खासिया आत्माको देहान्तर प्राप्तिको मानते और बताते कि मानव-जाति मृत्युके पीछे बन्दर, बैबड़ा, कछुवा, मेंढ़क आदिके रूपमें परिणत हो जावेंगे। इनमें जातिभेद नहीं होता।

यदि कोई खासिया मकानमें रहता, उसके मरने पर उसका धन आदि मांको, मां न रहनेसे नानी, नानीके अभावमें बहन और उसके बाद भानजीको मिलता है। बहन न होनेसे भाई, भाईके अभावमें मामी या मौसी या उसके लड़के आदि मृत व्यक्तिकी सम्पत्ति पाते हैं। यदि भाई या मौसाके भी पुत्र आदि न रहें, तो नानीकी बहनें या उसके बेटे ही उक्त सम्पत्तिके अधिकारी होते हैं। किसी स्त्रीके मरने पर उसका विषय उसकी माको प्राप्य, माताके न रहनेसे उसके भाई या बहन या भानजी पाया करते हैं। जो व्यक्ति मामाके घर न रहके ससुरके घर पर ठहरता, उसका विषय उसकी स्त्रीको मिलता है; स्त्रीके मर जाने पर उसके बेटे पाया करते हैं। मृत व्यक्तिका पद या उपाधि उसके भाईको ही मिलती है, भाई न रहनेसे मौसेरा भाई उसका अधिकार करता है। मौसेरे भाईके अभावमें बड़ा भानजा उक्त पद वा मर्यादा पाता है। कोई उत्तराधिकारी न होनेसे राजाको सारा विषय मिल जाता है। क्योंकि शवको जला करके भस्म गाड़नेका भार अकेले राजा पर ही पड़ता है। सेला पहाड़के खासियोंकी सम्पत्ति दो भागोंमें बंटती है। पहले पुरखोंकी मिली सम्पत्ति अन्त्येष्टि क्रिया करनेवाला आत्मीय पावेगा। दूसरे मृत व्यक्तिका अपना कमाया धन आदि उसके पुत्रोंको मिलेगा और जितने दिन उसकी मां फिर विवाह नहीं करती, उसके खिलाने पिलानेका भार पुत्रको ही उठाना पड़ेगा।

खासियोंमें कोई कोई वेल्स मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्मको दीक्षा ग्रहण करता है। उनके साहाय्यसे यह लोग कुछ कुछ विद्यानुशीलन करने लगे हैं। खासियाओंकी कोई अपनी भाषा या लिखी पोथी न थी। देशीय लोग कहा करते, जब वह समतल भूमि पर रहते थे, बाढ़ उनका सबकुछ बहा ले गयी। फिर उसीसे वह उक्त पहाड़ी जङ्गलमें जाकर बसे थे।

खासियाना (हिं॰ पु॰) मञ्जिष्ठाभेद, किसी किस्मका मंजीठ। इसका वर्ण अति उत्तम रहता है। यह खासियासे मंगाया जाता है।

खासिया क्षत्रिय—एक पहाड़ी क्षत्रिय जाति। यह लोग विशेषतः नेपाल और कुमाऊं, गढ़वाल आदि जिलोंमें रहते हैं। इनके २० भेद तक पाये जाते हैं। अपनेको क्षत्रिय बतलाते भी यह लोग यज्ञोपवीत कम पहनते हैं। खस देखो।

खासिया ब्राह्मण—पार्वत्य ब्राह्मणजातिभेद। इनकी २५० श्रेणियां तक होती हैं, जैसे—धोवल, घटयारी, कनयारी, गरवाल, सुनवाल, पपानोई, उपरेती, चोनाला, कुठारी, घुसरी, दोर्वाल, समवाल, धुनोला, पानड़ी, लेमडारी, चवनराल, फुलोरिया, पोलिया, मनियाल, घोटासी, दलाकोटी, बुढ़लाकोटी, धुराली, धुराना, पंचोली, बर्नेरिया, गरमाला, बलोनिया, बिरारिया, बमारी इत्यादि।

खासी (अ॰ स्त्री॰) १ अच्छा, बढ़िया। (स्त्री॰) २ राजा या बादशाहके अपने आप बांधनेकी तलवार, ढाल या बन्दूक।

खास्सा (अ० पु०) खासियत देखो।

खिंग (फा० पु०) श्वेतवर्ण अश्वभेद, नुकारा, सफेद रङ्गका एक घोड़ा। इसके मुंहने पट्ठे और चारों सुमोंका रङ्ग कुछ कुछ गुलाबी और सफेद होता है।

खिंगरी (हिं० स्त्री०) पिष्टकभेद, मठरी, किसी किस्मका मोयनदार पूरी। यह मैदेकी बनती और बहुत पतली तथा छोटी रहती है।

खिंचना (हिं० क्रि०) १ आकर्षित होना, खिंच जाना, घसिटना। २ निकलना, बाहर होना। ३ तनना, कड़ा पड़ना। ४ जाना, बढ़ना। ५ खपना, घुसना। ६ भभकेसे बनना, उतरना। ७ कलमसे निकलना। ८ रुकना, बन्द होना। ९ पहुंचना, चला जाना। १० बिगड़ना, अच्छा न लगना। ११ चढ़ना, महंगा पड़ना।

खिंचवाना (हिं० क्रि०) खिंचाना, खींचनेका काम कराना।

खिंचाई (हिं० स्त्री०) १ खींच, आकर्षण, कशिश। २ खींचनेकी उजरत या मजदूरी।

खिंचाना, खिंचवाना देखो।

खिंचाव (हिं०) खिंचाई देखो।

खिंचावट, खिंचाई देखो।

खिंचाहट, खिंचाई देखो।

खिंडाना (हिं० क्रि०) इतस्ततः निक्षेप करना, फैलाना, बिखेरना।

खिखिंद (हिं० पु०) १ किष्किन्ध्या पर्वत। यह पहाड़ महिसुर राज्यके उत्तरभागमें पड़ता है। २ बीहड़ जमीन्।

खिखि (सं० पु०) खिरित्यव्यक्तशब्देन खेटति भीरूणां भयमुत्पादयति, खि-खिट्-ड। पृषोदरादिवत् साधुः। शृगालविशेष, लोमड़ी। 'खिखि' के स्थान पर किखी पाठ देख पड़ता है।

खिखिर (सं० पु०) खिङ्खिर पृषोदरादिवत् साधुः। लोमड़।

खिङ्खिरः (सं० पु०) खिमित्यव्यक्तशब्दं किरति, कृ-क पृषोदरादिवत् खत्व न साधुः। १ खिखि। २ वारिवालक एक खुशबूदार चीज। ३ खट्वाङ्ग, महादेवका एक हथियार। इनका रूपान्तर 'खिङ्खिर' भी होता है।

खिचड़वार (हिं० पु०) खिचराही, खिचड़ी दान करनेका दिन, मकर-संक्रान्ति।

खिचड़ी (हिं० स्त्री०) १ दाल और चावलका मेल। २ दाल और चावलको मिला कर पकाया हुआ भोजन। ३ विवाहकी एक प्रथा, भात। ४ मिश्रित पदार्थद्वय, दो मिली हुई चीजें। ५ खिचराही, मकरसंक्रान्ति। ६ बदरपुष्प, बेरीका फूल। ७ बयाना, साई। (वि०) ८ मिश्रित, मिला हुवा।

खिचिङ्ग—उड़ीसा-प्रान्तके करद राज्य मयूरभञ्जका एक गांव। यह अक्षा० २१° ५५′ उ० और ८५° ५०′ पू०में अवस्थित है। आबादी कोई २६८ होगी। इसमें मूर्तियों, स्तम्भों और इष्टक तथा प्रस्तर निर्मित कई मन्दिरोंका ध्वंसावशेष मिलता है। ग्राम-संलग्न एक मन्दिरावली देखने लायक चीज है। मालूम होता है कि अकबरके सेनापति मानसिंहने इनमें किसी शिवमन्दिरका संस्कार कराया था।

खिचड़ (हिं० पु०) खिचड़ी।

खिच्चा (सं० स्त्री०) खेचरिकान्न, खिचड़ी।

खिजना, खीजना देखो।

खिजलाना (हिं० क्रि०) १ खीजना, बिगड़ना। २ खिझाना, छेड़ना।

ख़िज़ां (फा० स्त्री०) १ पतझार, पत्ते गिर जानेका मौसम। २ अवनति, गिराव।

खिजादिया नगानिवो—काठियावाड़के हलावा विभागका एक मध्यवर्ती राज्य। यहां एक गांव है। उसका एक अधिकारी रहता है। आमदनी २८०० रुपया है। इसमें ५२) रु० गायकवाड़को देने पड़ते हैं। लोकसंख्या १५६ है।

ख़िज़ाब (अ० पु०) केशकल्प, श्वेत केशोंको कृष्णवर्ण बनानेका औषध।

खिजारिया—काठियावाड़के गोहलवाड़ विभागका एक छोटा राज्य। यह राज्य दो भागोंमें बंटा है। इसमें एक टुकड़ा २ वर्गमील और दूसरा एक वर्गमील पड़ता है। प्रत्येक अंशका आय प्रायः डेढ़ हजार रुपया है। इसमें बड़ोदाके गायकवाड़को २७०) रु० और जुनागढ़के नवाबको ४७) रु० देना पड़ता है। खिजारिया लोक-

गढ़से ८ कोस दक्षिण-पूर्व और ठोभासे २॥ कोस उत्तर पश्चिम अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ४०० है।

खिझना (हिं० क्रि०) खोजना, चिढ़ना। (वि०) बिगड़े-दिल, चिढ़ जानेवाला।

खिझाना (हिं० क्रि०) चिढ़ाना, तङ्ग करना, छेड़ना।

खिड़कना (हिं० क्रि०) खिसकना, सरकना, चला जाना।

खिड़काना (हिं० क्रि०) टकराना, हटाना, टालना।

खिड़की (हिं० स्त्री०) १ क्षुद्र द्वार, छोटा दरवाजा। यह दीवारोंमें प्रकाश और वायु आने जानेके लिये लगायी जाती है। २ फाटकका छोटा दरवाजा। फाटक बन्द करके लोगोंके आनेजानेको इसे खोल देते हैं। गुप्तद्वार, चोर-दरवाजा।

खिताब (अ० पु०) उपाधि, पदवी।

खिताबी (अ० वि०) उपाधिधारी, खिताब पाया हुआ।

खित्ता (अ० पु०) प्रान्त, सूबा।

खिदमत (फा० स्त्री०) सेवा, टहल, नौकरी।

खिदमतगार (फा० पु०) सेवक, टहलुवा, नौकर।

खिदमतगारी (फा० स्त्री०) सेवकाई, नौकरी।

खिदमती (फा० वि०) १ सेवामें संलग्न, खिदमत करनेवाला। २ सेवा सम्बन्धीय, खिदमतके मुताबिक।

खिदरापुर—बम्बई प्रान्तीय कोल्हापुर राज्यका एक ग्राम। यह मीरीजसे दक्षिण-पूर्व पड़ता और गङ्गेश्वर स्वामीके अधिकारमें रहता है। इसमें कपिश्वर महादेवका मन्दिर विद्यमान है। दीवारें खूब खुदे हुए काले पत्थरकी बनी हैं। गुम्बज पर पत्थरकारी की हुई है। प्रधान भवनमें दो दो नक्काशीदार मण्डप लगे हुए हैं। मण्डपोंमें दो चौकें हैं। उनमें बाहरीमें बीस और भीतरीमें १२ नराशदार खम्भे खड़े हैं। मन्दिरके सामने खुला हुआ स्वर्गमण्डप है। बाहरी और आड़की छोटी दीवारमें ३६ छोटे और भीतर घेरेको शकलमें १२ खम्भे लगे हैं। मन्दिरसे बाहर नक्कारखाना है। मन्दिरके दक्षिण द्वारमें एक पार्श्व पर देवनागराक्षरोंमें सिंहदेवको देवगिरि यादव शिलालिपि लगी है। इसके अनुसार १२१५ शकको मीराजका खण्डलेश्वर ग्राम कोपेश्वरकी पूजाके उद्देशमें उत्सर्ग किया गया। यहां एक जैन मन्दिर भी है। प्रति वर्ष पौषमासको कोपेश्वरका मेला होता है।

खिदिर (सं० पु०) खिद्यते अप्यायनेन दुःखेन तपसा वा खिद्-किरच्। इषिमदिमुदि खिदीत्यादि। उण् १।५१। १ चन्द्र, चन्द्रमा। २ दीन। ३ तापस।

खिदिरपुर—कलकत्तेके दक्षिण एक उपनगर। यह अक्षा० २२° ३२´ २५´´ उ० और देशा० ८८° २२´ १८´´ पू०में अवस्थित है। यहां जहाजोंका बड़ा कारखाना है। कलकत्ता देखो।

खिद्यमान (सं० त्रि०) खिद ताच्छील्ये चानश्। १ खेदयुक्त, रञ्जीदा। २ सैन्यग्रस्त, फौजसे घिरा हुआ। ३ उपतप्त, जला हुआ।

खिद्र (सं० पु०) खिद्-रक्। स्फायितञ्चिवञ्चि शकिक्षिपि क्षुदी-त्यादि उण् २।१३। १ रोग, बीमारी। २ दरिद्र, गुर्बत। ३ भेदन, कटाव।

खिद्वन् (सं० त्रि०) खिद् अन्तर्भूत णिजर्थे क्वनिप्। खेदकारक, जलानेवाला।

खिन्न (सं० त्रि०) खिद्-क्त। १ दैन्ययुक्त, गरीबीका मारा हुआ। २ आलस, सुस्त। ३ खेदयुक्त, नाखुश।

खिपरा—१ सिन्धु प्रदेशके थर और परकर उपविभागका एक तालुक। यह अक्षा० २५° २६´ तथा २६° १५´ उ० और देशा० ६८° ३´ एवं ७०° १६´ पू० बीच पड़ता है। क्षेत्रफल २२४८ वर्गमील है। इसमें १२५ गांव लगते जिसमें कोई ५४६८१ लोग बसते हैं।

२ खिपरा तालुकका बड़ा शहर। यह प्रायः १३० वर्ष पहले स्थापित हुआ था। खिपरा पूर्व नाराके किनारे अक्षा० २५° ४८´ ३०´´ और देशा० ७८° २५´ पू०में बसा है। यहां प्रधानतः किसान लोगोंका वास है। कपास, ऊन, नारियल, चीनी, तम्बाकू और अनाज आदिका व्यापार होता है। कपड़ा बुनने और छापनेका काम भी खूब है। खिपरामें दीवानी फौजदारी अदालत, थाना, डाकघर और धर्मशाला विद्यमान है।

खिमलासा—मध्यप्रदेशके सागर जिलेको कुरायी तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २४° १२´ ३०´´ उ० और देशा० ७८° ३४´ ३०´´ पू०में सागर नगरसे २१ कोस उत्तर-पश्चिम पड़ता है। आबादी कोई ३ हजार है।

शहरको चारों तर्फ १४ हाथ ऊंची पत्थरदीवारी लगी है। बीचमें एक दुर्ग है। उसमें दो बढ़िया घर बने हैं। खिमलासाका 'शीश-महल' (आईनाघर) नामक हिन्दू राजभवन और गुम्बजदार समाधिमन्दिर देखने योग्य है। शीशमहलकी पहले जैसी तड़क भड़क अब नहीं रही सही, परन्तु आज भी दुतल्ले और तितल्लेके कमरे आईनेसे जड़े हैं।

पहले यह नगर दिल्लीके बादशाहके अधीन रहा। परन्तु १६८५ ई०को निःसन्तान महाराजका मृत्यु होने पर पेशवाके प्रतिनिधि खिमलासाका किला अधिकार कर बैठे। १८१८ ई०को सागर जिलेके साथ यह स्थान ब्रुटिश गवर्नमेण्टका अधिकारभुक्त हो गया। १८५७ ई०के जुलाई महीनेमें जब सिपाहियोंका विद्रोह हुआ, भानपुरके राजाने इस स्थानको आक्रमण किया था। विद्रोहियोंके अत्याचारसे नगरकी विशेष क्षति हुई। उस समय बहुतसे अधिवासी शहर छोड़ भागे। आज भी बहुतसे टूटे फूटे और खाली मकान पड़े हैं।

खियाना (हिं० क्रि०) १ घिस जाना, रगड़ खाना, मिटना। २ खिलाना, भोजन कराना।

खिर (सं० स्त्री०) नार, जोलाहोंकी ढरकी। इसमें बानेका सूत रहता है। बुनते समय खिरको एक तर्फसे दूसरी ओर चलाना पड़ता है।

खिरडरी (हिं० स्त्री०) कत्थेकी एक गोली। इसमें खुशबूदार मसाला डाला जाता है।

खिरन—युक्तप्रदेशके रायबरेली जिलेकी दलमऊ तहसीलका एक परगना। इस परगनेके उत्तर मोरवां, पूर्वको दलमऊ तहसील और रायबरेली, दक्षिणको सरेनी और पश्चिमको पनहीं, भगवन्तनगर, बिहार और पाटन आदि कई एक विभाग हैं। खिरनका क्षेत्रफल १०२ वर्गमील है। इसमें १२१ गांव या मौजे लगते हैं। उससे ७८ मौजे तालुकदारी, बीस जमींदारी और चौवालीस पट्टीदारीके बन्दोबस्तमें हैं। सबसे पहले इस परगने पर भड़ लोगोंका अधिकार रहा, किन्तु कोई ७३० वर्ष हुए बैस वंशके राजा अभयचन्द्रने उनके हाथसे छीन अपने राज्यमें मिला लिया। उनके आठवें पुरुष राजा सातनने खिरन परगनेके बीच सातनपुर नामक एक नगर स्थापन किया था। फिर अवधके नवाब आसफ-उद्-दौलाके राजत्व समय किसी तहसीलदारने यहां एक दुर्ग बनाया। किसीके पास ही खिरन शहर और तहसीलदारी है। खिरनमें एक पाठशाला और साप्ताहिक बाजार है। हिन्दू राजाओंके अधिकारकालकी मट्टीका जो किला बना था, उसका ध्वंसावशेष आज भी देख पड़ता है।

खिरनी (हिं० स्त्री०) क्षीरिणीवृक्ष, एक पेड़। यह दरख्त ऊंचा और सदाबहार होता है। खिरनीका काष्ठ रक्तवर्ण, चिक्कण, कठिन तथा सुदृढ़ निकलता और कोल्हू और घर बनानेमें लगता है। उसको बड़ी सुगमतासे खराद भी सकते हैं। २ क्षीरिणीफल। यह निमकौड़ी जैसा दूधिया और मीठा रहता और ग्रीष्म ऋतुको पकता है।

खिरपाई—बङ्गालके मेदिनीपुर जिलेका एक कसबा। यह अक्षा० २२° ४३' उ० और देशा० ८७° ३७' पू० पर अवस्थित है। लोकसंख्या ५०४५ है। यहां बहुतसे जुलाहे रहते, जो एक तरहका बढ़िया और कीमती कपड़ा तैयार करते हैं।

खिरविट्टी (सं० स्त्री०) महासमङ्गा नाम क्षुप, एक झाड़ी।

खिराज (अ० पु०) कर, मालगुजारी, राजा प्रजाको मल्से बचाता है, इसीसे वह जमीनकी पैदावारका कुछ भाग कर स्वरूप राजाको अर्पण करती है। इसी राजभागका मुसलमानी नाम खिराज है।

खिरासर—काठियावाड़के हल्लार विभागका एक छोटा राज्य। इसका भूपरिमाण १३ वर्गमील है। खिरासरके राजा अङ्गरेज सरकारको २१६६) और जूनागढ़के नवाबको १५०) रु० खिराज-जैसा देते हैं। इसमें १३ गांव लगते हैं। लोकसंख्या ३११७ है। सालाना आमदनी १५४३२ रु० है।

खिरिरना (हिं० क्रि०) १ अनाजको सींक सींकके छाजमें डालकर छानना। २ खुरचना।

खिरैंटी (हिं० स्त्री०) बरियारा, बीजबन्द।

खिल (सं० त्रि०) खिल-क। १ अकृष्ट, जो जोता न गया हो। २ उजाड़, उजड़ा हुआ। (पु०) ३ विष्णु।

४ परिशिष्ट। ऋग्वेदका श्रीसूक्त आदि, यजुर्वेदका शिवसङ्कल्प प्रभृति और महाभारतका हरिवंश 'खिल' कहलाता है।

खिलअत (अ० स्त्री०) सरोपाव, बादशाह या राजासे मिलनेवाली पोशाक वगैरह। यह सम्मान सूचनार्थ दी जाती है।

खिलक़त (अ० स्त्री०) १ सृष्टि, दुनिया। २ जनसमूह-भीड़।

खिलकौरी (हिं० स्त्री०) खिलवाड़, खेलकूद, हंसी, दिल्लगी।

खिलखिलाना (हिं० क्रि०) अट्टहास करना, कहकहा मारना, जोरसे हंसना।

खिलचीपुर—भारतवर्षको भूपाल एजेन्सीका एक देशी राज्य। यह अक्षा० २३° ५२′ तथा २४° १७′ उ० और देशा० ७६° २६′ एवं ७६° ४२′ पू०के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल २७३ वर्गमील है। इसके उत्तर राजपूताना एजेन्सीका कोटा राज्य, पूर्वको राजगढ़, पश्चिमको इन्दोर और दक्षिणको नरसिंहगढ़ है। इसका पुराना नाम 'खीचीपुरपाटन' है। पहले खिलचीपुर उत्तरको गागोर, दक्षिणको सारङ्गपुर और पश्चिम तथा पूर्वको कुमराज तक चला गया था। परन्तु पठानोंके आक्रमणसे धीरे धीरे घट पड़ा। मालवेका यह प्रान्त खिलचीवाड़ा कहलाता है। यहांकी आबहवा अच्छी है।

खिलचीपुरके राजा खीची चौहान हैं। १५४४ ई० को उग्रसेनने यह राज्य स्थापित किया। गागरौनको खीची राजधानीसे उन्हें घराऊ झगड़े कारण भाग आना पड़ा था। दिल्ली-सम्राट्ने उन्हें जो पीछेको सनद दी, उसमें अब इन्दोरमें लगनेवाला जीरापुर तथा माचलपुर परगना और ग्वालियरका शुजालपुर भी था। १७७० ई०को यह प्रान्त खीचियोंके हाथसे निकल गया। कारण अभयसिंहको सेंधियासे सन्धि कर लेना पड़ा था। १८७३ ई०को खिलचीपुरके राजा अमरसिंहको 'राव बहादुर'का पुश्तैनी खिताब मिला। १८९८ ई०को भवानीसिंहजी सिंहासनारूढ़ हुए। राव बहादुर दुर्जनसलसिंह साहेब बहादुर वर्तमान अधीश्वर हैं। राजाको ९ तोपोंकी सलामी मिलती है।

लोकसंख्या ३११४३ है। राज्यके उत्तरकी भूमि पथरीली, परन्तु दक्षिणपश्चिमकी उपजाऊ है। वार्षिक-आय १ लाख १० हजार और ब्रिटिश गवर्नमेण्टको दिया जानेवाला कर १२६२५) रु० है।

२ मध्यभारतके खिलचीपुर राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४° ३′ उ० और देशा० ३६° ३५′ पू०में अवस्थित है। आईन-ई-अकबरीमें इस नगरका नाम 'खलजीपुर' लिखा है। लोकसंख्या प्राय: ५१२१ है। यहां डाकखाना, स्कूल, जेल और अस्पताल बना है।

खिलजी (फा० पु०) अफगानस्तानकी सीमा पर रहनेवाले पठानोंकी एक जाति। अला-उद्-दीन इस खानदानमें खूब मशहूर बादशाह हो गये हैं। खिलजी घरानेने भारतमें १२८८ ई०से १३२१ ई० तक राज्य किया।

खिलना (हिं० क्रि०) १ फूलना, फटना, कलीकी पंखड़ियां खुलना। २ प्रसन्न होना, मौजमें आना। ३ अच्छा लगना, ठीक जंचना। ४ बीचसे फटना, दरकना।

खिलवत (अ० स्त्री०) एकान्त, तनहाई, अलाहिदगी।

खिलवतखाना (फा० पु०) एकान्त स्थान, निराली जगह।

खिलवाड़ (हिं० पु०) हंसी खेल, ठट्ठा।

खिलवाना (हिं० क्रि०) १ भोजन करना, खाना दिलवाना। २ खुश कराना। ३ फुटाना, खूब अच्छी तरह भुंजाना। ४ खीलें लगवाना, गंठाना।

खिलाई (हिं० स्त्री०) १ भोजनक्रिया, खाना पीना। २ खिलानेकी क्रिया। ३ लड़कोंको खेलानेवाली दाई।

खिलाड़, खिलाड़ी देखो।

खिलाड़ी (हिं० पु०) १ खेल करनेवाला, कलाबाज। खिलाड़ीका काम पकड़ लड़ना, पटा बनैठी घुमाना और ऐसी ही दूसरी कसरतें करना है। २ जादूगर, हाथकी सफाई दिखानेवाला। ३ बैलोंकी एक जाति। खिलारी देखो।

खिलात—बलूचस्तानकी राजधानी। इसका ठीक नाम किलात है। बलूचस्तानके राजा खिलातके खान् कहलाते हैं। यह नगर अक्षा० २८° ५६′ उ० और देशा०

६६° २८´ पू० में बसा और समुद्रपृष्ठसे ४५१२ हाथ ऊंचा उठा है। खिलात शहर शाहमर्दान नामक चूनाके पहाड़की चोटी पर बनाया गया है। इसमें ३ फाटक लगी हैं। नगरमें दो दुर्ग हैं। पुराने किलेका नाम मिरा है। यही आजकल खान्का महल बन गया है। शहरकी चहारदीवार मट्टीसे बनी, जिसके बीच मुरचे लगी हैं। चहारदीवारी और मोरचोंमें गोली चलानेके लिये छेद बने हैं। शहरकी राहें बहुत खराब हैं। बाजार बड़ा और सब चीजोंसे भरा है। नगरमें एक स्वच्छसलिला नदी बहती है। मिरी दुर्गमें बहुतसी अट्टालिकायें हैं। इसे वर्तमान मुसलमान राजवंशके पूर्ववर्ती हिन्दू राजाओंने निर्माण किया था। खिलातकी राजसभा बहुत बढ़िया है। राजसभाके सामने हो बरामदा लगा है। यहांसे नगर और चारों ओरोंके पहाड़ोंका दृश्य बहुत अच्छा देख पड़ता है। नगरके पूर्व और पश्चिमकी दो उपकण्ठ हैं। इनको मिलाकर शहरके बाशिन्दोंका शुमार कोई १४ हजार है। खान् बहरूई जातिके आदमी हैं। नगरको पूर्व और कितनी ही सुरम्य उद्यान-विशिष्ट उपत्यकाएं हैं। उनमें खानकोह सबसे बड़ा है।

बलूच और बलूचस्तान देखो।

खिलात नगर—बलूचस्थानके खिलात राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २८° २´ उ० और देशा० ६६° ३५´ पू०में कोटासे ८८। मील दूर पड़ता है। लोकसंख्या दो हजारसे अधिक नहीं। अधिवासियोंमें कुछ हिन्दू व्यवसायी भी हैं। नगर प्राचीरवेष्टित है। मिरी नामक दुर्गमें खां साहब रहा करते हैं। ई० १५वीं शताब्दीको यह मीरवारियोंके हाथ लगा और अहमदजाई खानोंकी राजधानी बना। १५७८ ई०को इसने अहमद शाह दुरानीका आक्रमण रोका और १८३८ ई०को अंगरेजोंके हाथ लगा। एक वर्ष पीछे फिर सरवां विद्रोहियोंने इसको अधिकार किया। किलेके नीचे कालीजीका एक मन्दिर है, जो मुसलमानी तारीखसे पहलेका बना हुवा मालूम पड़ता है। देवीकी मूर्ति समृद्धिका चिह्न धारण किये हुए दो टोपकोंके सामने जो निरन्तर अड़ा करते हैं, खड़ी है।

खिलाना (हिं० क्रि०) १ खेलमें लगाना। २ भोजन कराना। ३ फुलाना।

खिलाफ (अ० वि०) विरुद्ध, उलटा।

खिलाफत (अ० स्त्री०) १ मुहम्मदके प्रतिनिधिका धार्मिक उत्तराधिकार, धर्मसम्बन्धीय प्रतिनिधित्व। २ खलीफाका दरजा, खलीफाका बड़प्पन। प्रधानत: इस शब्दका अर्थ दामासकस और बगदादमें मुहम्मदसे हुलाकूखानके समय तक राजत्व करनेवाले राजाओंका उत्तराधिकार है। ३ मुसलमान जगत्के धार्मिक प्रतिनिधिका पद।

पूर्वमें राज्य करनेवाले मुसलमान लोगोंका इतिहास, जो खलीफा कहलाते थे, प्रधानत: तीन बड़े भागोंमें बांटा है—(१) मुहम्मदके ठीक पीछेवाले उत्तराधिकारी पहले चार खलीफे। (२) उमैयद खलीफे और (३) अब्बासीद खलीफे।

१—पहले ४ खलीफे।

मुहम्मदके मरने पर प्रश्न उठा था—कौन उनका उत्तराधिकारी होगा। उमर नामक किसी परदेशीने बाहरी मुसलमान लाकर मदीनाके बाशिन्दोंको दबाया और मुहम्मदके मित्र तथा श्वशुर अबूबक्रको खलीफा बनाया।

अबूबक्रका शासन—अबूबक्रने उस समय बड़ी खबी दिखलायी थी। मुहम्मदने युनानियोंके विरुद्ध जो चढ़ाई करनेका तैयारी की थी, इन्होंने उसको चुपकेसे भेज दिया और अपने आप मदीना नगरकी रक्षा किया। फौज वापस आने पर अबूबक्र बलवाइयों पर आक्रमण करनेको आगे बढ़े। अरब मैदान छोड़ भागे थे। सिर्फ यममनमें ही कड़ी लड़ाई हुई। अपने सिद्ध-पुरुष मुसैलिमाके अधीन बानूहनीफ खूब लड़े थे। परन्तु जीत न सके।

पड़ोसी देशों पर धर्मयुद्धको घोषणा जो मुहम्मद कर गये थे, नये इसलाम-धर्मको अरबोंमें सर्वप्रिय बनानेके लिये खास जरिया थी। क्योंकि उसमें लूट मारसे माल भी मिल जानेका मौका था।

मध्य और उत्तरपूर्व अरबस्तानको अधीनस्थ करके खलीफाकी फौज निम्न यूफ्रेटस पर चढ़ी थी, जहांसे वह बलवा होने पर सीरियाको बुलायी गयी। ६३५

ई०को ग्रीष्म ऋतुमें दामासकस्का पतन हुआ और ६३६ ई०को २०वीं अगस्तको यारमुककी बड़ी लड़ाई लड़ी गयी। जिससे सम्राट् हेराक्लियसको सीरिया छोड़ना पड़ा। इसी बीच ईराकमें ईरानियोंके विरुद्ध भी हो रहा था। ६३७ ई०को कदीसियाकी लड़ाईमें हार हो जानेसे उन्हें भी अपने साम्राज्यका पश्चिम अंश छोड़ना और खास ईरानमें ही रहना पड़ा। मुसलमान मदाइनके प्रभु बन बैठे और बिलकुल पिछले सालों ही यूफ्रेटिस और टिगरिस दोनों नदियोंके देशको उन्होंने जीत लिया। ६३८ ई०को मेसोपोटेमियामें सीरिया और ईराककी फौजोंका सामना पड़ा था। थोड़े ही समयमें उन्होंने आर्योंसे प्राचीन सेमितिक देश पैलेस्टाइन, सीरिया, मेसोपाटेमिया, असीरीया और बाबिलोनिया छीन लिया था। इसके बाद ६४० ई०में मिसर भी जीता गया। गस्सान और हीराकी रियासतें अरबोंके अड्डे बनीं, नये साम्राज्यके केन्द्र कूफा और बसरामें थे। फिर भी कुछ दिनों मदीना ही इस्लाम धर्मकी राजधानी रहा। जीतके पीछे पहली शताब्दीमें कितने ही ईसाई मुसलमान हो गये। परन्तु उन्होंने ऐसा मुसलमान नागरिकोंके अधिकार पानेको ही किया था, वह जबर्दस्तीसे मुसलमान नहीं बनाये गये। ६४१ ई०को नेहावन्दमें जो लड़ाई हुई, उससे ईरान दबा था। अन्तको ससानीद साम्राज्यका प्रत्येक प्रान्त मुसलमानोंके हाथ लगा और नौजवान राजा ३य यजदगर्दको अपने देशके कोनेमें छूट कर बुरी तरह मरना पड़ा। परन्तु ईरानी अपने पवित्र अधिकारों, राष्ट्रीयता और धर्मके बचावको अरबोंसे लड़ते जाते थे।

२ उमरका शासन—६३४ ई०को १२वीं अगस्तको अबूबकरके मरने पर उमरको खिलाफत मिली। इन्होंके १० वर्षके राजत्वमें खास कर बड़ी बड़ी जीतें हुई थीं। यह कभी मैदानमें नहीं गये, सिवा ६३८ ई०को सीरिया घूमने पहुंचनेके मदीनामें ही बने रहे। उमर बड़े बुद्धिमान् थे। अपने राज्यमें अमन चैन कायम करनेको इन्होंने मुसलमानी जीत और आगे न बढ़ायी। उन्होंने जो वाक्य कह कर राज्यभार ग्रहण किया था, कभी न भूलेगा—ईश्वर साक्षी है; आप लोगोंमें जो सबसे कमजोर होगा, जब तक मैं उसको उसके हक न दिला लूंगा, मेरी निगाहमें सबसे ताकत पर रहेगा। परन्तु जो सबसे मजबूत है, जब तक कानूनको नहीं मानता, सबसे कमजोर समझा जावेगा। मदीनाकी मसजिदमें किसी कूफा मजदूरने उमरको छुरी भोंक दी और ६४४ ई०के नवम्बर महीनेमें मर गये।

१ उसमानका शासन—अपने मृत्युसे पहले उमरने निम्नलिखित ६ मोहाजिरों (परदेशियों) को उन्हींमेंसे किसीको खलीफा नामजद करनेको कहा था—उसमान, अली, जुबैर, तालह, सैयद और अबदुर-रहमान। अबदुर-रहमानने निर्वाचनमें खड़े होनेसे इनकार करके उसमानको खलीफा बनानेके लिये अपना मत दिया था। इन्होंको खिलाफत मिल गयी। परन्तु यह बहुत कमजोर बादशाह थे, इसलाम सरकार बिलकुल कुरेश मुसाहबोंके हाथ जा पड़ी थी। वह अपने आप ईराक प्रान्तको कुरेशोंकी फुलवारी बताने लगे।

अली, जुबैर और तालहने विरोध किया था। उनके दलमें अच्छे अच्छे लोग थे। उन्होंने कहा कि कुरेशोंने इसलामका कोई काम नहीं किया, वह कैसे अल्लाहको पाकर अपना प्रभुत्व जमा सकते हैं। प्रान्तोंमें सब जगह लोग खलीफा और उनके सूबेदारोंके विरोधी बन गये, केवल सीरीयामें उसमानके भतीजे मोआवियाने अपने सुप्रबन्धसे शान्ति भङ्ग होने न दी। ईराक और मिसरमें बड़े जोरकी हलचल थी। इसका मुख्य उद्देश उसमानको राज्यच्युत करके अलीको सिंहासन पर बैठाना था, जिन्होंने अपने आप काम किया और जो मुहम्मदके निकटस्थ सम्बन्धीय थे; कुछ उत्साही लोग उन्हें एक तरहका मसीहा भी मानते थे। विद्रोहियोंने बलपूर्वक अपना काम निकालना चाहा। वह झुण्डके झुण्ड मदीना पहुंचे और उसमानसे कई रियायतें जबरन् मांगने लगे। यद्यपि खलीफाकी फौज सिन्ध और पोक्ससे अटलांटिक तक मारकाट मचा रही थी, मदीनामें उसकी बहुत कम थी। इन्होंने बलवाइयोंको रियायतोंसे खुश कर दिया; परन्तु जैसे

हो वह वापस चले गये, काम फिर पुराने ढंग पर होने लगा। इससे हालत बिगड़ती ही रही। ६५६ ई०को दोबारा बलवाइयोंके सरदार मिसर और ईराकसे बहुत ज्यादा हिमायती लेकर मदीना पहुंचे। खलीफाने फिर झूठे वादे करके उन्हें टालना चाहा था परन्तु बलवाइयोंने इन्हें इनके घरमें ही घेरके पकड़ लिया और राज्य छोड़ देनेको कहा। इनके राज्य छोड़ने पर राजी न होनेसे उन्होंने ८० वर्षकी अवस्थामें इनको वध किया था।

४ अलीका शासन—अधिकांश विद्रोहियोंने अलीको खलीफा बनाया दिया। तालह और जुबेरको भी इनका सम्मान करना पड़ा था। परन्तु वह दोनों वफादारकी मा ऐशाके साथ ईराकको भाग निकले और बसरामें आकर बलवेका झगड़ा खड़ा किया। परन्तु ६५६ ई०के नवम्बर मासकी बसरामें जो लड़ाई हुई, तालह और जुबेर काम आये और ऐशा पकड़ ली गयीं। फिर भी अली शान्ति स्थापन न कर सके। मोआवियाने दामसकसकी मसजिदमें उसमानके लहूलुहान कपड़ोंको दिखाया और अपने सिरीयोंको बदला लेने पर उसकाया था। अन्तको अली मार डाले गये और इससे मुसलमान जगत्में उनका बड़ा नाम हुआ।

२—उमैयद वंश।

मदीना आनेसे मुहम्मदके दुश्मनोंको भी उन्हें 'ईश्वरदूत' मानना पड़ा था। मुहम्मदने देखा कि मदीनाके लोगोंकी बनिस्बत उनके दुश्मनोंमें ज्यादा काबिल आदमी थे। इसीसे मक्क और यमनकी सूबेदारी उमैयदों या मखजूमों और दूसरे कुरैशियोंको सौंपी गयी। अबूबकरने भी मुहम्मदकी ही चाल रखी। मुहम्मदके मरने पर अरबोंने जो बलवा किया और मुसलमान जो ईराक और सीरीया पर चढ़े, सेनापति उमैयद आदि ही थे। उमर इस रस्मसे अलग न हुए। उन्होंने ही अबू सुफियान्के लड़के यजीद और यजीदके मरने पर उनके भाई मुआवियाको सीरायाका सूबेदार बनाया और मिसर प्रान्त अम्र-इब्न-अल-आसके नीचे लगाया था। उमैयदोंके राजशासनका वर्णन बहुत कठिन है।

१ मोआवियाका शासन—मुहम्मदके मक्का फतह करने पर मक्काके सरदार अबू सुफियान्के लड़के मोआवियाने अपने बाप और भाई यजीदके साथ इसलाम धर्म ग्रहण किया और वह मुहम्मदका एक मन्त्री चुना गया था। जब अबूबकरने सीरीया जीतनेको फौज भेजी, अबू सुफियान्के बड़े लड़के यजीद एक सूबेदार और मोआविया उनके नायब थे। ६३८ ई०को उमरने उन्हें दामासकस और पैलेष्टाइनका गवर्नर बनाया और उसमान्ने इस अधिकारमें सीरियाका दक्षिण अंचल और मेसोपोटामिया भी मिलाया था। बीजनताइन सम्राट्से इन्होंने स्थल और जल दोनों जगह युद्ध किया। ६५५ ई०को लसियाकी अन्धाधुन्ध लड़ाईमें यूनान-सम्राट् २य कोनष्टानका जहाजी बेड़ा पूरे तौर पर हारा था। किन्तु अलीसे झगड़ा होने पर उत्तरमें इनकी तरक्की रुक गयी।

मोआविया एक प्रख्यात शासक थे और समग्र साम्राज्यमें सीरायाका प्रबन्ध अच्छेसे अच्छा था। इनको सिरीय इतना चाहते और मानते थे, जब उसमानके खूनका बदला लेनेको कहा गया, वह एक स्वरसे बोल उठे हुक्म देना आपका और उसको मानना हमारा काम है। ६५७ ई०को यूफ्रेटिसके पास जो युद्ध हुआ, मोआविया कुरानकी दोहाई दे कर जीते थे। इस पर कई सरपञ्च मुकरर हुए। उन्होंने अलीसे राज्य छोड़ने और दूसरा उत्तराधिकारी निर्वाचन करनेको कहा था। अलीके इनकार करने पर मोआवियाने राज्यशासन अपने हाथमें ले लिया और मिसर पर आक्रमण किया। फिर अलीके उत्तराधिकारी अबूबकर-पुत्र मुहम्मद पर लोग बिगड़ खड़े हुए जो, उसमानके वधके नेता थे। मुहम्मद खदेरे और भागते भागते पकड़े और किसी किसीके कथनानुसार एक गधेकी खालमें सीये जाकर जला दिये गये।

इसी बीच मोआवियाने यह देखा कि अली उन्हें कुचल डालनेकी चेष्टा करेंगे, यूनानियोंसे प्रति वर्ष बहुत रुपया देनेकी कह सन्धि कर ली। इसमें यह शर्त थी कि यूनानी शान्तिभङ्ग न करेंगे और उसके शरीर बन्धक देंगे। पहले अली खारीजाइतटोंसे लड़नेमें

लगी रहे, परन्तु सिफ़ीनकी लड़ाई जीत मोआविया पर चढ़नेको तैयार हुए। किन्तु उनकी फौजने वैसा करना न चाहा। अलीके ही एक खिरीत नामक आदमी इस बात पर बिगड़ खड़े हुए कि उन्होंने मध्यस्थोंका फैसला न माना था और कितने ही लोगोंको कर-आदि न देनेको उसकाने लगे। अलीने बड़ी मुश्किलमें उन्हें दबाया था। परन्तु मोआवियासे लड़ने उनके भाई आक़िल तक न गये। मोआवियाने अपनी तर्फसे अलीके राज्यमें लगातार हमले किये और अपने गुमाश्तोंके ज़रिये बसरामें खौफनाक बलवा खड़ा करा दिया। फिर मदीना और मक्के पर चढ़ाई होनेसे लोग मोआवियाको खलीफा मानने पर मजबूर किये गये। ६६१ ई०को अलीके मार डाले जाने पीछे उनके लड़के हसन खिलाफतके लिये चुने गये थे, परन्तु मोआवियाके साथ लड़ाई होनेके भयसे वह सिकुड़ रहे। मोआवियाने बसरा लूट सारा सरकारी खजाना छिपा-जतके साथ मक्के भेज दिया था। जब इनके वंशज गद्दी पर बैठे और यह अर्ध विरक्त साधु बन गये, हसनने कूफाके खजानेका माल, जिसमें ५० लाख अशर्फियां थीं और ईरानी सूबे दराबकी मालगुजारी अपनी हुकूमतके बदले मांगी थी। जब यह बात चौत खुली, हसनके जीमें बलवा फूट पड़ा। हसन अपने आप जख्मी हुए और मदीनेको पीछे हट गये, जहां वह आठ-नौ वर्ष पीछे मर बसे। यह अपवाद कि मोआवियाने उन्हें जहर दिलाया था, बेबुनियाद है।

६६१ ई०को ग्रीष्म ऋतुमें मोआविया कूफामें दाखिल हुए और अनुयायियोंसे सम्राट्‌जैसे स्वीकार किये गये। इस वर्षको एकाका साल कहते हैं।

मोआवियाके एक कट्टर दुश्मन जियाद बचे रहे। १४ वर्षकी अवस्थामें उन्हें बसराकी फौजका मांझी काम सौंपा गया था। वह अलीके एक वफादार नौकर रहे और बसरामें मोआवियाकी तरफसे जो बलवा खड़ा हुआ था, उन्होंने दबा दिया। फिर वह फारस और किरमान पहुंचे, जहां उन्होंने शान्तिरक्षा की और लोगोंको अलीके पक्षमें बना रखा। अलीके मरने पर जियाद इस्तखारमें किला बांध बैठ रहे और आत्मसमर्पण करनेको राजी न हुए।

जैसे ही मोआवियाका हाथ खाली हुआ, उन्होंने यूनाके विरुद्ध अपनी सैन्य चालना की। इराकके अधीनस्थ होते ही उन्होंने मौजूदा सुलहनामे न मान अलानों और यूनानीयों पर अपनी फौज चढ़ायी थी। उस समयसे कोई ऐसा वर्ष कहां आया, जिसमें जङ्ग न हुए हों। ६६८ और ६७४ ई०को मोआवियाने कुस्तुनतुनिया जीतनेकी कोशिश की। उनके जहाजी बेड़ेने सारजिकस अधिकार किया था। अफरीकामें भी मुसलमान राज्य बढ़ानेका काम जोरसे चला। ६७० ई०को इन्होंने कैरवान्‌की नींव डाली जहां आज भी उनके नामकी बड़ी मसजिद खड़ी है।

आखीरको कूफाके हाकिमने जियादका नटखटपन बिगाड़ डाला, परन्तु मोआवियाने उन्हें अबू सूफियान्‌का पुत्र और अपना भाई जैसा मान दूसरे वर्ष बसरा और उसमें लगनेवाले पूर्व प्रान्तोंका अधिकारी बनाया था। जियादने शीघ्र ही वहां फिर शान्ति प्रतिष्ठा की। ६६२ ई०को खरिजाइतोंके बलवेमें उनके सरदार मारे गये। परन्तु शीया लोग नाखुश थे। जियादने अम्रको अपना सहकारी बनाया था, जिन पर शुक्रवारको बड़ी मसजिदमें नमाज पढ़नेके समय पत्थर फेंक गये। इस पर जियादने अपने आप जा शीयाओंके नेताको गिरफ्तार किया और १४ बलवाइयोंको जिनमें कई सम्भ्रान्त व्यक्ति थे, दामासकस पकड़के भेज दिया। उनमें सात जिन्होंने वश्यता स्वीकार न की, मार डाले गये। शीयाओंने उनको शहीद जैसा तसव्वर किया और मोआविया पर बहुत बड़ा पाप करनेका इलजाम लगाया। फिर पूर्वकी साम्राज्य फैलानेका काम हाथ-में लिया गया। इसके लिये इसको सबसे बड़ी फौज देनी पड़ी थी। जियादको खुरासानको भेजी हुई पहली फौजने पुनर्वार मर्व, हिरात और बलखको अधिकार किया, तोखारिस्तान जीत लिया और आक्‌सस तक कदम बढ़ा दिया। ६७२ ई०को जियादके लड़के अबदुल्लाने उक्त नदी पार करके बोखारा अधिकार किया और लूटका माल लाद फांद जो ट्रान्सआक्सि-आनाके आवारा तुर्कोंसे मिला था, वह वापस आये। अबदुल्ला अपने साथ बसराको २०० तुर्की तीरन्दाज

आये थे। खलीफा उसमानके लड़केने जिन्हें मोआवियाने खुरासानका हाकिम नियुक्त किया था, ६७४ ई०को समरकन्दके ऊपर चढ़ाई की। दूसरे सेनापति सिन्ध तक घुस गये और काबुल, सीजस्तान, मकरान और कन्दाहारको उन्होंने जीत लिया। ६७२-६७१ ई० को जियादके मरने पर ऐसा अमन चैन बढ़ा, किसीको अपनी जान या मालका खौफ न रहा और अकेली औरत भी अपने घरमें खुले किवाड़ों महफूज थी।

मोआविया एक आदर्श अरब सैयद था। निम्नलिखित प्रवादसे उनकी बुद्धिमत्ताका पूर्ण परिचय मिलता है—मोआवियाका एक प्रान्त अबदुल्ला बी० जुबैरके मुल्कसे मिला था। उन्होंने एक सख्त चिट्ठीमें मोआवियाके गुलामोंकी यह शिकायत की कि वह उनके राज्यमें अनधिकार प्रवेश करते थे। मोआवियाने इसके जवाबमें अपने बेटे यजीदकी यह बात न मान कि उस बेइज्जतीके लिये जुबैरको कड़ी सजा मिलनी चाहिये। एक खुशामदी चिट्ठी लिखी, जिसमें अनधिकार प्रवेश पर खेद प्रकट किया और गुलामों और राज्य दोनोंको जुबैरके लिये छोड़ दिया। इस पर जुबैरने राजभक्तिका आग्रह दिखाया था। इससे यजीदको शिक्षाके लिये भी एक नीति निकल आया।

मोआविया पर अपने कई दुश्मनोंको जहर देनेका इलजाम लगाया जाता है। परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। ६८० ई०को इनकी मृत्यु हुई। इनके अन्तिम शब्द यह थे—तुम परमेश्वरसे डरो, जो बड़ा और शक्तिशाली है, क्योंकि परमेश्वर जिसकी प्रशंसा सबको करनी चाहिये, उससे डरनेवालेको बचाता है, जो परमेश्वरसे नहीं डरता, कैसे बच सकता है। ऐसी स्थितिमें यह बात नहीं मानी जा सकती कि वह शराबखोर, ऐयाश और मजहबसे लापरवाह थे। उनके समय मदीनाको बड़प्पनके खिलाफ दामासकस और सीरीयामें पूरा अमन चैन रहा।

२ यजीदका शासन—मोआवियाके मरते ही विरोधका सङ्गठन हुआ। यजीद गद्दी बैठे थे। इन्होंने सबको राजभक्तिकी शपथ लेनेको लिखा। अलीके वंशजोंने हुसेनको यह कह कर कूफा बुलाया कि उन्हें ईराकका सूबेदार बनाया जावेगा। अली इस पर तैयार हो गये। यजीदने मशहूर जियादके बेटे ओबैदुल्लाको कूफामें शान्ति स्थापन करने भेजा था। हुसेन मक्कासे अपने खानदानके साथ कूफाको रवाना हुए, परन्तु जब वह यूफ्रेटिसके पश्चिम करबलामें पहुंचे, उमरकी फौज देख कर छक्के छूट गये। हुसेन इस उम्मेद पर लड़ने लगे कि कूफासे उन्हें मदद मिलेगी और ६८० ई० १० अक्तूबरको प्रायः अपने सभी साथियोंके साथ खेत रहे। परन्तु कूफामें हुसेनके तरफदारोंने इसे एक आफत समझा और उमर, ओबैदुल्ला और यजीदको हत्यारा विघोषित किया। शीया आज भी उन्हें बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। मुहर्रमका १०वां शीयाओंमें दिन 'कत्लकी रात' कहलाता है। गतको जगह जगह जहां ताजिये रखे जाते, लोग मरसिये पढ़ते और रो रो देते हैं। करबला, जहां हुसेनकी कब्र है, शीयाओंका सबसे पवित्र तीर्थस्थान माना जाता है। उबैयदुल्लाने हुसेनका सर उनके बालबच्चोंके साथ दामासकस पहुंचाया था। यजीद इस पर बहुत रञ्जीदा हुए और कैदियोंको सही सलामत मदीना भेजा। लोग शीयाओंके बलवेको बुरा बतलाते थे। जुबैरने हुसेनके मरने पर अपनेको ईश्वरीय वंशका एक शरणागत व्यक्ति जैसा परिचित किया और चुपके चुपके खलीफा भी कह दिया। मदीनाकी मसजिदमें लोगोंने यजीदसे लड़नेकी प्रतिज्ञा की थी। यजीदने इसके खिलाफ अपनी फौज भेजी। ६८३ ई०के अगस्त महीने सिपाहियोंने जाकर मदीना नगरके पास डेरा डाला और बहुत कहने सुनने पर भी जब कुछ न हुआ सिरीयोंको छल बलसे नगर दखल किया और तीन दिन तक लूट मार होती रही, नागरिकोंको वाध्य हो यजीदकी वश्यता माननी पड़ी। सम्भवतः ६८३ ई० १२ नवम्बरको यजीद मरे थे। फिर जुबैयरने खुलकर अपनेको खलीफा बतलाया और लोगोंको राजभक्तिका शपथ उठानेको बुलाया। जब शीघ्र ही अरब, मिसर और ईराकमें खलीफा स्वीकृत हुए, और मदीनाको वापस हुए। उमैयह निकाल बाहर किये गये।

३ द्वितीय मोआविया—ठीक नहीं, इन्होंने कितने दिन राजत्व किया; परन्तु थोड़े ही दिनोंमें रोगसे ग्रसित हो प्राणत्याग दिया। ६८४ ई०को मराज राहतमें दामास-कसके पास जो घोर युद्ध हुआ, दहहाक और जुफेरको एक बड़ी सेना रखते भी हारना पड़ा और छन्दोंमें इसका बड़ा बखान हुआ।

४ प्रथम मरवांका शासन—इन्होंने यजीदकी विधवा-पत्नीका पाणिग्रहण करके अपनी परिस्थिति सुधारी और अपने बेटे अब्दुलमलिकके लिये खिलाफतकी राह निकाली थी। मराज-राहतकी लड़ाईके पीछे इन्होंने मिसर जीत अपने दूसरे लड़के अब्दुल अजीजको उसका सूबेदार बनाया था। परन्तु हजाजको भेजी हुई फौजके टुकड़े टुकड़े उड़ा दिये गये। उबैयदुल्लाकी भेजी एक फौजने जिसके सेनापति इब्राहीम थे, सिरीयोंको मोसलके पास हरा दिया। फिर जुबैयरने अपने भाई मुसअबको बसराका आला हाकिम बनाया और कूफा पर उसको चढ़नेका हुक्म लगाया। मुखतार जिनका कूफामें बड़ा जोर था, पराजित हुए।

५ अब्दुल मलिकका शासन—६८५ ई० ७ मईको मेरवान मर गये। प्रवादानुसार उनकी स्त्रीने ही उनका गला घोंट दिया, क्योंकि उन्होंने उसको और उसके लड़के खालीदको मारापीटा था। अब्दुल मलिक आसानीसे तख्त पर बैठ गये, परन्तु कुछ दिन उपरान्त सीरीयाके झगड़ोंमें फंसे रहे। लेबाननमें जराजिम घुस पड़े। इन्हें पहले उनसे और फिर कुस्तुनतुनियाके बादशाहसे एक नामुवाफिक सुलह करनी पड़ी। ६८९ ई०को जब इन्होंने मुसअब पर चढ़नेके लिये बोटनान हबीबमें डेरा डाला, इनके भतीजे इब्न असदाकने खलीफा बनना चाहा था। इन्हें पीछे लौट अपनी ही राजधानी घेरनी पड़ी। अम्र इब्न सदाक आत्मसमर्पण करने पर बाध्य हुए। इन्होंने उन्हें अपने महलमें बुलवा अपने ही हाथों मार डाला था। फिर इन्होंने ईराककी चढ़ाई पर ध्यान दिया। बाजोमैरामें मुसअबकी छावनी लगी थी। परन्तु इनका पहला काम जुफेर और मुख-तारके सहायकोंको नीचा दिखाना था। इसी बीच मुस-अबको बसराका खतरनाक बलवा दबाना पड़ा। ६९१ ई०के मध्य भागको अब्दुल मलिकको छावनी दैर-अल-जथलीकमें लगी थी। मुसअब अपने प्रधान सेनापति इब्राहीमके साथ मारे गये। इससे खलीफाके लिये ईरा-ककी राह खुली। इन्होंने हज्जाजको २००० सिरीयों-के साथ मक्का जुबैयरसे लड़ने पहुंचाया और वादी-अल कुराके पास ५००० आदमियोंके साथ पड़े तारीक-को संवाद भेजा कि वह मदीना अधिकार करके हज्जाजसे जा मिलते। ६९२ ई० २५ मार्चको मक्का घिरा था। छ महीने तक घेरा पड़ा रहा। आखीरको हज्जाजने जुबैयरका सरकाट दामासकस भेज दिया। इब्न जुबैयरके साथ ही वह प्रभाव भी मिट गया, जो मुहम्मदने इसलाम पर डाल रखा था। मक्काके घिरते समय काबामें आग लगने पीछे इब्न जुबैयरने दरगाह-को फिर बना कर बढ़ा दिया। परन्तु हज्जाजने नया हिस्सा तोड़ काबको पहले ही जैसा रख छोड़ा। १० साल तक सीरीया और मेसोपोटामियाके रेगस्तानमें हमलों पर हमले होते रहे और उनकी भीषणता पर कितने ही छन्द प्रबन्ध लिखे गये।

४० दिन ठहरके जब अब्दुल मलिक ईराकसे सीरिया लौटे, कूफा और बसरामें अपने दो प्रतिनिधि जैसे उमैयद शाहजादे छोड़ चले। मोहल्लब खलीफाके कहने पर खारीजोतिसे लड़ते थे, परन्तु उक्त दोनों शाहजादोंके उनको मदद न कर सकने पर खारीजोता एकसे ज्यादा लड़ाई जीत गये। मुहल्लबकी फौज उन्हें छोड़ अपने अपने घर चली गयी और कितना ही सम-झाने बुझाने पर भी न लौटी। फिर हजाजने कूफा जा सैन्य संग्रह किया और सहायता पा कर मोहल्लबने खारीजोतोंको दबा दिया। वह ६९७ ई०के आरम्भमें हज्जाजके पास बसरा वापस पहुंचे। उन्होंने इन्हें खुरा-सानका अधिकारी बना ट्रान्स-आक्सियाना पर कई चढ़ाइयां की थीं। ६९५ और ६९६ ई०को अपने आप हज्जाजको शबीबसे लड़ना और उनको दबाना पड़ा। उन्होंने कूफा जीत अपनेको नबी बतलाया था। फिर सीजस्तानका सूबेदार अशअथ बलवाई हो गया और सुस्तरके पास हज्जाजको मार भगाया और बसरामें प्रवेश किया। इसके बाद वह कूफा पर चढ़ा था,

जिसको उसने अधिकार कर लिया। हज्जाजने कूफासे १८ मील पश्चिम देरकुरामें डेरा डाला, जहां खलीफाके भाई मुहम्मद और उसके लड़के अब्दुल्ला उसके लिये नई फौज ले पहुंचे। ७०२ ई०के जुलाई मास फैसलेकी एक लड़ाई हुई। हज्जाज जीते और इब्न अशअट बसराको भागे थे। वहां उन्होंने नयी फौज इकट्ठा की, परन्तु मासकिनको खूंखार जङ्गमें फिर हार होनेसे वह अहवाजमें जा छिपे, जहांसे हज्जाजकी फौजने उन्हें जल्द निकाल बाहर किया। फिर बलवाई सीजीस्तानको हटा और फिर काबुल अमीरके पास आकर रहा था। उसके साथी खुरासान भाग गये, जहां यजीद सूबेदारने उनके हथियार छीन लिये। काबुलके अमीरने धोकेबाजकी कलसे मार डाला था। उसका सर पहले हज्जाजके पास और वहांसे दामसकस भेजा गया। यह ७०३ या ७०४ ई०की घटना है। फिर यजीदसे खुरासानका अधिकार छीन लिया गया। हज्जाजने उन पर बलवाइयोंकी तरफदारी करनेका इलजाम लगाया था। हज्जाजने पहले अपने भाई मुफद्दलको और फिर कुतैयबको खुरासानका सूबेदार बनाया और चीन तक इसलाम धर्म फैलानेको आदेश दिया। ७०२ ई०को हज्जाजने बसरा और कूफाके बीच नया वासस्थान निर्माण किया, जहां उनके सिरीय सैन्यको दोनों राजधानियोंके बिगड़े नागरिकोंसे लड़ने भिड़नेका डर न था और हमेशा किसी भी बलवेको जो उठ खड़ा हो, दबानेका मौका था। अब्दुल मलिकने अपने राज्यारम्भ कालको जेरूसलममें उमरकी बनायी मसजिदमें एक शानदार गुम्बज चढ़ाया था, जो ६९१ ई०को पूरा हुआ। ६९२ ई०को सेबास्तके पास मेसोपोटामिया और अरमेनियाके मेरवानने जो खलीफाका भाई था २य जुस्तनीयकी यूनानी फौजको शिकस्त दी थी। ६९६ ई०को अब्दुल मलिकने एक बहुत बड़ी फौज अफरीका भेजी। उसने कैरवान् अधिकार किया, कारथेज तक समुद्रतटको उजाड़ा और यूनानियोंका सारी किलेबन्दियोंसे निकाल भगाया था। फिर फौज बरबरों पर चढ़ी, जिन्होंने उसे ऐसा मारा कि बारकाको पीछे लौटना पड़ा। ५ वर्ष पीछे फिर इसी फौजने बरबरोंको पराजय करके अपने अधीनस्थ किया। अब्दुल मलिकके मरने पीछे तक इसन कैरवांके शासक बने रहे। अब्दुल मलिकने मुसलमानी सिक्का चलाया था। ६९४ ई०को हज्जाजने कूफामें चांदीके दिरम ढाले। अरबी राजभाषा बनी थी। आखिरकार दामसकससे प्रान्तीय राजधानियों तक बाकायदे सरकारी डाक भेजनेका इन्तजाम किया गया। अब्दुल मलिक अपनी कन्याका विवाह खलीदके साथ करके उन्हें और अन्य अशदकके लड़कोंको राजी करनेमें कामयाब हुए। उन्होंने अपने आप यजीदकी लड़कीसे शादी कर ली थी। अब्दुल मलिकने अपने बेटोंकी तालीम पर बड़ी निगरानी रखी। उनके भाई अब्दुल अजीज जो मिसरके शासक थे, ७०३ या ७०४ ई०का मर गये। उन्होंने पहले अपने लड़के वलीद और उसके पीछे दूसरे लड़के सुलेमानको अपना उत्तराधिकारी चुना था। ७०५ ई० ८ अक्तूबरको वह अपने आप ६० सालकी उम्रमें चल बसे। उनके दरबारमें शायरोंका हुजूम रहता था।

६ प्रथम वलीदका शासन—यह इसलामके इतिहासका एक बड़ा शानदार वक्त था। एशियामाइनर और अरमेनियामें खलीफाके भाई मसलम यूनानियोंसे कई जगह जीत गये, तियाना फतेह हुआ और कुसतुनतुनिया पर चढ़नेका बड़ी तैयारी रही। अफरीकामें भी कामयाबी हुई थी। ७१० ई०को तनजियरके शासक तारीने स्पेन पर चढ़ाई की और रोडेरिकको शिकस्त दी। कितने ही घोड़े लुट गये, परन्तु राजाका पता न लगा। फिर तारीक कई जगह विजय करते हुए आगे बढ़े, परन्तु अपनी हालत नाजुक देख मूसासे मदद मांगी थी। ७१२ ई० अपरैल महीनेको वह १८००० आदमियोंके साथ जहाज पर बैठ स्पेनमें जा उतरे और टैमसिससे थोड़ी दूर पर जो लड़ाई हुई, स्पेनके राजा हारे और मारे गये। मूसाने फिर तोलेदो जा जीता और धूमधामसे राजधानीमें प्रवेश किया। उन्होंने घोषणा की कि उस प्रायोद्वीपके एक मात्र राजा दामासकसके खलीफा थे। इसी वर्ष मूसाने मुसलमानी सिक्के भी ढाले, जिस पर लेटिन भाषाका

अक्षुण्ण था। फिर वलीदने उन्हें दामासकस वापस बुला लिया। वह अपने लड़के अबदुल अजीजको शासक बना लौट पड़े। इन्होंने रोडेरिक राजाकी बेवासे शादी करके अपनी शक्तिको सङ्गठन किया था। ७१४ ई०के अगस्त मास मूसाने स्पेन छोड़ा और दामासकस वलीदके मरनेसे कुछ ही पहले जा पहुंचे। लूटका बहुतसा माल ले जाते भी उनका समुचित पुरस्कार न मिला। उन पर गबनका इलजाम लगाया और १००००० अशर्फी जुर्माना न देने पर कैद किये जानेको धमकाया गया था। परन्तु उन्हें सुलेमान खलीफाके मित्र यजीदकी सिफारिश पर छुटकारा मिला। ७१६ ई०का मक्का जाते राहमें वह मर गये। उनके लड़के अबदुल अजीजका कोई २ साल सलतनत करनेके पीछे कतल हुआ।

पूर्वमें मुसलमानी फौजोंको अचम्भेकी कामयाबी हुई। थोड़े ही सालोंमें चीनकी सरहद तक कई मुल्क जीत लिये गये। इसी बीच मुहम्मद कासिम मकरान आक्रमण किया और देवलको लेकर सिन्धुके पार उतरे और हिन्दुस्थानी राजा दाहिरको हरा मुलतान पर चढ़ गये। वह मुलतान जीत लूटका कितना ही माल ले चलते बने।

वलीदने दामासके आधे गिरजा घरमें मुसलमानी मसजिद बनायी थी। इनके समयकी सीरियामें बहुतसे आलीशान महल और देहातोंमें अमीरोंके रहनेकी खूबसूरत इमारतें तैयार हुईं। इन्होंने मदीनाकी मसजिद भी बढ़ायी थी। इसके लिये नबी और उनकी बीबीके कमरे गिराये गये। खेतीके नये तरीके निकले और जङ्गल आबाद हुए थे। सींचनेके लिये नहरें खोदी गयीं। रेगस्तानमें भी जानमालके जानेका खौफ न रहा।

७ सुलेमानका शासन—७१५ ई०के फरवरी महीने अपने भाईके मरनेसे यह आसानीके साथ गद्दी पर बैठ गये। सुलेमान हज्जाजसे नाराज थे। इन्होंने उनके रखे कितने ही प्रान्तीय शासकोंको निकाल बाहर किया और हज्जाजके दुश्मन यजीद मुहल्लबको ईराकका सूबेदार बना दिया। फिर यजीद मर्वमें जा बसे और खुरासानकी सूबेदारी मिलने पर जोरजान और तबरिस्तान कई बार चढ़े, परन्तु कुछ ही कुछ कामयाब हुए। ७१५ ई०को सुलेमानके कहने पर मसलमने एशिया माइनरको आक्रमण किया और उमर होबेरान एक अच्छे जहाजी बेड़ेके साथ उनके पृष्ठपोषक बने। पहले साल चढ़ाई खाली गयी। अमोरियमका घेरा टूटा था, परन्तु परगामम और सरदीस अधिकृत हुआ। ७१६ ई० २५ अगस्तको कुस्तुन्तुनियाका अवरोध खुश्कीकी राह आरम्भ किया गया और २ सप्ताह पीछे समुद्रकी ओरसे भी ऐसा ही देख पड़ा। एक साल तक घेरा रहा, परन्तु घेरने वालोंको सर्दीसे तङ्ग आकर उठाना पड़ा। मसलम अपनी टूटी फूटी फौज किसी न किसी तरह वापस लाये और जहाजी बेड़ा भी तूफानमें लौटते वक्त तबाह हो गया। तोअर्सके युद्धमें चार्लस मारटेल भी विजयी हुए। मसलम वापस हो आ रहे थे, कि दाबीकमें सुलेमान मर गये। इनका चालचलन वलीद जैसा पक्का और किफायती न था। परन्तु वह एक धर्मपरायण व्यक्ति रहे।

८ द्वितीय उमर—यह एक सीधे सादे और कम खर्च करनेवाले व्यक्ति थे। इन्होंने अपने रिश्तेदारोंसे भी किफायतका तकाजा किया, जिससे लोगोंमें नाराजगी और बेचैनी फैल गयी। लोग मुसलमान बनने पर वाध्य हुए। जुल्मकी शिकायत फौरन सुनी जाती थी। मुसलमानी इतिहासमें यह साधु राजा-जैसे प्रसिद्ध हैं। शमा अबदुल्ला नामक शासक पीरीनीज पर्वत पार करके नारबोन ले लिया था, परन्तु ७२० ई०के जुलाई मास वह तोलोसमें हारे और मारे गये।

९ द्वितीय यजीद—उमरने बहुत थोड़े दिनों राजत्व किया और ७२० ई० ९ फरवरीको उनका मृत्यु हुआ। विना किसी झगड़े बखेड़ेके अबदुल मलिकके लड़के २रे यजीद तख्त पर बैठ गये। देशमें बलवा फूट पड़नेमें इन्हें अपने मशहूर भाई मसलमसे उसको दबानेके लिये कहना पड़ा। बलवेके अक्रमें लड़ाई हुई, जिसमें बलवाई यजीदको हार होनेसे भारत तक भागते भागते आना पड़ा। मसलमको ईरानी और

खुरासानकी सूबेदारी मिली थी। परन्तु दामासकस मालगुजारी न भेजनेके इलजाम पर उनकी जगह पर असर होबेरा मुकरर किये गये। उन्होंने कितने ही खुरासानियोंसे बहुतसा रुपया रिशवत लिया था। इसी नाराजगीसे उमैयटोंकी जड़ हिल गयी।

अफ्रीकामें भी इसी कारण बड़ा उपद्रव हुआ। बरबरोंने सूबेदारको मार भूतपूर्व सूबेदार मुहम्मद यजीदको उनके आसन पर बैठाया था। खलीफाने पहले इनसे मान लिया, परन्तु पीछेसे मुहम्मदको निकाल बिशरको सूबेदार बना दिया। उन्होंने सिसिलीके विरुद्ध एक अभियान भेजा था।

२य यजीदने कविता और गीतविद्याका बड़ा सम्मान किया। ७२४ ई०को २६ जनवरीको उनका मृत्यु हुआ। उन्होंने अपना उत्तराधिकारी पहले हिशम और उनके पीछे अपने बेटे वलीदको नियत किया था।

१० हिशमका शासन—हिशम एक बुद्धिमान् और योग्य राजा थे। ईराकके सूबेदार खलीफा बनाये गये और १५ वर्ष तक उन्होंने साम्राज्यके अर्धपूर्व प्रान्तको शासन किया। किन्तु यह बड़ी तड़क भड़कसे रहते थे। अन्तको शिकायत होने पर खलीद निकाले गये और यूसफ सूबेदार बने। फिर खलीद दामासकसमें जाकर बसे और यूनानियोंसे खूब लड़े भिड़े। ७४० ई०को ६ जनवरीको ईराकमें बलवा फूटा। यूसफ मार डाले गये। उनका सर दामासकस और वहाँसे मदीना भेजा था। खुरासानमें भी बड़ा उपद्रव हुआ। परन्तु ७३६ ई०को खलीदके भाई असदने तारीतको हरा तुर्कों पर बड़ा विजय पाया था। हिशमके राज्यशासनकालको मसरने तारीत और तुर्कोंके विरुद्ध एक सफल अभिमान किया। भारतमें कितने ही प्रान्त फिर स्वाधीन हो गये। इससे भारतका पूर्वीय भाग खाली कर देना पड़ा। ७३० ई०को मुसलमान बुरी तरह हारे, परन्तु आरमेनिया अजरबैजनके सूबेदारोंने खजरोंको पराभूत करके शान्ति स्थापित की। हिशमके सम्पूर्ण शासनकाल बेजेण्टाइनोंसे खूब युद्ध होता रहा। ७२६ ई० तक हिशमके लड़के मोआविया सेनापति थे, जो एशियामाइनरमें अपने घोड़े परसे एकाएक गिर कर मर गये। उनके मरने पर खलीफाके दूसरे लड़के सुलेमान फौजके अफसर बने। परन्तु पूरे वीर अबदुल्ला थे, जिन्होंने ७३२ ई०को सम्राट् कानष्टेण्टैनीको गिरफ्तार किया। किन्तु यूनानियोंने मराश और मलाशियाको फिरसे जीत लिया।

हिशम राज्य शासनके दूसरे वर्ष स्पेनके सूबेदार अनबस पीरेनीज पर्वत पार करके फ्रांसकी चढ़ाई की थी। ७२५ ई०को उनके मर जानेसे मामला ठण्डा पड़ गया। ७३२ ई०को चार्लस मारटेलने मुसलमानोंको रोका था। इब्राहीम मार डाले गये और मुसलमान पीछेको जल्द जल्द लौट पड़े। ७३८ ई०को स्पेनके नये सूबेदार उबक फिर गालमें दाखिल हुए और लियन्स तक बढ़े, परन्तु फ्रांकों द्वारा दोबारा नारबोन तक खदेर दिये गये।

अफरीकामें बलवा फूटनेसे ७४० ई०को हिशमने कोलथूम और बलजके अधीन ३०००० फौज भेजी थी। परन्तु बलवाइयोंने उसे परास्त किया और कोलथूमको मार डाला। बलज बाकी सेना लेकर स्यूटा पहुंचे और वहाँसे ७४१ ई०के अन्तको स्पेन गये जहाँ उन्होंने बरबरोंका भीषण विद्रोह दबाया था। ७४२ ई०को उनका मृत्यु हुआ। अफरीकाके बरबरोंने कैरवान लेनेकी कोशिश की थी, परन्तु हनजालाके सूबेदारने उनकी फौजको पूरी शिकस्त दी।

७४३ ई०के फरवरी मास २० वर्ष राजत्व करके हिशम चल बसे। वह लोकप्रिय न थे। इनके समय मुसलमान राज्यका अधःपतन आरम्भ हुआ।

११ द्वितीय वलीदका शासनकाल—द्वितीय वलीद खूबसूरत, ताकतवर और एक मशहूर शायर थे। परन्तु यजीदने साजिश करके दामासकस अधिकार किया और २य वलीदके खिलाफ २००० आदमी भेज दिये जो किसी देहातमें रहते थे और जिनके पास दो सौसे ज्यादा लड़नेवाले सिपाही न थे। ७४४ ई०को १७ अपरैलको उनका वध हुआ। उनका सर दामासकस पहुंचाया और भालेकी नोक पर सबके देखनेको बाजारमें निकाला गया।

खलीफाकी मौतकी खबर पा कर होमसके नागरिकों ने अबू मुहम्मदको अपना सेनापति बना दामासकस पर चढ़े थे। राजधानीसे १२ मील दूर सुलेमानने उन्हें परास्त किया। अबू मुहम्मद अपने कितने ही साथियोंके साथ गिरफ्तार हुए। पेलेस्टाइनके भी दो एक बलवे आसानीसे दबा दिये गये।

१२ तृतीय यजीदका शासन—इन्होंने तख्त पर बैठते ही एक बढ़िया वक्तृता दी, परन्तु वलीदने सिपाहियोंकी जो तनखाह बढ़ायी थी, काट डाली। इसीसे लोगोंने उनका नाम 'नाकिस' रखा था। मनसूर नामक कलबाइत ईराकके सूबेदार बनाये गये और उन्होंने पहले गवर्नर यूसुफको पकड़ खतरामें कैद किया। सिन्धु और सीजस्तानको छोड़ कर दूसरे सुदूरवर्ती प्रान्तोंने खलीफाकी हुकूमत न मानी और अफगानमें अबदुर रहमान आजाद जैसे हो गये। स्पेनमें सब अमीरोंने इस हुकूमतसे अपनी जान बचानी चाही थी। ७४४ ई०को २५ सितम्बरको ३य यजीदका मृत्यु हुआ।

१३—३य यजीद अपने भाई इब्राहीमको उत्तराधिकारी बना गये थे। २ महीने सल्तनत करने पीछे वह २य मरवान द्वारा राज्य परित्याग करने पर बाध्य हुए।

१४—द्वितीय मरवान् एक शक्तिशाली पुरुष थे। अपने बेटे अदल मलिकको ४०००० आदमियोंके साथ मक्कामें छोड़ वह ८०००० आदमी लेकर मेसोपोटामिया में दाखिल हुए। १२०००० फौजके साथ सुलेमान हारे थे। फिर २य मरवान दामासकस पर चढ़े और ७४४ ई०को ७ दिसम्बरको उसके अधीश्वर बन बैठे। परन्तु पैलेष्टाइनमें फिर बलवा फूट पड़ा और दामासकसको यजीदने आ घेरा। मरवानको ईराक पर चढ़ाई करनेका विचार छोड़ सीरीयाका विद्रोह दबाना पड़ा। उन्होंने १०००० सिरीयोंको युद्ध सज्जासे सुसज्जित करके २०००० किन्नसरिन और मेसोपोटेमियाके सिपाहियोंके साथ यजीदके अधीन ईराक भेजा था। परन्तु रुसाफा पहुंचने पर यजीदने उन्हें समझा बुझा अपनेको खलीफा स्वीकार कराया और अपनेको किन्नसरिन (अधि० ३५०००) फिर यजीदकी फौजमें कोई ७०००० सिरीय [illegible] हो गये। मरवानने अपनी प्रधान सेनाके साथ आनी अद खोसाफमें सुलेमानको पूरी शिकस्त दी थी। फिर होमको उन्होंने ५ महीने तक घेर रखा। फतेह होने पर होमस, बालबक, दामासकस, जेरुसलम और दूसरे शहरोंकी दीवारें गिरा दी गयी।

ईराकमें अबदुल्ला नामक एक साहसी पुरुषने अपनेको शाशार्यो और मुल्लाओंके एक दलका सरदार बना कूफा ले लिया और हीराको कदम बढ़ा दिया था। किन्तु बलवाई हार गये और ७४४ ई०के अक्तूबर मास कूफामें आत्मसमर्पण किया। फिर अबदुल्लाने मेदिया (जब्बाल) पहुंच कर अपना दल जुटाया था, जिनकी मददसे वह एक बड़ी सल्तनतका हाकिम बन बैठा। बहुतसे खरीजैतोंकी मददसे शैबान कौमके सरदार कूफा पर चढ़े थे। इब्न उमर और इब्न सईद पूरे तौर पर हारे और ७४५ ई०के अगस्त महीने हीराको भी आत्म समर्पण करना पड़ा।

जब मरवान होमसको घेरे थे, दहहाक मेसोपोटेमियाको लौट पड़े और मोसल दखल कर बैठे। फिर मरवानके बेटे अबदुल्लाको निसीबिसमें रहना दुश्वार हो गया। सुलेमान भी खवारिज पहुंचे थे, जहां उनके पास १२०००० आदमी रहे। अखीरको मरवान दुश्मन पर झपटे थे। ७४६ ई०के सितम्बर मास काफरतूथाकी घमासान लड़ाईमें खवारिज हार गये। इस युद्धके पीछे ही यजीदने अपनी सेना ईराकको सञ्चालित की थी। ७४७ ई०के मई या जून महीने उन्होंने खरीजाइतोंको परास्त करके कूफा अधिकार किया। इब्न होबैराने अखीरको मेसोपोटेमिया फौज भेजी थी। खरीजाइत उसको देख भाग खड़े हुए। सुलेमान और मन्सूरने भारतको पलायन किया था। परन्तु इसी बीच खुरासानमें एक ऐसा तूफान चल पड़ा, जिसमें किसीको चलने काम न किया। अन्तमें ७४९ ई० २८ नवम्बरको कूफाकी बड़ी मसजिदमें अबुल अब्बास खलीफा बनाये गये।

अब्बासी।

१ अबुल अब्बास ने अपनी घोषणामें प्रशंसा करते

भी कूफा[illegible]ताहिरके डाले गया। इन्होंने अम्बरके पास हीरा और हाशेमिया नामक दो स्थान बनवाये थे। ७५४ ई० ५ जूनको अबुल अब्बासका मृत्यु हुआ। इनके दाहिने हाथ अबू जहम और सलाहकार भाई अबू-जाफर थे।

२ मन्सूर—अबुल अब्बासके मरनेकी खबर सुन अबदुल्ला एक बड़ी फौजके साथ हरान पहुंचे और खलीफा बन बैठे। किन्तु ७५४ ई० २८ नवम्बरको अबू मुसलियनने उन्हें शिकस्त दी और वह बसराको भाग गये। फिर उन्होंने मन्सूर खलीफाकी राजभक्ति स्वीकार की थी, मन्सूरने अबू मुसलिमको मदाइनमें चुपकेसे बुला मरवा डाला। इसी प्रकार अब्बासी घराने प्रतिष्ठाता मारे गये। उनको लोग साहब-उद्-दौला कहा करते थे।

८०० ई० सालसे अफरीका कहने सुननेको अब्बासियोंके मातहत रही। इसी बीच स्पेनमें पाश्चात्य उमैयदोंकी अलग खिलाफत बन गयी। हिशाम खलीफाके पोते अबदुर रहमान खलीफा हुए। ७५७ ई०को ७०००० फौजके साथ मुसलमानोंने धावा करके कानष्टण्टीनोके हाथों गिराया हुआ मालाशिया आ बनाया था। ७५८ ई०को कूफासे थोड़ी दूर खलीफाके रहनेकी जगह ६०० रावेंदी फकीर सम्मानप्रदर्शन करने गये थे, परन्तु झगड़ा हो जानेसे सबके सब कत्ल हुए।

मन्सूरको बड़ा डर यह था कि उमैयदोंके समय उन्होंने मुहम्मदकी वश्यता मानी थी। ७६२ ई०को मुहम्मदने मदीना छीन अपनेको खलीफा बनाया था। परन्तु कूफाके सूबेदारने युद्ध करके उन्हें मार डाला। उनका सर काट करके मन्सूरके पास भेजा गया। मुहम्मदने मरते वक्त नबीकी मशहूर तलवार एक सौदागरको दी थी, जो पीछेको हारूं अल् रशीदको मिल गयी। इसी बीच इब्राहीम बसरा अहवाज, फारस और वसीतके मालिक बन बैठे। लगातार उनकी जीतके खौफसे मनसूरने ५० दिन तक कपड़े न बदले और न आराम ही किया। बाखमरामें बड़ी लड़ाई हुई। इब्राहीमका मस्तक काट करके मनसूरको पहुंचाया गया। कूफामें अपना बचाव न देख मनसूरने बगदादको अपनी राजधानी बनाया था। तीन वर्षमें ७६६ ई०को उसका निर्माणकार्य समाप्त हुआ।

मुहम्मदके एक लड़केने भारतको भाग किसी राजाका शरण लिया था। मनसूरने पता लगा उन्हें मरवा डाला। ७७५ ई०को मक्केके हजको जाते राहमें मनसूरका मृत्यु हुआ। उनका वयस ६५ वर्ष रहा और उन्होंने २५ वर्ष राजत्व किया था। मक्कामें मनसूर दफनाये गये। वह बड़े उत्साही बलवान् हृदयके मनुष्य थे। इन्हें काबिल अफसर चुननेकी अच्छी सूझ थी। वह किफायती रहे और अपने लड़केको भरा खजाना छोड़नेकी उन्हें फिक्र थी।

३ मेहदीका शासन—मनसूरके मरने पर मुहम्मद अल् मेहदी खलीफा बनाये गये। इसके दूसरे ही वर्ष कोश और मखशबमें मोकन्ना नामक एक खारिजीने बलवा किया था। कितनी ही बार जीतने पीछे वह सनाम किलेमें घिरा और जहर खाकर मरा था। उसका सर काट कर मेहदीके पास भेजा गया। फिर मेहदी मक्केके हजको चले। उनके लिये ऊंटों पर लदकर बर्फ मक्का गया था। उन्होंने काबाको जाकर फिर बनवाया और उसमें खूब बेशकीमत सामान लगवाया। मक्कासे मदीना पहुंच मेहदीने मसजिदकी इमारत बढ़ायी थी। उन्होंने हजकी राहमें कूएं खुदवाये, सड़कें बनवायीं, सरायें सुधरायीं और हाजियोंके सुभीतेके कई काम करवाये।

मनसूरके शासन समय बैजण्टाइनों पर बराबर हमले होते रहे और लाओडीशिया नगर अधिकार किया गया। परन्तु मास बदहान पहुंच मनसूर ४१ सालकी उम्रमें एकाएक चल बसे। कोई उनकी मृत्युका कारण शिकारकी दुर्घटना और कोई जहर दिया जाना बतलाता है।

मेहदीके शासनमें खूब खुशहाली रही। बृहत् साम्राज्य सङ्गठनका बड़ा उद्योग हुआ, कृषिकार्य, व्यापार, वाणिज्य तथा राजस्व बढ़ा और लोगोंका हाल अच्छा था। सुदूर पूर्वतक साम्राज्य फैल पड़ा। चीन-सम्राट्, तिब्बतके लामा और भारतीय नरेशोंने खलीफासे सुलहनामा किया था।

४ हादीका शासन—मेहदीके मरने पर मुसा अल्-हादीके नामसे खिलाफतके तख्त पर बैठ गये। हुसैन-मदीनामें बलवा खड़ा करके खलीफा बने थे। परन्तु फारसमें सुलेमानने युद्ध करके उन्हें विनाश किया। ७८६ ई०को १४ सितम्बरको हादी मांने अपने आप अधिकारप्राप्तिके लिये उन्हें जहर दे दिया था। तीन वर्ष पीछे वह भी मर गयीं।

हारुन अल् रसीदका शासन—हारुन बैखटके तख्त पर बैठे थे। उन्होंने अपने उस्ताद वफादार यहियाको अपना वजीर बनाया। यहियाने राज्यकी अच्छी उन्नति की थी। ७९२-९३ ई०की अली घरानेके एक आदमीने खिलाफत पानेका दावा किया। हारुंने फदलके अधीन ५०००० आदमी भेजे थे। फदलने उससे सुलह कर ली। बगदाद पहुंचने पर उसका अच्छा स्वागत हुआ, परन्तु कुछ महीनों बाद उस पर साजिशका इल्जाम लगा और उसे कैदखानेमें भूखों मरना पड़ा। फिर हारुं अलीके दूसरे वंशधर काजिमको बगदाद पकड़ लाये, जिसने जगह दिये जानेसे अपने प्राण गंवाये। हादयका किला तैयार हो जाने पर खलीफाने फराज नामक तुर्कको तारसस शहर फिरसे बसानेका काम सौंपा था। ७९७ ई०में उन्होंने हमला करके हरीमको सुलह करने पर मजबूर किया। फिर दो सेनापतियोंने आरमिनियासे खजरोंको निकाल भगाया जिन्होंने १००००० मुसलमान और ईसाई पकड़ लिये थे।

दूसरे वर्ष हारुंने सब बरमेसाइडोंको विनाश किया; सिर्फ यहयाके भाई मुहम्मद बचे जो ७९५ ई० तक खलीफाके दीवान् रहे। इसी वर्ष कुस्तुन्तुनियामें अन्यायी हरीनको निकाल निकोफोरस बादशाह बने थे। उन्होंने हारुंको कर देनेसे इनकार किया। हारुंने अपनी फौजके साथ एशिया-माइनरमें दाखिल हो मारकाट शुरू की और कितने ही मकानोंमें आग लगा दी। निकोफोरसको डर कर सन्धि करनी पड़ी थी। ८०५ ई०को पहले पहल लेमसमें मुसलमान कैदी छूटे। किन्तु खुरासानमें गड़बड़ देख निकोफोरसने फिर सन्धि भङ्ग करके कितने ही लोगोंको कैद किया था। इस पर हारुं १३५,००० आदमीकी फौज लेकर एशिया-माइनर पहुंचे, हेराक्लिया और दूसरी कितने ही जगहें दखल कर ली गयीं। इसीके साथ सेनापति होमैयदने साइप्रस जीता था। ८०८ ई०को फिर लेमसमें मुसलमान और यूनानी कैदी छोड़े गये। दूसरे वर्ष समरकन्दमें राफीने बलवा मचा अलीको हराया और उनका खजाना लुटाया था। खलीफाने यह खबर पा कि बलवा अलीके जुल्मसे हुआ था, हरसमाको उनकी जगह भेज दिया। ८०९ ई०के मार्च मास खुरासान जाते बीमारीसे हारुंका ४५ सालकी उम्रमें मृत्यु हुआ। हारुंकी अमलदारीमें अफरीकाके सूबेदार इब्राहीम इस बात पर आजाद किये गये कि वह सालाना खिराज खलीफाको पहुंचाते रहेंगे। हारुं खलीफाके वक्तमें ही पहले पहल बगदादमें कागजके कारखाने खुले थे।

६ अमीनका अमलदारी—हारुनके मरने पर अमीनको खिलाफत मिली थी। अमीनने अपने उत्तराधिकारी भाई मामूनको खुरासानसे बगदाद बुलाया, परन्तु वह इस डरसे न गये कि वहां मार डाले जाते। ८०९-८१० ई०को अमीनने अपने पांच सालके लड़के मूसाको अपना उत्तराधिकारी बना दिया। मामूनने इस पर बिगड़ खलीफाका नाम खुरासानके सब कामोंसे अलग किया था। अमीनने ४०००० फौज खुरासान उनके खिलाफ रवाना की। ८११ ई०के मई महीने राहमें दोनों फौजें भिड़ गयी। किन्तु ममूनके सेनापति ताहिरने एकाएक दुश्मन पर हमला करके उसे भगाया था। मामून फिर खलीफा बन बैठे।

अपनी हारकी खबर सुन अमीनने २०००० आदमी हमादान् भेजे थे। ताहिरने उन्हें शिकस्त दे मोदियाकी सब पोस्ता जगहें दखल कर लीं। दूसरे वर्ष फिर अमीनने नई फौज मैदानमें उतारी थी, परन्तु ताहिरने उन्हें भी हरा होलवान् छीन लिया जिससे बगदादका रास्ता खुला। फिर ताहिरने अहवाज, वासित और मदाइनको ले राजधानीके पास अपना खीमा जा लगाया। चारों ओरसे घिरा रहते भी बगदाद शहरने १ साल तक अपनेको बड़ी बहादुरीसे बचाया था।

अलीरमें अमान ताहिरके हाथ अपनेको सौंपने पर मजबूर हुए। ताहिरने उन्हें पकड़ कर कत्ल किया था। ८१३ ई०के सितम्बर महीने उनका सर काट कर मामूनके पास भेज दिया गया।

७ मामूनकी सुलतनत—अमीनके मरने पर ताहिरने बगदादमें मामूनको खलीफा बनाया। इनके समय कलाकौशल, विज्ञान और साहित्यकी अच्छी उन्नति हुई. परन्तु शुरूआत खूब तूफानी थी। ताहिर मेसोपोटेमिया और सीरीयाके सूबेदार बनाये गये और उन्हें बलवाई नसरको दबानेका काम मिला। अलीद भी बिगड उठे थे। कूफामें इब्न टबाटबाने खेतमें एक फौज उतार दी। हसनकी भेजी फौज उससे हारी थी। फिर इराकके बसरा, बसीत और मैदइन नगर भी दुश्मनके हाथ लगे। अलीदोंने मक्का, मदीना और यमनको दबा लिया। कूफामें अबुदलके सेनापतिने नया सिक्का ढाला और राजधानी पर आक्रमण करनेका भय देखाया। हसनने अपनी मददके लिये हरथमको बुलाया था, जिन्होंने पहुंचते ही दुश्मनका आगे बढ़ना रोक दिया। ईराकके सब शहर फिर अब्बासियोंके हाथ आ गये। अफरीकाका बलवा भी दबा था। हरमथ मर्वको खलीफासे मिलने गये, परन्तु लोगोंके बहकाने से मामूनने उन्हें कैदखानेमें डाला था, जहां वह कुछ ही दिनमें मर गये। ८१७ ई०को मामूनके अपना उत्तराधिकारी अली अरविदाको बनाने सारे अब्बासी नाजुश्रमें आये थे। बगदादकी लोगोंने इस पर बिगड़ मामूनको राज्यच्युत किया और उनके चचा इब्राहीमको खलीफा बना दिया। इस पर मामूनने मनही मन सोचा कि फदल उन्हें कठपुतली जैसा समझते थे। एक दिन फदल मरे मिले और अली एकाएक चल बसे। मामूनने इस पर अत्यन्त शोक प्रकाश करके फदलके भाई हसनको अपना वजीर बनाया और उनकी बेटीसे अपनी शादी भी कर ली। इसपर इब्राहीम खलीफाकी ताकत घट गयी और उन्हें छिप कर अपना जान बचानी पड़ी। ८१९ ई०के अगस्त महीनेसे मामूनकी असली हुकूमत शुरू हुई। ताहिरने अपने लिये अलग राज्य स्थापन करनेका विचार किया था, परन्तु ८२२ ई०को उनके मर जानेसे मनकी बात मनमें ही रह गयी। ताहिरके लड़के अबदुल्लाने मेसोपोटेमिया और मिसरका बलवा दबाया था। फिर इब्राहीम खलिफा जो भागे थे पकड़े गये, परन्तु खलीफाने उनको माफ कर दिया। वह गाने बजानेकी तरकी दरबारमें आरामसे रह कर करने लगे।

मुल्कमें अमन चैन होने पर मामूनने अपना ध्यान विज्ञान और साहित्य पर लगाया था। उन्होंने गणित, ज्योतिष, वैद्यक और विज्ञानकी पुस्तकें यूनानी भाषासे अनुवाद करायीं और बगदादमें एक विद्यालय खोला जिसमें एक पुस्तकालय और एक वेधशाला भी थी। उन्हींके आदेशसे दो सुविज्ञ गणित शास्त्रियोंने पृथिवीके वृत्तका अंश निर्धारण करनेका काम अपने हाथमें लिया। धार्मिक सिद्धान्तोंमें भी मामूनकी दिलचस्पी रही। ८३३ ई०को एक हुक्मनामा निकाल उन्होंने सब विद्वानोंको यह समझानेके लिये बुलाया था कि कुरान ईश्वर वाक्य नहीं। जिनने यह बात नहीं मानीं, कैद खानेमें डाला गया। मामूनने इन अपराधियोंको बगदादसे अपने पास सजायाब होनेको तलब किया था, परन्तु वह मुश्किलसे अदन पहुंचे होंगे कि खलीफाके मरनेकी खबर लगी। ८३३ ई०के अगस्त मास ठण्ढेके दरयामें नहानेसे उन्हें बुखार चढ़ा और ४८ वर्ष उम्रमें उनका मृत्यु हुआ।

मामून निराली शिफतके आदमी थे और मन्सूरके बाद उनके जैसा खलीफा विरला ही हुआ।

८ मोतासिमका राजत्व—मामूनके मरने पर अबू इशाक अल-मोतासिम खिलाफतके मालिक हुए। और ८३३ ई० २० सितम्बरको बगदादमें जा पहुंचे। उनके शरीर-रक्षक तुर्की गुलाम रहे, जो ज्यादा और जुल्म करने पर बगदादियोंके हाथों, जहां तक हो सका, मारे गये। मोतासिमने बगदाद छोड़ सामरामें अपने रहनेकी इमारत बनवायी थी।

गृहयुद्धके समय बसरा और वासितके बीच दलदलवाले मुकामको बहुतसे जाट नामक भारतवासियोंने अधिकार किया और टिगरिस नदीमें आने जाने वाले

जहाज़ों पर महसूल लगा दिया। मोतासिमने ७ महीने जोरोंसे लड़ उनके आत्मसमर्पण करने पर वाध्य बनाया था। ८३५ ई०के जनवरी महीने वहांसे वह लोग अनजरबाको निकाले गये। ८३५ ई०को ही मोतासिमने एक तुर्की राजकुमार अफ़शींको मोदिया-का सूबेदार मुकर्रर किया और बाबकसे लड़नेको कह दिया। तीन साल लड़ाई होनेके पीछे बाबक पकड़े गये और समारा पहुँचने पर जल्लादोंने उनके हाथ पांव काट डाले। उनका शिर खुरासान भेजा गया। ८३७ ई०को थियोफिलसने सरहदी शहर जिबतराको मिसमार किया था। मोतासिमने बदला लेनेकी गरजसे बड़ी फौजके साथ चढ़ाई की और अमोरियम नगर दखल करते वक्त खूब लूट उनके हाथ लगी। ८४२ ई० के जनवरी महीने मोतासिमका मृत्यु हुआ।

९ वातहिककी अमलदारी—मोतासिमके मरने पर उनके बेटे वातहिक खलीफा हुए। इन्हें भी इल्मका बड़ा शौक था। उसको पूरा करनेके लिये वातहिकने अपने अफसरोंसे रुपया मांगा और उनके इनकार करने पर खियानतखोरीके लिये उनको कैदखानेमें डाला और जुर्माना किया। खलीफा क़ुरानको भी ईश्वरवाक्य न मानते थे। इस पर बगदादमें बलवा होनेकी खबर लगी। बलवाइयोंके सरदार अहमद पकड़े और समारा भेजे गये, जहां वातहिकने अपने हाथसे उनका शिर काट डाला। मदीनाके आसपास अरबोंने जो [illegible] तुर्की अफसरोंने उसे [illegible] दबा दिया। ८४६ ई०को वातहिक मर गये।

१० मोतवक्किलकी खिलाफ़त—वातहिकके मरने पर उनके भाई जाफर अल्-मोत-वक्किल नामसे खिलाफतके मालिक हुए। इन्होंने वजीर जय्यातको जिन्होंने इनकी खिलाफतकी मुखालिफ़त की थी, पकड़ कर बेरहमीसे मार डाला। इसी बीच महमूद नामक किसी जालसाजने अपनेको नबी बतलाता और २७ आदमियोंको अपना पैरो बनाया था। खलीफाने उससे और उसके साथियोंको पकड़ मंगाया और खूब कोड़ोंसे पीटा। फिर उसके सब साथियोंको हुक्म हुआ कि उसको शिर पर सबके सब दस दस मुक्के लगावें। ८५० ई०को वह मुक्कोंके मारे मर गया।

मोतवक्किलने करबलामें हुसेनकी मक्बरेकी इमारत गिरवा दी थी। ८६४ ई०को हुसेनके एक वंशधर यहया जो पकड़ कर कोड़ोंसे पीटे गये थे, अपकेसे भगे और कूफामें बलवा खड़ा करने पर मारे गये। कहते हैं कि खलीफाने अपने एक भांड़को अलीकी नकल करनेका भी हुक्म दिया था। ८४८-८४९ ई०को इब्न वाईसने बलवा किया, किन्तु बोगा नामक तुर्की सेना-पतिने उसे पकड़ कैद कर लिया जहां उसे मरना पड़ा। ८५१-८५२ ई०को अरमेनियामें बलवा फूटा था। बोघाने उसे भी दबा दिया। ८५२-८५३ ई०को बैजन्ताइन ३०० जहाजोंके साथ मिसरमें उतर पड़े। फोसतात राजधानी लूटी और जलायी गयी। यूनानी फिर टिनिसके पास नाइल नदीके मुंहानेकी सारी किले-बन्दी तोड़ के दियीं और लूटके साथ लौट पड़े। ८५६ ई०को वह अमीद तक पहुंच १०००० कैदी ले गये थे। किन्तु ८५८ ई०को मुसलमानोंने यूनानियोंके कितने ही आदमी और जानवर पकड़े और उनके जहाजों बेड़ेने अनटोलियाको विध्वस्त कर डाला।

८५५ ई०को हीमसमें बलवा हुआ, कारण खलीफाने ईसाइयों और यहूदियों पर बहुत सख्ती की और बेचैनी बढ़ी थी। यह बलवा बड़ी मुश्किलमें दबा ईसाइयों, और यहूदियोंके धर्ममन्दिर तोड़े, बहुतसे बड़े आदमी कोड़ोंकी मार मार डाले और सब ईसाई निकाल बाहर किये गये। ८५१ ई०को बोजा नामकी अफ्रलो कौमने सोने और पन्नेकी खानों पर हमला किया था, जिसे ८५६ ई०को मुहम्मद अल् कौमीने दबा दिया। फिर मोतवक्किलने २० लाख अशरफी लगा सामराके पास एक बढ़िया महल बनाया था। ८६१ ई०के दिसम्बर मास यह मार डाले गये।

११ मोन्तासिरका शासन—बापके मरते ही मोन्तासिरने अपनेको खलीफा बतलाया था। यह बहुत कमजोर और अहमद इब्न् खब्र नामक वजीर और तुर्की सेनापतियोंके हाथकी काठपुतली बने हुए थे। कहते हैं, कि ६ महीने पीछे जहरके जरिये मोन्तासिर मर गये।

१२ मुक्तईमकी हुकूमत—मोस्तासिरके मरने पर उनके उनके चचेरे भाई अल मस्तईन नामसे खिलाफतके तख्त पर बैठे थे। परन्तु ८६५ ई०को वह बगदाद भाग गये और मोताज खलीफा हुए।

१३ मोताजका राज—८८६ ई०के जनवरी मास बगदादमें यह तख्त नशीन हुए और अपनी खिलाफतकी मुखालिफत करनेवाले तुर्की सेनापति वसीद और बोघाके पंजेसे छूटनेकी कोशिश करने लगे। इन्होंने अपने एक भाई मुवय्यदको मार डाला और दूसरे मुअफ्फकको मुल्कसे बाहर बगदादको निकाला था। परन्तु उन्हें फौजको कोई २०००००० अशरफियां तनखाह देनी थी। इतनी बड़ी तनखा चुका न सकनेसे वह पकड़ लिये गये और ८६८ ई०के जलाई मास कैदखानेमें भूखों मरे। इसी बीच सीस्तान और मिसरके सूबेदार आज़ाद हुए।

१४ मुहतदीकी खिलाफत—मोताजके गिरफ्तार होते ही वासिकके लड़के अल्मुहतदी खिताबके साथ खलीफा बने थे। वह शरीफतबा, सच्चे और जोरादर शख्स रहे। उन्होंने कलावतों और गवैयोंको निकाल बाहर किया और सब खेल कूद बन्द कर दिया। वह मुन्सिफीकी तर्फ मुतवज्जह हुए और लोगोंकी शिकायतें दूर करनेको उनसे खुले तौर पर मिलने लगे। ८७० ई०के जून महीने तुर्की सिपाहियोंने मुहतदीको मार डाला।

१५ मोतमीदकी खिलाफत—मुहतदीके मारे जाने पर मुतवक्किलके लड़के मोतमीदको खिलाफत मिली थी। परन्तु याकूबने बलवा खड़ा करके नीशापुरको दखल कर लिया और इराक पर भी धावा कर दिया। खलीफा खुदबखुद नबीका जामा पहन उससे लड़ने गये। आखीरमें मुवफ्फकने उसे मार भगाया। ८६९से ८८३ ई० तक बसरामें हबशियोंका बलवा दबाना पड़ा था, जिसमें बहुतसा रुपया खर्च हुआ। ८८२ ई०को खलीफाको सीरीया और मेसोपोटेमियाके राजा अहमदके वजीरने कैद करके सामरा भेजा था। ८८६ ई०को अहमदकी पोती मोतमिदसे ब्याही गयी। दशवर्ष पीछे खलीफाके सेनापति मुकतफीने मिसर विजय किया।

इनके शासन-कालको सम्राट् १म बसील मुसलमानोंसे कामयाबीके साथ लड़े, किन्तु ८८४ ई०को बुरे तौरसे हारने पर उनकी फौज, सेनापति और कितने दूसरे साथी मर मिटे।

१६ मोतदिदका शासन—८९१ ई०को मोतमिदके मरने पर उनके लड़के अबूल अब्बास अल् मोतदिद नामसे तख्तनशीन हुए। यह बहुत लायक और ताकत वर थे। हमदानकी मददसे मेसोपोटामियाके खरीजीय कुचल डाले गये। दक्षिण-पश्चिम मटीया अबू दोलाफ घराना दबा दिया गया। अजरबैजन और अरमेनियाके तुर्की सूबेदारोंने बलवा खड़ा करना चाहा था, परन्तु उनकी एक न चल सकी और इस साजिशमें शरीक होनेवाले तारससके बाशिन्दे सजायाब हुए और उनके जहाज जला डाले गये।

१७ मोकतफीकी खिलाफत ९०२ ई०को मोतदिदके मरने पर उनके बेटे मोकतफी खलीफा हुए। यह अपने आप फौज लेकर सीरीयाके कारमेथीयों पर चढ़े थे। खलीफाके सेनापति मुहम्मदने दुश्मनको पूरे तौर पर शिकस्त दी। परन्तु इस हारका बदला चुकानेको (९०६ ई०) मक्कासे लौटनेवाले कारवाके २०००० आदमियोंको मार डाला और बहुतसा माल असबाब लूट लिया।

मोकताफीके राजत्व कालको बेमजातीयोंसे बड़ा युद्ध हुआ। ९०५ ई०को यूनानी सेनापति अन्ड्रोनिकसने मरश अधिकार किया और हलबतक दबा लिया था, परन्तु ९०७ ई०को समुद्रमें मुसलमान फतेहयाब हुए और इकोनियमको दबा बैठे। अन्तको बैजन्तीय सम्राट्को बगदाद दूत भेज सुलह करनी पड़ी।

१८ मोकतादिरका शासन—९०८ ई०के अगस्त मास मोकताफीके एकाएक मरने पर मोकातादिरको खिलाफत मिली थी। यह मोकताफीके भाई थे। तख्तनशीनीके वक्त इनकी उम्र १३ साल की रही। बगदादके बहुतसे बड़े आदमियोंने बलवा करके पहले खलीफा मोताजके बेटे अबदुल्लाको खिलाफत सौंपी थी, परन्तु मोतादिदके घरवालोंने उन्हें मार डाला। मोकतादिरमें अच्छे गुणोंका अभाव न होते भी उन्होंने शासनकार्य अपनी

मां, अपनी महिलाओं और ख़वाजोंको सौंप रखा था। इन्होंने खजानेका ख़ब रुपया उड़ाया और अमीर आदमियोंको लूटा मारा। ८२३ ई०को कारमेथीयोंने बसरा दख़ल किया और इसके दूसरे ही वर्ष मक्कासे लौटते एक कारवाको दबा लिया था। फिर कूफा उनके हाथ लग गया। बगदाद सरकारने कारमेथीयोंको दवाना चाहा था, परन्तु उन्होंने (८२७ ई०) एक बड़ी फौजको हराया और बगदाद पर भी अपना हाथ बढ़ाया। दूसरे वर्ष मक्का लूट लिया गया। दुश्मन काला पत्थर भी लहासा उठा ले गये, परन्तु ८५० ई०को इमामके कहनेसे वह काबे वापस आया ८२८ ई०को मोकतादिरको तख्तसे उतारनेकी साजिश हुई, परन्तु उनके सेनापति मूनिमने उन्हें अपने घर ले जाकर छिपा रखा। फिर वह गद्दी बैठाले गये थे। ८३२ ई०को मूनिस अपने खिलाफ साजिश होते देख मोसल चले गये और वहांसे बहुतसी फौज इकट्ठी करके बगदाद पर चढ़े। अकतूबर मासको जो युद्ध हुआ, मोकतादिर मारे गये। मरते वक्त इनकी उम्र ३८ वर्ष थी।

१९ काहिरकी हुकूमत—मोकतादिरके खेत रहने पर काहिर खलीफा बने थे। यह शराबी थे और अपने खर्चके लिये लोगोंकी जायदादें जबत् करके रुपया वसूल करते थे। किन्तु ८३४ ई०के अपरैल महीने इनकी आंखें फोड़ डाली गयीं और तख्तसे उतार दिये गये, सात वर्ष पीछे गुर्बतमें इनके प्राण निकले।

२० राज़ीका राजत्व—काहिरके मरने पर मोकतादिरके बेटे अल् राज़ी बिल्लाने खिलाफत पायी थी। इनकी ताकत देखने लायक रही। खजाना खाली था, सिपाही तनखाह मांगते थे और बगदादमें बलवा उठ खड़ा हुआ था।

२१ मुतक्कीका मिनाकय—८४० ई०को राज़ीके मरने पर मोकतादिरके दूसरे लड़के अल मुत्तकीबिल्ला खलीफा हुए। बसराके किसी बरीदीने धवा करके बगदाद दख़ल किया था, किन्तु सेनापति कुर्तकीनने उसे निकाल भगाया। बरीदीके फिर बगदाद पर चढ़नेसे मुतक्कीने मोसल भाग नसीर-उद्-दौलाकी पनाह ली, जिन्होंने जाकर बगदादसे बरीदीको हटाया था। परन्तु बजकमके पहले कप्तान तूज़ूनने ८४४ ई०को खलीफाकी आंखें निकलवा लीं।

२२ मुसतकफीकी हुकूमत—तूज़ूनने मुतक्कीका उत्तराधिकारी मुकतफीके लड़के अल् मुसतकफी बिल्लाको चुना था। ८४५ ई०को एक बुईद सरदारने बगदाद आक्रमण किया और खलीफाने उन्हें सुलतान उपाधिके अनुसार सम्राट् मान लिया। फिर खलीफाके साजिश करने पर उन्होंने इनकी आंखें फोड़वा डालीं।

२३ मोतीका सिंहासन—मुसतकफीके पीछे मोकतादिरके एक लड़के अल्मोती बिल्ला खिलाफतके मालिक हुए। यह नाममात्रको ही खलीफा रहे, रियासतका सब काम सुलतान करते और इन्हें ५०००० दिरहम रोज़ पेनशन देते थे। फिर तुर्की सिपाहियोंने बलवा मचा दिया और ८७४ ई०के अगस्त मास मोतीको तख्तसे उतार निकाल बाहर किया।

२४ ताईका अधिकार—मोती खलीफाका खाली खिताब अपने बेटे ताईको दे गये थे, जिन्हें तुर्कोंने तख्त नशीन किया। उधर बगदादमें अज़्द-उद्-दौलाने बख्तियारका उत्तराधिकार पाया था। इन राजाके समय बुईदोंकी ताकत बहुत बढ़ी। उन्होंने, जहां तक हो सका गिरी हुई मसजिदों और दूसरी इमारतोंकी मरम्मत करायी, अस्पताल तथा पुस्तकालय स्थापित किये और आवपाशीकी तरक्की दी। शीराजमें उन्होंने जो पुस्तकालय खोला था, जगत्का एक आश्चर्य रहा। उन्होंने करबलामें हुसैन और कूफामें अलीका मकबरा भी बनवाया था। किन्तु ८८३ ई०को उनके मरने पर उनके तीनों लड़के आपसमें लड़ने लगे। ८८० ई०को छोटे लड़के बाहा-उद्-दौला जीते और उन्होंने खलीफा ताईको (८८१ ई०) तखतसे उतार दिया।

२५ कादिरकी हुकूमत—फिर मोकतादिरके एक पोते अल् कादिर बिल्लाके नाम पर खलीफा बनाये। ८७६ ई०को सुबकतगीनने सीजिस्तानके बोस्त और बलूचिस्तानके कोसदारको अधिकार किया और भारतके राजा दयापालको हरा दिया था। वह सिन्धुके पश्चिम प्रान्तके राजा माने गये। उनके मरने पर उनके बेटे महमूदने सारा खुरासान और सीजिस्तान साथ भारतके एक बड़े

भागको जीता था। १०३१ ई०के नवम्बर महीनेमें कादिर मर गये। यह कुछ आध्यात्मिक ग्रन्थोंके रचयिता थे।

१६ कायमकी खिलाफत—कादिरके मरने पर उनके बेटे कायम नामसे खलीफा बने। बगदादकी हालत बिगड़ जानेसे इन्होंने तुगरलको अपनी मददके लिये बुलाया था। उन्होंने बगदाद पहुंच बुईदोंके खानदानको निकाल बाहर किया। परन्तु १०५८ ई०को तुगरलकी अदम-मौजूदगीमें शीयाओंने बगदाद राजधानी अधिकार करके मुसतनसीरको खलीफा बना दिया। तुगरलने उलटा नीचा देखा खलीफाको अपनी लड़कीकी शादी कर देने पर मजबूर किया था। परन्तु शादी होनेसे पहले ही वह मर गये। १०७५ ई०के अप्रेल महीने कायमकी भी मौत हुई।

१७ मुकतादीकी हुकूमत—कायमके मरने पर उनके पोते मुकतादीको खिलाफत मिली थी। १०८७ ई०को इन्होंने मलिक शाहकी बेटीसे अपनी शादी की, परन्तु अच्छा बर्ताव न करनेकी शिकायत पर उसको पीछे लौटना पड़ा। मरनेसे कुछ ही दिन पहले सुलताननें इन्हें बगदादसे निकाल बसरामें रहने पर मजबूर किया था। १०८४ ई०के फरवरी मास बरकियारोकके बगदादमें फतेहयाबीके साथ दाखिल होने पर शायद खलीफा जहर खा कर चल बसे।

१८ मुसतजहीरकी खिलाफत—मोकतादीके मरने पर उनके लड़के मुसतजहीर खलीफा हुए। उस समय इनकी उम्र १६ साल ही थी। ११०४ ई०को बरकिया रोकके मरने पर उनके भाई मुहम्मदने १११८ ई० तक सलतनत की। इनके पीछे १० महीने बाद मुसतजहीर भी मर गये।

१९ मुसतरशीदका राजत्व—१११८ ई०के अगस्त मास मुसतरशीद अपने बाप मुसतजहीरकी जगह खलीफा हुए। इन्होंने बेफायदा खलीफाके पुनरधिकार प्रतिष्ठाकी चेष्टा की थी। ११३४ ई०के अकतूबर महीने यह अपने महल-में रहने और कभी खेत न लड़ने पर मजबूर किये गये। फिर थोड़े दिन बाद इनका कतल हुआ।

२० राशिदका राजत्व—मोस्तरशीदके मरने पर उनके बेटे राशिदको खिलाफत मिली। इन्होंने मोमलके राजा जङ्गीके साथ अपने बापका अनुसरण करना चाहा था। परन्तु सुलतान मसऊदने उनकी फौजको मार भगाया और बगदाद दखल करके राशिदको ११३६ ई०में तखतसे उतार दिया। राशिद बच कर निकल भगे, परन्तु २ वर्ष बाद कतल कर डाले गये।

२१ मुकतफीकी खिलाफत—राशिदके पीछे मुस्ताजिरके लड़के मुसतफीको खिलाफत मिली थी। इन्होंने अमलमें बगदाद जिले और इराकमें भी हुकूमत की। ११६० ई०के मार्च मास इनका मृत्यु हुआ।

२२ मुस्तनजिदका राज्य—मुकतफीके मरने पर उनके बेटे मुस्तनजिदको खिलाफत हासिल हुई। इन्होंने हिल्लामें मजयदियोंका राज्य समाप्त करके खिलाफतकी हद बढ़ायी। मोसलके नुरुद्दीन्की फौजने मिसर जीता, फातिमाका घराना उखड़ा और सलादीनका दबदबा बढ़ा था। ११७० ई०के दिसम्बर मास यह अपने सेनापति डोमोंके हाथों मारे गये।

२३ मुसतदीका हुकूमत—मुसतनजिदकी मौत होने पर उनके लड़के और वारिश मुस्तदी खलीफा हुए, परन्तु कोई असली हुकूमत हासिल कर न सके। ११८ ई०के मार्च मास मुस्तदीकी मौत हुई।

२४ नासिरकी सलतनत—मुस्तदीके पीछे उनके बेटे नासिर खिलाफतके मालिक हुए। ११८७ ई० २ अकतूबरको सालादीनने फिर जेरूसलम दखल किया था। नासिर बड़े हौसलेमन्द थे। उन्होंने खोजस्तानको अपनी खिलाफतमें मिलाया और मौदियाके मालिक भी बन बैठना चाहते थे। परन्तु खिवाके खारिजमने अब्बासियोंको निकाल अलीके किसी वंशधरको खलीफा बना बगदादके तखत पर बैठानेकी ठान ली। उधर जङ्गीज खानने चीनका उत्तर प्रान्त जीता और अपना राज्य ट्रैन्स-ओकसिनियन सीमा तक बढ़ाया था। मुसलमानोंके इमामने उन्हें एक संदेशा दिया कि वह जाकर खिवाके राज पर जिसने उनके दूतोंका अपमान किया था, चढ़ जाते। १२२५ ई०को नासिरके मरने पर झुण्डके झुण्ड वहशी लोगोंने खिलाफतके पूर्व भागको कुचल डाला, शहरोंको जला दिया और लोगोंको बेरहमीसे मार डाला।

१५ जाहिरका राज्य—नासिरके मरने पीछे उनके बेटे जाहिर खलीफा हुए, परन्तु १२२६ ई०के मार्च मास मर गये।

१६ मुस्तनसिरकी खिलाफत—जाहिरके पीछे १२४२ ई०के दिसम्बर मास तक मुस्तनसिरने खिलाफत की, जब कि वह भी चल बसे। १२२७ ई०को जङ्गीज खान् मरे, परन्तु मङ्गोलीय खिलाफत पर हमला करनेसे न रुके। खीवाके अतिरिक्त राजा जलालुद्दीन् उनसे बराबर लड़ते रहे।

१७ मुस्तसिमकी हुकूमत—अपने बाप मुस्तनसिरके मरने पर मुस्तसिमको खिलाफत मिली थी। यह बगदादके आखिरी खलीफा रहे इनके रहनुमां अच्छे आदमी थे। १२५६ ई०के जनवरी महीने हलाकूने ओक्सस नदीको पार किया और इस्माइलियों की किलेबन्दीको गिराना शुरू कर दिया था। फिर १२५८ ई०के जनवरी मास वह खिलाफतकी राजधानी बगदादके पास आ पहुंचे। मुस्तसिमने बेफायदा आरजूमिन्नतके साथ सुलह करनेको कहा था। शहरमें लुटपाट और मारकाट मच गयी। खलीफा मारी छिपी हुई दौलत लानेको मजबूर किये और पीछे अपने २ बेटों और बहुतसे रिश्तेदारोंके साथ मार डाले गये। सार्वजनिक भवनोंमें आग लगी थी। इन्हींके साथ अब्बासियोंकी पूर्वीय खिलाफत खतम हुई, जो अबुल अब्बासके कूफामें दाखिल होनेके समयसे ५२४ वर्ष तक बराबर चलती रही।

तीन वर्ष पीछे अबुल कासिमने जो भाग कर मिसरमें जा छिपे थे, बेफायदा अब्बासियोंकी खिलाफतको वापस लाना चाहा। वह एक फौज लेकर बगदाद पर चढ़े, परन्तु राहमें ही वह युद्ध होने पर हारे और मार डाले गये। यह अल मुस्तनसिर बिल्ला नामसे खलीफा बन चुके थे। अब्बासियोंके कोई दूसरे वंशधर भी मिसरमें जा छिपे थे। कैरोमें वह अल् हाकिम नामसे खलीफा [illegible] हुए। उनके लड़कोंको भी खलीफाका खिताब मिला था, परन्तु किसीका कुछ प्रभाव न पड़ा। [illegible]को यह नाजुक हालत बहुत दिन तक चलती र[illegible]को तुर्कस्तानके सुलतान १म सलेमने मिसरको फतेह करके आखिरी खलीफा मुतवक्किलको अपने नाम पर खिलाफतसे अलग कर दिया। १५३८ ई०को कैरोमें वह मर गये।

अब्बासी घरानेके दूसरे वारिस मुस्तन्सिरके पोते मुहम्मदने पीछेको भारत अपनाहली थी। दिल्लीके सुलताननें उन्हें बड़ी इज्जतसे बिठाया, 'मखदूमजादा' बनाया और राजा-जैसा व्यवहार लगाया था। इनके लड़के बगदादमें १ दिरम रोज पर इमामका काम करते थे

खिलारी—बम्बई प्रदेशके एक जातीय गोरू या मवेशी। दाक्षिणात्यस्थ खानदेशके पश्चिम अञ्चलमें खिलारी नामक गोपालक रहते हैं। उन्हींके नाम पर इन पशुओंको भी खिलारी कहा जाता है। यह देखनेमें बहुत सुन्दर, बलवान् और द्रुतगामी होते हैं। इनका पश्वादि ज्ञान इतना तीक्ष्ण है, जिस कामके सिखलाते, मानो सहजमें ही समझ जाते हैं। खिलारी बैलोंकी एक जोड़ी ६मील घण्टेके हिसाबसे दो-तीन दिन तक बराबर गाड़ी खींच सकती है। गायोंका रङ्ग दूध-जैसा सफेद रहता और बैलोंके कन्धोंके पास थोड़ी ललाईका मेल रहता है। सींग मोटे और सीधे होते हैं। केवल गायके सींग टेढ़े-मेढ़े चलते हैं। सतारे और पण्ढर-पुरके बीच पहाड़ी प्रदेशमें इन पशुओंकी जन्मभूमि है।

खिलान (हि० पु०) बाजीकी परी हार। यह ताश वगैरहके खेलमें हुआ करता है।

खिलाह (सं० पु०) अश्वभेद, किसी किस्मका घोड़ा। यह पाण्डु केसरपुच्छ और कपिलवर्ण होता है। (जयदत्त)

खिलीकृत (सं० त्रि०) खिलच्वि-कृ-क्त। १ दुर्गम बनाया हुआ, जो आने जानेके लिये मुश्किल कर दिया गया हो। २ निरुद्ध, घिरा हुआ।

खिलीभूत (सं० त्रि०) खिल-च्वि-भू-क्त। दुर्गम बना हुआ, जो आने जानेके लिये मुश्किल हो गया हो।

खिलेयु (सं० पु०) खिलस्य हरेर्विष्णोर्गुणो यत्र, बहुव्री०। हरिवंश। (हरिवंशसमाप्तिपुष्पिका:)

खिलौना (हिं० पु०) क्रीड़ाद्रव्य, खेलकी जगह। यह बच्चोंके खेलनेको लकड़ी, मोम, मट्टी, कपड़े आदिसे बनाया जाता है। लखनऊके खिलौने मशहूर हैं।

खिलौरी (हिं० स्त्री०) धनिया, खरबूजा, ककड़ी वगैरह

के भुने हुए बीज। इसको भोजनके पीछे मुखशुद्धिके लिये व्यवहार करते हैं।

खिल्य (सं० त्रि०) खिले भवः, खिल-यत्। १ खिलसे उत्पन्न। २ परिशिष्टपठित, परिशिष्टमें पढ़ा जानेवाला। ३ प्राणियोंके गमनयोग्य। (ऋक् १०।१४२।३)

खिल्ली (हिं० स्त्री०) १ हंसी, ठठोली २ गिलौरी, पानका बीड़ा। ३ कील कांटा।

खिल्लो (हिं० स्त्री०) हंसोड़ी, खुब खिला कर हंसनेवाली।

खिवाड़ी (हिं० स्त्री०) इक्षुभेद, किसी किस्मकी ऊख।

खिसलाव (हिं० पु०) खिसकनेकी स्थिति, जिस हालतमें फिसल पड़े।

खिसलाहट (हिं० स्त्री०) खिसलाव देखो।

खिसारा (फा० पु०) क्षति, घटी, नुकसान।

खिसियाना (हिं० क्रि०) १ लज्जा आना, शर्म खाना। २ क्रोध करना, नाराज होना। (वि०) ३ लज्जित।

खिसियाहट (हिं० स्त्री०) १ लज्जा, शर्म। २ क्रोध, गुस्सा।

खिसौर—पञ्जाबके डेराइस्माइल-खां जिलाकी एक गिरिमाला, इसका दूसरा नाम 'रत्नारो रत्नमयगिरि' है। यह अक्षा० ३२° १३´ से ३२° ३४´ उ० और देशा० ७०° ५६´ से ७१° २१´ पू०के बीच अवस्थित है।

यह गिरिमाला १४०० हाथसे २३३४ तक ऊंची है। इसकी लम्बाई ५० मील और चौड़ाई ६ मील है। इसके गिरिशिखर पर कई एक प्राचीन हिन्दू दुर्गके खण्डहर हैं और बहुतसे भग्न देवमन्दिर हैं। वे सब आजकल "काफिरकोट" नामसे विख्यात हैं। इस गिरिमाला पर बिलोत नामके स्थानमें सैय्यद पीरकी मस्जिद है, यह निकटस्थ मनुष्यके निकट अति प्रसिद्ध है।

ऐसा कहा जाता है कि वह पीर लोहेकी नौका पर चढ़ कर सिन्धु पार होते थे। उनके वंशधर मखदूम बिलोतकी जागीर भोग करते हैं। यहांके चूना पहाड़ पर बहुतसे युगोंके प्राचीन प्रस्तरीभूत जीवदेह पाये जाते हैं। इसमें स्थान स्थान पर उष्णप्रस्रवण हैं, उनमेंसे खिसौरके निकट गरोवा नामका झरना प्रधान है। पहाड़के ऊपर कृषियोग्य बहुतसी उर्व्वरा जमीन है। यथेष्ट वर्षा होने पर गेहूं और बाजरा बहुत होता है। पहाड़के नीचेके देशमें तम्बाकू उत्पन्न होती है।

खिसी, खिसियाहट देखो।

खींच (हिं० स्त्री०) १ आकर्षण, खिंचाव। २ कनकैया लड़ानेका एक हाथ। इसमें अपना पतङ्ग दूसरे पतङ्गके नीचे ले जा कर उलटा घुमा कर खींचते हैं। खींचका हाथ ऐसा अच्छा होता है, कि दूसरेकी कनकैया कटनेसे नहीं बचती। इसमें डोर खींचते खींचते पीछेको भी हटा जाता है।

खींचतान (हिं० स्त्री०) १ लेवदेव, लप्पा झप्पी। २ उलट पुलट, धींगा धींगी।

खींचना (हिं० क्रि०) १ आकर्षण करना, घसीट लेना। २ निकालना, खोलना। ३ भरना। ४ चलाना, हिलाना। ५ वशीभूत करना, गुलाम बनाना। ६ लगाना। ७ पीना। ८ टपकाना, चुवाना। ९ निःसार करना, खा जाना। १० लिखना। ११ चित्र बनाना। १२ रोकना। १३ मंगाना।

खीखर (हिं० पु०) वन्य जन्तुविशेष, किसी किस्मका बन बिलाव। इसको कटास भी कहा जाता है।

खीचीचोहान—चोहान राजपूतोंकी एक शाखा। कोई कोई कहते हैं कि इन्होंने किसी समय देवी भगवतीको एक पात्र खीचड़ी भोग लगाया था। देवी संतुष्ट होकर इनको किसी स्थानमें जाने कहा' वहां इन्होंने बहुतसा सोना और चांदी पाया। तभीसे वे खीचड़ी नहीं खाते हैं। इसी खीचड़ीसे खीची नाम हुआ। किसी किसीका मत ऐसा है कि खिचरी वा खीच स्थानमें ये वास करते थे इसीसे ये खीच कहलाये और वह स्थान "खीचीवार" नामसे विख्यात हुवा।

खीची चोहान लोग कहलाते हैं। शाम्भरका राजा माणिकरावके २४ लड़के थे। उनमेंसे एकका नाम अजयराव था। यही अजयराव उन्हींके पूर्व्व पुरुष थे। उनके १६श पुरुषोंमें गयासिंहने जन्म ग्रहण किया था। उनको प्रसङ्गराव और पिल्पञ्जरराव नामके दो पुत्र थे। वे दोनों खीचीपुर पाटनमें रहते थे और दिल्लीपति पृथ्वीराजके समसामयिक थे। पृथ्वीराजने उन दोनोंको मालावारमें अठारह हजार ग्राम युक्त गागरोन् परगणा प्रदान

किया। ज्येष्ठ भ्राता निःसन्तान था। छोटेको चूड़पाल नाम का एक लड़का था जो माउमदयानमें राज करते थे। सिंहराव, रतनसिंह और मल्लसिंह ये तीनों चूड़पालके वंशधर थे। मल्लसिंहने अपने तीन लड़कोंके बीच राज बांट दिया। बड़े जत्पाल या जैत्पालके हिस्सामें गागरौन्, मध्यम अदलजीके भागमें अमलवाद और छोटे विलासके भागमें रामगढ़ पड़ा। छोटे लड़के विलासके कोई पुत्र नहीं होनेके कारण उसका हिस्सा दोनों भाइयोंके बीच बराबर २ बांट लिया। अबुलफजलने आइन अकबरीमें लिखा है कि जैत्पालने कमाल उद्दीनका नाश कर मालवराज्य (१३२४ ई० में) अधिकार किया था।

जैत्पालके उत्तराधिकारी पांच मनुष्य थे--१ सावतसिंह, २ राव कण्डवा, ३ राजा पिपाजी, ४महाराज द्वारिकानाथ, ५ महाराज अचलदास। अचलदासके राजत्व कालमें मुसलमानोंने गागरौनपर आक्रमण किया,। अचलदास खिचिराजकी पुरानी राजधानी खिचीपुरपाटन आत्मरक्षाके लिये भाग गये लेकिन पितृराज्यकी रक्षाके लिये १४४८ ई०में ये रणस्थल गये और मुसलमानोंके हाथसे मारे गये। इन्हींके साथ साथ गागरौनके ज्येष्ठ खीची राजवंशका भी शेष हो गया।

जैत्पालका छोटा भाई अदलजीके लड़केका नाम धारुजी था। ये अलाउद्दीन घोरके समसामयिक थे। खीची वंशमें धारुजी सविशेष भक्ति और श्रद्धाके पात्र थे। राजपूत भाट आज तक भी उनका कीर्तिगान करते हैं। भट्ट ग्रन्थमें लिखा है कि प्रधान प्रधान राजपूत राजागण सुलतान अलाउद्दीनके साथ अपनी अपनी लड़कियोंका आदान प्रदान करते थे। किन्तु धारुजी प्रबल प्रतापी सुलतानके आदेशको नहीं मानते थे। इसीसे राजा धारुजी अपना राज्य खोकर वनवासी हो गये थे। अन्तमें सुलतानने उन पर संतुष्ट हो कर खीचीवारके २४, जिला इन्हें प्रदान किये। उनके बारह लड़के थे। जिसमेंसे परिसिंह ज्येष्ठ था। इनके शासनकालमें खीचीवार राज्य दक्षिणमें शारङ्गपूर और सुजालपूर तक और पूर्वमें भिलसा तक फैला हुआ था। राजपूत भाट ऐसा कहा करते हैं कि परिसिंह

साठ लाख हिन्दू और अठारह लाख मुसलमानके ऊपर शासन करते थे। उनके बाद इसी वंशके सात मनुष्य राजा हुवे। यथा सातावजी, हेमजी, आसलजी, रङ्गमल्ल, पोहिताम, दुर्गादास और हामिरसेन। इन सात राजाओंके समय कोई घटना न हुई थी। राजा हामिरका लड़के नारायणदासने हुमायूंको सहायता की थी इस लिये उन्हें पांच हजार मसनदवारका पद मिला था। अकबर बादशाहने उनके लड़के शालिवाहनको आसिरगढ़ दिया था। शालिवाहनका लड़का दीपशाह था। सम्राट् शाहजहां दीपशाहको बहुत मानते थे। उन्होंने दीपको बारह जिलाकी जागीर और सुलतान अधिकार प्रदान किया था। दीपशाहके लड़के गरीबदासको दो लड़के थे। बड़े लालसिंहने १६७७ ई०में राघवगढ़ स्थापित किया।

लालसिंहके तीन लड़के थे—धीरत्, सूजन, और केशरी, ये तीनो भाई क्रमानुसार राघवगढ़, रामनगर, और गड़ामें राज्य करते थे।

धीरतके दो लड़के-गजसिंह और विक्रमादित्य थे। औरङ्गजेबके राज्यकालके अन्तिम समयमें जब सब वीर राजपूत उनके विपक्षमें थे और जिस उद्देगमें बादशाहकी मृत्यु हुई थी उस समय राजा गजसिंह भी उस षड्यन्त्रमें लिप्त थे और अपना पितृसिंहासन छोटे भाईको अर्पण कर अपने राज्यके संग्रामसिंहके यहां आश्रय लिया था।

विक्रमादित्यके दो लड़के—बलभद्र और बुधसिंह थे। बलभद्रने पितृसिंहासन पाया और बुधसिंहने ईशागढ़को जागीर। आजतक भी ईशागढ़ बुधसिंहके वंशधरोंके अधीन है। राजा बलभद्रका पुत्र बलवन्तसिंह और उसका लड़का जयसिंह था। जयसिंहके राज्यकालमें महाराष्ट्र सेनाने खीचीराज पर चढ़ाई की। उनसे जयसिंहने ५२ बार लड़ाई की। १८१६ ई०को सेनापति बपसा पांच हजार अश्वारोही और ८ दल पैदल सिपाही और बहुत गोलागोली लेकर बजरङ्गगढ़ और जयनगर पर अधिकार जमाया और उसके बाद राघवगढ़के राजा जयसिंहके विरुद्ध अग्रसर हुये। वीरवर चौहान राजाने अदम्य साहससे कुछ समय तक

राजधानीकी रक्षा की। किन्तु उनका वैसा साहस और अध्यवसाय व्यर्थ हुआ। उनके घरहीके किसी शत्रुके षड़यन्त्रसे राघवगढ़ विपक्ष सैन्यके हाथ आ गया। जयसिंह सीपुर जङ्गलमें अपना प्राण बचानेके लिये भाग गया। १८१६ ई०को उसी चिन्तासे उनकी मृत्यु हुई। उनके लड़केका नाम दुकुलसिंह थे। इन्होंने अपने पितृराज्यको उद्धार करनेके लिये बहुत स्थानोंसे सैन्य संग्रह कर शत्रुओंके विरुद्ध आक्रमण किया। इस समय वृटिशगवर्नमेण्टने १८२० ई०में राजा दूकुल सिंहको राघवगढ़ और बालभट जिला दिला दिया। तभीसे वह स्थान उन्होंके वंशधरोंके अधीन आ रहा है। वहां की आमदनी ३७५००० रुपये है। उसी समयसे वह स्थान ग्वालियर राजका करदराज्य हुआ।

खीज (हिं० स्त्री) १ चिढ़, झल्लाहट। २ चिढ़नेकी बात, झुझलाहट पैदा करनेवाली चीज।

खीजना (हिं० क्रि०) १ चिढ़ना, उकताना, बिगड़ना।

खीप (हिं० पु०) १ वृक्षविशेष, कोई पेड़। यह सघन तथा सरल रहता और पञ्जाब, राजपूताना तथा अफगानस्तानमें उपजता है। पत्र क्षुद्र एवं लम्बे लगते और शीतकालको छोटे छोटे फूल खिलते हैं। यह पशुओंके खिलाने और रस्सियां बनानेमें काम आता है। २ लाजवन्ती। ३ गंसधारा।

खीर (हिं० स्त्री०) दुग्धपक्व तण्डुल, जाउर, तसमई। पहले चावल चुन बिन करके सुखा लेते हैं। फिर उसे गर्म घीमें डाल अच्छी तरह भूना जाता है। चावल भुनते भुनते लाल हो जाने पर विशुद्ध दूध डालते हैं। जब दूधमें पकते पकते चावल फूल आता, चीनी देकर कड़ाही उतार ली जाती है। शीतल होने पर दूधमें बना हुआ यही भात 'खीर' 'जाउर' 'तसमई' आदि नाम धारण करता है। खीर खानेसे फिर किसी चीज पर मन नहीं चलता।

खीरचटाई (हिं० स्त्री०) अन्नप्राशन, पसनी, जिस दिन शिशुको सर्वप्रथम अन्न खिलाया जावे।

खीरमोहन (हिं० पु०) एक बङ्गला मिठाई। यह छेनेका बनता है।

खीरा (हिं० पु०) फलविशेष। खीरा कर्कटीजातीय एक फल है। यह वर्षा ऋतुमें उपजता और मोटा मोटा एक एक बित्ते तक लम्बा लगता है। खीराका सिरा काट दोनों कटे टुकड़ोंको छुरीसे गोद करके एक दूसरे पर रगड़ते हैं। इससे उसके मुंह पर फेन उमड़ आता है। फिर पहली कटी जगहके एक अङ्गुल नीचेसे दोबारा काटते हैं। कहते हैं, ऐसा करने पर खीरेका कड़ुवापन निकल जाता है। अन्तको छुरीसे बकला छील करके खीरा नमक और काली मिर्चकी बुकनीके साथ खाते हैं। यह खानेमें बहुत अच्छा लगता और डकार आने पर अपना ही मजा रखता है। खीरेकी तरकारी भी बनती है इसके बीज ठण्डाईमें पीस कर पीये जाते हैं। खीरा शीतल होता और बहुत खानेसे शीतज्वर उत्पन्न कर देता है।

खीरी (हिं० स्त्री०) बाखु, चौपायोंके थनके ऊपरका मांस। इसमें दुग्ध उत्पन्न होकर अवस्थान करता है।

खील (सं० पु०) कील पृषोदरादिवत् साधुः। कीलक, कांटा।

खील (हिं० स्त्री०) १ लाई, भुना और खिला हुआ धान। २ कील, कांटा। ३ अलङ्कारविशेष, कोई जेवर या गहना। स्त्रियां इसे नाकमें पहनती और लौंग भी कहती हैं। ४ मुंहासेकी कील। ५ भूमिविशेष, कोई जमीन। बहुत दिन पीछे जोती जानेवाली भूमि 'खील' कहलाती है।

खीलना (हिं० क्रि०) खील लगाना, गांठना।

खीली (हिं० स्त्री०) पानका बीड़ा, लगा लगाया पान।

खीवन (हिं० स्त्री०) उन्मत्तता, मस्ती।

खीवर (हिं० पु०) वीरपुरुष, बहादुर आदमी।

खीस (हिं० वि०) १ नष्ट, बरबाद, उजाड़। (स्त्री०) २ खिसियाहट, चिढ़। ३ कोप, गुस्सा। ४ बिगाड़, नाराजगी। ५ लज्जा, शर्म। ६ दांत निकालनेका भाव, ७ खिसारा, घाटा। ८ दुग्धभेद। ब्यानेके पीछे ७ दिन तक होनेवाला गायका दूध 'खीस' कहलाता है। इसका अपर नाम पेउस है।

खीसा (हिं० पु०) १ थैला, जेब। २ किसी किस्मकी थैली। यह कपड़ेकी बनती है। इसको हाथमें डाल

कर शरीर धोया मला जाता है। २ खोस, होठोंके बाहर दांतोंका निकास।

खुंटकढ़वा (हिं० पु०) कनमैलिया, कानका खूंट निकालनेवाला।

खुंटफारो (हिं० वि०) अति दुष्ट, निहायत पाजी, बड़ा बदमाश।

खुंड (हिं० पु०) १ तृणविशेष, एक घास। यह मोटा रहता और काली जमीनमें खूब उपजता है। खुंड दो हाथ तक बढ़ जाता और मोटा डण्ठल लाता है। इसका दूसरा नाम गुंड या गूनर भी है। पशु खंड बहुत कम खाते हैं। २ गूंठ, गुठा, कोई पहाड़ी टट्टू।

खुंडला (हिं० पु०) क्षुद्र गृहभेद, टूटा फूटा या गिरा-पड़ा झोपड़ा।

खुंदाना (हिं० क्रि०) कुदाना, नचाना, घोड़े पर चढ़के उसको कायदेसे चलाना फिराना।

खुक्ख (हिं० वि०) १ खाली, छूछा, जो रुपया पैदा खो या हार बैठा हो। २ खिलाल खाये हुआ, जो ताशके खेलमें हार गया हो।

खुखंड (हिं० पु०) राजिकाभेद, किसी किस्मकी राई।

खुखड़ (हिं० पु०) बड़ा घुना पेड़, खोखला दरख्त।

खुखड़ी (हिं० स्त्री०) १ कुकड़ी, आंड़ी, तकुवा पर लपेटा हुआ धागा। यह बुननेमें लगती है। २ छुरीका-भेद, किसी किस्मकी बड़ी छुरी। यह प्रायः नेपालमें तैयार होती है।

खुखुन्द—एक पुराना नगर। यह युक्तप्रदेशमें गोरखपुरसे १८ कोस दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है। किसी समय खुखुन्दमें बहुतसे लोग रहते और पुण्यस्थान-जैसा समझते थे। आज भी इसमें भूरि-भूरि प्राचीन कीर्तियां पड़ी हैं। पुराविद् कनिङ्हाम साहबने लिखा है—नालन्दाको छोड़कर इतना प्राचीन ध्वंसावशेष कहीं देखनेमें नहीं आया।

आजकल इस नगरमें उतने लोग नहीं रहते जगह जगह हिन्दुओंकी बहुतसी देवदेवियों और जैन तीर्थङ्करोंके मन्दिर तथा प्रतिमूर्तियां पड़ी हैं। परन्तु एक भी जैन यहां देख नहीं पड़ता। बीचबीच गोरखपुर और पटनेसे श्रावक और जैन बनिये यहां देव-दर्शनको आ जाते हैं। खुखुन्दमें हिन्दुओंके देवालय तथा देवमूर्तियां अधिकांश टूट गयी हैं।

खुगीर (फा० पु०) १ नमदा, घोड़ोंके चारजामेमें नीचे की ओर लगनेवाला कपड़ा। २ जीन, चारजामा। बेकाम चीजोंका जमाव 'खुगीरकी भरती' कहलाता है।

खुङ्गाह (सं० पु०) खुमित्यव्यक्तं शब्दं कृत्वा गाहते, गाह-अच्। श्वेतपीतवर्णाश्व, सफेद पीले रङ्गका घोड़ा।

खुचर (हिं० स्त्री०) व्यर्थ दोषारोप, झूठी ऐबजोई।

खुजदार—बलूचिस्तानके कलात राज्यका प्रधान स्थान और कलात खां नायबके देशी सहकारीका सदर। यह अक्षा० २७° ४८´ उ० और देशा० ६६° ३७´ पू०में पड़ता है। सिन्धी लोग इसको 'कोझियार' कहते हैं। इसके ऊपर सिरे पर १८७० ई०को एक किला बना था। यहां उत्तरसे कलात, दक्षिणसे कराची तथा बेला पूर्वसे कच्छी और पश्चिमसे मकरान तथा खारानकी सड़क आ करके मिली हैं। ग्रीष्म ऋतुमें स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता।

खुजलाना (हिं० क्रि०) १ रगड़ना, नाखूनसे घिसना। २ खुजली उठना, सुरसुरी चलना।

खुजलाहट (हिं० स्त्री०) खुजली, सुरसुरी, चुल।

खुजली (हिं० स्त्री०) १ खुजलाहट, सुरसुरी। २ कण्डू रोग, खारिश्त, खाजकी बीमारी।

खुजिस्तान—ईरानके दक्षिण-पश्चिम अवस्थित एक प्रदेश। इसके उत्तर लारिस्तान तथा बख्तियारी पर्वत, दक्षिण ईरानकी खाड़ी और पश्चिम शातउल आरब है। खुजिस्तानका शासन कार्य अब अरब और शुस्तरके शेखोंमें बंटा है। शुस्तर नगरमें ही इसकी राजधानी है। करुण, दिजफुल, जुराही, केरखा आदि बड़ी नदियां हैं। यहां बहुतसे लोगोंके घर नहीं, वह खेमोंमें ही रहते हैं। खोजस्तानमें भूगर्भस्थ गृह भी हैं। सगीदा नामकी बड़ी जलाभूमि पहले कालडियन झीलका एक टुकड़ा थी। ष्ट्राबोने इसका नाम 'सुसियाना' और हिरोदोतासने 'सिसा' लिखा है। केरखाके पास पुराने शहरका भग्नावशेष है।

खुञ्चाक (सं० पु०) खु न आक निपातनात् अकारस्य हिलम्। देवताड़ वृक्ष।

खुझर (हिं० पु०) वृक्षमूलभेद, पेड़की एक जड़। यह भूमिके भीतर न चल ऊपर ही ऊपर चारों ओर फैल जाती है।

खुज्जि—मध्यप्रदेशके रायपुर जिलामें दुर्ग तहसीलके अधीन एक जमींदारी। यह रायपुरसे ३५ कोस दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। अक्षा० २१° ५७´ उ० और देशा० ८१° ५७´ ३०" पू०में है। क्षेत्रफल (परिमाण) ७१ वर्ग-मील है। इसमें ३२ ग्राम और ३४५८ घर हैं।

खुझाक, खुझाक देखो।

खुटक (हिं० स्त्री०) १ खुटकनेका काम, ऊपरी तोड़ फोड़। २ खटका, फिक्र।

खुटकना (हिं० स्त्री०) उपरिभाग तोड़ना, सिरा कपटना। २ खटका होना, खड़खड़ाना।

खुटना (हिं० क्रि०) १ उद्घाटित होना, खुलना। २ अलग रहना, साथ छोड़ना। ३ पुरना, बाकी न रहना।

खुटपना (हिं० पु०) सदोषता, ऐबीपन, बुराई।

खुटाई (हिं० स्त्री०) खोटापन, बुराई, ऐब।

खुटाना (हिं० क्रि०) पुरना, बाकी न रहना।

खुटिला (हिं० पु०) कर्णालङ्कारभेद, करनफूल।

खुटिला—युक्तप्रदेशीय फतेहपुर जिलेकी खजुहा तहसील-का एक गांव। यह ई० आई० रेलवेके बिंदकीरोड ष्टेशनसे ६-७ कोस दक्षिण पड़ता है। इसमें कई एक देवमन्दिर बने और हिन्दी उर्दूकी एक पाठशाला भी है।

खुटेरा (हिं० पु०) खदिरवृक्ष, खैरका दरख्त।

खुट्ट (हिं० वि०) पृथक्, अलग।

खुट्टी (हिं० स्त्री०) १ कोई मिठाई। यह तिल और चीना या गुड़ मिला कर बनायी जाती है। २ सम्बन्ध-विच्छेद, अलाहदगी।

(हिं० स्त्री०) खुरंड, जख्मकी पपड़ी। यह जख्मका मवाद है, जो उसी पर जम जाया करता है।

खुड़मेरा (हिं० पु०) धान्यभेद, किसी किस्मका मोटा धान।

खुड़ (सं० पुं०) वातरक्तरोग, वाईके खूनकी बीमारी।

खुड़क (सं० पु०) खुलक अकारस्य उकारः। गुल्फ, टखना। खुलक देखो।

खुड़क (हिं० स्त्री०) खटक, खटका।

खुड़ला (हिं० पु०) चिड़ियाखाना, मुर्गियोंका दबा।

खुड़वात (सं० पु०) वायुरोगभेद, वाईकी एक बीमारी।

खुड़वा (हिं० पु०) घोघी, सर पर तेहरा चौहरा करके डाला जानेवाला कम्बल या कोई दूसरा कपड़ा। पानी या सर्दीसे बचनेके लिये खुड़वा लगाया जाता है।

खुड्डाक (सं० त्रि०) १ क्षुद्र, नाचीज। २ ह्रस्व, छोटा। ३ कनिष्ठ, पिछला।

खुड्डाकपद्मतैल (सं० क्ली०) वातरक्तका एक तेल, वाईके खूनकी बीमारी पर लगाया जानेवाला एक तेल।

खुड्डी (हिं० स्त्री०) सण्डास, पाखानेका गड्ढा।

खुराटावाड़—बम्बई प्रान्तके भावनगर राज्यका एक नगर। यह महुवासे उत्तर-पश्चिम, ११ मील दूर पड़ता है। इस स्थानसे एक मीलकी दूरी पर खिला-धार नामकी एक बौद्ध गुहा है। लोग उसको अघोरी बाबाकी गुफा कहते हैं। किसी सुन्दर दुर्गका ध्वंसा-वशेष भी यहां विद्यमान है। मालूम होता है कि मुसलमानोंकी अमलदारीमें यहां एक थाना भी रहा। दुर्गके कूपको 'पांच बीबीनो कुवो' कहते हैं। जैनों, वैष्णवों और स्वामी नारायणके अनुयायियोंके अच्छे अच्छे मन्दिर बने हैं। खुराटावाड़में व्यापार भी बहुत होता है। यह मालन नदीके दक्षिण तट पर अवस्थित है। इसकी पूर्व और आध मीलकी दूरी पर मालन, रोझकी और सिखियो तीन नदियोंका सङ्गम है। इसी सङ्गमका नाम त्रिवेणी है और वहां विल्वेश्वर महा-देवका मन्दिर बना है। श्रावण कृष्णा अमावस्याको वहां एक बड़ा मेला लगता है। वहां आम और नारियलकी उपज अच्छी है।

कहते हैं कि चम्पाराजवालके भादरोड़में राज्य शासन करते समय वह भूभाग निर्जन था। उनके २ पुत्र रहे—हेमगल और गांगायत। उन्होंने अपने पितासे विवाद करके वहां एक झोपड़ा जा बनाया। उसी समय मांगरोलके भूतपूर्व गवर्नर फतेह खान् अपने बापसे बिगड़ लूटमार कर जितना हो खजाना ले अपनी ५ बीबियोंके साथ वहां पहुंचे। उन्होंने इस

दोनों भाइयोंसे मेलजोल बढ़ाया था। परन्तु इनमेंसे प्रत्येक उनके वधकी गुप्त चेष्टामें लगा रहता और बिना दूसरेको कोई खबर दिये रुपया ले लेना चाहता। आखीर दो आपसमें झगड़ा बढ़नेसे हेमगजने उनको नागायतके दुर्भावकी सूचना दी। फतेहखांने नागायतको नजर दे एक किला बनाया। अहमदाबादने फौज भेज करके किला घेरा था। पहले तो फतेहखां भी तोड़ करके लड़े, परन्तु पीछेसे गियासद्दीनको भाग खड़े हुए। उनकी ५ बीवियोंने कूएंमें गिर करके प्राणत्याग किया था। उसीसे उक्त कूए 'पांच बीबी नो कुओ' नाम पर अभिहित हुआ है। सुलतानकी फौजने पीछा करके फतेह खान्को पकड़ लिया और अहमदाबादमें कैद कर दिया। वहीं उनका मृत्यु हुआ था। फिर हेमगलजीने उसे अधिकार किया और कुछ पीढ़ियों तक उनके वंशज यहां रहे। इस वंशके बाल खेंगारजी अन्तिम वीर थे। उनकी नौकरीमें बहुतसे बमार अहीर रहे। परन्तु यह उनको बहुत सताया करते थे। इसीसे उन्होंने खेंगारजीको जो जागता पकड़ करके झालोंमें डाल दिया और उनका काम तमाम किया। अहीरोंने मालिक बन करके ऊधमार मचायी थी। परन्तु मुसलमानोंने उन्हें जीत करके यहां एक थाना बैठाया। मुगल साम्राज्य नष्ट होने पर कुच्छके ...मानोंने इसे लूटा और मार उजाड़ा। १७८५-८६ ई०को ठाकुर वख्त सिंहजीने महुआ विजय करने पीछे इसे फिर बसाया था। उसी समयसे यह भावनगर राज्यमें लगता है। लोकसंख्या प्रायः दो सहस्र है।

खुतन—पूर्व तुर्किस्थानके मध्यवर्ती एक जनपद। यह इयरकन्दसे दक्षिण-पूर्व खुतन और काराकास नदियोंके सङ्गमस्थान पर अक्षा० ३७° १५´ उ० और देशा० ७९° २५´ पू०में अवस्थित है।

मध्य एशियामें यह जनपद अतिप्राचीनकालसे ही समृद्धिशाली जैसा प्रसिद्ध है। ई०से १४० वर्ष पहले इसका चीनके साथ बड़ा लगाव था। उस समय बौद्धधर्मका अधिक प्रचार था।

खुतन नगर चारों ओरसे दुर्भेद्य प्राचीरसे घिरा हुआ है। यहां अठारह हजार घर हैं और डेढ़ लाख मनुष्य रहते हैं। विदेशी वणिक्के ठहरनेके लिये दश सराय हैं। बहुतसे मनुष्य व्यापार करनेके लिये यहां आते हैं।

खुतबा (अ० पु०) १ प्रशंसा, तारीफ। २ राजाके यशकी घोषणा।

खुताइन—युक्तप्रदेशके जौनपुर जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५° ५०´ एवं २६° १२´ उ० और देशा० ८२° २१´ तथा ८२° ४६´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका रकबा ३६२ वर्गमील है। खुताइनमें ५ परगने और ७०० गांव लगते हैं। लोकसंख्या २६८४३८ हैं। किसानोंको ५१७०५०) रु० मालगुजारी देनी पड़ती है। इसमें २७७०००) रु० राजस्व है। इस तहसीलमें गोमती नदी बहती है। इसी नदीको राह लोग आते जाते हैं। खुताइन ग्राममें कचहरी लगती है। यह स्थान अक्षा० २५° ५८´ ७´´ उ० और देशा० ८२° ३६´ ५८´´ पू०में गोमती नदीके किनारे जौनपुर शहरसे ९कोस उत्तर-पश्चिम पड़ता है। गांवमें कोई ... हजार लोग बसते हैं। बुधवार और शनिवारको बाजार भरता है।

खुत्थ (हिं० पु०) ठूंठ, बोटा, पेड़का एक हिस्सा। पेड़ काट डालने पर जड़का जो ऊपरी भाग बच जाता, खुत्थ कहलाता है।

खुत्थी (हिं० स्त्री०) १ खूंथी, खोभर। यह ज्वार अरहर आदिका वह अंश है, जो फसल कट जाने पर भी भूमिमें लगा रहता है। २ धरोहर, अमानत, थाती। ३ बसनी, रुपया रखनेकी थैली। खुत्थीको रुपया भर करके कमरमें बांध लेते हैं। ४ सम्पत्ति, दौलत, रुपया पैसा।

खुद (फा० अव्य०) स्वयं, अपने आप।

खुदकाश्त (फा० स्त्री०) कृषिभूमिभेद, खेतीकी एक जमीन। जिस भूमिको उसका प्रभु अपने आप जोतता बोता, खुदकाश्त कहा जाता है। परन्तु खुदकाश्त सीर नहीं होती।

खुदकुशी (फा० स्त्री०) आत्महत्या, अपने आपको मार डालनेका काम।

खुदगरज (फा० वि०) स्वार्थपर, मतलबी, अपना काम बनानेवाला।

खुदगरजी (फा० स्त्री०) स्वार्थपन, अपना मतलब देखनेकी बात।

खुदना (हिं० क्रि०) विदीर्ण होना, खुद जाना।

खुदमुख्तार (फा० वि०) स्वतन्त्र, जो किसीसे दबता न हो।

खुदमुख्तारी (फा० स्त्री०) स्वातन्त्र्य, आजादी, दूसरेके दबावमें न रहनेकी बात।

खुदरा (हिं० पु०) क्षुद्र वस्तु, फुटकर चीज। फुटकर चीजें बेचनेवालेको 'खुदरा फरोश' कहा जाता है।

खुदराय (फा० वि०) मनचला, अपनी तबीयतके मुवाफिक काम करनेवाला।

खुदरायी (फा० स्त्री०) स्वेच्छाचारिता, अपनी मर्जीके मुताबिक काम करनेकी बात।

खुदवाना (हिं० क्रि०) खोदनेके काममें दूसरेको लगाना, खनन कराना।

खुदवायी (हिं० स्त्री०) १ खुदवानेका काम। २ खोदनेकी मजदूरी।

खुदा (फा० पु०) परमेश्वर, ईश्वर।

खुदाई (फा० स्त्री०) १ ऐश्वभाव, खुदाकी सिफत। २ सृष्टि, दुनया।

खुदाई (हिं० स्त्री०) १ खोदनेका काम। २ खोदनेकी बात। ३ खोदनेकी उजरत।

खुदागञ्ज—युक्तप्रान्तके शाहजहानपुर जिलेकी तिलहर तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० २८° ८´ उ० और देशा० ७९° ४४ पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या कोई ६२५६ है। कहते हैं कि १८वीं शताब्दीके मध्यभागको वहां एक बाजार बनाया गया, यहां १८५० ई० तक अंगरेजोंके अधीन अपना तहसीलका सदर रहा।

खुदावन्द (फा० पु०) १ परमेश्वर। २ अन्नदाता, मालिक ३ महाशय, हुजूर।

खुदाबन्द खान्—अमीर-उल्-उमरा शायस्ता खानके लड़के। यह अपने बापके जीतेजी एक हजारी मनसबदार और बरारप्रदेशके शासनकर्ता थे। १६९४ ई०को अपने पिताके मरने पर इन्होंने दिल्ली आकर जमायत उल्-मुलुक असद खांकी लड़कीसे शादी की। १७०० ई०में औरङ्गजेबने इन्हें बिदर और बीजापुर-कर्णाट-का शासनकर्ता और अढ़ाई हजारी मनसबदारका पद प्रदान किया। बादशाहके मृत्यु समय ये तीन हजारी मनसबदार हुये थे। बादशाहके मरने पर उनके लड़कोंके विवादमें यह आजिमशाहका पक्षावलम्बन कर लड़े थे और १७०१ ई०को लड़ाईमें आहत होकर पञ्चत्वको प्राप्त किया।

खुदाबाद—भारतका एक प्राचीन नगर। यह सिन्धुप्रदेश-के करांची विभागके अन्तर्गत दादू तालुकके भीतर है। दादूसे ४ कोस दक्षिण-पश्चिम और सेहवानसे ८ कोस उत्तर-पूर्व है। अक्षा० २६° ४०´ उ० और देशा० ६७° ४६´ पू०में अवस्थित है। आजकल यह नगर श्रीहीन हो गया है। सत्तर वर्ष पहले तक-पुरके मीर यहां वास करते थे। उस समय यह समृद्धि-शाली था और बहुतसे मनुष्य रहा करते थे। तकपुर-के मीरोंका मकबरा आज भी इसकी पहली बढ़तीका परिचय देता है।

खुदियाँ—पञ्जाब-प्रान्तके लाहोर जिलेकी चुनियां तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० ३०° ५९´ उ० और देशा० ७४° १७´ पू०में मूलतान-फिरोजपुर-रोड पर पड़ता है। आबादी लगभग ३४०१ है। नगरके पास हो एक नहर बहती है। १८७५ ई०को यहां म्युनि-सपालिटी पड़ी। नगरमें एक अस्पताल है।

खुदी (फा० स्त्री०) १ अहम्मन्यता, अपनी धुन। २ अभि-मान, शेखी।

खुद्दा (हिं० स्त्री०) १ कणा, किनकी। २ तलछट, जलके रसके नीचे बैठ जानेवाला मैल।

खुनकी (फा० स्त्री०) शीतलता, सरदी।

खुनखुना (हिं० पु०) बालकोंका एक खिलौना। इसे घुनघुना या झुनझुना भी कहते हैं। हाथमें पकड़ कर हिलानेसे यह खुनखुनाने लगता है। छोटेसे दस्तेमें लकड़ी, लोहे या किसी दूसरी धातुका छोटासा पोला लट्टू जोड़ दिया जाता है। उसीमें छोटे छोटे कंकड़ या दूसरे कड़े दाने भरे रहते, जो घुनघुनेके हिलते ही आवाज देने लगते हैं।

खुनती—१ बिहारके रांची जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २२° ३८´ तथा २३° १८´ उ० और देशा० ८४° ५६´ एवं ८५° ५४´ पू०के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल ११४० वर्गमील है। लोकसंख्या १८८७३० होगी। १९०५ ई०में इसको उपविभाग बनाया गया।

२ बिहार-रांची जिलेके खुनती उपविभागका सदर। यह अक्षा० २३° ५´ उ० और देशा० ८५° १६´ पू०में अवस्थित है। आबादी प्रायः १४४६ है। अपने प्रान्तमें यह केन्द्रीय व्यापारका स्थान है।

खुनदलु—पञ्जाबके हिन्दू राज्योंके बीच एक ह्रद (Lake) यह शतद्रुसे शिवालिक तक फैला हुआ है और १३८ फीट गहरा है। समुद्रपृष्ठसे २८०० फीट ऊंचा है।

खुनस (हिं० स्त्री०) बिगाड़, नाराजगी, अनबन।

खुनसाना (हिं० क्रि०) बिगड़ना, नाराज होना।

खुनसी (हिं० वि०) गुस्सावर, बिगड़ उठनेवाला।

खुफिया (फा० वि०) छिपा हुआ, पोशीदा।

खुफिया पुलिस (हिं० स्त्री०) सफेद पुलिस, सी० आई० डी०।

खुभना (हिं० क्रि०) चुभना, धंसना, घुसना, लगना

खुभी (हिं० स्त्री०) १ कर्णालङ्कारविशेष, कानमें पहननेकी लौंग। २ खुमी।

खुमरा (फा० पु०) किसी किस्मके फकीर। यह भीख मांगते और मुसलमान होते हैं। खुमरा अधिकतर पश्चिममें ही देख पड़ते हैं।

खुमान—चित्तोरके एक राणा। यह बाप्पाके पुत्र, अपराजितके पौत्र और राणा कालभोजके प्रपौत्र थे। इनका अपर नाम कर्ण था। योगीवर हारीतके तपस्या स्थल पर एकलिङ्गका प्रसिद्ध मन्दिर बनाया था। ९वीं शताब्दीके आरम्भ होमें पिताके मरने पर यह चित्तोरके सिंहासन पर बैठे। इनके राजत्वकालमें ८१२-३६ ई०का मुसलमानोंने कई बार चित्तोर पर आक्रमण किया। खुरासानके अधिपति मुहम्मद शत्र दलके अधिनायक थे।*

* खलीफा हारूं अल रसीदने अपने पुत्र अल मामूंको खुरासान सिन्ध और भारतीय यमन राज्य दे डाला था। वही मामूं महाराज खुमानके समकालवर्ती रहे। सुतरां स्पष्ट ही अनुमित होता है कि लिपिकारोंने असावधानतः मामूंके बदले मुहम्मद लिख दिया होगा।

खुमान चौबीस बार अदम्य उत्साहसे शत्रु विरुद्ध लड़े। फिर इन्होंने ब्राह्मणोंके परामर्शसे अपने छोटे लड़के मंगराजको राजा बनाया किन्तु थोड़े दिनके बाद ही उनको बुद्धि पलटी। परामर्शदाता ब्राह्मणोंका नाश कर फिर भी राजगद्दी पर बैठे।

इस समय ये बहुत दिन तक राजा न रहे। पापका प्रायश्चित्त पड़ा। ईश्वरकी इच्छासे उनके दूसरे पुत्र मङ्गलने उनको शीघ्र ही राजच्युत और निहत करके पितृसिंहासन आरोहण किया। खुमान स्वजातीयोंमें ऐसे गौरव और सम्मानभाजन हुए थे कि आजतक भी उदयपुरमें किसी व्यक्तिके पद स्खलन होने या हिचकी आने पर पार्श्वस्थ मनुष्य "खुमान तुम्हारी रक्षा करें" कह कर आशीर्वाद दिया करते हैं।

खुमान—बुंदेलखण्डस्थ चरखारी राज्यके एक हिन्दी कवि। इनका जन्म १६८३ ई०को हुआ। यह जन्मान्ध और बिलकुल अशिक्षित थे। कहते हैं—कोई साधु पुरुष एक बार उनके घर गये और ४ मास वहां निवास करके जब जाने लगे, बहुतसे सम्भ्रान्त पुरुष उन्हें चरखारीसे बाहर पहुंचाने लगे। थोड़ी दूर पहुंचने पर दूसरे लोग तो लौट पड़े, परन्तु साधुके प्रत्यावर्तनका बहुत कहने पर भी खुमान उन्हींके पास ठहर गये। खुमानकी दलील थी-'मैं क्यों अपने घर वापस जाऊं? मैं अन्ध, अशिक्षित और घरके किसी कामका नहीं! मसल मशहूर है—धोबीका कुत्ता घरका न घाटका' साधुने इस पर सन्तुष्ट हो उनकी जिह्वा पर सरस्वती-मन्त्र लिख दिया और उनसे पहले अपने कमण्डलुकी वर्णनामें कविता बनानेको कहा। उन्होंने इसकी प्रशंसामें शीघ्र ही २५ कवित्त बनाये, फिर साधुके चरण छू करके घर वापस आये। यह संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओंकी कविता करते थे।

एकबार इन्होंने ग्वालियरमें सेंधिया राजाके कहनेसे रात भरमें ७०० श्लोक लिखे। 'लक्ष्मणशतक' और 'हनुमान् नखसिख' इनके प्रधान ग्रन्थ हैं।

खुमान सिंह—इनका उपनाम खुमान रावत गुहलोत था। यह मेवाड़ प्रान्तीय चित्तोरके राजा थे। ८३० ई० इन्होंके सम्मानमें 'खुमान रायसा' ई० १९वीं

गयाओंका लिखा गया। उसमें खुमान रावल और उनके वंशका इतिहास दिया हुआ है।

खुमार (अ० पु०) १ नशा, मद। २ नशेका उतार।

खुमारी (हिं० स्त्री०) खुमार देखो।

खुमी (हिं० स्त्री०) १ क्षुद्र उद्भिदोंकी एक जाति। इनमें पत्ते या फूल नहीं लगते। भुंफोड़, ढिंगरी, कुकुरमुत्ता आदि खुमी कहलाते हैं। यह हरित कोषाणुसे शून्य रहते, दूसरे वृक्षोंकी भांति मृत्तिका प्रभृति पदार्थोंसे अपने शरीरको पुष्टि नहीं कर सकते, देखनेमें सफेद या मटमैले लगते और अन्य वृक्षों वा जीवोंको आहार करते हैं। वर्षा ऋतुको सड़े आर्द्र काष्ठ पर गोल गोल छोटी खुमी जग आती है। इसे कठफूल कहा जाता है। इसमें जहर होता है। खुमीका शरीरकोष अन्य वृक्षोंसे विभिन्न रहता है। इसके कोषाणु सूत जैसे लम्बे निकलते हैं। खुमी दो प्रकारकी होती है—हरे भरे वृक्षोंके रससे पलनेवाली और सड़े गले मुर्दे खानेवाली। पहली तो गेरुईकी शक्लमें अनाजों पर लग जाती और दूसरी कठफूल, भूफोड़ आदिका रूप बनाती है। इसके वृक्ष डेढ़ इञ्चसे आठ दश इञ्च तक बढ़ते, छूनेमें कोमल लगते और छाते जैसे देख पड़ते हैं। इसीसे खुमीका अपना नाम छाता है। इसकी छतरीमें कई परत रहते हैं। भूफोड़, ढिंगरी आदिको खाया भी जाता है। शाकखाद्य। २ दांतोंमें जड़ी जानेवाली सोनेकी कील। ३ हाथीके दांतों पर चढ़ाया जानेवाला धातुका बना हुआ खोल।

खुरंड (हिं० स्त्री०) जख्मकी सूखी पपड़ी।

खुर (सं० पु०) खुर-क। १ शफ, सुम, टाप। यह पशुओंके पांवका निम्नस्थ भाग है और उनके उत्थित होने पर भूमिसे संलग्न रहता है। सींगवाले चौपायोंके खुर बीचसे फटे होते हैं। २ कोकदल, बेरकी पत्ती। ३ नखीनाम गन्धद्रव्य। ४ खट्वादि पादुक, पावाके नीचेका हिस्सा।

खुरक (सं० पु०) खुर इव कायति, कै-क। १ तिलवृक्ष। २ कोकिलाक्षक्षुप। (स्त्री०) ३ उत्तम वस्त्र।

खुरक रांगा (हिं० पु०) रङ्गधातुभेद, विरमखुरी रांगा। यह मृदु, श्वेतवर्ण तथा शीघ्र गलनेवाला होता है।

खुरका (हिं० स्त्री०) १ तृणविशेष, किसी किस्मकी घास। यह अफीमको बिगाड़ देती है।

खुरखुर (हिं० पु०) १ कण्ठशब्दभेद, गलेकी एक आवाज। यह कफ खिंचनेके कारण श्वास लेते समय कण्ठसे निकलता है। इसे 'घरघर' भी कहते हैं। २ धीरे धीरे खंखारनेकी आवाज। ३ दबे पांवों चलनेका शब्द।

खुरखुरा (हिं० वि०) खुरदरा, नीचा ऊंचा, गड़नेवाला।

खुरखुराना (हिं० क्रि०) १ खुरखुर करना। २ घरघराना। ३ गड़ना, नीचा ऊंचा पड़ना।

खुरखुराहट (हिं० स्त्री०) १ श्वासप्रश्वासके समय कण्ठस्वरकी कफ आदिसे उत्पन्न होनेवाली एक विकृति। २ खुरदरापन, नाहमवारी।

खुरचन (हिं० पु०) १ कोई मिठाई। दूधको कड़ाहीमें चढ़ा करके गर्म करते और मलाईको कड़ाहीकी चारो ओर एक सीखसे चढ़ाते चलते हैं। इसी प्रकार जब दूधका सब पानी जल जाता और कड़ाहीकी चारो ओर लगी मलाई जम जाती, कड़ाहीको नीचे उतार ठण्ढी कर देते और मलाईको छूरीसे खुरच लेते हैं। इसमें चीनी डालनेसे खुरचन तैयार बनता है। यह खानेमें बहुत अच्छा लगता है। २ कड़ाहसे खुरचा हुआ गुड़। ३ खुरच कर निकाली जानेवाली कोई चीज।

खुरचना (हिं० क्रि०) करोचना, करोना, किसी जमी हुई सख्त चीजको छुरीसे निकालना।

खुरचनी (हिं० स्त्री०) १ कसेरोंका कोई औजार। यह छेनी-जैसा रहता और बरतन साफ करनेमें चलता है। २ चर्मकारोंका कोई यन्त्र। ३ खुरचनेका काम देनेवाली कोई चीज।

खुरचाल (हिं० स्त्री०) कुत्सिताचरण, बुरा काम, पाजीपन।

खुरचाली (हिं० वि०) असदाचारी, बदमाश, विक्षेपिया।

खुरणी (हिं० स्त्री०) अखाड़ी, बड़ा बेंत। यह कपड़ेको

लम्बी लम्बी बनती है। बीचमें दोनों ओर आवश्यक वस्तु रखनेके लिये मुंह होता है। यह मुसाफिरोंके बड़े कामकी चीज है। दो थैले रहनेसे इसे अनायास घोड़े पर रख या कन्धे पर डाल सकते हैं। जैसा आराम खुरजीमें सामान रख कर चलनेसे मिलता, बैग या ट्रङ्कमें देख नहीं पड़ता।

खुरट (हिं० पु०) खुररोगविशेष, चौपायोंके सुमकी एक बीमारी। इसे खुरा, खुरहा या खुरपका भी कहते हैं। नावदानके कीचड़में जानवरको चलानेसे खुरट मिट जाता है।

खुरणस (सं० त्रि०) खुर इव नासिका यस्य, बहुव्री० नसादेशः टच् प्रत्यय। चिपिटनासिक, नकचपटा।

खुरतार (हिं० स्त्री०) खुरका आघात, टापकी चोट

खुरथी (हिं० स्त्री०) कुलत्थ, कुलथी।

खुरदा (खुरधा) उड़ीसाके अन्तर्गत पुरी जिलाका एक उपविभाग। यह अक्षा० १९° ४१′ एवं २०° २६′ उ० और देशा० ८४° ५६′ तथा ८५° ११′ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका परिमाण फल ९७१ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः ३५८२१६ है, जिसमें हिन्दुओंकी संख्या अधिक है। यहां १२१२ गांव बसते हैं। यह उपविभाग दो थानोंमें विभक्त है। खुरदा और बाणपुर।

उड़ीसाके प्राचीन हिन्दूराजाओंके अधःपतन होने पर शेष राजा यही क्षुद्र उपविभाग मात्र लेकर थोड़े समय तक स्वाधीन थे। इसके जङ्गल और पर्वतादि महाराष्ट्र अश्वारोही सेनासे दुर्भेद्य और दुरारोह होनेसे हीके कारण वे अपनी स्वाधीनताकी रक्षा करने पाये थे। अन्तमें १८०४ ई०को यहांके राजाने अङ्गरेज राज्यके विरुद्ध अस्त्र धारण किया, इसका परिणाम यह हुआ है कि अङ्गरेज-राजाने इनका राज्य छीन लिया। तभीसे यह अङ्गरेजोंके अधीन चला आ रहा है।

गौराङ्गमहाप्रभुके समसामयिक सूर्यवंशीय राजा प्रतापरुद्रदेवका १५२४ ई०को स्वर्गवास हुआ। इसके साथ साथ सूर्यवंशका गौरव भी नष्ट हो गया। उनके मरने पर उनके ३२ लड़कोंमेंसे बड़ा लड़का राजा बना। लेकिन वह प्रभूत क्षमताशाली मंत्री गोविन्द-विद्याधरके हाथसे मारा गया। उसके बाद दूसरा लड़का राजा हुआ। वरन मन्त्रीके कौशलसे मन्त्रिपुत्र मधु श्रीचन्दनके हाथसे प्रतापरुद्रके अवशिष्ट इकतीसों लड़के मार डाले गये। राज्यके अनेक क्षमताशाली मनुष्योंको मार कर मंत्री गोविन्दविद्याधर अकण्टक राज्य पा कर १५३३ ई०में राजा गोविन्ददेव नाम ग्रहण कर राज-सिंहासन पर बैठा। उस समय मुकुन्द हरिचन्दन नामका एक तैलङ्गी और प्रधान मन्त्री दनार्दन विद्याधर विशेष विख्यात थे। मुकुन्द कटकके शासनकर्ता हो कर राजा उपनामसे विख्यात थे।

इस समय बङ्गालके मुसलमान शासनकर्ता और दक्षिणमें गोलकुण्डाके मुसलमान राजाओंने उड़ीसाके विरुद्ध अस्त्र धारण किया। राजमहेन्द्री प्रभृति गोदावरी तीरस्थ स्थान लेकर गोलकुण्डा राजाके साथ विवाद ठाना। इस विवादके लिये युद्ध प्रारम्भ हुआ। राजा गोविन्द देव राज्य छोड़ कर आठ मास तक मालिगण्डा नामक स्थानमें रहनेके लिये बाध्य हुवे। इस समय इनके दो भ्रातृपुत्र रघुभञ्ज छोटरा और बलही श्रीचन्दनने जगन्नाथजीके मन्दिरके पाण्डोंको विनाश किया और कटकके शासनकर्ता मुकुन्द हरिचन्दनको कटकसे भगा कर राज-सिंहासनको ग्रहण किया। राजा गोविन्ददेवने इस संवादको पा कर गङ्गातीरमें अपने दोनों भ्रातृपुत्रको परास्त किया। आप गङ्गातीर पर मृत्युके कराल ग्रासमें फैंस गये और तत्पश्चात् मन्त्री दनाई विद्याधरने प्रतापरुद्रदेव नामके एक मनुष्यको राजसिंहासन पर बैठाया। यह बहुत अत्याचारी राजा थे। सिर्फ मन्त्री होके बलसे आठ वर्ष राज्य करने बाद निःसन्तान अवस्थामें इन्होंने देह त्याग किया। उसके बाद नरसिंह जाना नामक एक साहसी सरदार मुकुन्द हरिचन्दनको सहायतासे दनाई-विद्याधरको कारावद्ध करके आप सिंहासन पर बैठ गये। इस समय राजा गोविन्ददेवका भ्रातृपुत्र रघुभञ्ज छोटराने सैन्य संग्रह करके राज्य पर हमला किया; किन्तु मुकुन्द हरिचन्दनने उसे कैद कर डाला। एक वर्षके बाद नरसिंहजाना सिंहासनसे च्युत किया गया। अन्तमें मुकुन्द हरिचन्दनने तैलङ्गी मुकुन्ददेव नामसे १५५० ई०में राज-सिंहासन ग्रहण किया। ये बड़े विवेचक और

दयालु राजा रहे। अपने बुद्धिबलसे इन्होंने त्रिवेणी तकके देश अधिकार कर त्रिवेणीमें घाट और मन्दिर स्थापन किया। इन्हींके समय बङ्गालका नवाब सुलेमानके सेनापति कालापहाड़ने १५५८ ई०में राजाको परास्त और मार कर उड़ीसाको अपने अधिकारमें कर लिया।

मुकुन्ददेवके बाद दो मनुष्य नामही मात्रके राजा हुवे और वे दोनो मुसलमानोंके हाथसे मारे गये। तत्पश्चात् उड़ीस-राज्य २१ वर्ष तक अराजक अवस्थामें मुसलमानोंके अधिकारमें रहा। नामको भी एक राजा नहीं था। उसके बाद बहुतसी गड़बड़ीके पीछे दनाई मन्त्रीके पुत्र रणाई रामचन्द्रदेवने १५८० ई० को सर्दारोंके अभिप्रायानुसार-उड़ीसा महाराज नामसे सिंहासन ग्रहण किया। दनाई विद्याधर गजपति वंशके थे, इसलिये इनको वंशावली 'गजपतिवंश' नामसे विख्यात थी। उनके पूर्व्वगौरव नष्ट होने पर भी यह 'जमिदार वंश' नामसे पुकारा जाता है। महाराज रामचन्द्रदेवहीने कालापहाड़के ध्वंसावशिष्ट देवमन्दिरादिका निर्म्माण, संस्कार और देवमूर्त्तियोंका उद्धार किया। जगन्नाथदेवकी मूर्ति भी इसी समय नूतन प्रस्तुत की गयी। १५९२ ई०को राजा मानसिंह यहांके शासनकर्ता होकर आये। इस समय तैलङ्ग मुकुन्ददेवके दो लड़के और राजा रामचन्द्रके बीच राज्य पानेकी तकरार उठी। राजा मानसिंहने मध्यस्थ होकर इस गड़बड़ीको इस शर्तपर शान्त कर दिया कि खुरदा प्रदेश और पुरुषोत्तमक्षेत्र विना करके महाराज रामचन्द्र भोग करेंगे और महाराजकी उपाधि इन्हींको रहेगी। किन्तु अन्य और उसके अधीन अन्यान्य स्थान तैलङ्ग मुकुन्द देवके [illegible] पुत्र रामचन्द्र रायके अधिकारमें और सारणगढ़ चकोरी मुकुन्दके द्वितीय पुत्रके अधिकारमें रहेगा। ये भी राजा कहलायेंगे, किन्तु महाराज रामचन्द्र ही १२९ किलाके ऊपर हुकुमत करेंगे और सभोंमें इन्हींको प्रधानता रहेगी।

खुरदामें निम्नलिखित राजा राज्य करते थे—

रामचन्द्रदेव	१५८० ई०
पुरुषोत्तमदेव	१६०९
नरसिंहदेव	१६३०
गङ्गाधरदेव	१६५५
बलभद्रदेव	१६५६
मुकुन्ददेव	१६६४
दिव्यसिंहदेव	१६९२
कृष्ण वा हरिकृष्णदेव	१७१५
गोपीनाथदेव	१७२०
रामचन्द्रदेव (२रा)	१७२७
वीरकिशोरदेव	१७४३
दिव्यसिंह देव (२रा)	१७९६
मुकुन्ददेव (२रा)	१७९८

इसी अन्तिम राजाने अङ्गरेजोंके विद्रोही हो कर अपना राज्य नष्ट किया। इस वंशके राजगण अन्तमें नामही मात्रके 'जगन्नाथका राजा' वा 'उड़ीसाराज' कहलाकर राजदरबारमें सम्मानित होते थे, किन्तु यथार्थमें ये सिर्फ साधारण जमींदार।

अन्यान्य विशेष विवरण उत्काल शब्द देखो।

खुरदायं (हिं० पु०) बैलसे अनाज मांडनेका काम।

खुरनस् (सं० त्रि०) विकल्पेन टच् प्रत्यय। खुरणस देखो।

खुरपका (हिं० पु०) पशुरोगभेद, चौपायोंकी एक बीमारी। इससे उनके मुख तथा खुरोंमें दाने उभर आते, मुखसे लालास्राव होता, देह गर्म रह जाता, उष्ण श्वास चलता और पांव रखना कठिन पड़ता है।

खुरपा (हिं० पु०) १ बड़ी खुरपी। यह औजार लोहेका बनता और पकड़नेके लिये काठका दस्ता लगता है। इसको घास छीलने और जमीन गोड़नेमें व्यवहार करते हैं। २ चर्मकार यन्त्रभेद। इससे छील कर चमड़ा साफ किया जाता है।

खुरप्र (सं० पु०) खुर इव प्राति, खुर-प्रा-क। वाणविशेष, किसी किस्मका तीर।

खुरफ (हिं० पु०) कुलफा, एक साग। यह लोनिया-जैसा होता है।

खुरमा (अ० पु०) १ खारक, छोहारा। २ कोई पकवान। खुरमा मीठा और नमकीन दोनों तरहका बनता है। पहले मोटा आटा मोयन डाल कर दूधमें साना और उसी समय इच्छानुसार चीनी या नमक डाला जाता है। फिर मोटी रोटी जमा उसको बेल कर छोटे छोटे लम्बे तिकोने या चौकोर टुकड़े उतारते और उन्हें घीमें लाल करके भूनते हैं। कोई कोई सादे खुरमे बना कर भी चीनीमें पाग लेता है।

खुरली (सं० स्त्री०) खुरैः सह लाति पौनःपुन्येन यत्र, ला-क गौरादित्वात् ङीष्। १ शस्त्रप्रयोग, अस्त्रशिक्षा, हथियार चलानेकी तालीम। २ विपक्षके आक्रमणमें आत्मरक्षा करनेका अभ्यास, दुश्मनके हमलेसे अपनेको बचानेकी महारत।

खुरसानी (सं० स्त्री०) १ यमानीभेद, खुरासानी अजवायन। (पु०) २ खुरासानी घोड़ा।

खुरसोटा, खुरपका देखो।

खुरहर (हिं० स्त्री०) १ खुरोंके चिह्न, सुमके निशान्। २ जङ्गलमें पशुवोंके चलनेसे खुरोंकी बनी हुई कोई राह। ३ पगडण्डी।

खुरहा, खुरपका देखो।

खुरा (हिं० पु०) १ खुरपका। २ हलमें फाल या कुसियाकी मजबूतीके लिये लगाया जानेवाला लोहेका एक कांटा।

खुराई (हिं० स्त्री०) चौपायोंके दानों पैर बांधनेकी एक रस्सी।

खुराई—मध्यप्रदेशके सागर जिलेकी उत्तर-पश्चिम तहसील। यह अक्षा० २३° ५१´ तथा २४° २७´ उ० और देशा० ७८° ४´ एवं ७८° ४१´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका रकबा ८४० वर्गमील और आबादी कोई ८१७८२ है।

२ सागर जिलेकी खुराई तहसीलका सदर। यह अक्षा० २४° ३´ उ० और देशा० ७८° २०´ पू०में बीनाकी रेलवे लाइन पर पड़ता है। आबादी लगभग ६०१२ है। अब तहसीली एक पुराने किलेमें लगती है। यहां बहुतसे जैन बसते और उनके अच्छे अच्छे मन्दिर देख पड़ते हैं। १८६७ ई०को यहां म्युनिसपालिटी हुई। प्रतिसप्ताह मवेशियोंका बड़ा बाजार लगता है।

खुराक (सं० पु०) खुर-आकन्। १ पशु, चौपाया। २ यवनाल, जुआर।

खुराक (फा० स्त्री०) आहार-भोजन, खाना।

खुराकी (फा० स्त्री०) १ खानेके लिये दिया जानेवाला नकद पैसा। (वि०) २ पेटू, बहुत खानेवाला।

खुराफात (अ० स्त्री०) १ अश्लील तथा अकिञ्चन विषय, बुरी बात। २ निन्दावाद, गालीगुफ्ता। ३ उपद्रव, झगड़ा।

खुरायल (हिं० पु०) वपनके लिये प्रस्तुत खेत, जो खेत बानेके लिये तैयार हो।

खुरालक (सं० पु०) खुर इव अलति पर्याप्नोति, अल-ण्वुल्। लौहमय बाण, लोहेका तीर।

खुरालिक (सं० पु०) खुराणां आलिभिः कायति प्रकाशते, कै-क। नापितभाण्डी, छुरहरी। २ नाराच अस्त्र। ३ उपधान, तकिया।

खुरासनीवचा (सं० स्त्री०) खुरासानी या सफेद वच।

खुरासान—एक विस्तृत जनपद, कोई बड़ा मुल्क।

"हिङ्गुपीठं समासाद्य मन्त्रशास्त्रं सुरेश्वरी।
खुरासानाभिधो देशो म्लेच्छमार्गपरायणः॥" (शक्तिसङ्गमतन्त्र

हम लोग जिसको अफगानिस्तान बलूचिस्तान बोलते हैं, अफगान, बलूची और ब्रहुई जातियां इसे खुरासान कहती हैं; किन्तु यह बहुत बड़ा देश है, कोई पूरा पता नहीं लगा सकता कि यह ठीक कितना बड़ा है। किसी किसीके मतमें खुरासानके उत्तरमें आरल और काप्सीय ह्रदके बीचकी मरुभूमि दक्षिण-में लवण मरुभूमिसे पारसके दूसरे दूसरे भागोंमें पृथक् हुआ है, पूरबमें अफगानिस्तानकी सीमापर असभ्य जातियोंका निवास और उर्वरा भूमि तथा पश्चिममें रूसअधिकृत अहमदाबाद राज्य है। इसकी लम्बाई ५०० मील, चौड़ाई ४०० मील और क्षेत्रफल प्रायः दो लाख वर्गमील है। यह सीमा लेकर कईबार खुरासानके ऊपर विदेशियोंने आक्रमण किया। इसके नाना स्थानमें बहुत दफा नाम परिवर्तन हुआ है। आजकल भी सीमान्तवासी भिन्न भिन्न जाति इसे भिन्न भिन्न नामसे बड़ा करती हैं। मुगलसम्राट् बाबरने

अपनी जीवनीमें लिखा है "भारतवासी सिन्धु नदीके पश्चिमी किनारेके समस्त मुल्कोंको खुरासन कहते हैं।" यहां प्रायः १२ या १३ लाख मनुष्य रहते हैं। यह विस्तीर्ण प्रदेश पहले पारस और अफगानोंके अधिकारमें था। आजकल इसका अधिकांश रूसाधिकृत या रूसियोंके अधिकारमें है। प्रजा भी पारसकी अपेक्षा रूसकी अधीनतामें सन्तुष्ट है। यहां अरब, बलूच, बेयत्, चलई, कराय, खूरसानी, लेक, लेयर, मरदी, मुजदरणी, मिखा और तोमूर प्रभृति जातियां रहती हैं। यहां बहुतसी नदी और नाला हैं जिनमेंसे आद्रेक नदी प्रधान है। इसीके जलसे यहांकी जमीन उर्व्वरा और शस्यशाली हुई है। स्थान स्थान पर कुञ्जवन, उपवन, सुललित द्राक्षावन और चारणक्षेत्र हैं। यहांकी शोभा देखते ही मन मोहित हो जाता है। जिस समय पारस राज्यमें अन्तर्विद्रोह हुआ था, उसी समय तुर्कोंने ओक्सस नदी पार होकर खुरासनको अधिकारमें लाया था। इस समय महावीर रुस्तमने अपने भुजबलसे आफ्रासियावकको परास्त कर देशरक्षा की थी। जङ्गिस खाँ और तैमूरकी चढ़ाईसे खुरासनकी दशा शोचनीय हो गई। सुफाविर्योंके राजत्वकालमें उजबकने प्रति वर्ष शस्यक्षेत्र और नगरको लूटते यहां आते थे। उसके भयसे एक दिन भी प्रजा आनन्दसे चैन न करती थी।

खुरासानके कई एक भाग पारसके अधीन हैं जिनमेंसे मशेद नगर सुप्रसिद्ध है। इस नगरके बीचमें एक सुन्दर नेत्रप्रीतिकर समाधि-मन्दिर है। जिसमें इमाम और राजा हारुन अल-रसीदकी हड्डियां संरक्षित हैं। पारस के अन्तर्गत खुरासानके मनुष्य अतिबलिष्ठ और दुर्धर्ष हैं। सैकड़ों बार इन्होंने शत्रुओंके आक्रमणको सहन करके वंशपरम्परासे युद्धप्रिय प्रजा बन गयी है। इसी लिये नादिरशाहने एक दिन कहा था 'यही लोग पारस्यकी तलवार हैं'।

खुरासानी (फा० वि०) खुरासानदेशीय, खुरासान मुल्कके मुताल्लिक।

खुरासानी यमानी (सं० स्त्री०) यमनीभेद, खुरासानी अजवायन। यह कड़वी, रूखी, पाचक, ग्राही, उष्ण, मादक, भारी, वात बढ़ाने और पित्तको मिटानेवाली होती है। (वैद्यकनिघण्टु)

खुराही (हिं० स्त्री०) नीची ऊंची राह, अब खरके चलनेकी जगह।

खुरिकापत्र (सं० पु०) केनी नामक पत्रशाक, एक सब्जी।

खुरिया (हिं० स्त्री०) १ कटोरी, छोटा प्याला। २ फूटनेकी जोड़की गोलाई।

खुरिया—मध्यप्रदेशके जशपुर राज्यकी अधित्यका। यह अक्षा० २२° तथा २३° १४' उ० और देशा० ८३° १०' एवं ८३° ४४' पू०के मध्य अवस्थित है। यह उत्कृष्ट गोचरभूमि प्रदान करती है। मिर्जापुर आदि अन्यान्य स्थानोंके अहीर या गड़रिये अपने मवेशी यहां चरानेको लाते हैं।

खुरी (हिं० स्त्री०) १ खुरका चिह्न, सुमका निशान। २ द्रुतगामी नदीस्रोत, जोरसे बहनेवाला पानी। खुरीमें नाव चलाना कठिन पड़ जाता है। ३ मालद्वीपवासियोंकी कोई नाव। मालद्वीपी पहली हवामें इसी पर चढ़कर भारत आये थे।

खुरचनी (हिं० स्त्री०) १ खुरची जानेवाली चीज। २ खुरचनेका यन्त्र।

खुरू (हिं० पु०) १ खुरसे भूमि खोदनेका काम। इसमें चौपाये प्रायः डकारा या रांभा करते हैं। क्रोध वा आह्लादके समय ही खुरू होता है। २ उपद्रव, झगड़ा, बखेड़ा। ३ ध्वंस, बरबादी।

खुरूरू (हिं० स्त्री०) नारिकेलशस्य, खोपरेकी गरी।

खुर्जा—युक्तप्रदेशके बुलन्दशहरमें एक तहसील। जिसके बीच खुर्जा, जेवर और पहासू नामके तीन परगना हैं। यह अक्षा० २८° ४' एवं २८° २०' उ० और देशा० ७७° २९' तथा ७८° १२' पू०के मध्य अवस्थित है। यह यमुनासे काली नदी तक विस्तृत है। भूपरिमाण ४६२ वर्गमील। लोकसंख्या २६६८३८ है। यहां ३८४ गांव और ७ शहर बसते हैं। इसकी आमदनी ३३५६१० रुपये हैं। इस तहसीलमें एक दिवानी, एक फौजदारी अदालत और पांच थाना हैं।

२ उक्त खुर्जा तहसीलका प्रधान नगर और बुलन्दशहर जिलाके प्रधान वाणिज्यस्थान। अक्षा० २८° १५

उ० और देशा० ७७° ५१´ पू०में बुलन्दशहरसे पांच कोश दक्षिणमें अवस्थित है। लोकसंख्या २८२७७ है।

दिल्ली और मेरठ जानेको बड़ा बड़ा रास्ता यहां आकर मिला है और नगरके डेढ़ कोस दक्षिणमें इष्ट इण्डियन रेलवेका ष्टेशन है।

इस नगरमें अधिकांश अग्रवाल वणिया और केशगी पठान वास करते हैं। अग्रवाल वणिया जैनमतावलम्बी हैं, यही लोग आजकल यहांके प्रधान व्यवसादार हैं। इन्होंके यत्नसे यहां पर एक सुन्दर जैन-मन्दिर बनाया गया है। मन्दिरके भीतर और बाहर भागमें सोनेका काम किया हुआ है। मन्दिरके शिल्पनैपुण्य देखनेसे मालूम पड़ता है कि आजतक भी भारतवर्षमें शिल्प और चित्र-विद्याका लोप नहीं हुआ है। इस नगरके बीचमें एक सुन्द सरोवर है। नगरके बड़ा बाजार निर्म्माण करनेमें एक लाखसे अधिक रु० व्यय हुये थे।

खुर्द (फा० वि०) क्षुद्र, छोटा।

खुर्दबीन (फा० स्त्री०) सूक्ष्म दर्शनयन्त्र, बारीक चीजोंके देखनेका एक औजार (Microscope)। यह किसी प्रकारके खास शीशेसे तैयार होती है। इसको लगाकर देखनेसे छोटी चीज बहुत बड़ी लगती है।

खुर्दबुर्द (फा० वि०) नष्टभ्रष्ट, टूटाफूटा, गया गुजरा।

खुर्दा (फा० पु०) सामान्य द्रव्य, छोटी मोटी चीज।

खुर्दाफरोश (फा० पु०) सामान्य वस्तुविक्रेता, छोटी मोटी चीजोंका सौदागर।

खुर्रांट (हिं० वि०) १ बुड्ढा, पुराना। २ अनुभवी, भरा-भुगता। ३ काइयां, होशियार।

खुलक (सं० पु०) खुर-कुन् स्वार्थे कन्। जङ्घा और पाद-की सन्धि, जांघ और पांवका जोड़।

खुलका (सं० स्त्री०) नाभिगर्त्त, तोंदीका गड्ढा।

खुलदाबाद—हैदराबाद राज्यके औरङ्गाबाद जिलेका एक तालुक। इसकी आबादी कोई १४५१२ है। पूर्व तथा उत्तरकी यह देश पहाड़ी है।

२ हैदराबाद राज्यका औरङ्गाबाद जिलेके खुलदा-बाद तालुकका गांव। यह अक्षा० २०° १´ उ० और देशा० ७५° १२´ पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः २८४५ है। यहां औरङ्गजेब उनके लड़के आजम शाह, निजामराज्य प्रतिष्ठाता आसफशाह, नासरजङ्ग, अहमदनगरके नवाब निजामशाह, निजामशाही वजीर मलिक अम्बर, कुतुबशाही नवाबोंके अन्तिम तानशाह और बहुतसे मुसलमान साधुओंकी कब्रें बनी हैं। पहले उसे 'रौजा' कहते थे। यहां लोग स्वास्थ्यरक्षाके लिये आया करते हैं।

खुलना (हिं० क्रि०) १ उद्‌घाटित होना, खुल जाना। २ हटना, उघड़ना। ३ फटना, चिरना, विदीर्ण होना। ४ कटना, निकलना। ५ छूट पड़ना, सरकना। ६ लगना, ठहरना, मालूम पड़ना। ७ जारी होना, चलना। ८ भेद कहना, कच्चा हाल बताना। ९ सजना, अच्छा लगना।

खुलना—बङ्गालके दक्षिण-पूर्व दिशामें एक जिला। यह अक्षा० २१° ३८´ एवं २३° १´ उ० और देशा० ८८° ५४´ तथा ८९° ५८´ पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल २६८८ वर्ग मील है। लोकसंख्या १२५३०४३ है। इसके उत्तर यशोर जिला, पूर्वमें वाखरगञ्ज जिला, दक्षिणमें बङ्गोपसागर और पश्चिममें २४ परगना जिला हैं। इस जिलाका सदर खुलना शहर है। एक तरफमें पद्मा और ब्रह्मपुत्र दूसरी ओर भागीरथी, इन दोनोंके बीच असमान चतुर-स्राकारमें खुलना जिला अवस्थित है। यहां पर नदी और नाला यथेष्ट हैं। समस्त जिला प्रधान तीन भागोंमें बांटा गया है। उत्तर-पूर्व विभाग यशोर जिलाकी सीमासे बाघेरहाट तक है। यहांकी जमीन नीची और जलमयी है।

दक्षिण विभाग—खुलना-सुन्दरवनमें सर्वत्र नदी और जलमय प्रदेश हैं और सामान्य परिमाणकी उपज होती है। उत्तर-पश्चिम विभागकी जमीन अधिक ऊंची और वासके लिए भी उत्तम हैं। यहांपर खजूरका जंगल है और धान्यक्षेत्र भी अधिक है, यहां खजूरके रससे गुड़ प्रस्तुत होता है जो अत्यन्त उत्कृष्ट लगता है। यहीं-से अनेक देशोंमें चीनीकी रफ्तनी होती है। पूर्वांशकी जमीन वास करनेके लिये अत्यन्त उपयोगी है। नदी किनारे घनी बस्तियां अवस्थित हैं। यहांकी प्रधान नदियां मधुमती, भैरव, कपोताक्ष, भद्रा, आठारबांका, यमुना, इच्छामती, गलघसिया, बांशतला और शिरसा हैं। इन

नदियोंके किनारेकी जमीन कुछ ऊंची है।

१८८२ ई० के पहिले खुलना स्वतन्त्र जिला नहीं था, किन्तु यशोर जिलाका उपविभाग था। तत्पश्चात् २४ परगनासे सातक्षीरा उपविभाग और यशोरसे बागेरहाट नामक दूसरा उपविभाग लेकर खुलनाके साथ एकत्र करने पर एक नवीन जिलाकी सृष्टि हुई। यशोर और नदीयाके शासनकार्य सुविधा करने होके अभिप्रायसे ऐसी व्यवस्था की गई। यशोरसे दो उपविभाग स्वतन्त्र करके नदिया जिलाका भार कम करनेके लिये उससे बनगांव उपविभाग लेकर यशोर जिलामें मिला दिया गया। वस्तुतः बनगांव भौगोलिक अवस्थिति अनुसार यशोरके मध्य आ जानेसे सुविधा प्राप्त हुई। १८८२ ई०की पहली जूनको यह परिवर्तन हुआ।

खुलनामें भी अन्यान्य जिलाकी तरह मुन्सफी, सब्‌जज, जज, मजिष्ट्रेट, ज्वाइण्ट मजिष्ट्रेट, कलेक्टर, तथा, सिविल सार्जेन् हैं।

इस जिलामें १३ तेरह थाने, ११ चौकी और एक निमक-पासका एक अड्डा है। इस जिलाका सदर खुलना शहर है। भैरव नदी जिस जगह सुन्दरवनमें प्रवेश करती है ठीक उसी स्थानपर खुलना अवस्थित है। इसलिये इसको सुन्दरवनकी राजधानी वा प्रधान शहर कहते हैं। पहिले यह शहर लवण प्रस्तुत करनेका प्रधान स्थान था। आजकल भी निमकका कारबार यहां यथेष्ट होता है। इसके सिवा सातक्षीरा, कालारोया, कालीगञ्ज, देवहाट, चन्दनीया, बागेरहाट, कपिलमुनि, दौलतपुर, मोरेलगंज प्रभृति स्थान ही प्रधान है। सातक्षीरामें अनेक हिन्दू मन्दिर हैं। बागेरहाटमें साठगुम्बज प्रभृति खाँ जहान् आलीका बनाया भग्नावशेष है। [खांजहान् आलीदेखो।] कपिलमुनिमें सागरयात्रियोंकी भीड़ होती है। (कपिलमुनि देखो।)

खुलना, सातक्षीरा और बागेरहाटमें गवर्नमेण्टका दातव्य औषधालय है। उसके साथ साथ छोटा अस्पताल भी है। मोरेलगंजमें साहब जमीन्दारसे स्थापित किया हुआ दौलतपुरमें मह्सीनफण्डसे स्थापित और सातक्षीरामें नकीपूरके जमीन्दारसे स्थापित औषधालय है।

इस जिलामें आउस, आमन और बोरो तीन प्रकारके धान होते हैं। उसके अलावे मटर, पाट, ऊख, खजूर भी यथेष्ट होते हैं। सुन्दरवनमें बाहादुरी काठ, जलानेका काठ, मधू, कड़ी (मोम) इत्यादि पाये जाते हैं। चीनी, गुड़, नील और चावलकी यहांसे रफ्तनी होती है और लोहेकी चीज विलायतसे आती है। सातक्षीरा सर्वापेक्षा अस्वास्थ्यकर स्थान है। हैजा और ज्वर यहां बहुत होते हैं।

इस जिलामें हिन्दुओंकी अपेक्षा मुसलमानोंकी संख्या अधिक है।

खुलना शहर अक्षा० २२° ४९' उ० और देशा० ८९° ३४' पू०में अवस्थित है। यहां होकर ढाका और वाखरगंजसे चावल, श्रीहट्टसे चूना, और कमला नीबू, पावना, राजसाही और फरिदपुरसे सरसों, मोली दाल कलाई, पावनासे घी और सुन्दरवनसे लकड़ी कलकत्ते जाते हैं।

खुलवा (हिं० पु) द्रवीभूत धातुको सांचेमें भरनेवाला।

खुलवाना (हिं० क्रि०) खोलनेका काम दूसरेसे कराना, खुलाना।

खुला (हिं० वि०) १ अबद्ध, जो बंधा न हो। २ अवरोधरहित, बेरोक। ३ स्पष्ट, जाहिर।

खुलापल्ला (हिं० पु०) मृदङ्ग वा तबला बजानेकी एक रीति। इसमें दोनों हाथों या केवल वामहस्त द्वारा तबले पर खुली थाप लगा बजाना आरम्भ करते हैं।

खुलासा (अ० पु०) निचोड़, मतलब।

खुलासा (हिं० वि०) १ खुला, जो बन्द न हो। २ साफ, बेरोक। ३ स्पष्ट, जाहिर। ४ संक्षिप्त, मुख्तसिर।

खल्ल (सं० क्ली०) नखी नामक गन्धद्रव्य, नख।

खुल्लक (सं० त्रि०) खुल्ल स्वार्थे कन्। १ स्वल्प, थोड़ा। २ नीच, कमीना। ३ कनिष्ठ, छोटा। ४ दरिद्र, गरीब। ५ निष्ठुर, बेरहम। ६ खल, पाजी।

खुल्लतात (सं० पु०) खुल्लः कनिष्ठः तातस्य पितुः, पूर्वनिपातः। पिताका कनिष्ठ भ्राता, चचा।

खुल्लना—लक्षपति वणिक्‌की कन्या और धनपति वणिक्‌की पत्नी। यह स्वर्गकी अप्सरा रत्नमाला रहीं। दुर्गाके शापसे इन्हें मानवी होना पड़ा। इनके स्वामी धनपति जब गौड़राज्यमें वाणिज्य करने गये थे, अपनी इन्हें

बड़ा कष्ट दिया। धनपति वाणिज्य करके लौट आने पर लहनाको बहुत चाहने लगे। इनके पुत्रका नाम श्रीमन्त था। (कविकङ्कण-चण्डी)

खुशम (सं० पु०) खे शमेन मीयते, मा बाहुलकात् क। पथ, राह।

खुशमखुल्ला (हिं० क्रि०-वि) प्रकाश्यरूपसे, खुले तौर पर, सबके सामने।

खुश (फा० वि०) प्रीत, प्रसन्न, जो दुःखी न हो।

खुशकिस्मत (फा० वि०) भाग्यशाली, अच्छे नसीबवाला।

खुशकिस्मती (फा० स्त्री०) सौभाग्य, अच्छा नसीब।

खुशखत (फा० वि०) सुलेखक, अच्छा लिखनेवाला।

खुशखबरी (फा० स्त्री०) अच्छी खबर, भला समाचार।

खुशदिल (फा० वि०) १ प्रसन्नचित्त, मिलनसार। २ दिल्लगीबाज, हंसैया।

खुशनवीस (फा० पु०) सुलेखक, अच्छा लिखनेवाला।

खुशनवीसी (फा० स्त्री०) सुलेख्य, अच्छे अक्षरोंकी लिखावट।

खुशनसीब, खुशकिस्मत देखो।

खुशनसीबी, खुशकिस्मती देखो।

खुशनुमा (फा० स्त्री०) देखनेमें अच्छा लगनेवाला, जो उमदा देख पड़ता हो।

खुशनुमाई (फा० स्त्री०) देखनेकी बहार, सजावट, सुघराई।

खुशबू (फा० स्त्री०) सुगन्ध, अच्छीसी गमक।

खुशबूदार (फा० वि०) सुगन्धि, खूब महकनेवाला।

खुशरङ्ग (फा० वि०) १ खूब रङ्गदार, अच्छे रङ्गवाला, चटकीला। (पु०) २ देखनेमें अच्छा लगनेवाला रङ्ग।

खुशरङ्ग—हिन्दीके एक प्राचीन कवि। इनकी कविताका नमूना नीचे लिखते हैं—

> "गुलशनमें देखता हूं सब गुलरवोंमें तू है।
> तुझ गुलबदनकी प्यारे सारे चमनमें तू है॥
> जिस गुलको तूने प्यारा किया खूबीसे मामूर।
> हर फूल बोकलीमें गुलगूं सभीमें तू है॥
> यह रुकत ए चमनमें है गुल तरह तरहके।
> सब है जहूर तेरा सब रङ्गियोंमें तू है॥
> 'मेहमानी' तू ऐसा साकी तेरा न कोई।
> मुश्ताक तुझ दरसका इश्के चमनमें तू है॥
> जलवा तेरे खुशरङ्गका हर गुलमें है झलकता।
> दरयाव वर्ग कहता दस्ता गुलोंमें तू है॥"

खुशरू—हिन्दीके एक कवि। इनकी कविता बहुत मीठी होती थी।

> "बहुत रही बाबुल घर दुलहिन चल तोरे पीने बुलाई।
> बहुत खेल खेली सखियनसों अन्तकरी लरकायी॥
> नहाय धोयके वस्त्र पहिरे सब ही शृङ्गार बनायी।
> बिदा करनको कुटुम्ब सब आये सगरे लोग लोगायी॥"
>
> * * * * *
>
> गहली गहली डोलती आंगन मां अचानक पकड़ बैठायी।
> बैठत मलमल कपरे पहनाये केसर तिलक लगायि॥
> गुण नहीं एक अवगुण बहुतेरे कैसे नौशा रिझायी।
> खुसरू चली ससुरारी सजनी सङ्ग नहीं कोई आयी॥"

खुसरू अमीर (अमीर खुसरू) दिल्लीके मुसलमान बादशाहोंकी सभामें रहनेवाले एक विख्यात कवि। यह जातिके तुर्की रहे। खुसरूके बापका नाम अमीर मुहम्मद सैफ उद्दीन था। वह बाल्खीक देशसे भारतके उत्तर-पश्चिम पटियाला नगरमें आकर बस गये। १२५३ ई०को जन्म हुआ। जब बादशाह गयासुउद्दीन तुगलक भारतके सिंहासनको उजलाते थे, इन्होंने 'तुगलकनामा' नामक एक इतिहास बनाया। खुसरूने सब मिलाकर ८८ किताबें लिखी हैं। उनमें इस्तोरिरिहिस्त, सिकन्दरनामा आदि कई पोथियां मुसलमान लोगोंमें बड़ी इज्जत पाती हैं। सिवा इसके इन्होंने कुछ छोटी छोटी कवितायें भी बनायी हैं। खुसरू-रचित कतिपय पुस्तकोंके नाम यह हैं—पञ्चगञ्ज, लैला-मजनू, शीरीन्, ऐजाज खुसरोवी, आईना सिकन्दरी, खिज्रखानी, इनशा अमीर खुसरू, जवाहिर-उल्-बहर।

लोग कहते हैं कि उनकी और बीरबलकी आपसमें खूब छेड़ छाड़ होती थी, परन्तु बीरबलके सामने उन्हें शरमाना हो पड़ता था। कोई कोई इन्हें अकबर बादशाहका साला भी बतलाता है। परन्तु यह निश्चित नहीं—वह यही खुसरू थे या कोई दूसरे।

खुसरू परवीज—१ शासन वरानेके ईरानी बादशाह २रे हरमुजके लड़के। इनके बापके मरने पर सेनापति बहरामने मुल्कको अपने कब्जेमें किया था। यह रोमक-सम्राट् मरीसकी मददसे विद्रोहाचारको हरा ५८१

ई०को बापके तख्त पर बैठ गये। बादशाही मिलने पीछे इन्होंने सबके सामने मरीसको धर्मपिता-जैसा कबूल किया। ६०३ ई०को मरीस कत्ल किये गये। यह उसी वक्त अपने धर्मपिताका बदला चुकानेको रोमक राज्य पर चढ़े थे। दारा, एदेशा वगैरह कई मुकाम जल्द हाथ आ गये। सिरीया और पालेष्टाइन लूट कर तहस नहस कर डाली। जेरुसलम जीतने पर सोनेका असली सलीब (Cross) मट्टीसे निकाल फतेहमन्दीकी नगानीके तौर पर अपने राज्यमें ले आये। कुछ दिन पीछे रोमके बादशाह हिराक्लियसने आकर ईरान पर हमला किया था। उन्होंने कासपीय ह्रदसे स्फहान शहरके बीच सभी मुकाम तोड़ फोड़ डाले। सरकारी खजाना लूटा और अच्छे अच्छे महलोंका तहसनहस किया गया। मुल्कका ऐसा मटियामेट देख रैयत परवेज पर बिगड़ी और राजद्रोही बन गयी। इनके ज्येष्ठ पुत्रने इन्हें बांध लिया था। परवेजके १८ लड़के उनके सामने ही कत्ल किये गये। इसके बाद वे कैदमें रखे गये। ६२८ ई०को इनका मृत्यु हुआ। परवेजके साथ ही नौशेरवान्‌का घराना भी गुम हो गया।

खुशरूमलिक—कोई क्रीतदास या गुलाम। यह खुशरू शाह कहलाते थे। बादशाह मुबारककी मिहरबानीसे खुशरू उनके बड़े प्यारे और वजीर बन गये। उन्होंने जैसे ही अपने आप मराठा देश जीतके लौटे, इन्हें उसका सूबेदार (शासनकर्ता) बनाके दिल्लीसे दक्षिणको भेज दिया। मालिकने लूट मार करके एक ही सालके बीच कितना ही दौलत इकट्ठी कर डाली। फिर इनका हौसला इतना बढ़ गया कि अपने अन्नदाता मुबारकको भी चुपकेसे मार डालनेमें जी न झिचका। १३२१ ई०को यह नसीर-उद्-दीन् नामसे दिल्लीके तख्त पर बैठे थे। इसी वर्ष राज्यके बड़े आदमियोंने सिपहसालार गाजीबेग तुगलकसे मिलके इनके मुकाबलेमें लड़ाई खड़ी कर दी। आखीरको यह दुश्मनोंके हाथमें पड़ मारे गये।

२ बादशाह मुहम्मद तुगलकके भानजे। सम्राट्ने अपनी राज्यलाभेच्छा बढ़ने पर एक लाख फौजके साथ खुशरूको नेपाल जीतने भेजा था। यह बड़ी मुश्किलसे पहाड़ोंको पारकर १३३७ ई०को चीनकी सरहद पर जा पहुंचे। इसी जगह एक तर्फसे चीना फौज और दूसरी तर्फसे नेपालकी पहाड़ी फौजने आकर इन पर हमला किया और रसदका सारा सामान लूट लिया। सात दिन तक ऐसी ही तकलीफसे लड़ने भिड़ने पर इनके सिपाही घबरा उठे। इसी मौके पर मिहकी बारिश पड़ी थी। पहाड़की उसी खाली जगहमें चारों तर्फोंका पानी जाकर जमा हो गया। यह साथ अपने सिपाहियोंके मर मिटे और मुहम्मदकी जंगी उम्मीद मारी पड़ी।

३ गजनवी शाही खानदानके आखिरी बादशाह। इनके बापका नाम खुशरू शाह था। पिताके मरने पर ११६० ई०को यह लाहोरके तख्त पर रौनक अफरोज हुए। ११८४ ई०को सुलतान मुहम्मद गोरीने जब लाहोर पर हमला किया, हारने पर खुशरू पकड़ लिये गये। मुहम्मद गोरीने इन्हें बालबच्चोंके साथ अपने भाई गयास्-उद्-दीन्‌के पास फीरोजकोह नगर भेजा था। वहीं खुशरू सपरिवार मार डाले गये।

४ दिल्ली—सम्राट् मुहम्मद-बीन तुगलकके बहनोई और खुदावन्द जादाके खाविन्द। इन्होंने एक वक्त मुहम्मदके उत्तराधिकारी सुलतान फीरोज शाहको मार डालनेके लिये छिप छिप कर साजिश की थी। किन्तु इनके बेटे दावर मालिकने सुलतानको जल्द आनेवाली मुसीबतकी बात बतला दी। सुलतानने भाग कर अपना प्राण बचाया था।

खुशरू शाह—गजनवी बादशाह बहराम शाहके लड़के। इनका असली नाम निजाम्-उद्-दीन् था। ११५२ ई०को अपने वालिदके मरने पर इन्होंने लाहोरका तख्त हासिल किया और सात वर्ष तक सलतनत करके ११६० ई०को शरीर छोड़ दिया।

खुशरू सुलतान—मुगल बादशाह जहांगीरके लड़के। यह राजा मानसिंहकी बहनके गर्भसे १५८७ ई०को लाहोरमें उत्पन्न हुए थे। फिर १६२२ ई०को दाक्षिणात्यमें इनका मृत्यु हुआ। दाक्षिणात्यसे लाश लाकर इलाहाबादके खुशरूबागमें गाड़ी गयी थी। फारसीकी एक किताबमें

लिखा है कि उनके छोटे भाई शाहजहान्‌ने रेजा नामका कोई हरकारा भेजा था, जिसने गला दबाकर उन्हें मार डाला।

खुशरोज—इसका दूसरा नाम नौरोज अर्थात् नव वर्षका प्रथम दिन। जिस दिन सूर्य मेषराशिमें जाते हैं उस-दिन फारसके मुसलमान राजगण आनन्द उत्सव मनाते हैं। दिल्लीके मनुष्योंका ऐसा विचार है कि भारतवर्षमें पृथ्वीराजहीने पहले पहल खुशरोज उत्सवका प्रचार किया था। किन्तु अबुल फजलने लिखा है कि अकबर बादशाहने इस उत्सवको निकाला। वे मुसलमानके नवमी दिनमें राजकीय समस्त कर्मचारीको बुला कर आनन्द-उत्सव करते थे। उस दिन सम्राट्‌के अन्तःपुरकी स्त्रियां भी शौकसे बाजार खोलती थीं। जहां राजपूत महिलाएं भी आनन्दसे उपस्थित होती थीं। अन्तः-पुरकी स्त्रियां उनसे मनमानी चीज खरीदती थीं। उस समय अकबर बादशाह एकान्तमें राज्यकी सम्भ्रान्त महिलाओंके मुखसे राज्यकी तथा वाणिज्यकी अवस्था सुनते थे। कोई कोई ऐसा कहते हैं कि अकबर बुरे अभिप्रायकी इच्छासे यह खुशरोज मनाते थे। वे उस समय राज्यकी सुन्दर महिलाओंकी रूपमाधुरी पान करते थे। ऐसा सुना जाता है कि अकबर बादशाह राजपूत राजाओंको अपने अधीन कर लेने पर भी शान्त न रहे किन्तु खुशरोज उपलक्षमें समागत कुल-वधूओंकी सतीत्व भी नष्ट कर डालते थे। वे इस व्यव-हारमें पृथ्वीराजकी स्त्रीके हाथ पकड़े गये। अकबर उस अद्वितीय स्त्रीके सौन्दर्य पर विमुग्ध होकर चतुरता-से एक गुप्तकक्षमें बन्द कर बैठे। वह स्त्री उस कक्षमें प्रवेश कर गोलकधेमें पड़ गई। बाहर होनेका रास्ता देख न पड़ा, सामनेमें सिर्फ अकबर बादशाह ही देख पड़े। सम्राट् अकबरने प्रेमभिक्षाकी इच्छासे उन्हें कई बार प्रलोभन दिया। किन्तु वह पतिव्रता राजपूत स्त्री थोड़े ही समयमें अपनी अवस्था जान गई और अपने कटिदेशसे तेज छुरी निकाल कर अकबर पर आघात करनेके लिये आगे बढ़ी। यह देखकर बादशाहका मुख सूख गया और कातर हो क्षमाके लिये प्रार्थना करने लगी। इस पर वह साहसी स्त्री बोली "दिल्लीश्वर! तुम अपने इष्टदेवका शपथ खाकर प्रतिज्ञा करो कि कभी इस तरहका अन्याय व्यवहार स्त्रीयोंके प्रति न करोगे। नहीं तो तुम्हारा निस्तार नहीं है।" अकबरने प्राण-नाशके भयसे वैसा ही स्वीकार किया और अपने मुख-को नीचे कर उस राजपूत-स्त्रीको बाहर जानेका पथ दिखला दिया। उसी दिनसे अकबर बादशाहने खुश-रोजके उपलक्षमें आमोद प्रमाद करना एकदम बन्द कर दिया। आजतक भी राजपूत भाटगण उस पतिव्रता राजपूत-स्त्रीकी सुख्याति गाते हैं।

खुशवक्त राय—एक चतुर राजनैतिक। १८०८ ई०को महाराज रणजितसिंहके साथ वृटिश गवर्नमेण्टकी सन्धिके समय ये वृटिश एजेण्ट और सम्वाददाता हो कर अमृतशहरमें रहते थे।

खुशहाल (फा० वि०) सम्पन्न, मजेमें, जिसको कोई तकलीफ न हो।

खुशहाली (फा० स्त्री०) आराम, सुख, अमनचैन, अच्छी गुजर।

खुशाब (फा० पु०) धान गिरानेका एक ढङ्ग, धानकी कोई गिरौनी। यह कश्मीरमें चलता है।

खुशाब—१ पञ्जाबके शाहपुर जिलाकी एक तहशील। झेलम् नदीके किनारे अक्षा० ३१° ३२' एवं ३२° ४१' उ० और देशा० ७१° ३७' तथा ७२° १८' पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल २५२६ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः १६१८८५ है।

पञ्जाबके लवण पहाड़के द्वारा यह तहशील विभक्त है। यहां पर नदीको धार कछार किनारा छोड़ कर दूसरी जगह वैसा शस्य नहीं उपजता है। इसमें २०६ ग्राम हैं। यहां एक फौजदारी एक दीवानी अदालत और ६ थाना हैं। इसका राजस्व २ लाखसे अधिक है।

२ तहशीलका प्रधान नगर। झेलम् नदीके दक्षिणमें और शाहपुर नगरसे ४ कोस दूरमें अक्षा० ३२° १८' उ० और देशा० ७२° २२' पू० पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ११४०१ है, जिनमेंसे अधिकांश मुसलमान हैं। यहां पर म्युनिसपालीटी भी है। प्रत्येक मनुष्यको एक एक रु० टैक्स देना पड़ता है। यहां मूलतान, अफगानिस्तान प्रभृतिके

साथ वाणिज्य व्यवसाय चलता है। अन्न, कपास, पशम, घृत और देशीय वस्तुकी रफ्तनी तथा विलायती कपड़ा, धातु, शुष्क फल, चीनी और गुड़की आमदनी होती है। यहां सुन्दर मोटा कपड़ा तथा रेशमी कपड़ा प्रस्तुत होता है। कुछ सालसे करघा बराबर चलते हैं।

खुशामद (फा० स्त्री०) अयथा स्तुतिवाद, झूठी तारीफ, चापलूसी, किसीको मतलबकी बातोंसे खुश करनेका काम।

खुशामदी (फा० स्त्री०) खुशामद करनेवाला, चापलूस। दूसरेको खुशामद करके अपना काम चलानेवाला 'खुशामदी टट्टू' कहलाता है।

खुशाल—हिन्दी भाषाके एक कवि। इनकी कविता बड़ी मनोहारिणी रहा—

"पिय प्यारो भोर ही ओर निहारे।
गलबहियां अलसाने नैना शोभा सदन अपारे॥
रसिक खुशाल करत निशिवासर। कुञ्जनिकुञ्ज विहारे॥"

खुशाल—(पण्डित) दि० जैन-सम्प्रदायके एक ग्रन्थकर्ता इन्होंने "मुक्तावल्युद्यापन" और "कांजीद्वादश्युद्यापन" नामक दो ग्रन्थ लिखे हैं।

खुशाल खान्—खटकजातीय एक सर्दार, मालिक आकोरका पुत्र। अकबरके समयमें जबकी पार्वती जाति काबुलके कई स्थानोंमें लूट पाट करती थी, उस समय मालिक आकोरने अकबर बादशाहके निकट रक्षाभार प्राप्त किया। उनके मरने पर उनके लड़के खुशालखान्ने यह भार ग्रहण किया। जब औरङ्गजेबने पठानोंको दमन करनेके लिये अपनी सेना अफगान-सीमा पर भेजी उस समय खुशालखान्ने अपनी जन्म-भूमिकी रक्षाके लिये ओजस्विनी भाषामें एक कविता-वलीकी रचना की थी जिसके पाठ करनेसे खटक जाति उत्तेजित हो जाती थी। आजकल भी खटक अत्यन्त आदर और भक्तिके साथ खुशालकी कविता गाया करते हैं। खुशालको ५२ लड़के थे। जिनमेंसे ज्येष्ठपुत्र बेरामखान् था। इसने खटकके शेख रहमकार नामक एक साधुके लड़केको मार डाला था। इसी अपराधमें औरङ्गजेबने खुशालखान्को बारह वर्ष तक दिल्लीके कारागारमें बन्द किया था।

खुशालचंद—दिल्लीपति मुहम्मदशाहके दिवानी कार्यालयके एक कर्मचारी। इन्होंने 'तारीख-इ-मुहम्मदशाही, या 'तारिख-इ-नादिर उज्जमानी' नामकी किताब फारसी भाषामें रचना की है। इस ग्रन्थमें इब्राहिम लोदीसे महम्मद शाहके राजत्वकाल तक हाल वर्णन किया है।

खुशालचंद्रकला—दिगम्बर जैनसंप्रदायके ग्रन्थकर्ता। ये सांगानेरके रहनेवाले खण्डेलवाल थे। खास इनके रचित ग्रन्थ तो कोई महत्वपूर्ण मिला नहीं है। पर इनने बड़े बड़े ग्रन्थोंका पद्यानुवाद कर डाला है। इन्होंने 'हरिवंशपुराण' सं० १७८०में 'पद्मपुराण' सं० १७८३में और 'उत्तरपुराण' सं० १७९९में बनाया है। धन्यकुमारचरित्र, व्रतकथाकोष, जम्बूचरित्र, और चौबीसी पाठपूजा—ये भी इन्होंने बनाये हैं। बम्बईके जैन-मन्दिरमें एक यशोधरचरित्र है, जिसको इनने १७८१ वि० सं०में बनाया था। मालूम नहीं कि, इसके कर्ता 'हरिवंश' आदिके कर्तासे भिन्न हैं या एक ही हैं। इनने अपनेको सुन्दरका पुत्र और दिल्ली शहरके जयसिंहपुरामें रहनवाला बतलाया है।

खुशाल पाठक—युक्तप्रान्तीय रायबरेली नगरके एक हिन्दी कवि। इन्होंने शृङ्गाररसकी कविता लिखी।

खुशी (फा० स्त्री०) प्रसन्नता, आह्लाद, दिलकी कुशादगी।

खुश्क (फा० वि०), शुष्क, सूखा। २ रसिकतारहित, रूखा। (क्रि० वि०) ३ सिर्फ, सिर्फ।

खुश्कसाली (फा० स्त्री०) अनावृष्टि, वृष्टिका अभाव, जिस साल पानी न बरसे।

खुश्का (फा० पु०) भात, पानीका पका चावल।

खुश्की (फा० स्त्री०) १ शुष्कता, सूखापन, रुखाई। २ भूमि, जमीन्। ३ पलेथन, लोई या पेड़े काटनेका सूखा आटा। ४ अनावृष्टि, पानी न बरसनेकी हालत।

खुसखुस (हिं० पु०) १ खुसुर फुसुर, कानाफूसी, चुपचुपकी बातचीत। (क्रि० वि०) २ चुपके चुपके, धीमी आवाजमें।

खुसुरफुसुर, खुसखुस देखो।

खु्ड़ी (हिं० स्त्री०) खुड़ुआ, घोघी, खोही, पानी या जाड़ेसे बचनेके लिये कम्बलको सर लपेट कर डालनेका एक ढंग।

खूंखार (फा० वि०) १ रक्तपायी, खून पीनेवाला। २ खौफनाक, भयानक। ३ क्रूर, झगड़ालू।

खूंट (हिं० पु०) १ प्रान्तभाग, छोर। २ चतुष्कोण प्रस्तरविशेष, कोई चौकोर पत्थर। यह बहुत वजनी रहता और घरकी दृढ़ताके लिये कोनों पर लगता है। ३ भाग, हिस्सा। ४ देवी देवताका एक प्रसाद। इसमें कई छोटी छोटी पूरियां रहती हैं। ५ काष्ठशुल्क, लकड़ीका महसूल। ६ कर्णालङ्कारविशेष, कानका एक गहना। यह गोल दिये जैसा बनाया जाता है। इसे 'विरिया' और 'ढार' भी कहते हैं। ७ कानका मैल। (स्त्री०) ८ रोकटोक, पूछताछ।

खूंटना (हिं० क्रि०) १ टोकना, पूछताछ करना। २ छोड़ना। ३ घटना, कम पड़ना।

खूंटा (हिं० पु०) मेख, गोल लकड़ीका छोलकर नोकदार बनाया हुआ टुकड़ा। इसमें किसी भी चीजको रस्सीसे बांध देते हैं।

खूंटाफारी (हिं० स्त्री०) १ बिगाड़, अलगाव, मनमोटाव। (वि०) २ द्वेषमूलक, फूट डालनेवाली। इस अर्थमें यह शब्द प्रायः 'बात'का विशेषण होता है।

खूंटी (हिं० स्त्री०) १ छोटा खूंटा, छोटी मेख। २ कटी फसलका डण्ठल। ३ अपटी, गुल्ली। ४ निकलनेवाले बालोंका सिरा। यह बहुत कड़ी पड़ती और छूनेमें गड़ती है। ५ नीलकी दोरेजी फसल। यह नील कट जाने पर उसके डण्ठलसे उपजती है। ६ सीमा, छोर। छोटी खूंटीको 'खूंटिया' कहते हैं।

खूंटी-उखाड़ (हिं० पु०) अश्वका एक अशुभचिह्न, घोड़ेकी कोई भौंरी। यह पांवमें पुट्ठेके पास पड़ती है और जिस घोड़ेमें रहती वह मालिकको ऊपरको रखती है। खूंटी-उखाड़ रहनेसे घोड़ा बड़ा बदमाश होता है।

खूंटीगाड़ (हिं० पु०) अश्वका एक अशुभचिह्न, घोड़ेके पैरकी कोई भौंरी। यह पुट्ठेके पास नीचेको मुंह किये रहती है। इससे घोड़ा कम ऐबी निकलता है।

खूंड़ा (हिं० पु०) लौहदण्डविशेष, जोड़ेकी एक छड़। इसमें भरा लगा कर ताना डाला जाता है।

खूंड़ी (हिं० स्त्री०) सूक्ष्म काष्ठखण्डविशेष, एक पतली लकड़ी। इसके छोर पर कांचका सुआ फोड़ कर बांधा और उसमें रेशमका बारीक धागा डाल ताना जाता है।

खूंथी (हिं० स्त्री०) खुथी, कटी फसलकी छोटी खूंटी।

खूंद (हिं० पु०-स्त्री०) थोड़ीसी जगहमें घोड़ेकी चक्र फिर, कुदौटी।

खूंदना (हिं० क्रि०) १ पैर उठा उठा कर उसी जगह रखना, नाचना। २ रौंदना, चल फिर करके बिगाड़ना। ३ कुचलना।

खूखी (हिं० स्त्री०) क्रमिविशेष, एक कीड़ा। यह शीतकालकी रबीका फसल बिगाड़ देती है। इसका चलता नाम 'गेरुई' है।

खूखू (हिं० पु०) खूक, सूअर।

खूच (हिं० स्त्री०) संयोगजल, आधनाथ, पानीकी गर्दन। इसे 'जलसंयोजक' या 'जल-डमरूमध्य' भी कहते हैं।

खूझा (हिं० पु०) खोझरा, निकम्मा रेशा।

खूटना (हिं० क्रि०) १ खण्डित होना, कटना, रुकना। २ चूकना, कम पड़ना। ३ चिढ़ाना, हंसी उड़ाना, दिक् करना।

खूतगांव—मध्यप्रदेशके चांदा जिलेकी एक जमींदारी। इसमें ४२ गांव लगते हैं, क्षेत्रफल १५१ वर्गमील है।

खूदर (हिं० पु०) मैल, तलछट, फोंक। इसका हिन्दी पर्याय—खूद और खूदड़ है।

खून (फा० पु०) १ रक्त, लहू। २ वध, कत्ल।

खून—बम्बई प्रेसिडेन्सीके अहमदाबाद जिलामें दण्डक नामक उपविभागके अन्तर्गत एक बन्दर। यह भादर वा धोलेवासे ढाई कोस भादर खाड़ीके प्रवेशपथमें अक्षा० २२° ३´ १०´´ उ० और देशा० ७२° १७´ ३०´´ पू०में एक आलोकघर है। इस घरके प्रायः ३४ हाथ ऊंचेमें दीपमाला है। आठ कोससे उसका आलोक (प्रकाश) देखा जाता है।

खूनखराबा (हिं० पु०) १ रक्तपात, मारकाट। २ किसी किस्मका रङ्ग या वार्निश। यह लकड़ी पर चढ़ता है।

खूनी (फा० वि०) १ हिंसाकारी, कातिल। २ निर्दय बेरहम। ३ क्रूर, बदमाश। ४ अत्याचारी, दस्तन्दाज। ५ रक्तवर्ण, लाल।

खूब (फा० वि०) १ अच्छा, बढ़िया। (क्रि० वि०) २ अच्छी तरह, भली भांति, सफाईसे।

खूबकलां (फा० स्त्री०) खाकसीर, किसी घासका दाना। यह किसी घासका, जो फारसमें जगती, पोस्त-जैसा गुलाबी बीज है।

खूबचन्द—मारवाड़के एक हिन्दी कवि। ईदरराज गम्भीरशाहीकी प्रशंसामें इन्होंने एक काव्य बनाया था।

खूबचंद्र सोधिया—हिन्दीके एक अच्छे लेखक। इन्होंने "मफ़लरहस्य" नामक एक पुस्तक लिखी है।

खूबड़ खाबड़ (हिं० वि०) असमतल, नीचा ऊंचा, चढ़ा उतार।

खूबसूरत (फा० वि०) सुन्दर, सुहावना।

खूबसूरती (फा० स्त्री०) सौन्दर्य, रौनक, चमक दमक।

खूबानी (फा० स्त्री०) फलविशेष, किसी किस्मका मेवा। इसका दूसरा नाम जरदालू भी है। यह काबुलके पहाड़ोंमें उपजती है। खूबानी सूखी और ताजी भी खायी जाती है। इसका तेल 'कड़वे बादामका तेल' कहलाता है। खूबानीसे कतीरे-जैसा गोंद भी निकलता है। खूबानी मईसे सितम्बर तक पक जाती है। लोग इसकी गुठलीका बादाम भी फोड़ कर खा डालते हैं।

खूबी (फा० स्त्री०) १ गुण, सिफत। २ भलाई, अच्छाई ३ उमदगी, सफाई।

खूमड़ा—युक्तप्रदेशकी एक मुसलमान जाति। पहले यह हिन्दू रहे, पीछेको मुसलमान हो गये। बैलों पर पत्थरकी चक्कियां लाद करके बेंचते फिरना इनका प्रधान व्यवसाय है। रामपुर रियासतमें यह चटाइयां और पङ्खे भी बनाते हैं। बिजनौर और मुरादाबाद जिलेमें इनकी संख्या अधिक है।

खूरक (हिं० स्त्री०) हस्तिपादगत रोगविशेष, हाथीके पैरकी एक बीमारी। इसमें हाथीके नख फट जाते हैं और उसमें कुछ कुछ पीड़ा होती है। खूरकसे हाथी लङ्ग करने लगता है।

खूसट (हिं० पु०) १ उलूक, घुग्घू। (वि०) २ गंवार, बेसमझ। ३ डोकरा, गया गुजरा बुड्ढा।

खृगल (वै० क्ली०) तनुत्राण, शरीररक्षक। (ऋक् २।३९।४)

खृष्टान, ईसाई देखो।

खृष्टीय (हिं० वि०) ईसवी, ईसाके मुताल्लिक।

खेउरा—इसका नाम मेउखान (Mayo mines) है। पञ्जाब झेलम् जिलाके पिण्डदादनखाँमें एक विस्तृत लवणकी खान। यह अक्षा० ३२° ३८´ उ० और देशा० ७३° ३´ पू०में अवस्थित है।

यहां नमकका पहाड़ नामकी जो गिरिश्रेणी है, उसीके बीच लाल चिक्कण मृत्तिका और रेतीले पत्थरके ऊपर उठा हुआ कच्चा नमक देखा जाता है। यहां सारी जगह में तह तह पर लवण आकर है। यह पर्वतके आकारको नमकका खान कई सौ वर्षसे मनुष्यके व्यवहारमें आ रही है। तोभी इसका कोई अंश घटा नहीं। मालूम पड़ता है। अकबरके समयमें यहां पर गड्ढा बना करके नमक निकाला जाता था। सिख राजाके शासनकालमें यहांके मनुष्य जहां पर सुविधा देखते, गड्ढा करके नमक संग्रह करते थे। ब्रटिश गवर्मेण्टका अधिकार होने पर अब मामूली लोग नमक निकाल नहीं सकते।

यहांके लवणको भी उसने अपने एकाधिकारमें कर लिया है। लवण उठानेके लिये नानाप्रकारके यन्त्र और राजकर्मचारी नियुक्त हैं। आजकल खेउराकी सिर्फ वग्गी और सुजावलखान्में काम होता है। प्रति वर्ष एक लाख मनसे भी अधिक नमक संग्रह किया जाता है इससे सरकारको प्रायः सताईस लाख रु०की आमदनी है।

१८७० ई०का बड़े लाट मेओ यहां आये थे, इसी लिये इसका नाम मेओ-खान पड़ा।

खेक (हिं० पु०) वृक्षविशेष, एक बड़ा पेड़। यह वृक्ष श्याम और मणिपुरके जङ्गलोंमें उत्पन्न होता है। इसका काष्ठ उत्तम निकलता और रस बने बनाये रङ्ग जैसा लगता है।

खेकसा (हिं० पु०) एक फल। यह परवल-जैसा

होता है। इसकी तरकारी बनायी जाती है। जङ्गली झाड़ियों पर इसकी लता अपने आप फैल पड़ती, जो कुंदरूसे मिलती है। खेकसीका फूल पीला होता और हरा फल, पकने पर लाल पड़ जाता है। इसके ऊपर रूयें या कांटे होते हैं। खेकसा खानेमें करेला-जैसा लगता है। इसे 'ककोड़ा' और 'बन-करैला' भी कहते हैं।

खेकरा—युक्तप्रदेशके मेरठ जिलाकी बागपत तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० २८° ५२´ उ० और देशा० ७७° १९´ पू० पर अवस्थित है। खेकरा मेरठ नगरसे १३ कोस पश्चिम पड़ता है।

यह नगर अति प्राचीन है। ऐसा प्रवाद है कि प्रायः पौने दो हजार वर्ष पहले यह नगर अहीरोंने पत्तन किया। फिर वे सिकन्दरपुरकी जाट जातिसे भगाये गये। सिपाही विद्रोहके समय यहांके जमींदार भी विद्रोही हुए। उनकी जायदाद जब्तकरके किसी बृटिश राजभक्त जमींदारको दी गयी है।

यहां एक सुन्दर जैनमन्दिर और पुलीस ष्टेशन है। प्रति वर्ष खेकरामें मेला लगता है। लोकसंख्या प्रायः ८८१८ है। इस नगरकी आमदनी २०००) रु० है।

खेखीरक (सं० पु०) खे आकाशे खीलक इव, लक्ष्य रत्वम्। शब्दयुक्त यष्टि, आवाजदार छड़ी।

खेखोलक (सं० पु०) आवाजदार छड़ी, बजनेवाला डण्डा।

खेगमन (सं० पु०) खे आकाशे गमनं यस्य, बहुव्री०। काककण्ठपक्षी, एक चिड़िया।

खेचर (सं० पु० क्ली०) खे आकाशे चरति, चर ट अलुक्समा०। १ शिव। २ विद्याधर। ३ पारद, पारा। ४ सूर्य आदि ग्रह। ५ मेष आदि द्वादश राशि। ६ कासीस, कसीस। ७ पक्षी, चिड़िया। ८ तृण, घास। ९ घोटक, घोड़ा। (त्रि०) १० आकाशगामी, आसमानमें चलनेवाला।

खेचरा (सं० स्त्री०) आकाशवल्ली, अमरबेले।

खेचराञ्जन (सं० क्ली०) कासीस, कसीस।

खेचरान्न (सं० क्ली०) खेचरं छिदलादिमिश्रितं अन्नम् छिदलादि सहित पक्व अन्न, खिचड़ी। (पाकराजेश्वर)

खेचरी (सं० स्त्री०) खेचर-ङीप्। १ योगाङ्ग मुद्राविशेष। काशीखण्डके मतानुसार जीभको उलट कर कपालके कुहर और दृष्टिको ऊपर उठा भौंहोंके बीचमें लगानेका नाम खेचरी मुद्रा है। खेचरी मुद्रा कर सकने पर कोई रोग नहीं होता और कर्मका फल भी मिट जाता है। चित्त और जिह्वा दोनोंके आकाशमें अवस्थान करनेसे ही इसको खेचरीमुद्रा कहते हैं। सभी मुनियोंने इस मुद्राके बल सिद्धि पायी है। बिन्दुके देहमें स्थिरभावसे रहने पर मृत्युका भय तिरोहित होता है। इस मुद्राको लगानेसे बिन्दु ठहर जाता है। (काशीखण्ड ४१०)

२ पूजाकी कोई तन्त्रोक्त मुद्रा। बायें हाथको दाहनी ओर और दाहने हाथको बायीं ओर रखके दोनों हाथ परिवर्तन करना चाहिये। फिर अनामिकाको मिला करके तर्जनीमें लगाते और बीचकी उंगली चढ़ा या सटा करके अंगूठे पर जमाते हैं। इसीका नाम खेचरी मुद्रा है। (तन्त्रसार)

खेचरी गुटिका (सं० स्त्री०) गुटिकाविशेष, एक गोली। यह मन्त्रसिद्ध होती है। इसको मुंहमें डाल लेनेसे मनुष्य पक्षीकी भांति आकाशमें उड़ सकता है।

खेजड़ी (हिं० स्त्री०) शमीवृक्ष, एक पेड़।

खेजिरि—बङ्गाल-प्रान्तके मेदिनीपुर जिलाका एक नगर। यह भागीरथीके मुहानापर अक्षा० २१° ५२´ उ० और देशा० ८७° ५८´ पू०में अवस्थित है। पहले यहां टेलीग्राफ आफिस था। अङ्गरेजोंके जहाज यहां आ करके ठहरते थे। आजकल कई एक अङ्गरेजोंके मकबरे देख पड़ते हैं। लोकसंख्या १४५७ है।

खेजेल—यूफ्रेटिस नदीके तीरमें रहनेवाली योद्ध जाति। इसकी रमणियां परमासुन्दरी होती हैं।

खेट (सं० पु० क्ली०) खे अटति, अट्-अच् खिट्-अच् वा। १ सूर्य आदि ग्रह। २ कर्षकग्राम, खेड़ा। ३ अस्त्रविशेष, एक हथियार। ४ चर्म, चमड़ा। ५ मृगया, शिकार। ६ तृण, घास। ७ कृपणशास्त्रका अलक्षित फलकाकार कोई काष्ठ, ढालके नीचेकी एक लकड़ी। हेमाद्रिके परिशिष्टखण्डमें लिखा है कि

बालकके लिये कुणपास्त्रका खेट १२ अङ्गुल उत्तम, १० अङ्गुल मध्यम और ८ अंगुल निकृष्ट होता है। किन्तु बलवान्‌के लिये वह २०, १८ और १६ अंगुल रहनेसे यथाक्रम उत्तम, मध्यम तथा निकृष्ट कहा है। ८ बलदेवकी गदा। ९ कफ, बलगम। १० घोटक, घोड़ा। (त्रि०) ११ सुनिन्दक, बुराई करनेवाला। १२ अधम, कमीना। १३ धनवृद्धिजीवी, सूदखोर। १४ भक्षक, खा डालनेवाला।

खेटक (सं० पु०) खेट स्वार्थे कन्। १ ग्रामविशेष, किसानोंका गांव। २ फलक, ढाल। ३ अस्त्रविशेष, कोई हथियार। ४ धनवृद्धिजीवी, सूदखोर।

खेटकी (सं० पु०) १ ज्योतिषी, भड्डरी। २ शिकारी। ३ बधिक, बहेलिया।

खेटाङ्ग (सं० पु०) खेटमङ्गं यस्य, बहुव्री०। उपद्रावक जन्तुविशेष, अपदेवता। (काशीखण्ड ११४०)

खेटितान (सं० पु०) खेटि: तानोऽस्य, खिट्-इन्, बहुव्री०। वैतालिक।

खेटी (सं० पु०) खिट्-णिनि। १ नागर। २ कामुक।

खेट्ट (सं० स्त्री०) तृण, खर, घास।

खेड़ (सं० स्त्री०) गन्धतृण, एक खुशबूदार घास।

खेड—१ बम्बई प्रेसिडेन्सीके अन्तर्गत रत्नागिरि जिलाका एक उपविभाग। यह अक्षा० १७° ३३' एवं १७° ५४' उ० और देशा० ७३° २०' तथा ७३° ४२' पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें कोलावा जिला पूर्वमें सातारा जिला, दक्षिणमें चिपलून और पश्चिममें दापोली है। क्षेत्रफल ३८२ वर्ग मील। लोकसंख्या ८५५८४ है। यहां १४६ गांव बसे हैं। यहां धान्यादि शस्य और नानाप्रकार मटर होता है। यहां तीन थाना और दो फौजदारी अदालत हैं। राजस्व ८२००० रु० देना पड़ता।

२ उक्त खेड़ उपविभागका प्रधान नगर। यह अक्षा० १७ ४३ उ०, और देशा० ७३° २४' पू०में जगवदी नदी किनारे अवस्थित है। इसकी चारो तरफ पाहाड़ है। लोकसंख्या प्राय: ५०५३ है। यहां डाकघर, पाठशाला और सराय हैं। नगरके पूर्वमें तीन पत्थरके मन्दिर है, जिनमें कई एक कुष्ठरोगी रहते हैं।

३ पूना जिलाके अन्तर्गत एक नगर। भीमा नदीके वांये किनारे अक्षा० १८° ५१' उ० और देशा० ७३° ५५' पू० पर अवस्थित है। लोकसंख्या ३८३२ है। यहां पर म्युनिसपालिटी, डाकघर, औषधालय, तहसीलदारी और पुलीस अदालत हैं। यहांकी आस पासकी जमीन लेकर खेड़ ग्रामका क्षेत्रफल लगभग २० वर्गमील होगा। इस ग्राममें बहुतसी प्राचीन कीर्तियां पड़ी हैं। जिनमेंसे भीमा नदी किनारे सिद्धेश्वरका मन्दिर, दिलावर-खांकी मसजिद और कब्र देखने लायक है।

४ बम्बई प्रदेशके पूना जिलेका एक तालुका। यह अक्षा० १८° ३७' तथा १८° १३' उ० और देशा० ७३° ३१' एवं ७४° १०' पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ८७६ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: १५६२७५ है। उत्तर और दक्षिणको २ बड़ी गिरिश्रेणियां लगी हैं। अधिकांश भूमि लाल या भूरी है। जलवायु साधारणत: अच्छा रहता है।

खेड़ब्रह्म—गुजरातके माहीकांठा राज्यकी एक तहसील और थाना। यह ईडर नगरसे प्राय: ३० मील उत्तरको हरनाई नदीके दक्षिण तट पर अवस्थित और प्राचीनकालको एक पुण्यक्षेत्र रहनेके लिये सुप्रसिद्ध है। यहां बहुतसे पुराने मन्दिरोंका ध्वंसावशेष देख पड़ता है। ब्रह्मपुराणके मतानुसार ब्रह्माने वहां अपने आपको पापोंसे मुक्त करना चाहा था। विष्णुने पूछने पर उन्हें इसके लिये जम्बूद्वीपके भरतखण्डमें किसी पवित्र स्थान पर जा यज्ञानुष्ठान करनेकी सम्मति दी। ब्रह्माके आदेशसे विश्वकर्माने आबू पहाड़से दक्षिण साबरमतीके दाहने तट पर ४ कोस घेरेका एक नगर बनाया था। वह स्वर्णप्राचीरवेष्टित और २४ द्वारयुक्त रहा। हिरण्याक्ष (हरनाई) नदी उसमें प्रवाहित होती थी। फिर उन्होंने यज्ञके लिये ८००० ब्राह्मणोंकी सृष्टि की। यज्ञ पूर्ण और पाप दूर होने पर ब्रह्माने अपने ब्राह्मणोंकी रक्षाके लिये १८००० वैश्योंकी उत्पादन किया और ब्राह्मणोंसे कहा तुम मेरे उद्देशमें एक मन्दिर बनावो और उसमें मेरी चतुर्मुज मूर्ति लगावो।

बहुतसे मन्दिर वर्तमान नगरकी सीमाके भीतर ही

बहुत बिगड़ गये हैं, उनकी कोई देख भाल नहीं करता। नगरसे उत्तरको जङ्गलमें जो ध्वंसावशेष पड़ा, सबसे अधिक लाभदायक लगा है। उसमें एक सूखे झील पर अनेक कारुकार्यविशिष्ट मन्दिर देखने-योग्य है। ब्रह्मपुराणमें लिखा है कि उसको ब्रह्माके पुत्र भृगुने, जब वह यह अन्वेषण करनेको ऋषियों कर्तृक प्रेरित हुए कि त्रिदेवमें कौनसे बड़ा है, निर्माण किया था। ब्रह्मा और रुद्र अपनी निन्दा सुनके बिगड़े और भृगुको दण्ड देने पर उद्यत हुए। फिर इन्होंने विष्णुकी जा करके परीक्षा ली और साहसपूर्वक उनकी छाती पर अपनी लात रख दी। परन्तु विष्णु भगवान् क्रुद्ध होनेके बदले उनसे अपने वक्षःस्थलकी कठोरताके कारण क्षमा मांगने लगे—आपके पैरमें चोट तो नहीं लगी? भृगुने लौट कर विष्णुको सबसे बड़ा बतलाया था। देवताओंके अपमान करनेका पाप छोड़ानेको भृगु ब्रह्म क्षेत्र गये और हिरण्याक्षमें स्नान करके अपने आश्रममें महादेवकी स्थापना की और कठिन तपश्चर्यामें लग गये। अन्तको शिवने प्रसन्न हो उनका पाप दूर कर दिया।

उक्त स्थानको भृगु ऋषिका आश्रम कहा जाता है। इसके भीतर किसी स्तम्भसे निकलती हुई एक देवी मूर्ति खोदित है। यह सत्तावन लम्बा, तीस चौड़ा और ३६ फुट ऊंचा है। इसमें ब्रह्माकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। लोग उसकी पूजा किया करते हैं। नगरके निकट ही पोल पहाड़ है। प्रति वर्ष माघ शुक्ल चतुर्दशीको मेला लगता है। इसमें गुजरात और मेवाड़के सभी भागोंसे व्यापारी आया करते हैं।

खेड़ा (हिं० पु०) १ क्षुद्रग्राम, पुरवा। २ नानाप्रकार मिश्रित अन्न। यह निकृष्ट तथा सुलभ रहता और पालित पक्षियोंमें विशेषतः कपोतोंके खानेमें लगता है। गांवका मुखिया और पुरोहित 'खेड़ापति' कहलाता है।

खेड़िताल (सं० पु०) गायक, गवैया।

खेड़ी (हिं० स्त्री०) १ लौहभेद, किसी किस्मका देशी लोहा। इसके बने अस्त्र अतितीक्ष्ण होते हैं। खेड़ी नेपालमें बहुत तैयार की जाती है। इसका दूसरा नाम 'भुरकुटिया' है। २ मांसखण्डविशेष, गोश्तका एक टुकड़ा। यह जरायुज शिशुओंके नालमें दूसरे प्रा पर संलग्न होता है।

खेत (हिं० स्त्री०) १ क्षेत्र, जोतने-बोनेकी जमीन। २ खेतकी फसल। ३ स्थान, जगह। ४ समरभूमि, लड़ाईका मैदान। ५ पत्नी, जोड़ू।

खेतिहर (हिं० पु०) कृषक, किसान।

खेती (हिं० स्त्री०) १ कृषि, काश्त, खेतका कामकाज। कृषि देखो। २ खेतमें लगी हुई फसल।

खेतीबारी (हिं० स्त्री०) कृषिकार्य, किसानी।

खेतुर—बङ्गाल प्रान्तके राजशाही जिलेका एक गांव। यह अक्षा० २४° २४´ उ० और देशा० ८८° २५´ पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ४४० होगी। ई० १६वीं शताब्दीको चैतन्यदेवके आगमनसे यह स्थान पुण्यक्षेत्र जैसा प्रसिद्ध है। उन्हींके सम्मानार्थ गांवमें एक मन्दिर भी बनाया गया है। प्रति वर्ष अकतूबर मासको यहां बड़ा मेला लगता है।

खेत्रि—राजपूतानाके जयपुर राज्यके अधीन एक सामन्त राज्य। यह अक्षा० २८° उ० और देशा० ७५° ४७´ पू०में जयपुर शहरसे ८० मील उत्तरको अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ८५३७ है। राज्यकी चारों ओर छोटे छोटे पहाड़ हैं। समुद्रतलसे २३३७ फीट ऊंचे पहाड़की चोटी पर एक दुर्ग बना है। यहां एक ऐंग्लो-वर्नाक्युलर हाइ-स्कूल, एक अस्पताल और पांच देशी विद्यालय हैं; जिनमें डाक और तारके आफिस भी लगे, हुए हैं। शहरके आस पास तांबेकी खान हैं। जिनसे प्रति वर्ष ३००००) रुपयेकी आमदनी होती है। इसमें खेत्रि, चिड़ावा और कोट-पुतली नामके तीन शहर हैं और कुल २५५ ग्राम लगते हैं। महाराष्ट्रकी लड़ाईके समय यहांके सर्दार राजा अभयचन्दने ब्रटिश-सेनापति लार्ड लेकके पक्ष हो बहुत सहायता दी थी, इसी लिए ब्रटिशराजने उक्त सर्दारको प्रत्युपकारस्वरूप एक लाख रुपये आमदनीका 'कोटपुतली' नामक एक स्वतन्त्र परगना दान दिया था। राज्यकी आय लगभग पांच लाख रुपये हैं। खेत्रिके सामन्त प्रति वर्ष जयपुर राजाको ७३७८०) रु० कर दिया करते हैं। यहां प्रायः ६५० हाथ ऊंचे गिरिदुर्गमें सामन्त राजका वासभवन है।

खेद (सं० पु०) खिद भावे घञ्। १ शोक, अफसोस

२ अवसाद, अफसुर्दगी, थकावट। ३ रोग, बीमारी। साहित्यदर्पणके मतमें रति अथवा पथगतिसे उत्पन्न होनेवाला भ्रम, भुलावा। यह लम्बी सांस आने और सो जानेका कारण है। (साहित्यदर्पण १५०)

खेदन (सं० क्ली०) खिद-ल्युट्। खेद, रञ्ज, अफसोस।

खेदना (हिं० क्रि०) खदेरना, भगाना, पीछा करना।

खेदा (वै० स्त्री०) रश्मि, रज्जु। (ऋक् ८।७७।३)

खेदा (हिं० पु०) १ आखेटमें किसी वन्य पशुको वध करने या पकड़नेके लिये खदेर करके एक उपयुक्त स्थानमें ले जानेका ढङ्ग। इसमें लोग ढोल बजाते और हल्ला मचाते हैं। २ शिकार, अहेर।

खेदाई (हिं० स्त्री०) १ खदेर, पीछा। २ खदेरनेकी उजरत या मजदूरी।

खेदि (सं० पु०) खिद अपादाने इन्। किरण, झलक।

खेदितव्य (सं० क्ली०) खिद भावे तव्य। खेद, अफसोस।

खेदिनी (सं० स्त्री०) अशनपर्णीवृक्ष, एक बेल।

खेद्य (सं० त्रि०) खिद-णिच्-ण्यत्। कलाया जानेवाला, जिसे अफसोस करना पड़े।

खेना (हिं० क्रि०) १ नाव आदि जलयान चलाना, जहाजरानी करना। विशेषत: नौकादण्डका परिचालन 'खेना' कहलाता है। २ निर्वाह करना, पार लगाना।

खेनेवाला (हिं० वि०) खेवैया, नाव चलानेवाला।

खेप (हिं० स्त्री०) १ भरती, लदान, चालान। एक बारमें जितनी चीज ले जायी जाती, 'खेप' कहलाती है। २ दौड़, पहुंच, रवानगी।

खेपड़ी (हिं० स्त्री०) १ नावकी बल्ली। २ नौकादण्ड, डांड़।

खेपना (हिं० क्रि०) काटना, पहुंचाना, गुजारना

खेपरिभ्रम (सं० क्ली०) १ आकाशमें विचरण, आसमानमें चलफिर। (त्रि०) २ आकाशमें विचरण करनेवाला, जो हवामें उड़ता हो।

खेमकर्ण—पञ्जाबके लाहोर जिलेकी कसूर तहसीलका एक नगर। यह कसूर नगरसे ३॥ कोस अक्षा० ३१° ८´ उ० और देशा० ७४° ३४´ पू०में विपाशा नदीके प्राचीन किनारे अवस्थित है। वहांकी लोकसंख्या ६०८३ है। नगर चारों ओर चहारदीवारीसे घिरा हुवा है। पहले समयमें यह एक समृद्धिशाली नगर था। आजकलभी कई एक खण्डहर पूर्व गौरवका परिचय देते हैं। यहां म्युनिसपालिटीभवन, विद्यालय, थाना और पान्थनिवास हैं।

खेमटा (हिं० पु०) छह मात्राओंका एक ताल। कोई कोई चार मात्राओंके तालको भी 'खेमटा' कहता है। जैसे—

+	१	०	१
धाटे धें	नाते नें,	ताटे धें	नाधिंने ::
+	१	०	१
धेंगेधि	नातिन	नागधि	नातिन ::

(सङ्गीतशास्त्र)

इस तालका नाच गाना भी 'खेमटा' ही कहा जाता है। बहुतसे दादरे इसी तालमें गाते हैं।

खेमा (अ० पु०) शिविर, डेरा, तम्बू, कनात।

खेय (सं० त्रि०) खन्यते खन् कर्मणि क्यप् इकारश्चादेशः। १ खननीय, खोदा जानेवाला। (क्ली०) २ परिखा, खाई। ३ घरनई।

खेयोङ्गथा—चट्टग्राम और आराकानवासी जातिविशेष। साधारणत: मनुष्य इन्हें 'जुनिमघ' कहकर पुकारते हैं। इनमें बारह शाखायें हैं;—१ रियाङ्सा, २ पलेङ्सा, ३ पलेङ्सा, ४ कोकदिनसा, ५ बैयनसा, ६ सङ्सा, ७ फाङ्गोयसा, ८ कोकपियसा, ९ बेरैङ्सा, १० मरीसा, ११ सावकोसा, १२ क्षोङ्खेउङ्सा, १३ टेङ्क्यात, १४ कौकमासा, १५ मङ्लेङ्सा। जिस नदी किनारे ग्राममें वे दलबांध कर रहते हैं, उसी नदीके नामसे अपनी अपनी शाखाका नाम रख लेते हैं। कर्णफूली नदीके दक्षिणभागमें जो रहते हैं, उन्हें मङ्ग नदी किनारे बन्दार वनवासी बोमोङ्गको कर देना पड़ता है। और जो कर्णफूली नदीके उत्तरभागमें रहनेवाले मोङ्ग राजाको कर देते हैं। ग्रामवासी द्वारा निर्वाचित किसी मण्डलको राजाका कर वसूल करनेके लिये नियुक्त करते हैं। वही मण्डल बस्तीके छोटे छोटे मुकदमोंका विचार करते हैं, जिसमें इनको दोनों पक्षसे कुछ कुछ मिल जाया करता है।

जितने रुपये यह प्रजासे लेकर राजा या महारको देते हैं उनमेंसे कुछ रु० शालके अन्तमें कमिशन काट कर उन्हें मिल जाता है। प्रत्येक परिवारको चारसे लेकर आठ रु० तक प्रतिवर्षमें कर देना पड़ता है। उन लोगोंको कुछ भी कर नहीं देना पड़ता है जो अविवाहित पुरुष, पुरोहित, विधवा, पत्नीहीन व्यक्ति हैं अथवा जो सम्पूर्ण रूपमें शिकारही के ऊपर अपनी जीवन निर्वाह करते हैं।

पहले पहल यह जाति भी अन्यान्य पार्वतीय जातिकी तरह भूत प्रेतोंको खुश करनेके लिये पूजा करती थी। आजकल इस जातिके मनुष्य गौतम बुद्धकी पूजा करते हैं जिसके लिये प्रत्येक ग्राममें एक धर्म-मन्दिर है। साधारणत: कई एक वृक्षोंकी छायामें चार हाथ ऊंचा मन्दिर बनता है। मन्दिरके बाहर और भीतर अकेले बांसका काम किया जाता है।

प्रत्यह प्रात: और सन्ध्यासमय ग्रामके समस्त पुरुष दल बांध बांध कर आते और सिरसे पगड़ी उतार कर घुटने टेक बुद्धदेवकी उपासना करते हैं और प्रतिष्ठित मूर्तिको पार्श्वस्थित घण्टाको बजाते हैं। इन लोगोंका विश्वास है कि घण्टा बजानेसे देवता जाग उठते और हमारे भजनको सुनते हैं।

सन्ध्यासमय ग्रामके युवक वहीं खेलते कूदते और नाचते हैं। भजन-मन्दिरके भीतर ऊंचे बांसके मञ्च पर गौतम बुद्धकी मूर्ति रहती है। प्रतिदिन प्रात: समय ग्रामकी लड़कियां, मन्दिर आतीं और फूल आदिसे बुद्धदेवकी पूजा करतीं हैं। यह उपस्थित अतिथियोंका दैनिक आहारोपयोगी खाद्यद्रव्य साथ ही लिये आती हैं।

थियङ्गके बाहर चारों ओरकी दिवार पर काला तख्ता लटका करता है और इसी स्थानमें ग्रामके समस्त बालक बालिका आकर लिखना पढ़ना सीखते हैं।

प्रतिवर्ष इन लोगोंमें खेतीकी बोनीसे पहले 'सियाङ्ग-प्रुहपा' व्रत होता है। इस व्रतमें आठ या नौ वर्षके लड़कोंका सर मुंड़ाया और पुरोहितोंका जैसा पीला कपड़ा पहनाया जाता है, उनमेंसे प्रत्येक दक्षिणास्वरूप चावल या कपड़ा लेकर पुरोहितके चारो ओर बैठता है। इस समय प्रत्येकके सामने एक एक दीपक जला करता है। फिर लड़के सात दिन तक पुरोहितके कथनानुसार खाते पीते और पहनते ओढ़ते हैं। यही उनकी दीक्षा है। स्त्रियां इस व्रतको नहीं कर सकतीं। जब कोई प्रिय व्यक्तिकी गुरुतर पीड़ा वा आशु विपदसे रक्षा पाता है, तो उसे ईश्वरको खुश करनेके लिये यह व्रत करना पड़ता है।

उक्त क्षुद्र क्षुद्र मन्दिर व्यतीत इनके दो मन्दिर प्रधान हैं। एक बोमोङ्गके राजाकी राजधानी वृन्दावन-नगरमें, दूसरा चट्टग्रामके रावजान थानाके अन्तर्गत है। इन दो स्थानोंमें बुद्धदेवके दर्शनके लिये अनेक यात्री वैशाख मासको आते हैं।

खियोङ्गथा बहुत सामान्य भावसे वस्त्रादि परिधान करते हैं। साधारण मनुष्य घुटने तक लम्बा सूती वस्त्र पहनते हैं, किन्तु बड़े आदमी रेशम या बारीक मलमल व्यवहार करते हैं। सब लोग अङ्गरखा और टोपी पहनते हैं, इनमेंसे कोई भी मनुष्य जूता व्यवहार नहीं करता। स्त्रीजाति साधारणत: अपनी छातीमें एक खण्ड कपड़ा बांधते हैं। समय समय पर अङ्गा भी पहनते और टोपीके बदले सिर पर रूमाल लपेटते हैं। ये अलङ्कार पहनना बहुत पसन्द करती हैं।

लड़कोंकी शादी १७ या १८ वर्षकी अवस्थामें होती है। पुत्रके योग्य एक सुपात्री पिताको खोजनी पड़ती है। तत्पश्चात् वरकर्ता एक घटक स्वरूप आत्मीयको कन्याकर्ताके निकट विवाह सम्बन्ध स्थिर करनेके लिये भेजते हैं। यदि कन्याकर्ताकी सम्मति हुई तो एक दिन वरकर्ता जाकर कन्या देखते और यौतुक स्वरूप एक अङ्गा और चांदीकी एक अंगूठी देते हैं। बाद उसके शुभनक्षत्र देखकर विवाहका शुभलग्न स्थिर होता है। दोनों पक्षवाले अपने अपने कुटुम्बको निमन्त्रणपत्र और एक मुरगी भेजते हैं। किसी किसी स्थानमें आजकल मुरगीके बदले पैसा दिया जाता है। विवाहके दिन वर और यात्री बहुत धूमधामके साथ लड़कीके घर जाते हैं, जहां वर और बरातके टिकनेके लिये बांसके छोटे छोटे घर बनाये जाते हैं। इन घरोंमेंसे एक घर वरके लिये सजा हुवा रहता है। सन्ध्या समय वर लड़कीके घर जाता है। जहां लड़के और लड़कीको एक सूतसे लपेट

देते हैं और पुरोहित आकर विवाहके मन्त्रादि पाठ करते हैं। उसके बाद सात बार लड़का और लड़कीके हाथमें भात रखा जाता है और लड़केका दाहना हाथ उठा करके लड़कीके हाथ पर रखते हैं और पुनर्वार मन्त्रादि पाठ किया जाता है। इसके बाद विवाह शेष हो जाता है और बरात बड़ी धूमधामके साथ भोजन करती है।

ये मुरदोंको जलाते हैं। अपनी जातिके किसी मनुष्यके मरने पर उनमेंसे एक व्यक्ति ढोल बजाता और स्त्रियां उच्चैस्वरसे रोती हैं। ढोलकी आवाज सुनने पर सब पड़ोसी एक जगह इकट्ठे होते हैं और मुर्दाको जलानेके लिये ले जाते हैं। इस काममें इन्हें २४ घंटे लगते हैं। जब वे शव जलानेके लिये जाते हैं, तो आगे आगे पुरोहित, उसके बाद शिष्यगण, उनके पीछे कुटुम्बादि और सबके पीछे शवको लिये हुए मृत मनुष्यके जातिवर्ग रहते हैं। एक निकट आत्मीय मुर्दाके मुखमें अग्नि देता है। मुर्दाके जल जाने पर उसका भस्म मट्टीमें गाड़ा जाता है और इस कब्रके ऊपर बांसमें निमान् बांध कर खड़ा कर देते हैं। मरनेके सात दिन बाद पुरोहित आ मृतव्यक्तिके कल्याणार्थ स्वस्त्ययन करते हैं।

यह लोग आराकानी भाषामें बातचीत करते और ब्रह्मदेशीयोंके जैसे अक्षरोंमें लिखते पढ़ते हैं।

एक समय यह जाति बहुत प्रबल हो गयी थी। इनका अत्याचार आज भी वङ्गवासियों खास कर पूर्व्व-बङ्गाल और चट्टग्रामके लोगोंको नहीं भूलता।

उस समयके मघ राजा वा राज राजादेशसे नहीं करते थे। वे दल बांध बांध कर लूटते और देश जलाया करते थे। इसी कारण सुन्दरबनके कुछ अंश और बाखरगञ्ज, चट्टग्राम प्रभृति स्थानोंसे बहुत मनुष्य प्राण लेकर भागे। मघोंके दौरात्मसे घबरा करके १६६४-६५ ई०में बङ्गालके शासनकर्ता शायस्ताखाँ आराकान राजाके विरुद्ध युद्धके लिये अग्रसर हुए उस समय चट्टग्राम मघ राजाके अधीन था।

इस युद्धमें मघ पूर्णरूपसे पराजित होकर भाग गये और चट्टग्राम फिर बङ्गालके अधीन हो गया। इस समय बङ्गालके प्रायः सभी स्थानोंमें मघ वास करते हैं। मघ देखो।

खेरकरिया—भूटानमें लक्ष्मी नदीका निकटस्थ एक ग्राम। यह दरङ्ग जिलाके उत्तर प्रान्तमें अवस्थित है। यहां प्रतिवर्ष एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें दूर दूर देशके मनुष्य आते हैं। कितने ही रुपयोंका माल बिका करता है।

खेरडी—काठियावाड़ प्रान्तके राजकोट राज्यका एक ग्राम। यह राजकोट नगरसे ८ मील पूर्वको अवस्थित और सुप्रसिद्ध लोमा खुमानके निवासस्थान जैसा परिचित है। इन्होंने गुजरातके सुलतान मुजफ्फरको आश्रय दिया, जिन्होंने अकबर बादशाहके तत्प्रान्तीय सूबेदारसे अपने आपको छिपा लिया था। 'मीरात सिकन्दरी' में उसको सरदार परगनेका गांव लिखा है। विश्वासघातकतासे लोमा खुमानके नवानगरमें मरने पर मालूम होता है कि उनके वंशधरोंने खेरडीका अधिकार गंवा दिया और जाम साहबने उन्हें निकाल बाहर किया। फिर वह थोड़े दिनों जसदानमें रहे। परन्तु १६६०-६५ ई०को वीका खाचरने लोमाखुमान भ्राता भोकाके पौत्र जग्र खुमानसे जशदान विजय किया और यह लोग लोलियानाको पीछे हट गये। खेरडी नगरकी लोकसंख्या प्रायः १३४८ है।

खेरवा (हिं० पु०) सामुद्रिक नाविक, समुद्रमें जहाजरानी करनेवाला मल्लाह।

खेरवाड़—१ मऊ विभागकी एक छावनी। यह अक्षा० २३° ५८' उ० और देशा० ७३° ३६' पू०में उदयपुर नगरसे ५० मील दक्षिण गोदावरी नाम्नी क्षुद्र नदीके तटों पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः २२८८ होगी। १८४० और १८४४ ई०को खड़ी की हुई मेवाड़ भील सेनाका यह सदर मुकाम है।

खेरवाड़ी—छोटानागपुरकी एक भाषा। इसकी बहुतसी शाखाएं भ्रमवश स्वतन्त्र समझी जाती हैं। उनके नाम हैं—सन्ताली, मुण्डारी, भूमिज, बिरहार, कोड़ा, हो, तूरी आसुरी, अगरिया और कोरवा।

खेरवाल—(खेड़वाल) गुजरातके ब्राह्मणोंकी एक शाखा। यह खेड़ा जिलेमें बहुत पाये जाते हैं। इनका बड़ा स्थान आनन्द उपविभागके उमरेठ ग्राममें है। यह अपनी

उत्पत्ति त्रिप्रवरी और पञ्चप्रवरी ब्राह्मणोंसे बतलाते और कहते हैं कि चन्द्रवंशीय राजपूत राजा मोरध्वजके शासन कालको वह शङ्कर जोशी और शोद देवके नेतृत्वमें मङ्गिसूरस्थ श्रीरङ्गपट्टनसे जा करके बसे थे। श्रीरङ्गपट्टनसे आज भी इनका सम्बन्ध लगा है। यह अन्तरङ्ग (वित्र) और वहिरङ्ग (बाज) दो श्रेणियोंमें विभक्त हैं। कहते हैं, किसी समयको खेड़ाके राजा पुत्रकामनासे ब्राह्मणोंको बहुतसा दान दिया, परन्तु अधिकांश ब्राह्मणोंने उसको अग्राह्य समझ नगरसे बाहर जा करके निवास किया था। इसीसे दान लेनेवाले भीतरी और न लेनेवाले बाहरी कहलाये हैं। यह दृढ़काय, परिश्रमी, मितव्ययी और उन्नतिशील हैं। इनकी स्त्रियां विवाहोत्सवों वा ज्ञातिभोजोंमें सम्मिलित नहीं होतीं। विधवाएं सफेद कपड़े पहनती हैं। वित्र या भीतरी बहुत कम देख पड़ते और दरिद्रावस्थामें लाड वनियोंका कुलपौरोहित्य करते हैं। परन्तु बाज लोग दान ग्रहण न करनेका गर्व रखते और धनी होते हुए जमान्दारी, महाजनी और सौदागरीमें लगे रहते हैं। माही-कांठामें भी खेड़वालोंकी दोनों श्रेणियां मिलती हैं।

खेरादि सूरमल—भील जातिमें एक प्रधान धर्मप्रचारक इनका प्रधान उद्देश्य यह था, कि श्रीरामचन्द्रजी ईश्वरावतार हैं। भीलोंके "भक्त" नामक गुरु अपनेको खेरादि सूरमलका शिष्य बतलाते हैं। (भील देखो।)

खेराली—काठियावाड़के झालावाड़ विभागमें एक क्षुद्र राज्य। खेराली और वाटला नामक ग्राम इस राज्यके अन्तर्गत हैं। इसका क्षेत्रफल ११ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय: १६३८ है। इस राज्यकी आमदनी २५८८०) रु० और मालगुजारी ६७८) रु० वृटिश गवर्मेण्टको देना पड़ता है।

खेरालु—१ बड़ोदा राज्यके काड़ी प्रान्तका एक तालुका। इसका क्षेत्रफल २४६ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: ७६४६३ है। यह इस छोरसे उस छोर तक समतल और जङ्गलसे भरा हुआ है। खारी इसके भीतर पूर्वसे पश्चिमको बहती है।

२ गुजरातमें बड़ोदा राज्यके काड़ी विभागके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २३° ५४' उ० और देशा० ७२° ३८' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: ७६१७ है। यह स्थान वल्लभाचार्य प्रतिष्ठित गोसाईंजीके मन्दिरके कारण प्रसिद्ध है। यहां दीवानी अदालत, थाना, औषधालय, धर्मशाला और गुजराती पाठशाला है।

खेरी (हिं० स्त्री०) १ किसी प्रकारका गेहूं। यह बङ्गालमें बहुत उपजती और कठिन तथा रक्तवर्ण रहती है। २ तृणविशेष, कोई घास। ३ पक्षिविशेष, कोई चिड़िया। यह दलदलोंमें रहती और ऋतु परिवर्तनके समय अपना वासस्थान बदलती है। खेरी उड़नेसे दौड़नेमें तेज है।

खेरी—युक्त प्रदेशके लखनऊ विभागका एक उत्तरीय जिला। अक्षा २७° ४१' एवं २८° ४२' उ० और देशा० ८०° २' तथा ८१° १८' पू० के मध्य अवस्थित है। इस जिलाके उत्तरमें मोहन नदी, पूर्वमें कौड़ियाला नदी, दक्षिणमें सीतापूर तथा हरदोई जिला और पश्चिममें पीलीभीत तथा शाहजहानपूर जिला हैं। यह जिला सीतापुरसे २८ मील उत्तर और लखनऊसे ८४ मील उत्तर अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल २९६३ वर्गमील है और लोकसंख्या प्राय: ९०५१३८ है। यह जिला अधित्यकामें विभक्त है, जिसमें होकर कौड़ियाला, सुहेली, दहावर, चौका, ऊल, जमवारि, कठना, गोमती और सुखेता नदियां बहती हैं। ऊल नदीके उत्तरकी तराई बहुत अस्वास्थ्याकर है। कौड़ियाला और चौका नदीके मध्यकी जमीन शस्यशालिनी और उर्व्वरा है। जिलाका प्राय: ६५० वर्गमील स्थान जङ्गलसे भरा है। इस वनमें सुन्दर शाल, और शीशाकी लकड़ी पायी जाती है, इसलिये लगभग ३०३ वर्गमील जमीन सरकारको खास अपनी हैं। इस जिलाके उत्तरमें मलेरिया ज्वर प्रबल है। दक्षिणांश स्वास्थ्याकर है। यहां अधिक मूल्यवान् खनिज पदार्थ नहीं हैं, सिर्फ खैरीगढ़ परगनामें मिट्टीका तेल निकलता है। गोला नामक स्थानमें अच्छा कङ्कर और घोराडामें उत्कृष्ट शोरा मिलता है। यहां जङ्गलमें वाघ, हरिण, चित्रमृग, शूकर और नीलगाय देखे जाते और विषैले सर्प तथा कुम्भीर भी यथेष्ट पाते हैं। यहांकी उपज कोदो, काकुन, वाजरा, उड़द, मूंग, गेहूं, यव, सरसों, ऊख, कपास, तम्बाकू, अफीम, नील, और नाना प्रकार शाक सब्जी हैं।

यह जिला तीन तहसीलों और १७ परगनाओंमें विभक्त है। प्रथम, लखीमपुर तहसीलके अधीन खेरी, श्रीनगर, भूर, पाइला और कुकरामैलानी परगना हैं। दूसरी निधासन तहसीलके अधीन फीरोजाबाद, धौराडा, निधासन, खैरीगढ़ और पलिया परगना, तीसरी, मुहम्मदी तहसीलके अधीन मुहम्मदी, परगवान, औरङ्गाबाद, काष्ठा, हैदराबाद, बगदापुर और अतवा पिपरिया परगना हैं। यह जिला डिपुटी कमिश्नरके शासनाधीन है,

यह अकबरके समयमें बहुत जमीन्दारोंके अधिकारमें था। मुहम्मदीके राजाने अकबर बादशाहसे पांच ग्राम और ३०० बीघा जमीन प्राप्त की थी। एक समय वे समस्त जिलाके अधिकारी थे। वर्तमान समयमें जाङ्गरी, रैकवार, सूर्यवंश, जनवाके राजपूत सिख, और सैयद यहांके जमींदार हैं। यहां विद्यालय, थाना, अस्पताल और औषधालय

२ उक्त जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २७° ५४´ उ० और देशा० ८०° ४८´ पू० पर अवस्थित है। यहांकी लोकसंख्या ६२२३ है। यहां १४ हिन्दूमन्दिर, १२ मसजिद और तीन इमामबाड़ा हैं। इस शहरमें एक विद्यालय भी है। १५६३ ई०को मरे सैयद खुर्दका मकबरा देखनेकी चीज है।

खेल (सं० त्रि०) खेलति, खेल-अच्। १ अति सुन्दर भावसे गमन करनेवाला, जो बहुत अच्छी तरह चलता हो। (पु०) २ वेदप्रसिद्ध कोई राजा। अगस्त्य इनके पुरोहित रहे। इनकी पत्नी 'विश्पला' कहलाती थीं। किसी समय खेल-राजासे शत्रुपक्षीय चोररूपीमें लड़ पड़े। इसी युद्धमें राजपत्नी विश्पलाके दोनों पैर कटे थे। पुरोहित अगस्त्यने अश्विनीकुमारद्वयको उसके प्रतीकारका अनुरोध किया, उन्होंने रात्रिको जा करके लोहेके दूसरे दो पैरोंको विश्पलाके टूटे पैरोंकी जगह लगा दिया। (ऋक् १।११६।१५)

खेल (हिं० पु०) १ केलि, क्रीड़ा, मन बहलाव, उछल कूद, चलफिर, दौड़ धूप। इसीसे आंखमिचौली, कुई कुओवर, लब्बोलोय, अंधेरियाउजेरिया, लुकी लुकौअर, कबड्डी, अटई डण्डा, गेंडी गेंद, गोली, गुठिया, ताश शतरञ्ज, गवडा, सुरवग्ग आदि बहुतसे मनबहलावोंका बोध होता है। २ काम, बात। ३ खिलवाड़, हलका काम। ४ अभिनय, स्वांग, तमाशा। ५ अलौकिकता, निरालापन, अद्भुत लीला। ६ कोई क्षुद्र सरोवर। इसमें पशु जल पीते हैं।

खेलन (सं० क्ली०) खेल-ल्युट्। १ क्रीड़ा, खेल, मन बहलावा। २ खेलनेकी चीज, जिससे खेला जावे। जैसे—गेंद, बल्ला, गोट, ताश आदि।

खेलना (हिं० क्रि०) १ मन बहलाना, खेल करना। २ देवी आना, भूत चढ़ना। इसमें मनुष्य अपने पैर और सर हिलाने लगता है। ३ घूमना फिरना। ४ अभिनय दिखाना स्वाँग बनाना, तमाशा करना। इसका प्रेरणार्थक रूप 'खिलवाना' है।

खेलनी (सं० स्त्री०) खेलत्यत्र, खेल आधारे ल्युट् ततो ङीप्। शारिफलक, मोहरा, गोट।

खेलवाड़ (हिं० पु०) १ हंसी दिल्लगी, खेलकूद, मनो बहलाव। २ खेलकूद करनेवाला, दिल्लगीबाज।

खेला (सं० स्त्री०) खेल-अच्-टाप्। स्वनामख्यात क्षुप, एक झाड़ी। यह मधुर, ठण्डी, दूध बढ़ानेवाली और रुचिकर होती है। (राजनिघण्टु)

खेलाई (हिं० स्त्री०) क्रीड़न, खेल।

खेलाड़ी (हिं० वि०) १ खेलैया, खेलनेवाला। २ दिल्लगीबाज, हंसैया। (पु०) ३ क्रीड़ा करनेवाला व्यक्ति। ४ पात्र, अभिनेता, तमाशा देखानेवाला। ५ परमेश्वर, दुनियाको बनाने-बिगाड़नेवाला।

खेलात—बलूचस्तानका देशी राज्य। यह अक्षा० २५° १´ तथा ३०° ८´ उ० और देशा० ६१° ३७´ एवं ६९° २२´ पू०के बीच पड़ता है। इसका पूरा क्षेत्रफल ७१५८३ वर्गमील है। इसके उत्तर ईरान, पूर्व बोलान गिरिसङ्कट, मरी तथा बुगाती पर्वत एवं सिन्धु, उत्तर छागई और क्वेटा-पिशीन् जिले और दक्षिणको लसबेला तथा अरब सागर है। यह देश बहुत पहाड़ी है। नदियां प्रायः दक्षिणको बहती हैं। समुद्रतट १६० मील विस्तृत और पसनी बन्दर प्रधान है। गुवादरकी चारों ओर मस्कटके सुलतानका अधिकार है।

उत्तरके उद्भिद् दक्षिणसे विभिन्न हैं। जलवायुकी

व्यवस्थामें भी बड़ी विभिन्नता दृष्ट होती है। भीतरी भागमें गर्मी बहुत पड़ती सर्दी कम रहती है। वृष्टि सभी जगह अनियमित रूपसे होती और अल्प तथा स्थानीय रहती है। यथाक्रम अरबों, गजनवियों, गोरियों, मङ्गोलों और फिर सिन्धुवासियोंके अधिकारमें आ यह दिल्लीके मुगल-सम्राट्का अधिकृत हुआ। अह-मदजाई शक्ति ई० १५वीं शताब्दकी उत्थित हुई और १८वीं शताब्दीको अपनी चरम सीमा पर पहुंच, परन्तु यह सदा दिल्ली या कन्दाहारके अधीन रही। प्रथम अफगान युद्धके बाद यह अंगरेजोंके अधीन हो गया। इसका आधिपत्य १८५४ और १८७६ ई०की सन्धियोंसे विवेचित और विस्तारित हुआ है। मकरानमें कारेज-का ध्वंसावशेष और 'गब्रबन्द' (आतशपरस्तोंके पुश्ते) भूतत्त्ववेत्ताओंके देखने योग्य हैं।

खिलातके अधिवासी चटाइयोंके झोपड़ों या कम्बलों-के डेरोंमें रहते हैं। लोकसंख्या प्राय: ४७०३३६ है। प्रधानत: बराहुई, बलूची, दिहवारी और सिन्धी भाषाएं प्रचलित हैं।

भूमि अधिकांश बालुकामय है। गेहूं और ज्वार प्रधान खाद्य है। मकरानमें खजूरका बड़ा खर्च है। बागोंमें अनार बहुत देख पड़ता है। नारी और काछी-से बहुत अच्छे मवेशी आते हैं। सरवान और काछीमें बलूचस्तानके सबसे अच्छे घोड़े पैदा होते हैं। खिलात नगरके पास बड़े बड़े गधे उपजते और मकरानके गधे अपनी द्रुतगतिके लिये प्रसिद्ध रहते हैं। भेड़ और बकरे बहुत हैं। काछी, पास पहाड़ और खारांमें ऊंट बहुत होते और सब जगह माल असबाब ढोनेके लिये जानवर मिलते हैं। सब लोग अपने अपने घरमें मुर्गियां रखते हैं। अमीरोंके पास अच्छे अच्छे ताजी कुत्ते रहते हैं।

यहां रुपये पैसेका चलन बहुत कम है। मालगुजारी और मजदूरी कृषिजात द्रव्योंमें दी जाती और खरीद फरोख्त विनियमसे चलती है। जनता अति दरिद्र है। परन्तु अब गये कई सालोंसे लोग अच्छे कपड़े पहनने लगे हैं। मकरानियोंमें भिक्षावृत्ति अधिक प्रच-लित है। सोर पहाड़में कोयलेकी खान है। दल-दलोंकी मट्टीसे अच्छा नमक निकलता है। काछीमें मोटा रेशमी कपड़ा बुना जाता और मकरानमें कच्ची रेशमकी चीजें बनती हैं। सभी बराहुई स्त्रियां सूईके काममें होशियार हैं और यहांकी कारचोबी उमदा और देखने लायक होती है। स्त्रियां काले ऊनके टिकाऊ लबादे तैयार करती हैं। खजूरकी चटाइयां, थैलियां, रस्सियां और दूसरी चीजें भी बनायी जाती हैं।

व्यवसाय महसूलकी अधिकता और ऊंटोंके किरायेसे रुका है। राज्यके पूर्व और उत्तरपूर्व नार्थवेष्टर्न रेलवे चलती है। क्वेटासे खेलात नगर तक बैलगाड़ी आने जानेकी राह और तारभी लगा है। अंगरेज गवनमेण्ट खेलातके खांकी प्रजा और दूसरे स्वाधीन लोगोंके झगड़ोंमें ही हस्तक्षेप करती है। राज्यका पूरा आय प्राय: साढ़े सात और ८॥ लाख रुपयेके बीच और खर्च कोई साढ़े तीन या ४ लाख रुपया वार्षिक है। अंगरेज सरकार खां आदिको कितना ही रुपया प्रति वर्ष शान्ति बनाये रखनेको देती है। किसानोंको खांके किलेकी मरम्मत और घोड़ेकी हिफाजत करनी पड़ती है। सेना-की व्यवस्था ठीक नहीं।

अभी तक शिक्षाकी अवहेला ही रही है। मसजिद-के मदरसोंमें कुछ लड़के पढ़ते और हिन्दू अपने घर पर ही मातापिता कर्तृक शिक्षित हुवा करते हैं।

खेलाना (हिं० क्रि०) १ क्रीड़ामें किसी अन्य व्यक्तिको प्रवृत्त करना। २ क्रीड़ामें सम्मिलित करना खेलमें मिलाना। ३ बहलाना, चुप करना, बहकाना।

खेलि (सं० स्त्री०) खे आकाशे अलति पर्याप्नोति, खे-अल्-इन्। १ गान, गाना। २ बाण, तीर। ३ सूर्य। ४ पशु। ५ जन्तु।

खेलुआ (हिं० पु०) यन्त्रविशेष, एक औजार। यह देखनेमें थाली-जैसा होता है। इससे चर्मको मुलायम बनाते, खारी नमक रगड़ रगड़ करके खिलाते हैं।

खेव (हिं० पु०) तृणविशेष, एक घास। इसका अपर नाम 'पलञ्जी' है। प्रथम वृष्टिमें ही यह खूब उग आता और घोड़ेको खानेमें बहुत सुहाता है।

खेवट (हिं० पु०) १ पट्टीदारोंकी जमीनके हिसाबका एक कागज। इसमें पटवारी उनकी जमीन और मालगुजारीकी कैफियत लिखता है। २ मल्लाह, मांझी।

खेवनाव (हिं० पु०) वृक्षविशेष, एक पेड़। यह पेड़ बड़ा होता और भारतके कई प्रान्तोंमें उपजता है। इनके भीतरी रेशेकी रस्सी बनती है। खेवनावमें लाह भी निकलती है। स्थानविशेषमें इसको 'टुंबरखेव' भी कहा जाता है।

खेवा (हिं० पु०) १ नावका किराया, किश्तीकी मजदूरी। २ नावकी खेप। ३ बार, मरतबा। ४ भरी नाव।

खेवाई (हिं० स्त्री०) १ नौकापरिचालनकार्य, जहाजरानी नाव चलाई। २ नाव पर चढ़नेका भाड़ा या किराया। ३ कोई रस्सी। इससे दण्ड नौकामें आबद्ध किया जाता है।

खेस (हिं० पु०) वस्त्रविशेष, एक कपड़ा। यह मोटे देशी सूतका बनता और चादर जैसा लम्बा रहता है। इसको बिछौनेमें व्यवहार करते हैं

खेसर (सं० पु०) खे आकाशे इव शीघ्रगामित्वात् सरति, सृ-ट अलुक् समा०। अश्वतर, खच्चर। यह घोड़ीके पेटमें गधेका उत्पन्न किया हुआ एक जन्तु है। पर्याय—अश्व-खरज, सक्षद्गर्भ, अध्वग, क्षमी, मन्तुष्ट, मिश्रद, मिश्र-शब्द, अतिभारग।

खेसारी (हिं० स्त्री०) चटरी, किसी किस्मका मटर इसकी फलियां चपटी रहती हैं। खेसारीकी दाल बनाया करते हैं। यह सस्ती बिकती और भारतमें प्रायः सब त खेतोंमें उपजती है खेसारीको कार्तिक अग्रहायण मास बोया जाता है। यह प्रायः साढ़े तीन मासमें तैयार होती है, प्रवादानुसार अधिकतासे इसको व्यवहार करने पर मनुष्य पङ्गु बन जाता है। खेसारी बहुत दस्तावर होती है।

खेह (हिं० स्त्री०) धूलि, खाक, मट्टी।

खैंचनी (हिं० स्त्री०) काष्ठखण्डभेद, देवदार लकड़ीकी एक तख्ती इस पर तैल डाल करके औजारोंको साफ किया जाता है।

खैबर—उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेशसे अफगानस्थानको जाने-वाला एक ऐतिहासिकगिरि सङ्कट (घाटी), इसका केन्द्र स्थान अक्षा० ३४° ६' उ० और देशा० ७१° ५' पू०में अव-स्थित है। इस घाटीके पहाड़ भी खैबर ही कहलाते हैं।

खैबर घाटी अफगानस्थानसे भारत आनेकी उत्तर-की बड़ा राह है। यह घाटी पेशावरसे १०॥ मील पश्चिमको आरम्भ होती और ३३ मील पहाड़ियोंमें घूमती हुई डक्कामें जाकर निकलती है। कादिममें बहु-तसी गुहाएं हैं और उसकी पश्चिम सीमाके बाहर बौद्ध धर्म तथा प्राचीन सभ्यताके अनेक निदर्शन विद्यमान हैं। जुलाई, अगस्त, दिसम्बर और जनवरी महीने खैबरकी नदियोंमें एकाएक बाढ़ आ जाती है। यहां लदे हुए जानवरोंको आने जानेमें बड़ी तकलीफ पड़ती है।

यह घाटी सदा सर्वदा भारतवर्षका एक प्रधान मार्ग रही है। मकदूनियाके सिकन्दरने इसी राह अपनी सेना भारत भेजी थी। महमूद गजनवीने भी जयपाल चढ़ाई करते समय खैबर घाटीसे काम लिया। मुगल बादशाह बाबर और हुमायूं कई बार इस राह होकर गुजर गये। नादिर शाहने खैबर घाटीसे जा कर जमरूदके पास काबुलके सूबेदार नासरखान्को हराया था। अहमदशाह दुरानी और उनके पौत्र शाह जमांने पंजाब पर आक्रमण करते समय कई बार खैबर-सङ्कट मार्गका अनुसरण किया। मुगल बादशाहोंने इस घाटीके अधि-कार पर बड़ा जोर डाला, परन्तु वह इसे रख ली रख न सके। इस पर अफरीदियोंका अधिकार है। बादशाह जलाल-उद्-दीन् अकबरने इसकी सड़कको ऐसा सुधारा था कि गाड़ियां मजेमें आती जाती रहीं। परन्तु उस समय भी खैबरमें रोशानिया लोगोंका दबदबा था। १५८६ ई०को अपने भाई मिर्जा मुहम्मद हकीमके मरने पर जब अकबरने काबुल अधिकार करना चाहा, राज-पूत वीर मानसिंहको रोशानियोंसे लड़ करके आगे बढ़ना पड़ा। १६७२ ई०को औरङ्गजेबके अधीन सूबेदार मुहम्मद अमीन खांको लोगोंने खैबरकी राहमें भटका दिया और उनके ४०००० आदमी मार काट करके सब खजाने हाथियों, स्त्रियों और बच्चोंको लूट लिया।

१८३८ ई०को पहले पहल अङ्गरेज साहबजादा तैमूरको खैबरकी राह काबुल ले गये थे। प्रथम अफगान युद्धके खैबरमें कई लड़ाइयां हुईं और अंगरेजो सेनाको कष्ट भी झेलने पड़े। १८४२ ई० ६ अप्रैलको जनरल पोलक अपनी सेनाके साथ खैबरकी राह आगे बढ़े थे। काबुलसे पीछे लौटने पर उनकी सेनाके दो भागों पर

आक्रमण किया गया। १८७८ ई०को सर नेवली चैम्बर लेननें जो मिलतासूचक दल अमीर शेर अली खांके पास भेजा था, अली मसजिदमें एक रहा। उसे धमकाया और हटाया गया था। इस पर खैबरकी राह अंगरेजोंने तोसरी बार काबुल पर चढ़ाई की। १८७९ ई०को सन्धिके अनुसार खैबरके लोग अंगरेजी अधिकारमें आये अब खैबर घाटी खुली रहती और सप्ताहमें दो बार काबुल आमदरफ्त के लिये फौज पहरा दिया करती है

खैबरकी पोलिटिकल एजेन्सीके उत्तर काबुल नदी तथा सफेद कोह पहाड़, पूर्व पेशावर जिला, दक्षिण अक्काखेल और ओरकजाई देश और पश्चिमको चकमनी तथा ममूजाई देश है। प्रकृत पक्षमें जमरूद और लण्डी कोतलके बीच खैबर पर शिनवारियों, जक्काखेल, कूकी खेल और ओरकजाइयोंका अधिकार रहा। परन्तु सिख राज्य बढ़ने पर अफरीदियोंने यह प्रान्त उनसे छीन लिया।

१८९७ ई० अगस्त मासको अफरीदियोंने खैबरकी चौकियां पर आक्रमण किया और लण्डीकोतलकी सुर-
भाषाएं प्रचलित हैं।

[illegible] मालकामय है। गेहूं और [illegible] १८६६ ई०
क्षित सरायको तोड़ फोड़ दिया था। परन्तु [illegible]
अकतोबर मासको जो सन्धि हुई, अफरीदियोंने अंगरेजोंको छोड़ करके किसी दूसरे राजासे सम्बन्ध न रखनेकी प्रतिज्ञा की और सड़क तथा रेल निकलने पर कोई आपत्ति न करनेको सम्मत हो गये।

खेमख (सं० पु०) खे आकाशे कर्तव्यो मखः, स्वार्थे अन्। आकाश कर्तव्य यज्ञ विशेष। (ऋक् ४।५।१५)

खैर (हिं० पु०) १ खदिरवृक्ष, बबूलकी जातिका कोई पेड़। यह अति वृहत् रहता और लगभग सम्पूर्ण भारतमें प्रचुर परिमाणसे उपजता है। इसका भीतरी काष्ठ भूरा होता, कम धुनता और गृहनिर्माण तथा कृषियन्त्रोंमें लगता है। खैरका डण्डा बहुत अच्छा समझा जाता है। इसमें उपयोगी गोंद निकलता। २ खैरकी लकड़ीका जमा हुआ रस, कत्था यह खदिर काष्ठखण्डोंको उबालनेसे निकलता है। ३ पक्षिविशेष, कोई चिड़िया। इसका रङ्ग भूरा और दैर्घ्य एक बित्ता होता है। खैर दाक्षिणात्यमें कुटीरों वा क्षुद्र वृक्षों पर घोंसला लगाता और उसकी भूमितक पहुंचाता है। कण्ठ तथा चञ्चुका वर्ण किञ्चित् श्वेत रहता है।

खैर (फा० स्त्री०) १ कुशल, भलाई, चैन। (अव्य०) २ अस्तु, अच्छा, भला। ३ क्या चिन्ता, परवा नहीं, छोड़ो।

खैर—युक्तप्रदेशके अलीगढ़ जिलाके पश्चिम विभागमें एक तहसील। इसके पश्चिममें यमुना नदी है। खैर तहसीलके भीतर तीन परगना हैं। तथा खैर चन्दौसी, और तप्पल यह अक्षा० २७° ५१´ एवं २८° ११´ उ० और देशा० ७७° २८´ तथा १८° १´ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ४०७ वर्ग मील है। लोकसंख्या १७८८६७ है।

इस तहसीलमें २७२ ग्राम और तीन शहर हैं। इसका प्रधान नगर खैर अलीगढ़से १४ मील उत्तर-पश्चिम है। यहां की आमदनी ४७०००० रु० हैं। इस तहसीलमें बहुत जगह खादर मैदान है। जहां बड़ी बड़ी घासके अतिरिक्त और कुछ उत्पन्न नहीं होता है। इस मैदानमें बहुतसे जङ्गली शूकर पाये जाते हैं।

खैर—इस तहसीलमें ४ थाने और १ फौजदारी अदालत है। खैर तहसील प्रधान नगरका नाम भी खैर ही है। इसमें तहसील दारी, थाना, मुन्सिफी, डाक खाना और
के मदरसा। म [illegible] पुलिस और सफाईका खर्च
स्कूल बना है। शहरमें [illegible]
निकालनेको प्रत्येक घर पीछे एक कर लगता है। १८५७ ई०को सिपाहियोंने जब विद्रोह उठाया था, चौहानोंने इस नगरको अधिकार किया और राव भूपालसिंहको राजा बना दिया परन्तु जून मासके प्रथम ही आगरेके मिश्र-सेनादलने खैर नगर आक्रमण करके राजाको पकड़ लिया और सैनिक अदालतने विचार करके उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया। कई दिनों पीछे चौहानोंने जाटोंके साथ सम्मिलित हो नगर आक्रमण और महाजनी कोठीको लुण्ठन किया था। शेषको उन्होंने नगरके गृहादि तोड़ फोड़ भूमिसात् कर दिये।

खैर आफियत (फा० स्त्री०) क्षेमकुशल, चैनचान, राजीखुशी।

खैरखाह (फा० वि०) शुभचिन्तक, भला चाहनेवाला।

खैरखाही (फा० स्त्री०) शुभचिन्तकी, भला मनानेकी हालत।

खैरगली—उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेशके हजारा जिलेके।

एक छोटी छावनी। यह अक्षा० ३३' ५५' उ० और देशा० ७३' २० पू०में अबोटाबाद और मरीकी सड़क पर पड़ती है। जाड़ेमें रावलपिण्डीमें रहनेवाले अंगरेजी पहाड़ी तोपखानोंमेंसे एक ग्रीष्मऋतुमें यहां रखा जाता है।

खैरपुर—उत्तरसिन्धुप्रदेशके अन्तर्गत एक देशी राज्य। यह अक्षा० २६' १० से २७' ४६' उ० और देशा० ६८' २०' से ७०' १४ पू०के बीच अवस्थित है। इसके उत्तरमें शिकारपुर जिला, दक्षिणमें हैदराबाद जिला, पूर्वमें जैशलमीर और पश्चिममें सिन्धुनद है। इस राज्यकी लम्बाई ६० कोस और चौड़ाई ३१ कोस और क्षेत्रफल ६०१० वर्गमील है। यहांकी जनसंख्या १९९३१३ है।

खैरपुरका इतिहास सिन्धु राज्यके इतिहासके साथ लगा हुआ है। सिन्ध देखो। १७८३ ई०को बलूच वंशीय मीर फतेह अली खाँ तलपुर सिन्धुदेशके राजा हुए। उनके थोड़े दिन राज्य करनेके बाद उनके भानजे शोराब खाँ तलपुरने, अपने दो लड़कों मीर रुस्तम और अलीमुरादके साथ खैरपुरमें राज्य स्थापन किया। उससे मोरशोराबके अंशमें खैरपुर पड़ा। उस समय राजकर अफगानिस्तानके अमीरको दिया जाता था। १८११ ई०को शोराब खाँने राज्यभार अपने बड़े पुत्र रुस्तमको अर्पण किया। १८१३ ई०को काबुलमें वरकजाई वंशके राज्य लाभ करते समय नाना प्रकारका गड़बड़ हुआ था। उसी समय मीर रुस्तमने काबुलकी अधीनता छोड़ी थी। थोड़े दिनके बाद मीर रुस्तम और अलीमुराद दोनों भाइयोंमें विवाद होने पर अंगरेजोंको मध्यस्थ बनाना पड़ा। १८३२ ई०में अङ्गरेजोंके साथ एक संधि हो गई जिसमें यह निश्चित हुवा कि सिन्धुनदी और सिन्धुप्रदेशके रास्तेसे अङ्गरेज लोग ना विरोक टोकके जा सकते हैं और अङ्गरेजी सेना जब काबुल जायेगी तो उस समय वहांके मीरोंको सहायता देनी पड़ेगी। इस पर बहुतसे राजा सहमत न हुवे। उस समय अली मुरादने खैरपुरमें अपना प्रभुत्व स्थापन कर लिया था। उन्होंने अङ्गरेजको यथारीति सहायता दी थी। इसका फल यह हुवा कि मियानी और दबोरकी लड़ाईके बाद जब समस्त सिन्धुप्रदेश अङ्गरेजोंके हाथ आया, उस समय खैरपुरमें अङ्गरेजोंके अधीन वह एक स्वतन्त्र राजा रहे। १८६६ ई०को अङ्गरेज गवर्नमेण्टने राजाको एक सनद दी जिसमें कहा गया कि मुसलमानी आईन अनुसार तलपुर मीर राजत्व कर सकते हैं गवर्नमेण्ट इस पर कोई आपत्ति न डालेगी। मीर अलीमुराद १८९४ ई०में मर गये और उनके लड़के मीर फैज महम्मद खाँको राजगद्दी मिली; १५ तोपोंकी सलामी है। Lt. Col. हिज हाईनेस मीर सर इमाम वक्स खान् तलपुर जी० सी० आई० वर्तमान अधीश्वर हैं।

इस राज्यमें एक शहर और १५३ ग्राम हैं जिनमें लगभग ३६००० हिन्दू और १६३००० मुसलमान बसे हैं। यहांके सैकड़े पीछे ६८ मनुष्य कृषि और शेष नौकरी तथा वाणिज्य व्यवसाय करते हैं। खैरपुरकी जमीन बहुत उपजाऊ है। यहां जौवार, बाजरा, गेहूं, चना तथा अनेक प्रकारकी दाल और कपासको उपज प्रधान हैं। यहां फलवृक्ष भी यथेष्ट हैं। यथा—आम, सेव, अनार, खजूर तथा शहतूत। यहांके पाल पशु, ऊंट, घोड़ा, भैंस, बैल, भेंड़, गदभ और खच्चर हैं। इस राज्यमें ३३१ वर्गमील जमीन जङ्गलोंसे भरी है। उन्हींको देख भाल करनेके लिये राज्यकी ओरसे थोड़े कर्मचारी नियत किये गये हैं। जङ्गलोंसे प्राय: २६०००) रु०की आमदनी है। यहांसे कपास, रेशम, अनाज, नील, हाथका बुना कपड़ा, चमड़ा तथा तम्बाकूकी रफ्तनी होती है।

विचारके लिये यहां दो अदालत हैं; एक खैरपुरमें दूसरी मीरके साथ। जब मीर कहीं जाते तो अदालत भी उनके साथ ही रहतो है। खैरपूरकी स्थायी अदालतमें एक हिन्दू और मीरके साथ दो मौलवी न्यायकर्ता रहते हैं। इस राज्यको यद्यपि मृत्यु-दण्ड-विधानका सम्पूर्ण अधिकार भी है तथापि मीर किसीको मृत्यु दण्ड की आज्ञा नहीं देते। दीवानी अदालतमें बादीको अदालतके व्ययको भांति प्रार्थित अर्थका चतुर्थांश राजकोषमें देना होता है। इस लिये मुकदमाकी संख्या अल्प ही रहा करती है। वे पञ्चायत होके द्वारा आपसमें विवादकी मोमांसा कर लेते हैं। यहांकी सैन्य-संख्या प्राय: पांच सौ है जिनमेंसे थोड़े अश्वारोही और थोड़े पैदल हैं जिनके पास तलवार और बन्दूक

रहा करती हैं। इस राज्यमें शिक्षाका बहुत अभाव है। यहां सिर्फ छः विद्यालय हैं जिनमें प्रायः ढाई हजार लड़के पढ़ते हैं। यहां एक शिल्प स्कूल भी है जिसमें कुम्हार, लोहार, बढ़ई, जुलाहे और दर्जीके काम सिखाये जाते हैं।

मालगुजारी बटाईके रीतिसे क्षेत्रजात द्रव्योंमें ली जाती है। मीर साहबको उसका तृतीयांश मिलता है। कुल आमदनी कोई १३ लाख है। इसमें १८५०००) रु०की जागीर भी आ जाती है। १८०२ ई० तक यहां देशी सिक्का चला, परन्तु अब अंगरेजी रुपयेने उसका स्थान अधिकार कर लिया। मीर साहब गवर्नमेण्टको कोई कर नहीं देते।

इसराज्यमें छः अस्पताल हैं। यहां आठ मास तक कठिन गर्मी पड़ती है, वृष्टि बहुत कम होती है। स्थायी और सविराम ज्वर, आंख उठना, और चर्मरोग यहां प्रायः बहुतोंको हुआ करते हैं।

२ खैरपुर राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २७° ३′ उ० और देशा० ६८° ४८′ पूमें सिन्धुनदीसे १५ मील पूर्व और रोहरीसे १७ मील दक्षिण, मीरवाह नहरकी बगलमें अवस्थित है। यहांकी जनसंख्या प्रायः १४०१४ है, जिसमें विशेष कर मुसलमान हैं। इसका निर्माण कौशल कुछ भी नहीं है। अधिकांश घर यहां मिट्टीके हैं, बहुत थोड़े ईंटोंके बने हैं। राजभवन नानाप्रकारके रङ्गसे चित्रित है। यहांका जलवायु उपयुक्त नहीं होनेके कारण राजा अपने राजभवनमें नहीं, सदा कोटदीगीमें रहा करते हैं। नगरके बाहरमें पीर रेहान्, जियाउद्दीन् तथा शाजोतफर शहीदकी २ मसजिदें हैं। इस शहरमें दो औषधालय हैं जिनमें एक स्त्रियोंके लिये है।

तलपुरराजके प्राधान्य समयमें यहां प्रायः १५००० मनुष्य रहते थे परन्तु इसका दिनों दिन ह्रास होनेके कारण आजकल सिर्फ ८००० ही मनुष्य हैं। यहां आजकल कुछ शिल्पकर्म भी होते हैं, यथा बुनना, बहुत प्रकारके कपड़ा रङ्गना, सोनारका काम, और बन्दूक आदि बनाना। गलिचा बुननेका काम भी थोड़े दिनसे आरम्भ हुवा है। इसके कार्यकर्त्ता पञ्जाबी शिक्षक द्वारा सिखाये जाते हैं। खैरपुरसे नील, जोआर, बाजरा और तीलकी रफ्तानी होती है।

खैरपुर—पञ्जाबके अन्तर्गत भावलपुर राज्यकी मीनचीनाबाद निजामतमें एक तहसील। यह अक्षा० २८° ४८′ एवं ३०° उ० और देशा० ७२° ७′ तथा ७३° १८′ पू०के मध्य सतलज नदीके बांयें किनारे पर अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल २३०० वर्गमील है। जनसंख्या प्रायः ८१८७की है। यहांकी आमदनी दो लाख रुपये है।

खैरपुर—पञ्जाबके अन्तर्गत मुजफ्फरगढ़ जिलामें अलीपुर तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २८° २०′ उ० देशा० ७०° ४८′ पू०में मुजफ्फरगढ़ शहरसे ५० मील दक्षिणमें अवस्थित है। यहांकी लोकसंख्या प्रायः २२५७ है। यह शहर खैरशाहका निर्माण किया हुआ है। इस लिये इनका नाम खैरपुर पड़ा। यह निम्नभूमिमें अवस्थित होनेके कारण चन्द्रभागा नदीकी बाढ़से प्लावित हुआ करता है। इस शहरके प्रायः बहुत घर ईंटोंके बने हैं। यहांका रास्ता इतना संकीर्ण है कि उसमें हो कर गाड़ी नहीं चल सकती। यहांसे कपास, रेशम और अनेक प्रकारके शस्य रफ्तानी होते हैं। और बहुत प्रकारके कपड़े विदेशसे यहां आते हैं।

खैरवा—झांसीके आसपास रहनेवाली एक हिन्दू जाति। इनका विश्वास है कि पन्नानरेश स्वर्गवासी छत्रपालसिंह जीके राजत्वकालमें यह जाति १७०० ई०के लगभग झांसीको आयी थी। यह जाति क्षत्रियवर्णमें गिनी गयी है।

इस जातिकी विवाह-प्रणाली उच्च जातियोंकी सी है। ये स्वगोत्रमें विवाह नहीं करते परन्तु तीन कुल छोड़कर विवाह करते हैं। इनलोगोंमें भांग, गांजा और अफीम विशेष रूपसे प्रचलित है। ये मछली खाते और शराब भी पीते हैं। खैर या खदिरवृक्षसे सामान बना कर बेचना ही इनकी मुख्यवृत्ति है।

जब ये लोग अपने संबन्धियोंसे मिलते तो राम राम, जय श्रीकृष्ण, जय राधाकृष्ण कहा करते हैं। ये देवीके उपासक होते और उनके नाम पर बकरे बलिदान करते हैं।

खरवाल (हिं० पु०) वृक्षविशेष, कोलियार पेड़।

खैरसार (हिं० पु०) कत्था, खैरका जमा हुआ रस।

खैरा (हिं० वि०) १ कत्थई, खैर-जैसा लाल। खैरके रङ्गका कबूतर, घोड़ा और बगला भी 'खैरा' ही कहलाता है। (पु०) २ धान्यकृमि, रोगभेद, धानकी एक बीमारी। इसमें उसकी मञ्जरी पीतवर्ण पड़ जाती है। ३ एक तालाकी दून। ४ मत्स्यविशेष, कोई मछली। यह बङ्गालकी नदियोंमें बहुत होती है।

खैरा—मेदिनीपुर जिलाकी एक प्राचीन जाति। इस जातिके अधीन एक समय बलरामपुर, खड़गपुर, और कदारकुण्ड परगना थे। बलरामपुरमें खैराराजके वासस्थान और उनके प्रतिष्ठित देवमन्दिरादिका भग्नावशेष विद्यमान है। बहुतोंका मत है कि बलरामपुर और कर्णगढ़के राजाओंके पूर्वपुरुष खैराराज्यके दीवान और गढ़के सर्दार थे। उन्हींके षड़्यन्त्रसे खैराके राजा मारे गये और उनकी सातो रानियां सती हुईं। रानियोंने चितारोहण कालमें उन्हें यह कहकर शाप दिया कि "जिन्होंने षड़यन्त्र रचकर हमलोगोंका नाश किया हम सतियोंके अभिशापसे उनकी भी सात पुरुषके बीचमें ही सन्तान नष्ट होगी।" सतीकी बात कदापि मिथ्या नहीं होती और ऐसा सुना जाता है कि बलरामपुरके राज्यवंशज में भीमसेन महापात्रसे सप्तम पुरुषमें राजा वीरप्रसाद और कर्णगढ़ राजवंशके प्रथम राजा लक्ष्मणसिंहसे सप्तम पुरुष अजितसिंह निर्वंश रहे।

कोई कोई कहते हैं कि मेदिनीपुर शहरसे पांच या ६ कोस दूर जगन्नाथ जानेके रास्तेकी बगलमें अयोध्या-गढ़में खैराके राजा रहते थे। इस गढ़के ऊपर जाड़ बाङ्गला नामका एक मन्दिर है जिसमें खैराराजकी कुलदेवी भगवती सिंहवाहिनीकी मूर्ति है। इसके अतिरिक्त खैरा राजाकी और भी कई कीर्तियां हैं।

आजकल भी मेदिनीपुर जिलामें बहुत जगह खैरि नाम जाति रहती है।

खैरागढ़—१ युक्तप्रान्तीय आगरा जिलेकी दक्षिण-पश्चिम तहसील। यह अक्षा० २६° ४५' तथा २७° ४' उ० और देशा० ७७° २६' एवं ७८° ७' पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल ३०८ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १२७६८२ है। खैरागढ़ तहसीलका एक छोटा ही गांव है। उतङ्गन नदी इसको दो भागोंमें बांटती है। यहांके पहाड़का लाल पत्थर मकान बनानेके लिये बहुत अच्छा रहता और कीमती ठहरता है

२ इसी नगरकी तहसीलका एक नगर। यह आगरासे ८ कोस दक्षिण—पश्चिममें उतङ्गन नदी किनारे अवस्थित है। यहां थाना, डाकघर और विद्यालय हैं।

३ मध्यप्रदेशका एक जागीरदारी राज्य। यह अक्षा० २१° ४ तथा २१° ३४' उ० और देशा० ८०° २७' एवं ८१° १२' पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ८३१ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १३७५५४ है। खैरागढ़ दुर्ग जिलेका पश्चिम सीमा पर पड़ता है। इसमें ३ टकड़े हैं। पहले खैरागढ़के राजाओंका अधिकार केवल खुलवा नामक छोटेसे परगनेमें रहा। ई० १८वीं शताब्दीके शेषकालकी एक ऋणके बदले खवर्धा राज्यसे खमरिया ले ली गयी और राज्यका प्रधान क्षेत्र खैरागढ़ मण्डलाके राजाओंसे मिला। फिर डोंगरगढ़ उस जमींनदारकी आधी भूमिका भाग है, जिसने मराठोंके विरुद्ध विद्रोह किया था। खैरागढ़ और नांदगांवके राजाओंको बलवेको दबा करके उसका राज्य आपसमें बांट लिया। खैरागढ़ शहर कोई ४६५६ लोगोंकी एक बसती है। बङ्गाल नागपुर रेलवेके डोंगरगढ़ और नांदगांव दोनों ष्टेशनोंसे यह २३ मील दूर पड़ता है। राज्यके पश्चिम भागमें पहाड़ है। खैरागढ़के राजा नागवंश राजपूत समझे जाते हैं। १८८० ई०को २३ वर्ष वयसमें राजा कमलनारायण सिंह अभिषिक्त और १८९८ ई०को मौरूसी राजा उपाधि प्राप्त हुये। लग पूर्वी हिन्दीकी एक शाखा भाषा व्यवहार करते हैं। खेत सींचनेके लिये २२४ तालाब हैं। खैरागढ़ नगरमें पीतलका बर्तन और लकड़ीका सामान बनता है। बीड़ियां तैयार करनेमें बहुतसे लोग लगे रहते हैं। राज्यके दक्षिण भागमें हो करके बङ्गाल नागपुर रेल निकली है। इस राज्यकी वार्षिक आय प्रायः ३०३०००)

रू० है। गवर्नमेण्टको ७००००) रू० प्रति वर्ष कर दिया जाता है।

४ उक्त खैरागढ़ राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २१ २५´ ३०´ उ० और देशा० ८१´ २´ पू०में अङ्क और पिपरिया नद सङ्गम पर अवस्थित है यहांकी जनसख्या २८८७ है।

खैरात (अ० पु०) दानपुण्य, निछावर, बख्शिश।

खैराबाद—बङ्गालके बाखरगञ्ज जिलामें एक नदी। यह वरीशालसे निकल रानीहाटमें जा कर बाखरगञ्ज नगर होती हुई अङ्गरियाहाट तक पहुंची है। फिर महालिया गुलाचिपा और राणावद आदि नाम धारण कर वङ्गोपसागरमें गिरी है।

२ युक्तप्रादेशिक सीतापुर जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २७´ ३२´ उ० और देशा० ८०´ ४६´ पू०में लखनऊ बरेली ष्टेट रेलवे पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: १३७४४ होगी। पहले यह एक बड़ा स्थान रहा कहते हैं कि ई० ११वीं शताब्दीकी करा नामक किसी पासीने उसको बसाया था। लोग इसको प्राचीन ममछत नामक पुण्य तीर्थ समझते हैं। दिल्लीके पहले बादशाह यहां एक सूबादार रखते थे। अकबरके समयको खैराबाद एक सरकारकी राजधानी रहा। ई० १८वीं शताब्दीके प्रथम अर्धभागमें यहां अवधको निजामत लगती थी। अंगरेजी राज्यमें मिलाया। इसीके नाम पर एक डिविजन बन गया। यहां कई एक मन्दिर और मसजिदें खड़ी हैं। १८६८ ई०से म्युनिसपालिटी चल रही है। खैराबादमें दैनिक बाजार लगता और कपड़ा छपता है। जनवरी मासको बड़ा मेला लगता है।

खैरियत (फा० स्त्री०) १ कुशल, राजी, खुशी। २ मङ्गल भलाई।

खैरोमूरत—पञ्जाब अटक जिलेकी फतेहजङ्ग तहसीलका एक पहाड़. यह अक्षा० ३३´ २५´ से ३३´ ३०´ उ० और देशा० ७२´ ३७ से ७२´ ५६ पू० पर्यन्त विस्तृत है और सिन्धुसे प्राय: ३० मील दूर उठ करके २४ मील पूर्वकी चला गया है। पहले इसमें बड़ा जङ्गल था, परन्तु अब पशुओंके अधिक चरनेसे उसका कहीं चिह्न तक देख नहीं पड़ता पहाड़का दक्षिण भाग बहुत भयानक है।

खैलर (हिं० पु०) मन्थनदण्ड, मथानी

खैला (हिं० पु०) बछड़ा, काममें न लगा हुआ छोटा बैल

खैलायन (स० त्रि०) खिल चातुरर्थिक अण्। खिल-निर्वृत्त, खिलसन्निहित।

खैलिक (स० त्रि०) खिल वा परिशिष्ट सम्बन्धीय।

खोंखना (हिं० क्रि०) खांसना, खों खों करना।

खोंखा (हिं० स्त्री०) कास, खांसी।

खोंखों (हिं० पु०) खांसनेकी आवाज, कासजनित शब्द।

खोंगा (हिं० पु०) १ अवरोध, रुकावट। २ बछड़ा, नया बैल जो काममें न लगा हो। ३ अनभिज्ञ व्यक्ति, नावाकिफ शख्स

खोंचा (हिं० पु०) १ खुरच, छिलाव २ फटन ३ मुष्टि, मुट्ठी। ४ मुष्टि परिमित कोई द्रव्य, मूठा। ५ बकभेद, किसी किस्मका बगला।

खोंचा (हिं० पु०) १ बहेलियोंकी एक लम्बी लग्गी। इसके छोर पर लासा लगाते और पक्षियोंको फसाते हैं। २ आघात, खोंच।

खोंची (हिं० स्त्री०) परजा या भिखमङ्गोंको दिया जाने वाला थोड़ासा अनाज।

खोंटना (हिं० क्रि०) कपटना, फुनगी फुनगी तोड़ना।

खोंड—द्राविड़ वंशके अन्ध्र जातिकी भाषा

खोंड(कन्ध)—मन्द्राजके गञ्जम जिला और उड़ीसाके करद राज्यमें रहनेवाला द्राविड़जाति। इनकी कुल संख्या लगभग ७०११४ है।

खोंड अपनेको क्विलोक या क्विनजू कहते हैं। इन दो शब्दोंकी व्युत्पत्ति 'को' या 'कू' से है। तेलङ्ग भाषामें इसका अर्थ 'पहाड़' है।

इनमें ववाहका कोई दृढ़ नियम नहीं है इनके दो प्रधान भेद हैं, प्रथम 'कुटिया खोंड़' जो सदा पर्वत पर रहा करते, द्वितीय समभूमि पर रहनेवाले खोंड़ ये कुछ कुछ हिन्दू धर्मानुसार चलते हैं। द्वितीय श्रेणीके खोंड़ फिर कई एक शाख में बंट गये हैं। राज

खंड, दाल, तोनल, पोरखिय', कन्धरा, गौरिया, नगला प्रभृति इसी श्रेणीके हैं। राजखोंड ही सभीके अधीश्वर माने जाते, जबतक उन्हें थोड़ी जमीन न रहे तब तक वे राजखोंड नहीं कहला सकते। जब कोई राजखोंड किस दूसरे श्रेणीमें विवाह करता तो वह भी उसी श्रेणीमें मिला लिया जाता है। 'दल' जो बलमुदिया भी कहलाता सेनिकमें भर्ती होते हैं। पोरखिया भैंस खाते, कन्धरा हरिद्रा (हलदी) उपजाते। जोगारिया मवेशी चराते हैं। खड़ अपने श्रेणीमें विवाह नहीं करते परन्तु ये मामाकी लड़कीसे सादी कर सकते हैं।

अधिक अवस्था आने पर ये विवाह करते। लड़कीके लिये इन्हें पण देने पड़ते हैं दश या बारह मवेशीके शिर ही इन लोगोंका पण है। किन्तु आजकल दो या तीन मवेशीके मुण्ड अथवा एक रुपया पण कहकर लेते हैं। बारात लड़कीके घरसे वरके घरको जाती है। विवाहकाल वर और कन्या बाहर निकल अपने किसी एक कुटुम्बके कन्धे पर बैठते हैं। वर कन्याको अपनी ओर खींचता और एक वस्त्र उन दोनोंके अङ्गको रहता है। एक मुर्गा भी इस समय बलिदान किया जाता। समस्त रात्रिको बरामदा में ही रह व्यतीत करते और प्रातःकालको वर तथा कन्या किसी एक पोखर पर जाते हैं। वरके शरीरमें तीर और धनुष बंधे रहते हैं। वर को रखी हुई सात गोबरकी रोटियों पर निशाना करना पड़ता है और प्रति निशानेके बाद कन्या आ वरको पहिले दतवन और पीछे मिठाई देती है। यह प्रथा उनके भविष्य कार्य्यको याद दिलाती है

पुत्र-जन्मके छठे दिन उसकी माता तीर और धनुष ले लड़केके सामने खड़ी रहती है। युवावस्थामें पुत्रको आखेटमें चतुर होनेका यह संकेत है

ये मृतशरीरको पृथ्वीमें गाड़ते हैं। एक रुपया या एक पैसा उसके वस्त्रके एक कोनेमें बांध देते जिससे मृतदेह रिक्त हाथसे दूसरा लोक न जाय। मुर्दाके साथ कभी कभी उसके कपड़े तीर और धनुष पृथ्वीमें गाड़ देते हैं।

खोंड चौरसी देवको मानते हैं जिनमेंसे 'धरणी देवता' या पृथ्वी प्रसिद्ध है। प्रतिवर्ष ये तीन त्यौहार मानते हैं। चार या पांच वर्षोंमें एक बार पृथ्वी देवता को महिष बलिदान देते हैं। पूर्व समयमें महिषके बदले मनुष्य बलिदान देते रहे। काला हल्दीमें भेड़ धरणी माताको चढ़ाया जाता है और इसका मांस अपने पड़ोसियोंके मध्य बांट देते हैं आखिरमें जानेके पहले ये तीर और धनुषकी पूजा कर लेते हैं। उनको विश्वास है कि मनुष्योंके मर जाने पर उसकी आत्मा पुनः छोटे छोटे बच्चोंमें जन्म लेती है।

खोंड गृहस्ती, आखेट और लड़ाई वृत्तिके अतिरिक्त दूसरा कार्य्य नहीं करते।

खोंड़र (हिं॰ पु॰) वृक्षका अभ्यन्तरस्थ शून्य भाग, पेड़के भीतरका पोला हिस्सा।

खोंड़ा (हिं॰ वि॰) १ भग्नअङ्ग, टूटे अङ्गवाला। बहुधा यह शब्द उस व्यक्तिके लिये व्यवहारमें लाते, जिसके सामनेवाले दो-तीन दांत टूटे दिखलाते हैं।

खोंता (हिं॰ पु॰) घोंसला, चिड़ियांका घर।

खोंप (हिं॰ स्त्री॰) १ पसूजन, सलङ्गा, सिलाईका लम्बा टांका। २ फटन।

खोंपना (हिं॰ क्रि॰) गाड़ना, चुभाना, धांस देना।

खोंपा (हिं॰ पु॰) १ हलकी कोई लकड़ी। इसमें फाल लगता है। २ छप्परका कोन। ३ भूसा रखनेकी जगह। इसको छप्परसे छा देते हैं।

खोंपी (हिं॰ स्त्री॰) हजामतके खतका कोना, बालोंका एक बनाव। २ खोंपा।

खोंसना (हिं॰ क्रि॰) अटकाना, लगाना, घुसेड़ना।

खो—१ मध्यप्रदेशमें एक प्राचीन ग्राम। यह उचहरा नगरसे डेढ़ क्रोश पश्चिममें अवस्थित है। एक समय यहां बहुत घर और देवमन्दिर थे। आजकल उनका भग्नावशेष मात्र है। इस ग्राममें गुप्तराज हस्तनीका शिलालेख पाया गया है। यहांके भग्नमन्दिरमें वृहदाकार दशावतारकी भग्न प्रस्तरमूर्ति पड़ी हुई है।

खो—पूर्व उपद्वीपके काम्बोजराज्य अधिवासी एक प्रबल जाति। इसकी संख्या प्रायः चार लाख है। इनका आचार व्यवहार चीन और ब्रह्मवासीके सदृश है।

खोइडार (हिं॰ पु॰) कोल्हूमें खोई इकट्ठा करनेकी जगह

खोडूलर (हिं॰ पु॰) वंशदण्डविशेष, बांसको एक छड़ी। इससे कोल्हूके गल्ले चलाये जाते हैं।

खोड़हा (हिं॰ पु॰) खोई उठाने या फेंकनेवाला मजदूर।

खोई (हिं॰ स्त्री॰) १ ऊखके रस निकाले हुए टुकड़े। २ लाई, खोलें। ३ कम्बलकी घुग्घी।

खोकरी—बम्बई प्रदेशस्थ जंजीरराज्यके किलाके ग्राम पासका एक क्षुद्र ग्राम। यहां तीन वृहत् प्रस्तरकी समाधि (कब्र) हैं जिनमेंसे जञ्जीरका प्रधान सीदी सुरुलखांकी समाधि बड़ी है। कहा जाता है कि सुरुल खांकी समाधि उनके जीवनकालमें बनी थी। प्रति वृहस्पतिवारको उक्त कब्रके पास कुरान पढ़े जाते हैं।

खोक्र (खक्र) बम्बई प्रदेशस्थ कच्छ जिलेके अन्तर्गत एक मुल्क। यह कन्यकोटसे १ मील दक्षिण अवस्थित है। इसके नष्ट भ्रष्ट सुपविशिष्ट स्थानमें दो जीर्ण शैव-मन्दिर हैं।

खोखर (हिं॰ पु॰) एक राग। इसको मालकोसका पुत्र बतलाते और दिनको प्रथम प्रहर गाते हैं।

खोखर—सिन्धुप्रदेशवासी जाटजातिकी एक शाखा। एक समय सिन्धु और पञ्जाब प्रदेशमें इनका बल और पराक्रम बहुत बढ गया था। मुहम्मद गोरी जब हिन्दुस्तानको लूट कर स्वदेश जा रहे थे, रास्तामें इसी खोखर जातिके हाथसे उनकी मृत्यु हुई। अनेक ग्रन्थकारोंने इन्हें 'गक्कर' या "गोक्कर" नामसे भी उल्लेख किया है; किन्तु "खोखर" और 'गकर' ये दो स्वतन्त्र जाति हैं। पहिले पञ्जाब, सिन्धु और काठियावाड़में इसी खोखर जातिकी प्रधानता थी, उस समय मूलतान प्रभृति अनेक स्थान इन्हींके शासनाधीन थे।

खोखरा (हिं॰ पु॰) भग्न जलपोत, टूटा फूटा जहाज।

खोखरी—बम्बई प्रदेशस्थ काठियावाड़ जिलेके गोन्दल राज्यका एक ग्राम। यह गोन्दल राज्यसे ८ माल उत्तर तथा सुलतानपुर ग्रामसे ६ मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। यह महाल या आय उपविभागका सदर है खोखरीसे ४ मील दक्षिण-पश्चिममें गोन्दली नदी भादर नदीसे मिली है। यहांकी जमीन उर्व्वरा है। लोकसंख्या प्रायः २६६५ होगी।

खोखला (हिं॰ वि॰) १ पोला, खाली, जिसके भीतर कुछ न रहे। (पु॰) २ रिक्तस्थान, खाली जगह। ३ दीर्घ छिद्र, बड़ा सूराख।

खोखा (हिं॰ पु॰) १ हुण्डी लिखा हुआ कागज, सकारी हुई हुण्डी। २ बालक, लड़का।

खोङ्गाह (सं॰ पु॰) खे आकाशे उङ् इत्यव्यक्तशब्दं कुर्वन् गाहते, गाह-अच् पृषोदरादिवत् गकारस्य कत्वे साधुः श्वेत पिङ्गलवर्ण अश्व, सफेद पीला घोड़ा।

खोङ्गाह खोङ्गाह देखो।

खोज (हिं॰ स्त्री॰) १ अनुसन्धान, तलाश। २ चिह्न, पता।

खोजक—बलुचिस्तानके कोटा पिशीन जिलामें तोवकाकरका एक ऐतिहासिक गिरि-सङ्कट। यह अक्षा॰ ३०° ५१′ उ॰ और देशा ६६° ३४′ पू॰ कोटासे रेलद्वारा ७० मीलकी दूरी पर अव स्थित है। यह रास्ता दक्षिणमें किलाअब्दल्लसे शेलवाघ तक चला गया है; शेलवाघमें रेलवे खोजक घाटो होकर गयी है जिसे बनानेमें ७० लाख रुपैये खर्च हुवे थे। यह १८८८ और १८९१ ई॰के मध्य निर्माण किया गया था. इसकी दूरी लगभग २॥ मीलकी होगी। विजेता, सैनिक तथा सौदागर कई बार इस पथसे आये गये।

खोजक—पठान जातिकी एक शाखा। ये मिखतर काकर पठानोंकी एक अन्यतम शाखा है।

खोजदार—बलुचिस्तानमें उपत्यका मध्यस्थ एक क्षुद्र नगर। यह खप्पर राजधानीसे १० मील दक्षिणमें अवस्थित है यह नगर पहले समृद्धिशाली था इस स्थानसे रूदखाना नदीतीर तक अनेक भग्नावशेष चिह्नादि देख पड़ते हैं यह पत्थरको कुरसो पर २५ फुट ऊंचे स्तम्भ ग्रथित हैं

खोजनखेर—मध्यभारतमें मालवा एजेन्सीका क्षुद्र राज्य। भूपरिमाण ५ वर्गमोल और जनसंख्या ५४८ है। इस जमीन्दारीको आमदनी प्रायः ६००) रु॰ है।

खोजना (हिं॰ क्रि॰) अनुसन्धान करना, ढूंढना।

खोजा (हिं॰ पु॰) १ ख्वाजा, मुसलमानोंके रनवासका द्वारपाल या नौकर। यह पुरुषत्वहीन होता है। २ सरदार, मुखिया। ३ नौकर।

खोजा अहम्मद-यसेवि—मध्यएसियाके अन्तर्गत अनुर्वर समतल भूमिके ऊपर भ्रमणकारी नोमाद जातिके मध्य एक पगम्बर धर्म और नोति सम्बन्धमें इनकी बनायी हुई कवितायें खिरविज और उजबक कुरान को जैसे भक्ति करते हैं।

खोजी (हिं० वि०) अनुसन्धानकारक, ढूंढनेवाला ।

खोट (सं० पु०-क्ली०) रसजारण द्रव्यभेद, कुश्ता बनाने की एक चीज । इसको 'यमक' या 'फुट' भी कहते हैं।

खोट (हिं० स्त्री०) १ दूषण, ऐब । २ उत्तम द्रव्यमें अधम द्रव्यका मिश्रण, अच्छी चीजमें बुरीका मिलाव । ३ अच्छीमें मिलायी जानेवाली कोई खराब चीज । (वि०) ४ खोटा । 'खोट कुमार खोट पति भारो' (तुलसी)

खोटक (सं०) खोट देखो।

खोटन (सं० क्ली०) लंगड़ाई, लंगड़ी चाल।

खोटा (हिं० वि०) दूषित, खराब, जो खरा न हो ।

खोटाई (हिं० स्त्री०) खोटापन देखो।

खोटापन (हिं० पु०) १ दोष, नुक्स। २ फरेब, धोका ; छल । ३ दुष्टता, बदमाशी। ४ क्षुद्रता, ओछापन।

खोटि (सं० स्त्री०) खोट-इन् । १ कन्दुरुखोटी । २ पालङ्कीवृक्ष । ३ चतुरा स्त्री, होशियार औरत ।

खोटो, खोटि देखो।

खोट्टिग—तृतीय कृष्णके उत्तराधिकारी। यह कृष्णके छोटे भाई थे। इन्हें 'महाराजाधिराज' 'परमेश्वर' और 'परमभट्टारक' की उपाधि मिली थी। ८७१ ई०के अकतूबर माससें सीयक-हर्ष नामक मालवके परमार राजाने युद्ध कर इनका राज्य ले लिया धरवार जिलाके अदरगुञ्चोमें खोत्तिगके राजत्वको एक शिलालिपि है।

खोड़ (सं० त्रि०) खोड़ति, खोड़-अच् । खञ्ज, लंगड़ा।

खोड़ (हिं० स्त्री०) देवकोप, भूतप्रेतका फेर।

खोड़कशीर्षक (सं० क्ली०) खोड़ इव गवल, खोड़कं शीर्षमस्य, बहुव्री० कप्। १ कपिशीर्षवृक्ष । २ हिङ्गुल।

खोड़रा (हिं० पु०) पुरातन वृक्षका शून्य स्थान, पुराने दरख्तका खोखला हिस्सा।

खोण्डमाल—उड़ीसामें अंगुल जिलाका एक उपविभाग। यह अक्षा० २०° १३' से २०° ४१' उ० और देशा० ८३° ५०' से ८४° ३६' पू० पर अवस्थित है। भूपरिमाण ८०० वर्गमील और जनसंख्या प्रायः ६४२१४ है। इस उपविभागमें १७०० फीट ऊंची एक अधित्यका है। इसका बहुलांश जङ्गलसे भरा है। गिरिमाला खोंड़मालसे गञ्जाम तक फैली है और ऊंचाई लगभग तीन हजार फीटकी होगी। फुलबाड़ी इस उपविभागका सदर है। यहां सिर्फ द्राविड़ वंशके खोंडजातिके मनुष्य वास करते हैं। ग्राम छोटे छोटे पहाड़ और घने जङ्गलोंसे विभक्त हैं। पूर्वकालमें चार पांच वर्षमें एक बार खोंड धरणी देवताको मनुष्य बलिदान देते रहे। इन्होंका ख्याल था कि हलदी जो उनकी प्रधान गृहस्थी रही, परिपूर्ण रूपसे उपज नहीं सकती जबतक पृथ्वीके भीतर मनुष्यका रक्त न जाय। किन्तु यह प्रथा गवनमेण्टने सदाके लिये बन्द कर दी। आजकल वे सिर्फ महिष या मेष बलिदान देते हैं। खोंड किसी जमींदार या राजाके अधीन रहते नहीं आये हैं। वे सिर्फ खास गवर्नमेण्टकी जमीन जोतते जिसके लिये उन्हें कर भी देना नहीं पड़ता है। किन्तु हरेक हलके पीछे तीन आने सड़क आदिकी उन्नतिके लिये देने पड़ते हैं। इनमें बाल्य तथा प्रौढ़ विवाह प्रचलित है। बाल्यविवाहमें कन्या वरसे बड़ा रहती है। खोंड देखो।

खोत—कोलबा जिलेमें रहनेवाली एक जाति। ये पेन, रोह और खोतो ग्राममें रहते हैं। प्राचीनकालमें ये जिलेको तहसीलके कर्मचारी रहे और मुसलमान बादशाहसे इन्हें कररहित ग्राम मिले थे। महाराष्ट्रके समयमें भी इन्हें जागीर मिली थी। किन्तु आजकल इन्हें ग्राम्यकर देने पड़ते जिसे ये चारकिस्तमें चुकाया करते हैं। खोटकी संख्या ४३० है। हिन्दुओंमें ब्राह्मणकी ही अधिक है। सरकारकी ओरसे आजतक भी ग्रामोंका प्रबन्ध इन्हीं लोगोंके हाथमें है। ग्राम प्रबन्ध करनेके लिये प्रतिवर्ष ये अपनेमेंसे किसी एकको नियत करते हैं। कभी कभी कलेकृरसे भी कोई व्यक्ति नियुक्त किया जाता है। विवाहादिमें ये बहुत रुपये व्यय करते जिसके लिये इन्हें जमीन्दारी भी कभी कभी बेचनी पड़ी है।

खोत उत्तम पक्का मकानमें रहते और बहुतसे मवेशी पालते हैं।

खोदई (हिं० पु०) वृक्षविशेष, एक दरख्त। यह हिमालयकी तराईमें उपजता और रंगने आदि कई कामोंमें लगता है।

खोदना (हिं० क्रि०) १ खनन करना, गड्ढा करनेके लिये कुदाल आदिसे जमीनकी मट्टी निकालना। २ कोंचना, उसकाना। ३ उपहास करना, छेड़ना। ४ नक्काशी करना ।

खोदनी (हिं० स्त्री०) खननयन्त्रविशेष, खोदनेका एक औजार। यह छोटी होती है।

खोदमो (खोची)—बम्बई प्रदेशस्थ कोल्हापुर राज्यके अलत उपविभागका एक ग्राम। यह कोल्हापुरसे उत्तर-पूर्व १३ मील वारन पर अवस्थित है। जनसंख्या प्राय: १७३८ है यहां भैरव क्षेत्रपालका एक मन्दिर है जो २५० वर्ष पूर्व १६०० ई० को अलत उपविभागके सुलतान राव नामक एक इनामदार द्वारा निर्माण किया गया था। चैत्र माममें प्रतिवर्ष यहां मेला लगा करता है।

खोदाई (हिं० स्त्री०) खननकार्य, खोदनेका व्यापार। २ खननका पारिश्रमिक, खोदनेकी उजरत। ३ नक्काशी।

खोदु—बम्बईके अन्तर्गत काठियावाड़ राज्यका एक ग्राम। यह बधवानसे उत्तर-पश्चिम १५ मीलकी दूरी पर बसा है। यह महाल या प्राय उपविभागका सदर है। यहां उपविभागके कर्मचारी आ रहते हैं। खोदुमें उत्तम प्रस्तरकी एक खान है। प्राचीन कालमें सुलतान जी और राजोजीने वांकानर परगना विजय किया था। सुलतानजी इसके मुख्य सदरमें और राजोजी रतो देवली नामक एक क्षुद्र ग्राममें रहने लगे। राजोजीने असंतुष्ट हो उक्त ग्रामको छोड़ दिये और खोदु विजय कर वहां राजत्व करने लगे। राजोजीके पिता पृथ्वीराजके मरने पर बधवान इलाहाबाद राज्यमें मिला दिया गया और राजोजी खोदु छोड़कर बधवानमें रहने लगे यहां एक सतीस्तम्भ है जो लगभग १००६ शकमें निर्माण किया गया था। जनसंख्या प्राय: १६०० है।

खोनचा (हिं० पु०) १ कोई थाल या परात। इसमें मिठाई आदि खाने पीनेकी चीजें भर करके रखते हैं। २ फेरीवालोंकी थाली। इसमें मिठाई रख करके बेचते हैं।

खोना (हिं० क्रि०) १ गंवाना, जाया करना। २ भूलना छोड़ना। ३ बिगड़ना, खराब करना। ४ छूटना, रह जाना।

खोनोमा—आसामके अन्तर्गत नागापहाड़जिलामें एक बड़ा और समृद्धिशाली अङ्गामी नागाका ग्राम। यह अक्षा० २५ ३८ उ० और देशा० ८४ १ पू०में अवस्थित है। १८७९ ई०में मि० दमन्त नामक एक सरकारी अफसर बड़ी निर्दयतासे आये २५ साथियोंके साथ इस ग्राममें मारे गये। बाद उसके यह ग्राम घेर लिया गया और १८७९ ई०को नवम्बर मासमें अङ्गरेजोंके हाथ आया, किन्तु। इस चढ़ाईमें दो युरोपीय अफसरोंका प्राणान्त हुआ। यहांके ग्राम वासी नागा लोग जापभो पहाड़के शिखरपर भाग गये और १८८० ई०के जनवरी मासमें अदम्य उत्साह और धैर्य से कछारमें वालाधन बाग पर हमला किया; जो ८० मीलकी दूरी पर था। वहां जाकर उन्होंने मैनेजर ब्लाइथ और १६ कुलीयोंको मार डाला।

खोन्दकार—मुसलमान धर्म्मावलम्बी फारसी शिक्षक। इनका दूसरा नाम "मुर्शिद" अर्थात् धर्म मार्ग प्रदर्शक और "आखन्द" अर्थात् शिक्षक है। ५८ वर्ष पहले मुसलमान लड़कोंको शिक्षा और कलमा पाठ विना इनके न बनता था। मुसलमान स्त्रियोंकी ऐसी धारणा है कि जिसपर इनकी कृपा होती उसका रोग क्षणमात्रमें दूर हो सकता है। इसलिये जब किसीको पीड़ा होती, तो शीघ्रही खोन्दकार बुलाये जाते हैं। किसीको ज्वर वा ताप चढ़ने पर वह कागजके एक टुकड़े पर कुरानके दो चार मन्त्र लिख देते जिनको रोगी बांध लेते हैं। पूर्व बङ्गालके हिन्दू और मुसलमानका दृढ़ विश्वास है कि इनका प्रदत्त फूका हुआ पानी वात और स्नायवीय वेदनाकी अव्यर्थ महौषध है।

खोपड़ा (हिं० पु०) १ कपाल, सर। २ नारियल। ३ नारियलकी गरी ४ नारियलका गोला। ५ भिक्षापात्र-विशेष, भीख लेनेका कोई बतन। यह दरयायी नारियलका अर्धभाग होता है। ६ गाड़ीकी एक लकड़ी। यह मोटी रहती और दोनो पहियोंके मध्यभागमें धुरीसे मिल करके लगती है।

खोपड़ी (हिं० स्त्री०) कपाल, सर।

खोपा (हिं० पु०) १ टणच्छदकोण, छप्परका गोशा। २ गृहकोणविशेष, मकानका कोई कोना। यह किसी मार्गकी ओर पड़ता है। ३ बालोंका एक बनाव। यह तिकोना कटता और खोपड़ी पर पड़ता है। ४ ग्रथित बेणी, गूंथी हुई लट। ५ नारियल, गरीका गोला।

खोपीवली—बम्बईके अन्तर्गत थाना जिलेका एक क्षुद्र ग्राम। यह [illegible]

जनसंख्या ५१५ है। यहां पेनिन्सुला रेलवेकी एक शाखा है। १८॥ एकर सैत्रफलका एक उत्तम जलाशय होनेके कारण यह स्थान प्रसिद्ध है। पेशवाके मन्त्री नाना-फड़निवस काट क निमि त एक शिवजीका मन्दिर है।

खोबा (हि ० पु०) थापी, गच या पलस्तर कूटनेका एक छोटी और चपटी मुगरी।

खोभार (हि ० पु०) गर्तविशेष, एक गड्ढा इसमें कूड़ा ककट और भाड़न भूद.न डाला जाता है।

खोय (हि ० स्त्री०) खू, आदत, स्वभाव बान टेव।

खोया (हि ० पु०) मावा, खोवा, लौईकी शक्लमें औटा हुआ दूध पेड़ा, बरफी और लड्डू खोयेसे बनते हैं। यह खानेमें मधुर और पुष्टिकारक होता है।

खोर (सं ० वि०) खोर-अच। खञ्ज, लंगड़ा।

खोर (हि ० स्त्री०) १ सङ्कीर्णपथ तङ्ग गली, कूचा २ पात्रविशेष, कोई नांद। इसमें पशुओंको चारा डाल करके खिलाते हैं।

खोर (हि ० पु०) वृक्षविशेष, एक पेड़। यह सिन्धु-प्रदेशकी मरुभूमिमें उपजता और देखनेमें ऊंचा तथा सुन्दर रहता है। खोरका काष्ठ पीतश्वेतवर्ण, गुरु तथा कठिन होता और परिष्कार करने पर अति चिक्कण निकलता है। इसको कृषियन्त्र-निर्माणमें व्यवहार करते हैं। खोरका अपर नाम 'साहीकांटा' और 'वनरीठा' भी है।

खोरक (सं० पु०) खोर स्वार्थे कन्। गर्दभज्वर, गधेकी चढ़नेवाला बुखार।

खोरनी (हिं० स्त्री०) भड़भूंजेकी एक लकड़ी। इससे भाड़में झोंका जानेवाला बचा खुचा ईंधन, उसमें जलनेके लिये भीतरको सरका दिया जाता है।

खोरा (हि ० पु०) १ पात्रविशेष, कटोरा। (वि०) २ विकृताङ्ग, लङ्गड़ा, लूला।

खोराक (फा० स्त्री०) १ खाद्यद्रव्य, खानेकी चीज। २ आहारकी मात्रा। ३ औषधमात्रा।

खोराकी (फा० वि०) १ अधिक मात्रामें भोजन करनेवाला, पेटू, जो ज्यादा खाता है।

खोराकी (हि ० स्त्री०) खोराकका दाम, खानेके लिये दिया जानेवाला पैसा।

खोरास—बम्बईके काठियावाड प्रान्तका एक गांव। यह ग्राम पाटन सोमनाथसे १२ मील उत्तर-पश्चिम पड़ता है। लोकसंख्या प्राय: १०६६ है। कहते हैं चोरवाड़के नागनाथ महादेवके मन्दिरमें जो शिलाफलक रखा है, खोरससे वहां गया था। उसमें संवत् १४४५ (१३८८ ई०) पड़ा और ऐतिहासिक वृत्तान्त लिखा है—खोरासके सूर्यमन्दिरका जीर्णोद्धार माल नामक किसी व्यक्तिने कराया था। माल मकवानाजातीय रुहेला क्षत्रिय रहे। युवराज शिवराजसे उन्हें खोरासका स्थानीय शासक बनाया। इस ग्रामके दक्षिण कालीपात नदी बहती है। खोरासमें २ सरोवर हैं। उनमें एकको जाम्बवाल कहा जाता है।

खोरि (हिं० स्त्री०) १ सङ्कीर्ण पथ, तङ्ग राह। २ दूषण, नुक्स।

खोरिया (हिं० स्त्री०) १ बेलिया, कटोरिया। २ अबरक वगैरहके छोटे छोटे बुन्दे। यह चमकीली रहती और स्त्रियों और स्वांगके रूपोंके मुखपर शोभाके लिये लगती है। ३ कूएंकी पैंढ़ीका मध्यभाग। यह तरसा खींचनेमें बैलोंके पहुंचनेसे कूपके मुखपर आ उपस्थित होता है।

खोल (सं० त्रि०) खोल-अच्। खञ्ज, लंगड़ा।

खोल (हिं० स्त्री०) १ गिलाफ, झूल। २ कीट आदिका उपरि चर्मावरण। यह समय समय पर बदल जाती है। ३ मोटी पिछौरी या चादर।

खोलक (सं० पु०) खोल-अच् संज्ञायां कन्। १ पात्रविशेष, डिगची। २ वल्मीक, दीमककी पहाड़ी। ३ शिरस्त्राण, पगड़ी, टोपी। ४ पूगकोष, सुपारीका छिलका।

खोलना (हिं० क्रि०) १ उद्घाटन करना, अवरोध हटाना, उघाड़ना। २ छेदना, बिगाड़ देना। ३ तोड़ना, काटना। ४ मुक्त करना, छोड़ना। ५ लगाना, ठहराना। ६ जारी करना, चलाना ७ स्थापन करना। ८ आरम्भ करना। ९ प्रकाश करना, बतलाना। १० पूछना, प्रश्न करना।

खोलपेटुआ—बङ्गमें खुलना जिलामें प्रवाहित एक नदी। आशासूनीके निकट कपोताक्षसे यह नदी निकली है। पहिले यह नदी कुछ पश्चिम और जाकर बुढाढागाङ्गमें मिल गई है और उसके बाद दक्षिण मुंह होते हुवे सुन्दरबनमें फिर भी कपोताक्षनदीमें गिरी है।

खोलवी—मध्यभारतके अन्तर्गत एक क्षुद्र ग्राम। यह आगरा नगरसे १५ कोस उत्तर-पश्चिम अवस्थित है। इस ग्रामके उत्तर-पूर्व लाल पत्थरका एक पहाड़ देखा जाता है। समतल क्षेत्रसे यह पहाड़ प्रायः २०० हाथ ऊंचा है। बौद्ध लोगोंने अजण्टा और कार्लीकी तरह इस ग्राममें पर्वत काट कर बहुतसे स्तूप, चैत्य और गुहा-मन्दिरादि निर्माण किये थे। स्थानीय कृषक और ब्राह्मण कहते हैं कि पाण्डुतनय भीम, अर्जुन प्रभृति पाण्डवोंने इन समस्त गिरिगुहाओंको काटा था। आजकल भी अधिवासी दो, एक गुहाओं-को अर्जुनगृह, भीमगृह जैसा कहा करते हैं। इस खोलवी पहाड़के दक्षिण भागमें बड़े बड़े ११ गुहा-मन्दिर हैं जिनमें एक या दो घर हैं। घरके बाहरी और भीतरी भागका आयतन क्रमशः २२७ और ११६ फुट है। यही अर्जुनगृह है। दूसरा घर भीम-मन्दिर कहलाता है, जिसकी लम्बाई ४२ फुट और चौड़ाई २२ फुट है। एक और मन्दिर है, जिसमें बुद्ध-देवकी चार मूर्तियां हैं। इसके अतिरिक्त पहाड़की उत्तर और पूर्व दिशामें कई एक बौद्धस्तूपादिका ध्वंसा-वशेष देख पड़ता जिसका गठनकौशल आश्चर्यजनक है प्रत्येक स्तूप पर्वत पर हो गठित है। अन्यान्य स्थानोंकी भांति इसका अन्तर्भाग किसी गुहासे संलग्न नहीं इस स्थानकी स्तूपभित्तिका निम्न गृह खोद करके निकालने पर देखा गया है कि समग्र स्तूप मन्दिर-जैसा है और उसमें बुद्धदेवकी प्रतिमूर्ति प्रतिष्ठित है। डाक्टर कनिङ्गहाम साहबके मतमें खोलवीके वह स्तूप ७००से ८०० ई०के बीच निर्मित हुवे।

खोलापुर—बरार-अमरावती जिलाके अन्तर्गत-एक नगर। यह अक्षा० २०°५७´ उ० और देशा० ७७° ३२´ पू०में अमरावती नगरीसे ८ कोस पश्चिममें अवस्थित है। एक समय यह स्थान 'रेशम'के व्यवसायके लिये प्रसिद्ध था। १८०८ ई०में एलिचपूरके सूबादार विठलभाग देवने इस नगरसे एक लाख रुपया मांगा, परन्तु उन्होंने अपना आदेश ग्राह्य न होने पर, ससैन्य नगर आक्रमण किया पहिले यहां प्रतिवर्ष राजपूत और मुसलमान लड़ते रहे। इसी उत्पातसे इस नगरका ह्रास होने लगा। आजकल यहां प्रायः ५२७२ मनुष्य रहते हैं।

खोलि (स० स्त्री०) खोल-इन्। तृण, घास।

खोलिया (हिं० स्त्री०) तक्षयन्त्रभेद, एक पनालीदार रुखानी। इससे बढ़ई लकड़ी पर बेलबूटे बनाते हैं।

खोल्मुख (सं० पु०) खे आकाशे उल्मुख इव रक्तवर्ण-त्वात्। मङ्गलग्रह।

खोवई—आसामकी एक नदी। यह त्रिपुरा राज्यसे निकल श्रीहट्ट जिलाके हबीगञ्ज उपविभाग होकर उत्तर-पश्चिमकी ओर बहती हुई हबीगञ्जके निकट बराकमें गिरती है। नदीकी लम्बाई लगभग ८४ मील होगी।

खोवा, खोया देखो।

खोशाक (सं० पु०) जीवशाक, एक सब्जी।

खोह (हिं० स्त्री०) १ गुफा, कोल, दराज २ पर्वत-मध्यस्थ गभीर गर्त, पहाड़का गहरा गड्ढा। ३ दो पर्वतोंका मध्यस्थ सङ्कीर्ण स्थान

खोही (हिं० स्त्री०) १ पतछत, पत्तोंका छाता। २खुंवा, घोघी।

खौं (हिं० स्त्री०) १ गर्त, गड्ढा। २ खत्ती, अनाज रखनेका गहरा गड्ढा।

खौंचा (हिं० पु०) १ साढ़े छह गणना भेद, साढ़े छहका पहाड़। २ कोई सन्दूक। इसमें मिठाई आदि खाद्य द्रव्य रखते हैं।

खौफ (अ० पु०) भय, दहशत, डर।

खौर (हिं० स्त्री०) १ त्रिपुण्ड, चन्दनका आड़ा टीका। २ स्त्रियोंका कोई अलङ्कार, औरतोंका एक गहना। यह आड़ी खौर जैसी सोनेकी बनती और मत्थे पर लगती है। ३ किसी किस्मका जाल। इससे मछलियां पकड़ी जाती हैं।

खौरना (हिं० क्रि०) खौर लगाना, चन्दनका टीका बनाना, तिलक निकालना।

खौरहा (हिं० वि०) १ गञ्जा, जिसके सरके बाल उड़ गये हों। २ खजहा, जिसके खुजली हो गयी हो।

खौरा (हिं० पु०) १ कण्डूभेद, किसी किस्मकी खाज। इसमें चमड़ा रूखा पड़ और बाल झड़ जाता है कुत्ते बिल्लीको भी होता है। (वि०) २ खौरहा।

खोरी (हिं० स्त्री०) १ कपाल, खोपड़ी। २ भस्म, राख।

खोरू (हिं० पु०) वृषभशब्द, बैलकी बोली या डकार।

खौलना (हिं० क्रि०) उबलना, गर्म होकरके घुरने लगाना।

खौलाला (हिं० पु०) उबालना, पानी वगैरहको इतना गर्म करना कि वह बोलने लगे।

खौहा (हिं० वि०) १ खोराकी, पेटू, ज्यादा खानेवाला। २ खानेका लालची मरभुखा। ३ अन्य व्यक्तिका उपार्जित धन व्यय करनेवाला, जो दूसरेका रुपया पैसा उड़ाता हो।

ख्यात (ं० त्रि०) ख्या-क्त। १ कथित, कहा हुआ। २ विश्रुत, सुना हुआ। ३ ख्यातियुक्त, मशहूर। इसका संस्कृत पर्याय—प्रतीत, प्रथित, वित्त, विज्ञात और विश्रुत है।

ख्यातगर्हणा (सं० त्रि०) ख्याता प्रसिद्धा गर्हणा निन्दा यस्य, बहुव्री०। अवगीत, बदनाम, जिसको बहुतसे आदमी बुरा कहते हों।

ख्यातव्य (सं० त्रि०) वक्तव्य, बतलाया जानेवाला।

ख्याति (सं० स्त्रि०) ख्या-क्तिन्। १ प्रशंसा, तारीफ। २ प्रसिद्धि, नामवरी। ३ कथन, बातचीत। ४ प्रकाश, रौशनी। ५ ज्ञान, समझ। ६ महत्तत्त्व।

"मनो महान् मति र्ब्रह्मा पूर्बुद्धिः ख्यातिरीश्वरः"। (सांख्यभाष्य)

ख्यातिकर (सं० त्रि०) प्रशंसा करनेवाला, जो तारीफ करता हो।

ख्यातिघ्न (सं० त्रि०) ख्यातिको नाश करनेवाला, जो नामवरीको मिटाता हो।

ख्यातिमत् (सं० त्रि०) ख्याति-मतुप्। ख्यातियुक्त, नामवर।

ख्यात्यापन्न (सं० त्रि०) ख्यात्या आपन्नो युक्तः, ३-तत्। ख्याति लाभ करनेवाला, जो शोहरत हासिल कर चुका हो।

ख्यान—व्यवसायी और कृषिजीवी जातिविशेष। उत्तर बङ्गमें यह ख्येन और आसाममें कोलिता कहलाते हैं। ये अपनेको कायस्थ-सन्तान जैसा बतलाते हैं। इनके पूर्वपुरुष कोचविहारराज सरकारमें दैवज्ञका काम करते थे। ये देखनेमें सुश्री हैं। इनका मुख चौड़ा, मत्था गोल, नाक कंदिया-जैसी और चक्षु आमकी फांक-जैसा होता है। इनमें कई एक गोत्र हैं। इनका विवाह सगोत्रमें नहीं होता। इन लोगोंमें बाल्यविवाहकी प्रथा प्रचलित है। पांचसे १३ वर्षकी अवस्था तक लड़कोंका विवाह होता है। विवाहके कार्यकलापादि उच्च श्रेणीके हिन्दुकी तरह हैं। विवाहके पहले कन्या वरको उपहार भेजती हैं, वरके उपहार ग्रहण करने पर विवाह-बन्धन दृढ़ हो जाता है। इन लोगोंमें भी विधवा-विवाह और विवाह बन्धनच्छेद निषिद्ध हैं। पूजा, विवाह प्रभृति मङ्गल-कार्यमें ये ब्राह्मणको नियुक्त करते हैं। ब्राह्मण, कायस्थ, और वैश्य इनके हाथका जल और मिष्टान्न खाया करते हैं।

ख्यापक (सं० त्रि०) ख्या-णिच्-णवुल। १ ज्ञापक, बतलानेवाला। २ प्रकाशक, जाहिर करनेवाला

ख्यापन (सं० क्लो०) ख्या-णिच्-ल्युट्। प्रकाशन, जहूर।

ख्याल (अ० पु०) १ ध्यान, तवज्जोह। २ अनुमान, अटकल। ३ विचार, समझ। ४ आदर, सम्मान, लिहाज। ५ गीतभेद, किसी किस्मका गाना। इसमें एक मुखड़ा और एक अन्तरा लगता तथा विशेषतः शृङ्गार इसका वर्णन रहता है। ६ लावनीके गानेका कोई ढंग।

ख्याल खुशाल—एक विख्यात कवि तथा गायक। इनकी कवितायोंसे एक यों है :—

नन्दका निगर अतिहो ढिटौना स्यामसलोना।
गोभ रिझोना बाको चितवनमें है टोना।
रूप उजागर रसके सागर गुन आगर नटनागर
रसिक प्रीतम मन मोह लियो है मोहे न भावे
खाना पीना सोना रहना भौना॥

ख्याली (फा० वि०) १ फर्जी, कल्पित, अटकलपच्चू। २ खब्ती, पागल, सनकी।

ख्रिष्टान (हिं० पु०) ईसाई, किरस्तान।

ख्रिष्टीय (हिं० वि०) ईसवी, ईसाके मुताल्लिक।

खीष्ट (हिं० पु०) ईसा, मसीह। ईसा देखो।

ख्वाजा (फा० पु०) १ प्रभु, खाविन्द। २ प्रधान, सरदार। ३ सुप्रसिद्ध व्यक्ति, मशहूर शख्स। ४ प्रतिष्ठित वणिक्, बड़ा सौदागर। ५ मुसलमान साधुभेद कोई मुसलमान फकीर। ६ अन्तःपुरका क्लीव दास, जनानखानेका नामर्द नौकर।

ख्वाज कुतब—एक मशहूर गायक। इनकी बनाई बहुतसी कवितायें हैं जिनमेंसे एक इस तरह है :—

मेदनी सब चाईली सुन उरस पैरका ख्वाजे कुतब देहरी।
ग्र ष मगायक चोनोथा बन आए नवो है रसूल सम रंग नवीलाहाकर
रहीस एसाइब हुलसन नगर नमीलया
एस दरवाज दरवमीलनामें॥

ख्वाजी खिदर—एक प्रसिद्ध कवि और गायक। इनकी कविताओंमेंसे एक यह है—

चाज रच्यो करतार दोऊ बन्ध होय
अवतर्यो उत कश्यपसुत इत हुमायुंको नन्द।
वेतिमिर हरणसु दुख दारद दूर करण
वाको तेज तेरा तप किति छायो एकही संग।

ख्वाजो दीन शकरगञ्ज—एक नामी कवि तथा गायक। इन्होंने अच्छी अच्छी कवितायें रचना की हैं जिनमेंसे एक यों है :—

तोमें घाऊं पाऊं हजरत ख्वाजदीन शकरगंज
सुलतान ममायक मशहूर इलाही।
निजामदीन चालिया अमीर खोसरोकेवल वलगाही॥

ख्वाजे मीर—एक प्रसिद्ध कवि। इनकी एक कविता इस तरह है—

धन धन राग धनाश्री धन धन गोकुल गाम।
धन धन नन्द योशमति जहां प्रगटे सुन्दरश्याम॥

ख्वाजे मीतदीन कुतबदीन—एक मशहूर मुसलमान कवि, इन्होंने बहुती कवितायें रची हैं जिनमेंसे एक यों है—

दम दम मदार लाड़िले ख्वाज पीर मेरे
तिनको विथा दूर करो निहोर।
ख्वाज मीतदीन कुतबदीन तुरकमान
राखले तुम अपनो चार॥

ख्वाब (फा० पु०) १ निद्रा, नींद। २ स्वप्न, सपना।

ख्वार (फा० वि०) १ भ्रष्ट, बर्बाद, खराब। २ अपमानित, बदनाम।

ख्वारी (फा० स्त्री०) १ भ्रष्टता, बर्बादी। २ तिरस्कार, बेइज्जती।

ग

ग कवर्गका तीसरा व्यञ्जनवर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है। इसका आभ्यन्तर प्रयत्न जिह्वामूल स्पर्श और वाह्यप्रयत्न संवार नाद घोष है। गकार अल्पप्राण वर्णके मध्य गिना जाता है। मातृकान्यासके दक्षिण मणिबन्धमें इसका न्यास करना चाहिये। इसकी लिखन-प्रणाली तन्त्रके मतसे इस प्रकार है—गकारमें सर्व्वसमेत तीन रेखायें होती हैं, पहली अधोगत वक्र-रेखा है इस रेखाके ऊर्ध्वस्थित अग्रभागसे एक दूसरी सरल रेखा खींचनी पड़ती है। इस सरल रेखाके दक्षिणाग्रसे अधोदिक्को फिर एक सरल रेखा खींचते हैं। वर्तमान समयमें गकारमें भी एक मात्रा दी जाती है, किन्तु तन्त्रमें उसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसकी प्रथम रेखाको अधिष्ठात्री लक्ष्मी तथा तीसरी रेखाके अधिष्ठाता स्वयम् ईश्वर हैं। गकारको दाड़िम कुसुमके सदृश रक्तवर्णा, चतुर्बाहु, रक्तवस्त्रधारिणी और रत्नलङ्कार-से सुशोभित ब्राह्मणीके सदृश ध्यान करना पड़ता है। इसका नाम गो, गौरी, गौरव, गङ्गा, गणेश, गोकुलेश्वर, शार्ङ्गी, पञ्चात्मक, गाथा, गन्धर्व्व, सर्व्वग, स्मृति, सर्व्व-सिद्धि, प्रभा, धूम्रा, द्विजास्य, शिवदर्शन, विश्वात्मा, गौ, बालवक्त्र, त्रिलोचन, गीत, सरस्वती, विद्या, भोगिनी, नन्दन, धरा, भोगवती, हृदय, ज्ञान, जालन्धर और लव है। (वर्णाभिधान) तान्त्रिक मतसे हृदयमें जो द्वादशदल पद्म है, उसके तृतीय दलमें गकार अवस्थित है। काव्या-दिके प्रथममें गकार होनेसे रचयिताकी आकांक्षा बढ़ती

है, किन्तु किसी दूसरे अञ्जनके साथ युक्त होने पर विपरीत फल होता है। (अमरबाकरटोका)

ग (सं॰ क्ली॰) गै-क। १ गीत। २ गणेश। ३ गन्धर्व। ४ एक गुरुवर्ण।

गंगई (हिं॰ स्त्री॰) गलगलिया। मैना जातिकी एक चिड़िया जो ग्यारह इंच लम्बी भूरे रङ्गकी होती और भारतके प्रायः सभी प्रान्तोंमें मिलती है। यह खेतों, मैदानों और जङ्गलोंमें फिरती है। इसके अण्डा देनेका कोई ठिकाना नहीं है। यह झाड़में घोंसला बना लेती और चार अण्डे देती है। गंगई बोलनेमें खूब तेज है।

गंगकुरिया (हिं॰ स्त्री॰) हरिद्राभेद एक प्रकार लम्बी और बड़ी गांठवाली हलदी यह कटकमें होती है।

गंगतिरिया (हिं॰ स्त्री॰) वृक्षविशेष, जलपीपर। यह सजल भूमिमें होती है। इसकी पत्तियां नुकीली निकलती है। इसमें पीपल जैसी बाल आती है। इसका दूसरा नाम पनिसिंगा है। जलपिप्पली देखो।

गंगबरार (हिं॰ पु॰) गङ्गा या किसी दूसरी नदीकी धारा या बाढ़के हटनेसे निकली हुई भूमि। इस पर नदीकी मिट्टी जमी रहती हैं

गगरी (हिं॰ स्त्री॰) बनी नामकी एक कपास। इसके पत्र दीर्घ तथा विस्तृत और तन्तु सूक्ष्म एवं कोमल लगते हैं। पुष्पके नीचेकी कमरखी पत्तियां दीर्घ और बैंगनी होती हैं। इसे बिहारमें जेठी बंगलामें भोगला, बरारमें टिकड़ी जूड़ी आदि कहा जाता है।

गंगला (हिं॰ पु॰) एक प्रकारका शलगम। यह गङ्गाके किनारे होता और आकारमें दीर्घ और अच्छा लगता है।

गंगवा (हिं॰ पु॰) वृक्षविशेष। यह दक्षिणमें समुद्र किनारे तथा ब्रह्म, अन्दामान और सिंहलमें उपजता है। यह चिर हरित् रहता है। इससे श्वेतवर्ण दुग्ध निःसृत होता जो वायु लगनेसे जमता और काला लगता है। ताजा दूधका स्वाद खट्टा होता और बहुतोंका मत है कि जहरीला भी है। इसके काष्ठसे दियासलाई आदि बनायी जाती हैं।

गंगशिकस्त (हिं॰ पु॰) नदीसे काटी हुई जमीन।

गंगेटी (सं॰ स्त्री॰) ओषधिविशेष, एक पत्ती। यह पिड़काको प्रवाहित करती और मलमूत्र रहती है।

गंगेरन (हिं॰ स्त्री॰) गोरक्षतण्डुला, गुलशकरी। इसके पत्रोंमें दो नोकें रहतीं और पुष्प पाटलवर्ण लगते हैं। गंगेरनका फल परिपक्क होने पर फट कर पांच टुकड़े हो जाता है। गाङ्गेरुकी देखो।

गंगेरुआ (हिं॰ पु॰) काकाण्डोलुप, एक झाड़ी। इसके पत्र अगोरूपमें मोकोंमें सुसज्जित रहते और क्षुद्र क्षुद्र फल लगते हैं। गाङ्गेरुक एक पार्वत्य वृक्ष है।

गंगोटी (हिं॰ स्त्री॰) गङ्गातीरस्थ मृत्तिका, गङ्गाकी मट्टी।

गंगोलिया (हिं॰ पु॰) निम्बुकभेद, किसी किस्मका नीबू। यह खट्टा और दानेदार होता है।

गंजिया (हिं॰ स्त्री॰) १ खारी, कोई जालीदार थैली। इसमें घसियारे घास डालते हैं। २ पात्रविशेष, कोई बर्तन। यह मट्टीका बनता, मुंह तङ्ग रहता और देखनेमें चपटा लगता है। ३ रुपया डालनेकी कोई थैली। यह सूतसे जालीदार बनायी जाती है

गंजेड़ी (हिं॰ वि॰) गांजाखोर, गांजा पीनेवाला।

गंठकटा (हिं॰ पु॰) गांठ काट लेनेवाला, जो कमरमें बंधे रुपये पैसे चाकू या किसी दूसरी चीजसे कपड़ेको काट कर निकाल लेता हो।

गंठजोड़ा, गंठबन्धन देखो।

गंठबन्धन (हिं॰ पु॰) १ ग्रन्थिबन्धन, खूंटजोड़ाई। यह पति तथा पत्नीका उत्तरीय वस्त्रका प्रान्तभाग परस्पर बांधनेसे होता है। विवाहमें ही इसका आरम्भ है। गंठबन्धन स्नानदान और पूजार्चनादिके समय किया जाता है। २ विवाह, शादी। ३ मैत्री, दोस्ती।

गंठिवन (हिं॰ स्त्री॰) ग्रन्थिपर्ण देखो।

गंठवा (हिं॰ पु॰) धागोंका एक जोड़। इसमें तानेबाने या नयी पायीका तागा पुराने कपड़ेके तागेसे मिलाया जाता है।

गडधिमनी (हिं॰ स्त्री॰) १ चाटुकारिता, खुशामद, चापलूसी। २ सख्त मिहनत, कड़ी मशक्कत। ३ बैठक, बैठाई।

गंड़तरा (हिं॰ पु॰) गंतरा, बच्चोंके नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा।

गंडनी (हिं॰ स्त्री॰) गण्डाली, सरहटी।

गंडरा (हिं॰ पु॰) तृणविशेष, एक घास। यह मूंज जैसा रहता और आर्द्र भूमिमें उपजता है। इसके पत्र अर्ध अङ्गुलि प्रशस्त और हस्त वा सार्धहस्त विस्तृत होते हैं। गंडरा २ फुटसे ६ फुट तक बढ़ जाता है। इसकी शाखाके मध्यभागकी डेढ़ दो हाथ दीर्घ पतली पतली सींक सुखानेसे सुनहली निकलती है। इसी सींकके उपरिभागमें आश्विन मासको मञ्जरी आती है। पौषसे पहले ही गंडरा सूखने लगता है। लोग इसके हरे सींके निकाल करके विविध पात्र प्रस्तुत करते हैं। फाल्गुन चैत्र मासको कट करके गंडरा छानी छप्परमें लगता है। इसकी झाड़ू और चटाई भी बनती है। गंडराका मूल ही 'खस' नामसे विख्यात है। २ कोई धान। यह भाद्र आश्विन मासको पकता है।

गंड़ासा (हिं॰ पु॰) १ अस्त्रविशेष, एक हथियार। इससे प्रायः कटिया या हरियारी काटी जाती है। गंड़ासा प्रायः एक हस्त परिमित दीर्घ होता है। जाली नामक काष्ठमें लोहका एक प्रशस्त तीक्ष्ण खण्ड लगा करके इसे बनाते हैं। पर्याय—गंड़ास, गंड़सी, गहंसिया है।

गंडेरी (हिं॰ स्त्री॰) १ इक्षुखण्ड, ऊखसे पोर पोर टुकड़े। २ छिले हुए पौंडेका छोटा छोटा टुकड़ा। यह चूसनेके काम आता है।

गंडोरा (हिं॰ पु॰) हरित् आमखर्जूर, हरी और कच्ची खजूर।

गंदना (हिं॰ पु॰) १ बदबूदार कोई मसाला। यह रसुनपिण्डालु जैसा रहता है। २ तृणविशेष, कोई घास। यह रसुन ग्रन्थिको यव स्थापन करके वपन करनेसे उगता है। पर्याय—दंदना है।

गंदला (हिं॰ वि॰) मलिन, अपरिष्कृत, मैला, ढबेल। २ अपवित्र नापाक।

गंदीला (हिं॰ पु॰) तृणविशेष, एक घास। यह वर्षा ऋतुमें उपजता पतले पतले पत्र रखता है। इस मध्य भागमें एक सींक भी होता है। बुंदेलखण्डमें गंदीला अधिक देख पड़ता है।

गंधाना (हिं॰ क्रि॰) दुर्गन्ध छोड़ना, बदबू देना, बुरी बास आना।

गंधिया (हिं॰ स्त्री॰) १ कृमिभेद, कोई कीड़ा, गुगुवा। यह वर्षा ऋतुको उड़ता और बुरी तरह महकता है। २ हरित्वर्ण कीटभेद, कोई हरा कीड़ा। यह भुनगी जैसा होता और धान, मकई आदिको बिगाड़ता है। ३ कोई घास गंदीला देखो।

गंधेज (हिं॰ स्त्री॰) तृणविशेष, कोई घास। पर्याय अगिया है।

गंधेल (हिं॰ पु॰) वृक्षविशेष, कोई पेड़। यह क्षुद्राकार रहता और हिमालयके तीरमें उपजता है। बङ्गदेश और दाक्षिणात्यमें भी इसका अभाव नहीं। गंधेलेके पत्र तथा कुड्मल लोमश होते हैं। इसकी रूई बहुत महकती है। गंधेलके सींके आठ दश इञ्च तक बढ़ते और उनमें डेढ़ दो इञ्च दीर्घ तीक्ष्णाग्र पत्र निकलते हैं। इसके पुष्प श्वेतवर्ण और फल दीर्घाकार बेर जैसे होते हैं। गंधेलकी पत्ती मसाले और छाल तथा जड़को औषधमें व्यवहार करते हैं।

गंधैला (हिं॰ पु॰) १ पक्षिविशेष, कोई चिड़िया। (वि॰) २ दुर्गन्धि, बदबूदार, गंधानेवाला।

गंधोली (हिं॰ स्त्री॰) कपूरकचरी।

गंव (हिं॰ स्त्री॰) १ अवसर, मौका। २ युक्ति, ढग। ३ प्रयोजन, मतलब। ४ दांव, घात।

गंवई (हिं॰ स्त्री॰) १ क्षुद्रग्राम, छोटा गांव।

गंवरदल (हिं॰ पु॰) १ गंवारोंकी भीड़। (वि॰) २ देहाती, गंध्वार। ३ गंवारू, भद्दा, अच्छा न लगनेवाला।

गंवहियां (हिं॰ पु॰) अतिथि, अभ्यागत, मेहमान, किसी दूसरे गांवसे आया हुआ आदमी।

गंवाना (हिं॰ क्रि॰) १ खोना, डाल देना, बिसराना, भूलना। २ व्यतीत करना, काटना, बिताना।

गंवार (हिं॰ वि॰) १ ग्रामीण, देहाती। २ मूर्ख, बेवकूफ। ३ अनजान, नावाकिफ।

गंवार (गंवारिया) राजपूतानेका जातिभेद। यह मूंजकी रस्सियां छिरकियां, सींगकी कंगियां आदि बना करके बेचते और किसी स्थान पर स्थायी रूपसे न ठहर करके भ्रमण ही किया करते हैं। गंवारिये अपना परिचय राजपूत जैसा देते हैं।

गंवारी (हिं॰ स्त्री॰) १ ग्राम्यता, गंवारपन।

२ अज्ञानता, नासमझी। ३ मूर्खता, बेवकूफी। ३ गंवार औरत। ४ गंवारपन लिये हुई, जो मूर्खतासे भरी हो। ५ भद्दी, बेढ़ंगी।

गंवारू (हिं० वि०) ग्रामीण, देहाती, बेढ़ंगा, भद्दा।

गंस (हिं० स्त्री०) १ द्वेष, दुश्मनी। २ लगनी बात। ३ वाणकी अनी, तीरकी नोक, गांसी।

गंसना (हिं० क्रि०) १ कसना, जड़ करके बांधना। २ बानेको खूब कड़ा करना सूतको गंस देनेसे बुनावटमें छेद नहीं रहता। ३ गठना, कड़ा पड़ना। ४ भरना। ५ चुभना, छिदना, घुसना।

गंसीला (हिं० वि०) तीक्ष्णाग्र, नोकदार। २ चुभीला, धंस जानेवाला। ३ ठोस, ठस, जिसमें छेद न रहे।

गइया, गऊ देखो।

गई करना (हिं० क्रि०) टालना, बराना, सुनी अनसुनी करना।

गईबहोर (हिं० वि०) बिगड़ीको बनानेवाला।

गउंथ (हिं० स्त्री०) तृणविशेष, एक घास। यह अफगानस्तान और बलचस्तानमें अपने आप उपजा करती है, किन्तु भारतमें चौपायोंको खिलानेके लिये लगायी जाती है। इसका बीज आश्विन कार्तिक मास खेतकी मेडों पर डाला और जलसे अच्छी तरह सींचा जाता है। गउंथ ६ मासमें प्रस्तुत होता है।

गऊ (हिं० स्त्री०) गो, गाय।

गकार (सं० पु०) ग स्वरूपे कारः। ग स्वरूप वर्ण, 'ग' अक्षर।

गक्खर (हिं० पु०) जातिविशेष, एक कौम। इस जातिके लोग पञ्जाबके उत्तर-पश्चिममें निवास करते हैं।

गगन (सं० क्ली०) गच्छत्यस्मिन्, गम-युच् गश्चान्तादेशः। गमेर्गश्च। उण् २।७७। १ आकाश, आसमान्, चलने फिरनेकी खाली जगह। इसका संस्कृत पर्याय—वह्नि, धन्व, आप, पृथिवी, भू, स्वयम्भू, अध्वा सागर, समुद्र और अध्वर है। दूसरे पर्याय आकाश शब्दमें देखो। गगनका गुण—व्यापकत्व, छिद्रत्व, अनाश्रय, अनालम्ब, आश्रयान्तरशून्य, अव्यक्त और अधिकारिता है।

"क्षिति जलपावक गगन समीरा।" (तुलसी)

गगन शब्दके नकारका णत्व भी हुआ करता है। बहुतोंके मतमें मूढ़ व्यक्ति ही णकारको स्वीकार करते हैं, वास्तविक णकार नहीं बनता। किन्तु आचार्य-मञ्जरीके निम्नलिखित श्लोकमें णत्वका प्रमाण पाते हैं -

"...गमगणो गगणो परिराजते।"

२ शून्य, खाली जगह। ३ लग्नको अपेक्षा दशम राशि, कुण्डलीका १०वां घर। ४ अभ्रधातु, अबरक। ५ मेघ, बादल। ६ छन्दोविशेष। यह छप्पयका एक भेद है।

गगनगति (सं० त्रि०) गगने गतिर्यस्य, बहुव्री०। १ आकाशगामी हवामें उड़नेवाला। (पु०) २ देवता। ३ सूर्यादि ग्रह। (स्त्री०) ४ आकाशगमन, आसमानी चाल, उड़ान।

गगनचर (सं० त्रि०) गगने चरति चर-टच्। आकाशगामी, आसमानमें चलने फिरनेवाला। २ विद्याधर। (पु०) ३ पक्षी।

गगनचरी—विजयार्द्ध पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमें स्थित साठ नगरोंमेंसे एक नगर।

गगनधूल (हिं० स्त्री०) १ किसी किस्मका कुकुरमुत्ता। यह गोलाकार रहती और वर्षा ऋतुको पेड़ोंके नीचे या खुले मैदानमें उपजती है। इसका वर्ण श्वेत आता और नूतन पुष्पका शाक बनाया जाता है। शुष्क हो जाने पर इसके मध्यभागसे मलिन हरितवर्ण रजः निकलता है। यह धूलि कान बहनेको अति लाभदायक औषध है। २ केतकीपुष्परजः, केवड़ेके फूलकी धूल।

गगनध्वज (सं० पु०) गगने गगनस्य वा ध्वज इव। १ मेघ, बादल। २ सूर्य।

गगनन्दन—विजयार्द्ध पर्वतकी उत्तर श्रेणीके स्थित पचास नगरोंमेंसे एक नगर

गगनप्रिय (सं० पु०) एक दैत्य। (हरिवंश ४१ अ०)

गगनभेड़ (हिं० स्त्री०) पक्षिविशेष, एक चिड़िया। यह जलके निकट निवास करती है। पर्याय—कूंज, कराकुल है।

गगनमण्डल (सं० क्ली०) गगनस्य मण्डलम्, ६-तत्। आकाशमण्डल, आसमानका घेरा।

गगनमारकगण (सं० पु०) अभ्रमारकद्रव्य, अबरककी कुश्ता बनानेवाली चीज।

गगनवल्लभ, गगननन्दन देखो।

गगनविहारी (सं० त्रि०) गगने विहर्त्तुं शीलं यस्य, वि-हृ-णिनि। १ आकाशपथमें विचरण करनेवाला, जो आसमानमें घूमता हो। (पु०) २ खेचर, पक्षी।

गगनसद् (सं० त्रि०) गगने सीदति गच्छति, गगन-सद्-क्विप्। १ आकाशगामी, हवामें उड़नेवाला। (पु०) २ सूर्य आदि ग्रह। ३ देवता।

गगनसिन्धु (सं० स्त्री०) गगनस्य सिन्धुः, ६-तत्। मन्दाकिनी, गङ्गा।

गगनस्पर्श (सं० पु०) वायु, हवा।

गगनाङ्गना (सं० स्त्री०) गगनगता अङ्गना। दिव्याङ्गना अप्सरा, परी।

गगनादिलौह (सं० क्ली०) एक औषध। अभ्रक त्रिफला लौह, कुटज, त्रिकटु, पारा, गन्धक, मञ्जिया, सोहागा, सज्जीमट्टी, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र वङ्ग दोनों जीरा सबको चर्ण करना और उसमें सबसे आधा चित्रकचर्ण मिलाना चाहिये इसीका नाम गगनादिलौह है। इसको २ तोले मधुके साथ लेहन करने पर सोमरोग और मूत्रातिसार अच्छा हो जाता है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

गगनादिवटी (सं० स्त्री०) वातरोगका एक औषध। अभ्रक, पारद, गन्धक, ताम्र, मुण्डलौह, तीक्ष्णलौह और स्वर्णमाक्षिक बराबर बराबर ले करके मुलहटी वासक, द्राक्षा तथा भूकुष्माण्डके क्वाथमें घोटना चाहिये। इसको २ रत्ती घी और शहदके साथ खाने पर कठिन वातरोग, पित्तरोग, क्षय, भ्रम, मद, कफ, शोष, दाह और तृष्णा मिट जाती है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

गगनाध्वग (सं० पु०) गगनाध्वना गच्छति, गम-ड। सूर्य।

गगनानङ्ग (सं० क्ली०) मात्रावृत्तभेद। इसके आदिमें रगण लगता और प्रत्येक पादको १६वीं मात्रा पर विश्राम पड़ता है। फिर गगनानङ्गके प्रतिपादमें ५ गुरु और १५ लघु लगते हैं। कोई कोई १२ मात्राओंके बाद भी यति निर्देश करता है।

गगनाम्बु (सं० क्ली०) गगनस्याम्बु, ६-तत्। गगनोदक, बरसाती पानी। यह पथ्य, रसायन, मेध्य, शीतल, आह्लादक और त्रिदोष, ज्वर, दाह, विष तथा रक्षोघ्न होता है। वृष्टिके जलका यह स्वाभाविक गुण रहते भी उसके अपवित्र स्थान वा अपवित्र पात्रमें पतित होनेसे उसका पीना या उसमें नहाना अतिशय अहितकर और अव्यवहार्य है। पात्रके दोष गुण अनुसार जलको भी भला बुरा समझते हैं। (सुश्रुत)

गगनेचर (सं० पु०) गगने चरति, अलुक्‌स०। १ देवता २ सूर्यादि ग्रह। ३ राशिचक्र। (त्रि०) ४ गगनचारी, आसमानमें उड़नेवाला।

गगनोल्मुक (सं० पु०) गगने उल्मुक इव। मङ्गलग्रह।

गगर—युक्तप्रदेशके नैनीताल और अलमोड़ा जिलेकी एक पर्वतश्रेणी। यह अक्षा० २९° १४ तथा २९° ३०' उ० और देशा० ७९° ७ एवं ७९° ३७ पू०के बीच पड़ती है। इसका प्रकृत नाम गर्गाचल है। इसमें तुन, सनौबर आदि अच्छी अच्छी लकड़ियां होती हैं।

गगरा (हिं० पु०) कलसा, घड़ा। यह तांबे, पीतल, लोहे, मट्टी आदिका बनता है।

गगरी (हिं० स्त्री०) कलस, छोटा घड़ा।

गगली (हिं० स्त्री०) अगरुभेद, किसी किस्मका अगर।

गगोरी (हिं० स्त्री०) कृमिविशेष, एक कीड़ा। यह भूमिके भीतर बिल तैयार करके रहती है।

गग्नु (सं० स्त्री०) वाक्य, गुफ्तगू, बात।

गघ्न (सं० पु०) हास, हंसी।

गङ्ग (हिं० पु०) १ एक मात्रावृत्त। इसके प्रतिपादमें ८ मात्राएं लगती हैं, अन्तको २ गुरु रहना चाहिये।

गङ्ग—हिन्दी भाषाके एक प्रसिद्ध कवि। यह अकबरके समयमें विद्यमान थे। इनका प्रकृत नाम गङ्गाप्रसाद रहा।

गङ्ग (हिं०) गङ्गा देखो।

गङ्गकवि,—गङ्गाप्रसाद देखो।

गङ्गकीर्त्ति—दि० जैन ग्रन्थकर्त्ता। ये वि० स० ११७७में हुए थे।

गङ्गदेवकवि—दि० जैन ग्रन्थकर्त्ता। इन्होंने "श्रावकप्रायश्चित्त" रचा था।

गङ्गा (सं० स्त्री०) गम्यते ब्रह्मपदमनया गच्छतीति वा, गम्-गन् टाप्। एक प्रसिद्ध नदी। इसका पर्यायः—

विष्णुपदी, जह्नु—तनया, सुरनिम्नगा, भागीरथी, त्रिपथगा, त्रिस्रोताः, भीष्मसू, अध्वतीर्थ, तीर्थराज, त्रिदशदीर्घिका, कुमारसू, सरिद्वरा, सिद्धापगा, स्वर्गापगा, ख्यापगा, ऋषिकल्प, हैमवती, स्वर्वापी, हरशेखरा, सुरापगा, धर्मद्रवी, सुधा, जह्नुकन्या, गान्दिनी, रुद्रशेखरा, नन्दिनी, अलकनन्दा, सितसिन्धु, अध्वगा, उग्रशेखरा, सिद्धसिन्धु, स्वर्गसरिद्वरा, मन्दाकिनी, जाह्नवी, पुण्या, समुद्रसुभगा स्वर्नदी, सुरदीर्घिका, सुरनदी, स्वर्धुनी, ज्येष्ठा, जह्नुसुता, भीष्मजननी, शुभ्रा, शैलेन्द्रजा, और भवायना। वैद्यक राजनिघण्ट के मतसे इसका जल शीतल, स्वादिष्ट, स्वच्छ, अत्यन्त रुचिकर, पथ्य, पवित्र, पापनाशक, तृष्णा और मोहनाशक, दीपन एवं प्रज्ञावृद्धिकारी है।

गङ्गा अत्यन्त प्राचीन पुण्यसलिला नदी है। हिन्दुओंका ऐसा दृढ़ विश्वास है कि पृथ्वीके सर्वतीर्थोंमें गङ्गा ही प्रधान है। गङ्गामें मृत्यु होनेसे मनुष्यजातिसे लेकर निकृष्टजाति कीट, पतङ्ग तक भी मोक्ष लाभ करते हैं। (ऋग्वेद १०।७५।५), कात्यायन, श्रौतसूत्र, शतपथ, ब्राह्मणप्रभृति प्राचीन ग्रन्थोंमें गङ्गा नाम है। पुराण, उपपुराण, इतिहास, इन सब प्राचीन पुस्तकोंमें गङ्गाकी थोड़ी बहुत कथा लिखी हुई है। वाल्मीकि रामायणके गङ्गा हिमालयकी कन्या हैं। सुमेरुतनया मनोरमा वा मेनाके गर्भसे इनकी उत्पत्ति है। देवताओंने किसी कार्य वशसे हिमालय पहाड़के निकट गङ्गाको भिक्षाकर लिया है।* तभीसे यह ब्रह्माके कमण्डलुमें रहने लगीं। इधर सगर-राजाके दुष्कर्मी पुत्र कपिल मुनिके शापसे भस्म हो जानेके कारण, सगर वंशके राजा पवित्र गङ्गाको पृथ्वी पर लानेकी चेष्टा करने लगे। किन्तु उनकी कितनी ही चेष्टायें निष्फल हुईं। बहुत दिनके बाद सगरवंशज राजा भगीरथ अपने मन्त्रियोंके ऊपर राज्यका भार अर्पण कर पहले पहल ब्रह्माकी तपस्या करने लगे। उनकी कठोर तपस्याके हजार वर्षके बाद ब्रह्माजी संतुष्ट हुए। ब्रह्माजी सब देवताओंको साथ लेकर राजा भगीरथके निकट पहुंचे। भगीरथने अपनी इच्छा (अभिप्राय) प्रगट की। भगीरथका यह अभिप्राय था कि गङ्गाजीको पृथ्वी पर लानेसे उनके पूर्वपुरुष मोक्ष पा जायें। ब्रह्माके स्वीकृत होते भी वे अपनी कठोर तपस्यामें लगे रहे। राजा भगीरथने सोचा, जब गङ्गा स्वर्गसे पृथ्वी पर आवेंगी तो यह निश्चय है कि उनका भार पृथ्वी सह न सकेगी। इसलिये गङ्गाधारणको महादेवकी तपस्या करनी पड़ी।* शिवजीको सन्तुष्ट करनेमें उन्हें अधिक परिश्रम न पड़ा। एक वर्षके भीतरही शिवजी उनकी तपस्यासे संतुष्ट होकर वर देनेके लिये उपस्थित हुए। तब भगीरथने अपना अभिप्राय प्रगट किया और शिवजीने गङ्गाको अपने ऊपर धारण करनेका भार ले लिया। गङ्गाजीने सोचा कि यह अच्छा ही हुवा। इस समय महादेवजी मेरे हाथमें आ जायंगे। क्यों कि मैं इतने जोरसे स्वर्गसे गिरूंगी कि पृथ्वी छेदन करती हुई शिवजीके साथ पातालमें प्रवेश कर जाऊंगी। महादेवजी गङ्गाकी आन्तरिक इच्छाको जान कर पहलेहीसे सचेत हो गये। यथासमय गङ्गाजी स्वर्गसे शिवजीके मस्तक पर पतित हुईं। शिवजीके असाधारण कौशलसे उनकी धारा जटाके मध्यहीमें रुक गई, किसी प्रकार बाहर न जा सकी। भगीरथ गङ्गाजीको न देख कर पुनः तपस्या करने लगे। उनकी तपस्यासे संतुष्ट होकर गङ्गाको भूतपतिने छोड़ दिया और वह विन्दुसरोवरमें गिर गईं। विन्दुसरोवरमें गिरनेसे गङ्गाकी सात धारायें हो गईं यथा ह्लादिनी, पावनी और नलिनी ये तीनों पूर्व ओर, वंक्षु, सीता और सिन्धु दूसरी तीन पर्वत, ग्राम, वन, उपवनादि को बहती हुई पश्चिमकी ओर और एक धारा भगीरथको बतलाई हुई राहसे चली। इसी कारण इनका नाम भागीरथी पड़ा। भागीरथीके समुद्रमें जा करके गिरनेसे भस्मीभूत सगरके लड़के पवित्र होकर स्वर्गको सिधारे। भगीरथकी इच्छा पूरी हुई। (रामायण आदि० ४२ ४३, ४४ सर्ग)

गङ्गाका दूसरा नाम विष्णुपदी है। इसी नाम अथवा दूसरेही किसी कारणसे हो, बहुतोंका विश्वास है कि गङ्गा वैकुण्ठवासी भगवान् विष्णुके पदसे उत्पन्न हुई है। किन्तु विष्णुपुराणके पाठ करनेसे ऐसा मालूम पड़ता है

* कृत्तिवासी रामायणके मतमें देवगण शिवके साथ ब्याहनेके लिये गङ्गाको ले गये। पार्वती मेनकासे गङ्गाको न देख क्रुद्धसे होनेका शाप दिया।

* देवीभागवतके मतमें गङ्गाको धारण करनेके लिये वसु धर्मने महादेवकी आराधना की।

कि आकाशमण्डलमें ध्रुवको अवलम्बन करके समस्त ज्योतिष्क मण्डल अवस्थान करता है। उसो ज्योतिष्क मण्डलमें मेघ अवस्थित है। पौराणिकगण इसे ही विष्णु भगवानका तृतीय पद जैसा वर्णन करते हैं ; (विष्णुपुराण (२।८) मेघसे वृष्टि होतो है और उसीसे गङ्गाको उत्पत्ति है।

गङ्गाका और एक नाम जाह्नवी है। रामायण और विष्णुपुराणमें इनकी कथा इस प्रकार लिखी हुई है :— महाराज भगीरथ रथपर चढ़ कर आगे आगे चलने लगे। स्रोतस्वती गङ्गाने भी ग्राम, नगर, वन, उपवनादिको बहाते हुए उन्हींके पीछे पीछे प्रबलवेगसे गमन किया। महामुनि जह्नु अपने आश्रममें बैठकर एक यज्ञका आयोजन कर रहे थे। गङ्गाके जलसे यज्ञस्थल डूब गया, यज्ञमें विघ्न पड़ा। किन्तु मुनि तनिक भो न हटे, वरन क्रुद्ध हो कर गङ्गाको दबानेका विचार किया। सोच समझ करके अन्तमें वह गङ्गाको योगबलसे पान कर गये। देवता, गन्धर्व, मनुष्यादि सबके सब विस्मयापन्न हुए। गङ्गाके नहीं रहनेसे हम लोगोंकी कैसी दशा होगी इस प्रकार चिन्ताकर सभी घबरा उठे और मुनिसे गङ्गाको छोड़ देनेकी प्रार्थना करने लगे। तब मुनिने अपने कर्णरन्ध्र द्वारा गङ्गाजीको परित्याग किया। इसीसे गङ्गाका नाम जाह्नवी वा जह्नुसुता पड़ा। (रामायण १।४३ स:)

देवीभागवतमें किसी जगह लिखा है कि लक्ष्मी, सरस्वती, गङ्गा ये तीनों नारायणकी पत्नी हैं और वैकुण्ठवासी विष्णु भगवान्‌के निकट ही रहती थीं। एक दिन गङ्गा उत्सुकतासे वार वार विष्णु भगवान्‌की ओर दृष्टिपात करने लगीं। भगवान् भो उसे देख कर हंस पड़े, किन्तु सरस्वती इस पर बहुत चिढ़ीं। उन्होंने भगवान्‌को कुछ उलटी सीधी सुना दी। किन्तु भगवान् कुछ न बोल कर बाहर निकल गये। इधर गङ्गा और सरस्वतीमें कलह उत्पन्न हो गया। पद्मा मध्यस्थ बन लड़ाईको शान्त करने गईं। इसका फल उलटा हुआ। सरस्वतीने पद्माको ही पहले शाप दिया—"तुम नदी रूप धारण करके पापियोंके आवासस्थान मर्त्यलोकमें जावो।" गङ्गासे स्थिर न रहा गया, वे बोल उठीं "पद्मा! जिस तरह सरस्वतीने विना दोषकेही आपको शाप दिया है, उसे भी नदी रूपमें मर्त्यलोक जाकर पापराशि ग्रहण करना पड़ेगा।" सरस्वती भी क्रुद्ध होकर गङ्गासे बोलीं "तुमको भी इसी तरह फल भोगना पड़ेगा।"

इसो समय विष्णु भगवान् आकर उपस्थित हुवे और कहने लगे "जाओ! दैवदुर्विपाकसे तुम भारतमें नदी बनो। देखो लक्ष्मी! तुम्हारा पूर्ण अंश वैकुण्ठमें वास करेगा और अधा अंश धर्मध्वज राजाके घरमें कन्यारूपमें जन्म लेगा। वही बादको तुलसो नामसे विख्यात होगा। दूसरे अंशमें पद्मावती नदी नामसे अवतीर्ण हो। गंगे! तुम भी विश्वपावनी सरित्‌के रूपमें अवतीर्ण हो। भगीरथ अति आराधना करके तुमको ले जावेंगे। वहां पर मेरा अंश समुद्र और मेरे अंशके अंशसे उत्पन्न शान्तनुराज तुम्हारे पति होंगे।" (देवीभा० ९ स्क०)

महाभारतीय दानधर्मके मतसे गङ्गाके गर्भसे १५० हाथ तक गङ्गातीर कहा जाता है। प्राण कण्ठगत अर्थात् अर्थके अभावसे क्षुधा और तृष्णासे कातर होने पर भी किसोका दान इस स्थान पर ग्रहण नहीं करना चाहिये। गङ्गाके किनारेसे दो कोस तक "क्षेत्र" कहलाता है। गङ्गाक्षेत्रमें बैठकर दान, जप या होम करनेसे असीम फल होता है। (स्कन्द) किसी किसी पुराणके मतमें भाद्र मासको कृष्णचतुर्दशी तिथिको गङ्गाजल जितनी दूरतक प्लावित होता है, "गर्भ" और उसके दूसरे भागको तीर कहते हैं। (दानपर्व) गङ्गाके उद्देश्यसे जाने पर पारदार्य, परद्रव्यहरण, परद्रोह इत्यादि पाप विनष्ट होते हैं। गङ्गाके दर्शन करनेसे ज्ञान, ऐश्वर्य, आयु, प्रतिष्ठा, और सम्मान आदि प्राप्त होते हैं। गङ्गाजल स्पर्श करनेसे ब्रह्महत्या, गोहत्या, गुरुहत्या इत्यादि समस्त पाप छूट जाते हैं। सिंहको देखकर जिस तरह मृगगण भयसे विह्वल हो कर भागते हैं, उसी तरह गङ्गास्नाननिरत मनुष्यको देख कर यमके दूत भयभीत होकर चल देते हैं, उसको यमका कोई भय नहीं रहता। गङ्गामें अज्ञात स्नान करनेसे सर्व पाप नष्ट ज्ञानपूर्वक स्नान करे तो मुक्ति मिला करती है। श्रवणा नक्षत्रयुक्त द्वादशी पुष्यायुक्त अष्टमी और आर्द्रा नक्षत्रयुक्त चतुर्दशी तिथिमें गङ्गा स्नान करना प्रशस्त है। वैशाख, कार्तिक और माघ मासकी पूर्णिमा, माघ

महोनेकी अमावस्या, कृष्णपक्षीय अष्टमी तिथिको गङ्गा स्नान करनेसे प्रचुर फल होता है। चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण और व्यतोपातमें गङ्गास्नान करनेसे सहस्र गुण फल है। (ब्रह्मपुराण) गङ्गामृत्तिका सिर पर धारण करनेसे सूर्यसे भी अधिक तेजशाली हो सकते हैं। (स्कन्दपुराण) गङ्गामें किसी रूप पुण्यकार्य करनेसे सहस्र गुण फल होता है। अन्न, गो, सुवर्ण, रथ, घोड़ा और गजदान करनेसे जो फल मिलता है, गङ्गाजल दान करनेसे उससे सौ गुना अधिक फल है। गण्डूष मात्र गङ्गाजल पान करनेसे अश्वमेधयज्ञ करनेका फल होता है, स्वच्छन्दरूपसे पान करने पर मुक्तिलाभ है। जो मनुष्य सात रात अथवा तीन ही रात गङ्गा तीर पर वास करता है, उसको नरकका कष्ट भोगना नहीं पड़ता। तपस्या, यज्ञ, ब्रह्मचर्य और दान करनेसे जो सुख नहीं मिलता, केवल गङ्गातीरमें वास करने पर मनुष्य वही सुख अर्थात् मोक्ष पा सकता है। (ब्रह्मपुराण)। ६०००० विघ्न सब दा गङ्गाको घेरे रहते हैं। अभक्त अथवा कुकर्मी मनुष्य जब गङ्गाके तीरमें उपस्थित होते हैं तो उनके हृदयमें काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि रिपु आ करके भर जाते और गङ्गास्नान करने नहीं देते हैं। (भविष्य) मातृविक्रय तथा पितृविक्रयसे भी गङ्गाका दान ग्रहण करना निन्दनीय है। गङ्गाके भीतर कभी दान नहीं लेना चाहिये (मत्स्यपुराण) जिसकी गङ्गासे अधिक दूसरे तीर्थमें भक्ति है और जो गङ्गाको उतनी भक्ति नहीं करता उसको कठिन नरकयातनाका अनुभव करना पड़ता है। (भविष्य) ज्ञान पूर्वक गङ्गाके किनारे मृत्यु होने पर मुक्ति होती है और अज्ञान मृत्यु-स्वर्गप्रद है। मनुष्यके विषयमें क्या कहना है—कृमि, कीट, पतङ्ग, आदि जिस जन्तुको मृत्यु गङ्गामें होती अथवा जो वृक्ष उखड़ कर गङ्गामें भी गिर जाता, वह परमगति पाता है। (भविष्यपुराण) जिसका आधा शरीर मृत्युकालको गङ्गाजलमें डूबा रहता, उसको भी पुनः जन्म नहीं, ब्रह्मसायुज्य मिलता है। (स्कन्द) मनुष्योंकी जितनी हड्डियां गङ्गाजलमें रहतीं, उतने ही हजार वर्ष पर्यन्त उसका ब्रह्मलोकमें वास होता है। इसी कारण भारतीवासी मृत व्यक्तिकी अस्थि गङ्गामें डाल देते हैं। (कौर्मपुराण)

जिसका केश, रोम और नखादि भी गङ्गाजलमें निक्षिप्त होता, उसको सद्गति मिलती है। काशीखण्डमें गङ्गामाहात्म्य अत्यन्त सुन्दर रूपसे वर्णित है। उसके मतसे स्वर्ग, मर्त्य और पातालमें जितने तीर्थ हैं, सबसे गङ्गा तीर्थ प्रधान माना जाता है। ऐसा कोई पदार्थ ही नहीं है जिसके साथ गङ्गाको उपमा वा उपमेय भाव हो सके। समस्त याग, यज्ञ करनेसे जो फल होता है, गङ्गाके अकेले दर्शनसे उसका शतगुण फल मिल जाता है। ऐसा कोई भी पाप नहीं, जो गङ्गाजल स्पर्शसे विनष्ट न हो। ऐसा कौन अभीष्ट है जो गङ्गा स्नानसे पूर्ण न हो। शौच, आचमन, सेक, निर्माल्य, मलघर्षण, गात्रमर्दन, क्रीड़ा, दानग्रहण, अभक्ति, अन्य तीर्थोंकी भक्ति वा प्रशंसा, विष्ठा, मूत्रपरित्याग और सन्तरण ये १२ कार्य गङ्गामें करना निषिद्ध है।

किसी पुराणके मतमें वैशाख मासकी तृतीया तिथिको ब्रह्मलोकसे हिमालय पहाड़ पर गङ्गा अवतरण हुई हैं। ब्रह्मपुराणके मतमें ज्येष्ठ मासके शुक्लपक्षकी दशमी तिथि मंगलवारको गङ्गा हिमालय पहाड़से पर गिरीं। (भीष्म और स्नान प्रभृति शब्दविशेष देखो।)

पौराणिक मतमें विष्णु, गङ्गा और ग्राम्यदेवता आदिका एक स्थितिकाल निरूपित है। आस्तिक हिन्दुओंका विश्वास है कि वह निर्दिष्ट समय व्यतीत होनेसे, विष्णु, गङ्गा आदि धरातल छोड़ कर देवलोक चले जायंगे मनुष्योंकी दुर्दशाकी सीमा न रहेगी। देवीभागवतके मतमें कलियुगके पांच हजार वर्ष व्यतीत होने पर गङ्गा, सरस्वती और पद्मावतीका शाप मोचन होगा, ये तीनों अपनी २ मूर्तिको धारण कर विष्णुलोक चली जायगी। यह छोड़ कर विष्णुको एक और अनुमति है कि विष्णु, लोक जाते समय काशी और वृन्दावन भिन्न दूसरे तीर्थ अपने साथ लेता जायगी। (देवीभागवत ८.८।२१)

ब्रह्मवैवर्तपुराणका मत है कि जब सरस्वतीने गङ्गाको वैकुण्ठ परित्याग करने और भारत पर अवतीर्ण होनेका शाप दिया, तो गङ्गाने रोते हुए अत्यन्त आकुलतासे विष्णु भगवान्के निकट शापमोचनकालनिर्णय करनेका अनुरोध किया। विष्णुने उन्हें अत्यन्त कातर देख कर कहा :—

"अद्य प्रभृति देवेशि ! कलेः पञ्च सहस्रकम् ।
'वर्ष' स्थितिस्ते भारत्याः शापेन भारतीभुवि ॥

देवेशि ! सरस्वतीके शापसे कलिके पांच हजार वर्ष पर्यन्त तुम्हें मर्त्यलोक भारतवर्षमें रहना होगा, उसके बाद फिर तुम मेरे निकट आवोगी। इसी प्रकार दूसरे दूसरे पुराणोंमें भी गङ्गाकी स्थितिके सम्बन्धमें लिखा है। इसीसे मालूम होता है कि वर्तमान कलिके पांच हजार वर्ष पर्यन्त गङ्गाकी स्थिति है; उसके बाद चली जावेंगी। वराहपुराणमें लिखा है—

"पृथिवी गंगाहीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ"

अन्तिम कलि अर्थात् प्रलयसे पूर्व कलिमें पृथिवी पर गङ्गा न रहेंगी। आधुनिक धर्ममीमांसक हिन्दू पंडित वराहपुराणके वचनके साथ दूसरे पुराणोंके वचनोंको मिलाकर ऐसी मीमांसा करते हैं कि अन्तिम कलिको गङ्गा चली जावेंगी, अभी नहीं। दार्शनिक भी कहते हैं कि प्रलयकालके पूर्व एक भयानक सूर्य उदय होगा और उसके तेजसे पृथ्वीका समस्त जल सूख जायगा पृथ्वीपर नद, नदी कुछ भी नहीं रहेगा।

सम्प्रति कालके भौगोलिकोंका मत है कि गङ्गा हिमालय पहाड़से निकली हुई हैं। हिमालयके शिमला नगरसे दक्षिण-पूर्व इसकी उत्पत्तिका स्थान है। वह गढ़वाल राज्यके अन्तर्गत अक्षा० ३४´ ५६´ ४´ उ० और देशा० ७८´ ६´ ३०´´ पू०में अवस्थित है। हिमसे आवृत उसी स्थानको गङ्गोत्तरी कहते हैं। गङ्गोत्तरी समुद्रतलसे ८२०० हाथ ऊंच है।

उस तुषारमण्डित गह्वरी खाईके चारों तरफ पत्थरका खण्ड और मृत्तिकाका अंश आधा कोस तक फैला हुवा है। यह खात पर्वतके ऊपरी भागसे क्रमशः अवतरण करके एक गह्वरमें जा गिरा है। उसी गह्वरसे गङ्गा पृथ्वीपर उतरी हैं। इसीका नाम गोमुखी वा गङ्गोत्तरी है। इस स्थानसे ७७८ कोस पथ भ्रमण करके गङ्गा वङ्गोपसागरमें मिल गई हैं। तुषारमयी गङ्गोत्तरीके निकट गङ्गाका विस्तार १८ हाथसे अधिक नहीं होगी। उस जगह इसकी गहराई एक हाथसे भी कम है। क्रमशः नीचे आते आते दूसरी दूसरी नदियां मिल जानेसे इसका आयतन बढ़ता गया है। उत्तर-पश्चिमसे जाह्नवी और उसके बाद अलकनन्दा आकर मिली है। यहींसे स्थान देवप्रयाग तीर्थ कहा जाता है। उस जगहसे दक्षिण-पश्चिम हरिद्वार है। हरिद्वारसे देहरादून, शाहराम पुर, मुजफरनगर और बुलन्द शहर होती हुई फरुखाबादमें रामगङ्गा नामक नदी आकर गङ्गामें गिरी है। गङ्गाके उत्पत्तिस्थानसे ३३४ कोशकी दूरीपर इलाहाबादमें प्रयागतीर्थ है। इस जगह जमुना आकर गङ्गासे मिल गई। यहां ३३४ कोश राह गङ्गाने संकीर्ण भावमें चल प्रयाग तीर्थमें विशाल विस्तृत रूप धारण किया है। प्रयागसे वाराणसी होते हुए विहार आने पर पहले शोण नदी और पीछे गण्डकी और कौशिकी नदी इसमें पतित हुई है। तत्पश्चात् राजमहल होकर प्राचीन गौड़ नगरके भग्नावशेषको धोती हुई गङ्गा पूर्व मुखकी गई है। राजमहलसे दश कोस पूर्वमें इसकी एक शाखा निकलकर मुर्शिदाबाद, बहरामपुर, नदिया, कालना, हुगली, चन्दननगर और कलकत्ता होता हुई पश्चिम, दक्षिणकी ओर वङ्गोपसागरमें मिल गई है। यही शाखा गङ्गा या भागीरथी नामसे प्रसिद्ध है। मूल नदी सङ्गम स्थानसे पद्मा नाम धारण कर पाबना और गोआलंद होती हुई गई है। गोआलन्दके निकट ब्रह्मपुत्रकी यमुना नामक शाखा आकर इसमें गिरी है। उसके बाद मूल नदीने ब्रह्मपुत्रके साथ मिल कर 'मेघना' नाम धारण किया है और नोआखालीके निकट समुद्रमें मिल गई है। अंगरेज लोग इस मूल नदीको Ganges और जो शाखा कलकत्ता होकर गई है, उसे हुगली कहते हैं। मोहानासे ४३० कोसकी दूरी पर यमुना, ३०३ की दूरी पर घर्घरा २४१ की दूरी पर गोमती २३२॥० कोस दूर शोण, २२५ कोस दूर गण्डकी, १८६॥० की दूरी पर रामगङ्गा, १६२ की दूरी पर कोशी, १२० की दूरी पर महानदी, ७० की दूरी पर कर्मनाशा, ११५ की दूरी पर यमुना, ४० की दूरी पर अलकनन्दा, २० की दूरी पर भीलङ्ग ये सब नदियां मूल गङ्गामें मिली हैं

अंगरेज जिसको हुगली नदी कहते हैं, हम लोग

उसे प्रकृत गङ्गा कहते हैं। जिस स्थानमें गंगा और पद्मा विभिन्न मुखको गई हैं, वहांसे गंगाका वद्दोप (डेल्टा) आरम्भ हुआ है। इस डेल्टामें गङ्गाने भिन्न भिन्न मुखसे समद्रमें प्रवेश किया है। उसमें गङ्गा पश्चिम प्रान्तमें और मेघना पूर्व प्रान्तमें अवस्थित हैं। इसका क्षेत्रफल २८०८० वर्गमील है। गङ्गाका मुहाना सागर-तीर्थसे पूर्व चट्टग्राम तक १३५ कोस होगा। इस स्थानके बीच ८ प्रधान शाखायें समुद्रमें पतित हुई हैं. यथा-गङ्गा मेघना, वा ब्रह्मपुत्र. हरिणहाट. पुस्फर, मुर्जाटा वा काम्ना बड़पुंग, मलिञ्च, रायमंगल वा यमुना, हुगली। सिवा इसके अनेक शाखाएं भूखण्डमें प्रविष्ट हो गयी हैं और नदीमुख न होनेसे अपेक्षाकृत गभीर हैं। गङ्गाकी प्रकृत लम्बाई सागरतीर्थसे ७५४॥ कोस तथा मेघनाके मुखसे ८४० कोस है। ग्रीष्मकालमें साधारणतः गंगाका विस्तार कहीं पर आध मील, कहीं पर एक मील और कहीं पर, दो मीलसे कुछ अधिक रहता है। समुदाय गङ्गा जिस स्थान पर अपना अधिकार जमाये हुए है, उसका क्षेत्रफल ३८११०० वर्गमील है। वर्षाकालमें नदीका जल कितना हो बढ़ा करता है। समुद्रके निकटवर्ती प्रदेशमें ज्वार और भाटा होता है। समय समय जिस स्थानमें जितना जल बढ़ता, उसका परिमाण निम्नलिखित है।

	वर्षाकाल		ग्रीष्मकाल	
	फु०	इं	फु०	इं
इलाहाबाद	४५	६	२८	
बाराणसी	४५	०	३४	
कहलगांव	२८	६	२८	३
जैलंघी	२६	०	२५	६
कुमारखाली	२२	६	२२	
अग्रद्दीप	२३	८	२३	
कलकत्ता (भाटाके समय)	७		६	७
ढाका	१४			

हरिद्वारमें गङ्गाकी चौड़ाई बहुत कम है। वहां ७००० [illegible]में १८[illegible] राजमहल सब समय २०७००० पर [illegible] समय १८[illegible]०० घनफुट जल प्रति सेकेण्ड निकलता है। परीक्षा करके देखा गया है कि इलाहाबादसे बाराणसी तक १५[illegible] पथ प्रति कोस १ फुटके हिसाबसे निम्न हुआ है। वाराणसीसे कहलगांव तक प्रति कोस १० इञ्च, कहलगांवसे हुगली नदीके आरम्भ तक प्रति कोस ८ इञ्च वहांसे कलकत्ता तक प्रति कोस ८ इञ्च और कलकत्तासे समुद्र पर्यन्त २से ४ इञ्च तक जल नीचा पड़ गया है।

अन्यान्य नदियोंकी भांति गङ्गा अपने उत्पत्ति-स्थानसे जितनी दूर गई हैं उनका वेग घटा है। प्रथम उनका वेग प्रस्तर खण्ड और मृत्तिकाको बहा कर ले जाता है। वेगकी न्यूनता और माध्याकर्षणके प्रावल्यसे प्रस्तरखण्ड और मृत्तिका तलदेश पर गिरती हैं। इसी कारण नदी जितना समुद्रके समीप पहुंचती है, गभीरता घटती है, बीचमें रेत पड़ जाती है। वर्षा समय उसके ऊपर रेत जम जाती है। इसी प्रकार रेत इतनी उठ आती कि नदी वहां तक नहीं पहुंच पाती, उसके पार्श्व होकर अपना राह बनाती और एक ओरकी राह तोड़ करके दूसरी ओर दिखाती है। इसी प्रकार नदीके मुखमें सागर वक्ष पर प्रकाण्ड भूखण्ड निर्मित होता है और डेल्टा कहलाता है। भूतत्त्ववित् अनुमान करते हैं, जिस स्थानमें गङ्गा पद्मासे स्वतन्त्र होकर [illegible] हुई है, उसी स्थानसे गङ्गाके डेल्टा आरम्भ है। इसी स्थानसे आजतक जहां समुद्र है, समस्त प्रदेश पहले समुद्र ही था। वही समुद्र आजकल मनुष्योंके वासोपयोगी भूमि बन गया है। इस समस्त जनपदकी सृष्टि गङ्गाकी ही कृपाका फल हैं। हिमालय अञ्चलकी मट्टीसे उनका निर्माणकार्य सम्पन्न हुआ है। कलकत्तेमें नदीकी मृत्तिकाके २५० हाथ नीचे जीवकङ्काल काष्ठ, कोयला आदि निकलते हैं। प्रायः ८६ वर्ष पहले गाजीपुरमें एक समय परीक्षा करके देखा गया कि वहां पर प्रति वर्ष गङ्गा ६३६८०००० टन मृत्तिका लाकर जमा करती हैं। एक टन (२७ मन १८ सेर) के बराबर है। इसीसे समझ पड़ता, कितनी मृत्तिका गंगामें प्रतिवर्ष बहती है। गंगाकी उत्पत्तिकाल सेही यह काम चल आता है। इससे कितने स्थान पर कितनी नवीन भूमि निर्मित हुई, वह कौन वर्णन कर सकता है! गंगा जिस राहसे चली है, उसका पार्श्वस्थ प्रदेश समधिक उर्व्वरा है। गंगाका रेतीला जल दूकूलमें प्रवा-

ह्रित होकर जमीनको उर्वरा बना देता है। अथच अन्यान्य नदियोंको तरह इसकी प्रबल बाढ़ ग्राम, नगर बहा करके मनुष्योंका सर्वनाश नहीं करती है। रेलवे होनेके पूर्व गंगा समस्त देशीय वाणिज्यके समुदय द्रव्यादि वहन करती थीं। रेलवे होने पर भ वह काम बिलकुल बन्द नहीं है। पहले युक्तप्रदेशका पण्यद्रव्य गंगापथसे ही समुद्रको जाता था। अब भी चावल, दाल, तीसी, सरसों आदि द्रव्य गंगा वक्षसे रेलमें रफ्तनी होता है।

अंगरेजोंके समयमें गंगासे कई एक नहरें निकाली गई हैं। वे नहर गंग (Ganges Canal) कहलाती हैं। गंगाकी नहरें प्रधानत: दो भागोंमें विभक्त हैं— उत्तर (Upper) और निम्न (Lower)। गङ्गा तथा [illegible] मध्यवर्ती प्रदेशका दोआब कहते हैं। १८३७-३८ ई० में इस दोआवमें एक भयानक दुर्भिक्ष हुआ था जिससे प्रजाकी अधिक हानि हुई रही। भविष्यत्‌में इस तरहका अकाल न पड़े और कृषिकार्यके लिये प्रचुर जल पाया जाय, इसके लिये मनुष्योंने नहरोंका होना परमावश्यक समझा।

१८४२ ई०में हरिद्वारके निकटसे नहर काटना आरम्भ हुवा। १८५४ ई०के ८वीं अप्रेलको यह काम सम्पूर्ण हो गया। हरिद्वारके उत्तर गणेशघाटमें यह नहर गंगासे निकल सहारनपुर, मुजफ्फरनगर होती हुई फतेहगढ़ तक चली गई है। वहां फिर उसीसे एक शाखा निकाल पश्चिममुख होती हुई, मीरट लाई गई है। बेगमाबादके पास दक्षिण-पूर्वमुख बुलन्दशहर और अलीगढ़ होती हुई, अकबराबादमें आ यह दो शाखाओंमें विभक्त हो गई है। एक शाखा इटावा और दूसरी कानपुरको गई है। इस नहरकी लम्बाई २२२॥- कोस है। इसके बनानेमें २ कोटि २४ लाख २४ हजार रुपये व्यय हुये थे। इस खाड़ीके तैयार होने पर इंजिनियर कटली साहबके सम्मानार्थ तोप छोड़ी गई थी

गंगाकी दक्षिणी नहर भी उपरोक्त नहरसे बड़ी है। यह नहर नदरई स्थानमें काली नदी और एटाके पश्चिममें ईशास स्थान होकर गोपालपुर, कानपुर, शाखा और जेरा नामके स्थानमें इटावासे मिल गई है। तत्पश्चात् शिकोहाबाद पार होकर दक्षिण-पूर्वमें इष्ट इण्डियन रेलवेके साथ समान्तर भावमें जाकर कानपुर जिलाके दक्षिण शिकन्दरा और भगिनीपुर होती हुई यमुनासे मिली है

विहारमें शोण और गङ्गाके बीच कुछ नहरें हैं। कलकत्ताके पूर्व दिशामें एक नहर गई है। [illegible] हम लोगोंकी यथेष्ट लाभ है। जहां [illegible] उपज नहीं होती वहां नहरों द्वारा कृषिकार्यमें सुविधायें होने लगी हैं। वृष्टि नहीं होने पर भी नहरका जल कृषिकार्यमें लाभ पहुंचाता है।

गंगाका माहात्म्य इसी तरह क्रमश: बढ़ा है। पृथ्वीके किसी नदीतीर पर उतने तीर्थस्थान नहीं हैं, जितने गंगाके किनारे देखे जाते हैं।

जिस स्थान पर गङ्गा समुद्रसे मिली हैं उसीका नाम गंगासागरसंगम है [illegible] प्राचीन कालसे ही यह स्थान हिन्दुओंके अतिपवित्र तीर्थस्थान माना गया है। (भारत ३।८५ अ: हरिवंश १०८ अ.) किन्तु पहले इस सागरसंगमकी स्थितिके विषयमें बहुतोंका मतभेद रहा। भूतत्त्वविद् पण्डितोंका अनुमान है कि [illegible] समय समुद्रका स्रोत राजमहल तक प्रवाहित हुआ था। ऐसी दशामें स्वीकार करना पड़ेगा कि, वर्तमान स्थानसे प्राय: १५० कोस उत्तरमें सागरसङ्गम था। २४ परगना, नदिया, यशोर वर्धमान प्रभृति जिला गंगा नदीके गर्भमें उत्पन्न हुए थे।

महाभारतके तीर्थयात्रापर्वाध्यायमें लिखा है कि "कौशिकी तीर्थमें (गंगा और कोशी नदीके संगमस्थान राजा युधिष्ठिरउ पस्थित होकर क्रमश: सभी मन्दिरोंमें गये थे। उसके बाद उन्होंने पञ्चशत नदीयुक्त गंगासागरसंगम देखा और तब सागरके किनारे कलिङ्गदेश था।" (वनपर्व० ११३ अ०)

रघुवंशमें रघु राजाके दिग्विजय-वर्णनके पढ़नेसे मालूम पड़ता है कि उस समय वङ्गदेशके पश्चिम भागमें गङ्गाजी बहती थी और इनके बीचमें कई एक बड़े बड़े द्वीप थे। (रघु ४।३५-३७)

सातवीं शताब्दीमें एनचुयाङ्ग [illegible] दक्षिणकी ओर समतट नामक स्थान[illegible] यह मालूम होता है कि वह [illegible] जिलाके उत्तरीय भागमें है और [illegible]नारे अवस्थित है।

वङ्गवासी जिसको आजकल गङ्गा कहते हैं उसीका प्रकृत नाम भागीरथी है। भौगोलिकके मतमें यह मूल गङ्गा नहीं है वरन् गङ्गाकी एक शाखामात्र है। गौड़नगरके दक्षिणमें गङ्गासे यह शाखा निकली हुई है। वर्तमानके मानचित्रसे देखा जाता है कि गौड़के दक्षिण हो कर पूर्व मुख होती हुई जो नदी पहले पद्मा कहलाती और पीछे कीर्तिनाशा कहला कर समुद्रमें मिल गई है, वही नदी आजकल प्रकृत गङ्गा नदी कहकर पुकारी जाती है। ०८वर्ष पहले जिस स्थान हो कर गङ्गा बहती थी, आजकल वहां जल नहीं है। कुछ दिन पहले ठीक वही स्थान सागरसङ्गम था, आजकल वह स्थान भूभाग है।

२४ परगनामें इस तरहका परिवर्तन बहुत जगह देखा जाता है। आजकल जिस कालीघाट हो कर क्षुद्राकार आदिगङ्गा प्रवाहित होती है, किसी समय वह स्थान हो कर विस्तीर्ण भागीरथी बहती थी। आजकल कालीघाटके थोड़ा दक्षिण जानेसे बोध होता है कि वहां ग के गर्भके अतिरिक्त और कोई दूसरा चिह्न नहीं रह गया है। किन्तु दो सौ वर्ष पहले उस स्थान हो कर स्रोतस्वती गङ्गा बहती थी। समुद्रके साथ गङ्गाका संसर्ग था। बड़ी बड़ी नावें वहां होकर जाती आती थीं। कालीघाट कुछ दूर दक्षिण यद्यपि आदि गङ्गा अदृश्य हो गई है तथापि आजकल उस स्थानके रहनेवाले अपनेको गङ्गातीरवासी बतलाते हैं। गङ्गागर्भ कट जानेसे जो सब तालाब बन गये हैं, उन्हींके जलको गङ्गा जल समझ कर पूजादि सकल कार्यमें व्यवहार करते हैं।

आजकल आदिगङ्गा अर्थात् वङ्गदेशकी प्रकृत गङ्गा समुद्रसे मिली नहीं है। इस आदिगङ्गाके इसतरह अपूर्व परिवर्तन देख कर प्रसिद्ध स्मार्त रघुनन्दनने लिखा है:—

"प्रवाहमध्ये विच्छेदे तु अन्तःसलिलवाहित्वान्न दोषः।
अन्यथा इदानीं गङ्गायाः सागरगामित्वानुपपत्तेः॥"

आजकल जहां गङ्गाका प्रवाह नहीं है वहां गङ्गाको अन्तःसलिला जैसा स्वीकार करनेमें कोई दोष नहीं है। नहीं तो वर्तमान समयमें गङ्गाका सागरमें जाना यह असिद्ध बोध होगा।

२ हिमवत् और मैनाकी बड़ी लड़की। ३ शान्तनुकी स्त्री और भीष्मकी माता या धर्मकी स्त्रियोंमेंसे एक। ४ आकाशगङ्गा। ५ पाताल गङ्गा। ६ नीलकण्ठकी स्त्री और शंकरकी नानी। (हि॰ पु॰) ७ नारायणका पुत्र जो वृहदारण्यकोपनिषदकी टीकाके रचयिता थे।

गङ्गाका (सं॰ स्त्री॰) गङ्गा एव गङ्गा-स्वार्थे कन्-टाप्-आकारस्य विकल्पेन ह्रस्वत्वम्। भाषितपुंस्काद्य पा ७।३।४८। गङ्गा।

गङ्गाकूट—विजयार्द्ध पर्वतके कूटों (मन्दिरों) मेंसे एक कूट।

गङ्गाक्षेत्र (सं॰ क्ली॰) गङ्गायाः क्षेत्रं, ६-तत् पु॰। गङ्गातीरसे दोनों पार्श्वकी दो कोस तककी जमीन।

"तीरद्‌ गव्यूतिमात्रन्तु परितः क्षेत्रमुच्यते।" (स्कन्दपु॰)

गङ्गाखेर—हैदराबादराज्यके परभनी जिलाकी एक जागीरका सदर। यह अक्षा॰ १८° ५८' उ॰ और देशा॰ ७६° ४५' पू॰ में गोदावरीतीर पर अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग ५००७ होगी। यहां दो विद्यालय, एक स्थानीय डाकघर और एक सरकारी डाकघर तथा पुलिस इन्सपेक्टर और सब-रजिष्ट्रारका आफिस हैं।

गङ्गागोविन्दसिंह—पाइकपाड़ा-राजवंशके प्रतिष्ठित और सुप्रसिद्ध वारेन हेष्टिंगसके दीवान। उनके पिताका नाम गौराङ्ग था। गङ्गागोविन्द उत्तरराढ़ीय कायस्थ समाजके साम्वगण्य कुलीन लक्ष्मीधरके वंशीय थे। वे १७६८ ई॰के पहले अपने बड़े भाई राधागोविन्दसिंहके स्थलाभिषिक्त होने पर वङ्गदेशके नायव सूबादार महम्मद रेजा खांके अधीन कानूनगोका काम करते थे। महम्मद रेजा खांके पदच्युत होने पर उनकी भी नौकरी छूट गई थी। उसके बाद वह कलकत्ता आकर कार्यलाभकी आशासे रहने लगे। क्रमशः लाट हेष्टिंगसकी कृपादृष्टि उनपर पड़ी। बहुत थोड़े ही दिनोंमें कार्यदक्षता और चतुरता गुणके कारण वे हेष्टिंगसके दीवान हो गये। कोई कोई कहते हैं कि कान्त बाबूके यत्नसे गङ्गागोविन्द हेष्टिंगसके दीवान हुए थे।

दीवान होनेके बाद राजस्व-विभागके समस्त कार्यांका भार उन्हींके ऊपर सौंपा गया। वे देशी मनुष्योंसे घूस लेने लगे। उन्हींके द्वारा बड़े लाट हेष्टिंगसको भी यथेष्ट घूस मिलने लगा। १७७५ ई॰के पहले मई मासमें घूस लेनेके अपराधमें उनकी नौकरी छूट गई।

किन्तु शीघ्र ही उनका भाग्य फिर भी चमक उठा। मोनसन साहबके मृत्युके बाद हेष्टिंगसका एकाधिपत्य बढ़ गया और उनने फिर भी १७७६ ई०के आठवीं नवम्बरको गंगागोविन्दको दीवानके पद पर नियुक्त किया। इस समय गंगा गोविंदकी ही चली बनी थी। बड़े बड़े देशीय जमीन्दार तालुकदार और जमीन्दारके नायब गुमस्ता भेंट ले जाकर उनके निकट सर्वदा खड़े रहते थे। उस समय इस तरहका दशसाला बन्दोबस्त नहीं था, पांच ही वर्षका मियादी बन्दोबस्त रहा। इस तरह पूर्ण होनेने पर जिसके साथ नया बन्दोबस्त करनेकी इच्छा होती थी, गंगागोविन्द उसीके साथ कर देते थे। ऐसी उच्च क्षमता हाथमें पाकर वे जिस तरहका अत्याचार और स्वजातीयका जैसा अनिष्ट कर गये हैं उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। उन्हींके प्रबल प्रताप के समय दिनाजपुरके राजाका देहान्त हुवा था। उनके नावालिग पुत्रका रक्षाभार गवर्णमेंटके हाथ रहा। गङ्गागोवन्दके यत्नसे देवीसिंह उनके राज्यके कार्यकर्त्ता बनाये गये। उस समय देवीसिंह दिनाजपुरराजकी कई एक जमीन्दारियोंका अन्यायसे दखल कर गंगा गोविन्दको भेंट देने लगे इस तरह बहुत थोड़े ही दिनोंमें गंगा गोबिन्द बंगदेशमें एक मान्यगण और प्रसिद्ध व्यक्ति गिने जाने लगे। उनकी प्रभुता यहां तक बढ़ गई कि राजा कृष्णचन्द्र भी उनके भयसे कांपते थे।

१७८१ ई०को कलकत्तामें एक राजस्व-समिति (Committee of Revenue) स्थापित हुई। इस समयसे लार्डकानवालिसके आगमनकाल पर्यन्त राजस्व विभागमें गङ्गागोविन्दहीकी प्रधानता थी। उत्कोचप्रिय हेष्टिंगस विना गङ्गागोविन्दकी अनुमतिसे कोई कार्य नहीं करते थे। उन्होंने नानाप्रकारके अन्याय पथ अवलम्बन कर प्रचुर धन उपार्जन किया। ऐसा सुन जाता है कि उन्होंने अपनी माताके श्राद्धमें लगभग बारह तेरह लाख रुपये व्यय किये थे। उस तरहका महाश्राद्ध बङ्गदेशमें और कभो भी नहीं हुआ था। उस श्राद्धमें बङ्गदेशके सभी राजे और प्रधान जमींदार उपस्थित थे तथा कृष्णनगराधिपति राजा शिवचन्द्र उनके घरमें भोजन करनेके लिये बाध्य किये गये थे।

(काशी ई०ा)

हेष्टिंगस नौकरी छोड़कर स्वदेश लौट गये। गङ्गागोविन्द भी कर्मच्युत हुए। प्रसिद्ध वाग्मी एडमण्ड वार्क जिससमय विलायतको पालियामेन्ट-महासभा में हेष्टिंगसके विपक्ष वक्तृता देते थे, उस समय वे गंगागोविन्दकी खूब निन्दा करते थे। गङ्गागोविन्दने बहुतसे जमींदारोंका नाश भी किया और अन्तमें अच्छी सत्कीर्ति भी प्राप्तकर देहत्याग किया।

गङ्गाचिल्ली (सं० स्त्री०) गङ्गास्थिता चिल्ली। चिल्लविशेष, काला सिरवाला एक जलपक्षी, एक जल चिड़िया जिसका सिर काला होता। [illegible] पर्याय देवह', बक्खक [illegible] और जलकुकुड़ी है।

गङ्गाज (सं० पु०) गङ्गाया जायते, जन+ ड। १ भीष्म, २ कार्तिकेय।

गङ्गाजमुनी (हिं० वि०) १ मिला हुवा, दो रंगा। २ सोने चांदी, पीतल तांबे दो धातुओंके सुनहले रुपहले तारोंका बना हुआ। ३ काला उजला, स्याह सफेद।

गङ्गाजल (सं० क्ली०) गङ्गाया जलं ६-तत्। १ गङ्गाका जल। २ एक कपड़ेका नाम जिसका रंग उजला और सूत महीन होता है।

गङ्गाजली (सं० स्त्री०) जल भरनेकी शीशी, वह शीशी जिसमें यात्री गङ्गाजल भरते हैं।

गङ्गाजली (हिं० पु०) मछली पकड़नेका जाल, जो रोहा घासका बना हुआ रहता है।

गङ्गाटेय (सं० पु०) गङ्गातटे याति पृषोदरादिवत् तकारलोपे साधुः। मत्स्यविशेष, एक तरहकी मछली जो चिंड़ी मछली भी कहलाती है।

गङ्गातीर (सं० क्ली०) गङ्गायास्तीरं ६-तत्। गङ्गा गर्भसे १५० हाथ तककी जमीन।

"श्राद्ध इस्तशतं यावत् गर्भतस्तीरमुच्यते। (दानधर्म)

गङ्गादत्त (सं० पु०) गङ्गया दत्तः ३-तत्। १ भीष्म।

"महाप्रसू तं विजानीहि गंगादत्तमिमं सुतम्। (भारत ११८८ घ:)

२ एक प्राचीन संस्कृत कवि। ३ चातुर्वर्ण्य विचार नामक ग्रन्थप्रणेता।

गङ्गादयाल दुबे—हिन्दीके एक कवि। युक्तप्रदेशस्थ रायबरेलीके निसगर ग्राममें किसी कान्यकुब्ज ब्राह्मणके घर इनका जन्म हुआ। १८८३ ई०को यह जीवित थे।

गङ्गादास—१ छन्दोगोविन्द नामक संस्कृत ग्रन्थप्रणेता। २ उक्त छन्दोगोविन्द नामक ग्रन्थप्रणेताका शिष्य गोपाल दासका लड़का, अच्युतचरित काव्य और छन्दोमञ्जरी नामक ग्रन्थ बनानेवाला। ३ वेदान्तदीपिकाके प्रणेता। ४ वाक्यपदी नामक व्याकरण-रचयिता। ५ पीविरका पुत्र दूसरा नाम ज्ञानानन्द। इन्होंने संस्कृत भाषाको तिलकखण्डप्रशस्तिको रचना की है। ६ हिन्दीके एक कवि इनको भक्तिरसविषयक कविता मिलती है।

"भजन बनत नाहीं मन लालानी।
खानेको तो चाहिये नरम और ठण्डा पानी॥
पानको गिलौरी चाहिये और पीकदानी।
हाथी घोड़ा रथ चाहिये और तम्बू शामियानी॥
सेज तो चमन्‌ठो चाहिये रूपवती रानी।
किला तो अटूट चाहिये और महलानी॥
पूत तो सपूत चाहिये कुलको निशानी।
कहे गङ्गादास दास मायामें भुलानी॥"

७ दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्ता। इनकी रची हुई पुस्तकोंमेंसे पञ्चक्षेत्रपाल-पूजा, सुगन्धिदशम्युद्यापन, सम्मेदशिखर-पूजा, सम्मेदविलास—ये पुस्तकें मिलती हैं।

गङ्गादित्य (सं० पु०) काशीमें विश्वेश्वरके दक्षिणस्थित आदित्यविशेष। इनके दर्शन करनेसे समस्त पाप विनष्ट होते हैं।

"गङ्गादित्यः स तत्रास्ते विश्वेशाद्दक्षिणे स्थितः" (काशीखण्ड ५१ अ०)

गङ्गाद्वार (सं० क्ली०) गङ्गाया भूम्यवतरणद्वार, ६-तत्। इसका दूसरा नाम मायापुरी और हरिद्वार नामसे प्रसिद्ध है। इसी स्थानसे गङ्गा भारतवर्षमें प्रविष्ट हुई है। किसीके मतसे इस स्थान पर दक्षयज्ञ होता था। ऋषिगण सर्वदा इस स्थान पर वास करते थे।

गङ्गाधर (सं० पु०) गङ्गां धरति, धृ, अच्। १ शिव सूर्यवंशीय भगीरथके प्रार्थना करने पर शिवजीने गङ्गाको मस्तक पर धारण किया था, इस लिये इनका नाम गङ्गाधर पड़ा। २ एक प्राचीन कोषकार। ३ एक प्राचीन माध्यन्दिनीय शाखाध्यायी स्मार्त पण्डित, रामाग्निहोत्रका पुत्र। उन्होंने अनेक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किये हैं। ४ काठकाह्निक नामक गृह्यसंग्रहकार। ५ इन्दुप्रकाश नामक शब्देन्दुशेखरका टीकाकार। ६ एक उणादिवृत्तिकार। ७ आचारतिलक नामक स्मृतिसंग्रहकार। ८ चन्द्रमानतन्त्र नामक ज्योतिःशास्त्र-कार। ९ तर्कदीपिकाका एक टीकाकार। १० कायस्थो-त्पत्ति और चातुर्वर्ण्य विवरण नामका संस्कृत ग्रन्थकार। ११ तिथिनिर्णय और सर्वलिङ्ग। सन्यासनिर्णयप्रणेता और दायभागका एक टीकाकार। १२ न्यायकुतूहल और न्यायचन्द्रिकाप्रणेता। १३ निर्णयमञ्जरी नामक ग्रन्थकार। १४ एक विख्यात वैयाकरण, इन्होंने संस्कृत भाषामें व्याकरण-परिभाषा, वृत्तदर्पण नामक छन्दो-ग्रन्थ और शब्दपाठको रचना की है। १५. प्रतिष्ठा-चिन्तामणि और प्रतिष्ठानिर्णय नामक ग्रन्थकार। १६ वदरिकामाहात्म्य-संग्रहरचयिता। १७ योगरत्नावली प्रणेता। १८ भास्वतीका टीकाकार।

१९ रसपद्माकर नामक अलङ्कारशास्त्ररचयिता।

२० वसुमतीचित्रासन नामक संस्कृत काव्यकार।

२१ विधिरत्न नामक धर्मशास्त्रकार।

२२ विश्वेश्वरस्तुतिपारिजात नामक ग्रन्थकार।

२३ वेदान्तश्रुतिसारसंग्रह नामक दर्शनशास्त्र—रचयिता।

२४ चिद्रूपाश्रमरचित व्याकरणदीपका "व्याकरणप्रभा" नामको टीका बनानेवाला।

२५ 'शाकुनीप्रश्न' नामका एक शकुनशास्त्रप्रणेता।

२६ षोड़शकर्मपद्धति और संस्कारभास्कर नामका संग्रहकार।

२७ सङ्गीतरत्नाकरका 'सङ्गीतसेतु' नामका टीका-कार।

२८ किसी नैयायिक पण्डित, इन्होंने सामग्रीवाद नामसे न्यायग्रन्थ प्रणयन किया है।

२९ सूर्यशतकका एक टीकाकार।

३० स्मार्त्तपदार्थसंग्रह और स्मृतिचिन्तामणि-रचयिता।

३१ डाहलराज कर्णको सभाके एक कवि, विल्हण-ने इनको कवित्वमें पराजय किया था।

३२ भैरव दैवज्ञका पुत्र, इन्होंने प्रश्नभैरव और मुहूर्त्तभैरव नामका ज्योतिःशास्त्रकी रचना की है।

३३ रामचन्द्रका पुत्र और याज्ञिकनारायणका भाई। १६०६ ई०से पहले स्तम्भतीर्थमें ये रहते थे। इन्होंने अनेक संस्कृत ग्रन्थ बनाये हैं।

३४ शिवप्रसादका पुत्र, सेतुसंग्रह नामका मुग्धबोधका टीकाकार।

३५ एक प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थकार ये वीरेश्वर महाठकके पौत्र, सदाशिवके पुत्र और अद्वैतानन्द यतिके शिष्य थे। इन्होंने बहुतसी संस्कृत पुस्तकें बनाई हैं। जिनमेंसे कुछ निम्नलिखित हैं—आरामादिप्रतिष्ठापद्धति, गङ्गास्तोत्र, तर्कचन्द्रिका, तीर्थ काशिका, तैत्तिरायसारार्थ चन्द्रिका, ध्यानवल्लरी, नामकौमुदी, नारायणतत्त्ववाद, प्रपञ्चसारविवेक, भावसारविवेक, मणिकर्णिकास्तोत्र, मन्त्रवल्लरी, मन्त्रमहोदधिटीका, रामस्तुति, विष्णुसहस्रनाम, शारीरकसूत्रसारार्थ चन्द्रिका।

३६ हिन्दी भाषाके एक कवि। इन्होंने 'विहारी सतसई'को एक उपसतसैया नाम्नी टोका कुण्डलियों और दोहोंमें लिखो है। यह भजन आदि भी बनाते थे। यथा—

"रसना क्यों भूलो हरिनाम।
या देहियाको गर्व न कोजे ज्यों बादलको घाम॥
भोजमसट रस स्वाद बतावे क्रोधो कपटो काम।
गंगाधरके अन्तर्यामो सोधे आतम राम॥"

३७ देवताचनविधिरचयिता। ३८ इनका दूसरा नाम लक्ष्मीधर है। ये जम्बुसर नगरवासी दिवाकरके पौत्र गोविन्दके पुत्र और विष्णुके कनिष्ठभ्राता थे। इन्होंने संस्कृत ग्रन्थ रचना की है।

गङ्गाधर कविराज—बङ्गदेशके एक असाधारण पण्डित। इन्होंने १७२० शताब्दके आषाढ़ कृष्ण पक्षीय अष्टमी तिथिमें यशोर जिलाके मागुरा ग्राममें जन्मग्रहण किया था। इनके पिताका नाम भवानीप्रसाद राय था। गङ्गाधर पांच ही वर्षकी अवस्थासे जन्मभूमिस्थ गोपीकान्त चक्रवर्त्तीके निकट विद्याध्ययन करते थे और दश वर्ष तक उन्हींसे शिक्षा लाभ करते रहे। चक्रवर्ती महाशय उस छात्रकी मेधा और स्वभाव-चरित्र देख कर विस्मित हो गये और भवानीप्रसादसे बोले, "गङ्गाधर एक कविराज और पण्डित होगा।" तत्पश्चात् गङ्गाधर अपने पितृव्यस्त्रोय नन्दकुमार सेनके निकट मुग्धबोध व्याकरणके बहुतसे अंश पाठ करने लगे और अवशिष्ट भाग माणिकचन्द्र विद्यासागरसे समाप्त किया। इसके बाद ये यशोरके बारुईखाली ग्रामनिवासी रामरत्नचूड़ामणिके निकट अभिधान, अलङ्कार, काव्य इत्यादि पढ़ने लगे। तेरह वर्षकी अवस्थामें ये राजशाही वेलघरिया ग्रामवासी रामकान्त सेनसे आयुर्वेदीय चरकादि ग्रन्थ पाठ करते थे। वे प्रत्येक दिन १० पृष्ठ पाठ लेते थे और उसे अभ्यास कर मनमें दृढ़ाङ्कित करनेके लिये तथा लिपिकार्यमें पटता सम्पादनके लिये प्रतिदिन ये दश पृष्ठोंको लिपिबद्ध करते थे। वे रामकान्त अध्यापकके दूसरे शिष्योंको व्याकरण, अभिधान और साहित्यादिमें पाठ देते थे। इस समय उन्होंने मुग्धबोध व्याकरणकी एक टीका की थी।

यहां आयुर्वेदका पाठ समाप्त करके ये नाटोर नगरको चले गये उस समय इनका पिता कविराज भवानीप्रसाद राय नाटोर महाराजाके प्रधान चिकित्सक थे। नाटोर राजधानीमें उस वक्त लब्ध नामके प्रसिद्ध अध्यापक आये थे। उन्होंने गङ्गाधरकी बाल्यावस्थाकी लिखित टीका पढ़ कर भवानीप्रसादसे कहा कि आपने यह प्रांजल टीका कहां पाई? इस टीकाका तो प्रचार नहीं है। यह सुन कर भवानीप्रसाद कुछ मुसकुराये। इस पर अध्यापकको विरक्त होते देख उन्होंने हास्यका प्रकृत कारण प्रकाश किया। जब अध्यापकने जाना कि वह टीका उनके पुत्रका प्रणीत है तो वे अवाक् हो गये और गंगाधरको अनेक आशीर्वाद देने लगे। गङ्गाधर नाटोरमें अपने पिताके पास बहुत थोड़े दिन रहनेके बाद कलकत्ता चले गये। उस समय कलकत्ता अंगरेजोंके अनुकरणमें संलग्न था और पाश्चात्य डाकरोंकी भरमार थी। इस लिये वहां इन्हें विद्यावधन तथा व्यवसाय विस्तारकी विशेष सुविधा दीख न पड़ी जब इन्होंने सुना कि पुरानी राजधानी मुर्शिदाबादमें दुर्दशाग्रस्त होने पर भी प्राचीन कालसे ही कुछ अध्यापकोंका वास है। संस्कृतकी चर्चा और आयुर्वेदोक्त चिकित्साका समादर प्रचुर है तो वे वहीं चले गये। उस समय उनकी अवस्था सिर्फ २१ वर्षकी थी।

गङ्गाधर उसी अल्पवयसमें प्रधान प्रधान चिकित्सक और अध्यापकके साथ वादानुवाद द्वारा अपना मत स्थापन कराते गये और अनेक तरहके कठिन रोगग्रस्तको आरोग्य करते हुए नाना स्थानोंमें उनकी ख्याति फैल गई।

इन्होंने बाल्यकालकी पाठावस्थामें मुग्धबोधकी जो टीका रची थी उसे देख कर नाटोरके एक प्रसिद्ध अध्यापकने उनकी अमित प्रशंसा की। उस टीकाकी श्लोकसंख्या दशसहस्र थी। इसके बाद वोपदेव गोस्वामी मुग्धबोधव्याकरणके जितने अंशको अपूर्ण छोड़ गए थे, उसको इन्होंने पूर्ण किया और फिर सम्पूर्ण मुग्धबोधकी टीका की। व्याकरणमें इन दो टीकाओंसे इनकी बुद्धि, विद्या और अद्भुत कीर्ति और अधिक बढ़ गई।

उस समय उन्होंने दो महाकाव्य लिखे थे, एकका नाम "लोकालोकपुरुषीय" और दूसरेका नाम "दुर्गवधकाव्य" था।

बुद्धिमान् और मेधावी मनुष्य जिस ओर बुद्धि चलाया करते हैं उसी ओर वे पारदर्शिता और उन्नति प्रदर्शनमें समर्थ हो सकते हैं। गङ्गाधर चित्रविद्याकी भी सेवा कर उसमें कृतकार्य हुवे थे। देवदेवीकी मूर्ति बनानेमें भी इनकी सुपटुता थी। इनका पिता दुर्गोत्सव करते थे। प्रतिमा निर्माताकी मृत्यु होनेके बाद गङ्गाधरने अपनेसे ही एक मूर्ति बनाई थी।

गङ्गाधरक्काथ (सं० पु०) औषधविशेष। कण्टकशाक, अनार, जामुन, सिंघाड़ा, वेलशूंठ, वाला, मोथा और सोंठका क्काथ तैयार करनेकी प्रणालीमें इनका क्काथ करनेसे जलकी तरहके जो दस्त होते वे भी मिट जाते हैं।

गङ्गाधरचूर्ण (सं० क्ली०) जीर्णातिसाररोगनाशक औषधविशेष एक तरहकी दवा जिससे पुराना अतिसार रोग जाता रहता है। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—धायफूल, आमलकी, यक्षोधर, आकनादि, श्योनाक, यष्टिमधु, श्री विल्व, जम्बू, और आम्रवीज, सोंठ, विष, वाला, लोध, कूटज प्रत्येकका समभाग लेकर अच्छी तरह चूर्ण करनेके बाद मिला देना चाहिये। इसीको गङ्गाधरचूर्ण कहते हैं। चावलके धोये हुए जलके साथ इसका सेवन करनेसे जीर्णातिसाररोग नाश होता है। (वैद्यक)

गङ्गाधरचक्रवर्ती—वंगदेशका एक स्मार्त पण्डित। इन्होंने आङ्कतत्त्वभावार्थदीपिकाकी रचना की है।

गङ्गाधरदेव—उड़ीसाके एक राजा। उत्कल देखो।

गङ्गाधरनाथ—रससारसंग्रह नामक वैद्यक ग्रन्थकार।

गङ्गाधरभट्ट—१ विकृतिकौमुदी नामक जटापटलका टीकाकार। २ भाट्टचिन्तामणि नामक मीमांसासूत्रका टीकाकार। ३ हालरचित सप्तशतीका सप्तशतकभावलेशप्रकाशिका नामक टीकाकार।

गङ्गाधर यति—एक प्रसिद्ध वेदान्तिक। रामचन्द्र सरस्वतीके शिष्य सर्वज्ञ सरस्वतीके प्रशिष्य और योगवाशिष्ठतात्पर्य प्रकाश-रचयिता आनन्दबोधेन्द्र सरस्वतीके गुरु। ये गङ्गाधर भिक्षु, गङ्गाधर सरस्वती अथवा गङ्गाधरेन्द्र यति नामसे विख्यात हैं। इन्होंने कई एक संस्कृतकी कितावें रचना की है। जिनमेंसे कुछ ये हैं :—चन्द्रिकोद्धार नामक वेदान्तसिद्धान्तचन्द्रिकाकी टीका, प्रणवकल्पप्रकाश, वेदान्तसिद्धान्तमञ्जरी और प्रकाश नामक उसकी टीका साम्राज्यसिद्धि तथा मोक्ष नामकी उसकी टीका, सिद्धान्तसंग्रह और उसकी टीका, स्वाराज्यसिद्धि एवं कैवल्यकल्पद्रुम नामक उसकी टीका

गङ्गाधर वाजपेयी—अवैदिकदर्शनसंग्रह और रसिकरञ्जनी नामके अलङ्कारशास्त्र-रचयिता।

गङ्गाधर शर्म्मा—मुग्धबोधके एक प्रसिद्ध टीकाकार।

गङ्गाधर शास्त्री—कृष्णराज चम्पूके प्रणेता। इनकी कार्यदक्षता देख बरोदाके राज्य-परिचालक (Regent) और गायकवाड़के भाई फर्त सिंहने इनको अपना प्रधान कर्मचारी बनाया। इनकी प्रखरबुद्धि और दक्षतासे सन्तुष्ट हो रेसीडेण्ट लेफिटेण्ट कर्णेल वाकरने इन्हें बरोदाके प्रधान मन्त्रीके पदसे आभूषित किया। १८१४ ई०में पेशवा वाजीराव पूनाके गायकवाड एजेण्टमें गड़बड़ी होनेके कारण ये ठीक ठीक हिसाब किताब देनेके लिये पूना गये। गायकवाड़ने पेशवाके चरित्र और विश्वासघातकतासे सन्दिग्ध हो वृटिशगवर्मेंटको मध्यस्थ किया। गङ्गाधरके पूना पहुंचने पर पेशवाने आदर पूर्वक उनका सत्कार किया और कुछ दिन पूनामें रहनेके लिये अनु-

रोध किया। बाद १८१५ ई०के जुलाई महिनेमें पेशवा गङ्गाधरको साथ लेकर तीर्थ यात्राके लिये पुरन्धरपुरको गये। वहां १४वीं जुलाईके सन्ध्या समय त्रिम्बकजी पेशवाके साथ मिलनेके लिये उन्हें विठोवाके मन्दिरमें ले गये आराधना करनेके बाद गंगाधर पेशवासे मिले इसके बाद जब वे दोनों अपने डेरे पर लौटे आरहे थे, तो रास्तेमें त्रिम्बकजीसे रखे हुए गुप्त हत्याकारियोंके हाथ इनकी मृत्यु हुई।

गङ्गाधर सरस्वती (गंगाधर यौन देखो)

गङ्गाधर सुनू—राघवभ्युदय नामक संस्कृत काव्यप्रणेता।

गङ्गाधरेन्द्र (गंगाधर यौन देखो)

गङ्गानदी—जैनमतानुसार जम्बूद्वीपकी गङ्गा, सिन्धु आदि चौदह नदियोंमेंसे एक नदी। यह नदी भारतक्षेत्रमें बहती हुई पूर्व समुद्रमें जा मिली है। इस नदीसे चौदह हजार शाखाएं निकली हैं; जो भारतक्षेत्रके तीन खण्डमें प्रवाहित हैं। (ती० स० ३ ५०)

गङ्गापति—१ हिन्दी भाषाके एक धार्मिक कवि। १७१८ ई०को इनका अभ्युदय हुआ। इन्होंने विज्ञानविलास नामक ग्रन्थ बनाया है उसमें विभिन्न भारतीय शास्त्रोक्त धर्मोंका सन्निवेश है और वेदान्तदर्शनकी प्रतिष्ठा की गयी है। गुरु और शिष्यके संवाद द्वारा यह धर्मोपदेश प्रदान करता है।

२ हिन्दीके कोई कवि। १८८७ ई०को इनका जन्म हुआ था।

गङ्गापत्री (सं० स्त्री०) गङ्गावत् पवित्रम् पत्रमस्याः, बहुव्री०। वृक्षविशेष, एक तरहका पेड़ जिसके पत्ते अत्यन्त सुगन्धित होते हैं। इसका पर्याय—पत्री, सुगन्धा और गन्धपत्रिका है। इसका गुण कटु उष्ण, वातनाशक और व्रणका क्षतशोधनकारी है। (राजनि:)

गङ्गापथ (सं० पु०) गगन, आकाश।

गङ्गापाट (हिं० पु०) घोड़ेके तंगके नीचेकी भौंरी। बहुतोंका ख्याल है कि यदि वह भौंरी तंगसे बाहर हो जाय तो शुभ माना जाता और यदि तंगके नीचे पड़े तो अशुभ होता है

गंगापुत्र (सं० पु०) गंगायाः पुत्रः, ६-तत्। १ भीष्म। २ कार्तिक। ३ वर्णसङ्कर जातिविशेष। इसे मुरदाफरोस कहते हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराणके अनुसार यह जाति लेट जातीय पुरुषके औरससे और धीवर जातीय कन्याके गर्भसे पैदा हुई है।

"लेटात् तीवर कन्यायां गङ्गापुत्र इतिस्मृतः" (ब्रह्मखण्ड),

इस जातिके लोग सर्वदा गंगा किनारे रहते और घाटों पर दान लेते हैं। इसी लिये ये गंगापुत्र कहे जाते हैं। ४ काशी प्रभृति स्थानोंमें गङ्गातीरपर रहनेवाला हीन ब्राह्मण जब कोई क्रिया करनी होती है तो ये ही ब्राह्मण उस कार्यको करा देते हैं। इसी लिये गङ्गापुत्र कहलाये। ये तीर्थयात्रियोंको हमेशा बतलाया करते हैं कि किन स्थानोंमें कैसी २ क्रियायें करनी चाहिये। उस तीर्थ स्थान पर कोई यात्री बिना गङ्गापुत्रकी पूछे कोई धर्म कभी नहीं कर सकता है। गङ्गा स्नानके समय गङ्गापुत्र यात्रियोंके हाथमें जल और कुश देकर मन्त्र पढ़ाते हैं। इसके बाद वे स्नान करते हैं। स्नान करनेके बाद वे यात्रियोंके सिर पर चन्दन लगाते हैं। यात्री ब्राह्मणको यथाशक्ति कुछ द्रव्य देकर बिदा करते हैं। काशीमें गङ्गाघाट पर सभी गंगापुत्रोंका अपना २ स्थान निर्दिष्ट किया हुआ है। दूसरे दूसरे ब्राह्मण भी गङ्गापुत्रके कार्य करते हैं। गङ्गापुत्र दूसरे ब्राह्मणोंकी अपेक्षा निम्न श्रेणीमें गिने जाते हैं।

गङ्गापुर—१ राजपूतानाके अन्तर्गत जयपुर राज्यका एक नगर। इसकी जनसंख्या प्रायः ५८८० है।

२ राजपूतानाके जयपुर राज्यमें इसी नामकी तहसील और निजामतका सदर। यह अक्षा० २६° २८' उ० और देशा० ७६° ४४' पू०, जयपुर शहरसे ७० मीलकी दूरी पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५१५५ है। यहां दो विद्यालय और एक अस्पताल हैं।

३ सारन जिलाके अन्तर्गत एक नगर। लोकसंख्या लगभग २६६६ है। ४ हैदराबादके औरंगाबाद जिलाका दक्षिण-पूर्वीय तालुक। भूपरिमाण ५१४ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ५१४१३ है। इस तालुकमें १८० ग्राम लगते हैं जिनमेंसे १५ जागीर हैं। गंगापुर इसका मुख्य सदर है। तालुककी आमदनी प्रायः तीन लाख रुपये है।

५ युक्तप्रदेशमें बनारस जिलाका पूर्वीय तहसील।

यह अक्षा० २५´ १०´ से २५´ २४´ उत्तर और देशा० ८२ ४२´ से ८३´ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ११८ वर्गमील तथा जनसंख्या प्राय: ८६७०३ है। इसमें २८० ग्राम लगते हैं लेकिन शहर एक भी नहीं हैं। तहसीलकी आमदनी लगभग १२५०००) है। वरना नदी तीर पर अवस्थित होनेके कारण यहां उपज बहुत होती है।

गङ्गापूजा (सं० स्त्री०) विवाहके बादकी एक रीति। इसमें ग्रामकी स्त्रियां वर और वधूके साथ गीत गाती, किसी तालाव पर जाती हैं और ग्रामके देवताकी पूजा कर लौट आती हैं। इसी दिन दम्पतीके हाथोंसे विवाह-कंगन खोला जाता है।

गङ्गाप्रसाद - हिन्दी भाषाके एक सुप्रसिद्धकवि। साधारणत: इनको गङ्गकवि कहते हैं। १५३८ ई०को इनका जन्म हुआ। यह युक्तप्रदेशस्थ इटावा जिलेके इकनौरवासी एक ब्राह्मण थे और अकबर बादशाहकी सभामें उपस्थित रहते थे। बीरबल, खान् खानान् और दूसरोंसे इन्हें बहुतसा पुरस्कार मिला। परन्तु आईन-अकबरीमें इनका उल्लेख नहीं।

२ युक्तप्रदेशस्थ सीतापुर जिलेके एक हिन्दी कवि। इन्हें भी गङ्गकवि ही कहा जाता है। १८३३ ई०को ब्राह्मणवंशमें इनका जन्म हुआ। अपने उत्कृष्ट काव्यके कारण इन्हें सुपौली ग्राम निष्कर मिला था। इन्होंने दूतीविलास नामक शृङ्गार रसकी पुस्तक रचना की।

गङ्गाप्राप्ति (सं० स्त्री०) गंगाया: प्राप्ति ६-तत्। १ गंगालाभ वा गंगामें जाना। आजकल गंगाप्राप्तिसे मृत्युका ही बोध होता है।

गङ्गाबाई—एक विख्यात महाराष्ट्र-महिला। यह पेशवा नारायण रावकी पत्नी रहीं। १७७३ ई० ३० अगस्तको कई एक सिपाहियोंने वेतन न मिलनेसे क्रोधमें उन्मत्त हो अष्टादश वर्षीय नारायण रावको मार डाला। लोगों को विश्वास है कि रघुनाथ राव और राघवाकी उत्तेजनासे ही उक्त काण्ड हुआ था। कोई कोई कहता कि रघुनाथकी पत्नी आनन्द बाईके कौशलसे वह निष्ठुर कार्य किया गया। नारायण राव देखो। नारायण रावके मरने पर रघुनाथ राव पेशवा हो वहि:शत्रुओंके साथ युद्धविग्रहमें व्यापृत हुए। उनके बहुतसे प्रधान व्यक्ति कई बहाने करके युद्धस्थलसे फिर लौट पड़े। सखाराम बापू, त्र्यम्बक राव मामा, नाना फड़नवीस, मरोबा फड़नवीस, बजावा पुरन्धर, आनन्द राव जीवाजी, हरिपन्थ फड़के आदिको ले करके फिर एक मन्त्रिसभा बनी थी। उसमें नाना फड़नवीस और हरिपन्थ फड़के प्रधान रहे। वह रघुनाथके विपक्ष थे। थोड़े दिनमें प्रकाश हुआ कि नारायण रावके मरनेसे पहले उनकी पत्नी गंगाबाई गर्भवती हुई थीं। मन्त्रियोंने परामर्श करके उन्हें पुरन्धर भेजनेका प्रबन्ध किया, पीछेको जिसमें कोई उनका अनिष्ट न करे। १७७४ ई० ३० जनवरीको नाना फड़नवीस और हरिपन्थ फड़के इन्हें पुरन्धर ले गये। सदाशिव रावकी विधवा प्रभावती लोगोंमें अश्रद्धास्पद रहीं। वह भी गंगाबाईके साथ भेजी गयीं। पुरन्धरका दुर्ग ४४१२ हाथ ऊंचे एक पर्वत पर अवस्थित है। इसमें उन्हें पहुंचानेके नाना कारण थे। पूनाकी चारों ओर शत्रुपक्षीय लोग थे। उसीसे विधवा गंगाबाई पर अनिष्टपातकी आशङ्का रही। इनके निकट कई एक सद्यप्रसूता रमणीको रख दिया गया। क्योंकि उनको यदि पुत्रसन्तान हो और स्तनसे यथेष्ट दुग्ध न निकले, तो इनके स्तन्यदुग्धसे बालककी जीवनरक्षा होगी। फिर गंगाबाईके कन्या सन्तान होने पर चुपके चुपके अपरका पुत्रसन्तान इनकी कन्याके साथ परिवर्तित कर दिया जावेगा। गंगाबाईके गर्भसे पुत्र सन्तान होने पर वही प्रकृत पेशवा ठहरेगा। ऐसा होने पर रघुनाथ रावकी क्षमता घट जावेगी। मन्त्री लोग इसी पुत्रकी आशा पर निर्भर करके गंगा बाईके नामसे पेशवाका काम चलाने लगे।

रघुनाथ राव उस समय कर्णाटमें थे। वहीं सब संवाद पा करके यह पूनाके अभिमुख चल पड़े। राह पर एक लड़ाईमें इनकी जीत हुई। किन्तु यह पूनाके सामने न आ करके उत्तराभिमुख चले गये। १७७४ ई० १८ अपरेलको इन्होंने सुना कि गंगाबाईको पुत्रसन्तान हुआ था। फिर यह मलवार चले गये। गंगाबाईका वही पुत्र ४० दिनका होने पर माधवराव नारायण वा मधुराव नारायण नामसे अभिहित हो पेशवाके पद पर अभि-

सिल हुआ। पीछेको इसीका नाम सवाई माधवराव रखा गया।

माधव राव जन्म समयको रामोसियोंके अत्याचारसे विषम उत्पीड़ित हुए। रामोसियोंके दलमें अश्वारोही सेना रही। वह वणिक्वेशमें जा करके हैदराबाद और बरार लूटते थे। जेजुरीके दादाजी उनके अधिनायक रहे। इन्होंने किसी ब्राह्मणकन्याका धर्म बिगाड़ा था। उसी ब्राह्मणकन्याने पुरन्धरमें गंगाबाईके निकट अपनी अवस्था बतला करके कहा कि मेरे अपमानसे समस्त ब्राह्मणोंका अपमान हुआ था, यहां तक कि आपके सम्मानमें भी बट्टा लगा—जब मेरा धर्म ही चला गया, जीनेसे क्या मिलेगा। यही बात कह करके ब्राह्मणीने जोरसे अपनी जीभ खींच करके उखाड़ डाली। बातकी बातमें वह मर मिटी थी। गंगाबाई यह देख करके स्तम्भित हुईं। इन्होंने प्रतिज्ञा की कि दादाजी रामोसीके जीते जागते मैं जलग्रहण न करूंगी। मन्त्रियोंने उन्हें शान्त करनेकी चेष्टा की थी। परन्तु यह किसी प्रकार ठण्डी न पड़ीं। मन्त्रियोंने दादाजीको मार डालना ही ठहराया था। किसी विशेष प्रयोजन पड़नेके बहाने उन्हें बुला भेजा गया। दादाजीने अपने ही मुंह स्वीकार किया कि उन्होंने ११०० डाके डाले थे। जो हो, दादाजी अनतिविलम्ब निहत हुए।

उधर मन्त्रियोंमें मतवैषम्य पड़ गया। गंगाबाई नाना फड़नवीसको कुछ अधिक चाहती थीं। यह उन्हींके परामर्शानुसार चलती थीं। परन्तु मन्त्रियोंमें परस्पर मेल न रहा। गंगाबाई भी उसके लिये उत्कण्ठित हुईं। इनके विपक्षीका कहना है कि (१७७७ ई० सितम्बर) फड़नवीसके साथ अवैध प्रणय रहनेसे उनके गर्भसञ्चार हुआ। इसी बातके पीछे खुलनेसे गङ्गाबाईने विषप्रयोगसे आत्महत्या कर डाली।

गङ्गावासी (सं० पु०) गंगाकिनारे वास करनेवाले, जो गंगाके किनारे रहते हों।

गङ्गाभट्ट—एक विख्यात स्मार्त पण्डित। इनके बनाये हुए आधान-पद्धति, आपस्तम्बप्रयोगसार, धर्मप्रदीप और समयनय नामक कई एक संस्कृत ग्रन्थ हैं।

गङ्गाभास्कर—शकुनावली नामक ग्रन्थप्रणेता।

गङ्गाम्भः (सं० क्ली०) गंगाया अम्भः जलम्, ६-तत्। गंगाजल, गंगाका पानी।

"अयनाद्यं शतं कृत्वा कृतं गंगावगाहनम्।
एवं दहति गङ्गाम्भः—राशिमिवानलः।" (वराहपुराण)

गङ्गाम्बु (सं० क्ली०) गङ्गाजल।

गङ्गायात्रा (सं० स्त्री०) गङ्गामुद्दिश्य यात्रा १ मरणासन्न मनुष्यका गङ्गातीर मरनेके लिये जाना। २ मरणासन्नके सद्गति प्राप्तिके लिये पञ्चवटी प्रभृति पवित्र स्थानोंमें जानेको भी गङ्गायात्रा कहते हैं।

गङ्गायात्रिक (सं० त्रि०) १ जो रोगीको गंगायात्रा कराता है, जो रोगीको मरनेके लिये गंगा घाट ले जाता है। २ योगादि उपलक्षमें गंगास्नानके लिये जाता है। (पु०) ३ गंगा देवीका उत्सव।

गङ्गायात्री (सं० त्रि०) जो गङ्गातीर जानेको यात्रा करता हो, जो गङ्गा किनारे जानेके लिये तैयार हो।

गङ्गाराम—१ एक विख्यात संस्कृत ज्योतिर्विद्। इन्होंने भावफल, युद्धजयोत्सव और रत्नोद्योत नामक ज्योतिर्ग्रन्थ प्रणयन किये हैं। २ न्यायकुतूहल नामक न्यायग्रन्थ रचनेवाला। ३ भक्तिरसाब्धिकणिका नामक ग्रन्थ-प्रणेता। ४ गोवर्धनसप्तशतीका टीकाकार। ५ बुंदेलखण्डके एक हिन्दी कवि। इनका जन्म १८३७ ई०को हुआ था। ६ तोतेका प्यारका नाम।

गङ्गाराम जड़िन्—एक विख्यात नैयायिक। नारायणके पुत्र और नीलकण्ठके शिष्य। इन्होंने तर्कामृतचषक और उसकी टीका, दिनकरीखण्डन, नौकारसतरङ्गिणीव्याख्या, रसमीमांसा और उसकी टीकाका प्रणयन किया है।

गङ्गारामदास—एक विख्यात कविराज और भवानीदास कविराजका शिष्य। इन्होंने संस्कृत भाषामें शरीर-विनिश्चयाधिकार नामक वैद्यक ग्रन्थकी रचना की है।

गङ्गारी—ब्राह्मणजाति भेद। यह लोग पहाड़ी होते और गङ्गाके तट पर रहते हैं। कहते हैं कि सारोला ब्राह्मण नीच कुलमें विवाह कर लेनेसे गङ्गारी कहलाने लगते हैं। इनका एक भेद गङ्गारी गैरोला और दूसरा सारोला गङ्गारी है। विद्वानोंके मतानुसार अलकनन्दाकी उस ओर चारों वर्ण गङ्गारी होते हैं। इनकी कई पदवियां हैं। घिड़ियाल वंसमर्दनी और उनयाल महिषमर्दनी, कालिका, राजराजेश्वरी आदि देवियोंकी पूजा करते हैं।

गङ्गाल (हिं० पु०) पानी रखनेका बड़ा बरतन, कण्डाला

गङ्गाला (हिं० पु०) गङ्गाका चढ़ाव पहुंचने तककी जमीन, कछार ।

गङ्गालाभ (सं० पु०) गङ्गाया लाभः प्राप्तिः, ६-तत्। गङ्गाकी प्राप्ति, मृत्यु, गङ्गागर्भ पर ज्ञानपूर्वक प्राणत्याग।

गङ्गालहरी (सं० स्त्री०) १ गंगाया लहरी, ६-तत्। गंगाकी तरंग, गंगाकी लहर। २ प्रसिद्ध पण्डित जगन्नाथ तर्कपञ्चाननका बनाया गंगास्तव।

गङ्गावंश—गाङ्गवंश देखो।

गङ्गावतार (सं० पु०)गंगाया अवतारः ब्रह्मलोकाद् भूमौ पतनमत्र बहुव्रो०। १ तीर्थविशेष, गंगाद्वार। गंगाया अवतारः, ६-तत्। २ ब्रह्मलोकसे पृथ्वी पर गंगाका आगमन।

"भगीरथ इव दृष्ट गङ्गावतारः" (कादम्बरी)

गङ्गावती—हैदराबादमें रायपुर जिलाके इसी नामके तालुकका एक शहर। यह अक्षा० १५° २६' उ० और देशा० ७६° ३२' पू० पर आनगुण्डिसे पांच मील उत्तरमें अवस्थित है। शहरसे दो मील पूर्व तुंगभद्रा नदी प्रवाहित है। लोकसंख्या प्रायः ६२४५ है। यहां एक विद्यालय, एक अस्पताल, एक डाकघर और प्राचीन मन्दिर है। प्रति रविवारको बाजार लगता है।

गङ्गावाली—बम्बई प्रान्तीय उत्तर कनाड़ा जिलाकी गंगावाली नदीका मुहानास्थित एक बन्दर। यह अक्षा० १४° २६' उ० और देशा० ७४° २१' पू० पर अवस्थित और अनकोलसे ५ मील उत्तरमें पड़ता है। यहांकी लोकसंख्या लगभग १००० है। प्रतिवर्ष इस बंदरसे २००००) रु०की चीजें दूर दूर देशमें भेजी जाती और ४००० रुपयेकी चीजें यहां उतरती हैं। यहां एक सुन्दर मन्दिर है जिसमें शिवकी स्त्री गङ्गाजीकी मूर्ति स्थापित हैं प्रतिवर्ष आश्विन महीनेकी अष्टमी तिथिमें भिन्न भिन्न जगहके मनुष्य मंदिरके सामनेकी नदीमें स्नान करनेके लिये आते हैं। मंदिरके पासही कामेश्वर नामक एक लिङ्ग है जो विश्वकर्मासे स्थापित हुआ कहा जाता है।

गङ्गासागर (सं० पु०) गङ्गया सम्गतः सागरः मध्यप०। वह स्थान जहां गङ्गा सागरसे मिलती है। पौष संक्रान्तिके दिन बहुत यात्री यहां इकट्ठे होते हैं। इस स्थान पर दान ध्यान करनेसे अनेक फल प्राप्त होते हैं। इसके निकट एक कपिलाश्रम है। (भागवतपु० २२।११, ब्रह्माण्डम १० गंगा और सागर संगम देखो।

गङ्गासुत (सं० पु०) गङ्गायाः सुतः, ६-तत्। १ भीष्म। २ कार्तिकेय।

गङ्गास्नान (सं० क्लो०) गङ्गायाम् स्नानम् ७-तत्। गङ्गामें स्नान करनेकी क्रिया।

गङ्गास्नायी (सं० त्रि०) गङ्गायाम् स्नाति स्ना-णिनि। जो मनुष्य गंगास्नान करता है, गंगास्नान करनेवाला।

गङ्गाह्रद (सं० पु०) गंगाया, ह्रद इव। १ भारतप्रसिद्ध स्वस्तिपुरका एक कूप। इस कूपमें सर्वदा तीन क्रोड़ तीर्थ अवस्थान करते हैं। इसमें स्नान करनेसे स्वर्गकी प्राप्ति होती है। २ कोटितीर्थके अन्तर्गत एक तीर्थ ब्रह्मचर्य अवलम्बन कर इस तीर्थमें स्नान करनेसे राजसूय और अश्वमेध यज्ञका फल होता है। (भारत ३।८१ अ०) गङ्गायाह्रदः, ३६-तत्। गंगाका कूप।

गङ्गिका (सं० स्त्री०) गङ्गा स्वार्थे कन्-टाप् इत्वञ्च। गङ्गा।

गङ्गिरु—युक्तप्रदेशमें मुजफ्फरनगर जिलाका एक नगर। यह अक्षा० २८° १८' ६" उ० और देशा० ७०° १५' ३" पू० पर अवस्थित है। यह नगर अत्यन्त प्राचीन है। ईंटोंके बने हुए घरोंका भग्नावशेष अवतक भी पड़ा हुआ है। नगरके पूर्व हो कर एक नहर गई है। यहांकी जनसंख्या प्रायः ६ हजार है।

गङ्गुक (सं० पु०) कंगूक पृषोदरादिवत् निपातने साधु। धान्यविशेष, कौनी धान। (सुश्रुत सूत्र ४०अः)

गङ्गेटी (हिं० स्त्री०) दवाके काममें लानेकी एक बूटी। इसके सेवन करनेसे फोड़ा गल जाती है और मल मूत्र आसानीसे उतरता है।

गङ्गेरन (हिं० स्त्री०) औषधविशेष। इस दवाईके पौधेका आकार सहदेई पौधेके जैसा होता है। सिर्फ दोनोंमें इतना ही विभिन्नता है कि गङ्गेरनके पत्ते बहुत मोटे और दो अनीवाले होते हैं। इसका फूल गुलाबी रंगका होता है और फल भी सहदेईके फलसे कुछ बड़ा होता है। इसके फल पकने पर पांच हिस्सोंमें बट जाते हैं। इसका पौधा मूत्रकृच्छ, घात और चोपरोग, खुजली, कुछ

आदिके काममें आता है। गंगेरन दो प्रकारकी होती है एक छोटी दूसरी बड़ी। बड़ी अम्ल मधुर, त्रिदोष-नाशक तथा दाह और ज्वरको दूर करती है।

गङ्गे रुवा (हिं॰ पु॰) एक तरहका पेड़ जो पहाड़ पर पाया जाता है। इसके फल आंवलेकी तरह छोटे होते हैं। इसका पेड़ दवाईके काममें आता है। वैद्यकमें इस पेड़का फल कफ-वात-नाशक, पित्तकारक, भारी, तथा गरम माना जाता है। इसके फल खट्टे और मीठे होते हैं।

गङ्गे श—एक असाधारण नैयायिक। यह गंगेशोपाध्याय नामसे विख्यात हैं। इनका दूसरा नाम गंगेश्वर था। इन्होंने तत्त्वचिन्तामणि नामक प्रसिद्ध न्यायग्रन्थ लिखा है।

नवद्वीपके कोई कोई नैयायिक कहते हैं कि वंगदेशमें अति दरिद्र ब्राह्मणके घर उन्होंने जन्मग्रहण किया था। बाल्यकालको गंगेशके पिताने उनको लिखना पढ़ना सिखानेके लिये बड़ी चेष्टा की किन्तु इससे उनको कुछ लाभ न हुआ। पिताने नितान्त दुःखित हो गंगेशको उनके मातुलालय भेजा था। गंगेशके मामा एक अच्छे से पण्डित रहे। इनके अनेक छात्र थे। मातुल और इनके छात्र बहुत चेष्टा करने पर भी उन्हें कोई व्याकरण पढ़ा न सके। इससे सबने उनके लिखने पढ़नेकी आशा एक प्रकार परित्याग की थी। गंगेश मामानेमें सहाध्यायियों का हुक्का भर करके अति दीन भावसे कालयापन करने लगे किसी दिन रातको एक छात्रने आ गङ्गे शको बहुत पुकारके उठाया और तम्बाकू भरनेका हुक्म लगाया था। उन्होंने भयसे आंखें मलते मलते चिलम चढ़ायी, किन्तु उस पर रखनेको आग न पायी। मातुलालयके सम्मुख एक विस्तीर्ण मैदान था। उसी घोरा रजनीको उस प्रान्तरमें आग जलती थी। छात्रने कितनी ही धमकी दे करके उस मैदानसे गङ्गे शको आग लेने भेजा था। गंगेश भयसे रोते रोते आग लेने गये। किन्तु यहां आ देखा, उनकी चेतनता उड़ती बनी। किसी मृतदेह पर बैठा कोई योगी शवसाधना कर रहा था। गंगेश योगीके पद पर विलुण्ठित हुए। इसने गंगेशके मुखसे उनके आनेका कारण और दुरवस्थाकी कथा सुनी थी। योगी उन्हें अपने साथ लेकरके चलता हुआ। इसीके अनुग्रहसे गंगेश थोड़े दिनोंमें बहुत कुछ सीख गये।

इधर सब लोगोंने समझा कि गङ्गे श फिर इहजगत्‌में न थे, उन्हें भूतोंने खा डाला। परन्तु कुछ दिनों बाद वह एकाएक ममानेमें जा पहुंचे। उनको देख करके सब लोग चकित हो गये। किन्तु उन्होंने किसीसे कोई बात बतलायी न थी। मामाने उन्हें गोरू कहके गाली दे डाली। गङ्गे शने इसके उत्तरमें कहा—

"किं गवि गोत्वं किमगवि गोत्वं यदि गवि गोत्वं मयि नहि तत्त्वम्
अगवि च गोत्वं यदि भवदिष्टं भवति भवत्यपि सम्प्रति गोत्वम्॥"

गोत्व यदि गोमें होता, तो मैं वह नहीं हूं। फिर यदि गोभिन्नमें गोत्व सम्भव है, तो वह बात इस समय सब पर लागू हो सकती है।

उत्तर सुन करके मातुल अवाक् रह गये। उसी दिनसे गङ्गे श "चूड़ामणि" जैसे प्रसिद्ध हैं।

उपर्युक्त जनश्रुति कुछ भी सत्य जैसी नहीं समझ पड़ती। यह वङ्गदेशवासी नहीं थे। जिस समय वङ्गके नवद्वीपमें न्यायका उत्कर्ष न था और जब वासुदेव सार्वभौम तथा उनके गुरु पक्षधर मिश्र आविर्भूत न हुए थे, उससे भी बहुत पहले गङ्गे शउपाध्यायने जन्मग्रहण किया था। यह भी निःसन्देह बतलानेका उपाय नहीं कि वह मिथिलावासी रहे। परन्तु गङ्गे शका ग्रन्थ पढ़नेसे इन्हें ही नव्यन्यायका जन्मदाता कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं आती।

इनकी अक्षयकीर्ति तत्त्वचिन्तामणि है। उसको "न्यायतत्त्वचिन्तामणि" "चिन्तामणि" और "मणि" भी कहते हैं। यह महान्यायग्रन्थ चार खण्डोंमें विभक्त है—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्दखण्ड। इन्होंने प्रत्यक्ष खण्डमें शिवादित्यमिश्र और टीकाकार वाचस्पतिका मत उद्धृत किया है।

तत्त्वचिन्तामणिकी भांति विस्तृत और बहुसंख्यक टीकाएं किसी न्यायग्रन्थकी नहीं है। पहले पक्षधर मिश्र, फिर उनके शिष्य रुचिदत्तने चिन्तामणिकी टीका रचना की। एतद्भिन्न वासुदेव सार्वभौम, रघुनाथ शिरोमणि, गंगाधर, जगदीश, मथुरानाथ, गोकुलनाथ, भवानन्द, शशधर, शीतिकण्ठ, हरिदास, प्रगल्भ, विश्वनाथ, विष्णुपति, रघुदेव, गदाधर, चन्द्रनारायण, महेश्वर, हनुमान् प्रभृति प्रधान प्रधान नैयायिकोंको रचित अनेक

टीकाएं भी मिलती हैं। फिर इन टीकाओंकी शत शत टीका टिप्पणियां हैं। (न्याय देखो।)

गङ्गेश उपाध्यायके पुत्रका नाम वर्धमान उपाध्याय है। वह भी एक अद्वितीय नैयायिक थे। (वर्धमान उपाध्याय देखो)

२ रामार्याशतक नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता।

गङ्गेशदीक्षित—तर्कभाषाका एक टीकाकार।

गङ्गेशमिश्र—चतुर्वर्गचिन्तामणि नामक वेदान्तरचयिता।

गङ्गेशमिश्र उपाध्याय—सुमनोरमा नामक संस्कृत व्याकरण-रचयिता।

गङ्गेश्वर, (गंगेश देखो।)

गङ्गैकोण्डपुरम्—मन्द्राज प्रेसिडेन्सिके त्रिचिनापल्ली जिलाका उदैयारपालयम् तालुकका एक ग्राम। यह अक्षा॰ ११° १२ उ॰ और देशा॰ ७९° २८ पू॰ पर अवस्थित है। यह तालुकके प्रधान सदर जेयमकोंद सोलापुरसे ६ मील पूर्व में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः २७०२ है। पूर्व समय यह एक शहर था जो जिलामें एक प्रसिद्ध स्थान गिना जाता था। प्रवाद है कि जब वाणासुरको गङ्गाजल न मिला तब उसने शिवजीकी तपस्या की थी। महादेवने उसकी तपस्यासे संतुष्ट हो कर उक्त स्थानके पास हो एक कूपसे गङ्गा बहा दी और इस तरह दैत्य वाणासुरने उसमें स्नान कर मोक्ष पाया था। गङ्गैकोण्डचोल य प्रथम राजेन्द्र चोलने यह शहर स्थापित किया, इसी कारण उन्हींके नाम पर शहरका नामकरण हुआ।

प्राचीनकाल इस ग्राममें एक प्रसिद्ध मन्दिर था जिसका ध्वंसावशेष आज लों विद्यमान है। मन्दिर बहुत ऊंची दीवारसे आवेष्टित है। मन्दिरके प्रांगणमें एक विशाल विमान है जो बहुत दूरसे दीख पड़ता है, क्योंकि इसकी ऊंचाई लगभग १७४ फीट होगी। उक्त विमानके निम्नभागमें उत्कीर्ण बहुतसे शिलालेख हैं। मन्दिरमें सत्ताईस फुट गहराईका एक सुन्दर कूप है और जिसके ऊपर सपक्ष सर्पोंकी बहुतसी मूर्तियां लगी हैं। कूपमें प्रवेश करनेकी सीढ़ी दी हुई हैं। मन्दिरके बाहर १६ मील विस्तृत एक तड़ाग या ह्रद है जो पोनेरी नामसे प्रसिद्ध है। बहुत वर्षोंसे यह तालाव नष्ट हो गया है और इसकी पूर्वश्री जाती रही है।

इस ग्रामके चारों ओर प्राचीन मन्दिरोंके ध्वंसावशेष आजलों विद्यमान हैं।

गङ्गोत्तम नरोत्तम—रासपञ्चाध्यायिका पटसरसी नामक टीकाकार।

गङ्गोत्तरी—युक्तप्रदेशमें टेहरी राज्यका एक पुण्यस्थान। यह अक्षा॰ ३१° उ॰ और देशा॰ ७८° ५७ पू॰ पर अवस्थित है। इस स्थानमें पहाड़के ऊपर गङ्गाके दक्षिण तट पर गङ्गादेवीका मन्दिर है। सैकड़ों तीर्थयात्री भागीरथीकी मूर्ति दर्शन करनेके लिये आते हैं। हिन्दूओंका विश्वास है कि इसीस्थानसे गङ्गा गोमुखी हो कर भारतवर्ष में प्रविष्ट हुई है। यह हिन्दूओंका महापुण्यप्रद स्थान हैं। सम्प्रतिकाल देवीमन्दिर समुद्रतलसे ६८७८ हाथ ऊंचा है। (गामुखी देखो।)

गङ्गोज्झ (सं॰ क्ली॰) गङ्गया उज्झ्यते, उज्झ कर्मणि घञ्। गङ्गाप्रवाहशून्य जलादि।

गङ्गोदक (सं॰ पु॰) गङ्गाजल, गङ्गाका पानी।

गङ्गोद्भेद (सं॰ पु॰) गङ्गाया उद्भेदः प्रथम प्रकाशो यत्र बहुव्री॰। तीर्थविशेष। इस स्थानमें पितृदेवताका तर्पण करनेसे वाजपेय यज्ञ करनेका फल होता है और मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है।

"गङ्गोद्भेदः समासाद्य तर्पयेत् पितृदेवता।
वाजपेयमवाप्नोति ब्रह्मभूतो भवेत् सदा" ॥ (भारत ३।८१ अ॰)

गङ्गोल (सं॰ पु॰) गोमेदक नामक मणि।

गङ्गोह—युक्तप्रदेशमें सहारनपुर जिलाके नकुर तहसीलका एक शहर। यह अक्षा॰ २९° ४७ उ॰ और देशा॰ ७७° १७ पू॰में अवस्थित है। गङ्गोह परगणामें यह एक मशहूर शहर है। लोकसंख्या प्रायः १२९७१ है जिनमेंसे ५७४१ हिन्दू और ७१७२ मुसलमान हैं। सिपाही विद्रोहके समय राजा फतुआके अधीन गुजरोंने इस शहर पर आक्रमण किया था, लेकिन मिष्टर रोबर्टसन (Mr. H. D. Robertson) और लेफटिनेण्ट वोसरागोन (Lieutenant Boisragen) ने उन पर धावा कर १८५७ ई॰के जून मासमें पूर्णरूपसे हराया। यहां तीन प्राचीन मसजिद हैं जिनमेंसे दो अकबर और जहांगीरने निर्माण की थीं। मसजिदके अलावे एक विद्यालय और एक अस्पताल है। यहांकी वार्षिक आय प्रायः ३००० रुपये हैं।

गच्छ (सं० पु०) गम-भावे क्विप्, तुकृच गतम् गमनम् छ्यति छो-क । १ वृक्ष, गाछ । २ लीलावतीके श्रेढ़ी व्यवहारान्तर्गतका एक गणित। ३ जैन सम्प्रदायके यतियोंकी एक श्रेणी। ये आजन्म कुंवारे रहा करते हैं। ये कहीं स्थायी रूपसे नहीं रहते। हमेशा चलते फिरते रहते हैं। गाड़ी आदिमें ये नहीं चढ़ते।

४ मुनियोंके शिष्य परम्परासे सातवीं पोढ़ीको गच्छ और तामरोको गण कहते हैं। जैन देखो।

गज (सं० पु०) गजति मदेन मत्तो भवति, गज-अच। १ हस्ती, हाथो।

हाथो जङ्गली जन्तु होते भो मनुष्यका विशेष उपकार करता और आदरणीय होता है। पृथिवीके प्राय: सभो स्थानोंमें यह देख पड़ता है। आजकलको तरह बहुत पुराने समयमें भो हाथोका समधिक आदर रहा और वह मनुष्योंके बहुत काम आता था। ऋग्वेदके अनेक स्थानोंमें हाथोका उल्लेख है। इसको छोड़ लगभग सभी पुराने ग्रन्थोंमें हाथोको कितनी हो वर्णना मिलतो है। प्राचीन ऋषियोंने हाथोका जातिभेद, लक्षण, रोग और चिकित्सा आदिका विषय निरूपण किया है।

वराहमिहिरको वृहत्-संहितामें भद्र, मन्द्र और मृग—तीन जातीय हाथियोंका उल्लेख है। जिसके दांतका वर्ण मधु-जैसा, अङ्गप्रत्यङ्ग गठा हुआ, न बहुत मोटा न पतला हो, अतिशय बलशाली, रोढ़ धनुष-जैसी और जाघ शूकर सदृश पाते, भद्रजातीय हस्ती बतलाते हैं।

जिसका वक्ष:स्थल और कक्षावलि ढीली, पेट लम्बा, मलदेश बड़ा, चमड़ा मोटा, पुच्छका मूल स्थल और सिंहकी-जैसी दोनों आंखें होतीं, मन्द्र हाथो कहते हैं। होंठ, पूंछ और लिङ्ग छोटा; गला, दांत, सूंड, कान और चारो पैर भी छोटे और दोनों आंखें मोटी रहनेसे गजको मृग कहा जाता है। जिन हाथियोंमें मिश्र लक्षण अर्थात् दोनों लक्षण मिलते, उन्हें सङ्कीर्ण वा सङ्कर जातीय कहते हैं। इन ३ प्रकारके हाथियोंमें मृगजातीय ५ हाथ ऊंचा, ७ हाथ लम्बा और ८ हाथ तक चौड़ा हुआ करता है। मन्द्र हाथीकी ऊंचाई ४ हाथ, लम्बाई ६ हाथ और चौड़ाई ७ हाथ होती है। फिर भद्र हस्ती ३ हाथ ऊंचा, ५ हाथ लम्बा और ६ हाथ तक चौड़ा पड़ता है। परन्तु सङ्कीर्ण वा सङ्कर जातीय गजकी लम्बाईचौड़ाईका कोई भो ठिकाना नहीं। समय समय हाथीके शरीरसे जो पसोना आता, मदजल कहलाता है। भद्र हस्तीका मदजल हरा, मन्द्रका पीला, मृगका काला और सङ्कीर्णका मिला हुआ होता है। जिन हाथियोंका होंठ, तलवा और मुंह कुछ लाल, दोनों आंखें चिड़े पक्षोको जैसी, दांतोंका अगला भाग चिकना और ऊंच, मुंह चौड़ा चौकोर, रीढ़ धनुष जैसी उठी हुई, चौड़ी और बहुत हो डूबी हुई और मत्था कछुवे जैसा एक एक रूएंको लकीरवाला; कान, ठुड्डी, ललाट और गुह्यदेश कुछ कुछ फैला हुआ, नख अठारह या बीस, देखनेमें कछुवेकी पीठ-जैसा चढ़ा-उतार, सूंडमें ३ धारियां पड़ी हुईं और गोल, रूए सुन्दर, मद सुगन्धि और सांससे पद्मगन्ध छूटता, वराहमिहिरके मतमें अच्छे और राजाओंके व्यवहारयोग्य हैं। उंगलियां बहुत लम्बी, सूंडकी नोक लाल, चिङ्घाड़ बादल जैसी बहुत हो भरी हुई और गला गोल होनेसे हाथीको राजा अपने काममें लायें। मदहीन, कुबड़ा, बहुत छोटा, भेड़के सींग जैसे टेढ़े दांतवाला, नख गिनतीमें न्यून वा अधिक हों, कोई अङ्ग न हो या अधिक हो, कोषफल (मुष्क) देख पड़े, सूंडमें नोक न रहे; शरीर भूरा, नीला या काला हो और छोटे दांतोंवाला या बेदांतका हाथी अच्छा नहीं। इस प्रकारके गजोंको परराष्ट्रमें भेज देना चाहिये।

वैद्यक मतमें हाथी पर चढ़नेसे वायु बिगड़ता, अङ्ग ठहरता और भूख लगती है। (राजवल्लभ) कालिकापुराणमें लिखा है कि कामोन्मत्त हाथी पर बैठना न चाहिये। क्योंकि उससे इहकाल और परकाल दोनों नष्ट होते हैं। (कालिकापुराण ८९ अ०) ज्येष्ठा, अनुराधा, शतभिषा, स्वाती, पुष्या, मृगशिरा, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रों, रवि, शुक्र वृहस्पति और बुधवारको गजारोहण प्रशस्त है। मेष, कर्कट, तुला और मकर लग्नमें शुभग्रहकी दृष्टि या योग होने और उसी शुभग्रहयुक्त वा शुभग्रह-दृष्ट लग्नमें चन्द्रकी भी दृष्टि पड़नेसे हाथीकी सवारीमें भलाई नहीं होती। शुभ मुहूर्तकी हस्ता, मूला, धनिष्ठा, श्रवणा,

शतभिषा, अनुराधा तथा पुनर्वसु नक्षत्रमें और रवि, मङ्गल तथा शनिको छोड़ दूसरे किसी दिन हाथी मोल लेना, देखना और देना शुभकर है। इनको छोड़ करके दूसरे समय और शनिवारको क्रयादि करनेसे अमङ्गल होता है। पराशरसंहितामें हाथोको ४ जातियां लिखी हैं—भद्र, मद्र, मृग और मिश्र। इनका लक्षण वराहमिहिरने जैसे लगाया, पराशरसंहितामें भी आया है।

सब स्थानोंके हाथो एकरूप नहीं होते। वनके भेदसे हाथियोंमें भी अन्तर आता है। प्राचीन कालको प्राच्य, कारुष, दशार्ण, मार्गणेयक कालिङ्गक, अपरान्तिक, सौराष्ट्र और पञ्चनद, यही आठ जङ्गल हाथियोंकी खदान गिने जाते थे। फिर वासस्थानके अनुसार गजोंके आकार और व्यवहारमें भी भेद पड़ता है। हिमालय, गङ्गा, प्रयाग और लौहित्यके बीच एक बड़ा जङ्गल प्राच्य-वन कहलाता है। इसके हाथी भूरे स्थिरस्वभाव रहते और नख अतिशय विस्री, रीढ़ और पूंछकी जड़ लम्बो चौड़ो, सूंड कुछ मोटी, बहुत वेगसे न चल सकने वाले और मन चले जैसे समझ पड़ते हैं।

मेकल, मत्स्य और गङ्गावतार—तीन स्थानोंके वन-का नाम कारुक् वा कारुष है। इस जङ्गलके हाथी काले, बहुत वेगशाली, न बहुत बड़े न छोटे हो और अति सुन्दर पदवाले होते हैं। महागिरि, दशार्ण, विन्ध्याटवी और इरावतीके बीच दशार्ण वन है। इस जङ्गलमें काले और लाल हाथी निकलते हैं। इनकी अङ्गुलि और सूंडको नोक बहुत लम्बी, जांघ गोल, शरीरमें छोटो छोटी सफेद छिटियां पड़ो रहें, आंख मधु जैसी लाल और मुंह, मत्था तथा गला मोटा होता है। यह बड़े बलशाली रहते हैं। इनके दांत भी बहुत बड़े होते हैं और पसीनेसे आमके फलका गन्ध निकालते हैं।

पारिपात्र, वैदिश और ब्रह्मावर्तके बीच मार्गणेयक नामक कोई वन था। इसमें बलशाली और अभिमानी बड़े बड़े हाथी रहते थे। इनकी आंखोंका रङ्ग शहद-जैसा सुर्ख, चमड़ा भी कुछ नर्म, सूंड खूबसूरत, शरीर-के रोएं चिकने, देहको बनावट बहुत अच्छी और पूंछकी जड़ उतनी बड़ी नहीं लगती।

विपुल, सह्याद्रि, दक्षिणारण्य और उड़ीसाके बीच कालिङ्गक जङ्गल पड़ता है। यहां सफेद हाथी पाये जाते हैं। यह शीघ्रगामी, स्थिरपद और बलशाली होते हैं। इनको दोनों आंख चिड़ेकी-जैसी, शरीरके रूएं मृदु तथा लाल और पूंछकी जड़ कुछ कुछ छोटी पड़ती है। यहां कभी कभी पद्मवर्ण गज देखनेमें आ जाते हैं। इनको पीठ कमान जैसी; तालु, जीभ और होंठ लाल, जांघ सुवर जैसा, नख नोचप्रस्त, दांतका रङ्ग शहद-जैसा, गला पीला और सूंड बड़े सांप-जैसी लम्बी लगती है। यह बड़ी सुगमतासे पकड़े जा सकते हैं।

नर्मदा उदधिसिव, और दशार्ण पर्वतके मध्य-वर्ती वनका नाम अपरान्तिक है। इस जङ्गलके हाथी मानो, धीर और काले होते हैं। इनका कूला और गला खूबसूरत, दांत मोटे और लम्बे तालु, जिह्वा, ओष्ठ और चौड़े, मुंह भी देखनेमें बुरा नहीं, चमड़ा मुलायम, क्रोड़ लाल और लम्बा, पीठकी रीढ़ कमान जैसी और मदसे कंवलको खुशबू आती है। इस जङ्गलके हाथीकी दूसरी जगह जाना अच्छा नहीं लगता।

द्वारका, अर्बुदावर्त और नर्मदाके मध्यवर्ती वनको सौराष्ट्र कहते हैं। इस जङ्गलमें मिलनेवाले हाथी बहुत अल्पायु, दुर्दान्त और वेगशाली होते हैं। इनकी आंखें भूरी, शरीरका गंठाव सुन्दर और कान, नख और शरीर अपेक्षाकृत छोटा रहता है। यह प्राणान्तमें भी कुछ सीखना नहीं चाहता।

हिमालय, सिन्धु और कुरुजाङ्गलके बीच पञ्चनद वन है। इस जंगलके हाथीका दांत सफेद, रूखा और खिला हुआ रहता है। इसके शरीरसे एक प्रकारका सुगन्ध निकलता और सूंड पर छोटी छोटी फुटकियां पड़ जाती हैं। यह अल्पायासमें ही शिक्षाग्रहण करता और किसी स्थानमें जानेसे नहीं हिचकता। यह नहीं कि उस प्रकारके सभी हाथी निन्दनीय वा प्रशंसनीय होते हैं, उनकी अवस्था देख करके भला या बुरा ठहराना पड़ता है। (पराशर)

पराशरसंहितामें नाखूनसे सूंड तक प्रत्येक अवयवको शुभाशुभ लक्षण लिखे हैं, किन्तु उन्हें पहचानना बहुत

कठिन है। इसो लिये पराशरने अपने आप बतला दिया है—कहीं भी सब लक्षणवाले हाथी देख नहीं पड़ते, अतएव कई प्रधान लक्षणोंसे ही भला बुरा निर्णय कर लेना चाहिये। अनावश्यक समझ करके सब छोटे लक्षणोंको उल्लेख नहीं किया, कई प्रधान प्रधान लक्षणोंको ही लिख दिया है।

हाथीकी सूंड पूंछसे छोटी अथवा पूंछ जैसी, बहुत लम्बी, छोटी, बहुत मोटी, रूखी, व्रणयुक्त वा क्षुद्र अंगुलियुक्त होना बुरा है, इससे विपरीत पड़ने पर अच्छा समझना चाहिये। सूंड पूंछको बराबर, छोटी या बहुत बड़ी रहनेसे दुःखप्रद, क्षुद्र लगनेसे रोगकर और बहुत छोटी होने पर अर्थनाशक है।

हाथीके दोनों मसूड़े रोमहीन, बहुत मोटे, असमान और ढीले रहनेसे प्रभुका अमङ्गल और रूएंदार, सुश्लक्ष्ण तथा कुछ उठे होनेसे स्वामीकी समृद्धि होती है।

हाथीके मुंहकी दोनों ओर जो दो दांत निकलते, उन्हींको यहां गजदन्त कह सकते हैं। यही दोनों गजदन्त एक दूसरेसे छोटे बड़े, सङ्कीर्ण, उठे हुए, भस्म जैसे वर्ण, टेढ़े, हलके, मटमैले, रूखे, मृदु, नीचेको झुके हुए, जड़ और बीचमें ढालू, प्रान्त भागमें मोटे, लम्बे या बहुत ऊंचे पूरे होनेसे दोषजनक होते हैं। इससे महावत और मालिकका बहुतसा अमङ्गल लगता है। हाथीके दांत बराबर, चिकने, खुले हुए, भरपूर, व्रणशून्य, कलौंछे, दृढ़ और मृणाल वा कुसुमकी तरह शुभ्रवर्ण रहना अच्छा है।

हाथीका तालु श्वेतवर्ण वा कषाय होनेसे अच्छा है। इससे धन और आयुः बढ़ता है। इसके दोनों होठोंके बीच जोड़ परिमाणमें छोटे पड़नेसे मुखरोग होता है, किन्तु १२ अङ्गुलि रहने पर सब बातोंमें सुख है।

गजके ओष्ठ लोमशून्य शम्बलीयुक्त और थोड़े तांबड़े होनेसे मुंहका रोग लगता है। फिर लम्बे रूएंवाले, भरपूर कमल जैसे लाल, १६ अङ्गुल लम्बे और १२ अङ्गुल चौड़े होंठ स्वामीका आयु बढ़ाते हैं।

हाथीकी दोनों कनपटियां कम-बढ़, बेवाल, देहको रङ्ग-जैसी घेरङ्ग, बराबर, गले और पीठसे बड़ी, अधूरी, ऊंची, हलकी, परिणामशून्य और छोटी लगनेसे ध नहीं; किन्तु परस्पर समान, दीर्घ रोमयुक्त, विशाल शिखर विशिष्ट, कर्णमूलसे अर्धहस्त पर्यन्त विस्तृत, संयत और स्थूल होनेसे नानाविध सुख देनेवाली हैं। कान बेबाल हलके चमड़े का और छेददार, नसें मिल हुईं, संकीर्ण, विषम, रूखा, कड़ा, ठहरा, हूआ या गोल होनेसे हाथी का आयु घटाता है। नाड़ी शून्य, बड़े छेदोंवाली, चिकने, दुन्दुभिकी भांति बोलनेवाली, कपालके आस्फाल नसे दारुण शब्द निकले, चंवर-जैसी और मोर तथा ताड़के पेड़के समान होना अच्छा है।

हाथीका कण्ठ सीधा; छोटा न हो और लम्बा ठीक रहनेसे अच्छा है। पीठकी हड्डी बहुत ऊंची नीची या छोटी खराब है। वह ८६ अंगुल लम्बी और घोड़े के फलक जैसी रहनेसे लाभ है। हाथीका शरीर लगातार ऊंचा या मंझोला, चढ़ा उतार, हलका, लम्बा या बालदार होनेसे अमंगल आता है, इससे उलटी अवस्थामें किसी बातका खटका नहीं।

हाथीके नाखून छोटे, काले, टूकड़े-जैसे और रूखे होनेसे बुरे हैं, किन्तु अर्धचन्द्रकी तरह चमकदार और पहले कहे लक्षणोंसे उलटे पड़ने पर अच्छे होते हैं।

हाथीके पैर गिरे हुए, रूखे और तलवेमें बहुत अच्छे लगनेसे दुःखदायी होते, किन्तु १ हाथ लम्बे और कछुवे जैसे रहने पर शुभजनक हैं। इसके अलावा और भी कितने ही सूक्ष्म लक्षण ऋषि मुनियोंने निर्णय किये हैं। इस विषयमें अधिक समझनेके लिये "पराशरसंहिता" देखो।

मनुष्य जैसे पितामह ब्रह्माको अपना पूर्वपुरुष जैसा बतलाते, बड़े डील डौलवाल हाथी भी ऐरावत आदिको अपना पितामह वा पूर्वपुरुष-जैसा कह सकते हैं। इनके ८ पुरखे हैं—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक। उन सबको दिग्गज कहा जाता है। दिग्गजोंके ही वंशधर महाकाय गजोंने पृथिवीके बड़े जङ्गलमें अपना आधिपत्य फैला दिया है। इनकी कुलीनता भी शायद देख पड़ती और डील डौलमें भेद भी आ जाता है। ८ दिग्गजोंके वंशमें उत्पन्न होनेसे हाथी भी ८ भागोंमें बंटे हैं। इनमें ऐरावत वंशके गज ही श्रेष्ठ गिने जाते हैं। यह शुभ्रवर्ण, लोम शून्य, अल्पभोजी, बलवान्, बहुत बड़े, युद्धके समय विग-

छनेवाले, साधारण अवस्थामें नम्र, ग्रीष्मजलपायी, बाल और पूंछ पतली, सफेद और लम्बी सूंड, लिङ्ग छोटा होते भी पुष्ट और शरीरसे प्रभूत तथा उग्र मदजल निकलता है। इन गजोंके मस्तकमें साफ और अच्छीसी गोल मुक्ता होती है। यह राजाओंके अल्प पुण्यसे पृथिवीको नहीं छूते। लड़ाईमें इनके दांत टूट जाने पर भी फिर बढ़ आते हैं।

जिस कुञ्जरका सब अङ्ग कोमल, पूंछ डंडे जैसी न हो, गाल खुरखुरा, सर्वदा मद चुवे और क्रोध बना रहे, देवप्रिय, सर्वभक्ष तथा बलवान् और दांत और जीभ बहुत तीखी हो, पुण्डरीक दिग्गजका वंशसम्भूत है। इसके वीर्यसे कंवलका जैसा गन्ध आता और अधिक मदजल वा वमन देखा नहीं जाता। यह बहुत पानी पीना नहीं चाहता और अधिक श्रम करने पर भी कम थकता है। पुण्डरीक वंशजात हाथी जिस राजाके घरमें रहता, समस्त पृथिवीका शासन कर सकता है।

वामन दिग्गज वंशके हाथियोंका सारा देह बहुत कड़ा और छोटा, कभी कभी मतवाले होते, हमेशा मद टपका करता, आहार करके बलवान् और वीर्यवान् बन जाते, बहुत पानी पीना नहीं चाहते, कनपटीमें बहुत रूएं, दोनों दांत भद्दे और पुच्छ तथा कर्ण सूक्ष्म होते हैं।

देह दीर्घ, सूंड मोटी न होते भी लम्बी, दोनों दांत खोंड़े, शरीर सर्वदा मलयुक्त, कनपटी मोटी और भगड़ालू हाथी कुमुद दिग्गजके वंशजात हैं। यह दूसरे हाथियोंको देखते ही मार डालते हैं। मनुष्य प्राय: इनके पास फटक नहीं सकते।

अञ्जन नामक दिग्गजके वंशमें उत्पन्न होनेवाले हाथीका देह चिकना, पानी पीनेका बड़ा अभिलाषी और ऊंचा पूरा, दांत और सूंड छोटी, दोनों दांत मोटे और श्रमका दुःख उठानेवाले होते हैं।

जो हाथी सर्वदा मदजल और रेत: छोड़ता, अनूपदेशका उत्पन्न, पूंछ बहुत छोटी और बड़े वेगसे चलता—पुष्पदन्त दिग्गजका वंशसम्भूत ठहरता है।

रूएं बहुत, बड़ा, लम्बी राह चलने पर भी न थके, खाने पीनेमें खूब चालाक, मरुभूमिमें घूमना अच्छा लगे,—देह बड़ा और कड़ा दोनों दांत लम्बे, नर्म और सफेद होते भी निकम्मा, पेटू, मूत्र वा पुरीष अल्प आवे, कानकी जगह फैली हुई, रूएं और गाल हलके होना सार्वभौम दिग्गजके वंशजात कुञ्जरका लक्षण है। इन हाथियोंमें बढ़िया मुक्ता मिलती है।

जिनकी सूंड लम्बी, देह ढीला, दौड़ प्रचण्ड, क्रोधी, सर्वदा भक्षणाभिलाषी और हस्तिनीप्रिय, पूंछ और दांत पतले, गाल बड़ा, कान प्राय: न चलें और गालमें छोटे छोटे बहुत रूएं हों, सुप्रतीक दिग्गजके वंशसम्भूत हैं। इन हाथियोंके मस्तकमें बड़े बड़े मोती होते हैं।

प्राचीन ऋषियोंके मतानुसार मनुष्यकी भांति हाथी भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—४ जातियोंमें बंटे हैं। इनमें एक जातिसे उत्पन्न हुआ हाथी शुद्ध कहलाता है। शास्त्रमें अच्छे हाथीके जो लक्षण लिखते, विशुद्धमें सभी मिलते हैं। शूद्र तथा ब्राह्मण जातीय हस्तीसे उत्पन्न होते भी जिस हाथीमें ब्राह्मण जातीय हाथीके लक्षण देख पड़ते और बलवीर्यवान् होता, जारज कहा जाता है। दो द्विजातीय हाथियोंसे उत्पन्न होनेवालेका नाम शूर है। फिर ब्राह्मण जातीय और जारजसे जन्म लेनेवाला हाथी उद्भ्रान्त कहलाता है। इसी प्रकार एक दूसरेके संयोगसे बहुत तरहके हाथियोंकी उत्पत्ति होती है। पराशर कहते हैं, जो हाथियोंकी जातिका भेद भली भांति समझता, वह राजाका अमात्य बन सकता है।

ब्राह्मणजातीय हाथी विशालदेह, पवित्र और अल्पभोजी होता। जो बलिष्ठ, विशालदेह तथा क्रूर रहता, क्षत्रिय जातीय ठहरता है। दूसरी दोनों जातियोंके मिश्र लक्षण हैं।

बिक्री और कामकी दूसरी चीजोंकी तरह हाथीकी भी देख भालके लेना चाहिये। सबसे पहले हाथीके बलकी परीक्षा की जाती है। देखने सुननेमें अच्छा होते भी बलहीन हाथी नहीं लेते हैं जो हाथी १८००० पल सोना या तांबा लाद करके दौड़में ४० कोस चलने पर भी नहीं थकता, सबसे अधिक बलवान् ठहरता है। मध्यबल हाथी १४००० पल सोना या तांबा २८ कोस लाद करके ले जाने पर भी नहीं थकता। १०००० पल भार २० कोस ले जा सकनेवाले हाथीको

हीनबल कहते हैं। २½ हाथ मोटो और मट्टीमें ४ हाथ गहरी गड़ी हुई लकड़ी उखाड़ या तोड़ डालने-वाला हाथी ही सबमें श्रेष्ठ होता है। पहली जैसी मोटी, ३॥ हाथ मट्टीमें गड़ी और ७ हाथ ऊपर निकली हुई लकड़ीको मध्यबल हाथी तोड़ या सहजमें हो उखाड़ करके फेंक सकता है। पहले जिस मोटी लकड़ीकी बात कही है, उससे आधा मोटा ३ हाथ मट्टीमें गाड़ा और ६ हाथ ऊपर उठा हुआ खूंटा तोड़ या उखाड़ करके फेंक सकनेवाला हाथी हीनबल कहलाता है। ऐसे ही बलको देख भाल करके जांचते हैं, हाथी लड़ाई आदिमें क्या काम देगा और कैसा बल लगावेगा। शुभ दिनको शुभलग्नमें हाथीको गेरूसे रंग करके कानमें चामर, शङ्ख आदि सुन्दर गहने पहना देना चाहिये। महावत पहले पहल जब हाथीको चलाने लगता, उसको दोनों ओर हजारों लोगोंको हल्ला मचाना पड़ता है। जो हाथी महावतके आंकुसकी मारसे उत्साहित हो करके मुंह उठाता और घूम फिर करके पैर चलाता, जिसके वेगसे कान फटकारने पर दांत बोलने लगते, अङ्कुशके आघातकी जो कुछ भी पीड़ा अनुभव नहीं करता, जो हाथी लड़ाईसे कभी नहीं भागता या डरसे पीछे पांव नहीं रखता, जिसकी चिग्घाड़से सभी दिशाएं भर जाती और मदजलके स्रावसे जिसका कपोल भर आता, बलशाली हाथी कहलाता है। पैदल सिपाहियों और सवारों का हल्ला सुनने पर रोषसे आंखें लाल लाल निकाल उन पर टकटकी लगा कान खड़े और फैला करके बड़ी सरपटमें विपक्ष दलके प्रति झपटनेवाले हाथीको भी ऋषियोंने प्रभूत बलशाली जैसा सराहा है। जो हाथी सिंह-जैसे जङ्गली जन्तुको देख करके नहीं डरते और जो बनावटी हाथियोंको बातकी बातमें छिन्न भिन्न कर डालते, उत्तम कहलाते हैं। बड़ी बड़ी चिड़ियोंके झुण्डकी आवाज या दावानलसे न डर करके चुप चाप अपनी धुनमें घुमनेवाला मध्यम और भयसे आरोहीको पीठ पर न चढ़ानेवाला और मथा झुकाये रहनेवाला हाथी बिलकुल निकृष्ट होता है। ऋषियोंने उत्कृष्ट हाथीको रम्य, भीम, ध्वज, अधीर, वीर, शूर, अष्टमङ्गल, सुमन्द, सर्वतोभद्र, स्थिर, गम्भीरवेदी और वरारोह—१२ विभागोंमें विभक्त किया है।

जिस हाथीके शरीरकी बनावट बहुत अच्छी और गंठी हुई, दांत सुहावने, शरीर बड़ा, तेजस्वितापूर्ण तथा देखनेमें अतिशय हृष्टपुष्ट रहता, उसीका नाम रम्यक पड़ता है। यह हाथी सम्पत्ति वृद्धि करता है।

अङ्कुश आदिके दारुण प्रभावसे भी वेदना अनुभव न करनेवाला और शुद्ध लक्षणयुक्त हाथी भीम कहलाता है। यह राजाके सब अर्थोंकी सिद्धि करनेवाला है।

जिस हाथीकी सूंड परसे पूंछ तक एक लकीर देख पड़ती, ध्वज कहा जाता है। यह साम्राज्य और दीर्घजीवन देनेवाला है।

दोनों कुम्भ परस्पर समान, देखनेमें बौना, आवर्तविशिष्ट और आवर्तस्थानमें उन्नत रहनेसे कुञ्जरको अधीर कहते हैं। यह हाथी राजाओंका बुरा करता है।

जिस हाथीका पीठसे तोंदी तक आवर्त और देह पुष्ट तथा बलशाली होता, वीर कहा जाता है। इससे राजाओंके अभिलषित विषयकी सिद्धि होती है।

डील डौल बड़ा, देह, पुष्ट, दन्त तथा गण्डदेश मनोहर, खानेसे थका जैसा मालूम पड़नेवाला और बहुत बली हाथी शूर नामसे अभिहित है। इसके रहनेसे राजलक्ष्मी बढ़ती है।

जिसके दोनों दांत, नख तथा पुच्छ श्वेतवर्ण-शरीरमें शफेद धारियां पड़ी हुईं और कुम्भ चक्षु और पुंचिह्न रक्तवर्ण देखा जाता, अष्टमङ्गल कुञ्जर कहलाता है। यह हाथी जिसके घरमें रहता, समस्त पृथिवी-मण्डलका अधीश्वर हो सकता है। इस हाथीके निवास-स्थानका अरिष्ट वा अनीति मिट जाती और वहांसे ४०० कोस तक अमङ्गल देख नहीं पड़ता। कलियुगके राजाओंका पुण्य अंश बहुत ही कम है, इसीसे अब अष्टमङ्गल कुञ्जर दुर्लभ हो गये हैं।

जो हाथी मांस कटने या लहू गिरनेसे भी समझ नहीं सकता क्या हो रहा है अर्थात् उसकी पीड़ाको अनुभव नहीं करता, गम्भीरवेदी कहलाता है। ...में

दन्तद्वय, शुण्ड, कुम्भद्वय, देह, गण्ड वा गण्डस्थल आवर्त (भौंरी) रहनेसे हस्ती शुभलक्षणाक्रान्त रहता है। जिन हाथियोंका गण्डदेश हमेशा मदसे गीला, लोम भरा रहता, तीक्ष्ण अङ्कुशके प्रहारसे भी जिन्हें भय बिग-

कष्ट पड़ता, जो दूसरे हाथोको देखते ही रागसे फूल उठते और जो पानीसे भरे काले बादल-जैसे चिङ्घाड़ा करते, राजाओंके लिये सुखकर होते हैं।

दुष्ट हाथी बीस भागोंमें विभक्त हैं—१ दीन, २ क्षीण, ३ विषम, ४ विरूप, ५ विकल, ६ खर, ७ विमद, ८ धनापक, ९ काक, १० धूम्र ११ जटिल, १२ अजिनी, १३ मण्डली, १४ श्वित्री, १५ हतावर्त, १६ महाभय, १७ राष्ट्रहा, १८ मुषली, १९ भाली और २० नि:सत्व।

जिस हाथीका देह बहुत क्षीण और प्रभाशून्य और दन्त क्षुद्र क्षुद्र तथा अत्यन्त क्षीण रहते, उसे दीन कहते हैं। इस हाथीके घरमें रहनेसे राजा दरिद्र हो जाता है।

क्षीण नामक कुञ्जरका शुण्ड खर्व, पुच्छ वृहत् और निश्वासवेग क्षीण होता है। यह घरमें रहनेसे धन-सम्पत्ति नष्ट होती है

कुम्भ, दन्त, चक्षु, कर्ण वा दोनों पार्श्व परस्पर असमान होनेसे गजको विषय कहा जाता है। यह सर्प-जैसा क्षयकारक है।

विरूप हस्ती स्कन्धदेशसे मस्तक पर्यन्त क्षीण और पश्चाद्भागमें स्थूल होता है। इसके तबेलेमें रहनेसे राज्य छूटता और बल घटता है।

अनेक भागोंसे भी जिसका मद क्षरण देखा नहीं जाता और युद्धके समय जो बल नहीं लगाता, विकल कहलाता है। ऐसे हाथीको छोड़ देना चाहिये।

शरीरमें खरता स्वाभाविक जैसी लगने और दन्त तथा शुण्ड अपेक्षाकृत छोटी मालूम पड़नेसे हाथीको खर कहते हैं। इसको घरमें रखनेसे कुलक्षय होता है।

जिस हाथीको एक बारगी ही मदस्राव नहीं होता या होता भी है तो अकालमें और जो देखनेमें नितान्त कुत्सित तथा अवश लगता, विमद ठहरता है। इसको परित्याग ही कर देना चाहिये।

धनापक हाथी हलका. सारे अङ्ग क्षीण, शुण्ड शिरा तथा उदर अपेक्षाकृत छोटा, व्यग्रभावसे अविश्रान्त निश्वास छोड़नेवाला, चक्षु अनवरत मलसे आच्छन्न, कटि और पुच्छके अग्रभागमें आवर्त वा मण्डलयुक्त और लिङ्ग निविष्ट रहते भी सर्वदा वहिर्गत होता है। हस्ति-योंके मध्य यह अतिशय निकृष्ट है। जो राजा अपनी श्रीवृद्धि और शरीरका आरोग्य अभिलाष करे, इस हाथीको देखनेसे भी दूर रहे।

जिस हस्तीका शङ्खदेश अर्थात् ललाटस्थ अस्थिफलकद्वय भग्न और स्कन्धदेश अतिशय उच्च पड़ता, काक ठहरता है। यह प्रभुका मृत्युकारक है।

दन्तद्वय विषम ललाटास्थिगत शुण्डविरोधी, स्वयं भिन्न वा विदीर्ण एवं शून्यान्तर रहनेसे गजको धूम्र कहा जाता है। इसका फल काकहस्तीके ही समान है।

हाथीको मस्तकके केश कर्कश, रूक्ष और जटा जैसे आकारधारी होने पर जटिल नामसे अभिहित करते हैं। यह धनक्षय करता है।

अजिनी गजका स्कन्ध वा गात्रचर्म भूमिलग्न जैसा मालूम पड़ता है। इसके द्वारा राजाका भूमिक्षय और धनक्षय होता है। श्रीवृद्धिके अभिलाषीको इस जातीय हस्तीका स्पर्श वा दर्शन करना मना है।

जिस हस्तीके देहमें एक, दो या बहुतसे मण्डल रहते और वह मण्डल विरूप वा उन्नत लगते, मण्डली कहते हैं। यह कुलनाशक होता है।

उक्त मण्डल (भौंरी) श्वेतवर्ण लगनेसे हस्तीको श्वित्री कहा जाता है। यह गृहमें रहनेसे धननाश होता है।

हृदय, उदर, त्रिकदेश, पुच्छमूल, गुह्यदेश, लिङ्ग वा पदके आवर्त नष्ट हो जानेसे हस्तीको हतावर्त कहते हैं। यह राजाको लक्ष्मी विनाश करता और उसे योगी, प्रवासी वा उपद्रुत कर डालता है।

जिस हस्तीके गमनकालको गुल्फद्वयका मुहुर्मुहु परस्पर सङ्घर्षण हुआ करता, महाभय नाम पड़ता है। यह हस्ती लक्षणयुक्त और गुणशाली होते भी परित्याग कर देना चाहिये। महाभय हस्ती गृहमें रहने पर राज्य, धन, कुल, सैन्य, मित्र, पत्नी और प्रजा दृष्टि मात्रसे ही नष्ट हो जाती है। यह जहां टिकता, लोग भी दिन दिन मिटने लगते और उस स्थानमें वज्रभय व्याधिभय तथा अग्निभय आ उपस्थित होता है।

अत्यन्त ताड़ित होने पर भी गमन करनेकी इच्छा न रखनेवाला, पृष्ठसे उदर पर्यन्त गोलाकार रेखायुक्त

और चलनेमें अग्रपदके स्थान पर पश्चात् पद डालनेवाला हस्ती राष्ट्रहा कहलाता है। जो राजा अपनी श्रीवृद्धि चाहे, इस हाथीको अपने राज्यसे मार भगाये। राष्ट्रहा हाथी जिस राज्य वा प्रदेशमें वास करता अल्प दिनमें हो मिटता है।

जिस हाथीके कई पद परस्पर असमान, दोनों दन्त विषम पञ्जरोंमें एक, दो या समस्त हो भग्न, जिसका दन्तद्वय झुक पड़ता या नहीं चलता और जिसका कुम्भ-द्वय श्वेतवर्ण लगता, मुषली नाम पड़ता है। यह राजाके पास रहनेसे राज्य, दुर्ग, सैन्य और अमात्योंका विनाश होता है। इस प्रकारका बदजात हाथी एक बारगी हो दूर रखना चाहिये।

कपालका चर्म अतिशय कर्कश जैसा लगनेसे हाथीको भाली कहा जाता है। यह स्वामीका कुल और धनक्षय करता है।

नि:सत्व हाथीका शरीर पुष्ट तथा विशाल, दन्तद्वय सुन्दर, वोर, रणसज्जासे सज्जित और वाहक कर्तृक उत्साहित तथा परिचालित होते भी युद्ध करनेका साहस नहीं करता। हस्तियोंके जितने दोष उल्लिखित हुए हैं, उनमें यह दोष सर्वापेक्षा प्रधान है।

राजाओंको दुष्ट हस्तीका कभी अवलोकन करना न चाहिये। उनको पर राज्यमें पहुंचाते वा नगरसे बहिष्कृत रखते अथवा शुद्ध ब्राह्मण वा विशुद्ध गणकको प्रदान करते हैं। यदि किसी समय दुष्ट हाथी राजाको देख पड़े तो ब्राह्मणको शत गोदान और नगरी अपने आप वा पुत्रको नीराजित करना चाहिये। देवसूक्त मन्त्र द्वारा १० सहस्र होम वा तत्प्रतीकारके निमित्त अग्निमें तिलहोम किया जाता है। ब्राह्मण आदि जाति भेदसे जो चार प्रकारके होते, ब्राह्मण प्रभृति चार जातियोंके पक्षमें वाहन कार्यको यथाक्रम शुभप्रद हैं।

मनुष्यका आयु: निर्णय करनेको जैसे नानाविध लक्षण रहते, हाथीका आयु: ठहरानेके भी भारतीय चिकित्सक कई लक्षण स्थिर करते हैं। यह लक्षण वाह्य और आभ्यन्तर दो भागोंमें बंटे हैं। आभ्यन्तर लक्षण योगी एक मात्र योगबलसे ही अवलोकन करते हैं। इस स्थल पर हम उन्हें उल्लेख करना निष्प्रयोजन समझते हैं। वाह्य लक्षण बारह हैं। यथा हस्तगत, वदनाश्रित विषापस्थ, शिरस्थ, नयनगत, कर्णाश्रित, कण्ठस्थ, गात्रस्थित, चरणस्थित, अपराङ्गस्थित, कान्तिस्थ और सत्वस्थित। फिर इन लक्षणोंको चेत्र भी कहा जाता है। भद्रजातीय हस्तीका पूर्ण आयु: १२०, मन्द्रजातीयका ४० वत्सर और मिश्रजातीयका आयु: अनियत है। पूर्वको जो द्वादश लक्षण उल्लिखित हुए, उनके रहनेसे हाथीका पूर्णायु हुआ करता और हीनतामें उसकी न्यूनता आती है। हस्तगत लक्षणोंके अभावमें १० वत्सर आयु: घट जाता है। इसी प्रकार कोई दो लक्षण न मिलनेसे आयु: २० वर्ष, तीनसे ३० और चारसे ४० वर्ष कमो पड़ती है। ऐसे ही एक एक लक्षणके अभावमें दश दश वर्ष आयु: घटता है। यह लक्षण हाथीके दुष्ट लक्षणोंका दोष भी दूर किया करते हैं। पदलक्षण रहनेसे दन्तदोष विनष्ट होता है। इसी प्रकारसे दन्तलक्षण वाहित्यदोष, वाहित्य लक्षण नेत्रदोष, नेत्रलक्षण तालुदोष और तालुलक्षण स्कन्धदोषको नष्ट करते हैं। ऐसे हो अन्यान्य स्थानोंके लक्षण भी अपरापर दोष निवारण करते हैं।

स्थान, देश, आहार और वातपित्त भेदसे हस्तीके शरीरका विभिन्न वर्ण हुआ करता है। उसमें सिन्दूर, शङ्ख, वैदूर्य, विद्युत्, सुवर्ण वा इन्द्रनील वर्णका हाथी ही अच्छा होता है। अतिशय श्वेतवर्ण, रक्तवर्ण वा शुक तथा मयूरसदृश वर्ण विशिष्ट हस्ती सर्वापेक्षा श्रेष्ठ है। ऐसा हाथी प्राय: देख नहीं पड़ता, प्राच्य वनमें कभी कभी वैसे दो एक हाथी दिखलायो देते हैं। शृङ्गार, अङ्गार, भस्म, अस्थि, पङ्क, मञ्जिष्ठा वा आम्रपुष्प तुल्य वर्णका हस्ती अशुभ है। उससे नाना प्रकार उत्पात होनेकी सम्भावना है।

मनुष्योंको जो व्याधि लगता, हाथियोंको भी हुआ करता है इनको चिकित्सा भी मनुष्यकी भांति ही कर्तव्य है। गरुड़पुराणके मतमें मनुष्यको जिस मात्रामें औषध खिलाते, हाथीको उससे चौगुना पहुंचाते हैं। वनमें हस्तो वा हस्तिनी पीड़ित होनेसे संस्कार वश वह अपने आप औषध अन्वेषण करके खा लेते हैं। हाथीके उदरमें प्राय: क्रमि रहते और वह समझते हैं कि कीड़ोंकी दवा कीचड़ है। क्रमि होने पर वह कर्दमके

गोले बना करके खा जाते हैं। गृहपालित हस्तीकी सुचिकित्साकी व्यवस्था भी प्राचीन चिकित्सकोंने निरूपण की है। पालकाप्य-रचित गजायुर्वेदमें विस्तृत विवरण लिखा गया है। मनुष्यको पीड़ा होने पर जैसे शान्ति स्वस्त्ययन करना पड़ता, हाथीको दुःख मिलने पर वैसा ही विधान रहता है।

प्राचीन ऋषियोंने हस्तियोंका जो लक्षण, शान्ति और औषध आदि निरूपण किया है, संक्षेपमें इस स्थान पर लिखा गया है। अधिक समझनेके लिये पराशर, बृहस्पति-संहिता, युक्तिकल्पतरु, पालकाप्य, अग्निपुराण प्रभृति द्रष्टव्य हैं।

पहले ही लिख चुके हैं, प्राचीन कालको भारतमें कहीं हाथी मिलते थे। वर्तमान समयमें एशिया और अफ्रीका दोनों स्थानोंको हाथीका आकर कहा जा सकता है। इन दोनों स्थानोंमें हाथियोंका आकार और गठन गत विलक्षण भेद है। हाथियोंको देखते ही आकारगत भेद कितना ही समझा जाता है। इनको आभ्यन्तरिक गठनप्रणालीका तारतम्य रहता है।

एशियाका हाथी।

एशियाके बीच सिंहल, भारतवर्ष, ब्रह्मदेश, श्यामदेश, मलय उपद्वीप और पूर्वद्वीपके पहाड़ों तथा जङ्गली भूभागमें हाथी देख पड़ता है। सिंहलमें समुद्रपृष्ठसे ७।८ हजार फुट ऊंचे और दाक्षिणात्यमें ४-५ हजार फुट ऊंचे पहाड़की चोटी पर हाथियोंका झुण्ड घूमा करता है। भारतके दाक्षिणात्यस्थित दक्षिण तथा पश्चिमभाग, पूर्वहिमालयके निकटवर्ती वनमय स्थान, नेपाल, त्रिपुरा और चट्टग्राम स्थानोंमें हाथी पाया जाता है। इन सभी स्थानोंके हाथियोंमें फिर आकारगठनका तारतम्य होता है। १८ या २४ वर्षमें हाथी जितना बढ़ना होता—बढ़ जाता, फिर उससे अधिक और नहीं। हाथीके अगले पैर घेरेसे दोबार नापने पर जितना आता, उसका उच्चत्व बतलाता है। सिंहलका हाथी प्रायः ८ फुट ऊंचा होता, कोई कोई ८ फुटसे भी अधिक पहुंचता है। जापानमें एक बार १२ फुट १ इञ्च ऊंचा हाथी पकड़ा गया था। भारत और सिंहलको देखते दूसरे उपद्वीपोंमें हाथियोंकी संख्या बहुत अधिक है। उन जगहोंमें मनुष्यकी रक्षाका नहीं जैसी होनेसे इन्हें घूमनेमें फिरनेमें कोई अड़चन नहीं पड़ती। वहां हाथियोंकी संख्या इसलिये बढ़ जाती कि स्वच्छन्द-विचरण करनेमें सम्पूर्ण सुविधा आती है। रूसजार 'पीटर दी ग्रेट'के समय ईरानके शाहने सेण्टपीटर्सवर्गको १२ हाथ ऊंचा हस्तिकङ्काल भेजा था। आजतक कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता, क्या उससे भी अधिक ऊंचा हाथी हो सकता है। जन्मके समय हाथीकी ऊंचाई लगभग १॥ हाथ रहती है। किसी अंगरेजने हिन्दुस्तानी हाथीका एक बच्चा ७ वर्ष तक पाला था। उन्होंने उसकी बाढ़ इस तरह बतलायी है—एक वर्षमें ३ फुट १० इञ्च, २ वर्षमें ४ फुट ६ इञ्च, ३ वर्षमें ५ फुट, ४ वर्षमें ५ फुट ५ इञ्च, ५ वर्षमें ५ फुट १० इञ्च, ६ वर्षमें ६ फुट १॥ इञ्च और ७ वर्षमें ६ फुट ४ इञ्च

बहुत लोग विश्वास करते कि ७ फुट ऊंचे हाथी काममें लग सकते हैं। किन्तु ८।१० फुटका हाथी लड़ाईके लिये सिखाया जाता है। टीपू सुलतानके समय कमान सिङ्गनीमें जो हाथी चलाये, कोई ८॥ फुट ऊंचे थे। हाथीकी लम्बाई पूंछसे मुंह तक १५ फुट १२ इञ्च तक देखी गयी है।

हाथीकी पीठमें एक कूबड़ रहता, जो बाल्यकालको बड़ा लगता परन्तु उसकी बाढ़के साथ साथ घटता है। बहुतसे लोग इस कूबड़को देख करके हाथीकी जवानी या बुढ़ापा समझ लेते हैं। सिंहलके हाथीसे बङ्गालका हाथी कितना ही अच्छा, काममें होशियार और लड़ाका होता है। चटगांवके दक्षिण भाग, ब्रह्म

और पेगू राज्यका हाथी सबसे बढ़िया निकलता है। १७०० ई०को जब त्रिपुरा चटगांवमें लगता था, अंगरेजो लड़ाईके हाथी लानेका काम ठेकेदारोंको सौंपा गया। उनको कड़ा आदेश रहा—त्रिपुराके उत्तर प्रान्तका हाथी सिवा सामरिक विभागके दूसरी जगह जाने न पावे। इससे समझ पड़ता है कि उष्णप्रदेशका जलवायु हाथीके बलविधानको बहुत उपयोगी ठहरता और वहांका हाथी बड़ा, बढ़िया और कामकाजी निकलता है। मलवार और कुर्ग राज्यका हाथी सिंहलके हाथीसे भी हलका होता है।

सिंहलके जङ्गलमें तीसरे पहर ४ बजे झुण्डके झुण्ड हाथी निकल पड़ते और निकटवर्ती स्थानोंमें घूम फिर करके ७॥ या ८ बजे घने जङ्गलमें जा पहुंचते हैं। यह जितनी देर बाहर रहते, आक्रमणके डरसे चौंका करते हैं। एक बार वनमें घुस जानेपर फिर उनको कोई भी खटका नहीं।

हथनियां १६ वर्षकी अवस्थामें सन्तान धारण करनेके उपयुक्त होती हैं। इसका परमायु १२० वर्ष है। बेकर साहब कहते कि हाथी १५० वर्ष तक जी सकते हैं। सिंहलमें ३०० हाथियोंके बीच एक हाथीके दांत देख पड़ते हैं। वहां छोटे छोटे हाथी हो दन्ती होते हैं। इनके दलमें प्रायः ८ हाथी रहते, कभी कभी पचाससे भी तक देख पड़ते हैं। प्रत्येक दलमें हाथियोंसे हथनियोंकी संख्या अधिक लगती है। कितनी ही बार हाथी अकेले भी घूमा करता है। हथनीसे हाथी बड़ा, डरावना और निर्दय होता है।

ब्रह्म और श्याममें श्वेत हाथी मिलता, जो देखनेमें बिलकुल सफेद अलवान जैसा लगता है। श्यामवासियोंको विश्वास है कि सफेद हाथी पालनेसे राजाकी आयुवृद्धि और राज्यकी उन्नति होती है। इसीसे श्याम राज्यमें सफेद हाथी पूजा जाता है। ब्रह्म राज्यमें भी श्वेत हस्तीकी पूजा करते हैं। ब्रह्म और श्यामराजका अन्यतम उपाधि श्वेतहस्तिराज है। इन देशोंके अधिवासी भक्तिभावसे सफेद हाथीके गलेमें माला पहना, चन्दन चढ़ा नानाविध उपचारोंसे उसकी पूजा करते हैं। इन देशोंका सफेद हाथी वास्तविक राजाओंकी है। उसको सोनेकी सीकरमें बांधते और राजा भी चढ़ नहीं सकते। यह बहुत ही अलभ्य है। १८०६ ई०को श्यामराजने एक श्वेतहस्ती पाया था। वह १० फुट ऊंचा रहा, मत्था अत्यन्त सुन्दर लगता था। पूर्व और मध्य अफ्रीकाके इमारिया स्थानमें भी श्वेत हस्तीका यथेष्ट सम्मान और पूजा होती है। पहले भारतके कान्यकुब्जमें भी श्वेत हस्तीका समादर रहा। ११९४ ई०को कान्यकुब्जाधिपति जयचन्द्र जब मुहम्मद गोरीसे हारे, उनका सफेद हाथी शत्रुके हाथ लगा।

पेगू प्रान्तमें जो हाथी मिलता, अफ्रीकाके हाथीसे किसी अंशमें निकृष्ट देख नहीं पड़ता। अफ्रीकाका हाथी भी बलशाली और प्रियदर्शन होता है। उसकी ऊंचाई १४ फुट तक लग जाती है। सेनापति मेजर डनहोमने मध्य अफ्रीकामें १२ फुट ७ इञ्च तक ऊंचे हाथी देखे हैं।

अफरीकाका हाथी।

एशियाका हाथी अफ्रीकाके हाथीसे कितना ही अच्छा होता है किन्तु उसके दोनों कान इसके कानोंसे बहुत बड़े पड़ते हैं। फिर उसके पिछले पैरोंमें तीन हा तीन नख आया करते हैं। एशियाकी तरह अफ्रीकामें हाथी नहीं मिलते, केवल सिनिगालसे उत्तमाशा अन्तरीप तक ही इधर उधर देख पड़ते हैं। कितनेही अफ्रीका-वासियोंको हाथीका मांस खानेमें अच्छा लगता है। पुराने रूमी हाथीके सूंड़की बहुत ही अच्छा खाना समझते थे। पहले अफ्रीका देशीय कुञ्जर मनुष्यके वशमें नहीं आता, अब कितना ही हिल जाता है। वहां हाथीदांतसे बहुतसे काष्ठद्रव्य बनते हैं, प्रतिवर्ष

विलायतको वह ढेरका ढेर भेजा भी जाता है। ग्रेफोल्ड शहरको कोई ४०। ५० हजार रुपयेका हाथी दांत पहुंचाते और वहां लगभग ५०० लोग उसके कामकाजमें लगे रहते हैं। हमारे बम्बई नगरमें भी बहुतसा हाथी-दांत अफरीकासे आता है। गजदन्त देखो।

हस्तिनीका स्तन और गर्भ मानवी जैसा और जिह्वा शुकपक्षीकी जीभ जैसी गोल गोल होती है। हाथीकी तरह हथनीकी भी जातियां बंटी हैं। फिर हाथियोंके जैसे शुभ अशुभ लक्षण लिखे हैं, हथनीके भी समझ लेना चाहिये। दूसरे पशुओंको देखते हथनीके प्यार और दया बहुत ज्यादा रहती, सन्तानवात्सल्यकी भी कोई कमी नहीं पड़ती। एक भी बच्चा मारा जाने, हिराने या प्राण गंवानेसे हथनीके शोकका ठिकाना नहीं लगता, वह शोक और जलनसे व्याकुल हो करके खाना पीना छोड़ देती है। किन्तु यही अनिर्वचनीय पशुलीला है, कि २१४ दिनके लिये उसको अलग हटा देने पर फिर अपने बच्चेको हथनी पहचान नहीं सकती; उसके देख देख करके चिल्लाते भी कोई परवा नहीं करती। हथनियां पूरी बाढ़ आ जाने पर ७ हाथ ऊंची होती हैं। हाथीसे हथनीमें बुद्धिकौशल भी अधिक मिलता है।

हथनियां लगभग १८ महीने गर्भधारण करती हैं। किसी किसीके कथनानुसार २० मासके पीछे भी कई दिन तक उनके हमल रहता है। ऋतुकालको १२ दिन लहू टपकता, फिर हस्तिसङ्गमसे गर्भधारण होता है। सङ्गमलिप्साके समय हथनी बार बार चांक उठती और हमेशा पानी या धूलि अपने ऊपर उछाला करती है। उस समय इसके कान और पूंछ खड़ा हो जाती, एक पलके लिये भी हाथीका साथ नहीं छोड़ती। फिर वह हाथीके देहसे अपना देह रगड़ती, मत्था झुका करके दांतोंके नीचे रखती और मूत्र तथा मलका गन्ध सूंघनेमें प्रसन्न रहती हैं। हाथी वन्यपशु होते भी नियम प्रतिपालन करना जानता है। स्वेच्छाचारी लघुप्रवृत्ति मानवकी भांति यह जब तब सङ्गमका [illegible] नहीं रखते, ऋतुकालको ही बहुत होते हैं। ऋतुकालको छोड़ करके जब हथनी सङ्गम करना नहीं चाहती, किसी दुष्ट हाथीके बलपूर्वक उसको आक्रमण करनेसे [illegible] स्वरमें चिल्लाने लगती है। इस चीत्कारको सुन करके दूसरी दूसरी हथनियां उसके पास पहुंच जातीं और हाथीसे उसको छुड़ा लाती हैं। किसी प्रकारका अन्याय आचरण होने नहीं पाता और उस दुष्ट हाथीको कितना ही तर्जन गर्जन भी देखाया जाता है।

हाथीका वीर्य ३ महीने हथनीके गर्भमें पड़ा रहता, ५वें महीने जमा करता, ७वें मास कड़ा पड़ता और ८वें महीने पुष्ट होता है। फिर एकादश मासको जीवदेहका आभास, द्वादश मासको शिरा, अस्थि, नख तथा मुख और त्रयोदश मासको स्त्री वा पुंचिह्नका आविर्भाव लगता है। १५वें महीने गर्भस्थ जीव इधर उधर झुकता और १६वें महीने सब अङ्ग पूरा पड़ता है। १७वें महीने अकालप्रसवका सम्भावना रहता है १८वें महीने हाथीका बच्चा निकलता है। किस किसी प्राणितत्त्वके मतमें पहले ही मास रेतः जमता और कड़ा पड़ता है दूसरे महीने आंख, कान, नाक, मुंह, और जीभ बनती है। तीसरे महीने हाथ पांव आदि अङ्गोंका आविर्भाव, चौथे महीने देहप्राप्ति और पांचवें महीने गर्भस्राव होनेको सम्भावना है छठें और सातवें महीने ज्ञान आता है। आठवें महीने हमल गिर सकता और नवें, दशवें तथा ग्यारहवें महीने गर्भस्थ जीव पूर्णावयव हो करके बारहवें महीने निकल पड़ता है।

हस्तीका रेतोभाग अधिक होनेसे पुंशावक, हस्तिनीका रेतोभाग अधिक होने पर स्त्रीशावक और दोनोंका रेतोभाग बराबर रहनेसे क्लीव उपजता है। साधारणतः पुंशिशु, गर्भका दक्षिण ओर, स्त्री शिशु वायीं तर्फ और क्लीव दोनोंके बीचमें रहता है। हथनी प्रायः एक ही बच्चा देती है। कभी कभी यमज भी प्रसूत हो जाता है।

हथनीका दूध मीठा, बलवीर्यवर्धक, भारी, कसैला, [illegible] स्थैर्यकारी, ठण्डा और दृष्टि बढ़ानेवाला है। [illegible]का दही कसैला, हलका, पकाने पर गर्म, शूलनाशक, रुचिकर, दीप्तिप्रद, कफरोगघ्न, वीर्यवर्धक और बलप्रद होता है।

हथनीका मक्खन—या नैनूं कसैली, ठण्ढी, हलकी, तीती, विष्टम्भी और पित्त, कफ तथा कृमिनाशक है।

हाथी अपनी सर्वशक्तिशाली सूंडसे ही प्रायः सब काम चलाते हैं। वह खाना पीना भी सूंड हीसे किया

करते हैं। किन्तु हाथीका बच्चा सूंडसे दूध नहीं पीता, नीचेके होंठसे यह काम लेता है। वह दूध पीनेके समय सूंडसे स्तन दबाता, जिससे सहजमें ही स्तन्य निकल आता है। हथनी दूध पीनेके लिये लेट नहीं लगाती और कुछ ऊंची होनेसे बच्चेको दूध पीनेमें कष्ट पहुंचाती है। उस अवस्थामें इसे कभी कभी झुक करके दूध पिलाना पड़ता है। घरको पालू हथनी जहां बंधती, महावत उसके नीचे ६।७ इञ्च ऊंचा मट्टीका एक चबूतरा बना देता और हाथीका बच्चा उस पर खड़ा हो करके अनायास दूध पी लेता है। हस्तिशावक ५ वर्ष तक स्तनदुग्ध पिया करता; फिर घास पात खाने लगता है। हाथीके दूध मुंहे बच्चेको बाल, दशवर्षवालेको पुट, बीस साल्लाको विक्का और तीस वर्षवालेको कालवा कहते हैं। कभी कभी अपने बच्चेको जन्मग्रहणके पीछे हथनियां तीन चार दिन तक अपनी पीठ या दांतों पर रखे रहती हैं। ३ वर्षके बच्चेको दांत निकलते हैं। हथनीको गर्भावस्थामें पीड़ित अथवा प्रसव-वेदना उपस्थित होने पर हाथी औषध खिलाया करते हैं। उस समय हस्तियूथ इसको घेरे खड़ा रहता है। यदि हाथीका बच्चा पकड़ जाता, हाथी किसी झाड़ीमें जा छिपते और पीछे उसे ढूंढ करके निकालते और शिकारीको मार डालते हैं। कभी कभी हथनी अकेले ही बच्चेको उद्धार करती है।

साधारणतः ६० वर्षमें हाथी पूर्णावयव होता है। फिर ३० वर्षमें हथनीके भी सब अङ्ग भर आते हैं। पूर्ण वयसमें गजका मत्था दो टकड़े किये हुए एक गोले जैसा देख पड़ता है। दोनों कान सूप जैसे लगते और सूंड, दांत, लिङ्ग तथा पूंछ भूतलस्पर्शी होती है। सामनेके पांवोंमें पांच पांच और पिछलोंमें चार चार सब मिला करके १८ नख निकलते हैं। [illegible]

मनुष्यके असाधारण बुद्धिकौशलसे महाकाय [illegible] मातङ्गराजको भी बांधना और दिन दिन उसके अधीन हो करके तथा उसका आदेश प्रतिपालन करके सामान्य पशुकी भांति खड़ा रहना पड़ता है। पुराने समयसे ही गज पकड़नेकी चाल है। किन्तु प्राचीन प्राणितत्त्वविदोंने उसका कोई विशेष उपाय नहीं लिखा अथवा उनके लिपिबद्ध कर जाते भी अब वह दुष्प्राप्य है। प्राचीन अकबरोमें गज पकड़नेकी—खेदा, चोरखेदा, गाद और वार—चार रीतियां कही हैं।

खेदा—शिकारियोंमें कुछ घोड़े पर चढ़ और कुछ पैदल जङ्गलमें घुसते हैं। ग्रीष्मऋतु ही गज पकड़नेका ठीक समय है। जहां गजोंका दल स्वाधीन भावसे घूमा करता शिकारी जाकर ढोल और भोंपू बजाते हैं। इसके शब्दसे बड़ा गज डर और घबरा करके चारों ओर दौड़ता और थोड़ी देर बाद थक करके शान्तिसुखकी आशासे वृक्षको छायामें जा करके पहुंचता है। उस समय पक्का शिकारी पेड़की छाल या सनका रस्सी गजके गले या पैरमें बांध देता है। फिर पालू और साखे गजके बहलावेसे जङ्गली गज मनुष्यके वशमें आ जाता है।

चोरखेदा—जहां जङ्गली हाथियोंका बड़ा अड्डा रहता, शिकारी एक पालू हथिनी ले करके पहुंचते हैं। महावत इसी पालू हथिनी पर मुर्दे जैसा लेट जाता है। हाथी हथिनीको देख करके अपने आप लड़ने लगते हैं। इसी बीच महावत हाथीके पांवमें रस्सी बांध देता है। श्यामदेशमें इसी प्रथासे हाथी पकड़े जाते हैं।

गाद—साधारणतः जहां हाथियोंका झुण्ड घूमता, एक गड्ढा खोद रखते हैं। वह गड्ढा घाससे भरा रहता है। शिकारी थोड़ी दूर पर झाड़के आड़में खड़े रहते हैं। हाथियोंका झुण्ड वहां पहुंचने पर शिकारी हल्ला मचाते हैं। इस भीषण शब्दको सुन करके हाथी चारों ओर दौड़ने लगते, धीरे धीरे एक एक करके उसी गड्ढेमें जा गिरते और ऊंचे स्वरसे चीत्कार करते हैं। किन्तु किसी प्रकार भी वह गड्ढेसे निकल नहीं सकते, बहुत दिन उसी अवस्थामें पड़े रहते हैं। किसी प्रकारका खाद्य न मिलनेसे उन्हें मनुष्यके वशीभूत होना पड़ता है।

वार—[illegible] हाथियोंका दल विश्राम करता, शिकारी एक बड़ा गड्ढा खोद देते हैं। इसी गड्ढेमें एक ओरको सीढ़ रहती और उसके मुंह पर एक दरवाजा लगाया जाता है। यह दरवाजा रस्सीसे [illegible] है। दरवाजेके पास ही हाथियोंका खाद्य भी ढेरका ढेर रखते हैं। हाथी आकरके यह खाद्य खाने लगते और लोभमें पड़ करके दरवाजेके भीतर घुसते हैं। [illegible] शिकारियोंके

रस्सी काट डालनेसे दरवाजा बन्द हो जाता है। फिर हाथियोंका झुण्ड जोर जोरसे चीखता और दरवाजा तोड़ करके भागनेकी चेष्टा करता है। शिकारी भी उस समय बाजा बजाते और आग जलाते हैं। हाथी किंकर्तव्य-विमूढ़ हो करके थोड़ा देर दौड़ धूप कर थक करके बैठ रहते हैं। फिर हथिनां छोड़ देते हैं। [illegible] हड्डे हथिनीके मोहमें पड़ करके हाथी अपनी अवस्था भूल जाते हैं। इसी सुयोगमें शिकारी उन्हें पकड़ लेते हैं।

मुगल-सम्राट् अकबरके समय इन्हीं चार प्रथाओंसे हाथी पकड़े जाते थे। अकबरके समय और एक नया कौशल उद्भावित हुआ। जङ्गली हाथियोंको तीन ओरसे महावत घेर लेते, एक ओर खुली रख करके बहुतसी हथिनियां इकट्ठी कर देते थे। इन हथिनियां-की चारों ओरसे आ करके जङ्गली हाथी घेर करके खड़े हो जाते थे। हथिनियां फिर किसी निर्दिष्ट स्थानको चली जातीं, उनके प्रेममें फंस करके हाथी भी वहीं पहुंच रहते थे। फिर उन्हें पकड़ते थे। आजकल भी हाथी पकड़नेके नाना कौशल प्रचलित हैं। भारतके बहुतसे स्थानोंमें हाथी पकड़े जाते हैं। १८६८ ई०को मन्द्राज गवर्नमेण्टने हथिनी संग्रह करना आरम्भ किया था। इस कार्यमें नेपाल सरकारको बड़ा आय हुआ। आजकल सिंहल और आसाम देशमें भी हाथी पकड़े जाते हैं। सिंहलके हाथी बहुत ही दुर्धर्ष हैं। वह जब तब बोये हुए खेतमें पहुंच अनाज बिगाड़ डालते हैं। इसीसे सिंहल गवर्नमेंटने हाथी मारनेके लिये पुरस्कारकी व्यवस्था की है।

सिंहलमें हाथी पकड़नेका कौशल—हाथियोंका झुण्ड बड़े मैदानके बीचमें रहनेसे १०।१५ कोसके घेरेको चारों ओर आग जलानी पड़ती है। यह आलोक दूरस्थ होना उचित नहीं। इसके बीचमें हजारों आदमी रखने पड़ते हैं। २॥ हाथ ऊंचे खूंटे पर यह रोशनी रहती है। खूंटे एक दूसरेसे १२ हाथ दूर रखे जाते हैं। धीरे धीरे यह खूंटे आगेको सरकाते चलते हैं। फिर इन्हीं खूंटों पर थोड़ी गीली मट्टी लगा करके पत्तियां जला करके रखते हैं। आलोक पर नारियलकी पत्तीका ढक्कन रहता है। पानी बरसने पर रोशनी सहजमें नहीं बुझती। रोशनी जितनी ही सङ्कीर्ण पड़ती जाती, हाथी भी उसीके साथ साथ तङ्ग जगहमें जा पहुंचते हैं। जब हाथी घेरेकी जगहमें जा करके पहुंचते, घेरेकी एक ओर मोटी लकड़ीके बेड़से एक अप्रशस्त स्थान बनाते हैं। इस राहसे एक हाथी बड़े कष्टमें बाहर निकल सकता है। इसी प्रकार मण्डलाकार स्थानको चारों ओर मोटी लकड़ीके बेड़से घास फूस लगा ढाक देते हैं। हाथी उसे जङ्गल-जैसा समझते और तोड़ने फोड़नेकी चेष्टा नहीं करते। वह जिस घेरेमें फांस जाते, उसीसे लगा हुआ प्राय: अर्धाकार एक दूसरा छोटासा घेरा बनाते हैं। उसका लम्बाई ६० हाथ और चौड़ाई १३ हाथसे ज्यादा नहीं होती। उसके बीचमें लगभग ३ हाथ गहरा एक गड्ढा खोदते हैं। हाथी आगके डरसे घबरा करके बड़े घेरेसे उसी राह एक एक करके छोटे घेरेमें घुसते हैं। फिर उनमें हिलने डुलनेकी शक्ति नहीं रहती, इस घेरेका दरवाजा रुंधा होता है। रोशनी जलानेवाले भाग जाते हैं। हाथी जब डरसे निश्चल और निष्पन्द होते, घेरेके पास जा करके सङ्कीर्ण पथका द्वार खोल देते और हाथी धीरे धीरे उसके भीतरकी राह लेते हैं। किसीके भागने लगने पर शिकारी मुंह पर भाला मारते हैं। इस लिये कोई हाथी पलायन कर नहीं सकता। इसी समय शिकारी हाथीका पांव बांधते हैं। बेड़के पास दो पालू हाथी बंधे रहते हैं। शिकारी घिरे हाथीके गलेमें रस्सी डाल पालू हाथियोंके शरीरमें बांध बेड़ेका दरवाजा खोलते हैं। फिर फंसा हुआ हाथी पालू हाथियोंमें जा मिलता है। धीरे धीरे शिकारी पालू हाथी पर चढ़ जङ्गलीको जकड़ करके बांध लेते हैं। जङ्गली हाथी बंध जाने पर दो बड़े पेड़ोंके बीचमें ले जा करके कस करके बांधा जाता है। उसके खानेको पेड़ पत्ता और पीनेको पानी रख देते हैं। पालू हाथियोंके पाससे छूट जाने पर जङ्गली हाथी मतवाला होता, चीख चीख करके साध्यानुसार स्वाधीनता प्राप्त करनेकी चेष्टा करता, आहार करनेसे सर्व प्रकार अलग रहता; किन्तु दो तीन मास पीछे भूख प्याससे घबरा करके खाने पीने लगता है। शिकारी पालू हाथियोंके सहारे धीरे धीरे उसे वशीभूत कर लेते

हैं। आजकल दाक्षिणात्यके कोयम्बतूर और बङ्गालके ढाका अञ्चलमें हाथी पकड़नेका बड़ा अड्डा है। महिसुर राज्यमें भी हाथी पकड़े जाते हैं।

बोरनिओ द्वीपके उत्तरपूर्व अञ्चलमें भी जङ्गली हाथी देख पड़ते हैं! किनाबटानगान नदीके किनारे हाथियोंका दल घूमा करता है। यह हाथी भी खड़े खेतोंमें घुस अनाज बिगाड़ डालते हैं। मशाल जला करके इनके सामने रखने पर यह उसका तीव्र आलोक सह न सकनेसे जङ्गलको भाग जाते हैं। वहां हाथी पकड़नेका कौशल है। शिकारी अंधेरी रातको एक छोटी पैनी बरछी ले करके हाथीके बल चलते चलते हाथियोंके झुण्डमें घुस जाते और अति कौशलसे वही बरछी किसी बड़े हाथीके पेटमें घुसेड़ आते हैं। हाथी इस दारुण आघातसे चीत्कार करने लगता है। उसका चीत्कार सुन करके दूसरे हाथी जङ्गलको चल देते हैं। दूसरे दिन सवेरे शिकारी लहूके चिह्न देख आहत हाथीको ढूंढ़ते हैं। थोड़ी दूर जा करके देखते कि वह बहुत ही दुर्बल हो गया है। शिकारी फिर एकबार बरछी मारते और हाथीको अपने वशमें लाते हैं।

भारत-महासागरके सुमात्रा द्वीपमें भी हाथी मिलता है। इसके पञ्जरमें २० हड्डियां होती हैं। फिर भारतीय हाथीके दांतोंकी मेंड़से इसके मेंड़ चौड़ी पड़ती और बुद्धि भी भारतीय हस्तीकी अपेक्षा बहुत अधिक रहती है।

हाथीका स्वर तीन प्रकार होता है। उसको सुन करके बहुतसी अवस्थाएं समझी जा सकती हैं। हाथीके सूंड उठा करके तुरही-जैसा शब्द करने पर समझते कि उसके मनमें बड़ा ही आह्लाद हुआ है। केवल मुंहसे जो अनुदात्त शब्द निकलता, उससे हाथीका कोई अभाव हुआ समझ पड़ता है। हाथीके किसी कारण वश क्रोधित होने पर कण्ठदेशसे आनेवाला भीषण शब्द क्रोधज्ञापक होता है।

पहले एक-एक हाथीका मूल्य १००) से १०००००) रु० तक था। आईन अकबरीमें देखते ५०० घोड़ों और १ हाथीकी कीमत बराबर होती है। परन्तु आजकल अच्छा हाथी [illegible] फिर भी अच्छा हाथी ५०००) से १००००) रु० तक बिकता है। पहले हाथी भारतीय राजाओंको युद्धमें सहायता पहुंचाता था। आजकल केवल ठाटबाटका देखावा मात्र है। मनुष्यकी भांति सीखा हुआ हाथी गानेका स्वर ताल स्मरण रख सकता और ताल ताल पर नाच सकता है। वह धनुष पर बाण चढ़ा करके चला सकता और कोई कोई शायद बन्दूक भी छोड़ सकता है।

आजकल हाथी पर चढ़ करके लड़नेकी रीति नहीं है। फिर भी दुर्ग आदि आक्रमण करनेको हाथी पर तोप चढ़ा गोले छोड़ा करते हैं। अब हाथी युद्धकालको बोझ ढोनेमें व्यवहृत होते हैं। हाथी २२॥ मनसे ३० मन तक भार वहन कर सकते हैं। वह बोझ लाद करके घण्टेमें १॥ कोस या दिन भरमें ८।१० कोस चल सकते हैं। हाथी २॥ कोस घण्टेसे अधिक नहीं जा सकता है।

हाथीका आहार समस्त गृहपालित पशुओंकी अपेक्षा अधिक है। साधारणत: वह १ मन चावल खा और ३॥ मन पानी पी सकता है। मुगल-सम्राट् अकबरने हाथीको सात भागोंमें बांटा है—१ मस्त, २ [illegible]गर, ३ सादा, ४ मंझोला, ५ कड़ा, ६ कनडुब्बा और ७ मोकाल। इन ७ भागोंमें प्रत्येक ३ उपविभागोंमें विभक्त है—बड़ा, मंझोला और छोटा। मोकाल १० प्रकारका होता है।

बड़ा मस्त हाथी २ मन ४ सेर आहार कर सकता है। इसी प्रकार मंझोलेकी खुराक २ मन १३ सेर और छोटेकी २ मन १४ सेर है।

बड़ा शेरगर २ मन ८ सेर, मंझो[illegible] २ मन ४ सेर, छोटा १ मन ३० सेर, बड़ा सादा १ मन ३४ सेर, मंझोला १ मन २३ सेर, छोटा १ मन १४ सेर, बड़ा मंझोला १ मन २२ सेर, मंझोला १ मन १० सेर, छोटा १ मन १८ सेर, बड़ा कड़ा १ मन १५ सेर, मंझोला १ मन ८ सेर, छोटा १ मन ४ सेर, बड़ा कनडुब्बा १ मन, मंझोला २४ सेर, छोटा २२ सेर, बड़ा मोकाल २६ सेर, मंझोला २४ सेर तीसरा २२ सेर, चौथा २० सेर, पांचवां १८ सेर, छठां १६ सेर, सातवां १४ सेर, आठवां १२ सेर, [illegible]

क्रमानुसार हस्तिनीके आहारको भी व्यवस्था थी। सबसे बड़ी हथिनीको १ मन २२ सेर और सबसे छोटीको ६ सेर मात्र आहार मिलता था। गज पर चढ़ करके बहुत दूर घूमनेमें बहुतसे लोग उसको आटेकी रोटी खिलाते हैं।

गज खानेके लिये बड़े बड़े पेड़ोंको डालियां तोड़ डालते हैं। फिर धीरे धीरे पत्तो और लकड़ोको छोड़ करके वह केवल छाल ही खाते हैं। कैथा खानेमें गज बहुत ही मजबूत होता है। वह समूचा कैथा मुहमें डाल करके निगल जाता है। मलत्याग करने पर देखा जाता कि कैथा जैसेका तैसा पड़ा है, परन्तु उसमें गूदेका कहीं नाम भी नहीं। सन्ध्या सवेरे हाथीको नहलाना पड़ता है। घूमनेको निकलनेसे पहले गजको मत्थे कान और पैरमें मक्खन लगाते, नहीं तो धूपसे यह सभी स्थान सहजमें हो फट जाते हैं। गज मालिक और महावतके वशमें रहता है। वह महावतके आंख उठाने और उंगली चलाने पर असाध्य साधन किया करता है। पशु होते भी गजमें दया होती और उपकार करने पर वह कृतज्ञता प्रकाश करता है।

जङ्गली गजको अनेक बार सिंह व्याघ्र प्रभृति वन्य जन्तुओंसे लड़ना पड़ता और कभी कभी गजोंमें भी परस्पर युद्ध होने लगता है। सम्राट् अकबरके समय बहुतसे हाथी लड़नेको प्रस्तुत और उनके सिखानेको वेतनभोगी लोग भी नियुक्त रहते थे। आजकल हाथियोंको लड़ाई बहुत कम देखनेमें आती है। कुछ दिन पहले बड़ोदेमें प्रति वर्ष हाथी लड़ाये जाते थे। जो हाथी युद्ध करते, उन्हें एक प्रकारका मादक द्रव्य खिलाते हैं। इससे हाथी उत्तेजित हो जाते हैं। फिर २ मास तक उन्हें मक्खन और चीनी खिलानी पड़ती है। इसी प्रकारके दो मतवाले हाथी लड़नेको लाये जाते और लोग उनकी हार जीत पर बाजी लगाते हैं। हस्तियुद्धको रङ्गभूमि ६०० हाथ लम्बी और ४०० हाथ चौड़ी होती है। दोनों हाथी जञ्जीरसे बांध करके रखे जाते हैं। युद्धका एक सङ्केत है। उस सङ्केतके होते ही दर्शक लोग अपने अपने स्थान पर हट करके खड़े हो जाते हैं। फिर दोनों हाथियोंको जञ्जीर खोल देते हैं। हाथी तर्जन गर्जन करके अखाड़ेके बीचमें पहुंचते, एक दूसरेके सामने आ करके मत्थेसे मत्था रगड़ते और सूंडसे सूंड लपेट करके लड़ने लगते हैं। इसी प्रकार बहुत देर तक लड़ने पीछे जो हाथी हारता युद्धक्षेत्रसे हटा दिया जाता है। फिर जयी हाथी रङ्गस्थलमें खड़ा हो करके आस्फालन किया करता है। उस समय महावत उतर पड़ता और दूसरे दूसरे लोग आ करके होशियारीसे उसको बांध लेते हैं। खेलाड़ियोंको यथायोग्य पुरस्कार मिलता है। हाथीसे आदमीको भी लड़ाई होती है।

हाथी शिकारका बड़ा सहारा है। प्राचीन कालको हाथी पर चढ़ करके राजा लोग शिकार खेलते थे। आजकल भी अंगरेज राजपुरुष प्रायः हाथी पर चढ़ करके शिकार करने जाया करते हैं। अशिक्षित हाथी ले करके शिकारमें जानेसे विपद् पड़नेकी सम्भावना है। शिक्षित हाथी पहाड़ पर चढ़ और आवश्यक होने पर उसकी घाटीमें भी उतर निकलता है।

भूतत्त्वविदोंने पृथ्वीके निम्नतरमें प्रस्तरीभूत हस्तिकङ्काल पाया है। उससे समझ पड़ता है कि बहुत पुराने समयको दिग्गण्ड हस्ती विद्यमान थे। समुद्रमें भी एक जलचर हाथी देख पड़ता है। उसका नाम जलहस्ती है।
जलहस्ती देखो।

२ स्वर्गके इन्द्रक विमानोंमेंसे २८वां विमान।

गज़इलाही (फा० पु०) ४१ अंगुलका गज। इसे अकबरी गज कहते हैं।

गजक (फा० पु०) १ खाद्य पदार्थ, जो शराब पीनेके बाद [illegible]

२ तिलपपड़ी। ३ जलपान।

गजकच्छप—गजकच्छपीय युद्ध देखो।

गजकच्छपीययुद्ध (सं० क्ली०) गजकच्छपीयं गजकच्छप सम्बन्धि युद्धम्, कर्मधा०। गज और कच्छपका युद्ध, हाथी और कछुवेकी लड़ाई। इसका उपाख्यान यों लिखा है—विभावसु नामक कोई महर्षि रहे। इनके छोटे भाईका नाम सुप्रतीक था। सुप्रतीकको विभावसुके साथ एकत्र रहना अच्छा न लगता था, इसीसे समय मिलते ही वह विभावसुसे पैतृक धन बांटनेकी बात उठाते थे। विभावसुका स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा था। वह एकाएक बिगड़ पड़ते थे। एक दिन उन्होंने सुप्रतीकको पुकार

करके कहा—'देखो सुप्रतीक! हम तुम्हारे व्यवहारसे बहुत असन्तुष्ट हो गये हैं। तुमने अन्याय रूपसे बाप-का धन टा लेना चाहा है, इस लिये तुम गजयोनिको प्राप्त होगे।' निर्दोष सुप्रतीक यह सुनते ही अवाक् रह गये और सोच समझ करके कहने लगे—'मेरा कोई दोष न होते भी आपने दारुण शाप दिया है, इस लिये आप-को भी कछुवा हो करके जन्म लेना पड़ेगा।' उस समयके ब्राह्मणोंकी बात कभी मिथ्या जानेवाली न थी। सुतरां एक भाईने हाथी और दूसरेने कछुवा बन करके जन्मग्रहण किया। विभावसुको कच्छप हो करके गहरे पानीमें रहना पड़ा। सुप्रतीक हाथी हो करके भी थो' दिनों अपने घरमें ही रह सके और इसी अव-सर पर पैतृक धनका बहुतसा भाग संग्रह करके उन्होंने सूंडके बीचमें रख लिया। इनका जन्मान्तर तो हो गया, परन्तु विद्वेष भाव कुछ भी न घटा। दोनों एक दूसरेको दबानेकी चेष्टामें लगे रहे। यह बतला देना उचित है कि हाथीका डीलडौल ६ योजन ऊंचा और १२ योजन लम्बा और कछुवा ३ योजन ऊंचा तथा परिधि-में १० योजन था। कछुवा एक बड़े तलावमें रहता था। भाग्यवश किसी दिन छोटा भाई सरोवरमें पानी पीने पहुंचा। बड़े भाई कछुवेने समय पा करके उसको पकड़ा था। हाथी बलवान् रहा और कछुवा भी उससे कुछ अधिक निर्बल न था। दोनोंकी घमासान लड़ाई होने लगी। उसे देख सुन करके सभी चकरा गये। परन्तु लड़ाईको कोई रोक न सका। किसी दिन पक्षिराज गरुड़ने भूखसे बहुत हो घबरा करके पितासे खानेको मांगा था। उनके पिता कश्यपने कहा कि वह जा करके युध्यमान गजकच्छप दोनोंको खा डालते। गरुड़ पिताके आदेशसे दोनोंको पंजेमें दबा ले उड़े। वह मन ही मन सोचने लगे, कहां बैठ करके हाथी कछुवेको खाते। अन्तको किसी वटवृक्ष पर बैठ करके वह उन्हें खाने लगे। इससे गरुड़को और भी विपद्ग्रस्त होना पड़ा। पेड़ टूटा था। पक्षिराज गरुड़ने देखा गिर पड़नेसे तपस्यानिरत वालखिल्य मुनियो। इसीसे उन्हें चोंचमें वह टूटी शाखा उड़ना पड़ा। उन्होंने बहुत दूर जा जनमानवशून्य तुषारमय पर्वत पर बैठ करके गजकच्छपको उदरसात् किया था। गज-कच्छपके युद्ध-जैसा भयङ्कर युद्ध सम्भवतः दूसरा नहीं हुआ। (भारत १।२९—३० अ०)

हाथी कछुवेकी लड़ाई झूठ हो या सच, परन्तु भूतत्त्वविद्याके साहाय्यसे इसका प्रमाण मिलता कि अति पूर्वकालको कच्छप भी भारतीय हस्तीकी भांति बड़ा बड़ा होता था। बहुत दिनकी बात नहीं, हिमालयके शिवालिक पहाड़से प्रस्तरीभूत एक प्रकारके कछुवेका कङ्काल निकला था। वह भारतीय बड़े बड़े हाथियोंके कङ्कालसे किसी अंशमें छोटा नहीं

गजकणा (सं० स्त्री०) गजपिप्पली, गजपीपर।

गजकन्द (सं० पु०) गजो गजदन्त इव। कन्दोऽस्य बहुव्री०। हस्तिकन्दवृक्ष।

गजकर्ण (सं० पु०) गजस्य कर्ण इव कर्णो यस्य बहुव्री० यक्षविशेष, एक असुरका नाम। (भारत २।१० अ०)

गजकर्णआलू (हिं० पु०) लम्बा कंदवाला अरुवा नामक लवा।

गजकर्णा (सं० स्त्री०) मूलविशेष, एक जड़का नाम इसका गुण—तिक्त, उष्ण, वात और कफनाशक, स्वा एवं शीतज्वरविनाशक है। इसके कन्दका गुण—पा रोग, क्रमि, प्लीहा, और गुल्मरोगनाशक, ग्रहणी, अर्श और विकारघ्न है।

गजकर्णिका (सं० स्त्री०) कर्कटी, कोई ककड़ी।

गजकुमारमुनि—दि० जैन सम्प्रदायके एक प्रसिद्ध मुनि या ऋषि इनका जन्म द्वारकामें हुआ था। इनके पिताका नाम वासुदेव और माताका गन्धर्वसेना था। ये बड़े ह वीर पुरुष थे। वासुदेवके राजत्व कालमें पोदनपुरके राजा अपराजितने बहुत ही सिर उठा रक्खा था वासु देवने उसको काबूमें लानेके लिए यह प्रसिद्ध किया कि जो कोई अपराजितको पकड़ कर मेरे सामने ला देगा उसे मनचाहा वर मिलेगा। इस पर गजकुमारने ही अपने पितासे अपराजितसे युद्ध करनेकी आज्ञा ली और युद्ध कर उसे पकड़ कर पिताके सामने ले आये। पिताने खुश होकर इनको मनचाहा वर दिया।

वर पाकर राजकुमारका मन अन्यायकी तरफ

दौड़ा अर्थात् गजकुमार जबरदस्ती अच्छे अच्छे घरोंकी सती स्त्रियोंका सतीत्व नष्ट करने लगे। एक दिन पांसुल सेठकी स्त्री पर इन्होंने दृष्टि डाली और उसे बिगाड़ भी दिया। सेठको मालूम पड़ते ही वह क्रोधाग्निसे जल कर उनके विरुद्ध खड़ा हुआ; परन्तु राजकुमारके सामने उस बेचारेकी कुछ भी न चली। इसी प्रकार जो उनके विरुद्ध खड़ा होता था, वह जड़ मूलसे नष्ट हो जाता था

एक दिन पुण्योदयसे नेमिनाथ भगवान् द्वारकामें आये। बलभद्र, वासुदेव तथा और भी बहुतसे राजे-महाराजे उनकी पूजाके लिए पहुंचे। उनके साथ गजकुमार भी थे। भगवान्‌का उपदेश हुआ। उपदेशका असर गजकुमार पर खूब ही पड़ा। उन्हें संसारसे घृणा हो गई। अपने किये हुए पापों पर ये बहुत ही पश्चात्ताप करने लगे। उसी समय भगवान्‌के समक्ष उन्होंने दिगम्बरी दीक्षा धारण की और वनमें जा आत्म-ध्यानमें लीन हो तप करने लगे।

मुनि होनेका हाल जब पांसुल सेठको मालूम पड़ा तब वह क्रोधी अपना बदला लेनेके लिये वनमें पहुंचा और उन ध्यानस्थ गजकुमार मुनिके समस्त सन्धिस्थानोंमें लोहेके बड़े बड़े कीले ठोंक कर चला आया। गजकुमार मुनि पर उपद्रव तो बड़ा ही दुःसह हुआ; पर वे जैनतत्त्वके अच्छे अभ्यासी और विद्वान् थे, इस लिये उन्होंने इस घोर वेदनाको एक कांटे चुभनेके समान भी न समझ बड़ी शान्ति और धीरताके साथ शरीर छोड़ा। यहांसे ये स्वर्गमें गये। (आराधनाकथाकोष)

गजकुम्भ (हिं॰ पु॰) हाथीका उभरा हुवा मस्तक, हाथीके माथे पर दोनों ओर उठे हुए भाग।

गजकुसुम (सं॰ पु॰) नागकेशर।

गजकुसुमा (सं॰ स्त्री॰) नागकेशर।

गजकूर्माशिन् (सं॰ पु॰) गज कूर्मो अश्नाति, अश-णिनि। गरुड़। (शब्दरत्ना॰) पक्षिराज गरुड़ने युध्यमान गज-कच्छपको भक्षण किया था, इस लिये इसका नाम 'गजकूर्माशिन्' पड़ा। गजकच्छपीय युद्ध देखो।

गजकृष्णा (सं॰ स्त्री॰) गज इव कृष्णा। गजपिप्पली, बड़ी पीपर। (भावप्रकाश)

गजकेशर (सं॰ पु॰) नागकेशर, कबाबचीनी।

गजकेशरी—उड़िसाके केशरीवंशीय एक प्रतापी राजा, बटकेशरीके पुत्र। आपने १२ वर्ष राज्य किया था। उत्कल देखो।

गजकेसर (सं॰ पु॰) एक प्रकारका धान जो अगहन महीनामें तैयार होता है। इसका चावल बहुत दिन तक रहता है।

गजक्रीड़ित (सं॰ पु॰) नृत्यमें एक प्रकारका भाव।

गजगति (सं॰ स्त्री॰) १ हाथीकी चाल। २ हाथीकी मन्द चाल (सुलक्षणा स्त्री हाथीकी मन्द चालकी तरह चलती है)। ३ रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रामें शुक्रकी स्थिति। ४ एक वर्णमाला वा वर्णवृत्त।

गजगमन (सं॰ पु॰) हाथीकी तरह मन्द गति, वह जो हाथीकी मंदगति सरीखे चलता हो।

गजगामी (सं॰ पु॰) हाथीकी चालकी तरह चलनेवाला, मन्द गामी।

गजगाह (हिं॰ पु॰) हाथीकी झूल, पाखर।

गजगौहर (फा॰ पु॰) गजमोती, गजमुक्ता।

गजघण्टा (सं॰ स्त्री॰) गजस्य घण्टा-६-तत्। १ हाथीके गलेका घण्टा। २ रङ्गपुर जिलाका एक वाणिज्य-प्रधान नगर। यह अक्षा॰ २५° ४८´ ४५´´ उ॰ और देशा॰ ८८° २०´ पू॰में अवस्थित है। यहांसे चूना और पाटकी रफ्तनी अधिक होती है।

गजचक्षुः (सं॰ त्रि॰) गजस्येव चक्षुर्यस्य वा गजस्य चक्षुरिव चक्षुर्यस्य इति बहुव्री॰। जिसकी आंखें हाथीकी आंखोंकी तरह हों, विकृतचक्षु।

गजचर्म (सं॰ पु॰) १ गजका चमड़ा। २ एक प्रकारका रोग, जिसमें शरीरका चर्म गजके चमड़ेकी तरह मोटा और कड़ा हो जाता है। यह रोग सिर्फ मनुष्य हीको नहीं होता किन्तु घोड़ेको भी होता है।

गजचिर्भिट (सं॰ पु॰) गजप्रियश्चिर्भिटः। एक प्रकारका तरबूज।

गजचिर्भिटा (सं॰ स्त्री॰) गजप्रिया चिर्भिटा, मध्यलो॰। इन्द्रवारुणी, इन्द्रायम, बड़ी इन्द्रफला।

गजचिर्भिटी (सं॰ स्त्री॰) गजप्रिया चिर्भिटी। इन्द्रवारुणी, इन्द्रायन।

गजच्छाया (सं० स्त्री०) गजस्य हस्तिनः छाया प्रतिविम्बः, ६-तत्०। १ हाथीकी छाया। २ योगविशेष, यह योग श्राद्धके लिये अच्छा माना जाता है। यह उस समय होता है जब कृष्णत्रयोदशीके दिन चन्द्रमा मघा नक्षत्रमें और सूर्य हस्ता नक्षत्रमें हो। ३ सूर्यग्रहणकाल। यह समय श्राद्धके लिए प्रशस्त है।

"सैंहिकेयो यदा भानुं ग्रसते पर्वसन्धिषु।
गजच्छाया तु सा प्रोक्ता तत्र श्राद्धं प्रकल्पयेत्॥" (वराह)

४ अमावस्याके दिन जिस समय छाया पूर्वमुखी हो उसी कालको गजच्छाया कहते हैं।

"अमावास्यां गते सोमे छाया या प्राङ्मुखी भवेत्।
गजच्छायेति सा प्रोक्ता तत्र श्राद्धं प्रकल्पयेत्॥" (मलमासतत्त्व)

गजढक्का (सं० स्त्री०) गजोपरिस्थिता ढक्का। हाथीके ऊपर एक बड़ा ढाक, हाथीके ऊपर रखा हुआ एक बड़ा ढोल।

गजट (अं० पु०) १ समाचारपत्र। २ भारतीय सरकार अथवा प्रान्तीय सरकारों द्वारा प्रकाशित सामयिक पत्र। उसमें बड़े बड़े कर्मचारियोंकी नियुक्ति, नवीन कानूनोंके मसौदे और भिन्न भिन्न सरकारी विभागोंके जानने योग्य बातें प्रकाशित की जाती हैं।

गजता (सं० स्त्री०) गजानां समूहः गज-तल्। (गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम्। पा ४।२।४२ वार्त्तिक) हस्तिसमूह, हाथीका झुण्ड।

गजतुरगविलसित (सं० क्ली०) छन्दोविशेष, इसका दूसरा नाम ऋषभगजविलसित है।

गजदन्त (सं० पु०) गजस्य दन्तमिव दन्तावस्य, बहुव्री०। १ गणेश। २ नागदन्त, चीजें वगैरह रखनेके लिये दीवारमें लगाये हुए दो खूंटे। ३ दांतके ऊपर जमनेवाला दांत। गजस्य दन्तः, ६-तत्। ४ हाथीदांत। (Ivory)

हाथी दांत पृथिवीका बढ़िया और महंगा पदार्थ है। इससे नाना प्रकारकी बर्तने लायक मनोहर और टिकाऊ चीजें बना करती हैं। हाथीकी ऊपरी चौंमें दोनों ओर जो दो तीखे दांत रहते, बढ़ करके सब कामोंमें उपयोगी गजदन्त बना करते हैं। नीचेकी चौंके दांत उतने नहीं बढ़ते, हथिनीके दांत भी छोटे ही रहते हैं। पेड़की छाल निकालने या पेड़ काटनेमें जङ्गली हाथीके दांत बीच बीचमें टूट जाते हैं। इसीसे वह बहुत बढ़ नहीं सकते। एक बार टूटने पर हाथी दांत फिर भर आते हैं। यह ६ हाथ तक बढ़ते हैं। ऐसे दो दांत तौलमें लगभग ४ मन बैठते हैं। साधारणतः इतने बड़े हाथी दांत देख नहीं पड़ते। ३० सेर या १ मनके हाथी दांत प्रायः देखे जाते हैं। हाथी दांत तिरछा तोड़नेसे भीतरकी गोल गोल रेखाएं देखनेमें आती हैं।

भारतवर्षमें जो हाथी दांत होते, उनसे इस देशका काम नहीं चलता। प्रतिवर्ष अफ्रीकासे इस देशमें हाथी दांत मंगाये जाते हैं। जो हाथीदांत भारतवर्षके कहलाते, अधिकांश आसाम और ब्रह्मदेशसे आते हैं कहते कि पूर्वकालको आसामके नागा लोग पहाड़ी गांवोंसे हाथी दांत ला करके जङ्गलके बाहर रख देते और अपने आप जङ्गलमें छिप जाते थे। हिन्दू वणिक् वहां पहुंच नागाओंको प्यारी चीजें [illegible] रख करके हाथी दांत ले आते थे। वणिकोंके [illegible]ने पर वनसे निकल नागा वह सारी चीजें उठा करके घर लाते थे। हिन्दुओंका नागाओंके साथ ऐसे ही व्यवसाय वाणिज्य चलता था। हिन्दुओंके गांवमें जा उनसे मिल करके लेन देन करना नागाओंके धर्ममें निषिद्ध है। कह नहीं सकते, वह बात कहां तक ठीक है। नागा बहुत थोड़े हाथी दांत लाया करते हैं। सिङ्गफो और खामती लोग ही यह द्रव्य अधिक परिमाणमें बेचते हैं। प्रतिवर्ष आसामसे मध्य भारतको १०० मनसे भी अधिक हाथीदांत भेजा जाता है।

अफ्रीकासे प्रतिवर्ष प्रायः ५ हजार मन हाथीदांत आता है। जञ्जीबार, मोजाम्बिक और अदनसे ही इसकी ज्यादा आमदनी होती है। यह हाथीदांत पहले बम्बईमें आ करके इकट्ठा होता है। फिर उसका कोई आधा भाग विलायत भेजते हैं। अवशिष्ट इसी देशके व्यवहारको रहता है। अफ्रीकासे बम्बईमें जो हाथीदांत मंगाया जाता, तौलके हिसाबसे बिकता है। बम्बईका सेर २८ रुपये भर है। एक एक हाथीदांत ऐसे सेरसे कोई ४ मन बैठता है। उसका मूल्य २५०) रु० है। दूसरे देशोंको भेजनेसे पहले हाथीदांतको काट करके बम्बईके लोग कई भागोंमें बांट देते हैं। हाथीदांतका अगला

भाग ठोस होता है। काट करके अलग करने पर उसको 'आकाशाश्म' कहते हैं। यह विलायतको भेजा जाता है। इससे बिलियार्ड खेलनेका गोला बनाते हैं। हाथीदांतका बिचला भाग पोला रहता, है इसका नाम 'चूड़ीदार' है। चूड़ियां बनानेका इसका अधिकांश भारतमें बिकता है। दांतका मूलभाग विदेशको प्रेरित होता है। पोले भागकी एक निकृष्ट जाति भी है। उसको 'चीना आइवरी' कहते हैं। वह चीन देशको भेजा जाता है।

हाथीदांतका व्यवसाय दिन दिन घट रहा है। ५० वर्ष पहले बम्बई नगरमें अफ्रीकासे कमसे कम २५००० जोड़ा हाथीदांत आता था। आजकल उसका आधा भी नहीं मंगाते। अधिकांश हाथीदांत पहले अफ्रीकाके मध्यवर्ती स्थानसे लाते हैं। फिर वह समुद्रके किनारे जहाजों पर लादा और नाना देशोंको भेजा जाता है।

बहुत पुराने समयसे भारतवर्षमें हाथीदांतका कारुकार्य प्रचलित है। बृहत्संहिताके मतमें खाट या पलंग बनानेके लिये हाथीदांत जैसी दूसरी चीज नहीं होती। वराहमिहिरने लिखा है कि पलंगके पावे हाथीदांतके बनाने चाहिये। फिर दूसरा भाग लकड़ीसे बना करके उसके ऊपर हाथीदांत जड़ देनेसे भी काम चल सकता है।

राजपूताना, पञ्जाब आदि देशोंमें हिन्दू मुसलमान सभी जातिकी स्त्रियां हाथीदांतकी चूड़ियां पहनती हैं। विवाहके समय कन्याका मामा उसको हाथीदांतकी चूड़ियां खरीद देता है। सीपकी तरह हाथीदांतकी चूड़ियों पर भी कई रङ्ग चढ़ाते हैं। फिर इस पर अभ्रक आदि चमकीली चीजें भी लगा देते हैं। बड़े घरानेकी स्त्रियां विवाहके पीछे एक वर्ष तक यह चूड़ियां पहने रहतीं, गरीब दुःखी स्त्रियां चिरकाल तक इन्हें नहीं छोड़तीं। राजपूतानेकी रेलवेसे जहां योधपुर जानेकी शाखा फूटी, उसीके पास पाली गांवमें प्रचुर परिमाणसे हाथीदांतकी चूड़ियां बनती हैं। हाथीदांतकी चूड़ियां नाना प्रकारकी होती हैं। परन्तु साधारणत: यह सीपकी जैसी चूड़ियां दीख पड़ती हैं।

बम्बईमें हाथीदांत नाना भागोंमें काट करके देश विदेश भेजा जाता है। बढ़ई ही आरीसे हाथीदांत काटते हैं; इसकी मजदूरी वह नहीं पाते। काटनेमें जो बुकनी निकलती, वही उनको मिलती है। यह बुरादा वह ग्वालोंके हाथ बेंच देते हैं। ग्वालोंको विश्वास है कि गाय भैंसको वह बुकनी खिलानेसे दूध अधिक होता है। मनुष्यके लिये भी गजदन्तका चूर्ण बलकारक औषधोंमें गिना जाता है।

इसके बाद हाथीदांत तीन आढ़तोंमें पहुंचता है। फिर वहांसे दूसरी जगहोंको प्रेरित होता है। इन तीनों आढ़तोंका नाम है—पाली, सूरत और अमृतसर। ओसवाल-रिया सम्प्रदायके माड़वारी हाथीदांतका बड़ा व्यवसाय करते हैं। यह जैन धर्मावलम्बी हैं, हाथीदांत छूनेसे इन्हें महापातक लगता है। इसीसे वह अपने आप हाथीदांत नहीं छूते। हाथीदांतको स्पर्श करना, रखना, ढकना, तौलना आदि जो कुछ आवश्यक आता, मुसलमान नौकरोंसे ही करा लिया जाता है। चूड़ियोंको छोड़ करके इस देशमें हाथीदांत कंघियां बनानेमें ही अधिक लगता है। कंघियोंकी बड़ी जगह दिल्ली और अमृतसर है। कंघियां बना करके जो हाथीदांत बचता, दूसरे लोग खरीद करके ले जाते हैं। वह उस हाथीदांतकी पत्तियां सन्दूक आदि लकड़ीकी चीजोंमें जड़ देते हैं। मुलतान, डेराइस्माइल खां, होशियारपुर, स्यालकोट, सूरत, बङ्गलोर, विशाखपत्तन प्रभृति स्थानोंमें हाथीदांतसे जड़ी लकड़ीकी ऐसी ही बहुत सुन्दर चीजें तैयार होती हैं।

मुर्शिदाबादमें केवल गजदन्तसे प्रस्तुत होनेवाले द्रव्य बहुत अच्छे होते हैं। ऐसा अच्छा कारीगरी और कहीं देख नहीं पड़ती। मुर्शिदाबादके कारीगर हाथीदांतसे दुर्गाकी मूर्ति, कालीकी प्रतिमा, हाथी, गाड़ी, मोरपङ्ख, नाव आदि बहुतसी चीजें बनाते हैं। गया, डुमरांव, दरभङ्गा, कटक, रङ्गपुर, वर्धमान, चट्टग्राम, ढाका, पटना आदि स्थानोंमें भी गजदन्तके द्रव्य मिलते हैं। हाथीदांतके बारीक रेशे उतार करके चामरी तैयार करते हैं। फिर उसे बुन करके चटाई भी बनायी जा सकती है। पहले समयमें श्रीहट्टमें हाथदांतकी बहुतसी चटाइयां बनती थीं। ऐसी चटाइयोंका

मूल्य हजारों रुपया होता है। काशीके महाराजने शिल्पियोंसे हाथीदांतकी एक बग्गी और वराणसीका एक खाट बनवाया था। महाराजके महलमें और भी कितनी ही हाथीदांतकी चीजें रखी हैं। गाड़ी घरके हाथीदांतसे बनी है।

त्रिवाङ्कुड़के महाराजकी हाथीदांतकी चीजें बहुत प्यारी थीं। इस अञ्चलमें जङ्गली हाथी बहुत हैं और हाथीदांत भी मिला करता है। त्रिवाङ्कुड़में आज भी गजदन्तके नाना प्रकार द्रव्य प्रस्तुत होते हैं। ब्रह्मवासी भी हाथीदांतकी चीजें बनानेमें बड़े होशियार हैं। वे हाथीदांतका ठोस भाग अलग उतार लेते और उसके ऊपरी और बेल बूटे बना देते हैं। फिर इन्हीं बेल बूटोंके बीचसे भीतरका हाथी दांत खुरच खुरच निकालते हैं। बाहरी बेल बूटोंकी सजावट धीरे धीरे जाली जैसी बन जाती है। इन्हीं छेदोंसे भीतरकी औजार चलाते हैं खुरचते खुरचते जब औजार हाथीदांतके बीचमें पहुंचते, उसे काट करके बुद्धदेवकी एक मूर्ति निकालते हैं। बाहरसे ही पूरी मूर्ति बन जाती है। हाथीदांतकी पत्ते जैसा फाड़के उस पर नाना रूप चित्र अङ्कित किये जा सकते हैं। दिल्ली ही इस कामकी बड़ी जगह है। मुसलमान बादशाहों और नूरजहां प्रभृति बेगमोंकी मूरतें हाथीदांत पर उतार करके बेचते हैं। कुछ मुसलमान चित्रकार इसी काममें लगे रहते हैं।

युरोपमें जब हाथीदांत जाने लगा, वहांके लोग भी इससे बहुतसा कारुकार्य बनाने लगे। यूनान देशमें गजदन्तनिर्मित प्राचीन मनुष्य मूर्ति और पुस्तक आज भी वर्तमान है। फ्रांस देशीय पेरिस नगरके पुस्तकालयमें ऐसी ही एक पुस्तक रखी है। वह १३३० वर्ष पहले निर्मित और लिखित हुआ था। इसके पत्र १५ इंच लम्बे और ६ इञ्च चौड़े हैं। पुस्तक देखनेसे मालूम होता है कि उस समयके लोग हाथीदांतको फैलाना, बराबर करना, बढ़ाना या घटाना जानते थे, अब वह कारीगरी नहीं रही। थिओफिलास नामक किसी युरोपीय विद्वान्‌ने लिखा है कि हाथीदांत खार, नमक, सिरकेके तेजाब और शिरकेमें भिगो कर रखनेसे मोम-जैसा कोमल पड़ जाता है। उस समय इसको मनमाना घटा बढ़ा सकते हैं। फिर हाथीदांत केवल शिरकेमें डाल कर रखनेसे पहले-जैसा कड़ा हो निकलता है। आजकल लगभग सब जगह हाथीदांतकी कदर कम हो गयी है।

घोटकविशेष, एक प्रकारका घोड़ा जिसके मुखके बाहर हाथीके दन्तकी तरह दांत निकले रहते हैं। ६ कुचाल पर्वतोंके उपरके पर्वत।

गजदन्तफला (सं० स्त्री०) गजदन्त-इव फलमस्याः बहुव्री० ततः टाप्। फलशाकविशेष, चिचिङ्गा, चिचड़ा।

गजदन्तमय (सं० त्रि०) गजदन्त-मयट् विकारार्थे। गजदन्त निर्मित, जो हाथीदांतोंकी बनी हुई हो।

गजदान (सं० क्ली०) गजस्य दानं मदः ६-तत्। १ हाथीका मद। प्राचीन आर्य प्राणितत्त्वविद्‌का मत है कि हाथीका सूंड, कपोल, नाभि और नेत्रसे मद निकलता है।

"सर्वैश्च परिभोगेन गजदानसुगन्धिना।
कावेरीं सरितां पत्युः शङ्कनीयामिवाकरोत (रघु० ४।४५)

२ हाथीका उत्सर्ग, हाथीका दान

गजद्रुम (सं० पु०) नन्दीवृक्ष, बालिया पीपली।

गजनवी (फा० वि०) गजनी नगरका रहनेवाला, जो गजनी देशमें रहता हो।

गजनवीपुर—बङ्गप्रदेशके महमुदाबाद सरकारके अन्तर्गत एक महल।

गजनाल (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी तोप जो प्राचीन समयमें हाथीसे खींचा जाती थी।

गजनासा (सं० स्त्री०) गजस्यनासा ६-तत्पुरुष। हाथीकी सूंड।

गजनी—अफगानस्तानका एक नगर। यह अक्षा० ३३° ३४' उ० और देशा० ६८° १८' पू०में काबुलसे ४२॥ कोस दूर गजनी नदीके बाईं और समुद्रपृष्ठसे ५१५० हाथ ऊंचे अवस्थित है।

शहर चौकोर है। इसके बीचमें एक सुदृढ़ दुर्ग बना है। डेढ़ कोस तक चहारदीवारी लगी है। यहां मट्टीके कोई ३॥ हजार घर हैं। अधिवासियोंमें अफगान हजारे और कुछ हिन्दू दूकानदार भी हैं। गजनीमें कार्तिकमाससे फाल्गुन तक बर्फ गिरता है।

यह नगर बहुत पुराना है। किसी समय यहां बहुतसे लोग रहते और मजेमें अपना गुजर करते थे। गजनीकी पश्चिम ओर तरनाक उपत्यकासे मोस्तानके नगरों और गावोंका जो ध्वंसावशेष मिलता, इसकी प्राचीन समृद्धिशालिताका निदर्शन ठहरता है।

जैसलमेरका इतिहास पढ़नेसे समझ पड़ता कि विक्रमादित्यके आविर्भावसे बहुत पहले यादव लोग गजनीसे समरकन्द तक सारे भूभागमें राजत्व करते थे। कर्नल टाड साहबने विलायतकी रायल एशियाटिक सोसाइटीको हिन्दुओंका एक मानचित्र (नकशा) दिया था। उसमें 'गजलि-वन' अर्थात् हाथियोंके जङ्गल नामसे निर्दिष्ट है। बहुतोंके मतमें हिन्दू राजाओंने ही यह नगर बसाया था। फिर कोई कोई कहता कि गजनीमें ही संस्कृत शास्त्रोक्त यवनराज रहता था। टलेमिने 'ओजोला' (Ozola) और किसीकीकसने सबल या जबल (Sabal or Zabal) नामसे इसका उल्लेख किया है।

८७६ ई०को अलपतगीनने बोखारेसे आ करके यहां राजधानी लगायी थी। उन्हींके उत्तराधिकारी सुबक्तगीन रहे। इन्हींके पिता सुलतान महमूदने हिन्दुस्थान जीता था। महमूदके शासनकालको गजनीका राज्य पूर्वको गङ्गा, पश्चिम टाइग्रीस नदी, उत्तर ओक्सस और दक्षिणको भारतमहासागरके उपकूल तक फैला था। ११५१ ई०को अलाउद्दीन गोरीने गजनी नगर आक्रमण किया। उस समय हजारों बाशिन्दे उनके निष्ठुर अत्याचारसे मारे गये। फिर अरबोंका गजनीमें राज्यशासन हुआ। ई० १३वीं और १५वीं शताब्दीको तातार लोगोंके दारुण दौरात्म्यसे गजनी शहर धूलमें मिल गया था।

१८३९ ई० २२ जुलाई और १८४१ ई०को भी अंगरेजोंके अधीन भारत सेनाने गजनी नगर आक्रमण किया। फिर १८८० ई०को वृटिश सेना इस पर परिचालित हुई।

अफगानस्तान और भारत आने जानेके लिये यहां चार बड़ी राहें हैं। नगरकी चारों ओर जमीन खूब उपजाऊ है। वहां अङ्गूर, तम्बाकू, कपास आदि खूब होती है।

शहरकी दोनों तर्फ सुलतान महमूदके दो मीनार हैं। यह ईंटसे बनाये गये हैं। इनकी कारीगरी बहुत अच्छी है। दोनोंमें एक मीनार कोई ८४ हाथ ऊंचा होगा।

गजपति (सं० पु०) गजस्य पतिः ६-तत्। १ श्रेष्ठ गज बढ़िया हाथी। २ अत्युच्च हस्ती, बहुत बड़ा हाथी। "गजपति द्वयसी रपि हैमनः" (माघ) ३ उत्कल और कलिङ्ग देशके राजाओंकी उपाधि। अन्ध्र और बङ्गी देशके बौद्ध राजगण समय समय पर इस उपाधिको धारण करते रहे। वर्तमान समयमें केवल उत्तर सरकारके एक राजा "राजा गजपति राव" की उपाधिसे विद्यमान हैं। ४ वह राजा जिसके पास बहुतसे हाथी हों।

गजपतिनगर, मन्द्राज प्रदेशके विशाखपत्तन जिलाके अन्तर्गत एक तहसील। यह अक्षा० १८° ११′ तथा १८° ३०′ उ० और देशा० ८३° ३′ एवं ८३° ३२′ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल २२३ वर्गमील है। इसमें २२८ ग्राम लगते हैं। लोकसंख्या प्रायः १३४४५३ है। तहसीलकी समस्त पार्वतीय चीजें यहां लाकर बेची जाती है। इस तहसीलमें फौजदारी अदालत, रजिष्टरी आफिस, डाकघर और औषधालय है।

गजपति वीरनारायणदेव—एक संस्कृत ग्रन्थकार। यह पद्मनाभके पुत्र तथा कविरत्न पुरुषोत्तममिश्रके शिष्य थे। इन्होंने अलङ्कारचन्द्रिका और सङ्गीतनारायण ग्रन्थकी रचना की थी।

गजपन्था—जैनियोंका सिद्धक्षेत्र। यह नासिक शहरसे करीब चार माइल दूरी पर अवस्थित है। यहां आधा माइल ऊंचा एक पर्वत है। जिस पर कि दो गुफा, दो कुण्ड और पहाड़के पत्थरोंसे बना हुई तीर्थंकरोंको अनेक मूर्तियां विराजमान हैं। पर्वत पर चढ़नेके लिये सीढ़ी भी बनी हुई हैं। इस पर्वतसे बलभद्र आदि आठ करोड़ मुनीश्वर मोक्ष गये हैं। (तीर्थयात्रा १५)

गजपांव (हिं० पु०) जलपक्षीविशेष। इसके पैर लाल, सिर, गरदन, पीठ और डैने काले तथा शेष अंग सफेद होते हैं। जाड़ेके दिनोंमें यह हिन्दुस्तानके ठण्डे मैदानमें चला जाता है। मादा एक बार तीन या चार अंडे देती है।

गजपादप (सं० पु०) गजप्रियः पादपः। स्थालीवृक्ष, बेलिया पीपल।

गजपाल (सं० पु०) महावत, हाथीवान, वह जो हाथी-को चलाता हो।

गजपिप्पली (सं० स्त्री०) गजपूर्वा, गजप्रिया वा पिप्पली। पिप्पलीविशेष, एक तरहको पीपर। इसका पर्याय—करि-पिप्पली, इभकणा, कपिवल्ली, कपिल्लिका, श्रेयसी, वसिर, गजाह्वा, कोलवल्ली, इभोषणा, चव्यजा, छिद्रविदेही, दीर्घग्रन्थी, तजसी, वर्त्तुल और स्थूल वैदेही है।

यह संभोले आकारका एक पौधा है। इसकी पत्तियां चौड़ी होती हैं। किनारे पर लहरिया नोकोला कटाव होता है। इसमें दो या तीन पत्तोंके बाद एक पतला सींका निकलता है। इसके सिरे पर प्रायः एक इंचकी मोटी मंजरी छोटे छोटे फूलके साथ निकलती है। यही मंजरी सुखाने पर औषधके काममें बाजारमें बिकती है। इसका गुण-कटु, उष्ण, वातनाशक, स्तनकर्ण-रुचिकर तथा वेदना और मलनाशक है। भावप्रकाश-के मतसे इसके फलका नाम गजपिप्पली है। इसका गुण—कटु, वात, कफनाशक, अग्निवृद्धिकारी, अति-सार, श्वास, कण्ठरोग और क्रिमिनाशक है।

गजपीपर (हिं० स्त्री०) गजपिप्पली देखो।

गजपीपल (हिं० स्त्री०) गजपिप्पली देखो।

गजपुङ्गव (सं० पु०) बड़ा और सुन्दर हाथी।

गजपुट (सं० पु०) गजाह्वयः पुटः शाकपार्थिववत्समासः। गर्तविशेष, एक तरहका गड्ढा। यह औषध पाक और लौहमारण प्रभृति कार्यके लिये उपयोगी है। कोई वैद्यक एक हाथ गहरा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ लम्बा गर्तको गजपुट कहते हैं।

"हस्तप्रमाणो गर्तो यः पुटः स तु गजाह्वयः।" (वैद्यक)

भावप्रकाशके मतसे सवा हाथ लम्बा, सवा हाथ चौड़ा और सवा हाथ गहरा गर्त्तको गजपुट कहते हैं। ऐसा गर्त प्रस्तुत कर उसमें पांच सौ बिनुए कण्डे बिछा कर मध्यमें जिस औषधको रखना होता है, उसे रख कर उपरसे फिर ५०० कण्डे देकर गर्तके मुख पर चारो तरफसे मिट्टी डाल देते हैं। सिर्फ थोड़ी जगह मध्यमें खुली छोड़ दी जाती है और तब उसमें आग लगा देते हैं, गजपुट इसी प्रणालीसे पाक होता है। सब प्रकार-के पुटोंसे गजपुट श्रेष्ठ है। (भावप्र० पूर्व० २रा भाग)

गजपुर (सं० क्ली०) गजस्य हस्तिनाम नृपस्य पुरं ६-तत्। युधिष्ठिरको राजधानी हस्तिनापुर।

"स निर्ययौ गजपुरात् अर्कैः परिवारितः।" (भारत अनु० १६७ अ०)

गजपुष्पी (सं० स्त्री०) गजस्तन्मद इव गन्धयुत पुष्पमस्याः बहुव्रो० ततो ङीप्। नागपुष्पलता, नागदौन।

"ततो गिरितटे जातामाकृष्य सुदुरासदाम्।
लक्ष्मणो गजपुष्पीं तां तस्य कण्ठे समासजत्॥" (रामा० ४।१२।४६)

गजप्रिया (सं० स्त्री०) गजस्य प्रिया, ६-तत्। शल्लकी वृक्ष, सलईका पेड़।

गजब (अ० पु०) क्रोध, कोप, विलक्षण, अपूर्व, अन्याय।

गजवदन (सं० पु०) गणेश।

गजबन्ध (सं० पु०) एक प्रकारका चित्रकाव्य। इसमें किसी कविताके अक्षरोंको हाथीका आकार बना कर उसके अङ्ग प्रत्यङ्गको परिपूर्ण कर देते हैं।

गजबन्धनी (सं० स्त्री०) गजा बध्यन्ते ऽत्र बन्ध-ल्युट् ङीप् च। हाथी बांधनेका स्थान, हाथीशाला। इसका पर्याय वारी, वारि और प्रारब्धि है।

गजबन्धिनी (सं० स्त्री०) गजस्य बन्धोऽस्त्यत्र, गजबन्ध-इनि-ङीप्। गजशाला, वह स्थान जहां हाथी रखा जाता हो।

गजबला (सं० स्त्री०) गोरक्षी, एक प्रकारकी बड़ी झाड़ी।

गजबाग (हिं० पु०) हाथीका अङ्कुश।

गजबीथी (सं० स्त्री०) रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्राके समूहका नाम जिसके मध्य होकर शुक्र गमन करे।

गजबेलि (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका लोहा।

गजभक्षक (सं० पु०) गजो भक्षकोऽस्य बहुव्रो०। पीपल वृक्ष, पीपलका पेड़।

गजभक्षा (सं० स्त्री०) भक्ष्यतेऽसौ भक्ष-णिच् कर्मणि अप् ततः टाप्। शल्लकी वृक्ष, सलईका पेड़। (शब्दरत्नावली)

गजभक्ष्या (सं० स्त्री०) गजेन भक्ष्या, ३-तत्। शल्लकी वृक्ष। (अमर)

गजमणि (सं० पु०-स्त्री०) गजमुक्ता, गजमोती।

गजमण्डन (सं० क्ली०) गजस्य मण्डनं, ६-तत्। हस्ति-भूषण, हाथीका अलङ्कार।

गजमण्डली (सं० स्त्री०) गजानाम् मण्डली वेष्टनाकार-परिधि, ६-तत्। १ हाथीकी वेष्टनाकार परिधि। २ हस्ति-समूह।

गजमद (सं० क्ली०) हाथीका मद।

गजमदहरणी (सं० स्त्री०) पिवलिङ्गिनीलता, पञ्च-गुरिया।

गजमल्ल—कर्पूरमल्लका लड़का। इनके पुत्रका नाम कल्याणमल्ल था।

गजमाचल (सं० पु०-स्त्री०) गजस्य माचम् शाठाम् लूनाति लू वाहुलकात् ड:। सिंह। स्त्रीलिङ्गमें ङीष् होनेसे गजमाचली होता है।

गजमात्र (सं० त्रि०) गजेन परिमाणमस्य गज-मात्रच्। गजपरिमित, हाथी आकारका।

गजमुक्ता (सं० स्त्री०) गजे गजकुम्भे जाता मुक्ता। एक प्रकारकी मुक्ता वा मोती जो हस्तीके मस्तकमें पायी जाती है। प्राचीन आर्यगण गज, मेघ, वराह, शङ्ख, मत्स्य, सर्प, शुक्ति और वेणु इन आठोंमें मुक्ताका उत्पत्ति-स्थान बतलाते हैं।

"करीन्द्रजीमूतवराहशङ्खमत्स्याहिशुक्त्युद्भववेणुजानि।
मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषान्तु शुक्त्युद्भवमेव भूरि॥"
(कुमारटीका—मल्लिनाथ)

आधुनिक वैज्ञानिक हस्तिकुम्भसे मुक्ताका निकलना स्वीकार नहीं करते क्योंकि आजतक इन्होंने गज-कुम्भमें मुक्ता देखी ही नहीं है।

गजमुख (सं० पु०-क्ली०) गजस्य मुखं मुखमस्य बहुव्री०। १ गणेश। गजानन देखो।

"प्रमथाधिपो गजमुख:।" (हरवं० ५८ अ०)

(क्ली०) गजस्य मुखं, ६-तत्। २ हाथीका मुख।

गजमोचन (सं० पु०) विष्णु भगवान्‌का एक आकार, जिसे धारण कर उन्होंने गजको वराहसे बचाया था।

गजमोटन (सं० पु०-स्त्री०) गजम् मोटयति पीड़यति गज-मुट्-णिच् ल्यु। सिंह। स्त्रीलिंगमें ङीप् होनेसे गजमोटनी शब्द होता है।

गजमौक्तिक (सं० क्ली०) मुक्ता एव मुक्ता स्वार्थे कन्। गजमुक्ता, गजमोती।

"गजमौक्तिकावलियुतेन वक्षस।" (किरात १२।४१)

गजर (फा० पु०) पहर पहर पर घण्टा बजनेका शब्द, पारा।

गजरथ (सं० पु०) हाथीके खींचनेका रथ। प्राचीन समयमें राजा इस पर चढ़ कर लड़ाईमें जाते थे।

गजरप्रबन्ध (सं० पु०) स्वर और बाजाका मिलान। यह गायन और नृत्यके आरम्भमें श्रोताओंके सामने सुनाया जाता है।

गजरबजर (हि० पु०) अंडबंड, घाल मेल।

गजरा (हिं० पु०) १ गाजरके पत्ते, जो चौपायोंको खिलाये जाते हैं। २ फूलकी माला।

गजराज (सं० पु०) बड़ा हाथी।

गजराज उपाध्याय—बनारसके एक हिन्दी कवि। १८१७ ई०को इन्होंने जन्म लिया था इन्होंने वृत्तहार नामक एक काव्य और एक रामायणको लिखा है।

गजरी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका आभूषण, जिसे स्त्रियां कलाईमें पहनती हैं।

गजरौट (हिं० स्त्री०) गाजरकी पत्ती।

गजल (फा० पु०) एक फारसी और उर्दूमें शृङ्गार रसकी कविता। इसमें प्रेमियों और प्रेमिकाका विरह वर्णित रहता है।

गजलग्ड (सं० क्ली०) गजस्य लण्डम्, ६-तत्। हाथीका नाद। (शब्दरत्न)

गजलोल (हिं० पु०) एक तालभेद। जिसमें चार लघुमात्रा और अन्तमें विराम होता है

गजवत् (सं० त्रि०) गजोऽस्त्यस्य गज-मतुप् मस्य व:। गज विशिष्ट, जिसमें हाथी रखा जाता हो।

गजवदन (सं० पु०-क्ली०) गजस्य वदनम् यस्य, बहुव्री०। १ गणेश। गजस्य वदनम्, ६-तत्। २ हाथीका मुख।

गजवल्लभा (सं० स्त्री०) गजस्य वल्लभा, ६-तत्। १ गिरि-कदली, पहाड़ी केला। २ शल्लकी वृक्ष, सलईका पेड़।
(राजनि०)

गजवान (हिं० पु०) महावत, हाथीवान।

गजवाजिप्रिया (सं० स्त्री०) कद्दू, लौका लौवा।

गजवीथी (सं० स्त्री०) रोहिणी, आर्द्रा और मृगशिरा नक्षत्रोंको गजवीथी कहते हैं। खगोल देखो। गजस्य वीथी, ६-तत्। २ हाथीका पंक्ति, हाथीका कतार।

गजवीक—मानभूमस्थ एक गिरिशृङ्ग। इसका दूसरा नाम गङ्गावाड़ी है।

गजव्रज (सं० त्रि०) हस्तीवत् भ्रमणशील, हाथीकी तरह चलना।

गजशाला (सं॰ स्त्री॰) हाथी बांधनेका स्थान, पोलखाना।

गजशासनयो—गिनी तन्त्रोक्त कामरूपका वायुकोणस्थ पवित्र स्थान।

"ईशाने चैव केदारो वायव्याम् गजशासनः।" (योगिनीतन्त्र ११ प॰)

गजशिक्षा (सं॰ स्त्री॰) गजानाम् शिक्षा, ६-तत्। हाथी चलानेका अभ्यास।

"तथैव गजशिक्षायाम् नीतिशास्त्रे च पारगः।" (भारत १।१०९ अ॰)

गजशिरः (सं॰ पु॰) गजस्य शिरः-इव शिरो यस्य, बहुव्री॰। १ दैत्यविशेष, एक राक्षसका नाम। (हरिवंशपु॰ २४० अ॰) २ गणेश।

गजसार—एक जैन ग्रन्थकार, ये धवलचन्द्रके शिष्य थे।

गजसाह्वय (सं॰ पु॰) गजेन हस्ति नामक नृपेन सह आह्वयो-यस्य बहुव्री॰ हस्तिनापुर।

"निययुः गजसाह्वयात्।" (भारत १।१ अ॰)

गजस्कन्ध (सं॰ पु॰) गजस्य स्कन्ध-इव स्कन्धोऽस्य बहुव्री॰। दैत्यविशेष, एक असुरका नाम।

गजही (हिं॰ स्त्री॰) दूधसे मक्खन निकालनेकी एक लकड़ी। इसकी लम्बाई चार पांच हाथकी होती है और सिरा चार भागमें चिरा रहता है।

गजाख्य (सं॰ पु॰) गजं गजकर्णं आख्याति पत्रेण आख्या-क। चक्रमर्द वृक्ष, चकवंड़का पेड़। (राजनि॰) गजेन तुल्यं आख्या यस्य, बहुव्री॰। २ हस्तिनापुर।

गजाग्रणी (सं॰ पु॰) गजस्य अग्रणीः श्रेष्ठः, ६-तत्। ऐरावत।

गजाजीव (सं॰ पु॰) गजैस्तत् पालनादिभिराजीव्यते जीव-अप्। हस्तिपालक, वह जो हाथीकी रक्षा करता हो।

गजाण्ड (सं॰ क्ली॰) गजस्याण्डमिव अण्डमस्य बहुव्री॰। पिण्डमूल।

गजादन (सं॰ पु॰) अश्वत्थवृक्ष, पीपलका पेड़।

गजादनि (सं॰ स्त्री॰) अश्वत्थवृक्ष।

गजादिनामा (सं॰ स्त्री॰) गज इति शब्द आदौ यस्य तादृशं नाम यस्याः, बहुव्री॰। गजपिप्पली, गजपीपर।

"लाक्षालतामिव पुनर्वार्के गजादिनामा करञ्जकरैः॥
(सुश्रुत चिकित्सित॰ १८ अ॰)

गजाध्यक्ष (सं॰ पु॰) गजस्य अध्यक्षः ६-तत्। जिसके ऊपर हाथीका रक्षणाविक्षणका भार दिया जाता है, जो हाथीकी देख भाल करता हो, गजकर्ता।

गजाधर (सं॰ पु॰) गजाधर देखो।

गजानन (सं॰ पु॰) गजस्याननमाननम् यस्य, बहुव्री॰। १ गणेश। पार्वतीके पुत्र गणेशका गजानन होनेकी कथा ब्रह्मवैवर्तपुराणके गणेशखण्डमें इस तरह लिखा है।

दक्षकन्या सतीने पतिकी निन्दासे प्राण परित्याग करके जब हिमालयमें जन्म लिया, महादेवने उनसे अपना विवाह किया था। विवाहके पीछे दोनोंका सम्भोग होने लगा, परन्तु कोई सन्तान न निकला। इससे पार्वतीके मनमें बड़ा कष्ट हुआ था। किसी दिन महादेवके निकट बैठ करके रोते रोते वह विह्वल हो गयीं। महादेवने अनेक भावना और चिन्ता करके विष्णुकी आराधना करनेका उनको उपदेश दिया था। पार्वतीके विष्णुकी आराधना करने पर विष्णुने सन्तुष्ट हो करके उनको पुत्र वर प्रदान किया। थोड़े दिन पीछे पार्वतीके एक पुत्र हुआ। दम्पती आमोदमें मतवाले हो दान करने लगे। स्वर्ग, मर्त, पाताल प्रभृति सभी स्थानोंमें आमोद प्रमोद मचा था। सब लोग नवजात शिशुको देखनेके लिये कैलासमें आ करके उपस्थित हुए। इसके पीछे शनि भी कैलास पहुंच गये। वह स्त्रीके शापसे जिसकी ओर देखते, वही भस्म हो जाता था। शनि महाराज इसी भयसे पार्वती नन्दनको देखने न गये। परिशेषको शिवकी कथा पर उन्हें घरके भीतर जाना पड़ा। ग्रहराज पार्वतीके निकट जा करके अधोवदन खड़े हो गये। पार्वतीको यह बात अच्छी न लगी। उन्होंने शनिसे बालकको देखनेका अनुरोध किया था। शनिने सब कथा खोल करके कही, परन्तु पार्वतीने वह ग्राह्य न की और हंसीमें बात उड़ा दी। अगत्या शनिको बालक देखना ही पड़ा। शनिके दृष्टिमात्रसे बालकका मस्तक उड़ गया। पार्वती रो रो करके आकुल हुई थीं। फिर विष्णुके निकट यह संवाद भेजा गया। विष्णुने आते समय देखा कि राहमें कोई हाथी पड़ा परम सुखसे सोता था। उन्होंने उस

हाथीका मस्तक काट ले जा करके छिन्न मस्तक बालकके शरीरमें लगा दिया। इस आशङ्कासे कि शायद कोई हाथीका मुंह देख उनकी पूजा न करे, सकल देवताओंने मिल करके विधान किया था कि गजाननकी पूजा न करनेसे उनको पूजा भी बिगड़ जावेगी। इसीसे सब देवदेवियोंकी पूजाके आगे गणेशपूजा करनेका नियम हो गया है।

स्कन्दपुराणके गणेशखण्डमें इसका उपाख्यान अन्य प्रकार लिखित है—

सिन्दूर नामक किसो दैत्यने पार्वतीके गर्भमें अष्टम मासको प्रवेश करके गणेशका मस्था काट डाला था। परन्तु इससे बालकके जीवनका कोई अनिष्ट न हुआ। प्रसवके पीछे नारदने आ करके बालकसे ही उसका कारण पूछा था। उसने नारदको सब कथा खोल करके सुना दी। नारदने उसको समस्तक होनेका अनुरोध किया था। बालकने अपने तेजसे ही गजासुरका मस्तक काट अपने स्कन्धमें जोड़ लिया। इसीसे उनका नाम गजानन पड़ा है। भाद्र मासकी चतुर्थी तिथिको गजाननका जन्मोत्सव होता है।

(स्कन्दपुराण, गणेशखण्ड ११ अ०) गणेश देखो।

गजारि (सं० पु०) गजस्य अरिः शत्रुः, ६-तत्। १ सिंह। २ वृक्षविशेष, एक तरहका शालका पेड़। इसके पत्ते बड़े और मोटे होते हैं। इसका [illegible] खूंटीके लिये व्यवहृत होता है। यह आसाम और मधुपुरके जङ्गलमें अधिकतासे पाया जाता है।

गजारोह (सं० पु०) गजमारोहति आ-रुह-अण्। हस्तिपाल, पाहत, महावत।

गजाल (हिं० पु०) एक प्रकारकी मछली।

गजाशन (सं० पु०) गजैरश्यते भक्ष्यते अश, कर्मणि ल्युट्, यद्वा अश्नातीति अशनः गजोऽशनो भक्षको यस्य, बहुव्री०। गजभक्ष्य, पोपलका पेड़।

गजाशना (सं० स्त्री०) गजाशन-टाप्। १ भाङ्ग, सिद्धि। २ शल्लकीवृक्ष, सलईका पेड़। ३ पद्ममूल, कमल कन्द।

गजासुर (सं० पु०) गजाकारोऽसुरः। गजाकृति एक असुर। इसका उपाख्यान, इस तरह है—पूर्वकालमें महेश नामके एक अत्यन्त सच्चरित, विद्यावान् और न्यायवान् राजा थे। एक दिन राजा महेश बन्धुबान्धवके साथ भ्रमणार्थ बाहर निकले और वहां उन्होंने नारद मुनिको देखा। ऋषिको देख कर राजाने किसी तरहका सत्कार न किया। इस पर नारद मुनिने क्रोधित होकर शाप दिया—"नराधम! तुम्हारा जन्म गजयोनिमें होगा।" नारदकी बात मिथ्या न हुई। थोड़े दिनोंके पश्चात् वे गजयोनिमें प्राप्त हो गजासुर नामसे विख्यात हुए। इस असुरसे देवताओंको कभी कभी अधिक कष्ट भोगना पड़ा था। इसका चर्म शिवजीने धारण किया है। (स्कन्दपुराण गणेश० १०अ०)

गजासुरद्वेषी (सं० पु०) गजासुरम् द्वेष्टि द्विष्-णिनि। महादेव, शिव। कृत्तिवास देखो।

गजास्य (सं० पु०-क्लो०) गजस्य आस्यं मुखमिव आस्यमस्य बहुव्री०। १ गणेश। गजस्य आस्यं, ६-तत्। २ हाथीका मुख।

गजाह्व (सं० क्लो०) गजसहिता आह्वा यस्य, बहुव्री०। १ हस्तिनापुर। २ हस्तिनापुरके अन्तर्गत एक प्रदेश जिसका उल्लेख बृहत्संहितामें कूर्म विभागके मध्यस्थानमें है। "गजाह्वयश्चेति मध्यमिदं।" (बृहत्सं० १४ अ०)

गजाह्वय (सं० क्लो०) गजेन सहित आह्वयो यस्य, बहुव्री०। हस्तिनापुर। "युधिष्ठिरस्तानुजवनवासाद्गजाह्वयं।" (भारत १।६ अ०)

गजाह्वा (सं० स्त्री०) गजोपपदा आह्वा यस्याः बहुव्री०। १ गजपिप्पली, गजपीपर। २ हस्तिनापुरी।

गड़िया (हिं० स्त्री०) बिटाई करनेवालोंका लकड़ीका बना हुआ एक यन्त्र। इस पर बिटा हुआ तार उतारा रहता है।

गजी (फा० पु०) एक तरहका मोटा देशी वस्त्र। यह छोटे अरजका होता और सस्तेमें मिलता है। गाढ़ा, सल्लम।

गजेक्षण (सं० पु०) १ गजचक्षु, हाथीको आंख। २ दानवविशेष, एक राक्षसका नाम।

गजेन्द्र (सं० पु०) गजइन्द्र इव उपमितस० यद्वा गजस्य इन्द्रः, ६-तत्। १ गजश्रेष्ठ, उत्कृष्ट हाथी। २ गजमुख्याधिपति। ऐरावत। "नेत्रमियम् विकसतो विदधुर्गजेन्द्रः" (माघ)

३ अगस्त्य मुनिके शापसे गजयोनि-प्राप्त इन्द्रद्युम्न राजा। भागवतमें इनका उपाख्यान इस प्रकारसे लिखा

है—पूर्वकालको द्रविड़ देशमें पाण्डवंशीय इन्द्रद्युम्न नामक कोई प्रबल पराक्रान्त विष्णुभक्त राजा रहे। किसी दिन नरपति एकाग्रचित्तसे हरिको आराधना करते थे, उसी समय अगस्त्य मुनि वहां जा पहुंचे। राजाने उनको लक्ष्य न किया, अपनी मानसिक आराधनामें ही लगे रहे। इस पर मुनिको राग लगा। उन्होंने राजाको पुकार करके कहा था—नराधन! तूने ब्राह्मणका अपमान किया है, इसके फलमें तुझे कुञ्जरयोनि प्राप्त होगी। मुनिका वाक्य मिथ्या न निकला। कुछ दिन पीछे ही राजाको हाथीका शरीर धारण करना पड़ा। मृत्युकालको भी उनकी हरिभक्तिका ह्रास न होनेसे पूर्व-जन्मकी सकल कथा उन्हें स्मरण रही। नरपति इन्द्रद्युम्न हाथी हो करके वन वन घूमने लगे। दैवात् किसी दिन वह चित्रकूट पर्वतमें जा करके पहुंचे थे। इस पर्वतमें वरुणोद्यान नामक एक मनोहर उपवन है। राजाके उसी उपवनमें जा करके स्नान करनेको सरोवर अवगाहन करने पर एक कुम्भीरने उनको आक्रमण किया था। उनके सहचर अपर मातङ्ग उनकी साहाय्य पहुंचाने लगे और वह भी कुम्भीरसे खूब लड़े, किन्तु किसी क्रमसे उस महाबल कुम्भीरको पराजित कर न सके। इन्द्रद्युम्नने अन्य उपाय न देख करके विष्णुका स्तव किया था। उनके स्तवसे सन्तुष्ट हो विष्णुने जा करके उनकी रक्षा की। राजा उसी दिन शापसे भी मुक्त हो गये। विष्णुने राजाके प्रति सन्तुष्ट हो करके और एक वर दिया था—तुमने जिस स्तवसे हमें सन्तुष्ट किया है, उसको पढ़नेवाला कोई भी व्यक्ति ऐहिक कीर्ति पावेगा, उसका दुःस्वप्नदोष दूर हो जावेगा, दुःख उसके पास न पहुंच पावेगा और परमको यह स्वर्गमें जा करके आनन्द उड़ावेगा। प्रातःकाल उठ करके जो इस गजकृत विष्णुस्तवको पाठ करता, उसकी बुद्धि कभी कलुषित नहीं होती। भागवतके ८म स्कन्ध ४र्थ अध्यायमें उक्त स्तव लिखित हुआ है।

गजेन्द्रकर्ण (सं० पु०) गजेन्द्र इव कर्णो यस्य। शिव, महादेव।

गजेन्द्रगड़—बम्बईके धारवार जिलामें रोम तालुकका एक शहर। यह अक्षा० १५° ४४' उ० और देशा० ७५° ५८' पु० पर कलाद्गीसे ५१ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ८८५३ है।

महावीर शिवाजीने इस स्थान पर गजेन्द्रगढ़ नामका एक दुर्ग निर्माण किया था, इसी कारण इस नगरका नाम गजेन्द्रगढ़ पड़ा। यहां विरूपाक्षदेवका प्राचीन मन्दिर है और नगरके बाहर दुर्गा, रामलिङ्ग, रामसीता और पाण्डुरङ्ग प्रभृति देवताओंके मन्दिर अवस्थित हैं।

गढ़के निकट ही पहाड़की ओर एक शिवतीर्थ विद्यमान है जहां अनेक यात्री आकर ठहरते हैं। पहाड़के ऊपर बहुतसे तीर्थ और शिवालय हैं जिनमेंसे वीरभद्रका मन्दिर और पातालगङ्गा तीर्थ प्रधान हैं। पातालगङ्गाके पार्श्व होमें नन्दी मूर्ति है बहुतसी वन्ध्या-स्त्रियां संतानके लिये नन्दीकी पूजा करने आती हैं।

गजेन्द्रगुरु (सं० पु०) सङ्गीतमें रुद्रतालका एक भेद।

गजेन्द्रनाथ (सं० पु०) हाथियोंमें श्रेष्ठ।

गजेन्द्रमोक्षण (सं० क्लो०) १ वामनपुराणके किसी भागको आख्या। २ महाभारतके किसी भागका नाम।

गजेन्द्रविक्रम (सं० पु०) गजेन्द्र इव विक्रमो यस्य, बहुव्रो०। हाथोके सदृश पराक्रमी, वह जो हाथी सरीखे बलवान हो।

गजेर—भरोच जिलाका एक शहर। यह जंबुसरसे लगभग ६ मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। इसमें १३४८ घर और प्रायः ४०३७ मनुष्य वास करते हैं।

गजेष्टा (सं० स्त्री०) गजानामिष्टा, ६ तत्। भूमिकुष्माण्ड, बिलाइकन्द।

गज्जल (हिं० पु०) अञ्जीर

गजोदर (सं० पु०) गजस्य उदरमिवमुदरमस्य, बहुव्रो०। दैत्यविशेष, एक असुरका नाम।

गजोपकुल्या (सं० स्त्री०) गजप्रिया उपकुल्या पिप्पली. मध्यपदलो०। गजपिप्पली, गजपीपर, बड़ी पीपर। (भैषज्यरत्नावली)

गजोषणा (सं० स्त्री०) गजोपपदा ऊषण। गजपिप्पली, गजपीपर। (राजनि०)

गज्झा (हिं० पु०) १ बुलबुलोंका समूह जो पानी, दूधो या किसी तरल पदार्थमें उत्पन्न हो। गाज। २ खजाना; यह कोष। ३ संपत्ति, दौलत, धन।

गञ्ज (सं० पु०) गजि-घञ्। १ अवज्ञा, अपमान, अनादर। २ भाण्डागार, कोश, खजाना ३ खान। ४ गोष्ठगृह, गोशाला, वह स्थान जहां मवेशी रहते हैं।

गञ्जजगदल—बङ्गालमें वार्बकाबाद सरकारके अधीन एक महल्ल। (आइन-ई-अकबरी)

गञ्जभैरव—बम्बई प्रदेशके अहमदनगर जिलाके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह 'गञ्जिभैरो' नामसे मशहूर है। यहां हेमाडपन्थियोंका एक बृहत् शिवमन्दिर और इसके निकट बहुतसे प्राचीन ध्वंसावशेष पड़े हैं।

गञ्जन (सं० त्रि०) गजि-णिच्-ल्यु। १ तिरस्कार, निन्दा।

"नेत्रे खञ्जनगञ्जने सरसिज प्रत्यर्थि पाणिद्वयम्।" (साहित्यद०)

(क्लो०) २ गञ्ज भावे ल्युट्। तिरस्कार, अनादर, निन्दा।

गञ्जवर (सं० पु०) कोषाध्यक्ष, खजानची।

गञ्जा (सं० स्त्री०) गञ्ज-टाप्। १ हाट लगनेका स्थान, वह स्थान जहां बाजार लगता हो। २ मद्यभाण्ड, शराब रखनेका बरतन। ३ मदिरागृह, शराबको दुकान। ४ विजया, गांजा। ५ वह स्थान जहां चावल, धान रखा जाता हो, ठेक।

गञ्जाम—मन्द्राज प्रदेशका उत्तर जिला। यह बङ्गालको खाड़ी किनारे अक्षा० १८° १२' तथा २०° २६' उ० और देशा० ८३° ३०' एवं ८५° १२' पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ८३७२ वर्गमील है। गञ्जाम शब्दका अर्थ 'सबका भण्डार' है। देखनेमें यह तिकोना लगता है। इसके उत्तर उड़ीसा और देशी राज्य, पूर्व समुद्र और पश्चिमको विजगापटम् जिला है। गञ्जामका अधिकांश पहाड़ी और पथरीला है। परन्तु बीच बीचमें उपत्यकाएं और उपजाऊ मैदान आ गये हैं। यह मन्द्राजका सबसे सुहावना जिला है। जङ्गली पहाड़ों और घने पेड़ोंकी शोभा देखते ही बनती है।

पूर्वघाट पहाड़ गञ्जाममें उत्तरसे दक्षिण तक चला गया है। शृङ्गराज और महेन्द्रगिरिको चोटियां समुद्रपृष्ठसे प्राय: ५००० फुट ऊंची हैं। परलाकिमेदिके पीछे दक्षिणको देवगिरि ४५३५ फुट तक उठा है। यह पहाड़ गञ्जाम जिलेको पहाड़ी और मैदानी दो भागोंमें बांट देते हैं। पहाड़ी भागको गञ्जामकी एजेन्सी भी कहते हैं। यहांके अधिवासी जङ्गली हैं और कानूनके मुताबिक न चलनेसे उनका शासन एक विशेष कलेक्टर द्वारा किया जाता, जो गवनरका एजेण्ट कहलाता है। उनके मुकदमोंकी अपील हाईकोट और सकौन्सिल गवर्नरको को जाती है।

गञ्जाम असली झीलें नहीं हैं। परन्तु समुद्र किनारे और कभी कभी भीतरी भागमें भी जो बड़े बड़े तालाब मीठे और खारी पानीसे भर जाते, सागरम् कहलाते हैं। इनमें सबसे बड़ा चिलका झील उत्तर सीमा पर अवस्थित है।

इस जिलेको ऋषिकुल्या, वंशधारा और लाङ्गुल्या तीनों प्रधान नदियोंसे सिंचाईका काम लिया जाता है। यह पूर्वकी खाड़ीमें जा कर गिरती हैं। महानदी और गोदावरी ऋषिकुल्याकी सहायक नदियां हैं। लाङ्गुल्या पर चिकाकोलके पास एक बढ़िया पुल बंधा है।

गञ्जाम मन्द्राज प्रदेशका एक आर्द्र प्रदेश है। यहां भालू और लगड़भग्गे साधारणत: देख पड़ते और भेड़िये, तेंदुए और चीते भी मिलते हैं। पहाड़ियोंके उतारमें कई प्रकार हरिण और नीलगायें पायी जाती हैं। जङ्गली भैंसे और जङ्गली सूअर बहुत कम हैं। जङ्गली कुत्ते शिकारमें आफत डाल देते हैं। गञ्जामका जलवायु ज्वरप्रद है। यहां जाड़ा बहुत कम पड़ता और पानी खूब बरसता है

ऐतिहासिक दृष्टिसे गञ्जाम प्राचीन कलिङ्गका एक भाग रहा। परन्तु कभी कभी वेंगी राज्य इसका दक्षिण प्रान्त दबा लेता था। ई०से २६० वर्ष पूर्व मौर्य-सम्राट् अशोकने इसको विजय किया था। फिर सम्भवत: यह वेंगीवाले आन्ध्र नृपतियोंके हाथ लगा। यह दोनों राजवंश बौद्ध रहे। जौगड़में अशोक अपना एक राजशासनपत्र छोड़ गये हैं। ई० तीसरी शताब्दीको आन्ध्र इस प्रान्तसे दूरीभूत हुए और कलिङ्गके गाङ्गराज उनके स्थान पर आ बैठे। ई० १०वीं शताब्दीके अन्त और ११वीं शताब्दीके आरम्भको चोलोंने वेंगी और कलिङ्गके साथ गञ्जामका भी कुछ भाग जीता था। महाराज राजेन्द्र-चोल महेन्द्रगिरि पर अपने विजयके लेखप्रमाण छोड़ गये हैं। फिर गाङ्ग राजाओंने ४ शताब्दियों तक यहां

राजत्व किया। १५वीं शताब्दीको उड़ीसाके गनपति वंशोय किसी मन्त्रीने अपने प्रभुको बध करके सिंहासन छीना था। प्राय: १५७१ ई०को गोलकुण्डाके कुतुबशाही घरानेने गजपतियोंको मार भगाया और १८० वर्ष तक चिकाकोलसे मुसलमान गञ्जाम शासन करते रहे। शहर-में मुसलमानोंकी एक ममजिद बनी है।

१६८७ ई०को बादशाह औरङ्गजेबने गोलकुण्डाको अपना राजत्व स्वीकार करने पर वाध्य किया था। फिर उनके दक्षिणी सूबेदार चिकाकोलके शासकोंको नियुक्त करते रहे। १७५३ ई०को इन्हीं दो सूबेदारोंकी सेवा करनेके पुरस्कारमें फरासीसियोंने चिकाकोलकी सरकार पायी, जिसमें वर्तमान जिला भी मिला था। १७७१ ई०को डी बुसी यहां शासन स्थापित करने आये थे, परन्तु दूसरे ही वर्ष लालीने उन्हें दक्षिणकी ओर मन्द्राज-के घेरेमें सहायता करनेको बुला लिया। उनके जाने पर ही क्लाइवने कर्नल फोर्डको दक्षिणकी ओर बङ्गालकी फौजके साथ भेजा था। १७५८ ई० जनवरी मासको उन्होंने डी० बुसीके उत्तराधिकारीको हरा फरा-सीसी सदर मसुली-पटम अधिकार कर लिया। इस पर दक्षिणके सूबेदारोंने फोर्डसे सन्धि की कि वह फरासी-सियोंको कभी उन भागोंमें फिर बसने न देंगे। १७६५ ई०को एक फरमानके द्वारा शाह आलमने इस सन्धिको स्वीकार किया था। १७६६ ई०को सूबेदारसे दूसरी सन्धि भी हुई। इसी प्रकार अंगरेजोंने सारी उत्तर सरकार पायी थी।

परन्तु गञ्जाममें शान्ति स्थापित करते ७० वर्ष लग गये। १८०३ ई०को परलाकिमेदि जमीन्दारीके साथ चिकाकोल विभाग इसमें मिला था। १८१६ ई०को चार पांच सौ पिण्डारी जयपूरसे आ इस जिलेमें घुसे और सारे जिलेको लूटा और जला डाला।

१८३२ ई०को बिसोइयोंके अत्याचारसे इस जिलेमें जङ्गी कानून लगा था। बिसोई और उनके किले एक एक करके पकड़े और छीने गये। कुछ लोगोंको फांसी और कालापानी होनेसे देशमें शान्ति विराजने लगी। १८३६ ई०को गुमसुरमें भी यही नीति चलनेसे फिर कोई झगड़ा नहीं हुआ और नरवलिकी प्रथा भी उठ गयी।

औगढ़ोमें अशोकके राजशासन पत्रके सिवा जिलेमें बहुत पुराने मन्दिर खड़े हैं उनकी बनावट, कारीगरी और शिलाफलकोंसे कलिङ्गका प्राचीन इतिहास खुलता है। श्रीकूर्ममका विष्णुमन्दिर और महालिङ्गमका शिवा-लय देखने योग्य है।

इस जिलेमें कोई ८ नगर और ६१४५ गांव हैं। लोकसंख्या २०१०२५६ है।

ब्रह्मपुर, चिकाकोल और परलाकिमेदिमें म्यु,निस-पालिटी है। जिलेके अर्ध दक्षिण भागमें तेलगु और उत्तरमें उड़िया भाषा चलती है। एजेन्सी प्रान्तमें केवल खोंड बोली बोलते; किन्तु दक्षिणी पार्वत्य प्रदेशमें शबर भाषा ही अधिक व्यवहार करते हैं।

कुछ खोंड़ों और शावरोंको छोड़ करके सब लोग तेलगु या उड़िया हैं। खेतीके सिवा कपड़ा भी बुना जाता है। चिकनी मट्टीमें जलदी बोते हैं चावल बहुत होता है। जोतने बोने और खेतीके दूसरे कामोंमें बैल और भैंसे दोनों लगाये जाते हैं। गुमसुरके जङ्गलमें बढ़िया सालकी लकड़ी उपजती है।

गञ्जाममें खानें नहीं हैं। इच्म, सुरला, नवपद और कलिङ्गपत्तनमें नमक खूब बनता है। मैदानके गांवोंमें साधारण कपड़ा और ब्रह्मपुरमें रेशमी माल तैयार होता है। रेशमी वस्त्रको बैंजनी और लाल रंग देते हैं। चिकाकोल अपनी बढ़िया मलमलके लिये प्रसिद्ध है। पहाड़ी भागमें खोंड़ों और शावरोंके पहननेका मोटा कपड़ा बनता है। टसर पहननेकी भी बड़ी चाल है। रसेलकोंडके पास बेलुगुन्तमें बढ़िया पानदान तैयार होते हैं।

गञ्जामसे विशेषत: अनाज, दाल, चमड़ा, सन, तेलहन, हलदी, लकड़ी, नमक और नारियल बाहर भेजा जाता है। मंगायी जानेवाली चीजोंमें चावल, कपड़ा, रस्सी, शीशा, बर्तन, धातु तथा धातुके द्रव्य, मट्टीका तेल, मसाला और बोरे हैं। गोपालपुर, कलिङ्गपत्तन और बरुआ इस जिलेके बन्दर हैं। मैदानोंमें कोमती और पहाड़ोंमें सोंधा व्यापार करते हैं। नसरनपेट, बरुसिलि, हिरामण्डल म, लक्ष्मी नरसुपेट, रायगढ़, चेल्लिगोदी, सरङ्गोदी और तिक्कावल्लिमें बड़ा बजार लगता है।

बङ्गाल-नागपुर-रेलवे इस जिलेमें उत्तरसे दक्षिण तक बराबर चली गयी है। मंदानोंमें ७२८ मील पक्की सड़क है एजेन्सीमें भी कहीं कहीं पक्की और अधिकांश कच्ची सड़क लगी है।

मालूम नहीं, हिन्दुओं और मुसलमानोंके समय गञ्जाम जिलेका मालगुजारी क्या थी। हिन्दू राजा सम्भवत: खेतकी उपजका आधा भाग कर लेते थे। परन्तु मुसलमानोंने भा करके मालगुजारी लगायी और १८१७ ई०को अंगरेजोंने रैयतवारी बन्दोबस्त कर दिया।

तेलगु अंगरेजी और उड़िये देशी भाषा अच्छी पढ़ते हैं। यहा ो प्रान्तमें शिक्षा बहुत कम है।

२ मन्द्राज प्रान्तके गञ्जाम जिलेका एक जमीन्दारी तहसील। यह अक्षा० १८° २३' तथा १८° ४८' उ० और देशा० ८४° ५६' एवं ८५° १२' पू०के बीच पड़ता है। इसमें कालिकोत, बिरिदि, हुम्म, और पलूर राज्य लगते हैं। गञ्जाम तहसीलका क्षेत्रफल ३०८ वर्ग मील है। यह बड़ा मनोहर स्थान है। आबहवा ठण्डी और जमीन समुद्रकी ओर ढालू है। लोकसंख्या कोई ८८७१४ है।

३ मन्द्राज प्रान्तके गञ्जाम जिलेका एक नगर। यह अक्षा० १८° १३' उ० और देशा० ८५° ५' पू०में ऋषिकुल्या नदीके मुहाने पर अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग ४३८७ होगी। यहां १७६४ ई०को कटकके मराठोंसे बचनेके लिये जो किला बना, उसका ध्वंसावशेष पड़ा है।

गञ्जिका (सं० स्त्री०) गञ्जा स्वार्थे कन्। १ मदिरागृह, शराब रखनेका घर। २ गांजा।

गञ्जिफा (फा० पु०) एक गुच्छा तास।

गझिन (हिं० पु०) १ सघन, घना। २ मोटा।

गटई (हिं० पु०) ग्रीवा, गला।

गटकना (हिं० क्रि०) खाना, निगलना।

गटगट (हिं० पु०) एक तरहका शब्द, जो कई बारके निगलने या पानी पीनेके समय गलेसे उत्पन्न हो।

गटपट (हिं० स्त्री०) दो या दोसे अधिक व्यक्तियों या चीजोंका परस्पर मेल, मिलावट। २ संयोग, प्रसंग, सहवास।

गटापारचा (हिं० पु०) श्वेत दुग्धवाले वृक्षोंसे निकला हुआ एक तरहका गोंद। यह रबरके जैसा होता है। लेकिन उतना कोमल और लचीला नहीं होता। यदि बहुत दिन तक यह बाहरहीमें धूप और पानीमें छोड़ दिया जाय, तो भी इसमें किसी प्रकारकी खराबी नहीं होती है।

गटी (सं० स्त्री०) ग्रन्थि, गांठ।

गट्टा (हिं० पु०) हथेली और पहुंचेके मध्यका योग, कलाई।

गट्टी (हिं० स्त्री०) जहाज या नावमेंकी उस खम्भेके बीचोंको चूल जिसमें पाल लगी रहती है।

गट्ठर (हिं० पु०) बड़ी गठरी, बोझा।

ग० [illegible] पु०) १ भार, बोझ। २ बड़ी गठरी।

गठकटा (हिं० पु०) १ गांठ काट कर रुपये लेनेवाला। २ धोखा या अन्यायसे रुपया लेनेवाला।

गठदण्ड (हिं० पु०) एक प्रकारका दण्ड जो दोनों हाथोंके मध्यके स्थानमें गट्टा बनाकर किया जाता है। इस तरहकी सजामें अधिक कष्ट होता है।

गठन (हि० स्त्री०) बनावट।

गठबन्धन (सं० पु०) विवाहमें दुलहा और दुलहिनके कपड़ोंके सिरेको परस्पर मिला कर गांठ बांधते हैं, इसीको गठबन्धन कहते हैं।

गठरी (हिं० स्त्री०) बड़ी पोटली, बकची।

गठरेवां (हिं० पु०) पशुओंमें एक प्रकारका रोग। इसके होनेसे पशुओंकी जांघ, पसली और जीभके नीचे सूजन हो जाती है। पशुओंमें यह भारी रोग है। इसमें बहुत कम पशु बचते हैं। चिकित्सकोंका मत है कि यह छूतकी बीमारी है। जिस पशुको यह रोग होवे उसे बन्द और साफ सुथरे स्थानमें रखना चाहिये।

गठानी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका कर जो जमींदार आसामियोंसे वसूल करते हैं।

गठाव (हिं० पु०) गठन, बनावट।

गठिबन्ध (सं० पु०) गठबन्धन, गठजोड़।

गठिया (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका बोरा जिसमें अनाज परिपूर्ण कर व्यापारी लोग बैल या घोड़े पर लादते हैं। २ पोटली, छोटी गठरी। ३ कोरे कपड़ेकी गांठ। ४ एक प्रकारकी बीमारी जिसके होनेसे घुटनोंमें सूजन

और दर्द होता है। जिस अंगमें यह रोग होता है, वह अंग फैलता नहीं है। इस बीमारीमें कभी २ ज्वर और सन्निपात भी हुआ करता, जिससे रोगी शीघ्र ही मर जाता है। यह रोग विशेष कर जोड़ों या गिरहोंमें हुआ करता है। ५ वृक्षमें एक प्रकारका रोग। इसमें डालियोंका फैलना समाप्त हो जाता है तथा पत्तियाँ सिकुड़ और ऐंठ जाती हैं। यह रोग सिर्फ आम, जामून बड़े बड़े वृक्षोंमें ही नहीं होते, वरन् फसली पौदोंमें भी हुआ करता है। उरद, मूंग तथा कुम्हड़ा, ककड़ी, करैला आदि तरकारियोंमें भी यह रोग उत्पन्न होकर उन्हें नाश कर डालता है।

गठिवन (हिं० पु०) मझोले तरहका एक वृक्ष। इसकी शाखायें पतली और पत्तियोंमें जगह जगह पर गिरह होते हैं। इसमें नीले रंगके फूल लगते हैं। नेपालकी उपत्यकामें यह पेड़ पाया जाता है। इसकी गोलाकार कलियां दवामें उपयोगी हैं। वैद्यकमें इसे तीच्ण, चरपरा, गरम, अग्निदीपक तथा कफ, वात, श्वास और दुर्गन्धको नाश करनेवाला माना है। खुजली भी इस दवासे जाती रहती है।

गठुरा (हिं० पु०) भूसेकी गांठ जो खलिहानमें फेंक दी जाती है। इसे बुन्देलखण्डमें गेठुआ और अवधमें खूंटी बोलते हैं।

गठुवा (हिं० पु०) १ कपड़ेका एक भाग। जुलाहे इसे करघेमें रखते हैं, जिससे कि उसके तागेसे तानेके तागों-को गठ कर बुननेके लिये चढ़ावें। २ गेठुरा, गंठरा खूंटी।

गठौंद (हिं० स्त्री०) १ गांठकी बंधाई, गिरहबन्दी। २ धरोहर, थाती।

गठौत (हिं० स्त्री०) मित्रता, घनिष्टता, मेल, मिलाप। २ अभिसंधि, सांट गांठ।

गठौती (हिं० स्त्री०) १ मैत्री, घनिष्टता। २ षड़यन्त्र, गठी गठाई बात।

गढ़ंक (हिं० पु०) बारूद, गोले और हथियारादि रखने-का स्थान, मेगजीन।

गढ़ंगिया (हिं० वि०) घमण्ड करनेवाला, शेखीबाज।

गढ़न्त (हिं० स्त्री०) टोटके या अभिचारके लिये गाड़ने-को वस्तु। तांत्रिक या प्रेतविद्याके जाननेवाले मारण, मोहन और उच्चाटनके लिये थोड़े पदार्थोंको मंत्र पढ़ कर किसी चौराहेमें गाड़ देते हैं और इस गाड़नेको गढ़न्त कहते हैं।

गड (सं० पु०) १ मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। २ व्यवधान, ओट, आड़। ३ परिवेष्टन, घेरा। ४ खाई। ५ गढ़। ६ अन्तराय, विघ्न, बाधा।

गड़—गुजरातमें रेवाकान्थाके अन्तर्गत शङ्खरा मेहवास-का एक राज्य। इसके उत्तर और पूर्वमें छोटा उदय-पुर, दक्षिणमें नर्मदा और खान्देश तथा पश्चिममें पला-सिनी और वीरपुर है। इसका क्षेत्रफल २१ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः ३०१८ है। इस राज्यमें १२८ ग्राम लगते हैं। अधिवासी प्रायः भील जातिकी हैं। चौहान राजपुत वंशीय एक सामन्त इस राज्यके अधिवासी हैं। सालाना आमदनी ८३७७ रु० है और इसमेंसे छोटा उदयपुरके राजाको ३६५ रु० देना पड़ता है।

गड़क (सं० पु०) गड़ संज्ञायां कन्। मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली।

गडक (अ० पु०) १ डूबाव। २ डूबनेका शब्द।

गड़गड़ा (हिं० पु०) एक प्रकारका हुक्का।

गड़ग—१ बम्बई प्रान्तके धारवाड़का पूर्वीय ताल्लुक। यह अक्षा० १५° २' और १५° ३८' उ० तथा देशा० ७५° २६' एवं ७५° ५७' पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ६८८ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १३७५७३ है। कप्पट पहाड़ सबसे बड़ा है। जलवायु मातदिल और अच्छा है। डम्बल तालाबोंसे खेत सींचे जाते हैं।

२ बम्बई प्रान्तीय धारवाड़ जिलेके गड़ग ताल्लुकका सदर, यह अक्षा० १५° २५' उ० और देशा० ७५° ३८' पू०में दक्षिण मराठा रेलवे पर अवस्थित है। इस नगर-की लोकसंख्या ३०६५२ है। १८५८ ई०को यहां म्युनिसपालिटी पड़ी। गड़गमें कपास और सूत कातना रेशमी कपड़ोंका बड़ा व्यवसाय रहता और यहां जिलेके का एक कारखाना भी चलता है। यहां पड़ता है। अच्छे अच्छे मंदिरोंका ध्वंसावशेष देख कि गड़गमें इनमें कुछकी शिलालिपियां बतलाती हैं ९६१से ११८३ ८७३से ११७० तक पश्चिमी चालुक्यों,

तक कलचुरियों, १०४७से १३१० तक होयसल बल्लाल, और १३२६से १५६५ ई० तक विजय नगरके राजाओंका गड़गमें अधिकार रहा। १६७३ ई०को नसरताबाद या धारवाड़ जिलेकी बङ्कापुर सरकारका प्रधान जिला था। १८१८ ई०को जनरल मुनरोने गड़गको घेर लिया। इसमें अदालत, अस्पताल और विद्यालय वर्तमान हैं।

गड़गड़ाहट (हिं० स्त्री०) १ गड़गड़ानेका शब्द। २ हुक्का पीनेका शब्द, वह आवाज जो हुक्का पीनेसे निकलती हो।

गड़गड़ी (हिं० स्त्री०) नगाड़ा, डग्गी।

गड़गूदड़ (हिं० पु०) चिथड़ा लत्ता, फटे पुराने कपड़ेका टुकड़ा।

गड़गाँ—आसाममें शिवसागर जिलाके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर और गड़। यह शिवसागर नगरके दक्षिण-पूर्व और दीखु नदीके तीर पर अवस्थित है। एक समय यह अहोम् राजाओंकी राजधानी थी। इसका ध्वंसावशेष अबतक भी विद्यमान है। राजगृह एक कोस विस्तृत ईंटोंकी दीवारोंसे घिरा था। आजकल उसका कुछ चिह्न दिखाई पड़ता है।

गड़चाँद—बङ्गदेशके अन्तर्गत त्रिहुत जिलाका एक परगना इस परगना होकर छोटी गण्डक, बाघमती और लखनदायी नदी प्रवाहित हैं। यहां बहुतसी पक्की सड़क हैं। इस परगनाकी अदालत मुजफरपुर है। इसके अन्तर्गत सरीफ उद्दीनपुर, धर्मौर, अकबरपुर और कई एक ग्राम प्रसिद्ध हैं। अकबरपुर ग्राममें चामुण्डा देवीका मन्दिर है जहां प्रतिवर्ष आश्विन मासमें एक बड़ा भारी मेला लगता है।

गड़दार (हिं० पु०) मतवाले हाथीके साथ भाला लेकर चलनेवाला नौकर, वह नौकर जो बदमाश हाथीके साथ गटगट लेकर चलता हो।

गिद्ध (हिं० पु०) पक्षिविशेष, एक बड़ी चिड़िया।

गड़प (फा० स्त्री०) पानी या कीचड़में किसी वस्तुके गिरनेका शब्द।

गड़प्पा (हिं० पु०) धोखा खानेका स्थान।

गड़बड़ (हिं० स्त्री०) १ असमतल, ऊंचा नीचा। २ अनियमित, वह जो ठीक समय पर न किया जाता हो।

गड़बड़ा (हिं० पु०) गर्त, खत्ता, गड्ढा।

गड़बड़ी (हिं० स्त्री०) अव्यवस्था, गोलमाल।

गड़मान्दारण—वर्धमान जिलाके जाहानाबाद महकुमाके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। इसका दूसरा नाम विठरगढ़ है। मुसलमानोंके समयमें यहां मृत्तिकानिमित्त एक बड़ा गड़ था। यहां इसमाईल गाजी घणि लस्कर नामक मुसलमान साधुकी कब्र है। स्थानीय मुसलमान अधिवासी साधुको अत्यन्त भक्ति श्रद्धाके साथ देखते हैं।

गड़मुक्तेश्वर—उत्तर पश्चिमाञ्चलके मेरठ जिलाका एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० २८° ४७´ उ० और देशा° ७८° ६´ पू०में गङ्गाके दक्षिण किनारे बूढ़ीगङ्गा-सङ्गमसे दो कोस नीचेमें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ७६१६ है। बहुतोंका कहना है कि यह नगर एक समय प्राचीन हस्तिनापुरका एक महल्ला कह कर प्रसिद्ध था। यहां मुक्तेश्वर महादेवका मन्दिर है। इन्हींके नाम पर नगरका नाम रखा गया है। इसके अतिरिक्त और कई एक पुरातन तथा ८० सतीस्तम्भ हैं। प्रतिवर्ष कार्तिक मासमें एक भारी मेला लगता है। जिसमें एक लाखसे अधिक मनुष्य जुटते हैं।

गड़यन्त (सं० पु०) गड-क्षिच-भञ्ज। मेघ, बादल।

गड़रातवा (हिं० पु०) लौहविशेष, एक तरहका लोहा जो प्राचीन काल मध्य भारतवर्षमें निकलता था।

गड़रिया—युक्त-प्रदेशकी एक जाति। यह भेड़ बकरी पालते और चराते तथा उनके कम्बल आदि बनाते हैं। गड़रिया अपना परिचय क्षत्रियवर्ण जैसा देते हैं। वे कहते हैं कि गड़वासी राजवंशियोंका नाम बिगड़ करके गड़रिया हो गया है। दूसरोंका मत है कि गदाधारी हनुमान्के उपासकों अथवा भेड़ (गद) पालनेवालोंको गड़रिया कहा जाता है। इनके बहुतसे भेद मिले हैं।

गड़ल ४ (म० क्ली०) गड़देशम् लवणं। शाम्बरदेशोत्पन्न शुभ्र लवण, स भर नमक। इसका पर्याय—शुभ्र, पृथ्वीज, गड़देशज, गोड़ल, महारम्भ, साम्बर और सम्बरोद्भव है। इसका गुण—उष्ण, लवण, मलनाशक, दीपन, कफ, वात, और अश्मनाशक तथा कोष्ठपरिष्कारक है। भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—लघु, वातनाशक, अतिशय उष्ण, भेदकारक पित्तवर्धक, तीक्ष्ण और कटुपाक है।

गड़वा—बङ्गदेशमें लोहारडङ्गा जिलाके अन्तर्गत एक नगर यह अक्षा० २०° ८´ ४५´´ उ० और देशा० ८३° ५१´ १०´´ पू०में दो॰ा नदीके तीर पर अवस्थित है। पालामऊ और सरगुजा प्रभृति विभागोंका उत्पन्न द्रव्य यहां जमा किये जाते और इसी स्थानसे दूर २ देशोंमें भेजे जाते हैं। यहांसे रेशम, चमड़ा, तिल, तोसी, घृत, रूई और लोहा संगृहीत होकर बाहर भेजे जाते तथा चावल, पीतल और कांसेका बर्तन, विलायती वस्त्र, कम्बल, रेशमी कपड़ा, तम्बाकू और ममाला इत्यादि चीजें दूसरे देशोंसे यहां आती हैं।

गड़वेता—मेदिनीपुर जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यहां बहुत प्राचीन सर्वमङ्गलादेवी और कंसेश्वर शिवके मन्दिर विद्यमान हैं। पूर्व समय यहां एक बृहत्‌गढ़ था जिस जिस स्थान पर गढ़का बड़ा द्वार था, आजकल वह लालदरवाजा, हनुमानदरवाजा, पेशा दरवाजा और राउता दरवाजा नामसे प्रचलित है। यहां रायकोटके राजा तेजचन्द्रका राजभवन था। इसके चारों तरफ बड़ी बड़ी तोपें रखी जाती थीं। अङ्गरेजोंके समय में सब तोपें ले ली गईं।

गड़हद—बम्बई प्रान्तीय काठियावाड़के भावनगर राज्यका एक नगर। इसकी लोकसंख्या प्राय: ५२७५ है। यह स्वामी नारायणकी सम्प्रदायका, जिसे युक्तप्रदेशके सुधारक सहजानन्दने १८०४ ई०को चलाया था, एक प्रधान केन्द्र है। १८३० ई०को वह यहीं बहुतसे काठियों, कोलों और भीलोंको अपना मतावलम्बी बना चल बसे। गड़हदमें इस सम्प्रदायवालोंके लिये चन्दनकी मालाएं बहुत बनती हैं और उनका एक अच्छासा मन्दिर भी यहां खड़ा है।

गड़हा (हिं० पु०) गर्त, गहरी जमीन, खाता, गढ़ा।

गड़ हिङ्गलाज—बम्बई कोल्हापुर राज्यके गड़हिङ्गलाज तालुकका सदर। यह अक्षा० १६° १२´ उ० और देशा० ७४° २५´ पू०में हिरण्यकेशी नदीके वाम तट पर अवस्थित है। इसकी लोकसंख्या कोई ६३७३ होगी। प्रत्येक रविवारको बाजार लगता, जिसमें बहुतसा चावल और दूसरा अनाज बिकता है। नगरके मध्य कालेश्वरका मन्दिर बना है। शहरसे प्राय: ३ मील उत्तर बद्रिरीका मन्दिर है। वहां सालमें मार्च मासको मेला लगता है।

गड़ही (हिं० स्त्री०) क्षुद्र गर्त, छोटा गड़हा।

गड़ा—१ मध्यभारतवर्षके जब्बलपुर जिलाका एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० २३° १०´ उ० और देशा० ७९° ५६´ ३०´´ पू० पर समुद्रसे ७५ कोस दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। पहले यह गड़मण्डलकी राजधानी था। ११०० ई०को मदनसिंहने निकटस्थ पहाड़के उपर मदनमहल नामका एक दुर्ग निर्माण किया था। इस दुर्गका भग्नावशेष भी आजकल देखनेमें अधिक सुन्दर लगता है। उसके निम्न भागमें गङ्गासागर और बालसागर नामके दो सरोवर हैं। इस शहरमें एक उत्कृष्ट विद्यालय है। पूर्व समय यहां एक टकशाल था, जिससे बालाशाही नामक मुद्रा प्रस्तुत होकर समग्र बुन्देलखण्डमें प्रचलित था।

२ मध्यभारतके ग्वालियर विभागके अन्तर्गत एक सामान्य राज्य। गढ़ा देखो।

गड़ारी (हिं० स्त्री०) मंडलाकार रेखा, वृत्त, घेरा।

गड़ावन (हिं० पु०) लवणविशेष, एक प्रकारका नमक।

गड़ि (सं० पु०) १ वत्सतर, बच्चा, बछड़ा। २ मट्ठर बैल, सुस्त बैल।

"गुनानामेव दौरात्म्याद् धुरि धुर्यो नियुज्यते।
असंजातकिणस्कन्ध: सुखं स्वपिति गौर्गडि:॥" (काव्यप्रकाश)

३ बेदाग जो चेचकके बाद शरीरमें रह जाते हैं।

गड़ु (सं० पु०) १ गलगण्ड, गलेका एक रोग जिसमें गलेमें सूजन हो आती है। २ कुब्ज, कूबड़, बत.री। ३ प्रत्यास्त्र, बाण, गांसी, तीर या बरछी आदिका फल। ४ किञ्चुलक, केंचुआ नामका कीड़ा। ५ विषमग्रन्थि, कठिन गांठ। ६ निरर्थक, वह जिसका कोई प्रयोजन न हो। ७ राजपूतानाके एक कवि। इनका जन्म १७१३ ई०में हुआ था। इनके रचित कूट छप्पय तथा अन्य सामयिक कविताएं सुप्रसिद्ध हैं।

गड़ुक (सं० पु०) १ भृङ्गार, कमंडलु। २ ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम।

गड़ुई (हिं० स्त्री०) टोंटी लगा हुआ एक छोटा पानी पीनेका बरतन, झारी।

गड़ुर (सं० त्रि०) कुब्ज, कूबड़ा।

गड्डुल (सं० त्रि०) गड्डुः कुब्जरोगोऽस्त्यस्य । कुब्ज, कुबड़ा ।

गडुवा (हिं० पु०) एक तरहका लोटा। इसमें जल गिरानेके लिये बत्तखके गलेके जैसा एक नली लगी रहती है, तमहा ।

गड्डुशिरस् (सं० त्रि०) शिरसि गड्डुर्यस्य, बहुव्री० । सङ्कीर्ण गलेका मनुष्य, जिसका गला तंग हो ।

गडेर (सं० पु०-स्त्री०) मेघ, बादल ।

गडोत्थ (सं० क्ली०) गडात् गडाख्यदेशात् उत्तिष्ठति, उद्-स्था-क । शांभर नमक ।

गडोल (सं० पु०) १ गुड़ । २ ग्रास, गांव । ३ ग्रास, कौर ।

गड्ड (सं० पु०) वस्तुओंका समूह, जो एक दूसरेके ऊपर रखा रहता है, गञ्ज ।

गड्डर (सं० पु०) मेष, भेड़ा ।

गड्डरिक (सं० पु०) गड़ेरिया ।

गड्डरिका (सं० स्त्री०) मेषपंक्ति, भेड़ोंकी कतार ।

गड्डल (सं० पु०) गड़-बाहुलकात् ड़-ल् । मेष, भेड़ा ।

गड्डलिका (सं० स्त्री०) गड्डलं अनुसरति, गड्डल-ठन् । १ मेषपंक्ति, भेड़ोंकी कतार । २ धारावाही, क्रमागत, लगातार ।

गड्डलिकाप्रवाह (सं० पु०) गड्डलिकायाः प्रवाह इव, ६-तत् । भेड़ियाधसान ।

गड्डाम—नीच, लुच्चा, बदमाश ।

गड्डारिका (सं० स्त्री०) नदीविशेष, वह नदी जिसका प्रवाह अधिक प्रबल हो ।

गड्डालिका (सं० स्त्री०) मेषपंक्ति, भेड़ोंकी कतार ।

गड्डी (हिं० स्त्री०) ढेर, पुञ्ज ।

गड्डुक (सं० पु०) जलपात्रविशेष, एक तरहका पानी-का बरतन ।

गढ़ (हिं० पु०) १ खाँई । २ किला ।

गढ़कमान (हिं० पु०) किलेदार, किलेकी फौजका अफसर ।

गढ़त (हिं० स्त्री०) आकृति, बनावट ।

गढ़न (हिं० स्त्री०) गठन, बनावट ।

गढ़नायक—उड़ीसा प्रान्तके खण्डायतोंका एक भेद । यह पूर्वकालमें गढ़ोंके अधिकारी थे ।

गढ़पति (हिं० पु०) १ किलादार । २ राजा ।

गढ़वाय, जैनियोंका जन्मकल्याणक-क्षेत्र । यहां जैनियोंके छठे तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभुका जन्म हुआ था । पहिले यहां कौशाम्बी नगरी थी । (तीर्थमाला ११८)

गढ़मण्डल—मध्यप्रदेशके गोण्डवानाके अन्तर्गत एक विस्तृत क्षेत्र । अति प्राचीन कालसे यह भूभाग स्वाधीन हिन्दू राजाओंके अधिकारमें था । उस समय गढ़ा और मण्डल नामके स्थानमें हिन्दू राजाओंकी राजधानी थी । अब भी उक्त दोनों स्थानोंमें प्राचीन खण्डहर और हिन्दू राजाओंके समयके शिलालेख मिलते हैं; जिनसे वहांकी पहिलेकी समृद्धिका काफी प्रमाण मिलता है । पहले समयमें भट्ट, सुहागपुर, छत्तीसगढ़, सम्बलपुर, गाड़पुर, यशपुर इत्यादि जिले भी उक्त गढ़मण्डलके अन्तर्गत थे । अब वैसी समृद्धि नहीं रही, गढ़ा और मण्डल नामके दो नगरोंमें ही सिर्फ पहलेके नामका परिचय मिलता है । पहिले गढ़मण्डलमें जो राजा राज्य करते थे, नीचे उनके नाम उद्धृत किये जाते हैं—

राजाका नाम	राज्यकाल
यादवराय	३८२ ई० (?)
माधवसिंह	३८७ ,,
जगन्नाथ	४१० ,,
रघुनाथ	४४५ ,,
रुद्रदेव	५०९ ,,
विहारीसिंह	५१७ ,,
नरसिंहदेव	५५८ ,,
सूर्यभानु	६०१ ,,
वासुदेव	६१० ,,
गोपालसाही	६४८ ,,
भूपालसाही	६६९ ,,
गोपीनाथ	७०९ ,,
रामचन्द्र	७२६ ,,
सुरतानसिंह	७२९ ,,
हरिहरदेव	७५८ ,,
कृष्णदेव	७७५ ,,
जगतसिंह	७८९ ,,
महासिंह	७९८ ,,
दुर्जनमल्ल	८२१ ,,
यशस्कर्ण	८४० ,,
प्रतापादित्य	८७६ ,,
यशचन्द्र	९०० ,,
मनोहरसिंह	९१४ ,,

गोविन्दसिंह	९४७ ई०
रामचन्द्र	९६८ ,,
कण नाथ रत्नसेन	९८९ ,,
कमलनयन	१०२६ ,,
नरहरिदेव	१०३२ ,,
वीरसिंह	१०१९ ,,
त्रिभुवनराय	१०६५ ,,
पृथिवीराय	१०९३ ,,
भारतीचंद्र	१११४ ,,
मदनसिंह	१११६ ,,
जयसेन	११५६ ,,
रामशाही	११९२ ,,
ताराचन्द	१२१६ ,,
उदयसिंह	१२५० ,,
भानुमित्र	१२६५ ,,
भवानीदास	१२८१ ,,
शिवसिंह	१२९३ ,,
हरिनारायण	१३१९ ,,
अचलसिंह	१३२५ ,,
राजसिंह	१३५४ ,,
दादीराम	१३८५ ,,
गोरखदास	१४२२ ,,
अर्जुनसिंह	१४४८ ,,
संग्रामशाही	१४८० ,,
दलपति	१५१० ,,
वीरनारायण	१५४८ ,,
चन्द्रशाही	१५६३ ,,
मधुकरशाही	१५७५ ,,
प्रेमनारायण	१५९९ ,,
हृदयेश्वर	१६१० ,,
छत्रशाही	१६८१ ,,
शिवरीशाही	१६८८ ,,
नरेन्द्रशाही	१६९१ ,,
महाराजशाही	१७११ ,,
शिवराजशाही	१७४२ ,,
दुर्जनशाही	१७४८ ,,
निजामशाही	१७५१ ,,
नरहरशाही	१७७७ ,,
सुमेरशाही	१७८१ ई०

१८०४ ई०में राजा सुमेरशाहीके मारे जानेके बाद इस राजवंशका लोप हो गया। कानिंहाम आदि पुराविदोंने उक्त गढ़मण्डलके राजाओंको गोण्डराजके नामसे उल्लेख किया है। परन्तु गढ़मण्डलके राजा हृदयेश्वरके समयके शिलालेखके पढ़नेसे ऐसा मालूम होता है कि—वे हिन्दू थे और क्षत्रिय कह कर अपना परिचय देते थे।

सुमेरशाहीकी मृत्युके उपरान्त गढ़मण्डलका अधिकांश नागपुरके महाराष्ट्रोंके राज्यमें मिल गया था। १८१८ ई०से इस पर वृटिश गवर्मेण्टका अधिकार हुआ है।

गढ़वाल (हिं० पु०) वह जिसके अधीनमें गढ़ हो।

गढ़वाल—युक्तप्रदेशके कुमाऊं विभागका पश्चिम जिला। यह अक्षा० २९° २६´ तथा ३१° ५´ उ० और देशा० ७८° १२´ एवं ८०° ६´ पू०के बीच पड़ता है। इसका रकबा ५६२८ वर्गमील है। गढ़वालके उत्तर तिब्बत, दक्षिण-पूर्व अलमोड़ा तथा नैनीताल, दक्षिण-पश्चिम बिजनौर और उत्तरपश्चिम टेहरी राज्य है। यह जिला पहाड़ी है और इसकी बड़ी नदी गङ्गा है। गङ्गाकी प्रधान सहायक नदी अलकनन्दा है। अलकनन्दा विष्णुगङ्गा और धौलीगङ्गाके सङ्गमसे बनती और रुद्रप्रयाग पहुंचने पर उसमें मन्दाकिनी आ मिलती हैं। फिर देवप्रयागमें अलकनन्दा और मन्दाकिनीका सङ्गम होता है। इसी स्थानसे उक्त सम्मिलित धारा गङ्गा कहलाती और गढ़वालको टेहरी तथा देहरादूनसे अलग लगाती है। अलकनन्दाकी दोनों ओर बर्फसे ढकी पहाड़ियां खड़ी हैं। इस जिलेके पहाड़ोंकी बड़ी चोटियां त्रिशूल (२३३८२ फुट), द्रोणगिरि (२३१८१ फु०) कामेत (२५४१३ फु०) बदरीनाथ (२३२१० फु०) और केदारनाथ (२२८२३ फु०) हैं। झीलोंमें गहना बड़ी है।

भाबर और उसके पासकी पहाड़ियोंमें घना जङ्गल है। उसमें साल बहुत उपजता है। ४०००से ऊपर ६०00 फीट तक सालको अगह चौड़ ही देख पड़ता है। इसी प्रकार ८००० फुट पर तिलोंज और १०००० फुट पर दूसरे कई पेड़ होता है। १२००० फुट पर बड़ी घास जमती जो ग्रीष्म ऋतुमें बहुत अच्छी फूला करती है।

भाबरमें हाथी और निचल्ला पहाड़ियोंमें चीते मिलते हैं। तेंदुवे गढ़वालमें सभी जगह हैं। भालू, गोदड़ और जङ्गली कुत्ते भी पाये जाते हैं। इस जिलेमें चिड़ियां बहुत हैं।

गढ़वालका प्राचीन इतिहास अन्धकाराच्छन्न है। सम्भवत: इसका कुछ भाग ब्रह्मपुर राज्यमें लगता था, जिसकी बात ७वीं शताब्दीकी चीन-परिव्राजकने कही। पुराणानुसार ब्रह्मपुरका कत्यूरी राजवंश जोशीमठका था, जहांसे वह दक्षिणपूर्व और अलमोड़ाको फैल पड़ा। स्थानीय वर्णनानुसार ई० १४वीं शताब्दीके शेषभागको अजयपाल नामक नृपति छोटे छोटे राज्योंको तोड़ करके देवलगढ़में बसे थे। परन्तु १७वीं शताब्दीके आदि कालको उनके महीपति शाह नामक किसी उत्तराधिकारीने श्रीनगर पत्तन करके प्रकृत स्वाधीन राज्य स्थापित किया। प्राय: १५८१ ई०को गढ़वालके राजा अलमोड़ाके चांदोंसे लड़े, जब रुद्रचन्द्र गढ़वाल पर चढ़े थे। वह कई बार विफल हुए। १६५४ ई०को शाह जहानने राजा पृथ्वीशाहको दबानेके लिये अभियान भेजा, जिसके फलमें देहरादून गढ़वालसे अलग हुआ। फिर कुछ वर्ष पीछे पृथ्वीराजने दारा-शिकोहके लड़के सुलेमान शिकोहको जो भाग कर गढ़वालमें जा रहे थे लूट लिया और उन्हें औरङ्गजेबको सौंप दिया। अलमोड़ाके जगत-चन्दने (१७०८-२० ई०) राजाको श्रीनगरसे निकाल उसे किसी ब्राह्मणको प्रदान किया था, परन्तु प्रदीप शाहने (१७१७-७२ ई०) गढ़वाल फिर ले लिया। १७७९ ई०को गढ़वालके ललितशाहने कुमाऊंके राजाको हरा अपने पुत्र प्रद्युम्न शाहको उस राज्य पर अभिषिक्त किया। १७९० ई०को गुरखे अलमोड़ा विजय करके गढ़वालकी ओर बढ़े थे, परन्तु तिब्बतमें चीनाओंसे झगड़ा हो जानेके कारण लौट गये। १८०३ ई०को उन्होंने फिर चढ़ाई करके गढ़वालको रौंदा और देहरादून भी अधिकार किया। प्रद्युम्न शाह मैदानोंको भगे और १८०४ ई०को देहराके पास अपने साथियों साथ मरे थे। १८१५ ई०को अंगरेजोंको कुमाऊं अधिकार किया। १८३७ ई०को गढ़वाल एक उपविभाग और १८९१ ई०को जिला बनाया गया।

इस जिलेमें कितने ही ऐसे मन्दिर हैं, जिनको सभी भारतवासी परम पवित्र समझते हैं। इनमें बदरीनाथ, जोशीमठ, केदारनाथ और पाण्डुकेश्वर प्रधान हैं। गोपेश्वरमें १० फुट ऊंचे एक त्रिशूल पर अनेक मल्लराजाओंके विजयकी वर्णना अङ्कित है, जो सम्भवत: एक नेपाली नृपति थे यह लिपि ई० १२वीं शताब्दीकी है। मन्दिरोंमें या लोगोंके पास कितने ही ताम्रफलक सुरक्षित हैं, जो अपनी ऐतिहासिक दिलचस्पीके लिये बहुमूल्य लगते हैं।

गढ़वालमें २ नगर और ३६०० ग्राम हैं। आबादी कोई ४२९८०० होगी। इसका सदर पौरी एक ग्राम मात्र है। सैकड़े पीछे ९७ लोग गढ़वाली भाषा व्यवहार करते हैं। प्रत्येक श्वेत पत्थरकी बाहरी दीवारसे घेर दिया जाता है। यहां थोड़ी बहुत सब चीज उपजती है। ५७९ वर्ग मीलमें सरकारी जङ्गल है। साल और बांस बहुत होता और जलानेकी लकड़ी तथा घास भी मिलती है। पहले स्थानीय व्यवहारके लिये कुछ तांबा और लोहा निकाल लिया जाता था, परन्तु अब वह काम बन्द है। कुछ नदियोंमें अल्प परिमाण मिलता है। सनसे मोटा कपड़ा और रस्सी बनाते और कम्बल तैयार किये जाते हैं। दो एक जगह पत्थर पर नक्काशी भी होती है। तिब्बतके साथ गढ़वालका बड़ा व्यवसाय चलता है। वहांसे नमक, ऊन, भेड़, बकरे, टट्टू और सोहागा मंगाते और अनाज, कपड़ा और नकद रुपया पैसा पहुंचाते हैं। सब काम काज प्राय: भाटियोंके हाथमें है। श्रीनगर और कोटद्वारा इस जिलेके बड़े बाजार हैं। सड़क लगभग सभी कच्ची है।

गढ़वालसमस्थान (केशवनगर) १ हैदराबाद राज्यके रायचूर जिलेकी एक खिराज देनेवाली रियासत। इसका क्षेत्रफल ८६४ वर्ग मील और लोकसंख्या प्राय: ९६८४९१ है। यह राज्य हैदराबादसे भी पुराना है। पहले यहां सिक्का ढलता, जो आज भी रायचूर जिलेमें चलता है। कृष्णा और तुङ्गभद्रा इस राज्यके दक्षिण और पश्चिम अञ्चलमें प्रवाहित हैं।

२ हैदराबाद राज्य रायचूर जिलेके गढ़वाल समस्थान राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० १६° १४' उ०

और देशा० ७७´ १३´ पू०में अवस्थित है। इसकी लोक-संख्या कोई १०१८५ होगी। गढ़वालका दुर्ग राजा भीमाद्रिने १७१० ई०को बनवा कर तैयार कराया था। इस नगरमें रेशमी साड़ियां, रूमाल और जर न् किनार-की बढ़िया धोतियां बनती और लाखों रुपयेकी हैदराबाद आदि निकटस्थ स्थानोंमें जा कर बिकती हैं।

गढ़ा (हिं० पु०) गड़हा देखो।

गढ़ाई (हिं० स्त्री०) १ गढ़नेका काम। २ गढ़नेकी मजदूरी।

गढ़ाकोट (गढ़ाकोट) मध्यभारतके सागर जिलेका एक उपविभाग। इसका प्रधान नगर भी गढ़ाकोट ही है। वह सोनार और गधेरी नदीके सङ्गम पर अक्षा० २३´ ४७´ उ० और देशा० ७८´ ११´ ३०´ पू०में सागर नगरसे १३ कोस पूर्वको पड़ता है। सम्भवतः यह शहर गोंड़ लोगोंका बनाया हुआ है। १६२८ ई०को बुंदेलखण्डके चन्द्रशाह नामक किसी राजपूत सामन्तने गोंड़ोंको निकाल करके गढ़ाकोट अधिकार किया और एक दुर्ग बना दिया था। पन्नाके बुंदेला राजा छत्रसालके पुत्र हृदयशाहने चन्द्रशाह-वंशीय किसी राजाको रेहलीके अन्तर्गत नायगुवान ग्राम अर्पण करके यह नगर ले लिया। उन्होंने नदीके दूसरे पार और एक दुर्ग तथा नगर निर्माण करके उसका नाम हृदयनगर रखा था। १७३८ ई०को हृदय शाहका स्वर्गवास हुआ। पांच वर्ष पीछे शोभासिंह और उसके भाई पृथ्वीसिंह दोनोंके बीच झगड़ा उठा था। पृथ्वीशाह पेशवाके साहाय्यसे अपने आप राजा बन बैठे। १८२० ई०को नागपुरके राजाने जब किले पर धावा किया, पृथ्वीसिंहके वंशीय मर्दनसिंहने लड़ते लड़ते अपना प्राण दे दिया। मर्दनसिंहके लड़के अर्जुनसिंहने सेंधियाका आश्रय लिया था। कर्नल जियाम वाप्तिस्त नामक किसी युरोपीय सेनापति-के अधिन सेंधियाने एक फौज भेज दी। युद्धमें नागपुर-की सेनाके हारने पर सेंधियाने मालखन और गढ़ाकोट अधिकार करके शाहगढ़ तथा अन्यान्य प्रदेश अर्जुनसिंहको दे डाले और वाप्तिस्त साहब ससैन्य गढ़ाकोट रहने लगे। थोड़े दिनों बाद अर्जुनसिंहने बालाकी-के किला छीना था। परन्तु ६ महीने पीछे जनरल वाटसनने अंगरेजी फौजके साहाय्यसे उन्हें निकाल बाहर किया। यह राज्य सेंधियाके अधिकारमें तो रहा, किन्तु अंगरेज गवर्नमेण्ट अपना हुक्म चलाने लगी। १८६१ ई०में अंगरेजोंने सेंधियाको दूसरी जगह दे करके इसको अपने आप अधिकार किया था।

आजकल नगर दो भागोंमें विभक्त है। बीचमें सोनार नदी बहती है। नदीके उस पार हृदयनगरमें कारबारकी बड़ी जगह है। यहां स्त्रियोंके पहननेका अङ्गी और पट्टी नामक वस्त्र बनता और प्रति शुक्रवार-को बाजार लगता है। एतद्व्यतीत यहां पौष मासको एक बड़ा मेला भी होता है। सोनार और गधेरी नदीके सङ्गमके पास ऊंची भूमि पर किला बना है। उसमें बहुतसे घर हैं। १८५८ ई०में अंगरेज सेनापति सर ह्युरोजने उसको जीता था। नगरसे एक कोस उत्तरको मर्दनसिंहके प्रकाण्ड प्रासादका भग्नावशेष पड़ा है। उसकी दीवार आज भी नहीं बिगड़ी। यह प्रायः ६० हाथ ऊंचा होगा। एक घुमावदार जीनेसे उस पर चढ़ा जाता है।

गढ़िया (हिं० पु०) गढ़नेवाला, वह जो कोई चीज बनाता हो।

गढ़ोई (हिं० पु०) किलादार, गढ़पति।

गण (सं० पु०) गण्‌ कर्म्मणि अच्‌ कर्त्तरि अच्‌ वा। १ समूह, ढेर।

"गणानां त्वा गणपतिं।" (वाजसनेयसं० २३।१९।)

'गणपतिं गणानां समूहानां पालकं।' (महीधर)

२ प्रमथ, शिव सेवक।

"मनुः कण्ठच्छविरिति गणैः सादरं वीक्ष्यमाणः।" (मेघदूत ३५)

३ सेनाकी संख्या। सत्ताइस रथ, सत्ताइस गज, इक्यासी घोड़ा और एक सौ पैंतीस पदाति, सब समेत दोसौ सत्तरको गण कहते हैं। ४ चोर नामक गन्ध द्रव्य। ५ गणेश। "गणेशो प्रवर्त्तकः।" (महानिर्वाणत०) ६ विवाहमें लड़का और लड़कीका सद्भाव वा असद्भाव जाननेका उपाय विशेष। ज्योतिषियोंने इसे तीन भागोंमें विभक्त किया है, यथा देवगण, नरगण और राक्षस गण। पूर्वफल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वभाद्रपद, उत्तरफल्गुनी, उत्तराषाढ़ा उत्तर भाद्रपद, भरणी, आर्द्रा, और रोहिणी

इन नक्षत्रोंमें जन्म होनेसे नरगण; चित्रा, मघा, विशाखा, ज्येष्ठा, शतभिषा, मूला, धनिष्ठा, अश्लेषा और कृत्तिकामें राक्षसगण तथा अश्विनी, रेवती, पुष्या, स्वाती, हस्ता, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा और श्रवणामें जन्म लेनेसे देवगण होते हैं।

वर और कन्याका एक गण होना अच्छा है। अगर एकने देवगणमें और दूसरेने नरगणमें जन्म लिया हो तो मध्यम फल है, देवगण और राक्षसगणमें जन्म होनेसे अधम सौहृद्य हो कर रहता है, किन्तु नरगण और राक्षसगणमें होनेसे नरगणवालेकी मृत्यु होती है। (ज्योतिष) ७ ध्रुवादि संज्ञक नक्षत्रसमूह।

"उग्र:पूर्वमघात्मका ध्रुवगण:।" (ज्योतिष)

८ वाणिज्यकारी वणिक्समूह।

"गणद्रव्यं हरेद्यस्तु संविदं यश्च लङ्घयेत्।" (याज्ञवल्क्य)

९ व्याकरणप्रसिद्ध भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि और चुरादि इन दशोंको गण कहते हैं। १० गणपाठग्रन्थ। ११ पाणिनिरचित स्वरादि स्वरूप-प्रतिपादक पाठग्रन्थ। १२ दैत्यविशेष, एक असुरका नाम। स्कन्दपुराणके गणेशखण्डमें इसका उपाख्यान इस तरह है—

किसी समय अभिजित् नामका एक ब्राह्मण अपनी स्त्री गुणवतीके साथ स्नान करनेके लिये समुद्र गये। गुणवतीने तृष्णासे कातर हो समुद्र-जल पान किया। इस जलके साथ ब्रह्माका वीर्य उसके उदरमें प्रवेश कर गया। क्रमानुसार उस अमोघ वीर्यसे ब्राह्मण पत्नी गुणवतीको गर्भ रहा। यथा समय गुणवतीने एक पुत्र प्रसव किया। यही पुत्र [illegible]से प्रसिद्ध दैत्य [illegible]या। अवस्था आने पर [illegible]जीकी आराधना की। शिवजीने तपस्यासे सन्तुष्ट होकर उसे वर दिया—तुम स्वर्ग, मर्त्य और पातालके ऊपर अपना आधिपत्य [illegible] सकते हो। इसका परिणाम यह हुआ कि वह गण[illegible] भयानक अत्याचारी हो गया। किसी दिन उसने महामुनि कपिलको अपमानित कर उनकी बहुमूल्य चिन्तामणिको ले लिया। महात्मा कपिलने दुःखित हो कर गणेशकी आराधना की। इस पर गणेश सन्तुष्ट हो कर गणदैत्यको विनाश करनेके लिये राजी हुये। थोड़े दिनके बाद पार्वतीनन्दन गणेशजीने उसी दैत्यके गृहमें अवतीर्ण होकर उसका नाश किया।

(स्कन्दपुराण गणेशखण्ड ६।७ अ०)

"सगणाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इन्द्राय नम:।"

(विधान-पारिजात)

१४ दूत, सेवक-पारिषद। १५ एक संस्कृत चिकित्सा-शास्त्र-रचयिता। ये दुर्भलके पुत्र थे। इन्होंने अश्वायुर्वेद या सिद्धयोगसंग्रह नामक ग्रन्थकी रचना की है।

१६ दि० जैन मतानुसार—आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, शैक्ष, ग्लान, गण, कुल, संघ, साधु और मनोज्ञ इन दश-प्रकारके मुनियोंमेंसे एक। जो बड़े मुनियोंकी परिपाटीके हों, उनका नाम 'गण" है।

"आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां।

(तत्त्वार्थ सूत्र; ९ अ० २४ सूत्र)

१७ महावीर स्वामीके एक शिष्य

गणक (सं० त्रि०) गणयति संख्यां करोति. गण-णिच् ण्वुल्। १ संख्याकारक, जो राशि स्थिर करता हो।

(पु०) २ मातृकादेवीभक्त मुनिविशेष, एक मुनी जो मातृकादेवीके भक्त थे। ३ ज्योतिषी। इसका पर्याय—सांवत्सर, ज्योतिषिक, दैवज्ञ, ज्योतिर्विद्, मौहूर्तिक, मौहूर्त, ज्ञान और कार्त्तान्तिक है।

बहुतोंका मत है कि जो ग्रहनक्षत्रादि विषय गणना करते, या ज्योतिषशास्त्र अध्ययन या व्यवसाय करते हैं वे पतित, निन्दनीय और अस्पृश्य हैं। शास्त्रमें भी गणककी निन्दा पाई गई है।

"वरं चाण्डालमंस्पर्श: कुर्यात् न साधकोत्तम:।
तथाप्यस्पृश्य गणकं सर्वदा तु परित्यजेत्।"

(शाक्तानन्द तरङ्गिणी १६ उल्लास)

धर्मशास्त्रकार सुमन्तका भी कथन है, "सांवत्सरिको ऽपाङ्क्तेय:।" सांवत्सरिक या दैवज्ञ अपाङ्क्तेय है अर्थात् इनके साथ एक पंक्तिमें बैठ कर आहारादि नहीं करना चाहिये महाभारतमें लिखा है—

"कुशीलवा देवलको नक्षत्रैश्च जीवति।
एतानिह विजानीयाद् ब्राह्मणान् पंक्तिदूषकान्॥"

नाटक खेलनेवाला, तनखाह पानेवाला, देवपूजक और जो नक्षत्रग्रह प्रभृति गणना कर जीविका निर्वाह करते हों, उन समस्त ब्राह्मणोंको पंक्तिदूषक अर्थात्

अपांक्तेय समझना चाहिये। धर्मशास्त्रकार कश्यप कहते हैं कि भ्रूणहन्ता, कुटिलाङ्ग और नक्षत्रसूचक ब्राह्मणोंको समस्त कार्योंमें ही परित्याग करना चाहिये। दूसरे दूसरे धर्मशास्त्रमें भी गणकको खूब निन्दा की गई है। किन्तु संग्रहकारगणका मत है कि जो ज्योतिष शास्त्रका अध्ययन वा व्यवसाय करते वे पतित वा निन्दनीय नहीं हैं क्योंकि ज्योतिषशास्त्र वेदका एक अङ्ग है। वेद और धर्मशास्त्रमें ब्राह्मण ज्योतिषशास्त्र अध्ययन कर सकते हैं, ऐसा विधान है। यदि अध्ययन करनेसे ही पतित वा निन्दनीय कहा जाय तो धर्मशास्त्रका विधान मिथ्या होता है।

इसके अतिरिक्त कई एक शास्त्रमें ज्योतिषीकी बहुत प्रशंसा भी लिखी है-

"विस्कन्धपारङ्गम एव पूज्यः श्राद्धे सदा भूसुरवृन्दमध्ये।
नक्षत्रसूची खलु पापरूपो हेयः सदा सर्वसुधर्मकृत्ये॥" (वसिष्ठ)

जिन्होंने ज्योतिःशास्त्रके स्कन्धत्रय अच्छी तरह अध्ययन कर व्युत्पत्ति लाभ की है, वे श्राद्धमें सब ब्राह्मणोंके मध्य पूजनीय हैं, किन्तु जो नक्षत्रसूची अर्थात् ज्योतिःशास्त्रानभिज्ञ तो भी नक्षत्रादि गणना कर जीविका निर्वाह करते वे ही पतित और निन्दनीय हैं।

"ग्रहगत्यादि तत्त्वं च तत्त्वं जानाति यो द्विजः।
अग्रभुक् स भवेच्छ्राद्धे पूजितः पंक्तिपावनः।
नासांवत्सरिके देशे वस्तव्यं भूतिमिच्छता॥" (वराह)

जो ब्राह्मण ज्योतिषके समस्त ग्रन्थ अध्ययन कर उसका प्रकृत भाव समझ सकते वे श्राद्धमें अग्रभुक्, पूजित और पंक्तिपावन है। जिस देशमें ज्योतिषी नहीं हैं, जो अपना कल्याण चाहते हों, उन्हें उस देशमें रहना नहीं चाहिये। इसके अलावा सूर्यसिद्धान्त और सिद्धान्तशिरोमणिमें ज्योतिषीकी प्रशंसा अच्छी तरहकी गई है।

शास्त्रमें दोनों तरह की बातें लिखी गई हैं। एकमें गणककी प्रशंसा और दूसरेमें निन्दा की गई है। यदि प्रकृत प्रस्तावमें इसकी मीमांसा न की गई तो शास्त्रमें विरोध हो सकता है। इसी कारण संग्रहकारोंका कथन है कि शास्त्रमें गणक विषयमें दोनों तरहसे लिखे गये हैं। जिसने यथार्थमें ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन नहीं किया अथवा अध्ययन करने पर भी व्युत्पत्ति लाभ नहीं की, वे ही नक्षत्रसूची हैं। ये द्वार द्वार घूमते और किसीसे जिज्ञासा नहीं किये जाने पर नक्षत्रोंकी गणना कर गृहस्थोंका शुभाशुभ फल कहा करते हैं। इसी कारण शास्त्रकारोंने इन्हें नक्षत्रसूची नामसे उल्लेख किया है। ये यथार्थमें ज्योतिषी नहीं हैं। ये ही पतित, अपांक्तेय और निन्दनीय हैं। पहले जो सब प्रमाण लिखे गये हैं, वे भी दूसरे वचनोंके साथ मिला कर इसी तरहसे व्याख्या करनी होगी एवं "विस्कन्धपारङ्गम" इत्यादि वसिष्ठ वचन द्वारा स्पष्टरूपसे ही नक्षत्रसूचीकी निन्दा की गई है। इसके अतिरिक्त दूसरे दूसरे शास्त्रोंमें भी नक्षत्रसूचीकी निन्दा देखी जाती है। जो प्रकृत प्रस्तावसे ज्योतिःशास्त्र अध्ययन करते, वे निन्दनीय या अपांक्तेय नहीं हैं।

बृहत्संहितामें लिखा है कि जो सद्वंशजात, प्रियदर्शन, विनीतवेश, सत्यवादी, जिनका पक्षपात निन्दनीय हो, जिनकी शरीरसंधि सुविभक्त और उपचित हो, जिनके हाथ, पैर, नख, नेत्र, चिबुक, दांत, कान, ललाट और मस्तक प्रभृति चारुतासम्पन्न हों, जो स्थूलशरीर, गम्भीर और मिष्टभाषी हो, जो देश और कालका तत्त्व जानते हों, जो शास्त्रीय तर्कमें सभा जाकर कभी भी भीत नहीं होते हों, जो निपुण, अव्यसनी, ग्रहगणित जाननेके लिये कौतूहली हों, देवपूजा, व्रत और उपवास करनेकी जिनकी प्रबल इच्छा हो, वे ही ज्योतिःशास्त्र अध्ययन करनेमें उपयुक्त हैं। ग्रहगणित अर्थात् पौलिश, रोमक, वाशिष्ठ, सौर और पैतामह इन पांच सिद्धान्तशास्त्रोंमें जो युग, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, अहोरात्र, याम, मुहूर्त्त, नाड़ी, विनाड़ी, प्राण, त्रुटि प्रभृति काल और क्षेत्र निर्णीत हुए हैं, उसके सम्यक् वेत्ता तथा सौर, सावन, नाक्षत्र और चान्द्र ये चार तरहके मास, अधिमास और क्षय प्रभृतिके कारणाभिज्ञ, षष्टि संवत्सर, युग, वर्ष, मास, दिन और होरा प्रभृतिके अधिपति निर्णयमें तथा सौरादि परिमाणमें अभिज्ञ, ग्रहोंके शीघ्र मन्द याम्य उत्तर और नीच उच्च प्रभृतिके कारण निर्णयमें पटु, इनके अतिरिक्त जो दूसरे दूसरे ज्योतिर्मण्डलके दुरूह विषयोंकी अच्छी तरह मीमांसा कर दूर ...

समझा सकते हों, शास्त्रकारोंके मतानुसार वे ही गणक कहलाते हैं। (बृहत्संहिता २ अ०)

४ जातिविशेष। इनके आचार व्यवहार ब्राह्मणोंसे मिलते जुलते हैं। किसी किसी देशमें इन्हें ग्रहविप्र या आचार्य कहते हैं। ब्रह्मयामलके १४वां अध्यायमें लिखा है—

"शरद्वीपे च वेदाग्निः शाकद्वीपे च सिद्धतिः।
भूमध्ये ब्रह्मचारी च दैवज्ञो द्वारकापुरे॥
द्राविडे मैथिले चैव ग्रहविप्रेति संज्ञकः।
धर्माङ्गे धर्मवक्ता च पञ्चाले शास्त्रिसंज्ञकः॥
सारस्वते शुभमुखो गान्धारे चित्रपण्डितः।
तोरहोत्रे च तिथिविल्लाटके ऋक्षसूचकः॥
रुद्राले ज्योतिषो विप्रो ब्रह्माले विधिकारकः।
वम्भाटे योगवेत्ता च लिटाने देवपूजकः॥
राढ़देशे उपाध्यायो गयायां तत्त्वधारकः।
कलिङ्गे ज्ञाननामा च आचार्यो गौड़देशके॥" (यामल १४श अध्याय)

गणक जातिके लोग शरद्वीप और शाकद्वीपमें वेदाग्नि, भूमध्यमें ब्रह्मचारी, द्वारकामें दैवज्ञ, द्राविड़ और मिथिलामें ग्रहविप्र, धर्माङ्गमें धर्मवेत्ता, पाञ्चालमें शास्त्री, सरस्वती नदीतीरमें शुभमुख, गान्धारमें चित्रपण्डित, तोरहोत्रमें तिथिवत्, लाटदेशमें ऋक्ष, रुद्रालमें ज्योतिष, ब्रह्ममें विधिकारक, वम्भाटमें योगवेत्ता, लिटानमें देवपूजक, राढ़देशमें उपाध्याय, गयामें तत्त्वधारक, कलिङ्गदेशमें ज्ञान और गौड़देशमें आचार्य कहलाते हैं।

ग्रहदोष शान्तिके लिये जो कुछ दान करना होता है, वह इन्हीं ब्राह्मणोंको मिलता है। इस देशके लोगोंका विश्वास है कि ग्रहविप्रको दान देनेसे ही ग्रह संतुष्ट होता है, गृहस्थोंका कोई अमङ्गल नहीं होता है। शब्दकी व्युत्पत्तिके अनुसार अर्थ लगानेसे वे ही गणक कहला सकते जो ज्योतिषशास्त्र अध्ययन करते तथा ग्रहोंके गतिनिर्णय और कोष्ठी गणना कर शुभाशुभ फल निर्णय किया करते हैं। यदि ब्राह्मण, कायस्थ, वैश्य प्रभृति दूसरी कोई जाति ज्योतिषशास्त्र अध्ययन कर उसका व्यवसाय करें तो उनको गणक नहीं कहते वरन वे ज्योतिषिक, ज्योतिर्विद् प्रभृति दूसरे किसी नामसे पुकारे जा सकते हैं। किन्तु पूर्वकथित जातियोंमें कोई कोई ग्रह गणनाकी बात तो दूर रहे नक्षत्रके नाम नहीं जानने पर भी गणक कहलाता है। दूसरे दूसरे ब्राह्मणोंके साथ इनको कन्याका आदान प्रदान नहीं होता है। इन लोगोंमेंसे बहुतोंने ज्योतिषशास्त्र अध्ययन कर प्रतिष्ठा और उन्नति प्राप्त की है। इन लोगोंमें जो शिक्षित और धनी हैं, उन्हींका आचार व्यवहार उच्चश्रेणीके ब्राह्मणों जैसा है। इनके साथ उच्चश्रेणीके ब्राह्मणोंका कोई भेद देखा नहीं जाता है, सिर्फ आदान प्रदान की प्रथा प्रचलित नहीं है। दूसरे बहुतसे अशिक्षित वर्णविप्र या गणक ब्राह्मण हैं, जो ग्रहदान लेकर हो अपनी जीविका निर्वाह करते हैं, नया वर्ष आने पर ये घर घर घूमते और नूतन पञ्जिकाका फल सुना कर गृहस्थोंसे दक्षिणा या पारिश्रमिक स्वरूप चावल, दाल, वस्त्र और फल प्रभृति पाते हैं। ऊपर जिन उच्चश्रेणीके गणकोंका उल्लेख हो चुका है, उनके साथ इन लोगोंका कोई सम्बन्ध जान नहीं पड़ता है। उच्चश्रेणीके ब्राह्मण भी इन्हें अपनी जातिके समान नहीं मानते हैं। इनका आचार व्यवहार ठीक चण्डाल जैसा है। ये चण्डालका कुआ हुआ जल पीते हैं। इन्हें गलेमें यदि यज्ञोपवीत लटकता न रहता तो ये ठीक चण्डालसे मालूम पड़ते। इनका स्पर्श किया हुआ जल अपवित्र समझा जाता है। ब्राह्मण, कायस्थ और वैश्य प्रभृति उच्चश्रेणीके हिन्दू इन्हें चाण्डालके समान मानते हैं। इनमेंसे बहुत पूर्व बङ्गाल, फरिदपुर प्रभृति स्थानोंमें रहते हैं। चण्डालके पुरोहितके साथ इनका आहार व्यवहार और आदान प्रदान चला आता है। कहीं कहीं उनमेंसे थोड़े चण्डालोंका पौरोहित्य भी करते हैं। ये अपनेको उच्चश्रेणीके गणकोंसा समझते हैं। किन्तु कोई विश्वास नहीं कर सकता है कि इनके साथ उच्चश्रेणीके गणकोंका कोई सम्बन्ध है।

मनुने जिन समस्त सङ्कर जातियोंका उल्लेख किया है उनमें इन लोगोंका नाम पाया नहीं जाता है। रुद्रयामलोक्त जातिमालामें लिखा है—

"देवलात् गणको जातो वैश्यागर्भसमुद्भवः।
तस्य वृत्तिं ददौ विप्र तिथिवारविवेचनम।"

देवल (पंडा)के औरस और वैश्याके गर्भसे गणक जातिकी उत्पत्ति है। तिथिवार प्रभृतिकी गणना करना हो इनकी वृत्ति है। इस प्रमाणके अनुसार नाम

पड़ता है कि वैश्याके गर्भ तथा देवलके औरससे जिस संकर जातिकी उत्पत्ति हुई है, वे ही आजकल आचार्य या गणक कह कर विख्यात हैं। किन्तु परशुरामोक्त जातिमालाके मतसे —

"अम्बष्ठाद् गणको जातो वैश्यागर्भसमुद्भवः।
नक्षत्रतिथियोगानां ग्रहनिर्णयकारकः।"

अम्बष्ठके औरससे वैश्याके गर्भसे जो संकर जाति उत्पन्न हुई है उन्हींको गणक कहते हैं। नक्षत्र, तिथि, योग और ग्रहोंका निर्णय करना ही इनकी उपजीविका है।

कहीं कहीं गणकोंको वर्णविप्र कहा करते हैं, किन्तु पूर्वोक्त दोनों जातिमालामें पतित ब्राह्मणको ही वर्णविप्र कहा गया है, इसमें संकर जातिको वर्णविप्र नामसे उल्लेख नहीं किया है —

"ब्राह्मणः पतितो भूत्वा द्विजवर्णत्वमागतः।" (रुद्रयाम० जातिमा०)
"ब्राह्मणः पतितो भूत्वा वर्णानां ब्राह्मणोऽभवत॥" (परशु० जाति०)

किसी कारणसे पतित ब्राह्मणको ही वर्णद्विज या वर्णविप्र कहा करते हैं।

परशुरामोक्त जातिमालामें इनके पतित होनेका कारण भी लिखा है।

"चत्वारिंशत् जातिभेदा धर्मो प्रता विलोमजा।
एतेषां विंशतेश्चैव पुरोधाः श्रोत्रियो द्विजः।
श्रोत्रियः पतितो भूत्वा वर्णानां ब्राह्मणोऽभवत॥"

(परशुरामोक्त जातिमा०)

पहले जिन चालीस संकर जातियोंकी कथा लिखी गई है, वे सबके सब विलोमज हैं। इनमेंसे बीसके पौरोहित्य कार्य करनेसे श्रोत्रिय ब्राह्मण पतित होते हैं एवं उन पतित ब्राह्मणोंको ही वर्णब्राह्मण कहते हैं। इससे साफ साफ जाना जाता है कि वर्णब्राह्मण और गणक एक जातिके नहीं हैं। जो चण्डाल प्रभृति निकृष्ट जातियोंके पुरोहित हैं, वे वर्णविप्र और जो पूर्वोक्त संकर जाति हैं वे गणक माने जाते हैं। कालक्रमसे आचार व्यवहार परिवर्तन हो जानेसे कहीं कहीं दोनों जाति एकमें मिल गई हैं।

फिर भी ब्रह्मयामलमें लिखा है—

"ग्रहाचार्यं गायेत्तुः शाकद्वीपसमुद्भवः।
ब्रह्मवक्त्राद्भवेत् जन्म देवज्ञो ब्राह्मणो ध्रुवम्॥"

ग्रहगणकी पूजाके लिये जिस ब्राह्मणने ब्रह्माके मुखसे शाकद्वीपमें जन्मग्रहण किया, वे ही दैवज्ञ ब्राह्मण हैं।

बङ्गालके बहुतसे शास्त्रविद् दैवज्ञ अपनेको ब्रह्मयामलोक्त शाकद्वीपी ब्राह्मणके जैसा परिचय देते हैं। शाम्बपुराणमें भी शाम्ब कर्तृक शाकद्वीपसे ब्राह्मण लानेकी कथा विस्ताररूपसे वर्णित है। कोणार्क और शाकद्वीपी ब्राह्मण शब्द देखो। किन्तु उस पुराणके ४२वां अध्यायमें—

"न ब्राह्मणपरिवादो न तिथिनक्षत्र भिक्षः स्यात॥"

इत्यादि वचनोंसे तिथिनक्षत्र निरूपणादि दैवज्ञके काम करनेसे निषेध किया गया है। मालूम पड़ता है कि उक्त पुराणोक्त निषिद्ध कर्म करने पर भी कोई कोई शाकद्वीपी ब्राह्मण दूसरे ब्राह्मणसे नीच एवं गणकजातिके जैसे गिने गये होंगे। ब्रह्मवैवर्त्तके मतानुसार कि जो देव ब्राह्मणका धन अपहरण करता है, वह धमान्धकार नरक भोग कर शतजन्म भिन्न भिन्न योनियोंमें भ्रमण करनेके बाद शबर (भील), स्वर्णकार, सुवर्णवणिक् और यवनसेवी ब्राह्मण हो कर अन्तमें गणनोपजीवी दैवज्ञ ब्राह्मणमें जन्मग्रहण करता है। (शब्दकल्पद्रुम)

"वसेत् स्वलोममानाब्दं तत्र व सागरं गितः।
ततो भवेत् स गणको वैद्यश्च सप्त जन्मसु॥" (प्रकृतिखण्ड)

सचमुच गणक जातिकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें बहुतोंका मतभेद है। जातिमाला प्रभृति ग्रन्थोंमें संकर जातिकी जो कथा लिखी गई है, उनमें कहीं भी इतनेके सिवा विशेष किसी प्रकारका संकर जातिका उल्लेख देखा नहीं जाता है। वर्तमान समयमें फरिदपुर अञ्चलमें पूर्वोक्त सङ्करजाति ही गणक नामसे परिचित है। राढ़ प्रभृति अञ्चलके शास्त्रविद् गणकोंका कहना है कि उनके साथ उक्त जातिका कुछ भी संसर्ग नहीं है। जो कुछ हो प्रत्येक ग्रन्थका मतभेद रहनेसे भिन्न भिन्न गणकजातिका रहना असंगत नहीं है। किन्तु वाचस्पत्यने किसीका भी मत ग्रहण न कर चण्डालके औरससे उत्पन्न गणकजातिका एक उल्लेख किया है, तथा प्रमाणके लिये "चर्मकारस्य दो पुत्रौ गणको वाद्यकः" यह वाक्य उद्धृत किया है। यह अपूर्ण वचन किस ग्रन्थसे लिया है, इसका कुछ भी उन्होंने उल्लेख नहीं किया है। नूतन संस्करणके शब्दकल्पद्रुममें भी उक्त अपूर्णांश उद्धृत हुआ है।

किन्तु उसमें भी किसी ग्रन्थका नाम नहीं है।

पञ्चाचार्य देखो।

५ केतुविशेष। ये आठ होते और तारापुञ्ज जैसे दीखते हैं। बृहत्संहिताके अनुसार ये ब्रह्माके पुत्र माने गये हैं।

'तारापुंजनिकाशा गणका नाम प्रजापतेरष्टौ।'

(बृहत्संहिता ११।२५)

गणकपति, गणधर देखो।

गणकर्णिका (सं॰ स्त्री॰) गणस्य गणेशस्य कर्ण इव पत्र-मस्याः बहुव्री॰। इन्द्रवारुणी, इन्द्रायणलता।

गणकर्मन् (सं॰ क्ली॰) गणयज्ञ। गणयज्ञ देखो।

गणकार (सं॰ पु॰) गणं धात्वादिपाठं करोति, गण-कृ-अण् उपपदस॰। १ धातुसंग्रहकर्त्ता। २ भीमसेन। गणं गणनां करोति गण-कृ-अण्। ३ जो गणना करे, गणक।

गणकारि (सं॰ पु॰) गणं धात्वादिपाठं करोति, गण-कृ बाहुलकात् इञ्। गणकार, वह जो गणना करता हो।

गणकी (सं॰ स्त्री॰) गणकपत्नी, गणककी स्त्री।

गणकुण्ड—हिमालयस्थ एक पवित्र कुण्ड।

(हिमाद्रिखण्ड ८।४८)

गणकूट (सं॰ पु॰) गणरूपं कूटं। वर और कन्याका देव, मनुष्य या राक्षस-गण रूप कूट। विवाह देखो।

गणगति (सं॰ स्त्री॰) गणनागति, कोई निर्दिष्ट उच्च संख्या।

गणचक्रक (सं॰ क्ली॰) गणानां धार्मिकाणां चक्रमत्र, बहुव्री॰। धार्मिकोंका एकत्र भोजन।

गणच्छन्दः (सं॰ क्ली॰) पादपरिमित छन्द।

गणजीवविजय—सन्देहसमुच्चय नामक संस्कृत धर्मशास्त्रके संग्रहकार।

गणता (सं॰ स्त्री॰) गणस्य भावः गण-तल्-टाप्। १ समुहत्व, समूहका भाव। २ समूह, ढेर।

गणतिथ (सं॰ त्रि॰) गणानां पूरकं गण-तिथुग्। गणपूरक।

गणदास (सं॰ पु॰) नृत्यकार।

गणदीक्षी (सं॰ पु॰) गणान् दीक्षयति दीक्ष-णिनि। बहुतोंको यज्ञ करानेवाला, बहुयाजक। (त्रि॰) गणस्य गणेशस्य शिवस्य वा दीक्षा विद्यतेऽस्मिन् अस्य। २ गणेश वा शिव-मन्त्रमें दीक्षित, जो गणेश या शिवमन्त्रमें दीक्षित हो।

गणदेवता (सं॰ स्त्री॰) समूहचारी देवता। आदित्य १२, विश्वदेवा १०, वसु ८, तुषित ३६, आभास्वर ६४, वायु ४८, महाराजिक २२०, साध्य १२, रुद्र ११ इन सबको गणदेवता कहते हैं।

गणद्रव्य (सं॰ क्ली॰) गणानां द्रव्यं, ६-तत्। सर्व साधारणकी सम्पत्ति, वह धन जिस पर बहुतसे मनुष्योंके समान अधिकार हो।

गणद्वीप (सं॰ क्ली॰) गणानां समानां राज्यत्वात् द्वीपः। द्वीपविशेष। इस द्वीपमें सात राज्य थे। इस लिये इसका नाम गणद्वीप पड़ा।

गणधर (सं॰ पु॰) आचार्य, अध्यापक, जैनाचार्य।

जैनमतानुसार गणधर वे कहलाते हैं, जो तीर्थङ्करोंकी दिव्यध्वनि (उपदेश) को धारण पूर्वक, आचाराङ्ग आदि ग्यारह अङ्गोंमें विभक्त कर मनुष्योंको भिन्न भिन्न भाषाओंमें उनके उपदेशको समझाते हैं। प्रत्येक तीर्थङ्करोंके गणधर हुआ करते हैं। ये भी नियमसे मुक्त हो जाते हैं। गौतम गणधर देखो।

गणन (सं॰ क्ली॰) गण्यते गण-णिच्, भावे ल्युट्। १ गणना, गिनना। २ गिनती। ३ अवधारण, निश्चय।

गणना (सं॰ स्त्री॰) १ गिनती। २ हिसाब। ३ संख्या।

"यदि त्रिलोकी गणनापरा स्यात्।

तस्याः समाप्तिर्यदि नायुषः स्यात्॥" (नैषध ३।४०)

गणनागति (सं॰ स्त्री॰) कोई निर्दिष्ट उच्चसंख्या।

गणनाथ (सं॰ पु॰) गणानां प्रमथादीनां नाथः, ६-तत्। १ प्रमथाधिपति शिव, महादेव। २ गणेश। ३ गणोंका मालिक।

गणनायक (सं॰ पु॰) गणानां नायकः, ६-तत्। १ गणेश।

"लेखका भारतस्यास्य भवत्वं गणनायक।" (भारत १।१।७७)

२ शिव, महादेव।

गणनायिका (सं॰ स्त्री॰) गणानां नायकः शिवः तस्य शक्तिः गणनायक-टाप्। दुर्गा, भगवती।

गणनापति (सं॰ पु॰) १ गणेश। २ गणोंका मालिक। ३ शिव, महादेव। ४ अङ्कशास्त्रविद्।

गणनामहामात्र (सं॰ पु॰) आय और व्ययका मन्त्री, वह जो खर्च और आमदका हिसाब रखता हो।

गणनीय (सं० त्रि०) १ गिनने योग्य। २ नामी, प्रसिद्ध।

गणप (सं० पु०) गणेश।

गणपति (सं० पु०) गणानां पतिः, ६-तत्। १ गणेश। २ शिव। ३ वृहस्पति। ४ अथर्व उपनिषद्‌विशेष। ५ मृच्छकटिक नाटकका एक ग्रन्थकार। ६ गोपालके पुत्र रत्नप्रदीप नामक ज्योतिःशास्त्रकार। ७ वीरेश्वरके पुत्र, गङ्गाभक्तितरङ्गिणी नामक संस्कृतके ग्रन्थप्रणेता। ८ राम-उपाध्यायके पुत्र, चौरपञ्चाशिकाके टीकाकार। ९ एक विशिष्ट राजोपाधि। एक राजाकी पदवी। दाक्षिणात्यमें वराङ्गलके राजा इस उपाधिको धारण करते थे।

वराङ्गल देखो।

गणपतिकल्प (सं० पु०) गणेशकी एक पूजाप्रक्रिया। यह विघ्नशान्तिके लिये गणपति उद्देशसे किया जाता है। विनायक नामक कोई अपदेवता या भूत होते हैं। वह समय समय पर सुन्दर नरनारियोंको आश्रय करते या जिस पर उनकी दृष्टि रहती, लोग भूत समझने लगते हैं। विनायकका आश्रय वा दृष्टि होनेसे प्रायः दुःस्वप्न आता है। वह व्यक्ति स्वप्नमें देखता—मानो अगाध जलके तलमें प्रवेश करके गोते खाता और कभी कभी कटा मुण्ड भी देख पाता है। यही विनायककी दृष्टिका प्रधान लक्षण है। इसके व्यतीत स्वप्नमें काषायवस्त्र-आच्छादित हिंस्र जन्तु पर अधिरोहण भी किया जाता है। उस व्यक्तिको सर्वदा चण्डाल प्रभृति निकृष्ट जातियां, गर्दभों या उष्ट्रोंके साथ रहना अच्छा लगता है। जब वह एकाकी कहीं चलता, मालूम पड़ता—मानो उसके साथ कितने ही दूसरे लोग लगे हैं। इससे वह डर करके चौंक पड़ता है। उसके मनकी स्फूर्ति बिलकुल विलुप्त हो जाती है। वह जो कोई भी कार्य करने लगता, उसको विपरीत फल मिलता है। राजकुमारके प्रति विनायककी दृष्टि होने पर वह राजत्वसे वञ्चित रहते हैं। यदि किसी कुमारी पर उनकी दृष्टि पड़ जाती, वह स्वामिसुखसे वञ्चित हो करके घोर यातनामें समय बिताती है। गर्भिणीके प्रति विनायकका आविर्भाव होनेसे सन्तान नष्ट होता है। यदि विद्यार्थी पर इनकी दृष्टि पड़ी, वह आचार्य वा श्रोत्रिय नहीं हो सकता। इनकी दृष्टिसे वणिकका वाणिज्य बिगड़ता और कृषकको कृषिमें घाटा पड़ता है। विनायककी शान्तिके लिये याज्ञवल्क्य-ने इस प्रकार विधान किया है—जिसके प्रति विनायक-की दृष्टि हो, शुभ दिनको श्वेतसर्षप शिला पर पेषण करके घृतके साथ उसके शरीरमें लगाना और मस्तमें सर्वौषधि तथा सर्वगन्ध लेपन चढ़ाना चाहिये। फिर उक्त व्यक्तिको भद्रासन पर बैठा लेते हैं। अश्वशाला, हस्तिशाला, वल्मीक, सङ्गमस्थान तथा ह्रदकी मृत्तिका, रोचना गन्ध और गुग्गुलु जलमें निक्षेप किया जाता है। ह्रदसे एकवर्ण चार कलसी बनाके जल लाते और भद्रासनको रक्तवर्ण वृषचर्म पर लगाते हैं। पीछे इसी जलसे उक्त व्यक्तिको स्नान कराना पड़ता है। उसका मन्त्र है—

> "सहस्राक्षं शतधारमृषिभिः पावनं कृतम्।
> तेन त्वामभिषिञ्चामि पावमान्यः पुनन्तु ते॥
> भगन्ते वरुणो राजा भगं सूर्यो बृहस्पतिः।
> भगमिन्द्रश्च वायुश्च भगं सप्तर्षयो ददुः॥
> यत्ते केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्धनि।
> ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्घ्नन्तु सर्वदा॥"

इसी प्रकार स्नान करा करके उसके मस्तक पर उडुम्बरके स्रुवसे सर्षपतैल डालना चाहिये। वाम हस्तसे कुश ग्रहण करके इस कार्यका अनुष्ठान करते हैं। मित, सम्मित, शालकटङ्कट, कुष्माण्ड और राजपुत्र नामोंके साथ स्वाहा योग करके चतुष्पथमें सुप पर कुश बिछा करके उस पर बलि दिया जाता है। कृताकृत तण्डुल, पलाल, नानावर्ण सुगन्ध पुष्प, मूलक, पूरी, कचौरी, एरण्डकी माला, दधियुक्त अन्न, पायस, पिष्टक आदि द्रव्य विनायककी पूजाका उपहार वा बलि है। यह सकल पूजोपहार एकत्र करके मस्तकको भूमि पर रख विनायक-जननीकी आराधना करनी चाहिये। दूर्वा और सरसोंके फूलसे उनको अर्घ्य देना और हाथ जोड़ करके यह मन्त्र पढ़ना पड़ता है—

> "रूपं देहि यशो देहि भाग्यं भगवति देहि मे।
> पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥"

इसके पीछे शुक्लवस्त्र परिधान करके सफेद चन्दन और सफेद फूलोंकी माला पहन ब्राह्मण भोजन कराना और गुरुको एक जोड़ा कपड़ा पहनाना चाहिये। इसी प्रकार विनायककी पूजा शेष होने पर नवग्रह, लक्ष्मी तथा

आदित्यका अर्चन और महागणपतिका तिलक किया जाता है। इससे सकल दोषोंकी शान्ति होती है। विनायक भी सन्तुष्ट हो करके पीड़ित व्यक्तिको परित्याग करते हैं। (याज्ञवल्क्य)

गणपतिदेव—दक्षिणदेशमें बरङ्गल राज्यके एक राजा, प्रतापचन्द्रके पुत्र। शिलालेख पढ़नेसे जाना जाता है कि १२२८ ई०में इन्होंने चोलोंको परास्त कर कलिङ्गदेश पर अधिकार किया था।

गणपतिनाग—समुद्रगुप्तके समसामयिक आर्यावर्त्तवासी एक राजा। ये समुद्रगुप्तसे परास्त हुए थे।

गणपतिरावल—एक विख्यात संस्कृत ग्रन्थकार। ये रावल हरिशङ्करके पुत्र और रामदासके पौत्र थे इन्होंने पूर्वनिर्णय, मुहूर्त्तगणपति, शान्तिगणपति, श्रौताधानपद्धति और सम्बन्धगणपति नामक धर्मशास्त्र प्रणयन किये हैं।

गणपतिव्यास—१ एक प्राचीन कवि। १२७२ ई०को इन्होंने धाराध्वंस नामक ऐतिहासिक काव्यकी रचना की है। २ योगसारसमुच्चय नामक वैद्यकग्रन्थरचयिता।

गणपर्वत (सं० पु०) गणानां प्रमथादीनां आवासरूपः पर्वतः। कैलासपर्वत। इस पर्वत पर प्रमथ वा शिवके गण रहते थे, इस लिये इसका नाम गणपर्वत पड़ा।

गणपाठ (सं० पु०) गणानां स्वरादिगुणानां पाठोऽत्र, बहुव्री०। पाणिनि प्रणीत एक ग्रन्थ। इसमें स्वरादि गणोंके विषय लिखे हुए हैं

गणपाद (सं० पु०) गणस्येव पादोऽस्य, बहुव्री०। जिसके दोनों पैर प्रमथ या शिवगणके जैसे हों।

गणपीठक (सं० क्ली०) गणस्य शिवस्य पीठः आसनमिव कायति कै-कः। वक्षःस्थल, छाती।

गणपुङ्गव (सं० पु०) गणः पुङ्गव इव उपमितस०। १ गणश्रेष्ठ। २ देशविशेष, एक देशका नाम ३ उस देशके रहनेवाले। ४ उस देशके राजा।

"कौलिङ्गान् गणपुङ्गवानथर्षिकानयोध्यकान् पार्थिवान्।"
(बृहत्संहिता ४।२४)

गणपूर्व (सं० पु०) गणानां ग्राम्यादिखलीकानां पूर्वः प्रधानं, ६-तत्। ग्रामणी, ग्रामके अधिनायक, गांवके मुखिया।

गणप्रमुख (सं० पु०) जाति वा श्रेणीमें प्रधान, वह जो जाति या समाजमें श्रेष्ठ हो।

गणभर्त्तृ (सं० पु०) गणानां प्रथमादीना भर्त्ता ६-तत्। १ महादेव, शिव।

"प्रणामाभिमुखे भजते गणभर्त्तृ कथा।" (किरातार्ज्जुनीय ४।४२)

२ गणेश। (त्रि०) ३ बहुजनस्वामी, जो बहुतोंके अधिपति हो।

गणभोजन (सं० क्ली०) साधारण भोज।

गणमुख (सं० पु०) गणानां मुखः, ६-तत्। ग्रामणी, ग्रामके अधिनायक, गांवके मुखिया।

"रविजे नमिते विजिते गणमुख्याः शस्त्रजीविनः च्यम्।"
(वृहत्सं० १७।२४)

गणयज्ञ (सं० पु०) गणस्य भ्रातृणां सखीनां वा समूहस्य करणीयो यज्ञः। भ्रातृवर्ग अथवा बन्धुवर्गका अनुष्ठेय मरुत्स्तोम नामक यज्ञ, भाइयों या बन्धुओंके करने योग्य मरुत्स्तोम नामक यज्ञ।

"वैश्यस्तोमदविषाःलिंगो मरुतस्तोमे गणयज्ञो भ्रातृणां सखीनां वा।"
(कात्यायनश्रौत० २२।११।१२)

गणयाग (सं० पु०) गणोद्देशेन शान्त्यर्थं यागः। १ गणपतिकल्प, गणेशके उद्देशसे करने योग्य पूजादि।

गणरत्न (सं० क्ली०) गणाः स्वरादि गणाः रत्नानीव यत्र, बहुव्री०। एक ग्रन्थका नाम। पाणिनिने गणपाठमें जो सब गण निर्देश किये हैं, वे ही इस ग्रन्थमें पद्यरूपसे लिखे हैं। व्याकरणाध्यायीके लिये यह विशेष उपकारी है।

गणरात्र (सं० क्ली०) गणानां रात्रीणां समाहारः, समाहार द्विगु, अच्। रात्रि समूह।

गणरूप (सं० पु०) गणा बहूनि रूपाणि यस्य, बहुव्री०। अर्कवृक्ष, अकवनका पेड़।

गणरूपी (सं० पु०) गणा बहूनि रूपाणि सन्त्यस्य गणरूप इनि। श्वेताकवृक्ष, सफेद आकका पेड़।

गणवत् (सं० त्रि०) गणोऽस्त्यस्य गण-मतुप् मस्य वः। गणयुक्त, जिसमें गण हों।

गणवती (सं० स्त्री०) धन्वंतरि दिवोदासकी माताका नाम।

गणशस् (अव्य०) गण वीप्सायां कारकार्थे शस्। बहुशः, दलका दल, झुण्डका झुण्ड।

गणाग्नि (सं० पु०) देवताविशेष, कोई देवता जो किसी

एक गणकमें आश्रय कर रहते हो, मरुत् प्रभृति सात देवता।

गणहास (सं० पु०) १ चोर नामक गन्धद्रव्य। (त्रि०) २ जो बहुत मनुष्योंको हंसा सके।

गणहासक, गणहास देखो।

गणाक्रान्त (सं० त्रि०) गणेन आक्रान्तः। १ किसी पक्षमें स्थित। २ जिस पर बहुत मनुष्योंने आक्रमण किया हो।

गणाग्रणी (सं० पु०) गणानां अग्रणीः, ६-तत्। १ गणेश। २ जो बहुतोंसे सम्मानित हो, जो बहुतोंमें श्रेष्ठ गिना जाता हो।

गणाचल (सं० पु०) गणभूयिष्ठोऽचलः। कैलास पर्वत। इस पर्वत पर गणदेवता रहते हैं, इसलिये इसका नाम गणाचल पड़ा है।

गणाचार्य (सं० पु०) लोकगुरु, शिक्षक।

गणाधिप (सं० पु०) गणानामधिपः, ६-तत्। १ गणेश। २ शिव। ३ गणोंके मालिक।

४ गणाधिप, जैनमतानुसार—साधुओंके संघमें जो सबसे श्रेष्ठ अथवा वृद्ध और बहुज्ञानी हों। मुनियोंके अधिपति। जैसे, श्रीजिनसेनाचार्य ५०० मुनियोंके संघके गणाधिप थे। (राजवार्तिक)

गणाध्यक्ष (सं० पु०) १ गणेश। २ शिव।

गणान्न (सं० क्ली०) गणानामन्नं, ६-तत्। बहुस्वामिक अन्न, वह अन्न जिस पर बहुतोंका अधिकार हो।

गणाभ्यन्तर (सं० पु०) गणः गणार्थोत्सृष्टमठधनादिः तेन अभ्यन्तर उपजीवी, ३-तत्। वह मनुष्य जो मठादिमें गण उद्देश्यसे दिये हुए धनादिसे प्रतिपालित होता हो, या वह मनुष्य जिसकी रक्षा मन्दिरके धनसे होती हो। भाष्यकार मेधातिथिने 'गणाभ्यन्तर' शब्दका अर्थ दूसरे प्रकारसे किया है। उनके मतसे जो मिलकर एक कार्यका अनुष्ठान करके जीविका निर्वाह करते, वे ही गण कहलाते हैं। इस गणके अन्तर्गत चातुर्विद्य ब्राह्मणोंको गणाभ्यन्तर कहते हैं।

गणि (सं० स्त्री०) गण-इन्। गणन, गणना, गिनती।

गणिका (सं० स्त्री०) गणो लम्पटे गण उपपतित्वे नास्ति अस्याः गण-ठन्-टाप्। १ वेश्या, रंडी। मेधातिथिके मतसे जो कामिनी सिर्फ संभोगकी इच्छासे बहुत मनुष्योंमें अनुरक्त हो जाती हों, उन्हें पुंश्चली कहते हैं। एवं जो अपनेको सजधज कर युवकोंको वशीभूत करतीं और वेश्याके वेशमें रहती हैं और यथार्थमें जिनके हृदयमें संभोग की इच्छा कभी भी नहीं रहती तथा धन देनेपर जो सभोंके प्रति अनुराग करती हैं, उन वेश्याओंको गणिका कहते हैं।

मनुके मतानुसार इनका अन्न खानेसे किसी तरहकी सद्गति नहीं मिलती है। वेश्या शब्द देखो। २ यूथिका।

गणिकारिका (सं० स्त्री०) गणिं गणनं करोति। १ नदीके समीप उत्पन्न वृक्षविशेष, एक गनियारका पेड़। इसका पर्याय—श्रीपर्ण, अग्निमन्थ, गणिका, जया, तेजोमन्थ, ज्योतिष्क, पावक, अरणि, वह्निमन्थ, मथन, गिरिकर्णिका, अग्निमथन, तर्कारी, वैजयन्तिका, अरणीकेतु, श्रीपर्णी, कर्णिका, नादेयी, विजया, अनन्ता और नदीजा है। इसका गुण—कटु, उष्ण, तिक्त, कफ, वायु, शोथ, अग्निमान्द्य, अर्श, मलबन्ध और अमनाशक है।

गणिकारी (सं० स्त्री०) पुष्पवृक्षविशेष, गनियारका पेड़। वसन्त कालमें इसके फूल खिल कर चारो ओर सुगन्धित कर देते हैं।

गणित (सं० क्ली०) १ गणन, गण[illegible] ना, गिनती। २ [illegible] की गति, स्थितिकी गणना [illegible]। ३ अङ्कशास्त्र। गणित दो भागोंमें विभक्त है [illegible] व्यक्तगणित या पाटीगणित और अव्यक्तगणित या बीजगणित। ४ जिसकी गणना [illegible] गणित (त्रि०) गण कर्मणि क्त। गणितेन गणनया [illegible], दोषयुक्त अङ्को गिना गया हो। [illegible] प्रजाका उपहार। ५ खेतीका फल।

गणितज्ञ (सं० पु०) गण[illegible]ने वाला, ज्योतिषी।

गणिताध्याय (सं० पु०) भास्कराचार्य प्रणीत सिद्धान्तशिरोमणिका एक विस्तृत अध्याय। इसमें ग्रहोंकी मध्यगति और स्फुटादि विषय अच्छी तरह लिखे गये हैं। लीलावती और बीजगणित जान लेने पर इसका मर्मग्रहण करना सहज है।

गणितिन् (सं० त्रि०) हिसाबी, जो हिसाब किताब करता हो।

गणिपिटक (सं० क्ली०) जैनोंके द्वादश अङ्ग। १ आचार अङ्ग, २ सूत्रकृत, ३ स्थानाङ्ग, ४ समवाय, ५ व्याख्या प्रज्ञप्ति, ६ ज्ञातृ, ७ उपासकाध्ययन, ८ अन्तकृद्दशाङ्ग,

८ अनुत्तरोपपादक दशाङ्ग:, १० प्रश्नव्याकरण, ११ विपाक-श्रुत, १२ दृष्टिप्रवाद इन बारहोंको गणिपिटक कहते हैं।

गणीभूत (सं० त्रि०) जो किसी गण या पक्षमें स्थित हो, गणाक्रान्त।

गणेय (सं० त्रि०) संख्येय, गिनने योग्य, गिनती लायक।

गणेरु (सं० पु०) १ कर्णिकावृक्ष। २ वेश्या। ३ हस्तिनी, मादा हाथी।

गणेरुका (सं० स्त्री०) गणेरुषु वेश्यासु कायति कै-क:। कुटनी, दूती।

गणेश (सं० पु०) गणानामीशः ६-तत्। पार्वतीनन्दन, गिरिजाके पुत्र। शनैश्चरकी दृष्टि पड़नेसे इनका सिर कट गया था इस पर विष्णुने एक हाथीका सिर काट कर धड़ पर संयोजित कर दिया, इसी कारण इनका नाम गजानन पड़ा। गजानन देखो। महावल क्षत्रियान्तकारी परशुराम क्षत्रियोंका विनाश कर शिव और पार्वतीको नमस्कार करनेके लिये कैलास गये। उस समय शिव और पार्वती गाढ़ी निद्रामें पड़े थे और गजानन द्वार पर पहरा देते थे जिससे उन्होंकी निद्रामें किसी प्रकारका विघ्न न हो। परशुरामने आकर कहा कि मैं शिव और पार्वतीसे भेंट करना चाहता हूं। किन्तु गणेशने उन्हें वाधा देते हुए कहा, प्रभो! अभी वे दोनों निद्राके वशीभूत हैं। कृपया थोड़ी देर विलम्ब जाइये, जागने पर उनसे साक्षात् कर सकते हैं। इस पर परशुरामजी सन्तुष्ट न हुए। एक दूसरेकी मीठी बातोंसे कुछ काल तक समझानेकी चेष्टा करते रहे किन्तु निष्फल हुआ। तब परशुरामजी क्रोधित हो पड़े और गणेशको अवहेलना करते हुए भीतर जाने लगे। इस पर गणेशने उनको हाथोंसे पकड़ समस्त त्रिभुवनमें घुमा कर छोड़ दिया। परशुरामने लज्जित हो कर अपने परशुको बाहर निकाला और उस पर निक्षेप किया। परशुको आघातसे तो गणेशका विनाश नहीं हुआ लेकिन एक दांत जड़से उखड़ गया। इसी कारण गणेश एकदन्त कहलाते हैं। (ब्रह्मवैवर्तपु० गणेशखण्ड)

गणेश एक प्रसिद्ध लेखक थे। महाभारतमें लिखा है कि सत्यवतीनन्दन व्यासदेव योगवलसे विपुलायतन महाभारत मनही मन रचे थे, किन्तु लेखकके अभावसे जनसमाजमें उसका प्रचार न कर सके। इसलिये वे अत्यन्त चिन्तित और विपन्न हो गये। एक दिन हिरण्यगर्भसे उन्होंने अपने मनकी व्यथा कह सुनाई। इस पर हिरण्यगर्भने गणेशको लेखक करनेके लिये परामर्श किया। व्यासदेवने गणेशको लिखनेके लिये अनुरोध किया। गणेशने यह कहते हुवे लिखना अङ्गीकार किया कि यदि व्यासदेवको बोलनेमें विलम्ब हो जाय जिस कारण उनके दोषसे मेरी लेखनी विश्रान्त हो पड़े तो मैं कदापि लिख नहीं सकता। गणेशने लिखना आरम्भ किया और व्यास कहने लगे। जब व्यास देखते थे कि अब अधिक कहा नहीं जाता तो उसी समय दो एक कूट श्लोक रचना कर बोलते जाते थे। गणेशको इस कूट श्लोकका अर्थ शीघ्र समझमें न आनेके कारण लेखनीको कुछ कालके लिये रुक जानी पड़ती थी इसी अवसर पर व्यास मनही मन बहुत श्लोक रचना कर डालते थे। (भारत १।१।८०)

जब कोई कार्य आरम्भ करना होता है तो उस समय गणेशकी मूर्तिको स्मरण करनेसे वह कार्य निर्विघ्न समाप्त हो जाता है। इसी कारण गणेशको सिद्धिदाता भी कहा करते हैं। आस्तिक हिन्दु-लेखक सबसे पहले गणेशका नाम लिखा करते हैं। उन्होंका विश्वास है कि गणेश एक प्रसिद्ध लेखक और सिद्धिदाता हैं। इसी लिये इनका नाम पहले लिखनेसे किसी प्रकारके विघ्नकी सम्भावना नहीं रहती है।

स्कन्दपुराणके गणेशखण्डमें वक्रतुण्ड, कपिल, चिन्तामणि तथा विनायक प्रभृति रूपोंमें गणेशके अवतारकी कथा लिखी है। गणपति-तत्त्व नामक ग्रन्थके मतसे गणेश ही परब्रह्म, श्रुति-स्मृति वर्णित परमब्रह्म, परमेश्वर हैं। गणपति-तत्त्वमें लिखा है कि गणेश सर्वेश्वर, भूत, भविष्य और वर्तमानको हालत जाननेवाले हैं। मूर्तिभेदसे ये ही मस्तकके प्रतिपालक हैं, फिर समस्त जन्य-पदार्थ इन्हींमें लय हो जाते हैं तथा ये ही प्रधान अर्थात् प्रकृति एवं क्षेत्रज्ञ अर्थात् जीवात्माके अधिपति हैं। इनकी आराधना करनेसे मुक्तिलाभ होता है। जिस तरह शक्तिके उपासक शाक्त और विष्णुके उपासक वैष्णव कहलाते उसी तरह जो गणपतिके उपासक हैं वे गाणपत्य कहलाते हैं। हिन्दू सिद्धिदाता गणेशको पूजा सबसे

पहले करते हैं। गणेश अनेक प्रकारके हैं। तन्त्रमें ५० गणेशका उल्लेख है। यथा—१ विघ्नेश, २ विघ्नराज, ३ विनायक, ४ शिवोत्तम, ५ विघ्नकृत्, ६ विघ्नहर्त्ता, ७ गण, ८ एकदन्त, ९ अदन्तक, १० गजवक्त्र, ११ निरञ्जन, १२ कपर्द्दी, १३ दीर्घजिह्वक, १४ शङ्कुकर्ण, १५ वृषभध्वज, १६ गणनायक, १७ गजेन्द्र, १८ सूर्पकर्ण, १९ त्रिलोचन, २० लम्बोदर, २१ महानन्दा, २२ मूर्तमूर्ति, २३ सदाशिव, २४ आमोद, २५ दुर्मुख, २६ सुमुख, २७ प्रमोदक, २८ एकपाद, २९ द्विजिह्व, ३० शूरवीर, ३१ षण्मुख, ३२ वरद, ३३ वामदेव, ३४ वक्रतुण्ड, ३५ द्विरण्डक, ३६ सेनानी, ३७ ग्रामणी, ३८ मत्त, ३९ विमत्त, ४० मत्तवाहक, ४१ जटी, ४२ मुण्डी, ४३ खड्गी, ४४ वरेण्य, ४५ वृषकेतन, ४६ भक्तप्रिय, ४७ गणेश, ४८ मेघनाद, ४९ व्यापी और ५० गणेश्वर। गणेशके उपरोक्त पचास नामोंकी फिर पचास शक्तियां हैं। यथा—१ ह्री, २ श्री, ३ पुष्टि, ४ शान्ति, ५ स्वस्ति, ६ सरस्वती, ७ स्वाहा, ८ मेधा, ९ कान्ति, १० कामिनी, ११ मोहिनी, १२ नटी, १३ पार्वती, १४ ज्वलिनी, १५ नन्दा, १६ सुषमा, १७ कामरूपिणी, १८ उमा, १९ तेजोवती, २० सत्या, २१ विघ्नेशानी, २२ सुरूपिणी, २३ कामदा, २४ मदजिह्वा, २५ भूति, २६ भौतिक, २७ सिता, २८ रमा, २९ महिषी, ३० भृङ्गिणी, ३१ विकर्णा, ३२ भ्रुकुटि, ३३ दीर्घघोणा, ३४ धनुर्द्धरा, ३५ यामिनी, ३६ रात्रि, ३७ कामान्धा, ३८ शशिप्रभा, ३९ लोलाक्षी, ४० चञ्चला, ४१ दीप्ति, ४२ सुभगा, ४३ दुर्भगा, ४४ शिवा, ४५ भर्गा, ४६ भगिनी, ४७ शुभदा, ४८ कालरात्रि, ४९ कालिका, और ५० लज्जा। (शारदातिलकटीकामें राघवभट्ट)

गणेशके शरीर स्थूल तथा खर्व, मुख हाथीसा और उदर लम्बा है। इनके कपालसे मदजल निःसृत होता है, जिसके सौरभसे आकुल हो कर मधुपकुल गण्डस्थलके निकट सर्वदा भ्रमण करते रहते हैं। बृहत् दन्तकी आघातसे अरिकुल निधन हो कर उनका रक्त सिन्दुरकीसी शोभा देता है। गणेश यथार्थमें बहुत सुन्दर हैं और इनकी आराधना करनेसे विघ्न नाश तथा सिद्धि होती। है (तन्त्र)

गणेशका ध्यान : यथा—

"खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम्।
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्॥
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम्।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कर्मसु॥"

प्रायः सब कोई इसी ध्यानसे गणेशकी पूजा किया करते हैं। तन्त्रसारमें गणेशका और दूसरा ध्यान लिखा है। तान्त्रिकगण इसी ध्यानसे गणेश-पूजा करते हैं—

गणेशका तान्त्रिक ध्यान यथा—

"सिन्दूराभं त्रिनेत्रं पृथुतरजठरं हस्तपद्मैर्दधानं।
दन्तं पाशाङ्कुशेष्टान्युरुकरविलसद्बीजपूराभिरामम्॥
बालेन्दुद्योतमौलिं करिपतिवदनं दानपूरार्द्रगण्डं।
भोगीन्द्राबद्धभूषम् भजत गणपतिं रक्तवस्त्राङ्गरागम्॥" (तन्त्रसार)

इस ध्यानसे जाना जाता है कि गणेशके चार हाथ और तीन नेत्र हैं, इनकी मूसेकी सवारी है जिस पर चढ़

कर ये त्रिभुवन भ्रमण किया करते हैं। बहुत स्त्रियोंका विश्वास है कि गणेशकी आराधनासे गृहमें इन्दुरका उपद्रव नहीं रहता है। इसलिये बहुतसी गृहस्थ महिला विजयाके दिन दुर्गाप्रतिमाके पार्श्वस्थित गणेशमूर्त्तिके पद पर मूसेकी मट्टी रख देती हैं और उनका दौरात्म्य निवारणके लिये प्रार्थना करती हैं।

गणेशका बीजमन्त्र :—

गां हृदयाय नमः, गीं शिरसे स्वाहा, इत्यादि क्रमसे अङ्गन्यास और करन्यास करना पड़ता है। गणेशका पौराणिक मन्त्र, 'ओं नमो गणेशाय।" गणेश गायत्री।

"एकदंष्ट्राय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो विघ्न प्रचोदयात्।"
(प्रायश्चित्तविवेक)

गणेशका नमस्कार मंत्र—

"देवेन्द्रमौलिमन्दार-मकरन्द-कणारुणा।
विघ्नान् हरन्तु हेरम्ब चरणाम्बुजरेणवः॥"

पश्चिम-उत्तर अञ्चलमें वक्रतुण्ड और ढुण्ढिराज ये दोनों गणेश अति प्रसिद्ध हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराणके मतसे—

ओं श्रीं ह्रीं क्लीं गणेश्वराय ब्रह्मरूपाय सर्वसिद्धि प्रदेशाय विघ्नेशाय नमो नमः। इसी मन्त्रसे गणेशपूजा करनी उचित है! तुलसीपत्र द्वारा गणेशपूजा करना निषिद्ध मानी जाती है। गणेशके इस मन्त्रको पचास लाख बार जपनेसे मंत्रकी सिद्धि होती है। गणेशपूजा शेष होने पर स्तवपाठ करना चाहिये। गणेशका स्तव, यथा -

श्रीविष्णुरुवाच।

"ईश! त्वां स्तोतुमिच्छामि ब्रह्मज्योतिः सनातनम्।
निरूपितुमशक्तोऽहं अनुरूपमनूहकम्।
प्रवरं सर्वदेवानां सिद्धानां योगिनां गुरुम्।
ब्रह्मस्वरूपं सर्वेशं ज्ञानराशिस्वरूपिणम्॥
अव्यक्तमक्षरं नित्यं सत्यमात्मस्वरूपिणम्।
वायुतुल्यातिनिर्लिप्तं चाक्षतं सर्वसाक्षिणम्॥
संसारार्णवपारे च मायापोते सुदुर्लभम्।
कर्णधारस्वरूपञ्च भक्तानुग्रहकारकम्॥
वरं वरेण्यं वरदं वरदानामपीश्वरम्।
सिद्धं सिद्धिस्वरूपञ्च सिद्धिदं सिद्धिसाधनम्॥
ध्यानातिरिक्तं ध्येयञ्च ध्यानासाध्यञ्च धार्मिकम्।
धर्मस्वरूपं धर्मज्ञं धर्माधर्मफलप्रदम्॥
वीजं संसारवृक्षाणामङ्कुरञ्च तदाश्रयम्।
स्त्रीपुंनपुंसकानाञ्च रूपमेतदतीन्द्रियम्॥
सर्वाद्यमग्रपूज्यञ्च प्राकरं प्रकृतेः परम्।
त्वां स्तोतुमक्षमोऽनन्तः सहस्रवदनेन च॥
न क्षमः पञ्चवक्त्रश्च न क्षमश्चतुराननः।
सरस्वती न शक्ता च न शक्तोऽहं तव स्तुतौ॥
इत्येवं स्तवनं कृत्वा सुरेशं सुरसंसदि।
सुरेशश्च सुरैः सार्द्धं विरराम रमापतिः॥
इदं विष्णुकृतं स्तोत्रं गणेशस्य च यः पठेत्॥
सायं प्रातश्च मध्याह्ने भक्तियुक्तः समाहितः॥
तद्विघ्ननिघ्नं कुरुते विघ्नेशः सततं सुने।
वर्द्धयेत सर्वकल्याणं कल्याणजनकः सदा॥
यात्राकाले पठित्वा तु यो याति भक्तिपूर्वकम्।
तस्य सर्वाभीष्टसिद्धिर्भवत्येव न संशयः॥
तेन दृष्टञ्च दुःस्वप्नं सुस्वप्नमुपजायते।
कदापि न भवेत् तस्य ग्रहपीड़ा च दारुणा॥
भवेद विनाशः शत्रूणां बन्धूनाञ्च विवर्द्धनम्।
शश्वद विघ्नविनाशश्च शश्वत सम्पद्विवर्द्धनम्॥
स्थिरा भवेद् गृहे लक्ष्मीः पुत्रपौत्रविवर्द्धनी।
सर्वैश्वर्यमिहप्राप्य ह्यन्ते विष्णुपदं लभेत्॥
फलञ्चापि च तीर्थानां यज्ञानां यद्भवेत् ध्रुवम्।
महतां सर्वदानानां श्रीगणेशप्रसादतः॥
इति श्रीब्रह्मवैवर्त्तपुराणे गणेशखण्डे विष्णुकृतं गणेशस्तोत्रं॥"

गणेशपूजा सिर्फ भारतवर्षमें ही नहीं होती वरं और भी देशोंमें यथा नेपाल, चीन, जापान और मङ्गोलियामें होती है। नेपालके हिन्दू और बौद्धावलम्बियोंको पूरा विश्वास है कि गणेशको पूजासे अभीष्ट सिद्ध होता है। नेपालमें पशुपतिनाथ मन्दिरके उत्तरमें एक प्राचीन तथा प्रसिद्ध गणेशमन्दिर है जिसे अशोककी लड़की चारुमतीने निर्माण कराया है। यवद्वीपमें भी गणेशके कई एक स्वरूपकी मूर्तियोंकी पूजा होती है। मन्त्रमहोदधिमें गणेशका ध्यान यों है—

"विषाणांकुशाक्षसूत्रञ्च दधानं करैर्मोदकं पुष्करेण।
स्वपत्न्या युतं हेमभूषाभराढ्यं गणेशं समुद्यद्दिनेशाभमीड़े।"

गणेशके हाथोंमें पाश, अंकुश, पद्म और परशु हैं और सूड़के अग्रभाग पर मिठाईयां हैं। ये अपने साथ सहधामिनी लिये हुए हैं और अपने सुवर्ण अलङ्कारोंसे ये सूर्यके जैसे दीखते हैं।

२ एक विख्यात ज्योतिर्विद्। इन्होंने आपप्रश्नजातक-कल्पलता, तिथिचिन्तामणि-पञ्चाङ्गसाधन, तिथिचिन्तामणि, सारणी, पाटीटीका, भावाध्याय, रत्नावली पद्धति, स्त्रीजातक प्रभृति संस्कृत ज्योतिषकी रचना की है। ३ हिरण्यकेशिकारिकाके रचयिता। ४ पिष्टपशुमरणी और महिषोत्सर्गविधि नामक धर्मशास्त्र-संग्रहकार। ५ भागवतवादितोषिणीके रचयिता। ६ रसतरङ्गिणीके रसोदधि नामका टीकाकार। ७ स्मृतिचन्द्रोदय-प्रणेता। ८ कृष्णभट्टके पुत्र, ऋग्वेद पाठानुक्रमणदीपिकाके रचयिता। ९ गोपालके पुत्र। इन्होंने १६१४ ई०को जातकालङ्कार नामक संस्कृत ग्रन्थकी रचना की है। १० दुण्ढिराजके पुत्र। इन्होंने गणितमञ्जरी, ताजिकचन्द्रिका-विनोद, ताजिकभूषण प्रभृति संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किये हैं। ११ बल्लालसेनके पुत्र, शिवतोषिणी नामक लिङ्गपुराणके टीकाकार। १२ रामदेवके पुत्र, नालोदय टीका-रचयिता। १३ बनारसके एक हिन्दी कवि। यह

महाराज ईश्वरीनारायणसिंहकी सभामें उपस्थित रहते और १८८३ ई० को जीवित थे। रसचन्द्रोदय ग्रन्थके रचयिता ठाकुरप्रसादसे इनकी मित्रता थी।

गणेशकुण्ड (सं० क्लो०) १ नर्मदा नदीके तीरवर्त्ती एक कुण्ड। स्कन्दपुराणके गणेशखण्डमें इस कुण्डका उत्पत्ति-विषय इस प्रकार लिखा हुआ है—एक दिन पार्वती और शिव घोर निद्रामें पड़े थे। इसी समय सिन्दूर नाम का एक दुष्ट दैत्य वहां आ पहुंचा। पार्वती और शिवको घोर निद्रामें देखकर वह दुष्ट दैत्य पार्वतीके उदरमें प्रवेश कर गया और उसके गर्भस्थ सन्तानका मस्तक काटकर निकल आया इस गर्भमें गणेशका जन्म था। सिन्दूरदैत्यने गणेशके मस्तककी नर्मदाके किनारे जिस स्थान पर रखा था, उसी समय उस स्थान पर एक कुण्ड हो गया जो गणेशकुण्डसे मशहूर है। इस कुण्डके निकट रक्तवर्ण शिलाखंड है, कोई कोई इसे गणेशशिला कहा करते हैं।

गणेशकुम्भ (सं० पु०) उड़ीसाकी एक पहाड़ी कन्दरा।

गणेशकुसुम (सं० क्लो०) गणेशवत् रक्तं कुसुमं। १ रक्त करवीर, लाल कनेर। २ रक्तकुसुम, लाल फूल।

गणेशक्रिया (सं० स्त्री०) योगकी एक क्रिया जिसमें उंगली आदिकी सहायतासे गुदाका मल साफ करते हैं।

गणेशखण्ड (सं० क्लो०) स्कन्दपुराणका एक अंश। इसमें गणेशके आविर्भाव प्रभृतिका वर्णन है।

गणेशखिन्द, बम्बई प्रदेशमें पूना जिलाके अन्तर्गत एक प्रसिद्ध बड़ा ग्राम। यह बंबई जानेकी राह पर अवस्थित है। यहां चतरसिंही देवीका मन्दिर है। भोमवर्डा पहाड़ अश्वखुराकारमें इस ग्रामसे मिला हुवा है। इस पहाड़के ऊपर एक गुहामन्दिर विद्यमान है। जिसकी लम्बाई प्रायः २० फुट, चौड़ाई १५ फुट और ऊंचाई १० फुट होगी। अभी इस गुहामन्दिरमें एक साधु वास करते हैं। यहां शिव-लिङ्ग तथा लक्ष्मीकी मूर्ति हैं। उससे २० हाथ पश्चिम पहाड़के ऊपरकी ओर दो गुहे हैं। उससे भी कुछ दूर जल रखनेका एक कुण्ड है। प्रत्येक शुक्रवारको यहां हाट लगता है। आश्विन मासमें नवरात्रिके समय मन्दिरमें कुछ उत्सव हुआ करता है। जाटराजासे प्रतिष्ठित एक अधूरा कुआं है। गणेशखिन्दमें बम्बईके लाट साहबका एक घर है। आषाढ माससे आश्विन मास तक ये यहां रहते हैं। इसके निकट दूसरे दूसरे अङ्गरेजोंके रहनेके लिये स्वतन्त्र घर हैं।

गणेशगुहा (गणेशलेना) १ बम्बई प्रदेशमें पूना नगरके निकटस्थ कई एक गुहा, जहां पर हाटकेश्वर और सुले-मान पहाड़ मिले हैं, वहांसे एक छोटा पहाड़ निकल कर पूना नगरके उत्तरकी ओर गया है। इस छोटे पहाड़ पर कई जगह गुहा खोदे हुये हैं, उनमेंसे सबसे बड़ी गुहाका नाम गणेशलेना है। इसमें गणेशपतिका मंदिर अवस्थित है। नगरके उत्तर भागसे उख, इमली, और आमका उद्यान हो कर मंदिर पर जाना होता है। १७७४ ई०में ६ठा पेशवा रघुनाथ रावके पुत्र अमृत राव-ने इन सब आम्रवृक्षोंको रोपा था। इसके बाद मंदिरके ऊपर जानेके रास्ते पर पहाड़के नीचे गणपतिके भक्तों-की बनाई हुई सोपान श्रेणी है सोपान और असम पहाड़की भूमि पार हो कर मंदिर पर जाना होता है। एकादि क्रमसे इसमें २४ गुहामंदिर हैं जिनमें भिन्न भिन्न तरहकी देवदेवियोंकी मूर्तियां और अनेक तरह के शिलालेख हैं। २ उड़ीसेके अन्तर्गत उदयगिरि पहाड़-का एक गुहा मन्दिर है। पहाड़के उपरमें यह गुहा अव-स्थित है। इस मन्दिरमें गणेशदेवकी मूर्ति तथा और कई तरहकी मूर्तियां हैं। इस गुहाका शिल्पनैपुण्य देख कर आश्चर्य मानना पड़ता है।

गणेशचतुर्थी (सं० स्त्री०) भाद्र और माघकी शुक्ला चतुर्थी। इस दिन गणेशका व्रत और पूजन किया जाता है।

गणेशचतुर्थी (सं० स्त्री०) दक्षिणापथवासियोंका करणीय एक प्रधान व्रत, गणेश चौथ। बम्बई और पूना अञ्चलमें इसके उपलक्षसे विशेष उत्सव हुआ करता है। स्कन्द-पुराणके मतमें भाद्रपदी चतुर्थीको गणेशका जन्म हुआ था। उसीके उपलक्षमें इस व्रतकी उत्पत्ति है।* इसके लिये बम्बई प्रदेशके बहुतसे घरोंमें स्वतन्त्र स्थान निर्दिष्ट होता है। इस व्रतमें पूजाका आडम्बर यथेष्ट है। व्रतके कई दिन पहले उक्त स्थान कलईसे परिष्कार किया जाता है। लोग अपने साध्यानुसार आलोकमालासे गृहक सज्जित करते हैं। गणेशचतुर्थीके दिन प्रातःकाल

* भविष्योत्तरपुराणके मतानुसार फाल्गुन मासकी चतुर्थी तिथिको भी व्रत करना चाहिये।

घरके बड़े बड़े और लड़के कहार, डोली और वाद्यकर साथ ले करके बाजार जाते और वहां मट्टीकी एक गणपति मूर्ति क्रय कर और डोलीमें रख करके वाद्य करते करते उसको गृह ले आते हैं। बड़े आमदनियोंमें बहुतसे लोगोंके घर पर ही मूर्ति बना करती है। कहीं कहीं थालीमें चावलके आटेसे ही गणेशमूर्ति अङ्कित कर ली जाती है। भिन्न भिन्न घरोंका अलग अलग नियम है। मूर्ति प्रायः चतुर्भुज होती है। बाजारमें जो मूर्तियां बिकतीं, एक श्रेणीके ब्राह्मणके हाथको बनी रहती हैं। देवमूर्तिनिर्माण ही उनका व्यवसाय है। बाजारसे गणेशमूर्ति घर पहुंचने पर गृहिणी प्रदीप ले करके आरति उतारती और लीपी पोती दालानमें ले जा करके सिंहासन पर उसको स्थापन करती है। फिर पुरोहित आ करके यथाविहित पूजादि करते हैं। गणेशका वाहन इन्दुर भी निकट ही रहता है। पुरोहितकी पूजाके पीछे गृहस्वामी घरके सब लोगोंमें मिल करके उच्चःस्वरसे गणपतिदेवकी महिमाकी गान करते हैं। इसी प्रकार प्रातः और सायं कालको गान होता है। सवेरे सब लोग चावलके आटेसे बने लड्डू आहार करते हैं। रातको उसका कुछ अंश इन्दुरोंको खिलाया जाता है। प्रवाद है—एक दिन गणपति मूषिक पर चढ़ करके चलते चलते गिर पड़े थे आकाशसे चन्द्र यह देख करके हंस पड़े। गणपतिने उस पर क्रुद्ध हो करके चन्द्रको अभिसम्पात किया था—कोई अब तुम्हें न देखेगा। चन्द्रदेव अपराध स्वीकार करके शाप मोचनके लिये प्रार्थना करने लगे। गणपति तुष्ट हो गये, परन्तु उनका वाक्य व्यर्थ होनेवाला न था। इसीसे उन्होंने कहा कि वत्सरमें अन्ततः एक दिन लोग चन्द्रका मुख न देखेंगे। सुतरां गणपतिके जन्मदिवसको नष्टचन्द्र होता है। उस दिन कोई उसके प्रति दृष्टिपात नहीं करता। चतुर्थी व्रतके पीछे कोई १ दिन, कोई २ दिन और कोई २१ दिन पर्यन्त गणपति की प्रतिमाकी पूजा करता है। प्रातः और सन्ध्याको यह पूजा होती है। विसर्जनके दिन फिर कहार पालकी ले आते हैं। वाद्य बराबर हुआ करता है। पुरोहित आ करके गणेशकी पूजा और गृहस्थके मङ्गल तथा बालककी विद्याप्राप्तिके लिये प्रार्थना करते हैं। उसके पीछे विसर्जन होता है। विसर्जनसे पूर्व ब्राह्मणी आ करके प्रदीप जला आरति उतार यात्राके अर्थ हाथमें दधि डाल देवमूर्तिको पालकी पर बैठा देती है। पालकीको नाना पुष्पोंसे सुशोभित करके निकटस्थ नदी वा ह्रदके कूल पर ले जाते हैं। जलके निकट डोली रख करके देवमूर्तिको निकाल एक बार प्रदीप ले आरति की जाती है। फिर सब लोग रोते रोते देवमूर्तिको जलमें विसर्जन करते हैं। उसकी भावना करके दुःख शोकसे कातर हो सबके सब घर चले आते, फिर एक वत्सर पीछे वह देखनेको मिलेगा या नहीं।

भाद्रपदकी पञ्चमी अर्थात् गणेश-पूजाके परदिनको स्त्रियां 'सप्तभ्रात' वा सात भाइयोंके सम्मानार्थ व्रत पालन करती हैं। उस दिन वीजज वा मानवहस्तप्रसुत कोई द्रव्य वह भक्षण नहीं करतीं। सभी फलमूल आहार करके दिन यापन करती हैं। भाद्रपदीय अष्टमी और नवमीको गणेशजननी गौरीका व्रत होता है। उस दिन घरमें चन्दनका आलिम्पन लगाते और गृहद्वारको वन्दनवारसे सजाते हैं। तेंड़ा वृक्षकी वस्त्रमें लपेट जा नवपत्रिका बनती, वही गौरीकी प्रतिमा ठहरती है। इसको कोई बालिका गोदमें ले लेती है। बालिकाके हाथमें एक पात्र, एक प्रज्वलित दीप, कई एक शस्य और सिन्दूरका एक पत्ता रहता है। एक बालक घण्टा बजाते बजाते साथ चला जाता है। गृहस्थ रमणी उस बालिकाको घरमें ले जा करके बैठालती और प्रदीप जला करके गौरी देवीकी आरति उतारती हैं। फिर उसको एक एक फल खिला करके कहती है—लक्ष्मी, लक्ष्मी! क्या तुम आयी हो। बालिकाके उत्तरमें कहनेसे कि वह आयी थीं, प्रश्न होता है—तुम क्या लायी हो बालिका इस पर बोल उठती है—घोड़ा, हाथी, सैन्य और राशि राशि धन जिससे तुम्हारा घर और यह नगर परिपूर्ण हो जावेगा। इसी प्रकार एक एक करके सब घरोंमें जा शेष पर गौरीको मध्यस्थ कमरेमें ले जा करके निर्दिष्ट स्थान पर दीवारमें ठांस करके रखा जाता है। सन्ध्याके पीछे नाना विध फल, दुग्ध और मिष्टान्न भोग लगता है। फिर रात चढ़ने पर नानाविध अलङ्कारोंसे गौरीको

संज्ञात करते हैं। दिनको कोली और कुरमी जातिकी स्त्रियां आ करके देवीके सम्मुख नृत्यगीत लगाती हैं। तीन दिन अन्नभोगके पीछे देवीके भूषणादि खोल उनके वस्त्रमें कुछ खाद्य और ४ पैसे बांध किसी दास वा दासीके हस्तमें दिया जाता है। दास उसको ले करके घरसे बाहर निकलता है। गृहणी भी जलकी धारा देती चली जाती है। शेषमें दास देवीको जलमें विसर्जन करके वस्त्र और थोड़ासा जल ले गृह लौट आता है।

गणेशजननी (सं० स्त्री०) गणेशस्य जननी, ६-तत्। दुर्गा।

''गणेशजननी दुर्गा राधा लक्ष्मी सरस्वती।'' (तन्त्रसार)

गणेशदत्त क्रमदीपिका तन्त्रका एक टीकाकार।

गणेशदत्तशर्मा—यह ''मैथिल गणेशदत्त शर्मा'' नामसे ख्यात तथा मालतीमाधवका बनाया ''प्रकरणोद्धार''के टीकाकार हैं।

गणेशदास द्रव्यादर्श नामक वैद्यक ग्रन्थकार।

गणेशदीक्षित—एक विख्यात दार्शनिक। ये भावा विश्वनाथ दीक्षितके पुत्र, भावा रामकृष्णके पौत्र तथा विज्ञानभिक्षुके शिष्य हैं। इन्होंने सांख्यसूत्रकी टीका, प्रबोधचन्द्रोदयकी चिद्‌चन्द्रिका नामकी टीका, तर्कभाषाकी तत्त्व प्रबोधिनी नामक टीका, तत्त्वसमास यथार्थ दीपन, योगानुशासनसूत्रवृत्ति प्रभृतिको संस्कृत टीकाओंकी रचना की है।

गणेशदेव सङ्गीतशास्त्रविद् पण्डित। राजा खड्गबाहुके आदेशसे इन्होंने सङ्गीतकल्पतरुकी सुबोधिनी नामकी टीका प्रणयन की है।

गणेशदेवज्ञ—नन्दीग्रामवासी एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्। इनका दूसरा नाम गणेश्वर आचार्य था। ये केशवार्कके पुत्र और नृसिंहदैवज्ञके चचा थे। इन्होंने कई एक ज्योतिःग्रन्थोंकी रचना की है, जिनमेंसे ग्रहलाघव, चापुकयन्त्र, तर्जनीयन्त्र, प्रतोदयन्त्र, लघूपयन्त्र, वृहत् और लघुतिथिचिन्तामणि, मङ्गलनिर्णय (धर्मशास्त्र), श्राद्धादिनिर्णय, सिद्धान्तशिरोमणिविवृति, चन्द्रोर्मिवटीका, पातसारणी, बुद्धिविलासिनी नामकी लीलावतीव्याख्या तथा केशवके मुहूर्ततत्त्व और विवाहवृन्दावनकी टीका पाई जाती है।

उक्त ग्रन्थोंमेंसे ग्रहलाघव ही प्रधान है। गणेशका ग्रहलाघव १४४२ शकमें (१५२० ई०) पातसारणी १४४४ शकमें (१५२२ ई०) और लीलावतीव्याख्या १५४६ ई०में रची गई हैं।

गणेशपण्डित—हरिविनोद नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गणेशपाठक—निर्णयकौस्तुभ नामक न्याय और प्रयोगकौस्तुभ नामक धर्मशास्त्रप्रणेता।

गणेशपुराण—एक उपपुराणका नाम। इसमें गणेशमाहात्म्य वर्णित है।

गणेशभट्ट—१ उद्वाहविवेक नामक संस्कृत ग्रन्थप्रणेता। २ शाकुनदीपकके रचयिता।

गणेशभारती—शिवताण्डवस्तोत्रटीकाके प्रणेता।

गणेशभिषक्—एक विख्यात चिकित्सक। इन्होंने चिकित्सामृत, योगचिन्तामणि, रुग्विनिश्चयार्थप्रकाशिका प्रभृति वैद्यक ग्रन्थ प्रणयन किये हैं।

गणेशभूषण (सं० क्ली०) गणेशं भूषयति गणेश-भूषल्युट्। सिन्दूर।

गणेशमहामहोपाध्याय—हरिभक्तिदीपिकाके रचयिता।

गणेशमिश्र—हिन्दी भाषाके एक कवि। इनका जन्म १५५८ ई०को हुआ था।

गणेशराय—दिनाजपुरके अञ्चलके एक राजाका नाम। ई० १५वें शतकमें गौड़का एकछत्र राजा हुआ था।

गणेशमिश्र—प्रायश्चित्त-पारिजात नामक धर्मशास्त्रके संग्रहकार।

गणेशान (सं० पु०) गणानामीशानः, ६-तत्। गणेश।

''ततः सस्मार हेरम्बं व्यासः सत्यवतीसुतः।
स्मृतमात्रो गणेशानो भक्तचिन्तितपूरकः॥'' (भारत १।१२ अ०)

२ शिव, महादेव।

गणेश्वर (सं० पु०) गणानां ईश्वरः, ६-तत्। १ गणेश। २ शिव। ३ गणात्मक ईश्वर। ११ रुद्र, १२ आदित्य, ८ वसु और २ अश्विनीकुमार इन तेंतीस देवताओंको गणेश्वर कहते हैं।

'एते देवगणाश्चित्रं सर्वभूते गणेश्वराः॥'' (भारत अनु १५० अ०)

गणेश्वर वालेश्वर जिलान्तर्गत एक परगना। इसमें चालुनी और पाइकपा नामक दो ग्राम लगते हैं।

गणेश्वरी—एक नदी यह आसामके अन्तर्गत गारो पर्वतके कैलासशृङ्गसे क्रमशः दक्षिणवाहिनी हो कर मैमनसिंह जिला होती हुई प्रवाहित है।

गणोत्साह (सं० पु०-स्त्री०) गणे गण भावे सम्भूयकरणे उत्साहो यस्य, बहुव्री०। गण्डक, गैंडा।

गण्ड (सं॰ पु॰) गड़ि वदनैकदेशे, गड़ि-अच्। यद्वा गम ड। १ कपोल, गाल। २ हस्तिकपोल, हाथीकी कनपटी। इसका संस्कृत पर्याय—कट, करट, कटक और हस्ति-गण्डक है। ३ गण्डक, गैंडा। ४ वीर्थ्यङ्क। ५ पिटक। ६ चिह्न, निशान्। ७ वीर, बहादुर। ८ अश्वभूषण, घोड़े-का जेवर ९ बुद्बुद, बुलबुला। १० स्फोटक, फोड़ा। ११ ग्रन्थि, गांठ। १२ विष्कुम्भ आदि योगोंके मध्य दशम योग।

कोष्ठीप्रदीपके मतसे इस योगमें जन्म लेनेसे मनुष्य स्वार्थपर, दूसरेका अनिष्टकारी, अतिशय धूर्त, कुरूप और आत्मीयवर्गकी यन्त्रणाका कारण होता है। उसके दोनों गंड अपेक्षाकृत स्थूल और कभी कुछ बड़े बड़े होते हैं

१३ अश्विनी प्रभृति कई एक नक्षत्रोंका दुष्ट अंश। इस विषयमें ज्योतिर्विदोंका मतभेद लक्षित होता - किस नक्षत्रके कौन अंशको गंड कहते और उसका क्या फल समझते हैं।

अश्विन, मघा और मूला नक्षत्रके प्रथम ३ दंड और रेवती, अश्लेषा तथा ज्येष्ठा नक्षत्रके शेष ५ दंड गंड कहलाते हैं। इसमें मूला तथा ज्येष्ठा नक्षत्रके गंडको दिवागंड, मघा एवं अश्लेषाके गंडको रात्रिगंड और रेवती और अश्विनीके गंडको सन्ध्यागंड कहते हैं। गंडयोगमें जात बालकका प्रायः मृत्यु होता है। उसके बच जानेसे पिता वा माताका मृत्यु निश्चित है। किन्तु दिवागंडमें बालिका और रात्रिगंडमें बालकका जन्म होनेसे किसी प्रकारका विघ्न नहीं पड़ता। मूलाके प्रथम पादमें अर्थात् गंडके मध्य बालक अथवा बालिका-का जन्म होनेसे पिताका विनाश होता है। इसी प्रकार मूलाके द्वितीय पादमें जननीको भयानक रोग, तृतीय-पादमें धनहानि और चतुर्थ पादमें सम्पत्तिलाभ है। अश्लेषा नक्षत्रमें इसके विपरीत समझना चाहिये। गंड-योगमें जन्म होनेसे बालक वा बालिकाको परित्याग करना ही उचित है। यदि स्नेहवशतः उसको परित्याग न किया जा सके, पिताको चाहिये कि ६ मास तक उसका मुँह न देखे। कारण मुख देख लेनेसे विपद पड़नेकी सम्भावना है। ऐसे स्थलमें कुङ्कुम, चन्दन, कुष्ठ और गोरोचनाहुतके साथ मिला चार जलपूर्ण कल-सियोंसे बालकको स्नान कराना चाहिये। मन्त्रसाध्य मन्त्रसे स्नान कराना पड़ता है। बालक दिवागंड-जात होनेसे अपने पिता, रात्रिगंड-जात होनेसे जननी और सन्ध्यागंड जात होनेसे पिता माता दोनोंके साथ नह-लाया जाता है। घृतपूर्ण कांस्यपात्र, सुवर्ण और धेनु ग्रह विप्रको दान करते और ग्रहगणको पूजते हैं। इसी प्रकार शान्ति करनेसे गंडदोष मिटता है। (ज्योतिषतत्त्व)

मुहूर्तचिन्तामणि और पीयूषधारा ग्रन्थमें लिखा है कि नारदके मतानुसार ज्येष्ठा नक्षत्रके शेष चार और मूला नक्षत्रके प्रथम चार कुल आठ दण्ड ही गंड कहलाते हैं। इसी प्रकार अश्लेषाके शेष चार और मघाके प्रथम चार दंड भी गंड हैं। वशिष्ठके मतमें ज्येष्ठा नक्षत्रका शेष एक और मूलाके प्रथम दो—तीन दण्डोंका ही नाम गण्ड है। बृहस्पतिने ज्येष्ठाके शेष अर्ध और मूलाके प्रथम अर्धदण्डको गंड-जैसा निर्देश किया है। किसी किसी ज्योतिर्विदके मतमें मूलाके प्रथम आठ और ज्येष्ठाके शेष पांच—१३ दण्डका ही नाम गंड है। पीयूषधाराको देखते नारदका ही मत ग्राह्य है। गंडमें बालक वा बालिकाको जन्म होनेसे परित्याग करते अथवा ८ वत्सर पर्यन्त पिता उसका मुख नहीं देखते।

१४ कोई जाति। गोंड देखो।

गण्डक (सं॰ पु॰) गंड स्वार्थे कन्। १ गैंडा। २ ज्योतिर्वि-द्याविशेष। ३ अवच्छेद, भेद। ४ भूषण, अलङ्कार, जेवर। ५ दुष्ट, मूर्ख। ६ संख्या प्रभेद। ७ देशभेद, वह देश जिस होकर गंडकी नदी बहती है। ८ कन्दभेद, एक कन्दका नाम। ९ ग्रंथि, गांठ। १० स्फोटक रोग-विशेष, एक रोग जिसमें बहुतसे फोड़े निकलते हैं।

"अनेकवेत्राघातनमिव बहुगावगण्डकम्।" (कादम्बरी)

११ नदीविशेष। गण्डकी देखो। १२ अन्तराय, विघ्न, बाधा।

गण्डकारी (सं॰ स्त्री॰) गण्ड: भग्नास्थिग्रंथिं करोति संयोजयति। गंड-कृ-अण् ङीप्। १ खदिरवृक्ष, खैरका पेड़। २ गड्डुकमत्स्य, एक मछली। ३ वराहक्रान्ता, वराहीकन्द ४ श्वेतलज्जालुका, लज्जावती।

गण्डकाली (सं॰ स्त्री॰) गंड-कृ-अण् ङीप् यद्वा गंडेषु ग्रंथिषु काली यस्या, बहुव्री॰। १ काकजङ्घा। २ शम्नकी वृक्ष। ३ खदिरोवृक्ष, खैरका पेड़।

"गण्डकानो ममस्कारो समङ्गा खदिरो कुचित।"

(वैद्यकरत्नमाला)

गण्डकी (सं॰ स्त्री॰) गंडक-ङीष्। १ गंडक जातीय स्त्री, मादा गेंड़ा। २ कोई नदी, बड़ी गंडका। इसका दूसरा नाम नारायणी, शालग्रामी और हिरण्यवाह है। यह हिमालयमें नेपाल राज्यके मध्य अक्षा॰ २७०° २७´ उ॰ और देशा॰ ८३०° ५६´ पू॰ पर समगंडकी शैलसे निकल करके दक्षिण-पश्चिमको चल गोरखपुर और चम्पारण जिलेके बीचसे मुजफ्फरपुरके पश्चिम और सारन जिलेके पूर्व प्रान्त होती हुई पटनाके अपरपार गङ्गासे मिल गया है। गंडकीने पूर्वको गोमाई थानके पार्वतीय तुषारराशिसे स्रोतस्विनीरूपमें परिणत हो करके चम्पारनके उत्तर-पश्चिम त्रिवेणीघाटसे नदीके रूपमें प्रवाहित होना आरम्भ किया है। यहां पूर्व ओरके तट पर कच्चे पत्थरका एक पहाड़ है। उसमें पेड़ भरे पड़े हैं। इसकी दूसरी ओर जङ्गल है। यहांसे हिमालयकी तुषारराशि देख पड़ती है। त्रिवेणीघाटसे प्रायः ६ कोस पथ दोनों ओर वनाकीर्ण है। नदी पहाड़ी भूमि पर बहनेसे जल भी परिष्कार है। बाढ़के समय पार्श्वस्थ भूमि दूरस्थ भूमिकी अपेक्षा ऊंची हो जाती है। किनारे पर जमीनकी जो जगह नीची पड़ती वहांसे बाढ़का पानी घुस करके निकटस्थ प्रदेशको प्लावित करता है। बाढ़से देशको बचानेके लिये स्थान स्थान पर बांध लगाया गया है। इस प्रदेशकी जमीनका पानी इकट्ठा हो करके नदीमें नहीं आता, दूसरी ओर चला जाता है। पहाड़से जहां नदी निकली, अत्यन्त स्रोत है। फिर बीच बीच भंवरका पानी मिलता, जिसमें नाव चलानेका सुभीता नहीं पड़ता। उससे नेपालकी लकड़ी भले ही आया करती है। बर्फ गल करके जल निकलनेसे यह कभी नहीं सूखती वर्षाके पीछे जगह जगह इसमें बालकी रेत पड जाती है। कोई ठिकाना नहीं, कब कहां रेत खुलेगी। बरसातमें गंडकी कहीं डेढ़ और कहीं एक कोस चौड़ी हो जाती है। किन्तु जाड़ेमें किसी भी जगह २।३ रस्सी ज्यादा चौड़ाई नहीं रहती। सत्तरघाट, संग्रामपुर, गोविन्दगञ्ज, बरियारपुर, रतवाल, बगहा, नारायणपुर, सगौचरी, सलीमपुर, सत्तर, मारङ्गपुर, सोहांसी, रेवा, बारवा, सज्जा और सोनपुरमें इसका घाट है।

गंडक नदी अति प्राचीन कालसे पुण्यसलिला जैसी विख्यात है। (स्कन्दपुराण, हिमवत्खण्ड ८।४, पातालखण्ड ११।११ भविष्य ब्रह्मखण्ड १८।१—१०) महाभारत-सभापर्वके २०वें अध्यायमें लिखा है कि कृष्ण, अर्जुन और भीमसेन कुरुदेशसे चल कुरुजाङ्गल पार हो करके पद्मसरोवर पहुंचे थे। वहांसे कालकूट पर्वत अतिक्रम करके वह गंडकी, चक्रावर्त और कोई पार्वत्य स्रोतस्विनी पार हुए। बौद्धोंके ग्रंथोंमें भी गंडकी नदीका नामोल्लेख मिलता है। फिर यूनानियोंके पुस्तक भी इसके उल्लेखसे खाली नहीं। मेगास्थिनिसने इसको कंडकेतिस (Kandochates) नामसे उल्लेख किया है। टलेमिने इसका कोई नाम नहीं लिखा, परन्तु प्रकारान्तरसे इसका वृत्तान्त दे दिया है। उनके मतमें वह नदी सलेमपुरसे निकल शैलपुर वा शैलग्राम होती हुई गङ्गाके साथ जा करके मिल गयी है। पहले इसमें शालग्रामशिला मिलती थी। इसीसे गण्डकी शालग्रामी वा नारायणी कहलाती है। कहते हैं कि नारायण शनिके भयमें अपनी मायाके प्रभावसे शैलमय पर्वत बन गये थे। शनिके यह समझने पर कीट रूपसे उसके मध्यमें प्रवेश करके एक ओरसे दूसरी ओर तक उसको खोद डाला। एक वर्ष तक इसी प्रकार उत्पात होने पर नारायणके घर्म छूटा था। एक हो गण्डसे कृष्णवर्ण और श्वेतवर्ण दो प्रकारका पसीना निकला। उसी काले पसीने कृष्णा और सफेदसे श्वेतगंडकी प्रवाहित हुई। इनमें एक पूर्व और दूसरी पश्चिमको चली थी। एक वर्ष पीछे विष्णुने अपना रूप धारण करके प्रस्थान किया, परन्तु शालग्रामशिला नारायणरूपमें पूजनेको कह दिया। (शालग्राम देखो।) उसी समयसे शालग्राम-शिला पूजित हुई है। गंडकीके जलमें नारायणका अंश रहनेसे वह हिन्दुओंके निकट अति पवित्र है। ३ गंडकी नदीकी अधिष्ठात्री देवी।

गण्डकी देवीने दश हजार वर्ष पर्यन्त बड़े कष्टमें वायु और पेड़ोंके सड़े गले पत्ते खा करके भगवान् विष्णुकी आराधना की थी। विष्णु गंडकीकी तपस्यासे सन्तुष्ट हो करके उनके पास जा पहुंचे। गंडकीने चतु-

भुज शङ्ख चक्र-गदा-पद्मधारी विष्णुको देख करके भक्ति-सहकारसे नानाविध स्तव किया था। इससे विष्णु और भी प्रसन्न हुए और उससे वर मांगनेको कहने लगे। गंडकी-ने कहा—जगदीश्वर! यदि इस दासी पर आपकी करुणा हुई है, तो आप गर्भगत हो करके मेरे पुत्र बनें। इस पर विष्णु बोल उठे—'गंडकि! मैं शालग्रामशिला बन करके तुम्हारे गर्भमें वास करूंगा। तुम जगत्‌में बड़ी होगा। तुम्हारा दर्शन, स्पर्शन, अवगाहन वा स्नान तथा जलपान करनेसे कायिक, वाचिक और मानसिक तीनों प्रकारका पाप छूट जावेगा।' इसी प्रकार वर दे करके विष्णु चलते हुए। इसीसे गंडकी सब नदियोंमें बड़ी है। भारतमें जो शालग्राम-शिला भक्ति सहकारसे विष्णु समझके पूजी जाती, गंडकी नदीसे हो आती है। विष्णुके वरसे ही वह सबकी आदरणीय हुई है। (वराहपुराण)

गण्डकी (छोटी) कोई प्रसिद्ध नदी। बड़ी गण्डकीकी तरह यह भी नेपाल राज्यके पहाड़ोंसे निकल गोरखपुर जिलेमें हो करके बही है। छोटी गंडकी बड़ी गंडकीके ४ कोस दूर रह करके समान्तराल भावसे चलती हुई सारन जिलेके बीच सोनारिया नामक स्थान पर (अक्षा० २५° ४१' उ० तथा देशा० ८५° १४' ३०" पू०) घर्घरा नदीमें गिरी है। इसके उत्पत्तिस्थानका नाम सोमेश्वर पर्वत है। वह चम्पारनके दून पहाड़का टुकड़ा होता है। हरहा नामक गिरिशङ्कट इसके बहुत निकट है। इसीसे छोटी गंडकीका प्रथम अंश हरहा ही कहलाता है। आगे चल करके इसको क्रमशः सिखरेना, बुड्ढी-गंडक और छोटी गंडक कहते हैं। रामनगर, बेतिया और सगौलीनगर इसके तीर अवस्थित है। ग्रीष्मकालको इसमें जल नहीं रहता। उस समय इसका विस्तार ४० हस्तमात्र होता है। किन्तु वर्षा कालको इसमें प्रचुर जल आ जाता है। उड़िया, धोराम, जमुया, पंडाई, हरबोरा, बलदया, रामरेखा और मसाई नामक उपनदी इसमें आ मिली हैं। किसी किसीके मतमें छोटी गंडकीका नाम हिरण्यवती है।

गण्डकी—गंडकी नदीसे निकली एक पयोप्रणाली। यह गंडकी नदीकी किसी शाखासे निकल करके सारन जिलेके बीच दक्षिणपूर्व भागमें शीतलपुरके पास मही नामसे गङ्गामें मिलित हुई है। गोपालगञ्ज, चौकी हसन, रामपुर, खोवास, गुरखा और शीतलपुर इसके किनारे अवस्थित हैं। गङ्गामें बाढ़ आनेसे पानी गुरखा तक पहुंचता और दिववारा तक सब स्थान जलप्लावित होता है। ग्रीष्मकालको इसमें सामान्य ही जल रहता है। उस समय किसान इसमें बांध लगा कृषिकार्य करते हैं। गण्डकी नदीमें बांध पड़नेसे इसका पानी कम पड़ गया है। बांध डालनेसे पहले गण्डकी नदी तक इसमें बड़ी बड़ी नावें चलती थीं। आजकल बरसातमें हजार मनकी नाव गुर्खा तक आ जा सकती है। यह ४५ कोस लम्बी है। इसके बीचमें नदीगर्भ ५२ हाथ उतर गया है।

गण्डकीपुत्र (सं० पु०) गण्डक्याः पुत्रः, ६-तत्। शालग्राम-शिला, वह शिला जिसे हिन्दू विष्णु समझ कर पूजा करते हैं।

गण्डकुसुम (सं० क्ली०) गण्डस्य हस्तिकपोलस्य कुसुम-मिव, ६-तत्। हस्तिमद, हाथीका मद।

गण्डकूप (सं० पु०) गण्डे गण्ड इव उच्चे पर्वतशृङ्गे कूपः, ७-तत्। पर्वतका उच्चस्थान, पहाड़की चोटी।

गण्डगढ़—पञ्जाबके अन्तर्गत रावलपिण्डी और हजारा जिलाकी एक गिरिश्रेणी। यह अक्षा० ३३° ५७' उ० और देशा० ७२° ४६' पू०में अवस्थित है। चच नामक उपत्यकाकी ओर यह पर्वत ढालू होता गया है और सब जगह यह ऊंचा और दुरारोह है।

गण्डगात्र (सं० क्ली०) गण्ड इव उच्चावचं गात्रमस्य, बहुव्री०। फलविशेष, शरीफा। इसका गुण—शीतल, वृष्य, वातपित्तनाशक, श्लेष्मवृद्धिकर, तृष्णानाशक और वमनक्लेशनिवारक है। (भावप्रकाश संहिता)

गण्डग्राम (सं० पु०) गंडः भूषणस्वरूपः प्रशस्तः ग्रामः। प्रशस्त ग्राम, वह ग्राम जिसमें बहुत मनुष्य रहते हों।

गण्डदूर्वा (सं० स्त्री०) गंडा ग्रन्थियुक्ता दूर्वा, कर्मधा०। दूर्वाविशेष, गाँडर घास। इसका पर्याय—गंडाली, अति-तीव्रा, मत्स्याक्षी, वारुणी, भीमपर्णी, सूचीनेत्रा, श्याम-ग्रन्थि, ग्रन्थिला, ग्रंथिपर्णी, सूचीपत्रा, श्यामकांडा, जलस्था, शकुलाक्षी, कलाया और चित्रा है। इसका गुण—मधुर, वातपित्त, ज्वर, भ्रान्ति और तृष्णा-शमनाशक

तथा शीतल है। भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—शीतल, लौहद्रावक, ग्राही, लघु, तिक्त, कषाय, मधुर, कटुपाक, वातवृद्धिकर, दाह, तृष्णा, दुर्बलता, श्वास, कुष्ठ और पित्तज्वरनाशक है। (भावप्रकाश)

गण्डदेव—दक्षिणमें गङ्गवंशीय एक प्राचीन राजा। इन्होंने काञ्चिपुरके पल्लवराज और चोल राजाको पराजय किया था। काञ्चिराज गंडदेवको कर देते थे। पांड्य राजाने इनके साथ मित्रता की थी।

गण्डदेश (सं० पु०) कपोल, गाल, कनपटी।

गण्डपाद (सं० त्रि०) गंडस्य पाद इव पादोऽस्य, बहुव्री०। जिसके दोनों पैर गेंड़ाके सदृश हों।

गण्डपोलिका (सं० स्त्री०) कीटविशेष, एक प्रकारका कीड़ा।

गण्डप्रपाली (सं० स्त्री०) कीटविशेष, एक कीड़ा।

गण्डफलक (सं० क्ली०) गंडः फलकमिव, उपमितस०। १ विस्तीर्ण गंडस्थल, बड़ी कनपटी। (त्रि०) २ जिसकी कनपटी बहुत बड़ी हो।

गण्डभित्ति (सं० स्त्री०) गंड भित्तिरिव उपमि०। प्रशस्त कपोल, सुन्दर गाल, अच्छी कनपटी।

"मद गलमलिहन्दं गण्डभित्तीः विहाय।" (रघु० १२।१०२)

गण्डमाक—अफगानिस्तानके निकट जलालाबादसे काबुल जानेकी राह पर अवस्थित एक ग्राम। यह जलालाबादसे १७॥ कोसकी दूरी पर है। यह ग्राम जलालाबादसे अधिक शीतल है। १८३९ और १८४२ ई०को अङ्गरेज और अफगानिस्तानके बीच इसी ग्रामके निकट लड़ाई हुई थी। १८५२ ई०में जब अङ्गरेजी सेना काबुलसे लौटी आ रही थी तब अवशिष्ट २० सेनानायक और ४५ गोरे इसी स्थान पर कट गये थे।

गण्डमाला (सं० स्त्री०) गंडानां ग्रीवाजातस्फोटविशेषाणां माला समूहोऽस्यां, बहुव्री०। गलाका एक प्रकारका रोग, गलगंड, कण्ठमाला। गलगण्ड देखो।

गण्डमालिका (सं० स्त्री०) गंडानां ग्रंथीनां माला यत्र, बहुव्री०। १ लज्जालु लता, एक प्रकारकी लता जिसकी पत्तियां छूनेसे सिकुड़ जाती है। २ गण्डमाला।

गण्डमाली (सं० त्रि०) जिसको गलगण्ड रोग हुआ हो।

गण्डमूर्ख (सं० त्रि०) गंडः अतिशयितः मूर्खः। अतिशय मूढ़, घोर निर्बोध, घोर मूर्ख, भारी बेवकूफ।

गण्डयन्त्र (सं० पु०) मेघ, बादल। गडयन्त्र देखो।

गण्डलिख्या (सं० स्त्री०) चर्मकरा, एक सुगन्धि द्रव्य। (वैद्यक)

गण्डली (सं० स्त्री०) गंड इव क्षुद्रशैलं तत्र लीयते-ली-ड्डीप्। १ महादेव, शिव।

"गण्डली मेरुधामा च देवाधिपतिरेव च।" (भारत अनु १७ अ०)

२ क्षुद्र पर्वत, छोटी पहाड़ी।

गण्डलेखा (सं० स्त्री०) प्रशस्तकपोल, सुन्दर गाल, अच्छी कनपटी।

गण्डविन्दु (सं० पु०) कुवेरके सेनापति। विश्रवामुनिके ज्येष्ठ पुत्र धर्मपरायण कुवेरके पिताकी आज्ञासे लङ्कामें राज्य करते थे। दुर्वृत्त रावणने उनको भगा कर लङ्कामें अपना अधिकार जमाया कुवेर उसके भयसे देश छोड़ कैलास पर्वत पर रहने लगे, लेकिन उनका वहां रहना भी रावणको असह्य मालूम पड़ा। इस लिये दुष्ट रावणने कुवेरपुरी पर आक्रमण किया। कुवेरने अपने सेनापति गण्डविन्दुके उत्साह और परामर्शसे रावणके साथ लड़ाई आरम्भ कर दी। उस लड़ाईमें सेनापति गंडविन्दुने अपना भुज विक्रम और युद्धकौशल दिखलाया। इसीके पराक्रमसे रावणके बहुतसे योद्धा मारे गये। अन्तमें मारीचके माया-युद्धसे गंडविन्दुको हार माननी पड़ी। (रामायण उत्तर ५ अ०)

गण्डव्यूह (सं० पु०) बौद्ध सूत्रका एक अंश।

गण्डशिला (सं० स्त्री०) गंडः भूमिकम्पनप्रदेशः तद्वत् शिला। स्थूलपाषाण, बड़ा पत्थर।

"दृष्टोऽगुंष्ठशिरोमात्रः क्षणाद् गण्डशिलासमः।" (भागवत ३।१३।११)

गण्डशैल (सं० पु०) गंड इव शैलः यद्वा शैलस्य गंड इव राजदंडादित्वात्। भूकम्पादि द्वारा पर्वतसे गिरा हुवा स्थूल पाषाण, वह बड़ा पत्थरका टुकड़ा जो भूकम्पसे पर्वतसे गिरा हो। २ क्षुद्र पर्वत, छोटी पहाड़ी। ३ ललाट, भाल।

गण्डसाह्वया (सं० स्त्री०) गंडेन सहित आह्वयो यस्याः, बहुव्री०। गंडकी नदी।

"गंगा च शतकुम्भा च सरयू गंडसाह्वया।" (भारत ३।११ अ०)

गण्डस्थल (सं० क्ली०) गंडः स्थलमिव, उपमितस०। १ गंडदेश, समस्त गाल। २ हाथीकी कनपटी।

गण्डस्थली (सं० स्त्री०) गंडः स्थलमिव, उपमितस०। कपोलस्थल, गंडदेश, कनपटी।

गण्डा—यु प्रदेशका एक नगर। यह अक्षा० २७° ७' ३०" उ० और देशा० ८२° पू०के मध्य फैजाबादसे १४ कोस दूरमें अवस्थित है। यह गंडा जिलेका प्रधान नगर है। इस जिलेमें अहीर जाति कृषिकार्य करती है। यह प्रदेश पहले उत्तरकोशल राज्यके अन्तर्गत गोंड नामसे मशहूर था। श्रावस्ती देखो। श्रावस्ती नगरका ध्वंसावशेष इस जगहसे दीखता है।

गण्डाङ्ग (सं० पु०-स्त्री० गंड इव उच्चूनमङ्गं यस्य, बहुव्री०। गंडक, गैंडा।

गण्डान्त (सं० क्ली०) तिथि, नक्षत्र और लग्नका सन्धि-काल।

"नक्षत्रतिथिलग्नानां गण्डान्तं त्रिविधं स्मृतं।
नवपञ्चचतुर्थानां द्वा काई घटिकामितं॥" (ज्योतिष)

गण्डारि (सं० पु०) १ कोविदारवृक्ष, कचनारका पेड़। कोविदार देखो। २ मत्स्यविशेष।

गण्डारी (सं० स्त्री०) मञ्जिष्ठा, मंजीठ।

गण्डाली (सं० स्त्री०) १ श्वेत दूर्वा, सफेद दूब, गांडर घास। २ सर्पाक्षीवृक्ष, सरहची, गंडिनिका पेड़। ३ मत्स्याक्षी, मछलीकी आंख

गण्डाव—बलुचिस्तानके काछो नामक विभागका एक प्रधान नगर। यह अक्षा० २८° ३२' उ० और देशा० ६०° ३२' पू०मे वाघ नामक स्थानसे २० कोस दक्षिण-पश्चिममें मूला नामक गिरिसङ्कट जानेके रास्ते पर अवस्थित है। यह एक ऊंची भूमिके ऊपर चहार-दीवारीसे घिरे हुए गढ़ द्वारा सुरक्षित है। यहां खिलात खाँका एक घर है। शीत कालमें खाँ साहब यहाँ आ कर रहते हैं।

गण्डि (सं० पु०) वृक्षकी जड़से शाखा तकके भागको गंडि कहते हैं।

गण्डिक (सं० त्रि०) बुद्बुदके जैसा क्षुद्र पाषाणादि, बुद्बुदके समान छोटे छोटे पत्थरके खंड। २ एक प्रकारका अमृत।

गण्डिका (सं० स्त्री०) क्षुद्र गण्ड पाषाण, पत्थरके छोटे छोटे टुकड़े।

गण्डिकोट—मन्द्राज प्रदेशके अन्तर्गत कड़ापा जिलामें येरमलय नामक पर्वतका एक दुर्ग। यह सुदृढ़ दुर्ग अक्षा० १४° ४८' उ० और देशा० ७८° २०' पू०में अव-स्थित है। यहां विजयनगरके राजाओंका एक देव-मन्दिर है। प्रसिद्ध ऐतिहासिक लेखक फेरिस्ता लिखते हैं कि यह दुर्ग १५८८ ई०में निर्माण किया गया है। गोलकुण्डाके राजाने एक बार इसे अपने अधिकारमें लाया था। औरङ्गजेबके सेनापति मीरजुमलाने इसे कई बार दखल किया था। बाद यह हैदराबादके बाला-घाटके पांच सरकारोंमें एक सरकारकी राजधानी हुई। अन्तमें कड़ापाके पाठान नवावने इस स्थान-को अपने अधिकारमें लाया। किन्तु १७९१ ई०को टिपूकी लड़ाईके समय अङ्गरेज सेनापति कप्तान लिटलने इसे जीत लिया। १८०० ई०में निजामने इसे अङ्गरेजोंको अर्पण कर दिया। यह दुर्ग रेतीला पत्थरके पहाड़के ऊपर बना हुआ है। इस होकर पेनार नामक नदी प्रवाहित होती हुई कड़ापा अञ्चल तक चली है।

गण्डी (सं० स्त्री०) खड़ीसे रेखा खींच कर सीमाको चिह्नित करनेका नाम गण्डी है।

गण्डीर (सं० पु०) १ समष्ठिला, खीरा। २ शाकविशेष, पोईका साग। ३ वीर, बहादुर, शूरवीर।

गण्डीरी (सं० स्त्री०) सेहुण्डवृक्ष, सेहुंडका पेड़।

गण्डु (सं० पु०) १ उपधान, तकिया। २ ग्रन्थि, गांठ, गिरह। (त्रि०) ३ ग्रन्थियुक्त, जिसमें गांठ हो, गिरहदार।

गण्डूपद (सं० पु०) गण्डुः ग्रन्थियुतानि पदानि यस्य, बहुव्री०। किञ्चुलक, केंचुआ।

गण्डूपदभव (सं० क्ली०) गंडूपद इव भवति उत्प-द्यते। सीसक, सीसा नामक धातु।

गण्डू, गण्डू देखो

गण्डूपदी (सं० स्त्री०) १ एक क्षुद्र कीड़ा, छोटा केंचुआ २ किञ्चुलक जातीय स्त्री, मादा केंचुआ।

गण्डूष (सं० पु०) १ मुखपूरण, कुल्ली। २ सूंडका पानी। ३ हाथीकी सूंडका अग्र भाग, हाथीकी सूंड़की नोक ४ प्रसृति परिमित, सोलह तोलेके बराबरका एक मान, पसर।

गण्डूषविधि (सं० पु०) गण्डूषस्य विधिः विधानं, ६-तत्। मुखगण्डूष करनेके नियम। मुंहधोनेके नियम। भाव-

प्रकाशमें लिखा है कि दतुवन और जिभी करनेके बाद शीतल जल देकर बार बार कुल्ली करनी चाहिये। इससे कफ, अरुचि और मुखमल दूर होता है। कुछ गर्म जलसे कुल्ली करने पर कफ, अरुचि, मुखमल और दांतकी जड़ता जाती रहती है। विष, मूर्च्छा, मदात्यय, राजयक्ष्मा और रक्त पित्त इन समस्त रोगाक्रान्त मनुष्योंके लिये गण्डूष धारण अहितकर है। जिसकी आंखें दूषित या मल-कूपित हो गई हों अथवा जो मनुष्य अत्यन्त दुर्बल हों उनके लिये उष्ण जलसे कुल्ली करना प्रशस्त नहीं है।

गण्डूषा (सं० स्त्री०) गण्डूष-टाप्। गण्डूष।

गण्डोपधान (सं० क्ली०) गंडस्य उपधानं, ६-तत्। उपधानविशेष। गालबालिश, वह छोटा तकिया जो गालके नीचे रखा जाता है।

गण्डाल (सं० पु०) १ गुड़। २ ग्रास, कौर।

गण्डोलपाद (सं० त्रि०) गण्डोल इव पादौ यस्य बहुव्री०। गण्डोलके जैसा वर्त्तुलाकार पादविशिष्ठ, जिसके पैर गंडोमी षोल्ला हों।

गण्य (सं० त्रि०) १ गिननेके योग्य, गिनतीके लायक। २ प्रतिष्ठित, जिसकी पूछ हो, जिसे लोग संमान करते हों।

गत् (सं० त्रि०) गच्छति गम्-क्विप् मकारस्य लोपः। गमन शील, जो चलता हो। यह शब्द प्रायः दूसरे शब्दोंके साथ प्रयोग किया जाता है।

गत (सं० त्रि०) १ गया हुआ, बीता हुआ। २ प्राप्त, पाया हुआ। ३ समाप्त, पूरा किया हुआ। ४ पतित, गिरा हुआ ५ ज्ञात, जाना हुआ। ६ लब्ध, पाया हुआ। ७ गमन, जाना, चलना।

गतंड (हिं० पु०) हिजड़ा, नपुंसक।

गतकलुष (सं० त्रि०) गतं कलुषं पापं यस्य, बहुव्री०। निष्पाप, जिसका पाप नष्ट हो गया हो।

गतकल्मष (सं० त्रि०) निष्पाप, जिसे पाप न हो।

गतकल्य (सं० क्ली०) गतकाल, बीता हुआ समय।

गतका (हिं० पु०) लकड़ीका एक डण्डा। इसके ऊपर चर्मकी खोल लगी रहती है। यह ढाई वा तीन हाथका लम्बा होता है। यह प्रायः खेलने हीके काममें आता है।

गतकार्य (सं० त्रि०) १ जिसका कर्त्तव्य कार्य नष्ट हो गया हो। २ अतीत कर्म, जो काम बीत गया हो।

गतकाल (सं० क्ली०) बीता हुआ, काल।

गतकीर्ति (सं० त्रि०) गता अतीता नष्टा वा कीर्ति यस्य बहुव्री०। जिसकी कीर्ति अतीत हुई हो, जिसका यश लुप्त हो गया हो

गतक्लम (सं० त्रि०) जिसका श्रम दूर हुआ हो, विश्रान्त।

गतकुल (सं० पु०) वह संपत्ति जिसका कोई अधिकारी न बचा हो, लावारसी माल।

गतचौबीसी,—जैनियोंके भूतकाल सम्बन्धी चौबीस तीर्थङ्कर। नाम—१ नर्वाण, २ सागर, ३ महासाधु, ४ विमलप्रभ, ५ श्रीधर, ६ सुदत्त, ७ अमलप्रभ, ८ उद्धर, ९ अङ्गिर, १० सन्मति, ११ सिन्धु, १२ कुसुमाञ्जलि, १३ शवगण, १४ उत्साह, १५ ज्ञानेश्वर, १६ परमेश्वर, १७ विमलेश्वर, १८ यशोधर, १९ कृष्ण, २० ज्ञानमति, २१ शुद्धमति, २२ श्रीभद्र, २३ अतिक्रान्त, और २४ शान्त। (इष्टछत्तीसी)

गतत्रप (सं० त्रि०) गता त्रपा लज्जा यस्य, बहुव्री०। निर्लज्ज, लज्जाहीन, बेशर्म, बेहया।

गतनासिक (सं० त्रि०) गतनासिका यस्य, बहुव्री०। नासिकाशून्य, जिसके नाक नहीं हो, नकटा।

गतनिधन (सं० क्ली०) पाशभेद, बंधनजाल, एक प्रकारका फंदा।

गतपाप (सं० त्रि०) गतं विनष्टं पापं यस्य, बहुव्री०। निष्पाप, जिसके पाप दूर हो गये हो।

गतपुण्य (सं० त्रि०) जिसका पुण्य नष्ट हो गया हो।

गतप्रत्यागत (सं० त्रि०) पूर्वं गतः पश्चात् प्रत्यागतः कर्मधा०। १ जो जाकर फिर लौट आया हो, गमन और प्रत्यागमन। २ संगीतमें तालके साठ भेदोंमें एक।

गतप्रत्यागता (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो अपने स्वामीके घरसे भाग गई हो और फिर थोड़े दिनोंके बाद लौट आई हो।

गतप्रभ (सं० त्रि०) गता दूरीभूता प्रभा यस्य, बहुव्री०। जिसमें प्रभा नहीं हो, निष्प्रभ, तेज रहित।

गतप्राण (सं० त्रि०) गतः प्राणा यस्य। जिसके प्राणने शरीर त्याग कर दिया हो, मृत।

गतबुद्धि (सं० त्रि०) गता बुद्धिर्यस्य, बहुव्री०। बुद्धिशून्य, निर्बोध, अज्ञान, अनजान।

गतभर्तृका (सं० स्त्री०) गतो नष्टः प्रोषितो वा भर्ता

यस्याः, बहुव्री०। १ विधवा। २ जिसका स्वामी दूर-देश गया हो।

''किम सुहम् ईर्गं न भर्तृ काः।'' (माघ)

गतरस (सं० त्रि०) जिसका रस नष्ट हो गया हो, विरस।

''यातयामं गतरसः पूति पर्युषितञ्च यत्।'' (गीता)

गतव्यथ (सं० त्रि०) गता नष्टा व्यथा पीड़ा यस्य, बहुव्री०। व्यथाशून्य, जिसको कोई कष्ट न हो।

गतमर्याद (सं० त्रि०) गतमर्य्यादा यस्य, बहुव्री०। अपमानित, जिसकी मर्यादा नष्ट हो गई हो।

गतरात्रि (सं० स्त्री०) अतीत रात्रि, बीती हुई रात।

गतलज्ज (सं० त्रि०) गता लज्जा यस्य, बहुव्री०। निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया।

गतशोचन (सं० क्ली०) गतस्य शोचनं, ६-तत्। अतीत विषयका अनुशोचना वा अतीत बातका ख्याल करना।

गतशोचना (सं० स्त्री०) गतस्य शोचना, ६-तत्। गतानुशोचन, बीते हुए विषयका स्मरण।

गतश्री (सं० त्रि०) गता श्रीः शोभा यस्य, बहुव्री०। जिसकी शोभा नष्ट हो गई हो। निष्प्रभ, जिसमें किसी तरहकी चमक न हो।

गतसङ्ग (सं० त्रि०) गतः नष्टः सङ्ग आसक्तिर्यस्य, बहुव्री०। निःसङ्ग, जिसने दूसरेको सङ्गत छोड़ दी हो।

गतसन्नक (सं० पु०) मदशून्य हस्ती, वह हाथी जिसके मद न हो।

गतस्पृह (सं० त्रि०) गता नष्टा स्पृहा यस्य, बहुव्री०। निस्पृह, किसी चीजकी इच्छा न हो।

''गतस्पृहोऽभ्यागमनप्रयोजनं।'' (माघ)

गतस्मय (सं० त्रि०) १ गर्वशून्य, जिसके अभिमान न हो। २ विस्मयशून्य।

गताक्ष (सं० त्रि०) गतमक्षि यस्य बहुव्री०। नेत्रहीन, अन्धा।

गतांक (सं० त्रि०) जिसमें सत्पुरुषके चिन्ह अब न रह गये हों।

गतागत (सं० क्ली०) गतं गमनं आगतं आगमनं द्वयोः समाहारः; समाहारद्वन्द्व। गमनागमन, आना जाना।

''एवं त्रयी धर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते।'' (गीता)

गतं ऊर्ध्वगमनं आगतमधोगमनं यत्र, बहुव्री०। २ पक्षीकी गति, चिड़ियाकी चाल। (पु०) ३ गतं विनष्टं आगतं पुनः संसारगमनं यस्मात्, बहुव्री०। महादेव

''नीतिश्च नीतिः शुद्धात्मा शुद्धो मान्यो गतागतः।''

(भारत १३।१७।९८)

गतागति (सं० स्त्री०) गमनागमन।

गतागतिक (सं० त्रि०) गमनागमनसे जो निष्पादित हुआ हो।

गताङ्क (सं० त्रि०) जिसमें सत्पुरुषके चिह्न अब रह न गये हों।

गताध्वन् (सं० त्रि०) तत्त्वज्ञ, ज्ञाततत्त्व, जाननेका भाव।

गताध्वा (सं० स्त्री०) चतुर्दशीयुक्त अमावस्या तिथि।

गतानुगत (सं० त्रि०) गतस्य अनुगतः, ६-तत्। जो किसी आदमीके पीछे पीछे जाता हो। (क्ली०) गतस्य अनुगतं अनुगमनं, ६-तत्। २ गमनका अनुगमन, एकके पीछे दूसरेका जाना।

गतानुगतिक (सं० त्रि०) गतानुगतिं अस्त्यस्य गतानुगत-ठन्। गमनानुगमनविशिष्ट।

''एकस्य कर्म संवीक्ष्य करोत्यन्योऽपि गर्हितं।
गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः॥'' (पञ्चतन्त्र)

गतान्त (सं० त्रि०) गतः उपस्थितः अन्तः अन्तकालो यस्य, बहुव्री०। मुमुर्षु, जिसका अन्तकाल उपस्थित हो गया हो।

गतायात (सं० क्ली०) गतञ्च आयातञ्च तयोः समाहारः समाहारद्वन्द्व। गमनागमन।

गतायुः (सं० त्रि०) गतं गतप्रायं आयुर्जीवनकालो यस्य, बहुव्री०। जिसका आयुः शेष हो, चरमकाल उपस्थित, मरनेवाला।

वैद्यको चिकित्सा आरम्भ करनेसे पहले रोगीके आयुका विषय अच्छी तरह विवेचना करके देख लेना चाहिये। यह विषय वैद्यशास्त्रमें बहुत ही कठिन है। महात्मा सुश्रुतने आयु प्रायः शेष होने पर रोगीके जो लक्षण प्रकाशित होते, उनमें कई एक निर्णय किये हैं— मनुष्यका मृत्युकाल आ पहुंचनेसे उसका शरीर और स्वभाव बदल जाता है। जो व्यक्ति वास्तविक कोई शब्द न होते भी नाना प्रकारके शब्द सुना करता; जो समुद्र, पुर वा मेघका शब्द सुन करके अन्य प्रकार समझता

अथवा उस शब्दको सुन ही नहीं सकता, जो घने जङ्गलके घोरतर शब्दको ग्राम्य शब्द और ग्रामके जनरवको वन्य जन्तुओंके शब्द-जैसा अनुमान करता, जिसे बन्धु बान्धवोंकी बात सुनना अच्छा नहीं लगता और सुनते सुनाते भी उसको अपना अनिष्टकर समझ करके कुपित पड़ता और शत्रुकी कथा वा उपदेश जसको बहुत प्रीतिकर जंचता, उसका आयु: शेष हुआ जैसा ठहराना चाहिये। जो व्यक्ति उष्णको शीतल और शीतलको उष्ण जैसा ग्रहण करता, शीतमें शरीर रोमाञ्च होते भी जसका गात्रदाह नहीं मिटता, शरीर अतिशय उष्ण रहते भी जो शीतसे कंपने लगता, प्रहार वा अङ्गच्छेद करते भी जो वेदना अनुभव नहीं करता, जिसके शरीरमें अकस्मात् वर्णान्तर वा रेखा-जैसा चिह्न निकल पड़ता, चन्दन लगानेसे जिसके शरीर पर नील मक्खिका आश्रय करती, अकस्मात् जिसके शरीरसे सुरभि गन्ध नकल पड़ता, वह शीघ्र ही मरता है। एक प्रकार रस आस्वादन करके अन्य प्रकार समझने और सभी रसों अथवा मिथ्या आहारमें दोष वा अग्निमान्द्य बढ़नेसे, कोई रस वा सुगन्ध दुर्गन्ध मालूम न पड़ने अथवा घ्राणशक्ति एक वारगी ही बिगड़ने; शीत, उष्ण आदि काल अवस्था वा दिक् विषयमें विपरीत ज्ञान रहने, दिनको आकाशमण्डलमें प्रज्वलित नक्षत्र वा चन्द्रकिरण और रात्रिको ज्वलन्त सूर्य, मेघशून्य आकाशमें इन्द्रधनु वा विद्युत् एवं निर्मल आकाशमें कृष्णवर्ण मेघ देख पड़ने, आकाशमण्डल अट्टालिका वा विमानयानसे परिपूर्ण तथा भूमण्डल धूम, नीहार वा वस्त्र द्वारा आवृत जैसा लगने, समस्त लोक प्रज्वलित अथवा जलप्लावित जैसा जंचने; अरुन्धती, ध्रुव, आकाश, गङ्गा, उष्णजल तथा ज्योत्स्ना एवं आदर्शमें अपनी छाया न देख पड़ने अथवा अङ्गहीन विकृत वा कुक्कुर, काक, गृध्र, प्रेत, यक्ष, राक्षस वा पिशाचको छाया जैसी लगने और निर्धूम अग्नि मयूरके कण्ठ-जैसा लगनेसे सुस्थ शरीर रहते भी पोड़ित होते और पीड़ित होने पर मरते हैं। (सुश्रुत सूत्र ३० अ०)

श्याव, लोहित, नील वा पीतवर्ण छाया जिसका अनुगमन करती, उसकी मौत अवश्य आ पहुंचती है। हठात् लज्जा वा श्री विनष्ट होने अथवा तेज, बल, स्मृति वा प्रभा एकाएक बढ़नेसे निश्चय मनुष्यको मरना पड़ता है। जिसका निचला ओष्ठ गिर और ऊपरी ओष्ठ उठ आता अथवा दोनोंका रङ्ग जामन-जैसा काला देखाता, उसका आयु: शेष हो जाता है। दांत कुछ लाल, नीले अथवा बहुत काले पड़ जानेसे आयु: शेष हुआ समझते हैं। जिसका जिह्वा कृष्णवर्ण, स्तब्ध, अवलिप्त, कर्कश वा स्फीत लगती, जिसकी नासिका वक्र, स्फुटित, शुष्क, अवनत वा उन्नत रहती, जिसके दोनों चक्षुओंमें छोटाई बड़ाई देख पड़ती अथवा उनमें क्षुद्रता, निश्चलता, रक्तवर्णता अथवा अधोदृष्टिविशिष्टता रहती और जिसकी आंख लगातार आर्द्र रहती, उसके मरनेमें कोई कसर नहीं पड़ती। बाल दोनों ओर बिखर पड़ने, भौंहें घटने या बढ़ने और आंखोंकी बिरनियां उखड़नेसे रोगी शीघ्र प्राणत्याग करता है। जो व्यक्ति मुखस्थित अन्न ग्रास नहीं कर सकता, मस्तक सीधा नहीं रख सकता और एकाग्रदृष्टि तथा अचेतन रहता, शीघ्र ही मरता है। रोगी सबल हो या दुर्बल यत्नपूर्वक उठा करके भी बैठानेसे मूर्च्छित होने पर बचनेको आशा न करना चाहिये। जो रोगी चित लेट करके पैरोंको सिकोड़ता या सर्वदा फैलानेका अभिलाष करता, जिसका हाथ, पैर बहुत ठण्डा रहता और ऊर्ध्वश्वास, छिन्नश्वास वा काकको भांति मुख विकृत हो करके श्वास निकलता, उसका आयु: शेष हुआ समझ पड़ता है। निद्रा भङ्ग न होने, सर्वदा जागरित रहने, कोई बात कहने पर मोह लगने, नीचेका ओष्ठ लेहन करने, भारी डकार उठने और प्रेतके साथ बात चलनेसे रोगोका मृत्यु आ जाता है। शरीर किसो प्रकारसे विषदूषित न होते भी जिस रोगीके रोमकूपसे लहू निकलता, तत्क्षणात् प्राणत्याग करता है। वाताष्ठीला रोगमें अष्ठीलाके ऊर्ध्वगामिनी हो हृदयमें आ जाने और उसमें घोर यन्त्रणा और अन्नमें अरुचि दिखानेसे मृत्यु निश्चित है। विना किसी दूसरे उपद्रवके पाद नारीका गुह्यदेश अथवा मुख सूज जानेसे भी रोगीको गतायु समझते हैं। अतीसार, ज्वर, हिक्का, वमी, अण्ड तथा मेढ़्रदेशको स्फीतता आदि उपद्रव होनेसे श्वासरोगी वा कासरोगीके जीनेकी आशा करना वृथा है। अतिशय घर्म, दाह, हिक्का और श्वास

आदि उपद्रव उठ खड़े होनेसे बलवान् रोगी भी मर जाता है। जिस रोगीके चक्षुजलसे मुख भर जाता, दोनों पैरोंसे अविरत पसीना चला आता, चक्षु आकुलित दिखाता, जिसका शरीर हठात् बहुत ही हलका या भारी हो जाता या जिसका वमन कीचड़, मछली, चरबी, तेल या घी जैसा गंधाता, वह रोगी अवश्य परलोक पहुंचता है। मस्तकमें कपाल तक जूं भर आने, मङ्गल कामनासे प्रदत्त बलि काक प्रभृतिके न खाने और रतिशक्ति एकबारगी ही बिगड़ जानेसे मृत्यु उपस्थित होनेमें कोई सन्देह नहीं। जिस रोगीको ज्वर, अतीसार और सूजन तीनों धर दबाते और जिसके मांस तथा बलमें क्षीणता पाते, उसकी कभी भी चिकित्सा नहीं चलाते। शरीर अतिशय क्षीण होने पर रुचिकर, मिष्ट और हितकर अन्न पान द्वारा क्षुधा वा तृष्णा न मिटनेसे मृत्युको आसन्न समझना चाहिये। ग्रहणी, शिरःशूल, कोष्ठशूल, अतिशय पिपासा और बलहानि जिसको एक ही साथ आती, उसके बचनेकी कोई आशा नहीं देखाती।
(सुश्रुत सूत्र ३१ अ०)

शरीरका जो अङ्ग स्वभावतः जैसा होता, उससे उलटा पड़ने पर मृत्युका लक्षण ठहरता है। शरीर गोरेसे काला तथा कालेसे गोरा पड़ने, रक्त प्रभृति वर्णोंका अन्य प्रकार वर्ण लगने, स्थिरके अस्थिर, स्थूलके कृश, कृशके स्थूल दीर्घके खर्व, और खर्वके दीर्घ बनने अथवा कोई अङ्ग एकाएक ठण्डा, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, विवर्ण वा अवसन्न पड़नेसे थोड़े दिनोंमें ही कालकवलित होते हैं। शरीरका कोई अङ्ग अपने स्थानसे स्खलित, उत्क्षिप्त, अवक्षिप्त, पतित, निर्गत, अन्तर्गत, गुरु वा लघु होना भी स्वभावके विपरीत है। शरीरमें अकस्मात् मूंगे जैसे चकते पड़ने, ललाटकी सभी शिराएं झलकने, नाककी डण्डीमें फोड़ाफुन्सी उठने, सवेरे मस्थेसे पसीना निकलने, नेत्ररोग न रहते भी आंसू चलने, मस्तकमें गोबर जैसी धूलि उड़ने अथवा उस पर कबूतर, कङ्क आदि पक्षी गिरने, भोजन न करते भी मलमूत्र पड़ने वा भोजन करनेसे भी मलमूत्र न उतरने; स्तनमूल वक्षःस्थल वा हृदयमें अतिशय वेदना उठने, किसी अङ्गका मध्यस्थल स्फीत अथवा उभय पार्श्व कृश वा मध्यस्थल कृश तथा उभयपार्श्व स्फीत पड़ने, अर्धाङ्गमें शोथ बढ़ने, समस्त अङ्ग शुष्क पड़ने, स्वर नष्ट, हीन, विकृत वा विकल लगने, दन्त, मुख, वा नख प्रभृति स्थानोंमें विवर्ण पुष्प जैसे चिह्न पड़ने, कफ, पुरीष वा रेतः जलमें मग्न रहने, दृष्टिमण्डलमें भिन्न प्रकार विकृतरूप देख पड़ने, केश वा अङ्ग तैलाक्त जैसा लगने, अतीसार रोगमें अरुचि तथा दुर्बलता बढ़ने, फेणके साथ पूयरक्त वमन करने, कासरोगमें तृष्णाके अभिभूत रहने; क्षीणता, वमन तथा अरुचि लगने, भग्नस्वर तथा वेदनासे दबने, हाथ, पैर और मुंह सूज उठने, क्षीण पड़ने वा रुचि हीन रहने; नाभि, स्कन्ध एवं हस्तपद शिथिल पड़ने और ज्वर तथा काससे अभिभूत रहने पर रोगीका जीना कठिन है। पूर्वाह्णमें आहार करके अपराह्णमें वमन करने और पाकाशयमें अम्लरस उत्पन्न न होते भी अतीसार जैसा मल निकलने, भूमि पर पतित हो बकरीकी तरह बोलने, कोष शिथिल, उपस्थ सङ्कुचित तथा ग्रीवा टूट पड़ने, नीचेका ओष्ठ दंशन वा ऊपरका ओष्ठ लेहन करते रहने अथवा केश वा कर्ण नोच रखने, देवता, द्विज, गुरु, सुहृद् एवं वैद्यको बुरा समझने, पापग्रहोंके अधिकतर मन्द स्थानोंमें जा करके जन्मनक्षत्रको पीड़ित करने अथवा उल्का वा वज्र द्वारा अभिहित पड़नेसे मनुष्य गतायुः कहलाता है। स्त्री पुत्र, गृह, शयन, आसन, यान, वाहन और मणि रत्न प्रभृति गृहके उपकरण द्रव्योंका दुर्लक्षण प्रादुर्भाव होते भी आयुःको शेष समझते हैं। बल और मासहीन रोगीकी चिकित्सा करते भी यदि रोग वृद्धि होती, तो वह मरनेका ही लक्षण देख पड़ती है। जिसकी उत्कट पीड़ा एककालको हठात् निवृत्त हो जाती अथवा जिसके शरीरमें आहारकी कोई बात नहीं दिखाती, उसकी मौत शीघ्र ही आती है। (सुश्रुत सूत्र ३२ अ०)

गतार्त्तवा (सं० स्त्री०) गतं नष्टं आर्त्तवं रजो यस्याः, बहुव्री०। १ वृद्धा स्त्री, वह औरत जिसकी अवस्था पचास वर्षसे अधिक की हो। वैद्यकशास्त्रके मतानुसार बारह वर्षसे ५० वर्ष तककी स्त्रियोंका ऋतु या रजोदर्शन होता है। इसके बाद स्त्रीको गतार्त्तवा कहते हैं।

"द्वादशाद् वत्सरादूर्ध्व मापञ्चाशत् समाः स्त्रियः।
मासि मासि भगद्वारा प्रकृत्यैवार्त्तवं स्रवेत ॥" (भावप्रकाश)

२ वन्ध्या स्त्री, वह स्त्री जिसे कोई सन्तान न होती हो।

गतार्थ (सं० त्रि०) १ गतो विदितः अर्थो यस्य, बहुव्री०। जिसका अर्थ मालूम हो गया हो, चरितार्थ। २ जिसका प्रयोजन निर्वृत्त हो गया हो, जिसे अब किसी चीजकी मांग न रह गई हो।

गतासु (सं० त्रि०) गता असवो यस्य, बहुव्री०। १ मृत, मौत। २ शव, मुर्दा।

"गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।" (गीता)

३ गतायु, जिसकी आयु शेष हो गई हो।

गति (सं० स्त्री०) गम भाव क्तिन्। १ गमन, चाल।

"मत्तो वनं प्रभुनुकीर्त्यं स तस्य वाक्ति मे गतिः।" (रघु १४)

२ परिणाम, नतीजा। ३ ज्ञान, पहुंच। ४ प्रमाण, सुबूत। ५ मार्ग, राह। ६ स्थान, जगह। ७ स्वरूप, शक्ल ८ विषय, बात। ९ यात्रा, मुसाफिरी। १० अभ्युपाय, तदबीर। ११ नाड़ीव्रण, रगका जखम। १२ सरणी। १३ कर्मफल। १४ दशा, हालत। १५ पाणिनिकृत कोई संज्ञा। पाणिनिके १।४।६० सूत्रसे ७५ सूत्र तक गति संज्ञा निरूपित हुई है। १६ मुक्ति, मोक्ष। १७ सितार आदि बजानेमें कुछ बोलोंका क्रमबद्ध मिलान। १८ ग्रहोंकी चाल जो तीन प्रकारकी होती है, शीघ्र, मन्द और उच्च।

१९ जैनमतानुसार—गतिनामकर्मके उदयसे जीवकी पर्याय विशेषको गति कहते हैं। गतिके मुख्य चार भेद हैं—नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति और देवगति। (तत्त्वार्थ सूत्र)

२० जीव जब दूसरा शरीर धारण करने जाता है, तब उसकी विग्रह गति होती है। इसके चार भेद हैं—ऋजु, पाणिमुक्ता, लाङ्गलिक और गोमूत्र।

गतिक (सं० क्ली०) १ गति, चाल। २ अवस्था, हालत। ३ आश्रय, पनाह।

गतिक्रिया (सं० स्त्री०) गमनक्रिया, जाना, चलना।

गतितालिन् (सं० पु०) कार्तिकेयका एक सैन्य।

गतिनामकर्म—जो कर्म जीवका आकार नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य और देवोंके सामान बनाता है, उसे गतिनामकर्म कहते हैं। (धर्मप्रकाशिका ८ अ० ११ सू०)

गतिबन्ध—जैनमतानुसार गतिनामकर्मका आत्माके साथ मिल जाना।

गतिमण्डल (सं० पु०) नृत्यमें एक प्रकारका अंगहार।

गतिमार्गणा—जैनमतानुसार जीवके स्वरूप वर्णन करनेका एक तरीका। गतिनामकर्मके उदयसे होनेवाली जीवकी पर्यायको गति कहते हैं। उसके चार भेद हैं-मनुष्य, देव, तिर्यंच और नरक।

गतिया (हिं० पु०) तवलची।

गतिला (सं० स्त्री०) १ वेत्रलता, बेंत। २ नदीविशेष। ३ परम्परा, सिलसिलेवार।

गतिविधि (सं० पु०) गतेर्विधिः, ६-तत्। १ गतिविधान। २ सामान्य ज्ञान।

गतिशक्ति (सं० स्त्री०) गतेः शक्तिः, ६-तत्। गमनागमनकी क्षमता, आने जानेकी शक्ति।

गतिसत्तम (सं० पु०) गतिर्बोधः स चासौ सत्तमश्चेति कर्मधा०। परमेश्वर।

"आदित्यो ज्योतिरात्मा च सहिष्णुर्गतिसत्तमः।" (विष्णुस०)

गतोक (सं० त्रि०) गमन योग्य, जाने लायक।

गत्ता (हिं० पु०) कुट, कागजके कई परतोंका बनाया हुवा।

गत्वन् (सं० त्रि०) गमनकर्त्ता, जानेवाला।

गत्वर (सं० त्रि०) १ गमनशील, चलनेवाला। २ क्षणिक।

गत्वरा (सं० स्त्री०) प्राचीन कालकी एक प्रकारकी नाव। यह ८० हाथ लम्बी, १० हाथ चौड़ी और ८ हाथ ऊंची होती थी और प्रायः सागरोंमें चला करती थी।

गथ (हिं० पु०) १ पूंजी, जमा। २ माल। ३ झुंड।

गथना (हिं० क्रि०) एक को दूसरेसे मिलाना। आपसमें गूथना।

गद (सं० पु०) १ रोग।

"असाध्यं कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा।" (माघ २ स०)

२ मेघध्वनि, मेघका शब्द। ३ [illegible] ४ कुष्ठ, कोढ़। ५ श्रीकृष्णचन्द्रके छोटे भाई। इनके पिताका नाम वासुदेव और रोहिणी माताका नाम था। ६ रामचन्द्रजीकी सेनाका एक वानर। ७ एक असुरका नाम।

गदकारा (हिं० पु०) गुलगुला, गुदगुदा।

गदग—बम्बई प्रान्तके धारवाड़ जिलेका एक तालुका। यह अक्षा० १५° २' तथा १५° ३८' उ० और देशा० ७५°

२६ एवं ७५ ५७ पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ६८८ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः १३७५७३ निकलेगी। कप्पट पहाड़ बड़ा है। उसकी चिकनी मट्टीमें सोना होता है। जलवायु मध्यत और स्वास्थ्यकर है। टम्बल तालाब सींचके लिये ६४००० हजार रुपये लगा करके बनाया गया है।

२ धारवाड़ जिलेके गदक तालुकका हेडक्वार्टर। यह अक्षा० १५ २५ उ० और देशा० ७५ ३८ पू०में दक्षिण मराठा रेलवे पर अवस्थित है। लोकसंख्या कोई ३०६५२ है। १८५८ ई०को यहां म्युनिसपालिटी हुई। यहां कपास और सूती तथा रेशमी कपड़ोंका बड़ा काम है। सूत कातनेका एक पुतलीघर भी खुला है। गदगमें त्रिकूटेश्वर, सरस्वती, नारायण, सोमेश्वर और रामेश्वरके प्राचीन सुन्दर मन्दिरोंका ध्वंसावशेष विद्यमान है। इसके शिलाफलक पढ़नेसे विदित होता कि गदकका पुराना नाम क्रतुक था और वह (८७३-११७०) चालुक्यों, (११६१-८३) कलचुरियों, (१०४७-१३१०) होयसल बल्लालों, (११७०-१३१०) देवगिरियादवों और (१३३६-१५६५ ई०) विजयनगर राजाओंके अधीन रहा। १६७३ ई०के समय गदग धारवाड़में बांकापुर सरकारके एक बड़े जिलेकी तरह मिलाया गया। १८१८ ई०को जनरल मुनरोने इसको घेरा था। शहरमें छोटे जजकी अदालत, अस्पताल और कई स्कूल हैं।

गद्गद (सं० क्ली०) गदगद भाषण, पुलकित वचन।

गदचाम (हिं० पु०) हाथीका एक रोग। इसके होनेसे पीठ पर घाव हो जाता है।

गदनकेरी—बोजापुर जिलेके अन्तर्गत कलादगीका एक छोटा ग्राम। यह कलादगीसे ८ मील पूर्व बागलकोट सड़क पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः चारसौ है। ग्रामके पास भी पहाड़ पर बहुतसी मसाजद हैं। जो मल्लप्पा और उनके लड़के मोनप्पाकी कब्र कही जाती हैं। अनावृष्टिके समय मनुष्य इस मस्जिदमें आ वर्षाके लिये आराधन करते हैं।

गदम (फा० पु०) नाव बांधनेके लिये एक प्रकारकी लकड़ी, थाम, पुस्ता।

गदमुरारि (सं० पु०) ज्वर रोगका औषधविशेष। पारा, गन्धक, लौह, अभ्र, ताम्र, हिङ्गुल और सीसक, इन सब का समभाग लेकर मिलाना चाहिये। दो रत्ती [illegible] दिन सेवन करनेसे मद्यज्वर नाश होता है। (र[illegible])

गदमुरारिरङ्क्षाभैटी—औषधविशेष। पारा, गन्धक, [illegible], हरिताल, विष, शुंठ, पीपल, मिर्च, हरीतकी, [illegible]लकी, बहेड़ा, सोहागा, इनके समान भागमें उतना [illegible] जयपाल देकर भृङ्गराजके रसमें दो प्रहर तक पीसना चाहिये। इसके सेवन करनेसे सन्निपातादि समस्त रोग जाते रहते हैं।

गदयित्नु (सं० पु०) १ काम, इच्छा। २ शब्द, आवाज। (वि०) ३ कामुक इच्छुक ४ वावदूक, गप्पी।

गदराना (हिं० वि०) १ परिपक्व होनेके निकट आना। २ जवानीमें अंगोंका भरना। ३ आंखमें कीचड़ आदि आना।

गदरिया—युक्तप्रदेशका मेषपालक जातिविशेष। वे कई एक श्रेणियोंमें बंटे हैं। एक श्रेणीके मनुष्य दूसरी श्रेणीके साथ विवाहमें दान ग्रहण नहीं करते हैं। इस जातिकी विधवा स्त्रियां अपने देवरसे विवाह करती हैं। किन्तु ज्येष्ठ मृत कनिष्ठकी विधवासे विवाह नहीं कर सकते। आग्रा और फरुखाबादके अञ्चल-में इस जातिका वास अधिक है।

गदसिंह—एक संस्कृत ग्रन्थकार। इन्होंने अनेकार्थध्वनि-मञ्जरी नामक एक संस्कृत अभिधान, तत्त्वचन्द्रिका नामक किरातार्ज्जुनीयटीका और उषाविवेककी रचना की है।

गदला (फा० वि०) मटमैला, गन्दा।

गदहपचीसी (हिं० पु०) प्रायः १६से २५ वर्ष तककी अवस्था। लोगोंका विश्वास है कि इतने दिन मनुष्य अनुभवी रहते तथा उनकी बुद्धि अपरिपक्व रहती है।

गदहपन (हिं० स्त्री०) मूर्खता, बेवकूफी।

गदहपूरना (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पौधा जो दवाके काममें आता है।

गदहलोट (हिं० स्त्री०) कुश्तीका एक पेंच।

गदहलोटन (हिं० पु०) १ क्लान्ति दूर करनेके लिये तथा प्रसन्नताके लिये गदहेका जमीन पर लोटना। २ गदहा लोटनेका स्थान। साधारणतः मनुष्योंका विश्वास है कि ऐसी जगह पर पांव रखनेसे मनुष्य थक जाते और पांवमें दर्द होने लगता है।

गदहहेंचू (हिं० पु०) एक प्रकारका खेल। इसमें एक लड़का दूसरे लड़केकी चक्षु बांधकर शेष लड़कोंको छूने-के लिये कहता है। जिन लड़कोंका पता वह कह दे "गदही" और जिन्हें न कह सके उन्हें "गदहा" कह कर पुकारते हैं। उसके बाद गदहे गदहियों पर चढ़कर एक जगहसे दूसरी जगह जाते हैं।

गदहा (हिं० पु०) १ रोग हरनेवाला, वैद्य, चिकित्सक। २ गदभ। गर्दभ देखो।

गदहिला (हिं० पु०) ईंट और सुरखीसे लदे हुवे गदहे। २ गोबरैलेकी तरहका एक विषैला कीड़ा।

गदांबर (हिं० पु०) मेघ।

गदा (सं० स्त्री०) गद-अच्-टाप्। लोहमय अस्त्रविशेष इसमें लोहेका डंडा होता है और डंडेके सिर पर भारी लट्टू लगा रहता है। इसका डंडा पकड़कर लट्टूका ओरसे शत्रु पर प्रहार करते हैं। अस्त्रयुद्धमें गदायुद्ध ही अतिशय कठिन और योद्धाओंका बलसापेक्ष है। अग्निपुराणमें आहत, गोमूत्र, प्रभृत, कमलासन, ऊर्ध्वगात्र, नामित वामदक्षिण, आवृत्त, परावृत्त, पदोद्धृत, अवप्लुत, हंसमार्ग और विमार्ग इन कई प्रकारके गदायुद्धका उल्लेख है। महाभारतमें मण्डल, गतप्रत्यागत, अस्त्रयन्त्र, स्थान, परिमोक्ष, प्रहारवर्जन, परिधावन, अभिद्रवण, आक्षेप, अवस्थान, सविग्रह, परिवृत्त, संवृत्त, अवप्लुत, उपप्लुत, उपन्यस्त और अपन्यस्त इन कई प्रकारोंके गदायुद्धके कौशलकी कथा वर्णित है। गदायुद्धमें निपुण महाबली भीम और दुर्योधनने गदायुद्धसे स्वर्ग-मर्त्य-पातालवासियों-को विस्मयापन्न कर दिया था। टीकाकार नीलकण्ठके मतसे युद्धकालमें शत्रुके चारो ओर घूम कर युद्ध करनेका नाम मण्डल है। जो कौशलसे शत्रुके निकट पहुंच कर फिर हठात् दूर भाग जाता है, उसको गतप्रत्यागत कहते हैं। शत्रुके कठिन मर्मदेशका आक्षेप कर ऊपरकी ओर उठाने या नीचे फेंकनेको अस्त्रयन्त्र कहते हैं आघातके उपयुक्त मर्मदेश अर्थात् मर्मस्थानमें आघात करनेको स्थान कह कर उल्लेख किया है। अत्यन्त वेगसे घूमने फिरनेको परिधावन, वेगसे शत्रुके सम्मुख उपस्थित होनेको अभिद्रवण, शत्रुके यत्नसे हो उसीके साथ करनेके कामको आक्षेप, युद्धमें किसी तरहकी चंचलता प्रकाश नहीं करनेको अवस्थान, शत्रुके पहुंचने पर फिर भी उसके साथ युद्ध करनेको सविग्रह, शत्रुके चारों ओर विचरण करनेको परिवर्त्तन, शत्रुको इधर उधर टलने न देनेको संवत, शत्रुके प्रहारसे अपनेको बचाने-के लिये अवनत होकर भाग जानेको अवप्लुत, विपक्षके आघातसे रक्षा पानेके लिये पीछे हट जानेको उपप्लुत, शत्रुके पास पहुंचकर गदा प्रहारको उपन्यस्त और घूम-कर हाथोंसे शत्रुको मारनेका नाम अपन्यस्त है। (भारत शल्यप० ५७ अध्यायको नीलकण्ठ टीका देखो) देवताओंके बीच विष्णु भगवान् ही गदायुद्धमें अति निपुण हैं। वायुपुराणमें लिखा है कि गद नामका एक भयङ्कर असुर था जिसको अस्थि वज्रसे भी कठिन थी। गदासुर देवताओंके ऊपर बहुत अत्याचार किया करता था। अन्तमें ब्रह्माजीने उस-के शरीरसे अस्थि ले ली और उसीसे विष्णुकी गदा बनाई गई। (वायुपुराण) २ बृंहितत्व, महत्त्व, बड़प्पन।

"भवसत्वात्मकं चक्रं बृंहितत्वात्मिका गदाम्।" (विष्णुपु०)

३ पाटलवृक्ष। ४ योगविशेष।

गदाई (फा० स्त्री०) तुच्छ, नीच। २ रद्दी।

गदाक्षेत्र विरजाक्षेत्रका दूसरा नाम। (विरजा और याजपुर देखो।)

गदाख्य (सं० क्ली०) गदा इत्याख्या यस्य, बहुव्री०। कोष्ठ, कोढ़।

गदागद (सं० पु०) अश्विनीकुमार।

गदाग्रज (सं० पु०) गदस्य अग्रजः, ६-तत्। १ बलराम। २ कृष्ण।

गदाग्रणी (सं० पु०) गदस्य अग्रणी, ६-तत्। क्षयरोग। सभी रोगोंमें श्रेष्ठ होनेके कारण क्षयरोगका नाम गदा-ग्रणी पड़ा।

गदाधर (सं० पु०) गदां धरति गदा-धृ-अच्। १ विष्णु। इन्होंने गदासुर नामक राक्षसकी हड्डियोंसे एक गदा बनाकर धारण की, इसीसे इनका नाम गदाधर पड़ा। (गदा देखो।) गदा विष्णुभगवान्को जिस तरह मिली वह वायुपुराणमें लिखा है—एक समय ब्रह्मपुत्र हेतिरक्षने ब्रह्माकी आराधना की। ब्रह्मा उसकी कठिन तपस्यासे संतुष्ट हो कर उसको वर देनेके लिये उपस्थित हुए। हेतिरक्षने निवेदन किया—"प्रभो! यदि इस अधम पर आपकी कृपा हुई तो मुझे यह वर दीजिये कि मैं त्रिलोकमें अवध्य रहूं। देवास्त्र, असुरास्त्र या मनुष्यास्त्रसे मुझे किसी प्रकारका अनिष्ट न हो।" ब्रह्माजीने इसे

स्वीकार कर लिया। इस वरको पाकर वह दुर्दान्त हेतिरक्ष मतवाला हो गया और थोड़े दिनके बाद इन्द्रको भगा कर इन्द्रपुरी अपने अधिकारमें कर लिया। क्रमानुसार समस्त देवताओंको पदच्युत कर भगाने लगा। हेतिरक्षके इस असह्य अत्याचारको देख कर समस्त देवगण विष्णुके निकट उपस्थित हुए और उन्होंने हेतिके भयङ्कर अत्याचारको कह सुनाया। विष्णु भगवान्‌ने उन पर दया दिखा कर कहा "यदि तुम लोग मुझे एक महास्त्र दो तो मैं हेतिका नाश शीघ्र कर डालूं।" इस पर देवताओंने समयानुकूल देख गदासुरकी वज्रसी कठिन अस्थिसे बनी हुई गदा विष्णु भगवानको अर्पण कर दी। विष्णुने गदाके दृढ़ आघातसे हेतिरक्षका विनाश कर डाला। वह गदा उन्हें बहुत अच्छी लगी इस लिये उन्होंने इसे लौटा कर देवताओंको नहीं दिया वरं अपने हाथमें ही धारण कर लिया, तबहीसे इनका नाम गदाधर पड़ा। (गयामाहात्म्य ५ अ०) २ गया तीर्थ स्थित देवमूर्ति विशेष। (त्रि०) ३ जो गदा धारण करता हो कई एक संस्कृत ग्रन्थकारोंके नाम—

१ क्रियाकल्पद्रुम-प्रणेता। २ ग्रहयोगायुत-होमादिसिद्धि नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता। ३ एक प्राचीन वैद्यक ग्रन्थकार। ४ एक धर्मशास्त्र-संग्रहकार। इन्होंने गदाधरपद्धति, सम्प्रदायप्रदीप और नवकण्डिकासूत्रभाष्य प्रणयन किये हैं। ५ दृष्टकूटरतसत्यस्तोत्रके रचयिता। ६ भगवत्तत्त्वदीपिका नाम भक्तिशास्त्रके प्रणेता। ७ रसिकजीवन नामक संस्कृत अलङ्कारके रचयिता। ८ विवाहसिद्धान्तरहस्य नामक ज्योतिर्ग्रन्थ-प्रणेता। ९ एक प्रसिद्ध तान्त्रिक। ये राघवेन्द्रके पुत्र और धीरसिंहके पौत्र थे। इन्होंने तत्त्वप्रदीप नामक शारदातिलककी टीका की है। १० एक प्राचीन कवि।

गदाधरचक्रवर्ती—काव्यप्रकाशके एक टीकाकार।

गदाधरतर्काचार्य—रामतर्कालङ्कारके पुत्र, देवीमाहात्म्य-टीकाके रचयिता। राढीय ब्राह्मणोंके निर्दोष कुलपञ्जिका नामक कुलग्रन्थमें एक नैयायिक गदाधर भट्टाचार्यका नाम पाया जाता है, वे भी रामतर्कालङ्कारके पुत्र होते हैं। ऐसी हालतमें दोनों एक ही व्यक्ति हो तो असम्भव नहीं।

गदाधरदास—एक हिन्दी कवि, ब्रजवासी प्रसिद्ध हिन्दी कवि कृष्णदासके शिष्य और वल्लभाचार्यके प्रशिष्य।

गदाधर दीक्षित—एक प्राचीन वैदिक सूत्रभाष्यकार। इनके पिताका नाम वामन था। इनके बनाये हुए आश्वलायन-गृह्यसूत्रभाष्य और पारस्करगृह्यसूत्रभाष्य पाये जाते

गदाधरनदी—ब्रह्मपुत्रकी एक शाखा नदी। यह भूटानकी गिरिमालासे निकल कर जलपाईगोड़ी और ग्वालपाड़ाको पश्चिम और पूर्व द्वारमें विभक्त करती है। इसकी गति बड़ी ही परिवर्तनशील है। इसी लिये स्थान स्थान पर इसका नाम बदलता गया है। किसीके मतसे यह नदी उत्तरांशमें सङ्कोश, ग्वालपाड़ामें गङ्गाधर तथा इसके निम्नभागमें भी प्राचीन गर्भ गदाधर नामसे मशहूर है। रामनाई नामकी इसकी एक शाखा है।

गदाधरनाथ एक प्राचीन कवि।

गदाधरपण्डित चैतन्य देवके एक प्रधान अन्तरङ्ग। चैतन्यभक्तगण इन्हें भी अवतारदृष्टिसे देखते हैं।

गदाधरभट्ट—बान्दाप्रदेशके एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि। इनके प्रपितामह मोहनभट्ट, पितामह पद्माकर और पिता मिहीलाल ये तीनों कवि थे। किन्तु गदाधरने कविता लिख कर अपने पितृगणसे उच्चासन लाभ किया था। ये राजा भवानीसिंहके यहां रहते थे। अलङ्कारचन्द्रोदय इन्हींका बनाया है।

गदाधर भट्टाचार्य—संस्कृत अध्यापक और विख्यात नैयायिक। ये वारेन्द्रश्रेणीके ब्राह्मणवंशीय पण्डित थे। इनके पिताका नाम जीवाचार्य रहा। ये पावना जिलाके अन्तर्गत लक्ष्मीचापड़ा नामक ग्राममें रहते थे। विद्याभ्यास करनेके लिये नवद्वीप आकर नैयायिक हरिरामतर्कवागीशके विद्यालयमें न्यायशास्त्र अध्ययन किया था। गदाधरका शिक्षा समाप्त न होने पाई थी कि हरिरामकी मृत्यु हो गई। हरिरामके ऐसा कोई सुयोग्य पुत्र न था जो पाठशालामें विद्यार्थियोंको पढ़ा सकता। मृत्यु समय उन्होंने अपनी स्त्रीसे गदाधरको ही पाठशालामें नियुक्त करने कहा था। गदाधर पढ़ानेमें प्रवृत्त हो गये। किन्तु छात्रगण उनसे पढ़नेमें अपनी अनिच्छा प्रगट कर दूसरी दूसरी पाठशालाओंमें अध्ययन करनेके लिये चले गये।

तेजस्वी गदाधर इससे कुछ भी निरुत्साह न हुए। इन्होंने हरिरामकी पाठशाला परित्याग कर गङ्गास्नानके पथ पर एक स्वतन्त्र चतुष्पाठी और उसके संलग्न एक फूलबागान बनाया। उनके फूलबागान लगानेका यह उद्देश्य था कि पण्डितगण पूजाके लिये फूल तोड़ने यहां प्रायः आया करेंगे और उन्हींसे शास्त्रालाप करके अपना पाण्डित्य प्रचार करनेमें समर्थ होंगे। अपनी जन्मभूमि लक्ष्मीचापड़ासे थोड़े विद्यार्थी मंगानेके लिये आदमी भेजा। तब तक ये फूलबागानमें बैठ कर फूल लुटा- को ही लक्ष्य कर पढ़ाने लगे। अध्यापक और बहुतसे छात्र फूल तोड़नेके लिये आने लगे गदाधरकी अध्यापनाप्रणाली और व्याख्या सुन कर वे मनही मन उनकी प्रशंसा करते थे। छात्रगण एकान्तमें आकर उनसे नाना विषयमें अपना अपना सन्देह दूर करते थे और कुछ उनकी बनाई व्याख्याको नकल करने लगे। उस समय नवद्वीपके सुप्रसिद्ध नैयायिक जगदीश तर्कालङ्कारकी पाण्डित्यकी प्रशंसा बहुत दूर तक फैली हुई थी। इन्होंने एकदिन गदाधरके बौद्धाधिकारदीधितिकी टीका पढ़ कर कहा कि इस टीकाको पढ़ कर मैं निश्चय नहीं कर सकता कि कौन पाठ प्रकृत है। इस तरह गदाधरकी ख्याति नवद्वीपमें परिव्याप्त हो गई और तभीसे झुंडके झुंड लड़के उनके पास पढ़नेके लिये आने लगे। गदाधर भट्टाचार्यने कई एक टीका प्रणयन कीं जो "गादाधरी टीका" और "गदाधरीपञ्जिका"से मशहूर हैं।

गदाधरमिश्र—व्रजके एक हिन्दी कवि। १५२३ ई०को इन्होंने जन्म लिया था। यह बहुत अच्छी कविता करते थे—

"आज नंदलाल मुखचन्द नयनन निरखि, परम मङ्गल भयो भवन मेरे
कोटि कन्दर्प लावण्य एकत्र करि वारौं तब छौं जबहिं नेक हेरे।
सकल सुख सदन हर्षित गोपवर बदन प्रबल दल मदन जना सङ्ग घेरे।
कहा काठ कैसे हमाहि सुधि बुधि रहै गदाधर मिश्र गिरिधरन टेरे॥"

गदान्तक (सं० पु०) गदासुरनिहन्ता विष्णु, गदासुर राक्षसके मारनेवाले विष्णु।

गदापाणि (सं० पु०) गदा पाणौ यस्य, बहुव्रौ०। १ विष्णु। २ मातृकादेवीभक्त राजा चापपाणीके पुत्र।

गदाभृत् (सं० पु०) विष्णु।

गदामुद्रा (सं० स्त्री०) विष्णुपूजाका अङ्गमुद्राविशेष दोनों हाथोंकी परस्पर मिला कर अंगुली आवद्ध करनी पड़ती है और दोनों अंगुष्ठ तथा दोनों मध्यमाको संलग्न करके प्रसारित करे इसीको गदामुद्रा कहते हैं।

गदाम्बर (सं० पु०) मेघ, बादल।

गदाराति (सं० पु०) गदस्य अरातिः, ६ तत्। औषध, एक दवा।

गदालोल (सं० क्ली०) गयातीर्थस्थ एक तीर्थ। विष्णु भगवान्‌ने हेतिरक्षका मार कर जिस स्थान पर गदा साफ किया था वह स्थान गदालोलसे मशहूर है। (गयामाहात्म्य)

गदावसान (सं० क्ली०) गदाया जरासन्धत्यक्तगदागतेरवसानमत्र, बहुव्रौ०। मथुराके निकटस्थ एक स्थान। श्रीकृष्णचन्द्रने कंसको मारा था। इस पर कंसके श्वशुर जरासन्धने जामातृहत्यासे दुःखित हो यदुनन्दनको संहार करनेके अभिप्रायसे एक गदाको निन्यानवे (९९) बार घुमाकर गिरिव्रजसे मथुरा पर निक्षेप किया था। गिरिव्रजसे मथुरा १०० योजनकी दूरी पर है। इस लिये गदा मथुरा तक नहीं पहुंच सकी। ९९ योजन आकर ही गदा पृथिवी पर गिर पड़ी। जिस स्थान पर गदा गिरी वही स्थान गदावसान कहलाता है। (भारत २।१९७०)

गदासन (सं० क्ली०) आसनविशेष, एक प्रकारका आसन। दोनों हाथोंको ऊर्ध्व कर गदाकी नाईं उपवेशनको गदासन कहते हैं। इस आसनसे सिद्धि लाभ होती है।

गदाह्व (सं० क्ली०) गद एव आह्वा यस्य, बहुव्रौ०। कुष्ठ, कोढ़।

गदाह्वय ((सं० क्ली०) कुष्ठ, कोढ़।

गदाला (हिं० पु०) हाथी पर कसनेका गद्दा।

गदावारण (हिं० पु०) एक प्रकारका प्राचीन बाजा जिसमें तार लगा रहता था।

गदित (सं० त्रि०) १ कथित, कहा हुआ। (क्ली०) २ कथन, कहना।

गदितोज्ज्वला (सं० स्त्री०) छन्दविशेष, एक प्रकारका छन्द।

गदिन् (सं० पु०) १ विष्णु।

"किरीटिनं गदिनं चक्रिणञ्च।" (गीता)

(वि०) २ गदाधारी, जो गदा रखता हो। ३ रोगी

गदिनगलज—कोल्हापुर जिलेके अन्तर्गत इसी नामके उपविभागका सदर। यह कोल्हापुरसे ४५ मील दक्षिण-पूर्व संकेश्वर पारपोली सड़कके निकट हिरण्यकेशी नदीतीर पर अवस्थित है। लगभग १६०० ई०में जब लगातार अनावृष्टि होने लगी थी तो अधिवासियोंने शहरको उक्त नदीतीर पर ला स्थापित किया था। तभीसे यह शहर नदीतट पर बसा आ रहा है। कोल्हापुरकी नाईं लगभग १८वीं शताब्दीमें पटवर्द्धन कोण्डराव और निपानिकरने इस शहरको तहस नहस कर डाला था। इसके पास ही एक प्राचीन दुर्ग भग्न अवस्थामें पड़ा है। कहा जाता है कि वह दुर्ग कापसी वंशके पूर्वपुरुषोंका निर्माण किया हुआ है। इसमें लगभग ७०० घर लगते और ३००० मनुष्य वास करते हैं। यहां मामलतदार और मुन्सिफ आफिस हैं। इसके अलावे एक सरकारी अस्पताल, पुस्तकालय, डाकघर और विद्यालय हैं। इस शहरसे तीन मीलकी दूरी पर एक मन्दिर है जहां प्रतिवर्ष माघ महीनेमें एक भारी मेला लगा करता है।

गदेला (हिं० पु०) रुई आदिसे परिपूर्ण एक बहुत मोटा बिछौना।

गदोरी (हिं० स्त्री०) हथेली।

गद्खाली—बङ्गालके यशोर जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यह कलकत्तेसे यशोर जानेके रास्ते पर अक्षा० २३° ५´ ३०´´ उ० और देशा० ८८° ६´ पू०के मध्य कपोताक्ष नदी किनारे अवस्थित है। बेदिया जातिके उत्पातके लिये यह स्थान प्रसिद्ध है।

गद्गद (सं० पु०) गद्गद भावे घञ्। १ अव्यक्त अस्पष्ट शब्द, वह आवाज जो साफ साफ सुनाई न पड़े। २ अत्यधिक हर्ष, प्रेम। ३ प्रसन्न, आनन्दित, पुलकित। ४ एक प्रकारका रोग। इसमें मनुष्य स्पष्ट शब्द नहीं बोल सकते, एक ही शब्द बोलनेमें कई बार उच्चारण करने पड़ते हैं। यह रोग या तो जन्मसे होता है या लकवेकी बीमारीसे। हकलाना।

गद्गदक (सं० त्रि०) गद्गदे चाट-वाक्य कुशलः। गद्गद्-कन्। चाट-वाक्यनिपुण।

गद्गदध्वनि (सं० पु०) गद्गदः कफादिनां अव्यक्त-ध्वनिः। १ अव्यक्तध्वनि, अस्पष्ट शब्द।

गद्गदध्वनि (सं० त्रि०) गद्गदो ध्वनि र्यस्य, बहुव्री०। १ जिसकी बोली स्पष्ट न हो, अव्यक्तध्वनियुक्त। (पु०) अव्यक्त ध्वनि।

गद्गदस्वर (सं० पु०) गद्गदः कफादिना अव्यक्तः स्वरो ध्वनिः। अव्यक्तध्वनि, वह शब्द जो साफ साफ सुनाई न पड़े।

"स गद्गदस्वरं किञ्चित्प्रियं प्रायेण भाषते।" (साहित्यद०)

गद्द (हिं० पु०) १ कोमल स्थान पर किसी पदार्थके गिरनेका शब्द। २ अजीर्णके कारण पेटका भारीपन।

गद्दम (हिं० पु०) पक्षीविशेष। इसका सिर पीला, पैर सफेद और पेट लाल होता है।

गद्दर (हिं० वि०) अपक्व, जो अच्छी तरह पका न हो, अधपका २ मोटा गद्दा।

गद्दा (हिं० पु०) १ रुई आदिसे भरा हुआ मोटा बिछावन। तोशक, गदेला। २ टाटका बना हुआ फुट भर मोटा एक चौकोर बिछावन। जिसके मध्यमें लगभग गज परिमाणके एक लम्बा छेद होता है। यह हाथीकी पीठ पर हौदा कसनेसे पहले रख कर बांधा जाता है। ३ घास, पयाल रुई आदिके मुलायम पदार्थोंका बोझ। ४ किसी मुलायम चीजकी मार या ठोकर।

गद्दी (हिं० स्त्री०) १ छोटा गद्दा। २ वह कपड़ा जो घोड़े, ऊंट आदिकी पीठ पर जीन आदि रखनेके लिये रखा जाता है। ३ व्यवसायी आदिके बैठनेकी जगह। ४ किसी बड़े अधिकारीका पद। ५ किसी राजवंशकी पीढ़ी वा आचार्यकी शिष्यपरम्परा।

हिमालय गढ़मुक्तेश्वर, सरवा और रामपुर अञ्चलमें इनका वास अधिक है। भावो देखो।

गद्दी—युक्तप्रदेशस्थ जातिविशेष, गोपालन करना ही इनका प्रधान कार्य है। गद्दियोंको बलपूर्वक मुसलमान बना लिया गया था। घोसियों और अहीरोंसे इनका निकटस्थ सम्बन्ध है। गद्दी २२५ प्रकारके होते हैं।

गद्दीनशीन (फा० वि०) १ सिंहासनारूढ़। २ उत्तराधिकारी।

गद्य (सं० त्रि०) गद-यत्। १ कथनीय, कहने योग्य।

"सद्यः कथं वियोगस्य गद्यमितन् तथा मम।" (भाइ ६।८७)

(क्ली०) २ छन्दरहित वाक्य। साहित्यदर्पणके-

मतसे गद्य चार प्रकारका माना गया है—मुक्तक, वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्राय और चूर्णक। समासरहित गद्य भागको मुक्तक कहते हैं। यथा—गुरुर्वचसि, पृथुरुरसि, अर्जुनो यशसि इत्यादि। वृत्तगंधि वह है जिसमें कहीं कहीं पद्यका आभास हो। यथा—

"समरकण्डूयननिबिड़भुजदण्डकुण्डलीकृतकोदण्डशिञ्जिनीटङ्कारोज्जागरितवैरिनगरः।"

दीर्घ समासयुक्त गद्यको उत्कलिका कहते हैं। चूर्णक वह है जिसमें छोटे छोटे समास हों। यथा

"गुणरत्नसागर जगदेकनागर कामिनीमदन जनरञ्जन।"

छन्दोमञ्जरीके मतसे गद्य तीन प्रकारका होता है—मुक्तक, उत्कलिकाप्राय और वृत्तगन्धि। कठोर अक्षरशून्य अल्पसमासयुक्त गद्यको मुक्तक कहते हैं। यह वदर्भी रीतिसे रचा जाता है। कठोराक्षर और बहुत समासयुक्तको उत्कलिकाप्राय तथा वृत्तके एकदेशयुक्तको वृत्तगन्धि गद्य कहते हैं।

काव्यादर्शके मतसे पादलक्षणरहित पदसमूहको गद्य कहते हैं। गद्य काव्य प्रधानतः दो भागोंमें विभक्त है, कथा और आख्यायिका। (काव्यदर्श।)

३ संगीतमें शुद्ध रागका एक भेद।

गद्याण (सं० पु०) परिमाणविशेष। भावप्रकाशके मतसे २ जौका एक गुञ्जा, ८ गुञ्जाका एक माष और ६ माष या ४८ गुञ्जाका एक गद्याण होता है।

गद्याणक (सं० पु०) गद्याण एव स्वार्थे कन्। १ गद्याण। २ लीलावती उक्त परिमाणविशेष। लीलावतीके मतसे २ जौका एक गुञ्जा, ३ गुञ्जाका एक वल्ल, ८ वल्लका एक धारण और २ धारणका एक गद्याणक होता है।

गद्यात्मक (सं० त्रि०) गद्यमें रचा हुआ।

गद्दा—१ बम्बई प्रदेशके काठियावाड़में गोहिलवार प्रान्तके अन्तर्गत एक नगर। यहांकी जनसंख्या प्रायः छः हजार है। यहां फौजदारी अदालत, बालक और बालिकाओं के विद्यालय और एक औषधालय है। यहां सहजानन्द प्रतिष्ठित स्वामी नारायण-सम्प्रदायका एक प्रधान अड्डा है। इसी स्थानपर १८३० ई०में सहजानन्दका देहान्त हुआ था।

२ सिन्धु प्रदेशके थर और पार्कर जिलाके अन्तर्गत उमारकोट तालुकाका एक नगर। यहां प्रायः दो हजार मनुष्य रहते हैं।

गधड़—बम्बईमें काठियावाड़के अन्तर्गत भावनगर राज्यका शहर। यह भावनगर शहरसे ४२ मीलकी दूरीपर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५३७५ है। हिन्दूधर्मप्रवर्तक सहजानन्द निर्मित स्वामीनारायण सम्प्रदायका यह एक प्रधान केन्द्र है। यहां चन्दन लकड़ीकी गुटिकाकी माला यथेष्ट रूपसे बनाई जाती है। जिसे उक्त सम्प्रदायके अनुयायी पहनते हैं।

गधालि—काठियावाड़के गोहिलवार प्रान्तके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। यह उजलवा रेल स्टेशनसे ३॥ कोस पश्चिममें अवस्थित है। लोकसंख्या १५३७ हैं। इस राज्यकी आमदनी दश हजार रुपया है और उनमेंसे २०००) रु० गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको देना पड़ता है।

गधिदूभार—युक्त प्रदेशमें मुजफ़रनगर जिलाके अन्तर्गत एक ग्राम। यहां दो हजारसे अधिक मनुष्य रहते हैं। जिनमें बलुचि मुसलमानकी संख्या अधिक है। यहां कईएक ईंटेके घर, तीन मसजिद और प्रात्यहिक बाजार है। चावों और नमकका व्यवसाय यहां अधिक होता है। इस ग्रामके चारों ओर सुन्दर उपवन है।

गधिया—दक्षिण काठियावाड़के अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। इस राज्यके दो ग्राम दो सामन्तोंके अधीन हैं। लोकसंख्या ५२८ है। वार्षिक आमदनी प्रायः ४५००) रु० की है उनमेंसे २८५) रु० गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको देना पड़ता है।

गधेला (हिं० पु०) एक जंगली जात।

गधुल—काठियावाड़के गोहिलवार प्रान्तके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। धोला रेलपथसे २॥ कोस दूरमें अवस्थित है। लोकसंख्या ३६६ है। यह दो सामन्तराजाओंके अधीन है। यहांकी आमदनी तीन हजार रु० है और उनमेंसे १८६) रु० कर गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको देना पड़ता है।

गधूल (सं० पु०) एक फूलका नाम।

गधका—काठियावाड़के हलार प्रान्तके अन्तर्गत एक छोटा राज्य। एक करद सामन्तके अधीन यहां छः ग्राम हैं। यह राजकोटसे पांच कोस पूर्वमें अवस्थित है। राज्यको

आय प्राय: १००००) रु० हैं, जिनमेंसे वृटिश गवर्नमेंट-को ४६०) रु० और जुनागढ़के नवाबको २००) रु० कर देना पड़ता है।

गव्य (सं० त्रि०) प्राप्य, जो पानेके योग्य हो ।

गन (सं० पु०) गण देखो।

गनकेरुआ (हिं० पु०) एक प्रकारका घास जो गाय भैंस-के चारेके काममें आती है।

गनगौर (सं० स्त्री०) चैत्र शुक्ल तृतीया। इस दिन गणेश और गौरीकी पूजा होती है।

गनना (सं० क्रि०) गिनती करना।

गनतङ्ग—पञ्जाब प्रदेशके बसहर विभागमें स्थित कुनावार और चीन साम्राज्यके मध्यवर्त्ती गिरिसङ्कट। यह अक्षा० ३१° ३८' उ० और देशा० ७८° ४७' पू०में अवस्थित है। इसकी ऊंचाई २१२२८ फुट होगी। इसका सर्वोच्च स्थानसमूह बहुत दिन तक बर्फसे आच्छादित रहता है बर्फसे ढका रहनेके कारण यह पर्वत दुरारोह है। यहां एक भी वृक्ष उगने नहीं पाता है। गिरिसङ्कट-से पर्वतशिखरको ऊंचाई १८२८५ फुट है।

गनिग—महिसुर राज्यस्थ जातिविशेष। यह तेल निका-लते और बेचते हैं। इनमें कुछ लोग अपना परिचय मात्र वैश्य जैसा देते हैं।

गनिमर्द—बम्बई प्रदेशके सम्पगांव उपविभागमें १० मील दक्षिण हिरेनन्दीहल्ली ग्रामके निकटस्थ एक पर्वत-श्रेणी। यह समतलक्षेत्रसे ६०० फुट ऊंची है।

गनियारी (हिं० स्त्री०) पौधाविशेष। यह सर्मोकी तरह होता है। इसकी पत्तियां बबूलकी पत्तियोंसे चौड़ी होती हैं। इस पौधेमें श्वेत पुष्प और करौंदेके बराबर छोटे छोटे फल होते हैं। इसकी लकड़ी रगड़नेसे आग उत्पन्न करती है। वैद्यकमें गनियारी कटु, उष्ण, अग्नि-दीपक और वातनाशक मानी जाती है।

गनी (अ० पु०) धनी, धनवान्।

गनी—एक मुसलमान कवि। इनका असली नाम मिर्जा मुहम्मद ताहिर था, ये काश्मीरमें पैदा हुये थे। यह शेख मुहसिन फानीके छात्र रहे और अपने विद्याप्रभावसे एक सुकवि हो गये। इन्होंने अपने गुरुसे अधिक प्रतिष्ठा पायी थी। इनका बनाया 'दीवान् गनी' नामक काव्य-ग्रन्थ बहुत अच्छा है। १०७९ हिजरीको यह इहलोक छोड़ गये। कहते हैं कि दिल्लीके बादशाह आलमगीरने काश्मीरके शासनकर्ता सैफ खांको उन्हें अपने पास भेज देनेके लिये लिखा था। सैफ खांने जब यह संवाद सुनाया, वह जानेको अस्वीकृत हुये और कहने लगे सम्राट्-को कह दीजिये कि गनी पागल हो गया है और उस अवस्थामें बादशाहके सामने जाने लायक नहीं। सैफ खां-ने कहा, वह कैसे उन जैसे ज्ञानी व्यक्तिको उन्मत्त कहते। इस पर उन्होंने बातकी बातमें उन्मादग्रस्त हो करके अपने कपड़े फाड़ डाले और तीन दिन बाद मर गये।

गनीगार महिसुर राज्यस्थ जातिविशेष। यह स्थलथल, टाट, बोरे आदि बुनते हैं। परन्तु बहुतसे गनीगार खेती करते और अपनेको ऊंचा समझते हैं।

गनीम (अ० पु०) १ लुटेरा, डाकू। २ बैरी, शत्रु।

गनुटिया—वीरभूम जिलाके अन्तर्गत रामपुरहाट परगना-का एक नगर। यह अक्षा० २३° ५२' उ० और देशा० ८७° ५०' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या ४०७ है। पहले यहां रेशम बहुत तैयार किया जाता था। रेशम-का व्यवसाय हो अधिवासियोंका जीवनाधार था। १७८६ ई०को फ्रास फाड साहबने रेशमके व्यवसायके लिये एक कोठी बनवाई थी और इष्ट इण्डिया कम्पनी-का एजण्ट होकर यहांसे अपने मुल्कमें प्रस्तुत रेशम रफ-तनी करते थे। आजकल इस नगरमें रेशमका व्यापार नहीं होता है और फ्रास फाड साहबकी बनाई कोठी कलकत्ताके किसी अङ्गरेजने खरीद ली।

गनीमत (अ० पु०) लूटका माल, मुफ्तका माल।

गनेल (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका घास जो छप्पर छानेके काममें आती है।

गनोद—काठियावाड़ जिलाके अन्तर्गत एक छोटा करद-राज्य। यह उपलेटासे ८ मील दक्षिण—पश्चिम और आशप्र पहाड़ोंसे ६ मील उत्तर—पश्चिम भादर नदीके उत्तरीय तीर पर अवस्थित है। यह गोण्डल भायाटके अधीन है। यह एक बड़ा और समृद्धिशाली शहर है। लोकसंख्या लगभग २२१० है।

गनोरिया (लै० स्त्री०) सूजाक।

गनौरा (हिं० स्त्री०) नागरमोथा।

गमत्र्य (सं० स्त्री०) गमनीय, जाने योग्य, चलने लायक।

संं० त्रि०) गमनकर्त्ता, जानेवाला ।

गन्तु (सं० त्रि०) गम कर्त्तरि तुन् । १ पथिक, बटोही २ गमनकर्ता, चलनेवाला । (पु०) ३ गमन, जानेकी क्रिया, यात्रा, प्रस्थान ।

गन्त्र (सं० त्रि०) गम शीलार्थे त्रन् । १ गमनशील, चलनेवाला । २ प्राप्तिशील, पानेवाला । ३ गमनकर्ता, जानेवाला ।

गन्त्री (सं० स्त्री०) १ वृषवहनीय शकट, बैलगाड़ी । २ गमनकारिणी स्त्री ।

"गन्त्र्यः वसुमतीनाशमुदधिर्दैवतानि च।" (याज्ञवल्क्य ३।१०)

गन्त्रीरथ (सं० पु०) गन्त्रीरथ इव यद्वा गन्त्रीणां गच्छन्तीनां स्त्रीणां गमनाय रथः, ६-तत् । शकट, गाड़ी ।

गन्दिका (सं० स्त्री०) नगरीविशेष, एक नगरका नाम ।

गन्दीकोट—मन्द्राज प्रेसिडेन्सिके कड़ापा जिलाका जम्मालतालुकका एक प्राचीन दुर्ग । यह अक्षा० १४° ४७' उ० और देशा० ७८° १६' पू० पर समुद्रतलसे १६७० फुट ऊंचे पर्वतपर अवस्थित है । दुर्गके पास होमें पेन्नेर नदी प्रवाहित है । कहा जाता है कि बोमनपालमें काप नामक एक राजा थे । उन्होंने गन्दीकोट नामका एक ग्राम स्थापित किया और उसी ग्राममें गन्दीकोट नामक दुर्ग उन्हींका निर्माण किया हुआ है । विजयनगरके राजा हरिहरने इस किलामें एक मन्दिर बनवाया था । पूर्व समयमें गोलकुण्डाके सुलतानने इस दुर्ग पर आक्रमण किया था, किन्तु कड़ापाके पठान नवाबने सुलतानको पराजित कर दुर्ग अपने अधिकारमें लाया । पठान नवाब फतेह नायक हैदरअलीके पिता उस समय बहुत प्रसिद्ध हो गये थे । मरनेके बाद उनके लड़के हैदरने किलाकी बहुत कुछ उन्नति की और उसमें अनेक सैन्य रहने लगे थे । १७८१ ई०में कप्तान लिटलने हैदरके लड़के टीपूको लड़ाईमें हराकर किला अधिकार कर लिया था ।

गन्देवी—बरोदा राज्यके नवसारी प्रान्तमें इसी नामके तालुकका प्रधान सदर । यह अक्षा० २०° ४८' उ० और देशा० ७३° २' पू० पर बम्बई, बरोदा और सेण्ट्रल इण्डिया रेलवेके अलमसरसे ३ मील और सूरतसे २८ मील दक्षिण-पूर्व अवस्थित है । लोकसंख्या लगभग ५८२७ होगी । यहां मजिष्ट्रेटको अदालत, अस्पताल, एक हाई स्कूल और बहुतसे देशी विद्यालय हैं । अनाज, गुड़, घी और मिट्टीतेलका व्यापार यहां अधिक होता है । यहां तांतके उत्कृष्ट वस्त्र प्रस्तुत होते हैं ।

गन्ध (सं० पु०) घ्राणेन्द्रियग्राह्य गुण, बास, महक, सुगन्ध और सौरभ । प्राचीन आर्य दार्शनिकोंका मत है कि केवल पृथ्वीमें ही गन्ध है और किसी पदार्थमें नहीं । जल प्रभृति तथा दूसरे दूसरे पदार्थोंमें जो गन्ध मालूम पड़ता है वह यथार्थमें उनका गन्ध नहीं, वरन उनके साथ मिश्रित पार्थिवांशका है । आधुनिक वैज्ञानिक जलमें गन्ध बतलाते हैं । क्योंकि ऊंट बहुत दूरसे जलका गन्ध पाता है । जलमें यही उनका प्रधान प्रमाण है । उनका कहना है कि यदि जलमें गन्ध नहीं रहता तो ऊंट बहुत दूरसे जलका अनुसरण करते हुए वहां तक पहुंच न सकता । आधुनिक मत ठीक प्रतीत नहीं होता है । हम लोग विशुद्ध परिष्कृत जलमें किसी प्रकारका गन्ध नहीं पाते हैं । निकटमें जलाशय होनेसे वायु भी शीतल हो जाती है । जिस प्रकार वायु बहुदूरस्थित पदार्थका गन्ध लेकर हम लोगोंकी नासिकाके निकट आ जाती और हम लोग उस पदार्थका गन्ध अनुभव कर सकते हैं । उसी प्रकार वायु जलके स्पर्शसे शीतल बहने लगती है । और तब हम लोग दूरस्थित जलाशयका होना अनुमान कर सकते हैं । हम लोगोंके जैसे ऊंट भी वायुके द्वारा दूरस्थित जल अनुभव कर उसीका अनुसरण करता जाता है । यही प्रमाण ठीक मालूम पड़ता है । वैशेषिक दर्शनके उपस्कारप्रणेता शङ्करमिश्रका मत है कि गन्ध नित्य तथा अनित्य दो भागोंमें बांटा है । पृथ्वीमें जो गन्ध है वही नित्य है उसका विनाश कभी नहीं होता है । द्व्यणुक प्रभृतिके लिये पृथ्वीका गन्ध अनित्य है । यह पाक प्रभृतिके कारण यह विनष्ट हो जाता है ।

मुक्तावलीकार विश्वनाथके मतमें समस्त गन्ध अनित्य है । वे नित्य गन्ध स्वीकार नहीं करते हैं । दार्शनिकोंके मतसे यहां गन्ध फिर दो प्रकारका है, सुरभि और असुरभि ।

महाभारतमें लिखा है कि गन्ध दश भागोंमें विभक्त है-

"इष्टश्चानिष्टगन्धश्च मधुरोऽम्लः कटुस्तथा ।

निर्हारी संहतः स्निग्धो रूक्षो विशद एव च ॥
एवं दशविधो ज्ञेयः पार्थिवो गंध इत्युत।" (भारत १४।५० अ०

१ इष्ट, २ अनिष्ट, ३ मधुर, ४ अम्ल, ५ कटु, ६ निर्हारी, ७ संहत, ८ स्निग्ध, ९ रूक्ष, १० विशद। इनमेंसे कस्तूरी प्रभृतिका गन्ध इष्ट, विष्ठादिका गन्ध अनिष्ट, मधुयुक्त पुष्पादिका मधुर, मिर्चका कटु, हींगका निर्हारी, मिश्रितका चित्र, तप्त घृतका स्निग्ध, सरसों तेलका रूक्ष, शालातण्डुलका विशद और इमली प्रभृतिका गन्ध अम्ल माना गया है।

कालिकापुराणके मतसे सुरभिगन्ध पांच भागोंमें विभक्त है—चूर्णीकृत, घृष्ट, दाहाकर्षित, सम्मर्दजरस और प्राणीके अङ्गसमुद्भवरस। गन्धद्रव्यके चूर्ण तथा गन्धपत्र वा पुष्पके चूर्णको चूर्णीकृत गन्ध कहते हैं। चन्दन, सरल और नमेरुके घर्षणके लिये गन्ध एवं अगुरु प्रभृति घर्षण द्वारा जिसका पङ्क निर्गत करके देवताओंको अर्पण किया जाता है उसीको घृष्ट गन्ध कहते हैं। देवदारु, अगुरु, पद्म, गन्धसार और चन्दनप्रियाको सुवासिसे जो सुगन्धिरस निकलता है उसीका नाम दाहाकर्षित है। सुगन्ध करवीर वि गन्धिनी एवं तिलक प्रभृतिको कूट करके जो रस निकला जाता है वही सम्मर्दजगन्ध है। मृगनाभि या उसके कोषसे जो गन्ध उत्पन्न होता है उसको प्राण्यङ्गजगन्ध कहते हैं। यह स्वर्गवासियोंका अत्यन्त आमोदप्रद है। (कालिकापुराण ६९ अ०)

तन्त्रसारका मत है कि मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठके अग्रभाग द्वारा देवताओंको गन्ध देना उचित है। गंधयुक्त देखो।

२ लेश, कोटाई, कण। ३ सम्बन्ध। ४ गन्धक। ५ गर्व, अहङ्कार, घमंड। ६ शोभाञ्जन, सहिजन। (त्रि०) ७ गन्धयुक्त, जिसमें गन्ध हो। ८ प्रतिवेशी, पड़ोसी। (क्ली०) ९ कृष्णागुरु, काला अगर।

गन्धक (सं० पु०) गन्धोऽस्त्यस्य गन्ध-अच्, ततः स्वार्थे कन्। १ शिग्रु वृक्ष, शजनेका पेड़। २ उपधातुविशेष, पीले रंगका धातु। पर्याय—गन्धाश्म, सौगन्धिक, गन्धिक, सुगन्धिक, गन्धपाषाण, पामाघ्न, गन्धमोदन, पूतिगन्ध, अतिगन्ध, कीटघ्न, शरभूमिज, गन्धी, वर, सुगन्ध, दिव्यगन्ध, रसगन्धक, कुष्ठादि और क्रूरगन्ध है। वैद्यकके मतसे इसका गुण—कटु, उष्ण, तीव्र, अतिशय अग्निवृद्धिकर है। यह कृमि, प्लीहा और नेत्ररोगनाशक माना गया है। (राजवल्लभ)

भावप्रकाशमें गन्धककी उत्पत्तिके सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा है—किसी एक दिन देवी भगवती श्वेतद्वीपमें क्रीड़ा कर रही थी। इसी समय उनका परिधेय वस्त्र आर्तव रक्तमें रंग गया। पर्वतनन्दिनी लज्जासे चञ्चल हो उस वस्त्रको परित्याग न कर क्षीरसमुद्रमें स्नान करने लगीं। उस वस्त्रसे रजः निःसृत हुआ और इसीसे गन्धककी उत्पत्ति हुई। गन्धक वर्णभेदसे चार प्रकारका है यथा—रक्त, पीत, श्वेत और कृष्णवर्ण। स्वर्णसंस्कार विषयमें रक्तवर्ण, रसायन-क्रियामें पीतवर्ण और व्रण आलेपन विषयमें श्वेतवर्ण गन्धक प्रशस्त है। कृष्णवर्ण गन्धक स्वर्णसंस्कारादिमें प्रशस्त है, किन्तु वह बहुत कम पाया जाता है। अशुद्ध गन्धक कुष्ठ, पित्तरोग और भ्रान्तिजनक एवं वीर्य, बल और रूपनाशक है। इस लिये गन्धक शोधन किये विना प्रयोगमें नहीं लाना चाहिये।

गन्धक-शोधन-प्रणाली—एक लौहनिर्मित पात्रमें घृत देकर अग्निमें उत्तप्त करना चाहिये। घृतके गरम होने पर उसके समान परिमाणका गन्धकचूर्ण उसमें डाल देना चाहिये। जब गंधक जल जाय तो उसे वस्त्रसे छान कर दुग्धमें मिला देना चाहिये ऐसा करनेसे गंधक शोधित हो जाता है। शुद्ध या शोधित गन्धकके गुण—कटु, तिक्त, कषायरस, उष्णवीर्य, पित्तवृद्धिकर, सरगुणविशिष्ट, कटुपाक, रसायन एवं कण्डु (खुजली), विसर्प, क्रिमि, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, कफ और वायुनाशक है।
(भावप्रकाश पूर्व० १ भा०)

रसेन्द्रसारसंग्रहके मतसे गंधककी शोधन-प्रणाली—एक मट्टीके बरतनमें दूध और घृत रख कर कपड़ेसे बरतनका मुंह बांध दे और उसके ऊपरमें गंधक रख एक ढक्कनसे ढांक कर सन्धिस्थानमें लेप लगा दे। इसके बाद उसे मिट्टीमें गाड़ कर ऊपरमें अल्प उत्ताप देनेसे गंधक गल कर दूधमें टपकने लगेगा। इस विशुद्ध गंधकको औषधमें प्रयोग करना चाहिए। विशुद्ध गंधकका गुण—रसायन, सुमधुर, पाकमें कटु और उष्ण है, तथा इससे कण्डु

(खुजली), कुष्ठ और विसर्प रोग जाता रहता है। इसके सिवा यह अग्निशुद्धिकर, पाचन, आमशोधक, निवारक, कृमिनाशक, विषघ्न, पुत्रोत्पादक, इन्द्रियबलकारक और वीर्यप्रद है। यह सुवर्णसे भी अत्यन्त वीर्यकर है। रसेन्द्रसारसंग्रहमें गंधकशोधनको एक दूसरी तरकीब भी लिखी हुई है—गंधकचूर्णको भृङ्गराजके रससे भिगा कर धूपमें सुखाना चाहिए। इस तरह तीनवार करके इसे बैरकी लकड़ीकी आगसे गलाकर वस्त्रसे ढके हुए पात्रपूर्ण भृङ्गराजरसमें ढाल देना चाहिये। इस तरह दो बार करके धोने और सुखानेसे गंधक शुद्ध हो जाता है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

पाश्चात्य मतसे गंधक शुद्ध हरिद्रावर्ण सा है। कभी कभी हरिद्रावर्णके साथ अन्यान्य रङ्गोंकी आभा रहती है। यह दहनशील, कठिन, भङ्गप्रवण तथा स्वादहीन है। यह २२६ डिग्री उत्तापसे गल जाता है और ५६ डिग्री उत्तापसे जल जाता है। जलनेके समय इससे एक प्रकारको गंध और नीलवर्ण शिखा बाहर निकलती है। अधिक उत्ताप लगनेसे शिखा श्वेतवर्ण धारण करती है।

गंधक खनिज है लेकिन धातु नहीं है। खानमें यह कभी स्वतन्त्र, कभी सीसा, दस्ता, लोहा, विष, पारद और ताम्रके साथ मिला हुआ पाया जाता है। सरसोंके बीजमें भी गंधकका अंश है। डिम्बके श्वेत अंशमें और मनुष्य-देहके रक्तमें गंधक देखा गया है। खनिज गंधक ही विशेष कर व्यवहारमें प्रशस्त है। मिश्रित द्रव्योंमें गंधक चुआ कर निकाला जाता है। आग्नेय पर्वतके पार्श्वदेशमें ही गंधक अधिक परिमाणमें पाया जाता है। इसके अतिरिक्त युरोपके स्पेन, सिसिली, स्वीजरलैण्ड, अमेरिकाके युक्तराज्य, एसीयाके पारस, नेपाल, ब्रह्मदेश, बलुचिस्तान, अफगानिस्तान, उत्तर ब्रह्म, भारतके मरिपहाड़, डेरा-इस्माइल खां, उदयपुर प्रभृति स्थानोंमें भी गंधक पाया जाता है। अभी दक्षिण भारतमें मसलीपत्तन, सलेम, कादापा, त्रिवाङ्कड़, त्रिचिनापल्ली और उत्तर अर्काट प्रभृति स्थानोंमें बहुत कम गंधक पाया जाता है। भारतके उष्णप्रस्रवणमें बहुत गंधक पाया जाता है। इस तरह उष्णप्रस्रवण यवद्वीप, सलिविश प्रभृति कई एक स्थान हैं।

गंधकसे अनेक प्रयोजनीय द्रव्य प्रस्तुत होते हैं। पहले इस देशमें गंधकसे दियासलाई बनाई जाती रही। आजकल भी बहुतसी दियासलाईमें गंधक दिया जाता है।

पाश्चात्य मतानुसार गंधकसे अनेक औषध प्रस्तुत होते हैं। गंधकका वाष्प लेनेसे रक्त परिष्कार होता है। फुसफुसकी पीड़ा, हृदयमें ठंढ लग जाना यक्ष्मा, उदरामय, फोड़े, कृमिरोग, शीतला, वात, बहुमूत्र, हैजा और आमाशय प्रभृति रोगोंमें गंधकका प्रयोग विशेष उपकारजनक है। क्या होमियोपैथी क्या एलोपैथी दोनों तरहकी चिकित्सा-प्रणालियोंमें ही इसका प्रयोग हुआ करता है।

गन्धककज्जली (सं० स्त्री०) औषधविशेष। रसेन्द्रसारसंग्रहके मतानुसार इसकी प्रस्तुत-प्रणाली कण्टकारी, निसिन्दा और नाटाकरञ्जके रसको एक पात्रमें रख कर उसमें गंधक मिला देना चाहिये और मृदु अग्निसे उसको गरम करना उचित है। गंधकके जल जाने पर उसी परिमाणका पारा डाल दें। जब पारा और गंधक मिल जाय तब उसे नीचे उतार कर घोटना चाहिये। ऐसा करनेसे जब वह कज्जलवर्ण हो जाय तो वही औषध प्रस्तुत हो जायगी। उसकी मात्रा एक रत्ती बना कर जीरा एक माशा और नमक एक माशा लेकर पानके साथ सेवन करना चाहिये। इसके सेवनसे त्रिदोषजनित ज्वर नाश होता है। औषध खानेके बाद गर्म जल पीना हितकर है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

गन्धकचूर्ण (सं० क्लो०) गन्धकप्रधानं चूर्णं, मध्यपदलो०। गंधप्रधान चूर्ण, बारूद।

गन्धकद्रावक (सं० क्लो०) औषधविशेष। गंधद्रावक देखो।

गन्धकन्द (सं० पु०) गंधप्रधानः कन्दोऽस्य बहुव्री०। कशेरुवृक्ष, केशर।

गन्धकली (सं० स्त्री०) चम्पककली।

गन्धकस्तूरिका (सं० स्त्री०) सुगंधि द्रव्यविशेष, एक खुशबूदार चीज।

गन्धकस्तूरी (सं० स्त्री०) सुगंधि द्रव्यविशेष।

गन्धकारिका (सं० स्त्री०) गंधं गंधप्रधानं वेशादिकं करोति। सैरिंध्री, परगृहस्थिता शिल्पनिपुणा स्वाधीना स्त्री, पराये घरमें रहनेवाली शिल्पकारिणी स्त्री।

गन्धकारी (सं० स्त्री०) शल्लकीवृक्ष, शलईका पेड़।

गन्धकालिका (सं० स्त्री०) गंधकाली कन्-टाप्। व्यासदेवकी माता, सत्यवती।

गन्धकाली (सं० स्त्री०) गंधः प्रशस्तगंधस्तस्मै अलति पर्याप्नोति अल्-अच् गौरादित्वात् ङीष्। १ व्यासदेवकी माता, इनका दूसरा नाम सत्यवता था।

"अथ त्व जनना भाय। गंधकाली यशस्विनाम।" (हरिवं० २०५०)

सत्यवती देखो।

२ कुन्तीसे मूर्तिधारिणी शापभ्रष्टा एक अप्सरा इन्होंने हनुमानके हाथसे निहत हो कर मुक्ति पाई थी। (रामायण)

गन्धकाष्ठ (सं० क्ली०) गंधयुक्तं काष्ठमस्य, बहुव्री०। १ अगुरुचन्दन, अगरकी लकड़ी। २ शम्बर चन्दन। (राजनि०)

गन्धकी (सं० स्त्री०) शल्लकी, शलई।

गन्धकी (हिं० वि०) गंधकके रंगका हलका पीला।

गन्धकुटी (सं० स्त्री०) गंधस्य कुटीव आधारः। १ मुरा नामक गंधद्रव्य। २ किसी मन्दिरके भीतरकी वह कोठरी जिसमें बहुतसी देवमूर्तियां रखी हों। ३ जैनियोंके केवलियोंकी कुटि। तीर्थङ्करोंके लिए इन्द्रादिदेव समवशरणकी रचना करते हैं। परन्तु साधारण केवली भगवान्के लिये गंधकुटीकी रचना होती है। जैसे—रामचन्द्रकेवली और गौतमकेवलीकी गंधकुटी।

गन्धकुसुमा (सं० स्त्री०) गंधयुक्त कुसुमं यस्याः, बहुव्री०। गणिकारी पुष्पवृक्ष, गनियारका पेड़।

गन्धकूटी (सं० स्त्री०) बौद्धविहारस्थ आराम स्थान।

"यावत् भगवता गंधकुटीं भाभिमंस्कार पादान्यस्तः।

(दिव्यावदानमें पूर्णावदान)

गन्धकेलिका (सं० स्त्री०) गंधं केलति सञ्चारयति। कस्तूरी, एकसुगंधित द्रव्य, मृगनाभि।

गन्धकोकिला (सं० स्त्री०) गंधप्रधाना कोकिला इव। गंध द्रव्यविशेष, सुगंध कोकिल। इसका गुण—तीक्ष्ण, उष्ण, कफनाशक, तिक्त और सुगंधि है। (भावप्रकाश)

गन्धकोलिका (सं० स्त्री०) गंधमालतीके समान गंधद्रव्यविशेष।

गन्धखेड़ (सं० क्ली०) गंधस्य खेला यत्र बहुव्री०। सुगन्धित घास, गंधवेण। इसका पर्याय—भूतृण, रौहिष, गोमयप्रिय, गंधतृण, सुगंधभूततृण, सुरस, सुरभि, सुगन्धि और मुखवास है। यह तिक्त, रसायन, स्निग्ध, मधुर, शीतल, कफ, पित्त और श्रमनाशक एवं सुगंधि होता है। (राजनि०)

गन्धगज (सं० पु०) हाथियोंमें श्रेष्ठ।

गन्धगर्भ (सं० पु०) विल्ववृक्ष, बेलका पेड़।

गन्धगृहा (सं० स्त्री०) गन्धद्रव्यविशेष।

गन्धग्राही (सं० स्त्री०) नासिका, नाक।

गन्धघ्राण (सं० क्ली०) गन्धकी बास।

गन्धचेलिका (सं० स्त्री०) गन्धं चेलति गच्छति चेल-णवुल-टाप्। कस्तूरी, मृगनाभि।

गन्धजटिला (सं० स्त्री०) गन्धेन जटिला, ३-तत्। वच, हैमवतीका पेड़।

गन्धजल (सं० क्ली०) गन्धाढ्यद्रव्यवासितं जलं मध्यपदलो०। सुगन्धि कुसुमादि वासित जल, सुगन्धित जल,

"सिक्ता गंधजले कृती फलपुष्पावतंसकैः।" (भागवत ।।११ १४)

गन्धजात (सं० क्ली०) गन्धो वाञ्जनादौ जातो यस्मात्, बहुव्री०। तेजपत्र, तेजपात। गन्धानां जातं समूहः, ६-तत्। २ गन्धसमूह

गन्धज्ञा (सं० स्त्री०) गन्धं जानाति ज्ञा कर्तरि क-टाप्। नासिका, नाक।

गन्धतण्डुल (सं० क्ली०) गन्धं प्रधानं तण्डुलमस्य, बहुव्री०। सुगन्धि शालिविशेष, वासफुल चावल।

गन्धतन्मात्र (सं० क्ली०) गन्धस्य तन्मात्रं, ६-तत्। सांख्यमतसिद्ध सूक्ष्म द्रव्य। इसको हम लोग देख नहीं सकते, इसी लिये हमारा यह भोग्य नहीं है। योगी और देवतागण इसका भोग करते हैं। स्थूल पृथ्वीकी गन्ध जिसका हम लोग अनुभव करते हैं, वह शान्त, घोर या मूढ़ अर्थात् सुखकर, दुःखकर या मोहजनक है। किन्तु गन्धतन्मात्रमें जो गन्ध है वह शान्त और घोर या मूढ़ नहीं है। वैदान्तिकगण इस तन्मात्रको ही अपञ्चीकृतभूत नाम कहा करते हैं। नैयायिक और वैशेषिकगण तन्मात्र स्वीकार नहीं करते हैं, उनके मतसे परमाणु (पृथ्वीका अत्यन्त सूक्ष्मांश, जिसको और भाग कर नहीं सकते) वही चरम अवयव है। सांख्यभाष्यकार विज्ञानभिक्षुने इस

मतका खण्डन किया है। तन्मात्र शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

गन्धतुलसी (सं० स्त्री०) सुगन्ध तुलसी, गोलाप तुलसी।

गन्धतूर्य (सं० क्लो०) गंधे हिंसास्थाने, युद्धक्षेत्रे आहन्यमानं तूर्यं। रणवाद्यविशेष, लड़ाईको तूरी, बाजा। इसका पर्याय—रणतूर्य और महास्वन है।

गन्धतृण (सं० क्लो०) गन्धप्रधानं तृणं मध्यपदलो०। गन्धयुक्त तृणविशेष, रूसाघास। इसके पर्याय—सुगन्ध, भूतृण, सुरस, सुरभि और मुखवास है। इसके गुण—यह तिक्त, सुगन्धि, रसायन, स्निग्ध, मधुर, शीतल, कफ, पित्त और श्रान्तिनाशक है। (राजनि०)

गन्धतैल (सं० क्लो०) गन्धयुक्तस्य चन्दनस्य अग्नियोगेन जनितं तैलं, मध्यपदलो०। १ गन्धयुक्त तैलविशेष। इसको चन्दनका अतर भी कहते हैं।

"प्रदीपैः काञ्चनेकत्र गंधतैलावसेचितैः।" (भारत ९। १८ अ०)

२ सुश्रुतोक्त औषध और तैलविशेष। इसको पाकप्रणाली इस तरह है—कृष्णातिलको रात्रिके समय जलमें डुबा देना चाहिये एवं दिनमें सूर्यकी गर्मीसे सुखा कर गोदुग्धमें भावना देनी चाहिये। तीन रात्रि वा सात रात्रि इसी तरह करनेके बाद मधुमिश्रित जलमें भावना देते रहें अनन्तर गोदुग्धकी भावनासे सुखा कर चूर्ण कर डालें और काकोल्यादिगण, यष्टिमधु, मञ्जिष्ठा, श्यामालता, कुड़धुमा, जटामांसी, देवदारु, रक्तचन्दन और शतपुष्प इन सबका चूर्ण पूर्वोक्त तिलके चूर्णमें मिला दें। गुड़त्वक्, इलाची, तेजपात, नागकेशर, कर्पूर, कक्कोल, अगुरु, कुङ्कुम और लवंगको दुग्धमें पाक करें और उस दुग्धमें वह समस्त चूर्ण पाक कर तैल बाहर निकाल लें। उस तैलको फिरसे चतुर्गुण दुग्धमें पाक करें। इसके बाद इलायची, शालपर्णी, तेजपात, जीरक, तगरपादुका, लोध्र, शैलज, सैरेयक, शुष्क भूमिकुष्माण्ड, अनन्तमूल, मधुलिका और शृङ्गाटकको एकत्र पेषण कर उष्ण तैलके साथ थोड़ी आगमें पाक करें। आक्षेप, पक्षाघात, तालुशोष, अर्द्दित, सामक, वायुरोग, शिरोरोग, कर्णशूल, हनुग्रह, वधिरता, तिमिररोग और चीणता इन समस्त रोगोंमें खाने, मर्द्दन करने, सूंघने और भोजनमें इस तैलका प्रयोग करनेसे उक्त रोग नष्ट हो जाते हैं। इसके सेवनसे ग्रीवा, स्कंध और वक्षस्थलकी वृद्धि होती है और मुख पद्मसा प्रफुल्ल और निश्वास सुगंधयुक्त होता है। इसीका नाम गंधतैल है। (सुश्रुत चि० ४ अ०)

गन्धत्वच् (सं० क्लो०) गंधप्रधाना त्वक् यस्य, बहुव्री०। गंधद्रव्यविशेष, सुगंध वृक्षका छिलका, एलवालुक, एलवा।

गन्धदला (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तं दलं यस्याः, बहुव्री०। अजमोदा, अजवायनकी तरहका एक पेड़।

गन्धदारु (सं० क्लो०) गन्धप्रधानं दारु। चन्दन।

गन्धद्रव्य (सं० क्लो०) गंधप्रधानं द्रव्यं। १ नागकेशर। २ तैल पाक होने पर जिन द्रव्योंको डाल कर औषधको सुगंधित करते हैं, वैद्यकशास्त्रमें उन्हींको गंधद्रव्य कहते हैं। इलायची, चन्दन, कुंकुम, अगुरु, मुरा, कक्कोल, जटामांसी, शीवामच्छद, चोरक, कर्पूर, शैलज, उशीर, कस्तूरी, नखी, रोहिषतृण, मोथा एवं लवङ्गादि गंधद्रव्य कहलाते हैं।

गन्धद्रावक (सं० क्लो०) गंधयुक्तं द्रावकं। प्लीहादि रोगनाशक औषधविशेष, एक प्रकारका अर्क। इसको प्रस्तुतप्रणाली यों है—गंधक तथा सोराको यन्त्रयोगसे जला कर उसका धूम सोसेके पात्रमें जलवाष्पके साथ मिश्रित किया जाता है। इसीको गन्धद्रावक कहते हैं। इसके गुण—अग्निवीर्य्य, अतिशय उग्र, प्लीहादि पीड़ानाशक, अग्निवृद्धिकर और सर्व प्रकारके उदररोगविनाशक हैं। रक्तस्राव, अतिशय घर्म, विसूची, तरुणज्वर और अग्निमान्द्यादि रोगोंमें यह विशेष उपकारी है। परिमित द्रावक चौदह गुना जलमें मिला कर १ विन्दु सेवन करना चाहिये। यह अत्यन्त दाहकर होता है। विना जलके सेवन करना अहितकर है।

गन्धद्रावकको अंगरेजी भाषामें Sulphuric Acid या Oil of Vetriol कहते हैं। यह कभी कभी आग्नेय पर्वतके निकट अल्प परिमाणमें मिलता है। यह गंधक और सोरासे प्रस्तुत किया जाता है। इसकी प्रस्तुतप्रणाली आत्रेयसंहितामें लिखी हुई प्रणालीसे बहुत कुछ मिलती जुलती है।

गन्धद्विप (सं० पु०) गंधप्रधानो मदगंधयुक्तो द्विपः। मदगंधयुक्त हस्ती, उत्कृष्ट हस्ती, अच्छा हाथी।

"गंधद्विपस्य व मतङ्गजैः।" (किरात १७।१७)

गन्धधारी (सं० त्रि०) गन्धं गंधयुक्तं द्रव्यं धारयति धारि-णिनि । १ जो गंध द्रव्यको धारण करता हो । (पु०) २ महादेव ।

"नमस्ते बहुरूपाय गंधधारी कपर्दिने ।" (भारत अनु० १७ अ०)

गन्धधूमज (सं० पु०) गंधस्य गंधाढ्यस्य धूमात् जायते गंध-धूम-जन-ड । खादु नामक गंधद्रव्य ।

गन्धधूलि (सं० स्त्री०) गंधयुक्ता धूलिश्चूर्णो यस्याः, बहुव्री० । कस्तूरी ।

गन्धन (सं० क्ली०) गंध-ल्युट् । १ उत्साह, हिम्मत । २ प्रकाश, ज्योति, चमक । ३ हिंसा, वध । ४ सूचन । ५ तृणभेद, गंधतृण ।

"वा गतिगंधनयोः।" (कलाप, धातुपाठ)

गन्धनकुल (सं० पु०) गंधः गंधप्रधानो नकुल इव । छुछुन्दर ।

गन्धनाकुली (सं० स्त्री०) गंधयुक्ता नाकुली । रास्ना-विशेष, एक प्रकारका नकुलीकंद । (Ophioxyton Serpentinum) इसका पर्याय—महासुगंधा, सुवहा, सर्पाक्षी, फणिहन्त्री, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, महाहिगंधा, नकुलाढ्या और अहिलता है । यह तिक्त, कटु, उष्ण, त्रिदोषनाशक और विषघ्न माना गया है । (भावप्रकाश) २ चविका, चव्य नामकी दवा । ३ कन्द-विशेष ।

गन्धनाम (सं० पु०) गंधेति पदयुक्तं नाम यस्य, बहुव्री० । रक्ततुलसी, लाल तुलसी ।

गन्धनामकर्म—जैनमतानुसार वह कर्म जिसके उदयसे शरीरमें सुगंध और दुर्गन्ध उत्पन्न हो । शुभगंधनामकर्मसे सुगंधित और अशुभगंध नामकर्मसे दुर्गन्धित शरीर हो जाता है । (सर्वार्थसिद्धि)

गन्धनाम्नी (सं० स्त्री०) क्षुद्ररोगविशेष, एक साधारण रोग ।

गन्धनालिका (सं० स्त्री०) गंधस्य गंधज्ञानस्य नालिका इव । नासिका, नाक ।

गन्धनाली (सं० स्त्री०) गंधस्य नालीव । नासिका ।

गन्धनिलया (सं० स्त्री०) गंधस्य निलयो वासो यत्र, बहुव्री० । नवमल्लिका, चमेलीका फूल ।

गन्धनिशा (सं० स्त्री०) गंधेन निशा हरिद्रा इव । गंध-पत्रा, शठीविशेष, कपूर कचूरी ।

गन्धप (सं० त्रि०) गंधं पिबति, गंध-पा-क । देवता-विशेष, एक देवताका नाम ।

"कामासुरा गंधपा हविष्पाश्च ।
वाचा वरुद्धाश्च मनोविरुद्धाः ॥" (भारत अनु० १८ अ०)

गन्धपत्र (सं० क्ली०) गन्धयुक्तं पत्रं । तेजपात । इसका गुण वातनाशक, शीतल और अग्निवृद्धिकर है ।

"गंधाढ्या सारभेदी च गंधपत्रं नपुंसकम् ।
गंधपत्रं वातहरं शीतलं वह्निवर्द्धनम् ॥" (वैद्यक)

(पु०) गन्धयुक्तं पत्रं यस्य, बहुव्री० । २ श्वेततुलसी । ३ मरुवकवृक्ष, मरुवा । ४ बर्बर, बबूल । ५ नागरङ्ग, नारङ्गी । ६ बिल्व, बेल ।

गन्धपत्रा (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तं पत्रं यस्याः, बहुव्री० ततः टाप् । शठीविशेष, कपूर कचरी । इसका पर्याय—स्थूला, तिक्तकंदिका, वनजा, शठिका, वन्या, तवक्षीरी, एकपत्रिका, गंधपीता, पलाशाम्ला, गन्ध्याढ्या, गंधपत्रिका, दीर्घपत्रा, गंधनिशा, वेदमुख्या और सुपाकिनी ।

इसका गुण—कटु, स्वादु, तीक्ष्ण, उष्ण, वात, कास, ज्वरनाशक तथा पित्तकोपवृद्धिकर है । (राजनिघण्टु)

गन्धपत्रिका (सं० स्त्री०) गंधपत्रा संज्ञायां कन्-टाप् । १ गन्धपत्रा । २ अजमोदा । (राजनि०)

गन्धपत्री (सं० स्त्री०) १ अम्बष्ठा, एक लता, पाढ़ । २ अश्व-गन्धा, एक झाड़ी, असगंध । ३ अजमोदा ।

गन्धपर्ण (सं० क्ली०) गंधयुक्तं पर्णमस्य, बहुव्री० । गंध-पत्र, काकपुष्प ।

गन्धपर्णी (सं० स्त्री०) सप्तपर्णी ।

गन्धपलाशिका (सं० स्त्री०) गंधयुक्तं पलाशमस्याः, बहुव्री० कप्-टाप् । हरिद्रा, हलदी ।

गन्धपलाशी (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तं पलाशं यस्याः, बहुव्री० । शठी, गन्धपत्रा, कपूरकचरी । शब्दार्थचिन्ता-मणिके मतसे इसका गुण—कषाय, ग्राही, लघु, तिक्त, तीक्ष्ण, कटु, मलनाशक, कास, व्रण, श्वास, शूल और हिचकीनाशक है ।

गन्धपाषाण (सं० पु०) गन्धयुक्तं पाषाण इव । उप-धातुविशेष, गंधक ।

'गंधपाषाणचूर्णेन यवक्षारेण दीपितम् ।
श्वित्रनाशं प्रकुर्यात् कटुतैलयुतेन च ॥' (चक्रपाणिः कुष्ठरोग)

गन्धपिण्डीरः (सं० पु०) कृष्णमदनवृक्ष ।

गन्धपिशाचिका (सं० स्त्री०) गंधेन पिशाचान् किरति दूरीकरोति यद्वा गंधेन पिशाचान् कृणाति हन्ति पिशाच-कृ-ड । धूप । धूपगंधसे पिशाचगण दुःखित हो कर भाग जाते हैं । इस लिये धूपका नाम गंधपिशाचिका पड़ा है ।

गन्धपीता (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तं पीतं पत्रं यस्याः बहुव्री० टाप् । १ शठीविशेष, कपूर कचरी । २ गन्धपत्रा ।

गन्धपुष्प (सं० पु०) गंधयुक्तं पुष्पं यस्य, बहुव्री० । १ वेतसवृक्ष, बेंतका पेड़ । २ अङ्कोटवृक्ष, अंकोल, अकोला । ३ बहुवारवृक्ष, बहुआर-लसोरा । ४ अशोक-वृक्ष । (क्ली०) गंधश्च पुष्पञ्च, इतरेतरद्वन्द्व । ५ गंध और पुष्प ।

"अभावे गंधपुष्पाभ्यां केवलेन जलेन वा ।" (आह्निकतत्त्व)

६ गन्धयुक्तपुष्प, वह फूल जिसमें गंध हो ।

गन्धपुष्पक (सं० पु०) गंधपुष्प संज्ञार्थे कन् । वेतस वृक्ष, वेतका गाछ ।

गन्धपुष्पा (सं० स्त्री०) गंधयुक्तं पुष्पं यस्याः, बहुव्री० । १ नीलीवृक्ष, नीलका पेड़ । २ केतकीवृक्ष । ३ गणिकारी वृक्ष, गनियारीका पेड़ ।

गन्धप्रिय (सं० त्रि०) गंधः प्रियो यस्या, बहुव्री० । जिसको गंध अत्यन्त प्रिय हो ।

गन्धप्रियङ्गु (सं० स्त्री०) प्रियङ्गुलता, फूलफेन ।

गन्धप्रियङ्गुका (सं० स्त्री०) गंधप्रधाना प्रियङ्गुका । प्रियङ्गुविशेष । प्रियङ्गु देखो ।

गन्धफणिज्झक (सं० पु०) गंधप्रधानः फणिज्झकः । रक्ततुलसीवृक्ष, लाल तुलसीका पेड़ ।

गन्धफल (सं० पु०) गंधयुक्तं फलं यस्य, बहुव्री० । १ कपित्थवृक्ष, कैथका पेड़ । २ विल्ववृक्ष, बेलका पेड़ । ३ तेजःफलवृक्ष ।

गन्धफला (सं० स्त्री०) गंधयुक्तं फलं यस्याः, बहुव्री० टाप् । १ प्रियङ्गुवृक्ष । २ मेथिका, मेथी । ३ विदारी । ४ शल्लकीवृक्ष, शलईका पेड़ ।

गन्धफली (सं० स्त्री०) १ चम्पाकी कली । २ प्रियङ्गु ।

गन्धवणिक् (सं० पु०) गंधस्य आमोदयुक्त द्रव्यस्य वणिक्, ६-तत् । वङ्गवासी जातिविशेष । इस जातिकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें बहुतोंका मतभेद है । ये अपनेको वैश्यजाति के अन्तर्गत और चांदसौदागरके वंशज बतलाते हैं । कोई कोई पद्मपुराणोक्त शाहराजको ही इन लोगोंके वंशका आदिपुरुष मानते हैं । आज कलके वैश्यकी नाई ये यज्ञोपवीत धारण नहीं करते और शूद्रके जैसा एक मास मृत अशौच मानते हैं ।

"अम्बष्ठात् राजपुत्र्याञ्च जायते गांधिको वणिक् ।
गन्धचन्दनधूपादिक्रयविक्रयकारकः ॥"
(ब्रह्मवैवर्त्त पुराण, ८२श रामपद्धति)

अर्थात्—अम्बष्ठके औरस और राजपूत-महिलाके गर्भसे गंधवणिकका जन्म है । गंध, चन्दन और धूपादिका क्रय, और विक्रय इनकी उपजीविका है ।

प्रवाद है कि कुब्जादासी कंसराजकी सभामें रहती तथा राजसदनमें फूल, चन्दन प्रभृति विविध सुगंधि द्रव्य संग्रह करती थी । एक दिन जब श्रीकृष्णचन्द्रजी मथुरामें कंसपुर जा रहे थे, मार्गमें ही उन्हें कुब्जादासीसे भेंट हुई । श्रीकृष्णने उस दासीको सुन्दर बना कर अपनी पटरानी बना ली । कुब्जागर्भप्रसूत बालक ही सबसे पहले गंध-द्रव्य विक्रय करते रहे तथा वेही गंधवणिक्के आदि पिता ठहराये गये । इसके अतिरिक्त एक दूसरा प्रवाद है कि देवादिदेव शिवजीको दुर्गाके साथ विवाहके समय गंधद्रव्यका प्रयोजन पड़ा । इस लिये उन्होंने पहिले अपने कपालसे "देश" गंधवणिक्, बगलसे "शङ्ख," नाभिसे "आंउत" और पादसे "छतिश" इन चार मनुष्योंको सृष्टि की ।

गन्धवणिक् जातियोंमें आंउताश्रम, छतिशाश्रम, देशाश्रम और शङ्खाश्रम येही चार नामधेय श्रेणी वर्तमान हैं । इनके गोत्र आलम्यान, भरद्वाज, काश्यप, कृष्णात्रेय, मौद्गल्य, नृसिंह, राजऋषि, सावर्ण और शाण्डिल्य हैं । देशाश्रमी गंधवणिकोंमें शाह, साधु, लाहा और खाँ एवं आंउताश्रमीमें दत्त, दे, धर, धार, कर नाग, प्रभृति पदवीयां पायी जाती हैं । इस जातिमें बाल्यावस्थामें ही लड़कीकी सादी होती है । वर तथा कन्या पक्षवालेकी सांसारिक अवस्थानुसार कन्यापण दिया जाता है । विक्रमपुरके गंधवणिक् उच्चवंशके हैं । इस लिये नीच घरमें कन्याको देनेसे वे अधिक रुपये लेते तथा पुत्रादिके विवाहमें अल्प पण देते हैं । जब लड़का विवाह करने आता है तो उसे

एक चम्पावृक्ष पर बैठना पड़ता है और लड़कोको एक चौकी या पीढ़ी पर बैठा कर सात वार वरका प्रदक्षिण कराते हैं। जहां चम्पावृक्ष नहीं रहता वहां उसकी डाली या उसकी तखता पर लड़केको बैठाते हैं। विवाहके समय वर कन्या दोनोंको लाल पाड़ जरद रंगका वस्त्र पहनाया जाता है। लड़कीको दशदिन पर्यन्त वह वस्त्र धारण करना पड़ता है। इन लोगोंमें दो या बहुविवाहको प्रथा प्रचलित नहीं है, किन्तु प्रथमा स्त्रीसे कोई सन्तान न होने पर द्वितीय बार विवाह करनेमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं है। विवाहबंधनच्छेद या विधवाविवाह पूर्णत: निषिद्ध है। किसी स्त्रीके असती वा परपुरुषगामी होने पर वह जाति और हिन्दू-समाजसे बहिष्कृत की जाती एवं उसका स्वामी उसकी मूर्ति बनाकर दाहकार्य करते हैं और इसके लिये एक मिथ्या श्राद्ध भी होता है। इनके क्रियाकलापादि उच्चश्रेणीके हिन्दूके जैसे हैं। इन लोगोंमें अधिकांश वैष्णव, शाक्त और अल्प संख्यक शैव देखे जाते हैं। वैशाखी पूर्णिमामें ये एक पात्रमें सिन्दूर लगा कर उसके सम्मुखमें दण्डी, बटखरा और हिसाबकी बही रख कर षोड़शोपचारसे अपने अपने इष्टदेवका पूजन करते हैं। गंधेश्वरी इन्होंकी इष्टदेवी है। ब्राह्मणको बुलाकर गंधेश्वरी मूर्तिकी पूजा कराते हैं। अनेक प्रकारके मसाले, चन्दनादि द्रव्य और भिन्न भिन्न प्रकारके पौधे और औषध विक्रय करना इनका प्रधान व्यवसाय है। अधीतविद्या नहीं होने पर भी ये कविराजी औषधकी व्यवस्था दे सकते हैं। अल्प स्वल्प रोग होनेपर भी ये औषधका प्रयोग करते हैं। हिन्दुस्थानी भाषामें लोग इन्हें "पनसारी" कहा करते हैं। हरएक पनसारीकी दूकानमें प्राय: चारसौ तरहके औषध रखे जाते हैं। ये लोग अपने ही हाथोंसे बहुत तरहके पाचनादि प्रस्तुत कर विक्रय करते हैं।

गन्धबन्धा (सं० स्त्री०) गंधस्य बंधो ग्रहणं यया, बहुव्रो०, टाप्। नासिका, नाक।

गन्धबन्धु (सं० पु०) गंधं बध्नाति बंध-उण् यद्वा गंधस्य बन्धुरिव। आम्रवृक्ष, आमका पेड़। (शब्दरत्ना०)

गन्धबहल (सं० पु०) गंधो बहलो बहुलोऽस्य, बहुव्रो०। सिताजेक, श्वेतपत्र क्षुद्रतुलसी, श्वेताजमला।

गन्धबहुल (सं० पु०) गंधो बहुलो यस्य, बहुव्रो०। गंधशालि, गंधयुक्त चावल।

गन्धबहुला (सं० स्त्री०) गंधो बहुलो यस्याः, बहुव्रो० ततः टाप्। गोरक्षीवृक्ष, एक प्रकारकी झाड़ी।

गन्धभद्रा (सं० स्त्री०) गंधो भद्रं रोगनाशको यस्याः, बहुव्रो०। प्रसारणीलताविशेष, गंधाली लता।

गन्धभाण्ड (सं० पु०) गंधस्य भाण्ड इव। गर्दभाण्डवृक्ष, अमड़ाका पेड़। इसका पर्याय—नंदिवृक्ष, ताम्रपाकी, फलपाकी, पीतक, गंधमुण्ड और क्षिप्रपाकी है।

(वैद्यकरत्नमाला)

गन्धभेदक (सं० पु०) १ कटक, एक प्रकार नमक। २ काचक, काला नमक। ३ लौह, लोहा। ४ तिलक, मिठा तिल।

गन्धमांसी (सं० स्त्री०) गंधप्रधाना मांसी। जटामांसीविशेष। A kind of Indian spikenard. यह देखनेमें धूमरवर्ण और केशर जटाके सदृश है। इसका पर्याय—केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, भूतकेशी, लोमशा, जटाला और लघुमांसी है। इसका गुण-तिक्त, शीतल, कफ, कण्ठरोग, रक्तपित्त, विष और ज्वरनाशक एवं कान्तिप्रद है। जटामांसी देखो।

गन्धमातृ (सं० स्त्री०) गंधस्य माता जननी, ६-तत्। पृथ्वी।

गन्धमातृका (सं० स्त्री०) गंधमातेति प्रसिद्धं वणिकद्रव्य, द्रव्यविशेष।

गन्धमाद (सं० पु०) १ श्रीरामचन्द्रजीकी सेनाका एक बन्दर। (भागवत ९।१०।१९) राम और रावणकी लड़ाईमें इन्होंने अपना युद्धकौशलका अच्छा परिचय दिया था। २ श्वफल्कके औरससे गांधिनीके गर्भमें उत्पन्न अक्रूरका भाई। (भागवत ९।२४।१०) ३ भ्रमर, भौंरा।

गन्धमादन (सं० पु० क्लो०) गंधेन मादयति मद णिच् ल्यु। पर्वतविशेष। एक पहाड़का नाम। गंधमादन शब्दका प्रयोग प्रायः पुंलिङ्गमें ही देखा जाता है।

"तथैवापरेण पूर्वेण च माल्यवद् गंधमादनौ नीलनषिधायतौ।" (भागवत ५।१६।१०२) किसी किसी स्थानमें क्लीवलिङ्गमें भी प्रयोग किया गया है। "यस्य चोपवनं बाह्यं गंधवद् गंधमादनं।" (कुमार)

गोलाध्यायके मतसे गंधमादन पर्वत रोमकपत्तनके

उत्तर केतुमाल और इलावृतवर्षके मध्यमें अवस्थित है। यह पर्वत नील और निषध तक विस्तृत है। विष्णुपुराणके मतमें यह सुमेरु पर्वतके दक्षिण भागमें अवस्थित है। इस पर्वतके ऊपर जम्बू नामका एक केतुवृक्ष है। इसके पूर्वमें चैत्ररथ, दक्षिणमें गन्धमादन, पश्चिममें वैभ्राज और उत्तरमें नंदन नामक चार मनोहर उपवन हैं। देवगण इन्हीं उपवनोंमें आनंदसे विचरण किया करते हैं। गन्धमादन किम्पुरुष, सिद्ध और चारणगणके आवासस्थान है। इस पर विद्याधर, विद्याधरी, किन्नर और किन्नरीगण सर्वदा विचरण करते हैं। (भारत वन १५८ अ०)

विष्णुपुराणका मत है कि इस पर्वत पर महाभद्र नामका एक वृहत् देवभोग्य सरोवर विद्यमान है।

"अरुणोदं महाभद्रं असितोदं सवामनम्।
सरांस्येतानि चत्वार देवभोग्यानि सर्वदा॥" (विष्णुपुराण)

किन्तु सिद्धान्तशिरोमणिके "सरांस्यपं तैलवणाच मानसं महाह्रदं श्वेतजलं यथाक्रमं" इस वचनसे स्पष्ट है कि गंधमादन पर्वत पर मानससरोवर है। एकही सरोवरके दो नाम रखे गये ऐसा स्वीकार कर विरोध भञ्जन करते हैं। मानससरोवर हिमालय पर्वके उत्तर तिब्बतके मध्यमें अवस्थित है। मानस देखो।

२ गंधमादन पर्वतस्थित एक वन। ३ गंधमादन पर्वतनिवासी एक वानर, जिसने रामचन्द्रजीको लड़ाईमें सहायता दी थी।

"गंधमादनवासी च प्रथितो गंधमादनः।" (भारत वन २ अ०)

४ उड़ीसाके केउञ्झर राज्यके अन्तर्गत एक पहाड़। यह अक्षा० २१° ३८' १२" उ० और देशा० ८५° ३२' ५६" पू० पर अवस्थित है। इसकी ऊंचाई ३४२८ फुट है।

५ भ्रमर, भौंरा। ६ गन्धक।

७ जैनमतानुसार सुमेरु पर्वतके आसपासके गजदन्त-पर्वतोंमेंसे एक।

गन्धमादिनी (सं० स्त्री०) गन्धेन माद्यतेऽनया गन्धमादि-णिनि। १ मदिरा शराब। २ वनभाट। ३ चोड़ा नामक गन्धद्रव्य। ४ लाक्षा, लाह, लाख।

गन्धमादिनी (सं० स्त्री०) गन्धेन मादयति गन्ध-मद णिच् णिनि-ङीप्। १ लाक्षा, लाह। २ मुरा नामक गन्धद्रव्य।

गन्धमाद्रिका (सं० स्त्री०) सुगन्धि द्रव्यविशेष।

गन्धमाद्री (सं० स्त्री०) सुगन्धि द्रव्यविशेष।

गन्धमार्जार (सं० पु०) गन्धप्रधानो मार्जारः। खट्टाश, खटास, गंधबिलाव।

गन्धमार्जारवीर्य (सं० क्ली०) गन्धमार्जाराण्डोद्भव कस्तूर्या। खटासी।

गन्धमालती (सं० स्त्री०) गन्धेन मालतीव। लताविशेष। इसका गुण गन्धकोकिल जैसा है।

"गंधकोकिलया तुल्या विज्ञेया गंधमालती।" (भावप्रकाश)

गन्धमाला (सं० स्त्री०) क्षुद्ररोगभेद, एक तरहकी साधारण बीमारी। गंधमाली देखो।

गन्धमालिनी (सं० स्त्री०) १ गन्धमाला अस्त्यस्याः गन्धमाला इनि-ङीप्। मुरा नामक गन्धद्रव्य।

२ जैनमतानुसार विदेहक्षेत्रकी नदियोंमेंसे एक नदी।

गन्धमाल्य (सं० क्ली०) गन्धश्च माल्यञ्च इतरेतरद्वन्द्वः। गन्ध और माल्य।

"अथ यदि गंधमाल्यलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य गंधमाल्ये समुत्तिष्ठतः।" (छान्दोग्य उप० ८।२।६)

गन्धमासी (सं० स्त्री०) जटामांसी।

गन्धमित्र—अयोध्या नगरके एक राजा। इनके पिताका नाम विजयसेन और माताका नाम विजयवती था। इनके पिता साधु होते समय इनके बड़े भाई जयसेनको राज्य दे गये थे और इनको युवराज बना गये थे। गंधमित्रने कर्मचारियों और प्रजावर्गोंको भड़का कर जयसेनको राज्य भ्रष्ट कर दिया था और खुद राजा बन गये थे। पीछे जयसेनने इन्हें फूलोंके साथ जहर सुंघा कर मार डाला था। (आराधनाकथाकोष)

गन्धमुखा (सं० स्त्री०) गन्धो मुखे यस्याः, बहुव्री०। १ छछुन्दर। (त्रि०) २ जिसके मुंहमें गंध हो।

गन्धमुण्ड (सं० पु०) गन्धं मुण्डयति निवारयति। लताविशेष। गंधिया भांट। इसका पर्याय—नन्दीवृक्ष, ताम्रपाकी, फलपाकी, पीतक, गर्दभाण्ड और क्षिप्रपाकी हैं।

गन्धमूल (सं० पु०) गन्धप्रधानं मूलं यस्य, बहुव्री०। कुलञ्जनवृक्ष, अदरककी तरहका एक पौधा।

गन्धमूलक (सं० पु०) गंधमूलएव गंधमूल स्वार्थे कन् १ शठी, कपूरकचूरी। २ कच्छुर, कचूर।

गन्धमूला (सं० स्त्री०) गंधप्रधानं मूलं यस्याः, बहुव्री०। १ शल्लकी, शलई। २ शठी। (राजनि०)

गन्धमूलिका (सं० स्त्री०) गंधमूला-कन्-टाप्। १ माकन्दी, एक प्रकारका साग। २ शठी, कपूरकचूरी

गन्धमूषिक (सं० पु०) गंधप्रधानो मूषिकः। छुछुन्दर।

गन्धमूषी (सं० स्त्री०) गंधप्रधाना मूषी। छुछुन्दर।

गन्धमृग (सं० पु०) गंधप्रधानो मृगः। १ कस्तूरीमृग, वह मृग जिसमें कस्तूरी पाई जाय। २ खट्टाश।

गन्धमृत्पुष्प (सं० पु०) कदम्बवृक्ष।

गन्धमैथुन (सं० पु०) गन्धेन योनिगन्धग्रहणेन मैथुनं मैथुनारम्भो यस्य, बहुव्री०। वृष, बैल।

गन्धमोजवाह (सं० पु०) श्वफल्कके पुत्रका नाम।

गन्धमोदन (सं० पु०) गंधेन मोदयति आह्लादयति। गंधक।

गन्धमोदिनी (सं० स्त्री०) १ चम्पककली। २ चम्पक-पुष्पकली, चम्पा फूलकी कली।

गन्धमोहिनी (सं० स्त्री०) गंधेन मोहयति मुह-णिच्-णिनि। चम्पककलिका, चम्पेकी कली।

गन्धयुक्ति (सं० स्त्री०) गंधानां गंधद्रव्याणां युक्तिः योगः, ६ तत्। गंधद्रव्यका योगविशेष। इसके सेवन करनेसे शुक्ल बाल कृष्ण वर्ण हो जाते हैं। वृहत्संहितामें इसकी प्रस्तुत प्रणाली और गुण इस प्रकार वर्णित है—जिसके बाल सफेद हो जाते हैं, कपड़े और अलङ्कारादि उसे कुछ भी शोभा नहीं देते हैं। बालोंकी शोभासे मनुष्य सुंदर देख पड़ते हैं। यहां तक कि बालही मनुष्यों-के मनोहर और शोभाकर अलङ्कार हैं। किन्तु मनुष्यके यह अनुपम अलङ्कार सर्वदाके लिये नहीं रहते, थोडे ही दिनोंमें कई एक कारणोंसे सफेद हो कर मनुष्योंको शोभाहीन बना देते हैं इस लिये अञ्जन और भूषणादि की नाईं बालोंकी रक्षा करना एकान्त कर्तव्य है।

निर्मल लोहपात्रमें कोदों धानका चावल पाक करके लौहचूर्णके साथ पेषण करें। अच्छी तरह पीसने-के बाद अल्प परिमाणमें शुक्ल केशके ऊपर प्रलेप दें एवं भिंगे हुवे पत्तसे बांध रखें। दो प्रहरके पश्चात् उक्त प्रलेप को अलग करके मस्तकमें आंवलेका लेप देकर पहलेके जैसा भिंगे हुए पत्तसे फिर भी ढांक दें। दो प्रहरके बाद लेपको सिरसे अच्छी तरह धो डालें। ऐसा करनेसे उजले बाल काले हो जाते हैं। इसके पश्चात् सुगंध तैलादि लगा कर स्नान करें और मनोहर गन्ध तथा धूप द्वारा मस्तकको भली भांति सुगन्धित कर लें जिससे इसमें किसी प्रकारकी दुर्गन्ध न रहे।

चम्पकगंधि तैल—मञ्जिष्ठा, व्याघ्रनख, नखी, दाल-चीनी, कुठ, बोलनामक गंधद्रव्य और चूर्ण इन सबको तैलके साथ मिला कर धूपमें गरम करना पड़ता है। इसीको चम्पकगंधतैल कहते हैं।

गंधद्रव्य प्रस्तुत करनेका नियम—शिलारस या सिह्ला, वाला और तगरका समान भाग मिश्रित करने पर जो गंधद्रव्य प्रस्तुत होता है उसीको कामोद्दीपक गंध कहते हैं। इस गंधमें वराम, वकुल और हींगका धूप मिलाने-से कटुक नामक द्रव्य बन जाता है। कटुकके साथ कुठ मिलानेसे पद्म; पद्म गंधके साथ चंदन योग करनेसे चम्पक; चम्पक गंधके साथ धनियां, जायफल और दाल-चीनी मिलानेसे अतिमुक्त नामक गंधद्रव्य प्रस्तुत होता है।

सुगंधधूप प्रस्तुत करनेकी प्रणाली—शतपुष्पा, कुन्दुरुके चार भागोंका एक भाग, नखी और शिलारस अर्द्धभाग एवं चंदन और प्रियङ्गुके चौथाई भागको गुड़ और नखके साथ मिलाने पर एक प्रकारका सुगंधि धूप तैयार होता है। इसके सिवा गुग्गुल, वाला, लाक्षा, मोथा, नखी और शर्करा इन सबोंको बराबर मिलानेसे एक प्रकार-का धूप बन जाता है। जटामांसी, वाला, शिलारस, नखी और चंदन द्वारा पिण्ड करनेसे भी धूप तैयार होता है। हरीतकी, शङ्ख, घनद्रव और वालाके बराबर बरा-बर भागोंको मिलानेसे एक प्रकारका धूप बन जाता तथा उसमें गुड़ और उत्पल मिलानेसे दूसरे प्रकारका धूप तैयार होता है। दूसरे प्रकारके धूपोंके साथ शैलज और मोथा मिश्रित करनेसे एक तीसरे प्रकारका धूप बन जाता है। इन तीं प्रकारके द्रव्योंमें क्रमशः अन्यद्रव्य चौथाई भाग देनेसे एक उत्कृष्ट धूप तैयार होता है। शर्करा, शैलेय और मोथाके चार भाग, श्रीवासक और सर्ज दो भाग, नखी और गुग्गुलके दो भागोंको कर्पूर-

चूर्णके साथ मिला कर मधु द्वारा पिण्ड प्रस्तुत करनेसे कोपच्छद नामक धूप बनता है।

दालचीनी और उशीरके पत्तोंके साथ इसका अर्द्धपरिमाण छोटा इलायची मिला कर चूर्ण करें, इसके साथ अल्पपरिमाण मृगनाभि और कर्पूर मिलानेसे यह वामक नामक अत्यन्त उत्कृष्ट गंधचूर्ण तैयार होता है। घन (अभ्र), वाला, शैलेय और कर्पूर; उशीर, नागपुष्प, व्याघ्रनख और पिण्डशाक; अगुरु, दमनक, नख और तगर; धनियां, कपूर, चोर और चंदन इन चार चार पदार्थोंमें एक एक गण होता है, इनके समभागोंसे एक प्रकारका गंधचूर्ण प्रस्तुत होगा। इनके प्रत्येक गणका ही नाम गंधार्णव है। यह गंधद्रव्य १७४७२० भागोंमें विभक्त हो सकता है। समस्त गंधद्रव्योंमें नखी, तगर और शिलारस मिलाना पड़ता है। इसे जाति, कर्पूर और मृगनाभि द्वारा सुगंधित तथा गुड़ और नखी द्वारा धूपित करना होता है, इसीका नाम सर्वतोभद्र है। इस मिश्रित पदार्थको जातिफल, मृगनाभि और कर्पूर द्वारा सुगंधित कर आम्रमधु द्वारा सिक्त तथा इच्छानुसार चार भागोंमें बांटनेसे बहुत तरहके पारिजात तुल्य सद्गंध उत्पन्न होते हैं। इसमें सर्जरस और श्रीवासक मिला कर जितना परिमाण द्रव्य हो, उसमें उतनाही परिमाण वाला और दालचीनी मिला दें, इसके बाद उन समस्त द्रव्यों द्वारा स्नानजल प्रस्तुत कर लें।

लोध्र, उशीर, तगरपादुका, अगुरु, मोथा, प्रियङ्गु, घन और पथ्या इन समस्त द्रव्योंको नवकोष्ठ कच्छपुटसे तीन तीन द्रव्योंको सम्यक्‌रूपसे उद्धार कर चन्दन और शिलारस दो भाग, अर्द्धपरिमाण शुक्ति, चतुर्थ भाग शतपुष्पा, कटु, हिङ्गुल और गुड़ दे कर धूपित करनेसे चौरासी प्रकारके केशरगंध प्रस्तुत होते हैं। हरीतकी-चूर्णसंयुक्त गोमूत्रमें दन्तकाष्ठ ७ दिन भिंगा रखनेके बाद उसको गंधजलमें निक्षेप करें। इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, मधु, मिर्च, नागपुष्प और कुड़ इन समस्त द्रव्योंको मिलाकर निर्मल जलमें कुछ काल तक रखनेके बाद गंधजल प्रस्तुत हो जाता है। इसके बाद जातिफल, तेजपत्र, इलायची और कर्पूरको यथाक्रम चार, दो, एक और तीन भागों द्वारा अवचूर्णित कर सूर्यकिरणमें सुखाना पड़ता है। गंधयुक्त दन्तकाष्ठ सेवन करनेसे मुखकी प्रसन्नता, कान्ति और सुगंधिकी वृद्धि होती तथा वाक्य भी अत्यन्त श्रुतिसुखकर हो जाता है। (बृहत्संहिता० ७७ अ०)

गन्धयुति (सं० स्त्री०) नानाप्रकारके गंधद्रव्योंका एकत्र मिश्रण, कई एक गन्धद्रव्योंको मिलावट।

गन्धरस (सं० पु०) गंधयुक्तो रसो यस्य, बहुव्री०। उपधातुविशेष, सुगंधसार। इसका पर्याय—बोल, प्राण, पिण्ड, गोप, रस, गोस, पिण्डगोस, शश, गोसशश, गांधार, ममौबर्द्धन, बोलज और गायक है। गंधश्च रसश्च, इतरेतरद्वन्द्व। २ गंध और रस।

"नाघ्रेयमेतं ब्राह्मणेभ्यो यदन्न
मस्रावुत गंधरसोपपन्नम्॥" (भारत १।२७।११)

गन्धरसाङ्गक (सं० पु०) गंधरसोऽङ्गं यस्य, बहुव्री० ततः स्वार्थे कन्। श्रीवेष्ट नामका गंध द्रव्य।

गन्धराज (सं० पु०) गंधानां गंधसाराणां राजा, ६-तत्। ततः टच्। (राजाहःसखिभ्यष्टच्। पा ५।४।९१) १ मुद्गरवृक्ष, मोगरा बेला। २ कृष्ण गुग्गुल। ३ पुष्पवृक्ष। इसके पुष्पमें इतनी सुगंधि है कि दशो दिशाएं आमोदित हो जाती है। इसमें श्वेतवर्ण लिये १२ दल और ६ केशरविशिष्ट हैं। इसमें फल नहीं लगते हैं। इसकी डाली रोपनेसे लगती है। ४ श्रेष्ठगंध, अच्छी गंध। (क्ली०) गंधेन राजते राज-अच्। ५ चन्दन। ६ जवादि नामका गंधद्रव्य। (पु०) ७ गंधेन राजते राज-क्विप्। धूपक, धूना। ८ नख नामक सुगंधद्रव्य।

गन्धराजी (सं० स्त्री०) गंधराज स्त्रियां ङीप्। नखी नामक गंधद्रव्य।

गन्धराजतैल (सं० क्ली०) वातव्याधितैल, वह तेल जिसके सेवनसे वातरोग जाता रहता है।

गन्धरुहा (सं० स्त्री०) वनमल्लिका, काष्ठमल्लिका, एक प्रकारकी लता। इसका पर्याय—सदयन्ती, मोदयन्ती और सरस्रवा है।

गन्धर्व (सं० पु०) गाः स्तुतिरूपा गीतिरूपा वा वाचः रश्मि धारयति धृ-व। १ घोटक, घोड़ा।

"एषं संयच्छन्नासु गंधर्वैर्हेममालिभिः।" (भारत ३।१६१।३१)

२ मृगविशेष, कस्तूरीमृग। ३ अन्तराभवसत्त्व। (३।३।१३२) अमरके टीकाकार रायमुकुटका कथन है कि

प्राणीकी मृत्यु होने पर जब तक दूसरा शरीर प्राप्त नहीं होताहै, तब तक वह एक सूक्ष्म शरीर धारण कर यातना अनुभव करते हैं; उनको इस अवस्थाको अन्तराभवसत्त्व कहते हैं।

टीकाकार रमानाथके मतसे अन्तराभवसत्त्वका अर्थ गुप्त प्राणी है। उन्होंने उदाहरण स्वरूप विराटपर्वका "गंधर्वा...." यह वाक्य उद्धृत किया है।

४ ग्रहविशेष, एक प्रकारका ग्रह, जो समय पाकर मनुष्यके शरीरमें प्रवेश कर अनेक तरहकी अशान्ति उत्पादन करता है। आर्यचिकित्सक सुश्रुतका कथन है कि वैद्य क्षत और आतुर रोगीको निशाचरोंके हाथसे रक्षा करनेके लिये सर्वदा यत्नवान् होवें। चाहे रोगी क्षत हो अथवा न हो किसी तरह अशुचि होनेसे ही ग्रहगण हिंसाभिलाष पूर्ण करने अथवा पूजा पानेकी आशासे रोगीके शरीरमें प्रवेश कर उसे अनेक तरहके कष्ट देते हैं। यथानियमसे उनकी पूजा अथवा उपयुक्त औषध नहीं देनेसे वे रोगीको मार डालते हैं।

इस प्रकारके ग्रहोंकी संख्या बहुत है। किन्तु प्रधानतः ये आठ भागोंमें विभक्त किये जा सकते हैं। यथा—देव, असुर, गन्धर्व, यक्ष, पितृ, रक्ष, भुजङ्ग और पिशाच। इनके आवेश होने पर रोगी भूत भविष्यत्का हाल मालूम कर सकता है। उस समय यदि [illegible] भूत और भविष्यत्की घटना पूछी जा[illegible] वह साफ साफ कह देता है उस समय रोगीकी सहिष्णुता विलुप्त हो जाती है। जो सब कार्य मनुष्य बुद्धिसे अगम्य है, कभी भी उनसे वे कार्य सम्पन्न नहीं हो सकते उन्हें रोगी अनायास ही अनुष्ठान करके दर्शकोंको विस्मयापन्न और आत्मीय स्वजनोंको भयविह्वल तथा शोककातर बना देता है। आधुनिक वैज्ञानिक जो कुछ कहें लेकिन प्राचीन विद्वान् इस अवस्थाको भूत वा ग्रहावेश कहते एवं ग्रहपूजादि करके रोगीको प्रकृतिस्थ कर देते थे।

गन्धर्व ग्रहके आवेश होने पर रोगीका मन सदा हृष्ट रहता और नदीतीर वा निर्जन वनमें भ्रमण करनेकी यथेष्ट अभिलाष बनी रहती है। इस अवस्थामें रोगी गंध, माल्य और गीत बहुत पसन्द करता तथा कभी नाचता और कभी हंसता है।

दर्पणमें छाया वा प्रतिबिम्ब, प्राणीके देहमें शीतोष्ण और सूर्यकिरण एवं देहमें जीव जिस प्रकार अलक्षित हो कर प्रवेश हो जाते हैं, उसी प्रकार गंधर्वग्रह भी अलक्षित होकर मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करता है।

इसकी शान्तिके लिये नियमित जप और होम प्रभृति दैवक्रियायें करनी चाहिये। रक्तवर्ण गंधमाल्य, मधु, घृत अनेक प्रकारके खाद्य, वस्त्र, मद्य, मांस, रुधिर और दुग्ध प्रभृति प्रदान करना उचित है।

इतने करने पर भी यदि रोगीको शान्ति न मिले तो औषध प्रयोग करना चाहिये। छागल, भालु, शल्यक और उल्लू इनके चमड़े और रोमकी हींग एवं छागमूत्रमें मिला कर धूम प्रयोग करनेसे बलवान् ग्रहसे रोगी छुटकारा पा सकता है।

गोसर्प, नकुल, बिड़ाल और भालुकका पित्त एकत्र कर गजपिप्पलीके मूल, त्रिकटु, आमलकी और सरसों देकर भावित करें। इसके नस लेने और सेवन करनेसे ग्रहकी शान्ति होती है।

नटकरञ्ज, त्रिकटु, सोणा, बेलमूल, हरिद्रा और दारुहरिद्राको एक साथ लेकर इसकी बत्ती बनावें। पित्तके सहयोगसे इसका अञ्जन सेवन करनेसे ग्रहकी शान्ति होती है।

ये सब औषध या अन्य कोई चिकित्सा देवग्रहमें अयुक्तरूपसे प्रयोग नहीं करनी चाहिये। पिशाचके अतिरिक्त किसी दूसरे ग्रहमें कोई प्रतिकूल आचरण करना निषिद्ध है करनेसे ग्रह क्रुद्ध होकर वैद्य और रोगी दोनोंको ही नाश कर डालता है। (सुश्रुत उत्त० ६० अ०)

गन्धर्वग्रहकी कथा वैदिक उपन्यासमें भी वर्णित है। बृहदारण्यक उपनिषद्में लिखा है कि किसी समय बहुतसे मुनिकुमार अध्ययनके लिये मद्रदेशको गये थे। विश्रामके लिये वे कपिगोत्रसम्भव पतञ्जलके गृहमें जा पहुंचे। वहां उन्होंने उनकी नन्दिनीको गंधर्वग्रहके वशीभूत देखा।

"मद्रेषु चरकाः पर्यव्रजाम ते पतञ्चलस्य काप्यस्य गृहानैम,
तस्यासीद् दुहिता गंधर्वगृहीता।" (बृहदारण्यक, ७ ब्राह्मण)

५ तिरगड़, रेंड़ी।

"गंधर्वतैलमिश्रा हरीतकीं गोऽम्बुना पिबेत्।" (भावप्रकाश)

६ देवयोनिविशेष, स्वर्गगायक। ये देवताओंको

सभामें गान, वाद्य और नाट्याभिनय किया करते हैं। ये देखनेमें बहुत सुन्दर होते हैं। स्वर्गलोकमें इनके समान दूसरी कोई जाति रूपवती नहीं है। शब्दार्थ-चिन्तामणिके मतसे गन्धर्व दो भागोंमें विभक्त हैं—दिव्य और मर्त्य। जो मनुष्य इस कल्पके मध्य पुण्यबलसे गन्धर्वत्व प्राप्त होकर गन्धर्वसमाजभुक्त हुए हैं उन्हीं-को मर्त्य और जो इस कल्पके आदिसे गन्धर्व हैं उनको दिव्य गन्धर्व कहते हैं। ऋग्वेदमें भी दिव्यगंधर्वका उल्लेख पाया जाता है।

"विश्वावसु रमि तन्नो गृणातु दिव्यो गंधर्वः।" (ऋक् १०।१३९।५)

वह्निपुराणके मतसे दिव्य गंधर्व फिर ग्यारह भागोंमें विभक्त है—१ अभ्राज, २ अङ्गारि, ३ रम्भारि, ४ सूर्य-वर्चा, ५ क्रधु, ६ हस्त, सुहस्त, ८ मूर्द्धवान्, ९ महामना, १० विश्वावसु और ११ कृशाणु। जटाधरने आठ प्रधान गंधर्वके नाम उल्लेख कर गंधर्व-वंशका परिचय दिया है। यथा—हाहा, हूहू, चित्ररथ, हंस, विश्वावसु, गोमायु, तुम्बुरु और नन्दि। ये ही गंधर्वनगरमें गण्यमान्य हैं तथा इन्हींके नाम पर एक एक वंश प्रतिष्ठित है। अथर्ववेदमें ६३३३ गंधर्वोंका उल्लेख है।

मनुष्यके जैसे गन्धर्व भी दो श्रेणियोंमें विभक्त हैं—मौनेय और प्राधेय। मुनि और प्रधा नामके कश्यप-ऋषिकी दो पत्नी थीं। दक्षकन्या मुनिके गर्भसे १६ गन्धर्व उत्पन्न हुए। यथा—१ भीमसेन, २ उग्रसेन, ३ सुपर्ण, ४ वरुण, ५ गोपति, ६ धृतराष्ट्र, ७ सूर्यवर्चा, ८ अर्कपर्ण, ९ पर्यन्य, १० कलि, ११ प्रयुत, १२ भीम, १३ चित्ररथ, १४ सर्वविद्वशी, १५ शालिशिरा और १६ नारद। इन्हींको मौनेय कहते हैं। प्रधाके गर्भसे १० गन्धर्व हुए—१ सिद्ध, २ पूर्ण, ३ वर्ही, ४ पूर्णायु, ५ ब्रह्मचारी, ६ रतिगुण, ७ सुपर्ण ८ विश्वावसु, ९ भानु और १० चन्द्र। येही प्राधेय कहलाते।

"धयन्तो गां समुत्पन्ना गंधर्वास्तस्य तत्क्षणात्।
पिबन्तो जज्ञिरे वाचं गंधर्वास्तेन ते द्विज।" (विष्णुपुराण १।५।४०)

ब्रह्मासे तत्क्षणात् गंधर्वोंकी उत्पत्ति हुई। यह गो (वाक्य वा गीत) धमन अर्थात् उच्चारण वा गान करते करते जन्मे इस लिये यह गन्धर्व नामसे अभिहित हुए हैं। किसी किसीका मत है कि ब्रह्माकी कान्तिसे इस जाति-की उत्पत्ति हुई। ये रूप दान करते हैं।

हरिवंशके मतसे स्वारोचिष मन्वन्तरमें अरिष्टाके गर्भसे गन्धर्वोंने जन्मग्रहण किया है। (हरिवंश ३ अध्याय)

विष्णुपुराणमें लिखा है कि गन्धर्वगण पाताल जा कर नागोंको परास्त करके उनके धनरत्नादि बलपूर्वक छीन ले आये। नागगणने विष्णुसे सहायता मांगी। विष्णु-भगवान्ने यह कह स्वीकार किया कि वे पुरुकुत्सरूपसे उन लोगोंको सहायता कर सकते हैं। नागने अपनी बहन नर्मदाको विष्णुके निकट भेजा। नर्मदा पुरुकुत्सको साथ ले कर पाताल आई और पुरुकुत्ससे पातालस्थ गंध-र्वोंका विनाश हुआ।

(त्रि०) ७ गायक, जो गान कर सकता हो। ८ रश्मिधारक, जो रश्मि या किरण धारण करता हो, चन्द्र, सूर्य प्रभृति। ९ द्वीपविशेष।

"नागद्वीपस्तथा सौम्यं गंधर्वस्त्वथ वारुणः।" (ब्रह्माण्डपुराण)

१० दिन, दिवस। "तस्याहानीह गंधर्वाः गंधर्व्यो रात्रयः स्मृताः।" (भागवत ४।२९।२१)

"नटनर्त्तक गंधर्वाः सूतमागधवन्दिनः।
गायन्ति चोत्तमश्लोकचरितान्यद्भुतानि च॥" (भाग० ११।११।२०)

११ शरीराधिष्ठातृदेवताविशेष, शरीरके अधिष्ठातृ एक देवताका नाम। इन्होंने अविवाहिता कामिनीके स्वामिसम्भोगके पहले उसका कुछ विकसितयौवन उप-भोग किया था। ऋग्वेदमें लिखा है कि रमणियोंको पहले चन्द्रने उसके बाद गंधर्वने और तब अग्निने उप-भोग किया। इन्होंके उपभोग शेष होने पर मनुष्य-पतिने उन्हें ग्रहण किया।

"सोमः प्रथमो विविदे गंधर्वो विविदे।
उत्तरः तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः।" (ऋक १०।८५।४०)

१२ प्राणवायु। "पतङ्गो वाचं मनसा बिभर्ति तां गंधर्वोऽवदद् गर्भे अन्तः।" (ऋक् १०।१७७।२)

"गां शब्दान् धारयतीति गंधर्वः प्राणवायुः" (सायण)

१३ महाभारतवर्णित भारतके उत्तरवासी जाति-विशेष। १४ श्वेतकरवीर, सफेद कनेर। १५ श्वेत ऐरण्ड, सफेद रेंड़ी।

१६ जैनमतानुसार व्यन्तर देवोंके आठ कुल होते हैं,—किन्नर, किम्पुरुष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच। ये गन्धर्वदेव तीर्थङ्करोंके जन्म-कल्याणमें नृत्य, वादित्रादि कर आनन्दित होते हैं।

गन्धर्वखण्ड (सं० क्लो०) गंधर्वनामकं खण्डं, मध्यपदलो०। भारतवर्षके अन्तर्गत एक प्रदेश गन्धार।

गन्धर्वगढ़—बम्बई प्रदेशके वेलगाम् जिलेके अन्तर्गत एक उपविभाग। इस उपविभागमें वेलगामसे प्राय: २१ मील पश्चिम सह्याद्रि पर्वतके पार्श्वशाखाके समतल क्षेत्रसे ४०० फुट ऊंचे पर गंधर्वगड़ गिरिदुर्ग है। यह दुर्ग १००० फुट चौरस भूमिके ऊपर निर्मित है। यह १७२४ ई०को सावन्तवाड़ीके राजा फोन्द सामन्तके द्वितीय पुत्र नागसामन्तसे बनाया गया है। १७७८ ई०में कोल्हापुरके राजाने गंधर्वगढ़को अपने अधिकारमें कर लिया, लेकिन १७८३ ई०में सिन्धियाराजकी सहायतासे गन्धर्वगढ़ फिर भी सामन्तवाडीके दखलमें आ गया। १७८७ ई०में नेसर्गी सर्दारने अपने स्वामी कोल्हापुर राजाके विरुद्ध युद्ध कर गंधर्वगढ़ और दूसरे दूसरे स्थानों पर अपना दखल जमाया। किन्तु थोड़े समयके बाद ही राजाने सर्दारको भगा कर गंधर्वगढ़ अपने अधिकारमें लाया।

गन्धर्वगृहीत (सं० त्रि०) गंधर्वेण गृहीतः, ३-तत्। जिसको गंधर्वने ग्रहण किया हो। गंधर्व देखो।

गन्धर्वग्रह (सं० पु०) शरीरप्रवेशकारी उपदेवविशेष, एक प्रकारका ग्रह जो भूत प्रेतकी नाईं मनुष्यकेशरीरमें प्रवेश कर जाता है। गंधर्व देखो।

गन्धर्वतीर्थ (सं० पु०) तीर्थविशेष, एक तीर्थका नाम। (भारत शल्य ८ अ०)

गन्धर्वतैल (सं० क्लो०) एरण्डकतैल। रेंड़ीका तेल।

गन्धर्वदत्त—पटनाके एक प्राचीन राजा, ये जैनमतावलम्बी था।

गन्धर्वदत्ता—जैनमतानुसार रत्नद्वीपके मनुजोदय नगरके राजा गरुड़वेगकी पुत्री। यह दि०जैनधर्ममें अचल श्रद्धा रखती थी। एक दिन वह जिनेन्द्रकी पूजा करके फूलोंका हार पिताके पास लाई। उसे यौवनवती देख कर गरुड़वेगका बड़ी चिन्ता हुई। विपुलमति नामक चारणमुनिसे मालूम हुआ कि, भरतक्षेत्रमें हेमाङ्गद देशके राजाके पुत्रसे इसका वीणा स्वयम्बरमें विवाह होगा। इस पर जिनदत्त नामके एक सेठने भरतक्षेत्रमें इस स्वयम्बरका आयोजन किया। स्वयम्बरमें गन्धर्वदत्ताने वीणा बजानेमें सब राजकुमारोंको पराजित कर दिया। आखिर सत्यधरके पुत्र जीवन्धरकी बारी आई। इन्होंने उसे पराजित कर दिया। इस पर काष्ठाङ्गारके पुत्रोंने ईर्षासे गन्धर्वदत्ताको हरण करनेका उद्यम किया। जीवन्धर कुमारको खबर लगते ही उन्होंने गन्धगज (गन्धजातके हाथी) पर सवार हो कर उन दुष्टोंके उद्यमको नष्ट भ्रष्ट कर दिया। कुमारको वीरताको देख कर गन्धर्वदत्ता तो फूली न समाई। तुरत ही विवाह हो गया, और दोनों सुखसे रहने लगे। जीवन्धर देखो। (उत्तरपुराण ४६१ पृष्ठ)

२ जैनोंके २२-वें तीर्थङ्कर नेमिनाथके भाई वासुदेवकी एक पत्नी।

गन्धर्वनगर (सं० क्लो०) गंधर्वाणां नगरं, ६-तत्। १ गगन मण्डलमें उदित अनिष्टसूचक पुरविशेष। खपुर देखो।

२ मानससरोवरका निकटवर्ती एक नगर। गंधर्वगण इसकी देखभाल करते हैं, इस लिये यह गंधर्वनगरसे अभिहित है। महाभारतमें लिखा है कि-महापराक्रमशाली अर्जुनने गंधर्वरक्षित गंधर्वनगरको जय कर तित्तिर, कल्माष और मण्डुक नामके अश्वरत्न प्राप्त किये थे। (भारत २।२७ अध्याय)

३ विजयपर्वतकी उत्तर श्रेणीका एक नगर। ४ मिथ्या भ्रम, संसारकी उपमा गंधर्वनगरसे दी जाती है।

गन्धर्वभूषण (सं० क्लो०) सिन्दूर।

गन्धर्वराज—रागरत्नाकर नामक संस्कृत सङ्गीतग्रन्थप्रणेता।

गन्धर्वलोक (सं० पु०) गन्धर्वाणां लोक आवासस्थानं, ६-तत्। गुह्यक लोकके ऊपर और विद्याधर लोकके नीचे अवस्थित एक स्थान। इस स्थान पर देवगायक गन्धर्वगण वास करते हैं। काशीखण्डका मत है कि जो गीतशास्त्राभिज्ञ गान करके राजाओंको वश कर सकते एवं धन लोभसे मोहित हो कर धनशाली मानवगणको गान द्वारा स्तुत करके जो वस्त्र प्रभृति उनसे दान पाते हैं उन्हें वे ब्राह्मणोंको देते हैं और गानमें जिनकी अतिशय प्रीति है एवं नाट्यशास्त्रमें भी विशेष पारदर्शिता है, वे ही गन्धर्वलोकको प्राप्त कर परम सुखसे कालयापन करते हैं। (काशीखण्ड)

गन्धर्ववधू (सं० स्त्री०) गन्धर्वस्य वधूरिव । १ शठी, कपूर कचूरी । २ चोड़ा नामक गन्धद्रव्य ।

गन्धर्वविद्या (सं० स्त्री०) गन्धर्वाणां विद्या, ६-तत् । सङ्गीत, गानविद्या ।

गन्धर्वविवाह (सं० पु०) गन्धर्वमतानुसारी विवाहः मध्यपदलो० । आठ प्रकारके विवाहोंके अन्तर्गत एक प्रकारका विवाह । कन्या और वरके अभिप्रायसे प्रतिज्ञापाशमें बद्ध हो कर जो विवाह होता है उसीको गान्धर्वविवाह कहते हैं । गान्धर्व देखो.

गन्धर्ववेद (सं० पु०) गन्धर्वाणां वेदः, ६-तत् । सङ्गीतके मूलग्रन्थ सामवेदके उप-वेदविशेष । शौनकोक्त चरणव्यूहके मतसे आयुर्वेद गन्धर्ववेदका उपवेद, यजुर्वेदका धनुर्वेद, सामवेदका गन्धर्ववेद और अथर्वका उपवेद शस्त्र शास्त्र हैं ।

गन्धर्वशाका (सं० स्त्री०) भार्गी गुल्म ।

गन्धर्वसेन—हिन्दीके एक कवि । इनकी कविताका निदर्शन नीचे देते हैं—

"दियो तुमको विधि पटल राज्य ध्वपति विक्रमनरेश ।
राज समाजसों जग न करो जौलों भुव गङ्ग हरष शेष ॥
तोसों तुही और मही भुव मण्डल रुप ।
सकल विद्या गुणनिधान दाता विधवो काटन जग कलेश ॥
गन्धर्वसेन प्रभु ऐसो तर दुःख भञ्जन ।
गन्धर्व रच्छा करतार श्री सुरेश ॥"

गन्धर्वसेना—पटनाके राजा गन्धर्वदत्तको पुत्री । यह गायनविद्यामें बड़ी ही निपुणा थी । इनके गाने और वीणा बजानेके सामने बड़े बड़े गायक हार मानते थे । इनकी प्रतिज्ञा थी कि, "जो वीणा बजानेमें मुझे परास्त कर देगा, उसीके साथ मैं विवाह करूंगी।" न इनको कोई जीत सका और न व्याह ही हुआ । महलके ऊपरसे अचानक पैर फिसल जानेसे इनकी मृत्यु हुई थी । (आराधनाकथाकोष)

गन्धर्वहस्त (सं० पु०) गन्धर्वस्य मृगविशेषस्य हस्तः पाद इव पत्रमस्य, बहुव्री० । एरण्डवृक्ष, रेंड़ीका पेड़ ।

गन्धर्वहस्तक (सं० पु०) गन्धर्वस्य हस्तः पाद इव पत्रमस्य स्वार्थे कन् । एरण्डवृक्ष, रेंड़ीका पेड़ । सुश्रुतका मत है कि इससे एक प्रकारका लवण उत्पन्न होता है ।

गन्धर्वा (सं० स्त्री०) कोकिल, कोयल ।

गन्धर्वी (सं० स्त्री०) गन्धर्व जातित्वात् ङीप् । १ गन्धर्वजातीय स्त्री । गन्धर्वाणां पत्नी गन्धर्व-ङीष् । २ गन्धर्वकी पत्नी, गन्धर्वकी विवाहिता स्त्री । ३ सुरभीकी कन्या । ४ अश्वजातीय जननी, घोड़े मरीखी माता ।

गन्धलता (सं० स्त्री०) गन्धयुक्ता लता, प्रियङ्गु ।

गन्धलोलुपा (सं० स्त्री०) गन्धेन लोलुपा, ३-तत् । मधुमक्षिका, मधुमक्खी ।

गन्धवत् (सं० त्रि०) गन्धो विद्यते ऽस्य गन्ध-मतुप्, मस्य वः । गन्धयुक्त, जिसमें महक हो ।

' गन्धवद्वधिवन्दमाविता।" (रघु०)

गन्धवती (सं० स्त्री०) गन्धवत्-ङीप् । १ पृथिवी । २ मत्स्यगन्धा, व्यासकी माता, इनका दूसरा नाम सत्यवती है । महाभारतमें लिखा है कि जालिककी कन्या मत्स्यगन्धा अपने पिताके आदेशसे यात्रियोंको नौका द्वारा नदी पार करती थी । एक दिन जब पराशर मुनि पार हो रहे थे तो वे उस कन्याको देख कर मोहित हो उठे एवं मत्स्यगन्धाके शरीरकी दुर्गन्धको न सहकर उसे सुगन्धयुक्ता बना दिया । उसी दिनसे इसका नाम गन्धवती पड़ा है । (भारत १।६३ अ०) ३ सुरा, शराब, मदिरा । ४ नवमल्लिका, चमेलीका फूल । ५ मुरा नामक गन्धद्रव्य । ६ वायुपुरी, यह वरुणपुरीके उत्तरभागमें अवस्थित है ।

"इमां गन्धवतीं रम्यां पुरीं वायोर्विलोकय।
वारुण्या उत्तरे भागे महाभागाग्निषे विज ॥" (काशी० १३अ०)

७ गङ्गा ।

"गङ्गा गन्धवती गौरी गन्धर्व नगरप्रिया ।" (काशी० २९।४९)

८ पुरी जिलाके अन्तर्गत पुण्यक्षेत्र भुवनेश्वरके निकट प्रवाहित एक क्षुद्र नदी । इस नदीके बहुत स्थानोंमें जल नहीं रहता है, सब समय मनुष्य पैदल पार होते हैं । पहले इसकी चौड़ाई बहुत अधिक थी । नदीके गर्भ पर हिन्दूराज निर्मित अठारहनालाओंके भग्नावशेष आज भी देखे जाते हैं । छोटी होने पर भी यह नदी हिन्दुओंके पवित्र तीर्थमें गण्य है । एकाम्रपुराणमें लिखा है ।

"पुरासौ भगवान् रुद्रो देवदेवो भूतभावनः ।
भूतानाथ हितार्थाय चक्रे गन्धवतीं नदीम् ॥...
स्वर्णकूटगिरेः पृष्ठे सरिदेषा सनातनी ।
प्रक्षालयन्ती गङ्गा शिरोपासनतत्परा ॥"

दक्षिणावर्त्तमालम्ब चैवराजान् परेतरान्।
नाम्ना गन्धवती ख्याता याति गङ्गा हरिद्वरा ॥" १७ अ०।

स्वयं भगवान् रुद्रने भूतगणोंके मङ्गल विधानके लिये सर्वपापहारिणी कीर्तिप्रदायिनी प्रच्छन्नरूपिणी गन्धवती नामकी गङ्गाको स्वर्णकूटमें उत्पादन किया था।

कपिलसंहिताका मत है कि रुद्रके जटाकलापमें भ्रममाणा गङ्गाको भगीरथ लाये थे। वही भ्रममाणा त्रिकोटिकुलतारिणी गङ्गासे हिमालय आदिगङ्गाको निःसारित किया, मुनिगण उस आदि गङ्गाको ही गन्धवती कहते हैं। वही गन्धवती स्वर्णकूटाचलमें प्रवाहित होती है।

"जटाकलापे रुद्रस्य भ्रममाणा महातपाः।
नीता भगीरथेनैव गङ्गा त्रैलोक्यपावनी ॥ ४८ ॥
तां सेवमध्ये हिमवान् ससर्ज, शिवभक्तये।...
आद्या गङ्गां विदुस्तान्तु त्रिकोटिकुलतारिणीम्।
पुण्यां गंधवतीनाम्ना मुनयो ब्रह्मवादिनः।" ५०

(कपिलसंहिता १७ अ०)

शिवपुराणके मतसे दक्षिणसमुद्रके निकट विन्ध्यपादसे यह गंधवती नदी निकली है।

"श्रीमदुत्कलके चैव दक्षिणार्णवसन्निधौ।
विंध्यपादोद्भवादित्या नद्यास्ते पूर्ववाहिनी ॥
सरित्तदुद्भवा श्रेष्ठा नाम्ना गंधवती स्मृता॥" (उत्तरखण्ड २६ अ०)

गन्धवधू (सं० स्त्री०) गंधयुक्ता वधूरिव। १ शठी, कपूर कचूरी। २ चोड़ा नामक गंधद्रव्य।

गन्धबन्धु (सं० पु०) गंधस्य बन्धुरिव। आम्रवृक्ष, आमका पेड़।

गन्धवल्कल (सं० क्ली०) गंधो वल्कलोऽस्य, बहुव्री०। त्वक्, दालचीनी।

गन्धवल्लरी (सं० स्त्री०) गंधयुक्ता वल्लरी। लताविशेष, सहदेवी।

गन्धवल्ली (सं० स्त्री०) गंधवल्लरी देखो।

गन्धवह (सं० पु०) गंधं गंधयुक्तं पार्थिवांशं वहति वह-अच्। १ वायु, हवा।

"दिग्दक्षिणा गंधवहं मुखेन।" (कुमार)

(त्रि०) २ गंधयुक्त नायकविशेष।

"नवा लता गंधवहेन चुम्बिता।" (नैषधचरित)

३ गंधधारी, जिसमें गंध हो।

"आकाशात्तु विकुर्वाणात् सर्वगंधवहः शुचिः।" (मनु० १।७६

४ कस्तूरीमृग, वह मृग जिसकी नाभिसे कस्तूरी निकलती हो।

गन्धवहल (सं० पु०) गंधं वहति वह बाहुलकात् अलच्, यद्वा गंधो वहलो यस्य, बहुव्री०। १ सिताजर्क वृक्ष, श्वेताजवला। २ श्वेततुलसी, सफेद तुलसी।

गन्धवहा (सं० स्त्री०) गंधः गुणविशेषं वहति गृह्णाति वह-अच्-टाप्। १ नासिका, नाक। २ भुवनेश्वरके निकट प्रवाहित गंधवती नदीका नामान्तर। गंधवती देखो।

गन्धवहुल (सं० क्ली०) गन्धो बहुलो यस्य, बहुव्री०। १ एक प्रकारका गंधद्रव्य, शीतल चीनीके वृक्षका एक मद, कक्कोल। २ गंधशालि, सुगंधित धान।

गन्धवहुला (सं० स्त्री०) गंधो बहुलो यस्याः, बहुव्री०। गोरक्षीका पेड़। यह मालवदेशमें बहुत पाया जाता है।

गन्धवाकुची (सं० स्त्री०) लताकस्तूरी।

गन्धवारि (सं० क्ली०) गंधद्रव्यवासितं वारिः। सुगंधि द्रव्यवासित जल, गुलाब जल।

गन्धवाह (सं० पु०) वायु, हवा।

"प्रसरदसमवाणप्राण वद् गंधवाहः।" (गीतगोविंद)

२ कस्तूरीमृग।

गन्धवाही (सं० स्त्री०) गन्धवाह-ङीष्। नासिका, नाक।

गन्धविह्वल (सं० पु०) गन्धेन विह्वलयति विह्वल-णिच्-अच्। गोधूम, गेहूं।

गन्धवीजा (सं० स्त्री०) गन्धो वीजे यस्याः, बहुव्री० ततो टाप्। १ कुलिञ्जनवृक्ष, अदरककी तरहका एक पौधा। २ मेथिका, मेथी।

गन्धवीरा (सं० स्त्री०) शल्लकीवृक्ष, शलईका पेड़।

गन्धवृक्षक (सं० पु०) गन्धप्रधानो वृक्षः संज्ञायां कन्। शालवृक्ष, शालका पेड़।

गन्धवेधिका (सं० स्त्री०) कस्तूरी, मृगनाभि।

गन्धवेष्ट (सं० पु०) गन्धं वेष्टयति स्वगन्धेन परगन्धमावृणोति। धूनक, सालका गोंद, धूना।

गन्धव्याकुल (सं० पु०-क्ली०) गन्धेन व्याकुलयति, वि-आ-कुल-णिच्-अच्। एक प्रकारका सुगन्धद्रव्य, कक्कोल।

गन्धशठी (सं० स्त्री०) गन्धप्रधाना शठी शाकपार्थिववत् मध्यपदलो०। शठी, कपूर कचूरी।

गन्धशाक (सं० क्ली०) गन्धप्रधानं शाकपार्थिववत्

मध्यपटलो०। गौर सुवर्ण शाक। चित्रकूटके अञ्चलमें यह शाक बहुत पाया जाता है।

गन्धशालि (सं० पु०) गन्धप्रधान: शालि:। धान्य-विशेष, सुगन्धि शालिधान्य, वासफुल धान। इसका पर्याय—कलमाष, गन्धालु, उत्तमोत्तम, सुगन्धि, गन्ध-बहुल, सुरभि, गन्धतण्डुल और सुगन्धिशालि है। इस-का गुण—मधुर, वलकारी, पित्त और श्रमनाशक, स्नायु-विदाहनिवारक, अल्पवातनिवारक एवं अल्पपरिमाण कफ तथा बलवृद्धिकर तथा गर्भको स्थिर रखनेवाला है। (राजनि०)

गन्धशुण्डिनी (सं० स्त्री०) गन्धयुक्ता: शुण्डोऽस्त्यस्या:। छुछुन्दर।

गन्धशेखर (सं० पु०) गन्ध: शेखरं शिरोदेश ऽस्त्यस्य, बहुव्री०। कस्तूरी।

गन्धसम्भवा (सं० स्त्री०) सुगन्धशालि।

गन्धसार (सं० पु०) गंधं गन्धयुक्तं सार: स्थिरांशो यस्य, बहुव्री०। १ चन्दनवृक्ष २ मुग्दरवृक्ष, मोगरा बेला। ३ शठी कचूर।

गन्धसारण (सं० पु०) गंधं सारयति सृ णिच् ल्यु। १ कस्तूरी नामक गन्धद्रव्य। २ मुग्दरवृक्ष।

गन्धसूची (सं० स्त्री०) १ आम्रातक, आमड़ा। २ छुछु-न्दर।

गन्धसेवि (सं० क्लो०) रोहीषतृण, अगिया घास।

गन्धसोम (सं० क्लो०) गन्धार्थं सोमश्चन्द्रो यस्य, बहुव्री०। कुमुद, श्वेतकमल।

गन्धहस्तिमहाभाष्य-तत्त्वार्थसूत्र पर स्वामो समन्तभद्राचार्य विरचित भाष्य। आजकल यह उपलब्ध नहीं है। कहते हैं आजतक जितनी टीकाएं तत्त्वार्थसूत्र पर मिली हैं उन सबमें यह ही बड़ी और विस्तृत है। इसकी श्लोक संख्या ८४ हजार है, इसका केवल मङ्गलाचरण ११४ श्लोकोंका मिलता है जिसको आप्तमोमांसा कहते हैं।

आप्तमोमांसा अपने ढंगका निराला ही ग्रन्थ है। इसके प्रत्येक श्लोकमें न्यायकी शैलीसे सत्यार्थ देवको मीमांसाको गई है। इसीके ऊपर श्रीमद्भट्टाकलंकदेव की अष्टशती नामक टीका है और उसके ऊपर स्याद्वाद-विद्यापति विद्यानंदस्वामीका अष्टसहस्री नामक विव-रण है।

इन दो ग्रन्थोंके पढ़नेसे ही गन्धहस्तिमहाभाष्यको गुरुता और अर्थगंभीरता जानी जा सकती है।

इस ग्रन्थको ढूंढनेके लिये जैन लोग बहुतसा परिश्रम कर रहे हैं। अनेक तो इसके केवल दर्शन करादेनेवाले-को ५००) सौ रुपये तकका पुरस्कार देनेका वचन कहते हैं। समन्तभद्र देखो।

गन्धहस्ती (सं० पु०) गन्धयुक्तो मदगन्धयुक्तो मत्तो हस्ती। मत्तहस्ती, मतवाला हाथी।

"गन्धहस्तीव दुर्धष:।" (रामायण ५।७३।२६)

२ बौद्धस्तूपविशेष। यह बोधगयासे आध कोस दक्षिणपूर्वमें लीलाजन नदीके पूर्व तट वर्तमान वाकरर नामक स्थान पर अवस्थित है।

गन्धहारिका (सं० स्त्री०) गन्धं हरतीति हृ-ण्वुल्-क ततष्टाप् अत इत्वञ्च। शिल्पनिपुणा, वह स्त्री जो दूसरोंके घर जा कर काम करती हो।

गन्धा (सं० स्त्री०) गन्धयति गन्धं वितरति, गन्ध-णिच्-अच्-टाप्। १ चम्पककली, चम्पा। २ शठी, कपूर कचूरी। ३ शालपर्णी। ४ गन्धयुक्ता स्त्री। ५ वनतुलसी। ६ छुछुन्दर। ७ अजमोदा। ८ वंशलोचन।

गन्धाखु (सं० पु०) गन्धयुक्त आखु:। छुछुन्दर।

गन्धाजीव (सं० पु०) गन्धेन गन्धद्रव्येन आजीवति, आ-जीव-अच्। गन्धवणिक्।

गन्धाढ्य (सं० क्लो०) १ गन्धेन आढ्यं। जवादि नामक गन्धद्रव्य। २ चन्दन। (त्रि०) ३ गन्धयुक्त, जिसमें गन्ध हो। (पु०) ४ नारङ्गवृक्ष, नारङ्गीका पेड़। ५ वकुल पुष्प, मौलसरीका फूल।

गन्धाढ्या (सं० स्त्री०) गंधेन आढ्या, ३-तत्। १ गंध-पत्ता। २ स्वर्णयुथी, जूहीका फूल। ३ तरुणीपुष्प, घीकुवार, ग्वारपाठा। ४ आरामशीतला। ५ गंधा-ली, प्रसारणी, गंधपसार। ६ मूरा नामक गंधद्रव्य। ७ शतपत्री। गुलाबका फूल। ८ सुगन्धशाल। ९ नीबू। १० गंधपत्र।

गन्धादि (सं० क्लो०) तृणकेशर।

गन्धाधिक (सं० क्लो०) गंधोऽधिको यस्य, बहुव्री०। तृण कुङ्कुम, तृणकेशर।

गन्धाधिवास (सं० पु०) गंधेन गंधद्रव्येण अधिवास:,

३-तत्। आभ्युदयिक प्रभृति कर्मोंमें चन्दन और पुष्प-माल्य प्रभृति गंधद्रव्योंमें जो अधिवास किया जाता है उसीका नाम गंधाधिवास है।

गन्धाली (सं० पु०) सुगन्धशाल।

गन्धान्न (सं० पु०) गन्धशाल, वह धान जिसमें अच्छी गंध हो।

गन्धाम्ला (सं० स्त्री०) गंधयुक्तोऽम्लो रसो यस्याः बहुव्री०। वनवीजपूरक, एक प्रकारके नीबूका पेड़।

गन्धार (सं० पु०) १ देशविशेष। गांधार देखो।

"कश्मीराः सिंधुसौवीरा गंधारादर्शकास्तथा।"
(भारत भीष्म० ९ अ०)

२ गन्धारदेशके राजा।

गन्धारि (सं० पु०) गंधं ऋच्छति ऋ-इन्, ६-तत्। गंधार-देश।

गन्धारी (सं० स्त्री०) गन्धं लेशरूपं गन्धं ऋच्छति। गर्भ-धारिणी स्त्री, गर्भवती।

'यहा गंधारीवा गर्भधारिणिना स्त्रीणा।'
(ऋक् १।१२६।७ सायण)

गन्धाल (सं० पु०) १ गन्धशाल। २ दण्डालुक, रतालूका पेड़।

गन्धाला (सं० स्त्री०) गन्धाय अलति पर्याप्नोति अल्-अच् ततः टाप्। वृक्षविशेष, एक पेड़का नाम।

गन्धाली (सं० स्त्री०) गन्धस्य आली श्रेणी यस्यां, बहुव्री०। लताविशेष, गंधपसार। इसका पर्याय—प्रसारणी, भद्रपर्णी, गंधाढ्या, सरणा, कटम्भरा, राजवाला, भद्रवला कटम्भर और सारणी है। इसका गुण—उष्णवीर्य, वात नाशक, तिक्त, गुरु, वृष्य, बलवृद्धिकर, वात, रक्त और कफनाशक है। (भावप्रकाश) प्रसारणी देखो।

गन्धालीगर्भ (सं० पु०) गन्धाली गन्धश्रेणी गर्भे यस्य, बहुव्री०। छोटी इलायची।

गन्धाश्मन् (सं० पु०) गन्धयुक्तोऽश्मा शाकपार्थिववत्। गन्धक।

गन्धाष्टक (सं० क्ली०) गन्धानां गन्धद्रव्याणां अष्टकं ६-तत्। आठ प्रकारके मिश्रित गन्धद्रव्योंको गन्धाष्टक कहते हैं। तन्त्रमें देवता भेदसे कई प्रकारके गन्धाष्टक निरूपित हैं।

शक्तिगन्धाष्टक—१ चन्दन, २ अगुरु, ३ कर्पूर, ४ चोर नामक गन्ध द्रव्य, ५ कुङ्कुम, ६ गोरोचन, ७ जटा-मांसी और ८ कपियुता।

विष्णुके गन्धाष्टक—१ चन्दन, २ अगुरु, ३ वाला, ४ कुड़, ५ कुङ्कुम, ६ वीरणमूल, ७ जटामांसी और ८ मुरा।

शिवगन्धाष्टक—१ चन्दन, २ अगुरु, ३ कर्पूर, ४ तमाल, ५ जल, ६ कुङ्कुम, ७ रक्तचन्दन और ८ कुष्ठ।

गणेशगन्धाष्टक—१ स्वरूप, २ चन्दन, ३ चोर, ४ रोचना, ५ अगुरु, ६ मृगमद, ७ कस्तूरी और ८ कर्पूर। (शारदाति०

मेरुतन्त्रके मतसे चन्दन, अगुरु, कर्पूर, गोरोचना, कुङ्कुम, मृगमद और वाला इन आठोंको गाणपत्य गन्धा-ष्टक कहते हैं। मांसादिके यूष प्रस्तुत करनेमें सुगंधिके लिये आठ गंधद्रव्य उसमें दिये जाते हैं। इनको भी गन्धाष्टक कहते हैं। लङ्कानाथके मतमें जातीफल (जाय-फल), तेजपत्र, लवङ्ग, इलायची, दालचीनी, नागकेशर, मिर्च और मृगनाभि इन सबको गंधाष्टक कहते हैं।

गन्धाह्वा (सं० स्त्री०) रक्ततुलसी, लाल तुलसी।

"मालती कटुतुम्बी गन्धाह्वा सनकं स्मृ।" (मदन नि० ९)

गन्धि (सं० क्ली०) तृणकुङ्कुम, रोहित घास।

गन्धिक (सं० पु०) गन्धोऽस्त्यस्य गन्ध-ठन्। १ गन्धक। २ गन्धवणिक्।

गन्धिन् (सं० त्रि०) प्रशस्तो गन्धोऽस्त्यस्य गंध-इनि। प्रशस्त गंधयुक्त, जिसमें अच्छी गंध हो।

"गन्धेन गन्धिनो रसा रसांश्च रूपेण च शब्दतः।
मन्यन्ते मनसो बुद्ध्या तत्र प्रधान प्रवर्त्तते॥" (भारत आश्व० ५२ अ)

गन्धिनी (सं० स्त्री०) गंधिन-ङीप्। मुरा नामक गंध-द्रव्य।

गन्धिपर्ण (सं० पु०) गन्धि गन्धयुक्तं पर्णं यस्य, बहुव्री०। सप्तच्छदवृक्ष, सप्तपर्ण वृक्ष। छतिवनका पेड़।

गन्धिरस (सं० पु०) गोपक, नौसादर।

गन्धिला—जैनमतानुसार विदेहक्षेत्रमें स्थित एक देश।

गन्धी (सं० पु०) कस्तूरीमृग।

गन्धेन्द्रिय (सं० क्ली०) गंधग्राहकं इन्द्रियं शाकपार्थि-वादिवत् समासः। घ्राणेन्द्रिय, वह इन्द्रिय जिसके द्वारा गंधका अनुभव हो। इन्द्रिय सम्बन्धके विषयमें दार्श-निकोंका मतभेद लक्षित होता है। न्यायदर्शनका मत है

कि पृथ्वीके अंशसे गन्धेन्द्रियं वा नासिकाकी उत्पत्ति है इसीके द्वारा हमलोग गन्ध ग्रहण करते हैं। सांख्य और पातञ्जलके मतसे घ्राणेन्द्रिय पृथ्वी अंशसे उत्पन्न नहीं है। वह सात्त्विक अहङ्कारसे आविर्भूत हुआ है। फिर प्रलय समयमें वह उसमें लीन हो जाता है। भाष्यकार विज्ञानभिक्षुने सांख्यप्रवचनके द्वितीय अध्यायमें इन्द्रियके भौतिकत्ववादका अत्यन्त सुन्दर रूपसे निराकरण कर आहङ्कारित्व संस्थापन किया है।

गन्धेभ (सं॰ पु॰) गन्धयुक्तः मदगन्धयुक्तः इभः शाकपार्थिवादिवत् समासः। गन्धगज, मत्तहस्ती, मतवाला हाथी।

"निरुरुन्धि गन्धभो गनधेभैव वाटारयम्।" (राजतर॰ १।३००)

गन्धात् (सं॰ पु॰) गन्धप्रधान ऋतुः वा वृद्धिः। सुगन्ध-मार्ज्जार, खट्टाश।

गन्धोत्कट—स्वामी जीवन्धरकुमारके पालक और वैश्य जातिके धनाढ्य। जीवन्धरकुमारके पिताको काष्ठाङ्गारने मार डाला था। उनके पीछे जीवन्धरका जन्म हुआ और वे गन्धोत्कटके घर पले थे। जीवन्धर देखो।

गन्धोत्कटा (सं॰ स्त्री॰) गंधेन उत्कटा उग्रा, ३-तत्। दमनकवृक्ष, दौनाका पेड़।

गन्धोत्तमा (सं॰ स्त्री॰) गंधेन उत्तमा उत्कृष्टा ३ तत्। मदिरा, शराब

गन्धोद (सं॰ क्ली॰) गन्धवासितमुदकं शाकपार्थिववत् समासः उदकस्य उदादेशश्च। गन्धद्रव्य, वासित जल, गन्धजल, गुलाब जल।

"आसिञ्च मार्गं गन्धोदैः" (भागवत ९।११।१८)

गन्धोदक (सं॰ क्ली॰) गन्धवासितमुदकं शाकपार्थिववत् समासः विकल्पपक्षे उदकस्य न उदादेशः। १ गंधद्रव्य वासितजल, गंधजल, गुलाब जल।

२ जैनमतानुसार तीर्थङ्कर वा अरहन्त भगवान्के स्नानका जल, अथवा उनकी मूर्तिके स्नानके जलको गन्धोदक कहते हैं। श्रावक लोग नित्य दर्शन करके, उसको मस्तक और हृदयसे लगाते हैं। तीर्थङ्करके जन्म होते ही इन्द्रका सिंहासन कम्पायमान होता है। इन्द्र तुरतही अवधिज्ञान द्वारा तीर्थङ्करका जन्म जान मध्यलोकमें देवों सहित उपस्थित होता है। नगरमें उत्सव होता है। इन्द्राणी जा कर माताकी सेजसे भगवान्को ले आती है और उनके बदलेमें एक मायामयी बालक रख आती है। यह कार्यवाही गुप्तभावसे की जाती है। फिर उन्हें सुमेरु पर्वत पर पाण्डुक शिला पर विराजमान कर उनका न्हवन किया जाता है। सनत्कुमार और माहेन्द्र तथा अन्यान्य हजारों देव मिल कर १००८ कलशोंसे भगवानको स्नान कराते हैं। उस समय उनके स्नानका जल जिन जिनके देह पर पड़ता है, वे परम्परासे मुक्ति जाते हैं। (जैन आदिपुराण)

कोटिभट्ट श्रीपाल राजाको जब कुष्ठकी व्याधि हुई थी, तब उन्हें प्रजाकी सुविधाके लिये राज्यसे निकल जाना पड़ा था। भाग्यवश वे उस राज्यमें जा पहुंचे जहां मैनासुन्दरीके पिता राजा राज्य करते थे। वे अपनी पुत्रीकी इस बात पर बहुत नाराज थे कि,—"मैं अपने भाग्यसे सुख या दुःख पाती हूं।" बस, इसी बात पर नाराज हो कर उनने मैनासुन्दरी श्रीपालको व्याह दी। बेचारी मैनासुंदरी धर्म पर श्रद्धा रखती हुई अरहन्त भगवानकी पूजा करने लगी और नित्य प्रति जिनेन्द्रकी प्रतिमाका गंधोदक लाकर पतिके शरीरसे लगाने लगी। सौभाग्यवश, थोड़े ही दिनोंमें श्रीपालने कुष्ठरोगसे मुक्ति पाई और मैनासुंदरीके साथ दिगम्बर जैनधर्मको पूर्णतया पालन करता हुआ आनन्दसे जीवन व्यतीत करने लगा और अन्तिम जीवनमें दिगम्बरी दीक्षा धारण कर, केवलज्ञान पूर्वक मुक्ति लाभ किया। (श्रीपालचरित्र)

गन्धोपजीवी (सं॰ पु॰) गंधं गंधद्रव्यं उपजीवति उप जीव णिनि। गंधवणिक्।

"दन्तकारा मृपकारः ये च गन्धोपजीविनः।" (रामा॰ २।०३।१)

गन्धोपल: (सं॰ स्त्री॰) गंधक।

गन्धोल—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़का एक छोटा राज्य। लोकसंख्या प्राय: १३० है। राज्यकी आमदनी २००० रुपयेकी है। जमींदारको २८० रुपये गायकवाड़ महाराजको कर स्वरूप देने पड़ते हैं।

गन्धोलि (सं॰ स्त्री॰) गंधयति गंध बाहुलकात् ओल ततो जातौ ङीष् निपातनात् ह्रस्वः। भद्रमुस्ता, सुगंधि घास, नागर मोथा।

गम्भोली (सं० स्त्री०) गन्धयति अर्दयति । १ हंस २ वरटा, बिरनी ।

गम्रा (हिं० पु०) ईख, ऊख ।

गम्रा बेगम—नवाब अली कुली खाँकी कन्या । अलीकुली खाँ पांचहजारके मनसबदार थे । इनके छः अङ्गुली रहने के कारण लोग इन्हें छङ्गा वा षडङ्गुल कहा करते थे । पहले नवाब मफदरजङ्गके पुत्र सुजाउद्-दौलाके साथ गम्रा बेगमका विवाह सम्बन्ध स्थिर हुआ था, किन्तु किसी कारणसे पिताकी इच्छासे इसने वजीर इमाद-उल्-मुल्क गाजी उद्-दीन् खाँके साथ विवाह किया । यह मुसलमान समाजमें सम्भ्रान्त वंशकी एक विदुषी रमणी थी । बेगमकी बुद्धि और कवित्वशक्ति बहुत दूर तक फैली हुई रही । हिन्दी भाषामें इसकी रचना की हुई बहुतसी कवितायें अद्यापि पश्चिमाञ्चलमें सभ्योंके निकट समादृत हैं । टौल्लुरके निकट नूराबाद ग्राममें सम्राट् आलमगीरके बनाये हुए उद्यानमें ये ११९८ हिजरीको कब्रमें गाड़ी गई थीं । इनकी कवितायें शोजसौदा और मिन्नत प्रभृति कवियोंसे संशोधित हुई थीं ।

गप (हिं० स्त्री०) इधर उधरकी बातें जिसकी सत्यता का निश्चय न हो । वह बात जो सिर्फ मनको प्रसन्न करनेके लिये की जाय ।

गपकना (हिं० क्रि०) चटपट निगलना, झटसे खा लेना ।

गपड़चौथ (हिं० पु०) व्यर्थकी गोष्ठी, वह व्यर्थकी बात चीत जो चार आदमी मिल कर करते हों ।

गपना (हिं० क्रि०) गप मारना, बकना ।

गपिया (हिं० वि०) गप मारनेवाला, मिथ्या बात बोलने-वाला ।

गपिहा (हिं० वि०) गपिया देखो ।

गपोड़ (हिं०) गपोड़ा देखो ।

गपोड़ा (हिं० पु०) अनृत बात, झूठी बात ।

गपोड़बाजी (फा० स्त्री०) झूठ बकवाद ।

गप्प (हिं०) गप देखो ।

गप्पी (हिं० वि०) १ गप मारनेवाला, डींग हाकने वाला । २ मिथ्याभाषी, झूठा ।

गप्फा (हिं० पु०) बड़ा कौर, जो खानेके समय उठाया जाय ।

गफ (हिं० वि०) घना, कठिन, गाढ़ा ।

गफलत (अ० स्त्री०) १ असावधानी, बेपरवाही । २ चेतका अभाव । ३ प्रमाद, भूल, भ्रम ।

गफिलाई (फा० स्त्री०) गफलत देखो ।

गबड्डी (हिं०) कबड्डी देखो ।

गबदी (हिं० पु०) एक प्रकारका छोटा गाछ । इसकी लकड़ी बहुत नरम होती है और शाखायें पत्तियोंसे ढकी रहनेके कारण छाताके सदृश दीख पड़ती हैं । माघ और फागुन मासमें यह सुनहले पीले रङ्गके फूल लिये रहता है । यह पेड़ सिवालिककी पहाड़ियों तथा उत्तरीय अवध, बुंदेलखण्डमें पाया जाता है । इसकी छालसे एक प्रकारका श्वेत गोंद निकलती है ।

गबद (हिं० वि०) जड़, मूर्ख ।

गबर (हिं० पु०) जहाजमें एक तरहका पाल जो सब पालोंसे ऊपर रहता है ।

गबरगंड (हिं० पु०) मूर्ख, अज्ञानी, जड़ ।

गबरहा (हिं० वि०) गोबर मिला, गोबर लगा हुआ ।

गबरू (फा० वि०) १ जवानीकी वह अवस्था जब रेख निकलती हो । २ भोला भाला, सीधा (पु०) ३ दूल्हा, पति, स्वामी ।

गबरून (फा० पु०) एक प्रकारका कपड़ा जो चरखानेसा होता है । इस तरहका वस्त्र लुधियानेमें बुना जाता है ।

गबोना (देश०) कतोला, कतोरा

गब्बर (फा० वि०) १ घमंडी, अहंकारी । २ आलसी । ३ बहुमूल्य । ४ धनी, मालदार ।

गब्भा (पा० पु०) रूईसे परिपूर्ण एक बिछावन ।

गब्र (फा० पु०) पारसका रहनेवाला, पारस देशका अग्निपूजक

गभ (सं० क्ली०) भग पृषोदरादिवत् वर्णविपर्यये साधुः । भग, योनि ।

"आर्हसि गभे पसो निगल्गलीति धारकः ।" वाजसनेयस० २३।२२।

'गभे वर्णविपर्यय आर्षः भगयोनौ' (महीधर)

गभस्ति (सं० पु०) गभ्यते ज्ञायते गम-ड गः विषयः तं बभस्ति भस-क्तिच् । १ किरण, प्रकाश । २ सूर्य । ३ शिव ।

"गभस्ति ब्रह्मवक्त्रश्च ब्रह्मा ब्रह्मविद् ब्राह्मणो गतिः ।" (भारत १३।१७।१२३)

४ स्वाहा, अग्निकी स्त्री । ५ अङ्गुली, उंगली ।

(स्त्री०) गच्छति प्राप्नोति गम-भ गोऽग्नि: तं वभत्त्यनया। वाहुयुगल, दोनों बाँह। "पृथु करस्ना बहुला गभस्ति" ऋक् ६।१९।३) 'गभस्ति बाहू।' (सायण) हस्त, हाथ।

"पाणी वै गभस्ति पाणिभ्यां ह्येनं पावयति" (शतपथब्रा० ४।१।१।९)

गभस्तिनेमि (सं० पु०) गभस्तय एव चक्रं तस्य नेमिरिव। परमेश्वर।

"गभस्तिनेमि: सत्वस्थ:।" (विष्णुस०)

गभस्तिपाणि (सं० पु०) गभस्ति: पाणिरिवास्य रसाकर्षणकर्मणि। सूर्य।

गभस्तिमत् (सं० पु०) गभस्तयो भूम्ना सन्त्यस्य गभस्ति-मतुप्। १ सूर्य।

'विभावसु: सारथिनेव वायुना घनव्यपायेन गभस्तिमानिव।'

(रघु० ३।३७)

(क्ली०) गभस्तयो नित्यं सन्त्यत्र गभस्ति नित्ययोगे मतुप्। २ पातालविशेष, सप्त पातालोंके अन्तर्गत एक। इसका दूसरा नाम तलातल है। (शब्दरत्नावली) पाताल देखो। ३ द्वीपविशेष, एक द्वीपका नाम। (त्रि०) ४ किरणयुक्त, जिसमें प्रकाश हो।

गभस्तिहस्त (सं० पु०) गभस्तयो हस्ता इव रसाकर्षणाय यस्य, बहुव्री०। सूर्य।

"गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेवनमस्कृत:।" (शाम्बपु०)

गभस्तीश (सं० पु०) काशीस्थ शिवलिङ्गविशेष। काशी देखो।

गभि (सं० त्रि०) गच्छति नीरमत्र। गभीर, गहिरा।

गभिषज (सं० त्रि०) गभो सज्जते सञ्ज-क्विप्। गभीर स्थायी, जो गहरे स्थानमें अवस्थित हो।

"तेषां हि धाम गभिषक् समुद्रियम्।" (अथर्ववेद ७।७।१)

गभीका (सं० स्त्री०) गभीरे कायति कै-क पृषोदरादिवत् लोपे साधु १ वृक्षविशेष, गाम्भार, गभारीका पेड़। गभीकाया: फलं गभोका अण् तस्य लोप:। हरीतक्यादिभ्यश्च। पा ४।३।१६७। २ गाम्भारका फल।

गभीर (सं० त्रि०) गच्छति जलमत्र गम-ईरण भयान्तादेश:। १ निम्नस्थान, गहरा। २ अतलस्पर्श, जिसका तला न मिले ३ मन्दध्वनि, धीमी आवाज। ४ गहन, घना। ५ दुष्प्रवेश, जिसमें जल्दी घुस न सके। ६ दुर्बोध, गूढ़, कठिन। ७ प्रचण्ड, प्रबल, तेज।

"कालेन सर्वत्र गभीररंहसा।" (भागवत १।५।१८)

गभीरक (सं० त्रि०) गभीर एव स्वार्थे कन्। गभीर देखो।

गभीरचेतस् (सं० त्रि०) गभीरं दुष्प्रवेशं चेत: चित्तवृत्तियस्य, बहुव्री०। जिसका मानसिक भाव अत्यन्त गभीर या गहिरा हो।

गभीरवेपस् (सं० त्रि०) जिसका कांपना साधारण रूपसे नहीं मालूम पड़ता हो।

"त्व सुपर्णो अतरिक्षाप्रव्यद् गभीरवेपा: असुर: सुनीथ:।"

(ऋक् १।३५।७। 'गभीरवेपा: गम्भीरकम्पन।' (सायण)

गभीरा (सं० स्त्री०) १ वाक्य। २ पृथिवी।

गभीरात्मन् (सं० पु०) गभीर: दुर्ज्ञेय आत्मा स्वरूपं यस्य, बहुव्री०। परमेश्वर।

"चतुरस्रो गभीरात्मा।" (विष्णुसहस्रनाम)

गभीरिका (सं० स्त्री०) गभीरा संज्ञार्थे कन्-टाप् इत्वञ्च। १ बृहत् ढाक, बड़ा ढोल या घण्टा। २ मन्दध्वनियुक्ता स्त्री, वह औरत जिसकी आवाज बहुत धीमी हो। ३ एक तरहकी आँखकी बीमारी। ४ एक नदीका नाम।

गभुआर (हिं० वि०) गर्भका बाल, जन्मके समयका रखा हुवा बाल। २ जिसके सिरके जन्मके बाल न कटे हों, जिसका मुंडन न हुवा हो। ३ नादान, बहुत छोटा, अनजान।

गभुवार (वि०) गभुआर देखो।

गभोलिक (सं० पु०) मसूर, एक प्रकारका अनाज।

गम (सं० पु०) गम-अप्। १ पराजयकी इच्छासे गमन। २ पथ, मार्ग, राह। ३ द्यूतक्रीड़ाविशेष, जुवेका एक खेल। ४ गमन, यात्रा। ५ अपर्यालोचित पथ, वह मार्ग जो कभी नहीं देखा हुआ हो। गम्यते गम कर्मणि अच्। ७ गम्यमान। (पु०) ८ उपभोग, मैथुन।

"ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागम:।" (मनु० ११।५४)

गम (फा० पु०) १ दुःख, शोक, रंज। २ चिन्ता, फिक्र।

गमक (सं० त्रि०) गमयति गम-णिच्-ण्वुल्। १ गमयिता, जो गमन करता हो, जानेवाला। २ बोधक, सूचक।

"यत् पौढत्वमुदारता च वचसां यच्चार्थतो गौरवं।

तच्चेदस्ति तत्स्तदेव गमकं पाण्डित्यवैदग्ध्ययो:॥" (मालतीमाधव)

३ स्वरभेद, एक स्वरके श्रुतिप्रचय प्रकाशको नाम

गमक है। इसके सात भेद हैं। यथा कम्पित, स्फुरित, लीन, भिन्न, स्थविर, आहत और आन्दोलित है। गायकको पौष और माघ मासमें एक प्रहर रात्रिके रहने पर जलमें प्रवेश करना और गमककी साधना करनी चाहिये। (सङ्गीतदामोदर)

मतान्तरमें गमकके २२ भेद हैं। यथा—अपूर्वाहत, अस्थित, अयोघर्षण, अस्थाहत, आन्दोलित, आहत, आघर्षित, उत्ताहत, कम्पित, करोरि, कर्णोमस्थान, घर्षित, जयत, ढाला, तुरित, निष्पत, पुरोहत, प्रस्थाहत, वायमि, मुद्रित, शान्त, सुवाला और सोमस्थान। (संगीतशास्त्र)

४ तबलेका गम्भीर शब्द।

गमकारित्व (सं० क्लो०) रसभ।

गमकोला (हिं० वि०) महंकनेवाला। सुगंधित।

गमखोर (फा० वि०) सहिष्णु, सहनशील।

गमखोरी (फा० स्त्री०) सहिष्णुता, सहनशीलता।

गमगीन (फा० वि०) दुःखी, खिन्न, उदास।

गमत (सं० पु०) १ रास्ता, मार्ग। २ व्यवसाय, पेशा, रोजगार

गमतखाना (फा० पु०) नावमें एक स्थान जहां पानी छेदों द्वारा जमा होता है।

गमतरी (फा० स्त्री०) गमतखाना।

गमता (गामित्त) भील जातिकी एक श्रेणी। ये गायकवाड़से लेकर खान्देश तथा सूरतके उत्तरपूर्वमें पाये जाते हैं। इनकी संख्या लगभग ५२०१८ होगी। इनमेंसे थोड़े बाल मुड़वाया करते और कुछ लम्बे लम्बे बाल रखते हैं। स्त्रियां अपने अपने बड़े बड़े बालोंको सजाए रहती हैं। ये बहुत संकीर्ण झोपड़ोमें रहते हैं। झोपड़ोकी दिवालें बाँसको पट्टियोंकी बनो रहती और उसमें मिट्टीका लेप दिया रहता है तथा घाससे छायी रहती हैं। इन लोगोंका प्रधान भोजन रोटी है। ये भेड़ा, बकड़ा, खरगोश, तथा चिड़ियां भो खाते हैं। लेकिन ये गोमांस अथवा किसो मृत जानवरका मांस छूते तक भो नहीं हैं। पुरुषके मस्तक पर एक पगड़ी कमरमें सिर्फ एक लंगोटो और हाथको कलाईमें चाँदी या तांबेके आभूषण रहते हैं। स्त्रियां चोली और घंघरा पहनती और सिरसे एक दूसरा वस्त्र ढकलेती हैं। ये कानोंमें तांबेकी कनेठियां और गलेमें कांचकी माला पहनती हैं। छोटी छोटी बालिकायें पैरमें तांबेकी ठोस पैंजनो रखती हैं। ये खेती तथा लकड़ी काट कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। ये बाघदेव, सामलदेव और देवलोमाताकी पूजा करते हैं। ये ब्राह्मणोंकी सेवा टहल नहीं करते यहां तककी ये ब्राह्मणोंको प्रणाम भो नहीं करते हैं। उन्होंमेंसे एक पुरोहितका काम चला लेता है। जब कोई सन्तान जन्म लेती तो उसमे छठे दिन ये छठो देवताकी पूजा करते तथा अपने कुटुम्बोंको शराब इत्यादि पिलाते हैं।

वृद्धा स्त्री नवजात शिशुका नाम रख देती है। बारह वर्षकी अवस्थामें अर्थात् जब लड़का ताड़ वृक्ष पर चढ़नेमें समर्थ हो जाता तब इसका विवाह करते हैं। विवाह सम्बन्ध निश्चित हो जाने पर ये चार या पांच रुपयेकी ताड़ी खरीद लाते और अपने जात भाइयोंको पिलाते हैं। सिर्फ २५) रु०में इन लोगोंका विवाह हो जाता है। इनमें बहुविवाह तथा विधवाविवाहकी प्रथा प्रचलित है। ये शवको जला देते हैं। धनीपुरुष चार दिनोंमें तथा गरोव एक या दो मासमें अन्त्येष्टिक्रिया करते हैं।

गमथ (सं० पु०) गम अधिकरणे अथ। १ पथ, रास्ता। गम कर्त्तरि अथ। २ पथिक, बटोही, मुसाफिर। ३ व्यापार, पेशा। ४ आमोद-प्रमोद।

गमन (सं० क्लो०) गम भावे ल्युट्। १ क्रियाविशेष।

"प्रसारणञ्च गमनं कर्माण्येतानि पञ्च च।" (भाषापरिच्छेद)

२ पराजयकी इच्छासे गमन, कूच। इसका पर्याय—यात्रा, व्रज्या, अभिनिर्याण, प्रस्थान, गम, प्रयाण, प्रस्थिति, यान और प्राणन हैं। ३ यात्रा।

"न च मे रोचते वीर गमनं दण्डकां प्रति।" (रामायण ३।१।११)

४ उपभोग, मैथुन।

'अगम्यागमनाच्चैव अभक्ष्यस्य च भक्षणात्।' (तिथितत्त्व)

गम करणे ल्युट्। ५ जिसके द्वारा गमन किया जाय, रथ, शकट प्रभृति।

गमनना (अ० वि०) जाना।

गमनपत्र (सं० पु०) वह पत्र जिसके द्वारा एक जगहसे दूसरी जगह जानेका अधिकार मिलता हो, चालान।

गमनपुर—बम्बई प्रदेशके महीकान्ताका एक छोटा राज्य, यह कटोसनके सामन्तके अधीन है। ये गायकवाड़ महाराजको १३८) रु० १० आने ८ पाई वार्षिक कर देते हैं।

गमना (अ० पु०) जाना चलना।

गमनाक (फा० वि०) शोकपूर्ण, दुःखभरा।

गमनागमन (सं० क्ली०) गमनञ्चागमनञ्च, इतरेतरद्वन्द्व। जाना और आना।

गमनार्ह (सं० त्रि०) गमनस्य अर्हो योग्यः, ६-तत्। जानेके लिये उपयुक्त।

गमनीय (सं० त्रि०) गम्य, जाने योग्य।

गमयित (सं० पु०) गम णिच् तृच्। गमक देखो।

गमला (फा० पु०) एक प्रकारका मट्टी या दूसरे धातुका पात्र। इसमें फूलोंके पेड़ और पौधे शोभाके लिये रखे जाते हैं। २ लोहे या चीनी मट्टीका बना हुवा एक प्रकारका बरतन जिसमें पाखाना फिरते हैं।

३ तैलङ्ग देशीय वैश्य जातिभेद। यह मद्यका व्यापार करते हैं। परन्तु बहुतसे गमले इस कामको छोड़ करके अन्य प्रकारके व्यवसायमें भी लग गये हैं। इन्हें वैश्य-वर्ण माना जाता है।

गमागम (सं० पु०) गमश्च आगमश्च, इतरेतरद्वन्द्व। १ चराचर, संसार। २ गमनागमन, आना जाना।

गमाना (हिं० क्रि०) खोना, गंवाना।

गमार (हिं० वि०) गांवका रहनेवाला। गंवार, देहाती।

गमित (सं० त्रि०) गम णिच् क्त। १ प्रापित, पाया हुआ। २ ज्ञापित, जाना हुआ। ३ अतिवाहित, बिताया हुआ।

गमिन् (सं० त्रि०) गमनकर्त्ता, जानेवाला।

गमिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन गन्ता गन्तृ-इष्ठन्। शीघ्रसे चलनेवाला, जो बहुत चल सकता हो।

गमी (अ० स्त्री०) १ शोककी अवस्था या काल। २ एक प्रकारका शोक जो किसी मनुष्यके मरने पर किया जाता है। ३ मृत्यु, मरण।

गम्बात—सिन्धुप्रदेशके खैरपुर राज्यका एक नगर। यहांके जुलाहे कपाससे एक प्रकारके देशी कपड़ेका थान प्रस्तुत करते हैं।

गम्बोल—पञ्जाबके बन्नु जिला हो कर प्रवाहित एक नदी, यह अक्षा० ३२° ३७´ ३०´´ उ० और देशा० ७१° ६´ १५´´ पू०में अवस्थित है। यह नदी अफगानिस्तानमें मङ्गोल जातिके पार्वत्य आवासस्थानसे उत्पन्न हो कर दावाड़ अधित्यकामें पूर्व मुख आकर लक्ष्मीनगरके दक्षिण कूरम-नदीसे आ मिली है। उत्पत्ति स्थानसे मरवत् तहसील पर्यन्त यह टोकोनदी नामसे मशहूर है। इस नदीका जल सुस्वादु और स्वास्थ्यकर है। तहसीलके निकट कई एक झरने हैं। नदीके दोनों तीरोंकी जमीन बालुकामय है, इसलिये खेती करनेकी विशेष सुविधा नहीं है वर्षा-कालमें वृष्टिके समय इसकी गहराई ४½ फुटसे अधिक नहीं रहती है।

गम्भन् (सं० त्रि०) गम बाहुलकात् अन् भुगागमश्च। गम्भीर, गहरा।

"अपां गम्भन् सीद मात्वा सूर्योऽभिताप्सीन्माग्नि र्वैश्वानरः।"
(वाजसनेय० १-१२०) 'गम्भन् गम्भनि २ गभीरे स्थाने' (महीधर)

गम्भर (सं० क्ली०) गम-विच्, गमं निम्नगतिं बिभर्त्ति भृ-अच्, ६-तत्। जल, पानी।

"उदन्येव गम्भरेषु प्रतिष्ठा" (ऋक् १०।१०६।९)
'गम्भरेषु गहनेषु जलेषु।' (सायण)

गम्भार—पञ्जाब प्रदेशका एक पार्वतीय जलस्रोत। यह अक्षा० ३०° ५२´ उ० और देशा० ७७° ८´ पू०में हिमालय श्रेणीसे निकल कर उत्तर-पश्चिमकी ओर बहती हुई सुवाथुके सैनिक-निवासको अतिक्रम करके शतद्रु नदीसे मिल गई है। इस नदीकी गहराई अल्प होनेके कारण नावके लिये सुविधा नहीं है, किन्तु वर्षाकालमें बहुत बाढ़ आ जाती है। सुवाथुसे सिमला पहाड़ पर जानेकी राह पर इस नदीके ऊपर एक पुल निर्मित है।

गम्भारिक (सं० स्त्री०) गम-विच् गमं निम्नगतिं बिभर्ति भृ-ण्वुल् टाप् अत इत्वं। गंभारीवृक्ष, गमारीका पेड़।

गम्भारी (सं० स्त्री०) गमः गतिभेदं बिभर्त्ति अण् उपपदस० गौरादित्वात् ङीष्। वृक्षविशेष। (Gmelina arborea) इसका पर्याय—सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, काश्मर्य, कृष्णवृन्तिका, कृष्णवृन्ता, हीरा, स्निग्धपर्णी, सुभद्रा, कम्भारी, गोप-

भद्रा, विदारिणी, महाभद्रा, मधुपर्णी, स्वकभद्रा, कृष्णा, श्वेता, रोहिणी, गृष्टि, मधुमती, सुफला, काश्मीरी, भद्रा, गोपभद्रिका, कुमुदा, सदाभद्रा, कटफला, सर्वतोभद्रिका, क्षीरिणी, स्थूलत्वचा और महाकुमुदा है। इसका गुण—कटु, तिक्त, गुरु, उष्ण, भ्रम, शोथ, त्रिदोष, विषदाह, ज्वर, तृष्णा और रक्तदोषनाशक हैं।

इसके फलके गुण-तिक्त, गुरु, ग्राही, मधुर, केशहितकर, रसायन, मेध्य, शीतल, दाह और पित्तनाशक है। इसके मूलके गुण—अतिशय उष्ण, कषाय, तिक्त, उष्णवीर्य, मधुर, गुरु, दीपन, पाचन, भ्रम, तृष्णा, आमशूल, अर्श, विषदाह और ज्वरनाशक है। (भावप्रकाश)

गम्भिष्ठ (सं० त्रि०) गम्भन्-इष्ठन्। गम्भीरतम, बहुत गहरा।

"गम्भिष्ठं शर्म च एतत् पतति।" (शतपथब्रा० ७।५।१।८)

गम्भीर (सं० त्रि०) गच्छति जलमत्र गम-ईरन् निपातनात् भुगागमः। १ निम्न स्थान, गभीर, गहरा।

"भूतगभीर खनोखनोलिम।" (माघ)

२ मन्द्र शब्द, मेघकी आवाज।

"स्निग्धगम्भीरनिर्घोषमेकस्यन्दनमास्थितौ।" (रघु० १ स०)

(पु०) ३ जम्बीर, जंबीरी नोबू। ४ पद्म, कमल। ५ ऋक् मन्त्रविशेष, ऋग्वेदमें एक प्रकारका मन्त्र।

"स्वरे सर्वे च नामो च विषु गम्भीरता प्रभा।" (श्रुति)

गम्भीरक (सं० पु०) वृक्षविशेष, फणिज्झकवृक्ष, सुगन्ध तुलसीका पेड़।

गम्भीरज्वर (सं० पु०) एक प्रकारका ज्वर।

"गम्भीरस्तु ज्वरो ज्ञेयो ह्यन्तर्दाहेन तृष्णया।
आनद्धत्वेन दोषाणां श्वासकासोद्गमेन च॥" (निदान)

गम्भीरदृष्टि (सं० पु०) नेत्ररोगविशेष, आँखकी एक बीमारी।

गम्भीरनाथ—एक गुहा मन्दिर। बम्बई प्रदेशके पूना जिलान्तर्गत खण्डाल विभागमें वेरान पहाड़के ऊपर अवस्थित है। खण्डाल नगरसे इस मन्दिर पर पहुंचनेमें प्रायः ६ घण्टे लगते हैं। पहाड़ काट कर यह मन्दिर प्रस्तुत किया गया है।

गम्भीरपाक (सं० पु०) अन्तःपाक।

गम्भीरमालिनी—जैनमतानुसार विदेह क्षेत्रकी विभङ्गनदियोंमेंसे एक बृहत् नदी।

गम्भीरराय—एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि। इन्होंने नूरपुरके इतिहासको हिन्दी कवितामें रचना की है। १६२८से १६५८ई०तक मध्यप्रदेशके अन्तर्गत नूरपुरके राजा जगत् सिंह और दिल्ली बादशाह शाहजहांके बीच लड़ाई छिड़ी थी। इन्होंने युद्धवृत्तान्त ज्वलन्त भाषाको कवितामें वर्णन किया है।

गम्भीरवेदिन् (सं० पु०) गम्भीरं गहनं आकुलकात् परं वेत्ति गम्भीर-विद-णिनि। १ एक प्रकारका हाथी।

"चिरकालेन यो वेत्ति शिक्षां परिचितामपि।
गम्भीरवेदी विज्ञेयः स गजो गजवेदिभिः॥" (राजपुत्रीय हस्तिशिक्षा)

जो हाथी बहुत देरके बाद परिचय, शिक्षा या उपदेश समझ सकता है उसको गम्भीरवेदी कहते हैं। इसका पर्याय—अङ्कुशदुर्धरचालक, व्यालक और अवमताङ्कुश है।

"स प्रतापं महेन्द्रस्य मूर्ध्नि तीक्ष्णं न्यवेशयत्।
अङ्कुशं द्विरदस्येव यन्ता गम्भीरवेदिनः॥" (रघु० ४।३९)

२ मोटी बुद्धि।

गम्भीरवेदिता (सं० पु०) गम्भीर-विद्-तृच्। अशान्तहस्ती, असावधान हाथी।

"त्वग्भेदात् शोणितस्रावात् मांसस्य क्षयनादपि।
आत्मानं यो न जानाति स स्याद् गम्भीरवेदिता॥" (रघुटीका मल्लिनाथ)

अर्थात् जिस हाथीके चर्मसे रक्त निकलने अथवा मांस काट डालने पर भी वह कुछ नहीं जानता हो इसको गम्भीरवेदिता कहते हैं।

गम्भीरिका (सं० स्त्री०) १ नेत्ररोगविशेष। इसका लक्षण

"दृष्टिर्विरूपा श्वसनोपसृष्टा सङ्कोचमभ्यन्तरतः प्रयाति।
रुजावगाढा च तमक्षिरोगं गम्भीरिकेति प्रवदन्ति धीराः॥" (भावप्रकाश)

२ बृहत् ढाल, बड़ी ढाल।

गम्य (सं० त्रि०) गम्-यत्। १ गमनीय, जाने योग्य, गमन योग्य। २ प्राप्य, लभ्य, पाने योग्य।

"ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य धिष्ठितम्"। (गीता १३।१७)

३ गमनयोग्य, गमन करने योग्य, सम्भोग करने लायक।

"गम्यान्यपि च तीर्थानि कीर्तितान्यगमानि च (भारत ८३।७५)

गम्यमान (सं० त्रि०) गम कर्मणि शानच्। १ ज्ञायमान, जानने योग्य। २ जिस ग्राममें जाना हो।

गम्या (सं० स्त्री०) गम-यत्-टाप्। सम्भोगार्हा स्त्री, वह

स्त्री जिसका संभोग शास्त्र विरुद्ध नहीं है।

"अभिकामां स्त्रियं यश्च गम्यां रहसि याचितः।" (भारत १।८३।३५)

गम्यादि (सं० क्लो०) निपातनसे सिद्ध इनि प्रत्ययान्त कई एक शब्द। गमी, आगमी, भावी, प्रस्थायी, प्रतिरोधी, प्रतियोधी, प्रतिबोधी, प्रतियायी और प्रतिषेधी इन सबको गम्यादि कहते हैं। इनके योग होनेसे द्वितीया-तत्पुरुष समास होता है।

गयंद (हिं० पु०) १ बड़ा हाथी २ दोहेका दशवां भेद जिसमें १३ गुरु और २२ लघु होते हैं।

गय (सं० पु०) १ रामायणके अनुसार एक वानरका नाम रामचन्द्रकी सेनाका एक सेनापति था।

(भारत ३।२८३ अ०)

२ हविर्धान राजाके पुत्र। (भागवत ४।२४।७) ३ प्रियव्रत वंशीय एक राजाका नाम। ये अत्यन्त उदारचित्त और धर्मनिष्ठ थे। (भागवत ५।१५।६।१४)

४ एक राजर्षि, इनके पिताका नाम अमुर्तरय था। इन्होंने शतवर्ष पर्यन्त केवल आहुतिका अवशेष भक्षण कर अग्निको उपासना की थी। अग्नि संतुष्ट हो कर वर देनेके लिये उपस्थित हुए, इस पर गयराजने कृताञ्जली हो कहा—"हुताशन! यदि मुझ अधमके ऊपर आप सन्तुष्ट हैं, तो मुझे वेदका अधिकार प्रदान कीजिये। मुझे वेद पढ़नेकी बहुत अभिलाषा है एवं जिससे मैं धर्मानुसार विपुल धनका अधीश्वर, शत्रुकुलका निहन्ता, धनरत्न ब्राह्मणोंको दान देनेमें यत्नवान् तथा सुखी बनूं। वैसाही वर प्रदान कीजिये।" 'एवमस्तु' ऐसा कह कर अग्नि चले गये। गयराजने अग्निसे वर पाकर समस्त विपक्षदलोंको निर्मूल करते हुये सारी पृथिवीके ऊपर अपना आधिपत्य फैलाया। गयराजकी धर्मनिष्ठा दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी। एक समय इन्होंने एक बृहद् यज्ञका अनुष्ठान किया। वैसा यज्ञ और किसी राजाने कभी नहीं किया था। उस यज्ञकी सुवर्णमय वेदोकी लम्बाई ३० योजन तथा चौड़ाई ३६ योजनकी बनाई गई थी। इस यज्ञ फलसे एक वटवृक्ष चिरजीवी हुवा जो अक्षयवटसे प्रसिद्ध है। यज्ञकी समाप्ति होने पर ब्रह्म नामका एक सरोवर निर्माण किया गया था। (भारत द्रोण ६६ अ०)

५ धन, दौलत। ६ अपत्य, सन्तान। ७ गृह, घर। (ऋक् १०।६६।३) ८ अन्तरिक्ष, आकाश। (ऋक् ५।४४।७) ९ गृहगत प्राणी। (ऋक् ६।७४।२) १० स्वस्थान, अपनास्थान, खास जगह। (ऋक् १०।९९।५) ११ प्राण। (शतपथ ब्रा० १४।८।१५।७) १२ गया प्रदेश। (भारत शल्य० १९) १३ असुर-विशेष, गयासुर। गया देखो।

गयदास—एक वैद्यक ग्रन्थकार।

गयनाल (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी तोप जिसे हाथी खींचता है। गजनाल।

गयरसपूर—मध्यभारतमें भिलसाके निकट एक स्थान। यहां अति प्राचीन मन्दिरका भग्नावशेष देखा जाता है। बहुतोंका अनुमान है यह ग्यारहवीं शताब्दीमें जैनोंसे निर्मित किया गया था।

गयल (फा० स्त्री०) गैल देखो।

गयली (देश०) एक प्रकारका पेड़। यह मध्यम आकारका होता और अवध, अजमेर, गोरखपुर और मध्य प्रदेशमें पाया जाता है। इसके फल खाये जाते हैं। छिलका चमड़ा सिझानेके काममें लाया जाता है। इसकी लकड़ी खेलोंके संगहे और गाड़ी बनानेके काममें आती है।

गयवा (देश०) एक प्रकारका मछली जिसे मोहेली भी कहते हैं।

गयशात (सं० पु०) एक प्रधान बौद्धाचार्य।

गयशिरस् (सं० क्लो०) गयस्य शिरः, ६ तत्। १ गयाके निकटस्थ पर्वतविशेष, एक पहाड़का नाम जो गयाके समीप है। २ गयासुरका मस्तक। भारत, वन, गया देखो। ३ अन्तरीक्ष, आकाश।

गयसाधन (सं० त्रि०) गयस्य साधनं, ६-तत्। गृहका साधन जो घरके धनादिको बढ़ाता हो।

"समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम्।" (ऋक् ९।१०४।२)

'गयसाधनं गृहस्य साधनम्।' (सायण)

गयस्फान (सं० त्रि०) स्फायी वृद्धौ अन्तर्भूतण्यर्थात् ल्युट् यलोप, गयस्य धनस्य स्फानो वर्द्धकः। धन वर्द्धनकारक, धनका बढ़ानेवाला।

"गयस्फानो अमीवहा" (ऋक् १।९१।१२)

'गयइति धननाम गयस्य वर्द्धयिता।' (सायण)

गया—विहार और उड़ीसा प्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० २४° १७' तथा २५° १९' उ० और देशा० ८४° ०-

एवं ८६° ३´ पू०के बीच विद्यमान है। गयाका क्षेत्रफल ४७१२ वर्गमील है। इसके उत्तर पटना जिला, पूर्व मुङ्गेर तथा हजारीबाग, दक्षिण हजारीबाग और पलामूं और पश्चिमको शाहाबाद है। गया जिलेका दक्षिण भाग पहाड़ी है। दुर्वासा ऋषि और महाबर प्रधान पर्वत है। पुनपुन, सोन आदि कई नदियां छोटानागपुरके पहाड़ोंसे निकल इस जिलेमें उत्तरको बहती हैं। फल्गु पुनपुनकी सहायक नदी है। यह दोनों धाराएं हिन्दू शास्त्रानुसार परम पावन हैं और गयाके प्रत्येक तीर्थ-यात्रीको इनमें स्नान करना पड़ता है। बारूं और डिहरीके बीच सोन नदी पर पत्थरका धरण लगा है। ठीक इसी धरण पर नहरोंका निकास और धरणके नीचे रेलवेका बहुत बड़ा पुल है।

पहले पटना और गया दोनों विहार सूबामें लगते थे। १७६५ ई०को अङ्गरेजोंको मिले। १८६५ ई०को गया पटनासे अलग किया गया। १८५७ ई०के जुलाई मास दानापुरके सिपाहियोंने बलवा करके शाहाबादकी राह ली थी। जब एक अङ्गरेजी फौज, जो उनसे लड़ने गयी थी, बुरी तौरसे हारी, पटनाके कमिश्नरने अपने सब निम्नस्थ पदाधिकारियोंको दानापुर हट आनेकी अनुमति दी। उस समय गयामें कुछ अङ्गरेज और सिख सिपाही थे। पटना कमिश्नरकी आज्ञासे वह गयामें ७ लाखका खजाना छोड़ चल दिए, किन्तु कुछ सोच समझ करके लौट पड़े। दूसरी बार जब लोग खजाना ले करके फिर चलने लगे, उनके ऊपर आक्रमण हुआ। किन्तु वह आक्रमणकारियोंको परास्त करके सकुशल कलकत्ते पहुंच गये।

बोधगया गया नगरसे ७ मील दूर दक्षिणको अवस्थित है। यहां और पुनावानमें बहुतसी बौद्ध मूर्तियां मिलती हैं। दूसरे दूसरे स्थानोंमें भी बौद्धधर्मके निदर्शन विद्यमान हैं। सीतामढ़ीमें एक प्राचीन गुहा है। कहते हैं, सीताने वहीं वनवासावस्थामें लवको प्रसव किया था। रजौलीके सुन्दर पर्वतों और उपत्यकाओंकी भी अनेक वर्णनाएं मिलती हैं। अफसरमें एक वराह-मूर्ति विद्यमान है।

गयाकी लोकसंख्या प्रायः २०५८८३ है। भाषा विहारी मगही होती है। परन्तु अब हिन्दीका भी प्रचार होने लगा है। सपही, सिङ्गर, बसरी, चतकरी और बेलममें अभ्रककी खानि है। पचम्बा आदि कई स्थानोंमें कितना ही लोहा मिलते भी निकाला नहीं जाता। मकान और सड़क बनानेके लिये पहाड़ोंसे पत्थर निकालते हैं। काले पत्थरके गहने, बर्तन और मूर्तियां बनती हैं। जहानाबादमें शोरा तैयार होता है।

इस जिलेमें लाख, चीनी, टसरी तथा सूती कपड़ा, पीतलके बर्तन, सोने-चांदीके गहने, कम्बल, नमदा और कालीन प्रस्तुत किये जाते हैं। पहले जमानेमें कागज भी बहुत बनता था। शिक्षामें गया जिला पीछे है।

२ विहार और उड़ीसा प्रदेशके गया जिलेका उप-विभाग। यह अक्षा० २४° १७´ तथा २५° ५´ उ० और देशा० ८४° १७´ एवं ८५° २४´ पू०के बीच अवस्थित है। इसका रकबा १८०५ वर्गमील और आबादी लग-भग ८३२४४२ है।

३ विहार और उड़ीसा प्रान्तके गया महकुमाका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४° ४८´ उ० और देशा० ८५° १´ पू०में फल्गु नदीके वाम तट पर अवस्थित है। गया नगर दो भागोंमें विभक्त है। उनमें एकको पुराना शहर और दूसरेको साहबगञ्ज कहते हैं। पुराने नगरमें जहां विष्णुपदका सुप्रसिद्ध मन्दिर और दूसरे कई पवित्र स्थान हैं, केवल गयावाले पण्डा ही रहते हैं। गयाकी लोकसंख्या कोई ७१२८८ होगी।

भागवतमें लिखा है कि त्रेतायुगको वहां गय नामक एक राजा रहता था। उसने अपने तपोबलसे यह वर पाया—जिसको उसने हाथ लगाया, परलोक पहुंचाया। यमको इस पर डाह लगा और उन्होंने देवता-ओंसे जा करके कहा कि उनका भविष्य सङ्कटापन्न था। वह आपसमें विचार करके गयके पास गये और उससे उसका शरीर यज्ञ करनेको मांग लिया। उसका जहां शिर पड़ा, गया नगर बना है। फिर विष्णुने प्रसन्न हो करके यह वर दिया था—तुम्हारे शिर पर रखी हुई शिला जगत्में परमपावन शिला होगी और देवता, इस पर विश्राम करेंगे; इस स्थानका नाम गयाक्षेत्र पड़ेगा और जो कोई यहां श्राद्ध तर्पण आदि करेगा, अपने पूर्वजों-

के साथ ब्रह्मलोक पहुंचेगा। भारतके विभिन्न प्रान्तोंसे असंख्य तीर्थयात्री प्रतिवर्ष गयामें श्राद्ध तर्पण करने आते हैं। यहां यात्रीको ४५ स्थानों पर पिण्डदान करना पड़ता है। इनमें आजकल लोग ७ या २ ही स्थान देख करके चले आते हैं। ठोस चट्टान पर बना विष्णुपद मन्दिर गयामें सबसे बड़ा है। कहते हैं, ई० १८वीं शताब्दीको होलकरकी विधवा रानी अहल्याबाईने यह मन्दिर किसी पुराने मन्दिरके स्थानमें बनवाया था। गयावाल पण्डा ही इस मन्दिरके मौरूसी पुजारी हैं। वह यात्रियोंसे यथाप्राप्य धन मांग करके आशीर्वाद देते हैं। विष्णुपाद मन्दिरमें जा पूजा अर्चना न करनेसे गया-यात्रा असफल होती है।

प्रत्नतत्त्ववित् कनिङ्गहाम, राजा राजेन्द्रलाल और विलकाण हण्टर साहबके मतमें गयाक्षेत्र पहले हिन्दू-तीर्थ जैसा न गिना जाता था, केवल प्रधान-बौद्ध तीर्थ जैसा प्रसिद्ध रहा, बौद्धोंका अध:पतन होने पर हिन्दुओं-ने उनकी कीर्तियों पर अपना वर्तमान गयाधाम स्थापित किया। परन्तु उनका मत समीचीन जैसा नहीं समझ पड़ता। कारण बौद्ध प्राधान्य यहां तक कि बुद्ध जन्मके पहलेसे ही गया भारतवासियोंका एक प्रधान प्राचीन तीर्थ है और पितृपुरुषोंको पिण्ड देनेके लिये एक मात्र पुण्यस्थान जैसा प्रसिद्ध है। वाल्मीकि रामायण (अयोध्या १०७।११-१२) में लिखा है, कि—सुनते हैं कि गया प्रदेशमें किसी धीमान् और यशस्वी यजमानने पितृलोक-के प्रति उद्देश करके यह श्रुति गायी थी 'सन्तानको इसी कारण पुत्र कहते हैं कि वह पिताको पुत् नामक नरकसे बचाता और सर्वतोभावसे रक्षा लगाता है।' लोग इसीसे चाहते कि उनके नानाविद्याओंमें पारदर्शी बहुतसे गुणवान् पुत्र हों और उनके कोई न कोई गया जावे। महर्षि याज्ञवल्क्यने (याज्ञवल्क्य स्मृति १।२६०) लिखा है कि गयामें श्राद्धकालको जो दिया जाता, अनन्तफल पहुंचाता है। इसी प्रकार महाभारत (वन ८४,८७,९५ अ०; अनुशासन २५ अ०) हरिवंश आदि ग्रन्थोंमें भी गयातीर्थका उल्लेख है।

गयाकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें प्राचीन ग्रन्थोंमें भी मत-भेद लक्षित होता है। महाभारतके मतमें अमूर्तरयाके पुत्र राजर्षि गयने यहां प्रचुरान्न और भूरिदक्षिण नामक कोई यज्ञ किया था। इस यज्ञमें शत सहस्र अन्नाचल तथा घृतकुल्याएं बनीं, सैकड़ों दहीकी नदियां बहीं और लाखों उत्तमोत्तम व्यञ्जनप्रवाह प्रवाहित हुए। राजर्षि गय याचकोंको प्रति दिन ऐसे ही समारोहसे अन्न देते और ब्राह्मणोंको छोड़ करके दूसरे लोग भी बहुत प्रकार-के अन्नव्यञ्जन खा लेते थे। दक्षिणा प्रदान कालको वेदध्वनिसे गगन स्पर्श किया, अन्य कोई शब्द कर्णगोचर न हुआ। राजर्षि गयने जिस समारोहसे यज्ञ किया, कभी किसीने किया न था और ऐसा भी नहीं समझ पड़ता आगे कोई करेगा। देवगण गयराज-प्रदत्त हवि: द्वारा इतने परितृप्त हो गये थे कि उन्हें किसी दूसरेके द्रव्य ग्रहणकी इच्छा न रही। यह यज्ञ ब्रह्मसरोवरके निकट हुआ। (वनपर्व ९५ अ०) ज्ञात होता है कि राजर्षि गयके यज्ञ करनेसे ही वह स्थान गया और महापुण्यस्थान-जैसा पूर्वकालको प्रसिद्ध हुआ। (महाभारत, द्रोण ६६ अ०) महाभारतमें यह स्थान गयराज-अभिसंस्कृत महीधर तीर्थ-जैसा अभिहित है। (वनपर्व ९५।९-१०) पाण्डव वहां तीर्थ करने गये थे।

हरिवंशके मतमें मनुके यज्ञसे मित्र तथा वरुणके अंश द्वारा इला नाम्नी एक कन्याने जन्म लिया था। वही कन्या पुरुषरूपमें मनुके पुत्र सुद्युम्न नामसे विख्यात हुई। इन्हीं सुद्युम्नके ३ पुत्रोंके मध्य गय नामक कोई पुत्र हुए। उन्होंने गया पुरीमें राजधानी निर्माण की। (हरिवंश १० अ०)

वायुपुराणीय गयामाहात्म्यमें लिखा है—

महाबलशाली गय नामक एक विष्णुभक्त असुर रहे। वह १२५ योजन उच्च और ६० योजन स्थूल थे। आकृति भयङ्कर होते भी उनका चरित्र बुरा न रहा। गयासुर अतिशय धार्मिक और नम्र-स्वभाव थे। अकारण वह किसीका कोई अनिष्ट न करते थे। वह कुछ दिन पीछे कोलाहल पर्वत पहुंच करके विष्णुकी आराधना करने लगे। उनकी कठोर तपस्या देख करके देवताओंके प्राण घबरा गये, वह सब मिल और परामर्श करके पिता-महके निकट पहुंच करके कहने लगे—गय यदि इसी प्रकार और थोड़े दिन तपस्या करेंगे, तो सभी देवता

लोग अपने अपने अधिकारोंसे वञ्चित होंगे; अतः इसी समय पितामह! इसका जो हो, विधान कर दीजिये। विरिञ्चि देवगणको ले करके विष्णुके निकट उपस्थित हुए वहीं एक सभा होने पर ठहरा था—इसी समय सब मिल गयको वर दे करके विरत करें। इसी परामर्शके अनुसार ब्रह्मा, विष्णु प्रभृति सभी कोलाहल पर्वत पर जा उपस्थित हुए और गयासुरको वर देने लगे। परोपकारी गयासुरने राज्य, ऐश्वर्य प्रभृति कुछ भी न मांग करके कहा था—यदि आप लोग मुझ पर सन्तुष्ट हुए हैं, तो ऐसा विधान करें—जिसमें मेरा शरीर ब्राह्मण, तीर्थ-शिला, देवता, मन्त्र, योगी, संन्यासी, कर्मी, धर्मी ज्ञाति आदि सभी पवित्र पदार्थोंसे भी पवित्र हो जावे। देवगण असुरकी चालाकी समझ न सके; उसने जो मांगा, स्वीकार करके यथास्थानको चल दिए। गयासुरका शरीर पवित्र हो गया। वह फिर नगर भ्रमणको निकले थे। उनका पवित्र शरीर देख करके सभी जीवजन्तु चतुर्भुज हो वैकुण्ठको चलने लगे। नगर जनशून्य हुआ था। फिर गयासुर जिसी नगर वा ग्रामको गये, प्राणिगण चतुर्भुज बनने लगे। उस समय देवताओंने असुरकी चालाकी समझी, परन्तु कोई युक्ति ठहरायी जा न सकी। यमको ही चिन्ता अधिक थी। कारण गयासुरका शरीर पवित्र होने पीछे कोई पशुपक्षी यमके घर नहीं पहुंचा। यम और दूसरे देवताओंने साथ साथ पितामहके निकट जा करके कहा था—'प्रभो! सर्वनाश उपस्थित है। गयासुरका पवित्र शरीर देख करके सभी वैकुण्ठ चले जाते हैं। यमपुरी एक प्रकारसे प्राणीशून्य है। आप जो हो, कोई उपाय बतला दीजिये। ब्रह्मा देवगणको ले करके विष्णुके निकट पहुंचे। विष्णुके परामर्शसे गयासुरका शरीर यज्ञके लिये मांगा और कई ब्राह्मण कल्पना करके उनसे उसका अनुष्ठान कराया गया। समस्त देवगण उस यज्ञमें पहुंचे थे। गयासुरके शरीर पर ही यज्ञ किया गया। ब्रह्माके आदेशसे यमने धर्मशिला ले आ करके गयासुरके ऊपर रख दी और असुरको निश्चल बनानेके लिये सब देवता उसके ऊपर चढ़ करके खड़े हुए। किन्तु इससे गयासुर निश्चल न हुआ। पीछेको गदाधर विष्णुके आ करके खड़े होनेसे वह ठहरा था। गयासुर देवताओंका उद्देश समझ करके कहने लगा—यदि आप एक बार भी इस अधमसे कह देते, तो मैं कभी न हिलता डुलता। देवगणने इस पर अतिशय सन्तुष्ट हो करके वर मांगनेको कहा था। गयासुर तब बोल उठा—आप ऐसा वर दीजिये—जिसमें चन्द्र, सूर्य वा पृथिवीके रहने तक समस्त देवगण इस शिला पर अवस्थिति करें, मेरे नाम पर यह स्थान एक पुण्यक्षेत्र बने, पांच कोस गयाक्षेत्र तथा एक कोस गयाशिरः रहे और यह सकल तीर्थोंसे श्रेष्ठ ठहरे। देवगणने वही स्वीकार किया और गयासुर निश्चल हुआ। (गयामाहात्मा)

देवगणके गयाशिरमें पदार्पण करनेसे गयाक्षेत्रमें देवताओंके पदचिह्न देख पड़ते हैं। गयामाहात्म्यमें लिखा है कि उक्त सभी पदचिह्नों पर पिण्डदान करना चाहिये। आज कल बहुतसे लोग शेषोक्त विवरण समझते और गयाके पण्डा भी इसी प्रकार गयातीर्थकी उत्पत्ति कीर्तन करते हैं। किन्तु यह उपाख्यान अधिक प्राचीन-जैसा नहीं मालूम पड़ता। महाभारतमें गयाक्षेत्रके मध्यस्थ अनेक तीर्थोंका उल्लेख है। किन्तु उसमें गयासुर अथवा उसके मस्तक पर गदाधर और अन्यान्य देवगणोंके पदस्थापनको कोई बात नहीं। महाभारतमें विवृत हुआ है कि गयामें गयशिर, अक्षयवट, महानदी, धर्मारण्य, ब्रह्मसर, धेनुकतीर्थ, गृध्रवट, उद्यन्त पर्वत, योनिद्वार, फल्गु-तीर्थ, धर्मप्रस्थ, मतङ्गाश्रम और धर्मतीर्थ विद्यमान हैं। फिर वायुपुराणीय गयामाहात्म्य तथा अग्निपुराणमें जिन स्थानों, तीर्थों वा देवपदों पर पिण्डदानकी कथा है, महाभारतमें उसका भी कोई उल्लेख नहीं। उसमें इतना ही लिखा है कि गयामें धर्मराज स्वयं वास करते और पिनाकपाणि भगवान् शङ्कर निरन्तर सन्निहित रहते हैं।

गयाके तीर्थ दर्शनादि सम्बन्धमें नियम बंधा है। त्रिस्थलीसेतु और गयायात्रा-पद्धतिमें लिखते हैं—जिस दिन गयायात्रा करना, पूर्व-पूर्व दिनको एकाहार तथा हविष्य भोजन करके और स्त्रीसंसर्ग छोड़ शुचि भावसे रहना चाहिये। उसके दूसरे दिन प्रातः स्नानादि करके देशकाल नियमानुसार गयायात्राके अङ्गरूप उपवास

करके सङ्कल्प करते हैं। फिर गयायात्राके दिनको प्रातः-कृत्यादि समापन तथा इष्टपूजादि करने पीछे मस्तक मुण्डन कराके वंशपरम्पराके अनुसार श्राद्ध किया जाता है। श्राद्धान्तको अपना ग्राम पांच बार प्रदक्षिण करके मृत पितृपुरुषोंसे अपने साथ गया चलनेका अनुरोध करना चाहिये।

गयामाहात्म्यमें बतलाया है—गयामें आ करके सर्व प्रथम सवस्त्र फल्गु तीर्थमें और फिर ब्रह्मकुण्डमें स्नान और तर्पण किया जाता है। पीछे प्रेत पर्वत पर प्राचीनावीती और दक्षिण मुख हो करके निम्नलिखित मन्त्र द्वारा पितृलोकको आवाहन और पूजा करके पिण्डदान करना चाहिये—

"कव्यवालोऽनलः सोमो यमश्चैवार्यमा तथा।
अग्निष्वात्ता बर्हिषदः सोमपाः पितृदेवताः॥
आगच्छन्तु महाभागाः युष्माभीरक्षितास्तथा।
मदीयाः पितरो ये च कुले जाता सनाभयः॥
तेषां पिण्डप्रदानाय आगतोऽस्मि गयामिमाम्।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु श्राद्धे नानेन शाश्वतीम्॥"

श्राद्धार्थं जल ले करके प्रेतपर्वत पर रखने पीछे सुवर्णरेखाङ्कित शिला पर आ पादशौचादि करके पूर्व-दर्शित 'कव्यवाल' इत्यादि मन्त्रसे आवाहन करते हैं। फिर गायत्री पाठ करके पञ्चगव्य द्वारा श्राद्धस्थान शोधन किया जाता है। इसके पीछे प्रेतपर्वतमें श्राद्ध वा पिण्ड-दान करके पितृगणके और अपने प्रेतत्वकी मुक्तिकामनासे सङ्कल्प करके तिलमिश्रित सत्तू और तिल अञ्जलि प्रमाण दान करना चाहिये। प्रायः ४०० सिढ़ियां चढ़ने पीछे प्रेतशिला पर पहुंचते हैं। यहां पादशौच सङ्कल्प करके 'कव्यवाल' इत्यादि मन्त्रसे आवाहन और उनका श्राद्ध तथा पिण्डदान मात्र करते हैं। फिर प्रतशिलाके नीचे प्रभासपर्वतमें सङ्गत महानदीके रामतीर्थको जाना चाहिये। महाभारतमें इस रामतीर्थका उल्लेख न होते भी महानदीकी बात लिखी है। इसके मतानुसार महा-नदीमें स्नान करके पितृलोक तथा देवगणका तर्पण करनेसे अक्षयलोक लाभ और निज कुल उद्धार होता है। (वन ८४ अ०) गयामाहात्म्यके मतमें वहां

"अन्यानरजतं साधं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।
तत्सर्वं विलयं यातु रामतीर्थाभिषेचनात्॥"

मन्त्र पाठ करके स्नान किया जाता है। पीछे श्राद्ध तथा पिण्डदान करके—

"राम राम महाबाहो देवानामभयङ्कर।
त्वां नमाम्यत्र देवेश मम नश्यतु पातकम्॥"

मन्त्र द्वारा रामको प्रणाम करना चाहिये। फिर यम-राजके निकट प्रार्थना करके यमवलि और कुक्कुरवलि दिया जाता है।

इसी प्रथम दिवसको उत्तरमानस भी जाना चाहिये। वहां मानस नामक एक सरोवर है। यह गयाका प्रथमतीर्थ ठहरता और मुण्डपृष्ठ पहाड़ पर पड़ता है। यहां—

"उत्तरे मानसे स्नानं करोम्यात्म विशुद्धये।
सूर्यलोकादिसंसिद्धिसिद्धये पितृमुक्तये॥"

मन्त्रपाठपूर्वक स्नान करते हैं। फिर देव प्रभृतिका तर्पण करके पिण्डदान और श्राद्ध किया जाता है। वहां मौनी हो करके दक्षिणमानसको चलते हैं। उत्तरमानस और उदीची नदीके मध्यमें कनखल नामक एक पितृ-मुक्तिदायक तीर्थ है। गयामाहात्म्य और अग्निपुराणके मतसे उस तीर्थमें स्नान करने पर पुनर्जन्म लेना नहीं पड़ता।

विष्णुपद मन्दिरसे थोड़ी दूर पर एक सरोवर और एक सूर्यमन्दिर है। गयामाहात्म्यमें वहां सूर्यमूर्ति मौनार्क नामसे वर्णित हुई है। इस मन्दिरका नाटमण्डप दैर्घ्यमें ३८ फुट और प्रस्थमें साढ़े २५ फुट निकलेगा। इसके पश्चिमांशमें गर्भगृह है। वह प्रायः ८ वर्गफीट पड़ता है। मन्दिरका प्राचीर इष्टकनिर्मित है, परन्तु स्तम्भ पत्थरके लगे है। अरुणचालित सप्ताश्वरथ पर द्विहस्त सूर्यमूर्ति विराजमान है। उक्त सरोवर भी चारों ओरों प्राचीरवेष्टित है। वह दैर्घ्यमें २८२ और प्रस्थमें १५६ फुट बैठता है। सरोवरसे पश्चिम नीमका एक पेड़ है। इस स्थानको लोग कनखल कहते हैं। उससे दक्षिण दक्षिणमानस है। यहां भी तीन तीर्थ विद्यमान हैं। इस सरोवरमें—

"दिवाकरकरोमीह स्नानं दक्षिणमानसे।
नमामि सूर्यं तृप्त्यर्थं पितृणां तारणाय च।
पुत्रपौत्र धनैश्वर्यायुरारोग्यवृद्धये॥"

मन्त्रद्वारा स्नान तथा पूजा करके श्राद्ध और पिण्डदान

करना चाहिये। दानान्तमें यही मन्त्र पढ़ करके मौनार्क-को नमस्कार करते हैं।

उसके पीछे (दूसरे दिन) फल्गुतीर्थ गमन करना चाहिये। यह तीर्थ अति प्राचीन है। महाभारतमें भी लिखा है कि गयास्थ फल्गुतीर्थ जानेसे अश्वमेधका फल और महासिद्धि-लाभ होता है। (वनपर्व ८४ अ०) वायुपुराणीय गयामाहात्म्यके मतानुसार पूर्वकालको ब्रह्माकी प्रार्थनासे विष्णुने फल्गुरूपी हो करके दक्षिणाग्निमें जो होम किया, उसीकी रजःकणासे फल्गुतीर्थ बना है। गङ्गा विष्णुकी पादजाता हैं। किन्तु फल्गुतीर्थ स्वयं आदिगदाधरके द्रवीभूत होनेसे बननेसे पर गङ्गासे श्रेष्ठ है। त्रिभुवनके सकल पवित्र तीर्थ स्नानकालको फल्गुतीर्थमें सम्मिलित होते हैं।

(गयामाहात्म्य ७।१४।१७)

अग्निपुराणके मतमें गयाशिर ही फल्गुतीर्थ है। फल्गुतीर्थमें स्नान करके गदाधर दर्शन करनेसे जो सुकृत लाभ होता, और किसी प्रकार भी मिल नहीं सकता। (अग्निपुराण ११५।२६) गयामाहात्म्यमें अन्यत्र कहा है कि नागकूट, गृध्रकूट और उत्तरमानस सबके मध्यवर्ती स्थानका नाम गयाशिर वा फल्गुतीर्थ है। मुण्डपृष्ठ पर्वतके निम्नस्थानमें ही फल्गुतीर्थ पड़ता है। यहां—

"फल्गुतीर्थे विष्णुजले करोमि स्नानमादृतः।
पितृणां विष्णुलोकाय मुक्तिमुक्तिप्रसिद्धये॥"

मन्त्रसे स्नान तथा तर्पण करके प्रेतशिलासंलग्न ब्रह्मकुण्डमें नहा स्वशाखाके अनुसार श्राद्ध और पिण्डदान करना चाहिये। पीछे—

"नमः शिवाय देवाय ईशान पुरुषाय च।
अघोर वामदेवाय सद्योजाताय शम्भवे॥"

मन्त्रसे पितामहको और फिर—

"ओं नमो वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च।
प्रद्युम्नायानिरुद्धाय श्रीधराय च विष्णवे॥"

मन्त्रसे गदाधरको प्रणाम तथा पूजा की जाती है।

तीसरे दिन धर्मारण्यको गमन करते हैं। इस स्थान पर धर्मराजने यज्ञ किया था। यहां मतङ्गवापीमें स्नानान्तको तर्पण तथा श्राद्ध करना चाहिये। पीछे निम्नलिखित मन्त्रसे मतङ्गेश्वरको प्रणाम करते हैं—

"प्रमाणं देवताः सन्तु लोकपालाश्च साक्षिणः।
मयागत्य मतङ्गेऽस्मिन् पितृणां निष्कृतिः कृता॥"

धर्मारण्यके पूर्वको ब्रह्मतीर्थ है। महाभारतमें कहा है कि धर्मारण्योपशोभित ब्रह्मसरतीर्थमें गमन करनेसे ब्रह्मलोक लाभ होता है। ब्रह्माने उस सरोवरमें एक यूप-काष्ठ निखात किया था। उस यूपको प्रदक्षिण करनेसे अश्वमेधका फल मिलता है। गयामाहात्म्यके मतसे उक्त ब्रह्मकूप और ब्रह्मयूपमें श्राद्ध करनेसे पितृगणका उद्धार होता है। इसीके निकट (बोधगयास्थ) महाबोधि नामक अश्वत्थवृक्ष है। धर्म और धर्मेश्वरको नमस्कार करके महाबोधि तरुको निम्नलिखित तीन मन्त्रोंसे नमस्कार करना चाहिये—

'चलदलाय वृक्षाय सर्वदा स्थितिहेतवे।
बोधिसत्वाय यज्ञाय अश्वत्थाय नमो नमः॥
एकादशोऽसि रुद्राणां वसूनां पावकस्तथा।
नारायणोऽसि देवानां वृक्षराजोऽसि पिप्पल॥
अश्वत्थ यस्मात्त्वयि वृक्षराज नारायणस्तिष्ठति सर्वकालम्।
अतः शुभस्त्वं सततं तरूणां धन्योऽसि दुःस्वप्नविनाशनोऽसि॥'

अग्निपुराण (११६।२७) में भी लिखा है कि महाबोधि तरुको नमस्कार करनेसे धर्म और स्वर्गलोक मिलता है। किन्तु महाभारतमें इस महाबोधितरु अथवा धर्मेश्वरका कोई उल्लेख नहीं। बुद्धदेवके अश्वत्थवृक्षमूलमें महाबोधि लाभ करनेसे बौद्ध समाजमें यह महाबोधितरु कहलाता है।

ब्रह्मसरके निकट गोप्रचारतीर्थ है। आजकल वहां एक आम्रवृक्ष रह गया है। गयामाहात्म्यके मतमें वह आम्रवृक्ष ब्रह्मप्रकल्पित है। इसके वृक्षमूलको—

"आम्रं ब्रह्मसरोभूतं सर्वदेवमयं तरुम्।
विष्णुरूपं प्रसिञ्चामि पितृणां मुक्तिहेतवे॥"

मन्त्र पाठ करके सींचना चाहिये। फिर ब्रह्मयूपको प्रदक्षिण करके—

"ओं नमो ब्रह्मणेऽजाय जगज्जन्मादिकारिणे।
भक्तानाञ्च पितॄणाञ्च तारणाय नमोऽस्तु ते॥"

मन्त्र पढ़ कर ब्रह्माको प्रणाम करते हैं। इसके पीछे यथाक्रम यमबलि तथा कुक्कुरबलि दिया जाता है। यमबलि चढ़ानेका—

"यमराज धर्मराजौ निश्चलार्थं हि संस्थितौ।
ताभ्यां बलिं प्रदास्यामि पितॄणां मुक्तिसिद्धये॥"

और कुक्कुरबलिका मन्त्र—

'द्वौ श्वानौ श्यामशवलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यां बलिं प्रदास्यामि रमेशां पथि सर्वदा।

है। पोछे निम्नलिखित मन्त्रसे काकवलि दे कर स्नान करना चाहिये -

"ऐन्द्रवारुणवायव्ययाम्या वै नैऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम॥"

चतुर्थ दिवस फल्गुतीर्थमें स्नान करके गयाशीर्ष पर विष्णुपदकी यात्रा करते हैं। विष्णुपदका मन्दिर ही गयाके मध्य सर्वप्रधान है। इसके नाटमन्दिरका कारुकार्य अति सुन्दर लगता है। गया ग्रामके मध्य ऐसा कारुकार्य तथा गठनप्रणाली अन्य किसी मन्दिरमें देख नहीं पड़ती। महाराष्ट्र रानी अहल्या बाईने यह सुप्रसिद्ध मन्दिर निर्माण करा दिया। इस मन्दिरको निर्माण करनेमें प्रायः ८ लाख रुपया व्यय हुआ था। मन्दिर धूसरवर्ण ग्रेनाइट प्रस्तरनिर्मित है। मण्डप ५८ फुट चतुरस्र पड़ता है। प्रत्येक कोणमें आठ आठ खम्भे लगे हैं। मूलस्थान बुर्ज जैसा अठकोना है। उसका विस्तार कोई ३८ फुट बैठेगा। इसके ऊपर ८० फुट ऊंची चूड़ा है। नाटमन्दिरके मध्यमें मूलमन्दिरके सामने नेपाल-मन्त्री रणजित् पांड़ेकी दी हुई एक बड़ी घण्टा लटकती है। उसका निनाद, यात्रियोंका जयध्वनि और ब्राह्मणोंका गभीर मन्त्रपाठ श्रवण करनेसे मनमें स्वतः भक्ति सञ्चार होता है। यहां लोगोंकी जितनी भीड़ रहती, गयामें और कहीं भी देख नहीं पड़ती। इसी मन्दिरमें हिन्दूओंके आराध्य गदाधरका पादपद्म है। पादपद्मकी चारों ओरें रौप्यमण्डित हैं। इसी स्थान यात्री लोग पिण्डदान करते हैं। उनको फंकते ही पिङ्गलवर्णकी गायें खा डालती हैं गयामाहात्म्यके मतमें वहीं गयासुरका साक्षात् मस्तक विन्यस्त है, वही गयासुरका मुख्य स्थान है। वहां श्राद्ध करनेसे अक्षय पुण्य पाते हैं। आदिगदाधर पितृगणकी मुक्तिके हेतु व्यक्त तथा अव्यक्त रूपमें विष्णुपदकी भांति वास करते हैं। वहां श्राद्ध और पिण्डदान करनेसे अपने आप और सहस्रकुल विष्णुलोक पहुंचते हैं।

विष्णुपद मन्दिरके निकट गयेश्वरीदेवीका एक प्रसिद्ध मन्दिर है। साधारण लोग उन्हींको गयाकी अधिष्ठात्री देवी मानते हैं।

विष्णुपदमन्दिरका कार्य शेष करके यात्री नाटमन्दिर छोड़ किसी स्थानमें पहुंचते, जहां ब्रह्मपद, रुद्रपद, दक्षिणाग्निपद, गार्हपत्यपद, आहवणीयपद, सभ्यपद, आवसथ्यपद, अर्कपद, कार्तिकेयपद, इन्द्रपद, अगस्त्यपद, काश्यपपद, गजकर्णपद प्रभृति पद मिलते हैं। एतद्व्यतीत दधीचिपद, चन्द्रपद, मातङ्गपद, कर्णपद, क्रौञ्चपद इत्यादि १८ पदों पर श्राद्ध तथा पिण्डदान करनेका विधान है। आजकल बहुतसे लोग उक्त पदोंके मध्य केवल रुद्रपद और विष्णुपद पर ही पिण्ड दिया करते हैं। गयामाहात्म्यमें लिखा है कि एकतम पदमें श्राद्ध करनेसे भी यजमानका मङ्गल होता है।

पञ्चम दिवसको गदालोलतीर्थमें स्नान करके श्राद्ध और पिण्डदान करना चाहिये। फिर सबसे पीछे अक्षयवट पहुंचते हैं। महाभारतमें लिखा है कि राजर्षि गयके यज्ञकालको एक वृक्ष चिरजीव हुआ, जिसका नाम अक्षयवट है। (द्रोणपर्व ६६ अ०) गयामाहात्म्यके मतमें वहां पितृ उद्देशसे जो कुछ भी दिया जाता, अक्षय फल पहुंचाता है।

गयामाहात्म्यके अनुसार ही यह तीर्थयात्रा कथा लिखी गयी है। इसको छोड़ करके गयाके बीच गायत्रीतीर्थ, प्रमुदिततीर्थ, सरस्वतीतीर्थ, विशाला नदी, लेलिहान तीर्थ, भरताश्रम, वैतरणी नदी, घृतकुल्या तथा मधुकुल्या, कोटितीर्थ, रुक्मिणीतीर्थ, पाण्डुशिला, मधुश्रवानदी, कर्दमालतीर्थ, आकाशगङ्गा, स्वर्गद्वार, योनिद्वार, ब्रह्मयोनि, धौतपाद, मार्कण्डेयतीर्थ, देवदारुवन, देवीरूपा शला, धर्मशिला वा धर्मप्रस्थ और मुण्डपृष्ठाद्रिका भी उल्लेख है। फिर आधुनिक गयायात्रा-पद्धतिमें रामशिला, रामगया, जीव्हालोल, रामशिर, तामशिर, सातशिर, भीमगया प्रभृतिका भी नाम मिलता है। आजकल जो लोग गयास्थ ४५ वेदियां पर्यटन करना चाहते, १३ दिनमें सब तीर्थोंका स्नान दर्शन कर सकते हैं।

रामशिला पर्वत पर महादेव तथा पार्वतीका मन्दिर और नाटमन्दिर है। इसी पहाड़के पाददेशमें रामकुण्ड अवस्थित है। गयाके मध्य फल्गुनदीके तट पर मुंडपृष्ठ नामक एक छोटा पर्वत है। उसके ऊपर किसी मन्दिरमें अष्टभुजा देवीमूर्ति विराज रही है।

इसीके निकट आदिगया नामक स्थान है। उसके चारों ओर पत्थरके खम्भे लगे हैं। प्रवाद है कि पूर्वकालको वहीं सब लोग आ करके पिण्डदान करते थे। ब्रह्मयोनि* पर्वत पर एक अद्भुत गह्वर है। उसीको भीमगया कहा जाता है। लोगोंको विश्वास है कि यहां भीम घुटने टिका करके बैठे थे। पहाड़में आज भी उनके बायें घुटनेका चिह्न बना है। इसीसे यात्री भीमगयामें बायें घुटनेके बल बैठ करके पिण्डदान करते हैं। इसी ब्रह्मयोनि पर्वत पर पञ्चानना आदिशक्तिका मन्दिर है। वह १६६० सम्वत्‌को बना था। यहां अनेक देवमूर्तियां पड़ी हैं। सम्राट् औरङ्गजेबके दौरात्मासे यहांकी बहुत-सी देवमूर्तियां भग्न और श्रीहीन हो गयी हैं।

गयावासियोंकी विश्वास है—ब्रह्माने गयावालोंको जो गो प्रदान किया, यह उसीका पदचिह्न है। किन्तु महाभारतमें लिखा है—पूर्वको पर्वतोपरि सञ्चरण कालसे सवत्सा कपिलाका जो पद चिह्न पड़ा था, आज भी नहीं मिटा है। इन समस्त पदचिह्नोंमें स्नान करनेसे सकल प्रकार अशुभ विनष्ट होता है। (वनपर्व ८४ अ०)

सकल वेदियोंका दर्शन और पिण्डदानादि शेष होने पर यात्री गायत्रीघाटमें जा पहुंचते हैं। यहीं गयावाल आ करके सुफल बोलते हैं। लोगोंका विश्वास है, गयावालोंके जाकर सुफल प्रदान न करनेसे सभी कार्य बिगड़ जाते हैं। इसीसे उस समय गयावाल तीर्थयात्रियोंको दबा करके बैठ जाते और जहां तक हो सकता, उनसे शेष दक्षिणास्वरूप रुपया ले लेनेमें नहीं चूकते। वस्तुतः सुफल बोलनेके समय पर ही गयावाल यात्रियोंके पाससे जोरके साथ अधिक अर्थलाभ किया करते हैं। पहले यही सुफल देते समय यात्रियों पर विलक्षण उत्पीड़न होता था। आजकल अङ्गरेज गवर्नमेण्टके शासनगुणसे उतना उत्पीड़न हो नहीं सकता।

पूर्वकालको गयावाल ही तीर्थयात्रियोंके साथ भ्रमण करके श्राद्धकार्यादि कराते थे, परन्तु अब वह बात नहीं रही। आजकल गयावाल बहुत बड़े धनी हो गये हैं, अन्नके लिये किसीको कोई भावना नहीं। सुतरां आजकल वह अपने आप कोई न करके धामिन नामक अधीनस्थ ब्राह्मणों द्वारा ही सब काम कराया करते और केवल सुफल देनेके समय पर ही देख पड़ते हैं। गयावाल देखो।

गयाका दूसरा नाम पितृतीर्थ है। कारण यहां आ करके हिन्दूमात्र पितृपुरुषोंके उद्देश पिण्ड देनेका विधि है। गयामाहात्म्यमें लिखते हैं—

"आत्मजस्त्वान्यजो वापि गयाश्राद्धे यदा तदा।
यन्नाम्ना पातयेत् पिण्डं तन्नयेद् ब्रह्मशाश्वतम्॥" (१।१५)

निज पुत्र किंवा और कोई किसी भी समयको गया जा करके जिसका नाम ले कर पिण्डदान करता, वह शाश्वत ब्रह्मधाम पहुंचता है।

"गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्याद् विचक्षणः।
अधिमासे जन्मदिने चास्ते च गुरुशुक्रयोः॥
न त्यक्तव्यं गयाश्राद्धं सिंहस्थे च बृहस्पतौ।" (१।१२०)

मलमास, जन्मदिन, सिंहस्थ बृहस्पति और सर्वकाल पर पण्डितोंको गयामें पिण्डदान करना चाहिये।

"अष्टकासु च वृद्धौ च गयायां च मृतेऽहनि।
मातुः श्राद्धं पृथक् कुर्यादन्यत्र पतिना सह॥
वृद्धिश्राद्धे तु मात्रादि गयायां पितृपूर्वकम्।
सक्तुना मुष्टिमात्रेण दद्यात्तच्च्य पिण्डकम्॥
तिलाज्यमधुदध्यादि पिण्डद्रव्येषु योजयेत्॥
पायसेनापि चरुणा सक्तुना पिष्टकेन वा।
गुड़ेन तण्डुलाद्यैर्वा पिण्डदानं विधीयते॥
मुष्टिमात्रप्रमाणेन चार्द्रामलकमात्रतः।
शमीपत्रप्रमाणेन पिण्डं दद्याद्गयाशिरे॥
उद्धरेत् सप्तगोत्राणि कुलमेकोत्तरं शतम्।
माता पिता च भार्या च भगिनी दुहितुः पतिः॥
पितृष्वसा मातृष्वसा सप्तगोत्राः प्रकीर्तिताः॥
विंशतिर्विंशतिः पितृवंशे त्वाः षोडशक्रमात्।
एकादश द्वादशाथ कुलान्येकोत्तरं शतम्॥" (६ अ०)

अष्टकादिवस, वृद्धिकाल, गयातीर्थ और मृतदिनमें माताका श्राद्ध पितासे पृथक् करना चाहिये। वृद्धिकालको पहले मातृगण और पीछे पितृगणके श्राद्ध करनेका विधान है। परन्तु गयामें पहले पितृगण और पीछे मातृगणका श्राद्ध करना चाहिये। तिल, घृत, मधु, दधि प्रभृतिके साथ मुष्टि-प्रमाण शक्तु द्वारा पिण्ड दिया करते हैं। पायस, चरु, सक्तु, पिष्टक, गुड़ और तण्डुलादिसे भी पिंड दे सकते हैं। गयाशीर्षमें मुष्टि-

* चीनपरिव्राजक युएनचुयाङ्गने इसी पहाड़को देवपर्वत जैसा लिखा है।

प्रमाण, एक ही आमलकी प्रमाण अथवा अन्तत: एक (क्षुद्र) शमीपत्र प्रमाण भी पिण्ड देना चाहिये। यहां पिण्डप्रदान करनेसे पिता, मातामह, श्वशुर, भगिनीपति, जामाता, पितृष्वसृपति और मातृष्वसृपति—सप्तगोत्रका उद्धार होता है। इसमें पिता तथा मातामहके बीस, श्वशुरके आठ, भगिनीके चौदह, जामाताके सोलह, पितृष्वसृपतिके ग्यारह और मातृष्वसृपतिके बारह—१०१ कुलजात लोग मुक्त होते हैं।

गयामें स्त्रीपुरुषको एक योगसे पिण्डदान करनेका नियम नहीं है—

"स्वगोत्र परगोत्र वा दम्पत्यो: पिण्डपातनम्।
अपृथक् निष्फलं श्राद्धं पिण्डञ्चोदकतर्पणम्॥"

यहां स्त्री पुरुषके एकयोगसे स्वगोत्रीय वा भिन्न गोत्रीय मृत व्यक्तिके उद्देशमें पिंडप्रदान वा तर्पण करना निष्फल होता है।

गरुड़ पुराणके मतमें—

"तीर्थश्राद्धं गयाश्राद्धं श्राद्धमन्यच्च पैतृकम्।
अब्दमध्ये न कुर्वीत महागुरुनिपातने॥"

तीर्थश्राद्ध, गयाश्राद्ध और कोई भी दूसरा श्राद्ध महा गुरुनिपात होनेके एक वर्ष मध्य करना न चाहिये।

किन्तु त्रिस्थलीसेतुको देखते—

"अस्थिक्षेपं गयाश्राद्धं श्राद्धं चापरपक्षिकम्।
प्रथमाब्देऽपि कुर्वीत यदि स्याद्भक्तिमान् सुत:॥"

फिर भी पुत्र यथार्थ भक्तिमान् होनेसे अस्थिक्षेप, गयाश्राद्ध और अपरपक्षश्राद्ध एक वर्षके बीच ही कर सकता है।

मैत्रायणीय परिशिष्टमें लिखा है—

"आमष्टक्यं गयाप्राप्तौ सत्यां यत्र क्षयाहनि।
मातु: श्राद्धं सुत: कुर्यात् पितर्यपि च जीवति॥"

अर्थात् पिता जीवित रहते भी पुत्र माताका श्राद्ध गयामें कर सकता है। किन्तु हारीतके—

"जीवे पितरि वै पुत्र: श्राद्धकार्यं विवर्जयेत्।"

वचनानुसार जीवत्पितृका श्राद्धमें कोई अधिकार नहीं। इसी प्रकार भिक्षु वा संन्यासी लोग भी गयामें पिंडदान कर नहीं सकते। गयामाहात्म्य (१।२२) के मतमें—

"दण्डं प्रदर्शयेद्भिक्षुर्गयां गत्वा न पिण्डद:।
दण्डं न्यस्य विष्णुपदे पितृभि: सह मोदते॥"

भिक्षुको गयामें पिंडदान न करके दण्ड प्रदर्श न करना चाहिये। दण्डद्वारा विष्णुपद स्पर्श करनेसे ही वह पितृलोकके साथ शान्तिप्राप्त होता है।

गयाकाश्यप—शाक्यसिंहका एक प्रधान शिष्य। गयामें इन्होंने बुद्धदेवसे दीक्षा पाई थी।

गयादास—एक वैद्यक ग्रन्थकार। भावमिश्र और वैद्यवाचस्पतिने इनका मत उद्धृत किया है।

गयादीन—रामगीतगोविन्द नामक संस्कृत काव्यप्रणेता।

गयारी (हिं० स्त्री०) किसी गृहस्थकी वह जोत जिसे वह लावारिस छोड़ कर मर गया हो।

गयाल (हिं० पु०) वह सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

गयाली—गयावासी ब्राह्मण जाति। तीर्थयात्रियोंको पितृपुरुषका पिंड दिलाना और श्राद्धादि क्रिया कराना इन्हींका प्रधान कर्तव्य है। प्रवाद है कि गयासुरके पृष्ठ पर ब्राह्मण भोजन करानेके लिये पद्मयोनि ब्रह्माने चौदह ब्राह्मणोंकी सृष्टि की थी; उन्हीं ब्राह्मणोंसे इन लोगोंकी उत्पत्ति है। इनमें चौदह गोत्र हैं।

आजकल इनके कुल ३०० घर हैं। इन लोगोंमेंसे बहुत थोड़े पढ़े लिखे हैं। यात्रियोंसे रुपया वसूल करना इनका मुख्य कार्य है। ये बाल्यावस्थासे ही अपना समय बैठ कर ही व्यतीत करते हैं। पान, गांजा और भांग प्रभृति मादक वस्तुओंमें इन्हें बड़ी प्रीति है। ये नाच, गान, तमाशा, तास और पाशा प्रभृति खेल बड़े आनन्दसे खेलते हैं। बड़े भाईके साथ आमोद प्रमोद करनेमें इन्हें जरा भी लज्जा नहीं आती है। सन्ध्या समय ये बन्धुबान्धवोंके साथ वायु सेवनके लिये बाहर आया करते हैं।

बाल्यावस्थामें ही इन लोगोंकी शादी होती है। विवाहमें इनका बहुत व्यय होता है। लड़का एक सुन्दर पालकी पर बिठाया जाता और आत्मीय स्त्रीयां झुंड बांध कर बारातमें जाती हैं। कन्याके घर पर लड़केको पहुंचा कर विष्णुमन्दिरके निकट सूर्यकुंड सरोवर पर वे इकट्ठा होती हैं। यहां वे दो चार ब्राह्मणोंको बठा कर रखती और सोहागिनी (नौवर्षकी विवाहिता लड़की) आकर ब्राह्मणोंके पृष्ठ पर अपने हाथसे सिन्दूरका

तलक देती हैं और फूल चन्दनादिसे पूजा करनेके बाद ब्राह्मणोंको दक्षिणा देकर विदा करती हैं।

विवाहके बाद कन्या श्वशुरकी गोद पर बैठाई जाती और उसके सीमन्तमें सिन्दूर दिया जाता है। तत्पश्चात् वरके आत्मीयगणको नवीन वस्त्रादि दिये जाते हैं। चार दिनके बाद "चौथारि" या 'चतुर्थी' होती है और नवदम्पती स्वजन सहित रुक्मिणीकुण्डके तीर पर उपस्थित होते हैं। यहां दिनके समय उन लोगोंके सामने एक छोटा नाटिकाभिनय खेला जाता है। इस समय कन्याके आत्मीय व्यक्ति कन्याके ऊपर थोड़ा चावल और कौड़ी रखते और कन्या इसको धीरे धीरे फेंकती जाती एवं कृत्रिम क्रोध दिखाती है। इस पर वर उसका सान्त्वना देता है। इस प्रकारके अभिनयके समाप्त होने पर वे नृत्यगीत और भोजनादि शेष करके सन्ध्याके समय घर लौट आती हैं।

यात्रियोंसे प्रचुर धन उपार्जन करके ये सम्पत्तिशाली हो गये हैं। इनमेंसे सामान्य मनुष्यको भी पेटकी चिन्ता करनी नहीं पड़ती है। धनके गौरवसे ये अब स्वयं यात्रियोंका पौरोहित्य नहीं करते लेकिन अधीनस्थ दूसरे ब्राह्मणको इस काममें नियुक्त करते हैं। जब यात्रियोंकी तीर्थयात्रा समाप्त हो जाती तो ये उन्हींसे अपना लभ्य यथेष्ट रुपयो वसूल करते हैं। गया देखो।

गयाशिखर (सं० क्ली०) गयाशिरस् देखो।

गयाशीर्ष (सं० क्ली०) गयाके निकटस्थ पर्वतविशेष, गयाके समीपका एक पहाड़।

गयाश्वत्थ (सं० पु०) अश्वत्थवृक्ष, पीपड़का पेड़।

गयास-उद्-दीन—बङ्गालके एक सुलतान। यह सुलतान सिकन्दर शाहके लड़के थे। सिकन्दर शाहके दो बीबियां रहीं। पहलीके पेटसे १७ लड़के हुए। दूसरीके एक लौते बेटे गयास-उद्-दीन् रहे। ये अपने लड़कपनसे और कई इल्म पढ़ करके दूसरे भाइयोंकी बनिस्बत बहुत बड़े बन गये। उसीसे सिकन्दर शाह इनको बहुत चाहते थे। परन्तु इससे सौतेली मांकी जलन धीरे धीरे बढ़ने लगी। वह तरह तरहकी तदबीरें लड़ाती थीं—सुलतान उनसे कैसे बिगड़ते और मुहब्बत न करते। किसी दिन सुलतानको अकेला देख इनकी सौतेली मांने बड़ी आरज़ू मिन्नतके साथ कहा—जहांपनाह! मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूं, परन्तु हिम्मत नहीं पड़ती; कहनेसे आपका दिल दुखेगा और गुस्सा बढ़ेगा। सुलतान उत्सुक हो करके कहने लगे—कहो, मैं बुरा नहीं मानूंगा, तुम अपनी बात कह डालो। इस पर बेगम बोल उठीं—पहले आप कसम खायें, किसीसे वह बात न बतायेंगे। सुलतानने वही किया था फिर बेगम कहने लगीं—'इस वक्त मुझे बड़ी आफत है। आपने जब कहनेको हुक्म दिया है, मेरा जी न चाहते भी मुझे कहना ही पड़ेगा। बात यह है कि गयास उद्-दीन मेरे लड़कोंका बर्बाद करनेके लिये साजिश कर रहे हैं। सिर्फ यही नहीं—आपको भी मार डालनेकी बात वह कहा करते हैं। मेरी तरह आपकी भलाई कोई नहीं चाहता। मेरा समझमें उन्हें या तो कैदखानेमें डाल दीजिये या उनकी दोनों आंखें निकलवा ऐसी साजिश करनेसे नाकाम बनाइये। सिकन्दर शाह इस बात पर एक बारगी ही बिगड़ कर बोले थे—'बदमाश! परमेश्वरने तुझे इतने लड़के बाले दिये हैं, जो अब आदमी बन गये हैं। इसके लिये परमेश्वरका शुक्रया अदा न करके तूने क्यों अपनी सौतके एकलौते बेटेको बर्बाद करने पर कमर कसी है! दूर हो, मैं अब तेरी बात सुनना नहीं चाहता।' सुलतानने यह बातें गयास-उद्-दीनको नहीं बतलायीं। परन्तु यह रंग ढंग देख करके शिकारके बहाने सुवर्णग्राम भाग गये और वहां फौज इकट्ठी करके और बलवाई हो पांडुयाकी तर्फ चल पड़े। ग्वालपाड़े पहुंचने पर सिकन्दर फौजके साथ बलवा दबानेको वहां गये थे। लड़ाई होने लगी। इन्होंने अपने सिपाहियोंको समझा दिया था कि उनके बापके जिस्ममें हथियारकी चोट लगने न पाती। परन्तु लड़ाईमें फरमां बरदारी नहीं चलती। सिकंदरके जख्मी होनेको खबर पा करके यह रोते रोते उनके पास गये और उनका सर अपनी गोदमें रख कर माफी मांगने लगे। उस वक्त सिकन्दरने कहा था—मेरा काम तमाम हो गया है, तुम मजेमें सलतनत करो। यही बात कहते कहते वह मर गये। १३६७ ई०को यह तख्तनशीन हुए। फिर इन्होंने सौतेली मांके लड़कोंकी आंखें निकाल उसीके

पास भेजी थीं। सिवा इसके गयास-उद्-दीनकी बेरह-मीका दूसरा सुबूत नहीं मिलता। यह ७ साल सुलतानसीसे सलतनत करके १३७३ ई०को मरे। इनकी सुलतानसी पर एक कहानी कहते हैं— किसी दिन गयास-उद्-दीन कमान ले करके तीर चलाते थे। अचानक एक तीर जा करके किसी बेवाके लड़केको लगा। बेवाने काजीके पास उन पर नालिश की थी। काजीने उन्हें अदालतमें हाजिर होनेको कहा। गयास-उद्-दीन एक तलवार अपनी पोशाकमें छिपा करके अदालत पहुंचे थे। काजीने कहा—तुमने इस गरीब बेवाके लड़केको मारा है; इस लिये याती इसे किसी तरह राजी करो, नहीं तो फैसलेके मुताबिक सजा झेलो। सुलतानने सलाम करके उस बेवाको खूब दौलत दी थी। उसने गयासको माफ कर दिया और काजीके पास राजीनामा दाखिल किया। काजीने जब उन्हें जानेके लिये कहा, सुलतानने तलवार निकाल कर बताया था—'यदि इस फैसलेमें आपकी जरा भी तरफदारी देखता, इसी हथियारसे आपका सर उतार लेता। अपनी सलतनतमें ऐसी सुलतानी होने पर मैं परमेश्वरका शुक्रिया अदा करता हूं।' काजी भी अपना आसा देखा करके कहने लगे—आप यदि नटखटपन करते, यह सोंटा आपका जिस्म तोड़ डालता। सुलतानने उस पर और भी राजी हो करके काजीको इनाम दिया था।

और भी एक कहानी है। गयास कुछ खुशतबा थे तीन फूलोंके नाम पर उनकी तीन उपपत्नियां रहीं। एक मरतबा बहुत बीमार होने पर उन्होंने लोगोंसे कह रखा था—मेरे मरने पर यही तीनों औरतें मेरे जिस्मको नहलायेंगी। परन्तु थोड़े दिनों बाद उनकी बीमारी दूर हो गयी। इन तीनों उपपत्नियों पर ज्यादातर मुहब्बत रहनेसे दूसरी उपपत्नियां डाहसे 'गोशाल' कह कर उनका मजाक उड़ाया करती थीं। सुलतान उसका खबर पा करके सोचने लगे, कैसे उन तीनोंकी कद्र बढ़ाना चाहिये। आखीरको उन्होंने तीनोंके नाम एक शायरी बनायी थी। परन्तु उसका पहला मिसरा लिख करके वह आखरी गिरह लगा न सके; पीछेको फारसके मशहूर शायर हाफिजके पास लोग भेजे गये। चिट्ठीमें उनके बङ्गाल आनेका बड़ा तकाजा था। जब लोग हाफिजके पास पहुंचे, उन्होंने बगैर कुछ कहे सुने पहले दूसरा मिसरा सुना दिया। पीछे हाफिजने चिट्ठी पढ़ी। उन्होंने जवाब भेज दिया, परन्तु बङ्गाल जानेसे इनकार किया।

गयास-उद्-दीन लिखने पढ़नेके बड़े शौकीन थे। इन्होंने वीरभूमके नगर नामके शहरके रहनेवाले फकीर हामिद-उद्-दीनसे धर्मनीति सीखी थी। पीर कुतुब-उल्-आलम इनके साथ पढ़नेवालोंमें रहे। सुवर्णग्रामकी टूटी फूटी इमारतोंमें इनकी कब्र आज भी मौजूद है।

गयास-उद्-दीन—बङ्गालके एक सूबेदार। इनका दूसरा नाम इमाम-उद्-दीन गैराज था। यह ईरान-गोर राज्यके किसी बड़े खानदानमें पैदा हुए और उम्र बढ़ने पर रुपया कमानेके लिये तुर्किस्तान पहुंचे। वहां पुश्तअफरोज नामके किसी पहाड़ पर चढ़नेसे इन्होंने दो फकीरोंको देखा था। फकीरोंने इनसे पूछा—तुम्हारे पास खानेकी कोई चीज है। उस वक्त इन्होंने खाना निकाल कर रख दिया, फकीर लोग उसे खाने लगे। फिर यह पानी ले आये थे। फकीरोंने खा पी करके इनसे कहा—तुम हिन्दुस्थान चले जाओ, वहां तुम्हारे लिये तख्त खाली है। यह उस बातको मान करके हिन्दुस्थान पहुंचे और बख्तियारकी मातहतीमें काम करने लगे। बख्तियारने इन्हें बङ्गालमें ले जा करके गङ्गतरीका हाकिम बनया था। परन्तु आज तक इसका कोई पता नहीं गङ्गतरी कहां थी। जो हो, यह थोड़े दिनों बाद देवकोटके सूबेदार हो गये। उस वक्त देवकोट एक बड़ी छावनी थी। इनकी मददसे बादशाहके अहलकारोंने मुहम्मद सेरान और दूसरे खिलजी सरदारोंको जीता। दिल्लीके बादशाहने बख्तियार खिलजीके पीछे अली-मर्दान खिलजीको बङ्गालका तख्त सौंपा था। अली-मर्दानके आते वक्त यह कुशी नदी किनारे जा करके उनसे मिले और उनके पीछे पीछे देवकोट पहुंच उनको तख्त पर बैठा दिया। ६०७ हिजरीको बादशाह कुतुब-उद्-दीनके मरने पर अलीमर्दानने दिल्लीकी मातहती न मान आजाद हो करके अपना नाम अला-उद्दीन् रखा था। परन्तु २ साल बाद ही खिलजियोंने उन्हें

कतल करके ६०८ हि०को इन्हें सूबेदार बनाया। इमाम उद्-दीनने भी पीछेको दिल्लीकी मातहती छोड़ अपना नाम गयास-उद्-दीन रख लिया। इन्होंने ६१६ हि०को अपने नामसे रुपया चलाया और गौड़नगरमें बहुतसी अच्छी इमारतें, एक मदरसे और यतीमखानेको बनाया। बाढ़के वक्त मुल्कको पानीमें डुबनेसे बचाने और आने जानेमें लोगोंको तकलीफ छुड़ानेके लिये इनके हुक्मसे देवकोटसे वीरभूमको राजधानी 'नगर' तक दश दिनकी राहमें बांध लगा था। मुकदमा फैसल करते वक्त यह क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या अमीर क्या गरीब-किसीकी तरफदारी न करते थे। इन्होंने आसाम, विहुत, त्रिपुरा और उड़ीसाका कितना ही हिस्सा जीत वहांके राजाओंसे खिराज वसूल किया। इनके नजराना दिल्ली न भेजनेसे बादशाह अल्तमास फौजके साथ चढ़ आये। परन्तु इन्होंने नावोंको हटा करके बादशाहको फौज गङ्गा पार न होने दी। अखीरको सुलहका सन्देशा भेजने पर बादशाह ठण्डे पड़े। सुलह हो गयी कि बादशाहके नामसे रुपया चलाया और उन्हींके नाम पर फरमान् सुनाया जावेगा, गयास-उद्-दीन बहुतसी दौलत और ३८ हाथी बादशाहको देंगे और २ साल तक बराबर दिल्लीको खिराज भेजते रहेंगे। इनके उन सभी बातोंमें राजी होने पर बादशाह दिल्ली लौट और अला-उद्-दीनको विहारका सूबेदार बनाये गये। बादशाहके चले जाने पर इन्होंने गङ्गा पार हो उन सूबेदार और बादशाही फौजको हटा विहारको अपने इख्तियारमें कर लिया।

बादशाह यह खबर पाने पर बहुत बिगड़े। उन्होंने अपने बेटे नसीर-उद्-दीनको फौजके साथ बङ्गाल जीतने भेजा था। उस समय गयास-उद्-दीन बङ्गालके पूर्वी राजाओंसे लड़नेमें लगे थे। इस लिये नसीर-उद्-दीनने बे लड़े भिड़े अवध पहुंच करके लखनऊ राजधानी ले ली। इन्होंने यह खबर सुनते ही वापस जा करके बादशाहकी फौजसे घमासान लड़ाई की थी। अखीरको हारने पर (६२४ हि०) यह मार डाले गये। गयास-उद्-दीनकी तारीफ बादशाह अल्तमास तक किया करते थे।

गयास-उद्-दीन—बङ्गालके एक नवाब। ये नवाब जलाल-उद्-दीनके पुत्रको विनाश कर १५६४ ई०में बङ्गालके सिंहासन पर बैठे थे। इन्होंने कुछ दिनों तक राज्य किये थे।

गयास-उद्-दीन करत् १म—हिरात्, बालख और गजनीके राजा। इन्होंने १३०७से १३२८ ई० पर्यन्त राज्य किया था।

गयास-उद्-दीन करत् २य-हिरात्, सरख्स और नैसापुरके राजा। ये १३७० ई०को सिंहासन पर बैठे और बारह वर्ष तक राजा रहे। १३८१ ई०में तैमूरलङ्गने हिरट्-प्रदेशको जय करके सपुत्र गयास्-उद्-दीनको बन्दीकर मार डाला।

गयास्-उद्-दीन खिलजी—गुजरातके एक सुलतान। ये १४६९ ई०में सिंहासन पर आरूढ़ हुए। ३३ वर्ष राज्य करनेके बाद जब ये वृद्ध हो गये तो उनके दो लड़के उनकी मृत्यु कामना करने लगे। अन्तको दोनों भाइयोंमें विवाद आरम्भ हुवा। ज्येष्ठ नासिर-उद्-दीनने कनिष्ठ सुजात खांको विनाश कर १५०० ई०के २२वीं अक्तूबरको राज्यभार ग्रहण किया। एक दिन इसने अपने वृद्ध पिताको विष खिला कर मार डाला।

गयास-उद्-दीन तुगलक—दिल्लीके एक बादशाह। इनका असली नाम गाजीबेग तुगलक था, बाप करोनिया तुर्क और मां जाटनी थी। इनके बाप सुलतान गयास-उद्-दीन बलबनके गुलाम रहे। इन्होंने बड़ी गरीबीमें अला-उद्-दीन खिलजीके भाई उलग खांकी मातहतीमें मामूली सिपाहीका काम इख्तियार किया था। परन्तु हिम्मत और होशियारको देख करके मालिकने इन्हें ब[illegible] फौजदार बना देवलपुर भेज दिया। बादशाह नसीर-उद्-दीन या खुशरूके चालचलन पर बड़े बड़े लोगोंने बिगड़ उनके खिलाफ साजिश करके बलवा उठाया था। यह बलवाइयोंके फौजदार हो करके नसीर-उद्-दीनसे लड़े। लड़ाईमें बादशाह हारे और मारे गये। मुल्कके अमीर उमरावोंने इन्हें तख्त पर बिठला शाहजहां नामसे अदब बजाया था। यह बादशाह बनना नहीं चाहते थे, परन्तु सबके कहने सुननेसे इन्होंने सल्तनतका बोझ उठा लिया। इन्होंने शाहजहां-जैसा ऊंचा खिताब न ले करके अपना नाम गयास-उद्-दीन रखा और एक ही

हफ्तेके बीच चारों ओर इतनी अच्छी तरकीब लगायी, जो बहुत दिनोंसे देखनेमें न आयी थी। काबिल शख्स समझ करके इन्होंने उमराको खिताब और जागीर भी दे डाली। उस वक्त हिन्दुस्थानमें मुगलोंका जोर जुल्म बढ़ रहा था, इन्होंने सब मुल्कको अच्छी तरह बचानेका इन्तजाम किया और खुशरूके तरफदारोंको दबा दिया। बड़े बेटे उलग खां सल्तनतके वारिश ठहराये और दूसरे लड़के ओर ओर मुल्कोंको मुखतार बना करके पहुंचाये गये। इससे बहुतसे मुल्कों और किलों पर बादशाहका दखल हो गया। लखनऊमें बलवा होने पर यह उलग खांको दिल्लीमें छोड़ अपने आप वहां पहुंचे और वहां बलवाइयोंको हरा बहुतसी दौलत जवाहरात ले चले। सितार गांवके हाकिम बहादुर खांने इनका हुक्म न माना था। उनके गले में जञ्जीर डाली गयी और उससे वह खींच कर लाये गये।

थोड़े दिनों बाद वरङ्गलमें बलवा उठा था। बादशाहके लड़के उलग खांने जा करके शहरको घेर लिया। राजा लड्डरदेव उनसे बड़े जोरोंमें लड़े थे। गर्मी और लूसे घबरा करके बादशाहकी फौज धड़ाधड़ मरने लगी। सिपाही दिल्ली लौटने पर तुल गये और बहुतसे आदमी फौजदारसे बे कहे सुने रातको भाग खड़े हुए। शाहजादेको लाचार हो घेरा छोड़ करके लौटना पड़ा। लौटते वक्त दुश्मनोंने पीछा करके बहुतसे सिपाही मार डाले। दिल्ली वापस आने पर शाहजादे नई फौज इकट्ठा करके फिर लड़नेको चले थे। इस मरतबा बिदर और वरङ्गल पर दखल हो गया। उन्होंने राजाको बांध करके दिल्ली भेजा था।

इसी बीचमें एक बार अफवाह उड़ी—सुलतान मर गये। इस अफवाहके उड़ानेवालोंको सुलतानने पकड़ करके जीतेजी कब्रमें गड़ा दिया। बादशाहने उनसे कहा था—तुमने झूठ ही जीते जी मुझे दफनाया है, मैं सचमुच तुम्हें जीते जी कब्रमें पहुंचा दूंगा।

बङ्गालके लोगोंने अपने सूबेदारकी कुछ शिकायत की थी। ७२४ हि०को यह अपने आप उसकी तहकीकात करने चले और जाते वक्त शाहजादे उलग खांको दिल्लीमें सल्तनतका कामकाज सौंप गये। उस वक्त बहादुर पूर्व बङ्गालके सूबेदार थे। उनकी राजधानी सुवर्णग्राममें रही। उन्होंने बादशाहकी परवा न करके अपने नामसे रुपया चलाया था। उनके जोर जुल्मसे सब जलते रहे। गयास-उद्-दीनके आते वक्त त्रिहुत पहुंचने पर लखनऊके नवाब शहाब-उद्-दीन बघरा शाह या बघरा खांने उनकी मातहती कबूल की। इन्हीं शाहब-उद्-दीनने अपने भाई सुवर्णग्रामके बहादुर शाह पर बादशाहके पास नालिश दायर की थी। यह सुवर्णग्राम गये और बहादुरको हरा करके गलेमें रस्सी डाल दिल्ली भेजते हुए अपने आप भी दिल्लीको चल पड़े। राहमें इन्होंने त्रिहुत जीता था। राजधानी पहुंचते वक्त शाहजादे उलग खांने इनकी अगवानीको आगे आ अफगानपुरमें लकड़ीका एक मकान बना करके उसमें इनकी अभ्यर्थना की। तरह तरहकी धूमधामके पीछे गयास-उद्-दीन वहांसे दिल्लीको चलने लगे। उसी वक्त लकड़ीका मकान इन पर फट पड़ा और यह चल बसे। कोई कोई कहता है कि शाहजादे बहुत दिनोंसे उनके मारनेकी फिक्रमें थे और इसीके लिये वह मकान बनाया गया था। राजावलीग्रन्थमें लिखा है कि उस वक्त दिल्लीमें औलिया नामके एक महापुरुष रहे। उन्हें सब लोग बादशाहसे ज्यादा मानते थे। बङ्गालसे लौटते वक्त राहमें बादशाहने उन्हें लिख भेजा—चाहे आप दिल्लीमें रहें चाहे मैं, दोनों एक जगह नहीं टिक सकते। महापुरुषने इसके उत्तरमें लिखा था—दिल्ली अभी बहुत दूर है। बादशाह यह बात सुन तुगलकाबादके जिस घरमें जा करके रहे, उसीको छत टूट करके उनके ऊपर गिर पड़ी। यह घटना १३२५ ई० (७२५ हि०) को हुई थी। इन्होंने दिल्ली शहर नये सरसे बसा करके तुगलकाबाद नामका किला बनाया। 'तारीख मुबारक शाही' नामकी किताबमें लिखा है कि वह किला बनानेमें ३ सालसे भी ज्यादा वक्त लगा था। किला रेतीले पत्थरका बना है। अरब परिव्राजक इब्न बतूताने मुलतानकी जुमा मसजिदमें एक खुदी हुई शिलालिपि देखी थी। उसमें बादशाहके बारेमें लिखा है—हमने २९ मरतबा तातारियोंको हमला करके हराया है। इसीसे हमारा नाम मालिक-

इसानोर है। गयास-उद्-दीन्ने ४ साल २ महीने राजत्व किया।

गयास उद्-दीन तुगलक २य—दिल्लीके एक बादशाह। ये बादशाह फिरोज शाह तुगलकके नाती और फते खांके पुत्र थे। फिरोजशाहकी मृत्यु होने पर १३८८ ई०में गयास-उद्-दीन गद्दी पर बैठे। भोगविलासमें लगे रहनेके कारण राजकार्यमें अवहेला करते थे। इस लिये राज्यके प्रधान प्रधान मनुष्य और सैन्य सामन्तने विद्रोही हो कर १३८८ ई०के १८वीं फरवरीको इन्हें मार डाला। इन्होंने सिर्फ छह मास राज्य किया था। इनके शासन कालके समय मामूद शाह नामक पार्वतीय राजाके साथ इन्हें युद्ध करना पड़ा था।

गयास-उद्-दीन् बलबन—किसी तुर्की सामन्तके पुत्र। मुगलोंने इन्हें लड़कपनमें चुरा करके बेच डाला था। फिर यह बगदाद पहुंचे और वहांसे दिल्ली लाये गये। दिल्लीके बादशाह अलतमासने इन्हें बड़ी कीमतमें खरीदा था। मिनहाज-उस्-सराज जूरजानी नामक किसी मुसलमानने उन्हींकी अमलदारीमें 'तबकात इ-नासरी' नामक इतिहासकी रचना किया। इस इतिहासमें बादशाहकी अमलदारीके पहले हिस्सेका ज्यादा हाल लिखा है। इन्होंने सम्राट्को उलग खां नामसे अभिहित किया है। मिनहाजका मृत्यु हो जानेसे उनके ग्रन्थमें परवर्ती कालका वृत्तान्त लिपिबद्ध नहीं हुआ। पिछले वक्तकी बातें जिया-उद्-दीन बरनीकी बनायी हुई 'तारीख फीरोजशाही' में आ गयी हैं। इस किताबमें बादशाहकी तारीफ ही ज्यादा है, बुराईका कोई जिक्र नहीं। दूसरी तारीखोंसे यह समझा जा सकता है। सुननेमें आता कि बादशाह अल्तमासने पहले पहल उन्हें खरीद करके बाज चिड़ियेका मुहाफिज बनाया था। इनके एक भाई उस वक्त शाही दुनियाके एक ऊंचे ओहदे पर रौनक-अफरोज थे। उन्हींकी मददसे गयास-उद्-दीनने ऊंचा अमीर दरजा पाया था। अल्तमासके लड़के रुक्न-उद्-दीनकी अमलदारीमें यह पञ्जाबके एक हाकिम मुकरर हुए और थोड़े दिन पीछे दिल्लीकी मातहती न मान करके अपने नामसे ही पञ्जाब पर हुकूमत करते रहे। सुलताना रजियाकी अमलदारीमें कुछ लोगोंने उनके खिलाफ साजिश की थी। गयास-उद्-दीन उनमें मिल करके फौजके साथ दिल्लीको रवाना हुए। वहां लड़ाईमें हारने पर यह पकड़ लिये गये। थोड़े दिनों बाद कैदखानेसे भाग करके इन्होंने बहरामकी मदद दी थी। बादशाह बहरामके वक्त यह हांसी और रेवाड़ीके हाकिम मुकरर हुए। इसी वक्त मेरठका बलवा दबानेसे इनकी खब नामवरी बढ़ी। अला उद्-दीन मुसऊदके जमानेमें यह अमीर हाजबके ओहदे पर बिठलाये गये। फिर नसीर-उद्-दीन् बादशाहकी अमलदारीमें गयास-उद्-दीन कहनेको तो वजीर रहे परन्तु बादशाहका सभी काम इन्हींको करना पड़ता था। नसीर-उद्-दीनके कोई लड़का न रहनेसे यह अपना बलबन नाम रख करके १२६६ ई०के फरवरी महीने दिल्लीके तख्त पर बैठ गये। उस वक्त बहुतसे तुर्की गुलामोंने उमराव बन करके सलतनतके बड़े बड़े ओहदे दबाये थे। गयास-उद्-दीन अपने आप गुलामीसे बादशाही पर पहुंचे थे। फिर यह इस कोशिशमें लगे, उन्होंकी तरह कोई दूसरा तुर्क तख्त पर न बैठ जाय और उन्होंके घरानेमें बादशाही बनी रहे। पहले इन्होंने तुर्की उमरावोंको बर्बाद करके फौजी मुहकमा मजबूत कर लिया था। उसके पीछे यह जासूसोंको रख करके चुपके चुपके अहलकारोंका हाल मङ्गाने लगे, जिससे राजधानीको छोड़ करके ज्यादा कहीं जा आ न सके। थोड़े दिनों ऐसे ही हुकूमत करके पीछेको बहुतसी बातोंमें इन्होंने सखावत दिखलायी थी। खानदानकी इज्जतका इन्हें बड़ा खयाल था, परन्तु हिन्दुओंका एतबार न करते थे। गयास-उद्-दीन हिन्दुओंको कोई बड़ा काम न सौंपते थे। यह आलिमोंकी बड़ी इज्जत करते और उसीसे इनके दरबारमें बहुतसे आलिम फाजिल मौजूद रहते थे। इतिहास-लेखक फरिश्ता कहते कि उनके वक्त दरबारमें बड़ी चहल पहल रही। बादशाहकी देखादेखी बहुतसे उनकी नकल करते थे। गयास-उद्-दीन पहले शराब पीते थे, परन्तु तख्त पर बैठते ही इन्होंने उसको छोड़ दिया। उस वक्त शराब पीनेवालेको कड़ी सजा मिलती थी मुल्कमें कोई शराब बनाने न पाता था।

किसी वक्त इन्होंने सलतनतके सब बुड्ढे अहलकारोंको छुट्टी दे करके उन्हें खानेपीनेके लिये आधी तनखाह देनेका हुक्म निकाला। आजकल अङ्गरेज गवर्नमेण्टकी अमलदारीमें ऐसा पेनशन बड़ी इज्जतके साथ लिया जाता है। किन्तु उस समयके लोग इससे बहुत नाखुश हुए। उन सबने मशविरा करके दिल्लीवाले फौजदारके पास पहुंच उसके रोकनेकी कोशिश करनेको कहा था। फौजदार बादशाहके बड़े मुंह लगे थे और सब लोग उन्हें इज्जतकी निगाहसे देखते थे। दूसरे रोज वह बादशाहके पास जा मुंह लटका करके खड़े हो रहे। बादशाहके उसका सबब पूछने पर फौजदारने कहा था, यह सोचते थे—परमेश्वरके पास यदि सब बड़े-बूढ़े परित्यक्त होते, उनकी क्या हालत हो जाती। बादशाह सब समझ गये और बुड्ढोंको अपना अपना काम करनेके लिये कहने लगे।

बलबनके भतीजे शेरखान् लाहोर मुलतान आदि प्रदेशोंको हुक्मरान् मुकरर थे। उस समय वहां मुगलोंको लूटमार जारी रही। १२७० ई०को उनके मरने पर बलबनके बेटे महमूद उनके ओहदे पर बैठाये गये और सलतनतमें ढिंढोरा भी पिटा कि गयास-उद्-दीनके मरने पर उनके बेटे वही महमूद वारिश हो करके तख्त नशीन् होंगे।

बलबनके एक मरतबा बीमार होने पर उनके मरनेकी अफवाह उड़ी। बङ्गालके सूबेदार तुगरल खान्ने वह खबर पा करके अपनेको खुद मुखतार नवाब जैसा बतलाया था। बलबनने इस बातकी इत्तिला मिलने पर अवधके सूबेदार अलपगीन या अमीर खान्को बङ्गालका सूबेदार बना बहुत बड़ी फौजके साथ रवाना किया। अलपगीनको हारने पर इन्होंने गुस्सेमें बिगड़ करके फांसी पर चढ़ाया था। फिर मलिक तिरमती तुर्क नामके कोई दूसरे शख्स बङ्गाल भेजे गये। परन्तु उन्हें भी हार करके पीछे लौटना पड़ा। उस वक्त बलबन अपने आप आगे बढ़े थे। तुगरल राजधानी छोड़ करके त्रिपुराको भाग गये, बादशाह उनके पीछे पड़े। कोल राज्यके सूबेदार मलिक मकदूर थोड़ीसी फौज ले करके चुपकेसे तुगरलके खेमेमें पहुंच 'बलबन बादशाहकी फतेह' बोलते बोलते जिसे ही सामने पाया, कतल करने लगे। तुगरल आफत आयी हुई देख दरया पार उतरने लगे, परन्तु उसी वक्त मलिकके एक तीरका निशाना बन करके गिर पड़े। मलिकने उनका सर काट करके जिस्मको दरयामें बहा दिया। फिर बलबनने तुगरलके सभी खानदानियोंको मार डाला। इसके पीछे गयास-उद्-दीन गौड़को लौटे और अपने बेटे नसीर-उद्-दीन बघरा खान्को बङ्गालका सूबेदार बना दिल्ली चले गये। दिल्ली पहुंचने पर उनके बड़े बेटे उनसे मिले। बलबनने उन्हें इस विषयमें समझा बुझा मुलतान भेज दिया, मेरे न रहते तुम्हें किस तरह सलतनतका कामकाज चलना पड़ेगा। उसी समय तैमूर खान् फौजके साथ जा वहां लूटपाट मचाने लगे। महमूदने लड़ाईमें उन्हें हराया था। परन्तु वह थक कर नदी किनारे पानी पीने गये उसी वक्त तैमूरने दबे पावों उनको हमला करके मार डाला। बलबनका यह खबर पा करके दिल टूट गया और वह अपने मरनेकी राह देखने लगे। उन्होंने बङ्गालसे बघरा खान्को बुला करके अपना वारिश ठहराया और उनको अपने पास मरते दम तक रहनेको कहा। बघरा खां मरनेमें देर देख बादशाहसे बे कहे सुने बङ्गालको चल पड़े। बलबनने इस पर बिगड़ कर महमूदके लड़के खुशरूको अपना उत्तराधिकारी बनाया और १२८६ ई०को इस दुनियासे कूच किया।

गयास-उद्-दीन बाहमणि—दक्षिणापथमें बाहमणि राज्यका एक राजा वा सुलतान १३९७ ई०को अपने पिता माहमूद शाहकी मृत्युके बाद ये राज-गद्दी पर बैठे। लालचीन नाम एक तुर्की गोलामने सोचा था कि गयास-उद्-दीनके राजत्व लाभ होने पर वह उनका मंत्री नियुक्त होगा; लेकिन जब उसने देखा कि उसकी आशा धूलमें मिल गई तो उसने क्रोधित हो कर अपने छुरासे गयास-उद्-दीनकी दोनों आंखें निकाल डालीं और सागरके दुर्गमें अवरुद्ध कर उनके पितृव्य सामस-उद्-दीनको गद्दी पर बैठाया।

गयास-उद्-दीन महमूद—घोर और गजनीके राजा। १२०५ ई०में ये राजसिंहासन पर बैठ कर राजत्व करने लगे। चार वर्ष राजत्व करनेके बाद २१ जुलाई शनिवारको

रात्रिमें मुहम्मद अली शाहके नौकरोंने इन्हें मार डाला।

गयास-उद्-दीन महमूद घोरि--घोर और गजनीके अधिपति गयास-उद्-दीन मुहम्मदके पुत्र। पिताका मृत्यु होनेके बाद उसके पितृव्य शाहाब-उद्-दीन सिंहासन पर आरूढ़ हुये और उनके मरने पर गयास-उद्-दीन महमूदने राजत्व लाभ किया। ये बहुत आलसी राजा रहे। १२१० ई०में इनका देहान्त हुआ।

गयास-उद्-दीन मुहम्मद—एक ग्रन्थकार। ये युक्तप्रदेशमें लखनऊके अन्तर्गत शाहाबाद परगनाके मुस्तफाबाद या रामपुरमें रहते थे। यह जलाल-उद्-दीनके पुत्र और सरफ-उद्-दीनके पौत्र रहे। गयाम-उद्-दीनने चौदह वर्ष अनवरत परिश्रम करके १८२६ ई०में "गयास-उल-लुघात्" नामक अभिधान पारसी भाषामें सम्पूर्ण किया था। इसके अतिरिक्त और बहुतसी किताबें उन्होंने रचना की है।

गयास-उद्-दीन मुहम्मद घोरि- घोर और गजनीके अधिपति। ११५७ ई०में राजत्व लाभ करके इसने अपने भाई शाहब-उद्दीन मुहम्मद पर गजनीका शासनभार अर्पण किया। १२०३ ई०के १२वीं मार्च बुधवारको इनकी मृत्यु हुई।

गयासाबाद---बङ्गाल प्रान्तके मुर्शिदाबाद जिलेका एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० २४° १७' ३३" उ० और देशा० ८८° १६' ४१" पू०में आजमगञ्जसे ३ कोस उत्तर भागीरथीके दक्षिण उपकूल पर अवस्थित है। इसका प्राचीन नाम बदरीहाट है। गौड़के किसी पठान नवाब गयास-उद्-दीनके नामसे गयासाबाद कहा जाता है। स्थानीय ध्वंसावशेष देखनेसे यह बहुत पुराना नगर जैसा समझ पड़ता है। उसमें एक दुर्ग, राजप्रासाद, पालि भाषाकी लिपिमें खोदित प्रस्तरस्तम्भ, स्वर्णमुद्रा तथा मृत्पात्रादि मिलते हैं। इसका कोई इतिहास नहीं, पहले वहां किस वंशीय राजा राजत्व करते थे। पालि भाषालिखित शिलाफलक देखनेसे अनुमान होता है कि पहले वहां किसी बौद्ध राजाका राजत्व रहा। ध्वंसावशेषकी कुछ चीजें कलकत्तेके अजायब घरमें ला करके रखी गयी हैं।

गयेर (सं० क्लो०) श्लेष्मा (Saliva)।

गरंड (हिं० पु०) मट्टीका घेरा जो चक्कीके चारों तरफ आटा गिरनेके लिये बनाया जाता है।

गर (सं० क्लो०) ग्यारह करणोंमेंसे पांचवां करण। "बवबालवकौलवतैतिलाख्यगरवणिजविष्टिसंज्ञानाम।" (बृहत्संहिता ९९।४) २ विष, जहर। ३ वत्सनाभ नामक विष। ४ सम्मोहजनित विष। (पु०) गीर्यते इति कर्मणि अच्। ५ विष, जहर। ६ उपविष। ७ रोग, बीमारी।

गरक (अ० वि०) १ निमग्न, डूबा हुवा। २ विलुप्त, नष्ट, बरबाद। ३ किसी कार्यमें लीन या मग्न।

गरकाव (फा० पु०) १ डूबनेका भाव, डूबाव। (वि०) २ निमग्न, डूबा हुआ। ३ बहुत अधिक लीन।

गरकी (अ० स्त्री०) १ अतिवृष्टि। २ डूबनेकी क्रिया वा भाव।

गरग—बम्बई प्रदेशके धारवार जिलेका एक गण्डग्राम। यह धारवारसे १० मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ४५०० है। मोटे सूती वस्त्रका व्यवसाय यहां अधिक होता है।

गरगज (हिं० पु०) १ तोप रखनेका बुर्ज जो किलेकी दीवारों पर बना हुआ रहता है। २ युद्धकी सामग्री रखी जानेकी कृत्रिम टीला।

गरगरा (हिं० पु०) घिरनी, चरखी।

गरगवा (हिं० पु०) एक प्रकारकी घास जो धानकी फसल बढ़ने नहीं देती। इसे सिर्फ भैंसें खाते हैं।

गरगीर्ण (सं० त्रि०) जिसने विष पान किया हो।

गरगीर्णि (सं० पु०) १ वह जिसने विष पान किया हो। २ एक ऋषि।

गरघ्न (सं० पु०) कृष्णार्जक, कृष्णपत्र क्षुद्रतुलसी। २ विषनाशक। ३ बर्बर, बबूल।

गरघ्नी (सं० पु०) गरघ्न-ङीप्। मत्स्यविशेष, गरई मछली। इसका गुण—मधुर, कषाय, वातपित्त और कफनाशक, रुचि और बलवीर्यकर है। (भावप्रकाश)

गरज (हिं० स्त्री०) बहुत गम्भीर और तुमुल शब्द।

ग़रज़ (अ० स्त्री०) आशय, प्रयोजन, मतलब।

गरजउल—त्रिहुत जिलान्तर्गत एक विभाग। इसके और ६ उपविभाग हैं। गण्डक, छोटी गण्डक, बिया, नून और कदाना कई एक नदियां इस विभागमें हो कर प्रवाहित हैं। इस विभागके प्रधान नगर मुजफ्फरपुर और ताजपुर हैं। मुजफ्फरपुरसे हाजीपुर तक दो रास्ते गये

है। पुराना रास्ता शाहपुर और नया रास्ता गुड़िया होते हुये इटावरमें खां सराइ नामक स्थान पर एक दूसरेसे मिल गये हैं। एक रास्ता हाजीपुरसे कन्होली और महोवा थाना होता हुआ पूसा और दरभङ्गा तक चला गया है। गरजउलके मध्य लालगञ्ज और महोवा नामक ग्राममें बाजार है। कनहोली, घटारु तथा रसुलगंज नामक और कई एक प्रधान ग्राम इसके अन्तर्गत हैं।

गरण (सं॰ क्ली॰) गृ सेचने, गृ निगरणे वा भावे ल्युट्। १ सेचन, सींचन। २ भक्षण, भोजन, खाना।

गरजन (हिं॰ पु॰) १ गंभीर शब्द, गरज, कड़क। २ गरजनेका भाव। ३ गरजनेकी क्रिया।

गरजना (अ॰ क्रि॰) १ बहुत गंभीर और तुमुल शब्द करना। २ चटकना, तड़कना।

गरज़मन्द (फा॰ वि॰) १ जिसे आवश्यकता हो, जरूरतवाला। २ इच्छुक, चाहनेवाला।

गरजी (अ॰ वि॰) १ गरजमन्द, गरजवाला। चाहनेवाला।

गरजुआ (हिं॰ स्त्री॰) एक तरहकी खुमी। यह श्वेत रंग लिये गोलाकार होती है। वर्षा ऋतुके पहला पानी पड़ने पर यह प्रायः साखू आदिके वृक्षों के निकट वा मैदानोंमें पृथ्वीसे निकल आती है। इसके ऊपर सिर्फ गूटा हो होता है। इसकी तरकारी स्वादिष्ट होती है। बहुतोंका विश्वास है कि यह बादलके गरजनेसे पृथ्वीसे निकलती है। सफरा, गगनफूल इसके भेद हैं।

गरजू (हिं॰ वि॰) गरजी देखो।

गरट्ट (हिं॰ पु॰) समूह, झुण्ड।

गरडेन रीच—बङ्गालके चौवीस परगना जिलेका एक शहर। यह अक्षा॰ २२° ३३' उ॰ और देशा॰ ८८° १९' पू॰के बीच गङ्गा नदीके पूर्वीय तीर पर अवस्थित है। यहांकी जनसंख्या २८२११ है। जिनमेंसे १२१९१ हिन्दू, १५७७९ मुसलमान और १८७ ईसाई हैं। यह शहर कलकत्ताके आसपास एक प्रसिद्ध वाणिज्य स्थानमें गण्य है। यहांकी आय लगभग ४८०००) रुपया और व्यय ४६०००) रु॰ है।

गरद (सं॰ त्रि॰) गरं विषं ददातीति गर-दा-क। १ विषप्रद, विषदेनेवाला।

"अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः।" (मनु ३।१५४।)

(क्ली॰) गृ भावे अप् गरो भक्षणम्। २ विष, जहर। ३ एक प्रकारका रेशमी कपड़ा।

गरदन (फा॰ स्त्री॰) १ धड़ और सिरका जोड़नेवाला अंग, ग्रीवा। २ लम्बी लकड़ी। यह जुलाहोंकी लपेटके दोनों सिरों पर आड़ी साली जाती है, साल, बरतन आदिका ऊपरी पतला भाग।

गरदन-घुमाव (हिं॰ पु॰) एक प्रकारका कुश्तीका पेंच। इसमें खेलाड़ी अपने जोड़का दाहिना वा बायां हाथ धर कर अपने गले पर रखते और उसे सामनेकी ओर पटक देते हैं

गरदना (हिं॰ पु॰) १ मोटी गरदन। २ वह धौल या झटका जो गरदन पर लगे।

गरदनियां (हिं॰ स्त्री॰) गरदन पकड़ कर किसी आदमीको बाहर निकालनेकी क्रिया।

गरदनी (हिं॰ स्त्री॰) १ कुरते आदिका गला। २ गलेमें पहननेका एक प्रकारका आभूषण, हंसुली। ३ अर्धचन्द्र, गरदनियां। ४ घोड़ेकी गरदन पर बांधनेका कपड़ा। ५ कारनिस, कङ्गनी। ६ कुश्तीका एक पेंच।

गरदर्प (सं॰ पु॰) सर्प, सांप, भुजङ्ग।

गरदा (फा॰ पु॰) धूल, मट्टी, खाक, गर्द।

गरदान (सं॰ क्ली॰) दा-ल्युट्। गरस्य दानम्, ६-तत् विषप्रदान, जहरका देना।

गरदान (फा॰ वि॰) २ घूम फिर कर एक ही स्थान पर आनेवाला। (पु॰) ३ वह कबूतर जो घूमफिर कर अपने स्थान पर आता हो।

गरदानना (फा॰ क्रि॰) १ शब्दोंका रूप साधना। २ पुनः पुनः कहना। ३ गिनना, समझना, मानना।

गरदुआ (हिं॰ पु॰) पशुओंका एक प्रकारका ज्वर। यह वर्षाऋतुके आरम्भमें बहुत भींगनेके कारण हुआ करता है। इस ज्वरमें पशुके सब अंग जकड़ जाते और गलेमें घरघराहट होने लगती है।

गरध्वज (सं॰ क्ली॰) अभ्रक, अबरक।

गरधरन (सं॰ पु॰) विषको धारण करनेवाला, शिव, महादेव।

गरनाल (हिं॰ स्त्री॰) एक बहुत चौड़े मुखकी तोप।

इसका मुंह इतना चौड़ा रहता है कि इसमें आदमी सहजमें चला जा सके. घननाल, घमनाद।

गरनाग्निनी (सं० स्त्री०) पीतवर्ण देवदालीलता, देवदारु।

गरप्रिय (सं० पु०) वह जिसको विष प्रिय लगता हो, शिव, महादेव।

गरबई (हिं० स्त्री०) अभिमानका भाव।

गरबाना (अ० क्रि०) घमण्डमें आना, अभिमान करना, शेखी करना।

गरबा (हिं० पु०) एक प्रकारका गीत जो प्रायः गुजराती स्त्रियां गाती हैं।

गरबिला (हिं० वि०) जिसे गर्व हो, घमण्डी, अभिमानी।

गरभ (सं० पु०) गीर्यते इति गृ-अभच। यद्वा गर्भस्य गरभो देशः। गर्भ, हमल।

गरभदान (हिं० पु०) ऋतुप्रदान, पेट रखाना।

गरभाना (अ० क्रि०) १ गर्भिणी होना। २ धान गेहूं आदिके पौधेमें बाल लगना।

गरभी (अ० वि०) अभिमानी, घमंडी।

गरम (फा० वि०) १ जिसके छूनेसे जलन मालूम हो, तप्त, उष्ण। २ तीक्ष्ण, उग्र, खरा। ३ तेज, प्रबल, प्रचंड, जोर शोरका। ४ जिसका गुण उष्ण हो। ५ उत्साहपूर्ण, जोशसे भरा।

गरमा गरमी (हिं० स्त्री०) उत्साह, मुस्तैदी, जोश।

गरमाना (अ० क्रि०) १ उष्ण पड़ना, गरम पड़ना। २ उमंग पर आना। ३ क्रोध भरना, आवेशमें आना।

गरमाहट (हिं० स्त्री०) उष्णता, गरमी।

गरमी (फा० स्त्री०) उष्णता, ताप, जलन।

गरमीदाना (हिं० पु०) अंधौरी, अंभौरी, छोटे छोटे लाल दाने जो गरमी ऋतुमें पसीनाके कारण शरीर पर निकलते हैं।

गरमूर—पूर्वीय बङ्गाल और आसामके शिवसागर जिलाका एक ग्राम यह अक्षा० २६° ५८´ उ० और देशा० ८४° ८´ पू०के मध्य माजुली द्वीप पर अवस्थित है। यहां गोसाईं सम्प्रदायका वास है जिन्हें आसामके मनुष्य बहुत सम्मान किया करते हैं। इन्हें अहोम राजाओंसे ४०००० एकर शुल्करहित जमीन मिली थी; किन्तु बरमाके राजाओंने उनका यह अधिकार कायम न रखा तथा उक्त जमीन उनसे छीन् ली। उस समय गोसाईं वृन्दावनमें रहते थे और वे अपना अधिकार पुनः पलटानेकी कुछ भी चेष्टा न की। जब इसके विषयमें सरकारकी ओरसे तहकीकात् हो रही थी तोभी सरकारने २३१ एकर शुल्क रहित जमीन उन्हें प्रदान की है।

गरलि-नानि—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ प्रदेशका एक ग्राम। यहां स्वतन्त्र एक जमींन्दार हैं जो सिर्फ बरोदा गायकवाड़को कर देते हैं।

गरलि-मति—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ प्रदेशका एक ग्राम। यह ग्राम एक जमीन्दारके अधीन है। उन्हें बरोदा गायकवाड़को और जूनागड़के नवाबको कर देना पड़ता।

गररा (हिं० पु०) एक प्रकारका घोड़ा, गर्रा।

गरराना (हिं० क्रि०) भीषण ध्वनि करना, गरजना।

गररी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी चिड़िया, गलगलिया।

गरल (सं० क्ली०) १ विष, जहर। "गरलमिव कलयति" (गीतगोविन्द ४।३) २ सर्पविष। ३ घासका मुट्ठा, घासकी अंटिया, पुला।

गरलधर (सं० पु०) १ विष धारण करनेवाला, महादेव। २ सर्प, सांप।

गरलारि (सं० पु०) गरलस्य अरिः, ६-तत्। मरकतमणि, पन्ना।

गरव्रत (सं० पु०) गरं विषवत् सर्प भक्षणं व्रतं यस्य, बहुव्री०। मयूर, मोर।

गरवा (हिं० वि०) महान, गरूई, भारी।

गरसपुर—मध्यभारतके ग्वालियर राज्यका एक नगर। यह अक्षा० २३° ४´ उ० तथा देशा० ७४° ८´ पू०में अवस्थित है। यहां एक पक्का प्राचीन घर है जिसमें बहुत तरहके शिल्पकार्य खुदे हुए हैं।

गरह (हिं० पु०) १ ग्रह। २ अरिष्ट।

गरहन (सं० पु०) १ कृष्णार्जक, काली तुलसी। २ बर्व्वर, बबई, ममरी, (त्रि०) ३ विषनाशक।

गरहन (हिं० पु०) एक प्रकारकी मछली।

गरहर (हिं० पु०) वह काठ जो नटखट चौपायोंके गलेमें लटकाया जाता है। कुंदा, ठेंगा, ठेकुर।

गरहाजिरी (फा० स्त्री०) अनुपस्थित।

गरा (सं० स्त्री०) गीर्यते भक्ष्यते इति गॄ-अप्। १ देवदालीलता, दंदाल। २ भक्षण, भोजन, खाना।

गरागरी (सं० स्त्री०) गरं मूषिकविषं आगिरति गॄ-पचादित्वात् अच्। देवताड़वृक्ष, देवदाली, बंदाल, घघरबेल, सोनैया बेल।

गराज (फा० स्त्री०) गम्भीर शब्द, गर्जना गरज।

गराड़ी (हिं० स्त्री०) घिरनी, चरखी।

गराधिका (सं० स्त्री०) गरे विषप्रतीकारे अधिका प्रधाना। लाक्षा, लाह।

गरात्मक (सं० पु०-क्ली०) १ शोभाञ्जनवृक्ष, सोहिञ्जनका पेड़। २ सोहिञ्जनका बीज।

गरारा (हिं० वि०) गर्वयुक्त, प्रबल, प्रचंड, बलवान्।

गरारि—बङ्गदेशके पूर्णिया जिलान्तर्गत एक परगना। इसके मध्य होकर कोशी नदी प्रवाहित है। इस नदीकी बाढ़से अनेक प्रकारकी क्षति प्रतिवर्ष हुआ करती है। यहां चावल, सरसों, तम्बाकू और नील उत्पन्न होते हैं।

गरारिग—जातिविशेष। ये लोग इलाहाबादसे फरुखाबाद प्रदेशमें रहते हैं। इस जातिकी कई एक श्रेणियां हैं। यथा—इलाहाबादी, जौनपुरी, वाकरकाशान, वरकता, भेंड़ारिया, चिकावा, धाङ्गड़, निखर, पाचेट और तसेलहा। चिकावा मुसलमानधर्मावलम्बी, धाङ्गड़ जौनपुरी और निखरगण कम्बल बुन कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। भेंड़ासे भेंड़ारिया नाम हुआ है। भ्राताकी मृत्यु होने पर उसकी विधवा स्त्रीका विवाह कराना इन लोगोंमें निषिद्ध नहीं है। इनका आचार व्यवहार ग्वालाके जैसा होता है। गरेरि देखो।

गरारी (हिं० स्त्री०) गरारि देखो।

गराव (हिं० पु०) १ तीन मस्तूलवाला एक प्रकारका बड़ा जहाज। इसका व्यवहार १४वीं और १५वीं शताब्दीको बङ्गाल और उसके आसपासकी खाड़ियोंमें होता था। २ साधारण नाव।

गरावन (पु०) गरावम देखो।

गरावा (हिं०) हलकी जमीन। कम उपजाऊ भूमि।

गरिमन् (सं० पु०) गुरोर्भावः। १ गुरुता, गौरव। २ माहात्म्य, महिमा। ३ गुरुत्व, भार। "गिरिं गरिम्णा परिमः प्रकम्पयन्।" (भागवत ८।१।२१) ४ गर्व, अहंकार, घमण्ड। ५ आत्मश्लाघा, शेखी। ६ आठ सिद्धियोंमेंसे एक सिद्धि।

गरिया—जातिविशेष। कामरूप अञ्चलमें इनका वास है। ये मुसलमानधर्मावलम्बी हैं। साधारण मुसलमान इन्हें नीचजाति समझ कर घृणा करते हैं। ये गोमांस और शूकर मांस भक्षण करते तथा दरजीका काम करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

गरिया (हिं० पु०) वृक्षविशेष। यह प्रायः मध्य प्रदेश, मध्यभारत, बरार और मन्द्राजमें पाये जाते हैं। इस वृक्षकी पत्तियां शिशिर ऋतुमें झड़ जाती हैं। इसकी लकड़ीसे गाड़ी, तस्वीरोंके चौखटे, मेज तथा कुरसियां बनाई जाती हैं। हिन्दुस्थानसे यह लकड़ी बिलायतको बहुत जाती है और वहां अलमारी, कुरसी, मेज, ब्रुशके दस्ते आदि बनानेके काममें आती है।

गरियाना (हिं० क्रि०) दुर्वचन कहना, गाली देना।

गरियार (हिं० वि०) वह मनुष्य जो अपनी जगहसे जल्दी न उठे, सुस्त, बोदा, मट्ठर।

गरियाल् (हिं० पु०) एक प्रकारका रङ्ग जो काला-नीला होता है। इस रंगसे ऊन रंगा जाता है। इसको प्रस्तुतप्रणाली यह है कि दो सेर नीलका चूर्ण गन्धकके तेजाबमें मिला कर एक मजबूत बरतनमें रख छोड़ें इसे सिर्फ एक रात इसी दशामें रहने दें। जिस ऊनको रङ्गना हो उसे चूनेके पानीमें डुबा कर कई बार स्वच्छ जलसे धोकर घाममें सुखा लें पुनः खौलते हुये पानीमें थोड़ासा रङ्ग बरतनमेंसे लेकर मिला दें और ऊनको उसमें तब तक रहने दें जब तक उसमें रङ्ग नहीं चढ़ जाय। जब रङ्ग अच्छी तरहसे जम जाय तो उसे निकाल कर फिटकिरी मिले पानीमें पछार डालें।

गरिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन गुरुरिति गुरु-इष्ठन् गरादेशश्च। १ अतिगुरु, अत्यन्त भारी। २ जो पचनेमें हल्का न हो, जो शीघ्र न पचे। ३ अति महत्, बहुत बड़ा ४ अति गौरवान्वित, बहुत नामवर। ५ मर्यादाविशिष्ट, प्रतिष्ठित, इज्जतदार। (पु०) ६ एक दानवका नाम।

"गरिष्ठश्च दनायुश्च दीर्घजिह्वश्च दानवः।" (भारत १।६५।२०)

७ एक राजाका नाम। (भारत २।८।१२) ८ एक तीर्थ स्थान।

गरी (सं० स्त्री०) गृ-अच्-ङीप। १ देवताडवृक्ष। २ खरा जिससे घर छाना जाता है।

गरी (हिं० स्त्री०) नारियल फलके भीतरका गुद्दा। यह नरम और स्वादिष्ट होता है।

गरीब (अ० वि०) १ नम्र, दीन, हीन। २ दरिद्र, निर्धन, अकिंचन कंगाल।

गरीबनिवाज (फा० वि०) दीनों पर दया करनेवाला, दुःखियोंका दुःख दूर करनेवाला, दयालु।

गरीबपरवर (फा० वि०) गरीबोंको पालनेवाला, दीन, प्रतिपालक।

गरीबाना (फा० वि०) गरीबोंकी तरहका।

गरीबामज (हिं० वि०) गरीबोंके योग्य, छोटा मोटा, भला बुरा।

गरीबी (अ० स्त्री०) १ दीनता, अधीनता, नम्रता। २ दरिद्रता, निर्धनता, कंगाली।

गरीयस् (सं० पु०) अतिशयेन गुरुः गुरु इयसुन् गरादेशश्च। १ अतिशय गुरु, अत्यन्त भारी। २ अतिगौरवान्वित, वह जिसका बहुत मान हो। ३ मर्यादासम्पन्न, प्रतिष्ठित मनुष्य, इज्जतदार आदमी।

गरीयसी (सं० स्त्री०) गरीयस् स्त्रियां ङीप्। १ अत्यन्त भारीपन। २ अतिमाननीया, वह जिसका संमान बहुत होता हो। ३ अतिगौरवान्वित।

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।" (रामायण)

गरुआई (हिं० स्त्री०) गुरुता, भारीपन।

गरुड़ (सं० पु०) गरुद्भ्यां पक्षाभ्यां डयते इति, डी-ड, पृषोदरादित्वात् तलोपः। विनताके गर्भजात कश्यपात्मज पक्षिराज। (रामा० ३।१४।३०) इनका नामान्तर—गरुत्मान्, तार्क्ष्य, वनतेय, खगेश्वर, नागान्तक, विष्णुरथ, सुपर्ण, पन्नगाशन, महावीर, पक्षिसिंह, उरगाशन, शाल्मली, हरिवाहन, अमृताहरण, नागाशन, शाल्मलीस्थ, खगेन्द्र, भुजगान्तक, तरस्वी और तार्क्ष्यनायक है।

कश्यपने पुत्रेच्छु हो करके यज्ञ आरम्भ किया। उन्होंने इन्द्र, बालखिल्य और अन्यान्य देवताओंको यज्ञीय काष्ठ लानेमें लगाया था। इन्द्र अपने बलवीर्यके अनुरूप पर्वतप्रमाण काष्ठराशि उत्तोलन करके अनायास पहुंचाने लगे। अङ्गुष्ठ-प्रमाण बालखिल्य ऋषि सब मिल करके किसी पलाशपत्रका वृन्त उठाये लिये जाते थे। इन्द्र पथिमध्य उनका उपहास और अवमानना करके शीघ्र ही चल दिए। इस पर बालखिल्य मुनि अन्तरमें अत्यन्त क्रुद्ध हो करके देवराजके भयप्रदर्शनार्थ अन्य व्यक्तिको इन्द्र बनानेके लिये एकान्त यत्न करने लगे। यह समझने पर इन्द्र अत्यन्त सन्तप्तचित्त हो करके कश्यपके शरणापन्न हुए। प्रजापति कश्यपने इन्द्रकी वह बात सुन बालखिल्योंके निकट जा करके कर्मसिद्धिका विषय पूछा था। सत्यवादी बालखिल्योंने महात्मा कश्यपको प्रत्युत्तर दे दिया। उस समय कश्यपने उनको सान्त्वना पूर्वक कहा था—'देखो, ब्रह्माके नियोगसे यह इन्द्र हुए हैं। आप लोग भी तपस्या करके अन्य इन्द्रके निमित्त यत्न कर रहे हैं। आप सज्जन हैं, इस लिये ब्रह्माके वाक्यमें अन्यथा करनेके योग्य नहीं। फिर आपका भी सङ्कल्प मिथ्या नहीं जा सकता। आप लोगोंमें यह पक्षियोंके इन्द्र बनें। देवराज आप लोगोंसे याच्ञा करते हैं। आप भी इनके प्रति प्रसन्न हों।' इस पर बालखिल्य बोल उठे—'हमने आपके सन्तान निमित्त सङ्कल्प करके इस कार्यका अनुष्ठान आरम्भ किया है। आप वही कीजिये, जिसमें मङ्गल हो।' इसी समय दक्षकन्या विनतादेवीने पुत्रके निमित्त अभिलाष करके अपने स्वामीके निकट आगमन किया था। कश्यप उनसे कहने लगे—हे देवि! तुम्हारा यह अभिलाष सिद्ध होगा। तुम त्रिभुवनके प्रभुत्वसम्पन्न दो पुत्रोंको प्रसव करोगी। बालखिल्योंकी तपस्या और मेरे सङ्कल्प द्वारा तुम्हारे दोनों पुत्र पक्षियोंका इन्द्रत्व करेंगे।' फिर विनता सफलकाम हो करके हृष्टचित्त हो गयीं और यथाकाल अरुण तथा गरुड़ नामक दो पुत्रोंको प्रसव किया। अरुण विकलाङ्ग हो करके जन्मग्रहण पूर्वक सूर्यदेवके सम्मुख अवस्थित रहे। गरुड़ पक्षियोंके इन्द्रत्व पद पर अभिषिक्त हुए।

महातेजस्वी गरुड़ने स्वयं अण्ड विदीर्ण करके जन्मग्रहण किया था। जन्मकालको इनका रूप—अग्निराशिकी भांति प्रभासम्पन्न, अतिशय भयङ्कर, प्रलयकालके अग्नि-जैसा प्रदीप्त, विद्युत्की तरह पिङ्गलवर्ण चक्षुविशिष्ट, समुद्राग्नि सदृश घोरतर उग्र, वीर स्वरविशिष्ट और महाकाय था।

गरुड़के विष्णुवाहन होनेकी कथा महाभारतमें इस प्रकार लिखी है—पक्षिराज अमृत ले करके निकले थे। गरुड़के साथ राहमें विष्णु भी रहे। नारायणने उनके प्रति तुष्ट हो करके कहा—मैं तुमको वर दूंगा। गरुड़ने उत्तरमें मांग लिया- मैं आकाशगामी हो करके आपके उपरिभागमें रहूं और अमृत व्यतिरेक भी अजर अमर बनूं। विष्णुने विनतापुत्रको 'तथास्तु' कह करके वही वर दिया था। गरुड़ने उक्त वर ग्रहण करके विष्णुको कहा-मैं भी आपको वर दूंगा, ग्रहण कीजिये। विष्णुने महाबल गरुड़से मांगा था—आप मेरे वाहन बनें और ध्वज पर रह करके मेरे उपरिभागमें अवस्थिति करें।

गरुड़ स्वीय पदनखमें गज तथा कच्छप और चञ्चु-पुटमें महावटवृक्ष धारण करके आकाशमार्गमें उड़े थे। अमृतके लिये देवताओंके साथ इनका घोरतर युद्ध हुआ उसमें इन्होंने जय लाभ किया था। (महाभारत, आदिपर्व)

२ व्यूहविशेष। (मनु ७।१८७) ३ विंशति प्रकार प्रासादों-के मध्य कोई प्रासाद, किसी किस्मकी बड़ी इमारत।

(बृहत्संहिता ५६।२४)

४ जैनमतानुसार स्वर्गके इन्द्रक विमानोंमेंसे ३५वां विमान। ५ एक जातिके देव। इनको १६० देवियां (स्त्री) होती हैं।

गरुड़गामी (सं० पु०) १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

गरुड़गिरि—एक गिरि-शृङ्ग। यह महिसूर राज्यमें कादुर जिलान्तर्गत अक्षा० १३° २८' उ० और देशा० ७६° १७' पू०में अवस्थित है।

गरुड़घण्टा (स्त्रि० पु०) ठाकुरजीको पूजामें बजाया जानेवाला एक घण्टा। इसके ऊपर गरुड़की मूर्ति बनी रहती है।

गरुड़ध्वज (सं० पु०) गरुड़ो ध्वजो यस्य, बहुव्री०। १ विष्णु।

"बालस्य पश्यतो धाम स्वमगाद् गरुड़ध्वजः॥" (भागवत ३।४।२६)

२ एक प्रकारका स्तंभ जिस पर गरुड़की आकृति बनी रहती है।

३ जैनमतानुसार प्रथमश्रेणीके विद्याधरोंमेंसे एक। ४ गरुड़कुमार।

गरुड़ नदी—मन्द्राज प्रदेशके अन्तर्गत दक्षिण अर्काट जिला-की एक नदी। यह कल्पकुरचि तालुकमें विगल सरो-वर नामक स्थानसे निकल कर मणिता नदीके साथ मिल गई है और ३० कोस जाकर वङ्गोपसागरमें गिरी है। नदीका तलदेश अत्यन्त वालुकामय है।

गरुड़पाश (सं० पु०) एक प्रकारका फन्दा या फांसी। इसे प्राचीन कालमें शत्रुको फंसाने और बांधनेके लिये उस पर फेंकते थे।

गरुड़पुराण (सं० क्लो०) गरुड़ाय उक्तं विष्णुना पुराणम्, मध्यपदलो०। अष्टादश पुराणान्तर्गत सप्तदश महा-पुराण। भगवान् गरुड़ासनने यह पुराण गरुड़से कहा था। इसमें १८००० श्लोक हैं। यह पुराण तार्क्ष्यकल्प-की कथा अवलम्बनसे वर्णित हुआ है। इसमें नीचे लिखा-जैसा विवरण है—सूतनैमिषीय-संवादमें सूतकी गरुड़पुराणकथनजिज्ञासा, गरुड़पुराणकी उत्पत्तिकथा, रुद्रविष्णुसंवादमें सृष्टिकथन, प्रजापतिसृष्टि, कश्यपकृत सृष्टि, सूर्यादिपूजाकथन, विष्णुपूजाकथन, दीक्षाविधि, लक्ष्मीपूजा, नवव्यूहार्चन, पूजाक्रम, विष्णुपञ्जरकथन, संक्षेपमें योगोपदेश, विष्णुसहस्रनाम, विष्णुध्यान तथा सूर्यपूजाकथन, मृत्युञ्जयपूजा, गारुड़विद्या, शिवोक्त सर्पमन्त्र, पञ्चवक्त्रपूजा, शिवपूजा, गाणपत्यादि पूजा, पादुकापूजा, करन्यासादि कथन, विषहरण, गोपालपूजा, श्रीधरादिमन्त्रकथन, विष्णुपूजाका प्रकारान्तर, पञ्चतत्त्वार्चन, सुदर्शनपूजादि, हयग्रीवपूजा, गायत्रीमाहात्म्य, दु भोकर धाममें सुखा [illegible] न्तरमें सूर्यपूजा, महेश्वरपूजा, नानावि- [illegible] पवित्रारोहण, विष्णुपवित्रारोहण, मूर्तामूर्तध्यान, शालग्रामलक्षण, वास्तुनिर्णय, प्रासाद-लक्षण, देवप्रतिष्ठाकथन, योगधर्मादि, आह्निकनिर्णय, दानधर्म, प्रायश्चित्तविधि, अष्टनिधिकथन, प्रियव्रतवंश-वर्णनमें सप्तद्वीपादि वर्णन, भूसंस्थानकथन तथा भारत-वर्षका विवरण, प्लक्षद्वीपके राजपुत्रादिका नामकीर्तन, सप्त पाताल और नरकवर्णन, सूर्यादिके प्रमाण और संस्थानका वर्णन, ज्योतिःसार कीर्तनमें नक्षत्राधिप और योगिनी प्रभृतिका वर्णन, दशादि विचार, चन्द्र-शुद्ध्यादि, लग्नमान, चरस्थिरादि भेदसे कार्यविशेष-की कर्तव्याकर्तव्यताका कथन, संक्षेपमें पुरुषों और नारि-योंका शुभाशुभ लक्षण, सामुद्रिक लक्षण, शालग्रामशिला-

भेदकथन, तीर्थ कथन, प्रभवादि षष्टिवर्षकीर्तन, पवन विजयादि, रत्नोत्पत्तिकथन, रत्नपरीक्षा, मुक्ताफलपरीक्षा, पद्मरागपरीक्षा, मरकतपरीक्षा, इन्द्रनीलपरीक्षा, वैदूर्य-परीक्षा, पुष्परागपरीक्षा, कर्केतनपरीक्षा, भीष्मरत्नपरीक्षा, पुलकपरीक्षा, रुधिररत्नपरीक्षा, स्फटिकपरीक्षा, विद्रुम-परीक्षा, संक्षेपमें बहुतीर्थ कथन, गयामाहात्म्य, गयातीर्थ की उत्पत्ति प्रभृतिका कथन, गयामें स्नानभेद और क्रिया-भेदसे फलभेदकथन, फल्गु नदीमें स्नान और रुद्रपदादि-में पिण्डदानमाहात्म्यादि कथन, विशाल नृपतिका इति-हास, प्रेतशिलादिमें पिण्डदानकथन, प्रेतशिलादिमें श्राद्धकर्त्ताका फल, चतुर्दश मनु और तत्पुत्र तथा उनके मन्वन्तरके सप्तर्षि और देवादि कीर्तन, मार्कण्डेय क्रोष्टुकिसंवादमें रुचिका उपाख्यान, रु चकृत पितृस्तव, पितृगणके निकटसे रुचिका वरप्राप्ति, रुचिका परिणय, रौच्य मनुकी उत्पत्ति, हरिध्यान, प्रकारान्तरमें हरिध्यान, याज्ञवल्क्योक्त धर्मकथनमें धर्मदेशादि कथन, उपनयन तथा स्वाध्यायकीर्तन, गृहस्थ-धर्म निर्णय, सद्योर्गजात, पञ्च महायज्ञ सन्ध्योपासनादि कथन, गृहीका धर्म और वर्णधर्मादि कथन, द्रव्यशुद्धि, दानधर्म, श्राद्धविधि, विना-यकशान्ति, ग्रहशान्ति, वानप्रस्थाश्रमविवरण, यतिधर्म, पापचिह्नकथन, प्रायश्चित्तविधि, अशौचादि निर्णय, परा-शर-धर्मशास्त्र, नीतिसार, नीतिसारमें धनरक्षादिका उपदेश, नीतिसारमें ध्रुवपरित्याग निषेधादि, नीतिसारमें राजलक्षण, भृत्यलक्षण, गुणवन्नियोगादि, मित्रामित्र-विभाग, कुमार्यादि परित्यागादिका उपदेश, व्रतकथना-रम्भ, अनङ्गत्रयोदशीव्रत, अखण्डद्वादशीव्रत, अगस्त्या-र्घ्य व्रत, भीष्मपञ्चकादि व्रतविधि, शिवरात्रिव्रत, एकादशी-माहात्म्य, विष्णुपूजन, भीमैकादश्यादि कीर्तन, व्रता-वलम्बीकी नियमावली, प्रतिपदादिव्रत, षष्ठीसप्तमीव्रत, रोहिण्यष्टमीव्रत, बुधाष्टमीव्रत, अशोकाष्टमीव्रत, महा-नवमीव्रत, महानवमीव्रतप्रसङ्गमें कौशिकमन्त्रकथन, वीरनवमीव्रत, दमननवमीव्रत, दिग्दशमीव्रत, एकादशी-व्रत, श्रवणद्वादशीव्रत, मदनत्रयोदशीव्रतादि, सूर्य वंश-कीर्तन, चन्द्रवंशवर्णन, पुरुवंशकीर्तन, जनमेजयका वंशकथन, विष्णुकी अवतारकथा, पतिव्रता-माहात्म्य, रामायणकथन, हरिवंशकथन, भारतकथन, आयुर्वेद-कथनमें सर्वरोगका निदान, ज्वरनिदान, रक्तपित्तनिदान, कासनिदान, हिक्कारोगनिदान, यक्ष्मनिदान, अरोचकनि-दान, हृद्रोगादि निदान, मदात्ययादिनिदान, अर्शोनिदान, अतिसारनिदान, मूत्राघातनिदान, प्रमेहनिदान, विद्रधि-निदान, उदरनिदान, पाण्डुशोथनिदान, विसर्पादिनिदान, कुष्ठनिदान, क्रिमिनिदान, वातव्याधिनिदान, वातरक्त-निदान, सूत्रस्थान, अनुपानादि कथन, ज्वरादि रोगों-की चिकित्सा, नाड़ीव्रणादिकी चिकित्सा, स्त्रीरोगादिकी चिकित्सा, द्रव्यनिर्णय, घृततैलादिकथन, नानायोगादि-कथन, नानारोगौषधकथन, वशीकरणादि, दन्तश्वेती करणादि, स्त्रीवशीकरण और मशकमारणादिक[illegible], नेत्रशूलादिका औषधकथन, रक्तशक्तिवृद्धिका उपाय, ग्रहणीरोगका औषध, कटिशूलका औषध, गणेशपूजा, प्रमेहका औषध, मेधावृद्धिका औषध, रक्तपात निवारणका औषध, पटलदन्तव्यथादिका औषध, गण्डमालादिका औषध, सर्पाघातादिका औषध, योनिव्यथाका औषध, पशुचिकित्सा, पाण्डुरोगादिका औषध, बुद्धिनिर्मलकर-णका औषध, विष्णुकवच, विष्णुविद्या, विष्णुधर्म नामक विद्या, गारुड़विद्या, त्रिपुराकल्प, प्रश्नगणना, वायु-जय, अश्वचिकित्सा, औषधिका नामनिर्देश, व्याकरणके नियम, उदाहरण, छन्दःशास्त्रारम्भ, मात्रावृत्तकथन, सम-वृत्त, अर्धसमवृत्त, विषमवृत्त, प्रस्तारादि निर्देश, धर्मो-पदेश, स्नानविधि, तर्पण, वैश्वदेवविधि, सन्ध्याविधि, श्राद्धविधि, नित्यश्राद्ध, सपिण्डीकरण, धर्मसारकथन, शूद्रोच्छिष्ट भोजनादिका प्रायश्चित्त, युगधर्मकथन, नैमि-त्तिक प्रलय, संसारकथनमें पापपरिमाण, अष्टाङ्गयोग, विष्णुभक्ति, नारायणनमस्कार, नारायणकी आराधना, नारायणका ध्यान, विष्णुमाहात्म्य, नृसिंहस्तव, ज्ञाना-मृत, मार्कण्डेयप्रोक्त नारायणका स्तव: ब्रह्मप्रोक्त विष्णु-स्तव, ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान, गीतासार, अष्टाङ्गयोगका प्रयो-जन, वैकुण्ठमें नारायणके प्रति गरुड़का विविध प्रश्न, और्ध्वदेहिकविधि, नरकके स्वरूपका वर्णन, गर्भावस्था कीर्तन, देशदानादिकथन, पर्णनरदाहविधि, अशौच लक्षणका कालनिरूपण, वृषोत्सर्गकथन, पञ्चप्रेतोपाख्यान, और्ध्वदे-हिककर्माधिकारी, बभ्रुवाहन प्रेतसंवाद, श्राद्धका नाना-रूप तृप्तिकीर्तन, मनुष्यजन्मादि लाभका कारण, मनुष्यको

तत्त्वकथा, प्रेतत्वनाशक कर्मकथन, आतुर मुमुर्षु का दानकृत्य, यमनगरपथकथा, याम्यपुरादि गमनावस्था, यममार्ग निष्कृतिकथन, चित्रगुप्तपुरगमनकीर्तन, प्रेतका वासस्थाननिर्णय, प्रेतका लक्षण, प्रेतमुक्तिका उपाय प्रकारान्तरमें, पञ्चप्रेतका उपाख्यान, प्रेतस्वरूप निरूपण, मनुष्योंका आयुनिरूपण, बालकोंका पिण्डदानादि, शैशव आदि भेदोंमें कुमारकालसे कर्तव्यका उपदेश, सपिण्डीकरणविधि, विशेष ज्ञानार्थ नारायणके प्रति गरुड़की जिज्ञासा, और्ध्व दैहिक क्रियाकथन, दानविधि, दानमाहात्म्यादि, जीवोत्पत्तिकथन, यमलोकका विस्तारादि, युगभेदसे धर्मकार्यकी व्यवस्था, दाहकारियों और सगोत्रोंके प्रति कर्तव्योपदेश, अशौचादि निरूपण, सपिण्डीकरणमें विशेषविधि और श्राद्धविधि, अनशनादि द्वारा मरणका फल, जलकुम्भप्रदानादि, अल्पघातसे मृत व्यक्तियोंकी गति और उद्धारका उपाय, कार्तिकादिमें वृषोत्सर्गका विधान, पूर्वकृत कर्मके कर्ताका अनुबन्धित्व कथन, विशेष दानका प्रकार, जलाग्निबन्धनभ्रष्टोंका प्रायश्चित्तकथन, आत्मघातीका श्राद्धादि निषेध, वार्षिक श्राद्धादि, पापभेदमें चिह्नभेद तथा जन्मभेदकथन, मृतके प्रति अनुताप और मोक्षका उपाय।

गरुड़प्लुत (सं० पु०) नृत्यमें एक प्रकारका भाव। इसमें हाथोंको लताके जैसे और परोंको बिच्छूके जैसे विस्तृत कर छाती ऊपरको ओर उभारते हैं।

गरुड़भक्त (सं० पु०) सम्प्रदायविशेष। यह गरुड़की उपासना करते हैं। ईसाके जन्मके पूर्व यह सम्प्रदाय भारतवर्षमें प्रचलित था।

गरुड़मन्त्र (सं० पु०) गरुड़स्य मन्त्रः, ६-तत्। गरुड़ दैवत मन्त्रविशेष।

"सम्बर्तको भवयुतः पाथ सार ऽग्निसुन्दरी।
गारुडो मनुराख्यातो विषहग्यावनाशनः।
स्मरन् गरुडमात्मानं मन्त्रमेनं जपेन्नरः॥
विषमालोचनेनैव हन्यान्नात्र [illegible] कुः॥"

मन्त्र यथा—[illegible] (तन्त्रसार) इस मन्त्रसे विष नष्ट होता एवं सर्पका भय जाता रहता है।

गरुड़मुद्रा (सं० स्त्री०) विष्णुपूजाका अङ्गभूत-मुद्राविशेष।

"[illegible] सौ तु विमुच्यो कृत्वा ग्रथयित्वा कनिष्ठिके।
मिथस्तर्जनिके श्लिष्टे श्लिष्टावङ्गुष्ठकौ तथा।
मध्यमानामिकायें तु द्वौ पक्षाविव चालयेत्।
एषा गरुडमुद्रा स्याद् विष्णोः सन्तोषवर्द्धिनी॥" (तन्त्रसार)

गरुड़यान (सं० पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।

गरुड़रुत (सं० क्ली०) गरुड़स्य रुतमिव। १ छन्दोविशेष।

"गरुडरुतं नजौ भजतगा यदा स्युः सदा।" (छन्दोमञ्जरी)

इसके प्रत्येक चरणमें नगण, जगण, भगण, जगण और तगण तथा अन्तमें एक गुरु होता है। गरुड़स्य रुतः ६-तत्। २ गरुड़का शब्द।

गरुड़वेगा (सं० स्त्री०) गरुड़स्य, वेग इव वेग उत्पत्तौ अस्याः। लताविशेष।

"बीजधयो वागदो ज्योतिष्मती च गरुडवेगा।" (वृहत्सं० ५४.८७)

गरुड़व्यूह (सं० पु०) गरुड़ इव आकारेण व्यूहः। गरुड़ाकृति सैन्यरचनाविशेष। इसमें सेनाका मध्यभाग अधिक विस्तृत तथा आगे और पीछेका भाग पतला होता है। गरुड देखो।

गरुड़शालि (सं० पु०) स्वनामख्यात शालिधान्यविशेष, पक्षिराज धान।

गरुड़शिला—कुमाऊं प्रदेशस्थ हिमालय पहाड़के निकट वदरीनाथ तीर्थके वैष्णवक्षेत्रके अन्तर्गत १२ क्षेत्रोंमेंसे एक क्षेत्र।

गरुड़ाग्रज (सं० पु०) गरुड़स्य अग्रजः। विनताके ज्येष्ठ पुत्र अरुण। ये सूर्यके सारथी हैं।

"विनता चापि सिद्धार्था बभूव मुदिता तथा।
जनयामास पुत्रौ द्वावरुणं गरुडं तथा॥" (भारत १।३१।३९)

गरुड़ाङ्कित (सं० क्ली०) गरुड़ इव अङ्कितम्। मरकतमणि।

गरुड़ाचल—मन्द्राज प्रदेशमें राजमहेन्द्र सरकारके अन्तर्गत एक पर्वत।

गरुड़ाश्मान् (सं० पु०) गरुड़ वर्ण इव वर्णवान् अश्मा प्रस्तरः। मरकतमणि।

गरुड़ासन (सं० क्ली०) आसन वशेष।

"गरुडासनमस्यासौ येन ध्यानस्थिरा भुवि।
सर्वदोषाद् विनिर्मुक्तो भवतीह महाबली॥
एकपादमुरौ न्यस्य एकपादेन दण्डवत्।
जङ्घापादसन्धिदेशे जान्वोरयं व्यवस्थितम्॥" (रुद्रयामल)

अर्थात् एक पैर छातो पर रख कर दूसरा पैर दण्ड-

के जैसा रखते हैं, तत्पश्चात् जङ्घा और पादके सन्धिस्थान पर जानुका अग्रभाग स्थिरभावसे स्थापित किया जाता है। इसीको गरुड़ासन कहते हैं।

गरुड़ाहृत (सं० पु०) सोमलताभेद।

गरुड़ोत्तीर्ण (सं० क्ली०) गरुड़ो वर्णन उत्तीर्णा ऽतिक्रान्तो-ऽनेन। मरकतमणि।

गरुड़ोपनिषद् (सं० स्त्री०) अथर्ववेदान्तर्गत एक उपनिषद्।

गरुत् (सं० पु०) गृणाति शब्दायते वा वेगेनेति। १ पक्ष, पंख, पर। २ निगरण, गला। ३ भक्षण, भोजन।

"सुपर्णोऽसि गरुत्मान् पृष्ठे।" (यजुर्वेद १७।७२)

गरुत्मत् (सं० पु०) गरुतः प्रशस्तपक्षाः सन्त्यस्य गरुत् मतुप्। १ गरुड़।

"...गरुत्मन्निव पन्नगेम।" (भाग० ६।१९।११)

२ पक्षिमात्र। ३ हविर्भक्षक अग्नि। (यजुर्वेद १०।९३)

गरुदास—गुजरातमें रहनेवाली एक जाति। ये नीच जातियोंका पौरोहित्य करते और अपनेको ब्राह्मण समझते हैं। लेकिन ब्राह्मण इन्हें कई एक कारणोंसे घृणा-दृष्टिसे देखते हैं। पहला कारण यह है कि किसी गरुदासने अपने गुरुकी लड़कीसे विवाह किया था। २रा इन्होंने धेदामका पौरोहित्य स्वीकार किया था, ३रा एक यज्ञमें इन्होंने यज्ञपशु खाया था और ४था—ये ब्राह्मण पुरोहितके वंशज हैं। इन्होंकी उपाधि देव, जोशी, नागर, श्रीमाली और शुक्ल है। कोई कोई राजपूतकी उपाधि गोहिल और गम्भीर धारण किये हुए हैं। इनमेंसे थोड़े खेतीबारी कर और थोड़े कपड़ा बुन कर अपनी जीविकानिर्वाह करते हैं। ये बहुत थोड़े पढ़े लिखे हैं। ये अपने लड़कोंको स्कूल पढ़ने नहीं भेजते वरं घर परही थोड़ी बहुत संस्कृतकी शिक्षा देते हैं। ये राम, तुलसीवृक्ष तथा देवोंकी पूजा करते हैं। इनमेंसे बहुत रामानन्दी और परिनामी संप्रदायके अनुयायी हैं। भूत प्रेतोंमें इन्हें अधिक विश्वास है। चन्द्रमा और सूर्यकी भी ये अर्चना करते हैं। जन्म उपलक्षमें ये किसी तरहका उत्सव नहीं मनाते हैं। ब्राह्मणोंकी नाईं ये भी अपने लड़केको आठ या नौ वर्षकी अवस्थामें यज्ञोपवीत देते हैं। इनमें बालविवाह तथा विधवाविवाहको प्रथा प्रचलित है। ये शवको जलाते हैं। ब्राह्मणोंके जैसे ये भी श्राद्ध कर्म करते हैं। जब गरुदास किसी तरहका अपराध करता है तो उसे पञ्चायतसे दण्ड मिलता है।

गरुद्योधिन (सं० पु०) गरुद्भ्यां पक्षाभ्यां युध्यतीति, युध णिनि। भारती नामक पक्षी, लावपक्षी।

गरुयारि—आसामके अन्तर्गत दरङ्ग जिलाका एक वन। इस वनसे मूल्यवान् शालकाष्ठ लाये जाते हैं।

गरुल (सं० पु०) गरुड़स्य लो वा। गरुड़।

गरुहर (हिं० पु०) भारी, बोझ।

गरूर (अ० पु०) घमंड, अभिमान।

गरूरत (अ० पु०) गरूर देखो।

गरूरी (अ० वि०) घमंडी, अभिमानी।

गरेबान (फा० पु०) १ अङ्गे, कुरते आदि कपड़ोंको गले परकी काट। २ गले परकी पट्टी, कालर।

गरेरना (हिं० क्रि०) १ घेरना। २ छेकना, रोकना।

गरेरी (हिं० स्त्री०) गराड़ी, घिरनी।

गरेरी—विहारमें रहनेवाली एक जाति। भेड़ बकरियोंका रखना और उनके रूएंसे कम्बल बुनना ही इनकी उपजीविका है। इस जातिकी उत्पत्तिका कोई प्रवाद या विशेष विवरण नहीं मिलता। सिर्फ इतना ही मालूम पड़ता है कि वह पश्चिम अञ्चलसे गये हैं। यह ग्वालोंके साथ व्यञ्जन आदि खानेमें कोई बुराई नहीं समझते। सम्भवतः यह ग्वाला जातिकी एक शाखा है। कहीं कहीं इन्हें 'गदारिया' और कहीं कहीं भेंड़िहर कहते हैं। गदारिया देखो।

विहारमें इनकी चार श्रेणियां हैं—धेनगड़, फरु-खाबादी, गङ्गाजली और निकर। धेनगढ़ोंमें चंदेल, चौधरिया, काश्यप और नानकर ४ गोत्र होते हैं। यह अपने गोत्रमें विवाह नहीं करते। दूसरी श्रेणियोंके गरेरी 'ममेरा' 'चचेरा' आदि ६ पुरुषोंके बीच कन्यापुत्रका विवाह करनेसे हिचकिचाते हैं। इनमें कम्बलिया, कम्मली, मरार और रावत ४ पदवियां चलती हैं।

लड़कपनमें ही इनका विवाह हो जाता है। स्त्री वन्ध्या होनेसे पुरुष फिर विवाह कर सकते हैं। गरेरियोंमें विधवाविवाह प्रचलित है। स्वामीके शपथ

छका त्याग करनेसे स्त्री विधवाको तरह विवाह कर सकती है। परपुरुषमें आसक्त रहनेसे स्त्रीको जाति-च्युत और समाजसे वहिष्कृत कर देते हैं। पुरुषको कोई कुकर्म करने पर गांवकी पञ्चायत और मण्डलसे बांधी सजा मिलती और अपने पापका प्रायश्चित्त करना पड़ता है। फिर वह स्वजातिको भोज दे करके समाज-भुक्त होता है।

इनमें सभी वैष्णव हैं। दो-एक लोग शैव भी देख पड़ते हैं। गरियादास नामक किसी गरेरीने पहले अपनी जातिमें वैष्णवधर्म चलाया था। उनके शिष्य उनकी धर्मगुरु-जैसी भक्ति करते हैं। मांस मछली कोई नहीं खाता। कनोजिया या जोशी ब्राह्मण ही इनका पौरोहित्य करते और वैरागी अथवा 'दशनामी' संन्यासी इनके मन्त्रदाता गुरु रहते हैं। वन्दो, गौरैया धर्मराज, नरसिंह, पांचपीर और कालीमाता इनकी कुलदेवता हैं। श्रावण मासके अन्तिम दिनको घरके लोग नाना वध उपचारोंसे इन सभी देवदेवियोंकी पूजा किया करते हैं। शेवोंमें कोई कोई बकरी आदि बेचते समय एक भेड़ रख छोड़ता है। फिर उसको 'बनजारी'के सामने बलि दे आमोदमें भोजन करते हैं।

यह अपनेको अहीरोंसे ऊंचा और मजरौतियों तथा पञ्चायतोंकी बराबर समझते और उनका दिया हुआ अन्नजल आदि ले लेते हैं। परन्तु अपने आप बकरों और भेड़ोंको वधिया करनेसे इनका पानी मजरौती और पञ्चायत नहीं छूते और साथ ही इन्हें और भी बुरा बताते हैं। विहार और बङ्गालके ब्राह्मण इनका छूआ पानी पीते, परन्तु पुर्निया जिलेमें यह बहुत बुरे माने जाते हैं। अपनी जातिवालोंको छोड़ करके किसी दूसरे के पास गड़रियेका काम करनेसे इनकी जाति जाती है।

गरेली (हिं०) गगरा देखो।

गरेवाँ (हिं० स्त्री०) पगहा।

गरोत—मध्यप्रदेशमें इन्दोर राज्यके रामपुर-भानपुर जिले और इसी नामके परगनेका एक शहर। यह अक्षा० २४° १८' उ० और देशा० ७५° ४२' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ३४५६ है। ऐसा कहा जाता है कि पहले इस शहरमें भीलोंका वास था और यह १६वीं शताब्दीमें रामपुरके चन्द्रावत राजपूतोंके हाथ आया। यह शहर ऐतिहासिक घटनाके लिये प्रसिद्ध है। १८०४ ई०में कर्नल मोनसन और यशवन्तराव होलकरके साथ इसी स्थान पर लड़ाई छिड़ी थी। मोनसन प्राण लेकर भागा, लेकिन मुकुन्दवारमें रोक रखा गया था। गरोतसे ४ मील उत्तरपूर्व पियलाग्राममें जब मोनसनकी सेना ल्युसन और अमरसिंहके अधीन पहुंची तो मोनसन मराठाके बन्धनसे मुक्त हुए। इस जगह यशवन्तराव पूर्ण रूपसे पराजित हो भानपुरसे गरोत जानेको बाध्य हुए। थोड़े समयके बाद यशवन्त रावकी मृत्यु हो गई। उस समय सोनधिया नामकी एक जाति चारों ओर ऊधम मचा रही थी, इसलिये १८३४ से १८४२ ई० तक एक सैन्यदल इस शहरमें रखा गया था।

गरोथा—युक्तप्रदेशके झांसी जिलाको एक तहसील। यह अक्षा० २५°२३ तथा २५° ४८' उ० और देशा० ७८° १' एवं ७८° २५' पू० पर अवस्थित है। भूपरिमाण ४६६ वर्ग-मील है और लोकसंख्या प्रायः ८८८२६ है। इसमें १५३ ग्राम लगते हैं लेकिन शहर एक भी नहीं है। यहांकी आय १२५०००) रु० की है। इस तहसीलकी जमीन काला दोख पड़ती है।

गरोदि—मुसलमान जातिविशेष।

गरोल—बम्बई प्रदेशमें रेवाकान्ता विभागके अन्तर्गत एक छोटा राज्य। इसका कर रेवाकान्ता एजेन्सी द्वारा बड़ौदा गायकवाड़के निकट भेजा जाता है।

गरोला—मध्यप्रदेशमें सनार जिलान्तर्गत एक लाखराज ग्राम। इसका क्षेत्रफल प्रायः १६००० वोघा है। दिल्ली बादशाहने राव रामचन्द्रको यह स्थान अर्पण किया था। १६४६ ई०को पेशवाने इसका अधिकांश अपने अधिकार-में कर लिया था। इस ग्राममें प्राचारवेष्टित एक छोटा दुर्ग है। इसके पूर्वमें एक हृद है। इस हृदके चारों तरफ जमीन उपजाऊ है। इस ग्राममें एक विद्यालय वर्तमान है।

गरोह (फा पु०) समूह, झुंड, जत्था।

गर्ग (सं० पु०) गृणाति वेद शब्देन स्तौति। गृ-ग। १ बृहस्पतिके वंशजात मुनिविशेष। ये वितथके पुत्र थे। इन्होंने शिवकी आराधना करके चौसठ अङ्ग ज्योतिषादिमें ज्ञान लाभ किया था।

"चतुःषष्ट्यङ्गमददत् कला ज्ञानं ममाद्भुतम्।
सरस्वत्यास्तटे तुष्टो मनोयज्ञेन पाण्डव॥" (भारत १३।१८।३८)
"बहूनां गर्गादीनां मतं बभौ॥" (बृहत्संहिता २१।५)

इन्होंने अश्वायुर्वेद, केरलप्रश्न, केरलपाशावली, गर्ग-संहिता नामक ज्योतिष और गर्ग-मनोरमा नामक उसकी टीका, प्रश्नमनोरमा, प्रश्नविद्या, षोड़शप्रश्न, ज्योतिगर्ग, पल्लीमरट-विधान, कात्यायनश्रौतसूत्रभाष्य तथा गर्ग-पद्धति प्रभृति ग्रन्थ प्रणयन किये हैं। (पु० स्त्री०) गर्ग अपत्ये यञ्। २ गर्गके गोत्रापत्य, गर्गके वंशज। "गर्गाः शतं भोजयन्ति।" (महाभाष्य) ३ मुनिविशेष। ये कुणिगर्ग नामसे ख्यात हैं। (भारत) किसीके मतसे इन्होंने गर्ग-स्मृति रचना की है। माधवाचार्य, हेमाद्रि, कमला-कर प्रभृति स्मार्तोंने गर्गस्मृति उद्धृत की है। ४ ब्रह्माके एक मानसपुत्रका नाम। इनकी सृष्टि गयामें यज्ञके लिये हुई थी।

"गर्गं कौशिकं वसिष्ठो।" (वायुपुराणमें गयामाहात्म्य २ अ०)

५ संगीतमें एक ताल। इसमें चार द्रुत और अन्तमें एक खाली या विराम होता है। (संगीतदामोदर) ६ बैल, सांड़। ७ एक कीड़ा जो पृथ्वीमें घुसा रहता है, गगोरी। ८ वृश्चिक, बिच्छू। ९ किञ्चुलक, केंचुआ। १० एक जैन-ग्रन्थकार। इन्होंने मागधी भाषामें कर्मविपाक प्रणयन किया है। ११ एक पर्वतका नाम। १२ नन्दके एक पुरो-हितका नाम। १३ एक प्राचीन कवि।

गर्ग-विरात्र (सं० पु०) कात्यायनश्रौतसूत्रके अनुसार एक प्रकारका योग जो तीन दिनोंमें होता है।

(कात्यायनश्रौतसूत्र २३।१।८)

गर्गभूमि (सं० पु०) एक राजकुमार।

गर्गर (सं० पु०) गर्ग इति शब्दं राति रा-क। १ मत्स्यविशेष, एक मछली। इसका गुण—मधुर, स्निग्ध और पित्तनाशक है। (राजवल्लभ) इसकी पीठ पर बहुत रेखायें और शल्क रहती हैं। (राजनिघण्टु) यह पित्तकर, वात, कफनाशक तथा कोपकर है। (भावप्रकाश) २ भंवर। ३ एक प्रकारका प्राचीन बाजा। यह वैदिक कालमें बजाया जाता था। गागर।

गर्गरक (सं० पु०) गर्गर स्वार्थे कन्। समुद्रजात गर्गर-मत्स्य, समुद्रमें होनेवाली गर्गर मछली (Pimelodus gagora).

"मकर-गर्गरक-चन्द्रक-महामीन-राजीव प्रभृतयः सामुद्राः।"

(सुश्रुत, सूत्रस्थान ४६ अ०)

गर्गरी (सं० स्त्री०) गर्गर जातौ ङीष्। १ दधिमन्थनपात्र, वह बर्तन जिसमें दही मथा जाता है। माठ, दहेड़ी। २ मन्थनी। ३ गगरी, कलसी।

"मेघादौ गलवी देया वारिपूर्णा च गर्गरी।" (तिथितत्त्व)

गर्गवंशी—राजपूत जातकी एक श्रेणी। ये आजमगढ़ और गोरखपुरमें रहते हैं।

गर्गशिरस् (सं० पु०) दैत्यविशेष, एक राक्षसका नाम।

"दश गर्गशिरा यश।" (हरिवंश ३ अ०)

गर्गसंहिता (सं० स्त्री०) गर्गेण कृता संहिता, मध्यपदलो०। कालज्ञानार्थ गर्गकृत संहिता, ज्योतिषग्रन्थविशेष, गर्गका बनाया हुआ एक ज्योतिष ग्रन्थ इससे कालका ज्ञान होता है।

गर्गस्रोतस् (सं० क्ली०) गर्गेण आश्रितमुषितं वा स्रोतः। १ तीर्थविशेष। गर्गमुनिके नामानुसार इसका नाम-करण हुआ है। यह तीर्थ सरस्वतीतीर्थमें अवस्थित है। (भारत ९।३८ अ०)

गर्गाट (सं० पु०) गर्ग इति शब्देन अटति अट्-अच् शक-न्धादित्वात् अलोपः। मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। इसका दूसरा नाम योगनाविक है।

गर्गादि (सं० पु०) पाणिनीय गणविशेष। गर्गादि गण यथा—वत्स, संस्कृति, अज, व्याघ्रपाद, विदभृत्, प्राचीन-योग, अगस्ति, पुलस्ति, चमस, रेभ, अग्निवेश, शङ्ख, शट, शक, एकट धूम, अवट, मनस, धनञ्जय, वृक्ष, विश्वावसु, जरमाण, लोहित, संशित, बभ्रु, मण्डु, गण्डु, शङ्कु, लिगु, गुहलु, मन्तु, मङ्कु, अलिगु, जिगीषु, मनु, तन्तु, मनायी, सूनु, कथक, कन्थक ऋक्ष, तनु, तरुक्ष, तलुक्ष, तण्ड, वतण्ड, कपि, कत, कुरुकत, अनडुह्, कण्व, शकल, गोकक्ष, अगस्त्य, कुण्डिनी, यज्ञवल्क, पर्णवल्क, अभय-जात, विरोहित, वृषगण, रहूगण, शण्डिल, चणक, चुलुक, मुद्गल, मुसल, जमदग्नि, पराशर, जातूकर्ण, महित, मंत्रित, अश्मरथ, शर्कराक्ष, पूतिमाष, स्थूरा, अररक, एलाक, पिङ्गल, कृष्ण, गोलन्द, उलुक, तितिक्ष, भिषज, भिष्णज, भडित, भण्डित, दल्भ, चेकित, चिकि-त्सित, देवहू, इन्द्रहू, एकलू, पिप्पलू, वृहदग्नि, सुलोहिन्, सुलाभिन्, उक्थ और कुटीगु।

गज (सं० पु०) गर्ज भावे घञ् । हाथीका शब्द, चिघांड़ । २ गर्जन, मेघादिका शब्द ।

"माघादि चतुरो मासान् गर्ज मावं विवर्जयेत् ॥" (स्मृति)

गर्जक (सं० पु०) गर्जति इति गर्ज-ण्वुल् । मत्स्यविशेष, एक मछली । इसका पर्याय—शाल और शालज है ।

गर्जन (सं० क्लो०) गर्ज भावे ल्युट् । १ शब्द, आवाज । २ क्रोधित पशुका शब्द । ३ सिंहादिको आवाज ।

"वारणगर्जनं" (रामायण ५।२४।) ४ क्रोध, गुस्सा । ५ वृक्षविशेष, एक पेड़ । ६ तैलविशेष । एक प्रकारका तेल ।

गर्जनतैल, गर्जनवृक्षजात (Dipterocarpus turbinatus) निर्यास विशेष, गर्जन वृक्षका गोन्द । आसाम, त्रिपुरा, चट्टग्राम, ब्रह्मदेश, पेगू और मलयद्वीप समूहमें यह वृक्ष बहुत उपजते हैं । इस वृक्षकी ऊंचाई प्रायः २५० फुट और चौड़ाई १५ फुट होती है । वर्षाकालमें इसमें फूल और बीज लगते हैं । इससे धूना संयुक्त गाढ़े कृष्ण और श्वेतवर्णके दो प्रकारके गोंद निकाले जाते हैं । इसीको गर्जनतैल कहते हैं । इसकी गन्ध बहुत तीव्र होती है । पृथ्वीतलसे तीन चार फुट ऊपर वृक्षके धड़में चार या पांच इंचका एक गड्ढा बनाया जाता है । उस गड्ढेमें अग्नि दे कर दग्ध करने पर तेल पिघलने लगता है । तेलको नीचेके बरतनमें लानेके लिये वृक्षमें नली काटी रहती है । प्रति सप्ताह उस गड्ढेको फिरसे नया काट कर अग्निद्वारा दग्ध करना पड़ता है । किसी किसी वृक्षमें दो वा तीन गड्ढे करने पर भी वृक्ष नहीं मरता है । अगहनसे फाल्गुन मास तक इसी तरह तेल बाहर निकाला जाता है । एक वृक्षसे प्रतिवर्ष तीनसे पांच मन तेल निकलता है । इसका तेल बहुत उपयोगी है । किसी काष्ठमें यह तेल लगा देनेसे वह बहुत दिन तक चलता है । वार्निस इत्यादि काममें भी इसका व्यवहार किया जाता है ।

गर्जमान (सं० त्रि०) जो गर्जन करता हो ।

गर्जर (सं० क्लो०) गर्ज बाहुलकात् अरच् । गृञ्जन, गाजर । इसका पर्याय—पिण्डमूल, पीतकन्द, सुमूलक, स्वादुमूल, सुपीत, नारङ्ग और पीतमूलक है । इसका गुण—मधुर, रुचिकर, किञ्चित्कटु, कफ आध्मान, क्रिमिशूल, दाह, पित्त, और तृष्णानाशक है ।

गर्जा (सं० स्त्री०) गर्ज-टाप् । गर्जन, मेघादिकी ध्वनि, गरज ।

"गच्छद्गजगर्जा नागरभुजकोल ज्वाल वर्तव ओघाः ।
उत्कण्ठ सह पिशाटक रभसाः स्वोत्थे तु टाङ्कृताः ॥" (त्रिकाण्ड)

गर्जाफल (सं० पु०) गर्जया गर्जनेन फलं यस्य । १ विकण्टकवृक्ष, जवासा, धमासा । २ युद्ध, लड़ाई । ३ उत्तेजन, उत्साह । ४ भर्त्सन, कुत्सा, निंदा ।

गर्जि (सं० पु०) गर्ज-इन् । मेघका शब्द ।

गर्जित (सं० क्लो०) गर्ज भावे क्त । १ मेघादिका शब्द, मेघकी गरज ।

"प्रगच्छन् गर्जितं प्रतिरवानुकारो मुहुः ।" (वेणीसंहार)

२ रणादिमें आस्फालन, लड़ाईकी मारकाट ।

"एहि हि युध्यस्व रणे शिव वृथा गर्जितेन ते ।" (हरिवंश १८२ ४९)

(त्रि०) कर्त्तरि क्त । ३ कृतशब्द, जो शब्द किया गया हो ।

"सन्ध्यायां गर्जिते मेघे आस्वाचन्तं करोति यः ।
चत्वारि तस्य नश्यन्ति आयुर्विद्या यशो बलम् ॥" (स्मृति)

(पु०) गर्जो जातोऽस्य तारकादित्वात् इतच् । ४ मत्तहस्ती, मतवाला हाथी ।

गर्ज्य (सं० क्लो०) गर्ज-ण्यत् । गर्जनीय, गरजने योग्य ।

गर्त (सं० पु०) गिरति गृ-निगरणे तन् । १ भूमिछिद्र दरार । इसका पर्याय—रन्ध्र, बिल, गह्वर, अवट, भूरन्ध्र, दर, श्वभ्र और पृथिवीरन्ध्र है ।

"न ससत्वेषु गर्तेषु न गच्छन् नापि च स्थितः ।" (मनु ४।४७।)

२ त्रिगर्त देश । ३ गृह, घर । ४ रथ ५ । सभास्थान । ६ एक नरकका नाम । ७ स्त्रीके नितम्बका कुकुन्दर, औरतके चूतड़ पर गड्ढा । ८ रोगप्रभेद । ९ वह जलाशय जिसकी गतिका प्रवाहस्थान आठ हजार धनुसे अधिक नहीं हो ।

गर्तसद् (सं० त्रि०) गर्ते सीदतीति सद्-क्विप् । रथस्थित, जो रथ पर बैठा हो ।

गर्ताटक (सं० पु०) वनमूषिक, जंगली मूसा ।

गर्ताश्रय (सं० त्रि०) जो गर्तमें रहकर अपनी जीविकानिर्वाह करता हो ।

गर्त्तिका (सं० स्त्री०) गर्तोऽस्त्यस्याः ठन् । तन्तुशाला, तांतका घर ।

गर्त्य (सं० वि०) गर्तमर्हति यत्। गर्तविशिष्ट देश। वह देश जिसके चारों ओर खाई हो।

गर्द (फा० स्त्री०) धूल, राख, खाक।

गर्दखोर (फा० वि०) जिसका रंग मिट्टी आदिमें पड़नेसे खराब न हो, खाकी रंग।

गर्दतोय—जैनमतानुसार ब्रह्मस्वर्ग (पांचवें सर्ग)के आठों दिशाओंमें रहनेवाले आठ प्रकारके लौकान्तिक देवोंमेंसे पाँचवें देव।

"सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च।"

(तत्त्वार्थ सू० ४ अ० २५ सू०)

ये ब्रह्मचारी होनेके कारण देवर्षि कहलाते हैं। ये निरन्तर ज्ञान-चर्चामें ही लीन रहते हैं। तीर्थङ्करके तप-कल्याणके समय अर्थात् जब तीर्थङ्कर राज्यादि क्षणभङ्गुर पर-पदार्थोंको त्याग कर दिगम्बरी दीक्षा धारण करनेका विचार करते हैं तब ये देवर्षि आ कर उनके विचार-को दृढ़ करनेके लिए उन्हें संसारकी असारता दिखलाते हुए उनके विचारोंकी अनुमोदना करते हैं। ये देवर्षि मनुष्य दो जन्म धारण कर नियमसे मोक्ष पाते हैं। अर्थात् तीसरी वार इनको जन्म नहीं लेना पड़ता।

(तत्त्वार्थ राजवार्तिक अ० ४ अध्याय)

गर्दन (हिं० पु०) गरदन देखो।

गर्दभंग (हिं० पु०) एक प्रकारका गाँजा जो कश्मीरके दक्षिण भागोंमें उत्पन्न होता है।

गर्दभ (सं० पु०) गर्दति कर्कशशब्दं करोति, गर्द-अभच्। कृशशलिकलिगर्दिभ्योऽभच्। उण् ३।१२२। पशुविशेष, गधा। इसका संस्कृत पर्याय—चक्रीवान्, वालेय, रासभ, खर, राशभ, शङ्कुकर्ण, भारग, भूरिगम, धूसर,क्षय, बेशव, धूसर, स्मरसूर्य, चिरमेही पशुचरि, चारपुष्ट, चारट और ग्राम्याश्व है। तामिलमें गधेको 'कलद' और तेलगूमें 'गुर्धि' कहते हैं।

यह पशु दूधपीनेवालोंमें एकशफश्रेणीभुक्त है।

गधा देखनेमें कितना ही घोड़े जैसा होता है इस-की पूंछके ऊपरी भाग और पिछले भागके बाल कुछ कुछ कम पड़ते हैं। रङ्ग खाकी लगता है। फिर किसी किसीका रङ्ग रेत-जैसा भी होता है। गुद्दीकी जड़में रीढ़के काले रङ्गके रोएं सीधी धारी जैसी बन करके गलेके नीचे तक चले जाते हैं। फिर ऐसी ही दूसरी धारी सरसे पूंछ तक पड़ती है।

गधेका रङ्ग यदि ज्यादा सफेद रहता, तो यह धब्बा कुछ अधिक साफ उतारता है। नहीं तो बहुत अधिक लक्ष्य नहीं ठहरता। पांवके खुरमें भी घोड़ेसे थोड़ासा प्रभेद पड़ता है।

गधेका सूम शरीरको देखते ज्यादा बड़ा और बगल और भी ढालू होती है। बीचमें एक गड्ढा जैसा रहता है। पहाड़ी राहमें जहां घोड़ा जा नहीं सकता, वहां यह उसके सहारे बेखटके पहुंचता है। चिकनी जमीन पर चलनेमें भी उससे सुभीता पड़ता है। मैदानमें घोड़े, जङ्गलमें हाथी और रेतमें ऊंटकी तरह पहाड़ पर बोझ ढोनेके लिये गधा उपयोगी है। इसके कान लम्बे होते हैं। मत्था शरीरको देखते कुछ बड़ा लगता है पांव छोटे पड़ते हैं। पैरके खुरों पर एक एक काला धब्बा रहता है। गधा शान्त और सहिष्णु होता, परन्तु निर्बोध नहीं। किसी राहसे एक बार ले जाने पर यह सुगमतासे उसको पहचान लेता है। भीड़ भाड़में यह अपने मालिकको भी नहीं भूलता। पीठका बोझ ज्यादा होनेसे यह नहीं झुकता और बराबर चला करता है। गधेकी बोली कड़ी है। इसी लिये किसी गानेवालेका स्वर कर्कश होनेसे उसको गधा कहा जाता है। साधारणतः लोग गर्दभ-जैसा निर्बोध दूसरा पशु नहीं समझते और इसीसे गंवार आदमीको भी गधा कहा करते हैं। गधेका दूध अपचके लिये बहुत मुफीद है। मांका दूध न मिलने पर गधेका दूध पी पी कर कितने ही बच्चे जी जाग गये हैं। भारतमें साधारणतः धोबियोंके कपड़े ढोनेको गधा काम आता है। यह थोड़ेमें ही थक जाता है। घासपात आदि खा कर ही इसको तृप्ति हो जाती है।

११ मास गर्भ धारण करके गर्दभी सन्तान प्रसव करती है। बच्चा तीन चार सालमें बढ़ जाता है। गधा २०, २२ या २४ वर्ष तक जीता है। इसका चमड़ा टिकाऊ है। उससे पार्चमेण्ट, ढोल, जूता, किताबकी तख्ती आदि चीजें बनती हैं। पालू गधेसे जङ्गली गधा अधिक बलिष्ठ होता है। उसका चमड़ा भी कुछ

ज्यादा चिकना लगता है। तुर्कीके सिरिया अञ्चलका गधा देखनेमें बहुत अच्छा रहता है। वहां स्त्रियां इसको बड़ी होशियारीसे पालती हैं। अरब लोग गधे पर चढ़के घूमते और खेतीका काम भी लेते हैं। यरूसलममें पहले बड़े बड़े आदमी और पुरोहित गधे पर चढ़ करके चलते थे। परन्तु मिसरके रहनेवाले इसको बुरा समझके बड़ी ही घृणा करते थे। वही पहले गंवारोंको गधा बतला हंसी उड़ाने लगे। भारत और अफ्रीकाके गधे नाटे और दुबले होते हैं। अफ्रीकाके कायरो, लिबिया, नउमिडिया आदि जङ्गलोंमें बहुतसे गधे हैं। वहां लोग इसका मांस खाते हैं। परन्तु मध्यएशियामें भी गधोंका जमघट ज्यादा है। ग्रीष्ममें यह दल उत्तरको यूराल पहाड़ तक जाता, फिर जाड़ेमें भारतको आता है। इस झुण्डका एक सरदार रहता, जो सबसे चटकीला, जल्द चलनेवाला और चतुर लगता है। शिकारी उसको पकड़ सकने पर फूले नहीं समाते। पहले युरोपमें गधा न रहा। इसको वहां गये थोड़े ही दिन हुए हैं। इङ्गलैण्डके गरीब आदमी इसकी ज्यादा कद्र करते हैं। लोगोंके विशेष आदर करने अथवा आबहवा अच्छी रहनेसे स्पेनके गधे मजबूत और खूबसूरत होते हैं। वहां गधेका दाम भी ज्यादा नहीं। एक घोड़ेकी कीमत २० गधोंके बराबर है। घोड़े और गधेके जोड़से दो तरहके खच्चर निकलते हैं। इनमें एक गदर्भके औरस और अश्विनीके गर्भ तथा दूसरा अश्वके औरस और गर्दभीके गर्भसे उत्पन्न होता है। अङ्गरेजी पहला म्यूल (Mule) और दूसरा हिनी (Hinny) कहलाता है। म्यूल बड़ा, बलवान् और सुगठित रहता है। गधेकी हड्डीसे पहले किसी प्रकारकी बंशी बनती थी। भारतके कच्छ, गुजरात, जैसलमेर और बीकानेर प्रदेशमें एक तरहका जङ्गली गधा देख पड़ता है।

गधेकी घ्राणशक्ति अतिशय प्रबल है। चमड़ा मोटा होता है। इसीसे कोड़ा मारने पर भी गधेको कोई बड़ी तकलीफ मालूम नहीं पड़ती। हिन्दुस्थानी गधा भूरा होता है। परन्तु अरब आदि देशोंके गधे कुछ कुछ लाल रहते हैं। पहले युरोप और अफ्रीकामें गधा न था। यह अरबसे मिसर, मिसरसे यूनान, यूनानसे इटली, इटलीसे फ्रान्स और फ्रांससे जर्मनी, इङ्गलैण्ड, स्वीडेन आदि नानादेशोंमें फैल गया। ठण्डे देशमें गधा दुबला और ठिंगना होता है। यह अपने आप जल्द चलनेवाला और डरावना है। परन्तु पकड़े जानेसे थोड़े दिन पीछे ही स्वभाव बदलता है। फिर यह निरीह हो जाता है। सब चौपायोंसे गधा बहुत जल्द हिलता है। यह रोज वही पानी पीता, जो इसको अच्छा समझ पड़ता है। पानी पीते समय गधा घोड़ेको तरह पानीमें नाक नहीं डुबाता। इसको घास पर लोटना बहुत अच्छा लगता है। पानीमें उतरते गधा बहुत डरता है। लड़कपनमें गधा देखनेमें खूबसूरत होता है। उस समय स्वभावमें भी कितनी ही चतुरता रहती है। परन्तु उस समयसे न सिखाने पर बढ़ते बढ़ते यह काम समझ और बेकाबू पड़ जाता है। इसको लड़केका प्यार बहुत रहता है। गधे और गधीकी मुहब्बत भी कुछ कम नहीं। यह पीठ पर ज्यादा बोझा लाद देनेसे कान और सिर झुका लेता और मुंह फैला करके दोनों होंठ सिकोड़ने पर बहुत भद्दा जंचता है। आंख ढांप देनेसे गधा नहीं चलता। जमीन पर लेटा करके एक आंख घास और दूसरी पत्ते या डीलेसे ढांक देने पर यह जैसेका तैसा सुनसान पड़ा रहता है। गधा घोड़ेकी तरह कूदफांद और दौड़ सकता, परन्तु बहुत जल्द थकता है। एक बार थकजानेसे कितना ही मारने पर भी यह न उठेगा।

गिनी देशका गधा वहांके घोड़ेसे बड़ा और खूबसूरत होता है। ईरानमें दो तरहका गधा देख पड़ता है। उसमें एक मोटा और मन्दगामी होता और बोझ ढोता है। फिर दूसरा साफ सुथरा गधा है। उस पर चढ़ कर लोग इधर उधर आया जाया करते हैं। ईरानी उसकी नाक फाड़ कर छेदको बढ़ा देते, जिसमें लम्बी सांस चल सके और वह जल्द न थके। यह गधा कभी कभी चार पांच सौ रुपये तक बिकता है।

गधा घोड़ेसे ज्यादा मिहनत कर सकता है। इसका चमड़ा सूखा और बहुत कड़ा होता है। इसीसे कीड़े आक्रमण कर नहीं सकते। अतः घोड़ेसे कम सोता है। अरब और मिसरका गधा [illegible] ही जल्द चलता, होशि-

गार भी रहता है। कायरो नगरको बड़ी सड़क पर गधोंको किराये पर देनेके लिये जीन और लगाम लगा करके तैयार रखते हैं। किरायेदार गधे पर चढ़ता और गधेवाला उसको पीछेसे हांकते चलता और सामने लोगोंको हटानेके लिये चिल्लाया करता है। मुसलमान हाजी गधे पर चढ़के मक्का पहुंचते हैं। न्यूबिया देशके बड़े बड़े महाजन गधे पर चढ़ मिसर देशको जाते हैं। राहमें लगभग २ महीने लगते हैं। गधा इतने दिन चल करके भी नहीं थकता। अमेरिकामें पहले गधा न रहा, स्पेनके लोगोंने भेज दिया। आजकल वहां वंशवृद्धि होनेसे कितने ही गधे देख पड़ते हैं। वह जगह जगह झुण्ड बांध करके घूमते हैं। फन्दा डाल करके उन्हें पकड़ना पड़ता है।
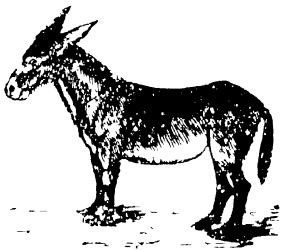
पालू गधेका मांस कड़ा होता है। खानेमें अच्छा न लगते भी बहुतसे लोग उसे खा जाते हैं। गालेन साहबके मतमें वह मांस खानेसे बीमारी हो सकती है। यूनानी पहले गधेके दूधसे बहुतसी दवाइयां बनाते थे। परन्तु अब उसकी कमी पड़ गयी है। मोटी छोटी अच्छी गधीका ही दूध, जो हालका ब्याई हो और उठी न रहे, सबसे अच्छा होता है। उसको बच्चेसे अलग दाना घास खिला करके रखना पड़ता है। ऐसी गधीका दूध बीमारके लिये बहुत अच्छा है। यह दूध ठण्डा पड़ने और हवा लगनेसे बिगड़ जाता है। गधेका दूध दवाईमें लगने जैसा लोगोंको जो विश्वास रहा, आजकल उठ गया है।

युरोपके आल्पस पहाड़से उतरते समय गधा जो होशियारी दिखलाता, लोगोंको अचम्भा आ जाता है। पहाड़ पर चढनेको राह बहुत डरावनी है। एक ओर ऊंचा और दूसरी ओर खूब गहरा है। कहीं चढ़ाव और कहीं उतार है। सिवा गधेके वहां दूसरा कोई चौपाया उतर नहीं सकता। उतरते समय गधा थोड़ी देर ठहर करके खड़े खड़े देखा करता है—किस तरह कहांसे उतरूंगा। उस मौके पर सवारके हजार बार मारते भी गधा नहीं सरकता, सिर्फ उसी गहरे गढ़ेको तरफ देखा करता है। डरसे कांप करके बीच बीच वह रेंकने भी लगता है। जब वह उतरना आरम्भ करता, सामनेके पैर इस तौरसे रखता—मालूम पड़ता—मानो खड़ा होने चाहता है। फिर पीछेके पैर साथ साथ ला करके वह सामनेके पैर सामने फैलाता है। इसी हालतमें रह करके गधा एक बार नीचेको देखता है। फिर वह जल्द जल्द नीचे उतरने लगता है। उस वक्त सवार लगाम ढील देता है। लगाम खींचनेसे एकाएक उसकी चाल रुक जाती है। उसमें गधा और सवार दोनों नीचे गिर करके मर सकते हैं। सवार लगामको निकाल जीनसे अपनी कमर बांध लेता है। ऐसी पहाड़ी राहमें गधेको उतरते देख चाकचा होना पड़ता है।

गधेके बारेमें कितनी ही अनोखी बातें सुन पड़ती हैं। १८१६ ई०को कपतान उग्डाम माल्टा उपद्वीपमें रहे। उनके लिये जिब्राल्टरसे एक गधा खरीद जहाज पर चढ़ा करके माल्टा लिये जाते थे। समुद्रकी ऊंची लहरोंमें जहाज किसी रेतसे जा करके भिड़ गया। वहांसे किनारा बहुत दूर न था। जहाजके लोगोंने गधेको यह देखनेके लिये पानीमें धकेल दिया, वह तैर करके किनारे पहुंच सकता है या नहीं। सबने सोचा कि गधा यहीं मरा था। परन्तु गधा मजेमें किनारे पहुंच उसीके पास जा करके खड़ा हुआ, जिससे वह खरीदा गया था। किनारेसे वह जगह एक कोस दूर होगी। उस राहसे गधा कभी चला न था।

कायरो नगरके भी एक गधेकी बात कही जाती है। वह नाचता और बहुतसे तमाशे करता था। जब उससे कहा जाता कि सुलतान उसे घर बनानेको सुर्खी और ईंट लेने भेजेंगे, वह पैर उठा आंख मून्द करके मुर्देकी तरह जमीन पर पड़ रहता था। परन्तु जब वह सुलतानके अपने ऊपर चढ़के कोई जलसा देखनेकी ओर खूब खिलाये जानेकी बात सुनता, खुशीसे नाचने लगता था। यह कहने पर कि उसे उस बदमाश औरतको ले जाना पड़ेगा, वह लड़खड़ाने लगता था। बहुतसी स्त्रियां इकट्ठी

होने पर उससे पूछा जाता था—इसमें कौन सबसे अच्छी है, उसको दिखला दो। वह उसी समय एकके पास पहुंच मत्था झुका करके उसको छू लेता था। ऐसा गधा सरकसोंमें कई बार देखा गया है वह आवाजको समझ और सिखलानेमे सीख सकता है। किसी समय एक आदमीने कुत्तेको गधे पर ललकारा था। कुत्तेके पास पहुंचते ही गधेने उसको लातें फटकारीं, फिर दांतों से उसको पकड़ पासकी नदीमें ले जा करके डुबा दिया और जब तक वह मर न गया, उसको दबाये ही रहा। इससे मालूम पड़ता है कि गधेको प्रतिहिंसा कम नहीं होती। गधेको मीठी आवाज सुननेमें अच्छी लगती है। चाई नगरमें एक स्त्री बहुत अच्छा गाती थी। पास ही एक गधा भी रहता था। उनके गाना शुरू करते ही गधा वहीं पहुंच झरोकेके पास खड़ा हो करके सुना करता था। फिर एक दिन तो वह उनके घरमें ही जा खड़ा हुआ। गाना बन्द होने पर गधा अपने आप चिल्ला करके उनकी नकल उतारने लगता था। इससे समझ पड़ता है—गधेको जितना बेसमझ ठहराते, हरगिज नहीं पाते हैं।

पौराणिकोंके मतमें गर्दभ शीतलादेवीका वाहन है। शीतला देखो।

जैनशास्त्रानुसार—गधा पंचेन्द्रिय मनसहित जीव है। इसको शिक्षा देनेसे मनुष्यकेसे अनेक अद्भुत कार्य कर सकता है यहां तक कि स्थूल चोरी आदिका भी त्याग कर अणुव्रत पाल सकता है।

वैद्यशास्त्रके मतमें उसका मांस कुछ भारी और ताकतवर होता है। गधेका मूत्र—कड़ुवा, गर्म, तीता, खारी और कफ, महावात, भूतकम्प तथा उन्माद-नाशक है। (राजनिघण्ट)

बराबर बोझ ढोना, गर्मी सर्दी सहना और हमेशा खुश रहना—तीन गुण गधेसे सीखना चाहिये। (चाणक्य)

(क्ली०) गर्द्यते। गर्द-अभच्। २ श्वेतकुमुद, सफेद कोईं।

"करवं चन्द्रकान्तश्च गर्दभं कुमुदं कुमुत्।" (रत्नमाला) ३ विडङ्ग, बाय बिड़ंग। ४ भ्रमरभेद, गदहोला नामका कीड़ा।

गर्दभक (सं० पु०) गर्दभ सञ्ज्ञायां कन्। १ कीटविशेष यह श्लेष्माका प्रकोपकारक है।

गर्दभगद (सं० पु०) जालगर्दभ नामक रोगविशेष। जालगर्दभ देखो।

गर्दभनादी (सं० त्रि०) गर्दभ इव नदति नद-णिनि। जो गदहाके जैसा शब्द करता हो।

गर्दभमांस (सं० क्ली०) गर्दभस्य मांसम्, ६-तत्। गर्दभ-मांस, गदहाका मांस।

गर्दभमूत्र (सं० क्ली०) खरमूत्र, गदहाका मूत।

गर्दभयाग (सं० पु०) गर्दभेन यागः। यागविशेष, अवकीर्ण याग। (मनु० ११।११८-२२)

ब्रह्मचर्यभ्रष्ट व्यक्तिको रात्रि समय चतुष्पथ पर पाकयज्ञ विधानमें काणा गर्दभ द्वारा नैऋत देवताका याग करना चाहिये। इसमें विधिपूर्वक अग्निमें होम करके 'समासिञ्चन्तु मरुतः' इस मन्त्रसे घृत द्वारा वायु, इन्द्र, बृहस्पति और अग्निको आहुति देनी चाहिये। ब्रह्मवादी व्यक्तिगण कहा करते हैं कि व्रतस्थित द्विजगण यदि इच्छाक्रमसे स्त्री-योनिमें वीर्य सेक करें तो व्रतभङ्ग हो जाता है। उस व्रतभ्रष्टका ब्रह्मतेज मारुत, इन्द्र, बृहस्पति और पावकमें जाकर वास करता है।

कात्यायनश्रौतसूत्रमें इसका विशेष विवरण देखो।

गर्दभरूप (सं० पु०) गर्दभस्य रूपोऽस्य गर्दभरूपधारणात् तथात्वम्। विक्रमादित्य राजा।

गर्दभशाक (सं० पु०) गर्दभगन्धः शाकं यस्य। गर्दभाख्यः शाको वा। ब्रह्मयष्टि, भारंगी, बरंगी।

गर्दभशाका (सं० स्त्री०) गर्दभशाक-टाप्। ब्रह्मयष्टि, बरंगी।

गर्दभशाखी (सं० स्त्री०) गर्दभगन्धा शाखा यस्याः। भार्गी, भारंगी।

गर्दभा (सं० स्त्री०) श्वेतकण्टकारी, सफेद कटैया।

गर्दभाक्ष (सं० त्रि०) गर्दभस्ये वाक्षिणी यस्य। गर्दभतुल्य चक्षुविशिष्ट, जिसकी आंखें गदहेकी सी हों। (पु०) २ बलिराजाके एक पुत्रका नाम।

गर्दभाण्ड (सं० पु०) गर्दभं गन्धविशेषमत्ति। प्लक्षवृक्ष, पाकरका पेड़। इसके पत्ते, काण्ड और फलादि पीपल वृक्षके जैसे होते हैं। इसका पर्याय—कन्दराल, कपीतन, सुपार्श्वक, प्लक्ष, शृङ्गी, प्लव, कमण्डलु, प्लक्षिश, कन्दरालक और प्लक्षवृक्ष है।

गर्दभाण्डक (सं० पु०) गर्दभाण्ड स्वार्थे कन्। गर्दभाण्ड-वृक्ष, पाकरका पेड़।

गर्दभाह्वय (सं० पु०) गर्दभ आह्वय आख्या यस्य। कुमुद-विशेष, एक प्रकारकी कुई।

गर्दभि (सं० पु०) विश्वामित्रका एक पुत्र। (महाभारत १३।४।५६)

गर्दभिका (सं० स्त्री०) क्षुद्ररोगविशेष। इस रोगमें वात-पित्तके विकारसे गोल ऊंची फुंसियां निकलती हैं। इन फुंसियोंका रंग लाल होता है और इनमें बहुत पीड़ा होती है। पैत्तिक विसर्प रोगकी नाई विवृता, इन्द्रवृद्धा, गर्दभी और जालगर्दभ इन सब रोगोंकी चिकित्सा करनी चाहिये। पाककालमें पाक किये हुए घृत और पक्व मधुरके औषधसे इसे शुष्क करनेका विधान है। (भावप्रकाश)

गर्दभिल्ल—गुजरातके अन्तर्गत वलभीपुरके एक राजा। जैनग्रन्थके मतसे ये ५२३ सम्वत्में राज्य करते थे।

गर्दभी (सं० स्त्री०) १ कीटविशेष।

"पञ्चालकः पाकमत्स्यः कृष्णतुण्डोऽथ गर्दभी।" (सुश्रुत)

२ अपराजिता नामकी लता। ३ श्वेत कण्टकारी, सफेद भटकटैया। ४ कटभी, गर्दभिका नामक रोग।

"सा विज्ञा वातपित्ताभ्यां ताभ्यामेव च गर्दभी।
मण्डला विपुलोत्सन्ना सरागा पिडकाचिता॥" (वाग्भट उत्तरस्थान ३१ अ०)

६ गर्दभपत्नी, गदही। इसके दूधका गुण वलकारक, वातश्वासनाशक, मधुराम्लरसविशिष्ट, रूक्ष, दीपन और पथ्य है। दधिका गुण—रूक्ष, उष्ण, लघु, दीपन, पाचन, मधुराम्लविशिष्ट, रुचिकारक और वातदोषनाशक है। मक्खनका गुण—कषाय, कफवातनाशक, वलकर, दीपन, उष्ण और मूत्रदोषनाशक है। (राजनि०)

गर्दाबाद (फा० वि०) १ जो धूल या राखसे भरा हो। २ ध्वस्त, उजाड़। ३ बेसुध, बेहोश।

गर्दालू (फा० पु०) आलू बुखारा।

गर्दिश (फा० स्त्री०) १ घुमाव, चक्कर। २ विपत्ति, आपत्ति।

गर्दोख—भारतवर्षके उत्तरमें एक राज्य। यह अक्षा० ३१° ४०´ उ० और देशा० ८०° २५´ पू०में सिन्धु और शतद्रु नदीके उत्पत्तिस्थान पर अवस्थित है। गर्दोखसे तिब्बतके लासा पर्यन्त एक रास्ता गया है। १८२६ ई०को चम्पा जातिने इसे जय किया था, किन्तु थोड़े वर्षोंके बाद यह महाराज गुलाबसिंहके अधिकारमें आ गया। यहां पर दुशाले बुननेको पशम बेची जाती है।

गर्द्ध (सं० पु०) गर्द्ध्यते इति गृध भावे घञ्। १ स्पृहा, लोभ। २ गर्दभाण्डवृक्ष, पाकरका पेड़।

गर्द्धन (सं० त्रि०) गृध्यति गृध-युच्। लुब्ध, लोभी, लालची

गर्द्धभि (सं० पु०) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम। (महाभारत १३।४।५६)

गर्द्धित (सं० त्रि०) गर्द्धो जातोऽस्य, तारकादित्वात् इतच्। लुब्ध, लोभी।

गर्द्धिन् (सं० त्रि०) गर्द्धोऽस्यास्तीति गर्द्ध-इनि। अत्यन्त लोभी। "नचामिषगर्द्धिनः।" (मनु ४।२८)

गर्नाल (हि० स्त्री०) गरनाल देखो।

गर्भ (सं० पु०) गीर्यते इति, गॄ-भन्। गॄवृभ्यां भन्। उण ३।१५२। १ भ्रूण, देहजन्मकारक शुक्रशोणितसंयोगजन्य मांस-पिण्ड, हमल। २ शिशु, बच्चा। ३ कुक्षि, कोख। ४ पनस, कण्टक, कांटाल। ५ नाटकका सन्धिभेद। ६ अभ्यर्ग्य ह, सोअर। ७ उदर, पेट। ८ अभ्यन्तर, भीतरी हिस्सा। ९ नदीका कोई अन्तर्भाग, दरयाका कोई भीतरी हिस्सा। भाद्रकृष्णा चतुर्दशीको जितना पानी चढ़ आता, नदीगर्भ कह लाता है। १० अन्न। ११ अग्नि। १२ पुत्र।

गर्भाशयके शुक्रशोणितका नाम जीव है। विकार विशिष्ट प्रकृति प्रभृति समस्तको ही गर्भ कहा जाता है। कालवश जब अङ्गों और उपाङ्गोंके साथ गर्भ बढ़ता, मुनि-गण उसको शरीरी-जैसा निर्देश करता है। जब स्त्री और पुरुष परस्पर संयोगकामी हो शुक्र त्याग करते, अस्थि-शून्य गर्भ उत्पन्न होता है। जो स्त्री ऋतुस्नाता हो स्वप्नमें मैथुन करती, उसका ऋतुशोणित वायुयोगसे कुक्षिमें जा करके गर्भ बनता और महीने महीने बढ़ता है। क्रमशः वह इन्द्रिय आदि पैत्रिक गुणवर्जित हो करके निकलता है।

विगुण वायुसे गर्भ भग्न हो करके संख्या अतिक्रम पूर्वक बहुत प्रकारसे विभक्त हो योनिमें पहुंचता है। कोई गर्भ

मस्तक और जठर द्वारा योनिद्वार निरोध करता, कोई शरीरको बदल करके कुब्जदेह निकलता है। कोई गर्भ एक हाथ, कोई दोनों हाथ टेढ़ा करकेतिरछा लगता, कोई अधोमुख, कोई आस पास घूम करके ठहरता है। गर्भकी यही अष्टप्रकार गति है। दूसरी भी चार प्रकारकी चाल-सङ्कीलक, प्रतिखुर, परिघ और बीज कहलाता है। जो गर्भस्थ शिशु हाथ पांव ऊपर उठा करके मस्तक द्वारा कीलक जैसा योनिद्वारमें आ मिल जाता, कीलक कहलाता है। इसी बच्चेको खुर जैसा टेढ़ पड़ने पर प्रतिखुर कहते हैं। दोनों हाथ और मस्तकके साथ योनिगत होनेसे बच्चेको बीज कहा जाता है। परिघकी तरह योनिमें पहुंचनेसे शिशुको परिघ बतलाते हैं। (माधवकर)

जिस गर्भिणीके अङ्ग ठण्डे रहते, जिसे लज्जा नहीं आती और जिसकी सभी शिराएं नीलवर्ण लगतीं और उठी रहतीं, वह मानसिक तथा आगन्तुक सन्तापसे तथा व्याधिसे बहुत पीड़ित होती और उसके पेटमें ही गर्भ गल जाता है।

जिस स्त्रीका गर्भ नहीं हिलता डुलता, जिसके देहका वर्ण काला तथा पीला लगता, जिसकी श्वास उठता और जिसके मांस कोड़नेसे पूतिगन्ध आता उसका गर्भस्थ शिशु मरा हुआ समझा जाता है। (माधवकर)

कामहेतु स्त्री-पुरुषके संयोगसे विशुद्ध शुक्रशोणित द्वारा उत्पन्न होनेवाला स्त्रियोंका गर्भ कलल कहलाता है। शोणितके आधिक्यसे कन्या, शुक्राधिक्यसे पुत्र और शुक्र तथा शोणित दोनोंकी बराबरीसे नपुंसक उत्पन्न होता है। (शार्ङ्गधर)

जीवात्मा अपने पहले किये हुए कर्मोंके क्लेशोंसे प्रेरित हो करके विशुद्ध शुक्र और शोणितके सम्मेलनसे अरणिघर्षण द्वारा अग्न्युत्पत्तिकी तरह गर्भके आकारमें जन्म ग्रहण करता है। फिर माताके आहार-रसजात बीजरूपी सूक्ष्म जीवनीशक्ति समन्वित महाभूतसमूह द्वारा गर्भमें धीरे धीरे वह बढ़ता है। स्फटिक पर सूर्यका रश्मि जैसे चलता, जीव भी गर्भमें हिला डुला करता है। सभी कार्योंमें कारण लगा रहता है। इस लिये जीव गले लोहेकी तरह बहुतसे आकारोंमें परिणत हो करके तरह तरहकी निराली सूरतें बनाता है। हवासे बहुत तरह पर बंटनेसे कई बच्चे निकलते हैं। विकृत कफ आदि मलोंसे विजातीय और विकृतगर्भ सन्तान उपजता है। (वाग्भट)

सुश्रुतके मतमें पूरे १६ वर्षकी स्त्री २० वर्ष वाले पुरुषके साथ सङ्गत होने पर गर्भाशय, हृदय, रक्त, शुक्र, वायु, और पथ विशुद्ध रहनेसे बलवीर्यवान् पुत्र उत्पन्न होता है। स्त्री पुरुषकी उम्र इससे कम पड़ने पर रोगी, अल्पायु और अल्पबुद्धि शिशु उपजता अथवा एकबारगी ही गर्भ नहीं उठता।

स्त्रियोंका रेत: रजोमय और पुरुषोंका वीर्य बीजविशिष्ट होता है। इसीसे संयोग द्वारा गर्भकी उत्पत्ति होती है। पहले दिन शुक्र शोणितके योगसे कलल बनता है। दश दिन पीछे वही खून बुलबुला जैसा बन जाता और १५ दिनमें गाढ़ा पड़ करके २० दिनमें मांसके पिण्ड जैसा दिखाता है। एक मासके मध्य उसमें सूक्ष्म पञ्चभूत तथा पञ्च इन्द्रिय उत्पन्न होते हैं। ५० दिनमें अङ्ग आदिके अङ्कुर, तीसरे महीने हाथ पांव और साढ़े तीन महीनेमें मस्तक आता और उसमें सार भर जाता है। चौथे महीने रूप, पांचवें महीने सजीवता, छठें महीने चाल, आठवें महीने जठराग्नि और नवें महीने चेष्टादि होते हैं। फिर वह गर्भमें नहीं रहना चाहता और दशवें या ग्यारहवें महीने यही गर्भ प्रसूत हो जाता है। (हारीत)

सुश्रुतके मतमें पहला अङ्ग, मस्तक और उसका उपाङ्ग केशसमूह है इसीके बीचमें मस्तिष्क वा घृतिका होती है। फिर ललाट, दोनों भौहें और दोनों आंखें हैं, जिनके भीतरी भागमें दो पुतलियां रहती हैं। दोनों आंखोंके दो डीले काले और उनके किनारे दो सफेद भाग होते हैं। आंखोंके नीचे और ऊपर बिरनियां, उसके बाद अपाङ्ग या कोरें हैं। फिर क्रमश: दो शङ्ख, दो कान और उनके दो छेद और कानकी लौरें आती हैं उसके बाद लगातार नाक, होंठ, अधर, गलफड़े, होंठोंका किनारा, मुंह, तालू, दो जबड़े, दांत, दांतोंकी मैड़, जीभ, ठड्डी और गला है। दूसरा अङ्ग ग्रीवा या गर्दन है। यह ग्रीवा मस्तकसे मिली हुई है। दोनों हाथ तीसरा अङ्ग हैं। उसका उपाङ्ग—ऊपरी भागमें दोनों कन्धे, उसके नीचे दो प्रगण्ड, उसके निम्नभागमें दो कुहनियां,

उसके नीचे दो प्रकोष्ठ, फिर पहुंचा, दो हथेलियां, दो हाथ, दोनों हाथोंकी १० उंगलियें और उसमें १० नख होते हैं। चौथा अङ्ग वक्ष:स्थल है। उसका उपाङ्ग दो स्तन हैं। पुरुषोंसे स्त्रियोंके दोनों स्तनोंमें प्रभेद पड़ता है। जवानीमें स्त्रियोंके दोनों स्तन उठ आते हैं। गर्भवती और प्रसूतिके दोनों स्तनोंमें दूध भर जाता है। हृदय कमलकी तरह और नीचेको मुंह किये हुए अवस्थित है। जागते रहनेसे वह खिलता और सो जानेसे सिकुड़ता है। यही हृत्पद्म जीवात्मा और चेतनाका स्थान है। इसीसे उसके तमोगुणसे भर जाने पर प्राणी सोया करते हैं। उसके बाद दो कोखें, छातीके दो जोड़ और दो हंसलियां और उसके बाद वंक्षण (चढ़ा) है। पेट पांचवां और दोनों बगलें छठां अङ्ग हैं। रीढ़के साथ सभी पीठ सातवां अङ्ग है। उसका उपाङ्ग प्लीहा ठहरती, जो खूनसे उपजती और हृदयके अधोभागमें बाईं ओर रहती है ऋषि लोग उसको रक्तवाही शिरासमूहकी जड़ कहा करते हैं। हृदयके अधोभागमें बाईं ओरको फेफड़ा है। वह खूनके फागसे पैदा होता है। उसके बाद हृदयकी दक्षिण ओरके लहूसे उत्पन्न यकृत् अवस्थित है। वह रक्त और पित्तकी जगह है। उसके नीचे हृदयको दाहनी ओर क्लोम (तलखा) है। वह जलवाही शिराको जड़ ठहरता और प्यासको रोक रखता है। उसकी उत्पत्ति वातरक्तसे है। मेद और शोणितके सारसे दोनों बुक्क बनते हैं आयुर्वेदवित् पण्डित पुरुषोंकी आंत साढ़े ३ व्याम (चार हाथका एक माप) और स्त्रियोंकी तीन व्याम परिमित बतलाते हैं। फिर उण्डुक अर्थात् फेफड़ोंको ढांकनेवाली झिल्ली है। उसके बाद यथाक्रम कमर, त्रिक (रीढ़के नीचेकी जगह), वस्ति और दो वंक्षण आते हैं। वस्तिदेश (पेड़ू) से बड़ी बड़ी नसें निकली हैं और वह वीर्य तथा मूत्रस्थान भी है। स्त्रियोंकी योनि शङ्खनाभिकी तरह तीन आवर्तविशिष्ट होती है। इसी योनि द्वारा स्त्रियोंके पेटमें गर्भाधान लगता है। योनिकी तीसरी लपेटमें गर्भ रहता है। दोनों अण्डकोष कफ, रक्त तथा मेदके सारसे उत्पन्न हैं। यही दोनों अण्ड वीर्यवाही शिराका आधार हैं, इन्हींमें पुरुषत्व प्रतिष्ठित है। गुह्यका परिमाण साढ़े ४ अङ्गुल है। उसमें शङ्खावर्तकी तरह ३ वलय पड़े हुए हैं। इनमें पहलेका नाम प्रवाहिनी है। उसकी माप डेढ़ अङ्गुल होती है। उसके नीचे डेढ़ हो अङ्गुलकी उत्सर्जनी है। उसके निम्नभागमें एक अंगुलकी सञ्चरणी रहती है। गुह्यदेशका मुंह आध अङ्गुल पड़ता और मलत्यागका पथ ठहरता है। पुरुषोंका प्रोथ ही स्त्रियोंका नितम्ब कहलाता है। उसके बाद दो ककुन्दर (कूले) हैं। उसके बाद दो सक्थि आते, जो आठवां अङ्ग कहलाते हैं। इसका उपाङ्ग—दो घुटने और पिंडलियां, दो जांघें, दो घण्टिकाएं, दो पार्ष्णि, दो तलवे और दो पदाग्र हैं।

यह शरीर अपरापर जिन जिन अवयवीभूत कारणोंसे बनता, यह हैं—वात, पित्त, कफ और धातुसमूह। गर्भग्रहणके पीछे ही योनिसे शुक्रशोणित बहता, श्रम मालूम पड़ता, जांघें सुन्न हो जातीं, प्यास बढ़ती, ग्लानी आती, योनि फड़कती, दोनों स्तनोंका मुंह काला होता, रोंगटे खड़े हो जाते, आंखों तथा पलकोंके बाल सिकुड़ते, अनिच्छामें वमन उठता, मनोहर गन्धसे जी बिगड़ता, कफ गिरता और अवसाद लगता है। उपर्युक्त सभी चिह्न गर्भिणीके हैं।

बाल, दाढ़ी, मूंछ, रुएं, नख, दांत, शिरा, धमनी, स्नायु, साद, शुक्र और रक्त पितासे उत्पन्न होता है। फिर मांस, मज्जा, मेद, यकृत्, प्लीहा, अन्त्र, नाभि, हृदय और गुह्यदेशकी उत्पत्ति मातासे है। शरीरकी बाढ़, रङ्ग, बल और देहकी स्थिति रससे निकलती है। ज्ञान, विज्ञान, आयु:, सुखदुख: आदि और इन्द्रिय जीवात्माकी ही हुआ करते हैं। स्त्रीकी रसवाहिनी नाड़ीसे गर्भकी नाभि मिल जाती है। इसीसे गर्भ नित्य नित्य बढ़ता है। यही गर्भ माताकी निश्वास, उच्छ्वास, संक्षोभ और स्वप्नांश प्राप्त होता है।

गर्भस्थ सन्तानकी नाभिमें ज्योति:स्थान प्रतिष्ठित है। वायु इसी ज्योति: द्वारा चालित होता और उसीसे गर्भका देह बढ़ा करता है। वायु उष्माके साथ मिल करके शरीरके जिस जिस स्थानमें पहुंचता, गर्भस्थ सन्तानका वही अङ्ग बढ़ता है। हवाकी कमी और पेटकी थैलीमें हवाके न पहुंचने—दोनों कारणोंसे पेटका बच्चा न तो सांस लेता और न मलमूत्र छोड़ता है।

गर्भस्थ शिशुका मुंह जरायुसे ढंका और उसका गला कफसे घिरा रहता और हवाकी राह रुकी जैसी रहनेसे वह रो नहीं सकता है। (भावप्रकाश)

स्त्रियोंकी गर्भ होनेसे पहले महीने यष्टिमधु, नेनू, दूध और मधुर द्रव्य पीना चाहिये। इसी प्रकार दूसरे महीने काकोली तथा मधुर द्रव्य, तीसरे महीने तिल मिला करके बनायी हुई खिचड़ो, चौथे महीने घृतौदन, पांचवें महीने खीर, छठे महीने मीठा दही, सातवें महीने घी शक्कर, आठवें महीने घीकी बनो दूसरी मिठाई, नवें महीने तरह तरहका अन्न और दशवें महीने दोहद अर्थात् गर्भिणीके अभिलाष अनुसार भोजन दिया जाता है। तीसरे महीने ही स्त्रियोंको दोहद होता है। इस समय गर्भिणी जो जो खाना चाहे, खिलाना चाहिये। दालकी खोचड़ो, विदाही द्रव्य, गुरुपाक तथा गर्म दूध और अम्ल उसको नहीं खिलाते। गर्भिणीको मट्टी खाना अनुचित है। जिमींकन्द, लहसुन और प्याज छोड़ दिया जाता है। अच्छा जिमींकन्द और मीठी और रसीली चीज गर्भिणीके पथ्यको अच्छी होती है। उसको मिहनत, मैथुन, गुस्सा, पराक्रम प्रकाश और अधिक भ्रमण न करना चाहिये। इससे नाना प्रकार विघ्न उठ खड़े होते हैं।

यदि पहले महीने गर्भ चलता समझ पड़े, तो मुलहटी, अङ्गूर या किशमिश, चन्दन और लालचन्दन दूधके साथ मथ करके पोनेसे वह ठहर जाता है। इस प्रकार द्वितीय मासको गर्भका डांवाडोल होनेसे दूधके साथ कमलकी डण्डी, खस और नागकेशर; तीसरे महीने दूधके साथ चूहेकी लेंड़ी और शक्कर, चौथे महीने जलन, प्यास तथा वेदना होने पर खस, चन्दन, नागकेशर, धायके फूल शक्कर, घी, शहद और दही; पांचवें महीने अनारकी पत्ती, चन्दन, दही और मधु; छठे महीने चन्दन और चीनीके साथ गेरू, काली मट्टी, गोबरकी राख और टपका हुआ ठण्डा पानी; सातवें महीने दूध या पानीके साथ गोखुरू, लज्जालुलता, पद्मकाष्ठ, दालचीनी, खस और मधुर द्रव्य और आठवें महीने लोध्र, मधु तथा पीपल दूधके साथ खिलाने पिलानेसे उपकार होता है।

अन्तःसत्ता शब्दमें अपरापर विवरण द्रष्टव्य है।

२ मेघका जलवर्षणसम्पादक कोई निमित्त। वराहमिहिरकी बृहत्संहिताके मतमें—जो दैवज्ञ दिन रात मेघोंमें गर्भका लक्षण लगाता, मुनियोंकी तरह पानी बरसनेके बारेमें उसका कहना मिथ्या नहीं जाता। इस शास्त्रको समझनेसे कलिकालमें भी त्रिकालज्ञ होते हैं। कोई कोई कहता कि कार्तिक मासमें शुक्लपक्षके बाद मेघका गर्भ रहता है, परन्तु यह मत बहुसम्मत नहीं ठहरता। गर्ग आदि मुनियोंके मतमें अग्रहायण मासके शुक्लपक्षकी प्रतिपद्‌से आरम्भ करके जिस दिनको चन्द्र पूर्वाषाढ़ामें पहुंचता, मेघका गर्भलक्षण समझ पड़ता है। चन्द्रके जिस नक्षत्रमें जानेसे गर्भ आता, उसके १८५वें दिन प्रसवकाल दिखाता है। शुक्लपक्षका गर्भ कृष्णपक्षमें, कृष्णपक्षका गर्भ शुक्लपक्षमें, दिनका गर्भ रातको, रातका गर्भ दिनको और सन्ध्याका गर्भ उलटी सन्ध्याको प्रसवकाल पाता है। अग्रहायण और पौषके शुक्लपक्षका गर्भ मन्द फल दिखलाता है अर्थात् थोड़ा पानी बरसाता है। पौषके कृष्णपक्षका गर्भ श्रावणके शुक्लपक्षमें बरसता है। माघके शुक्लपक्षका गर्भ श्रावणके कृष्णपक्षमें वर्षण करेगा। माघके कृष्णपक्षका गर्भ भाद्रके शुक्लपक्षमें, फाल्गुनका शुक्लपक्षजात गर्भ भाद्रके कृष्णपक्षमें और फाल्गुनका कृष्णपक्षजात गर्भ आश्विनके शुक्लपक्षमें वारि वर्षण करता है। चैत्रका शुक्लपक्षजात गर्भ आश्विनके कृष्णपक्षमें और चैत्रका कृष्णपक्षजात गर्भ कार्तिक शुक्लमें बरसेगा। पूर्वदिक्‌का बादल पश्चिम दिक्‌में और पश्चिमका बादल पूर्वमें उठता, बाकी सब दिशाओंमें भी ऐसा ही उलटपुलट देख पड़ता है। ईशान कोण और पूर्वदिक्‌का आकाश विमल तथा आनन्ददायक होनेसे बहुत पानी बरसाता और सूर्य तथा चन्द्र कितने ही शुक्लमण्डलोंमें घिर करके चिकना पड़ जाता है। अगहन और पूसमें सब मेघ सन्ध्याको रञ्जित और सममण्डल होने और अगहनमें बहुत जाड़ा और पूसमें बड़ो बर्फ या ओस पड़नेसे गर्भ पुष्ट नहीं होता। यदि माघमें प्रबल चन्द्र और सूर्यका किरण तुषारको तरह कलुषित, तथा अत्यन्त शीतल लगता, तो मेघयुक्त सूर्यका उदय और अस्त शुभकर ठहरता है। फाल्गुनमें वायुका रूक्ष तथा प्रचण्ड पड़ना, मेघका सस्नेह स्निग्ध रहना, परिवेश

असम्पूर्ण लगना और सूर्यका आग-जैसा पिङ्गल तथा ताम्रवर्ण लगना शुभदायक है। यदि वैशाख मासको बादल आये, हवा चले, पानी बरसे और बिजली चमके, तो वह गर्भ हितकर होता है। मोती, चांदी, तमाल, नीलोत्पल अथवा अञ्जन-जैसे द्युतिमान् वा जलचर प्राणियोंका आकार रखनेवाले सभी बादल बहुत पानी बरसाते हैं फिर गर्भ सूर्यके खूब तीखे किरणोंमें तपने और धीमी हावा चलनेसे प्रसवके समय मानो क्रुद्ध हो करके बरसा करता है। वज्रपात, उल्का, पशु वर्षण, दिग्दाह, भूमिकम्प, गन्धर्व नगर, कीलक, केतु, ग्रहयुद्ध, निर्घात, रुधिरादि वृष्टि, परिघ, इन्द्रधनु तथा राहुदर्शन और तीन प्रकारके अन्य उत्पातोंसे गर्भ नष्ट हो जाता है। ऋतुस्वभावजात सामान्य लक्षणमें गर्भ बढ़नेसे विपरीत लक्षणमें उसका विपर्यय पड़ता है। सभी ऋतुओंको पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा और रोहिणी नक्षत्रमें गर्भ होनेसे बहुत पानी बरसता है। शतभिषा, अश्लेषा, आर्द्रा, स्वाति और मघाका गर्भ शुभदायक रहता और बहुत दिन तक जलवृष्टि किया करता है। परन्तु यह त्रिविध उत्पातसे आहत होने पर गर्भ बिगाड़ देते हैं। जब चन्द्र इन ५ नक्षत्रोंमें किसी पर रहता, अगहनसे वैशाख तक ६ महीने यथाक्रम ८, १६, २४, २० और २४ दिन अविराम वर्षण पड़ता है। चन्द्र वा सूर्य क्रूरग्रहयुक्त होनेसे गर्भ-सकल करका, अशनि और मत्स्य वर्षण करता; परन्तु शुभग्रहयुक्त अथवा शुभग्रह कर्तृक दृष्ट होने पर वही गर्भ बहुत बरसता है। गर्भकालको अकारण अतिवृष्टि होनेसे गर्भ बिगड़ जाता है। द्रोणांशके अधिक बरसनेसे भी गर्भ नष्ट होता है। गर्भ पुष्ट होते भी यदि ग्रहके उपघात आदिसे पानी नहीं पड़ता, तो प्रसवकालको वह अपना करकामिश्र जलप्रदान करता है। जिस प्रकार गायोंका बहुत देर तक रखा हुआ दूध गाढ़ा पड़ जाता, बहुत दिन बीतने पर पानी भी कड़ा दिखलाता है। पांच प्रकारके निमित्तोंसे परिपुष्ट होनेवाला गर्भ ही चार सौ कोस तक बरसता है। इन सब निमित्तोंमें एक एकके अभावसे शतयोजनका आधी हानि हो करके वृष्टि पड़ती है। जिस गर्भमें पवन, जल, विद्युत् गर्जन और मेघ पांचो निमित्त रहते, उनमें अधिक वृष्टि होती है (बृहत्संहिता २१ अ०)

गर्भक (सं० क्ली०) गर्भ संज्ञायां कन्। १ रजनीद्वय, दो रात। (पु०) गर्भे केशमध्ये तिष्ठतीति संज्ञायां कन्। २ केशमध्यस्थ माल्य, वह माला जिसे स्त्रियां अपनी चोटी या जूड़ेमें पहनती हैं।

गर्भकर (सं० पु०) गर्भं करोति सेवनेन दोषं निवार्यति। १ पुत्रजीववृक्ष, पतजिव। (त्रि०) गर्भं करोतीति कृ-ट। २ गर्भकारक।

गर्भकरण (सं० त्रि०) गर्भकारक द्रव्यमात्र।

"अरिष्टो रक्षया वेद तदगर्भकरण त्रि वा" (अथर्व० ५।२५।५)

गर्भकार (सं० पु०) गर्भं करोतीति, कृ-अण् उप-स०। १ गर्भकारक, पति। २ साम गानका एक भेद जिसमें वैराजके आदि और अंतमें रथन्तरका गान किया जाय।

गर्भकाल (सं० पु०) गर्भस्य गर्भग्रहणस्य कालः, ६-तत्। १ गर्भाधानका उपयुक्त काल, ऋतुकाल।

"इत्यूचुरेके यदि तोयं गर्भकाले इति भ रि।" (बृहत्संहिता २१।७)

गर्भकेसर ((सं० पु०) बाल जैसे फूलोंके पतले सूत। ये गर्भनालके भीतर होते हैं। इनके साथ परागकेसरके परागका संयोग होनेसे फलों और बीजोंकी पुष्टि होती है।

गर्भकोष (सं० पु०) गर्भस्य कोष आधार इव। गर्भाशय।

"गर्भकोष-परासङ्गो मक्कलोयोनिसंज्ञितः।

इत्यात् स्त्रियं मूढगर्भां यथोक्ताशाप्युपद्रवाः॥" (सुश्रुत ११ अ०)

गर्भक्लेश (सं० पु०) गर्भजातः क्लेशः, मध्यपदलो०। गर्भजनित कष्ट, वह तकलीफ जो हमल रहनेसे होती हो।

"गर्भक्लेशः स्त्रियो मन्ये।" (मार्क० पु० ११।४५)

गर्भक्षय (सं० पु०) गर्भस्य क्षयः, ६-तत्। गर्भनाश। हमलकी बरबादी।

'गर्भ क्षयो गर्भास्पन्दनमनुन्नतकुक्षिता च।' (सुश्रुत १।१२)

गर्भगृह (सं० क्ली०) गर्भ इव गृहम्। १ मकानके बीचकी कोठरी। २ घरका मध्यभाग, आँगन।

"वासायतविमानेषु तथा गर्भगृहेषु च।" (भारत ५।११७ अ०)

२ मंदिरके मध्यको प्रधान कोठरी जिसमें मुख्य प्रतिमा रखी जाती है।

गर्भग्रहण (सं० क्ली०) गर्भस्य ग्रहणम्। गर्भ धारण। (भावप्रकाश)

गर्भघातिन् (सं० त्रि०) गर्भं हन्ति णिनि । जो गर्भ विनाश करता हो ।

गर्भघातिनी (सं० स्त्री०) गर्भं हन्ति स्रावयतीति हन-णिनि-ङीप् । लाङ्गलिकावृक्ष ।

गर्भचिन्तामणिरस—वैद्यकोक्त औषधविशेष। इसकी प्रस्तुत प्रणाली इस तरह है—पारा, गन्धक और स्वर्णको जम्बीरी नीबूके रसमें तीन दिन तक घोंट कर सोंठ, पीपर और मिर्चके क्वाथके साथ तीन बार भावना देनी पड़ती है। बाद चार रत्ती प्रमाणकी हर एक गोली बनाकर सेवन करनेसे गर्भिणीके शूल, विष्टम्भ, ज्वर और अजीर्ण प्रभृति रोग विनष्ट होते हैं।

एक प्रकारका और गर्भचिन्तामणि रस है। इसकी प्रस्तुत-प्रणाली यों है : रससिन्दूर, रौप्य, और लौह प्रत्येकका दो तोला, कर्पूर, वङ्ग, ताम्र, जातिफल, जावित्री, गोखुर, शतमूली, वेड़ला और गोरक्षचाकुलिया प्रत्येकका एक तोला ले कर सभीको जलके साथ पीसना चाहिए। दो रत्ती प्रमाणकी हर एक गोली बना बना कर सेवन करनेसे गर्भिणीका ज्वर, दाह, प्रदर, सन्निपात और आदिसूतिका प्रभृति रोग शीघ्रही दूर हो जाते हैं। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

गर्भच्युति (सं० स्त्री०) गर्भस्य च्युतिः क्षरणम्। गर्भस्राव, गर्भपात, हमलका गिरना।

'एवं कालप्रकर्षेण मुक्तो नाडीनिबन्धनात्।
गर्भाशयस्थो यो गर्भो जननाय प्रपद्यते ॥
कृमिवाताभिघातैस्तु तद्देवोपद्रुतं फलं।
पतत्यकालेऽपि तथा तथा स्याद् गर्भविच्युतिः ॥" (सुश्रुत)

गर्भाशयस्थित गर्भके यथासमय नाड़ीबन्धनसे मुक्त होनेको जन्म कहते हैं। किन्तु जब यह कृमि और वातादि द्वारा उपद्रुत हो कर अकालमें पतित होता है तो उसे गर्भच्युति कहते हैं।

गर्भज (सं० त्रि०)गर्भ-जन-ड। १ गर्भसे उत्पन्न, संतान।

जैनमतानुसार जो शरीर स्त्रीके उदरमें, माताके रुधिर (रजः) और पिताके वीर्यके मिश्रणसे उत्पन्न होता है। जैसे—मनुष्य, हाथी, घोड़ा आदिका जन्म, ये सब गर्भसे जन्म लेते हैं। गर्भजन्म देखो। (सर्वार्थसिद्धि, २ अ०)
२ जो जन्मसे हो-जैसे गर्भजरोग, गर्भजगुण।

गर्भजन्म—जैनमतानुसार मातापिताके शोणित शुक्रसे जिनका शरीर बने। उपपाद, गर्भ और सम्मूर्च्छन जन्ममेंसे दूसरा जन्म। जरायुज (मनुष्यादि), अण्डज (जो अण्डेसे पैदा होते हैं) और पोत (जो योनिसे निकलते ही दौड़ने लगते हैं और जिनके ऊपर जेर आदि किसी प्रकारका आवरण नहीं रहता। जैसे—सिंह, घोड़ा आदि) जीवोंके गर्भजन्म हो होता है। गर्भज देखो।
(जैनसिद्धांतप्रवेशिका अ० ४)

गर्भगण्ड (सं० पु०) गर्भस्य अण्ड इव। नाभिके स्फोट।

गर्भत्व (सं० क्ली०) १ गर्भका धर्म, गर्भका भाव। २ मेघमें जलकी गर्भभाव प्राप्ति। (सायण)

गर्भद (सं० पु०) गर्भं ददाति सेवनेनेति। १ पुत्रजीववृक्ष, पतजिव। २ पुत्रोत्पादक औषधविशेष। (त्रि०) ३ गर्भदेनेवाला जिससे गर्भ रहे।

गर्भदा (सं० स्त्री०) गर्भ-दा-क-टाप्। श्वेतकण्टकारी, सफेद भटकटैया।

गर्भदात्रिका—गर्भदात्री देखो।

गर्भदात्री (सं० स्त्री०) गर्भं ददातीति गर्भदा तृच्-ङीप्। श्वेतकण्टकारी, सफेद भटकटैया। इसका पर्याय-पुत्रदा, प्रजादा, अपत्यदा, सृष्टिप्रदा, प्राणमाता और तापसद्रुमसन्निभा इसका गुण—मधुर, शीत, स्त्रीयोंके पुष्पादि दोष, पित्त, दाह और श्रमनाशक एवं गर्भोत्पादक है।

गर्भदास (सं० पु०) गर्भात् गर्भमारभ्य दासः, ५-तत्। वह जो जन्मसे दास हो, दासीपुत्र।

गर्भदासी (सं० स्त्री०) गृहस्थित दासीसे उत्पन्न दासी।

गर्भदिवस (सं० पु०) गर्भाय गर्भधारणाय दिवसः। गर्भधारणका उपयुक्त दिन।

'कैचिद्वदन्ति कार्त्तिकशुक्लान्तमतीत्य मेघस्य गर्भदिवसाः स्युः।"
(बृहत्संहिता २१।५)

गर्भदोहद (सं० क्ली०) गर्भस्य दोहदम्, ६-तत्। गर्भके लिये अभिलषणीय द्रव्य।

गर्भद्रुह (सं० त्रि०) गर्भं द्रुह्यति, द्रुह-क्विप्। गर्भपात करनेवाली स्त्री। (कुल्लूक)

गर्भध (सं० त्रि०) गर्भं ददातीति धा-क। गर्भधारण करनेवाला, गर्भधारक। 'गर्भधं गर्भधारकं रेतः।' (वेददीप)

गर्भधरा (सं० स्त्री०) गर्भस्य धरः टाप्। गर्भधारिणी स्त्री। (भारत १।१८८।७०)

गर्भधान (सं० क्लो०) गर्भस्य धानमाधानम्। गर्भाधान।
(भारत १।१२४०।११)

गर्भधारण (सं क्लो०) गर्भस्य धारणम्, ६-तत्। गर्भमें सन्तान धारण, गर्भिणी होना। गर्भधारणके चिह्न मिताक्षरामें इस तरह लिखा है—श्रमादि लक्षण द्वारा गर्भधारण मालूम किया जा सकता है। जिसे गर्भ रह गया हो उसके श्रम, ग्लानि, पिपासा, श्रान्ति, अवसन्नता, शुक्रशोणितका अनुबन्ध और योनिस्फुरण होते हैं। पारस्करका मत है कि यदि स्त्री गर्भधारण न करे तो उपाधान करके निदिग्धिका, सिंही और श्वेतपुष्पके मूल पुष्या नक्षत्रमें उखाड़ कर ऋतुस्नान करने पर चौथे दिनको रातको जलसे बांट कर दाहिनो नासिकामें नस लिया जाय तो स्त्रीको गर्भ रह जाता है। आयुर्वेदीय ग्रन्थमें भी लिखा है कि शृङ्गवेर, मरिच, नागकेशर और पीपलको घृतके साथ खाने पर वन्ध्या स्त्री भी गर्भधारण करती है।

गर्भधि (सं० स्त्री०) गर्भं दधातीति, गर्भ-धा-इन्। गर्भधारिणी, वह औरत जिसके हमल रह गया हो।

गर्भनाड़ी (सं० स्त्री०) गर्भस्य गर्भोत्पादनस्य: योग्या नाड़ी। गर्भधारण करनेको उपयुक्त नाड़ी।
(सुश्रुत, शारीर १० अ०)

गर्भनाल (सं० स्त्री०) फूलोंके भीतरकी वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भकेसर होता है।

गर्भनाश (सं० पु०) गर्भपात।

गर्भनाशना (सं० स्त्री०) अरिष्टकवृक्ष, राठेका पेड़।

गर्भनिःसृत (सं० त्रि०) गर्भात् निःसृतम्। गर्भसे निर्गत, गर्भसे गिरा हुआ।

गर्भनिस्रव (सं० पु०) वह भिल्ली आदि जो बच्चेके उत्पन्न होने पर पोछेसे निकलती है।

गर्भनुद (सं० पु०) गर्भं नुदति पातयतीति नुद-क्विप्। कलिकारोवृक्ष।

गर्भपत्र (सं० पु०) १ गाभा, कोमल पत्ता, कोंपल। २ फूलके अन्दरके पत्ते जिनमें गर्भकेसर रहता है।

गर्भपरिस्रव (सं० पु०) गर्भस्य परिस्रवः क्षरणयोग्यांशः। सन्तान होने पर उसके साथ जो भिल्ली बाहर होती है उसीको गर्भपरिस्रव कहते हैं।

गर्भपाकी (सं० पु०) गर्भस्य पाको परिणतिः साध्यत्वे नास्त्यस्याः इनि। षष्टिधान, साठो धान।

गर्भपात (सं० पु०) गर्भस्य पातः, ६-तत्। १ गर्भका पांचवें या छठे महीनेमें गिर जाना।
"ततः स्थिरशरीरस्य पातः पञ्चमषष्ठयोः।" (माधव) गर्भस्राव देखो।
२ गर्भका गिरना।

गर्भपातक (सं० पु०) गर्भं पातयतीति पत् णिच् ण्वुल्। रक्तशोभाञ्जनवृक्ष, लाल सोहिंजनका पेड़।

गर्भपातन (सं० पु०) गर्भं पातयतीति, पत-णिच-ल्यु। १ रीठा करञ्ज, बड़ारीठा। २ गर्भका नष्ट होना।

गर्भपातिनी (सं० स्त्री०) गर्भं पातयति-पत-णिच्-णिनि। १ विशल्यावृक्ष, गुरुच या गिलोयका पेड़। २ कलिकारीवृक्ष, कलिहारीका पेड़।

गर्भपोषण (सं० क्लो०) गर्भस्य पोषणम्, ६-तत्। १ यत्नपूर्वक गर्भ पालन। २ गर्भकी पुष्टि सम्पादक विधि।

गर्भवती स्त्रीको चाहिये कि वह प्रथम दिनसे हृष्ट, पवित्र और अलङ्कृत हो कर शुभ्रवस्त्र परिधानपूर्वक शान्तिकर्म और मङ्गलजनक कार्य करे एवं देवता, ब्राह्मण और गुरुके प्रति श्रद्धान्वित बने। मलिन, विकृत और होनगात्र कदापि स्पर्श न करना चाहिये। दुर्गन्ध ग्रहण, दूषितद्रव्य दर्शन और उत्तेजक वाक्य परित्याग करे। शुष्क, बासा और क्लेदयुक्त अन्न भोजन करना निषिद्ध है। टहलनेके लिये बाहर जाना, शून्य घरमें रहना, श्मशानमें जाना, वृक्ष पर चढ़ना, क्रोध और भय करना एवं भारवहन तथा उच्चशब्द करना, इन सभोंका परित्याग कर्तव्य है। ऐसा तेल कदापि सेवन नहीं करना जिससे गर्भ नष्ट हो। अथवा शरीरको किसी प्रकार कष्ट नहीं देना चाहिये। जो अधिक ऊंचा न हो अथवा जिससे किसी प्रकारको बाधा न पहुंचे ऐसी शय्या और मृदु आस्तरण व्यवहारमें लाना उत्तम है। तृप्तिजनक, द्रव, मधुर, रसप्रचुर, स्निग्ध, दीपनीय और सुसंस्कृत अन्न भोजन करना चाहिये। ये सब कार्य प्रसवकाल तक कर्तव्य है। विशेषतः गर्भवती स्त्रीको प्रथम, द्वितीय, और तृतीय मासमें प्रायः मधुर और शीतल द्रव्य आहार करना चाहिये। तृतीय मासमें दुग्धके साथ साठी चावलका भात, चतुर्थ मासमें दधिके

साथ और पञ्चम मासमें घृतके साथ भोजन करना चाहिये। चतुर्थ मासमें दुग्ध और मक्खनके साथ अन्न एवं जङ्गलजात जीवके मांसके साथ हृद्यकर अन्न, पञ्चम मासमें दुग्ध और घृतविशिष्ट उक्त समांस अन्न, छठे मासमें गोक्षुरक सिद्ध क्वाथ घृतके साथ सेवन करना लाभदायक है। सप्तम मासमें पृश्निपर्णी आदि सिद्ध करके घृतके साथ खाना चाहिये। ऐसा करनेसे गर्भ परिपुष्ट होता है। अष्टम मासमें बेरके जलके साथ बला, अतिबला, शतपुष्प, तिलकुटा, दुग्ध, तैल, लवण, मदनफल, मधु और घृतमिश्रित अन्न भोजन करना चाहिये। इससे पुराने मलकी शुद्धि और वायुका अनुलोमन होता है। इसके बाद दुग्ध, मधुर और कषाय द्रव्य सिद्ध करके तेलके साथ शरीरमें लगानेसे वायु सरल होती है और उपद्रवशून्य हो करके बच्चा सुखसे बाहर निकलता है।

गर्भप्रसव (सं॰ पु॰) गर्भस्य प्रसवः। गर्भस्थ शिशुके भूमिष्ठ होनेके लिये बहिर्गमनरूप क्रियाविशेष, गर्भस्थ सन्तानके बाहर आनेकी क्रिया।

गर्भभर्मन् (सं॰ क्ली॰) १ शिशुसन्तानका भरणपोषण। २ गर्भस्थ शिशुका भरण पोषण। (रघु ३।१२)

गर्भभवन (सं॰ क्ली॰) गर्भस्य भवनम्। १ घरके मध्यकी कोठरी। २ प्रसूतिका गृह, सौरी।

गर्भभाण्डक (सं॰ पु॰) प्रबालक, पाकरका पेड़।

गर्भभार (सं॰ पु॰) गर्भ एव भारः। गर्भरूप भार, गर्भका भारीपन। (कथासरित्सागर २६।२२१६)

गर्भमण्डप (सं॰ पु॰) गर्भस्थितः मण्डपः। घरके अन्तर्गत मण्डप।

गर्भमास (सं॰ पु॰) गर्भस्य गर्भारम्भस्य मासः। १ गर्भारम्भक मास, वह महीना जिसमें गर्भाधान हो। २ गर्भसहित मास।

गर्भमोचन (सं॰ क्ली॰) गर्भस्य मोचनम्, ६-तत्। प्रसवकरण।

गर्भयोषा (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्था योषा। गर्भस्थानोया स्त्री, गर्भिणी स्त्री। (भारत १३।२७०)

गर्भरक्षण (सं॰ क्ली॰) गर्भस्य रक्षणम्। गर्भपालन।

गर्भरस (सं॰ त्रि॰) गर्भे रसमस्य। १ जिसके गर्भमें रस हो। २ गर्भोत्पत्ति निमित्त रस।

गर्भरा (सं॰ स्त्री॰) प्राचीनकालकी एक प्रकारकी नाव। यह ११२ हाथ लम्बी, ५६ हाथ चौड़ी और ५६ हाथ ऊंची होती थी।

गर्भरूप (सं॰ त्रि॰) गर्भस्य नवोत्पन्नशिशोः रूपमस्य यथा गर्भे देहकोषे रूपमस्य तरुण।

गर्भलक्षण (सं॰ क्ली॰) गर्भो लक्ष्यते येनेति करणे ल्युट्। गर्भसूचक चिह्न, गर्भकी पहचान। (सुश्रुत ३।१५ अ॰)

गर्भलम्भन (सं॰ क्ली॰) गर्भरक्षणार्थ क्रिया, वह क्रिया जो गर्भकी रक्षाके लिये की जाती है।

गर्भवती (सं॰ स्त्री॰) गर्भो विद्यते यस्याः मतुप् मस्य वः। गर्भिणी, वह औरत जिसके पेटमें बच्चा हो। इसका नामान्तर—अन्तर्वत्नी, गुर्विणी, गर्भिणी, ससत्त्वा, आपन्नसत्त्वा, दोहदवती, उदारिणी और गुर्वी है।

जिस स्त्रीके गर्भधारण किये अल्प दिन हुए हों, उसकी योनिसे शुक्र और शोणितक्षरण, श्रमबोध, अवसन्नता, पिपासा, ग्लानि और योनिस्फुरण होते हैं। गर्भधारणके बाद क्रमशः दोनों स्तनके मुख कृष्णवर्ण और आंखके पल बंद हो जाते हैं। गर्भ देखो।

गर्भमें पुत्र होनेसे द्वितीय मासको गर्भाशयमें पिण्डाकार गर्भ और दाहिनी आंखका भारीपन मालूम पड़ता है। सबसे पहले दाहिने स्तनमें दुग्ध निकलता, दाहिना ऊरु सुपुष्ट होता और मुखका वर्ण प्रसन्न रहता है। स्वप्नमें भी पुत्रके निमित्त वासना होती है। स्वप्नमें आम्रफल और पद्मादि प्राप्त होते हैं।

जिसके गर्भमें कन्याकी उत्पत्ति हो, द्वितीय मासमें उसके गर्भमें पेशी दीख पड़ती है एवं पुत्रकी जन्म लेने पर जो जो चिह्न दिखाई पड़ते उसके विपरीत लक्षण इसमें प्रकाशित होते हैं।

नपुंसक होने पर गर्भ पिंडके सदृश मालूम पड़ता, गर्भके दोनों पार्श्व उन्नत होते और उदरका अग्रभाग विस्तृत दीखता है। (भावप्रकाश)

यमज होने पर जिस मासमें उदरको जितना बढ़ना चाहिये तदपेक्षा द्विगुण और उससे अधिक परिमाणमें बड़ा दिखाई देता है। उदरका सम्मुख चौड़ा और उसके ऊपरसे नीचे मध्यभाग दबा हुवा तथा उदर समद्विभागमें विभक्त मालूम पड़ता है। उदर श्याम श्याम

पर ऊंचा नीचा होता है तथा दोनों भ्रूणोंकी विषम चलन-क्रियासे गर्भिणीको अधिक कष्ट पहुंचता है। पेट खूब भारी होकर अन्तमें गर्भिणीके दोनों पैर सूज जाते हैं। ये सब लक्षण रहने पर भी किसी समय यमज गर्भका स्थिरनिश्चय नहीं किया जा सकता है। युरोपीय चिकित्सक ष्टेथस्कोप यन्त्र या कर्ण द्वारा दोनों हृत्पिण्डकी सङ्कोचिका और प्रसारिका क्रियाका शब्द सुन कर यमज गर्भ स्थिर करते हैं।

गर्भवसति (सं॰ स्त्री॰) गर्भः कुक्षिरेव वसतिः वासस्थानं। १ कुक्षिरूप वासस्थान। (हरिवंश ६० अ॰) २ गर्भमें अवस्थिति, गर्भमें रहना।

गर्भवास (सं॰ पु॰) वसति अस्मिन् वासः, गर्भ एव वासः वासस्थानं। १ गर्भाशय। २ गर्भके भीतरकी स्थिति।

गर्भविच्युति (सं॰ स्त्री॰) गर्भात् विच्युतिः, ५-तत्। रोगादिके कारण गर्भका अकाल पतन। गर्भच्युति देखो।

गर्भविनोदरस—सूतिका रोगकी वेदाकोक्त औषध। हिङ्गुल ८ तोला, सोंठ, पीपल, मरिच, जैत्री, लवङ्ग प्रत्येकका ५ तोला, स्वर्णमाक्षिक ४ तोला, इन सभोंको जलसे पीसकर मटर परिमाणकी हर एक गोली बनाई जाती है। इसके सेवन करनेसे समस्त प्रकारके सूतिकारोग नाश होते हैं।

गर्भविपत्ति (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्य विपत्तिः, ६-तत्। रोग, स्राव और पातादिके लिये गर्भका आपद्।

गर्भविलासतैल (सं॰ क्ली॰) गर्भस्थापन करनेका तेल।

गर्भविलासरस (सं॰ पु॰) गर्भिणीज्वररस। पारा, गन्धक और तूतियाभस्मका समान भाग ले कर जंबीर रसके साथ तीन दिन तक गर्भिणी स्त्रीको सेवन करना चाहिये।

गर्भविस्राविणी (सं॰ स्त्री॰) छोटो इलायची

गर्भवेदना (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्य वेदना। सन्तानोत्पत्तिके लिये व्यथा, बच्चा उत्पन्न करनेके समयका कष्ट।

गर्भवेश्मन् (सं॰ क्ली॰) गर्भ एव वेश्मन्। गर्भरूप गृह, वह घर जो गर्भके जैसा बना हो।

गर्भव्याकरण (सं॰ पु॰) चिकित्साशास्त्रका एक अंग जिसमें गर्भको उत्पत्ति तथा वृद्धि आदिका वर्णन होता है।

गर्भव्यापद् (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्य व्यापत्, ६-तत्। गर्भकी विपत्ति, गर्भका क्लेश।

गर्भव्यूह (सं॰ पु॰) गर्भ इव गूढ़ो व्यूहः। लड़ाईमें पद्माकृति सैन्य रचनाविशेष। युद्धमें सेनाको एक प्रकारकी रचना, जिसमें सेना कमलके पत्तोंकी तरह अपने सेनापतिको चारों ओरसे घेर कर खड़ी होती और लड़ती है।

गर्भशङ्कु (सं॰ पु॰) गर्भस्य गर्भचिकित्सार्थः शङ्कुः। चिकित्साशास्त्रानुसार एक प्रकारका यन्त्र जिसके द्वारा मरा हुआ बच्चा पेटके भीतरसे निकाला जाता है। इसके मुंहका घेरा आठ अंगुलका होता है।

गर्भशङ्कुक (सं॰ पु॰) गर्भशंकु स्वार्थे कन्। मृतगर्भाकर्षणार्थ यन्त्रविशेष, वह औजार जिससे मरे हुए बच्चेको पेटसे निकालते हैं।

गर्भशय्या (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्य गर्भस्थशिशोः शय्या इव स्थानम्। गर्भकी उत्पत्तिका स्थान।

> 'शङ्खनाभ्याकृतिर्यों नस्त्र्यावर्त्ता सा च कीर्तिता।
> तस्यास्तृतीये त्वावर्त्ते गर्भशय्या प्रकीर्त्तिता॥
> यथा रोहितमत्स्यस्य मुखं भवति रूपतः।
> तत्संस्थाना तथारूपां गर्भशय्यां विदुर्बुधाः॥" (भावप्रकाश)

गर्भशल्य (सं॰ क्ली॰) गर्भवेदना, गर्भशूल।

गर्भशातन (सं॰ क्ली॰) भेषज द्वारा गर्भपात, दवाईसे गर्भपात।

गर्भशोषः (सं॰ पु॰) गर्भका शुष्कता रोग।

गर्भस्राव (सं॰ पु॰) गर्भस्राव देखो।

गर्भसंक्रमण (सं॰ क्ली॰) गर्भे संक्रमणं अन्यदेहपरित्यागेन देहान्तरापादानार्थं प्रवेशः। देहान्तरग्रहणार्थ कुक्षिप्रवेशरूप जन्म।

> "गर्भसंक्रमणे चापि कर्मणामभिसर्पणे।
> तादृशोमेव लभते वेदनां मानवः पुनः॥" (भारत अश्वमेध १० अ॰)

गर्भसम्भव (सं॰ पु॰) गर्भस्य सम्भवः। गर्भोत्पत्ति, गर्भका उत्पन्न।

गर्भसंभूति (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्य संभूतिः। गर्भोत्पत्ति। (भागवत ४।६।१)

गर्भसमय (सं॰ पु॰) गर्भस्य समयः। १ गर्भकाल, ऋतुस्नानके बाद सहवास काल। २ वृष्टिका उत्पत्ति निमित्तक काल। (वृहत्संहिता २१।१२)

गर्भसुभग (सं० त्रि०) गर्भ सुभगः। १ गर्भकालावधि सौभाग्यशाली। गर्भधारणात् सुभगा। २ गर्भधारणके लिये सौभाग्यशालिनी।

गर्भसूत्र (सं० क्ली०) बौद्धसूत्र विषयका नाम।

गर्भस्थ (सं० त्रि०) गर्भे तिष्ठति स्था-क। जो गर्भमें स्थित हो। (सुश्रुत ११३ अ०)

गर्भस्थान (सं० क्ली०) गर्भाशय।

गर्भस्थली (सं० स्त्री०) गर्भ एव स्थली स्थानम्। गर्भरूप स्थान, गर्भाशय।

गर्भस्राव (सं० पु०) गर्भ-स्रु-घञ्। गर्भस्य स्रावः, ६-तत्। प्रसवकालके पहले गर्भकालसे चार मास पर्यन्त शोणितरूपमें गर्भका पतन, गर्भच्युति।

यदि गर्भवतीके गर्भसे बार बार रक्तस्राव होता हो, तो उसको बन्द करनेके लिये सुस्निग्ध उत्पलादि सिद्ध करके क्वाथ पिलाना चाहिये। नील, उत्पल, रक्तवर्ण कुमुद, कह्लार, श्वेतपद्म और यष्टिमधुको उत्पलादिगण कहते हैं।

गर्भस्राव होने पर दाह, पार्श्व-वेदना, प्रदर, पृष्ठवेदना, आनाह और मूत्रसङ्ग होते हैं। गर्भके एक स्थानसे दूसरे स्थानको सञ्चालन होने पर आमाशय और पक्वाशयमें क्षोभ तथा दाहादि उपरोक्त उपद्रव हुआ करते हैं। गर्भस्रावमें दाहादिके होने पर स्निग्ध और शीतल क्रिया कर्तव्य है।

कुशमूल, काशमूल, भेरोण्डामूल और गोक्षुर इन सभोंको दुग्धमें पाक कर चीनीके साथ गर्भिणीको पीनेको दिया दें। गोक्षुर, यष्टिमधु, कण्टकारी और वाणपुष्प इन सभोंके साथ दुग्धपाक कर चीनी और मधुके साथ पिलानेसे गर्भिणीकी गर्भवेदना जाती रहती है।

कोष्ठागारिकाका मृत्तिका, नवमल्लिका, लज्जालुलता, ..., गेरूमट्टी, रसाञ्जन और धूप इन समस्त पदार्थोंको चूर्ण कर मधुके साथ सेवन करनेसे गर्भपात नहीं होता है।

गर्भस्रावाशौच (सं० क्ली०) गर्भस्रावका अशौच। जितने महीनेका गर्भ रहता है उतने दिन तकका सूतक होता है। जिसे स्रावशौच कहते हैं। कूर्मपुराणमें लिखा है कि छह मासके पहले यदि गर्भस्राव हो तो, गर्भस्रावाशौच उतने ही दिन तक रहेगा जितने मासमें गर्भस्राव होता है। छह मासके बाद गर्भपात होनेसे स्त्रियोंको दश रात्रि और सपिण्डयोंका सद्यशौच रहता है।

गर्भस्रावी (सं० पु०) गर्भं स्रावयतीति स्रु णिच् णिनि। हिन्तालवृक्ष, ताड़, खजूरकी जातिका पेड़।

गर्भहत्या (सं० स्त्री०) भ्रूण हत्या, गर्भपात।

गर्भागार (सं० क्ली०) गर्भ इव आगारम्। १ गर्भगृह, वह कोठरी जो घरके मध्यमें हो, घरके बीचका कमरा। २ आँगन। ३ गर्भस्थान, गर्भाशय।

गर्भाङ्क (सं० पु०) अभिनयके अंकका एक भाग। इसमें केवल एक दृश्य होता है। इसके समाप्त होने पर पहली यवनिका उठाई अथवा दूसरी गिराई जाती है और तब दूसरा दृश्य आरंभ होता है। (साहित्य०)

गर्भाद (सं० त्रि०) गर्भ भक्ति-अद-घञ्। गर्भभक्षक

"गर्भादं कण्व नाशय हरिप्रपर्णि स स्न च।" (अथर्व ८।६।१३)

गर्भाधान (सं० क्ली०) गर्भ आधीयते ऽनेन, आ-धा करणे ल्युट्। १ दशविध संस्कारोंमें प्रथम संस्कार। प्राचीन धर्मशास्त्रकारोंके मतमें प्रतिबन्ध न रहनेसे विवाहित स्त्रीके प्रथम ऋतुमें ही गर्भाधान संस्कार करना चाहिये। गोभिलका कहना है कि ऋतुमती स्त्रीका शोणितस्राव रुकते ही सङ्गमकाल होता है। (२।५।८) सांख्यायन ऋषिके मतमें (१।१८।१) नवोढ़ा वा चिरकाल परिणीता भार्याके साथ ऋतुकाल उपस्थित होने पर अभिगमन करना चाहिये मनुसंहितामें (३।४५) ऋतुकालको अभिगमन करनेकी बात कही है। फिर गौतम, याज्ञवल्क्य प्रभृति संहिताओंमें भी ऐसा ही विधान देख पड़ता है। प्रदर्शित प्रमाणों द्वारा निश्चित न होते भी कि प्रथम ऋतुमें ही गर्भाधान संस्कार पड़ेगा, संग्रहकारोंने दूसरे दूसरे वचनोंके साथ सामञ्जस्य लगा करके प्रथम ऋतुको ही गर्भाधान संस्कारका विधान किया है। यह मानी हुई बात है कि धर्मशास्त्रका विधि पालन न करनेसे प्रत्यवाय वा पाप पड़ता है जब सांख्यायनीय गृह्यसूत्र और मनु प्रभृति प्रायः सभी धर्मशास्त्रोंमें ऋतुकालको गमन करनेका विधान है, प्रथम ऋतुको अभिगमन न करनेसे इसमें सन्देह नहीं कि प्रत्यवाय वा पाप लग जावेगा

पराशरने सपष्ट ही कह दिया है—जो व्यक्ति हृष्ट कष्ट रहते भी ऋतुमती भार्याको अभिगमन नहीं करता, उसको बालकहत्याका पाप लगता है। इससे साफ समझ पड़ता है कि प्रतिबन्धक न रहनेसे प्रथम ऋतुको ही गर्भसंस्कार करना चाहिये, नहीं करनेसे पाप चढ़ता है। आश्वलायन गृह्यपरिशिष्टमें प्रथम ऋतुको ही गर्भाधानकी बात है—

"अथर्तुमत्याः प्राजापत्यमृतौ प्रथमेऽनुकूलेऽहनि सुस्नातायामारम्भः प्राजापत्यस्य स्थालीपाकस्य हुत्वा ताम् आज्याहुती जुहुयात्।"

विवाहके पीछे ऋतुमती स्त्रीके प्रथम ऋतुमें ही शुभ दिनको गर्भाधान कार्यके अनुष्ठानमें प्रवृत्त हो प्रजापति देवताके उद्देशसे चरु पाक करके घृताहुति देना चाहिये। गृह्यपरिशिष्टके इस विधानसे साफ मालूम पड़ता है कि विवाहके पीछे प्रथम ऋतुको ही गर्भाधान संस्कार कर्तव्य है। गर्भाधानकी यह प्रथा हिन्दुओंके समाजमें चिर दिनसे चली आती है। देशभेदसे इसीका नाम पुनर्विवाह, पुष्पोत्सव, फलशोभन, फूलचौक आदि पड़ा है। सब देशोंमें सभी श्रेणियोंके हिन्दू विशेष प्रतिबन्धक न रहनेसे गर्भाधान संस्कार किया करते हैं। प्राचीन स्मृतिसंग्रहकारों और उनके परवर्ती रघुनन्दनने प्रथम रजस्रावको ही गर्भाधानका विधान किया है।

सुश्रुतके मतमें बालिकाका गर्भाधान निषिद्ध है। पचीस वर्षसे नीचेका पुरुष १६ वर्षसे छोटी स्त्रीका गर्भाधान करनेसे वह गर्भ पेटमें ही विनष्ट हो जाता अथवा जात बालक अधिक नहीं जी पाता, किसी प्रकार से बचने पर भी दुबला दिखाता है। इसी कारणसे बहुत छोटी रमणीका गर्भाधान न करना चाहिये। कोई कोई बतलाता है कि भिषक्शास्त्र वा ज्योतिष शास्त्रका सिद्धान्त धर्मशास्त्र विरुद्ध होनेसे अग्राह्य है। अतएव सुश्रुतका यह मत धर्मशास्त्र विरुद्ध जैसा आदरणीय नहीं। फिर किसीके मतमें देशभेद तथा कालभेदसे सुश्रुतका मत चलता था, सब देशों और सब समयोंके लिये वह कब आदरणीय रहा। इसी प्रकार अपर अपर स्थानोंमें भी पूर्वप्रदर्शित धर्मशास्त्रके विरुद्ध जो दो एक मत देख पड़ते, किन्तु उनका अन्यरूप तात्पर्य रहते या उनकी दूसरी व्याख्या करते हैं। (विवाह देखो।)

धर्मशास्त्रके मतमें रजोदर्शनकी पहली तीन रातोंके बाद शुभ वार, तिथि और नक्षत्रमें गर्भाधान संस्कार करना चाहिये। किन्तु गोभिलने ऋतुमती स्त्रीका शोणित स्राव बन्द होने पर ही सङ्गमकाल बतलाया है, किसी रात या दिनकी गिनती नहीं। इससे स्पष्ट ही समझ पड़ता है—ऋतुके पीछे जितने दिन शोणित गिरता, सङ्गम वा गर्भाधान करना अनुचित ठहरता है—करनेसे सन्तानका अनिष्ट उठता है। दूसरे धर्मशास्त्रकारोंने प्रायशः तीन रातोंके पीछे रक्त पतन बन्द हो जानेसे तीन रातोंका उल्लेख किया है। रजोदर्शनके प्रथम दिनसे सोलह रात तक ऋतुकाल कहलाता, इसीके बीच गर्भाधान किया जाता है। युग्म रात्रिको गर्भाधान करनेसे कन्या और अयुग्मको उससे पुत्र उत्पन्न होता है। चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार और संक्रान्ति दिवसको गर्भाधान करना निषिद्ध है। फिर ज्येष्ठा, मूला, मघा, अश्लेषा, रेवती, कृत्तिका, अश्विनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपद और उत्तरफल्गुनी नक्षत्रमें भी गर्भाधान करना न चाहिये। हस्ता, श्रवणा, पुनर्वसु और मृगशिरा कई नक्षत्रोंको पुंनक्षत्र कहते हैं। यह गर्भाधान कार्यको शुभ हैं। इसके लिये रवि, मङ्गल और बृहस्पति वार तथा वृष, मिथुन, कर्कट, सिंह, कन्या, तुला, धनु और मीन लग्न प्रशस्त होते हैं।

भरद्वाजके मतमें रजस्वला स्त्री प्रथम दिन चण्डाली, द्वितीय दिन ब्रह्मघातिनी और तृतीय दिनको रजकीकी भांति अपवित्र और अस्पृश्य रहती है। वह चतुर्थ दिवसको शुद्धिलाभ करती है। चौथे दिनसे सोलह दिन तक गर्भाधानका योग्य काल है।

बृहज्जातकके निषेकाध्यायमें लिखा है कि गर्भके प्रथम मासको शुक्र और शोणित मिलता है। उसीका नाम कललावस्था है। उक्त समयका अधिपति शुक्र होता है। द्वितीय मासको गर्भ अपेक्षाकृत कठिन पड़ जाता है। उसका अधिपति मङ्गल है। तृतीय मासको हस्तपदादि उत्पन्न हुआ करते हैं। उसका अधिपति बृहस्पति है। चतुर्थ मासको अस्थिका सञ्चार होता है। उसका अधिपति सूर्य है। पञ्चम मासको

चर्म उपजता है। उसका अधिपति चन्द्र है। षष्ठ मासको रोम आते हैं। उसका अधिपति शनि है। सप्तम मासको चेतनाका प्रादुर्भाव होता है। उसका अधिपति बुध है। अष्टम मासको भोजनशक्ति आती है, उसका अधिपति लग्नाधिपति ही है। नवम मास उद्वेग उठता है। उसका अधिपति चन्द्र है। दशम मासको प्रसव होता है। उसका अधिपति सूर्य है। जिन ग्रहोंका उल्लेख किया गया है, गर्भाधान कालको उनमें कोई ग्रहपीड़ित रहनेसे उसी ग्रहके मासमें गर्भपातादि होता है। फिर उनके बलवान् रहनेसे उसी उसी महीने गर्भकी पुष्टि हुआ करती है।

सुश्रुतके मतमें अतिशय वृद्धा, चिररोगिणी वा अन्य किसी प्रकारकी विकारयुक्त रमणीका गर्भाधान करना एकान्त निषिद्ध है। अतिशय वृद्ध, चिररोगग्रस्त वा किसी प्रकारके दूसरे विकारयुक्त पुरुषके लिये भी गर्भाधान करना अनुचित है। प्रथम ऋतुमें गर्भाधान संस्कार कर लेनेसे फिर किसी ऋतुको वह आवश्यक नहीं होता। देवल कहते हैं कि रमणियोंका एक बार संस्कार होनेसे सभी गर्भोंका संस्कार हो जाता है। अतएव गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन एक ही साथ करना चाहिये।

गोभिल गृह्यसूत्र (२।१।५) में गर्भाधान-प्रणाली इस प्रकारसे लिखी है—रजःस्रावके प्रथम तीन दिनके बाद शुभ मुहूर्तकी किसी प्रकारका दोष वा प्रतिबन्धक न रहनेसे गर्भाधान किया जाता है। गर्भाधान दिवसकी सायं सन्ध्या अतीत होने पर पतिको पवित्र भाव और पवित्रवेशसे "नमो विश्वसृजे विश्वः" इत्यादि मन्त्र द्वारा सूर्यार्घ प्रदान करना चाहिये। फिर "विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥" (मन्त्रब्राह्मण १।४।६) और "गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ॥" (मन्त्रब्रा० १।४।७) मन्त्र उच्चारण करके दाहिने हाथसे पत्नीका योनिदेश छूते और उसके बाद सङ्गत होते हैं। इसीका नाम गर्भाधान संस्कार है।

पद्धतिप्रणेता भवदेवभट्टके मतमें योनिदेश स्पर्श करके ऊपरके दोनों मन्त्र पढ़ना पड़ते हैं। कोई कोई विवाहकी भांति गर्भाधानके दिन भी आभ्युदयिक श्राद्ध करनेको कहता है। * छन्दोग-परिशिष्टके अनुसार विवाह और गर्भाधान संस्कारके बीच एक श्राद्ध करनेसे ही काम चल सकता, प्रत्येक कर्मके पहले आभ्युदयिक नहीं करना पड़ता। लौकिक प्रथा अथवा विलुप्त शाखीय विधिके अनुसार गर्भाशयकी शुद्धिको मन्त्रपूत पञ्चगव्य भक्षण करनेका नियम है।

आश्वलायन-गृह्यपरिशिष्टमें गर्भाधान विषयपर इस प्रकार लिखित हुआ है—

विवाहके बाद ऋतुमती नवोढ़ाके मङ्गलार्थ प्रजापति देवताके उद्देशसे होम करना चाहिये। उसकी रीति यह है कि प्रथम ऋतुके १६ दिनोंमें शुभ मुहूर्तको पवित्र तथा मनोहर वेशधारिणी नवोढ़ा रमणीके साथ गर्भाधान कार्यके अनुष्ठानमें लग स्थालीमें विधिके अनुसार चरुपाक करके उसका कियत् अंश प्रजापति देवताके उद्देशसे अग्निमें आहुति देते हैं। अवशिष्ट चरु दम्पतीके भोजनको रख छोड़ा जाता है। फिर "विष्णुर्योनिं कल्पयतु" इत्यादि मन्त्रसे घृताहुति प्रदान करना चाहिये। स्थानान्तरमें यह भी लिखा हुआ है, उसके पीछे क्या करना पड़ेगा। प्राजापत्य होमके बाद जिस क्रिया द्वारा गर्भ लाभ होता, करना उचित है। इसीका नाम गर्भलम्भन है। उसकी रीति यह है कि कई एक निषिद्ध रात्रियां परित्याग करके दम्पतीका शरीर सुस्थ रहनेसे सुन्दर सुसज्जित तथा सुगन्धि कुसुम प्रभृति द्वारा सुवासित गृहमें नानाविध आभरणोंसे विभूषित, अङ्गरागरञ्जित, माल्य चन्दन द्वारा परिशोभित और शुक्ल वस्त्रधारिणी रमणीको पलंग पर लेटा करके अपने आपभी सुस्नात और माल्यादि पवित्र वेशभूषित हो करके शयन करना चाहिये। फिर थोड़ीसी दूर्वा पीस करके उसका रस "उदीर्ष्वातः पतिवती ह्येषा विश्वावसुं नमसा गीर्भिरीळे। अन्यामिच्छ पितृषदं व्यक्तां स ते भागो जनुषा तस्य विद्धि॥" (ऋक् १०।८५।२१) और "उदीर्ष्वातो विश्वावसो नमसेळामहे त्वा। अन्यामिच्छ प्रफर्व्यं सं जायां पत्या सृज॥" (ऋक् १०।८५।२२) दोनों मन्त्र पढ़ करके दम्पतीको नासिकामें सेवन करते अथवा अश्वगन्धाका चूर्ण झीने कपड़ेमें बांध बत्ती बना लेते और पूर्वोक्त दोनों मन्त्र उच्चारण करके दम्पतीके

---

* "निषेककाले सोमे च सीमन्तोन्नयने तथा।
ज्ञेयं पुंसवने चैव श्राद्धं कर्माङ्गमेव च॥" (संस्कारतत्त्वधृत-भविष्यपुराण)

नासिका रन्ध्रमें आघ्राण द्वारा पहुंचा देते हैं। उसके पीछे— "गर्भोऽसि विश्वा स्वसुं समसि" इत्यादि मन्त्र पाठ करके उपस्थेन्द्रिय मर्षण करना चाहिये। फिर 'विष्णुर्योनिं कल्पयतु" इत्यादि मन्त्रद्वय पढ़के आदिरसका आविर्भाव और "यो गर्भमोषधीनाम्" मन्त्र बोलके सङ्गम किया जाता है।

धर्मकी अवनति और श्रद्धाका ह्रास होनेसे प्रायः सभी वैदिक कार्य विलुप्त हो गये हैं। आजकल परिशिष्ट प्रदर्शित नियम बिलकुल नहीं चलते।

२ गर्भ निषेक मात्र।

"गर्भाधानक्षणपरिचयं नूनमाबद्धमालाः।
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः॥" (मेघदूत ९)

गर्भाधानक्रिया—जैनोंकी तेपन क्रियाओंमेंसे प्रथम क्रिया।
(विशेष विवरण जानना हो तो आदिपुराण देखना चाहिये)

गर्भाम्बु (सं० पु०) गर्भस्थ जल।

गर्भावक्रान्ति (सं० स्त्री०) गर्भस्य अवक्रान्तिः। गर्भोत्पत्ति, जीवका गर्भाशयमें प्रवेशरूपमें अवतरण।
(सुश्रुत २११ अ०)

गर्भाशय (सं० पु०) आशेतेऽत्रेति, आ-शी-आधारे अच्। गर्भस्य आशयः, ६-तत्। गर्भका आधारस्थान, गर्भशय्या, स्त्रियोंके पेटका वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।

"शुक्रं शोणितसंसृष्टं स्त्रिया गर्भाशयं गतम्।
नैव कर्मप्रमाप्राप्ति शुभं वा यदि वाशुभम्॥" (भारत १४।१८५)

जिस तरह पुरुषोंको अण्डकोष होता है उसी तरह स्त्रियोंको भी गर्भकोश या गर्भाशय है। यह गर्भाशय स्त्रियोंको भीतरमें और पुरुषोंको बाहर रहता है। इसी गर्भकोशमें रजोण्ड वा गर्भाण्ड रहते हैं। जो जीव जितनेही अंडे देते हैं उतनेही उनके गर्भाशय बड़े होते हैं। स्त्रियोंका गर्भकोश १½ इंच लम्बा, ½ इंच चौड़ा और ½ इञ्च मोटा होता है। इस गर्भाशयमें एक सूत्र या नाड़ी लगी रहती है। जिसके द्वारा बच्चा बाहर निकलता है।

गर्भाष्टम (सं० पु०) गर्भात् गर्भकालात्, अष्टमः। गर्भकी अवधिसे अष्टम मास और वर्षादि।

गर्भास्पन्दन (सं० क्लो०) गर्भस्य आस्पन्दनम्, ६-तत्। गर्भक्षयके चिह्नविशेष, गर्भकी विकृति।

गर्भास्राव (सं० पु०) गर्भस्य आस्रावः। गर्भस्राव देखो।

गर्भिणी (सं० स्त्री०) गर्भोऽस्त्यस्याः, इनि-ङीप्। गर्भवती नारी, अन्तःसत्वा, हामिला, जिसके पेटमें बच्चा रहे

"सुवासिनीः कुमारीश्च रोगिणो गर्भिणीस्तथा।
अतिथिभ्योऽग्र एवैतान् भोजयेदविचारयन्॥" (मनु ३।११४)

काश्यपका कहना है—गर्भिणीको हस्ती, अश्वादि, पर्वत तथा अट्टालिकादि पर आरोहण, व्यायाम, वेगमें गमन, शकटका चढ़ना, शोक, रक्तमोक्षण, भय, कुक्कुटभोजन, मैथुन, दिवानिद्रा और रात्रिजागरण परित्याग करना चाहिये। स्कन्दपुराणमें लिखा है कि गर्भिणी नारी स्वामीकी आयु वृद्धि करती है। इसीसे उसको हरिद्रा, कुङ्कुम, सिन्दूर, कज्जल, कञ्चुकी, ताम्बूल, मङ्गलजनक आभरण, केशसंस्कार, चोटी बंधाना और कर तथा कर्णभूषण छोड़ना उचित नहीं। वृहस्पतिने बतलाया है कि गर्भिणीको षष्ठ वा अष्टम मास विशेषतः आषाढ़में यात्रा न करना चाहिये। आश्वलायनके मतमें—गर्भवतीके स्वामीका केशादि कर्तन, मैथुन तथा तीर्थयात्रा परित्याग करना उचित है। मुहूर्तदीपिका और कालविधानमें लिखा हुआ है कि चौरकर्म, शवानुगमन, नखकर्तन, युद्धादिस्थलको गमन, बहुत दूर जाने उद्वाह, उपनयन और समुद्रमें अवगाहन करनेसे गर्भिणीके स्वामीका आयु क्षय होता है।

गर्भिणी जो जो भोग करना चाहती, न देनेसे गर्भको पीड़ा उठती और अभिलाष पूर्ण हो जानेसे वह गुणवान् पुत्र प्रसव करती है। अभिलाषके अनुसार भोग न मिलनेसे गर्भिणी अपने आप चौंक पड़ा करती है। गर्भिणीके जिस इन्द्रियका अभिलाष पूर्ण नहीं होता सन्तानके भी उसी इन्द्रियमें पीड़ा उठती रहती है। राजदर्शनका अभिलाष लगनेसे सन्तान महाभाग्यवान् और धनवान् होता है। पट्ट वस्त्रादि अथवा अलङ्कारका अभिलाष उठनेसे लड़का मनोहर और अलङ्कारप्रिय निकलता है। आश्रम देखनेको जी चाहनेसे सन्तान धर्मशील और संयतचित्त होगा। देवप्रतिमादिमें अभिलाष होनेसे सभासद, सर्पादि दर्शनको जी लगा रहनेसे हिंसक, गोमांसका अभिलाष उठनेसे बलिष्ठ तथा कष्टसहिष्णु, महिषमांसके अभिलाषसे शौर्यान्वित, रक्तलोचन और लोमश, वराहमांसकी चाहसे निद्रालु तथा वीर, जङ्गालमांसकी इच्छासे वनेचर, स्मर अर्थात् मृग-

विशेषके मांसका लालच रहनेसे उद्विग्न और तित्तिर मांस खानेकी जो चाहनेसे बच्चा भीरु होता है। इसको छोड़ करके अन्य जन्तुके मांसका अभिलाष लगनेसे उस जन्तुका जैसा स्वभाव और आचार रहता, बच्चेका भी वैसा ही स्वभाव और आचार हुआ करता है। गर्भिणी देवता ब्राह्मणादिमें भक्त तथा श्रद्धायुक्त होने और शुद्धाचारिणी तथा दूसरेके साथ हितसाधनमें निरत रहनेसे अति गुणवान् सन्तान प्रसव करती है। इससे विपरीत पड़ने पर लड़का गुणहीन होता है। (सुश्रुत ३।२)
२ खोरारी वृक्ष।

गर्भिणीदोहद (सं० क्ली०) गर्भिण्या दोहदम्, ६-तत्। गर्भिणीकी अभिलषित द्रव्य। गर्भिणी देखो।

गर्भिण्यवेक्षण (सं० क्ली०) गर्भिण्या अवेक्षणम्, ६-तत्। गर्भिणीकी परिचर्या, गर्भिणीकी देखभाल।

गर्भित (सं० त्रि०) गर्भो जातोऽस्येति तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच्। (पा० ५।२।३६) इति इतच्। १ जातगर्भ, जिसके गर्भ रहा हो, गर्भयुक्त। २ पूर्ण, पूरित, भरा हुवा। ३ काव्यका एक दोष। दोष देखो।

गर्भिन् (सं० त्रि०) गर्भोऽस्यास्तीति गर्भ-इनि। गर्भविशिष्ट, गर्भवती।

गर्भी (सं० पु०) पुत्रजीववृक्ष, पतजिवका पेड़।

गर्भतृप्त (सं० त्रि०) गर्भे शिशौ अन्ने वा तृप्तः। पात्रे समितादयश्च। (पा २।१।४८) इति अलुक् समासः।
१ जो लड़का पाकर तृप्त हुआ हो। २ अन्नमें तृप्त, जो अन्नसे संतुष्ट हो गया हो।

गर्भेश्वर (सं० पु०) गर्भावधि ईश्वरः गर्भादारभ्य ईश्वरो वा। गर्भ कालसे ही राजा, वह जिसके पूर्वपुरुषसे राजा होना आ रहा हो।

गर्भेश्वरता (सं० स्त्री०) गर्भेश्वर-तल्, टाप्। गर्भकालसे ही ईश्वरत्व वा राजत्व, वह जिसकी प्रभुता बहुत दिनोंसे चली आ रही हो। (राजतरङ्गिणी ५।२०३)

गर्भपाकशिक (सं० पु०) यष्टिक धान्य, साठीधान।

गर्भोत्पत्ति (सं० स्त्री०) गर्भस्य उत्पत्तिः। गर्भका जन्म, गर्भ रहना।

गर्भोपघात (सं० पु०) गर्भस्य उपघातः। १ गर्भका नाश। २ बादलमें जल उत्पन्न करनेकी शक्तिका नष्ट होना।

गर्भोपघातिन् (सं० त्रि०) गर्भं उपहन्ति उप हन् णिनि। गर्भनाशनी शिशुप्रभृति, हमलका बरबाद करनेवाला।

गर्भोपनिषद् (सं० स्त्री०) गर्भावेदिका उपनिषत्। अथर्ववेद सम्बन्धी एक उपनिषद्। इसमें गर्भकी उत्पत्ति और उसके बढ़ने आदिका वर्णन किया गया है।

गर्मली-नानो—बम्बई प्रदेशके अन्तर्गत काठियावाड़का एक क्षुद्रराज्य। यह सामन्तकके अधीन है। यहांकी जनसंख्या प्रायः ३४०) और राजस्व २४००) रुपये हैं। गायकवाड़ महाराजको १८४) रुपये कर देने पड़ते हैं।

गर्मली मोती—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ जिलेका सामन्तकके अधीन एक छोटा राज्य। यहांकी लोकसंख्या प्रायः ३८५ है। राज्यकी आय ४७०० रु० की है जिनमें-से २२०) रुपये गायकवाड़ महाराजको करके लिये देने पड़ते हैं।

गर्मुच्छद (सं० पु०) गर्मुतो नड़स्य छद इव छदो यस्य। धान्यविशेष, एक प्रकारका धान।

गर्मुटिका (सं० स्त्री०) गर्मुत इव उटं पर्णं यस्याः कन्-टाप् अत इत्वम्। १ धान्यविशेष, एक धान। २ एक प्रकारकी घास जिसका स्वाद नमकसा होता है, जरड़ी।

गर्मूटी (सं० स्त्री०) गर्मूटिका धान्य, जरड़ी धान।

गर्मूत (सं० स्त्री०) गीर्यते इति-गृ-उति। (गोतृटच। उण् ११९) तृण धान्यविशेष, मयनाघास। २ सुवर्ण, सोना।

गर्मूच्छद (सं० पु०) गर्मूच्छद-निपातनात् दीर्घः। एक प्रकारका धान।

गर्मूटिका (सं० स्त्री०) एक प्रकारका धान।

गर्मोटिका (सं० स्त्री०) तृणविशेष, एक प्रकारकी घास।

गर्रा (हिं० वि०) १ लाखके रङ्गका, लाही। (पु०) २ लाखीरङ्ग। ३ घोड़ेका एक रङ्ग। ४ लाखके रङ्गका घोड़ा। ५ लाही रङ्गका कबूतर। ६ बहते हुए पानीका थपेड़ा। ७ सतलज नदीका एक नाम।

गर्री (हिं० स्त्री०) तार लपेटनेका एक यन्त्र।

गर्व (सं० पु०) गर्व मदे घञ्। १ अहङ्कार, घमण्ड। २ अवज्ञाविशेष, एक प्रकारका अपमान या अनादर।

"ऐश्वर्य रूपतारुण्यकुलविद्यावलैरपि।
[illegible]"

२ व्यभिचारि भावविशेष । साहित्यदर्पणके मतसे गर्वका दूसरा नाम 'मद' है, यह प्रभुत्व, धन, विद्या, सत्कुलजातत्व प्रभृति द्वारा उत्पन्न होता है ।

गर्वण (सं० पु०) एक पर्वतका नाम ।

गर्वप्रवारी (हिं० वि०) गर्वका नाश करनेवाला, घमण्ड चूर्ण करनेवाला ।

गर्ववंत (हिं० वि०) घमंडी, अभिमानी ।

गर्वर (सं० पु०) गीर्यते इति गृ-निगरणे वरच् । १ अहङ्कार, घमंड । २ नायक । (त्रि०) ३ अहङ्कारी, घमंडी ।

गर्वाट (सं० पु०) गर्वेण अटति अट-अच् । द्वारपाल, वह जो दरवाजे पर रक्षाके लिये नियुक्त हो, दरवान ।

गर्वाना (हिं० अ० क्रि०) गर्व करना, अभिमान करना, घमंड करना ।

गर्वालाव (सं० स्त्री०) पाताल गरुड़ी ।

गर्वित (सं० त्रि०) गर्व-कर्तरि क्त । गर्वयुक्त, अभिमानी । (स्त्री) वह नायिका जिसको अपने रूप और गुणका घमंड हो ।

गर्विन् (सं० त्रि०) गर्वोऽस्याऽस्तीति इनि । गर्वयुक्त, घमंडी ।

गर्विष्ठ (सं० त्रि०) गर्वयुक्त, घमंडी, अहंकार करनेवाला ।

गर्वी (हिं० वि०) घमंडी, अहंकारी ।

गर्वीला (हिं० वि०) अहंकृत, घमंडसे भरा हुवा ।

गर्सी बम्बई प्रान्तकी एक जाति । इनका काम ढोल बजाना है ।

गढ़ (गढ़)—ग्वालियरके अधीन सेण्ट्रल इण्डिया एजेन्सीमें खीचीवंशका एक क्षुद्रराज्य । भूपरिमाण ४४ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ८४८१ है । पहले यह राघुगढ़ राज्यके अन्तर्गत था, किन्तु आपसी झगड़ाके कारण खीची परिवारके बहुतोंको अलग अलग जागीर दी गई, और १८४३ ई०में विजयसिंहने ५२ ग्रामोंकी एक सनद ली जिसकी आय लगभग १५००० रु० थी । यह राज्य छोटी छोटी पहाड़ियोंसे विभक्त है, इसलिये यहां उपज अच्छी होती है । पोस्ता भी यहां बहुत उपजाया जाता है । और इससे अफीम प्रस्तुत कर उज्जैन भेजी जाती है । रघुगढ़वंशके प्रधान खीची चौहान राजपूत हैं जिन्हें राजाकी उपाधि मिली है । वर्तमान राजा १८०१ ई०में राज्य-सिंहासन पर बैठे थे । राज्यकी आमदनी लगभग २२००० रु० और कुल खर्च १३००० है । जामनेरमें राज्यका सदर है जहां एक अस्पताल और एक विद्यालय है ।

गढ़चिरोली (गढ़चिरोली)—मध्यप्रदेशमें चान्दा जिलाकी तहसील । यह ब्रह्मपुरीके जमीन्दारी स्टेट और चान्दा जिलाका कुछ अंश लेकर बनी है । भूपरिमाण ३७०८ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १५५२१४ है । इस तहसीलमें १०८८ ग्राम लगते हैं । इसका सदर गढ़चिरोली ग्राममें है जो चान्दा शहरसे ५१ मीलकी दूरी पर बसा है और जहां २०७७ मनुष्य वास करते हैं । इसमें १८ जमीन्दारी पड़ती हैं जिसका भूपरिमाण २२५१ वर्गमील और जनसंख्या प्रायः ८२२२१ है । जिसका अधिकांश पहाड़ी और जंगलमय है । जमीन्दारीके बाहर ८४८ वर्गमील जिसका सरकारी जंगल है ।

गर्हण (सं० क्ली०) गर्ह कुत्सने भाव ल्युट् । निन्दा, शिकायत । (भारत १२ ७५२ श०)

गर्हणा (सं० स्त्री०) गर्ह भाव युच् टाप् । निन्दा, अपवाद, बदगोई ।

गर्हणीय (सं० त्रि०) निन्दनीय, निंदाकरने योग्य । (भारत, वनपर्व)

गढ़दिवाल (गढ़दिवाल)—पंजाबके होसियारपुर जिले और तहसीलका एक शहर । यह अक्षा० ३१° ४५' उ० और देशा० ७५° ४६' पू० होसियारपुरसे १७ मीलकी दूरी पर अवस्थित है । लोकसंख्या प्रायः ३६५२ होगी । गुड़के व्यापारके लिये यह स्थान प्रसिद्ध है । यहांकी आय २३०० रु० और कुल खर्च २२०० रु० हैं । यहां एक सरकारी अस्पताल भी है ।

गढ़शङ्कर—१ पञ्जाबमें होसियारपुर जिलाकी एक तहसील । यह अक्षा० ३०° ५८' से ३१° ३१' उ० और देशा० ७५° ५१' से ७६° ३१' पू०में अवस्थित है । भूपरिमाण ५०८ वर्गमील है । लोकसंख्या लगभग २६१४६८ होगी । गढ़शङ्कर शहर इसका मुख्य सहर है, इसमें सिर्फ ४७२ गांव लगते हैं । तहसीलकी आम-

इसकी प्राय: चार लाख रुपयेकी है। तहसीलके दक्षिण-की ओर सतलज नदी प्रवाहित है।

२ पञ्जाबके होसियारपुर जिलामें इसी नामकी तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० ३१° १३´ उ० और देशा० ७६° ८´ पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: ५८०३ है। शहरमें एक किला है जिसको महमूद गजनी अपने अधिकारमें लाया था, किन्तु थोड़े समयके बाद ही महमूद घोरीने उनसे छीन कर जयपुरके राजा मानसिंहके लड़कोंको सौंप दिया। यहां राजपूतोंकी संख्या अधिक है। तम्बाकू और गुड़का व्यवसाय यहां बहुत होता है। इस शहरमें एक हिन्दी स्कूल तथा एक सरकारी अस्पताल है।

गर्हा (सं० स्त्री०) गर्ह्यते इति गर्ह-अ। (गुरोश्च हलः। पा ३।३।१०३) ततष्टाप्। निन्दा, शिकायत।

"पथ्यं प्राणान् धारयति पुण्यं प्राणदमुच्यते।
येन येनाचरेद्धर्मं तस्मिन् गर्हा न विद्यते॥" (भारत १।१५५ अ०)

गर्हा (गड़ा)—मध्यभारतके गूणा उपविभागके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। क्षेत्रफल ४४ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय: ८४८१ होगी। पहिले यह राज्य राघोगड़ जागीरके अन्तर्गत था।

गर्हाकलां (गड़ाकलां)—उत्तर-पश्चिम अंचलके बान्दा जिलान्तर्गत एक ग्राम। यहांके अधिकांश अधिवासी ब्राह्मण और चमार हैं। इस ग्रामको स्थापित हुए लगभग ५०० वर्ष हुए होंगे। सिपाही विद्रोहके समय यहांके मनुष्य अंगरेजोंको रसद पहुंचाते थे इस लिये करवीर नारायणरावने इसे ग्रामको दग्ध कर डाला था।

गर्हाकोट रमणा (गढ़ाकोट रमना)—मध्य भारतवर्षके सागर जिलेमें एक सागुन काष्ठ (Timber) का जंगल।

गर्हि (गढ़ी) मध्य भारतके भोपावर एजेन्सीमें एक ठकुरात (देवोत्तर)। भूपरिमाण ६ वर्ग मील और लोकसंख्या प्राय: ५६४ है। इसकी आमदनी ३००० रु० है।

गर्हि-इख्तियार खां (गढ़ी इख्तियार खां)—पंजाबमें बहवलपुर राज्यमें खानपुर तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २८° ४०´ उ० और देशा० ७०° ३८´ पू० बहवलपुर शहरसे ८४ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: ४८३८ है। यह सिन्धुके कलहोर-शासकोंसे स्थापित किया गया था, लेकिन १७५३ ई०में यह राज्य दाउद-पुत्रके प्रधानने उनसे छीन लिया। फिर १८०६ ई० में बहवलपुरके द्वितीय नवाब बहवलखांने इसे अपने राज्यमें मिला लिया। शहरके चारों ओर खजूरका जंगल है। यहांसे बहुत दूर दूर तक खजूरकी रफतनी होती है।

गर्हित (सं० त्रि०) गर्ह-क्त। निन्दित, जिसकी निंदा की जाय, दूषित, बुरा।

गर्हितव्य (सं० त्रि०) गर्ह-तव्य। निन्दनीय, शिकायत करने लायक।

गर्हिन् (सं० त्रि०) गर्ह-णिनि। निन्दक, निन्दा करनेवाला।

गर्हियासिन (गढ़ीयासिन)—बम्बई प्रदेशमें सक्कर जिलेके नौसक्रो अव्रो तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २०° ५४´ उ० और देशा० ६८° ३३´ पू०में अवस्थित है लोकसंख्या प्राय: ६५५४ होगी। तिलहनका व्यवसाय यहां अधिक होता है। इस शहरका आय लगभग २५००० रु० की है। यहां एक अस्पताल और दो विद्यालय हैं।

गर्ह्य (सं० त्रि०) गर्ह-ण्यत्। अधम, निन्दनीय, नीच।

गर्ह्यवासिन् (सं० त्रि०) गर्ह्ये वसतीति वस-णिनि। कुत्सितवासी, निन्द्यस्थानवासी, खराब स्थानमें रहनेवाला।

गल (सं० पु०) गलति भक्षयत्यनेन गल-करणे अप। १ कण्ठ, गला, गरदन। २ सज्जरस, राल। ३ एक प्राचीन बाजेका नाम। ४ मत्स्यविशेष, गड़ाकू नामकी मछली।

गल—१ समितिक जातिकी एक विस्तृत शाखा। ये अफ्रिकाके अन्तर्गत आविसिनियाके 'सोया' प्रदेशमें रहते हैं। सोया प्रदेशकी जलवायु अति उत्तम है। यहां पर शीत या ठण्ढ अधिक नहीं पड़ती है। जलवायुके प्रभावसे ये लोग देखनेमें सुश्री और सुन्दर लगते हैं। इनकी बोली भी बहुत मीठी होती है। इनमेंसे थोड़े ईसाई वा मुसलमान हैं किन्तु इनके अधिकांश जड़ोपासक भौतिक धर्मावलम्बी हैं। यह जाति सर्पको मानव जातिकी माता समझ कर पूजा करती है। ईश्वर और परकालमें भी इन लोगोंका विश्वास है। इन्होंने ईश्वरके तीन स्वरूपोंको स्वीकार किया है १म "इयाक" वा "उयाका" अर्थात् सर्व प्रधान,

२य 'उगलि' वा पुरुष, ३य "अतेलि" अर्थात् स्त्री वा शक्ति। शनि और रविवारको ये लोग किसी तरहका कार्य नहीं करते हैं।

२ सिंहलके दक्षिण-पश्चिममें समुद्र उपकूलस्थ एक नगर। यह एक पहाड़के ऊपर अवस्थित है। पर्वतकी लम्बाई समुद्र तक चली गई है। इस पर्वतके ऊपर एक दुर्ग भी विद्यमान है। कलम्बोसे यह ३५ कोस दक्षिण-पश्चिम है। अतिप्राचीन कालसे ही यह वाणिज्य स्थान होनेके कारण बहुत प्रसिद्ध हो गया है। फिणिकके वणिक् यहां आकर वाणिज्य करते हैं।

गलांश (हिं० स्त्री०) वह सम्पत्ति जिसका मालिक मर गया हो और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

गलकंबल (हिं० पु०) झालर, जो गायके गलेके नीचे लटका रहता है।

गलक (सं० पु०) गलतीति गल-अच् संज्ञायां कन्। गड़ाकू नामकी मछली।

गलका (हिं० पु०) एक प्रकारका फोड़ा। यह हाथकी अंगुलियोंके अग्र भागमें होता और बहुत कष्ट देता है।

गलकोण्डा वा गलि पर्वत—मन्द्राज प्रदेशके विशाखपत्तन जिलेकी एक पर्वतश्रेणी। यह अक्षा० १८° ३०' उ० और देशा० १८° ५०' पू० पर अवस्थित है। इस पर्वतकी दो चोटियां हैं जिनकी लम्बाई क्रमशः ३५६२ और ३५१४ हाथकी है। ऊपर चढ़नेका एक रास्ता भी चला गया है। १८६० ई०को इस स्थानकी जलवायु उत्तम समझ कर यहां अंगरेजी सेना रखी गई थी, किन्तु बार बार ज्वरसे पीड़ित रहनेके कारण उन्होंने यह स्थान छोड़ दिया। विजयनगरके राजाका यहां एक विस्तृत क्षेत्र है।

गलकोड़ा (हिं० पु०) १ कुश्तीका एक पेंच। २ एक प्रकारका कोड़ा वा चाबुक।

गलगण्डिन् (सं० त्रि०) गलगण्डोऽस्यास्तीति इनि। गलगण्डरोगी, गलेमें जिसको गलगंड रोग हुवा हो। (सुश्रुत निदान ११ अ०)

गलगण्ड (सं० पु०) गले गण्डः स्फोटक इव गलरोग-विशेषः, गलेको एक बीमारी। चलती बोलीमें इसको गण्डमाला कहते हैं। गलगण्डके लक्षण और निदान आदि भावप्रकाशमें इस प्रकारसे लिखे हैं—गलेमें बड़ी या छोटी अण्डकोष जैसी लम्बी और कड़ी सूजन उठनेसे गलगण्ड कही जाती है। भोजराजके मतमें गाल, कंधेकी नस और गलेको आश्रय करके उठनेवाला अण्डकोष जैसा बढ़ा हुआ शोथ ही गलगण्ड है। वायु, कफ, वा मेद बिगड़ करके गलदेश और मन्याद्वय (कंधेकी दोनों नसें) आश्रय करनेसे क्रमशः गलगण्डरोग लगा करता है।

गलगण्ड चार प्रकारका है—वातज, श्लेष्मज, कफज और मेदोज। वातज गलगण्ड श्याम वा अरुणवर्ण वेदनायुक्त और कड़ा होता है। वह कृष्णवर्ण शिरासमूहमें व्याप्त रहता और कालविलम्बसे बढ़ता है। वातज गलगण्ड प्रायः न पकते भी कभी कभी विना कारण ही पक जाता है। रोगीका मुंह फीका और तालू तथा गला सूखने लगता है। कफज गलगण्ड स्थिर, गुरु, शीतल, अत्यन्त कण्डू तथा अल्प वेदनायुक्त और शरीरके वर्ण-जैसा होता है। यह काल पा करके बढ़ता और पकता है। रोगीके मुंह भीतर मधुर रसयुक्त और बाहर चिकना-जैसा रहता, गलेकी नालीमें सर्वदा शब्द हुआ करता और तालू तथा गला कफसे भरा-जैसा लगता है।

मेदोज गलगण्ड चिकना, कोमल, पाण्डुवर्ण, दुर्गन्ध-युक्त और कण्डू तथा वेदनाविशिष्ट होता है। यह कद्दू जैसा लम्बा पड़ता और शरीर दुबला रहनेसे छोटा और मोटा रहनेसे बड़ा लगता है। रोगीका मुख चिकना उठता और गलेमें हमेशा शब्द हुआ करता है। गलगण्डके रोगीको यदि सांस लेनेमें बड़ा कष्ट पड़े और अरुचि, स्वरभङ्ग वा क्षीणता लगे, तो चिकित्सक उसको परित्याग करदे—वह असाध्य होता है। रोगीका शरीर मृदु किंवा संवत्सर अतीत होनेसे भी गलगण्ड असाध्य समझा जाता है। (भावप्रकाश)

गलगण्ड रोगकी चिकित्सा इस प्रकार चलती है। सरसों, सहिंजना तथा सनका बीज, अलसी, जौ और मूलीका बीज खट्टे मट्ठेके साथ पीस करके चुपड़ देनेसे बहुत पुरानी गण्डमाला नष्ट हो जाती है। श्वेत अपराजिताकी जड़को पीस करके सवेरे घीके साथ लगातार खानेसे भी गलगण्ड मिटता है। पकी कड़वी लौकी

में पानी भर करके सात दिन तक रख छोड़ते हैं। फिर वही जल पीने और हितकर द्रव्य खानेसे भी इस रोगका प्रतीकार होता है। जो, मूंग, परवल आदि और कटु तथा रूक्ष द्रव्य भोजन, वमन और रक्तमोक्षण गलगण्ड रोगमें हितकारक है। पने और पीपलके चूरनमें सन्धव डाल करके प्रतिदिन खानेसे यह रोग कटता है। अमृतादितेल पीनेसे भी गलगण्ड आरोग्य होता है।

सुश्रुतके मतानुसार वायुजन्य गलगण्ड रोग पर मूत्रसंयोगमें त्रिविध प्रकार अम्लरस और उष्ण दुग्ध वा तैलके साथ मांस वा पलाशी लताके रससे पहले नाड़ी स्वेद प्रयोग करना चाहिये। पीछे विस्रावित करके नियत स्वेद देते हैं। इसी प्रकार व्रण साफ होने पर सनका वीज, अलसी, मूली, सहिंजना और सुरावीज और प्याजका गूदा सब चीजें तिलोंके साथ उसमें बांध देना चाहिये। नीलका पेड़, गुड़च, सहिंजना, पुनर्णवा आकनादि, चकोड़िया, मैनफल, अगस्त्य, खैर, तिल और कुड़—सब चीजें शरावके सिरकेमें पीस करके लेप चढ़ानेसे वायुजन्य गलगण्ड रोग नष्ट होता है।

कफसे हुए गण्डमालामें स्वेद प्रयोग करके नश्तर लगवा देना चाहिये। पीछे अजगन्धा, अतिविषा, गुलेचीन, मैढासींगी, कुष्ठ, गण्ठवन और घुंघची पलाश-चार उष्ण जलके साथ पीस करके प्रयोग करनेसे कफजन्य गलगण्ड रोग दब जाता है।

मेदोजन्य गलगण्ड रोगमें विधानके अनुसार शिराओंको विद्ध कर देना चाहिये। श्यामालता, कलईका चना, लोहेको कीट, दन्ती और रसौत—सब चीजोंको मिला करके लेप चढ़ाते हैं। शालवृक्षका सार मूत्रके साथ आलोड़ित करके पिया जाता है। अथवा नश्तरसे फोड़ा चीर करके भीतरी मवाद निकाल डालना चाहिये। मज्जा, घृत वा वसाको मधुके साथ डाल करके उसमें घृतमधु प्रयोग करते हैं। रोगीका शरीर चिकना रहनेसे ऐसी चिकित्सा करना उचित है। इससे मेदजन्य गलगण्ड रोग निवारित होता है। (सुश्रुत)

भावप्रकाशकारने गण्डमाला नामक किसी प्रकारका रोग निर्णय किया है। किन्तु सुश्रुत प्रभृतिमें उसका कोई उल्लेख देख नहीं पड़ता। सुश्रुतने ग्रन्थि नामक जिस रोगका लक्षण लगाया, भावप्रकाशमें प्रायः उसीको गण्डमाला ठहराया है। प्रसिद्ध अभिधानप्रणेता हेमचंद्रने गण्डमाला और गलगण्डका एक पर्याय रखा है। ऐसे स्थलपर कहा जा सकता है, भावप्रकाशोक्त गण्डमाला कोई पृथक् रोग नहीं। वह या तो गलगण्डक अथवा ग्रन्थिरोगके अन्तर्गत आवेगा। ग्रन्थि देखो।

भावप्रकाशमें गण्डमालाके लक्षण आदि यों कहे हैं—हाथकी जड़, मन्या वा कोखमें बेर या आंवला जैसी गांठ उठनेसे गण्डमाला कहलाती है। यह कालविलम्बसे पकती और दूषित कफ तथा मेद ही उसका कारण है। गण्डमालाकी चिकित्सा गलगण्डको तरह होती है।

कचनारवृक्ष या वरुण मूलकी छालका काढ़ा बना करके सोंठका चूरन और शहद डालकर पीनेसे बहुत दिनकी गण्डमाला भी शीघ्र आरोग्य होती है। कचनारकी छाल ४ या ८ तोले चावल धुले पानीके साथ पीनेसे गण्डमाला मिटती है। उसमें कचनार और गुग्गुलु भी प्रयोज्य है।

वैद्यजीवनको देखते तेलाकी गुठलीका गूदा, कसीस, लाल चीतकी जड़, गुड, आकनादिका चीर, मनमासिजका चीर, सब द्रव्य एकत्र पेषण करके प्रलेप लगानेसे थोड़ी देर बाद ही गण्डमाला दब जाती है।

(वैद्यजीवन)

युरोपीय डाक्टरोंके मतमें गण्डमाला और गलगण्ड दोनों स्वतन्त्र रोग हैं।

गलेकी गांठका सूज जाना ही गण्डमाला (Scrofula) रोगकी प्रकृत अवस्था है। यह कौलिक रोगोंमें गिना जाता है। किन्तु शारीरिक दौर्बल्य, रक्ताल्पता आदि कारणोंसे बहुत अवस्थाओंमें गण्डमालारोग उठ खड़ा होता है। युरोपीय चिकित्सक भी गलगण्ड और गण्डमालाको किसी किसी समय एकजातीय जैसा ही रोग समझते हैं। उनके मतमें गण्डमाला रोगकी ३ अवस्थाएं हैं। प्रथम अवस्थामें चोषक ग्रन्थि (Lymphatic gland) तथा त्वक्, दूसरीमें श्लैष्मिक झिल्ली (Mucous membrane) अथवा कोषमय पदार्थ (Cellular tissue) और तीसरीमें अस्थि तथा धारो-

रिक यन्त्र सकल (फेंफड़ा, श्वासनाली, यकृत्, प्लीहा और वृक्कक) आक्रान्त होता है। अतिसामान्य कारणसे पहले गलेमें या मत्थे पर क्षत हो करके फिर गर्दनकी गांठें फूल उठती हैं।

पूर्वकालकी युरोपमें गण्डमाला रोगकी चिकित्सा निराले उपायसे होती थी। बाइबिल पढ़नेसे समझ पड़ता है कि याजक लोग सिर्फ छू करके ही उस रोगको आरोग्य करते थे। प्लिनि, टासीटास, सिउटोनिया आदिके ग्रन्थोंमें भी स्पर्श द्वारा गण्डमाला आरोग्यकी बात लिखी है। २०० वर्ष पहलेके स्कान्दनाभ तथा जर्मन भाषाके दूसरे बहुतसे ग्रन्थोंमें राजस्पर्शसे इस रोगके अच्छे हो जानेकी कथा दृष्ट होती है। उसीसे चलतो अंगरेजोंमें इसको राजरोग (King's evil) कहते हैं।

शिशुको गण्डमाला होने पर यदि माता वा पिताका रोग हो तो धात्री रख करके उसका स्तन्यपान कराना चाहिये। बच्चेके लिये १५।२० बूंद काडलिवर आयल महोपकारी है। एलोपेथीके मतमें गण्डमाला रोग पर थोड़ासा आयोडाइन लगाया जा सकता है और उससे विशेष फल भी मिलता है। किन्तु उसके लगाने बाद यदि मूत्रमें सागड़शुक्ल देख पड़े, तो फिर व्यवहार करना न चाहिये। औषध खानेमें—आयोडाइड अव पोटासियम, १ ग्रेन सिरप फेरी आयोडाइड, १० बूंद सिरप जिञ्जवेरिस २० बूंद और अनन्तमूल या सालसा का काढ़ा २ ड्राम मिला करके ४से ६ ड्राम तककी मात्रामें दिनमें २।३ बार ग्रहण करना चाहिये। इस रोगके रोगीको सर्वदा साफ सुथरा रहना, विशुद्ध वायु सेवन करना और हलका तथा बलकर पथ्य खाना एकांत कर्तव्य है।

गलग्रन्थिका एक वा उभय सूक्ष्मभाग (Lobes) फूल करके स्थायी हो जानेसे गलगण्डरोग कहलाता है। उनके मतमें पहाड़ी और सर्द जगहमें यह रोग अधिक उठता है। पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंमें यह रोग कुछ अधिक देख पड़ता है। रीतिके अनुसार ऋतु न होनेसे अनेक समय स्त्रियोंको यह रोग लग जाया करता है। डाक्टर पहले उस पर आयोडाइन लगानेको कहते हैं। उससे कोई फल न मिलने पर अस्त्रचिकित्सा करनेका परामर्श दिया जाता है। होमिओपाथिके मतमें दिनमें और रातको पहले ३ दिन तक एक एक बूंद स्पनजिया और सात दिन पीछे फिर एक एक बूंद वही सेवन कराना चाहिये। इससे फायदा न पहुंचने पर सवेरे प्रति दिन १ बूंद आयोडाइन सात दिन व्यवहार करके फिर सात दिन तक खाली जाने देते हैं। इससे भी लाभ न होने पर रातको एक बूंद काला हाइड्रिड़ देना चाहिये। गलगण्डमें चूर्णखण्ड निकलनेसे इस रोगको असाध्य समझना चाहिये।

गलगनाथ—बम्बई प्रदेशके अन्तर्गत धारवार जिलेका एक ग्राम। यह करजगिसे १० कोस उत्तरपूर्व तुङ्गभद्रा नदीके वामपार्श्व पर अवस्थित है। यहां गर्गेश्वर और हनुमानके मन्दिर हैं। ग्रामके उत्तर वर्दा और तुङ्गभद्रा नदीके संगमस्थान पर गर्गेश्वरदेवका मन्दिर अवस्थित है मन्दिर कृष्णवर्ण ग्रेणाइट पत्थरसे निर्मित है। इसको। लम्बाई ५२ हाथ और चौड़ाई प्राय: २७ हाथकी है और इसकी छत चार बड़े बड़े खंभोंके ऊपर रक्षित है। दीवारमें नाना प्रकारकी मूर्तियां खुदी हुई हैं।

गलगल (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी। यह मैना जातिका है। यह सुर्खी लिये काले रंगका होता है। इसके गर्दन पर दोनों ओर लालधारियां होती हैं और पूंछ श्वेत वर्णकी होती है, गलगलिया। २ एक प्रकारका बहुत बड़ा नीबू। पकने पर इसका रङ्ग वसन्ती रंगसा हो जाता है इसका स्वाद बहुत अम्ल होता है। ३ चर्वीकी वत्तीका एक खण्ड। यह जहाजमें समुद्रकी गहराई नापनेवाले औजारमें सीसेकी एक नलीसे लगा रहता है। ४ एक प्रकारका मसाला जो अलसी और चूनेके तेलको मिलाकर बनाया जाता है। यह किसी पदार्थका जोड़ने वा छेद बन्द करनेके काममें आता है।

गलगला (हिं० वि०) आर्द्र, भींगा हुआ।

गलगलाना (हिं० क्रि०) गीला होना। तर होना, भीगना।

गलगलि—बम्बई प्रदेशके बीजापुर जिलान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह कलाद्गिसे ६ कोस उत्तर कृष्णानदीके तीर पर अवस्थित है। पहले यह प्राचीन दण्डकारण्यके अन्तर्गत था। गालव ऋषि इस स्थान पर रहते थे। इसलिये यह गालवक्षेत्रसे मशहूर है। गलगलि ग्रामसे अर्धकोस दक्षिण

पहाड़ पर गालव स्थान और कुछ ऋषियोंके आश्रम कह कर गये हैं। लोग कहा करते हैं कि इस ग्रामके उत्तर कृष्णानदीके गर्भ पर एक मंदिर है और उस जगह नदीके जलमें रुपये पाये जाते हैं। १८७६ ई०को नदीके जल सुखाये जाने पर मन्दिरके ऊपरका भाग प्रकाशित हुआ था जो अंश प्रकाशित हुआ था उसकी लम्बाई तथा चौड़ाई ६० हाथकी होगी। नदीके तीर पर यल्लमादेवीका मन्दिर है। इसके अतिरिक्त गलगलि ग्राममें और चार छोटे छोटे मन्दिर हैं। १६९८ ई०को महाराष्ट्रोंके साथ लड़ाईके समय सम्राट् औरंजेब अपना सैन्य सामन्त लेकर इसी जगह पर टिके रहे। इटाली देशके परिव्राजक केरी साहबने इस स्थान पर आकर उनसे मुलाकात की थी।

गलगलिया (हि० स्त्री०) सिरोही नामको एक चिड़िया।

गलगाजना (हिं क्रि०) खुशीसे गरजना, गालबजाना।

गलगुच्छा (हि० पु०) गलमुच्छा देखो।

गलगुथना (हि० वि०) हृष्ट पुष्ट मोटा ताजा, जिसका बदन खूब भरा और गाल फूले हों।

गलगोड़िका (सं० स्त्री०) विषयुक्त जन्तुविशेष, एक विषैला जानवर। इसके काटनेसे दाह, परिताप, खेद और शोथ हो जाता है।

गलग्रह (सं० पु०) गलं कण्ठदेशं गृह्णाति, ग्रह-अच्। व्यञ्जनविशेष, एक प्रकारकी पकी हुई मछली। २ तिथिविशेष, एक तिथिका नाम।

"कृष्णपक्षे चतुर्थी च सप्तम्यादि दिनत्रयम्।
त्रयोदशी चतुष्कञ्च अष्टावेते गलग्रहाः॥"

अर्थात् ज्योतिषके अनुसार कृष्ण पक्षकी चतुर्थी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी, अमावश्या, और प्रतिपदा, इन आठों तिथियोंको गलग्रह कहते हैं। ३ आरम्भके बाद जिसका प्रत्यारम्भ दृष्ट नहीं होता गर्गादि मुनिगण उसको गलग्रह कहते हैं। ४ कण्ठरोध रोगविशेष। ५ अपरिहाय आपत्ति परित्याग नहीं की जा सकती ऐसा जानकर अनिच्छासे जिसका भार लिया जाता और जिसमें किसी प्रकारका गुण नहीं हो केवल बैठ कर अन्नध्वंस करता हो उसे भी गलग्रह कहते हैं।

गलग्राह (सं० पु०) मकर।

गलघसिया—बङ्गदेशके २४ परगना होकर प्रवाहित एक नदी। बाँसतला और गुंटिया इन दोनों खालोंके सङ्गम स्थान पर गलघसिया नदीकी उत्पत्ति है। उसके बाद दक्षिण-पूर्व दिशा होकर बहती हुई खुलना जिलेके कल्याणपुर ग्रामके निकट खोल पेटुआ नदीमें आ गिरी है।

गलचा—अफगानिस्तानमें बदक्सान प्रदेशकी अधिवासी एक जाति। ऐसा कहा जाता है कि ईरानी और हिन्दू जातिसे 'गलचा' जातिकी उत्पत्ति है। एक समय गलचाके सिरकी खोपड़ी परीक्षाके लिये फ्रान्सके पेरिस नगरमें भेजी गई थी। वहां पर टोपनार्ड साहबने मस्तक जांच कर आर्यके मस्तकके जैसा ठहराया। फरासी उज्फलवी साहबने इन्हें गलचा नामसे अभिहित किया है।

गलछल (हि० स्त्री०) मछलीके अंगका एक भाग। यह गलफड़ेके दोनों ओर कुरी अस्थियोंका बना हुआ है। इस भागके ऊपर लाल सूइयोंकी झालर लगी रहती है। इसीके द्वारा जलमें मिली हुई वायुको वह भीतर खींच कर सांस लेती है।

गलजंदड़ा (हि० पु०) १ सदा साथ रहनेवाला, गलेका हार। २ रूमाल या कपड़ेकी पट्टी। यह हाथकी चोट या घाव पर बाँधनेके लिये रखी जाती है।

गलजोड़ (हि० स्त्री०) गलजोत देखो।

गलजोत (हि० स्त्री०) १ एक बैलको दूसरे बैलके गलेमें लगाकर बांधनेकी रस्सी या पगही, गलजोड़। २ गलेका हार।

गलतंग (हि० वि०) अचेत, बेसुध, बेखबर।

गलतंस (हि० पु०) १ ऐसा मनुष्य जो कोई संतति न छोड़ कर मरा हो। २ ऐसे मनुष्यकी जायदाद जिसे कोई संतति न हो।

गलत (फा० वि०) १ अशुद्ध, भ्रममूलक। २ असत्य, मिथ्या, झूठ।

गलतकिया (हि० पु०) गालोंके नीचे रखनेका तकिया।

गलत्कुष्ठ (सं० क्ली०) गलत् रसादिक्षरणशीलं कुष्ठम्। रस रक्तादि क्षरणशील कुष्ठविशेष। एक प्रकारका कोढ़ रोग जिससे लोहू इत्यादि निकलता है।

गलत्कुष्ठारिरस (सं० पु०) गलत्कुष्ठरोगकी औषध।

पारा, गन्धक, ताम्र, लौह, गुग्गुल, चित्रमूलचूर्ण,

शिलाजतु, कुचिला, और वच प्रत्येकके चार चार भागको घृत और मधुके साथ मर्द्दन कर दो तोला परिमाण प्रति दिन सेवन करनेसे गलत्कुष्ठ, कलास, वातरक्त, जलोदर और मलवद्धादि रोग नष्ट होते हैं।

गलतां (फा० वि०) गलतान देखो।

गलता (अ० पु०) १ एक प्रकारका बहुत चमकीला वस्त्र। इसका ताना और बाना क्रमशः रेशम और सूतके होते हैं। यह सादा धारीदार और भिन्न भिन्न तरहके होते हैं। २ मकानकी कार्निस।

गलताड़ (हिं० पु०) जुएकी खूंटी जो भीतरकी ओर होती है।

गलतान (फा० वि०) लुढ़कता हुआ, चक्कर मारता हुआ।

गलती (फा० स्त्री०) १ भूल, चूक। २ धोखा।

गलथना (फा० पु०) बकरियोंकी गरदनमें दोनों ओर लटकी हुई थैलियां।

गलथैली (सं० स्त्री०) बंदरोंके गालके नीचेकी थैली। इसमें वे खानेकी वस्तु भर लेते हैं।

गलदश्रु (सं० वि०) जिसका अश्रु गल रहा हो, जिसका आंसू वह रहा हो।

गलद्वार (सं० क्ली०) गलेका रास्ता, जहां हो कर अन्न भीतर जाता है।

गलदेश (सं० पु०) गल एव देशः। गला, ग्रीवा, गरदन।

गलन (सं० क्ली०) गल भावे ल्युट्। क्षरण, गल कर गिरना।

गलनहा (हिं० पु०) हाथियोंका एक रोग। इसमें उनके नाखून गल गल कर निकला करते हैं। (वि०) वह हाथी जिसे गलनहा रोग हो।

गलना (अ० क्रिया) १ किसी पदार्थके घनत्वका नष्ट होना। यह विश्लेषण किसी द्रव्यके बहुत दिनों तक जल तेजाब आदिमें पड़े रहने, गरमी लगने अथवा किसी और प्रकारके संयोगके कारण हो जाता है। २ बहुत जीर्ण होना, किसी कामके योग्य न रहना। ३ शरीरका दुर्बल होना। ४ बहुत ज्यादे ठण्डके कारण हाथ पैरका ठिठुरना। ५ वृथा या निष्फल होना।

गलनीय (सं० वि०) गल् अनीयर्। गलनेके योग्य, सड़ने लायक।

गलन्तीका (सं० स्त्री०) गलतीति गल-शतृ-ङीप् मुम् अल्पार्थे कन्। स्वल्प वारिधानिका, वह बरतन जिससे कम पानी निकलता हो, गड़ुवा। (काशीखण्ड ५ अ०)

गलफड़ा (हिं० पु०) १ जल जंतुओंके पानीमें सांस लेनेका अवयव। यह मस्तकके उभय ओर होता है। भिन्न भिन्न जल जन्तुओंका गलफड़ा भिन्न भिन्न आकारका होता है। मछलीके गलेमें सिरके दोनों ओर दो अर्द्धचन्द्राकार छिद्र होते हैं, जिनके मध्यमें चार चार अर्द्धचन्द्राकार कमानियां होतीं हैं जिन्हें गलफट कहते हैं। २ गालोंके दोनों जबड़ेके बीचका मांस।

गलफरा (हिं० पु०) गलफड़ा देखो।

गलफांस (हिं० स्त्री०) मालखंभकी एक कसरत। इस कसरतमें बेंतको गलेसे लपेट कर उसके एक सिरेको छाती परसे ले जा कर अंगूठेके नीचे दबाते हैं और सिर्फ गलेके जोरसे अपने मस्तकको पेट तक झुकाते हैं।

गलफांसी (हिं० स्त्री०) १ गलेकी फांसी। २ कष्टदायक वस्तु वा कार्य, जंजाल।

गलफूट (हिं० स्त्री०) बड़बड़ानेकी आदत।

गलफूला (हिं० वि०) जिसका गाल फूल गया हो। (पु०) एक रोग जिसमें गलेसे सूजन होती है।

गलफड़ (हिं० पु०) गलेकी गिलटी।

गलबंदनी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पहिरावा जो गलेमें पहना जाता है, गुलबन्द।

गलबदरी (हिं० स्त्री०) ऐसा बादल जिसके साथ हाथ पांव गलानेवाला जाड़ा पड़े। यह अवस्था प्रायः जाड़ेके मौसिममें होती है।

गलबल (हिं० पु०) कोलाहल, गड़बड़ी, खलबली।

गलबांही (हिं० स्त्री०) कण्ठालिङ्गन, प्रेमसे गलेमें बांह डालना।

गलभङ्ग (सं० पु०) गलस्य कण्ठ स्वरस्य भङ्गः, ६ तत्। स्वरभङ्ग, जिसका स्वर ठीक नहीं हो।

गलमंदरी (हिं० स्त्री०) गलमुद्रा जो शिवजीके पूजन और शयनके समय उन्हें खुश करनेके लिये की जाती है। २ गाल बजाना, व्यर्थ बकवाद या गप्प करना

गलमुच्छा (हिं० पु०) दोनों गालों परके बढ़ाये हुए बाल। लोग इसे शौकसे रख लेते हैं।

गलमुद्रा (सं० स्त्री०) गलमंदरी देखो।

गलमेखला (सं० स्त्री०) गलस्य मेखला इव । १ कण्ठाभरणविशेष, गलसूत्र । इसे सूत्रवली भी कहते हैं । २ हार, माला ।

गलरोग (सं० पु०) गलजातः रोगः । गलदेश जात रोग, गल व्याधि, गलेका एक रोग ।

गलवथ—उत्तरपश्चिमाञ्चलमें बुलन्दशहर जिलेका एक नगर । यह बुलन्दशहरसे ६ कोस उत्तर और मेरठसे १४ कोसकी दूरी पर अवस्थित है । अकबर बादशाहने सैयद जातिके थोड़े मनुष्योंको यहांकी थोड़ी जमीन निष्कर दान दिया था, किन्तु १८५७ ई०को यहांके अधिकारीगण अंगरेजोंके विद्रोही हो गये इस लिये अंगरेज गवर्मेण्टने उनसे वह स्थान ले लिया । यहां आजकल सैन्यका वास, सरकारी डाक बंगला, डाकघर और थाना है। प्रत्येक सप्ताहमें यहां एक बड़ी हाट लगती है ।

गलवाना (हिं० प्रं० क्रि०) गलानेका काम कराना, गलानेमें लगाना ।

गलविद्रधि (सं० पु०) गलरोगभेद, गलेकी एक प्रकारकी बीमारी ।

गलरोहिणी (सं० स्त्री०) गले रोहिति रुह-णिनि ङीप् । कण्ठगत रोगविशेष । वायु, पित्त और कफसे गलदेश वर्द्धित हो कर रक्त और मांस दूषित हो जाते तथा समस्त अंग पर अङ्कुर उत्पन्न होते हैं इसीको गलरोहिणी कहते हैं । इस रोगमें रोगी शीघ्र ही मर जाता है ।

गललग्न (सं० त्रि०) गले लग्नः । गलदेशमें लग्न, गलेसे लिपटना ।

गलवस्त्र (सं० त्रि०) जिसने प्रणामादिके लिये अपने गलेमें वस्त्र दिया हो ।

गलवार्त (सं० त्रि०) गले गलव्यापारे आर्त्तः निरामयः समर्थः । यथेष्ट भोजन योग्य निरामय व्यक्ति, अधिक भोजन खानेवाला, नीरोग मनुष्य । (पञ्चतन्त्र)

गलव्रत (सं० पु०) गरो गरणं गिलनं सर्पादिभक्षण व्रत मस्य । मयूर, मोर ।

गलशुण्डिका (सं० स्त्री०) स्वल्पाशुण्डा-कन् । तालु उर्ध्वस्थित सूक्ष्म जिह्वा, तालूके ऊपरकी छोटी जीभ, गलेका कौवा । इसका पर्याय—सुधास्रवा, घण्टिका, लम्बिका, रसाङ्गा, प्रतिजिह्विका, माध्वी और अलिजिह्विका है ।
(याज्ञवल्क्य)

२ तालुगत रोगविशेष । जिसकी श्लेष्मा प्रकुपित हो कर गलेमें अवस्थित हो जाती है, शीघ्र ही उसके गालमें शोथ हो कर गलशुण्डिका रोग उत्पन्न हो जाता है ।
(सुश्रुत १२५ अ०)

चिकित्सक गण शस्त्र द्वारा शुण्डिकाको सुगमतासे काट देते हैं । उसके बाद पीपर, मरीच, हरीतकी, वच, धान्य और यवानिका इन सभोंका क्वाथ और गर्म स्वेद देते हैं । दिवारात्र मुखमें जवायन रखी जाती है । कंठदेश मर्दन करना चाहिये, इससे रोगी सुस्थ होता है । श्वेत सरसों, वच, कुड़, हरिद्रा, झूल और लवण एकत्र करके कण्ठ पर लेप देनेसे रोग आराम हो जाता है । इस बीमारीमें तेल तथा कड़ुआ पदार्थ सेवन नहीं करना चाहिये । (हारीतचिकित्० ५४ अ०)

गलशुण्डी (सं० स्त्री०) १ गले शुण्डीव । गलशुंडिका रो २ जीभके आकारका मांसका एक छोटा खंड । य प्राणियोंके गलेके भीतर जीभकी जड़के पास रहता है । शब्द उच्चारण करनेमें यह बहुत सहायता देता है ।
गलशुण्डिका देखो ।

गलशोथ (सं० पु०) गलेका फूलना ।

गलसिरा (हिं० स्त्री०) कंठश्री नामका एक आभूषण, यह गलेमें पहना जाता है ।

गलसुधा (हिं० पु०) एक रोग जिसमें गालके नीचेका भाग फूल जाता है ।

गलसुई (सं० स्त्री०) एक छोटा, गोल और कोमल तकिया, जो गालोंके नीचे रखा जाता है ।

गलस्तन (सं० पु०) १ गलगण्ड रोग । २ बकरेके दोनों ओर लटकती हुई स्तनाकार पतली थैली, गलथन ।

गलस्तनी (सं० स्त्री०) गले स्तनोऽस्या पच्छे अलुक् । बकरियोंकी एक जाति ।

गलस्वर (हिं० पु०) एक प्राचीन कालका बाजा, जो मुखसे फूंक कर बजाया जाता था ।

गलहंड (हिं० पु०) गलेका रोग । इसमें गला फूल जाता है, घेघा ।

गलहस्त (सं० पु०) गले न्यस्तो हस्तः । गले पर हाथ देकर अलग कर देना, गलधक्का । (कथासरित्)

गलहस्तित (सं० वि०) जिसके गले पर हाथ दिया गया हो। (नैषध ४।२५)

गलही (हिं० स्त्री०) नावका वह अगला और उपरका भाग, जहां उसके दोनों पार्श्व आकार समान होते हैं।

गला (सं० स्त्री०) गलतीति गल-अच्-टाप। १ अलम्बुषा, लज्जालुलता। २ शरीरका वह अवयव जो सिरको धड़से जोड़ता है, गलदेश।

गलाऊ (हिं० वि०) जो गलता हो, गलनेवाला।

गलाङ्कुर (सं० पु०) गलजातः अङ्कुरः। गलदेशजात मांसाङ्कुर विशेष। एक प्रकारका गलेका रोग, जिसमें गाल फूल जाता है।

गलाधःकरण (सं० क्ली०) निगलनेकी क्रिया।

गलाना (हिं० क्रि०) किसी वस्तुके संयोजक अणुओंको पृथक् पृथक् करके उसे नरम गीला करना।

गलानि (हिं० स्त्री०) दुःख वा पश्चात्तापके कारण खिन्नता। २ खेद, दुःख।

गलानिक (सं० पु०) गले अनिको प्राणो यस्य। झींगा, एक प्रकारकी मछली।

गलानिल (सं० पु०) गले अनिलः। प्राणवायु, प्राण। २ मत्स्यभेद, एक प्रकारकी मछली।

गलायुक (सं० पु०) गलरोगभेद। एक प्रकारकी गलेकी बीमारी।

गलार (हिं० पु०) एक पेड़का नाम।

गलारी (हिं० स्त्री०) गिलगिलिया नामकी चिड़िया।

गलावट (हिं० स्त्री०) १ गलनेका भाव या क्रिया। २ वह वस्तु जो दूसरी वस्तुको गलावे, सोहागा नौसादर आदि।

गलाविल (सं० पु०) गलानिक मछली।

गलार्बुद (सं० क्ली०) एक प्रकारकी बीमारी जो सदा गलेमें हुआ करती है।

गलि (सं० पु०) गिरति असमक्षत्वेव भक्षयतीति गल-इन्। १ बैल। भेड़ जो सामर्थ्य होने पर भी बोझ खींच न सके, दुष्ट या मट्टर बैल। २ स्वल्प परिसर पथ, वह रास्ता जिससे शीघ्र पहुंचा जाय।

गलित (सं० वि०) गल-क्त। १ पतित, नीतिभ्रष्ट, महापापी। इसका पर्याय—स्रस्त, ध्वस्त, भ्रष्ट, स्कन्न और च्युत हैं। २ द्रवीभूत, गला हुआ।

गलितकुष्ठ (सं० क्ली०) गलितं कुष्ठम्, कर्मधा०। गलित कुष्ठ रोग, इसमें शरीरके सब अंग सड़ने और कटकट कर गिरने लगते हैं। गोरि में कीड़े पड़ जाते हैं

गलत्कुष्ठ देखो।

गलितदन्त (सं० वि०) जिसे दांत न हो।

गलितयौवना (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका यौवन ढल गया हो, ढलती जवानीकी स्त्री

गलिया (हिं० स्त्री०) चक्कीका छेद जिसमें पीसनेके लिये दाना डाला जाता है। (हिं० वि०) मट्टर, सुस्त। यह सिर्फ बैल आदि चौपायोंके लिये आता है।

गलियारा (हिं० पु०) संकीर्ण राह, तंग छोटी गली।

गलियारा—रंगरेजोंकी एक जाति। ये अहमदाबाद और सूरतमें पाये जाते हैं। ये बहुत छोटे छोटे घरमें रहते हैं, और कपड़े को रंगाकर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। स्त्रियां भी मर्दको वस्त्र रंगनेमें सहायता पहुंचाती हैं। इनमेंसे बहुत थोड़े अपने लड़केको पढ़ाते हैं

गलियारी (हिं० स्त्री०) मार्ग, गली।

गली (सं० स्त्री०) दो घरोंकी पंक्तियोंके बीचमेंसे हो कर गया हुवा तंग रास्ता, खोरी।

गलीचा (फा० पु०) एक प्रकारका बिछौना। यह बहुत मोटा और भिन्न भिन्न रङ्गोंका बना रहता है। इसमें घने वालोंकी तरह सूत निकले रहते हैं।

गलीज़ (अ० वि०) १ गंदला, मैला। २ अशुद्ध, अपवित्र, नापाक।

गलीत (अ० वि०) मंदा, मैला, कुचैला।

गलु (सं० पु०) गल-उन्। मणिविशेष, एक प्रकारका रत्न।

गलू (सं० पु०) एक प्रकारका पत्थर, जिससे प्राचीन कालमें मट्टीरके बरतन बनाये जाते थे।

गलून (सं० पु०) काश्मीरके एक राजमन्त्री।

(राजतरङ्गिणी ३।१७६-१७७)

गलेगण्ड (सं० पु०) गलेगण्ड इवास्य। पक्षिविशेष, हड़गिल्ल।

गलेचोपक (सं० त्रि०) गले चुप्यतेऽसौ चुप कर्मणि ण्वुल् अलुक् समास। कण्ठ-कर्तनीय, काटनेके योग्य गला

गलेफ (हिं० पु०) गिलाफ देखो।

गलेबाज (हिं० वि०) अच्छा गानेवाला।

गलेस्तनी (सं० स्त्री०) छागी, गलस्तनी देखो।

गलैचा (हिं० पु०) गलीचा दे

गलोघ्य (सं० क्ली०) गलेन लोध्यं, पृषोदरादित्वात् ललोपे साधुः। धान्यविशेष, एक प्रकारका धान।

गलोद्देश (सं० पु०) गलस्य उद्देशः समीपम्। गलेके निकट स्थित अवयवविशेष, गलेके पासका एक अंश।

गलोद्भव (सं० पु०) गले अश्वगलदेशे उद्भवति उद्-भू-कर्त्तरि अच्। अश्वगलदेशजात रोचमान नामक रोमावर्त्त विशेष, घोड़ेके गलेका बालकुल।

गलोना (हिं० पु०) एक प्रकारका सुरमा जो काबुल और कंदहारसे आता है।

गलौ (सं० पु०) चन्द्रमा।

गलौआ (हिं० पु०) बंदरोंके गालोंके भीतरकी थैली, जिसमें वे खानेकी वस्तु भर लेते हैं।

गलौघ (सं० पु०) गले उपद्रव। रोगविशेष। कफ और रक्तके प्रकोपसे गालमें एक प्रकारकी सूजन हो जाती है। इसमें बहुत जलन होती तथा खांस लेनेमें कठिनता पड़ती है।

गल्दा (सं० स्त्री०) गल-क्विप् गलेन दीयते दा-क। १ वाक्य। २ निःसृत। (चरक ८।१।१०) ३ धमनीविशेष, शरीरके भीतरकी एक प्रकारकी नली।

गल्प (हिं० स्त्री०) १ मिथ्या प्रवाद। २ डींग, शेखी। ३ मृदङ्गके बारह प्रबन्धोंमेंसे एक। ४ छोटी छोटी कहानियां।

गल्भ (सं० त्रि०) गल्भ-अच्। १ सङ्कोचशून्य, निर्भय। २ गर्वकारी, अहङ्कार करनेवाला।

गल्या (सं० स्त्री०) गलानां कण्ठानां समूहः। गलसमूह।

गल्ल (सं० पु०) गल्-ल। कपोल, गाल।

गल्लई (हिं० वि०) गल्लेके रूपमें। (पु०) वह खेत जिसका लगान लिया जाता हो, बटाई।

गल्लक (सं० पु०) गल्ल स्वार्थे कन्। १ कपोल, गाल २ मद्यपानपात्र। शराब पीनेका प्याला। ३ इन्द्रनील मणि, मरकतमणि, नीलम।

गल्लचातुरी (सं० स्त्री०) गल्ले चातुरी यस्याः। उपधानविशेष, तकिया।

गल्लदासार—मारवाड़ प्रदेशमें रहनेवाली एक जाति। यह लोग देखनेमें काले और लम्बे होते हैं। इनकी आंखें छोटी, नाक उठी हुई, होंठ पतले, कनपटी नीची, शिरके बाल बारीक और दाढ़ी घनी रहती है इन्हें पकाना तो ठीक मालूम नहीं, परन्तु खाना खूब जानते हैं। रोटी, तरकारी और दही इनका प्रधान आहार है। यह मांस ग्रहण नहीं करते। इनके पैरमें खड़ाऊं, मत्थे पर पगड़ी, कमरमें धोती और शरीरमें जामा रहता है। स्त्रियां मांड़ी और अंगिया पहनती हैं। सभी गल्लदासार शान्त और परिश्रमी होते हैं। खेती इनका बड़ा सहारा है। त्योहारको छोड़ करके दूसरे दिन यह सबेरेसे शाम तक मैदानमें काम किया करते हैं। घरकी स्त्रियां और लड़के भी हार बाहर जा करके पुरुषोंको ग्राममें सहायता देते हैं। तिरुपतिके हनुमान्‌जी और व्यङ्कटरमण इनके उपास्य देवता हैं। कभी कभी यल्लमा और दुर्गा देवताकी भी पूजा होती है। जादूटोने पर इन्हें बड़ा विश्वास है। किसीको पीड़ा होनेसे ओझा जा करके रोगकी व्यवस्था करते हैं। सन्तान भूमिष्ठ होने पर नाड़ी काट फूलको मट्टीके बर्त्तनमें रख करके साफ जगह पर मट्टीके भीतर गाड़ देते हैं। फिर पांचवें दिनको जीवती देवीको पूजा तथा ज्ञातिभोज और बारहवें दिनको नवजात शिशुका नामकरण होता है। विवाहके दिन वर और कन्या दोनोंको तैल और हलदी लगा करके नहाना पड़ता है। इसके बाद दोनों जब एक वेदी पर बैठते, ग्रामस्थ देवज्ञ मन्त्र पाठ करके धान्यसे आशीर्वाद करते हैं। फिर सबको पान सुपारी बांटते और अन्तमें आत्मीय कुटुम्बको खिलाते पिलाते हैं। इन लोगोंमें विधवाविवाह और बहुविवाह चलता है। समाजशासन गल्लदासारोंमें बहुत प्रबल है। यह लड़कोंको स्कूलमें पढ़ने नहीं भेजते। गल्लदासार धीरे धीरे ि रहे हैं। यह कर्णाटी भाषामें बातचीत करते हैं बाजा, जो श्रेणी विभाग नहीं है।

गल्ला (हिं० पु०) १ शोर, होरा शब्द। (फा० पु०) २ झुंड, दल। (अ० पु०) ३ उपज, फसल, पैदावार। ४ अन्न, अनाज।

गल्लाफरोश (फा० पु०) अनाजका व्यापारी।

गल्लिका (सं० स्त्री०) गल्लक-टाप् अत इत्वम्। गाल, कपोल।

गल्लिर (सं० पु०) एक प्रकारका रोग।

गल्वर्क (सं० पु०) गलुर्मणिभेदस्तस्मो वार्का दीप्तिर्यस्य। १ चषक, मदिरा पीनेका प्याला। २ सारविशिष्ट मणि। ३ पद्मराग मणि, लाल नामका रत्न।

गव (हिं० पु०) एक बन्दरका नाम जो रामचन्द्र जीकी सेनामें था।

गवची (सं० स्त्री०) गां भूमिमञ्चति, गो-अनच्-क्विप् इन्द्रवारुणी, इन्द्रायण।

गवत (सं० क्ली०) गां त्राति इति त्रै-ड। गोभक्ष्य पयाल।

गवन्दी—दाक्षिणात्यवासी एक जाति। साधारणतः छप्पर छाना और राजगरी करना ही इन लोगोंका पेशा है बीजापुर जिले और उसके इलाकेके बागवाड़ी उपवि भागमें इनकी रहायस ज्यादा है। यह कनाड़ीकी टूटी फूटी गंवारू बोलीमें बात चीत करते, परन्तु काम पड़ने पर हिन्दी और मराठी भी बोल लेते हैं। गवन्दी देखनेमें बिलकुल कुनबियों जैसे समझ पड़ते, केवल देखनेमें कुछ ज्यादा काले और लम्बे लगते हैं। इनमें किसी प्रकारका श्रेणीविभाग वा गोत्र अथवा कुलकी विभिन्नता नहीं। परन्तु परस्पर एक उपाधिधारी होनेसे वर और कन्याका विवाह रुक जाता है।

यह पत्थर और मट्टीसे रहनेके लायक घर बना लेते हैं। खड़ पतवार या वैसी ही किसी चीजसे घरकी छत छायी जाती है। अपने कामके लिये गाय बकरी आदि जन्तु और कुत्ते पालते और अपने आप उनका प्रतिपालन किया करते हैं। कोई काम काज करानेके लिये यह नौकर नहीं रखते। दाल, रोटी और भाजी इनका साधारण खाद्य है। पार्वणादिको अन्नपाक करके खाया जाता है। भेड़, हिरन, खरगोश, हंस, मुर्गा आदि पालतू चिड़िया और मछली इनकी प्यारी चीज है, दूसरे मांसको यह अपवित्र और अखाद्य समझ करके नहीं छूते। नशा पीनेका इन्हें कुछ ज्यादा शौक है। त्यौहारके दिन शराब बहुत पी जाती है। मद्यके कारण प्रायः सभी ऋणग्रस्त रहते हैं। गवन्दियोंका पहनावा सीधासादा और साफ सुथरा होता है। स्त्रीपुरुष दोनों कानों और हाथों में गहने पहनते हैं। स्त्रियोंको लाल और काला कपड़ा कुछ ज्यादा अच्छा लगता है।

सभी गवन्दी आज्ञा... आतिथेय, कर्मठ, मितव्ययी और नम्र हैं। परन्तु वह मैले कुचैले रहते हैं। पहले नमक बना करके बेचते थे, परन्तु उक्त व्यवसाय आजकल बन्द हो जानेसे मजदूरी और खेती करके जीविका निर्वाह करते हैं। इनमें स्त्री, पुरुष, बालक—कोई अवस्थाके अनुसार यथासाध्य जीविकाके लिये चेष्टा करनेसे नहीं चूकते।

गवन्दी बहुत धर्मभीरु होते हैं। देवद्विजमें इनकी बड़ी भक्ति रहती है यह ब्राह्मणोंसे मुहूर्त पूछ करके शस्य कर्तन, गर्भाधान, विवाह आदि शुभकर्म करते और ब्राह्मणको उसमें नियुक्त रखते हैं। 'ओष्टम' नामक निम्नश्रेणीके तैलङ्गी ब्राह्मण ही इनके पुरोहित हैं। हनुमन्तदेव, तुलजा भवानी, व्यङ्कटरमण और यल्लमा देवीको कुलदेवता जैसा पूजते हैं। आर्काट नगरके उत्तर वेङ्कटगिरि और निजाम राज्यके अन्तर्गत तुलजापुरकी इनकी तीर्थयात्रा होती है। आश्विन मासमें दशहरेको तुलजाभवानी देवीके प्रीत्यर्थ भेड़ बलि दिया करते हैं। यल्लमा देवीके पूजा समय निमन्त्रित ज्ञातिको खिलाया जाता है। देवमूर्तियां प्रायः मनुष्य, वृष और वानरके आकारकी बनती हैं।

गवन्दी लोग सवेरे नहा धो करके गृहदेवताकी पूजा करते हैं। जिनके गृहदेवता नहीं, वे मारुतिके मन्दिरमें आह्निक समापन किये बिना जल ग्रहण करनेसे विरत रहते हैं। पर्व आदिको यथारीति उपवास प्रभृति किया जाता है। ओष्टम् ब्राह्मण परम्परानुसार दीक्षा देते हैं। इनके गुरुको ताताचार्य कहते, जो एक मात्र धर्मोपदेष्टा रहते हैं। उनके भरणपोषणको सबसे चन्दा लिया जाता है। गवन्दी ग्राम्य देवता या किसी उपदेवताको नहीं पूजते।

भूतप्रेत, डाइन, चुड़ैल और भविष्यत् वाक्यमें इन्हें बड़ा विश्वास है। औषधसे रोग शान्ति न होने पर ओझा आ करके झाड़ फूंक करते हैं। इससे भूतको खाना कपड़ा देने पर वह उतर जाता है। किसी देवीकी देवता

विशेषके सामने लिटा देनेसे ही समझते हैं कि भूत उसको छोड़ जावेगा। इनको विश्वास है कि ओझा मन्त्रसे लोगोंको मार तक सकते हैं।

सन्तान भूमिष्ठ होने पर गवन्दी नवजात शिशु और प्रसूतिको नहलाते और चारपाई पर लेटा करके गर्मी पहुंचानेको उसके नीचे कण्डेकी आग सुलगाते हैं। फिर प्रसूतिको गरी और गुड़ खिलाया जाता है। सन्तान प्रसूत होनेसे आध घण्टे पीछे माताको चावल और मक्खन देते और पांच दिन तक बराबर वैसा ही किया करते हैं। पांचवीं रातको धात्री आ करके जीवतीकी पूजा करती और नैवेद्य आदि अपने आप ग्रहण करके उसीके साथ एक प्रदीप ढांक करके चल देती है। इनको विश्वास है कि उक्त दीपकको किसीके देख लेनेसे पुत्र और प्रसूतिको पीड़ा होती है। बारहवें या तेरहवें दिन बच्चेका नाम रखा जाता है। इसी दिनको प्रसूति शुचि होती है।

विवाहसे पहले फलदानके समय वरकर्ता कन्याको पान, सुपारी, नारियल, शक्कर और कपड़ा पहुंचाते हैं। एक नारिकेल कन्याकी कुलदेवताके सामने रखना पड़ता है। कन्या वही कपड़ा पहन करके एक कम्बल पर आ बैठती है। फिर वरकर्ता अपने आप वधूमाताके कपाल पर सिन्दूर चढ़ाते और उसके मुखमें शक्कर छुआते हैं। गणकके विवाहका दिन स्थिर करने पर कन्याकर्ता वरको आदमी और सवारी भेज करके बुलाते और उसके आ जाने पर वरकन्या दोनोंको हलदी लगा करके नहलाते हैं। आसनके स्थान पर जलपूर्ण ४ कलस रख करके चारो ओर सूतसे लपेट देते हैं। एक अविवाहित व्यक्ति चारों कलसोंसे एक एक करके जल निकाल दम्पतीके मस्तक पर छिड़कता है। स्नानके पीछे कन्या पचिया पहनती है। कन्यादानके समय वर किसी टोकरी पर खड़ा होता है। पुरोहित उसी समय धान्यसे उसको आशीर्वाद देता और कन्याके गलेमें मङ्गलसूत्र बांधता है। कन्याका पुष्पोद्गम होनेसे गर्भाधान संस्कार किया जाता है।

गवन्दी मृत्युके पीछे शवदाह करते हैं। तीसरे दिनको दाहस्थान पर पहुंच करके मृतके लिये पिण्डदान दिया और पानीमें फेंक दिया जाता है।

गवन्दियोंमें विधवाविवाह और बहुविवाह चलता है। मारवाड़के गवन्दी अपनेको 'सागरचक्रवर्ती' बतलाते हैं। इनका कोई गोत्र वा उपाधि नहीं। फिर भी बदगुम, दखानापुर, कन्नानापुर, सिनामधारी और पाकुतरा पांच श्रेणी विभाग विद्यमान हैं। यह तीजापुरके गवन्दियोंसे अधिक मैले कुचैले और अदाचार होते हैं। इनमें कोई मृतदेहको जलाता और कोई समाधि लगाता है। यह पुत्रादिके जन्म, ऋतुकाल और मृत्युको यथाक्रम १, ४ और १० दिन अशौच ग्रहण करते हैं।

गवय (सं० पु०) गोजातिका एक पशु। इसके गलेमें झालर नहीं होता है, नीलगाय। इसका नामान्तर गवाक्ष, बनगो, बलभद्र और महागन्ध है। इसका मांस कफ और पुष्टिकर होता है।

२ रामचन्द्रजीकी सेनाका एक बन्दर। यह वैवस्वत हनुमानके पुत्र था। ३ एक छन्दका नाम। इसके प्रथम चरणमें १८ मात्राएं होती हैं और ११ मात्राओंपर विराम होता है। दूसरे चरणमें दोहा होता है।

गवयी (सं० स्त्री०) गवय जाती ङीष्। गवयस्त्री, नील गाय। इसका पर्याय वन धेनु और गिल्लीगवी है।

गवर्नमेण्ट (अं०) १ राज्य, शासनपद्धति। २ शासकमण्डल।

गवर्नर (अं०) १ शासक, हाकीम। २ किसी प्रांतका राजा वा प्रजासे चुना हुआ हाकिम। ३ वह प्रधान शासक जो देशमें शासन करनेके लिये राजा वा मंत्रि-मंडलसे नियुक्त किये गये हों। ४ भारतमें किसी प्रेसिडेन्सीके प्रधान हाकिम जो गवर्नरजेनरलके अधीन रहते हैं। यह इङ्गलैंडके बादशाहका मन्त्रिमण्डल द्वारा नियत किये जाते हैं। भारतवर्षमें बम्बई, मद्रास, युक्तप्रदेश, आसाम, ब्रह्मा और बंगालमें गवर्नर रहते हैं। लाट।

गवरीदाद—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़का एक छोटा राज्य। भूपरिमाण २७ वर्गमील तथा लोकसंख्या लगभग दो हजार है। राज्यकी आय २४१२६ रुपयेकी है। १६२१ रुपये ब्रटिश सरकार और जूनागढ़को कर देना पड़ता है।

गवर्नर जनरल (अं० पु०) राजा या मन्त्रिमण्डल द्वारा

नियुक्त किया हुआ सबसे बड़ा हाकिम। इनके अधीन कई एक गवर्नर और लफ़टेंट गवर्नर रहते हैं। इङ्गलेंएट के बादशाह गवर्नरोंको नियुक्ति स्वयं करते हैं। पर लफ़टेंट गवर्नर,गवर्नर-जनरलसे नियुक्त होते हैं। गवर्नर-जनरल एक कौंसिल वा मंत्रिमंडल द्वारा शासन करते हैं, वाइसराय, बड़े लाट।

गवर्नरी (अं० स्त्री०) १ वह प्रान्त जहाँ पर गवर्नर शासन करता हो, प्रेसिडेन्सी। २ शासन, अधिकार।

गवराज (सं० पु०) गविन शब्देन राजते राज-अच्। वृष, बैल, साँढ़।

गवल (सं० पु०) गवं शब्दं लाति ला-क। वनमहिष, जङ्गली भैंसा, अरना। (हहतसं० ३१।१६)

गवल (सं० क्लो०) गव-ला-क। महिषशृङ्ग, भैंसेका सींग।

गवलगण (सं०पु०) सञ्जयके पिता।

"सञ्जयो मुनिकल्पस्तु जज्ञे सतोगवलगणात्।" (भारत १।६३।९०)

गवली (सं० पु०) महिष, भैंसा।

गवहियाँ (हिं० पु०) अतिथि, मेहमान।

गवाक्ष (सं० पु०) गवामक्षोव। यद्वा गावः मूयकरा जलानि वा अक्षणुवन्ति व्याप्नुवन्तीति अनेनेति। अक्ष-घञ्। १ वातायन, झरोखा, छोटी खिड़की। इसका पर्याय वधूद्दगयन, जाल और जालक है। (कुमार)

२ बानरविशेष, वैवस्वतमनुका पुत्र, राम रावण युद्धमें यह रामचन्द्रजीके सेनापतिके पद पर नियुक्त किया गया था।

गवाक्षिका (सं० स्त्री०) अपराजिता।

गवाक्षित (सं० वि०) प्रणयन किया हुवा, रचना किया हुवा।

गवाक्षी (सं० पु०) गां भूमिं अक्ष्णोति अक्ष-अण् गौरादित्वात् ङीष्। १ गोड़ुम्बा, एक प्रकारकी ककड़ी या तरबूज। २ इन्द्रवारुणी, इन्द्रायण। इसका पर्याय—ऐन्द्री, इन्द्रवारुणी, चित्रा, गवाक्षी, गजचिर्भटा, मृगेर्वारु, पिटङ्कोटी, विशाला और मृगादनी है। ३ शाखोटवृक्ष, सहोराका पेड़। ४ अपराजिता। (रत्नमाला)

गवाची (सं० स्त्री०) गवि भूमौ अञ्चतीति। अन्च्-क्विप् ङीप्। (चवक्‌ श्लोटायनस्य। पा ६।१।१२२) इति अवङ्। मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। यह अजीर्णकारक, गुरु, श्लेष्माका प्रकोपकर।

गवादन (सं० क्लो०) गोभिरद्यते अद् कर्मणि ल्युट् अवङ्। तृण, घास।

गवादनी (सं० स्त्री०) गवादन गौरादित्वात् ङीष्। १ इन्द्रवारुणी, इन्द्रायण। २ नील अपराजिता ३ एक तरहका बरतन।

गवादि (सं० पु०) पाणिनीका एक गण। गो, हविस्, अक्षर, विष, बर्हिस्, अष्टका, मखदा, युग, मेधा, स्रुच, कूप, खद, दर, खर, असुर, अध्वन्, वेद, बीज और दीप्त, इन सभोंको गवादि कहते हैं।

गवाधिका (सं० स्त्री०) गवा करणेन अधिकायति कै-क-टाप्। लाक्षा, लाह, लाख।

गवानृत (सं० क्लो०) गवि गोविषये अनृतम्। गोविषयमें मिथ्याकथन, गौके बारेमें झूठ बोलना। (स्मृति)

गवान महमूद—दक्षिणापथके बहमानी राजाओंके एक मन्त्री। १४६१ ई० ३ सितम्बरको नवाब हुमायूंके मरने पर उनके अष्टमवर्षीय पुत्र निजामशाह राजपद पर अभिषिक्त हुए। उनकी माने इनको विश्वस्त और विचक्षण देख करके मन्त्री बना लिया। १४६३ ई०को निजामशाहके मर जाने पर उनके भाई मुहम्मद राजा हुए। उन्होंने भी गवानको ही मन्त्री बनाया था। १४८१ ई०को निजाम-उल मुल्क भैरो नामक किसी व्यक्तिने चक्रान्त करके राजासे उनको विश्वासघातक-जैसा बतलाया और राजाने भी विश्वास करके उनके प्राणबधका आदेश दिया इन्हींके मृत्युसे बहमानी राज्यका अधःपतन होने लगा।

गवामयन (सं० क्लो०) दशमास वा द्वादश मासमें साध्य एक यज्ञ। ताण्ड्यब्राह्मणमें इसका विषय ऐसा लिखा हुआ है—पूर्वकालकी कई एक वन्य पशुओंने मिल करके संवत्सर पर्यन्त किसी यज्ञका अनुष्ठान किया था। फिर दूसरोंके भी अनुष्ठान करनेसे इस यज्ञका नाम गवामयन पड़ गया। वन्य पशुका साधारण नाम गो है। जो यज्ञ करने लगे, दशमास पर्यन्त अनुष्ठान होने पर उनमें कुछ चौपायोंके सींग निकल पड़े। उन्होंने परस्पर कहना आरम्भ किया कि यज्ञके फलसे वह समृद्धिशाली बने और

उनको शृङ्ग भो उठे थे। उससे यज्ञकी कोई आवश्यकता न रही, उसके समापन करनेकी सम्मति हुई। उनके १० मासमें फल लाभ करनेसे ही यह यज्ञ दश मास साध्य हुआ है। (ताण्ड्यब्राह्मण ४।१।१) यज्ञ करनेवाले पशुओंमें जो फल लाभ कर न सके, कहने लगे—हम लोग संवत्सरके अवशिष्ट और दो मास अनुष्ठान करके प्रारब्ध यागका समापन करेंगे। संवत्सर यज्ञका अनुष्ठान करनेसे उनको भी शृङ्ग उठे थे। किसीके मतमें शृङ्ग आनेके बाद अश्रद्धासे यज्ञ करने पर फिर गिर पड़े। यज्ञके फलसे उन सबको ऋतुसुलभ आहारीय द्रव्य मिला था। मालूम पड़ता है कि उसी समयसे उनके घास खानेकी व्यवस्था हुई। इसीसे शृङ्गहीन पशु सभी ऋतुओंमें हृष्टपुष्ट रहते और विचरण किया करते हैं। किन्तु शृङ्गयुक्त महिष प्रभृति पशु शीत तथा धूपके प्रावल्यसे कृश पड़ जाते हैं। (ताण्ड्यब्राह्मण ४।१।२) उनके द्वादश मास अनुष्ठान करके फल पानेसे यह यज्ञ द्वादश मास साध्य हुआ है। भाष्यकारके मतमें—ज्योतिष्टोम तथा दशपूर्णमासादि यज्ञके विधान स्थलमें किसी प्रकारके फलका उल्लेख न रहते भी जिस प्रकार स्वर्ग मिला करता, वैसे ही गवामयनमें भी किसी फलका उल्लेख न रहनेसे स्वर्ग लाभ ही फल ठहरता है। किन्तु इसके पीछे समृद्धिप्राप्तिकी कथा रहनेसे इस यज्ञका फल स्वर्गलाभ नहीं, समृद्धिप्राप्ति ही है। तैत्तिरीयक ब्राह्मणमें गवामयन यागका फल स्पष्ट अक्षरोंमें समृद्धि लाभ लिखा हुआ है।

चैत्रमासीय शुक्लपक्षकी एकादशी तिथिको इस यज्ञकी दीक्षा लेनी पड़ती है। चैत्रमास संवत्सरके चक्षु जैसा सर्वप्रथम अवयव है इसलिये उसीमें यज्ञकी दीक्षाका विधान बंधा है। सभी यज्ञोंमें १२ दीक्षाएं होती हैं। शुक्लपक्षीय एकादशीको प्रथम दीक्षा होनेसे कृष्णपक्षीय सप्तमी पर्यन्त द्वादश रात्रिओंमें बारही दीक्षाएं पूरी पड़ जाती हैं। कृष्णपक्षकी अष्टमीको एकाष्टका कहते हैं। उसमें राजक्रय हो सकता है। उसदिनको प्रातःकाल ही प्रायणीय प्रभृति यज्ञके अवयवोंका अनुष्ठान करना पड़ता है। सिवा इसके दूसरा भी फल है। शुक्लपक्षीय एकादशीको दीक्षा मिलनेसे सोमयाग पूर्वपक्षमें ही समाप्त हो जाता है। फिर सभी यज्ञोंमें दीक्षाके पीछे द्वादश अनुष्ठेय उपसद् रहते हैं। ऐसे स्थल पर द्वादश दीक्षाओंके पीछे कृष्णपक्षीय अष्टमीसे शुक्लपक्षकी चतुर्थी तक १२ दिनमें द्वादश उपसद् शेष हो जाते और शुक्लपक्षीय पञ्चमीको प्रथम अतिरात्रका अनुष्ठान लगाते हैं। इस प्रकारसे ३० दिनको पूर्वपक्षमें ही मास समाप्त होता है। यथाविधान द्वादश मास पर्यन्त याग करके कृष्णपक्षमें ही उसको समापन करते और यज्ञस्थलसे उठते हैं। इसके पीछे यजमानका पशु धान्य आदि बढ़ने लगता और उसका वाक्य भी कल्याणजनक निकलता है। गवामयन यज्ञके फलसे अल्पकालमें ही यज्ञकारी विपुल समृद्धिशाली हो जाता है। (ताण्ड्यब्राह्मण ५।८।१४)

गवांना (क्रि० क्र०) नष्ट करना, खोना।

गवामृत (सं० क्लो०) गोरमृतमिव अवड़ादेशः। गोदुग्ध, गायका दूध।

गवाम्पति (सं० पु०) गवां पतिः अलुकसमासः। वृषभ, सांड़, बैल।

"सिंहेनेव गवांपतिम्।" (भारत ३।१६ अ०)

२ गोपालक, ग्वाला। ३ गोस्वामी, गौके मालिक। ४ रुद्र। ५ किरणपति, सूर्य और अग्नि प्रभृति।

(भारत ४।२२० अ०)

गवार (फा० पु०) १ जो मुसलमान जातिके नहीं हो, साधारणतः अग्नि उपासक पारसी जाति। २ पहले काबुलअञ्चलमें गवार नामकी एक जाति रहती थी। बाबरके समयमें उसकी भाषा 'गवरि' कहलाती थी यह जाति अब कहीं नहीं देखी जाती है।

गवारा (फा० वि०) १ मनभाता, अनुकूल, पसंद। २ सह्य, अंगीकार।

गवालीक (सं० पु०) जैन शास्त्रानुसार वह मिथ्याभाषण जो गौ आदि चौपायोंके लिये किया जाय।

गवाल्क (सं० पु०) गवाय शब्दाय अलति अल-बाहुलकात् उकञ्च। गवय, बैल इत्यादि।

गवाविक (सं० क्लो०) गावश्च अवयश्च। (गवाश्वप्रभृतीनि च पा २।४।११) द्वन्द्वः समाहारः। गोमेषका समाहार, मवेशी और भेड़ाका झुंड।

गवाशन (सं० पु०) गामश्नाति अश भोजने ल्यु। गोभक्षक, मूची, चमार।

गवाशिरा (सं० त्रि०) गोभिः क्षीरैः उदकैर्वा आशिर मिश्रितः। क्षीरमिश्रित वा उदक मिश्रित, दूध या पानी मिला हुआ। (ऋग्वेद १।३०।१)

गवाश्व (सं० क्लो०) गोश्च अश्वश्च तयोः समाहारः अवडादेशः। गो अश्वका समाहार, गाय और घोड़ेका समूह।

गवाश्वादि (सं० क्लो०) पाणिनीय गणपाठोक्त समाहारद्वन्द्वनिमित्तक शब्दसमूह। यथा—गवाश्व, गवाविक, गवैडक, अजाविक, अजैडक, कुब्जवामन, कुब्जकिरात, पुत्रपौत्र, श्वचण्डाल, स्त्रीकुमार, दासीमाणवक, शाटीपटीर, शाटीप्रच्छद, शाटीपट्टि, उष्ट्रखर, उष्ट्रशश, मूत्रपुरीष, यकृन्मेदः, मांसशोणित, दर्भशर, दर्भपूतीक, अर्जुनशिरीष तृणोपल, दासीदास, कुटीकुट, भागवतीभागवत।

(गवाश्वप्रभृतीनि च । पाणिनि २।४।११ । सिद्धान्तकौमुदी)

गवाषिका (सं० स्त्री०) लाक्षा, लाह।

गवाम (सं० पु०) गोनाशक, कसाई, हत्यारा।

गवाह (फा० पु०) वह मनुष्य जिसने किसी घटनाको साक्षात् देखा हो, साक्षी, साखी।

गवाह्निक (सं० क्लो०) अह्निभवं दिनभोजनाय पर्याप्तं अहन् ठक् आह्निकम्, गोः आह्निकम् ६-तत्। गौके एक दिनके भोजन निमित्त पर्याप्त घासादि, मवेशीका एक दिनका चारा।

जो मनुष्य पापासक्ति परिहारपूर्वक एक मास गवाह्निक प्रदान तथा एकभक्तव्रत करता है, उसका धर्म दिनोदिन बढ़ता जाता है। (भारत १३।१३२ अ०)

गवाही (फा० स्त्री०) किसी ऐसे मनुष्यका कथन जिसने साक्षात् घटना देखी हो, साक्ष्य, साक्षीका प्रमाण।

गविजात (सं० पु०) गवि गोनामिकायां पुलस्त्यभार्यायां वा जातः अलुक्समासः। १ ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम।

"तस्य त्वन्ये वनस्थास्तु ... फलाश्रम।
नहुषस्य समं ... गविजात्योऽभवन् मुनि॥"

(भारत १३।५१ अ०)

२ वैश्रवण, ये भी पुलस्त्यकी गोनाम्नी भार्यासे उत्पन्न हैं।

"पुलस्त्यो नाम तस्यासीद मानसोऽदयितः सुतः।
गवि गोसंज्ञायां भार्यायां॥" (भारत नीलकंठ ३।२७ अ०)

गविन (सं० पु०) कोकड़ नामक मृगविशेष, एक प्रकारका हिरन।

गविनी (सं० स्त्री०) गवां समूहः खलादि इनि ङीप्। गोसमूह, गायका झुण्ड।

गविपुत्र (पु०) वैश्रवण, ये पुलस्त्यकी गोनाम्नी भार्याके गर्भसे उत्पन्न हुए हैं।

गविष् (सं० त्रि०) गां स्तुतिवाचमिच्छति इष्-क्विप्। स्तोत्रादि वाक्य इच्छा।

'गविषः स्तुतिवाचमिच्छन्तः सन्तः।' (सायण)

गविष (सं० त्रि०) गामिच्छति इष-क। गौके प्रति इच्छा विशिष्ट, जो गाय पालनेकी इच्छा करता हो। (सायण)

गविष्टि (सं० त्रि०) इष-क्तिन्। गवामिष्टिरन्वेषोऽस्ति अस्य। गौका अन्वेषण करनेवाला, मवेशीका खोजनेवाला। (ऋक् ५।६३।१५)

गविष्ठ (सं० त्रि०) गवि स्वर्गे भूमौ वा तिष्ठति स्था-क अलुक् स०। १ स्वर्गस्थित। २ भूमिस्थित।

"मार्गे मेजे दिशं पश्चाद गविष्ठो गां गतस्तदा।" (भागवत १।२३।२६)

(पु०) ३ दैत्यविशेष, एक असुरका नाम।

"गविष्ठश्च वनायुश्च दीर्घजिह्वश्च दानवः।" (भारत १।६५ अ०)

गविष्ठिर (सं० पु०) गवि वाचि च स्थिरः षत्वं अलुक् समासः। १ गोत्र प्रवर्त्तक एक ऋषिका नाम।

(ऋक् ५।१।१२)

गवी (सं० स्त्री) गो-ङीप्। गाभि, गौ, गाय।

गवीधुका (सं० स्त्री०) गवेधुका पृषोदरादित्वात् साधुः। धान्यविशेष, एक प्रकारका धान। (तैत्तिरीयसं० ५।४।३।२)

गवीश (सं० पु०) गवामीशः। १ गोस्वामी। २ विष्णु। ३ वृष, सांढ़।

गवीश्वर (सं० पु०) गवामीश्वरः, ६-तत्। गोस्वामी। इसका पर्याय—गोमान् और गोमी है।

गवेङ्गित (सं० क्लो०) गवामिङ्गितम्, अवङादेशः वा गोगणकी शुभाशुभसूचक एक चेष्टा। बृहस्पतिसंहितामें कहा है—गायोंके दीन भावापन्न होनेसे राजाओंका अमङ्गल, पाद द्वारा भूमि कुट्टन करनेसे रोग, चक्षु अश्रुपूर्ण होनेसे स्वामीका मृत्यु और भीत हो करके शब्द करनेसे तस्करोंका भय होता है। यदि गोगण अकारण वैसा ही शब्द करता, तो अनर्थ पड़ता और रात्रिको वैसी ही दशा रहनेसे अमङ्गल बढ़ता है। फिर गोगणके मक्षिकाओं द्वारा व्याप्त अथवा कुक्कुरों द्वारा वेष्टित होनेसे शीघ्र ही

दृष्टि पड़ती है। घर आते आते गायोंके हम्बारव करने (रांभने) से गोष्ठ बढ़ता और आर्द्र देह, हृष्ट अथवा रोमाञ्चित होनेसे गोमकल मङ्गल प्रदान करता है। (बृहत्संहिता ८९ अ०)

गवेड़ु (सं० स्त्री०) गवे दीयते दा मृगव्यादित्वात् कु पृषोदरात् दस्य डः अलुक् समासः। धान्य भेद, एक प्रकारका धान।

गवेड़ुका (सं० स्त्री०) गवेड़ु देखो।

गवेधु (सं० स्त्री०) गवे धीयते धा कु अलुक्समासः। धान्यविशेष, कसेई धान (भावप्रकाश)

गवेधुक (सं० पु०) गवेधु-कन्। १ सर्पविशेष, सांप जातिका एक जन्तु। (क्लो०) २ गैरिक, गेरू मट्टी। ३ तृणधान्यविशेष, गाडर धान।

गवेधुका (सं० स्त्री०) गवेधु-कन्-टाप्। तृण धान्यविशेष, गवेड़ु। (वैद्यप० ११६५२) इसका पर्याय—गवेड़ु, गवेधु, गवेड़का, तुद्रा, गोजिह्वा, गुन्द्रा, गुल्म, नागचला, गाङ्गेरुकी, भाषा, ह्रस्वगवेधुका खरवल्लरिका, विश्वदेवा और गोर... मतगड लो है।

गवेधु (सं० स्त्री०) गवेधुका देखो।

गवेन्द्र (सं० पु०) गोरिन्द्र इव नित्य-अवङ्। १ श्रेष्ठ गो, बढ़िया बैल। २ गोके स्वामी...।

गवेरिक (सं० क्लो०) गैरिक, एक प्रकारकी लाल म... ...टी।

गवेरुक (सं० क्लो०) गां भूमिं ईर्ते उत्पत्तये प्राप्नोति ईर उकञ्। गैरिक, गेरू मट्टी।

गवल (हिं० वि०) गंवार, देहाती।

गवेलगढ़—वरार अञ्चलका एक ग्राम। १८०३ ई०को इस ग्रामके निकटस्थ आरगांव नगरमें अंगरेज सेनापति जेनेरल वेलेस्लीने नागपुरके राजा भोंसलाके सेनापति वेङ्काजोको परास्त किया था। इसीसे अंगरेज सेनापति ष्टिभेनसनने गवेलगढ़को अपने अधिकारमें कर लिया।

गवेश (सं० पु०) गवामीशः। १ गोस्वामी, गोरक्षक।

गवेशका (सं० स्त्री०) गवेश संज्ञायां कन्-टाप्। वृक्ष विशेष, गोरक्षीका पेड़।

गवेष (सं० त्रि०) गवेष अन्वेषणे अच्। अन्वेषण, खोज, तलाश।

गवेषण (सं० त्रि०) इष कर्तरि ल्यु, गोरेषणः, ६-तत्। १ गोका अन्वेषण करनेवाला। २ जलान्वेषणकारी, जलकी खोज करनेवाला। ३ अन्वेषणकर्ता, तलाश करनेवाला। (ऋक् १।१३२।३)

(पु०) ४ चित्रकके एक पुत्रका नाम। (हरिवंश ३५ अ०)

गवेषणा (सं० स्त्री०) गवेष-भाव युच्-टाप्। १ अन्वेषण, खोज। २ गो अथवा जलकी तलाश।

गवेषणीय (सं० त्रि०) गवेष-अनीयर्। अन्वेषणके योग्य, तलाश करने लायक।

गवेषित (सं० त्रि०) गवेष-क्त। अन्वेषित, खोज किया हुआ।

गवेषिन् (सं० त्रि०) गवेष-णिनि। अन्वेषणकर्त्ता, खोज करनेवाला। (भारत ३।१४२ अ०)

गवेष्ठिन् (सं० पु०) दैत्यविशेष, एक राक्षसका नाम। "अङ्क कर्णो विरोधश्च गवेष्ठी दुन्दुभिस्तथा।" (हरिवंश ३ अ०)

गवैडक (सं० क्लो०) गौश्च एडकश्च। गो और मेष, गाय और भेड़।

गवैया (हिं० वि०) गायक, गानेवाला।

गवैहाँ (हिं० वि०) ग्रामीण, गांवका रहनेवाला, देहाती।

गवोद्घ (सं० पु०) प्रशस्तो गौः। प्रशस्त गो, बढ़िया मवेशी।

गव्य (सं० त्रि०) गो... ...कहलाती थी। (गोपथब्राह्मण ... पा० ...।१६०) गोसे उत्पन्न, जो गायसे प्राप्त हो, जैसे दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र आदि। (मनु ३।७१)

२ गायका हितकर। ३ गायका झुंड। ४ रागद्रव्य। ५ पंचगव्य। ६ ज्या, धनुषकी डोरी।

गव्यघृत (सं० क्लो०) गायका घी।

गव्यतक्र (सं० क्लो०) गायका मट्ठा।

गव्यदधि (सं० क्लो०) गायका दही। इसका गुण—अति पवित्र, शीतल, स्निग्ध, दीपन, बल्य, मधुर, अरोचकघ्न और वातरोगनाशक है।

गव्यनवनीत (सं० क्लो०) गायका मक्खन, पनीर

गव्यमांस (सं० क्लो०) गोमांस।

गव्ययी (सं० स्त्री०) गोरिदं बाहुलकात् मयट् युडागमश्च। त्वक् प्रभृति, चमड़ा इत्यादि। (ऋक् ८।७०।७)

गव्ययु (सं॰ त्रि॰) गामिच्छति गो-क्यच्-उण् यादो वेदे-दीर्घयलोपाभावौ। जो गाय लेनेकी इच्छा करता हो।

गव्या (सं॰ स्त्री॰) गवां समूहः। गो समूह, गायका झुंड। २ धनुषका गुण, धनुषकी डोरी। ३ गव्यूति, दो कोस। ४ गोरचना।

गव्यु (सं॰ त्रि॰) गामिच्छति, इष-क्यच्-उण्। जो गो ग्रहण करनेकी इच्छा करता हो।

गव्यूत (सं॰ क्लो॰) गव्यूतिः पृषोदरादित्वात् अवङ्देशः। १ एक कोस। २ दो कोस।

गव्यूति (सं॰ स्त्री॰) गोर्युतिः। १ दो हजार धनुषको दूरी। २ दो कोस। इसका पर्याय—क्रोशयुग, गव्यूत, गोरुत, गोमत, वाचस्पति और गव्या है।

गश (अ॰ पु॰) मूर्च्छा, बेहोशी।

गशी (अ॰ स्त्री॰) बेहोशी।

गश्त (फा॰ पु॰) १ टहलना, घूमना, दौरा, चक्कर। २ पुलीसका चक्कर, रौंद, दौरा। ३ एक प्रकारका नृत्य जिसमें नाचनेवाली वेश्यायें बरातके आगे नाचती हुई चलती हैं।

गश्त-सलामी (फा॰ स्त्री॰) भेंट या उपहार जो हाकिम-को दौरा समय मिला करता है।

गश्ती (फा॰ वि॰) भ्रमण करनेवाला, घूमनेवाला।

गसना (हिं॰ क्रि॰) १ जकड़ना, गांठना। २ कपड़ा बुनावटमें बानेको कसना।

गसीला (हिं॰ वि॰) जकड़ा हुआ, गुथा हुआ, गफ।

गस्सा (हिं॰ पु॰) ग्रास, कौर।

गहंडिल (हिं॰ वि॰) गदला, मटमैला।

गहकना (अ॰ क्रि॰) १ चाहसे भरना, लालसासे पूर्ण होना, ललकना। २ उमंगसे भरना।

गहकोड़ा (हिं॰ पु॰) गाहक, खरीदार।

गहगड्ड (सं॰ वि॰) गहरा, भारी, घोर।

गहगह (हिं॰ वि॰) प्रफुल्लित, प्रसन्नतापूर्ण, आनन्दसे भरा हुआ।

गहगहा (हिं॰ वि॰) गहगह देखो।

गहगहाना (अ॰ क्रि॰) १ आनन्दमें मग्न होना, बहुत प्रसन्न होना। २ फसल आदिका बहुत अच्छी तरह तैयार होना, लहलहाना।

गहड़वार—युक्तप्रदेशवासी राजपूतोंकी एक शाखा। इला-मङ्गलपुर, बिठूर, जाजमऊ, कन्नौज, बिल्हौर, इसलाम-गञ्ज, बुंदेलखण्ड, गोरखपुर, काटिहर, बनारस तहसील, गाजीपुरके पछोतर तथा महाराच, खैरागढ़, कान्तित आदि स्थानोंमें इनका वास अधिक है।

उस जातिके सम्बन्धमें कोई वंशगत इतिहास नहीं मिलता, फिर भी आजकलके गहड़वार अपनेको कन्नौजका पूर्वतन राजवंशी जैसा बतलाते हैं। राजपूत इतिहासमें भी यह ३६ राजवंशोंके अन्तभुक्त हैं। किसीके मतमें गहड़-वारोंसे ही राठौर वंशकी सृष्टि है। केवल बिसहौर और गोरखपुरके गहड़वारोंको छोड़ करके और कोई राठौरवंशमें दान ग्रहण नहीं करता। राठौर और राष्ट्रकूट देखो।

ह्राटी कतुल अकालीम नामक फारसीकी एक किताब-में लिखा है कि वह वाराणसीसे (१११५ ई॰) कान्तिमें जा करके बसे थे। किसी दूसरे ऐतिहासिकके कथनानु-सार राठौरवंशीय जयचन्द्रके भतीजे गड़नदेवने १२वीं शताब्दीके शेष भागको काश्मीरसे जा भरपत्तोंको गङ्गाके उपकूलसे निकाल दिया और अपने वंशको गहड़वार नामसे आख्यात करके कान्तिमें राज्यस्थापन किया। साधारणतः काशीधाम ही गहड़वारोंका आदिवासस्थान-जैसा निरूपित हुआ है। उपर्युक्त दोनों लेखकोंके मत-में गहड़वारोंने एक ही साथ स्वदेश परित्याग और कान्ति-में जा करके निवास किया था। सुतरां काश्मीर शब्द सम्भवतः भ्रमसे 'काशी' के बदले लग गया होगा। गोरख-पुरमें इस जातिकी उत्पत्तिके और भी दो प्रवाद प्रचलित हैं। पहला यह कि वह नलराजके वंशसम्भूत हैं और ग्वालियरके निकटवर्ती नरवर नामक स्थानसे काशीमें जा करके बसे हैं। दूसरा यह कि काशीराज बलदेवने मगधराज कर्तृक ताड़ित होने पर स्वराज परित्याग पूर्वक काश्मीरराज त्रिपुरके अधीन कर्म ग्रहण किया, पीछे स्वीय प्रभुके विरुद्ध लोगोंको उभाड़ करके काश्मीर राज्यके अधीश्वर बन बैठे। उनके वंशधरोंके १२१ पीढ़ी राज्य करने पर ईरान, तुर्कस्थान और रूम देशाधिपतिने काश्मीर पर आक्रमण किया था। वहांसे यवनकर्तृक ताड़ित होने पर बलदेवके वंशधर कन्नौज भाग आये और यहां जयचन्द पर्यन्त ५० पुरुष राजत्व रखा। राजा

बलदेवके तृतीय पुत्र राजा बनार गहड़वार सामन्तोंके आदिपुरुष थे। किसीके मतमें 'बनार' से ही काशीका नाम बनारस पड़ा है। ११६१ संवत्‌की प्रदत्त जो शासनलिपि बसाहीसे प्राप्त हुई है, पढ़नेसे समझ पड़ता है कि वस्तुतः कन्नौजके राठौरराज जयचन्दसे ऊर्ध्वतन पञ्चम पुरुषके चन्द्रदेव और महीपाल आदि कन्नौजके राजा गहड़वार वंशीय रहे। कन्नौज देखो।

चन्द्रदेवके पिता महीपाल बङ्गाल, विहार और काशीके राजा होते हुए भी बौद्धमतावलम्बी थे। शिलालिपि-पाठसे विदित होता कि उनके राजत्वकालको कन्नौजका आधिपत्य कलचुरि राजाओंके हाथमें रहा। महीपालके कनिष्ठ पुत्र चन्द्रदेवने कलचुरिराज कर्णके निकटसे बन्धुताका चिह्नस्वरूप कन्नौज पाया था। हिन्दू धर्मपर चन्द्रदेवकी बड़ी आस्था रही। अपने आत्मीय होते हुए भी उन्होंने विहार और काशीके पालवंशीय बौद्धराजाओंका संस्रव एककाल ही यहां तक परित्याग किया कि उनका वंशगत 'पाल' उपाधि छोड़ करके 'चन्द्र' उपाधि ले लिया था। यही चन्द्रदेव कन्नौज राठौरके राजवंशके प्रथम राजा रहे। फिर विहार और काशीके गहड़वारोंने पाल और कन्नौजके राठोरोंने चन्द्र उपाधि ग्रहण किया। एतद्भिन्न बुंदेलखण्डके बुंदेला भी उसी वंशसम्भूत हैं।

गहड़वारोंके कन्नौजका होने पर और भी एक प्रमाण मिलता है। गौतमगोत्रीय राजपूतोंका कहना है कि उन्हें कन्नौजवाले गहड़वार राजाओंके अनुग्रहसे अपने रहनेको निम्न दोआबका अधिकार मिला था।

हबीब-उज-सैर, ताल-अल मुतस्सर, तबकात अकबरी, फरिश्ता आदि ग्रन्थोंमें लिखा है कि महमूद गजनवीने कन्नौजके राजा गौड़को आक्रमण किया था। जब वह कन्नौजके अभिमुख पहुंचे, जयपाल राजा थे। अतएव स्पष्ट ही समझ पड़ता है कि मुसलमान इतिहासवेत्ताओंने भ्रममें पड़ गहड़वार जातिके बदले गौड़ जातिका उल्लेख कर दिया होगा।

१७५८ ई०को गहड़वार सामन्तोंने गौतम भूमिहारोंके अत्याचारमें उत्पन्न और काशीसे ताड़ित होने पर अङ्गरेजोंके अधीन आश्रय लिया। आजकलके यह मिर्जापुरके पश्चिम विजयपुरमें गवर्नमेण्टकी वदान्यता पर राजसम्मानसे वास करते हैं।

गहन (सं० क्लो०) १ वन, जंगल। २ गंभीर, गहरा। ३ दुःख, तकलीफ। (त्रि०) ४ कठिन, कड़ा। ५ दुर्गम, घना। ६ निविड़, घना। ७ दुष्प्रवेश। (पु०) ८ विष्णुपरमेश्वर। (विष्णुसं०) ९ जल, पानी। १० गहराई, थाह।

गहना (सं० स्त्री०) १ आभूषण, जेवर। (हिं० पु०) २ रेहन, बंधक। ३ खेतको घास निकालनेका गहन नामक यन्त्र (हिं० क्रि०) ४ पकड़ना, धरना।

गहनि (हिं० स्त्री०) टेक, जिद, हठ।

गहनी (हिं० स्त्री०) पशुओंका एक रोग जिससे उनके दांत हिलने लगते हैं।

गह्वर (सं० त्रि०) १ दुर्गम, विषम। २ व्याकुल, उद्विग्न। ३ किसी ध्यानमें मग्न या बेसुध।

गहर (फा० स्त्री०) देर, विलम्ब।

गहरना (हिं० क्रि०) देर लगाना।

गहरवार (पु०) एक क्षत्रियवंश। गोरखपुर और गाजीपुरसे कन्नौज पर्यन्त इस वंशके मनुष्य पाये जाते हैं। ये अपना पूर्व वास काशी बतलाते हैं। कन्नौजके राजा चन्द्रदेव और महीपाल राजा भी गहरवार वंशके ही थे। बुंदेलखण्डके बुन्देले क्षत्रिय भी अपनेको गहरवार वंशोद्भव बतलाते हैं

गहरा (हिं० वि०) १ जिसमें जमीन बहुत नीचे जा कर पाई जाय, गंभीर। २ जो पृथ्वीके तलसे भीतर बहुत दूर तक चला गया हो। ३ प्रचण्ड, बहुत अधिक, ज्यादा, भारी। ४ दृढ़, मजबूत, भारी। ५ गाढ़ा, जो हलका या पतला न हो।

गहराई (हिं० स्त्री०) गहराका भाव, गंभीरपन।

गहराना (हिं० क्रि०) गहरा करना।

गहराव (हिं० पु०) गहराई।

गहरु (हिं० स्त्री०) देर, विलंब।

गहरे (हिं० क्रि० वि०) अच्छी तरह, खूब, यथेच्छ।

गहरेबाजी (हिं० स्त्री०) इक्के के घोड़े की बहुत जोरकी कदम चाल।

गहलोत—राजपूतोंकी एक शाखा। वर्तमान सिसोदिया और अहेरिया राजपूत इनकी विभिन्न शाखा हैं। सिसोदिया जैसा अपना परिचय देते भी इनकी गहलोत आख्या दूर

नहीं हुई है। भोली परगने, खांपुर, निजामाबाद, बिल्हौर, बिठ्र, रसूलाबाद, सैयदाबाद, तिरुआ, रामिया, हाथरत, शाहपुर, जलेश्वर और बुलन्दशहरमें यह अधिक रहते हैं।

बुलन्दशहरवासी गहलोतोंमें ऐसा प्रवाद है कि सम्राट् अकबरने चित्तोर आक्रमण करनेके पीछे राजा खोमानके राजत्वकालको वह दसनाके निकटवर्ती टेहड़ा और धालना नामक स्थानोंमें जा करके बसे। किन्तु वास्तविक यह बात ठीक नहीं है। कारण, आईन-अकबरी पढ़नेसे समझ पड़ता है कि सम्राट् अकबरके समय गहलोतवंशीय दसनाके जमींदार थे। युक्तिसिद्ध और सम्भवपर जैसा यही विदित होता है कि सम्राट् अलाउद्‌-दीन खिलजीके चित्तोर आक्रमण अथवा खोमानके राजत्वकालको मासके आक्रमण पीछे वह दसनामें जा करके रहे। खोमान देखो।

कोई कोई कहता है कि वर्तमान गहलोतोंके किसी पूर्वपुरुष गोविरावने दिल्लीपति पृथ्वीराजकी वहनको व्याहा और वह उनके अन्तरङ्ग मित्र तथा युद्धविग्रहमें सहकारी थे। कवि चन्द्र बरदाईने अपने पृथ्वीराज रासो-काव्यमें लिखा है कि गोहिलवंशीय सामन्त गोविन्दराव चौहान राजपूत पृथुके सहकारी रहे। उन्होंने इस जातिको सच्चा और वीर जैसा कहा है। सम्भवतः संस्कृत गोभिल-गोत्र शब्दका अपभ्रंश होते होते हिन्दीमें 'गहलोत' बन गया है। किन्तु मेवाड़में सर्वत्र इस जातिके उत्पत्ति सम्बन्धका निम्नलिखित प्रवाद यथार्थ जैसा माना जाता है—मेवाड़ राणाके जब पूर्वपुरुष गुजरातसे ताड़ित हुए, पुष्पवती नामक किसी राजमहिषीने मलय पर्वतके ब्राह्मणोंके निकट जा करके आश्रय लिया और अनतिकाल पीछे ही एक पुत्ररत्न प्रसव किया और पर्वतको गुहामें जन्म होनेसे उसका नाम गहलोत अर्थात् गह्वरोत्पन्न रख दिया। उदयपुरके वर्तमान राणा इन्हीं गहलोतोंके वंशधर है।

गहवा (हिं० पु०) संड़सी।

गहवारा (हिं० पु०) झूला, हिंडोला।

गहाई (हिं० स्त्री०) ग्रहण करनेका भाव, पकड़।

गहागड्ड (हिं० वि०) गहगड्ड देखो।

गहागह (क्रि० वि०) गहगह देखो।

गहादि (सं० क्ली०) छ प्रत्यय निमित्तक पाणिनीय गण-विशेष। (गहादिभ्यश्छः। पा ४।२।१३८।) गह, अन्तस्थ, सम, विषम, उत्तम, अङ्ग, वङ्ग, मगध, पूर्वपक्ष, अपरपक्ष, अधमशाख, उत्तमशाख, एकशाख, समानशाख, समानग्राम, एकग्राम, एकवृक्ष, एकपलाश, इष्वग्र, इष्वनीक, अवस्यन्दन, कामप्रस्थ, खाड़ायन, काठेरणि, लावेरणि, सौमित्रि, शैशिरि, आसुत, दैवशर्मि, श्रौति, आहिंसि, आमित्रि, व्याड़ि, वैजि, आध्यश्वि, आनृशंसि, शौङ्गि, आग्निशर्मि, भौजि, वाराटकि, वाल्मीकि, क्षेमवृद्धि, आश्वत्थि, औद्‌-गाहमानि, ऐकबिन्दवि, दन्ताग्र, हंस, तन्त्वग्र, उत्तर और अनन्तर, इन्हींको गहादि कहते हैं। ये आकृतिगणके हैं।

गहिरदेव (सं० पु०) काशीके एक राजाका पुत्र। इन्हें गहरवार अपना पूर्वपुरुष मानते हैं।

गहिराव (हिं० पु०) गहराव देखो।

गहिरो (हिं० वि०) गहरा देखो।

गहिला (हिं० वि०) पागल, उन्मत्त।

गहीला (हिं० वि०) १ गर्वयुक्त, अभिमानी। २ मदोन्मत्त, पागल।

गहु (हिं० स्त्री०) छोटा रास्ता, गली।

गहुआ (हिं० पु०) छोटा मुंहवाला, एक प्रकारकी संड़सी। इसके द्वारा लोहार अग्निसे तप्त लोह बाहर निकालता है।

गहुरी (हिं० स्त्री०) किसी दूसरेकी चीजकी हिफ़ाज़तसे रखनेकी मजदूरी।

गहेजुआ (हिं० पु०) कुकुंदर।

गहेलरा (हिं० वि०) १ पागल। २ मूर्ख, अज्ञानी, गवाँर।

गहेला (हिं० वि०) १ हठी, जिद्दी। २ अहंकारी, घमण्डी, मानी। ३ पागल। ४ मूर्ख, अनजान।

गहैया (हिं० वि०) १ पकड़नेवाला। २ अङ्गीकार करनेवाला, स्वीकार करनेवाला।

गहोई—वैश्य जातिभेद। यह वुंदेलखण्डके बड़े बड़े नगरोंमें व्यापारादि करते हैं। पिण्डारियोंके आक्रमणसे उत्पन्न हो गहोई युक्तप्रदेशमें भी आ बसे हैं। यह शब्द 'गुह्य'का अपभ्रंश है। इनमें १२ गोत्र होते हैं।

गह्व (सं० क्ली०) गह वाहुलकात् भावे कर्मणि वा वः । १ गाम्भीर्य । २ गहिरा । (त्रि०) ३ गह्वरयुक्त ।

गह्वर (सं० क्ली०) गाह्यते गाह विलोड़ने । १ गर्त, बिल । २ गिरिगुहा, पहाड़की कंदरा ।

"गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश ।" (रघु० २।२६)

३ दम्भ, पाखण्ड । ४ वन । ५ रोदन, रोना । ६ विगमस्थान । ७ वह वाक्य जिसके बहुत अर्थ हो सकते । (पु०) ८ निकुंज, लतागृह । ९ जल १० गुप्तस्थान । ११ झाड़ी । १२ दुर्गम ।

गह्वरा (सं० स्त्री०) विड़ङ्ग, बायविड़ंग ।

गह्वरी (सं० स्त्री०) गुहा, कंदरा, गुफा । (हरिवंश)

गह्वरित (सं० त्रि०) गह्वरं जातमस्य इतच । १ गुप्त । २ क्षुब्ध, निस्तब्ध ।

गह्वरेष्ट (सं० त्रि०) गह्वरे तिष्ठति स्था-क । जो गुफामें छिप गया हो ।

गा (सं० स्त्री०) १ गीत । २ शरीर, देह ।

गांकर (हिं० स्त्री०) १ अङ्गाकड़ी, लिट्टी । २ अहरकी लिट्टी ।

गांछना (हिं० पु०) गांथना, गूंथना ।

गांज (फा० पु०) १ राशि, ढेर । २ लकड़ीका ढेर ।

गांजना (हिं० क्रि०) १ राशि लगाना । २ घास या लकड़ी तले ऊपर रखना ।

गांजा—एक पौदा और उसका फूल । (Cannabis Sativa, Cannabis Indica) इसको अंगरेजोंमें Hemp, फरासीसीमें Chanvre, जर्मनमें Hanf, इटालीमें Canape, रूसीमें Conopolia, स्पेनीयमें Canamo, डेनमार्कीमें Hamp, काश्मीरीमें बङ्गी और मराठीमें भांगाका झाड़ कहते हैं । गांजाका संस्कृत पर्याय—गञ्जिका, वज्रदारु, भङ्गा, भरिता, गञ्जाशन, गञ्जाकिनी, मतकुणारि, मातुली, मातुलानी, मादिनी, शक्राशन, त्रैलोक्यविजया, इन्द्राशन, जया, वीरपुत्रा, गञ्जा, चपला, अजया, आनन्दा, प्रकाशिनी और हर्षिणी है । यह कटु, कषाय, उष्ण, तिक्त, वात तथा कफनाशक, संग्राही, बलकर, मेधावृद्धिकारी, दीपन और वाक्यवृद्धिकर होता है । (राजनिघण्ट) भावप्रकाशके मतमें वह कफनाशक, तीता, ग्राही, पाचक, हलका, तीखा, उष्ण और पित्त, मोह, मत्तता,

राजवल्लभ बतलाते हैं कि वह समुद्र मन्थनके समय पीयूष रूपमें उत्पन्न हुआ था । विजय प्रदान करनेसे उसका एक नाम विजया पड़ा । उसके सेवनसे आतङ्क मिठता और हर्ष बढ़ता है ।

यह रसायनविशेष है । भारतीय चिकित्सक अनेक औषधोंमें इसका व्यवहार करते हैं ।

बृहत्संहिताके मतमें विजया एक माङ्गलिक पदार्थ है । पुण्यस्थानमें वेदिके कोणस्थित कुम्भपर अपर माङ्गलिक द्रव्योंके साथ वह भी अर्पित होता है ।

(बृहत्स० ३८।३१)

सुश्रुतने भांग या गांजेके वृक्षको स्थावर विषोंमें उल्लेख किया है । उनके मतानुसार उसके मूलमें जहर रहता है । (सुश्रुत कल्प २ अध्याय) प्रतिश्याय रोगमें उसको सेवन करनेका विधान है । (सुश्रुत उत्त० २४ अ०) कटुकी, द्राक्षा, मुस्ता और क्षेत्रपर्पटीके साथ उसका क्वाथ बना करके पीनेसे पित्तश्लैष्मिक ज्वरमें उपकार होता है । इस देशमें बहुत दिनोंसे वह प्रचलित है । पाणिनिसूत्र (५।२।२९)-के वार्तिक और पाणिनिसूत्र (५ ५।४) में उसके पर्यायान्तर भङ्गा शब्दका उल्लेख विद्यमान है

गांजेसे कीड़े मकोड़े मर जाते हैं । इसी विश्वास पर उसका मतकुणारि नाम पड़ा है । ग्रीक ऐतिहासिक हिरोदोतासके ग्रन्थमें भी कानाबिस नामका उल्लेख मिलता है । युरोपियोंने गांजे और सनका पौदा एकजातीय मान करके दोनोंको केनाबिस वा हेम्प नामसे अभिहित किया है । परन्तु हमारे देशमें गांजा शणसे स्वतन्त्र है । हिरोदोतासने लिखा है—सिथीय लोग गांजेका बीज सनके भीतर भर करके जलते पत्थर पर रख देते और उसके निर्गत धूमसेवनसे जो सुखानुभव करके उल्लासध्वनि करते थे, हसनकी अरबी किताबमें कहा है कि शेख जाफर सिवानी नामके एक फकीर मिसावार पहाड़ पर अकेले इबादत (उपासना) में लगे थे । वह किसी रोज जङ्गलमें गांजेकी पत्ती खा कर खूब खुश हुए और अपने चेलोंको उसे देखाने लगे । मिसरमें गांजा नशेके काम आता है । वहां लोग एक नलीसे गांजा पीते हैं । गांजेसे तरह तरहका अचार और मिठाई बनती है । भारतमें भी गांजेका धुआं पीया जाता, भांग खाते और उसकी माजून

भांगके पेड़का फूल गांजा, पत्ती भांग ही और उसका दूध चरस कहलाता है। इसमें सभी चीजें नशीली हैं।

क—पुंपुष्प। ख—स्त्रीपुष्प। ग—गांजेकी बी।

फिर भी गांजेका नशा भांग और चरसके नशेसे निराला है। असली गोंद ही गांजेकी मादकताका मूल कारण है। गांजा डाक्टरी चिकित्सार्थ औषधकी तरह व्यवहृत होता है। अङ्गरेजी भैषज्यतत्त्वमें वह उत्तेजक, वेदनानिवारक, स्निग्धकारक, अवसादक, आक्षेपक वा धनुष्टङ्काररोगनाशक, मादक, मूत्रकारक, और प्रसवका सहकारी जैसा बतलाया गया है। उसका धनुष्टङ्कार, जलातङ्क वा अलर्करोग, कम्प, प्रलाप, धड़कन, स्नायवीय वेदना प्रभृतिमें प्रयोग करनेसे सुफल मिलता है। सिवा इसके हैजे, अधिक रजः, जरायुके रक्तस्राव, वातरोग, दमे, हृत्पिण्डके वैलक्षण्य, क्लेशकर चर्मरोग और खुजली आदि बीमारियोंमें भी वह व्यवहृत होता है। प्रसवकालकी जरायुके अवसादमें अधिक क्षण व्यथा होने पर इसके प्रयोगसे वह संकुचित पड़ जाता और प्रसव साहाय्य पाता है। इसका सत (Extractum Canabis Indicae) निम्नलिखित रूपसे प्रस्तुत होता है—४ पिण्ट विशुद्ध स्पिरिटमें आध सेर गांजेकी बुकनी मिला ७ दिन तक भिगोकरके रख छोड़ना चाहिये। फिर उसको दवा या निचोड़ करके अरक निकालते हैं। इसको टपका और स्पिरिट उड़ा करके उक्त औषध बनता है। अवस्था विशेषमें आधे ग्रेनसे २ ग्रेन तक वह रोगीको दिया जा सकता है। यह सत एक पिण्ट खालिस स्पिरिटमें मिला देनेसे चरसका टिङ्चर (Tinctura Cannabis Indicae) तैयार होता है। हालतको देख करके ५से२० बूंद तक उसका प्रयोग कर सकते हैं। डाक्टर ओसाग्नेसीने सबसे पहले गांजेकी भलाई बुराई समझ करके उसको विलायती दवाइयोंमें डाला था। (Johnwaring's Pharmacopaeia of India, p. 461.)

अङ्गरेजी हेम्प (Hemp) शब्दसे शण (सन) और गांजे दोनोंका अर्थ निकलता है। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिकाका प्रभृति ग्रन्थोंमें भी वही गड़बड़ी है। दोनों कुछ एक जातीय होते भी गांजेके आकारमें कुछ विशेषता है। इस पेड़में लकड़ीका भाग अधिक रहता है। फिर वह सनके पेड़से मोटा भी होता है। इसके डण्ठल नीचे निम्नदेश फैला हुआ और ऊपरी भाग ढालू लगता है। यह साधारणतः चार और कभी कभी ६ हाथ तक बढ़ जाता है। ऊपरी पत्तियां खूब हरी और फूल हरापन लिये हुए सफेद होते हैं। इसका फुनगी बीचमें मोटी और दोनों ओर ढालू पड़ती है। उसमें बहुतसा रेशा रहता है। पेड़ी तथा सीधी ऊर्ध्वग होती और उसका परिधि ६से ८ इञ्च तक बैठता है। तलदेशसे डालियां कभी मिले हुए तार पर कभी अलग अलग फूटती हैं। सभी जगह रूयां होता है। डालियोंके भीतर एक प्रकार की कोमल श्वेत मज्जा या गूदा भरा रहता है। उस मज्जा पर बुद्बुदविशिष्ट सूक्ष्म भङ्गप्रवण कोई आवरण । इसी आवरण पर छाल लगी है। यह छाल लम्बे लम्बे रेशोंसे बनती है। रेशे समान्तराल भावसे अवस्थित हैं। पत्तियां किसी सीधी डालकी दोनों ओर निकलती हैं। पत्तियां जड़से मोटी होती हुई सूईकी नोक जैसी ढालू पड़ जाती हैं। उनका पार्श्व देश आरे जैसा कटा कटा रहता है। ५।७ पत्तियां एक ही साथ निकलती हैं। गांजेका कोई फूल पुरुष जातीय और कोई कोई स्त्री जातीय होता है। पुरुष जातीय पुष्प निराले पेड़में लगता है। वह एक एक बोंढ़में एकत्र उपजता और प्रायः अधिक झुक पड़ता है। उसकी जड़में नई नई टेहनियां निकला करती हैं। उनका नशा न होनेसे भारतके किसान लोग फेंक देते हैं। फल

झुण्डोंमें बांध कर सोधे हो जाते हैं। इसी के बीचमें अर्ध गोलाकार डिम्बकोष होता है। उसमें एकमात्र उद्भिद् भ्रूण रह सकता है। फूलमें बीज बढ़ते ही पेड़ मर जाता है।

स्त्री जातीय फूल ही भारतवर्षमें नशाके लिये गांजेके तौर पर काम आता है। परन्तु किसान उसको पुंजातीय सा समझते हैं। इसी विश्वासमें वह पुंपुष्पोंको छांट करके खेतसे फेंक देते हैं। पुंपुष्प होनेसे अच्छा मादक द्रव्य नहीं निकलता, गांजेमें बीज भर पड़ता है रायल साहब कहते कि एक पौदेमें दोनों जातीय फूल फूटा करते हैं। किन्तु यह अनुमान ठीक नहीं। पहले यह ठहराना बहुत कठिन है, कौन पौदा नर और मादा है। किसान लोग ही इस भेदको समझ सकते हैं।

गांजेमें राल जैसी एक चिपचिपी चीज होती है। इसमें भी खूब नशा रहता है। यह गोंद कभी कभी अपने आप निकल आती और चरस कहलाती है। भारतवर्ष के पौदोंसे यह दूध कम निकलता, किन्तु हिमालय प्रदेशमें ग्रीष्मकालको प्रचुर परिमाणसे मिलता है। इसकी भी मादकताशक्ति यथेष्ट है। उसको पीनेको तमाखूमें मिला गांजेको तरह चिलम पर रख करके आज पीया करते हैं। भारतमें गांजे पौदेके फूलमें होता है। परन्तु फूलके बीचमें डिम्बकोषके भीतर बीज पड़ कर गर्भसञ्चार होनेसे रस सूख जाता है। उसीसे किसान लोग गर्भनिवारणको उतनी चेष्टा किया करते हैं। स्त्री और पुरुष उभय जातीय वृक्ष भी होते हैं। उसमें अधिक पत्तियां आनेसे झाड़ बन जाता और फूल नहीं आता। परन्तु इस श्रेणीका पौदा रहनेसे गांजेकी खेतीकी कोई हानि नहीं पहुंचती। ऐसे पेड़ोंको खस्सी कहा जाता है।

इधर उधर प्राय: गांजेका पेड़ सभी समयको उपजा करता है। फिर भी खेती करनेवाले आश्विन वा कार्तिक मासमें ही इसका बीज वपन करते हैं। पौष माघ मासको पेड़ फलने लगता है।

जिस जमीनपर किसी बड़े पेड़की छाया पड़ती, गांजा बुननेके लिये उपयोगी नहीं ठहरती माघ वा फाल्गुन मासके ही गांजेका खेत जोता जाता है। किसी किसी जगह कुछ पीछे भी भूमिकर्षण करते हैं। ३।४ दिनके अन्तर पर एक ही खेतको कमसे कम ४बार जोतना जरूरी है, उस में किसी किस्मका घास फूस न रहे, खूब साफ कर डालना चाहिये। निम्न भूमिसे मट्टी ले जा करके उसमें एक या २ हाथके फास ले पर टोकरी टोकरी डाल देते हैं। थोड़े दिनों बाद खेतको बगल पर कुदाल या खुरपीसे घास और दूसरे छोटे छोटे पौदे काट करके खेतमें फेंके जाते हैं। फिर पासकी जमीनसे मट्टी ला करके मेंड ऊंची उठाते हैं। समय समय पर गोबरको खाद और उस पर मई देनी पड़ती है। इससे चिमड़ी मट्टी टूट जाती और घास जम आती है।

वृष्टिका जल बहा देनेके लिये नाली बनाते हैं गोबर आदि खाद इकट्ठी करके भाद्रमासको खेतमें डालते हैं। आश्विन मासको आकाश परिष्कृत रहनेसे और एक बार वही खेत अच्छी तरह जोता और मईसे बराबर किया जाता है।

एक ओर खेत वपनोपयोगी बनता और दूसरी ओर बीज स्थानान्तरमें अङ्कुरित हुआ करता है। जमीन तैयार होनेपर बीजोंको चलमे रोपण किया जाता है बीज तैयार करनेमें कोई डेढ़ मास लगता है। उस समय टेहनियां ८ से २० अङ्गुल तक बढ़ती हैं। बीजमें जो छोटा आता, रोपण नहीं किया जाता। अपेक्षाकृत छोटा पौदा ऊंची और बड़ो आर्द्र भूमिमें रोपित होता है। १०।१२ अंगुलके अन्तर पर प्रत्येक वृक्षको रखते हैं। आश्विनमासको ८।१० दिनके अन्दर यह वपन कार्य न कर लेनेसे पैदावार बिगड़ जाती है। बोनेके बाद दो तीन दिन पानी न बरसना अच्छा है। कारण वृष्टि होनेसे जड़ भीगती और पौदा भी अखीरको सूखता है। ऐसा होने पर फिर दूसरा बीज लाकर डालना पड़ता है।

जिस जगह पर बीज तैयार होता, उसका हिसाब अलग है। वृष्टिकी २।१ भरनोंके बाद ज्येष्ठ माससे आरम्भ करके भाद्र मास पर्यन्त उसको ३ ४ बार जोतते हैं। फिर मई देकर जमीन बैठाते और मट्टीको खूब बुकनी डाल करके धूपके वकत बीज गाड़ आते हैं। फिर मई दे करके मट्टी बराबर की जाती है। एक बिस्वा जमी-

नमें कोई ४।६ सेर वीज तैयार होता है। उसको एक बीघे जमोनमें मजेसे लगा सकते हैं। खेतमें रोपित होनेके ४ दिन पीछे ही वीजसे अङ्कुर फूटता है। ६।७ दिन पीछे वही हरी पत्ती जैसा लगने लगता है।

जिस जमोनमें मोथा होता, अच्छा वीज निकलता है। फूटनेके समय वृष्टि पड़नेसे वीज बिगड़ जाता है। खेत खुले स्थानमें रहना आवश्यक है। उसमें घास जगनेसे उपकार हो है, अपकार कभो नहीं। प्रत्येक खेतमें ४।५ वत्सर वीज प्रस्तुत हो सकता है।

रोपणक्षेत्रमें जहां जहां मट्टी ऊंची उठाते, अङ्कुर लगाते हैं। रोपणके ३।४ सप्ताह पीछे आश्विनके अन्त वा कार्तिकके आदिमें पौदेको जड़को छोड़ करके ऊंची मट्टीका दूसरा अंश निकाल डाला जाता है। फिर पौदे की जड़में खली या खलीमें गोबर मिला करके दिया करते हैं। इसके बाद मट्टी उच्च की जाती है। अग्रहायण मासके आरम्भमें पौदेके नीचेकी दो एक डालियां काट या तोड़ डालते हैं। ऐसा करनेसे वृक्षका तेज ऊपरको चढ़ता है। फिर क्यारीको मध्यस्थित निम्नभूमि हलसे जोतनी पड़ती है।

अग्रहायण मासको १०।१२ दिन पीछे या उससे पहले ही गांजेका परीक्षक आता, जो पोतदार कहलाता उसको दो तीन बार परीक्षा लेनी पड़ती है। वह सूर्योदयसे पहले फूलोंको जांच करता है। जो फूल स्त्रीजातीय समझ पड़ते, उनके वृन्त वह तोड़ देता है। पीछे कृषक जा करके उनको उखाड़ डालता है। इसी प्रकारसे अगहनमें तीन और पूसमें एक मरतबा परीक्षा हुआ करती है। इसका नाम 'बकाई' है। फिर भी मादा पौदा बिलकुल नष्ट नहीं होता, कितने ही पेड़ बच जाते हैं। बकाई हो जाने पर किसान अपने आप एक बादर पौदे देखने आते और जहां जहां पीले पत्ते पाते, तोड़ जाते हैं। फिर घने वृक्षोंमेंसे कुछ उखाड़ करके खाली जगह पर लगा देते हैं। रोपण कार्य समाप्त होने पर भूमिकी अवस्था देख एक बार मार्गशीर्ष और एक बार पौषमें दो बार सिञ्चन करना पड़ता है। फिर पौषमासके शेष वा माघमासके प्रारम्भको पेड़में फूल आने लगते हैं। माघमासके बीचों बीच वह भरपूर हो जाते हैं। फूल जितना ही पकता, उतना ही अरुणवर्ण निकलता हैं। उस समय वह खाली या खोखला कहलाता है। पुंजातीय गांजेके फूलको 'कली' कहते हैं। माह बीतते या फागुन लगते लगते गांजेका पेड़ कटता है।

गांजा दो प्रकारका होता है—चपटा और गोल। चपटा गांजा तैयार करनेको एक घासदार जगह साफ की जाती है। सवेरे ८ बजेके समय गांजेको जटा काट लाते अर्थात् प्रातःकालकी ओससे उसको बचाते हैं। जो वृक्ष खूब पूर्णता पाते, पहले ला करके घास पर १ दो बजे तक सुखाये जाते हैं। फिर फूलको ओर एक हाथसे कुछ ज्यादा छोड़ करके उसका बाकी हिस्सा काट डालते हैं। उसीके साथ जिन डालियोंमें फूल नहीं आते, छांटते चले जाते हैं। फिर उसको सारी रात ओस में रखते हैं। कहीं कहीं जाड़ेको ज्यादत हो जाने पर कटाई होती है। दूसरे दिनको २।३ बजे उनकी पुड़ियां बांधी जाती हैं। मोटाईके अनुसार एक एक पुड़ियामें कभी तीन चार, कभी ८।१० कलियां रहती हैं। इस प्रकार बंध जाने पर एक चटाई डाल करके उस पर वही पुड़िया घेरेकी सूरतमें अर्थात् कलियोंका सिरा एक दूसरेके सामने रख करके जमा देते हैं। एकके ऊपर दूसरी रख दी जाती है। फिर ४।५ आदमी एक दूसरेका कन्धा पकड़ करके पैरोंसे उनको कुचला करते हैं। बायें पैरसे डांजेको दबाते और दाहनेसे चोट चलाते हैं। थोड़ी देर ऐसा करने पर गांजा चपटा पड़ जाता है। फिर एक दूसरी पुड़िया ला उस पर और रख देते और वैसे ही कुचल लेते हैं। उस पर चटाई ढांक करके २।३ आदमी बैठते हैं। इससे कली अपने लगे हुए दूध जैसे निर्यासमें लिपट जाती और पत्र तथा वीजको विच्छिन्नता देखाती है। फिर कोई दूसरी चटाई बिछा दोनों हाथमें एक एक पुड़िया ले परस्पर आघात किया करते हैं। इससे वीजों और पत्तियोंके झड़ जाने पर जटाओंको अलग किसी चटाईमें गोल गोल जमा करके रख छोड़ते हैं। इससे जो जटाएं पहले ऊपर रहीं, नीचे आ पड़ती हैं। इस तरतीबके बाद मड़ाई और कुटाई होती है। दो तीन वैसा करके जटाओंको अलग रख देते हैं। फिर वीजों और पत्तियोंको अञ्जलिमें ले कृषक

खड़े हो करके थोड़ा थोड़ा छोड़ते हैं। इससे वीज नोचे गिर पड़ते और पत्ते उड़ चलते हैं। वही वीज इकट्ठा करके दूसरे मालके लिये रख लिया जाता है। फिर एक चटाई डाल करके किसान उस पर खड़े खड़े जटाओंको वाम पदसे दबाते और दक्षिण पद द्वारा नीचेसे ऊपर तक कुचल फिर झाड़ करके अलग रखते हैं। ऐसा हो कई बार करके घास पर चटाई दबा देते, दूसरे दिन जा करके चिपटे हुए अंशको स्वतन्त्र कर लेते हैं। दो-तीन दिन वैसा ही करने पर गांजा धूपमें डाल दिया जाता है। फिर वीज और शुष्क पत्र संगृहीत होते हैं। इसीका नाम खोंचा है। फिर गांजेकी कलियां अलग रख करके मांड़ो जाती हैं। इसके पीछे १०।१० कलियां एक वण्डलमें बांधते हैं। किसान उन्हें घर ले जा धूपमें २।१ दिन सुखा बांसके माचे पर उठा करके रखते हैं।

गोल गांजा बनानेकी भी यही प्रणाली है। उसको भी काट करके ले आते और वण्डल बांध करके धूपमें जमाते हैं। रातको ओस भी खिलायी जाती है। दूसरे दिनको जिसमें बड़े बड़े फूल रहते, उनमें किसीको तीन, किसीको चार और किसीको ५ टुकड़े तक करते हैं। फिर जिस जिस पौदेमें फूल नहीं आता, छोड़ दिया जाता है। चपटे गांजेकी बनिस्वत इसमें और भी बंछाई करना जरूरी है। इसके मनोनीत पुष्प रौद्रमें सुखाते हैं। तीसरे पहरको एक कतारमें २।४ खूंटे गाड़ तिरछा बांस बांध उसकी दोनों ओर दो चटाइयां डालते और उस पर गांजेको २ हिस्सोंमें मिल मिलेवार लगाते हैं। १०।१२ आदमी खुंटोंको दोनों ओर खड़े हो गांजेको पैरकी दाबसे मल करके गोल बना लेते हैं। इसीका नाम 'पहली मलाई' है। छोटे छोटे वण्डल हाथ ही से मरोड़ लिये जाते हैं। इस प्रकार कलियां गोल पड़ जानेसे एक एक करके धूपमें सुखाना पड़ता है। कुछ देरके बाद उन्हें उठा करके दूसरी मलाई की जाती है। बीच बीच हाथसे मरोड़ना पड़ता है। इसीका नाम 'हथमुट्ठा' है। दूसरे दिन फिर सुखा करके वैसा ही किया जाता है। इसके बाद अति सावधान हो कौशलपूर्वक पूले बांध करके रखते हैं। इसीको 'सरबन्दी' कहा जाता है। पूलोंको नीचेकी तरफ रस्सोसे कस करके बांधना पड़ता है। दूसरे दिन धूपमें सुखा करके किसान गांजेके पूले हाथसे ऐंठते हैं। इसमें कुछ गांजा टूट करके गिर जाता है। उसको चूरा कहते और अलग बेचते हैं। बीच बीच उंगली या थपकसे कलीको सब सूखी पत्तियां झाड़ दी जाती हैं। फिर कलीको ढंक करके डण्ठल धूपमें रखते हैं। इसी प्रकार गांजा तैयार होता है।

गांजा बनानेमें धूप बहुत जरूरी है, उसके अभावमें आग पर गर्म कर लेनेसे भी काम चल सकता है। यह तरह तरहसे बिगड़ सकता है। असमय पानी बरसने पर कीचड़मट्टी लगनेसे पेड़ बिगड़ जाता है। फिर बरसातमें एक कीड़ा निकलता जो कलीको काटा करता है। घुण जैसा कोई दूसरा कीड़ा भी इसको मारता है। पेड़में काले काले धब्बे पड़ जानेसे कीड़ा लगा हुआ समझा जाता है। गांजेका एक रोग होता है। उसमें डण्ठल और पत्तियां पीली पड़ जाती हैं।

युक्त प्रदेशमें गांजेकी कृषीको निषिद्ध समझते; परन्तु दूसरे प्रदेशोंमें किया करते हैं। हिमालयके पास गढ़वालमें खूब चरस होता है। उधर बहुतसे लोग गांजेके वीज भून करके खाते हैं। आसाममें भांगका एक पानीय बताया जाता, जो गुगटा कहलाता है। पञ्जाबमें गांजा नहीं होता।

पहले सब लोग बिना रोकटोक गांजेकी खेती कर सकते थे। परन्तु १८७६ ई०को गवर्नमेण्टकी अनुमति लेनेका कानून चला। गांजा तैयार होने पर सरकारी गोदामको भेज दिया जाता है। इसके महसूलसे सरकारको बड़ा फायदा होता है। समय समय गांजेका मूल्य बढ़नेका यही कारण है।

गांजेड़ी बायें हाथमें गांजा ले करके दाहने हाथके अंगूठेसे अच्छी तरह मलते हैं। उससे गांजा लस पकड़ लेता है। फिर उसमें तम्बाकू मिला किसी कड़ी चीज पर रख करके चाकूसे बारीक बारीक काटते हैं। आखीरको चिलममें कङ्कर लगा गांजा भर देते और उस पर आग चढ़ा करके पी लेते हैं। बातकी बातमें नशा आता, आंखका रंग सुर्ख पड़ जाता और मत्था मानो चकराता है। तुर्किस्तानमें और तरहसे गांजा पीते हैं। वहां इस

का अक तम्बाकू डाल करके निगालीसे पीया जाता है। उसमें बड़ा नशा होता है। अपने देशमें भांग पी करके लोग वैसे हो मतवाले बन जाते हैं। गंजा पीनेसे मानसिक अवस्था कैसी हो जाती, धूर्तसमागम नामक संस्कृत प्रहसनमें निरूपित हुई दिखलाई है—

> "दलति हृदयमितस्तोहमग्रो ति चेत:
> स्फुटति सकलदेहे कोकसग्रन्थिसन्धि:।
> विरम विरम शिवाम्भुलमागसमध्यात
> शिव शिव शिव सद्यो जोवनं कुटातीव॥"

किसी किसी डाक्टरके कथनानुसार गांजा पीनेसे लोग पागल पड़ जाते हैं। इससे जो अनिष्ट आता, उसको निवारण करनेके लिये शिक्षित समुदाय सचेष्ट दिखलाता है। परन्तु खेद है—सरकार इसका व्यवहार नहीं रोकती। लोग गांजा पी पी करके उत्सन्न हो रहे हैं। किसी कविने कहा है—

> "गंजवा न पीश्रो संयां गरमी लगतु है
> जरिहै हैं सकल करेज है।"

गाँठ (हिं० स्त्री०) गिरह।

गाँठकट (हिं० पु०) वह चोर जो पासके कपड़ेमें बंधे हुए रुपये उठा लेता है, गिरहकट। २ उचितसे अधिक मूल्य पर सौदा बेचनेवाला, ठग।

गाँठगोभी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारको गोभी। इसमें गूदेदार गाँठ होती है। इसकी तरकारी बनाई जाती है।

गाँठदार (हिं० वि०) जिसमें बहुत गिरहें हों।

गांठना (हिं० क्रि०) १ गांठ देना। २ जीर्ण वस्तुओंमें चीप देना। ३ मिलाना, योगकरना।

गाँठी (हिं० स्त्री०) १ स्त्रियोंके हाथोंकी कुहनीका एक प्रकारका गहना। २ भूसे वा डंठलका गाँठदार छोटा छोटा भाग।

गाँड़ (हिं० स्त्री०) १ गुदा। २ किसी पदार्थके नीचेका भाग जिसके आधार पर कोई वस्तु खड़ी रह सके, पेंदा, तला।

गाँडर (हिं० स्त्री०) हाथ वा सवा हाथ लम्बी एक तरह की घास। जहां जल बहुतायतसे मिलता है, उसी स्थान पर यह घास उपजती है। विशेष नेपालकी तराईमें पायी जाती है। इसकी पत्ती सरकंडेसे मिलती है। जेठ और आषाढ़ मासमें इसकी सूखी जड़में अङ्कुर होते और धीरे धीरे बढ़ने लगती है। इसकी सींकेमें फूल रहता है। मनुष्य सींकेसे झाड़ू तथा छोटेर टोकरी बनाते और पौधेको काटकर छप्पर छाते हैं। इसका मूल सुगन्धित होता। फारसी भाषामें इसे खस और संस्कृतमें उशीर कहते हैं। २ गिरहदार एक प्रकार की दूर्वा। यह बहुत फैलती तथा स्थान स्थान पर जा पकड़ती है। मवेशी इसे बहुत पसन्द करते। यह कड़ई, कसैली तथा मीठी होती है। यह दाह, तृष्णा, कफपित्तको दूर करता और लोहूके विकारको नष्ट करता है। गण्डदूर्वा।

गाँड़ा (हिं० पु०) १ किसी वृक्ष वा पौधेका कटा हुआ भाग। २ ऊखका वह भाग जो कोल्हूमें देकर रस निकालते हैं। ३ ऊख, ईख, केतारी।

गांडी (हिं० स्त्री०) चौपायोंके खानेको एक तरहकी घास। इसकी जड़ सुगन्धित होती है। इस घासमें विशेषता इस बातकी है कि सुखा कर दस या बारह मास रख देने पर भी इसका स्वाद नहीं बदलता।

गांडू (हिं० वि०) १ जिसे गांड़ मरानेकी आदत पड़ गई हो। २ निकम्मा। ३ जिसे साहस नहीं हो, कायर, डरपोक।

गाँती (हिं० स्त्री०) गातो देखो।

गाँथना (हिं० क्रि०) १ गन्थन करना, गूथना। २ योग करना।

गाँधिल—पञ्जाब प्रान्तको एक जाति। यह लोग व्यापार करते और युक्तप्रदेशमें भी अल्पसंख्यक मिलते हैं।

गाँव (हिं० पु०) वह जगह जहां बहुतसे गृहस्थ रहते हों। छोटी बस्ती।

गाँस (हिं० स्त्री०) १ गन्थन, बंधन। २ प्रतिरोध, रोक टोक। ३ वैर, द्वेष, ईर्षा। ४ हृदयकी गुप्त बात। ५ तीर वा बरछीका फल, अस्त्रका अग्रभाग। ५ अधिकार, शासन।

गाँसना (हिं० क्रि०) १ ग्रन्थनकरना। २ गठना, कसना, ठस करना।

गाँसी (हिं० स्त्री०) तीर वा बरछीका फल, किसी अस्त्र का अग्रभाग।

गारु[illegible]—गारुक देखो।

गारुड़ि (सं० पु०) १ पथदर्शक, रास्ता दिखानेवाला।

२ वह मनुष्य जो दूसरेको किसी स्थानके प्रसिद्ध प्रसिद्ध स्थानोंको दिखाता हो।

गाउन (अं० पु०) १ यूरोप तथा अमेरिका आदि देशोंकी स्त्रियोंके एक प्रकारका पहनावा। २ एक प्रकारका लंबा ढीला वस्त्र जिसके परिधानके अधिकारी सिर्फ ईसाई धर्मके आचार्य, ग्रेजुएट, बड़े बड़े न्यायकर्त्ता तथा थोड़े विशिष्ट मनुष्य हैं।

गाउघप्प (हिं० वि०) १ दूसरोंकी चीजको पचानेवाला, बेमान, जमामार। २ बहुत व्यय करनेवाला।

गाकर—पञ्जाब प्रदेशकी एक जाति। यह लोग सिन्धु और वितस्ता नदीके बीच सिन्धुसागर दोआब नामक स्थानके उत्तरांशवासी तूरानी हैं। इन्हें कहीं कहीं गाकर या गागर भी कहा जाता है।

इतिहास पढ़नेसे समझ पड़ता है कि वह बहुत दिनों से भारतके उत्तर-पश्चिमांशमें रहते हैं। परन्तु उनके भारत आनेका ठीक पता नहीं।

ऐतिहासिकोंके मतानुसार पुरुष और तक्षशिला राज्य-के उत्तर वर्तमान सुहाँ नदीके उत्पत्तिस्थान मूरी तथा मार्गल गिरिसङ्कटके निकट प्राचीन अभिसार राज्य था। वही स्थान वर्तमान गाकरोंकी वासभूमि और वही अभिसार राज्यकी पूर्वतन प्रजाके वंशधर जैसे अनुमित होते हैं। वह भारतवासी हिन्दू नहीं हैं। इतिहास पढ़नेसे यह भी ज्ञात होता है कि अभिसारराज उत्तर मद्र (Media) तथा पारदनिवासी सर्पोपासक शक रहे। पुरावेत्ता एरियानने उक्त मतको सम्भवपर और यथार्थ जैसा ठहराया है। फिर मुसलमान लेखक लिखते और यह अपने आप भी कहते हैं कि वह अफ्रेशियाके कयान देशसे जा करके पञ्जाबके उत्तरपश्चिमांशमें बसे और मङ्गल नगरके उस पार वितस्ता किनारे अन्नीयान नगरमें राजधानी स्थापन करके रहे। पुरातत्त्ववित् कनिङ्गहाम साहब इन दोनों प्राच्य नामोंसे अनुमान करते कि वह पुराने अरबी या अरफी लोगोंको शाखा ठहरते हैं। किसी समय वह सौभाग्यवान् और बलवान् थे, पूर्वाभिमुखी हो करके भारत जा पहुंचे। खुरासानके अन्तर्गत वर्तमान निशापुरमें उनकी राजधानी रही। इतिहासवेत्ता प्लावोने उक्त स्थानवासी लोगोंको 'अपर्णी' जैसा उल्लेख किया है। यह भी दाही शाखान्तर्भुक्त तूरानी जाति हैं। कनिङ्गहामके सिद्धान्तानुसार हरकानियाके रहनेवाले अरबोंने दरायु हयस्तासम अथवा तत्पूर्ववर्ती किसी शक राजाके राजत्वकालको वितस्तातीर अन्नीयान नगरमें जा करके उपनिवेश स्थापन किया और हिरोदोतास वर्णित "सागर" वा "...कर" शब्दसे गाकर नाम निकला। शब्द-तत्त्ववेत्ता बतलाते कि शाक, साकर और गाकर शब्दसे किसी लौहास्त्रका बोध होता जो अबर नामधेय लोगोंका जातीय अस्त्र है। सुतरां देश और कालभेदसे सागर वा आबर अस्त्रधारी प्लावोल्लिखित अपर्णिओं (हरकानियावासी अबरों) ने गाकर जैसा नाम धारण किया।

सिवा इसके डिओनिसियास, प्रिसकियानाम प्रभृति ऐतिहासिकोंके ग्रन्थोंमें किसी समृद्धिशाली गागर जातिका उल्लेख है। पञ्जाब प्रदेशको शतद्रु और अशिक्री नदी निकटवर्ती तक्षशिला राज्यके पहाड़ोंमें उनका वास था। सम्भवत: वही वितस्ता-नदीतीरवर्ती गाकर जाति हैं। वह वेकस हियाक्लिसका उपासना करते थे। (Dionysius orbis descriptio, V. 1143. Priscianus, V. 1050) कोई अनुमान करता कि सिन्धु और वितस्ता नदीके मध्यवर्ती गन्धगड़ पर्वत पर 'मसवानी' अफगान रहते हैं। वहां उनको 'गन्धगड़िया' कहा जाता है। यही गन्धगड़ पर्वत किसी कालको गाकर वा गागर जातिका सुरक्षित आवासस्थान रहा। एतद्व्यतीत और भी मालूम पड़ता कि स्यालकोटके यादववंशीय राजा रसालुके साथ गन्धगड़वासी दस्युओंको विशेष शत्रुता रही। पीछेको उनके वंशधरों कर्तृक अभिसारके गागर सदल दमित हुए और दो शताब्दियोंतक निस्तेज रहे। सुतरां अनुमान लगता है कि गन्धगड़वासी 'गन्धगड़िया' और पाश्चात्य इतिहासगत ... (Gargaridae) शब्द गाकर जातिका ...न्तर मात्र है।

'फरिश्ता'में लिखा है कि उन्होंने पञ्जाबके अन्तर्गत भेरा ...को चिल... प्रदेशके कछवाहवंशीय राजा केदारको ... बाहर करनेमें तदीय आत्मीय राजा दुर्गाका साहाय्य किया। ६३ हिजरीको गाकरोंने अफगानोंसे सन्धि करके लाहोरके राजाको वशीभूत किया और

उनके राज्यका कुछ अंश अपने आप ले लिया। १००८ ई०को जब महमूद गजनवीने भारत आक्रमण किया, कोई ३०००० गाकरोंने पेशावरके पास हिन्दू राजाओंको साहाय्य दिया। उस युद्धमें महमूदकी प्रायः ५००० सेना विनष्ट हुई। १०७८ ई०को इब्राहीम गजनवीने युध पर्वतका दारपुर दुर्ग अधिकार किया। यह दारपुर जलालपुरसे कुछ उत्तरको वितस्ताके तीर पर अवस्थित है। नगरके लोग खुरासानियोंके वंशधर हैं। अफ्रासियाब कर्तृक स्वदेशसे ताड़ित होने पर वह उक्त स्थानमें जा बसे हैं। वह भी इनकी ही तरह अपने अपने घरमें विवाह करते और किसी अपर जाति वा अंशोंसे सम्बन्ध नहीं रखते। कितने ही लोगोंके अनुमानमें गाकर और दारपुरके खुरासानी एक जाति हैं। चन्द बरदाई कविके पृथ्वीराजरासो नामक ग्रन्थमें लिखा है कि ११८० ई०को मुहम्मद गोरीके भारत आक्रमण करने पर उनके सरदार मलिक हयातने पृथ्वीराजको सहायता दी।

कहते हैं कि मुहम्मदगोरीके शेष राजत्वमें गाकर सरदार सर्वप्रथम इसलाम धर्ममें दीक्षित हुए। परन्तु इससे पहले ही उन्होंने विजातीय उपाधि 'मलिक' ले रखा था।

१२०५ ई०को इन्होंने पञ्जाबके लाहोर राज्य पर्यन्त आक्रमण किया। १२०६ ई०को यह मुसलमान सुलतानके खीमेमें घुस पड़े और छातीमें छुरी भोंक उनको मार डाला। परन्तु १२२५ ई०को इन्हें मुगल सम्राट् बाबरकी अधीनता माननी पड़ी। १७६५ ई०को रावलपिण्डीके समतल क्षेत्रसे सिखों द्वारा खदेरे जाने पर यह मूरी पर्वत पर पहुंच करके स्वाधीन भावसे राज्य करते रहे। वहीं १८३० ई०को सिखोंसे इनकी लड़ाई हुई। बहुत रक्तपातके पीछे इन्होंने पराभव माना था। १८४८ ई०को रावलपिण्डी सिखोंके हाथसे अंगरेजोंके अधिकारमें आने पर यह परवर्ती ४ वर्ष तक उनसे लड़ते रहे और १८५७ ई०को पञ्जाबकी राजधानी मूरी नगर पर चढ़ चले।

आजकल यह पञ्जाब प्रदेशके रावलपिण्डी, वितस्ता तीरवर्ती प्रदेश, गुजरात और हजारा नामक स्थानमें रहते हैं।

फरिश्तामें लिखा है—कन्यासन्तान होनेसे कोई भी गाकर उसको बाजार ले जाता और वहां एक हाथमें कन्या और दूसरे हाथमें पैनी छुरी ले करके चिल्लाता है; यदि उस कन्याका कोई प्रार्थी हो, शीघ्र आ जावे। किसीके आकर न पहुंचनेसे तत्क्षणात् नवजात कन्याको दो टुकड़े कर डालते हैं। उसी कारणसे इनमें एक स्त्रीके बहुतसे स्वामी देख पड़ते हैं। ई०से ३२७ वर्ष पहले यूनानियोंके भारत आक्रमणके समय रावलपिण्डी प्रदेशमें शक जातीय 'तक्क' शाखाका वास था। सम्भवतः यह 'तक्क' संस्कृत तक्षक शब्दका अपभ्रंश है। कारण शकोंमें सर्पोपासक कोई दूसरा नागवंश भी होता है। बहुत लोग अनुमान करते कि तक्कवंशीय शक लोगोंको मुसलमानोंने गाक्कर या गाकर जैसा कहा है।

गागर (हिं० स्त्री०) गगरी, घड़ा।

गागरा (हिं० पु०) १ गगरा देखो। २ भंगियोंकी एक जाति।

गागरी (हिं० स्त्री०) घड़ा, गगरा।

गागरौन—राजपूताना कोटा राज्यके कनवास जिलेका एक ग्राम और दुर्ग। यह अक्षा० २३° ३८' उ० और देशा० ७६° १२' पू०में आहू और कालीसिन्धु नदीके सङ्गम स्थल पर झालरापाटन छावनीसे ढाई मील उत्तर-पूर्व अवस्थित है। गागरौनका किला राजपूतानामें एक बहुत मजबूत किला है। कहते हैं—उसे डोड राजपूतोंने बनाया था। ई० १२ वीं शताब्दीके अन्त तक उनका इस पर अधिकार रहा, फिर खीची चौहानोंने आकर दखल किया १३०० ई०को खीचियोंने सफलतापूर्वक अपने राजा जैतसिंहके अधीन अला-उद्-दीनका अवरोध रोका था। किन्तु प्रायः १४२८ ई०को राजा अचलदासने मालवके शङ्गशाहसे गागरौन अधिकार किया। १५१८ ई०को मुसलमान ऐतिहासिकोंके वर्णनानुसार भी इसके अधिकारी थे, परन्तु महमूद खिलजीने उनको आक्रमण करके पकड़ लिया और मार डाला। इसके थोड़े ही दिनके पीछे मेवाड़के राणा संग्राम-सिंहने मुहम्मदको हराया और १५३२ ई० तक गागरौनको अपने अधिकारमें रखा। फिर गुजरातके बहादुर शाहने इसे अधिकार किया था। तीस वर्ष पीछे मालव आते हुए अकबर बादशाह यह

था पहुंचे। दुर्गके सेनापति उनको भेंट देकर मिले थे। १८वीं शताब्दीके आरम्भ तक यह मुगलोंके अधिकारमें रहा। फिर बादशाहने कोटाके महाराव भीमसिंहको गागरौन प्रदान किया था। अन्तको युवराज जालिमसिंहने किलेको बना और बढ़ा दिया।

ग्राममे दुर्ग पृथक् है। दोनोंके बीच एक मजबूत पक्की दीवार खड़ी और चटानोंमें गहरी खाई खुदी है। आने जानेके लिये पत्थरका एक पुल बना है। यहांके तोते बहुत सुहावने होते और सिखानेसे बहुत जल्द पढ़ने लगते हैं। पहले कोटा महाराजकी गागरौनमें टकसाल रही। इसकी आबादी कोई ६०१ होगी।

गागला—बङ्गालके रङ्गपुर जिलेका एक वाणिज्यप्रधान गण्डग्राम। यह अक्षा० २५° ५८' उ० और देशा० ८८° ४०' पू०में धरला और ग्राङ्ग नदीके मध्य अवस्थित है। यहां प्रतिवर्ष उत्पन्न द्रव्योंमें सन, तम्बाकू और अदरककी रफतनी अधिक होती है।

गागाभट्ट—दिनकर भट्टके पुत्र, रामेश्वरके पौत्र और सुप्रसिद्ध कमलाकर भट्टके भ्रातुष्पुत्र। इनका प्रकृत नाम विश्वेश्वर भट्ट रहा। १६१२ ई०को यह विद्यमान थे। इन्होंने कर्मप्रदीपिका, दिनकरोद्योत, निरूढ़पशुबन्धनप्रयोग, (बौध), पिण्डपितृयज्ञप्रयोगसार, जैमिनीसूत्रको भट्टचिन्तामणिनाम्नी टीका, मीमांसाकुसुमाञ्जलि, चन्द्रालोककी राकागम नाम्नी टीका, श्लोकवार्तिककी शिवार्कोदय नाम्नी टीका, सुज्ञानदुर्गोदय और आपाजी पुत्र बलाल वर्माके आदेशसे कायस्थधर्मप्रकाश नामक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किया।

गाङ्ग (सं० पु०) गङ्गाया अपत्यम्। १ गङ्गापुत्र, भीष्म। २ कार्त्तिकेय। ३ स्वर्ण, सोना। ४ धुस्तूर, धतूरा। ५ कसेरू। ६ हिलसा मछली। (त्रि०) ७ गङ्गासम्भूत जलादि, गङ्गाका निकाला हुआ जल। (क्लो०) ८ मेघनिःसृत जलविशेष, वर्षाका पानी। सुश्रुतके मतसे यह गाङ्गजल समस्त दोषोंका नाशक, बलकर, पवित्र, रसायन, श्रम, क्लान्ति और पिपासानाशक, कण्डूदोषनिवारक, लघु, मूर्च्छा, तृष्णा, वमि तथा मूत्रस्तम्भनिवारक है। दिन और सन्ध्याके समय यह जल पड़ता है। ९ नदीका तट, नदीका किनारा। (पु०) १० महालक्ष्मीके भक्त च्यवनमुनि गोत्रके एक चन्द्रवंशीय राजा आयान्तिके पुत्र। ११ वागीश्वरी देवीके भक्त अत्रिगोत्रीय एक राजा, प्रमाथिके पुत्र १२ एक राजवंश। गांगवंश देखो।

गाङ्गट (सं० पु०) गाङ्ग' नदी तटादिङ्गमटति अट-अच्। मत्स्यविशेष, झींगा मछली।

गाङ्गटक (सं० पु०) गाङ्गट स्वार्थे कन्। गाङ्गटमत्स्य, झींगा मछली।

गाङ्गटेय (सं० पु०) गाङ्गट स्वार्थे ढक्। गाङ्गट मत्स्य, झींगा मछली।

गाङ्गताक—बङ्गालमें सिक्किम राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २७° २०' उ० और देशा० ८८° ३८' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ७४८ है। सिक्किममहाराजका यहां एक वासभवन है।

गाङ्गदेव (सं० पु०) सूक्तिकर्णामृतमें उद्धृत एक कवि।

गाङ्गपुर—१ छोटा नागपुरके अन्तर्गत एक देशीय राज्य। किसीके मतसे गङ्गवंशीयसे प्रतिष्ठित होनेके कारण इसका नाम गंगापुर, गंगपुर या गांगपुर पड़ा है।

२ बङ्गालमें उड़ीसाका एक करद राज्य। यह अक्षा० २१° ४७' से २२° ३२' उ० और देशा० ८३° ३३' से ८५° ११' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण २४८२१ वर्गमील है। इसके उत्तरमें जशपुर राज्य और रांची जिला; पूरबमें सिंहभूम, दक्षिणमें बोनाई, सम्बलपुर और वामरा राज्य तथा पश्चिममें समुद्र पृष्ठसे ७०० फीट ऊंचे पर एक विस्तृत समतल क्षेत्र है। यहांकी प्रधान नदियां इब, संख और कोइल हैं। 'इब' जशपुरसे निकल कर उक्त राज्य होती हुई संबलपुरके निकट महानदीमें गिरी है; संख रांचीसे और कोइल सिंहभूमसे निकली है। संख तथा कोइल नदियां गांगपुरके निकट एक दूसरीसे मिल कर उड़ीसा होकर प्रवाहित हैं। यहांके जंगलमें वाघ, चीतावाघ, भेड़िया, तरक्षु (लगरबग्गा), भिन्न भिन्न तरहके हिरण और पक्षी पाये जाते हैं।

प्राचीन समय यह राज्य नागपुरके मराठा राजाओंके अधीन था; किन्तु १८०३ ई०में देवगांवकी सन्धिके अनुसार बृटिशके हाथ आया। १८०६ ई०में बृटिश सरकारने यह राज्य फिर उन्हें लौटा दिया था।

राज्यकी आमदनी कुल २४०००० रु० है, जिनमेंसे

ब्रटिश सरकारको १२५० रु० कर देना पड़ता है। यहांके प्रधान सनदके अनुसार अपना राज्यकार्य चलाते हैं। प्रति बीसवर्षमें सरकारसे कर घटाया या बढ़ाया जाता है। उड़ीसाके कमिश्नरके अधीन राजाको चलना पड़ता है। करका घटाना या बढ़ाना, अच्छी तरहसे राज्य कार्य ..लाना, उचितरूपसे न्याय करना तथा अफीम, नमक और शराब पर टैक्स लगाना ये सब कार्य कमिश्नरकी देख भालमें हैं। राजा कैदियोंको दो वर्ष कारागार और २०० रु०का दण्ड दे सकते हैं। उक्त दण्डसे यदि कुछ अधिक दण्ड देनेकी इच्छा हो तो राजा विना कमिश्नरको अनुमतिसे नहीं कर सकते हैं।

इस राज्यमें ८०६ गाँव लगते हैं। लोकसंख्यामेंसे १४६५४८ हिन्दू, ८८८४८ आदीम जाति, १६४० मुसलमान और १७५८ ईसाई हैं। नदियोंसे परिवेष्टित रहनेके कारण यह राज्य बहुत उपजाऊ है।

यहांकी प्रधान उपज धान, ईख और रेंड़ी है। यहांके जंगलमें लाख, धूना (धूप) और कत्था यथेष्ट पाये जाते हैं। ढिंगोरराज्यमें कोयलेकी खान है। यहां चूर्णकंकड़ और लोहे भी अधिक परिमाणमें मिलते हैं। इस राज्यमें १३ पुलिस ष्टेसन हैं जिनमें कुल २४ पुलिस इन्सपेक्टर और १३४ कोन्सटेबुल रहते हैं, पुलिस विभागमें २०००० रुपये खर्च होते हैं। इसके अलावा चौकीदार हैं जिन्हें जागीर दी जाती है। सुआड़ीमें एक कारागार है जिसमें सिर्फ ५० कैदी रह सकते हैं। इस राज्यमें .ां अस्पताल, १ मिडिल स्कूल, ७ प्राइमरी स्कूल और ८ लोअर प्राइमरी स्कूल हैं।

गाङ्गवंश, गांगेयवंश देखो।

गाङ्गायनि (सं० पु०) गंगाया अपत्यम्। १ भीष्म २ कार्त्तिकेय। ३ एक प्रवर ऋषि।

गाङ्गिनी (सं० स्त्री०) गंगाकी एक धारा। यह बंगमें गौड़ नगरके निकट गंगामें आ मिली है।

गाङ्गेय (सं० पु०) गंगाया अपत्यं ढक्। १ भीष्म।

"गाङ्गेयोऽयं महाभाग भविष्यति बलाधिकः।" (देवीभागवत २।४।२७)

२ कार्त्तिकेय। (भारत १।१३८ अ०) ३ हिलसा मछली। ४ भद्रमुस्ता, भद्रमोथा। (क्लो०) गंगाया अपत्यं ढक्। ५ स्वर्ण, सोना। (भारत वन) ६ धुस्तूर, धतूरा। ७ कशेरु, भद्रमोथा। ८ मुस्त, मोथा। इसका पर्याय—मेघाख्य, मुस्ता, गांगेय और भद्रमुस्तक है। (त्रि०) ८ गंगाजलादि।

गाङ्गेयवंश – दक्षिणापथका पराक्रान्त राजवंश। दाक्षिणात्यके दक्षिणांशमें इनको कोङ्गु या कोङ्गनो और उत्तरांशमें गङ्ग या गाङ्गेय कहते हैं। यह ठहरानेका कोई उपाय नहीं है, किस पूर्वकालको उनका प्रथम अभ्युदय हुआ। महाराज वीरचोड़के ताम्रशासन पाठसे समझ पड़ता है कि चालुक्यराज प्रथम विजयादित्यके पुत्र विष्णुवर्धनने गङ्गों और कदम्बोंको पराजय करके दक्षिणापथमें राज्य-विस्तार किया। इन्हीं विष्णुवर्धनके प्रपौत्र कीर्तिवर्मदेव ४८८ शकको राजत्व करते थे। ऐसे स्थल पर कीर्तिवर्मदेवसे अन्ततः एक शत वर्ष पूर्व विष्णुवर्धनका आविर्भाव मान लेते भी प्राय ३८८ शक (४६७ ई०) को गङ्गवंशका अस्तित्व ठहरता है। किसी किसी ऐतिहासिकके मतमें ..राक्रान्त आन्ध्रभृत्य राजाओंके अवमान पर ई० द्वितीय शताब्दीको गङ्ग और पल्लव राजा दाक्षिणात्यके कोल्हापुर, धारवाड़, वनवासी आदि स्थानोंका राजत्व करते थे।

गांगेयराज अनन्तवर्मा (चोड़गङ्ग)के १०४१ शकको प्रदत्त ताम्रशासनमें लिखित हुआ है—

"ततो ययातिरि जितारिरजनि तस्य सुतः सुतवरेशः।
सपूर्वशौर्योगुरोर्गिरिशा माताम्... प्रह्नः॥
अपुत्रत्वं प्राप्तः सुचिरमतिखिन्नो नृपवरः।
स गङ्गामाराध्यां नियततनिराराध्य वरदाम्।
अमेयं गांगेयं सुतमलभताराभा च तदा
क्रमसद्वंश्यानां भुवि जयति गङ्गान्वय इति॥"

चन्द्रसे बुध, बुधके पुत्र पुरुरवा, तत्पुत्र आयु, आयुके पुत्र नहुष, नहुषके लड़के ययाति, ययातिके बेटे तुर्वसु और तत्पुत्र गांगेय थे। तुर्वसुने गङ्गादेवीकी आराधना करके गांगेय नामक पुत्र लाभ किया था। उन्हींके वंशधर 'गंगान्वय' वा गांगेय कहलाते हैं। उक्त ताम्रशासन और कटक जिलेसे नवाविष्कृत उत्कलराज और ओनर-'संहदेवके ताम्रशासनमें भी गांगेयको पर पुत्रादिक्रमसे वंशावली इस प्रकार दी गयी है—विरोचन, सम्वेद्य वा साम्वेद्य, भास्वान्, दत्तसेन, सोम वा सौम्य, अश्वदत्त, सारांग चित्रांगद, शौरध्वज, धर्मपो, परीक्षित, जयसेन,

विजयसेन, वृषध्वज, शक्ति, प्रगल्भ और फिर तत्पुत्र कोलाहल। इन्होंने गङ्गवाड़ी राज्यमें कोलाहलपुर नामक नगर स्थापन किया। उत्कलराज नरसिंहदेवके तीनों प्रस्थ ताम्रफलकोंमें लिखा है कि उन्हीं कोलाहलका नाम अनन्तवर्मा था। उनके पुत्र पौत्रोंने बहुकाल कोलाहलपुरमें राजत्व किया।

चोड़गङ्गका उक्त ताम्रशासनपत्र देखते कोलाहलके पुत्रका नाम विरोचन था। फिर ८१ राजाओंके कोलाहलपुरमें राजत्व करने पीछे उनके वंशमें वीरसिंह नृपतिने जन्म लिया। वीरसिंहके कामार्णव, दानार्णव, गुणार्णव, मारसिंह और वज्रहस्त पांच लड़के हुए। ज्येष्ठ कामार्णव पितृव्यको* गङ्गवाड़ी राज्य प्रदान करके चारों भाइयोंके साथ अन्य राज्य जीतने चल दिये।

गङ्गवाड़ी और कोलाहलपुर कहां है? यह दोनों स्थान बम्बई प्रेसिडेन्सीमें हैं। कलभाविका शिलाफलक पढ़नेसे अनुमित होता, किसी समय वर्तमान बेलगांव, धारवाड़ और कोल्हापुर गङ्गवाड़ी देशके अन्तर्गत था।† नरसिंहदेवके बड़े ताम्रफलकमें १म कामार्णवके प्रसङ्ग पर समुद्रतटको गोकर्णस्वामीका उल्लेख है। चोड़गङ्गके ताम्रशासनमें लिपिबद्ध हुआ है—महीपति कामार्णवने कलिङ्गजयसे पहले गोकर्णस्वामीकी आराधना करके प्रसादसे साम्राज्य चिह्नरूप वृषभलाञ्छन‡ पाया था।

सह्याद्रि पर्वत किनारे समुद्र तट पर अक्षा० १४° ३२´ ७० और देशा० ७४° २२´ ३०´ पू०में गोकर्णनामक प्रसिद्ध तीर्थ है।* वहां गोकर्णस्वामीकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। इन्हीं गोकर्णसे २ कोस उत्तर गंगावालि नदीके तीर गंगवालि नामक कोई बन्दर देख पड़ता है। वहां इस समय भी गंगादेवीका पुरातन मन्दिर विद्यमान है। सम्भवतः यह स्थान गंगवंशीयोंकी बहुत पुरानी राजधानी गंगवाड़ी है। गंगावालि-प्रवाहित समुदय भूभाग पहले गंगवाड़ी राज्य जैसा प्रसिद्ध था। फिर कोलाहल (अनन्तवर्मा) के आधिपत्य काल यही क्षुद्र राज्य उत्तरको कोल्हापुर, धारवाड़ और बेलगांवके कुछ अंश पर्यन्त विस्तृत हुआ। मालूम होता है कि उसी समयसे गङ्गवाड़ि राज्य ९६ सहस्र ग्रामविशिष्ट जैसा गण्य हुआ। गांगेयराज १म अनन्तवर्माने अपने नाम पर जो कोलाहलपुर नामक नगर बसाया, आजकल कोल्हापुर कहलाया है। वर्तमान कोल्हापुर नगरकी अवस्था पर्यवेक्षण करनेसे अतिशय पुरातन जैसा समझ पड़ता है। यहां बहुत पुराने लाट अक्षरोंमें खोदित शिलालिपि विद्यमान है। महालक्ष्मीका मन्दिर अतिप्राचीन और प्रसिद्ध है। (कारवार देखो।) चोड़गंग प्रभृतिके विस्तृत ताम्र शासनमें पहले ही लक्ष्मी देवीका स्तव दृष्ट होता है। मालूम पड़ता है कि उक्त महालक्ष्मी ही गांगेय राजाओंकी इष्ट देवी थीं।

प्रत्नतत्त्वविद् राइस साहबके मतानुसार महिसुर राज्यके पूर्वांशमें अवस्थित कोलार जिलाके प्रधान नगर वर्तमान कोलार नामक स्थानमें प्राचीन कोलाहलपुर था।

पश्चिमीय वंश।

गाङ्गवंश दो शाखाओंमें विभक्त है, पूर्वीय और पश्चिमीय। पश्चिमीय शाखाका विवरण इस तरह है—कहा जाता है कि पूर्व कालको गंगवंशके राजा कदम्बराज मृगेशवर्मासे पराजित किये गये थे। महाकूट-शिलालेख पढ़नेसे जाना जाता है ये विपक्ष जनताके अन्तर्गत थे।

* नरसिंहदेवके वृहत् ताम्रशासनमें लिखो है—जब कामार्णव प्रभृति दिग्विजय करने चले, नरसिंह नृपति सिंहासन पर अधिष्ठित थे। क्या यही कामार्णवके पितृव्य थे?

† धारवाड़का पुरातत्त्व देखनेसे समझ पड़ता कि १०५५ ई०को गङ्गवाड़ी देशमें चालुक्यराज सोमेश्वरके पुत्र षष्ठ विक्रमादित्यका शासन था। बम्बई प्रान्तीय बेलगांव जिलेके कलभावि ग्राममें राममन्दिरके सम्मुख किसी शिलाफलक पर एक खोदित लिपि है। उसमें लिखा है कि गङ्गवाड़ी विषयके अन्तर्गत कादलवल्लीके कुमुदवाड ग्राममें गङ्गराज सिगोट्ट पेर्मानंदिन जिनेन्द्रभवन बनाया था। यह गङ्गवाड़ी बहुत दिनसे गङ्गराजाओंकी भोगभूमि रहा। उक्त खोदित लिपिमें गंगमहामण्डलेश्वर कञ्चरसकी कथा भी उल्लिखित है। कादलवल्लीका वर्तमान नाम कादरोल्लि और कुमुदवाड़का कलभावि है। दोनों स्थान सम्पगांवसे प्रायः ४ कोस दक्षिण अवस्थित हैं।

‡ गांगेयराजाओंके ताम्रशासनमें कड़ेसे लगी हुई तांबेकी बैलकी छाप मूर्ति है।

* सम्भवतः उक्त समुद्रतीरवर्ती गोकर्णकी भांति ही १म कामार्णवने गञ्जाम जिलेके महेन्द्रगिरि पर स्वतन्त्र गोकर्णस्वामीकी प्रतिष्ठा की होगी। क्योंकि चोड़गंग और अपरापर गांगेय राजाओंके ताम्रशासनमें महेन्द्रगिरिस्थ गोकर्ण स्वामीकी स्तुति लिखी हुई है। महेन्द्र गिरि देखो।

और ५८७ ई०में प्रथम कीर्त्तिवर्मासे परास्त हुये थे। लेकिन ऐहोल शिलालिपिसे ज्ञात होता है कि ६०८ ई० में ये द्वितीय पुलिकेशीसे पराजित हुए थे। विनयादित्यके हरिहरलिपिसे मालूम पड़ता है ये पश्चिमीय चालुक्य राजाओंके परम्परागत भृत्य थे। इसो चालुक्यवंशमें प्रथम कीर्त्तिवर्मा पुलिकेशी तथा विनयादित्य राजा हुए थे। परन्तु यह निश्चय है कि प्राचीन समय भारतके पश्चिम भागमें गङ्गवंशके राजा राजत्व करते थे। उनमेंसे प्रधान प्रधान राजाके नाम और राजत्वकाल इस तरह हैं—हरिवर्मा २४८ ई०में, विष्णुगोप ३५१ई० में, अविनीत कोंगनो ४५४से ४६६ ई०तक, दुर्विनीत कोंगनी ७०१ से ७०७ तक।

महिसुरके तलकाड़, मिवार और शिवरपत्र शिलालिपियोंसे जान पड़ता है कि गंगवंशके प्रथम राजा श्रीपुरुष पृथ्वीकोंगनी रहे। लेकिन ये किस कालमें राजा हुए थे, इसका पूरा पूरा हाल पता नहीं लगता है। श्रीपुरुषके बाद इस वंशमें सवमार नामके एक और राजा हो गये हैं। इन्हीं दोनों राजाओंके समयसे गंगवंशका विवरण आरम्भ हुआ है। इन दोनोंमेंसे एक राष्ट्रकूटके राजा ध्रुवसे पराजित हो कर ७८३ ई०में बन्दी हुए थे। ध्रुवके मर जाने पर भी उनके लड़के तृतीय गोविन्दने उन्हें बहुत दिनों तक कारागारहीमें रखा था। जब ये छोड़ दिये गये तब पूर्वी चालुक्य राजा नरेन्द्रमृगराजने गंगवंशके राजाओंके साथ बारह वर्ष घनघोर लड़ाई की, अन्तमें चालुक्य राजाकी जीत हुई। महिसुरकी हगली शिलालिपिसे जाना जाता है कि सत्यवाक्य कोंगनोवर्म गंगवंशमें एक और राजा हो गया था। इरिया नामके एक कोई प्रसिद्ध राजा उस समयमें राजत्व करते थे। सत्यवाक्यसे इरियाको बहुत काल तक लड़ना पड़ा था। इरियाके बाद उनका लड़का राचमल उत्तराधिकारी हुआ। महिसुरके आतकुर-शिलालेखसे पता लगता है कि ८४० ई०में सत्यवाक्य कोंगुनोवर्माने राचमल पर चढ़ाई की और उसे मार डाला था।

धारवार जलेका हेवाल शिलालिपिसे ज्ञात होता है। बूतग नामके एक और राजा गङ्गवंशमें हो गये थे। इन्होंने राष्ट्रकूटके राजा अमोघवर्षकी लड़कीसे विवाह किया था। दहेजमें उन्हें पुलीगड़ जिला मिला था। कुछ कालके बाद राष्ट्रकूटके राजा तृतीय कृष्णकी अनुमतिसे बूतगने चोलवंशके राजा राजादित्यका प्राणनाश किया, क्योंकि राजादित्य उस समय तृतीय कृष्णका कट्टर शत्रु हो गया था। इस पुरस्कारमें कृष्णने बूतगको चार और जिले प्रदान किये। इस समय बूतगने अपनी उपाधि 'महाराजाधिराज' को रक्खी। बूतगको अमोघवर्षकी लड़कीसे एक पुत्र हुआ जिसका नाम रक्कगङ्ग रखा गया। बूतगको 'कल्लब्बसी' दूसरी स्त्रीमें भी सत्यवाक्य कोंगुनोवर्म नामक एक पुत्र था। गङ्गवंशमें ये बहुत प्रभावशाली राजा हो गये थे। ये ८६४ ई०में राजगद्दी पर आरूढ़ हुए थे। इन्हें परमेश्वर और महाराजाधिराजकी उपाधि मिली थी।

इनके समयमें गङ्गराजा बहुत दूर तक फैल गया था। इस समय चालुक्यराजाका भी प्रताप बहुत चढ़ बढ़ गया था। इन्होंने राष्ट्रकूट और गंगवंशके राजा पर आक्रमण किया। इस बार इन्होंने सफलता प्राप्त नहीं की, फिर दूसरी बार ८७३ ई०में चतुर्थ इन्द्र कृष्णके पोतेने उन पर धावा किया और राष्ट्रकूटके राजा द्वितीय कक्कको पराजय किया। गंगवंशके राजा सत्यवाक्यवर्मने चालुक्य राजाके साथ घमसान युद्ध कर उन्हें हरा दिया और राष्ट्रकूटके राजाके बहुतसे राज्य भाग अधिकार कर स्वतन्त्र हो गये। सत्यवाक्यवर्मको चामुण्डराय नामक एक प्रधान मंत्री थे जिन्होंने 'चामुण्डरायपुराण' लिखा है और जिनकी प्रार्थनासे जैनसिद्धांतका प्रसिद्ध ग्रन्थ गोम्मटसार श्रीमदाचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्तीने लिखा।

महिसुरके वेलूर शिलालेखसे पता लगता है कि गंगवंशके अन्तिम राजा गंगापरमर्दी थे। ये १०२२ ई०में राजत्व करते रहे। इनके समयमें चोल राजाने पुन: आक्रमण कर गंगराजाको इस बार पूर्णरूपसे पराजित किया और उनके बहुतसे देश अपने राज्यमें मिला लिये। क्रमश: इस वंशको आभा तथा स्वाधीनता सदाके लिये जाती रही।

बेलगांवके अन्तर्गत कलभावि ग्रामकी खोदित लिपि देख करके प्रत्नतत्वविद् फ्लिटसाहब अनुमान करते कि वह खृष्टीय ११वीं शताब्दीकी लिखी हुई है। सुतरां

यह भी माना जा सकता है कि दाक्षिणात्यके उत्तर-पश्चिमांशमें ई० ११वीं शताब्दी तक गंगमहामण्डलेश्वर विद्यमान थे। उक्त शिलाफलक पढ़नेसे मालूम पड़ता कि उन्होंने शेष दशामें जैन धर्म अवलम्बन किया था

पूर्वीय शाखा।

सम्भवत: नरेन्द्रमृगराजके पूर्व ही कामार्णव प्रभृति पांचों भाई गंगवाड़ी विषय परित्याग करके कलिंगराजामें उपस्थित हुए। चोड़गंगके ताम्रशासनमें लिखा है—

कामार्णवने चारों भाईयोंके साथ चालुक्यराज वालादित्यको पराजय करके कलिङ्गराजा लिया और 'जन्तबुरम्' नामक स्थानमें राजधानी स्थापन करके राजत्व किया। उन्होंने अनुज दानार्णवको कण्टकवन्धुरकन्धर, गुणार्णवको आम्बवाड़ि, मारसिंहको सोदामण्डल और वज्रहस्तको कण्टकवर्तनी दी थी।

१म कामार्णव जिस जन्तापुर नगरमें राजत्व करते थे, सम्भवत: वह स्थान मन्द्राज प्रेसिडेन्सीके विशाखपत्तन जिलेमें गजपतिनगरके अन्तर्गत "जयन्ती अग्रहार" नामक ग्रामके निकट होगा। जन्तावुर संस्कृत जयन्तीपुर शब्दका अपभ्रंश है। वर्तमान जयन्ती अग्रहारमें अनेक प्राचीन शिलालिपियां दृष्ट होती हैं। वर्तमान विशाखपत्तनके नाना स्थानोंमें गांगेयराजाओंकी कीर्तियां विद्यमान हैं।

वर्तमान गञ्जाम जिलाके अन्तर्गत श्रीमुखलिङ्गम्, श्रीकूर्मम् प्रभृति नानास्थानोंमें इस वंशीय नृपतियोंकी बहुतर शिलालिपियां निकली हैं। सिवा इसके विशाखपत्तनमें आविष्कृत चोड़गङ्गके तीन ताम्रशासन, कटक जिलाके अन्तर्गत कन्दुपटनासे आविष्कृत २य नृसिंहदेवके ३ ताम्रशासन और पुरीसे आविष्कृत ४र्थ नृसिंहदेवके भी ३ ताम्रशासन मिले हैं। फिर समसामयिक मुसलमान इतिहाससे इस गङ्गराजवंशका जो परिचय चला है, उसीके साहाय्यसे पूर्व शाखाका संक्षिप्त इतिहास लिखा गया है।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि १म कामार्णवने दानार्णवको "कण्टकवन्धुरकन्धर" नामक स्थान प्रदान किया। यह स्थान गोदावरी जिलाके तमुकु तालुकके अन्तर्गत कण्टेरु जैसा अनुमित होता है। आज भी कण्टेरु नामक प्राचीन ग्राममें प्राचीन देवालय और खोदित शिलाफलकादि देख पड़ते हैं। दानार्णवके पुत्र २य कामार्णव "नगरम्" नामक स्थानमें राजत्व करते थे। गोदावरी जिलाके नर्सापुर तालुकमें पुरातन दुर्गविशिष्ट 'नगरम्" नामक एक पुराना गांव है। सम्भवत: यही पहले कामार्णवकी राजधानी थी। मुसलमानोंके उपद्रवसे वह नगर बिलकुल बिगड़ गया है, किलेको छोड़ करके पूर्व गोरवकी कोई भी चीज नहीं।

बोध होता है कि कामार्णवके समय कलिङ्गराज्य उत्तरको गञ्जाम् और दक्षिणको कृष्णा नदीके उत्तर तीर पर्यन्त विस्तृत था। चोड़गङ्गके ताम्रशासनमें १म कामार्णवके पुत्रादिका उल्लेख नहीं है। किन्तु उत्कलराज २य नरसिंहदेवके बड़े ताम्रफलक पर द्वादश श्लोकमें लिखा है कि कामार्णवके पुत्र पौत्रोंने बहुदिन राजत्व किया था। वह यदि प्रकृत हो, तो अनुमान किया जा सकता है कि १म कामार्णवके पुत्रपौत्र गोदावरीके उत्तरांश और दानार्णवके वंशधर प्रथम गोदावरीके दक्षिणांशमें राजा थे। १०४० शकाङ्कित चोड़गङ्गके ताम्रशासनमें लिपिबद्ध हुआ है—

> "स राजराज: प्रथमं जयश्रिय: पतिर्बभू द्रमिलाहवोत्सवे।
> विराजमानामथ राजसुन्दरीमुदूढवांश्चोड़महभुजात्मजाम्॥
> त्यक्त्वा वेंगीं सपदि परिणामोदयेनाभिरामाम्
> चोड़म्यान महति विजयादित्यमस्मी मिमंग्नम्।
> आपन्नानां परमशरणं राजराजो विजित्य
> लक्ष्मीभाजं सुचिरमकरोत् पश्चिमायां दिशायाम्॥"
>
> (१०४० शकाङ्कित ताम्रशासन ८४।८६ छत्र)

(चोड़गङ्गके पिता) उन राजराजने प्रथम द्रमिल युद्धमें जयश्रीरूप कामिनीको लाभ किया था। फिर (राजेन्द्र) चोड़राजकी कन्या राजसुन्दरीका पाणिग्रहण किया। हठात् भाग्यविप्लव उपस्थित होने पर द्वितीय सुरपुरी जैसी वेङ्गी छोड़ करके चोड़राजरूप विपुल समुद्रमें निमग्नप्राय विजयादित्यको शरणागतवत्सल राजराजने पश्चिम दिक्‌में लक्ष्मीयुक्त किया था।

उक्त प्रमाण द्वारा समझ पड़ता कि पहले राजराज सुरपुरी जैसे वेङ्गी नगरमें राजत्व करते थे। फिर विजयादित्यको राजधानी छोड़ गये।

राजराजके श्वसुर महाराजाधिराज राजेन्द्र चोल (अपर नाम कुलोत्तुङ्ग) प्रदत्त शिलाफलक और ताम्रशासनमें लिखा है कि उनसे तदीय पितृव्य (षष्ठ) विजयादित्यने वेङ्गी राज्य पाया था। इन विजयादित्यने ८८५से १००० शक पर्यन्त वेङ्गीमें राजत्व किया।* सुतरां सम्भवतः ८८५ शकके पूर्व गङ्गवंशीय राजराज और उनके पितृपुरुष वेङ्गी राजमें राजा रहे होंगे। गोदावरी जिलामें इल्लार तालुकके अन्तर्गत 'वेंगी' नामक स्थानमें जो ध्वंसावशेष पड़ा है, उसमें "सुरपुरी सदृश" राजराजकी परित्यक्त वेंगीका कुछ परिचय मिलता है। उसीसे ३ कोस दूर प्राचीन कीर्तिशाली तड़िकल पूति ग्राममें अति पुरातन खोदित शिलालिपि-शोभित गांगेय स्वामी वा "गंगेश्वर" स्वामीका मन्दिर है। वह देवालय आज भी गंगवंशीयोंका परिचायक स्वरूप वर्तमान है।

प्राचीन ताम्रशासन और पुरातन खोदित शिलाफलक पढ़नेसे समझ पड़ता, किसी समय कलिंगनगरमें गंगवंशी राजाओंकी राजधानी रही। गञ्जाम प्रदेशमें वंशधरा नदी जहां जा करके समुद्रसे मिली है, ठीक उसी स्थान पर कलिंगपत्तन‡ नामक नगर और बन्दर है। प्राचीन कीर्ति और ध्वंसावशेष देखनेसे वही कलिंग राजाओंकी राजधानी प्राचीन कलिंगनगर जैसा स्थिरीकृत हुआ है। ताम्रशासनसे कलिंगनगराधिष्ठित निम्नलिखित कई एक गांगेय राजाओंका नाम और परिचय मिला है—

५१ संवत्सरमें अनन्तवर्माके पुत्र देवेन्द्रवर्मा, ८७ से १४३ संवत्सर तक राजसिंह इन्द्रवर्मा, १८३ संवत्सरमें गुणार्णवके पुत्र देवेन्द्रवर्मा, २५४ संवत्सरमें अनन्तवर्माके पुत्र देवेन्द्रवर्मा, ३०४ संवत्सरमें राजेन्द्रवर्माके पुत्र अनन्तवर्मा, ३५१ संवत्सरमें देवेन्द्रवर्माके पुत्र सत्यवर्मा।

उक्त संवत्सर मानो कोई विशेष अब्दवाचक है और उक्त राजाओंका "वृषभलाञ्छन" चिह्नित ताम्रशासन पाठ करनेसे यह कलिंगविजेता १म कामार्णवके वंशधर जैसे समझ पड़ते हैं। पहले बतला चुके हैं कि दानार्णवके वंशधर कलिङ्गके दक्षिणांश वेंगी राज्यमें राजत्व करते थे। अब मालूम होता है कि २य कामार्णवके वंशधर कलिंगके उत्तरांशमें अधिष्ठित रहे। किन्तु इसका कोई भी प्रामाणिक निदर्शन नहीं, वह संवत्सर किस समयसे आरम्भ हुआ। केवल इतना ही अनुमान लगता है कि १म कामार्णव कर्तृक बालादित्यके पराजय और उन्हींके राज्यारम्भसे "गांगेय शक" चला होगा।*

चोड़गंगके १०४० शकाङ्कित ताम्रशासनमें गंगवंशीय राजाओंका शासनकाल मिलाने पर साधारणतः २६० शक अथवा ७२८ ई० निकलता है। उस समय १म कामार्णवका राज्याभिषेक हुआ और सम्भवतः गांगेय 'संवत्सर' चला होगा। ऐसा होने पर कह सकते कि १म कामार्णव ७२८से ७६४, देवेन्द्रवर्माके पिता ७७८, देवेन्द्रवर्मा ७७८, तत् पुत्र सत्यवर्मा ७७८, राजसिंह इन्द्रवर्मा ८१८, इन्द्रवर्मा§ ८५२से ८७४ और दूसरे अनन्तवर्माके पुत्र देवेन्द्रवर्मा ८८२ ई०को विद्यमान थे। देवेन्द्रवर्माके बाद संवत्सराङ्कित दूसरे किसी भी गांगेयराजका ताम्रशासन आज तक आविष्कृत नहीं हुआ। किन्तु इतना अनुमान किया जाता है कि देवेन्द्रवर्माके वंशधर बहुत दिनों फिर कलिंग नगरके सिंहासन पर टिक न सके। उत्कलराज २य नरसिंहदेवके बृहत्ताम्रफलक (१४ श्लोक) में लिखा है—चोड़गंगके पितामह भिन्न राज्य जय करके त्रिकलिंगनाथ हुए। चोड़गंगके १०४० शकाङ्कित ताम्रशासनानुसार ९६१ शक वा १०३९ ई०को वज्रहस्तने राज्यारोहण किया। सम्भवतः उसी समय अथवा उससे अनतिकाल पीछे इन्होंने कलिंग

---

* Hultzsch, South Indian Inscriptions, Vol. I. p 32.

† Sewell's Lists of the Antiquarian Ramains in the Presidency of Madras, Vol. I. p. 36.

‡ यह कलिंगपत्तन अक्षा० १८° २०' उ० और देशा० ८४° ९' ५० पू० में चिकाकोलसे ८ कोस उत्तर अवस्थित है। आजकल यह नगर एक बन्दर जैसा प्रसिद्ध है। यहां एक आलोकगृह भी है।

*मालूम होता है कि दानार्णवके वंशधरोंने उस संवत्सरको ग्रहण नहीं किया।

§ इन्द्रवर्माके १२८ संवत्सराङ्कित ताम्रशासनमें लिखा है कि मार्गशीर्ष पूर्णिमाको चन्द्रग्रहणोपलक्षमें भूमिदान हुआ। ज्योतिष साहाय्यसे गणना द्वारा मालूम पड़ता है कि ८५६ ई० १५ डिसम्बरको मार्गशीर्ष पूर्णिमाके दिन चन्द्रग्रहण लगा था।

नगर अवधि अपने राजामें मिला लिया। राजा वज्रहस्तके पुत्र राजराज वेंगी छोड़ करके कलिंगनगर गये। इसी स्थान पर उनके पुत्र अनन्तवर्मा चोड़गंग ९९८ शक कुम्भराशि, शुक्लपक्ष, रविवार, रेवती नक्षत्र और मिथुन लग्नमें राजपट पर अभिषिक्त हुए। (अनन्तवर्मा चोड़गंगका ताम्रशासन)

मादला पञ्जीके माहात्म्यमें देशीयों और विदेशीयोंने उड़िया, बंगला तथा अङ्गरेजी भाषामें उड़ीसाका जो इतिहास छपाया, उसमें लिखा है कि १०५४ शकमें १३ आश्विनको 'चोड़गंगने उत्कल जीता था।' परन्तु वह बात ठीक नहीं।

१०४० शकाङ्कित ताम्रशासनमें लिखित है—चोड़गङ्गने पश्चिममें वङ्गी और पूर्वमें उड़ीसा तक जय किया।

चोड़गंगके १००३ शकको प्रदत्त ताम्रशासनमें वेंगी और उत्कलकी कोई बात नहीं। इससे समझ पड़ता कि १००३ शक अर्थात् १०८१ ई०के पीछे और १०४० शक वा १११८ ई०के पहले चोड़गंगने उक्त दोनों प्रदेश जय किये होंगे। यही उत्कलके गङ्गवंशीय प्रथम नरपति थे।*

अंगरेजी भाषामें उड़ीसाका इतिहास लिखनेवाले हण्टर साहबने कहा है—

वंशावलीके मतानुसार महादेवके औरससे अपर गंगा (गोदावरी) के गर्भमें चुरंग वा सारंगदेवने [illegible] जन्म ग्रहण किया था।

इनके मतमें गंगवंशीय उन्हीं राजाने पुरीके जगन्नाथ मन्दिरमें मादलापञ्जी लिखनेकी रीति चलायी। यह देवीके एकमात्र उपासक थे। परन्तु इसके मूलमें कुछ भी सत्य नहीं। चोड़गंगके तीन और कटक जिलासे नवाविष्कृत ३ प्रस्थ सुवृहत् ताम्रफलकोंमें चोड़गंगके पिताका नाम राजराज लिखा हुआ है। चोड़गंगके पूर्वपुरुष और चोड़गंग अपने आप शैव थे तो, किन्तु पीछे यह एक परम वैष्णव हो गये—उक्त ताम्रफलक पाठसे स्पष्ट प्रमाणित होता है। उत्कलराज २य नरसिंहदेवके सुवृहत् ताम्रशासनके २७वें श्लोकमें ऐसा लिखा है—यह विशाल भूमण्डल जिसका चरण, अन्तरीक्ष नाभि, दशदिक् कर्ण, सूर्यचन्द्र नयनयुगल, और स्वर्गलोक मस्तक है—उस त्रिलोकव्यापी परमेश्वर पुरुषोत्तमके वासयोग्य मन्दिर बनानेको कौन व्यक्ति समर्थ होगा! यही विचार करके मानो पूर्वतन नृपतियोंने पुरुषोत्तमका मन्दिर निर्माण करनेमें हस्तक्षेप नहीं किया। महाराज गंगेश्वर (चोड़गंग) ने पुरुषोत्तमका मन्दिर बना अपना कीर्तिस्तम्भ चिरस्थायी किया है। फिर इन्होंने मन्दराधिपतिको पराजय करके उनका नगर जला डाला।

ष्टार्लिङ्ग, हण्टर तथा राजा राजेन्द्रलालके मतमें और उत्कल भाषामें रचित उड़ीसाके सब इतिहासोंको देखते राजा अनङ्गभीम देवने ही जगन्नाथका प्रसिद्ध मन्दिर बनाया। किन्तु अब देखते हैं कि राजा अनङ्गभीमसे बहुत पहले उत्कलके प्रथम गांगेयराज चोड़गंगने उत्कलविजयकीर्ति स्थायी करनेके लिये सर्वप्रथम जगन्नाथ देवका सुप्रसिद्ध मन्दिर निर्माण कराया था। पुरी मन्दिरके तत्कर्तृक मादलापञ्जी संरक्षणको कथा आज तक प्राप्त किसी ताम्रशासन वा तत्सामयिक ग्रन्थमें नहीं है। उपयुक्त ऐतिहासिकोंने मादला पञ्जीका प्रमाण दे करके जो बातें लिखी हैं, गांगेयराज द्वितीय नरसिंह देवके नवाविष्कृत २१ ताम्रफलक संयुक्त ३ प्रस्थ शासनपत्रों और अपरापर प्राचीन शासन शिलालिपियोंमें क्या वंशावली, क्या राजत्वकाल, क्या घटना वैचित्र्य किसीके भी साथ कोई ऐक्य नहीं। गांगेय राजाओंने स्व स्व ताम्रशासन* और शिलालिपिमें जिस समय और जिस राजसंक्रान्त कथाको लिखा है, सामयिक प्रमाणकी भांति अपरापर प्रमाण अपेक्षा समधिक प्रामाण्य है। किन्तु ऐतिहासिकोंने

---

* चोड़गंगके ताम्रशासन निकले बहुत दिन हो गये। परन्तु कोई स्थिर कर न सका कि यही उत्कलके गंगवंशीय प्रथम राजा थे। अब कटक जिलाके २य नरसिंह देवके ताम्रफलकयुक्त तीन ताम्रशासन आविष्कृत हुए हैं। इनसे समझ सके कि उक्त अनन्तवर्मा चोड़गंगदेव उत्कलके १म गांगेयराज-जैसे रहे।

† यह भ्रमात्मक सारंग नाम पढ़के दाक्षिणात्यके पुरातत्त्वविद् रावर्ट सिवेल साहब 'सारंगधरचरितवर्णित राजराजपुत्र सारंगधर' जैसा अनुमान करते हैं। किन्तु वह अनुमान भी सम्पूर्ण भ्रमात्मक है।

* उत्कल ग्रन्थमें ष्टार्लिंग, हण्टर प्रभृतिके इतिहास साधारणसे गंगवंशीय राजाओंका जो विवरण और राजत्वकाल लिखा है, अब समस्त भ्रांत जैसा समझ पड़ता है। इस गांगेय शब्दमें जो लिखते, समधिक प्रामाणिक जैसा माना समझते हैं।

मादलापञ्जी और वंशावलीकी साहाय्यसे जो बात कही हैं, किसी अंशमें सामयिक लिपिसे नहीं मिलतीं। ऐसी अवस्थामें उन्हें आधुनिक अथवा अप्रामाणिक जैसा अवश्य मानना पड़ेगा।

२य नरसिंहदेवके ताम्रशासन (३७ श्लोक) मतानुसार महाराज चोड़गंगके स्वर्गारोहण करने पर १०६४ शक (११४२ ई०)को तत्पुत्र महावीर कामार्णव* सिंहासन पर अभिषिक्त हुए थे। इन्होंने १० वर्ष राजत्व किया। फिर गंगराज राघवने राज्य पाया। महाराज चोड़गङ्गने सूर्यवंशकी राजकन्या इन्दिराका पाणिग्रहण किया था। उन्हींके गर्भसे राघवका जन्म हुआ। महाराज राघवने १५ वर्ष राज्य रहे।† फिर १य राजराजका राजत्व हुआ। इन्होंने चोड़गंगकी अपर महिषी चन्द्रलेखाके गर्भसे जन्म लिया था। उनका शरीर अतिशय प्रकाण्ड रहा। इनके सम्बन्धमें जो कुछ घटित हुआ, मानव प्रकृतिके पक्षमें नितान्त असम्भव है। राजराजने २५ वर्ष प्रबल प्रतापसे राजत्व किया।

उक्त राजराजके पीछे कनिष्ठ सहोदर अनियङ्क वा अनंगभीम सिंहासन पर बैठे। उनका राजत्वकाल १०वर्ष मात्र था।‡ फिर ३य राजराज राजा हुए। अनियंक वा अनंग भीमके औरस और वाभल्लदेवीके गर्भसे उनका जन्म था। यह यौवनकालको ही राज्यके अधीश्वर हुए। उन्होंने ११ वर्ष मात्र राज्यलक्ष्मीका उपभोग किया।§

३य राजराजके मरने पर मङ्गुण देवी-गर्भजात तत्-

*ऐतिहासिक ष्टार्लिङ्ग और हण्टर साहबके मतानुसार चोड़गंगके पीछे तत्पुत्र गंगेश्वर ११५१ ई०को राजा हुए। पुरुषोत्तमचन्द्रिका, उत्कलभाषामें रचित 'उड़ीसाका इतिहास' देखनेसे उस गङ्गेश्वरने १५ वर्ष मात्र राजत्व किया। किन्तु ताम्रशासनमें गंगेश्वर नामसे किसी भी राजाका उल्लेख नहीं। गांगेयराज मन संस्कृतके ताम्रशासनमें चोड़गंगको ही गंगेश्वर आख्या दी गयी है।

†उत्कलके किसी इतिहासमें उक्त गांगेयराज कामार्णव और राघवका नाम नहीं मिलता। उनके स्थानपर किसी कामदेव और मदनमहादेवका नाम पाया है। यह भी कुछ नहीं लिखते, दोनों किसके सन्तान थे।

‡उत्कल इतिहासमें इन अनियङ्क वा अनङ्ग भीमका नामोल्लेख नहीं है।

§उत्कल इतिहासमें यह राजराजेश्वर नामसे वर्णित हुए हैं। उक्त ऐतिहासिकोंने इनका १६ वर्ष राजत्वकाल लिखा है।

पुत्र अनङ्गभीम राजपद पर अभिषिक्त हुए।* ऐतिहासिक ष्टार्लिङ्ग, हण्टर और राजा राजेन्द्रलालके मतमें इन्हीं अनङ्गभीमने ११९६ ई०को पुरीमें प्रसिद्ध जगन्नाथ देवका मन्दिर निर्माण कराया। किन्तु वह बात ठीक नहीं। क्योंकि उस समय अनंगभीम उत्कलके राजा नहीं हुए, इनके पितामह अनियङ्क वा अनङ्गभीम उत्कलमें राजत्व करते थे। उन्होंने भी प्रसिद्ध जगन्नाथ देवका मन्दिर नहीं बनाया, उनसे बहु पूर्व चोड़गंगने यह मन्दिर निर्माण कराया था।

कटक जिलाके अन्तर्गत महासिंहपुरमें चाटेश्वर-मन्दिरसे बृहत् शिलाफलक निकला है। इसमें लिखा है कि चोड़गंगके एक पुत्र अनंगभीमने उक्त शिव-मन्दिर प्रतिष्ठित किया। शिला फलकके २३वें छत्रमें लिखा है—

"चकार तत प्रतिपक्षिसम्पत्साम्यः पुण्यानि पुनर्नवानि वः।"

इससे अनुमित होता है कि चोड़गंगके पुत्रने, जो उस शिलाफलकमें अनंगभीम लिखे गये हैं, पुरातन मन्दिर संस्कार कराके नया करा दिया था। सम्भवतः इन्हीं अनंगभीमके समय पुरुषोत्तमका मन्दिर संस्कृत अथवा सम्पूर्ण हुआ होगा। राजराजपुत्र २य अनंगभीमके समय वह नहीं बना।

राजराजके पुत्र २य अनंगभीम विद्वान्, शास्त्रदर्शी, महावीर, पण्डितप्रिय और परम वैष्णव थे। समस्त कलिंग राज्य उनका अधिकारभुक्त रहा। इनके राज्यमें कलिका दबदबा न था (मानो सत्ययुगका आविर्भाव हो गया था)। उन्होंने प्रबल पराक्रमसे ३४ वर्ष राजत्व किया। २य नरसिंहदेवके ताम्रशासनको छोड़ करके गञ्जामके अन्तर्गत कलिंगपत्तनसे ३ कोस पश्चिम अवस्थित "श्रीकूर्मम्" नामक ग्राममें श्रीकूर्मस्वामीके प्रसिद्ध मन्दिरके १०म स्तम्भ पर ११७४ शककी खोदित अनंगभीमकी अनुशासन लिपि है।† उसमें भी महाराज

* ष्टार्लिंग साहबके मतमें इन्हीं अनंगभीमने ११७४ ई०को राज्यारोहण किया।

† दुःखका विषय है यह अनुशासन लिपि भी अब तक किसी ग्रन्थमें प्रकाशित नहीं हुई।

अनंगभीमके शौर्य, वीर्य और दानादिकी विस्तर प्रशंसा लिपिबद्ध हुई है।

२य अनंगभीमके औरस और कस्तूरादेवीकी गर्भसे महाराज नरसिंह देवने जन्म ग्रहण किया था। उनका "प्रतापवीरश्री" उपाधि रहा।* यह बाल्यकालमें ही एक योद्धा हो गये थे। गञ्जामके अन्तर्वर्ती श्रीकूर्मस्वामी मन्दिरके निकट ११७२ शककी उत्कीर्ण शिलाफलक पढ़नेसे समझ पड़ता कि प्रतापवीरश्री नरसिंहदेवका शत्रुविनाशी बाहुयुगल सुदृढ़ रखनेको साहनमल्ल नामक एक व्यक्ति देवोद्देशसे भूमिदान करते थे। मालूम होता है कि उसी समय महावीर नरसिंह देव युवराज पदपर अभिषिक्त हुए। अपने पिता अनङ्गभीमके मरने पर नरसिंह देवने ३३ वर्ष तक राजत्व किया।

प्रसिद्ध मुसलमान ऐतिहासिक मिनहाज उद्-दीनका तबकात-इ-नासरी' नामक सामयिक इतिहास पढ़नेसे समझ पड़ता है—

६४१ हिजरी (१२४३ ई०) की जाजनगर राजने जब लक्ष्मणावती राज्यमें दौरात्मा उठाया, (गौड़ाधिप) मलिक तुगरिल तुगान् खांने जाजनगरके अभिमुख अपना पैर बढ़ाया। इस युद्धयात्रामें ऐतिहासिक मिनहाज उद्दीन उनके सहचर थे। जाजनगरकी सीमा कतासिनमें युद्ध हुआ। पहले हिन्दुओंने पृष्ठप्रदर्शन किया था. पीछेकी इक्षुके जंगलसे ५० अश्वारोही और २०० पदाति आ करके अकस्मात् मुसलमान सैन्य पर टूट पड़े। इसमें विस्तर मुसलमान योद्धा मरे। गौड़ाधिप प्राण बचा करके लक्ष्मणावती नगर भाग गये। उन्होंने दिल्लीके बादशाहसे साहाय्य मांगा था। सुलतान अला-उद्-दीन् महमूद शाहने अयोध्याके सुबेदार तैमूर खां किरानकी ससैन्य जाजनगरके विपक्ष लक्ष्मणावती भेजा। जाजनगरकी फौजने पहले फख्र-उल्-मुल्कको हराया और लखनऊ प्रदेश दबाया था, फिर वह लक्ष्मणावती नगरके प्राकारके पार्श्वमें उपस्थित हो घोर युद्ध करते रहो। अन्तको अयोध्या-सैन्यके आगमनका संवाद पा करके वह लौट पड़ी।†

मिनहाजने लिखा है कि जाजनगरके सेनापतिका नाम 'सावनता' था। यह जाजनगर राजके जामाता रहे।* मुसलमान ऐतिहासिक वर्णित जाजनगर ‡ उत्कलका याजपुर है। सावन्ता नाम नहीं, उपाधि है। संस्कृत भाषाका सामन्त शब्द चलती उड़ियामें सावन्ता कहलाता है। मिनहाजने सावन्ताको जाजनगरराजका जामाता जैसा लिखा है। परन्तु हमारी विवेचनामें विदेशी लेखकने भ्रमक्रमसे पुत्रको जामाता समझ करके ऐसा लिख दिया होगा। उस समय याजपुर वा समस्त कलिंग राजामें महाराज अनंगभीम अधिष्ठित थे। उन्हींके पुत्र प्रतापवीर १म श्रीनरसिंह देव रहे। २य नरसिंह देवके ताम्रशासनमें लिखित है—

"राढ़ावरेन्द्र यवनीनयनाञ्जनाश्रुपूरेण दूरविनिवेशितकालिमश्रीः।
तद्विप्रलम्भकरणाह्न तनिस्तरंगा गंगापि नूनमसुना यमुनाधुनाभूत्॥"

राढ़ और वरेन्द्र प्रदेशकी यवनियां स्वामिविरहमें सर्वदा रोदन करती थीं। उनके अश्रुजलसे जो नयनाञ्जन धौत हो करके गङ्गामें मिलता, उससे गंगाका भी पानी काला पड़ जाता था। इस भयानक काण्डको देख करके मानो गंगा तरंगहीन हुई। (वास्तविक उस समय नरसिंहके ही लिये) गंगा यमुना बन गयीं।

उक्त श्लोक द्वारा स्पष्ट समझ पड़ता है कि प्रतापवीर श्रीनरसिंह देवने ही पिताके राजत्वकाल लक्ष्मणावती आक्रमण करके सैकड़ों मुसलमान सिपाहियोंको मारा और वही राढ़ तथा वरेन्द्रकी यवनियोंकी स्वामिविरहके हेतु थे। इन प्रतापवीरसे और भी कई वार मुसलमान लड़े, किन्तु उनके प्रवल प्रतापसे उड़ीसा जीत न सके। एकावलीरचयिता कविवर महिम भट्ट उन नृसिंहदेवके सभापण्डित थे।

२य नरसिंहदेवके १२१७ शकान्वित दो सुहत् ताम्रशासन पढ़नेसे मालूम पड़ता है कि ११९६ शक वा १२७४ ई०को उत्कल राजामें एक नूतन संवत् चला। सम्भ-

---

* कालिंगपत्तनसे प्राय: १ कोस दूर पर्वतस्थित श्रीकूर्मस्वामी मन्दिरके पास ११७२ और १२०१ शकान्वित खोदित शिला फलकमें प्रतापवीर श्री उपाधियुक्त नरसिंह देवका नाम इष्ट होता है।

† Raverty's Tabakat-i-Nasiri, p. 738-39.

* Raverty's Tabkat-i-Nasiri, 765.

‡ कोई कोई इस जाजनगरको त्रिपुरा राज्य जैसा अनुमान करते हैं, किन्तु वह ठीक नहीं पड़ता S. H. Blochmann's Contribution to the Geography and History of Bengal (in Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. XLII. pt. 1 p. 237.)

वत: १म नरसिंहदेवने फिर राढ़ और वरेन्द्राधिपतिका पराजय करके १२७४ ई०में नूतन संवत् चलाया था और अपनी कीर्ति अक्षय करनेको कोणार्कका * प्रसिद्ध सूर्य-मन्दिर बनाया था। मुसलमान ऐतिहासिक फरिश्ताने उक्त घटना न बतला करके लिखा है कि ६७८ हिजरी (१२८८ ई०) को तुगरील खां जाजनगर आक्रमण करके विस्तर अर्थ और एक शत हस्ती जीत ले गये। बोध होता है कि उन्होंने पहली घटना दबा डालनेके लिये शेषोक्त विवरण कल्पना किया होगा। इन्होंने १६०८ ई०को अपना ग्रन्थ बनाया। किन्तु उनसे बहुत पहले २य नरसिंहदेवके ताम्रशासनमें १म नरसिंहकर्तृक राढ़ और वरेन्द्र आक्रान्त होनेकी बात लिखी जा चुकी थी। प्रतापवीर श्रीनरसिंहदेवके बाद उनके औरस और माल्यचन्द्रात्मजा सीतादेवीके गर्भजात भानुदेव राजासिंहासन अभिषिक्त हुए। इन्होंने १० वर्षमात्र राजत्व किया।† इन्हीं भानुदेवकी सभामें साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ पञ्चाननके पिता चन्द्रशेखर कवि रहते थे।

उनके पीछे २य नरसिंहदेव राजा हुए। इन्होंने भानुदेवके औरस और चालुक्य कुलसम्भूता जाकल्लदेवीके गर्भसे जन्म लिया था। २य नरसिंहदेवके ही प्रदत्त २१ ताम्रफलकयुक्त ३ प्रस्थ सुवृहत् ताम्रशासन मिले हैं—

इनमें पहला—

"सप्तदशोत्तरद्वादशशतशकवत्सरे" "स्वराजस्य एकविंशत्यङ्के नवराज्यान्तर-विजयसमये" "सिंह शुक्लपक्षे सोमवारे।"

दूसरा—

"सप्त दशोत्तर द्वादशशतमिते गतवति शकवत्सरे" "मेष कृष्णचतुर्दश्यां सौरिवारे" "स्वराजस्य द्वाविंशत्यङ्के"

और तीसरा—

"अष्टदशोत्तरद्वादशशतशकवर्षे"

प्रदत्त हुआ है।

प्रथम और दूसरे ताम्रफलकमें स्वराजका २१वां और २२वां अङ्क पढ़नेसे पहले उनका अधिकार काल जैसा समझ पड़ता है किन्तु पहले पहल चोड़गङ्ग और तत्पुत्र कामार्णवका अभिषेकशक तथा प्रत्येक राजाका अधिकारवर्ष स्पष्ट लिखा रहनेसे मालूम पड़ता है कि १२१७ शकको २य नरसिंहका राज्यारोहण हुआ। सम्भवत: "स्वराज" निर्देशक अङ्क १म नरसिंहदेवके समय ११८६ शकको चला होगा। पूर्वोक्त गाङ्गेय शकके साथ इसका कोई भी सौसादृश्य नहीं आता।

२य नरसिंहके प्रथम ताम्रशासनमें नवराज्य विजय-की कथा मिलती है। श्रीकूर्मस्वामी मन्दिरके बहुतसे खोदित शिलाफलकोंमें वह वीरारि-वीरवर श्रीनृसिंहदेव नामसे लिखे गये हैं। इन शिलाफलकोंमें शेष समयकी लिपि १२७१ शकको अङ्कित हुई। साहित्य-दर्पणकार सुप्रसिद्ध विश्वनाथने इन्हीं नृसिंहदेवकी सभाको उज्ज्वल किया था।

२य नरसिंहदेवके मरने पर तत्पुत्र चोड़देवीके गर्भ-जात २य भानुदेव सिंहासन पर बैठे। उनका उपाधि श्रीवीरादिवीरश्री था। पुरीके ताम्रशासनमें लिखा है कि भानुदेवके साथ गयास-उद्-दीनका घोर युद्ध हुआ। गयास-उद्-दीनने खीय मुसलमान इतिहासमें लिखा है कि गयास-उद्-दीन तुगलकके पुत्र अलिफ खांने ओरंग जय करके जाजनगर घेरा था।

२य भानुदेवके पीछे लक्ष्मीदेवीके गर्भजात तत्पुत्र ३य नृसिंहदेवने राज्य पाया। इनका उपाधि प्रताप-वीर श्रीनरनारसिंह था। ३य नरसिंहके औरस गंगा-म्बिकाके गर्भसे ३य भानुदेवने जन्म लिया। यह प्रताप वीर श्रीभानुदेव उपाधि ग्रहण करके पितृसिंहासन पर बैठे। उनके राजत्वकालको वंगाधिप हाजि इलियसने हाथी पकड़नेके लिये जाजनगर अधिकार किया था। बङ्गाल-नगर राधिपने वीर भानुदेव पर धावा मारा। उनके मरने पर चालुक्यकुलसम्भूत वीरादेवीगर्भजात द्वितीय पुत्र ४र्थ नरसिंहदेवने राज्य लाभ किया। उनका

* २य नरसिंहदेवकी सुवृहत् ताम्रफलकमें वह स्थान कोणाकोणके नामसे वर्णित है। सम्भवत: यह मन्दिर १२७४ को आरम्भ और १२७८ को पूर्ण हुआ।

† पूर्वोक्त श्रीकूर्मस्वामी मन्दिरके १ला स्तम्भमें खोदित तथा ११५३ शक-को प्रदत्त भानुदेवके मन्त्रीका दानपत्र दृष्ट होता है। इससे अनुमान लगाते हैं कि ११५३ शक अर्थात् १२३१ ई०को राजा अनङ्गभीमके राज्यारोहणसे पहले दक्षिणांशमें भानुदेव नामक अपर कोई राजा राजत्व करते थे। निश्चय ही यह नरसिंहदेवके पुत्र पूर्ववर्णित भानुदेवसे स्वतन्त्र थे। ष्टालिंग और हण्टरसाहबने उक्त नरसिंहके पीछे कबीर नरसिंह वा केशरी नरसिंहका नाम लिखा है। परन्तु यह नाम गांगेय राजाओंके प्रदत्त किसी भी ताम्रशा-सनमें देख नहीं पड़ता है।

उपाधि 'चतुर्दशभुवनाधिपति वीर श्रीनृसिंहदेव' था। आईन अकबरीमें लिखा है कि मालवके २य नारिनृपति खुशाल-उद्-दीन हुसेनने वणिकके वेशमें जाजनगर जा कौशलक्रमसे राजाको पकड़ लिया। फिर राजाको कितने ही बढ़िया हाथी देने पर सम्मत होनेसे उन्होंने छोड़ दिया। फिर इस वंशके किसी दूसरे राजाका नाम शिलाफलक वा ताम्रशासनमें नहीं मिला। मादला-पञ्जीके मतानुसार इसके बाद भानुदेव चतुर्थ राजा हुए। वह मतवाले थे। उनके मरने पर मन्त्री कपिलेन्द्र वने उक्त राज्य अधिकार किया। २८३ पृष्ठमें गांगेय-वंशको तालिका और उनका राजत्वकाल दिया गया है।

गाङ्गेरुक (सं० क्लो०) गोरख इमलीका वीज।

गाङ्गेरुकी (सं० स्त्री०) गोरक्षतण्डुला। इसका पर्याय—नागवला, झषा, ह्रस्व गवेधुका, खरवल्लरिका, विश्वदेवा और गोरक्षतण्डुली है। इसका गुण मधुर, कषाय, शीतल, पित्त और कफनाशक है। (चरक सूत्रस्थान १० अ०)

गाङ्गेरुही (सं० स्त्री०) गाङ्गे तटादौ रोहति रुह-क। नागवला।

गाङ्गेष्ठी (सं० स्त्री०) गाङ्गे नदीतटे तिष्ठति स्था-क यत्वम् अलुक्समास। लताविशेष, एक प्रकारकी लता जो गङ्गा तट पर प्राय: उत्पन्न होती है। कटशर्करा।

गाङ्गौघ (सं० पु०) गांगो गङ्गा सम्बन्धी उघ: कर्मधा०। गंगास्रोत, गंगाको धारा।

गाङ्ग्य (सं० त्रि०) गाङ्गे गंगाकूले भव: यत्। गङ्गाकुलादि सम्बन्धी, गंगासम्बन्धी। (ऋग्वेद ६।४५।३१)

गाच (हिं० पु०) फुलवर सूती कपड़ा।

गाछ (हिं० पु०) १ छोटा पेड़, पौधा। २ वृक्ष। ३ एक तरहका पान जो बंगालके उत्तरमें होता है।

गाछी (हिं० स्त्री०) १ बाग। २ खजूरकी मोलायम कोंपल सुखाने पर यह तरकारीके काममें आता है।

गाज (हिं० स्त्री०) १ गर्जन, गरज। २ बिजली गिरनेका। ३ वज्र, बिजली।

गाजना (हिं० क्रि०) १ गर्जन करना, चिल्लाना। २ प्रफुल्ल होना, प्रसन्न होना।

गाजर (सं० स्त्री०) गाजं मदं राति रा-क। शालगम, गजरा, इसके पौधेकी पत्तियां धनियाकी जैसी होती हैं लेकिन लम्बाईमें बड़ी हैं। इसकी जड़ लाल रङ्ग लिये अधिक मोटी होती है। यह उष्ण होती है और घोड़ेको बहुत खिलाई जाती है। दीन मनुष्य और उनके बच्चे छोटी और नरम जड़को बड़े चावसे खाते हैं। इसकी सूखी जड़के आंटेसे हलुवा प्रस्तुत किया जाता जो खानेमें बहुत सुस्वादु लगता है। यह कार्तिक और अगहन मासमें बोया जाता है। इसको तरकारी, अचार तथा मुरब्बे भी बनाये जाते हैं।

गाँजा (फा० पु०) रोगन, पाउडर।

गाजियाबाद—युक्तप्रदेशके मेरठ जिलेकी एक तहसील। यह जिलेके दक्षिणपश्चिम पड़ती है। यह अक्षा० २८° ३३' तथा २८°५६' उ० और देशा० ७७° १३ एवं ७७° ४६ पू० के मध्य अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: २७६५१८ है। गङ्गा और यमुनाकी नहरसे खेत सींचे जाते हैं। इसका क्षेत्र फल ४८३ वर्गमील है। प्रधान नगर गाजियाबाद अक्षा० २८° ४०' उ० और देशा० ७७° २६' पूर्वके बीच मेरठ शहरसे ७ कोस दक्षिण-पश्चिम पड़ता है। इसकी लोकसंख्या प्राय: ११२७५ है। दक्षिणापथके प्रसिद्ध नवाब सलावत जङ्गके भाई गयास-उद्दीनने १७४० ई० को यह नगर स्थापन किया और गाजी-उद्दीन् नगर नाम रख दिया था। रेलवे राह खुलनेके समय बोलनेके सुभीतेको उक्त नाम बदल करके 'गाजियाबाद' बना लिया गया है। १८५७ ई०को सिपाहीविद्रोहके समय एक दल अंगरेजी सेनाने यहां विद्रोहियोंको हराया था। यहां दुग्धेश्वरनाथ देवका मन्दिर विद्यमान है। यह मन्दिर २२५ वर्ष पहले बना था। सिवा इसके ६ बड़ी मसजिदें भी हैं। रेल लाइन खुल जाने पर यहां बहुत सराएं बन गयी हैं। दुग्धेश्वरनाथ व्यतीत और भी कई एक मन्दिर खड़े हैं।

गाजी-उद्-दीन खां फीरोज १म, इनका असली नाम मीर शहाब उद्-दीन सिद्दी था। सम्राट् बहादुर शाहके समय इनको गुजरातकी सूबेदारी मिली। इन्होंने दिल्लीमें अजमेर दरवाजेसे बाहरको एक मदरसा लगाया था। १७१० ई०को अहमदाबादमें इनका मृत्यु हुआ। इनकी लाश दिल्ली ले जा करके दफनायी गयी। सुविख्यात निजाम आसफ जाह इनके लड़के थे।

वीरसिंह

१ कामार्णव (१म) (३६ वर्ष) | २ दानार्णव (४० वर्ष) | गुणार्णव (१म) | मारसिंह | वज्रहस्त

३ कामार्णव (२य) (५० वर्ष)

४ रणार्णव (५ वर्ष)

५ वज्रहस्त (२य) (१५ वर्ष) | ६ कामार्णव (३य) (१९ वर्ष)

७ गुणार्णव (गुणमहार्णव)

८ बज्रहस्त (३य) (४४ वर्ष)

९ जितांकुश (१० वर्ष) | (१) १० गुण्डम १म (७ वर्ष) | ११ कामार्णव ४र्थ (२५ वर्ष) | १२ विनयादित्य (३ वर्ष)

१३ कलिगलांकुश (१२ वर्ष) | १४ वज्रहस्त (४र्थ) नामान्तर अनियंकभीम (३५ वर्ष)

१५ कामार्णव = महिषी वैशुम्बराजकन्या विनयमहादेवी (½ वर्ष) | १६ गुण्डम (२य) | १७ मधुकामार्णव (१९ वर्ष)

१८ वज्रहस्त (३य) = रानी नंगमा (शक सं० ९६० में अभिषेक, राज्य ३३ वर्ष)

१९ राजराज = महिषी राजेन्द्रचोलकी पुत्री तथा चोलराज कुलोत्तुंगकी भगिनी राजसुन्दरी

२० चोडगङ्ग नामान्तर गंगेश्वर (शक सं० ९९८-१०६९)

= १म कस्तूरिकामोदिनी | = इन्दिरा | = चन्द्रलेखा | = लक्ष्मी | = पृथ्वी

२१ कामार्णव ७म वा मधुकामार्णव (शक सं० १०६९-१०७८) | २२ राघव (शक १०७८-१०९२) | २३ राजराज २य (शक १०९२-१११२) = महिषी अहिरमदुहिता स्वप्नेश्वरकी भगिनी सुरमा | २४ अनियंकभीम वा अनंगभीम २य (शक १११२-११२०) | उमावल्लभ = वाग्वल्लदेवी

२५ राजराज (३य) (शक ११२०-११३३) = सद्‌गुण वा मद्‌गुणदेवी

२६ अनंगभीमदेव = कस्तूरीदेवी (शक ११३३-११६०)

२७ नृसिंहदेव = मालचन्द्रकी कन्या सीतादेवी (शक ११६०-११८६)

२८ वीरभानुदेव (१म) = चालुक्यवंशकी आकल्लदेवी (शक ११८६-१२०१)

२९ नृसिंह वा वीरनृसिंहदेव (२य) = चोडदेवी (शक १२०१-१२२८)

३० वीरभानुदेव (२य) = लक्ष्मीदेवी (शक १२२८-१२५०)

३१ नृसिंह वा नरनारसिंह (३य) = कमलादेवी (शक १२५०-१२७५)

३२ वीरभानुदेव (३य) = हीरादेवी (शक १२७५-१३०१) | सीतादेवी

३३ नृसिंहदेव (४र्थ) (शक १३०१-१३४६)

गाजी-उद्-दीन खां फीरोज जङ्ग २य, निजाम-उल-मुल्क आसफ जाहके पुत्र। नादरशाहके ईरान लौट जाने पर यह अमीर-उल्-उमरा उपाधि प्राप्त हुए १७५२ ई० १६ अक्तूबरको दिल्ली जाते समय राह पर औरंगाबादमें इनका मृत्यु हुआ। कोई कोई कहता कि विषप्रयोगसे उनका विनाश साधन किया गया।

गाजी उद्दीन खां ३य, इमाद-उल्-मुल्क यह निजाम-उल्-मुल्कके पौत्र और २य गाजो-उद्दीनके पुत्र थे। पर इन्होंने उन्हींका नाम और उपाधि धारण किया, और वजीर हो करके सम्राट् अहमदशाहको अन्धा बना कारामें डाल दिया। पीछेको इनके द्वारा २य आलमगीरके प्राण विनष्ट हुए। इन्होंने गन्ना बेगमसे शादी की। गन्ना बेगम देखो। १७७५ ई०को गन्ना बेगमकी मृत्यु हुई। फिर इनकी अवस्था भी मन्द पड़ गयी। मग्रीर-उल्-उमरा नामक ग्रन्थमें लिखा है कि १७७२ ई०को वह दाक्षिणापथ गये और मालवमें एक जागीर प्राप्त हुए। फिर सूरत जा और अंगरेजोंके पास थोड़े दिन रह करके उन्होंने मक्काको प्रस्थान किया। गुलजार इब्राहीम कृत काव्यग्रन्थमें भी इनका वृत्तान्त वर्णित हुआ है। उसमें इनका नाम निजाम लिखा है। इन्होंने फारसी और रेखता, शायरी, अरबी और तुर्की भाषाकी गजलें और फारसी जबानमें दीवान और मसनवीका रचना किया। कोई कोई कहता कि कालपीमें उनका मृत्यु हुआ।

गाजी-उद्-दीन—एक नगर। गाजियाबाद देखो।

गाजी-उद्-दीन हैदर—अवधके नवाब वजीर। १८१४ ई० ११ जुलाईको अपने पिता नवाब शहादत अली खांका मृत्यु होने पर यह अवधके नवाबी पद पर प्रतिष्ठित हुए। शहादत अली मरते समय धनागारमें बहुतसा रुपया पैसा छोड़ गये थे। १८१४ ई० १४ अकतूबरको गाजी-उद्-दीन हैदर गवर्नर जनरल लार्ड मैयरसे मिले। इन्होंने कम्पनीको १ करोड़ रुपया दे डालना चाहा था, परन्तु गवर्नर जनरलने, उसे दान स्वरूप न ले ऋण-जैसा ग्रहण करने पर स्वीकृत हुए और नेपाल युद्धके लिये और भी १ करोड़ रुपया कर्ज मांगने लगे। नवाब साहब यह अतिरिक्त रुपया पहले देने पर राजी न हुए, परन्तु पीछेको रसीडण्ट लेफटीनेण्ट करनल बेलीके उद्योगसे वह रुपया भी मिल गया। १८१९ ई० १७ अप्रेलके "समाचारदर्पण" में लिखा है—'तीन चार वर्ष हुए अंगरेजोंके नेपाल राजासे लड़ करके नेपाल राज्यका तृतीय भाग ले लेने पर लखनऊके नवाबने कम्पनीसे अपना राज्य-संलग्न नेपालीय देश मांगा था। उसमें कम्पनीको एक करोड़ रुपया दे करके उन्होंने वह नेपालीय देश कम्पनीसे ले लिया।'

१८१४ ई० १२ नवम्बरको इन्होंने तात्कालिक गवर्नर लार्ड मैयर या मारक्विस आफ हेष्टिङ्गस साहबको लिख भेजा था—'आपने मुझे पितृसिंहासन पर स्थापन किया है। सुतरां मैं उनकी राज्यसम्पत्तिका अधिकारी हूं। वह राज्य मेरे सम्पूर्ण कर्तृत्वाधीन रहना चाहिये, एक भी परगना या गांव मेरे शासनसे विच्छिन्न न हो। फिर मैंने राज्यमें सुविचारके लिये ४ अदालतें कायम की हैं। इस लिये मेरे आत्मीय, अनुचर वा भ्रातृवर्गके मध्य कोई यदि कलकत्ते जा करके मेरे सम्बन्धके कोई अभियोग लगावे, तो वह फैसलेके लिये मेरे राज्यको ही भेजा जावे। ऐसा न होनेसे मेरा सम्मान प्रतिपत्ति सभी बिगड़ेगा।' गवनर जनरलने उत्तर दिया कि—न्यायसङ्गत विषयोंमें अंगरेज गवर्नमेण्टकी शर्तें न तोड़ करके उनके अभिप्राय अनुसार काम किया जावेगा। बेली साहब उस समय लखनऊके रसीडण्ट रहे। गवर्नमेण्टके सेक्रेटरी एडाम साहबने उन्हें लिखा नवाब साहबको बाहरमें स्वाधीन राजा-जैसा बतलाया जावेगा, वस्तुतः उन्हें अंगरेज गवर्नमेण्टके अधीन रहना पड़ेगा। (Dacoity in Excelsis, p. 61.)

नवाब गाजी उद्दीन वजीर थे। १८१८ ई०९ अकतूबरको इन्होंने अबुल मुजफ्फर मैज-उद्-दीन शाह जमान गाजी उद्-दीन हैदर बादशाह नाम धारण किया। उसके उपलक्षमें एक बड़ा दरबार लगा था। इनके अभिषेक कालको कोई ३० हजार रुपयेके मोती लुटाये गये। फिर अंगरेज इन्हें राजा कहने लगे।

गवर्नर जनरल लार्ड आमहर्ष्टके समय नवाबके साथ अंगरेजोंका अच्छा मेलजोल रहा। उन्होंने १८२५ ई० १४ जुलाई और १८२६ ई० २३ जूनको जो खरीता पहुं-

चाया, पहलेमें राजा और दूसरेमें बादशाह-जैसा इनका सम्बोधन आया है। इन खरीतोंके पढ़नेसे समझ पड़ता है कि ब्रह्मदेशके युद्धके लिये लखनऊके नवाबने अंगरेज गवर्नमेण्टको एक करोड़ पचास लाख रुपया ऋण दिया था। रेसीडेण्ट रिकेटस साहब और नवाब मातम-उद्-दौला मुखतियार-उल्-मुल्क दोनोंके ही उद्योगसे वह कार्य सम्पन्न हुआ। इनके आगामीर नामक मन्त्री पर राजकुमार नसीर-उद्-दीनको बड़ी नाराजगी रही। इन्होंने सोचा कि मेरे मरने पर लड़का नवाब हो करके जरूर ही आगामीरको मार डालेगा। इन्होंने अंगरेजोंको अनुरोध किया कि वैसा हो न सके। गवर्नमेण्ट ५) रु० सैकड़े सूद पर १ करोड़ रुपया कर्ज ले करके आगामीरको बचाने पर मुस्तैद हुई। इन्होंने व्यवस्था की मेरे मरने पर उस रुपयेका आधा सूद आगामीरको मिलेगा और बाकी दूसरे कर्मचारियोंको बंटेगा। मशहूर बिशप हेबर साहबने १८२४-२५ ई०को अवध प्रदेश भ्रमण करके एक ग्रन्थ प्रकाश किया है। इसमें उस समयके अनेक वृत्तान्त लिखित हुए हैं। साहबने नवाबकी खूब तारीफ की है। १८२७ ई० १९ अकतूबरको गाजी-उद्-दीन हैदरका मृत्यु हुआ। उस समय इनका वयस ५८ चान्द्र वत्सर था। इन्होंने लखनऊमें मोतीमहल, मुबारक मञ्जिल, शाह मञ्जिल, चीनीबाजार, छत्र मञ्जिल, मांजक और कदम रसूल प्रभृतिका निर्माण किया।

गाजीखां—दिल्लीसम्राट बाबरके समयके एक सामन्त। यह लाहोर अञ्चल शासन करते थे। फिर इन्होंने सैन्य संग्रह करके बाबरके विरुद्ध अस्त्र ग्रहण किया। बाबरने ससैन्य जा जब इनको परास्त करके मिलवतका दुर्ग अधिकार किया, इन्होंने वहांसे पलायन करके पर्वतका मार्ग लिया। इनके पुस्तकागारमें बहु मूल्य पुस्तक संगृहीत रहीं थीं।

गाजी खाँ [illegible]—काश्मीरके एक राजा। इन्होंने अकबर बादशाहके सेनापति कारा बहादुरको युद्धमें हराया था। मयासरी रहीमी २५ ३, फारसी ग्रन्थमें इनका विस्तृत विवरण दिया हुआ है। [illegible]

गाजी खाँ तब्रोरी—अकबर [illegible] एक अफगान कर्मचारी। इन्होंने भाटगढ़के [illegible]दारोंको अकबरके विरुद्ध उभारा था। भाटके राजा रामचन्द्रको कर देने और विद्रोहियोंके आत्मसमर्पण करनेको कहला भेजा था, परन्तु राजाके उस पर राजी न हो युद्धका उद्योग करने पर अकबर फौजके साथ उन पर चढ़ च[illegible]। उन्होंने राजाको परास्त करके इनको मार डाला।

गाजी खाँ बदख्शी—एक मुसलमान सेनापति और कवि। इनका प्रकृत नाम गाजी निजाम था। यह मुल्ला इसाम-उद्-दीन इब्राहीमके पास कानून पढ़ने पर शेष[illegible] बड़े विद्वान् जैसे गण्य हुए। बदख्शांके सुलतान् सुलेमान्‌ने खुश हो करके इनको 'गाजीखाँ' उपाधि दिया था। हुमायुंके मरने पर सुलेमानने फौजके साथ काबुल जा करके उनके नौकर मुनीबको घेर लिया। फिर उन्होंने इनको मुनीब खांके पास भेज उनको आत्मसमर्पण करनेको कहलाया था। मुनीब खाँने इन्हें कई रोज अपने पास रख करके खूब मजेसे खिलाया पिलाया। इन्होंने तुष्ट हो सुलेमानको प्रतिनिवृत्त होने पर अनुरोध किया था। वह तदनुसार बदख्शां चले गये। फिर यह सुलेमानका काम छोड़ भारत आ खांपुरमें सम्राट् अकबरसे मिले। उन्होंने इन्हें नाना उपहार दे करके पहले किसी लेखकके काम पर रखा था। पीछेको बुद्धिमत्ताका परिचय मिलने पर यह एकहजारी फौजदार बनाये गये और कई एक लड़ाइयोंमें वीरत्व देखाने पर "गाजी खां" उपाधि प्राप्त हुए। इन्होंने मानसिंहके अधीन वामदिककी सेनाके नायक बन करके राणा कीकासे युद्ध किया और उसके बाद विहारके विद्रोहको दबा दिया। अकबरशाहके बाद २९ वत्सर राजत्वकी (९९९ हजरी) ७० वर्षके वयस पर अयोध्या नगरमें इनका मृत्यु हुआ। इन्होंने बहुतसी किताबें बनायी थीं।

गाजीपुर—युक्त प्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० २५° १९' तथा २५° ५४' उ० और देशा० ८३° ४' एवं ८३° ५८' पू० के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तर आजमगढ़ और बलिया, पश्चिम जौनपुर जिला, दक्षिण शाहाबाद एवं बनारस और पूर्वको बलिया तथा शाहाबाद जिला है। क्षेत्रफल १३८९ वर्गमील लगता है। लोकसंख्या प्रायः ९१३८१८ है।

गाजीपुर शहरमें इस जिलेकी सदर अदालत है। इस-

के बीचसे गङ्गा बहती और उसके दोनों ओर विशेष उर्वरा भूमि देख पड़ती है। इसका उत्तरांश सरयू और गोमती नदीके बीच पड़ता है। उक्त दोनों नदियां जिले के पश्चिम भागमें जा करके मिल गयी हैं। दक्षिण भाग में कर्मनाशा और गङ्गा है। इसका उत्तरांश दक्षिणांश की अपेक्षा ऊंचा है। इस उच्च भाग पर छोटी छोटी नदियोंने प्रवाहित हो करके पार्श्वस्थ भूमिको कृषि कार्योपयोगी बना दिया है। निम्न भूमिमें करायल नाम- की एक मट्टी होती है। उसमें पानी न देनेसे भी रबी तयार हो सकता है। यहां मुसलमानोंमें सुन्नियोंकी संख्या अधिक है। इस जिलेमें कई नगर बसते हैं।

स्थानीय प्रवाद ऐसा है कि यहां गाधि नामक किसी राजाका गाधिपुर दुर्ग बना था। उन्होंने गाधीपुरनगर भी स्थापन किया। किन्तु वर्तमान गाजीपुर नाम मुसल- मानोंका रखा हुआ है। पहले उसको गजपुर कहते थे। जो हो—इसमें सन्देह नहीं कि वह अति प्राचीन नगर है। शहरकी बगलमें नदी किनारे मट्टीके भीतर अनेक पुरातन इष्टक तथा मृण्मय पात्र और स्थान स्थान पर बहुत पुरातन खोदित शिलालिपियां देख पड़ती हैं। भितरी नामक ग्राममें समुद्रगुप्तके समयकी शिलालिपि निकली है। उन्होंने कन्नौज तक अपना राज्य बढ़ाया था। यहां पर मिले हुए समस्त मूल्यवान् स्तम्भों और शिलालिपियों- से समझ पड़ता है कि ई०से बहुत पहले बुद्धदेवके समयको सैयदपुरसे बक्सर तक समस्त प्रदेश समृद्धिशाली रहा। ईशासे २५० वर्ष पहले प्रसिद्ध अशोक राजाके राजत्व सम- यको इस देशमें बौद्ध धर्म फैला। अशोक राजाके निर्मित प्रस्तरस्तम्भ और स्तूप देखे जाते हैं। चौथीसे ७वीं ई० शताब्दी तक मगधके गुप्तवंशने यहां राजत्व किया उस वंशीय राजाओंके बनाये हुए स्तम्भ तथा मुद्रादि स्थान स्थान पर मिलते हैं। गाजीपुरसे ६॥ कोस दक्षिण जमु- निया तहसीलके लाटिया नामक क्षुद्र ग्राममें ५०० फुट लम्बे और २०० फुट चौड़े ईंटके टूटे स्तूपकी पश्चिम ओर पत्थरका एक खम्भा है। (Fuhrer's Monumental Antiquities and Inscriptions, p. 232) किसी किसी मुद्रा और शिलालिपिमें श्रीगुप्तकुलेन्द्रका नाम मिला है। (Cunningham's Archaelogical Survey Reports. XXII. p. 98.) ६३० ई०को जब चीन-परिव्राजक युएनचुयाङ्ग यह प्रदेश देखने आये, बौद्ध और हिन्दू दोनोंका प्रादुर्भाव रहा। उन्होंने लिखा है कि 'चेनचु' राज्यकी सीमा चारों ओर १६५ कोस है। (Cunningham's ncient Geography of India, p. 439,) गङ्गातीर पर उसकी राजधानी स्थापित है। अधिवासीवर्ग समृद्धिशाली तथा भूमि उर्वरा है।

युएनचुयांगके जाने पीछे हिन्दुओंने युद्ध करके बौद्धोंको देशसे निकाला था। उसी समय भर नामक पराक्रान्त लोगोंने यहां अपना आधिपत्य फैलाया। उत्तर- पश्चिममें जब मुसलमान अपना राज्य बढ़ाने लगे ब्राह्मण और राजपूत भाग करके भर जातीय राजाओंके हो आश्रयमें आ पड़े। वहां धीरे धीरे इन राजाओंके पास- से जमीन ले करके पीछेको जमीन्दार बन गये। ११८३ ई०को कुतुब-उद्-दीनने उत्तर-पश्चिम प्रान्तसे बङ्गाल तक मुसलमानी राज्य फैला दिया। यह प्रान्त भी अवश्य ही उनके राज्यका अन्तर्भुक्त हुआ। कहते हैं कि १३३० ई०में सम्राट् मुहम्मद तुगलकके समय मसऊद नामक किसी सामन्तने गाजीपुरके राजाको रणमें मार डाला। सम्राट्ने खुश हो करके इन्हें 'गाजी' उपाधि और निहत राजाका राज्य दिया था। इन्हीं मसऊदने उसका नाम गाजीपुर रखा। १३८४से १४७६ ई० तक यह प्रदेश जौनपुरके सर्कीराजाओंके अधीन रहा सर्की राजवंश दिल्लीके लोदी वंशीय बादशाहोंकी अधीनता परित्याग करके स्वाधीन बना था। १५२६ ई०को सम्राट् बाबरने यह प्रदेश अधिकार कर लिया। फिर बक्स- रकी लड़ाईमें शेरशाहने हुमायूंको हरा इसको हस्त- गत किया अकबरके समय यह स्थान मुगलोंके अधि- कार पर इलाहबाद सूबेमें लगता था। उसके बाद इसको लखनऊके नवाबने अपने राज्य अवधमें मिला लिया। १७३८ ई०को नवाब शहादत खांने शेख अब्दुल्ला नामक किसी व्यक्तिको इसका शासनकर्ता बनाया था। यहां पर उनका बनाया हुआ चेहलसतून (४० स्तम्भयुक्त भवन), इमामबाड़ा, मसजिद, ... किला और नवाब बाग नामक उद्यान विद्यमान है। (Fuhrer's Monumental Antiquities etc. p. 233.) नवाबबागव

पास ही उनकी कब्र है। जलालाबाद और कासिमाबादमें उनकी खड़ी की हुई मसजिदका भग्नावशेष आज भी देख पड़ता है। अब्दुल्लाके मरने पर उनके पुत्र फजल अली राजा शासन करते रहे। वाराणसीके राजा बलवन्तसिंहने उनको निकाल करके गाजीपुर प्रदेश अपने राज्यमें मिलाया था। १७७० ई०को बलवन्त सिंहके मरने पर चेतसिंह राजा हुए। लखनऊ नवाबके सम्मति क्रमसे गाजीपुर चेतसिंहके ही अधिकारमें रहा। १७७५ ई०को नवाब आसफ-उद्-दौलाने बनारस राज्य अंगरेजोंको दे दिया था। शेषमें १७८१ ई०को वारन हेष्टिंगसने चेतसिंहको सिंहासनसे उतार दिया। उसी समयसे यह अंगरेजोंके अधीन हो गया। १८०५ ई०को यहां भारतके गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिसका मृत्यु हुआ। उसी घटनाके स्मरणार्थ 'कर्नवालिस मानुमेण्ट' नामकी इमारत बनायी गयी। इसमें ३२ खम्भे और ऊपर एक गुम्बज है इसकी कुरसी जमीनसे प्रायः ८ हाथ ऊंची और सङ्गमरमर पत्थरसे जड़ी हुई है। मध्यस्थलमें प्रस्तरखोदित लार्ड कर्नवालिसकी अर्धमूर्ति है। उसकी एक ओर हिन्दू और दूसरी ओर मुसलमान प्रतिकृति है। उत्तरको एक गोरा और एक सिपाही ऐसा बना, मानो शोकाकुल खड़ा हुआ है। सिपाहियोंके बलवेकी लहर यहां भी आयी थी, परन्तु शीघ्र ही उतर गयी।

अंगरेजोंके अधिकारमें आने पीछे १७८८ ई०को गाजीपुरमें जमीन्का जो बन्दोबस्त किया गया था, आज भी चिरस्थायी रूपसे चला आता है। १८४० ई०को भूमिके स्वत्वास्वत्व और अंशादिको नूतन व्यवस्था की गयी। बाकी मालगुजारीके लिये कितनी ही जायदाद बिकी थी। १८५८ ई०को जमीनके बारेमें नया बन्दोबस्त होने पर उसके पुराने हकदारोंके साथ नये हकदारोंका कितना ही झगड़ा और मुकदमा लगा।

गाजीपुर ही अपने जिला और तहसीलका प्रधान नगर है। यह २५° ३५' उ० और देशा० ८३° ३८' ७" पू०में बनारससे २२ कोस उत्तर-पूर्व पड़ता है। लोकसंख्या प्रायः ३८४२८ है। यहां चीनी, तम्बाकू, मोटा कपड़ा और गुलाबजल तैयार होता है। उक्त प्रदेशको सब अफीम यहीं लायी जाती है। वहांकी गवर्नमेण्टका अहिफेन विभाग यहां अवस्थित है। गाजीपुरमें एक म्युनिसपालिटी भी है। यहांकी सब्जीमण्डीसे 'कारबोनेट अव सोडा' बनता है। गाजीपुरमें शोरा भी प्रस्तुत होता है। चोचाकपुरमें कार्तिकी पूर्णिमाको गङ्गा स्नानोपलक्ष पर प्रायः १०००० मनुष्य समवेत होते हैं।

युक्तप्रदेशके गाजीपुर जिलेकी सदर तहसील। यह अक्षा० २५° २३' एवं २५° ५३' उ० और देशा० ८३° १६' तथा ८३° ४३' पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल ३८१ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः २६६८७१ है। इसमें एक नगर और ८२४ गांव हैं। मालगुजारी कोई २६६००० और सेस ४८००० होगी। गङ्गा आदि कई नदियां उत्तर-पश्चिमसे दक्षिण पूर्वको बहती हैं।

युक्त प्रदेशके फतेहपुर जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५° ४१' तथा २५° ५५' उ० और देशा० ८०° ३१' एवं ८१° ४' पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल २७७ वर्गमील है। असोथर राजाके पूर्व पुरुष अरूसिंहने इस नगरकी स्थापन किया था। यहां एक किला भी बना है। लोकसंख्या प्रायः ८१२२२ है।

गाजीबेग तरखां मिर्जा—सिन्धुदेशके एक मुसलमान शासनकर्त्ता। यह मशहूर चङ्गेज खांके वंशसम्भूत थे। मुहम्मद जान्बेग इनके पिता रहे। पिताके मरते समय इनका वयस १७ वत्सरमात्र था। इन पर बादशाह अकबरकी बड़ी मिहरबानी रही। उन्होंने छोटी उम्रमें ही इन पर सिन्धुदेशका शासनभार डाला। परन्तु मिर्जा ईसातर खां नामक आत्मीयके इनके विरुद्ध खड़े हो जाने पर यह शासन कार्य न कर सके, उसके लिये चेष्टा करने लगे। पितृबन्धु खुशरू खां चिगरोसके साहाय्यसे इन्होंने प्रतिवादी ईसातर खांको परास्त करके सिन्धुदेशसे निकाल दिया। इन्होंने उसी सूत्रमें अनेक सैन्य संग्रह किया और फिर सम्राटके विपक्षमें अस्त्र धारण करनेका उद्योग लगाया। १०११ फसलीको अकबरने इनका विद्रोह दबानेके लिये विहारके शासनकर्ता सैयद खां और शाहजादे शाद-उल्लाको भेजा था।

यह जब सम्राट्की अधीनता स्वीकार करके दिल्ली पहुंचे, अकबरने इनको क्षमा करके फिर सिन्धुदेशका

शासनकर्त्ता बना दिया। अकबरके मरने पर शाहजहां-के बादशाह हो करके सिन्धु प्रदेशके साथ साथ मुलतान-का शासनभार भी अर्पण किया। फिर उन्होंने इन्हें सात-हजारी सेनापतिका खिताब बख्शा था। हिरात शासन-कर्त्ता हुसेन खाँके कन्दहार घेरने पर यह उनसे लड़नेको भेजे गये। उसी समय इनको 'फर्जन्द' उपाधि मिली थी। ईरानके सुलतान शाह अब्बासने इन्हें अपने पक्ष-में लानेकी विशेष चेष्टा की और कितनी ही खिलअत भेज दी। परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि उन्होंने अपने प्रभुका पक्ष छोड़ा था। ७ वत्सर राज्य-शासन करके १०१८ फसलीको यह एकाएक मर गये। कोई कोई उस घटनाको जहांगीर राजत्वके ७म वर्ष-में हुई बतलाता है। खुशरो खाँके पुत्र लुत्फ उल्ला-के साथ इन्होंने किसी कारणसे निर्दय व्यवहार किया था। बहुतोंके अनुमानमें उन्हींके जहर देनेसे इनका प्राण गया। इनके सन्तानादि नहीं हुआ। पिताकी भांति यह भी एक कवि रहे। सङ्गीतमें भी इन्हें विशेष अनुराग था। यह सब प्रकारके बाजे बजा सकते थे। इनके पास कई कवि रहते थे। यह बड़े पान खाने-वाले और विलासी थे।

गाजी मिहदी—मुसलमानोंका एक धर्मसम्प्रदाय। इन-की अपनी सम्पत्ति नहीं रहती। सम्प्रदायस्थ लोग स्त्री तथा परिवार छोड़ अपनी अपनी सम्पत्ति ले करके एक साधारण भाण्डार बनाते हैं। उसीसे इनका खर्च चला करता है। यह धर्ममें इतने उन्मत्त रहते, किसीको कोई बुरा काम करता देखते तो मार डालने तकमें नहीं चूकते।

गाजी मियां—मुसलमानोंके उपास्य देवता। यह पांच पीरोंमेंसे एक होते हैं। युक्त प्रदेशके निम्नश्रेणीस्थ मुसलमान इनकी विशेष भक्ति करते हैं। कहीं कहीं इन्हें गजना दूल्हा और सालाका-चिनोला भी कहते हैं। बहुतसे स्थानों पर ज्येष्ठमासको इनके उद्देशसे नानाविध उत्सवादि हुआ करते हैं। किसी लम्बे बांसको सिरे पर कुछ बाल बांध करके उठाये घूमते फिरते और उन्हें इनका छिन्नमस्तक कहते हैं। सुननेमें आया है कि विवाहके दिन इन्होंने धर्मके लिये उन्होंने अपना प्राण गंवाया था। इसीसे उस उत्सवको 'गाजी मियांकी शादी' भी कहा जाता है। बहुतसे हिन्दू भी इस उत्सवमें सम्मिलित होते हैं। ठीक तौर पर कोई नहीं बतला सकता वह किस समयके व्यक्ति थे। कोई कोई कहता कि वह महमूद गजनवीके भतीजे थे, ४०५ हिजरीको अजमेरमें उत्पन्न हुए। ४२४ हिजरीको १९ वर्षकी अवस्थामें बहरायच नगरके हिन्दू राजा साहबदेवके साथ लड़नेमें वह मारे गये।

गाञ्जावदर—भोलपुरी नदी पर अवस्थित एक छोटा करद राज्य। यह आजकल जूनागढ़के अधीन है। वाबरिया वंशके अहीरोंका वास यहां अधिक है। लोकसंख्या लगभग १५० है।

गाञ्जिकाय (सं० पु०) वर्तिक पक्षी।

गाटर (हिं० स्त्री०) जुआठेकी एक लकड़ी जिसके दोनों ओर बैल जोते जाते हैं।

गाड़ (हिं० स्त्री०) १ गर्त्त, गड्ढा। २ अन्न रखनेके लिये पृथ्वीके भीतर खुदा हुआ गड्ढा। ३ नाल आदिके कारखानेमें पानी रखनेका गड्ढा। ४ कूएंकी ढाल। ५ खत्ता। ६ खेतकी मेंड़। ७ बाढ़।

गाड़ना (हिं० क्रि०) १ पृथ्वीमें गर्त्त खोद कर किसी पदार्थको उसमें रखकर मट्टी डाल देना, तोपना। २ जमाना। ३ धसाना। ४ छिपाना।

गाडर (हिं० स्त्री०) १ भेड़। गाडर देखो।

गाडरवारा—१ मध्यप्रदेशके नरसिंहपुर जिलेकी पश्चिमी तहसील। यह अक्षा० २२° ३८' तथा २३° १५' उ० और देशा० ७८° २७' एवं ७८° ४' पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ८७० वर्गमील और लोकसंख्या कोई १९४२२५ है।

२ मध्यप्रदेशके नरसिंहपुर जिलेकी गाडरवारा तह-सीलका सदर। यह अक्षा० २२° ५५' उ० और देशा० ७८° ४८' पू०में शक्करके वाम तट और ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे पर अवस्थित है। यहांसे मोहपानी कोयलेकी खानको जानेकी राह लगी है। कपड़े बुनने और रंगनेका खूब काम चलता है। भूपाल, भेलसा और सागरसे जितना अनाज इधरको आता, सभी इस शहरके मार्गसे हो करके दूसरी जगह जाता है। यहांसे

इन सभी राज्योंको शस्यके बदले गुड़, नमक और शक्कर-की रफ्तनी होती है। महाराष्ट्र अभ्युदयके समय किसी गोड़ राजपूतने गादवाड़में एक छोटा किला बनाया था। उक्त दुर्गका भग्नावशेष अभी विद्यमान है। १८७४ ई०तक उसमें सरकारी दफ्तर लगता रहा, उसके बाद किसी दूसरी जगहको उठ गया। मराठोंके समय यह नगर अपने जिलेको राजधानी था। इसकी आबादी लगभग ८१९८ है। १८६७ ई०को यहां म्युनिसपालिटी बनायी गयी। यहांसे घी और अनाज बाहर बहुत जाता है।

गाड़ा—युक्त प्रदेशस्थ कृषक जातिविशेष। इनमें कुछ मुसलमान भी हैं। कहते हैं कि वास्तविक गाड़े चन्द्रवंशीय क्षत्रिय हैं। इनका आदिनिवास दिल्लीके आस पास था।

गाड़ी (हिं० स्त्री०) एक जगहसे दूसरी जगह पर माल असबाब या मनुष्योंको पहुंचानेका यत्न। यान, शकट, गाड़ी कई प्रकारकी होती है। यथा—रथ, बहली इक्का, ताँगा, बग्घी, जोड़ी, फिटन, टमटम आदि।

गाड़ीखाना (हिं० पु०) गाड़ियोंके रखनेका स्थान।

गाड़ीवान (सं० पु०) जो गाड़ी चलाता है, कोचवान।

गाढ़ (सं० क्ली०) गाह-क्त। १ अतिशय, दृढ़रूप।

"आतुरस्त्वो गाढ़ [illegible]।" (रामा० २।१[illegible])

(त्रि०) २ घना, गाढ़ा। ३ गभीर, गहरा, अथाह ४ विकट, कठिन, दुरूह, दुर्गम। ५ सेवित।

"सर्पास्त्रगाढा [illegible]।" (रघु० ८।७२)

गाढ़लवण (सं० क्ली०) सम्बर नमक।

गाढ़मुष्टि (सं० पु०) गाढ़ा दृढ़ा मुष्टिरत्र। १ खड्ग। (त्रि० २ कृपण, कंजूस।

गाढ़ा (सं० त्रि०) जो जलके सदृश [illegible] न हो।

गाढ़ापुरी—बम्बई बन्दरके पासका एक क्षुद्र द्वीप। अंगरेज इसको Elephanta Island अर्थात् हस्तिद्वीप कहते हैं। प्राचीन दस्तावेजोंमें कोई कोई गाढ़ापुरीको 'गाड़ीपुरी', 'गालीपोरी' और 'घारापुरी' भी लिखा गया है। डा० विलसनने 'घारापुरीका' अर्थ पुण्यदायक पर्वत लगाया था। किन्तु डा० ष्टिवेन्स बतलाते कि उसका नाम 'गाढ़ापुरी' अर्थात् गुहामन्दिरपूर्ण नगरी ठहराते हैं। यह शेष नाम ही युक्तिसंगत जैसा समझ पड़ता है। गाढ़ापुरी द्वीप अक्षा० १८° ५७' उ० और देशा० ७३° पू०में बम्बई शहरसे ६ मील दूर भारतीयकूलके बाहर अवस्थित है। यह थाना जिलेके पनवेल उप-विभागमें लगता है। इसका परिधि चारसे साढ़े ४ मीलके बीच है। दो लम्बी पर्वत श्रेणियां यहां विद्यमान हैं। उनके मध्यमें सङ्कीर्ण उपत्यका है। इस द्वीपका परिमाण भाटेके समय कुछ और ज्वारके चढ़ते ४ वर्गमील रहता है।

पोर्तगीज जब इस द्वीपके दक्षिण भागमें उपस्थित हुये, अपने प्रथम अवतरणके स्थान पर ही पत्थरके हाथी की एक बड़ी मूर्ति देखी। उसीसे इस द्वीपका नाम उन्होंने हस्तिद्वीप (Elephanta) रख दिया है। हस्ती मूर्ति १३ फुट २ इञ्च लम्बी और ७ फुट ४ इञ्च ऊंची थी। १८१४ ई०को मत्था और फिर चारो पैर टूट जानेसे १८६४ ई०को उसको उठा करके बम्बई नगरके विक्टोरिया उद्यानमें रखा गया। सिवा इसके उक्त दोनों पर्वतमालायें जहां मिल-जैसी गयी हैं, घोड़ेकी एक मूर्ति रही। मि० ओविङ्गटन १६९८ ई०में इसको देख लिख गये हैं कि वह बहुत ही स्वाभाविक सादृश्यविशिष्ट थी, थोड़ी दूरसे सब लोग उसको जीवित प्राणी-जैसा समझते थे। अब इसका कोई चिह्न भी नहीं मिलता। १७१२ ई०को कप्तान पायकने यह घोटकमूर्ति देखी थी, परन्तु तत्परवर्ती दर्शकोंके लिखित विवरणमें इसका कोई उल्लेख नहीं।

द्वीपके उत्तर पूर्व और पूर्व भागको छोड़ करके दूसरे सब पहाड़ लताओं और झाड़ियोंसे भरे हैं। पहाड़के बीचकी जमीनमें आम, इमली और करौंदा खूब होता है। पर्वतोंके ऊपर तालवृक्ष और नीचे धान्यक्षेत्र है। समुद्रका किनारा बालू और कीचड़से भरा हुआ है। उस पर कोई पेड़ पत्ता नहीं। जमीनका रंग काला है। इसमें आमके बाग लगे हुए हैं।

ई० ३य शताब्दीसे दशवीं तक सम्भवतः इस द्वीपमें एक समृद्धिसम्पन्न नगर रहा, जो देवालयादिके लिये प्रसिद्ध था। कई एक पुरातत्त्ववित् बतलाते कि उसी स्थान पर मौर्य राजाओंको 'पौरी' नगरी रही। १५७९

ई०को जब इगीन भन लिन्स सोटेनने अपने भ्रमण वृत्तान्तमें इसी गाढ़ापुरीको 'पुरीद्वीप' लिखा और यह भी कहा था कि उस गुफाओंसे भरे स्थानको पोर्तगीज हस्तिद्वीप (Elephante) नामसे अभिहित करते हैं। यहां कुछ गुहामन्दिर हैं। एलोरा और अजण्ठाके गुहामन्दिरोंकी तरह यह भी बहुत विख्यात हैं। गुहामन्दिर व्यतीत उत्तरांशकी सेठबन्दरसे पूर्वमें खेतोंके बीच इष्टक प्रस्तरादि निर्मित भित्ति, स्तम्भादि, शिवलिङ्गादि तथा अन्यान्य नानाविध भग्नावशेष देखते हैं और इन्हीं भग्न स्तूपोंसे अनुमित होता, किसी समय वह सुन्दर समृद्धिसम्पन्न नगर था।

कुछ गुहामन्दिरोंमें चार पूर्ण रूपसे खोदित और प्रस्तुत हुए जैसे मालूम पड़ते हैं बाकी दोमें एककी गुहा बनी थी; परन्तु खम्भे, दीवार, छत या फर्श पर कोई नकाशी नहीं हुई। अवशिष्टका केवल प्रवेशद्वार मात्र बना था, गुहा तक पूरे तौर पर तैयार न हो सकी। बनी हुई ४ गुफाओंमें बड़ी देखने लायक है। यह पश्चिम ओरको पहाड़ खोद करके प्रस्तुत हुई है। इसको पूर्वसे पश्चिम तक पत्थर काट करके पहुंचाया गया है। उसीसे इसमें दोनों ओरको प्रवेश कर सकते हैं। मि० फर्गुसनका कहना है कि वह चोरघरके नमूने पर बनायी गयी है। इसका बड़ा फाटक उत्तरमुखी है। चढ़नेको २॥ फुट चौड़ी कई सिढ़ियां लगी हैं। दरवाजा ३ दराजोंमें हैं। यह तीनों दराजें ४ खम्भों पर सधी हैं। प्रान्त भागके दोनों

स्तम्भ पर्वत संलग्न होनेसे आधे गोल हैं। गुहा पूर्वद्वारसे पश्चिम द्वार पर्यन्त १३० फुट है। प्रवेशपथके सम्मुख ५४ फुट लम्बा और साढ़े १६ फुट चौड़ा मण्डप है। इसी मण्डपके सामने तीन खोदित शिल्पबहुल घर हैं। इनका परिमाण भी मण्डप-जैसा ही है। मण्डप और इन तीनों घरोंको निकाल डालनेसे गुहाका अवशिष्ट अंश केवल ८१ फुट परिमित चतुरस्र मात्र रह जाता है। इस स्थानकी छत खम्भोंकी ६ कतारों पर खड़ी है। फिर एक एक कतारमें छह छह खम्भे लगे हैं। केवल पश्चिमदिकके कोणमें पीठ स्थान बनानेकी जगह छोड़ दी गयी है। उधरको ४।४ खम्भे लगे हुए हैं। सब मिला करके यहां २६ खम्भे रहे। उनमें सोलह आधे गोल हैं। बाकी १० पूर्ण गोल खम्भोंमें आठ टूट पड़े हैं। कुछ कुरसी सब जगह बराबर न रहनेसे खम्भोंकी ऊंचाईमें भी अन्तर आता है। १५से १७ फुट तकके ऊंचे स्तम्भ संलग्न हैं। पिछवाड़की दालानकी दोनों बगलोंमें २ घर हैं। वह १७॥ फुट लम्बे १६ फुट चौड़े पड़ते हैं। पूर्व दिकका मण्डप अति क्रम करनेसे चबूतरे-जैसी कोई जगह मिलती है। इस चबूतरेसे दो-एक कदम दक्षिण मुख चलने पर और एक क्षुद्र गुहा देख पड़ती है। यह ८८ फुट दीर्घ और ५६ फुट चौड़ी है। इसमें एक खुला बरामदा बना है। उसके पीछे एक देवगृह या "आदित्यम्" और दोनों पार्श्वोंको २ पूजागृह हैं। इस देवगृहोंके चारों ओर प्रदक्षिणाको ८॥ फुट चौड़ी घुमावदार राह लगी है। इसीको 'प्रदक्षिणा' कहा जाता है।

पहली गुहाके अभ्यन्तर भागमें सबसे पीछे प्रस्तर खोदित एक त्रिमूर्ति है। इस प्रतिमाका वक्षःस्थल आधा तक खुदा हुआ है। ३ मुख और ६ हाथ देख पड़ते

हैं। तीनों मुख हरिहर ब्रह्माके मुखों जैसे ही प्रतीयमान होते हैं। उसीसे इसका नाम त्रिमूर्ति है। यह एक दीवारके पीछे अंधेरे छोटे गृहमें स्थापित है। यह गृह १०॥ फुट प्रशस्त है। इसके सामने २॥ फुट व्यासके २ खंभे लगे हैं। मूर्तिके मुखत्रय सम्बन्धमें कोई तो कहता कि वह शिव, शक्ति और रुद्रकी प्रतिकृति है। इसका कारुकार्य अतीव सुन्दर है। मध्यस्थलका शिव मुख देखनेसे ब्रह्माका मुख-जैसा मालूम पड़ता है। कारण इसके वाम हस्तमें ब्रह्माण्डबीजस्वरूप दाड़िम्बफलका भग्नांश वा योगियोंके पानपात्र-जैसा कमण्डलु दृष्ट होता है। दक्षिण हस्तमें एक सर्पमूर्ति रहा, जो टूट गयी है। दोनों कान कन्छेदेशके कनफटे योगियों-जैसे लम्बे हैं। मस्तकका मुकुट अर्धचन्द्राकृति-जैसा बना हुआ है। दक्षिणस्थ मुख रुद्रदेवका है। इसके दाहने हाथमें एक सांप लटक रहा है। वाम ओरका मुख महादेवका-जैसा देख पड़ते भी विष्णुका ही मुख ठहरता है। कारण इसके दाहने हाथमें कमल है। इसी विष्णु भावापन्न मुखको कोई कोई शक्तिमूर्तिका मुख-जैसा बतलाता है। इस त्रिमूर्ति-रक्षित स्थानके बाहर खम्भेके दोनों ओर द्वारपालोंकी २ मूर्तियां हैं। उनमें प्रत्येक १२ फुट ८ इञ्च लम्बी है। इनकी बगलमें एक एक पिशाचमूर्ति है।

त्रिमूर्ति दर्शन करनेको जानेसे लिङ्गमन्दिरका गर्भगृह लांघना पड़ता है। इस गर्भगृहमें प्रवेश करनेको चारों ओर ४ दरवाजे लगे हैं। दरवाजों पर चढ़नेको ६ सिढ़ियां हैं। इसी कारण मन्दिरसे पीठस्थानकी कुरसी ३ फुट ८ इञ्च ऊंचा है। दरवाजोंकी दोनों ओर दो दोके हिसाबसे ८ द्वारपाल हैं। उनमें कोई १४ फुट १० इञ्च और कोई १५ फुट २ इञ्च पड़ता है।

त्रिमूर्तिके पूर्वदिक्स्थ गृहमें अर्धनारीश्वर मूर्ति है। इसमें महादेव और पार्वतीका अर्धाङ्गमिलन दिखलाया है। इस गृहमें आसपास और भी अनेक देवमूर्तियां खोदित हैं। अर्धनारीश्वरका पुंमूर्तिके दाहने पीछेकी गरुड़ासीन विष्णु मूर्ति, साथ ही ऐरावत पृष्ठपर इन्द्रमूर्ति और उसके पश्चात् पद्महंसपृष्ठ पर पद्मासन ब्रह्ममूर्ति प्रतिष्ठित है।

त्रिमूर्तिके पश्चिम दिक्स्थ गृहमें १६ फुट ऊंची शिवमूर्ति है। इसके मस्तक पर गङ्गाकी ३ मुखवाली एक मूर्ति बनी है। इस नारीदेहके दोनों हाथ टूटे और शिवमूर्तिके भी वामदिक्स्थ दोनों हस्त भग्न हो गये हैं। वामदिक्की १२ फुट ४ इञ्च ऊंची पार्वतीमूर्ति है। शिवके दाहने चतुर्हस्त ब्रह्मा और ऐरावतासीन इन्द्रकी मूर्ति विराजती है। पार्वतीके बायें गरुड़ासीन विष्णु मूर्ति है। गरुड़के गलेमें मालाकार सर्प लिपटे हुए हैं। सिवा इसके ब्रह्माकी मूर्तिके उपरि भागमें जो मेघराशि खोदित हुई, उसके बीचमें ६ मूर्तियां बनी हैं। शिवमूर्तिके मत्थे पर एक मुनि और दूसरी किसी पुरुषकी मूर्ति है। पार्वतीके मत्थे पर भी मेघमें छिपी हुई ६ स्त्रियां और पुरुषोंकी खोदित मूर्तियां देख पड़ती हैं।

इस गुहामन्दिरके दक्षिण ओरसे जाने पर पश्चिम दिक्के प्रवेशद्वारको चांदनीके पास एक घरमें शिव-दुर्गाका विवाह खोदित हुआ है। शिवकी मूर्ति १० फुट १० इञ्च और पार्वतीकी ८ फुट ७ इञ्च ऊंची है। शिवका यज्ञोपवीत वामस्कन्धसे दक्षिण हस्त पर होता हुआ दक्षिण जानु पर्यन्त फैल गया है। शिवके वाम भागमें एक त्रिमुख मूर्ति है। यह सम्भवतः ब्रह्माकी मूर्ति होगी। कारण स्वयं पद्मयोनि ही इस विवाहके पुरोहित हैं। उसके पश्चात् भागमें ४ हाथकी विष्णुमूर्ति है इसके एक हाथमें पद्म, एकमें चक्र और अन्य दो हाथ भग्न हैं। उमाके दक्षिण उनकी माता मेनकाकी मूर्ति है। उमाके मस्तक पर हाथमें चामर लिये वेद माता सरस्वती विराजित हैं। पार्वतीके दाहने ओर भी स्त्रीमूर्ति हाथमें एक चामर लिये हुए खड़ी है। इसके पीछे घूंघरवाले बाल और मस्तक पर शिरस्त्राणविशिष्ट चन्द्रदेवकी मूर्ति है। इसकी गर्दन पर भी एक चन्द्रार्ध बना हुआ है। शिवके मस्तक पर भृङ्गीकी मूर्ति है। फिर दूसरी दीवारोंमें मुनि ऋषियोंकी मूर्तियां खुदी हैं।

इसके बाद शिव और पार्वतीका कैलासविहार है। इसमें उनके पुत्र कार्तिकेय तथा गणेश और शिवके दक्षिण भृङ्गीकी मूर्ति विद्यमान है। हरपार्वतीके नीचे वृषभ तथा सिंह और चारों पार्श्वों पर पिशाचगण हैं।

पूर्व दिक्के मण्डपमें उत्तर ओरकी शेषोक्त गृहके

बिलकुल सामनेवाले घरके बीच कैलास पर्वत पर हरपार्वती आसीन हैं। नीचे लङ्काधिपति रावण स्तुति कर रहा है। शिवको वामदिक्की गरुड़ासीन विष्णु और अनेक पिशाच मूर्तियां खुदी हुई हैं।

बड़ी गुहाकी पश्चिम सीमाके शेषभागमें मण्डपकी उत्तर दिक्की शिवविवाह-गृहके सामनेवाले घरमें शिवका भैरव महाकाल वा कपालभृत् मूर्ति खोदित है।

उत्तर दिक्के मण्डपमें भीतर जाने पर दक्षिण प्रान्तके किसी घरमें १० फुट ८ इञ्च ऊंची एक चतुर्हस्त शिवमूर्ति है। रुद्रदेव इस स्थान पर ताण्डव नृत्य कर रहे हैं। पास हो ६ फुट ८ इञ्च ऊंची पार्वती, गरुड़ पर विष्णु, ऐरावत पर इन्द्र, गणेश, ब्रह्मा और भृङ्गीकी मूर्ति है।

इस मण्डपकी पूर्व सीमाके सामनेवाले घरमें शिवकी महायोगी वा धर्मराज मूर्ति है। गृहमें सामने दोनों ओरको २ अनुचर हैं। उनमें एकके गलेमें रुद्राक्षको माला पड़ी और दूसरा पैर पर पैर रख करके बैठा है। शिवके वाम भागको केलेका एक पेड़ है। वह इस प्रकारसे तराशा गया है, मानो ३पत्ते टूट पड़े हैं और एक नया पत्ता गोल हो करके निकल रहा है। इसी कदलीवृक्षके निकट विष्णु और ब्रह्माकी मूर्ति है। शिवके दोनों पार्श्वों पर चामरव्यजनकारिणी दो सखियां खड़ी हैं।

इस वृहत् गुहामन्दिरका पूर्वद्वार अति सुन्दर और सुचारु रूपसे खोदित है। मन्दिरके मध्य प्रवेश करनेको १० फुट १० इञ्च प्रशस्त ८ सिढ़ियां लगी हुई हैं। ऊपरी सोपानके दोनों पार्श्वोंपर दो दो सिंहमूर्तियां हैं। भीतरी मण्डप ५८ फुट ४ इञ्च लम्बा और २४ फुट २ इञ्च चौड़ा है। चारों कोण पर ४ घर हैं। इसके पश्चाद्भागमें गर्भगृह है। पश्चिमदिक्का प्रवेशपथ उतना सुन्दर नहीं लगता, परन्तु सम्मुख स्तम्भ और उसके पीछे दीवारकी खोदित मूर्तिका कारुकार्य देखते ही बन पड़ता है।

इस गुहामन्दिरसे थोड़ी दूर दक्षिण-पूर्व दिक्को और एक गुफा है। इसकी लम्बाई १०८॥ फुट है। उत्तर सीमामें गर्भगृह विद्यमान है। वह सम्मुखस्थ मण्डपसे अपेक्षाकृत उच्च लगता है। भीतरी स्तम्भोंका व्यास २ फुट ८ इञ्च है। मण्डपके पीछे ३ घर हैं। उत्तरदिक्का गृह १५ फुट ८ इञ्च दीर्घ और १६ फुट ५ इञ्च चौड़ा है। गुहा मध्यभागके घरका अगवारा २० फुट ८ इञ्च और पिछवारा २२ फुट पड़ता है। इसी पिछवाड़ेकी दीवारसे ३ कदम दूर ७ फुट ४ इञ्चको एक चतुरस्र वेदी है। वेदीके उत्तरको प्रणालिका और वेदीके उत्तर भग्न लिङ्गमूर्ति विद्यमान है।

इसी द्वितीय गुहामण्डपके दक्षिण भागके पर्वतमें कोई दूसरी गुफा है। उसका प्रवेशद्वार दक्षिणमुखी बना है। वह उक्त दोनों गुहाओंकी अपेक्षा पुरातन और भग्न है। उसकी वर्तमान अवस्था देख करके मण्डपकी दीर्घताका परिमाण अनुमान नहीं कर सकते। गुहा भीतरमें १० फुट २ इञ्च लम्बी है। उत्तर और दक्षिण सीमा पर २ गर्भगृह हैं। दोनों गर्भगृहोंके सामने कतारके कतार आठ पहल खम्भे लगे हैं। उसके पश्चिम ओर भी एक दूसरा घर है। मण्डपसे गर्भगृहको जानेकी राहका दरवाजा ४ फुट ८ इञ्च प्रशस्त है। इसके दोनों पार्श्वों पर द्वारपालोंकी २ बड़ी मूर्तियां और चारों किनारों पर पिशाच तथा अन्यान्य मूर्तियां खुदी हुई हैं। भीतरका गर्भगृह १८ फुट १० इञ्च लम्बा और १८ फुट १० इञ्च चौड़ा है। बीचमें ६ फुट ११ इञ्चकी एक चौकोर वेदी है। उस पर एक लिङ्गमूर्ति बनी है। परिधि ६ फुट और ११ इञ्च तथा व्यास २३ इञ्च है। इसकी दोनों ओरको १५ फुट चौकोर २ घर हैं।

इस पर्वतकी उपत्यकाको अतिक्रम करके उक्त तीनों गुहामन्दिरोंकी विपरीत दिक्में अवस्थित दूसरे पर्वतके उपरि भाग पर ४था गुहामन्दिर विद्यमान है। यह १म गुहामन्दिरसे प्राय: १०० फुट उच्च और उसके उत्तरपूर्व कोणमें अवस्थित है। डि कूटो (De Couto) साहबने १६०३ ई०को यह मन्दिर देख करके लिखा कि उसमें एक दालान और ३ घर थे। दक्षिण दिशाके घरमें अब कुछ भी नहीं रहा है। द्वितीय गृहके मध्यमें किसी बड़ी चौकोर जगह पर २ प्रतिमूर्तियां हैं। इनमें एकके ६ हाथ हैं। इस मूर्तिका नाम उक्त साहबने 'विखला चण्डी' लिखा है। सम्भवत: यह दोनों मूर्तियां वेताल और चण्डीकी होंगी। परन्तु अब इनका चिह्नमात्र भी नहीं देख पड़ता। इस देशके अधिवासी उस गुहा-

मन्दिरको सीताबाईका देवालय कहते हैं। मण्डपके चारों ओर ४ खम्भे हैं। फिर ८ फुट ५ इञ्च ऊंचे गेड़ों के भी दो खंभे लगे हैं। मण्डप ७३ फुट ६ इञ्च लम्बा और उत्तरको २७ फुट ४ इञ्च तथा दक्षिणको २५ फुट ७ इञ्च चौड़ा है। इसके दोनों पार्श्वों पर २ अन्तराल-गृह हैं। मध्यस्थलका गृह गर्भगृह होता है। इसके प्रवेशद्वारको उंचाई ७ फुट ११ इञ्च और चौड़ाई ४ फुट ११॥ इञ्च है। भीतरको ५ फुट ४ इञ्च लम्बी और ३ फुट ५ इञ्च चौड़ी वेदी बनी है। इसके उत्तरको प्रणालिका है

वृहत् गुहामन्दिरसे पश्चिमको पर्वतशिखर पर एक भग्न व्याघ्रमूर्ति है। द्वीपवासी इसको उमाव्याघ्रेश्वरी वा देवीकी व्याघ्रमूर्ति जैसी भक्ति और पूजा करते हैं। यह ३ फुट ऊंची है।

ठीक निरूपण किया जा नहीं सकता—कितने दिन पीछे किस राजाके राजत्वकालको और किसके द्वारा उसके गुहामन्दिर खोदे गये। स्थानीय अधिवासियोंमें तीन विभिन्न प्रवाद प्रचलित हैं। कोई कोई कहता कि पाण्डवोंने ही वह मन्दिर बनवाया था। फिर किसीके मतमें कनाड़ाके राजा वाणासुर और किसीके कथनानुसार सिकन्दर बादशाह उसके निर्माता रहे। किन्तु उपर्युक्त प्रवादोंका सत्यासत्य समझ नहीं पड़ता।

बरगेस (James Burgess) साहबने विशेष पर्यालोचना करके इन गुहामन्दिरोंका निर्माण काल ई० ८म शताब्दीका शेषभाग अथवा ८म शताब्दीका प्रारम्भ ही ठहराया है।

आजकल इस मन्दिरमें अपर कोई खोदित शिल्पलिपि दृष्ट नहीं होती। १५४० ई०को पोर्तगीज गवर्नर डमजोयाव-दि-क्राष्ट्रो इस पहाड़ी गुफासे १ शिल्पलिपि अपने देश ले गये थे। सम्भवतः उसीमें उसके निर्माण काल और निर्माताका नाम होगा। वह प्रस्तरलिपि खो गयो है। भविष्यत्में उसके पुन: प्राप्त होनेसे इसके काल निर्णयकी आशा की जा सकती है।

किसी शैवपर्वको हिन्दूवणिक् इस बड़े गुहामन्दिरमें आ करके पूजा और उत्सवादि किया करते हैं। शिवरात्रिको यहां बड़े धूमधड़ाकेसे मेला लगता है।

गाढ़ावटी (सं० स्त्री०) गाढ़ा वटो वटिका यत्र बहुव्री०। चतुरङ्ग क्रीड़ाओंमें एक प्रकारकी क्रीड़ा।

"नौकैका वटिका यस्य विद्यते खेलने यदि।
गाढावटीति विख्याता पदं तस्य न दृश्यति॥" (तिथितत्व)

गाणकार्य (सं० त्रि०) गणकारीभव: गणकारि-ष्य। कुर्वादिभ्यो ण्यः। (पा ४।१।१५१) गणकारिका अपत्यादि, गणगारि ऋषिके वंशज।

गाणगारि (सं० पु०) गणगारस्यापत्यं इञ्। मुनिविशेष।

"पुमर्हमिच्छ गाणगारि:।" (आश्वलायनश्रौत० १२।७।१८)

गाणपत (सं० त्रि०) गणपतिर्देवता अस्य, गणपति-अण्। १ गणपति सम्बन्धीय। २ गणपति उपासक।

गाणपत पञ्चप्रकार उपासकोंमें एक होते हैं। शैव, शाक्त वा वैष्णवोंकी भांति यह भी अपने इष्टदेवता केवल गणपतिको सब देवताओंका प्रधान समझ करके उपासना करते हैं। आजकल गाणपत सम्प्रदाय बहुत घट गया है। और आचार व्यवहारमें भी अन्यान्य उपासकोंके साथ इनका कोई भेद लक्षित नहीं होता। परन्तु किसी समयको इस सम्प्रदायने विशेष उन्नतिलाभ किया और वैष्णव सम्प्रदायको तरह एक पृथक् मत चला दिया था। ऋक्‌संहिता (२।२३।१) के मन्त्र और वाजसनेय-संहिता (२६।२२-२३) के अध्यायमें गणपतिकी स्तुति मिलती है। इससे मालूम पड़ता कि प्राचीन कालसे ही गणपतिकी उपासना चल रही है।

तन्त्रशास्त्रमें शिव आदिकी उपासनाको तरह गणपतिकी उपासना भी प्रधान जैसी निर्णीत हुयी है। सिवा इसके तन्त्रशास्त्रमें और एक विधान देख पड़ता कि किसी भी देवताकी उपासना क्यों न की जावे सर्व प्रथम गणपतिको पूजना पड़ेगा। जो गणपतिकी पूजा न करके अन्य देवताकी पूजता, वह पूजाफलसे वञ्चित रहता है। हिन्दू लेखक किसी ग्रन्थको लिखना आरंभ करने पर सर्व प्रथम "नमो गणेशाय" वा "श्रीगणेशाय नमः" लिपिबद्ध करते हैं। इन्हीं समस्त कारणोंसे बहुतसे लोग अनुमान करते किसी समय गाणपत सम्प्रदाय अतिशय प्रबल रहा। उनकी युक्ति और उपदेश शास्त्रसङ्गत तथा सबको आदरणीय था। गाणपत्य धर्मने सम्पूर्णरूपसे न सही, आंशिक रूपसे प्रायः सभी सम्प्रदा-

योंमें संक्रमण किया था। कालके प्रबल वेगमें इस सम्प्रदायका ह्रास होते भी हिन्दू लोगोंमें गणपतिकी ऐसी उपासना चलती और भक्ति मिलती है। वास्तविकपक्षमें कोई सन्देह नहीं कि वह सम्प्रदाय अपर सम्प्रदायोंकी तरह बलवान् था।

"यानि गाणपता न शास्त्राणि वं ... च।
साधनानि च सौराणि ... यानि ...।
... ॥" (तन्त्रसार)

गाणपत सम्प्रदायके मतमें गणपति ही परब्रह्म हैं। समस्त जगत् गणेशसे उत्पन्न हुआ, गणेशमें स्थित है और गणेशमें ही लीन हो जावेगा। गणेशाथर्वशीर्ष प्रभृति उपनिषद्में भी "तत्त्वमसि" आदि वाक्योंसे गणेशकी ही वर्णना की गयी है। गणेश—ब्रह्मा, विष्णु, शिव प्रभृति सब देवताओंके ही अधिपति, गुणत्रयातीत, अवस्थात्रयशून्य, देहत्रयरहित और त्रिकालके अधिकारी हैं। वह सभी प्राणियोंके मूलाधारमें अवस्थिति करते हैं। गणेशको ३ शक्तियां हैं। उन्हींके द्वारा गणराज जगत्की सृष्टि, पालन और नाश किया करते हैं। वह सगुण और निर्गुण भेदसे दो प्रकार हैं। योगी सगुण गणपति की उपासना करते हैं। उस उपासनासे अविवेक नष्ट हो जाता और बादको उपासक मुक्ति पाता है।

(गणेशाथर्वशीर्ष उप० ६ ख०)

गाणपत उपासक शाक्त वा शैवकी तरह गणपतिमन्त्रमें दीक्षित होता है। गणपति उनके इष्टदेव हैं। चिरजीवन वह गणेशकी ही उपासना किया करते हैं। वे किसी अपर सम्प्रदायके प्रति ईर्ष्या वा दूसरे देवताका द्वेष नहीं रखते, साथ ही अपने इष्टदेव गणेशको भक्तिमें अधिक लीन रहते हैं। गणेशका मन्त्र "ॐ गं" है। गाणपत लोगोंको इसी मन्त्रकी दीक्षा दी जाती है।

गणेशके उपासकोंमें भी सन्ध्या आदिका विधान है। "एक... विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्" गणेशकी गायत्री है। गणेशके मन्त्रमें ऋषि गणक, निचृद् गायत्री छन्दः और देवता गणपति हैं। उपासनाकी अन्यान्य प्रणालियां अपरापर देवताओंके समान हैं। गाणपतोंके मतमें मृत्युकालको गणेशकी चिन्ता करते करते प्राण छोड़नेवाला मुक्ति पाता है।

(गणेशगीता) गणेश देखो।

गाणपत्य (सं० त्रि०) गणपतिरुपास्योऽस्य ण्यः। १ गणेशका उपासक। २ गणपति सम्बन्धीय। (क्ली०) ३ गणपतिका भाव। गाणपत देखो।

गाणिक (सं० त्रि०) गणं वेत्ति अधीते वा उक्थादित्वात् ठक्। १गणसूत्रादि पाठक। २ गणसूत्रादि वेत्ता। ३ गणसूत्रकुशल।

गाणिक्य (सं० क्ली०) गणिकानां वेश्यानां समूहः गणिका ष्यञ्। गणिकायाश्चेति वक्तव्यम्। पा ४।२।४० वार्त्तिक। गणिकासमूह, वेश्याका झुंड।

गाणितिक (सं० त्रि०) गणितं शास्त्रं वेत्ति ठक्। १ गणितशास्त्रवेत्ता, गणितशास्त्र जाननेवाला। २ गणितसंबन्धीय।

गाणिन (सं० पु०-स्त्री०) गणिनाऽपत्यादि गणिन्-अण् इनो न लोपः। गाथिविदथिकेशिगणिपणिनश्च। पा ६।४।१६५ १ गणीका अपत्य। २ गणीका छात्र।

गाण्ड्य (सं० पु०) गण्डोरपत्यं। गर्गादित्वात् यञ्। गण्डका अपत्य, गण्डका वंशज।

गाण्ड्यायन (सं० पु०) गण्डोर्युवापत्यं गण्ड-यञ, ततः फञ्। गण्डका युवा अपत्य।

गाण्ड्यायनी (सं० स्त्री०) गंडोरपत्यं स्त्री गंड-यञ्। सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः। पा ४।१।१८। गण्डका स्त्री अपत्य, कन्या।

गाण्डि (सं० स्त्री०) गडि-इन्। ग्रन्थि, गिरह।

गाण्डिव (सं० पु० क्ली०) गाण्डिर्ग्रन्थिरस्त्यस्य वः। गाण्ड्यजगात् संज्ञायाम्। पा ५।२।११०। १ अर्जुनके धनुषका नाम। (भारत १।२२४।४) पहले पहल ब्रह्माने इस धनुषको निर्माण कर प्रजापतिको दिया, प्रजापतिने इन्द्रको, इन्द्रने सोमको एवं सोमने वरुणको प्रदान किया था। तत्पश्चात् अग्निने वरुणसे प्रार्थना कर यह धनुष अर्जुनको दिलाया था। (भारत १।२२५ अ०) २ धनुष मात्र।

गाण्डिवी (सं० पु०) गांडिवोऽस्यास्ति इनि। १ अर्जुन। २ अर्जुनवृक्ष, आकका गाछ।

गाण्डी (सं० स्त्री०) गाडि-ङीष्। गाण्डि देखो।

गाण्डीर (सं० त्रि०) गण्डीरस्येदं गण्डीर-अण्। शाकविशेष, शमठ नामका साग।

गाण्डीव (सं० पु० क्ली०) गाण्डी ग्रन्थिरस्त्यस्य गांडी-वः। १ अर्जुनका धनुष।

"तत् प्रमथ्याक्षयं श्रेष्ठं रथञ्च कपिलक्षणम्।
कार्यं च सुमहत् पार्थो गाण्डीवेन करिष्यति॥" (भारत १।१२६।१४)

इस धनुषको ब्रह्माने एक हजार वर्ष, प्रजापतिने पांचसौ तीन वर्ष, इन्द्रने पचासी वर्ष, सोमने पांचसौ वर्ष, वरुणने सौ वर्ष और अर्जुनने पैंसठ वर्ष धारण किया था। गाण्डिव देखो। २ धनुष।

गाण्डीवधन्वा (सं० पु०) गाण्डीवं धनुर्यस्य समासे अनङ्। अर्जुन।

गाण्डीवी (सं० पु०) गांडीवमस्त्यस्य इनि। अर्जुन। (भारत १।१४९ अ०) २ अर्जुनवृक्ष, आकका पेड़।

गात (हिं० पु०) १ शरीर, अंग। २ गुप्तांग, लज्जाका अंग ३ स्तन, कुच। ४ गर्भ।

गातलीन (अं० स्त्री०) जहाजमें एक डोरी जो मस्तूलके चरखेमें लगी रहती है।

गातव्य (सं० त्रि०) गै गाने गा गतौ वा तव्य। १ गन्तव्य, जाने योग्य। २ गेय, गाने योग्य।

गाता (हिं० पु०) गानेवाला, गवैया।

गातागतिक (सं० त्रि०) गतागतेन निर्वृत्तम् अक्षद्यूता-दित्वात् ठक्। गमनागमन द्वारा निष्पन्न।

गातानुगतिक (सं० त्रि०) गतानुगतेन निर्वृत्तम्। गतानुगत निष्पन्न।

गाती (हिं० स्त्री०) गलेमें लपेटनेका एक प्रकारकी चादर। छोटे बच्चे को जो गलेमें कपड़ा पहनाया जाता है इसे भी गाती कहते हैं।

गातु (सं० पु०) गायति गै गाने तुन्। १ कोकिल। कोयल। २ भ्रमर, भौरा। ३ गन्धर्व। ४ पथिक मुसाफिर। गै गाने भावे तुक्। ५ गमन, जाना। ६ जानेका रास्ता। ७ उपाय। ८ पृथ्वी। ९ स्तव। (त्रि०) १० क्रोधी। गुस्साबर। ११ गायक, गानेवाला। (क्ली०) १२ धन, दौलत।

गातुविद् (सं० त्रि०) गातुं मार्गं वेत्ति क्विप्। पथज्ञ, रास्ता जाननेवाला।

गात्र (सं० त्रि०) गै गाने त्रच्। गायक, गानेवाला।

गात्र (सं० क्ली०) गच्छति गम् त्रन् आकारादेशः। १ अंग, देह, शरीर। इसका पर्याय—कलेवर, वपुः, संहनन, शरीर, वर्म, विग्रह, काय, देह, मूर्ति, तनु, इन्द्रियो, तन, अङ्ग, वेत्र, भूषण, सत्करण, वेर, सञ्चर, घन, बन्ध, पुर, पिण्ड, पुद्गल, भूतात्मा, स्वर्गलोकेश, स्कन्ध, पञ्जर, कुल और बल हैं। (जटाधर) २ हाथीके अगले पैरोंका उपरी भाग। (त्रि०) गाथक सम्बन्धीय।

गात्रक (सं० क्ली०) गात्र स्वार्थे कन्। गात्र देखो।

गात्रकण्डू (सं० स्त्री०) गात्रजाता कण्डूः। गात्रविचर्ची, खुजली।

गात्रगुप्त (सं० पु०) श्रीकृष्णके एक पुत्र जो लक्ष्मणाके गर्भसे उत्पन्न हुवे थे।

गात्रघर्षण (सं० क्ली०) शरीर मार्जन, देहका मलना।

गात्रभङ्गा (सं० स्त्री०) गात्रस्य भङ्गोऽवसादो यस्याः बहुव्री०। १ एक प्रकारका पेड़, केवांच, कौंच। १ गन्धशठी।

गात्रमार्जनी (सं० स्त्री०) गात्रं मृज्यतेऽनया मृज करणे ल्युट् ङीप्। शरीर मार्जनार्थ क्षुद्र वस्त्र, गमछा तौलिया।

गात्ररुह (सं० क्ली०) गात्रे रोहति रुह-क, ७-तत्। लोम, बाल। (भारत ३।३।१४)

गात्रवत् (सं० पु०) १ लक्ष्मणाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र। (त्रि०) २ प्रशस्त गात्रविशिष्ट। सुन्दर शरीरवाला।

गात्रवती (स्त्री०) लक्ष्मणागर्भज श्रीकृष्णकी कन्या।

गात्रवर्ण (सं० पु०) स्वर साधनकी वह प्रणाली जिसमें सात स्वरोंमेंसे प्रत्येकका उच्चारण तीन तीन दफा किया जाता है।

गात्रविक्षेप (सं० पु०) अङ्गचालन, शरीर संचालन।

गात्रविन्द (सं० पु०) लक्ष्मणाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र।

गात्रशोष (सं० पु०) पूतना, बालरोगविशेष।

गात्रसङ्कोची (सं० पु०) गात्रं सङ्कोचयति सं-कुच-णिच् णिनि। १ जाहक नामक जन्तुविशेष, जोंक। २ कृष्णकृकलास, काला गिरगिट। ३ गोनसमर्प।

गात्रसंप्लव (सं० पु०) गात्रेण संप्लवते सम्-प्लु-अच् ३-तत्०। प्लवजातिके पक्षी, हंसप्रभृति।

गात्रसम्मित (सं० त्रि०) गात्रं सम्मितं सम्पूर्णं यस्य बहुव्री०। तीन मासके ऊपरका गर्भ, जिसका शरीर बन गया हो।

गात्रसाद (सं० पु०) १ शरीरावसाद। २ पित्तरोग।

गात्रस्पर्श (सं० पु०) गात्रस्य स्पर्शः ६-तत्। अङ्गस्पर्श, शरीरका छूना।

गात्रानुलेपनी (सं० स्त्री०) गात्रमनुलिप्यते यया करणे ल्युट्-ङीप्। अनुलेपनवर्त्तिका, सुगन्धि द्रव्यसे शरीरका लेपन।

गात्रावरण (सं० क्ली०) गात्रमा वृणोति, आ-वृ-ल्यु। वर्म, कवच।

गात्रोत्सादन (सं० क्ली०) गात्रानुलेपन।

गात्रिका (सं० स्त्री०) गात् संज्ञायां कन्-टाप् अत इत्वम्। गमछा, तौलिया।

गाथ (सं० त्रि०) गै-थन्। १ गान। २ स्तोत्र। (सायण)

गाथक (सं० त्रि०) गायति गै गाने थकन्। गायक, गानेवाला।

गाथपति (सं० त्रि०) गाथायाः पतिः ६-तत्। वाक्पति, स्तोत्रपालक रुद्र।

गाथा (सं० स्त्री०) गै-थन्-टाप्। उषिकुषिगार्तिभ्यस्थन्। उण् २।४। १ स्तुति। २ प्राचीन कालकी एक प्रकारकी रचना जिसमें लोगोंके दानपत्रादिका वर्णन होता था। ३ श्लोक विशेष, किसी प्रकारका छन्द। इसमें स्वरका नियम नहीं चलता और सुननेमें गद्य जैसा लगता है। ४ गीत। ५ कोई मात्रावृत्त। जिसके प्रथम तथा तृतीयमें बारह, द्वितीयमें अठारह और चतुर्थपादमें १० मात्रा लगाते, गाथा छन्द बतलाते हैं। इसीका नाम आर्या है। ४ प्राकृत भाषा। ६ संस्कृत प्राकृत मिश्रित श्लोक।

बौद्धोंकी ग्रन्थावलीमें गाथा-जैसे अनेक श्लोक दृष्ट होते हैं। लङ्कावतार, तथागतगुह्यक, ललितविस्तरप्रभृति ग्रन्थोंकी रचनाका कुछ अंश गद्य और कुछ पद्य है। गद्यांशकी भाषा व्याकरण शुद्ध संस्कृत है, किन्तु पद्यमें कुछ संस्कृत अशुद्धियां मिलती हैं। उसीसे इस विषयमें बहुतसी आलोचना हुई, गाथा वा पद्यांश अशुद्ध संस्कृत अथवा कोई स्वतन्त्र भाषा है। संस्कृत भाषा लिखनेको वैसी भूल क्रमागत समानभावसे हो नहीं सकती। एक ही शब्दकी बार बार अशुद्धि दृष्ट होनेसे बहुतसे लोगोंने उसको स्वतन्त्र भाषा-जैसा निर्देश किया है। परन्तु बात तो यह है, ललितविस्तर प्रभृति बौद्ध ग्रन्थोंमें पद्यांश व्याकरण शुद्ध और गाथा वा गद्यांश अशुद्ध संस्कृतमें पृथक् रीतिसे क्यों रचित हुआ? यह नहीं कहा जा सकता कि गद्यांश अशुद्धियोंसे रहित है, घटना क्रमसे लेखककी अनवधानतासे छूट-जैसा गया मालूम पड़ता है। दूसरी बात यह कि गद्यांशकी भाषा पाण्डित्यपूर्ण और जटिल है। कर्ताकी क्रिया अपने स्थानको छोड़ करके बहुत आगे दृष्ट होती है। किन्तु गाथाकी भाषा उसके सम्पूर्ण विपरीत है। इसकी भाषा नितान्त सरल होती है। वाक्य छोटे छोटे आये और उन्हींमें भाव बहुत अच्छी तरह खोल करके दिखलाये हैं। गाथाकी भाषामें सरल कथाका ओजोगुण और कल्पनाका पार्थक्य प्रचुर है। कविता सरल अनुष्टुप्से शार्दूलविक्रीड़ित प्रभृति नानाप्रकार छन्दोंमें रचित हुई है। विशेष अनुधावन करनेसे प्रतीत होता कि रचनाको मिष्ट करनेके लिये शब्दोंको स्थान स्थान पर बढ़ा दिया है। यथा –

संस्कृत भाषा	गाथाकी भाषा
नच	नाच
सच	सोच
प्रयातः	प्रयातो
रुदमान	रोदमान
ताः	ते
स्मितमुखी	स्मितामुखि इत्यादि

कहीं पर स्वरोंका सङ्कोच करनेसे ऐसा बन गया है—

यामि	यमि
भावि	भवि
मिथ्याप्रयोग	मिथ्यप्रयोग इत्यादि।

कहीं तो स्वर और व्यञ्जन एकबारगी ही परित्यक्त हुए हैं—

नमसि	नमे
प्रणिध्यायन्ति	प्रणिध्येन्ति इत्यादि

किसी किसी स्थल पर सन्धि वा युक्त वर्णको बांट करके सरल और सुमिष्ट बनानेकी चेष्टा की गयी है—

ग्लानो	गिलानो
स्त्री	इस्त्री
क्लेश	किलेश

श्रो	श्रिरि
पद्माभि	पदुमानि इत्यादि

लिङ्ग, वचन, कारक और क्रियाकी बहुतसी अशुद्धियां हैं—

तावपि	तानपि
आसनात्	आसनिना
त्रिलोकी	तिलोक
मह्य	मम, मह्य:
तव, त्वा	तुभ्य
कुत्र, केन	कहिं
ददामि	देमि वा ददमि
भवामि	भोमि
भविष्यमि	भोष्य इत्यादि

वाक्यादि रचना पर संस्कृत भाषामें जिस स्थानको जो रखनेका नियम है, गाथाकी भाषामें अनुसरण करते हैं। परन्तु समास और सन्धिमें यह नियम नहीं लगता। फरासीसी विद्वान् सेनार्ट बरनूफ साहबका कहना है, पुस्तक पढ़नेसे उसका कोई कारण अनुभूत नहीं होता। शाक्यमुनिके पीछे और पालि भाषा बननेसे पहले क्या उसी भाषाकी सृष्टि हुई? लोग संस्कृत न जानते थे, परन्तु उसमें लिखनेकी इच्छा होनेसे उन्होंने ऐसा कर लिया, सम्भवत: वह अंश भारतके बाहर अर्थात् पश्चिम प्रान्त वा काश्मीरमें लिखा जाता होगा। भारतके मध्य जैसी वहां संस्कृतकी चर्चा न थी। परन्तु साहबकी बातसे समझ पड़ता है कि उन्होंने गाथाकी भाषा पढ़नेमें त्रुटि की। इसमें बड़ा गुणीपन और पण्डिताई है। न्यायशास्त्र और मनोविज्ञानके जटिल विषय अतिपरिष्कृत और सुललित भाषाके आर्या और तोटक छन्दोंमें लिपिबद्ध हुए हैं। कैसे कहेंगे—संस्कृत भाषा पर जिनका उतना अधिकार रहा, उसे ही लिखनेमें भूल गये। पञ्जाब आदि देशोंमें रचित हुआ होनेसे संस्कृत व्याकरणके अनुसार गद्यांश विशुद्ध और पद्यांश अशुद्ध कैसे निकला। राजा राजेन्द्रलाल मित्रने बतलाया है कि शाक्यमुनिके समय या अव्यवहित पीछे भाट लोग उसकी भांति घूमते थे। ललितविस्तर प्रभृति ग्रन्थोंके रचयिताओंने गद्यांश लिख करके उसकी पोषकता करनेके पीछे गाथाकी कविता यथायथ उद्धृत कर दी। ऐसा करनेका कारण यह था कि उस समयको लोगोंमें कुछ बहुत आदरणीय रही। गद्यरचनाके पीछे "तत्रेदमुच्यते" लिख करके पद्यको उद्धृत किया है। मोक्षमूलर और वेवर साहबने उक्त मित्र महोदयका मत समर्थन किया है। लासेन बरनूफ फेर भी उसकी पोषकता करते हैं। डाक्टर म्योर कहते कि पीछेको गाथाकी भाषा कोई लिखित भाषा थी। बेनफी साहबने राजेन्द्रलालकी पोषकता करके लिखा है कि पेशेदार गानेवालोंका निम्नश्रेणीके लोग जैसा मान लेने पर उनका मत ठीक समझा जा सकता है। राजेन्द्रलालने उसका खण्डन करके कहा है—यद्यपि बौद्ध धर्ममें जातिभेद कम रहा तथापि यह कैसे सम्भव हो सकता कि ब्राह्मण क्षत्रिय जातीय रचयिता अपने आपको उच्च श्रेणीस्थ जैसा न समझते थे। वह कविताको नीचजातिरचित होने पर उद्धृत करनेसे सदा विरत ही रहते। गाथाएं जबानी बननेसे उनकी शुद्धि अशुद्धिकी ओर उतना मनोयोग नहीं किया गया। अनेक समयको शुद्ध हो वा अशुद्ध कोई सरल कथा चित्तको जितना आकर्षण करती अच्छे शुद्ध संस्कृत उच्च अङ्गकी भाषा नहीं कर सकती। भारतवर्षके भाट तथा कुलज्ञ मूर्ख नहीं होते, परन्तु उनकी संस्कृत भाषा ग्राम्य अशुद्धता आदि नाना दोषोंसे लिप्त है। फिर भी सभास्थलमें उनकी वक्तृताका विशेष आदर है। गाथाके बारेमें भी यही कहा जा सकता है। लेखकोंके विद्वान् होते हुए भी यह सम्भव नहीं कि सब श्रोता संस्कृतके सुपण्डित रहे। श्रोताओंके मनोरञ्जनकी पण्डितोंकी अपेक्षा भाट लोगोंकी ही इज्जत ज्यादा थी। बौद्धोंके महासङ्घ समयको गाथाका बड़ा आदर होता रहा। गद्यके मध्य उसके प्रवेश लाभका यही कारण था। अच्छी तरह अनुमित होता कि बौद्धोंके प्रथम महासङ्घमें शुद्ध गाथा ही कही गयी। फिर पण्डित लोगोंने बुद्धदेवका विवरण विशुद्ध संस्कृत भाषामें लिखना अपना कर्तव्य समझ करके उसकी पोषकताके लिये गाथाको उद्धृत किया।

गाथाके पद २ भागोंमें विभक्त जैसे ठहराये जा सकते हैं। इसके कई पदोंका प्रकृति अंश संस्कृत है; केवल

विभक्ति, वचन और लिङ्ग ही विकृत हो गया है। किन्तु कुछ पदोंके प्रकृति, विभक्ति, वचन और लिङ्ग प्रभृति सभी अंश विकृत हैं—किसीका संस्कृतके साथ कोई सम्बन्ध नहीं। वैसा ही देख करके पूर्वोक्त भाषातत्त्ववेत्ताओंने उसको एक नयी भाषा बना लेनेकी चेष्टा की है। (किसी किसीने उसको विकृत संस्कृत जैसा भी ठहराया है।) परन्तु इन मतोंमें किसीका पक्षपाती हुआ नहीं जाता। वस्तुतः गाथाकी भाषा संस्कृत मिश्रित प्राकृत है। उसको कोई स्वतन्त्र नयी भाषा मान नहीं सकते। उसका जो अंश संस्कृत व्याकरणके अनुसार सिद्ध हो सकता और प्रकृति, विभक्ति, वचन वा लिङ्गांशमें कोई व्यतिक्रम नहीं पड़ता—संस्कृत है। इसी प्रकारसे जो प्रकृति, विभक्ति प्रभृति अंशोंमें वा सम्पूर्ण रूपसे विकृत आती—प्राकृत या अपभ्रंश कहलाती है। वर्तमान समयमें भी वैसी अनेक रचनाएं देख पड़तीं, जिनका थोड़ा अंश संस्कृत और थोड़ा हिन्दी या कोई दूसरी भाषा है। गाथाका जो अंश संस्कृत नहीं ठहरता, प्राकृत भाषाके व्याकरणानुसार बनता है। दृष्टान्त स्वरूप गाथाके कई पदोंकी साधनप्रणाली प्राकृत व्याकरणके अनुसार नीचे प्रदर्शित हुई है—

चण्डप्रणीत "आर्ष प्राकृतलक्षण" नामक प्राकृत व्याकरणका स्वरविधानके "स्वरोऽस्यान्यस्य" (२।४१) चतुर्थ सूत्रका अर्थ संस्कृतयोनि, संस्कृतसम और देशी है। (इसमें संस्कृतयोनि प्राकृत संस्कृतसे किसी अंश पर बिगड़ करके बनता है।) प्राकृत भाषामें संस्कृतके किसी स्वरस्थान पर दूसरे स्वरका आदेश होता है। इसी नियमके अनुसार गाथामें व्यवहृत नीचेके शब्द संस्कृतसे निकले हैं—

गाथामें व्यवहृत प्राकृत	संस्कृत
रोदमान	रुदमान
कारोथ	कुरुथ
गेहि	गृहे
मय	मया
उदरि	उदरे। इत्यादि

"संयोगमध्ये च स्वरागमो मध्ये।" (प्राकृतलक्षण ३।१०)

इच्छानुसार संयोगके मध्य किसी एक स्वरका आगम हो सकता है। इस नियमके अनुसार निम्नलिखित प्राकृत शब्द सिद्ध होते हैं—

गाथाका प्राकृत	संस्कृत
रतन	रत्न
अभुजिय	आभुज्य
अकम्पिय	आकम्प्य
वियूह	व्यूह
पदुमानि	पद्मानि इत्यादि।

"ओत्वमवापयोः।" (प्राकृतलक्षण २।२१)

अव और अप उपसर्गोंके स्थानमें ओकार होता है। यथा—आरुह्य, ओरुहित्वा।

"यवयोरिदुतौ" (प्राकृतलक्षण ३।३१)

यकार और वकारके स्थानमें यथाक्रम इकार और उकार आदेश होता है। यथा—जनयन्ति, जनेन्ति, दर्शयन्ति, दर्शेन्ति; उपयन्ति, उपेन्ति इत्यादि। गाथाके अनेक अंशोंमें द्विवचनके स्थान पर बहुवचनका प्रयोग देख पड़ता है। प्राकृत भाषामें द्विवचन नहीं होता, उसकी जगह बहुवचन लगता है—

"द्वित्वं बहुत्वेन।" (प्राकृतल० २।१२)

"क्वचिद् व्यत्ययः" (प्राकृतलक्षण १।४) सूत्रके अनुसार स्थान स्थान पर लिङ्गका व्यत्यय भी हुआ करता है। यथा—देवाः, देवाणि इत्यादि।

इस स्थल पर अनावश्यक समझ करके और अधिक नहीं लिखा। गाथाके संस्कृतको छोड़ करके दूसरा सभी अंश प्राकृत व्याकरणके अनुसार साधित हो सकता है। अतएव उक्त गाथाकी भाषाको संस्कृत मिला हुवा प्राकृत कहना ही उचित है।

इसका निश्चय नहीं, वह कितने समयकी पुरानी है। भाषाकी सृष्टिके पीछे मानवने जब व्याख्या करना सीखा, गाथा बनी होगी। उसके बाद स्वर और लयके संयोगसे इसकी क्रमशः उन्नति हुई। बुद्धदेव अपने आप गाथा पढ़ते थे। धर्मविषयके सूत्रोंने पद्यमें ग्रथित हो करके गाथा नाम धारण किया। बौद्ध प्रधान काश्यपने कहा था कि भिक्षुलोग सूत्रान्त, विनय, अभिधर्म प्रभृति याद रखें या भूल जावेंगे। क्योंकि उनकी गाथा न थी। पाठकको अपराह्नमें सूत्रकी गाथा पढ़नी चाहिये। बुद्ध-

देवने उसको ४थ शास्त्र-जैसा उल्लेख किया है। यथा—१म सूत्रान्त, २य गेय, ३य व्याकरण, ४र्थ गाथा, ५म उदान, ६ष्ठ निदान, ७म अवदान, ८म इतिवृत्तक, ९म जातक, १०म वैपुल्य, ११श अद्भुतधर्म, १२ उपदेश। इससे समझा जाता कि उस समयकी गाथा शिक्षणीय वस्तु थी।

पारसिक जाति (पारसियों) के धर्म ग्रन्थमें 'गाथा' शब्दका उल्लेख मिलता है। उसमें ५ गाथाएं हैं—१ अहुनवैती, २ उष्टवैती, ३ स्पेन्ता मैन्यू, ४ वहुखषथ्र और वहिश्तोइस्टो। यह गाथाएं छोटे छोटे पदोंका रचनामात्र हैं। उसमें प्रार्थना, गान, स्तोत्र और मनोविज्ञान सम्बन्धीय नानाविध कथा लिखित हुयी है। हमारी संस्कृत वा पालि भाषाकी गाथाएं भी वैसी हैं। वह पारसियोंमें गीत हुआ करती हैं। उनके धार्मिक ग्रन्थ जन्दअवस्तामें भी बहुतसी गाथाएं हैं। फिर भी पारसी जन्द अवस्ताके सभी शब्द गानकी तरह स्वर लगा करके पढ़ते हैं। इनकी गाथा रचना हमारी वैदिक रचनाके ही अनुरूप है। छन्दोबद्ध ग्रथित होते भी उसके शेष अक्षरोंका अनुप्रास नहीं मिलता। उपर्युक्त ५ गाथावोंमें प्रत्येक स्वतन्त्र प्रकार छन्दमें रचित हुई है। अहुनवैती गाथाको प्रत्येक श्लोकमें ४८ वर्ण हैं। वह ३ पंक्तियोंमें विभक्त है। प्रत्येक पंक्तिमें १६ वर्ण लगे हैं।

पारसिकोंको विश्वास है कि गाथामें ७ अध्याय होते हैं। देवता उस गाथाको गाते थे। स्पीतम जरथुस्त्रकी ध्यानयोगमें वह देवताओंके पाससे मिल गयी। उस्तवैती गाथा उन्होंने अपने आप बनायी थी। उस प्रत्येक पंक्तिमें ५ अक्षर हैं। वह छन्दोबद्ध वैदिक त्रिष्टुभ् छन्दसे बहुत मिलती है। स्पेन्ता मैन्यू गाथाका छन्द प्रायः त्रिष्टुभ्के अनुरूप हो है। प्रथम दोनों गाथाओंकी अपेक्षा इसमें श्लोकोंकी संख्या बहुत कम है फिर ४थी वहुखषथ्र और ५वीं वहिश्टो इश्टो नामक गाथामें श्लोकोंकी संख्या और भी अल्प देख पड़ती है।

म्यूनिकके संस्कृताध्यापक मार्टिन होग अनुमान करते कितनी हो गाथाएं रहीं, जो पोछेकी लुप्त हो गयीं। उन सभी रचनाओंमें स्पीतम जरथुस्त्रके मतामत और उपदेशादि विद्यमान थे। पोछेको अपने पूजाकारियों (ब्राह्मणों)को अनिष्टसे निष्कृति और जरदस्त धर्मावलम्बियोंका मङ्गल करनेवाला हो रचित हुई। होग साहब और भी बतलाते कि वह गाथाएं सामवेद-जैसी हो वह ऋग्वेदका अंश होती हैं। ब्राह्मणोंने उन्हें यत्न करके रखा और पारसियोंने बिगाड़ दिया है। वेष्ट साहबके अनुमानमें ई०से १२०० वत्सर पूर्वको महापुरुष स्पीतम जीवित रहे। गाथा उसी समयकी रचना है।

वैदिक कालके हिन्दू धर्मसे पारसिक धर्मका विशेष सम्पर्क रहना-जैसा समझ पड़ता है। दोनोंके आदि ग्रन्थोंमें देव और असुर लोगोंकी कथा है। फिर भी यह देवताओं और वह असुरोंके उपासक हैं। यजुर्वेदमें आसुरी नामक कोई छन्द दृष्ट होता है। यथा—गायत्री आसुरी, उष्णिक् आसुरी, पंक्ति आसुरी। जन्द अवस्ताकी गाथामें उसका प्रचुर प्रयोग देखते हैं। जन्द अवस्ता अहुरों वा असुरोंका धर्म है। गायत्री आसुरी अहुनावैती, उष्णिक् आसुरी वहुखषथ्र, और पंक्ति आसुरीछन्द उस्तवैती और स्पेन्ता मैन्य गाथामें मिलता है। समझ नहीं पड़ता कि घटनाक्रमसे वैसा सादृश्य लगा होगा। वरं अनुमित होता कि यजुर्वेदको गाथा ऋषियोंको समझी बूझी थी। जन्दअवस्ताग्रन्थमें हिन्दू देवदेवियोंके बहुतसे नाम और वैदिक शब्द पाये जाते हैं।

पाश्चात्य विद्वान् यह सभी देख करके अनुमान लगाते कि भारत जानेसे पहले हिन्दू और पारसी एक समाजभुक्त हो थे।

पारसिक गाथामें एकेश्वर धर्म मतका उल्लेख है।

गाथाकार (सं० पु०) गाथां करोति कृ-अण्। १ गाथाकारक, गाथारचयिता, श्लोक रचनेवाला। गायक गानेवाला।

गाथानी (सं० त्रि०) गातव्य, गानेके योग्य। (सायण)

गाथान्तर (सं० पु०) एक कल्पका नाम। ब्रह्माके महिनेका चतुर्थ दिन।

गाथिका (सं० स्त्री०) गाथा स्वार्थे कन्। टाप् तत इत्वञ्च। स्तुतिके निमित्त श्लोक।

गाथिन (सं० पु०) गाथिनो ऽपत्यम् गाथि-अण्। १ सामवेद। २ गायकका अपत्य। ३ तत्पुत्र।

गाथी (सं॰ त्रि॰) गाथा स्तोत्रादि अस्यास्ति इनि। सामवेद गानेवाला।

"इन्द्रमिद गाथिनो वृहत।" (ऋक् १।७।१)

'गाथिनो गीयमान सामयुक्ता" (सायण)

गाद—बम्बई प्रान्तीय सतारा जिलेके सह्याद्रिका एक अन्यतम गिरिवर्त्म। यह बाई और कोरीगांवके बीच खण्डाक नामक क्षुद्र राज्यमें अवस्थित है। खण्डाल और भोर राज्यके मध्यस्थ पर्वतमें भोरसे पूना और बेलगांव जानेको गाद सबसे सीधी राह है।

गादड़ (हिं॰ वि॰) १ सुस्त बैल। (पु॰) २ गीदड़, सियार। ३ मेष, भेंड़ा, मेंढ़ा।

गादर (हिं॰ वि॰) १ भीरू, डरपोक, कायर। २ सुस्त, मट्ठर। (पु॰) गादड़ देखो।

गादा (हिं॰ पु॰) १ कच्चा अन्न, अधपका अनाज। २ कच्चो फसल। ३ महुएका फूल जो पेड़से टपका हो। हरा महुआ।

गादि (सं॰ पु॰-स्त्री॰) गदस्य अपत्यं इञ्। यदुवंशीय गदका अपत्य।

गादित्य (सं॰ त्रि॰) गदितेन निर्वृत्तम्। वाक्यद्वारा निर्वृत्त, जो वाक्य द्वारा सिद्ध हो गया हो।

गादी (हिं॰ स्त्री॰) एक पकवानका नाम।

गादुर। (हिं॰ पु॰) चमगीदड़।

गाद्गद्य (सं॰ क्ली॰) गद्गदस्य भाव: ष्यञ्। गद्गदत्व, गद्गदका भाव।

"गाद्गद्यं मयञ्जनयेच्च कुष्ठम्।" (सुश्रुत कल्पस्थान २ अ॰)

गाध (सं॰ पु॰) गाध प्रतिष्ठायां लिप्सायाञ्च भावादौ घञ्। १ स्थान, जगह। २ लिप्सा, पानेकी इच्छा, लोभ। ३ तलस्पर्श (त्रि॰) ४ थाह, जलके नीचेका स्थल। "चरित: कुर्वंति गाधा:" (रघु॰ ४।२४) ५ नदीका बहाव, कूल। ६ जिसे तैर कर पार कर सके। ७ थोड़ा।

गाधवती—जैनमतानुसार विदेह क्षेत्रकी वक्षार नदियोंमेंसे एक वृहद् नदी।

गाधा (सं॰ स्त्री॰) गाध टाप्। गायत्रीस्वरूपा महादेवी।

"गौतमी गामिनी गाधा।" (देवीभागवत १२।६।४०)

गाधि (सं॰ पु॰) गाधते गाध-इन्। कान्यकुब्जके एक चन्द्रवंशीय राजा। (भारत १।११५ अ॰)

ये कुशिक राजाके पुत्र रहे। इनके पुत्रका नाम विश्वामित्र था। हरिवंशमें लिखा है कि कुशिकने इन्द्रके समान पुत्र पानेको तपस्या की। तब इन्द्र भयभीत होकर उनके निकट आये और चले गये। एक हजार वर्षके बाद फिर भी इन्होंने कुशिकको दर्शन दिया। उनकी उग्र तपस्या देख कर इन्द्रने पुत्रोत्पादनके लिये अपना अंश उन्हें प्रदान किया। कुशिककी स्त्री पौरकुत्सीके गर्भमें इन्द्रके अंशसे गाधि उत्पन्न हुए।

गाधिज (सं॰ पु॰) गाधेर्जायते जन-ड। महर्षि विश्वामित्र।

"गाधे: पुत्रो महातेजा: विश्वामित्रो महामुनि:।" (रामायण)

विश्वामित्र शब्दमें विवरण देखो।

गाधिनगर (सं॰ क्ली॰) कान्यकुब्ज।

गाधिनन्दन (सं॰ पु॰) गाधेर्नन्दन:। विश्वामित्र ऋषि।

गाधिपुत्र (सं॰ पु॰) गाधे: पुत्र:। विश्वामित्र।

गाधिपुर (सं॰ क्ली॰) गाधे: पुरम्। गाधिराजाका पुर, कान्यकुब्ज।

गाधिभू (सं॰ पु॰) गाधि: भूरुत्पत्तिस्थानमस्य। विश्वामित्र ऋषि।

गाधिसुत (सं॰ पु॰) गाधे: सुत:। विश्वामित्र ऋषि।

गाधिसूनु (सं॰ पु॰) गाधे: सूनु:। विश्वामित्र ऋषि।

गाधी (सं॰ पु॰) गाध: प्रतिष्ठास्त्यस्य इनि। गाधी नामक राजा।

गाधेय (सं॰ पु॰) गाधेरपत्यं, गाधि-ढक्। विश्वामित्र प्रभृति। गाधेय स्त्रियां ङीष्। २ गाधिकी कन्या, सत्यवती। यह भार्गवपुत्र ऋचिककी पत्नी थीं।

गाध्यण्डा (सं॰ स्त्री॰) भूम्यामलकी, भुईं आँवरा।

गान (सं॰ क्ली॰) गीयते गै भावे ल्युट्। गीत, सङ्गीत। इसका पर्याय गेय, गीति और गान्धर्व है। जपसे कोटि गुण ध्यान, ध्यानसे कोटिगुण लय, लयसे कोटिगुण गान है। अतएव गानके तुल्य उत्कृष्ट फल और किसीमें नहीं है। गीत देखो।

गानविद्या (सं॰ स्त्री॰) सङ्गीतविद्या।

गानिग—दाक्षिणात्यके बीजापुर प्रदेशमें रहनेवाली एक जाति। तैलविक्रय ही इनकी एकमात्र उपजीविका है। आजकल इनमें बहुतसे तैल बेचना छोड़ करके खेती बारीसे अपना काम चलाते हैं।

इनमें 'सज्जन' और 'कारोकुल' दो श्रेणियां हैं। विधवाविवाह करनेवाले कारोकुल और उससे अलग रहनेवाले सज्जन कहलाते हैं। कारोकुल गानिगोंको काला होनेसे ही सम्भवतः उस नामसे पुकारा जाता है। परन्तु इनके वृद्ध लोग बतलाते कि खरहुल शब्दके परिवर्तमें करिकुल नाम लगाते हैं। कोलहार और बाघलकोट जिलोंमें इनको रहायश ज्यादा है। वंशवाचक कोई नाम नहीं होता, स्थानीय या बोलनेके नामसे ही एकमात्र परिचय मिलता है। यह बलिष्ठ, कृष्णवर्ण, लम्बे चौड़े और सुन्दर मुखाकृतिविशिष्ट हैं। घरमें कनाड़ी भाषा बोलते, परन्तु कुछ न कुछ सभी मराठी और हिन्दी समझते हैं। यह सब निरामिषाशी हैं, मद्यमांस नहीं छूते। आसन पर बैठ करके खानेसे पहले लिङ्ग उपासना करते हैं। यह आतिथेय, सत्यवादी, शान्त स्वभाव, धीर, कर्मठ और चतुर हैं। इनमें बहुतसे धनी अपनेको लिङ्गायतोंका समकक्ष जैसा समझते हैं। बालविवाह और विधवाविवाह प्रचलित है। परन्तु सज्जन गानिग विधवाविवाह नहीं करते।

धारवाड़में गानिगोंकी ५ श्रेणियां हैं। वहां इनको 'गानिगाड़' कहा जाता है। विभिन्न श्रेणियोंके गानिग एकत्र बैठ करके आहारादि करते, परन्तु परस्परमें वैवाहिक दानग्रहणसे विरत रहते हैं। ब्राह्मणोंके प्रति इनको विशेष भक्ति है। सोमवार पवित्र दिन माना जाता, कोई काम काज नहीं चलाता। यदि कोई स्त्री केशोंको आलुलायित रखके तेल लेने आती, सूखा उत्तर पाती है। इनमें बाल्यविवाह, बहुविवाह और विधवाविवाह चलता है। सभी कनाड़ी बोलते हैं।

गानिन् (सं० त्रि०) गान-इनि। १ गतियुक्त। २ गीतियुक्त। ३ स्तुतियुक्त।

गानिनी (सं० [illegible]) गानिन् स्त्रियां ङीप्। वाक्, बोली।

गान्तु (सं० त्रि०) गच्छति गम-तुन्, वृद्धिश्च। १ गन्ता, जानेवाला। २ पथिक, मुसाफिर। ३ गायक, श्लोकका गान करनेवाला। [illegible]तवर्ष

गान्त्र (सं० क्ली०) गम-ष्ट्रन्। (पञ्चलावलो पक्षी।)

गान्त्री (सं० स्त्री०) गन्त्री एव गौरादिकत्वात् ङीप्। वृषवाह्य शकट, बैलकी गाड़ी।

गान्दिक (सं० त्रि०) गन्दिकायां भवः सिन्ध्वादित्वात् अण्। गन्दिका नदीजात, गन्दिका नदीसे उत्पन्न।

गान्दिनी (सं० स्त्री०) गां धेनुं ददाति प्रतिदिनं गो-दा णिनि पृषोदरात् साधुः। १ अक्रूरकी माता। ये काशीराजकी कन्या और श्वफल्कको भार्या थीं। हरिवंशके मतसे—इनका नाम निरुक्ति था। ये प्रति दिन विप्रोंको धेनुदान करती थीं, इस लिये इनका नाम गान्दिनी पड़ गया। ये माताके गर्भमें बहुत वर्ष तक रही थीं, इससे इनके पिताने कहा—"पुत्री! तुम शीघ्रही जन्म लो, तुम्हारा मङ्गल हो, इतने दिनों तक तुम क्यों उदरमें रह रही हो?" उत्तरमें कन्याने कहा—"यदि प्रतिदिन गोदान कर सकूं, तो जन्म लेती हूं।" पिताने इस बातको स्वीकार कर उनका मनोरथ पूर्ण किया। इन्हीं गान्दिनीके गर्भ और श्वफल्कके औरससे अक्रूर नामक एक पुत्र पैदा हुआ। पीछे इनके गर्भसे उपमद्गु, मद्गु, मुदर, अरिमेजय, अविक्षिप, उपेक्ष, शत्रुघ्न, अरिमर्द्दन, धर्मदृग, यातधर्मा, गृध्रभोजान्तक, आवाह और प्रतिवाह ये तेरह पुत्र और सुन्दरी नामक एक रूपवती कन्या हुई थी। कोई कोई गान्धिनी भी पढ़ते हैं। किन्तु निरुक्ति नाम पर विवेचना करनेसे गान्दिनी पाठही उपयुक्त जान पड़ता है। गां भूमिं दायति शोधयति दै णिनि पृषोदरात् साधुः। २ गङ्गा। (त्रिकाण्ड०)

गान्दिनीसुत (सं० पु०) गान्दिन्याः सुतः, ६-तत्। १ भीष्म। २ कार्त्तिकेय। ३ अक्रूरादि। गान्दिनी देखा।

गान्दी (सं० स्त्री०) गां ददाति, दा-क-ङीप्। अक्रूरकी माता गान्दिनी।

"स्यमन्तककृते प्राज्ञा गान्दिपुत्रो महायशाः।" (हरिवंश ४० अ०)

गान्धपिङ्गलेय (सं० पु० स्त्री०) गन्धपिङ्गलाया अपत्यम् ढक्। (शुभ्रादिभ्यश्च। पा ४।१।१२३।) गन्धपिङ्गलका अपत्य, गन्धपिङ्गलकी सन्तान।

गान्धली—खान्देशके अन्तर्गत एक छोटा ग्राम। यह अमलनरसे ६ मील उत्तरपूर्वमें बसा है। लोकसंख्या प्रायः १०५३ है। पिण्डारियोंके नायक चीदजी भोंसलाने यह ग्राम कई बार लूटा था।

गान्धवी—कम्भालिया महालके अन्तर्गत कल्याणपुर उपविभागका एक ग्राम। यह वरतू नदीके उत्तरी तीर पर

अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग २४० होगी। ग्रामके पास ही कोयल नामक एक पहाड़ी है। प्रवाद है कि एक समय पार्वती और शिवजीमें कुछ विवाद हुआ। इस पर पार्वती रुष्ट हो कर इसी पहाड़ पर भाग आई थीं और कोयलका रूप धारण कर रहने लगीं। तभीसे उस पहाड़का नाम कोयल पड़ा है।

गान्धर्व (सं० क्लो०) गन्धर्वस्येदं गन्धर्व-अण्। १ गान।

"अथ प्रवृत्ते गान्धर्वे दिव्ये ऋषिकपाविशत्।" (भारत १३।१८।४६)

गन्धर्वो देवतास्य अण्। २ गन्धर्वदेवतात्मक मन्त्र। (रघु० ५।६७) (पु०) गन्धर्व एव प्रज्ञादित्वात् अण्। ३ गन्धर्व। ४ भारतवर्षीय उपद्वीपविशेष।

"नागद्वीपस्तथा सौम्यो गान्धर्वस्त्वथ वारुणः।" (विष्णुपुराण)

५ आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक विवाह। अपनी अपनी इच्छासे वर और कन्याके परस्पर मिलनको गान्धर्व विवाह कहते हैं। यह विवाह क्षत्रियोंमें धर्मानुगत है। इनमें परस्पर मिलनके बाद अग्निसाक्षिक मन्त्रपाठ करना कर्तव्य है।

"गान्धर्वो राक्षसश्चैव धर्म्यौ क्षत्रस्य तौ स्मृतौ।" (मनु ३।२६)

गन्धर्व स्वार्थे अण्। ६ अश्व, घोड़ा। ७ सामवेदका उपवेदविशेष।

"गान्धर्व भूमिष्ठतया समानतां।" (माघ)

(त्रि०) तस्येदं अण्। ८ गन्धर्वसम्बन्धीय। ९ गन्धर्व देशोत्पन्न। (भारत १।१२८।१०) (स्त्री०) १० दुर्गा।

"ह्रीं श्रीं गौरी च गान्धर्वा।" (हरिवंश १७८ अ०)

११ वाक्, वाचन।

"अग्निं गान्धर्वीं पथ्यामृतस्य।" (ऋग्वेद १०।८०।६)

'अग्निं गान्धर्वीं वाक् नामैतत्।" (सायण)

गान्धर्व—युक्तप्रदेशीय जातिभेद। यह लोग गाते बजाते और प्रयाग, वाराणसी तथा गाजीपुर जिलोंमें अल्प संख्यक पाये जाते हैं। कहते हैं कि पूर्वकालको गान्धर्व सामवेदकी श्रुतियोंका गान करते थे।

गान्धर्ववेद (सं० पु०) सङ्गीत सम्बन्धीय वेद।

गान्धर्वशास्त्र (सं० क्लो०) सङ्गीतशास्त्र।

गान्धर्विक (सं० त्रि०) गन्धर्वे कुशलः ठक्। सङ्गीतशास्त्रकुशल, जो अच्छो तरह सङ्गीतशास्त्र जानता हो।

"गान्धर्विकं योगः।" (वृहत्संहिता ८८ अ०)

गान्धार (सं० पु०) गन्ध एव स्वार्थे अण्। १ सिन्दूर। २ देशभेद।

गान्धार एक प्राचीन जनपद है। ऋग्वेद (१।१२६।७), अथर्ववेद (५।२२।१४) और छान्दोग्य उपनिषद्में (६।१४।१) इस जनपदका उल्लेख है। अति प्राचीन कालसे यहां हिन्दू राजा वास करते थे, इसका विस्तर प्रमाण पाया जाता है। सिन्धु नदीके पश्चिम तीरसे वर्तमान अफगानिस्तानका अधिकांश पूर्व समयमें गान्धार नामसे प्रसिद्ध रहा। आजकल कन्दाहार उस प्राचीन गान्धार नामका परिचय दे रहा है।

वैदिककालमें यह स्थान लोमपूर्णा और पूर्णावयवा मेषोंके लिये प्रसिद्ध था। (ऋक् १।१२६।७) ब्रह्माण्डपुराणके मतसे गान्धार देशमें उत्कृष्ट घोड़े मिलते हैं। महाभारतमें लिखा है कि महाराज धृतराष्ट्रने गान्धारपति सुवलकी कन्या गान्धारीसे विवाह किया था। भारतयुद्धके समय सुवलके पुत्र शकुनि गान्धारके राजा रहे।

कर्णपर्वमें लिखा है कि आरट्ट देशके जैसा गान्धार देशमें भी नितान्त कुत्सित व्यवहार प्रचलित है।

(वनप० ४५ अ०) आरट्ट शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

स्कन्दपुराणके प्रभासखण्डके मतसे गान्धार देशमें शोभनादित्य नामके देवता विद्यमान हैं

बौद्धगणके धर्मशास्त्रोंमें तथा जैनोंके अरिष्टनेमिपुराणान्तर्गत हरिवंशके मतमें गान्धार एक पुण्यस्थान कहा गया है। पाश्चात्य प्राचीन पुराविद् शूरोंने इस स्थानको गान्दारिटीस् (Gandarites) नामसे तथा हेरोदोतस, हेकतैयस और टलेमिने यहांके अधिवासियोंको "गान्दारी" (Gandarii or Gandarai) नामसे उल्लेख किया है। ऋग्वेदमें भी यहांके रहनेवाले गान्धारी कहलाते हैं। चीनपरिव्राजक फाहियन 'कि-एन-तो वेग्' और युएनचुयाङ्ग "कि-एन तो-लो" [illegible] और से गान्धार [illegible] राज्यको वर्णना कर गये हैं। चीनपरिव्राजक [illegible] ने लिखा है—गान्धारका [illegible] प्राचीन नाम ये-पो- [illegible] है। चीनपरिव्राजक युएन्‌ [illegible] के वर्णनसे मालूम पड़ता है कि चीनपरिव्राजक [illegible] राज्य पूर्वपश्चिममें १००० लि, एवं उत्तर [illegible] ८०० लि, तक विस्तृत रहा। उनके वर्णनानुसार गान्धार राज्यके पश्चिममें लम्घन और

जलालाबाद, पूर्वमें सिन्धुनदी, उत्तरमें स्वात और बुनिका पहाड़ एवं दक्षिणमें कालबाघ है।

गान्धार राज्य सर्वदा हिन्दू राजाओंके अधीन रहा। राजा अशोकके समय यहां बौद्धधर्म प्रचार हुआ था। चीन-परिव्राजकोंके भ्रमण-वृत्तान्तमें लिखा है कि यहां बुद्धदेवने बोधिसत्वरूपमें एक व्यक्ति पर दया कर अपना नेत्र उसे प्रदान किया था। उनके स्मरणार्थ अशोक राजाने गान्धारके नाना स्थानोंमें बौद्धस्तूप निर्माण किये थे। संग्युनने अपने भ्रमण-वृत्तान्तमें लिखा है कि अशोकके पुत्र धर्मवर्द्धन यहांके राजा रहे और यहांके मनुष्य हीनयान-बौद्धमतावलम्बी कहलाते थे।

खृष्टीय प्रथम शताब्दीमें प्रबल पराक्रान्त महाराज कनिष्क गान्धारमें राज्य करते थे, ये यहांके नाना स्थानोंमें बौद्धकीर्त्ति स्थापन कर गये हैं।

संगयुन ५२० ई०को गान्धारराज्यमें आकर अपने भ्रमण वृत्तान्तमें लिखा है कि 'येथा' (हूण) जातिने गान्धारके बहुतसे स्थानोंको विध्वंस कर डाला था और इसे अपने अधिकारमें लाकर लएलिको (मालवराजको) प्रदान किया। संगयुनके समयमें यहां मालवराज राजत्व करते थे और पेशावर राजधानी रही। मालवराज बौद्धधर्मको नहीं मानते थे।

युएनचुयाङ्गने लिखा है कि गान्धार राज्यकी प्राचीन राजधानी पुष्कलावती थी। रामायणके मतसे भरतके पुत्र पुष्कलने अपने नाम पर यह नगर स्थापित किया। युएनचुयङ्गके समयमें कपिश राजाके अधीनमें एक शासनकर्त्ता आकर गान्धार देश पर राज्य करते थे। चीनपरिव्राजकके वर्णनसे मालूम पड़ता है कि इस राज्यमें नारायणदेव, असङ्गबोधिसत्व, वसुबन्धु बोधिसत्व, धर्मत्रात, मनोहित और पार्श्व प्रभृति बौद्धशास्त्रकारोंका जन्म हुआ था।

मुसलमान जातिके अभ्युदयके समय यहांके बहुतसे हिन्दुओंने इसलामधर्म ग्रहण किया था और बहुतसे अपने धर्मकी रक्षाके लिये भारतवर्षको भाग आये।

कान्दहार, काबुल, पेशावर, पुष्कलावती प्रभृति शब्द देखो।

, गान्धारोऽभिजनोऽस्य। ३ पित्रादिक्रमसे गान्धारदेशवासी व्यक्तिमात्र। ४ गान्धारदेशके राजा। ५ सप्तस्वरान्तर्गत तृतीय स्वर। सङ्गीतशास्त्रके मतमें मयूरका शब्द षड्ज, गौका शब्द ऋषभ, छागका शब्द गान्धार और क्रौञ्चका शब्द मध्यम माना गया है। भरतके मतानुसार नाभिसे वायु उठ कर कण्ठ और मस्तक तक चली गई है, इन समस्त स्थानोंसे नानाप्रकारकी पवित्र गन्ध वहन करती है, इसलिए इसका नाम गान्धार पड़ा है। सङ्गीतदर्पणमें लिखा है कि यह स्वर देवकुलसे उत्पन्न वैश्यजाति है। इसका वर्ण सुवर्णके सदृश पीत और उज्ज्वल है। करुणरसमें इसका प्रयोग उत्तम है। ६ स्वर ग्रामविशेष। इसका लक्षण यथा,—यदि गान्धार स्वर, रि और मकी एक एक श्रुति, ध, प की एक श्रुति और निषाद ध और स की एक श्रुति आश्रय करे तो उसे गान्धार ग्राम कहते हैं। यह ग्राम स्वर्गलोकमें प्रयुक्त होता है, पृथिवीमें इसका प्रयोग नहीं होता। ७ रागविशेष। सङ्गीतदामोदरके मतसे इसके मस्तकमें जटा, अङ्गमें भस्म भूषण, परिधेयमें गेरुआ वस्त्र, देह क्षीण और नयन मुद्रित हैं। यह योगपट्टधारी और तपस्वी भैरवरागके पुत्र हैं। प्रातःकाल इसके गानेका समय है। (क्ली०) ८ गन्धरस, गन्धबोल। (पु०-स्त्री०) गान्धारस्यापत्यं अञ्। ९ गान्धारिकी सन्तान। (त्रि०) गान्धारे भवः, तस्य राजा वा कच्छादिभ्योऽण्। १० गान्धारदेशजात, गांधारदेशमें उत्पन्न होनेवाला। (भारत १।३८४ श०)

गान्धारक (सं० त्रि०) १ गन्धारदेशके मनुष्य। गन्धारदेशस्थित। "गांधारकैः समसमैः" (भारत ७।८६ श०)

गान्धारपञ्चम (सं० पु०) रागविशेष, षाडव नामका एक राग। करुणरस और अद्भुत हास्यमें इसका प्रयोग किया जाता है। यह मङ्गलजनक समझा जाता है। इसका स्वरग्राम इस प्रकार हैं,—म प ध नि स ग म। इसमें ऋषभ नहीं होता; किन्तु प्रसन्न, मध्यम, अलङ्कार और काकलीका होना जरूरी है। इसका अपर नाम केवलगान्धार भी है।

गान्धारभैरव (सं० पु०) रागविशेष, एक रागका नाम। यह देवगान्धारके मिलने पर होता है। यह प्रातःकालमें गानेसे अच्छा लगता है, तथा इसमें सातों स्वर लगते हैं। इसका स्वरग्राम यों है—ध नि स रि ग म प ध।

गान्धारराज (सं० पु०) गांधारस्य राजा समासान्त-टच्। गांधारके राजा सुबल। (भारत १।११०।१४)

गान्धारि (सं० पु०) गन्धमेव अण्, गांधं अकृति अट इन्। १ गांधारदेश। गांधारस्य तद्देशवासिनृपस्यापत्यं। २ गांधारदेशीय नृपतिका अपत्य, गांधारदेशके राजेकी सन्तान।

"गांधारिभिरसमन्तात्: पार्थ नोटिम दुर्गैः।" (भारत ८।१९ अ०)

गान्धारिका (सं० स्त्री०) गान्धार-कन्-टाप् अत इत्वम्। मादक द्रव्यविशेष, गांजा। गांधार देखो।

गान्धारी (सं० स्त्री०) गान्धारस्य अपत्यं स्त्री इञ्-ङीप्। १ धृतराष्ट्रराजपत्नी, धृतराष्ट्रकी स्त्री। यह राजा सुबलकी कन्या तथा दुर्योधनादिकी माता थी। गान्धारीने शिवजीकी आराधना करके शत पुत्र प्राप्त किये थे। महाभारतमें लिखा है जब भीष्मने सुना कि गान्धारीको शत पुत्र लाभका वर मिला है तो उन्होंने शीघ्र ही सुबलके निकट दूत प्रेरण किया। सुबलने विचार कर देखा कि यद्यपि वर अन्धे हैं तो भी कुलख्याति प्रभृतिके अनुसार उन्हींको कन्या देना उचित है। जब गान्धारीने सुना कि धृतराष्ट्र अन्धे हैं एवं पिता माताने उन्हींको सम्प्रदान करनेकी इच्छा की है तो उसने एक वस्त्र लेकर उसको कई गुना करके अपनी आँखके ऊपर बान्ध लिया। इस तरह उन्होंने पतिव्रता धर्मकी पराकाष्ठा प्रदर्शन की थी

२ अजमेरकी कन्या। ३ नाड़ीविशेष, एक नाड़ीका नाम। "इडा पृष्टेत, गांधारी।" (तन्त्र) ४ जिनके एक शासनदेवताका नाम। ५ लताविशेष, यवास। ६ लताविशेष, दुरालभा, धमासा। ७ पार्वतीकी एक सहचरीका नाम। (भारत ३।२३ अ०) ८ गायत्री। (देवी भागवत १२।६।४.४०) ९ कण्टकारी, भट कटैया।

गान्धारीतनय (सं० पु०) गान्धार्यास्तनयः ६-तत्। १ दुर्योधनादि स्त्रियां टाप्। २ दुर्योधनादिकी भगिनी, दुःशला।

महाभारतमें गान्धारीसे दुर्योधनादिका उत्पत्ति-विवरण इस प्रकार लिखा है—"एक समय व्यास क्षुधा और श्रमातुर हो गान्धारीके निकट उपस्थित हुए। गान्धारीने उन्हें परितुष्ट किया। इस पर व्यासने कहा कि वर मांगो। गान्धारीने स्वामीके अनुरूप शत पुत्रके लिये प्रार्थना की, व्यासने भी मनोनीत वर स्वीकार किया। थोड़े दिनके अनन्तर धृतराष्ट्रसे गान्धारीको गर्भ रहा किन्तु दो वर्ष पर्यन्त कोई सन्तान भूमिष्ठ नहीं हुई। एक दिन कुन्तीको सूर्यतुल्य सन्तानकी उत्पत्ति सुन कर गान्धारी दुःखित हुई और अपने गर्भको यत्नपूर्वक निपातित किया, उससे लौह सदृश कठिन मांसपिण्ड निकला। उसने उस मांसपिण्डको फेंक देनेकी इच्छा की, उसी समय व्यासने आकर जिज्ञासा की और गान्धारीने समस्त सच्ची बातें कह सुनायी। व्यासजी बोले कि—इस मांसपिण्डको एक शत घृतपूर्ण कुम्भमें रख छोड़ो। ऐसा करने पर बृद्धाङ्गुलिके गिरहके सदृश पृथक पृथक एक सौ भाग उसमें प्रकाश हुए और यथासमय एक शत पुत्र हो गये ज्येष्ठानुक्रमसे उनके नाम इस तरह है—दुर्योधन, दुःशासन, दुःसह, दुःशल, जलसन्ध, सम, सह, विन्द, अनुविन्द, दुर्द्धर्ष सुबाहु, दुष्प्रधर्षण, दुर्मर्षण, दुर्मुख, दुष्कर्ण, कर्ण, विविंशति, विकर्ण, सल, सत्व, सुलोचन, चित्र, उपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, शरासन, दुर्मद, दुर्विगाह, विवत्सु, विकटानन, ऊर्णनाभ, सुनाभ, नन्द, उपनन्दक, चित्रबाण, चित्रकर्मा, सुवर्मा, दुर्विमोचन, अयोबाहु, महाबाहु, चित्राङ्ग, चित्रकुण्डल, भीमवेग, भीमबल, बलाकी, बलवर्द्धन, उग्रायुध, भीमकर्मा, कनकायुः, दृढ़ायुध, दृढ़वर्मा, दृढ़क्षत्र, सोमकीर्ति, अनूदर, दृढ़सन्ध, जरासन्ध, सत्यसन्ध, सदःसुवाक, उग्रश्रवाः, उग्रसेन, सेनानी, दुष्पराजय, अपराजित, कुण्डशायी, विशालाक्ष, दुराधर, दृढ़हस्त, सुहस्त, वातवेग, सुवर्चाः, आदित्यकेतु, वह्वाशी, नागदत्त, अग्रयायी, कवची, निषङ्गी, कुण्डी, कुण्डधार, धनुर्द्धर, उग्र, भीमरथ, वीरबाहु, अलोलुप, अभय, रौद्रकर्मा, दृढ़रथ, अनाधृष्य, कुण्डभेदी, विरावी, दीर्घलोचन, प्रमथ, प्रमाथी, दीर्घरोम, वीर्यवान्, दीर्घबाहु, महाबाहु, वुचोरु, कनकध्वज, कुण्डाशी और विरजा। गान्धारीको शत पुत्रके अतिरिक्त दुःशला नामकी एक कन्या भी थी।

गान्धारेय (सं० पु०) गांधार्या अपत्यं ढक्। दुर्योधनादि। स्त्रियां ङीप्। गांधारेयी, गांधारीकी कन्या, दुःशला।

गान्धिक (सं० पु०) गंधो गंधद्रव्यं, पण्यमस्य ठक्। १ गंधवणिक। गन्धवणिक देखो। २ लेखक। ३ कीटविशेष, एक कीड़ाका नाम। (क्लो०) स्वार्थे ठक्। ४ गंधद्रव्यमात्र।

'पण्यानां गांधिकं पण्यं।" (पञ्चतन्त्र)

गान्धिनी (सं० स्त्री०) गान्दिनी देखो।

गान्धी (सं० स्त्री०) गंध एव स्वार्थे प्रज्ञादित्वात् अण्। गंधोऽस्या अस्तीति अच् गौरादित्वात् ङीष्। १ कीटविशेष। एक कीड़ा। २ तृणविशेष, एक घास।

गाफ—भारतवर्षके प्रसिद्ध अङ्गरेज सेनापति। ये आयरलैंड-वासी जार्ज गाफके पुत्र थे। १७७८ ई०को इनका जन्म हुआ था, और १७९१ ई०में ये अङ्गरेज सैनिक विभागमें प्रविष्ट हुए। थोड़े वर्षोंके पश्चात् ये अंगरेजी सेनाके साथ रह कर अफ्रीका तथा अमेरिकाके नाना-स्थानोंमें लड़े। १८०८ ई०को यूरोपके पेनिनसुला-युद्धमें ये भयानक रूपसे आहत हुए और १८३७ ई०में भारतके अंगरेजी सेनाविभागमें नियुक्त हो कर मन्द्राज पधारे; जहां वे महिसुरके सैनिक-विभागमें नियुक्त किये गये। १८४०-४१ ई०में जब अंगरेजी सेना चीनदेश भेजी गयी, गाफ साहब भी उस दलके सेनापति हो कर गये। उस युद्धमें अपनी दक्षता दिखला कर उन्होंने जी० सी० बी० और Baronet की उपाधि प्राप्त की और १८४३ ई०के ११ अगस्तको ये भारतवर्षके प्रधान सेनापतिके पद पर नियुक्त हुए। १८४३ ई०के २९ दिसम्बरको महाराजपुरमें महाराष्ट्रोंको १८४५ एवं १८४८ ई०में मुदकी, फिरोजसा और सोव्राउन नामक स्थानमें शिख लोगोंको इन्होंने पूर्ण रूपसे पराजित किया। विलायतके पार्लियामेंट महासभाने इनके वीरत्वसे तुष्ट हो कर इन्हें लार्डकी उपाधि दी। इष्ट इण्डिया कम्पनी और पार्लियामेंटने दो दो हजार पौण्ड इन्हें पेन्सन रूपमें दिया। १८४८ ई०को जब चिलियनवाला लड़ाईमें गाफके अधीन बहुतसी सेना नष्ट हो गई तो इंगलैंडसे सर चार्लस नेपियर भारतवर्षको उन्हें सहायता देनेके लिये भेजे गये, किन्तु उनके पहले ही गाफ साहबने सम्पूर्ण शिखोंको १८४८ ई०को २२वीं फरवरीको पंजाबके अन्तर्गत गुजरात नामक नगरमें पराजित कर दिया था। इस लड़ाईमें नेपियर साहबसे तनिक भी सहायता न लेनी पड़ी थी। थोड़े दिनोंके बाद वे देश लौट गये।

गाफ साहब अति साहसी पुरुष रहे। जेनेरल हैवलाकशा कहना है कि विपद् आने पर उन्हें एक तरहका आनन्द मिलता था।

गाफ़िल (अ० वि०) १ बेसुध, बेखबर। २ असावधान, बेपरवाह।

गाब—एक पेड़का फल। (Diospyro sembryopteris) यह देखनेमें ठीक नारङ्गीके जैसा होता और ऊपरमें काला काला दाग रहता है। इसके भीतर आठ आठियां रहती हैं। इसकी गिरी आटायुक्त और स्वाद कषाय है। इस फलसे जो निर्यास बाहर होता है, वह उदरामय और अजीर्ण रोगमें विशेष उपकारी है। एक पाइण्ट जलमें दो ड्राम परिमाणका निर्यास मिलाकर पिचकारी द्वारा इस जलको प्रक्षेप करनेसे श्वेतप्रदररोग आरोग्य हो जाता है। एकसे पांच ग्रेन मात्राका निर्यास दिनमें तीन बार खानेके लिये दिया जा सकता है। इसकी छालके क्वाथसे बहुत दिनके अजीर्ण, उदरामय और स्वाभाविक दुर्बलतासे उत्पन्न रोग नष्ट हो जाते हैं। इसके फलसे एक प्रकारका रस निःसृत होता जो नावके पेंदे तथा जालमें मांझा देनेके काममें आता है।

गाबलीन (फा० स्त्री०) एक प्रकारका यन्त्र जिसके द्वारा जहाज पर पाल चढ़ाया जाता है।

गाविलगढ़—१ दाक्षिणात्यके बरार प्रान्तका एक पहाड़ी जिला। यह अक्षा० २१° १०´ तथा २१° ०´ ४६´´ उ० और देशा० ७६° ४०´ एवं ७७° ५३´ पू०के बीच एलिचपुरसे कोई १५ मील उत्तर-पश्चिम पड़ता है। मेलघाटके निकट 'वैराटशृङ्ग' ३९८७ फुट ऊंचा है। इस जिलेके पूर्व मल्हार और पश्चिम दुलघाट तथा विङ्गाका गिरिसङ्कट है। एतद्भिन्न और भी कई नयी राहें हैं। पर्वतके निम्नदेशमें वन्यजात द्रव्य तथा काष्ठ विक्रयके लिये तङ्ग दुर्गम पार्वतीय पथ निकला है। एलिचपुर जिलेके मेलघाट उपविभागमें तासी और पूर्णा नदीके मध्यवर्ती पर्वतकी उच्च भूमि पर गाविलगढ़ दुर्ग स्थापित हुआ है।

पहले यहां 'गौली' या 'गावली' लोग रहते थे। मालूम होता है, उन्होंने वह किला बनाया था। सम्भवतः गावली जातिके नाम पर ही यह स्थान तथा दुर्ग गाविलगढ़ कहलाया है। इस समय भी वहां उक्त जातीय बहुसंख्यक लोगोंका निवास है। कोई कोई कहता कि १४२० ई०को अहमद शाह बहमानीने वह दुर्ग निर्माण किया। काल पा करके यह किला निजाम राज्यमें मिल

गया था। फिर गोंड़ सरदारने उसे अधिकार किया। १७२४ ई०को महाराष्ट्र सामन्त १म रघुजी भोंसलेने उसको निजामके हाथसे निकाला था। १८३३ ई०को जेनरल वेलेसली और कर्नल टीवेन्सन बरारराज रघुजी भोंसलेके विरुद्ध गाविलगढ़ दुर्ग अवरोध करके गोले बरसाने लगे। ३ दिन गोले चलने पर १५ दिसम्बरको किला अंगरेजोंको मिला और १८५३ ई०को तोड़ा गया।

बरारमें अमरावती जिलेके अन्तर्गत मेलघाट तालुकके सातपुराका एक पहाड़ी दुर्ग। यह अक्षा० २१° २२ ०और देशा० ७७° २३ पू०के बीच पूरणा और तामी नदीके सङ्गमस्थान पर अवस्थित है। यह दुर्ग कब और किससे निर्माण किया गया है इसका पूरा पता नहीं लगता है। लेकिन फिरिस्ताके ग्रन्थसे जाना जाता है कि वाह्मनीके राजा अहमद शाह वलीने १४२८ ई०में यह दुर्ग निर्माण किया था। थोड़े समय तक यह दुर्ग कुछ नष्टसा हो गया था, तब १४८८ ई०में फत उल्लाह-इमादुल-मुल्कने इसे पुनर्वार सुधारा। १५७७ ई०में जब अहमदनगरके मुर्तजा निजाम शाहने सुना कि अकबर दक्षिण देश जीतने आ रहा है तो उसने फिरसे किलेकी मरम्मत की थी। १५९८ ई०में सैयद यूसुफ खां मशहदी और शेख अबुल फजलने यह दुर्ग अहमदनगरके निजामशाहसे छीन लिया था।

महाराष्ट्रकी दूसरी लड़ाईमें यह दुर्ग राघोजी भोंसलाके हाथ आ गया था; किन्तु उसी साल १८०३ ई०के १५ दिसम्बरमें जेनरल अर्थरने इसे नष्टभ्रष्ट कर डाला था।

किलामें एक सुन्दर मस्जिद आज तक विद्यमान है। मस्जिदके सामने सात गुम्बज लगे हुए हैं जिनमेंसे मध्यका गुम्बज सबसे बड़ा है। मसजिदके शिल्प कार्य देखने योग्य हैं।

गाभ (हिं० पु०) १ पशुओंका गर्भ। २ गाभा देखो। ३ बरतनका साँचा।

गाभा (हिं० पु०) १ नवीन पत्ता जो नरम और हलके रंगका होता है, कोंपल। २ केले आदि पेड़के भीतरका भाग। ३ लिहाफ तथा तोसकके मध्यकी निकाली हुई पुरानी रूई, गुदड़। ४ कच्चा अनाज।

गाभिन (हिं०) गाभिनी देखो।

गाभिनी (हिं० स्त्री०) जिसके उदरमें सन्तान रहे, गर्भिणी।

गाम (हिं० पु०) ग्राम, गाँव।

गामचा (फा० पु०) घोड़के पैरका वह अंश जो सुम और टखनेके बीचमें होता है।

गामवक्कल—बम्बई प्रदेशके कनाड़ा जिलामें होनावर और कुमत ग्रामकी रहनेवाली एक जाति। इनकी संख्या १०५७२ है जिनमेंसे ५२८७ पुरुष और ५२८५ स्त्रियां हैं। ग्राम शब्दके अपभ्रंशसे 'गाम' निकला है। गङ्गावली और शिरावर्तीमें भी इन लोगोंका वास अधिक है। हालवक्की वक्कलसे ये बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। ये काले, मजबूत और लम्बे होते हैं। स्त्रियां भी पुरुषकी नाईं लम्बी और काली होती हैं, किन्तु वे कुछ कुछ दुबली पतली हैं। इस गामवक्कलकी मातृभाषा कनाड़ी है। इनका प्रधान भोजन चावल और मछली है। गो और पालतू सूअरका मांस छोड़ कर ये प्रायः सभी जानवरोंका शिकार कर खाते हैं। पुरुष और स्त्रियां चल्ली नामकी देशीय शराब अधिक पीती हैं। पुरुष भिन्न भिन्न अङ्ग पर तरह तरहके कपड़े पहनते हैं, और औरतें 'हालवक्की' की नाईं वस्त्र परिधान करती हैं, गलेमें ये लाल और काले काँचकी माला धारण करती हैं। ये परिश्रमी, मितव्ययी, गंभीर और व्यवस्थित होते हैं। खेती बारी करके ये अपनी जीविका निर्वाह करते हैं।

गामिक (सं० त्रि०) गामिन् स्वार्थे कन्। गमनकारी, जानेवाला।

'अयोध्यागामिकाः पन्थाः' (रामायण ६।१०६)

गामिन् (सं० त्रि०) गम भविष्यति णिनि। २ भावि-गमनकारक, जो यात्रा करेगा।

"द्वितीयगामी न हि शब्द एव।" (रघु ३।४९)

२ गमनकर्त्ता, जानेवाला।

'वयं विरदगामिना।" (रघु० २।३०)

गामिनी (सं० स्त्री०) पूर्व समयकी एक प्रकारकी नाव। इसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई क्रमशः ८६ हाथ, १२ हाथ तथा ८ हाथकी रहती थी। यह नाव प्रायः समुद्रमें चलती रही, इस नाव पर यात्रा करनेमें बड़ी कठिनाईयां झेलनी पड़ती थीं।

गामुक (सं० त्रि०) गमनशील, गमनकारी जानेवाला।

गाम्भारी (सं० स्त्री०) गम्भारीवृक्ष।

गाभीर (सं० त्रि०) गभीर-अञ्। गभीरद्वारा निर्वृत्त।

गाम्भीर्य (सं० क्ली०) गंभीरस्य भावः, गंभीर-ष्यञ्।
१ अगाधत्व, गंभीरता, गहरा।

"समुद्र इव गाम्भीर्ये" (रामायण १।१।१८)

२ अविकारित्व, विकारका अभावपन।

"निरस्तगाम्भीर्यमपास्तपुष्पकम्।" (माघ)

सात्विकगुणविशेष। भय, शोक, क्रोध और हर्षादि द्वारा कोई विकार नहीं होनेको गांभीर्य कहते हैं

"विकारासहनान्यस्य हर्षक्रोधभयादिषु।
भावेषु नोपलभ्यन्ते तद्गाम्भीर्यमिति स्मृतम्॥" (साहित्यदर्पण)

४ अचापल्य, दृढ़ता, धैर्य।

"गाम्भीर्यमनोहरं वपु." (रघु० ३।३२)

गाम्मन्य (सं० त्रि०) गामिव मन्यते स्वम् ततः अम्। जो अपनेको गोतुल्य समझे।

गाय (सं० पु०) गै भावे घञ्। १ गान।

"यथाविधानेन पठन् साम गायमविच्युतम्।" (याज्ञवल्क्य)

गाय (हिं० स्त्री०) १ गो, इसके नरको सॉड वा बैल कहते हैं। २ बहुत सोधा सादा मनुष्य।

गायक (सं० त्रि०) गानकर्त्ता गानेवाला।

"तथा गायन्ति गायकाः।" (भारत १३।५३ अ०)

गायकसव—कसाइयोंकी एक जाति। ये सतारा और महाबलेश्वरमें पाये जाते हैं। कहा जाता है कि ये हाबसी गुलाम तथा काबुल पठानोंके वंशज हैं जिन्हें हैदर अलीने महिसुरमें गाय और भैंस कतल करनेके लिये नियुक्त किया था। ये १८०३ ई०में जेनेरल वेलेस्ली और १८१८ ई०मे सर थोमस मनरोके साथ दाक्षिणात्यमें आये थे। ये आपसमें हिन्दुस्थानी भाषा और दूसरेके साथ मराठी बोलते हैं। ये बहुत कुछ यहांके मुसलमानोंसे मिलते जुलते हैं। ये परिश्रमी, क्रोधी और झगड़ालू होते हैं। इन्हें शराब पीनेकी आदत अधिक है।

गायकवाड़—बड़ोदाके राजवंशका उपाधि या नाम। जो राजा रहता, इसी नामसे अभिहित हुआ करता है। 'सेन खास खेल शमशेर बहादुर' इनका दूसरा उपाधि है। फिर १८७७ ई० १ जनवरीको दिल्लीके दरबारमें इन्हें 'फरजन्द खास दौलत इङ्गलिशिया' उपाधि भी मिला था। अंगरेज सरकार गायकवाड़को २१ तोपोंकी सलामी देती है।

दामाजी गायकवाड़से इस वंशकी उत्पत्ति है। वह महाराष्ट्रराज साहुके अधीन कर्म करते थे। उनके सेनापति खण्डेराव धाबाड़े बालापुरके युद्धमें इनका वीरत्व देख करके सन्तुष्ट हुए और इनको पदोन्नति करनेके लिये राजाको अनुरोध किया। उसीके अनुसार इन्होंने द्वितीय सेनापतिका पद और 'शमशेर बहादुर' उपाधि पाया था। दामाजीके मरने पर उनके भ्रातुष्पुत्र पिलाजी राव गायकवाड़ पद पर अभिषिक्त हुए। खण्डेरावके पुत्र त्र्यम्बकराव धाबाड़े और पिलाजी दोनोंने मिल करके अन्यान्य महाराष्ट्र सामन्तोंके साथ पेशवाके विरुद्ध युद्धयात्रा की थी। १७३१ ई०को बड़ोदा नगरके निकट एक लड़ाई हुई। उसमें त्र्यम्बकराव पराजित और निहत हुए। पेशवाने उनके शिशु सन्तान यशोवन्त रावको सेनापतिके पद पर नियुक्त करके पिलाजी गायकवाड़को पहले हो जैसा सहकारी सेनापति बना 'सेन खास खेल' उपाधि दिया और यशोवन्त रावके प्रति गुजरातका समस्त कार्यभार अर्पण किया। शर्त यह थी कि राजस्वका प्रायः अर्धांश पेशवाको देना पड़ेगा। उस समय दिल्लीके बादशाह इस प्रदेशके कई एक राज्योंका कर पेशवाको देते थे। उन्होंने पिलाजीको कर्मच्युत करके योधपुरराज अभयसिंहको उस पद पर बैठा दिया। इसी झगड़ेमें पिलाजी गायकवाड़ने सम्राटके विरुद्ध अस्त्र धारण किया और उनकी सेनाओंको युद्धमें परास्त करके अनेक स्थानों पर अधिकार कर लिया। अभयसिंहने देखा कि पिलाजी लोगोंके प्रियपात्र रहे, उनका लड़ाईमें जीतना सहज न था। यह विवेचना करके १७३२ ई०को गोपनमें दस्यु द्वारा उन्होंने पिलाजीको मरवा डाला। फिर उनके पुत्र दामाजी गायकवाड़ बनाये गये। इधर सेनापति यशोवन्त राव वयःप्राप्त होते भी कार्यभारवहनको असमर्थ थे। उसीसे गायकवाड़-घरानें पर भी वह भार डाला गया। १७३२ ई०को पिलाजीके भाई महाजीने बड़ोदा नगर अधिकार किया। उसी समयसे उक्त नगर गायकवाड़ वंशकी राजधानी बना हुआ है। ताराबाईने जब अपने पौत्र सताराके राजाको बालाजी बाजीराव पेशवाकी अधीनतासे छुड़ाया, दामाजी गायकवाड़ने उन्हें

साहाय्य पहुंचाया था। पेशवाने इसीसे उनको विश्वास-घातकता पूर्वक पकड़ रखा। शेषमें गुजरातकी बाकी मालगुजारी १५ लाख रुपया देनेकी स्वीकृत होने पर पेशवाने उन्हें छोड़ दिया। उसी समय यह भी लिखा पढ़ी हुई—राज्यका जो अधिकार है और जहां उनका अधिकार होगा, उसके आयका आधा भाग पेशवाको देना पड़ेगा। काठियावाड़में गायकवाड़ने जो स्थान अधिकार किये थे, दूसरे वर्ष पेशवाने उसका कितना ही अंश ले लिया। गायकवाड़ पेशवाको सैन्य साहाय्य करने पर भी प्रतिश्रुत हुए। फिर पेशवा और गायक-वाड़का मिलित सैन्य ले करके राघव गुजरात अधिकार करने चले थे। १७५५ ई०को अहमदाबाद दिल्लीके शासनसे पृथक् हुआ। पेशवा और दामाजी दोनोंने उसका राजस्व बांट लिया था। किन्तु राज्यका अधिकांश पेशवाके हाथ लगा।

१७६१ ई० ७ जनवरीको अहमदशाह अब्दालीके साथ पानीपतमें जो लड़ाई हुई, महाराष्ट्र पक्षमें दामाजी-ने अपना सैन्य ले करके विलक्षण वीरत्व देखाया था। इस युद्धमें कितने ही महाराष्ट्रवीर धराशायी हुए और दामाजी अल्पसंख्यक सेना ले करके घरको लौट पड़े। उसी समयसे वह फिर अधिक युद्धविग्रहमें न लगे, अपने राज्यकी ही रक्षा करते रहे। इसी समय उन्होंने गुज-रातकी उत्तरदिक्के बधानपुरको छोड़ करके समस्त स्थान जुवान् मर्द खांके पाससे अधिकार किया और ईडर-के राठौरवंशीय राजाओंको करद बना लिया। इसी प्रकार दामाजी एक पराक्रान्त नरपति हो गये। पेशवा मधुरावके सेनापति रघुनाथ राव या राघवने अपने प्रभुके विपक्षमें अस्त्रधारण किया था। दामाजीने राघवकी सहायता करनेके लिये अपने पुत्र गोविन्दरावको ससैन्य भेज दिया। दोनों पक्षोंमें घमासान लड़ाई हुई, किन्तु अन्तमें राघव हार गये। पेशवाने गोविन्दरावको पकड़ रक्खा था। फिर दामाजीको ५२५०००) रु० दे करके पेशवासे सन्धि करनी पड़ी। वह शान्तिके समय ३००० और युद्धके समय ४००० अश्वारोही देने पर स्वीकृत हुए। एतद्व्यतीत कई एक प्रदेश भी पेशवाने अधिकार कर लिये। यह ठहर गया कि २५४०००) रुपया और मिलने पर वह लौटा दिये जावेंगे। इसके पीछे दामाजीके राज्य कालमें दूसरी कोई बड़ी घटना नहीं हुई। शर्त पूरी होते न होते ही वह मर गये। उनके ३ रहीं। प्रथमाके गर्भसे गोविन्दराव, द्वितीयाके सभाजी तथा फतेहसिंहजी और तृतीयाके गर्भसे मा जी नामक पुत्रने जन्म लिया था। इन लड़कोंमें द्वितीया के गर्भजात सभाजी राव सर्वज्येष्ठ रहे। पिताके मृत्यु-कालको प्रथमाके गर्भजात गोविन्दराव पूनामें कैद भुगते थे। वहां उन्होंने पेशवा मधुरावको बहु मूल्य उपढौकन-से तुष्ट करके और पूर्ववत् सन्धिके अनुसार कार्य करने पर स्वीकृत हो उनसे अपने नामपर राज्य करनेको अनु-मति ली। उन्हें 'सेन खास खेल' उपाधि भी मिला था। गोविन्दरावको इस उपलक्षमें ५०४८८१४॥/) निम्न-लिखित रीतिसे देना पड़ा—

गत वर्षका कर	५२५०००)
१७६८ ई०की अनुपस्थितिका दण्ड	२३३५०००)
सेन खास खेलकी उपाधिके लिये	
नजराना और जागीर	२१०००००)
हिसाब खाते	१०००००)
मुकुन्द काजीको अतिरिक्त कर देने पर	२६६३०)
	५०५२६३०)
नकद सोना	३७१५॥/)
कुल	५०८४८१४॥/)

इधर फतेहसिंहने बुद्धिहीन बड़े भाई सभाजीका बड़ोदेके सिंहासन पर बैठा करके राजकार्य परिचालनका भार अपने हाथमें लिया और पेशवाको राजी करनेके लिये पूना गमन किया। उसी समय मधुरावके वंशमें विवाद उपस्थित हुआ था। लोभमें पड़ करके पेशवाने सभाजीका अधिकार स्वीकार कर लिया और 'सेन खास खेल' उपाधि दे करके फतेहसिंहको उनका अधीनस्थ बना दिया। इससे गोविन्दरावके साथ उनका झगड़ा लगा था। फतेहसिंहने मधुरावसे कहा कि गोविन्दराव सम्भ-वतः युद्धका उद्योग करेंगे। सुतरां जो सैन्य उस समय पेशवाके पास रहा, गुजरातमें रखना अच्छा था और उसके खर्चको वह वात्सरिक ६७५०००) [illegible]को।

प्रस्तुत थे। फतेहसिंहने पेशवाकी अभिसन्धि भली भांत समझ ली थी। वह जानते थे—पेशवा किसी समय उन्हींको आक्रमण करके विपर्यस्त कर डालेंगे। १७७२ ई०को उन्होंने बम्बईमें अंगरेज सरकारके पास सन्धिका प्रस्ताव करके भेजा। किन्तु विलायतके 'कोर्ट अव डिरेक्टर्स'ने उक्त प्रस्ताव पर अपनी असम्मति प्रकाश की थी। परन्तु १७७३ ई० १२ जनवरीको भड़ोंचके राजस्व सम्बन्धमें एक सन्धि हो हो गयो।

उधर नारायण रावके प्राणविनाशके बाद राघव पेशवा हुए और गोविन्द रावको 'सेन खास खेल' उपाधि मिला था। इस बार गोविन्द रावका साहस बढ़ गया। वह फतेहसिंहके हाथसे बड़ोदा राज्य निकाल लेने गुजरातका चले थे। वहां पहुंचते ही गोविन्द रावने बड़ोदा अवरोध किया। राघवने नरोत्तमदास नामक किसी व्यक्तिको गोविन्दरावकी ओरसे सूरतके दक्षिण प्रदेशोंका राजस्व चुकानेको रख लिया था। फतेहसिंह जा करके उसको पकड़ लाये। राघव उसीसे गोविन्द रावके साथ घेरा डालनेमें मिल गये। इधर फतेहसिंहने होलकर और सेंधियाकी फौज ले करके राघवकी फौज पर हमला किया था। राघव पराजित हो करके भाग खड़े हुए। गोविन्द राव खण्डे राव प्रभृतिने प्रथमत: कप्परवञ्ज और फिर पहलानपुरको पलायन करके आत्मरक्षा की। अखीरको राघवने अंगरेजोंका सहारा पकड़ा। फतेहसिंह गायकवाड़ देखो। १७८० ई० २० जनवरीको फतेहसिंहके साथ एक सन्धि हुई। पीछे उसके आतिल ठहरने पर १७८२ ई०को दूसरी सन्धि की गयो। १७८९ ई० ११ दिसम्बरको फतेहसिंहके मरने पर दामाजीके अपर पुत्र मानाजी राज्यभार ग्रहण करके पहलेकी तरह सभाजीके नाम पर राजा चलाने लगे। १७९३ ई० अगस्त मासको उनके मरने पर पूर्वोक्त गोविन्दराव गायकवाड़ बड़ोदाके सिंहासन पर बैठे थे। १८०० ई०के सितम्बर महीने गोविन्द राव भी मर गये। गोविन्द रावके ११ पुत्र रहे। उनमें ज्येष्ठपुत्र आनन्द राव सिंहासनारूढ़ हुए। किन्तु उनमें वैसी बुद्धि न थी। सहजमें ही गोविन्द रावके दूसरे पुत्र कानोजी राव राजाकी सभी क्षमता अपने हाथमें लेने लगे। बड़ोदा राजाके पूर्वतन मन्त्री रावजी अप्पाजीने आनन्द रावकी सहायता करके कानोजी रावके हाथसे सरकारी खजाना निकाल लिया था। उभय पक्षोंमें संग्राम होने लगा। रावजीकी ओर उनके भाई बाबाजी, उनके अधीन गुजराती अश्वारोही दल और सात हजार अरबी सेना थी। उस समय मङ्गल पारिख और सामुएल विचर नामक दो कारिन्दे ज्यादा सूद पर रुपया दे उक्त सेनादलको पालन करते थे। सिपाही तनखाह पाने पर अपना देना चुकाते थे। सुतरां वह कारिन्दोंके विशेष वशीभूत रहे। यह दोनों कारिन्दे बाबाजीकी ओर रहनेसे आनन्द रावका ही पक्ष बलवान् हुआ। उधर कानोजीका पक्ष भी नितान्त सहायशून्य न था। उनके पितृव्य मलहार राव करी नामक स्थानके जागीरदार रहे। उन्होंने यह प्रतिश्रुत होने पर कानोजीका पक्ष लिया कि कानोजी राजा होने पर उनकी बाकी मालगुजारी छोड़ देंगे और आगे कोई कर न लेंगे उन्होंने अविलम्ब ही सैन्य सङ्गठन करके बड़ोदा राजा आक्रमण किया। आनन्दरावकी ओरसे रावजीने अनन्योपाय हो करके बम्बईकी अंगरेज गवर्नमेण्टको लिख भेजा—मलहार रावके विपक्षमें यदि अंगरेज साहाय्य करें तो हम ५ दल अंगरेजी फौजका खर्च देनेको तैयार हैं। बम्बईके शासनकर्ता डनकन साहबने इस पर भारत-गवर्नमेण्टकी अनुमति मांगी थी। परन्तु बहुत दिनों अपेक्षा करने पर भी जब कोई मतामत न मिला, तो अखीरमें उन्होंने मेजर अलगजेण्डर वाकरको सेनापति बना १६०० सिपाहियोंके साथ रवाना किया और उनको कह दिया, पहले वह निबटारेकी चेष्टा करेंगे, निबटारेका सुभीता न पड़नेसे रावजीके साथ मलहार रावसे लड़ेंगे। मलहार रावने भी गतिकको समझ बूझ करके प्रथमतः बहुत भयभीत जैसे बन गये और अधिकृत स्थानोंको छोड़ देने पर तैयार हुए। शान्तिको बात चल रही थी कि मलहार रावने एकाएक १७ मार्चको अंगरेजी फौज पर आक्रमण किया। परन्तु अन्तमें उन्होंको पराजित हो करके भागना पड़ा। इस लड़ाईमें अंगरेजोंके ५० आदमी मारे गये। फिर मलहार राव चुपके चुपके बाबाजीका कितना ही सेना-

दल तोड़ने लगे। वाकर साहबने अवस्था देख करके बम्बईको संवाद भेजा था। बम्बई गवर्नमेण्टने उस पर और भी कितनी ही फौजके साथ सर विलियम क्लार्क साहबको रवाना किया। ३० अपरेलको उन्होंने बड़ोदा पहुंच मलहार राव पर आक्रमण मारा था। मलहार रावने अखीरमें अपनेको उनके हाथ सौंप दिया। अंगरेज गवर्नमेण्टने वाकर साहबको बड़ोदेका पोलिटिकल एजेण्ट नियुक्त किया था। फिर स्थिर हुआ कि मलहारराव नड़ियाद नामक स्थानमें रहेंगे और उनको खर्चके लिये १२५०००) रु० मासिक मिलेंगे। अच्छा व्यवहार करने पर उनको और भी ज्यादा रुपया दिया जावेगा। कानोजी बड़ोदामें कैदीके तौर पर रखे गये। बात यह हुई—आनन्दराव अंगरेज गवर्नमेण्टको एक दल सेना रखेंगे और सूरत तथा ८४ जिलाओंकी चौथ अंगरेज गवर्नमेण्टको देंगे। रावजी अप्पाजी यावज्जीवन मन्त्री रहेंगे, अंगरेज गवर्नमेण्ट उनके पुत्र, भ्राता भ्रातुष्पुत्र, भागिनेय और बन्धुबान्धवोंके प्रति यथेष्ट उदारता दिखलावेगी।

उधर बड़ोदा राजकोषके अर्थ सम्बन्धमें बड़ी गड़बड़ी पड़ी थी। मन्त्री रावजी अप्पाजी अपनी शृङ्खला स्थापन करनेमें असमर्थ थे, उन्हें अंगरेज गवर्नमेण्टका साहाय्य ले करके काम करना पड़ा। गायकवाड़-वंशीय गणपति नामक कोई व्यक्ति मल्हाररावका पक्ष अवलम्बन करके खेरा दुर्ग दबा बैठा था। भूतपूर्व गोविन्दराव गायकवाड़के मुरारिराव नामक पुत्रने गणपतिके साथ योगदान किया था। उन्हें दमन करना एकान्त आवश्यक समझ करके एक दल सेना भेजी गयी। गणपतिराव और मुरारिरावने पलायन करके धार राज्यमें पंवारोंका आश्रय ग्रहण किया।

अपर दिककी ओर एक विभ्राट् उपस्थित था। अरबी फौज बहुत दिनोंसे तनखाह न पाने पर मनमानी करने लगी। उनको दमन करना कठिन पड़ा था। चाहे शृङ्खला स्थापनका उद्योग देख करके अथवा अपने निकाल दिये जानेकी आशङ्कासे उन्होंने विद्रोही हो गायकवाड़ आनन्दरावको पकड़ लिया और कानोजीको छोड़ दिया। मल्हाररावने भी उसी सुयोग पर नड़ियाद नामक स्थानसे गोपनमें पलायन किया।

पोलिटिकल एजेण्ट मि० वाकरने पहले मीठी बातोंमें अरबोंको समझाना चाहा था। परन्तु उनकी चेष्टा व्यर्थ हुई। उन्होंने बम्बईसे अंगरेजी सैन्य मंगा बड़ोदा घेरा था। अवरोधके समय अरब लोग घरोंके भीतरसे गोली मार कितने ही अंगरेज सिपाहियोंको गिराने लगे। १० दिन घिरे पीछे उन्होंने कहा कि उनका प्राप्य अर्थ मिलने पर वह देश छोड़ करके चले जाने पर प्रस्तुत थे। उनका १७ लाख ५० हजार रुपया पावना था। राजकोषमें उतना रुपया न रहा। उसीसे ४१ लाख ३८ हजार रुपया ऋण लेना पड़ा। ईष्ट इण्डिया कम्पनीने अपने आप उसका आधा रुपया दिया और बाकी अपनी जमानत पर देशी कोठीवालोंसे लिया था। सैकड़े पीछे ८) रु० सूद रहा। ३ वर्षमें रुपया चुकानेकी बात थी।

इस प्रकारसे वेतनका बाकी रुपया लेकर अरबी फौज ज्यादातर देश छोड़ करके चली गई। सिर्फ अबूद नामका जमादार कानोजीकी साहाय्य करनेके लिये उनमें जा कर मिला था। कानोजी बड़ोदेसे भाग कर महाराष्ट्रकी उत्तर सीमा पर राजपिप्पली नामक पार्वत्य प्रदेशको चले गये और वहां फौज इकट्ठी करने लगे। बड़ोदा अवरोधके समय वह राहमें बाबाजीके एक सेनादलको पराजय करके बड़ोदाकी ओर जा रहे थे। १८०३ ई० जनवरी मासको अंगरेजोंने अरबी सिपाहियोंको हरा करके मेजर होम्सको ससैन्य कानोजीके विपक्षमें प्रेरण किया। कानोजी शोरोगांवके पास पहाड़ी राह अधिकार करके गुप्त भावमें अंगरेज फौज पर हथियार फटकारने लगे। अंगरेजी सेनाने पीठ देखानेका उपक्रम उठाया ही था कि मेजरहोम्सने सिपाहियोंको उत्तेजित करके प्रबल वेगसे शत्रुका अनुसरण किया। कप्परवंज नामक स्थानमें कानोजीका दलबल छिन्न विछिन्न हुआ था। वह उज्जयिनाको भाग गये। अवशेषमें १८०८ ई०को उन्होंने अंगरेजोंके हाथों आत्मसमर्पण किया। अंगरेजोंने उन्हें छोड़ उनके निर्वाहका प्रबन्ध बांधा था। परन्तु शेषमें १८१२ ई०को विश्वासघातकता करनेके अभियोग पर वह मन्द्राज भेजे गये। वहीं उनका मृत्यु हुआ। उनके सहकारी मल्हारराव भी नड़ियादसे भाग इधर-उधर घूमते फिरते थे। वैसे ही समय बाबाजीके सिपा-

छियोंने उन्हें पकड़ करके अंगरेजोंके हाथ सौंप दिया। अंगरेजोंने उन्हें बम्बईके दुर्गमें कैद करके रखा था। वहीं मल्हारराव मर गये।

अंगरेजोंके साहाय्यसे आनन्दराव गायकवाड़ बड़ोदा राज्य शासन करने लगे। रावजी अप्पाजी मन्त्री, बाबाजी सेनापति और लेफटिनेगट कर्नल वाकर अंगरेजी रेसीडेगट वा पोलिटिकल एजेगट थे। उस समय राज्यका आय ५५ लाख, परन्तु व्यय ८२ लाख रुपया रहा। सुतरां ऋणपरिशोधका कोई उपाय देख न पड़ता था।

१८०५ ई०को अंगरेज गवर्नमेगटने गायकवाड़के साथ एक नयी सन्धि की। पहले वह २००० फौज रख सकते थे, इस सन्धिके अनुसार ३००० पैदल और गोलन्दाजोंकी एक फौज रखने लगे। और उनके व्ययनिर्वाहको ११७०००० रु० आयका सम्पत्ति* अलग की गयी। चौरासी, चकली और कैरा प्रदेश तथा सूरतको चौथ और सिवा इसके १२ लाख ८५ हजार रुपयेकी जायदाद कर्ज अदा करनेके लिये अंगरेज गवर्नमेगटको दी थी। सन्धिके २ वर्ष पीछे अंगरेज गवर्नमेगटने देखा कि फौज रखनेके लिये जो सम्पत्ति निर्दिष्ट थी, उससे व्यय न निकलता रहा। उससे गायकवाड़की और जायदाद छोड़नी पड़ा। १८०८ ई०को मालूम हुआ कि ऋण जैसाका तैसा रहा और सूद चढ़ता था। सन्धिमें किसीको सुभीता न पड़ा। अंगरेज गवर्नमेगट सम्पत्ति ले करके फौजका खर्च चला न सकी, गायकवाड़का भी कर्ज बना रहा। १८११ ई०को रेसीडेगट मेजर वाकरके कामसे छुट्टी लेने पर कप्तान रिवेट कार्नाक रेसीडेगट हुए। १८१२ ई०को बम्बई सरकारने प्रस्ताव किया था गायकवाड़के एक करोड़ रुपया देने पर उनकी समस्त अन्य सम्पत्ति लौटा देनी चाहिये परन्तु इस प्रस्तावमें गवर्नर जनरल सम्मत न हुए। १८१३ ई०को बड़ोदेमें भयानक दुर्भिक्ष पड़नेसे राजस्वकी तहसीलमें बड़ी अड़चन लगी। उससे ऋण और भी बढ़ा था। दूसरा वर्ष पेशवाके बारेमें दूसरा झगड़ा उठ खड़ा हुआ। इससे पहले अहमदाबाद और काठियावाड़ प्रदेश ४॥ लाख रुपया सालाना आमदनीकी जायदाद मान करके कई वर्षके लिये पेशवाको दी गयी थी। निर्दिष्ट काल शेष होने पर पेशवाने फिर उसको लिखा पढ़ी करा लेनी चाही। गायकवाड़के पक्षसे कहा गया कि उन्होंने गायकवाड़के अधिकृत भूमिकी मालगुजारी नहीं दी और गायकवाड़से विना पूछे ही अंगरेज गवर्नमेगटको पहुंचा दी। दोनों ओरका हिसाब साफ करनेके लिये गायकवाड़की ओरसे गङ्गाधर शास्त्री पूनेको भेजे गये। गङ्गाधर शास्त्री देखो। अंगरेज गवर्नमेगट उनकी रक्षाके लिये दायी हुई थी। गङ्गाधरके निहत होने पर अंगरेजोंने पेशवाको लिखा कि वह हत्याकारी त्र्यम्बकजी अङ्गियाको उनके हाथ सौंप देते। अनिच्छा रहते भी पेशवाने उन्हें पकड़ करके उपस्थित किया। किन्तु त्र्यम्बकजी रक्षियोंके हाथसे निकल सेनासंग्रहपूर्वक पेशवाके साहाय्यसे युद्धका उद्योग करने लगे। १८१७ ई०को अङ्गरेजोंके पूना घेरने पर पेशवाने सन्धिका प्रस्ताव किया। अङ्गरेजो पक्षपर एलफिनष्टोन साहबके प्रस्तावसे सन्धि हुई।

इतने दिनों तक पेशवा महाराष्ट्रोंके अग्रणी जैसे समझे जाते थे, अब उस सम्मानसे वञ्चित हुए। स्थिर हो गया कि उनको सब मांगें चुकानेके लिये उन्हें प्रति वर्ष ४ लाख रुपया दिया जावेगा। वह फिर गायकवाड़ राजामें किसी प्रकारका हस्तक्षेप न कर सकेंगे। अहमदाबाद पिछली सन्धिके अनुसार उन्हींके पास रहेगा। काठियावाड़ प्रदेशका राजस्व अंगरेज गवर्नमेगटको देना पड़ेगा।

पेशवाके साथ सन्धि हो जाने पर गायकवाड़से इस शर्त पर अंगरेजी गवर्नमेगटकी दूसरी सन्धि हुई कि कोई बड़ा युद्ध उपस्थित होने पर उभयपक्षको सैन्य दे करके एक दूसरेका साहाय्य करना पड़ेगा। गायकवाड़के ३००० सवार अंगरेजोंके अधीन रहेंगे। दोनों ओरके कैदी परस्पर छोड़ देने पड़ेंगे। अंगरेज गवर्नमेगट गायकवाड़के साहाय्यको और भी सैन्यसंख्या बढ़ावेगी। उसके व्ययनिर्वाहार्थ गायकवाड़ने अंगरेज गवर्नमेगटको गुजरातका अंश छोड़ दिया। फिर अंगरेजो

* इस सम्पत्तिमें ढोलका ४५००००, नड़ियाद १७५०००, बीजापुर १३००००, मातर १२००००, कुण्डा ११००००, कुरौरतप्पा २५०० थिमकटोद्र ५०००, और काठियावाड़ी बराट ११००००, था।

गवर्नमेण्ट और गायकवाड़ने कई एक स्थान आपसमें परिवर्तन किये।

इस सन्धिके पीछे आनन्दरावके समयमें कोई विशेष घटना नहीं हुई। १८१८ ई० २ अकतूबरको वह मर गये। इससे पहले ही उनके भ्राता फतेहसिंहका भी मृत्यु हो चुका था। यह १२ वत्सरकाल राजकार्यके अध्यक्ष रहे। फतेहसिंहके मरने पर उनके कनिष्ठ भ्राता शिवाजी राव वही कार्य करने लगे। आनन्द रावका मृत्यु होने पर उनके दो लड़के रहते भी यही शिवाजी राव राजा बन बैठे।

आनन्द रावको बुद्धिहीन समझ करके अङ्गरेज गवर्नमेण्ट सब विषयोंमें हस्तक्षेप करती थी। परन्तु शिवाजी बुद्धिमान् रहे, उनके समयको वैसी दस्तन्दाजीकी जरूरत न पड़ी। फिर भी रेसीडेण्ट जैसे थे, बने रहे। १८२० ई०को बम्बईके गवर्नर एलफिनष्टोन साहब बरोदेमें जा करके सब विषयोंमें सुशृङ्खला स्थापनको नया प्रबन्ध कर आये और स्थिर हो गया कि राज्यका कार्यकलाप वृटिश गवर्नमेण्टके हाथमें रहेगा। आभ्यन्तरिक बातोंमें गायकवाड़का सम्पूर्ण कर्तृत्व चलेगा। फिर भी कोठीवालोंके साथ देनेको जो व्यवस्था हुई थी, उसमें किसी प्रकारको त्रुटि न आती और वात्सरिक आयव्ययकी व्यवस्था रेसीडेण्टका दिखला ली जाती। रेसीडेण्ट चाहनेसे बहीखाता देख सकते। किसी विषयमें अधिक खर्च करनेको रेसीडेण्टसे परामर्श ले करके कार्य करना पड़ेगा। वृटिश गवर्नमेण्टने मन्त्री और अन्यान्य कर्मचारियोंके प्रति जो अभयदान किया था उसकी रक्षा करनी पड़ेगी। गायकवाड़ अपने आप मन्त्री नियोग करेंगे, किन्तु नियोग करनेमें पहले रेसीडेण्टसे उसके सम्बन्धमें परामर्श लेना पड़ेगा। समय समय पर वृटिश गवर्नमेण्टको परामर्श देनेका अधिकार रहेगा। यह सब नियम हुए तो सही, परन्तु शिवाजी तदनुसार चल न सके। ऋण परिशोधके लिये समय समय पर रुपया देनेकी जो व्यवस्था हुई थी, उसको भी वह पालन करनेमें असमर्थ हुए। इसी प्रकारसे १८२० ई०को उन पर १ करोड़ ७ लाख रुपया ऋण चढ़ गया। वृटिश गवर्नमेण्टने कहला भेजा था यदि वह रुपया न दे सकें, तो कर्ज़ चुकानेके लिये महाजनोंको उसी हिसाब से अपनी जमीन सौंप दें। किन्तु शिवाजी यह न कर सरकारी राजस्वका रुपया इधर उधरसे इकट्ठा करके उड़ाने और वृटिश गवर्नमेण्टने जिन लोगोंकी रक्षा करनेको कहा था, उनको नानाविध अत्याचारोंसे सताने लगे। एलफिनष्टोन साहबके बाद सर्जन मेलकलम बंबईके गवर्नर हुए थे। उन्होंने शिवाजीको बहुत समझाया परन्तु कोई फल न पाया। अन्तमें १८२८ ई०को कई एक जायदादें अलग करके महाजनोंके साथ बन्दोबस्त कर लिया गया। अंगरेज गवर्नमेण्टका जो सेनादल उपस्थित रखनेकी बात थी, शिवाजीने करद राज्योंमें प्रहरीके काम पर नियुक्त किया। परन्तु उन्होंने रीतिके अनुसार वेतन पाया न था। उसीसे १८३० ई०को वृटिश गवर्नमेण्टने फिर १५ लाखकी सम्पत्ति निकाल ली। १८३२ ई०को लार्ड क्लेयर बड़ोदे जा करके गायकवाड़से मिले थे। स्थिर हो गया कि गायकवाड़ महाजनोंका देना चुकावेंगे। महाजनों पर किसी प्रकारका अत्याचार न होनेको वृटिश गवर्नमेण्टने जिम्मा लिया था। गायकवाड़ने सवारोंको तनख्वाह वक्त पर देना मञ्जूर किया और अपनी बातको जमानतके तौर पर गवर्नमेण्टके पास १० लाख रुपया रख दिया। गवर्नमेण्टने उनसे १५ लाख रुपयेकी जायदाद जो पहले ले ली थी, वापस कर दी। परन्तु शिवाजीके लिये प्रतिज्ञा पालन करना असाध्य हो गया। वह बहुतसी बातोंमें सरकारी हिदायतोंके खिलाफ काम करने लगे। इसके बाद गवर्नमेण्ट और चुप रह न सकी। गायकवाड़के कई एक स्थान अंगरेजी अधिकारमें थे। वह उन्हें उसकी मालगुजारी देती थी। १८३७ ई०को गवर्नमेण्टने गायकवाड़को वह रुपया देना बन्द किया और उसके दूसरे वर्ष नौसरी नामक स्थान भी ले लिया। शिवाजी फिर भी न सुधरे और शर्तके मुताबिक काम कर न सके। उनके विपक्षमें क्रमशः कितने ही अभियोग लगे थे। गवर्नमेण्टने अपना असन्तोष प्रकाश करनेके लिये पिपलाबद नामक जिलेमें शिवाजीका हिस्सा दखल कर लिया। उसकी आमदनी ७०२०००) रु० थी। फिर उन्हें राजच्युत करके दूसरेको राजा बना

देनेका भय दिखलाया गया, परन्तु किसी बात पर उनकी आंख न उठी। अन्तमें जब १८३८ ई०को गवर्नमेण्टने सतारा के राजा प्रतापसिंहको सिंहासनसे उतारा, शिवाजी न जाने क्या समझ वश्यता स्वीकार करके दो एकको छोड़ सब बातोंमें गवर्नमेण्टकी आज्ञाके अनुसार कार्य करने पर अङ्गीकृत हुए। अंगरेज गवर्नमेण्टने उस पर राजी हो करके पिपलावदका अंश छोड़ दिया और जमानतके तौर पर रखा हुआ १० लाख रुपया भी प्रत्यर्पण किया। १८४७ ई० दिसम्बर मासको शिवाजीका मृत्यु हो गया। उनके ज्येष्ठपुत्र गणपति राव गायकवाड़ पद पर प्रतिष्ठित हुए। इनके राजत्वकालमें कोई बड़ी बात नहीं पड़ी। प्रजाकी सुखस्वच्छन्दता पर उनकी दृष्टि कम थी। वह अपने विलासमें ही काल यापन किया करते थे। १८५६ ई०को बम्बई बड़ोदा रेलवेके लिये उन्होंने अंगरेज गवर्नमेण्टको जमीन दी। शर्त यह थी—वह रेलवे खुलने पर गायकवाड़की आमदनी रफ्तनीका जो महसूल घटेगा, पूरा कर दिया जावेगा। प्रतिवर्ष उसका हिसाब लगता और घाटा पूरा करना पड़ता है। १८५६ ई० १८ नवम्बरको गणपति रावका मृत्यु हुआ। सन्तान न रहनेसे उनके कनिष्ठ खण्डेरावने सिंहासन पर आरोहण किया था। खण्डेराव गायकवाड़ देखो। अंगरेज गवर्नमेण्टने उन्हें जी० सी० एस० आई० (G.C.S.I.) उपाधि दिया। १८७० ई० २८ नवम्बरको खण्डेरावके मरने पर उनके भ्राता मल्हार राव गायकवाड़ बड़ोदामें सिंहासनारूढ़ हुए। खण्डेरावकी विधवा पत्नी। यमुना बाई उस समय गर्भवती थीं। अंगरेज गवर्नमेण्टने मल्हार रावको कह रखा—यदि यमुना बाईके गर्भसे पुत्र सन्तान उत्पन्न होगा, तो उसीको राजत्व मिलेगा। कई महीने बाद यमुना बाईने एक कन्यासन्तान प्रसव किया था। सुतरां मल्हार राव निष्कण्टक राजा करने लगे। वह पहले खण्डेरावके प्राणविनाशकी चेष्टा करने पर कारागारमें निक्षिप्त हुए थे, परन्तु वहांसे निकल एक बारगी ही सिंहासन पर बैठ गये। यह कोई आशा नहीं करता कि वैसे लोग अच्छी तरह राजकार्य चला सकेंगे। १८७० ई०को प्रजाके विरक्त हो अंगरेज सरकारसे आवेदन करने पर तहकीकात करनेके लिये एक कमीशन बैठाया गया। उसने आवेदनकी बात छोड़ करके राजस्व, राजनीति और विचार प्रभृति नाना विषयोंका तदन्त ले करके अपना मन्तव्य लिख भेजा। इस मन्तव्यको पढ़ करके अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके प्रतिनिधि लार्ड नार्थब्रुकने उन्हें १८७५ ई० तक शासनसंस्कार करनेका समय दिया था। उसके बीच यदि वह अच्छा इन्तजाम न कर सके तो उन्हें सिंहासनच्युत करनेकी बात थी। किन्तु १८७५ ई०को यह खबर फैल पड़ी कि अंगरेज रेसीडेण्ट कर्नल फेयरको विष देनेकी चेष्टा की गयी। अनुसन्धानमें मल्हार राव पर ही सन्देह उठा। गवर्नर जनरल लार्ड नार्थब्रुकने एक घोषणा निकाली—जब गायकवाड़के विपक्षमें सन्देह है, तो जांचके लिये एक अदालत बैठेगी और जितने दिन वह अदालतके विचारमें बेगुनाह जैसे साबित न होंगे, रियासतका काम करनेसे अलग रहेंगे। फिर तब तक अंगरेज गवर्नमेण्ट अपने आप वह भार ग्रहण करेगी। मल्हार राव भी उसी बीच अपने दोषक्षालनके प्रमाणादि देंगे। मल्हारराव देखो।

कलकत्ता हाईकोर्टके बड़े जज, ग्वालियरके महाराज, जयपुर महाराज, महिसुरके चीफ कमिशनर, सर दिनकर राव (ग्वालियरके मन्त्री) और पञ्जाबके कमिश्नर कई लोगोंने बैठ कर अदालतमें गायकवाड़का विचार किया। १८७५ ई० २३ फरवरीको यह अदालत लगी थी। विचारक मल्हार रावके दोष सम्बन्धमें एक मत न हो सके। उनको तीन आदमियोंने दोषी और तीनने निर्दोष बतलाया था। किन्तु गवर्नमेण्टने उनको पिछला अपराध स्मरण करके १८७५ ई० २२ अप्रैलको पदच्युत किया और मन्द्राज भेज दिया। खण्डे रावने सिपाही विद्रोहके समय गवर्नमेण्टको सहायता दी थी। इसीके सम्मानके लिये उनकी पत्नी यमुनाबाईको एक दत्तक लेनेका अनुमतिपत्र मिला। तदनुसार पिलाजीरावके पुत्र दामाजीके कनिष्ठ प्रतापरावके वंशीय सयाजी (सर्भाजी) राव मनोनीत हुए। १८७५ ई० २७ मईको सयाजी गायकवाड़ १२ वर्षकी अवस्थामें बड़ोदेके सिंहासन पर बैठे थे। होलकरके मन्त्री सुविख्यात सर टी० माधवराव

के० सी० एस० आई० बड़ोदेके मन्त्री बनाये गये। बालक सयाजी पहले जब सामान्य ग्राम्य बालकोंके साथ खेल करते, लोग नहीं समझते थे कि उसके अदृष्टमें राजसिंहासन रहा। १८७५ ई० ८ नवम्बरको जब 'प्रिन्स अव वेल्स' (राजकुमार) बम्बईमें उतरे, बालक गायकवाड़ उनसे मिलने गये। फिर १८ नवम्बरको युवराजने बड़ोदा जा करके उनका आतिथ्य ग्रहण किया। जो लोग युवराजके साथ आये, बालक गायकवाड़के गाम्भीर्य तथा राजोचित व्यवहारसे आश्चर्यमें दांतों तले उङ्गली दबा करके रह गये। १८७७ ई० १ जनवरीको महारानी विक्टोरियाके भारतेश्वरी उपाधि ग्रहणोपलक्षसे दिल्लीमें दरबार लगा था। उसमें सयाजी भी जा करके उपस्थित हुए। दरबारमें उन्हें 'फरजन्द खास दौलत इङ्गलिशिया' उपाधि मिला था। १८७८ ई०में यमुनाबाईको भारत-मुकुट या सी० आई० ई० उपाधि दिया गया। और सयाजी गायकवाड़ भी के० सी० एस० आई० उपाधि प्राप्त हुए। पीछे जी० सी० एस० आई० जी० सी० आई० ई० उपाधि भी प्राप्त हुये। सयाजी देखो।

गायगोठ (हिं० स्त्री०) गोशाला।

गायघाट-बकशी-खाल—एक उत्कृष्ट प्राकृतिक झील, जो बङ्गालमें हावड़ा जिलाकी दामोदर और रूपनारायण नदियोंके मध्य अवस्थित है। इसकी लम्बाई लगभग ७½ मील होगी। १८८४ ई०में जलविभागने हावड़ाके डिसट्रिक्टबोर्डसे यह झील वार्षिक ४५००) रु० जमाबन्दी पर ली थी।

गायत (अ० वि०) बहुत, अधिक, अत्यन्त, ज्यादा।

गायताल (हिं० पु०) १ बैलोंमें निकृष्ट, निकम्मा चौपाया। २ खराब पदार्थ।

गायत्र (सं० त्रि०) गायत्र्याः गायत्रीच्छन्दसः इदम्-अण्। गायत्री छन्द।

"त्वा गायत्रे पु गायत्र।" (ऋग्वेद ८।१२।१२)

'गायत्रे पु गायत्रीच्छन्दस्के पु मन्त्रे पु।' (सायण)

गायत्रिन् (सं० पु०) गायन्तं त्रायते ग्रन्त्, गायत्-त्रै-णिनि आलोपात् साधुः। १ खदिरवृक्ष, खैरका पेड़। गायत्रं स्तोत्रं अस्त्यस्य इनि। २ उद्गाता, सामगायक।

'गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्ति।' (ऋक् १।१०।१)

गायत्री (सं० स्त्री०) गायन्तं त्रायते, गायत्-त्रा-क-ततो गौरादित्वात् ङीष्। (आतोऽनुपसर्गे कः। पा ३।२।३) यद्वा गया एव गायाः, गय स्वार्थे अण्, गायान् प्राणान् त्रायते। वेदमाता, द्विजोंका उपास्य एक वैदिक मन्त्र।

लौकिक छन्दःशास्त्रमें जिस समवृत्तका प्रत्येक चरण ६ अक्षर वा स्वरवर्ण युक्त आता, गायत्री कहा जाता है। वेदमें समवृत्त वा ४ चरण-जैसा कोई भी नियम नहीं, २४ अक्षरवालेको गायत्री कह सकते हैं। कात्यायनकृत अनुक्रमणिका और ताण्ड्यब्राह्मणके मतानुसार वैदिक गायत्री छन्दमें आठ आठ अक्षरके ३ चरण लगते हैं। इस नियमसे तो अनेक वैदिक मन्त्र गायत्री कहला सकते हैं। परन्तु यहां गायत्री शब्द योगरूढ़ है, केवल 'तत् सवितुर्वरेण्य' इत्यादि मन्त्र ही समझ पड़ता है। यह नहीं कि वास्तविक पक्षमें गायत्री छन्दका लक्षणाक्रान्त होनेसे ही वह गायत्री कहलाता, वरं अपने गायकों और पाठकोंका त्राण करनेसे भी उक्त नाम पाता है।* बृहदारण्यक उपनिषद् (५।१४।४)में गायत्री शब्दकी अन्यप्रकार व्युत्पत्ति प्रदर्शित हुयी है। उसको देखते गाय शब्दका अर्थ प्राण है, प्राणरक्षा करनेवालेको गायत्री कहते हैं। यह ऋक्, यजुः और साम तीनों वेदोंमें एक ही जैसी मिलती है।

"तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥"

(ऋक् ३।६२।१०, साम २।६।३।१०।१, वाजसनेय ३,३५।२२।९)

गायत्रीछन्द समुदायके अक्षर गणना करनेसे सब मिला करके चौबीस होने चाहिये। परन्तु दर्शित "तत्सवितुर्वरेण्यं" इत्यादि मन्त्र देखनेसे तेईस मात्र अक्षर वा स्वरवर्ण निकलेंगे। एक अक्षर घट जसा जानेसे वह गायत्रीछन्द लक्षणाक्रान्त नहीं होता। इसीसे उपनिषद्में "वरेण्यं" पद विश्लेष करके 'वरेणीयं' जैसा कल्पित हुआ और चतुर्विंशति संख्याका पूरण पड़ा है। बृहदारण्यकके मतमें भी गायत्री त्रिपाद् है। लौकिक छन्दकी तरह ४ चरण न रखते भी २४ अक्षर होनेसे वह गायत्री कहलाती है।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य यथाकालको यथानियममें पारदर्शी आचार्यके निकट गायत्री मन्त्रमें दीक्षित होते हैं। उस समय इनका पुनर्जन्म होता और द्विज

* "गायन्तं त्रायते यस्मात् गायत्री त्वं ततः स्मृता।" (व्यास०)

ऐसा नाम पड़ता है। यह त्रिसन्ध्याको पवित्र भावमें गायत्री जपरूप उपासना करने पर बाध्य हैं। यह नियम वर्णत्रयमें चिरदिनसे चलता है। इसका कोई ठिकाना नहीं, कौन समयको किस महात्माने प्रथमतः यह नियम चलाया। प्रत्येक वैदिक मन्त्रका कोई न कोई ऋषि होता है। किसी किसी पद्धतिकारके मतमें वेदमन्त्र अनादि होते भी जो ऋषि सर्वप्रथम जिस मन्त्र द्वारा कोई कार्य करके चरितार्थ हुआ, अपने मन्त्रका ऋषि कहलाया। गायत्रीमन्त्रके ऋषि विश्वामित्र हैं। इस स्थल पर उनके मतानुसार कहना पड़ेगा कि विश्वामित्रने ही सबसे पहले उसको जप करके सिद्धि पायी। वेदके टीकाकार सायणाचार्यने ऋग्वेदभाष्यकी भूमिकामें लिखा है कि युगान्तको इतिहासादिके साथ समस्त वेद अन्तर्हित हो जाता। ऋषियोंके उसकी प्राप्तिके लिये तपस्या करने पर ईश्वर अनुग्रहसे फिर निकल आता है। इस प्रकार वेद पुनर्वार प्रकाशित होता है। युगान्तको वेद अन्तर्हित होने पर जो ऋषि सर्वप्रथम उसको पाता, उसका ही ऋषि कहलाता है। (ऋक् १।१।१ भाष्य) अतएव सायणके मतानुसार भी सबसे पहले न सही, इसी युगमें पहले पहल विश्वामित्रने ही गायत्री मन्त्र पाया था उसके जप करनेको प्रणालीको चलाया था।

गायत्री मन्त्रके प्रतिपाद्य अर्थात् गायत्री मन्त्र द्वारा वर्णित होनेवाले ही इसकी देवता हैं और इससे उन्होंको उपासना की जाती है। उपनिषद्के मतसे गायत्री रूप उपाधिधारी ब्रह्म ही उसके प्रतिपाद्य हैं। गायत्रीसे उन्होंकी उपासना होती है। सभी वैदिक उपासनाओंमें गायत्रीकी उपासना श्रेष्ठ है। (छान्दोग्य उप० ३।१२।१)

गायत्रीका अर्थ —

१ जो सवितृदेव हमारा कर्म (कर्मेन्द्रिय अथवा धर्मादि विषय बुद्धि) प्रेरण करते हैं—हम उन्हीं सर्वान्तर्यामी, जगत्स्रष्टा, परमेश्वर, सबके सेवनीय, अविद्या तथा तत् कार्यनाशक और परब्रह्मस्वरूप ज्योतिकी चिन्ता करते हैं।

२ हम सवितृदेवताकी अविद्या और तत् कार्यनाशक उस ज्योतिकी चिन्ता करते, जो हमारी कर्म वा धर्मादि-विषय बुद्धिको चलाते रहते हैं।

३ जो सविता सूर्यदेव हम लोगोंको समस्त कर्ममें प्रेरण किया करते, हम उन्हीं जगत्प्रसविता द्योतमान् सूर्यदेवके सबको प्रत्यक्ष, उपास्य तथा पापनाशक तेजोमण्डलके ध्यानमें रहते हैं।

४ अथवा भर्ग शब्दका अर्थ अन्न है। जो सविता हमारी धीशक्तिको प्रेरण करते, हमें उन्हीं सवितादेवके प्रसादसे प्रशंसनीय अन्नादिरूप फल मिलते हैं।

(ऋक् ३।६२।१० भाष्य, साम उत्तर ६।१०।१ भाष्य)

५ द्योतमान प्रेरक, अन्तर्यामी, विज्ञानानन्दस्वभाव हिरण्यगर्भ वा आदित्यरूप उपाधिधारी ब्रह्मके प्रार्थनीय; पाप तथा संसारबन्धननाशक तेजको चिन्ता करते हैं। वह सविता हमारी बुद्धि सत्कर्मानुष्ठानको प्रेरण करते हैं। (वाजसनेयसंहिता ३।३५ महीधर)

इसको छोड़ करके गायत्रीको और भी अनेक प्रकार व्याख्या सुन पड़ती है। कोई कालीपक्ष, कोई विष्णु और कोई शिवपक्षमें भी उसकी व्याख्या करता है।

गायत्री-उपासनाप्रणाली—मनुके मतानुसार गायत्री मन्त्रमें दीक्षित होनेसे उपासक पुनर्जन्म पाता है। इस जन्ममें आचार्य पिता और सावित्री ही माता है। गायत्री और तत्प्रतिपाद्य ब्रह्मकी अभेदचिन्तासे उपासना करनी पड़ती है। याज्ञवल्क्यके मतमें प्रणव ॐ और व्याहृति (भूर्भुवःस्वः) योग करके गायत्री उपासना करनी चाहिये। विष्णुधर्मोत्तरमें लिखा है कि पञ्चकर्मेन्द्रिय, पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चविषय, पञ्चभूत, मन, बुद्धि, आत्मा और प्रकृति २४ पदार्थोंको गायत्रीके चतुर्विंशति अक्षरोंमें यथाक्रम चिन्ता करते हैं। अग्नि, वायु, सूर्य, विद्युत्, यम, वरुण, बृहस्पति, पर्जन्य, इन्द्र, गन्धर्व, पूषा, मैत्रावरुण, त्वष्टा, वासव, मारुत, सोम, अङ्गिरा, विश्वदेव, अश्विनी कुमार, प्रजापति, सर्वदेव, रुद्र, ब्रह्मा और विष्णु यथाक्रम गायत्रीस्थ २४ अक्षरोंके अधिपति हैं। जपकालको इनकी चिन्ता करनी पड़ती है। प्रणवको ईश्वर भावना करते हैं।

काशीखण्डमें गायत्रीका विषय इस प्रकार लिखा है—अष्टादश विद्याओंमें मीमांसा प्रधान है। मीमांसासे तर्कशास्त्र, तर्कशास्त्रसे पुराण, पुराणसे धर्मशास्त्र और धर्मशास्त्रसे वेद बड़ा होता है। वेदोंमें फिर उपनिषद्

प्रधान है परन्तु गायत्री उपनिषद्से भी बहुत श्रेष्ठ हैं। गायत्रीसे अधिक और कोई मन्त्र नहीं। वह वेदमाता और ब्राह्मणप्रसवकारिणी हैं। जो व्यक्ति उनका गान करता, विघ्नबाधाओंसे बचता रहता है। इसीसे उन्हें गायत्री कहते हैं। सवितृदेव ही इस मन्त्रके वाच्य हैं। गायत्रीके ही प्रभावसे राजर्षि कौशिकने ब्रह्मर्षि पद और एक जगत्सृष्टि करनेकी शक्तिको पाया था। गायत्रीकी उपासना करनेसे सब कुछ हो सकता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर प्रभृति सभी गायत्रीस्वरूप हैं। वेद वा अनन्त-शास्त्रपाठसे नहीं, केवल त्रिसन्ध्याकी गायत्रीकी उपासना करनेसे ही ब्राह्मण बना जाता है। (कूर्मपुराण)

प्रायः सभी पुराणोपपुराणोंमें थोड़ी बहुत गायत्रीकी प्रशंसा है। याज्ञवल्क्यसंहितामें लिखा है, किसी समय परीक्षा करनेके लिये एक ओर सामवेद और दूसरी ओर गायत्रीको तुला पर चढ़ाया गया था। इससे साम-वेदकी अपेक्षा गायत्रीका ही भार अधिक निकला। जो गायत्री समझता, वही ब्राह्मण ठहरता है। गायत्री न जाननेवालेको वेदपारग होते भी शूद्र जैसा ही समझना चाहिये। त्रिसन्ध्याको सन्ध्यारूपिणी गायत्रीकी उपासना करना उचित है। व्यासके मतमें प्रातःको उसका नाम गायत्री, मध्याह्नको सावित्री और सायाह्नको सरस्वती है।

पद्मपुराणमें गायत्री ब्रह्माकी स्त्री जैसी वर्णित हुई हैं। उसका उपाख्यान इस प्रकार है—एक समय ब्रह्माने किसी यज्ञका अनुष्ठान किया। इन्होंने सावित्रीको यज्ञस्थानमें लानेके लिये उनके निकट इन्द्रको भेजा था। देवराजके उनके पास पहुंच करके ब्रह्माका आदेश बत-लाने पर सावित्रीने कहा—कि लक्ष्मी आदि सखियां उस समय उपस्थित न थीं, वह एकाकिनी कैसे जा सकतीं। आप विरिञ्चिसे कह देते कि सखियोंके मिलते ही वह उपस्थित हो जावेंगी। यही कह करके सावित्री गृहकार्यमें व्याप्त हुईं। देवराजने जा करके ब्रह्माको उक्त सूचना दी थी। ब्रह्माने पत्नीके व्यवहारसे नितान्त असन्तुष्ट हो करके इन्द्रको कहा कि—देवराज उनके लिये कोई दूसरी रमणी लाते, वह उसी समय यज्ञ कर-नेको प्रस्तुत थे। ब्रह्माके आदेशसे इन्द्र अन्वेषण करते करते धरातल पहुंचे। उसी समय ग्वालेकी कोई सुन्दरी कन्या दूध और दही बेचने जाती थी। देवराज उसको पकड़ लाये। महाविष्णुके आदेशसे ब्रह्माने उसके साथ गान्धर्व विवाह किया था। उन्हींका नाम गायत्री है। गायत्रीका वर्ण शुभ्र, दो हाथ, एक हाथमें कोई मृगशृङ्ग और दूसरेमें पद्म है। उनका ऊरु-द्वय अतिशय विशाल, परिधेय वसन रक्तवर्ण, वक्षस्थल पर मनोहर मुक्ताहार, कर्णमें कुण्डल और मस्तक पर नानाविध रत्नखचित मुकुट है। ब्राह्मण लोग पुष्करमें स्नान करके गायत्री जपने पर असत् प्रतिग्रहजनित पापसे विमुक्त हो सकते हैं। गायत्री जप करनेसे दश, शत वा सहस्र जन्मोंमें भी जो ब्रह्महत्यासदृश पाप हुए हैं— मिट जाते हैं। वह वेदमाता हैं और स्वर्ग, मर्त्य तथा पाताल त्रिलोकमें व्याप्त हो करके अवस्थिति करती हैं। ब्राह्मण गायत्रीग्रहणके पीछे सप्ताह पर्यन्त त्रिकालको उसकी उपासना न करनेसे पतित होते हैं। (पद्मपुराण)

सन्ध्याविधिमें कहा है कि प्रातःमें गायत्रीको रक्तवर्ण, हंसवाहिनी, द्विभुजा, यज्ञोपवीत तथा कमण्डलुधारिणी ब्राह्मणीसदृश चिन्ता करना चाहिये। मध्याह्नमें वह श्वेतवर्ण, चतुर्भुजा, शङ्ख, चक्र, गदा तथा पद्मधारिणी गरुड़वाहिनी विष्णुशक्ति जैसी और सायंकालको नील-वर्ण, वृषभवाहिनी त्रिशूल, तथा डमरुधारिणी, अर्धचन्द्र विभूषिता जैसी चिन्ता की जाती है।

गायत्रीतन्त्रमें बतलाया है कि न्यास व्यतीत गायत्री जप करनेसे कोई फल नहीं मिलता। उसीसे गायत्रीके पूर्वको न्यास करना पड़ता है। यतियोंको पञ्चमुद्रा और गृहियोंको केवल तत्त्वमुद्रामें न्यास करना चाहिये। पाद-से मस्तक पर्यन्त ७ बार "भूर्भुवः स्वः" अंश न्यास करना पड़ता है। फिर योगीको चित्त स्थिर करके पादाङ्गुष्ठमें तत्, अङ्गुलीके मध्य स, जङ्घामें वि, जानुके मध्यमें तु, मध्यदेशमें र्व, गुह्यमें रे, वृषणमें ण, कटिदेशमें यं, नाभिमें भ, उदरमें र्गो, स्तनद्वयके मध्य दे, हृदयमें व, कण्ठमें स्य, मुखमें धी, जानुमें म, नासिकाग्रमें हि, चक्षुमध्यमें धि, भ्रूमध्य यो, ललाटमें यो, मुखमें नः, दक्षिणमें प्र, पश्चिममें चो, उत्तरमें द, मस्तकमें यात् वर्णका न्यास करना चाहिये। न्यास पूरा हो जाने पर "तत्" वर्णद्वयका चम्पक कुसुम जैसा पीतवर्ण सको श्यामवर्ण

और वि वर्णके कपिलवर्ण चिन्ता करते हैं। इसी प्रकारसे तु इन्द्रनीलमणि जैसा, वे अग्नि तुल्य, ण निर्मल, यं विद्युत्—जैसा, भ कृष्णवर्ण, र्गो रक्तवर्ण, दे श्यामलवर्ण, व शुक्लवर्ण, स्य श्यामलवर्ण, धी कुन्दपुष्पसदृश, म शुक्लवर्ण, हि चन्द्रसदृश, धि पीतवर्ण, यो विद्युताभ, यो धूम्रवर्ण, न तप्तकाञ्चन जैसा, नकारके दोनों विन्दुओंमें ऊपरवाला रक्तवर्ण तथा नीचेवाला कृष्णवर्ण, प्र नीलवर्ण, च गोरोचना जैसा पीतवर्ण, द शुक्लवर्ण और यात् वर्णद्वयको ब्रह्ममन्दिर चिन्ता किया जाता है। इसी प्रकारसे गायत्रीके प्रत्येक वर्णकी चिन्ता कर लेनेपर गायत्रीकी चिन्ता करनी चाहिये। परमदेवता गायत्री मृणालके सूत-जैसी अतिशय सूक्ष्म, विद्युत्पुञ्जकी भांति प्रभायुक्त मूलाधार पद्ममें सुप्त भुजगीकी तरह अवस्थिति करती हैं ब्राह्मणोंको वैदिक गायत्री तीन और क्षत्रिय वैश्योंको २ प्रणव मिला करके जपनी चाहिये। गायत्रीतन्त्रके मतमें तान्त्रिक लोग इष्टमन्त्रकी गायत्री पुटित करके जपते हैं। जो गायत्री भिन्न जपकी पूजा करता, शतकोटि जपसे भी फललाभ कर नहीं सकता। प्राणायाम करके गायत्री जपनी पड़ती है। तन्त्रके मतानुसार सभी समयों और अवस्थाओंमें गायत्री जप किया जा सकता है, उसमें अशुचि वा शुचि जैसी कोई व्यवस्था नहीं। गायत्रीको त्रिसन्ध्यामें जपना चाहिये। जनन और मरणाशौचको भी गायत्री मन ही मन स्मरण कर सकते हैं, अन्य वैदिक कार्यकी तरह अशौचमें उसका निषेध नहीं है। ब्राह्मण गायत्रीको छोड़नेसे चण्डाल, व्याघ्र वा शूकर योनि पाता है।

गायत्रीतन्त्रका देखते कलिकालके ब्राह्मण शूद्र-जैसे आचार व्यवहार-सम्पन्न हो करके अशुद्ध बन गये हैं। अतएव गोत्रा मन्त्रको दीक्षा मिलने पर गायत्रीका प्रत्येक अक्षर १०८ बार जपना चाहिये, फिर प्रणवत्रय योग करके गायत्री जपनेसे फलप्राप्ति हुआ करती है। नहीं तो अरण्यरोदनकी भांति गायत्रीजपसे क्या फल मिल सकता है। (गायत्रीतन्त्र ६ । १० पटल) तन्त्रशास्त्रमें गायत्रीकी पूजा करनेका विधि पड़ती समान है। (तन्त्र देखो।) अपरापर जपप्रणालियां सन्ध्या विधि और ब्राह्मणसर्वस्व प्रभृति ग्रन्थोंमें विस्तृत भावसे लिखी हैं। तन्त्रके मतमें प्रायः समस्त देवताओंको एक एक गायत्री और उसके जपकी विस्तर फलश्रुति है।

जिस देवताके उद्देशसे बलि दिया जाता, पूजक उसी देवताकी गायत्री वध्य पशुके कर्णमें सुनाता है। यह एक प्रकार पशुदीक्षा है।

२ छन्दोविशेष। इसके प्रत्येक चरणमें ६ अक्षर रहते हैं। चरणमें लघुगुरुभेदसे यह ६४ प्रकारका होता है। उसमें तीन प्रकारका प्रधान है—तनुमध्या, शशिवदना और वसुमती। यह सब लौकिक हैं। लौकिक गायत्रीके ४ चरण होते हैं। परन्तु वेदमें ३ चरण ही लगते हैं। वेदमें ३ चरण होनेसे ही गायत्रीका नाम त्रिपदा है। लौकिक छन्दके ६ अक्षरवाले ४ चरणोंमें और वैदिक गायत्रीछन्दके ८ अक्षरवाले ३ चरणोंमें २४ होते हैं। लौकिक और वैदिक गायत्रीमें इतना ही प्रभेद है।

"अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम॥" (ऋक् १।१।१)

उपर्युक्त मन्त्र वैदिक गायत्रीछन्दका उदाहरण है। ताण्ड्यब्राह्मणके मतमें गायत्रीके अष्टाक्षर चरण होनेका कारण यह है कि साध्यनामक देवगण उपकरणसम्पन्न यज्ञके साथ स्वर्गलोक पहुंचे थे। वसु प्रभृति देवोंने प्रथम स्वर्गसाधन यज्ञके निमित्त चतुरक्षरविशिष्ट गायत्री आदि सभी छन्दोंको कहा था कि वह स्वर्गलोकसे सोम आहरण करने जाते। छन्दोंने भी उसको अङ्गीकार किया। सबसे पहले जगती छन्द भेजा गया। वह सोम रक्षकोंसे युद्ध करके अपने ३ अक्षर खो एकाक्षर हो लौट आया। फिर त्रिष्टुभ् चली, परन्तु वह भी अपना एक अक्षर खो करके ३ अक्षरविशिष्टा हो वापस हुई। अनन्तरको गायत्रीकी बारी आयी, वे जा करके कृशानु प्रभृति सोमरक्षकोंके पाससे जगती तथा त्रिष्टुभ्के चार अक्षर ले स्वयं अष्टाक्षरा बन लौट पड़ीं। ३ खदिर। ४ दुर्गा। ५ गङ्गा।

गायत्रीसार (सं० पु०) गायत्र्याः सारः। खदिर वृक्षका सार, खैरके पेड़का गूदा

गायत्री (सं० पु०) सोमलताविशेष।

गायन (सं० त्रि०) गायति गै शिल्पिनि ल्युट्।

१ सङ्गीतव्यवसायी, गानेका व्यवसाय करनेवाला, जो गीत गा कर अपनी जीविका निर्वाह करता हो।

"सोम गायनयोश्चान्नं तक्ष्णोवार्द्ध षिकस्य च।" (मनु ४।२१०)

२ कार्तिकेय। (भारत ३।१४६ अ०) स्त्रियां ङीप्। गायनी, गान करनेवाली। ३ गान।

गायन—मुसलमान जातिकी एक शाखा। साधारणतः जनसमाजमें इस जातिके मनुष्य गाना गाते और बाजा बजाते हैं, इसलिये इनका नाम गायन पड़ा। किन्तु मोल्लासे जाना जाता है कि जिस समय शाहजलालने श्रीहट्ट पर आक्रमण किया था, उस समय जिहाट गायन नामका एक मनुष्य उनके साथ था। वर्तमान गायन उन्हीं जिहाटके वंशधर प्रतीत होते हैं। किसीका मत है कि पहले ये 'मान्दार' जातिके थे। ये कृषिकार्य करके अपनी जीविकानिर्वाह करते हैं। पुरुषोंकी अनुपस्थिति पर स्त्रियां शस्यक्षेत्रकी रक्षा करतीं तथा गोमेषादि चराती हैं। ये स्थानीय बेदिया जातिसे कोई संसर्ग नहीं रखते। इनकी स्त्रियां बड़ी लज्जाशीला होती हैं और अन्तःपुरमें अकेली रहना पसन्द करती हैं।

गायत्रिका (सं० स्त्री०) हिमालयस्थ एक स्थान, हिमालय पहाड़ परका एक स्थान।

गायन्ती (सं० स्त्री०) गै-शतृ। १ गयपत्नी, गयकी स्त्री। (भागवत ५।१५।१४) २ वह स्त्री जो गान करती हो, गान करनेवाली स्त्री।

गायब (अ० वि०) लुप्त, अंतर्धान। (पु०) शतरंजमें एक प्रकारका खेल।

गायबाना (अ० क्रि०) १ गुप्तरीतिसे। २ अनुपस्थितिमें।

गायबगला (हिं० पु०) एक प्रकारका बगला। यह धानके खेतमें तथा पशुओंके समूहमें रहता है।

गायबांधा—बङ्गालमें रंगपुर जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २५° ३' से २५° ३९' उ० और देशा० ८९° १२' से ८९° ४२' पू० ब्रह्मपुत्र नदके दाहिने तीर पर अवस्थित है। भूपरिमाण २६२ वर्गमील है। यह विस्तृत समतल उपविभाग है जिसमें बहुतसे ह्रद मिलते हैं। यहांकी जनसंख्या लगभग ५२०१८४ होगी। जिलेका यह एक समृद्धशाली भाग है।

गायबांधा—बङ्गालमें रंगपुर जिलेके गायबांधा उपविभागका प्रधान सदर। यह अक्षा० २५° २१' उ० और देशा० ८९° ३४' पू० घाघट नदी पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १६३५ है। यहां एक छोटा कारागार है जिसमें सिर्फ १८ कैदी रक्खे जाते हैं।

गायरोन (हिं० पु०) गोरोचन।

गायिनी (सं० स्त्री०) १ वह स्त्री जो गान करती है। २ एकमात्रिकछन्द।

गार (सं० पु०) १ सामभेद। २ जातिभेद एक जातिका नाम। गारो जाति देखो।

गार (अ० पु०) १ गहरा, गड्ढा। २ गुफा कंदरा।

गारगोती—बम्बई प्रांतके भुधरगड़ उपविभागका सदर। यह कोल्हापुरसे बत्तीस मील दक्षिणमें अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १६२२ है। प्रति रविवारको यहां हाट लगती है, जिसमें हर एक जगहसे अन्न और साधारण वस्त्र बिकने आते हैं। यहां पुलिस सब इन्सपेक्टर और सब रजिष्ट्रारके आफिस हैं। इसके अलावा डाकघर और विद्यालय भी है।

गारत (अ० वि०) नष्ट, बरबाद।

गारद (अ० स्त्री०) १ सिपाहियोंका समूह जो एक अफसरके अधीन हो। २ मनुष्य वा किसी वस्तुकी रक्षाके लिये सिपाहियोंका झुंड।

गारना (हिं० क्रि०) दबा कर पानी निःसृत कर देना, निचोड़ना।

गारनेली (हिं० स्त्री०) जंगली फालसा। यह भारतके उत्तर और पूर्व तथा हिमालयकी तराईमें चार हजार फीटकी ऊंचाई तक पाई जाती है। इसका पेड़ बहुत छोटा होता है और इसके छिलके भूरे रंगके होते हैं। इसकी शाखाओंके रेशेसे रस्सियां बनायी जाती हैं। यह कार्त्तिक या अगहन मासमें फूलता और पूससे वैशाख तक फलता है। इसके फल खानेके काममें आते हैं।

गारा (हिं० पु०) १ मट्टी अथवा चूना सुर्खी आदिको जलमें मिलाकर बनाया हुआ लेप। इस लेपसे ईंटोंकी जुड़ाई होती है।

२ छिछली भूमि जिसमें जल अधिक दिन तक ठहर नहीं सकता।

गारा काह्नड़ा (हिं० पु०) [illegible] जातिका राग, जो संध्याके अतिरिक्त गाया जाता [illegible]

गारित (सं० क्ली०) गोर्यते गृ-[illegible]-इतन्। १ अन्न, अनाज। २ धान्यविशेष, एक प्रकारका धान।

री (हिं० स्त्री०) १ दुर्वचन, गाली। २ कलंकजनक बात।

गारुड़ (सं० क्ली०) गरुड़ाय उक्तं विष्णुना यद्वा तस्य इदम् अण्। १ गरुड़पुराण। २ विषहर मन्त्रविशेष, वह मन्त्र जिससे विष उतरता है। ३ गरुड़ाकृति व्यूहभेद, गरुड़के आकारकी व्यूहरचना।

"गारुडञ्च महाव्यूहं चक्रे शान्तनवस्तदा" (भारत ६।५६ अ०)

४ मरकतमणि, पन्ना।

"रागिमं गानामि। गारुडा नाम।" (रघु १।३५३)

५ स्वर्ण, सोना। गरुड़ो देवतास्य अण्। ६ अस्त्र-विशेष, एक हथियार। (रामा० ६।४।१३) (स्त्री०) ७ पातालगरुड़लता। ८ मन्त्रसे सर्पका विष झाड़नेवाला।

गारुड़ि (सं० पु०) आठ प्रकारके तालोंमेंसे एक।

गारुड़िक (सं० पु०) गारुड़ेन विषमन्त्रेण जीवति ठक्। १ विषवैद्य, सर्पका विष झाड़नेवाला।

"सर्पान् गारुड़िको यथा।" (हाविंशत्पुत्तलिका)

२ मन्त्रसे सर्प पकड़नेवाला, सँपेरा।

गारुत्मत (सं० क्ली०) गरुत्मान गरुड़ो देवतास्य अण्। १ गरुड़जीका अस्त्र। २ मरकतमणि, पन्ना। ३ नव-रत्नराज मृगाङ्क।

गारुत्मतपत्रिका (सं० स्त्री०) गारुत्मतमिव वर्णेन पत्रमस्य कप् अत इत्वम्। लताविशेष, एक प्रकारकी लता, गङ्गा-पत्री।

गारुलिया—बङ्गालमें २४ परगनेके अन्तर्गत वारोकपुर जिले-का एक शहर। यह अक्षा० २२° ४८' और देशा० ८८° २२' पू० हुगली नदीके पूर्व तीरपर अवस्थित है। लोक-संख्या प्रायः ७३०० है। यहां पाट और रुईका व्यव-साय अधिक होता है। शहरकी आय ६००० रुपया और कुल व्यय ८००० रु० है।

गारो (हिं० पु०) १ गर्व, अहङ्कार, अभिमान, घमंड। २ प्रतिष्ठा, सम्मान

गारो—आसामकी एक दक्षिणपश्चिमस्थ गिरिश्रेणी। यह अक्षा० २५° ८' तथा २६° १' उ० और देशा० ८९° ४९' एवं ९१° २' पू०के बीच पड़ती है। इसके उत्तर ग्वाल-पाड़ा जिला, पूर्व खासी और जयन्ती पहाड़, पश्चिम तथा दक्षिण बङ्गालका रङ्गपुर तथा मैमनसिंह जिला अव-स्थित है। क्षेत्रफल ३१४० वर्गमील है। इसमें तुरा और अरबेला पहाड़ बड़ा है। यह दोनों गिरि समान्तराल भावसे पूर्वपश्चिमको विस्तृत हैं। तुरा पर्वतमें २ उच्च चूड़ाएं हैं। उनकी उच्चता ४६५० फुट निकलेगी। इन दोनोंके बीच बीच उपत्यकाएं भी हैं। गारो पहाड़ जङ्गलसे प्रायः परिपूर्ण है। जङ्गलमें अच्छी अच्छी लकड़ी मिलती है। तुरा नामक चोटी पर चढ़नेसे ग्वाल-पाड़ा, मैमनसिंह तथा रङ्गपुर जिला और ब्रह्मपुत्रनदीकी गति ५० कोस तक देख पड़ती और हिमालय तक भी दृष्टि पहुंचती है। स्थान स्थान पर उपत्यकाके भीतरसे नदीकी बहता देख नयन मन चरितार्थ होता है। तुरा पर्वतका अपर चूड़ाको हिन्दू कैलास कहते हैं। परन्तु गारो और खासिया लोगों द्वारा, वही चिकमङ्गा, भीम-तुरा वा मानराई कही जाती है। अन्यान्य स्थानोंके पर्वत क्रमशः ढालू हैं, कहीं कहीं ऊंचे भी पड़ गये हैं। किन्तु कैलास नामक चूड़ाके पास पहाड़ एक बारगी ही ऊंचा उठ गया है। आकृति कुछ कुछ शूकरके पृष्ठ जैसी है। यह पार्श्ववर्ती सभी पहाड़ोंकी अपेक्षा ऊंचा है।

इस पर्वतके सभी स्थानोंमें पश्वादि चरते हुए घूम सकते हैं। इसमें दो प्रकाण्ड गह्वर देख पड़ते हैं। सोमेश्वरी और गणेश्वरी नदीके बीच जहां चूनेका कङ्कड़ मिलता, एक गुहा है। रायक नामक स्थानके निकट जो गह्वर पड़ता, सबसे बड़ा लगता है; उसका प्रवेश-स्थान प्रायः १२ हस्त उच्च और १० हस्त विस्तृत है। भीतरको प्रायः ६० हाथ जानेसे देख पड़ता किसी छोटी कुल्हड़ जैसी जगहसे एक नदी बहती है। वह इतनी छोटी है कि मनुष्य उसमें प्रवेश कर नहीं सकता। पहाड़के भीतर सम्भवतः कहीं न कहीं जलाशय वा ह्रद विद्यमान है। इस गुहामें चिमगादड़ रहा करते हैं।

गारो पर्वत पर उष्णप्रस्रवण नहीं। परन्तु लोनी मट्टी रहनेसे बोध होता, कभी वहां लवणाक्त प्रस्रवण विद्यमान रहे। उसीसे लवणाक्त मट्टी हो गयी है। यहां हस्ती और हरिणका दल आ करके विचरण करता है। गारो लोग उस जगहसे नमक नहीं निकालते। गारो पहाड़के बीच सोमेश्वरी, गणेश्वरी, नेताई और महादेव

नदीके उत्पत्तिस्थानमें भग्नपर्वत दृष्टिगोचर होता है। यहां स्वभावको शोभा अत्यन्त चमत्कृत है।

२ गारो पहाड़के ऊपरका एक जिला। अधिवासी उसको गारायाना या गवाना कहते हैं। यह आजकल आसाम चीफ कमिश्नरके अधीन है। इसका क्षेत्रफल ३१४० वर्गमील होगा। लोकसंख्या कोई डेढ़ लाख है। तुरा नगरमें अदालत लगती है। गारो जिलाके उत्तर ग्वालपाड़ा, पूर्व खसिया पहाड़ तथा महेशखाली नदी, दक्षिण मैमनसिंह और पश्चिमको ग्वालपाड़ा जिला है। पूर्व सीमा भी स्थिर हुए अभी बहुत दिन नहीं बीते।

यह जिला पहाड़ी है। इसकी कृष्णाई, काल्, भोगाई, नेताई और सोमेश्वरी कई नदियोंमें नौका गमनोपयोगी पानी रहता है। कृष्णाईनदी अरबेला पर्वतके मध्यस्थित मण्डलगिरि नामक ग्रामके निकटसे निकल उत्तराभिमुख रङ्गगरनगिरि, याया और सङ्गमा गांवोंको पार करके ग्वालपाड़ा जिलाके जोरा नामक ग्राममें जा गिरी है। तुरासे बारागन्दी नदी बह करके काल्नदीमें पतित होती है। गारो लोग उसको रङ्गकन कहते हैं। हरिगांवसे दामालगिरि तक काल् नदीमें नाव चलती है। परन्तु उसके जलमें बड़े बड़े वृक्ष रहनेसे नौकाओंके यातायातमें बड़ी ही असुविधा है। भोगाई नदी तुरानगरके दक्षिण-पूर्वमें उद्भूत हो दक्षिणको बहती हुई घनाई, लुगा, मोरापाड़ा, रेमराङ्गपाडा, मोवनोपाड़ा, चेलीपाड़ा, जमदङ्गगिरि, चन्द्रपाड़ा और बुदरपाड़ा गांव पार करके दाल् ग्राममें मैमनसिंहके नसीरावाद ग्राम पर ब्रह्मपुत्रनदीके पुरातन गर्भमें जा गिरी है। नोयरांगा नाम्नी उपनदी रेमराङ्गपाड़ा ग्राममें इसीमें आ मिली है नेमाई तुराकी दक्षिण दिक्से निकल वक्रगतिमें दक्षिणमुख चल रङ्गन, बुदूगिरी, गरोङ्गिश्री, फापा, दसिङ्गगाङ्गचङ्ग, अदिपरिरी तथा बोगाभोड़ागिरी ग्राम हो मैमनसिंहके सफरकोट या घाषगांवसे काङ्गस नदीमें जा करके मिलित हुई है। सोमेश्वरी नदीको गारो लोग सङ्गमाङ्ग कहते हैं। इन जिलेमें वही नदी सर्वापेक्षा वृहत् है। तुरा नगरके उत्तरांशमें उसकी उत्पत्ति है। फिर सोमेश्वरी उत्तरवाहिनी हो १५ कोस दक्षिण जा मैमनसिंहके सुसङ्ग परगनेमें गिरी है। नदीके निम्नप्रदेशमें बीच बीच पहाड़ रहनेसे नाव आनेजानेका सुभीता नहीं है। उच्चतर प्रदेशमें सिजू तक नौका आदि चलते हैं रङ्गकाई, रङ्गाई और चिबुक नामकी उपनदियां उसमें जा करके मिलित हुई हैं।

३ पर्वतवासी जाति। आजकल गारो पहाड़की जो सीमा निर्धारित हुई, ग्रामोंमें गारो भिन्न हाजङ्ग, कोच, राजवंशी, दालू, मेच और मुसलमान जाति भी बसी है। याया नामक ग्राममें राभा नामक एक जातीय लोग देख पड़ते हैं। गारोजाति उनसे स्वतन्त्र है।

गारोजातीय लोग देखनेमें कछारी और कोचोंकी एक मध्यवर्ती जाति जैसे समझ पड़ते हैं। कछारियोंकी अपेक्षा कोचजातिके साथ इनका सोसादृश्य अधिक है। प्रवाद है कि पहले समस्त गारो पहाड़ कोचोंके अधिकारमें था, पीछे गारोओंने प्रबल हो करके उनको उत्तरांशमें खदेर दिया। मिष्टर हजसनने अपने 'भारतके असभ्यजाति' नामक पुस्तकमें गारोओंको लक्ष्य करके लिखा है कि उस श्रेणीके लोग अपना निज जातीयत्व खो करके पूरे बङ्गाली बन गये हैं और अपनी निज भाषा भी भूल बैठे हैं। गारो पहाड़के बीचवाले राभा लोगोंकी भाषा अलग है। दालू जातीय दालू नामक ग्राममें वास करते हैं। पूर्वकालको उनकी भाषा निराली रही, परन्तु अब उसका चिह्नमात्र मिलता है। हाजङ्ग जातीय इन्हीं जैसे हैं।

गारो लोग दृढ़काय, नातिदीर्घ, कर्मठ, मांसल और कष्टसहिष्णु होते हैं। इनका हनुदेश उच्च, नासिका बड़ी, चक्षु ईषत् रक्ताभ, कर्ण दीर्घ, ओष्ठाधर मोटे, श्मश्रु क्षुद्र और गात्रवर्ण कृष्णाधिक्ययुक्त ताम्रवर्ण है। इनमें क्या स्त्री क्या पुरुष कोई सुश्री नहीं। यह भारवहनमें इतने पटु होते कि कृषि द्रव्यका जैसा बोझा उठा करके पहाड़के ऊपर आते जाते, दूसरा कोई वैसा करनेका साहस नहीं देखाते। इनकी दाढ़ी मूंछ इतनी अल्प आती कि किसीके मुख पर प्रायः नहीं जैसी दिखलाती है। आजकल स्वाधीन गारोओंमें कोई कोई दाढ़ी रखता; नहीं तो जिसके श्मश्रु देख पड़ता, लोम खींच खींच करके उखाड़ा करता है। यह मत्थे पर लम्बे लम्बे बाल रखते, उन्हें कभी भी काटा नहीं करते।

गारो लोग साधारणत: साहसी और सत्यवादी हैं। यह स्वभावत: शान्त हैं, परन्तु अल्प चेष्टामें ही चिढ़ जाते हैं।
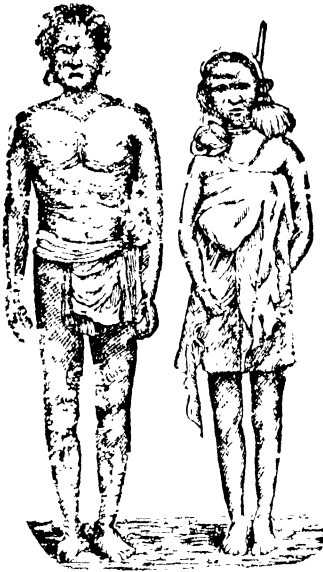
गारो पुरुष १॥ गज़ा धोती पहनते हैं। इस धोतीको वह अपने आप बुना करते हैं। धोती छोटी होते भी यह उसको ऐसे कौशलसे परिधान करते कि उससे बहुत अच्छी तरह सत्रमंसी बचती है। स्त्रियोंकी धोती पुरुषोंकी धोतीसे बड़ी होती है। वह कोई वक्षाच्छादन व्यवहार नहीं करतीं। अपेक्षाकृत धनशाली स्त्रीपुरुष एक प्रकार कम्बा बरतते हैं। गरीब आदमी किसी प्रकारके वृक्षकी छाल जलमें भिगो कूट पीट बड़ा करके धूपमें सुखा लेते और उसीको गात्र पर वस्त्रकी भांति लपेट देते हैं।

गारोजातीय स्त्रीपुरुष बहुत ही अलङ्कारप्रिय हैं।' पीतलकी माला पहनके लोग फूले नहीं समाते। दामरा गांवके गारोओंका खासियोंके साथ विवाह आदि होते हैं। इनकी स्त्रियोंके कानका बाला इतना भारी रहता कि लार ठड्डीतक लटक पड़ती है। पुरुष अपनी पोशाक कौड़ियां लगा करके बनाते हैं। खासी पहाड़के गारो कौड़ियोंके कई प्रकारके गहने तयार करते हैं। इनमें गणमान्य लोग कुहनी पर लोहे या पीतलका कड़ा पहनते हैं। कोई क्रीतदास उसे व्यवहार नहीं कर सकता, फिर भी किसीके वैसा चाहने पर रुपये दे कर गांवके मुखियेसे पूछना पड़ता है। पुरुषोंमें पीतलके पत्तरोंका मुकुट वह बांधता, जो युद्धमें अपने हाथसे शत्रुको मार डालता है। परन्तु अंगरेजोंके अधिकारमें एकबारगी ही वशीभूत हो जानेवाले लोगोंमें वह विलासिता प्रकाशक साधारण भूषण बन गया है। यह गोदना कभी नहीं गुदाते।

इनके अस्त्रशस्त्रोंमें बर्छा, तलवार और 'पांजी' (तूणीर-जैसी क्षुद्राकार तीक्ष्णमुख वंशशलाकाधार) प्रधान हैं। बांसका भाला साधारण हथियार है। इनकी तलवार दोधारी होती है। ढाल कई तरहकी बनाते हैं। यह छिप करके झाड़ोंसे शत्रु पर आक्रमण करनेमें बहुत पटु होते और तोप बन्दूक न रहते भी पत्थर आदि लुढ़का करके शत्रुको मारा करते हैं।

गारोजाति कलहप्रिय हैं। इनमें सदा परस्पर दङ्गा फसाद हुवा करता है। युद्धमें प्रवीण होते भी यह शिकार नहीं कर सकते और जाल फेंका करके पशु पक्षी पकड़नेमें कम होशियार देख पड़ते हैं। इनका प्रधान और साधारण खाद्य अन्न है। यह प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्याको तीन बार आहार करते हैं। अफीम, गांजा, चरस आदि नशा इनमें नहीं चलता। यह घरमें पशु कम पालते और खासियोंकी तरह गोदुग्धको गोमूत्र जैसा अखाद्य मानते हैं।

गारो लोग खेतीबारीसे ही जीविका निर्वाह करते हैं। फसल कट जाने पर बिना एक उत्सव भोज हुए नया अन्न कोई नहीं खाता। इनमें हल और कुदालका चलन कम है। यह जहां खेती करते, झोपड़ा डालके रहते हैं। खेत कट जाने पर उक्त कुटीरको तोड़फोड़ करके गांव जा अपने घरमें रहने लगते हैं।

केलेके पेड़को जला करके एक प्रकारका क्षार बनाते जिसको नमकके बदले काममें लाते हैं। धनी लोगोंके पास पीतलके बर्तन हैं। लोहार, कुमार या बढ़ईका काम कोई नहीं जानता। विवाहमें दहेज लेने देनेकी चाल कम है। विवाह हो जाने पर वर कन्याके साथ रह करके श्वशुर वंशमें मिल जाता है। इनका अपने वंशमें विवाह नहीं होता। बहुविवाह प्रचलित होते भी दोसे अधिक विवाह निषिद्ध हैं। व्यभिचार दोषमें अपराधीको अर्थदण्ड लगता है। पूर्वकालमें इस अपराधके दोषी स्त्री पुरुष फांसी पाते थे। इनमें किसी

आदरणी कन्याका विवाह करनेसे श्वशुरके मरने पर सासके साथ भी विवाह करना पड़ता और उनकी समस्त सम्पत्तिका अधिकार मिलता है। इसी प्रकार स्त्री परम्परासे उनका उत्तराधिकार ठहरता है। स्त्री ही घरकी सर्वमयी कर्त्री है।

किसीके मरने पर वह मृतदेहको उत्तमोत्तम वेश भूषासे सजा करके २।३ दिन रख छोड़ते और मृतके आत्मीय रातको रोते पीटते जाग करके शव रक्षा करते हैं। फिर तीसरे या ४थे दिनको लाश जलायी जाती है। भस्म राशिको बांसके बाड़ेसे घेर लेते और उस पर खाद्य तथा पानीय छोड़ देते हैं। इनको विश्वास है कि मृत व्यक्तिका आत्मा मरणके पीछे चिकमाङ्ग पर्वत (सुसङ्गके उत्तर) पर अवस्थान करता है। भोज, पान और आनन्द उत्सवमें श्राद्धकर्म समाप्त होता है। एक सप्ताह पीछे शवभस्मको मृतव्यक्तिके गृहद्वारमें गाड़ करके उस पर एक ध्वजा लगा देते हैं। गांवमें ऐसी असंख्य ध्वजाएं दिखलाती हैं।

यह 'सालजाङ्ग' नामक एक आदिदेवको स्वीकार करते हैं। सूर्य ही उनका आकार हैं। इनका विश्वास है कि शारीरिक मानसिक पीड़ा आदि कई अपदेवताओंके क्रोधसे उठ खड़े होते हैं। उनकी प्रीतिके लिये नानाविध उपहारादि देने पड़ते हैं। यह साधारणतः किसी वृहद्वृक्षतल, ग्रामके मध्य वा बाहरमें किसी स्तूप पर प्रदत्त होता है। कभी कभी अपदेवताओंका भय देखानेके लिये गांवकी राहमें पेड़की डालियां या पत्तीदार बांसोमें अण्डे लगा गाड़ देते हैं। वह भूतप्रेतको मानते और यह भी विश्वास करते, कोई कोई मनुष्य देह त्याग करके व्याघ्र प्रभृति हिंस्र पशुरूप भी बना सकता है। इनके पूजक 'कमाल' नानाविध लक्षणोंसे स्थिर करते, किस अपदेवताके क्रोधसे पीड़ा हुई और फिर उसके पूजा, बलि इत्यादिकी व्यवस्था बतलाते हैं।

इनमें जातिभेद और खाद्याखाद्यविचार नहीं है। पितृपुरुषके नाम वा श्रेणीके अनुसार इनका वंश विभक्त हुआ है।

१८७२-७३ ई०को जो गारोविद्रोह लगा, नीचेमें उसका संक्षिप्त विवरण लिखा है—

१८७० ई०को खासी पहाड़की पैमायश हुई। फिर मेजर गडविन अष्टेन नामक सेनानीके अधीन अमीन लोग गारो पर्वतमें जरीब लगानेको आगे बढ़ उत्तरपूर्व अञ्चलमें जा पहुंचे। सेमसनसिंह और ग्वालपाड़ेके बीचका यह अंश उस समयको वृटिश अधिकारमें रहा। उसके पीछे स्थानीय डिपटी कमिश्नर विलियमसनने मेजर अष्टेनके साथ साथ गारोओंके स्वाधीनदेशमें प्रवेश किया। बाङ्गनगिरि ग्राममें एक छोटा युद्ध होनेवाला था, परन्तु मेजर अष्टेनके कौशलसे रुक गया। सोमेश्वरी उपत्यका तक जरीब निर्वाद चलता रहा फिर १८७२ ई०को अमीन महिमेराम नामक पर्वत पर उपस्थित हुए। इसी स्थानमें फरामगिरि और रङ्गमागिरि नामक २ ग्राम हैं। उनमें एक तो स्वाधीन रहा, दूसरा कुछ कुछ सुसङ्गकी अधीनता मानता था। गारो भाषा न जाननेवाले दो कुली उक्त ग्रामोंको माइमनराम गिरि परिष्कार करनेके लिये मजदूर बुलाने भेजे गये। रामागिरि ग्राममें जब यह पहुंचे, वहां अविवाहितोंके आश्रममें पानभोजनका कोई उत्सव हो रहा था। दोनों कुलियोंको सम्भवतः आमोदमें बाधा डालनेसे मुखियाके कहने पर पकड़ करके मारडालनेका उद्योग किया। एक तो काट डाला गया, परन्तु दूसरा भाग खड़ा हुआ और तुरा जा करके अपने साथीके गारोओंके हाथ मरनेका संवाद दिया। कपतान लाटुनीके अधीन एक पुलिससैन्य पहुंचा था। उक्त दोनों ग्रामोंके लोग पराजित हुए। १८७२ ई० मई मासमें कपतान लाटुनीने फरामगिरि गांवके मुखिया और एक गारोको हत्याकारी जैसा पकड़ करके रखा था। इससे कई गांवोंके लोगोंने अंगरेजोंका अधिकृत दामाकचोगिरि नामक ग्राम आक्रमण किया। कपतान लाटुनीको अधिकृत ग्रामसे साहाय्य मिला था। दामाकचोगिरि आक्रान्त होनेके बाद कपतान साहब फरामगिरिपर चढ़ गये। उस समय सभी स्वाधीन ग्रामोंमें आतङ्क हुआ और क्रमशः वह गारो लोगोंमें फैल पड़ा। डिपटी कमिश्नर विलियमसनने और एक दल पुलिससैन्यके साथ ग्वालपाड़ेके सुपरिण्टेण्डेण्टको फरामगिरि भेजा था। इन्होंने बावईगिरि और काकवागिरि ग्रामोंको आक्रमण किया। गारो लोग दो बार युद्ध करके

भाग खड़े हुए। अंगरेजोंने कुछ लोगोंको बन्दी बनाया और दोनों गांवों पर अपना अधिकार जमाया।

१८६६ ई०को पहले पहल गारो पहाड़ अंगरेजोंके अधीन आया था। कप्तान विलियमसन डिपटो कमिश्नरको भांति तुरामें रहे। १८७२ ई०तक गारो शान्त थे। अमीनोंके साथ उक्त विवाद हो जानेसे बङ्गालके छोटे लाटने स्थिर किया कि गारो पर्वतमें और कोई ग्राम स्वाधीन रखना उचित नहीं। फौज भेजी गयी। कोचविहारके कमिश्नर और गारो पहाड़के डिपटी कमिश्नरको सैन्य परिचालनका भार मिला था। कपतान विलियमसन पुलिसके सिपाहोंको ले तङ्गवलगिरि, दिलमागिरि प्रभृति बड़े बड़े स्वाधीन ग्राम अधिकार करते हुए खासी पर्वतके मायोदुदान नगरसे पश्चिममुखको चल पड़े। आसाम विभागका एक दल सैन्य उसी शहरमें रह गया। कपतान विलियमसनके रङ्गरणगिरि ग्राम पहुंचने पर सुसङ्ग दुर्गापुरसे कप्तान डालो भी जा करके उनसे मिले थे। दोनों दल मिलकरके सोमेश्वरी नदीके तीर और अश्मानगिरि ग्राममें लड़नेको तैयार होने लगे। इससे पहले कप्तान डालोके साथ रङ्गरणगिरिमें गारोओंकी एक छोटी लड़ाई हुई थी, जिससे यह हार गये। उधर कप्तान डेविस निकरिदार ग्रामकी ओरसे आ रहे थे। बड़ी देरके बाद वह आ करके रङ्गरणगिरिमें मिलित हुये। क्रमशः एक ग्रामके बाद दूसरा मानने लगा, प्रायः युद्ध करना ही न पड़ा। बहुतसे ग्रामोंके सरदारोंने क्षति पूरणार्थ दण्ड दिया था। कप्तान डालो पश्चिम पहाड़ और कप्तान डेविस उत्तर पहाड़ देखने गये और ग्रामादि अधिकार करके शासनके लिये लश्कर उपाधि दे सरदार नियुक्त करने लगे। प्रति घरके हिसाबसे सब लोग कर देने पर बाध्य हुए। तदवधि गारो शान्त बने हुए हैं।

इनकी भाषा एक नहीं है। दिक्‌भेद और भाषाभेदसे चिकमङ्ग पर्वतके लोग तुरावालोंकी बोली समझनेमें असमर्थ हैं। यह स्वदेश छोड़ करके प्रायः कहीं नहीं जाते।

गारोदो—दाक्षिणात्यकी एक पर्वतगुहा। यह तेलगांव-दाभाडेसे १० मील दक्षिण और समतलक्षेत्रसे ४५०।५०० फुट ऊंची है। इस पर्वतमें ई० प्रथम शताब्दीके खोदित कई एक बौद्ध गुहामन्दिर देख पड़ते हैं। पहले गुहामन्दिर पर्वतके सर्वोच्च स्थानमें एक ऋजुशिखर बना हुआ है। इसका द्वार दक्षिण-पश्चिम मुखो है और सामनेका कुछ अंश टूट गया है। यहां चढ़नेका कोई सहज उपाय नहीं। द्वितीय गुहा इसकी अपेक्षा कुछ नीची है। उसके मण्डपका परिमाण २८ फुट×८ फुट ८ इञ्च×८ फुट×८ इञ्च है। पश्चात् भागमें ४ अन्तरालगृह दृष्ट होते हैं। प्रत्येक द्वारद्वयके मध्यमें ईंटोंके अठपहल दो खम्भे जलपात्र पर स्थापित हैं। स्तम्भके मस्तक पर सिंह, व्याघ्र किंवा हस्तीकी मूर्ति खुदी हुई हैं। एतद्भिन्न स्तम्भमस्तकके मध्य स्थानका कारुकार्य भी अति सुन्दर है। उसके पश्चात् भागमें निम्नदेश पर २ फुट चौड़ी और १ फुट सात इञ्च ऊंची एक एक प्रस्तरवेदी है। इससे ज्ञात होता कि काल पाकरके बौद्धकीर्ति लुप्त और ब्राह्मण्यधर्मको प्रबलता प्रसारित हुई। मन्दिर-वामभागके तृतीय कक्षमें एक लिङ्गमूर्ति विराजमान हैं। मन्दिरके मध्यमें शिववाहन वृषभमूर्ति और गुहाके बहिर्देशमें देवाइ ग्रामसे प्रदत्त आलोकस्तम्भ तथा तुलसीमञ्च है। इसी कक्षद्वारके पार्श्वस्थ स्तम्भ पर एक अस्पष्ट शिलाफलक उत्कीर्ण है। वह १४३८ ई०के श्रावण मास शुक्लपक्षको लिखित हुई।

द्वितीय गुहासे उत्तर-पश्चिम दिक्‌को कुछ दूर जाने पर एक शुष्क दीर्घिका मिलती है। उसको लांघ करके थोड़ा चलने पर और एक छोटी गुहा देख पड़ती है। इसके सामने बरामदेमें लकड़ीके ४ खम्भे पत्थरमें घर बना करके लगाये गये हैं। उसकी वामदिक्‌के शेष भागमें एक अन्तरालगृह और पीछेको किसी घरमें प्रवेशके लिये एक द्वार है। तत्पश्चात् पर्वत पर एक बृहत् कूप और उसीके निकट चतुर्थ गुहामन्दिर अवस्थित है। इस गुफाके सामनेकी दीवार अपरापर गुहाओंकी अपेक्षा ४।५ फुट चौड़ी है। घुसनेको लिये दो गोल दरवाजे लगे हुए हैं। भीतरी दालानके दाहने और बायें ४।४ घर हैं। उसमें वामदिक्‌का एक घर टूट पड़ा है। मन्दिरके पश्चात् भागमें २ अन्तरालगृह और उसके सामने गर्भगृह है। इस घरके बीचमें किसी मृतव्यक्तिके नाभि अस्थिका समाधि है। इसी समाधिस्थान पर छत तक ऊंचा खम्भा लगा था। अब उस स्तम्भको गिरा करके एक छोटी ग्रैव-

वेदी बनायी गयी हैं। इस गुहामन्दिरको वामदिक्से संलग्न पर्वतोपरि गुहागृह है। उसके सामने दीवारकी बायीं हद पर आन्ध्रराजाओंके सामयिक दाक्षिणदेशीय ब्राह्मी अक्षरोंमें खोदित शिलाफलक पर एक प्रशस्ति दृष्ट होती है।

इस गिरिश्रेणीका लांघ पश्चिमाभिमुख चलने पर जहां एक दूसरी पर्वत मिला, बौद्ध यतियोंके आवासकी ओर भी दो दुरारोह गुहामन्दिर हैं।

गार्ग (सं० पु०) गार्गस्य संघ अङ्को वा यञन्तात् अण्। १ गार्ग्य संघ। २ तदङ्क। (क्ली०) ३ गार्ग्य लक्षण। (त्रि०) ४ गार्ग्यसे आगत। (पु० स्त्री०) गार्ग्याः कुत्सितमपत्यम् णः। ५ गार्गीके कुत्सित पुत्र, गार्गीके नटखट लड़के।

गार्गक (सं० पु०-स्त्री०) गार्ग्याः कुत्सितापत्यादिकं वुञ् यलोपः। गार्गीकी कुत्सित सन्तान।

गार्गि—एक प्राचीन ज्योतिःशास्त्रकार।

गार्गिक (सं० पु०-स्त्री०) गार्ग्या अपत्यं ठक्। गार्ग्यास्त्वयाः कुत्सने च। पा ४।१।१४७। गार्गीकी कुत्सित सन्तान।

गार्गिका (सं० स्त्री०) गार्गस्य कर्म भावो वा गार्ग्य वुञ्। १ गार्गका धर्म। २ गार्गका कर्म।

"गार्गिकया श्लाघते गार्ग्यत्व नविकल्पते।" (सि० कौ०)

३ गार्गकी सन्तान।

गार्गी (सं० स्त्री०) गर्गस्य गोत्रापत्यं स्त्री यञ् ङीप्। १ गर्ग गोत्रमें उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री।

"अथ हैनं गार्गि वाचक्नवी पप्रच्छ।" (बृहदारण्यक उपनिषद्)

२ दुर्गा।

"ह्रीं श्रीं गार्गी च गान्धर्वी।" (हरिवंश १७८ अ०)

३ याज्ञवल्क्य ऋषिकी एक स्त्रीका नाम।

गार्गीपुत्र (सं० पु०) गार्ग्याः पुत्रः, ६-तत्। १ गार्गीके पुत्र, शुक्लयजुर्वेदोक्त एक मुनि। (शतपथब्राह्मण १४।९।४।३०)

गार्गीपुत्री (सं० पु० स्त्री०) गार्गी पुत्रस्य अपत्यं वा फिञ् वा कुक् च पक्षे इञ्। पुत्रान्तादन्यतरस्याम्। पा ४।१।१५९ गार्गी पुत्रका अपत्य, गार्गी पुत्रकी सन्तान।

गार्गीय (सं० त्रि०) गार्ग्यस्येदं। १ गार्ग्यसम्बन्धीय। २ गार्ग्यप्रोक्त, गार्गका कहा हुआ।

गार्गेय (सं० पु०-स्त्री०) गर्ग-ढञ्। गर्गगोत्रोत्पन्न, जो गर्गगोत्रमें उत्पन्न हुआ हो।

गार्ग्य (सं० पु० स्त्री०) गर्गस्य अपत्यं यञ्। १ गर्ग गोत्रमें उत्पन्न पुरुष वा स्त्री। २ एक प्राचीन वैयाकरण। इनके मतका उल्लेख पाणिनि और यास्कमें किया गया है। इन्होंने सामवेदके पदपाठकी रचना की है। ३ एक प्राचीन ज्योतिर्विद्। इनका बनाया हुआ गार्ग्यस्मृति नामका एक धर्म्मशास्त्र भी है।

गार्ग्य गोपालयज्वन्—एक वेदज्ञ पंडित। इन्होंने "वैदिकाभरण" नामक व्याख्यान रचना की है।

गार्जर (सं० क्ली०) गर्जरमूल।

गार्ड (अ० पु०) १ रक्षक, पहरा देनेवाला मनुष्य। २ रेलका प्रधान उत्तरदाता कर्मचारी। यह सदा पीछेकी कमरामें रहता है। इसीके आज्ञानुसार ड्राइभर गाड़ी चलाता और रोकता है। ३ निरीक्षक।

गार्डेन (अ० पु०) बाग, बगीचा।

गार्डेन-पार्टी (अं० स्त्री०) नगरके बाहर किसी बागका भोज।

गार्त्तक (सं० त्रि०) गर्तदेशे भवः। गर्त-वुञ्। धूमादिभ्यश्च। पा ४।२।१२१। गर्तदेशजात, जो गर्तदेशमें पैदा हुआ हो।

गार्त्समद (सं० पु०) गृत्समदस्यापत्यं अण्। शिवादिभ्योऽण्। पा ४।१।११२। १ गृत्समदके पुत्र। २ शुनकगोत्र के तीनप्रवरों के अन्तर्गत एक ऋषि।

"शुनकानां गृत्समदेति विप्रवरं वा भार्गवशौनहोत्रगार्त्समदेति।"

(आश्वलायनश्रौ० १२।१०।१३)

गार्दभ (सं० त्रि०) गर्दभस्येदं अण्। गर्दभसंबन्धीय, गदहेके सम्बन्धका।

"दीपनं गार्दभं मूत्रं क्रिमिवातकफापहम्।" (सुश्रुत १२५ अ०)

गार्दभरथिक (सं० त्रि०) गर्दभयुतं रथमर्हति ठक्। गदहासे युक्त रथगमनयोग्य, गदहेके रथ पर जाने योग्य।

गार्ध (सं० त्रि०) आद्यून, क्षुधित।

गार्धपक्ष (सं० पु०) गृध्रस्यायं अण् गार्ध्रः, गार्ध्रः पक्षो यस्य। गृध्रपक्षविशिष्ट वाण, गृध्रके पंखका वाण।

गार्धड़ (सं० क्ली०) गर्ध भावे घञ्, गर्ड एव स्वार्थे ष्यञ्। लोभ, अधिक तृष्णा।

गार्ध्र (सं० त्रि०) १ गृध्रसे उत्पन्न। २ लालची, लोभी। ३ वाण।

गार्ध्रपत्र (सं० पु०) गार्ध्रं गृध्रसंबन्धीयं पत्रं पक्षोऽस्य। गृध्रपक्षविशिष्ट। जिसमें गिद्धका पंख हो।

"गार्ध्रपत्राः शिलाशिताः।" (भारत ४।४१ अ)

गार्ध्रवाजित (सं० पु०) गार्ध्रवाजः कृतः गार्ध्रवाज करोत्यर्थे णिच् कर्मणि क्त। कृतगृध्रपक्षवाण, जिस वाणमें गृध्रका पंख दिया गया हो।

गार्ध्रवासस (सं० त्रि०) गार्ध्रः पक्षो वास इवास्य। गृध्रपक्षयुक्तवाण।

"शराणां गार्ध्रवाससाम।" (भारत ३।३० अ०)

गार्भ (सं० त्रि०) गर्भे गर्भशुद्धौ साधु अण्। १ गर्भशुद्धिके निमित्त जिसका अनुष्ठान किया जाय। २ गर्भसम्बन्धीय।

गार्भि—बंबई प्रदेशस्थके दांगसका एक क्षुद्र राज्य। भूपरिमाण ३०५ वर्गमील और जनसंख्या प्रायः ४६८८२ है। इसमें सिर्फ ५३ ग्राम लगते हैं। राज्यकी आमदनी ६५००) रुपयेकी है।

गार्भिक (सं० स्त्री०) गर्भ-ठक्। गर्भसम्बन्धीय।

गार्भिण (सं० क्लो०) गर्भिणीनां समूहः अण्। गर्भिणीसमूह, गर्भवती स्त्रीका झुंड।

गार्मुत (सं० त्रि०) गर्मुत इदम् अण्। १ गर्मुत् धान्यसम्बन्धीय।

"प्राजापत्यं गार्मुतं चरुं निर्वपेत्।" (तैत्ति० सं० २।३।४।७)

२ मधु, शहद।

गार्वा—बङ्गालमें पलामु जिलेके अन्तर्गत एक शहर। यह अक्षा० २४° १०' उ० और देशा० ८३° ५०' पू०के बीच दानरो नदी पर अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ३६१० है। लाख, धूप, कथ, रेशमके कोए, चमड़े, तेलहन, घी, रूई और लोहे प्रभृति चीजोंको रफतनी यहांसे होती है, और अनाज, तांबेके बरतन, कम्बल, रेशम, नमक, तम्बाकू, मसाले तथा बहुत तरहके औषध पदार्थ दूसरे दूसरे देशसे यहां आते हैं।

गार्ष्टेय (सं० पु० स्त्री०) गृष्टेरपत्यं पुमान् ठञ्। गृष्टि अर्थात् एक बार प्रसूत धेनुका अपत्य, वृषभ।

गार्हपत (सं० त्रि०) गृहपतेरिदं गृहपते र्भावो वा अश्वपत्यादित्वात् अण्। १ गृहपतिसम्बन्धीय। (क्लो०) गृहपतिका भाव, घरके स्वामीकी इज्जत और प्रतिष्ठा।

गार्हपत्य (सं० पु०) गृहपतिना यजमानेन नित्यं संयुक्तं संज्ञायां। १ यजमानरूप गृहपतिके सहित संयुक्त अग्निविशेष।

२ वह स्थान जहां यह पवित्र अग्नि रखी जाती है।

गार्हपत्यागार (सं० पु०) गार्हपत्यस्यागारः, ६-तत्०। गार्हपत्य अग्निका घर।

गार्हपत्याग्नि (सं० स्त्री०) ३ प्रकारकी अग्नियोंमें पहली और प्रधान अग्नि। पूर्व समय यज्ञोंमें पात्रतपन आदि कर्म इसी अग्निमें किये जाते थे। प्रत्येक गृहस्थको शास्त्रानुसार इस अग्निको रक्षा करनी चाहिये।

गार्हमेध (सं० पु०) गृहस्थाय अण् गार्हः मेधः कर्मधातु। गृहसम्बन्धीय यज्ञ। पंचयज्ञ आदि गृहस्थोंका मुख्यकर्म।

गार्हस्थ्य (सं० क्ली०) गृहस्थस्य कर्म गृहस्थ-यत्। १ गृहस्थ कर्त्तव्य पञ्च यज्ञादिकर्म, गृहस्थोंके मुख्य पांच काम (पु०) २ गृहस्थाश्रम।

"चतुर्णामाश्रमाणां हि गार्हस्थ्यं श्रेष्ठमाश्रमम्।" (रामायण २।१०६।२२)

गार्ह्य (सं० त्रि०) ग्राम्य, घराऊ।

गाल (सं० पु०) मदनवृक्ष।

गाल (हिं० पु०) गंड, कपोल।

गालगूल (हिं० पु०) व्यर्थबात, गपशप।

गालन (सं० क्लो०) गल चालने भावे ल्युट्। १ क्षारण, निःस्रावण। २ वस्त्रपूतकरण, कपड़ेसे छानना।

गालफल (सं० क्लो०) मदनफला।

गालमसूरी (सं० स्त्री०) एक तरहका पकवान वा मिठाई।

गालव (सं० पु०) गल-घञ्। १ लोध्रवृक्ष, लोधका पेड़। २ केन्दुकवृक्ष, तेन्दूका पेड़। ३ श्वेतलोध्र, सफेद लोद। ४ एक ऋषिका नाम। ये विश्वामित्रजीके पुत्र थे। ५ विश्वामित्रके एक शिष्य। इन्होंने भक्ति और सेवा सुश्रूषासे अपने गुरु विश्वामित्रको अत्यन्त संतुष्ट किया। विद्या समाप्त होने पर गालवने विश्वामित्रको गुरुदक्षिणा देनेके लिये बहुत अनुरोध किया; किन्तु विश्वामित्रने दक्षिणा मांगनेसे अस्वीकार किया। विश्वामित्रने इनके हठसे क्रोधित होकर आठ सौ ऐसे घोड़े मांगे जिनका वर्ण श्याम और एक कान हो। गुरुजीसे ऐसी आज्ञा पाकर वे शीघ्र ही गरुड़को प्रसन्न कर अपने साथ ले राजा ययातिके निकट पहुंचे ययातिके पास घोड़े तो नहीं थे किन्तु उन्होंने गालवको अपनी कन्या माधवी देकर कहा "गालवजी! जो दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देवें उन्हें इस कन्याको देकर एक

पुत्र उत्पादन करने दीजिये । इसी तरह आप गुरुदक्षिणा चुकानेमें समर्थ होंगे" गालव माधवीको लेकर हर्य्यश्व नृपके निकट उपस्थित हुए । प्रतिज्ञानुसार हर्य्यश्वने माधवीसे एक पुत्र उत्पन्न कर दो सौ श्यामकर्ण घोड़े गालवको दिये । इसी प्रकार दिवोदास और उशीनरने भी एक एक पुत्र जन्मा कर दो दो सौ घोड़े उन्हें प्रदान किये । शेष दो सौ घोड़ोंके लिये गालवको ऐसा कोई राजा न मिला जो उसकी इच्छाको पूरी कर दे । अन्तमें छह सौ घोड़े और माधवीको साथ ले कर गालवजीने विश्वामित्रके निकट लौट कर उन्हें सब हाल कह सुनाया । विश्वामित्रने उन छह सौ घोड़ोंको ले लिया और उस कन्यासे एक पुत्र उत्पन्न कर गालवको गुरुदक्षिणाऋणसे उद्धार किया । (भारत उ॰१०६-१०८ अ॰) ६ एक प्रसिद्ध वैयाकरण । इनका मत पाणिनिके अष्टाध्यायीमें उद्धृत किया है । ७ एक धर्मशास्त्रकार । हेमाद्रि और माधवाचार्यने गालवस्मृति उद्धृत किये हैं ।

गालवक्षेत्र—एक पुण्य क्षेत्र । गलगालि देखो ।

गालवि (सं॰ पु॰) गालवस्य अपत्यं इञ् । गालवके पुत्र प्राक्शृंगवत् । इन्होंने कुनीगर्गकी एक वृद्धा कन्यासे विवाह किया था । (भारत शल्य॰ ५१ अ॰)

गालवाद्य (सं॰ क्लो॰) मुख पर हाथ दे कर बम् बम् शब्द करना । यह गालवाद्य शिवजीको अतिशय प्रिय है ।

गाला (हिं॰ पु॰) १ धुनी हुई रूईका गोला, जो चरखेमें कातनेके लिये बनाया जाता है । २ जतु, लाह, लाख ।

गालि (सं॰ पु॰) गाल्यते विक्रियते मनो येन यद्वा गाल्यते गुणाभमेन गल-घञ् । दुर्वचन ।

गालित (सं॰ त्रि॰) गल णिच् कर्मणि क्त । द्रवीकृत, गलाया हुआ ।

"गालितस्य सुवर्णस्य षोडशांशेन सीसकम् ।" (रत्नावली)

गालिनी (सं॰ स्त्री॰) गालयति द्रवी करोति गल-णिच्-णिनि ङीष् । मुद्राविशेष । पूजाके समय जिस शङ्खमें अर्घ्य स्थापन करना हो उसके ऊपर यह मुद्रा प्रदर्शन करना चाहिये । बायें हाथके ऊपर दाहिना हाथ आधा खोल कर रखे और बायें हाथकी कनिष्ठाके साथ दाहिने हाथका अंगुष्ठ एवं दाहिने हाथकी कनिष्ठा अंगुलीके साथ बायें हाथके अंगुष्ठसे योग करें । बायें हाथकी तर्जनीके साथ दाहिने हाथकी तर्जनी और दोनों हाथोंकी मध्यम अङ्गुलियां सरल भावसे परस्पर मिला दें, इसीको गालिनीमुद्रा कहते हैं । (तन्त्रसार)

गालिब (अ॰ वि॰) विजयी, जीतनेवाला, श्रेष्ठ ।

गालिब—एक मुसलमान कवि । इनका असल नाम मिर्जा असाद उल्ला खाँ रहा । ये अलीबक्स खाँके पुत्र और फिरोजपुर तथा लोहारीके नबाब अहमदबक्स खाँके भ्रातुष्पुत्र थे । इन्होंने पारसी भाषामें एक "दिवान" एवं भारतवर्षके मोगल सम्राटोंके इतिहासकी रचना की है । १८६५ ई॰को दिल्ली नगरमें इनकी मृत्यु हुई ।

गालिम (अ॰ वि॰) प्रबल, दृढ़, प्रचंड ।

गालिमत् (सं॰ त्रि॰) गालिर्विद्यतेऽस्य गालि-मतुप् । गालियुक्त, आक्रोशयुक्त ।

"ददतु ददतु गालिं गालिमन्तो भवन्तः ।" (चिन्तामणि)

गाली (हिं॰ स्त्री॰) १ दुर्वचन, निंदा । २ कलंकसूचक आरोप ।

गालीगलौज (हिं॰ स्त्री॰) दुर्वचन, परस्पर गाली प्रदान ।

गाली गुफ्ता (फा॰ स्त्री॰) १ परस्पर गाली प्रदान । २ दुर्वचन, गाली ।

गालोड़न (सं॰ क्लो॰) गालोडित माचष्टे गालोडित णिच् इत भागस्य लोपे, गालोड़ि धातुः । १ उन्माद । २ रोग । ३ मूर्खत्व ।

गालोड़ित (सं॰ त्रि॰) गालोड़: सञ्जातोऽस्य गालोड़-इतच् । यद्वा गाव इन्द्रियाणि आलोड़िता विकलीकृता यस्य, बहुव्री॰ । १ उन्मादशील । २ रोगार्त्त । ३ मूर्ख ।

"उन्मादशीला रोगार्त्तो मूर्खो गालोड़ितः स्मृतः ।" (कलापटीका)

गालोड्य (सं॰ क्लो॰) गलोड्य-स्वार्थे-अण् । १ धान्यविशेष, एक धान । २ पद्मबीज, कमलगट्टा ।

गावित—दाक्षिणात्यके बेलगांव प्रदेशान्तर्गत सांपगांव ग्रामवासी धीवरजाति । प्रवाद है कि रत्नगिरि, वेनगुरला और तन्निकटवर्ती स्थानमें उनका आदि वास रहा, किन्तु इसकी कोई स्थिरता नहीं कितने दिनसे वहां रहते हैं । यह देखनेमें बिल्कुल कोलिजाति जैसे हैं । सभी लोग मराठी भाषामें बातचीत करते हैं । मछली पकड़ करके बेचना ही इनका घराऊ व्यवसाय है, परन्तु अब कुछ लोग खेतीबारी करके जीविका चलाने लगे हैं ।

ब्राह्मणोंके प्रति इनकी विशेष भक्ति है। इनका जन्म, मृत्यु, विवाह और अपरापर व्रतकर्म ब्राह्मण द्वारा ही सम्पन्न होता है। यह सभी देवदेवियोंका उपासना करते हैं। परन्तु उसमें वेतालकी पूजा सबसे बड़ी है। सब हिन्दू पर्वोंको पालन करते भी यह कोई उपवास नहीं मनाते और भूत, प्रेतात्माका आगमन शुभाशुभ चिह्नदर्शन प्रभृति इष्टानिष्टदायक घटनाओं पर विश्वास लाते हैं। किसीके भी मरने पर शवदाह नहीं करते।

इनमें विधवाविवाह प्रचलित है। जातीय एकता सूत्रमें सभी आबद्ध होते हैं।

गाव (फा० पु०) गाय, बैल।

गावकुशी (फा० स्त्री०) गोघात, गोवध।

गावकुस (फा० पु०) लगाम।

गावकोहान (फा० पु०) एक तरहका घोड़ा, जिसकी पीठ पर बैलकी तरह कूबड़ निकला हो। इस तरहके घोड़े पर चढ़ना दोष माना गया है।

गावखाना (फा० पु०) गोशाला।

गावखुर्द (फा० वि०) १ अन्तर्धान, गायब। २ नष्टभ्रष्ट, बरबाद।

गावजबान (फा० स्त्री०) फारस देशके गीलान प्रदेशमें उत्पन्न एक प्रकारकी बूटी। इसके पत्र हरे रंग लिये मोटे होते हैं और इनके ऊपर छोटे छोटे दाने निकले रहते हैं। इसके फूल लाल रंगके छोटे छोटे होते हैं। इस बूटीके सेवन करनेसे ज्वर तथा खांसी जाती रहती है।

गावजोरी (फा० स्त्री०) १ बलप्रदर्शन। २ हाथापाई, भिड़ंत।

गावट—बम्बई प्रदेशस्थ महीकाण्ठा विभागके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। इसका क्षेत्रफल १० वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः २४५४ है। कोलिवंशीय ठाकुर यहांके राजा हैं। राजाकी वार्षिक आमदनी प्रायः तीन हजार रु० हैं जिनमेंसे ४३) रु० ईडरके राजाको कर देना पड़ता है।

गावड़ (फा० स्त्री०) गला, गर्दन।

गावतकिया (फा० पु०) कमर लगाकर बैठनेका एक बड़ा तकिया।

गावदी (हिं० वि०) अबोध, जड़, नासमझ, बेवकूफ।

गावदुम (फा० वि०) १ जो बैलकी पूंछकी तरह पतला हो। २ चढ़ाव, उतार ढाल।

गावपछाड़ (हिं० स्त्री०) कुश्तीका एक पेच।

गावल (हिं० पु०) दलाल।

गावल्गणि (सं० पु०) धृतराष्ट्रके मन्त्री और साथी, सञ्जय।

गावली—दाक्षिणात्यके ग्वाला जाति। बीजापुर, मुहम्मदपुर, बाघलकोट, कलकल, कालादगी, तालीकोट और सिन्धगी प्रभृति स्थानोंमें यह रहते हैं। शोलापुरके निकटवर्ती पण्ढरपुरमें इनका आदिवास रहा। सम्भवतः गाय दुहनेसे ही इनको गावली कहा जाता है।

इनमें २ श्रेणियां होती हैं—नन्दगावली और खिल्लारी। वर कन्या दोनों एक पदवीके होनेसे विवाह नहीं होता।

यह बहुत गरीब होते और देखनेमें मराठा कुनबियों जैसे लगते हैं। मराठी पगड़ीके बदले इनमें कनाड़ियों जैसा रूमाल व्यवहृत होता है। यह गांवमें रहना नहीं चाहते और उसीसे मैदानमें झोपड़े बना अपने अपने गोमेषादिके साथ निवास किया करते हैं। इनमें सभी लोग प्रायः निरामिषभोजी हैं। सप्ताह वा पक्षान्तरको एकबार मात्र स्नान किया जाता है। कोई कोई प्रति रविवारको स्नानान्तमें गृहस्थित खंडोबाकी प्रतिमूर्ति पूजते और उसको दुग्ध आदि निवेदन करते हैं।

यह लोग स्वभावतः धीर, परिश्रमी, सच्चे और मितव्ययी होते हैं। गाय, भेड़ आदि पालन और दुग्ध, दधि, मक्खन प्रभृति विक्रय ही इनकी उपजीविका है। लिङ्गायत या नन्दगावली स्वजातिस्पृष्ट अन्न व्यतीत किसी दूसरे व्यक्तिका अन्न भोजन नहीं करते। परन्तु खिल्लारी सभीके हाथका खा लेते हैं। तुलजापुरके खण्डोबा और अम्बाबाई इनको प्रधान देवता है। यह पण्ढरपुर, जेजुरी, तुलजापुर और सिङ्गनापुरको तीर्थयात्रा करते हैं।

ब्राह्मणों पर इनकी अचला भक्ति है। पण्ढरपुरके निकटवर्ती मादलगावमें इनके गुरु रहते और सब लोग उनको चन्द्रशेखराप्पा कहते हैं। वह अविवाहित होते और मृत्युके पूर्व एक शिष्य रख लेते हैं। गुरुके मरने पर शिष्यको चन्द्रशेखराप्पा पद मिलता और चिरजीवन अविवाहित रहना पड़ता है।

यह भविष्यदवाणीमें विश्वास करते और उसीसे प्राय अपनी अदृष्टपरीक्षाके लिये दैवज्ञ अथवा सामुद्रिक शास्त्राध्यायीके निकट पहुंचते हैं। चुड़ैल या भूत चढ़ने पर इन्हें विश्वास नहीं है।

यह ५ दिन जन्माशौच मानते हैं। १२ वें दिनको ५ सधवा स्त्रियां बुलायी जाती हैं। वह सन्तानको गोद में ले करके नामकरण करती हैं। नौसे १२ मासके बीच शिशुका मातुल जा करके भागिनेयका मस्तक मुण्डन करता है। इनमें बाल्यविवाह, विधवाविवाह और बहुविवाह प्रचलित है। लिङ्गायत गावली मृतदेह जमीन् में गाड़ देते हैं। द्वादश दिवसको अशौच दूर होता है। यह लोग प्रति वर्ष वैशाख मासमें मृतके उद्देश श्राद्ध करते हैं।

मराठी गावलियोंमें बड़ी जातीय एकता है। यह सभी मराठी बोलते हैं।

गावली (हिं० स्त्री०) दखाली।

गावल्गणि (सं० पु०) गवल्गणस्यापत्यं गवल्गण-इञ्। गवल्गणके पुत्र सञ्जय।

'गावल्गणे कु मस्ताते वृत्तो हीनस्य नेत्रयोः॥' (भागवत १।१३।३२)

गावसुम्मा (हिं० पु०) फटे हुए खुरका घोड़ा, वह घोड़ा जिसके खुर फटे हों।

गाविष्ठिर (सं० पु०-स्त्री०) गविष्ठिरस्यापत्यं गविष्ठिर अञ्। गविष्ठिर ऋषिका अपत्य, गविष्ठिरकी सन्तान

गाविष्ठिरायण (सं० पु०-स्त्री०) गाविष्ठिरस्य युवापत्यं गविष्ठिर-फक्। गविष्ठिर ऋषिकी युवा सन्तान।

गावीधुक (सं० त्रि०) गवीधुकाया विकारः गवीधुका-अण्। गवीधुकाका विकार, इसके द्वारा प्रस्तुत चरु प्रभृति।

"अष्टाकपालं निर्वपति रौद्रं गावीधुकं चरुमेतं।"

(तैत्तिरीयसंहिता १।८।७।१)

गावेधुक (सं० त्रि०) गवेधुकाया विकारः गवेधुका-अण्। (बिल्वादिभ्योऽण्। पा ४।३।१३६।) गवेधुका द्वारा प्रस्तुत चरु प्रभृति। 'रौद्रं गावेधुकं चरुं निर्वपति।' (शतपथ ब्रा० ५।३।३।७)

गाम (हिं० पु०) दुःख, संकट, आपत्ति।

गासिया (हिं० पु०) जीनपोश।

गाह (सं० पु०) गह कर्मणि घञ्। १ गहन, दुर्गम।

"मध्ये गाहाद्धिव चानिरधुष्वत।" (ऋक् ८।११०।८)

'गाहात् गहनात्।' (सायण)

२ अवगाहन करनेवाला मनुष्य।

गाहक (सं० त्रि०) गाह-वुण्। १ अवगाहन करनेवाला। २ जो अच्छा गाना गा सकता हो।

गाहक (हिं० पु०) १ लेनेवाला, खरीदनेवाला, खरीदार। २ कदर करनेवाला, चाहनेवाला।

गाहकी (हिं० स्त्री०) १ बिक्री। २ गाहक।

गाहन (सं० क्ली०) गाह-ल्युट्। विलोड़न, स्नान, गोता लगानेकी क्रिया।

गाहा (हिं० स्त्री०) १ कथा, वर्णन, चरित्र, वृत्तान्त। २ आर्या छन्दका एक नाम।

गाहनीय (सं० त्रि०) विलोड़नीय। जिसको स्नान करना उचित है।

गाहित (सं० त्रि०) गाह-क्त। १ आलोड़ित, मथा या मला हुआ। २ अवगाहित, भीतरमें गया हुआ। ३ कम्पित, काँपता हुआ।

गाहित्र (सं० त्रि०) गाह-तृच। १ अवगाहनकर्त्ता। २ आलोड़न करनेवाला, मथनेवाला।

गाही (हिं० स्त्री०) पाँच चीजोंका समूह।

गाहू (हिं० स्त्री०) उपगीति छन्दका नाम।

गिंजना (हिं० क्रि०) किसी पदार्थका हाथ लगने या उलटे पुलटे जानेके कारण खराब हो जाना।

गिंजाई (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका कीड़ा जो प्रायः वर्षाकालमें देखा जाता है। इसकी लम्बाई लगभग दोसे चार अङ्गुल तककी होती है। एक ही स्थान पर झुंडके झुंड पाये जाते हैं। इसके बहुतसे पैर होते हैं, और शरीरमें विष रहता है। यदि कोई पशु इसे खा जाय तो वह शीघ्र ही मर जाता है। यह कीड़ा वर्षा-ऋतुके आरम्भमें जन्म लेता और हस्तो नक्षत्रमें मर जाता है।

गिंड़नी (हिं० स्त्री०) एक तरहका शाक। इसकी पत्तियां दो अंगुल परिमाणकी लम्बी और जौ परिमाणकी चौड़ी होती है। इसकी गाँठों पर श्वेत फूलोंके गुच्छे लगते हैं।

गिंदर (हिं० पु०) फसलको नुकसान पहुंचानेवाला एक तरहका कीड़ा।

गिंदौरिया—युक्त प्रदेशके बनियोंकी एक शाखा। गिंदौरा बेचनेसे ही उनका यह नाम रखा गया है। मेरठमें गिंदौरिया बहुत हैं।

गिंदौरा (हिं० पु०) चीनीप्रभेद, चीनीका एक भेद। यह मोटी रोटीके आकारमें गलाकर ढाला जाता है। इस तरहकी चीनीकी रोटीका प्रायः विवाहादिमें व्यवहार होता है।

गिउ (हिं० पु०) गला गरदन

गिचपिच (हिं० वि०) अस्पष्ट, एकमें मिला जुला।

गिचगिचिया (हिं० स्त्री०) कचपचिया देखो।

गिचिरपिचिर (हिं० वि०) गिचपिच देखो।

गिजगिजा (हिं० वि०) अस्पष्ट, गीला।

गिजा (अ० स्त्री०) खाद्यवस्तु, भोजन, खानेकी चीज।

गिजाली (मौलाना) एक राजकवि। इन्होंने अपने एक कसीदेमें लिखा है कि मेरा जन्म १५२४ ई०को हुवा। पहले यह अपनी जन्मभूमि मशहदसे दाक्षिणात्य आये, परन्तु वहां आशा पूरी न होने पर जौनपुर चले गये और जौनपुरके सूबेदार खाँ जमां अलीकुली खाँके नीचे कई वर्ष कार्य करते रहे। उसी समय इन्होंने 'नक्शबदीअ' कविता लिखी थी। उसीके लिये पृष्ठपोषक नवाबने इन्हें प्रति शेर (दोहा) एक अशरफी इनाम दी। १५६८ ई०को अकबर बादशाहके साथ लड़ाईमें खाँ जमांनके मारे जाने पर यह सम्राट्के हाथों पड़ गये। बादशाह अकबरने इन्हें नौकर रखा और 'मालिक-उश शुआरा' (कविराज) उपाधि प्रदान किया। भारतमें इन्हें ही पहले पहल वह उपाधि मिला था। यह अकबरके साथ गुजरात जीतने गये और वहीं १५७२ ई० ५ दिसम्बरको रोगग्रस्त हो चल बसे। अहमदाबादके सरकीज नामक स्थानमें इन्हें गाड़ा गया। इन्होंने एक दीवान् और किताब असरार', 'रशहात्-उल्-हयात' और 'मिरत-उल-कायनात' नामकी ३ मसनवियां लिखी हैं।

गिजियानी—अफगानस्थानके रहनेवाले 'कथाई' पठानोंकी एक शाखा। ई० ५वीं शताब्दीके शेष भागमें तैमूरके समयकी भी इनका कोई निर्दिष्ट वासस्थान न था। उलग बेगके राजत्वकालमें इन्होंने उनकी बड़ा साहाय्य दिया, परन्तु उन्होंने कृत-उपकार भूल विश्वासघातकता पूर्वक काबुलसे इनको निकाल बाहर किया। पीछेको यह पेशावर उपत्यकामें आ करके बस गये। आजकल काबुल और स्वात नदीकी मध्यवर्ती उर्वरा भूमिमें इनका निवास है।

गिञ्चिहल्ली—दाक्षिणात्यके धारवाड़ जिलाका एक मफ-ग्राम। यह हानगल नगरसे २ मील दक्षिण अवस्थित है। यहां वासवेश्वरका एक मन्दिर है। इसी मन्दिरके मध्यमें वासवमूर्तिके दोनों पार्श्व पर ११०३ ई०की उत्कीर्ण २ शिलालिपियां लगी हैं।

गिञ्जी—मन्द्राज प्रान्तीय दक्षिण अर्काट जिलेके तिण्डि-वनम् तालुकाका एक पर्वतमय भूभाग और गिरिदुर्ग। यह अक्षा० १२° १५' उ० और देशा० ७९° २५' पू०में मन्द्राज नगरसे दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५२४ है। पहाड़ी किला बहुत पुराना है। उसी पर बहुकालसे यह स्थान इतिहासप्रसिद्ध है। कुछ दिन पहले पर्वतके निम्नदेशमें अल्पसंख्यक गृह व्यतीत कोई भी समृद्धिशाली ग्राम न रहा। गवर्नमेण्टने यह ग्राम स्थिर रखनेको निकटवर्ती बगाया ग्रामको भी गिञ्जी नामसे अभिहित किया है। दुर्गकी तीन ओर राजगिरि, कृष्णगिरि और चन्द्रायण दुर्ग नामक—३ पर्वत हैं। यह तीनों पहाड़ परस्पर सुदृढ़ प्राचीर द्वारा संलग्न हैं। सुतरां कोई शत्रु इस किलेको सहजमें ही दखल कर नहीं सकता। पर्वत और प्राचीरको ले करके दुर्गका परिधि ७ मीलसे अधिक पड़ता है। इसका कोई प्रकृत प्रमाण नहीं मिलता, कब किसने उसे बनाया था। कोई कहता कि चोल राजाओंके समयको वह सब प्रथम स्थापित हुवा। फिर किसीके मतमें १४४२ ई०को तञ्जोर-शासनकर्ता विजयरङ्गनायकके पुत्र उसे बनवाने लगे थे। किन्तु विजयनगरराजकर्तृक १३८३ ई०को प्रदत्त एक प्रशस्तिमें लिखा है कि दुर्गसे ही उस प्रदेशका नाम गिञ्जी पड़ा। अतएव कोई सन्देह नहीं कि उसकी पहलेसे ही उसका निर्माणकार्य सम्पूर्ण हो गया था। इस किलेमें कल्याणमहल, जिमखाना, शस्यागार, ईद-गाह, बारिक, मण्डप और एक ८ मञ्जिला गुम्बज है। इस गुम्बजके पहले ६ खण्डोंमें ८ फुट चौकोर उसकी चारों किनारे बरामदा और प्रत्येक तलसे ऊपर चढ़नेकी

एक एक जोना लगा है। ७वीं मञ्जिलका बरामदा टूट गया है। ऊपरके तलका घर सबसे छोटा है। ६ठे खण्डसे मट्टीका एक नल प्राचीरके नीचे होता हुआ ६०० गज तक जा करके एक तालाबमें पहुंचा है। राजगिरिमें दुर्गसे बाहर स्वच्छसलिला तथा चिरवाही २ प्रस्रवण हैं। उनका पानी सभी स्थानीय लोग पीते हैं। राजगिरि और चन्द्रायण दुर्गके बीचमें दोनों पुष्करिणियों और दुर्गका पानी बहानेके लिये एक नहर खुदी है। राजगिरि पर एक बड़ी तोप और १५ फुट चतुरस्र तथा ५ इञ्च मोटा कोई ग्रेनाइट पत्थर पड़ा है। तोप ऐसे धातुकी बनी हुई है कि उसमें कभी भी मोर्चा नहीं लगता। इसके मोहरे भी जड़में ७५६० संख्या खोदित है। स्थानीय लोग बतलाते हैं कि यहां पहले राजप्रासाद रहा और राजा उसी पत्थर पर खड़े हो करके नहाते थे। पत्थरके पास एक वृहत् कूप भी है। प्रवाद है कि राजा कैदियोंको उसमें गिरा करके अनाहार मार डालते थे। किलेके अर्काटी दरवाजेमें पत्थर पर एक शिलालिपि खुदी हुई है।

बहुत दिन यह दुर्ग विजयनगरके अधीन रहा, पीछेसे महिसुरके नायकोंने अधिकार किया। १५६४ ई०को तालीकोटकी लड़ाईमें गिञ्जी किला मुसलमानोंके हाथ लगा, १६३८ ई०को विजयपुरके सेनानायकने शिवजीके पिता शाहजीकी सहायतासे इसको उनसे छीना था, किन्तु १६७७ ई०को शिवजीने अपने आप अधिकार कर लिया। उसके पीछे २१ वर्ष यह महाराष्ट्र-नेताके कर्तृत्वाधीन रहा। दिल्लीके बादशाह औरङ्गजेबने महाराष्ट्र बल उच्छेद करनेके लिये जुलफिकार खाँको भेजा था। ८ वत्सर क्रमान्वयसे युद्धके पीछे १६९८ ई०को मुगल सैन्यने गिञ्जी दुर्ग अधिकार किया। १७५० ई०को फरासीसी सैनिक मार्शल बूसीने इस पर धावा मारा था। ११ वर्ष फरासीसियोंके अधीन रहने पीछे १७६१ ई०को ५ सप्ताह तक घेरा डाल करके कप्तान ष्टीफेन स्मिथने इसे दखल किया। १७८० ई०को यह फिर हैदरअलीके हस्तगत हुआ। मुसलमानी हमलेके समयको इसके देसिंहराज (?) राजा तेजसिंह उनसे खूब लड़े थे। इनके उस वीरत्वका गीत लोग आज तक गाते हैं। राजाके मरने पर तदीय महिषी सहमृता हुई। रणविजयी नवाब शाहादत उल्ला खाँने सतीकी वैसी स्वामिभक्तिसे सन्तुष्ट हो करके उनके स्मरणार्थ अर्काटके निकट उन्हींके नाम पर 'रानीपत्त' नामक एक नगर स्थापन किया।

राजगिरिस्थ मन्दिरादिके कारुकार्यमय स्तम्भ फरासीसी पुंदीचेरी उठा करके ले गये हैं। वहां जाने पर आज भी इनका शिल्पनैपुण्य दृष्टिगोचर होता है।

गिञ्जीसे १ मील उत्तर पहाड़के 'तिरुनाथ कुण्ड' नामक स्थानमें पर्वतगात्र पर २४ जैन तीर्थङ्करोंकी मूर्तियां खुदी हैं। यहांसे १॥ मील उत्तर-पश्चिमको पर्वतोपरि रङ्गासीसह नामक कोई विष्णुमन्दिर है। लोग इन देवताकी बड़ी भक्ति करते हैं। यह मन्दिर पहाड़ तोड़ करके बनाया गया है। इससे उत्तरको किसी दूसरे भग्न मन्दिरके बहुतसे खोदित शिलाफलक हैं।

गिटकिरी (हिं॰ स्त्री॰) गिटकिरी देखो। तान लेनेमें स्वरका कांपना। यह अच्छा समझा जाता है।

गिटकौरी (हिं॰ स्त्री॰) कंकड़ी।

गिटपिट (हिं॰ स्त्री॰) निरर्थक शब्द।

गिट्टक (हिं॰ स्त्री॰) १ कंकर जो चिलमके नीचे छेदके ऊपर रखा जाता है। (पु॰) २ एक कंपमें निकलनेवाला गिटकिरी लेनेका स्वर या तानका छोटा भाग।

गिट्टा (हिं॰ पु॰) ककड़।

गिट्टी (हिं॰ पु॰) १ पत्थरके छोटे टुकड़े, जो छत्त आदि पर फैलाकर कूटे जाते हैं। २ मट्टी बरतनके टूटे हुए खंड। ३ चिलमको गिट्टक। ४ तागेकी रील।

गिठुआ (हिं॰ पु॰) जुलाईका करघा।

गिठुरा (हिं॰ पु॰) गेठुरा देखो।

गिड़गड़ाना (हिं॰ क्रि॰) अधिक नम्रतासे प्रार्थना करना, बहुत अरजूसे विनती करना।

गिड़गिड़ाहट (हिं॰ स्त्री॰) १ प्रार्थना, विनती। २ गिड़गिड़ानेका भाव।

गिड़राज (हिं॰ पु॰) सूर्य।

गिड़वा—एक नदी। यह हिमालयके एक गह्वरसे निकल नेपाल और अवधके बीचसे कौड़ियाला नदीमें आ करके

गिरो है। उत्पत्ति स्थान पर जल अत्यन्त स्वच्छ रहनेसे इसको 'शीशापानी' कहते हैं। पहले यह एक स्रोतमात्र रही, किन्तु अब प्रकृत नदीका आकार धारण किया है। इसके गर्भमें खण्ड खण्ड पत्थर पड़े हैं। इसकी गम्भीरता ३।४ फुटसे अधिक नहीं, और प्रस्थमें प्राय: ४०० गज होगी। परन्तु स्रोतकी गति इतनी वेगवती है कि दो एक स्थानोंको छोड़ करके हाथी भी पार हो नहीं सकता। इसकी तीरभूमि शालवृक्षसे परिपूर्ण है, बीच बीच पहाड़की घाटीसे छोटे छोटे स्रोत निकल पड़े हैं। इनके मध्य द्वीप-जैसी वनमय चरभूमि है। इसी नदीमें सरयू और सारदाका जल मिलनेसे घर्घरा बनी है। कौड़ियाला हिमालयके शीशापानी स्थानसे फटती और थोड़ी दूर आगे चल करके दो भागोंमें बंट जाती है। पश्चिम शाखाका कौड़ियाला और पूर्व शाखाका नाम गिड़वा है। ऊपरको यह जोरसे बहती है। भनीरामें नावें चलती हैं। इस नदीकी राह नेपालसे अनाज, लकड़ी, अदरक, मिर्च और घी आता है। बहरायचमें भर्थापुरके नीचे गिड़वा कौड़ियालासे मिल जाती है।

गिड्डा (हिं० वि०) नाटा, ठेंगना।

गिद (सं० पु०) रथपालकके एक देवताका नाम।

"गिदेष ते रथ एव चार्मश्विना" (ताण्ड्यब्रा० १।७।७)

"गिदोनामरथपालकः कश्चिद् देवविशेषः" (भाष्य)

गिद्दा (हिं० पु०) स्त्रियोंके गानेका एक तरहका गीत, नकटा।

गिद्ध (हिं० पु०) १ मांस खानेवाला एक तरहका पक्षी जो प्राय: दो हाथ लम्बा होता है। यह बकरियों तथा मुरगियोंको उठा कर आकाशकी ओर ले भागता और किसी वृक्ष पर बैठ कर खाने लगता है। यह मृत जीवका भी मांस खाता है। इसका रंग मटमैला और पङ्ख बड़े बड़े होते हैं। किसी मनुष्यके शरीर पर मड़राना अथवा मकान पर बैठना इसका अशुभ समझा जाता है। २ एक तरहका दीर्घ कनकौवा या पतंग। ३ छप्पय छंदका ५२वां भेद।

गिद्धराज (हिं० पु०) जटायु।

गिद्धौर—विहार प्रान्तीय मुङ्गेर जिलेके गिद्धौर राजस्व विभागका एक नगर। यह अक्षा० २४° ५१' उ० और देशा० ८६° १२' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: १७८० है। पूर्वकालको यह नगर खूब समृद्धिशाली और बहुजनाकीर्ण था, परन्तु अब क्रमश: हीन हो रहा है। नगरके निकट किसी बड़े पुराने किलेका भग्नावशेष है दुर्गका प्राचीर और घर पत्थरके बड़े बड़े टुकड़ोंसे निर्मित हुवा है। इसमें किसी किस्मका दूसरा माल असबाब देख नहीं पड़ता। गढ़के मध्य प्रवेशके ४ पथ हैं। यथाक्रममें दक्षिण, पश्चिम और उत्तरका द्वार हस्ती, अश्व तथा उष्ट्र नामसे पुकारा जाता, केवलमात्र पूर्वद्वार महादेव-दरवाजा कहलाता है कोई कोई कहता कि शेरशाहने वह किला बनाया था। परन्तु यह बात विशेष प्रामाणिक नहीं, दुर्ग बहुत ही प्राचीन है। सम्भवत: सम्राट् हुमायूंके साथ युद्ध कालको उन्होंने इसका केवल जीर्ण संस्कार कराया था।

वर्तमान गिद्धौर राजवंशके प्रतिष्ठाता वीरविक्रमसिंह चन्द्रवंशीय क्षत्रिय रहे। उनके पूर्व पुरुष बुंदेलखण्डके अन्तर्गत महोवा नामक विषयके अधिकारी थे। ई० ११वीं शताब्दीको वहांसे ताड़ित होने पर यह रीवां राज्यके अन्तर्गत वर्दी नगरमें जा करके रहे। ११६८ ई०को वर्दीराजके कनिष्ठ भ्राता वीरविक्रमसिंह वैद्यनाथ दर्शनकी कामनासे सपरिवार पहुंचे थे। कहते हैं, वैद्यनाथने उन्हें चारों पार्श्वका समुदाय भूभाग अधिकार करनेको स्वप्नमें आदेश दिया। वह इस राज्यके अधिकार पीछे प्रथम गिद्धौरके राजा कहलाये थे। इसी वंशके दशम राजा पूरणमल्लने वैद्यनाथ देवका मन्दिर बनवा दिया। मन्दिरमें भीतरी दरवाजेके ऊपरी भाग पर संस्कृत भाषासे आज भी उनकी प्रशस्ति खोदित है। वीरविक्रमसे चतुर्दश पुरुष अधस्तन दलनसिंहको बङ्गालके उद्धृत सूबेदारको दबाने और दिल्ली सम्राटके पौत्र सुलेमानको साहाय्य पहुंचानेसे ११६८ ई०में बादशाह शाहजहांने फर्मानके द्वारा राजा उपाधि प्रदान किया। इस फर्मान्में शाहजहां और दाराशिकोहको सही माजूद है। जब बङ्गाल और विहारका शासनभार अंगरेज गवर्नमेण्टने अपने हाथमें लिया, गिद्धौरराज गोपालसिंह (१८श पुरुष) को विषय सम्पत्तिको भी अधिकार किया। १८५५ ई०को सन्ताल विद्रोहके समय राजा

गोपालसिंहके पौत्र जयमङ्गल सिंहने अंगरेजोंको विशेष साहाय्य किया था। इससे बड़े लाटने सन्तुष्ट हो करके १८५६ ई०को उन्हें एक सनद और राजा उपाधि दिया। सिपाहियोंके बलवे पर उन्होंने फिर अंगरेजो गवर्नमेंटको यथेष्ट साहाय्य किया, जिसके लिये १८५८ ई०को वृटिश गवर्नमेंटने उन्हें यावज्जीवन महाराज और के० सी० एस० आई० (K. C. S. I.) उपाधि तथा उनके वंशधरोंको लाखाराजमें बड़ी जागीर दी। इनके पुत्र महाराज शिवप्रसाद थे। शिवप्रसादसिंहके पुत्र माननीय महाराज बहादुर सर रावणेश्वरप्रसाद सिंह के० सी० आई० ई० गिड्डौरके वर्तमान राजा हैं।

गिड्डौरका भूपरिमाण २२३०२ वर्गमील है। इसमें १४ विषय हैं।

गिड्डौरगल—पेशावर प्रदेशके अन्तर्गत एक गिरिसङ्कट। यह अक्षा० ३३° ५६' उ० और देशा० ७२° १२' पू० पर आटकनगरसे ५ मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। यह पथ दश फुट चौड़ा है। कभी कभी इस रास्ते से सेना भी जाती आती है।

गिनगिनाना (हिं० क्रि०) १ रोमांच होना, रोंगटे खड़े होना। २ अधिक बल लगाते समय शरीरका कांपना।

गिनजा—युक्तप्रदेशका एक पहाड़। यह प्रयागसे ४० मील दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है। इसका सर्वोच्च शिखर समुद्र-पृष्ठसे २००० फुट ऊंचा है। पर्वतका निम्नदेश बहुत ही ढालू और जङ्गलसे भरा है। प्राय: आधी दूर ऊपर चढ़ने पर २०० फुट परिधिकी एक बावड़ी है। इसके आगे पथ अतिशय दुर्गम और कण्टकाकीर्ण है। पहाड़ पर दक्षिण दिक्की एक समतल स्थान है। यहां पर्वतने ऊपर छाया करके छतका आकार धारण किया है। यह पथ तास्रम १०० फुट लम्बा और ५० फुट चौड़ा है। इसी पर्वतके बीचो बीच प्राचीन उत्तर भारतीय गुप्ताक्षरोंकी खोदित एक शिलालिपि मिलती है। शिलाफलकके अक्षरोंमें लाल रंग भरा हुआ है। फिर अक्षरोंके दोनों पार्श्वों पर अनेक मनुष्य और जीव जन्तुवोंकी मूर्तियां खुदी हैं। शकराजोंके राजत्व समयकी उत्कीर्ण शिलालिपियोंमें जैसी भाषा देख पड़ती, इसकी मुखपातकी भी वैसी ही लगती है।

यह फलक ५२ संवत्को ग्रीष्म ऋतुके चतुर्थ पक्षमें महाराज श्रीभीमसेन कर्तृक प्रदत्त हुआ। प्राचीन गुप्त अक्षर और शक भाषा देखनेसे इसको समधिक प्राचीन-जैसा समझते हैं।

गिनती (हिं० स्त्री०) १ गणना, किसी पदार्थकी संख्या निश्चित करना। २ संख्या। ३ हाजिरी। ४ एकसे सौ तककी अंककमाला।

गिनना (हिं० क्रि०) १ गणना करना। २ गणितकरना, हिसाब लगाना। ३ सम्मान करना, प्रतिष्ठा करना। ५ कदर करना।

गिनाना (हिं० क्रि०) गिननेका काम किसी दूसरेसे कराना।

गिनी (अं० स्त्री०) सुवर्णको मुद्रा। इसका व्यवहार इंगलैंडमें सन १६६३में प्रारम्भ हुआ रहा और सन १८१३से इसका बनना बन्द हो गया। २१ शिलिंग या १५॥ रु० की एक गिनी मानी जाती थी। प्राचीन समयमें यह अफ्रीका महाद्वीपके गिनी नामक देशसे आये हुए स्वर्णसे बनाया जाता था इसलिये प्रस्तुत सिक्काका नाम गिनी पड़ा है।

गिनीग्रास (अं० स्त्री०) अफ्रीकाके गिनी नामक देशको एक प्रकारकी लम्बी घास। यह घास अब भारतवर्षमें बहुत होती है।

गिन्नी (हिं० स्त्री०) चक्कर, घिरनी।

गिन्दुक (सं० पु०) गेन्दुक पृषोदरा दवत् साधुः। वृक्ष-विशेष, एक पेड़।

गिब्बन (अं० पु०) सुमात्रा, जव आदि द्वीपोंके एक प्रकारका बंदर। इसे पूंछ तथा गलथैली नहीं होती। इसकी भुजा इतनी लम्बी होती है कि खड़े होने पर पृथ्वीको छू लेती है। इसका आकार प्रायः मनुष्य जैसा होता है।

गिमटी (हिं० स्त्री०) बेलबूटेसे युक्त एक प्रकारका मजबूत कपड़ा। यह सिर्फ किसी यज्ञादिमें बिछानेके काममें आता है।

गिय (हिं० पु०) गिउ देखो।

गियासपुर—लक्ष्मणावतीके अन्तर्गत एक नगर। गौड़के मुसलमान राजाओंके समय इस नगरमें एक टकशाल था।

गियाह (हिं० पु०) एक प्रकारका घोड़ा।

गिरंट (अं० पु०) १ तरहका रेशमी कपड़ा जो गाट लगानेके काममें आता है। २ एक प्रकारकी सूती मलमल जो बस्ती जिलेमें प्रस्तुत होती है।

गिर (सं० स्त्री०) गृ-क्विप् । वाक्य।

"गीर्भिष्टा वर्धयन्तीमो वयोविदः।" (ऋक् १।८।११)

गिर (हिं० पु०) १ पर्वत, पहाड़। २ सन्न्यासियोंके १० भेदोंमेंसे एक भेद। ३ एक तरहका भैंसा जो काठियावाड़ देशमें पाया जाता है।

गिर—बम्बई प्रदेशस्थ काठियावाड़ विभागके अन्तर्गत एक गिरिश्रेणी। यह किउ द्वीपसे २० मील उत्तरपूर्वमें आरम्भ हो कर प्रायः ४० मील तक फैली हुई है। इस वनमय पर्वतमें दस्युपति हवावालने भारतीय नौसेनाध्यक्ष कप्तान ग्राण्टको १८१३ ई०में अढ़ाई मास तक बन्द किया था।

गिरई (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी मछली जो मीरोंसे छोटी होती है।

गिरगिट (हिं० पु०) छिपकलीकी जातिका एक प्रकारका जन्तु। यह एक बिलस्त लम्बा होता है और अपने शरीरका रङ्ग सूर्यकी ज्योतिसे अनेक प्रकारमें बदल लेता है। इसका चमड़ा स्पर्श करने पर बहुत ठंढा मालूम पड़ता है। यह कीट पतंगको खा कर अपनी जीविका निर्वाह करता है। संस्कृतमें इसे कृकलास या गलगति कहते हैं।

गिरगिटान (हिं० पु०) गिरगिट देखो।

गिरगिट्टी (हिं० स्त्री०)एक तरहका छोटा पेड़ जो उत्तर-भारत, चीन और आस्ट्रेलियामें पाया जाता है। इसके पत्र गहरे रंग लिये छोटे तथा पतले होते हैं और ऊपरका अंग अत्यन्त चमकीला होता है। ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतुमें इसमें श्वेत रंगके पुष्प लगते हैं। इस वृक्षकी लकड़ी बहुत नर्म होती है। बागानमें शोभाके लिये यह लगाया जाता है। ब्रह्मदेशके रहनेवाले चन्दनके बदले इसीको [illegible] न काममें लाते हैं।

गिरगिरी (फा० [illegible]० स्त्री०) मारंगीके आकारका एक तरहका लड्डू भाव, कमी [illegible]।

गिरजौ (सं० पु०) एक किस्मका पक्षी जो कीड़े मकोड़े खाकर रहता है। यह पंजाब तथा राजपूतानेके अतिरिक्त समस्त भारतवर्षमें होता है। यह सिघाड़ेके सरोवरके निकट रहता और जैसे जैसे ऋतु बदलता जाता वह भी अपना स्थान परिवर्तन करता रहता है। यह उड़नेमें बहुत तेज है और वृक्षों पर घोसला बनाकर रहता है। इसका मांस बहुत स्वादिष्ट होता है इसलिये मनुष्य इसका शिकार करते हैं।

गिरदा (फा० पु०) १ घेरा, चक्कर। २ तकिया, बालिश। ३ मिठाई बनानेकी हलवाईकी थाली। ४ दरबारके समय राजाओंके हुक्केके नीचे बिछाये जानेका एक तरहका गोलाकार कपड़ा। ५ ढाल, परी। ६ ढोल वा खंजड़ीका मेंड़रा।

गिरदान (हिं० पु०) गिरगिट।

गिरदानक (फा० पु०)करघेकी लकड़ी जो उसे घुमानेके लिये लगी रहती है।

गिरदाना (फा० पु०) तूरके छिद्रमें एक हाथकी लंबी चौपहल लकड़ी।

गिरदाली (फा० स्त्री०) कच्चा लोहा एक करनेकी एक लम्बी अंकुसी।

गिरदावर (फा० पु०) गिर्दावर देखो।

गिरदावरी (फा० स्त्री०) १ गिरदावरका काम। २ गिरदावरका पद।

गिरधर (सं० पु०) १ पर्वत उठानेवाला मनुष्य। २ कृष्ण, वासुदेव।

गिरधरोत व्यास—राजपूतानाके मारवाड़ प्रदेशमें पुष्करणा ब्राह्मणोंकी एक शाखा। यह बाईं ओर झुका करके पगड़ी बांधते और प्रतिष्ठित समझे जाते हैं। कहते हैं, इनके पूर्व पुरुष गिरिधर राव अमरसिंहके पास नौकर थे। आगरेकी लड़ाईमें वह मारे गये। अग्निदाह न करके अशान्तिके कारण इनको वहां समाधिस्थ किया था। इसीसे उनका नाम गिरिधर [illegible] मोर पड़ा। श्रावण शुक्ल तृतीया उनकी स्मृतिका दिवस है। उस दिन कोई भी व्यास नवीन वस्त्र नहीं पहनते। १६३८ ई०को उनका स्वर्गवास हुआ। गिरिधर राव कवि थे। इनका समाधिस्थान 'चौनोका रो[illegible]' कहलाता है।

गिरधारी (सं० पु०) गिरधर देखो।

गिरना (हिं० क्रि०) किसी पदार्थका ऊपरसे नीचे आधार के अभावसे आ जाना। २ किसी पदार्थकी स्थिरता न रहना। ३ अवनति पर होना। ४ किसी नदीका जला-शयमें जा मिलना। ५ प्रतिष्ठा वा शक्तिकी कमी होना। ६ किसी पदार्थको लेनेके लिये टूट पड़ना। ७ जीर्ण या दुर्बल होना। ८ हठात् किसी पदार्थका आ जाना। ९ लड़ाईमें मारा जाना, खेत रहना। १० कबूतरका एक छतसे दूसरे छत पर जाना।

गिरनार—काठियावाड़ प्रान्तका पवित्र पर्वत। यह अक्षा० २१° ३०' उ० और देशा० ७०° ४२' पू०में हेलमद नदीके दक्षिण तट पर जूनागढ़ नगरसे १० मील पूर्व अवस्थित है। उंचाई कोई ३५०० फुट है। इसकी पांच चोटियां है—अम्बामात, गोरखनाथ, अगाध शिखर, गुरु दत्तात्रेय और कालिका। अम्बामातमें अम्बा देवीका मन्दिर अवस्थित है। कालिकाको अघोरी और मुर्दाखोर तीर्थयात्रा करने जाते रहे है। दुर्ग और चुड़ासमाओंके राजप्रासादका कुछ अंश भी खड़ा है। गोमुखी, हनुमान धार और कमण्डलकुण्ड तीन प्रधान कुण्ड हैं। भैरवजय चटानका दृश्य अतीव विचित्र है। गिरनारसे थोड़ी दूर प्राचीन राजधानी वामनस्थली और नीचे वलि-स्थान (वर्तमान बिलखव) है। इसका प्राचीन नाम उज्ज-यन्त वा गिरिनर है। यह जैनोंका पवित्र तीर्थस्थान है। एक चटानमें (ई०से २५० वर्ष पूर्व) अशोकको कई लिपियां अङ्कित हैं। १५० ई०का दूसरा शिलाफलक पढ़नेसे ज्ञात होता है कि स्थानीय राजा रुद्रदामाने दाक्षिणात्यके नृपतिको किस प्रकार पराजित किया। ४५५ ई०की शिलालिपिमें सुदर्शनकुण्डके बांध टूटने और पुनः सेतुनिर्माणका उल्लेख है। ब्राह्मण नवदम्पती अम्बा माताकी बड़ी भक्ति करते हैं। जैन मन्दिर नेमि-नाथ जानेकी राहमें ६ पव (विश्रामस्थान) हैं

गिरनार,—जैनियोंका एक पवित्र तीर्थ; जो गुजरातमें जूनागढ़के निकट उक्त पर्वत पर है। इस पर्वतसे जनियोंके बाईसवें तीर्थङ्कर नेमिनाथ स्वामी मोक्ष गये हैं। इस पर्वतका दूसरा नाम ऊर्जयन्त भी हैं। इसकी ऊंचाई करीब ४॥ मील होगी। नीचेसे २॥ मीलकी ऊंचाई पर एक सोरठका महल और २७ मन्दिर हैं। पासहीमें उग्रसेनकी पुत्री और तीर्थङ्कर नेमिनाथकी पत्नी राजीमतीकी एक गुफा है; जहां पर कि, उन्होंने तप किया था। इस गुफामें राजमतीकी एक चरणपादुका है। इस स्थानसे १ मील चढ़ने पर दो टोंकें मिलती हैं; जिन पर कि, नेमिनाथने तप किया था। यहां वैष्णवोंके मन्दिर भी हैं। हिन्दू लोग दत्तात्रेयी मानकर इस पर्वतको पूजते हैं। मुसलमान इसे आदमबाबाके नामसे पुकारते हैं। यहांसे १ मीलकी ऊंचाई पर और दो टोंकें हैं. इनमेंसे पहिली टोंक पर नेमिनाथ स्वामीने केवलज्ञानको प्राप्त किया था; और दूसरी टोंक पर वे अष्ट कर्मोंको नष्ट कर मोक्ष गये थे। यहां एक प्रतिमा और एक चरणपादुका अत्यन्त सुन्दर विराजमान हैं।

इस पर्वतसे नेमिनाथ, शाम्ब, प्रद्युम्न (श्रीकृष्णके पुत्र), आदि ७२ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। इस पर्वत-का प्रबन्ध वहांके गुसाईं और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटीके हाथमें है।

गिरनार—गुजराती ब्राह्मण भेद। यह दो प्रकारके हैं जूनागढ़ गिरनार और चोरवटा। गिरनार पर्वतस्थ गिर नार गढ़ ग्राम पर हो उनका यह नामकरण हुआ है। तीसरे अजग्य गिरनार भी होते हैं। इन तीनों शाखा-ओंमें भोजन पान होते भी आदान प्रदान नहीं चलता। गिरनार साम तथा शुक्ल यजुर्वेद मानते हैं।

गिरनारी (हिं० वि०) गिरनार पहाड़का रहनेवाला।

गिरफ्त (फा० स्त्री०) ग्रहणकी क्रिया या भाव, पकड़।

गिरफ्तार (फा० वि०) १ जो पकड़ा या कैद किया गया हो। २ ग्रस्त, ग्रसा हुआ।

गिरफ्तारी (फा० स्त्री०) गिरफ्तार होनेकी क्रिया या भाव।

गिरबूटी (हिं० पु०) अंगूर-शेफा।

गिरमिट (हिं० पु०) बढ़ईका एक औजार, बड़ा बरमा।

गिरवर (हिं० पु०) श्रेष्ठ पर्वत, बड़ा पहाड़।

गिरवां—युक्त प्रदेशके बांदा जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २४° ५८' एवं २५° २८' उ० और देशा० ८०° ९' तथा ८०° ३४' पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल ६५० वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ७७७०६ है। इसमें एक नगर और १७९ गांव बसते हैं। मालगुजारी ८०००

और शेष १८००० है। पश्चिममें केन नदी प्रवाहित है, भूमि उर्वरा है।

गिरवान (हिं० पु०) देवता, गीर्वाण, देव, सुर।

गिरवाना (हिं० क्रि०) दूसरे द्वारा गिरानेका काम कराना।

गिरवी (फा० वि०) बंधक, रहन।

गिरवीदार (फा० पु०) बंधक लेनेवाला मनुष्य, महाजन।

गिरवीनामा (फा० पु०) बन्धकका नियम लिखा हुआ पत्र, रेहननामा।

गिरवीपत्र (फा०) गिरवीनामा देखो।

गिरह (फा० स्त्री०) १ ग्रन्थि, गांठ। २ वह गांठ जहां दो चीजें आकर जुटी हों। ३ एक गजका सोलहवां भाग जो सवा दो इञ्चके समान होता है। ४ जयब, कीसा, खरीता। ५ कुश्तीका एक पेंच। ६ कलैया, उलटी।

गिरहकट (फा० वि०) जेब या गांठका रुपया चुरानेवाला।

गिरहदार (फा० वि०) जिसमें ग्रन्थि हों, गांठवाला, गंठीला।

गिरहबाज (फा० पु०) एक तरहका कबूतर, जो सरकी नीचे पृथ्वी पर रखकर चारों ओर घूमता है।

गिरहर (हिं० वि०) पतनोन्मुख, जो गिरनेवाला हो।

गिरही (हिं० पु०) गृहिन्, गृहस्थ।

गिरां (फा० वि०) १ अधिक मूल्यवाला, महंगा। २ भारी। ३ अप्रिय।

गिरा (सं० स्त्री०) १ गिर् वा टाप्। वाक्य।

"तां गिरां करुणां श्रुत्वा।" (दशरथविलाप)

२ जिह्वा, जबान। ३ बोल, वचन। ४ सरस्वती देवी।

गिराना (हिं० क्रि०) १ पतन करना। २ पृथ्वी पर डाल देना। ३ घटाना, कम करना। ४ जलका ढाल और बहना। ५ शक्ति या प्रतिष्ठाकी कमी कर देना। ६ किसी पदार्थकी नियत स्थानसे हटा देना। ७ महमा उपस्थित होना।

गिरानी (फा० स्त्री०) महंगापन, महंगी। २ अकाल। ३ अभाव, कमी। ४ किसी पदार्थसे पेटका भारीपन।

गिरापति (सं० पु०) ब्रह्मा।

गिरापितृ (सं० पु०) सरस्वतीके पिता, ब्रह्मा।

गिराव (फा० पु०) तोपका गोला, जिसमें छोटी छोटी गोलियां और छर्रे भी होते हैं।

गिराम (फा० पु०) ग्राम देखो।

गिरामना—गमना देखो।

गिरासी (हिं० स्त्री०) एक प्राचीन जाति। इस जातिके मनुष्य बड़े डकैत होते थे, इनका वासस्थान गुजरातमें रहा।

गिराह (अनु० पु०) जलजन्तु ग्राह।

गिरि (सं० पु०) गृ-इ-किच। १ पर्वत, पहाड़।

"गिरिर्भ्रष्टिर्ना भ्राजतेभ्यजा गवः।" (ऋक् १।५६।३)

"गिरिः पर्वतस्य।" (सायण)

२ तान्त्रिक सन्यासी विशेष।

"सदोर्ध्व बाहुर्यो वीरः मुक्तकेशो दिगम्बरः।

सर्वत्र समभावेन भावयेद्‌ यो नरोत्तमः॥

इष्टदेवी-धिया नार्यां स गिरिः परिकीर्त्तितः॥" (तन्त्र)

अर्थात् जो सर्वदा ऊर्ध्व बाहु, वीराचारी, मुक्तकेश और नग्न रहते तथा सर्वत्र समभावसे अवलोकन करते हैं एवं अपनी इष्टदेवी समझ कर समस्त स्त्रियोंके ऊपर अनुराग प्रकाश करते वे ही गिरि कहलाते हैं। ३ परिव्राजकोंकी एक उपाधि। शङ्कराचार्यके प्रधान शिष्य आनन्द इस उपाधिके अधिकारी रहे। ४ नेत्ररोगविशेष, आंखकी एक बीमारी। ५ गेन्द, छोटे छोटे लड़कोंके खेलनेका लकड़ीका गेन्द। ६ मेघ।

"गिरयोमान उग्रा अस्पर्धन्।" (ऋक् ८।४६।११)

"गिरयो मेघाः" (सायण)

७ पारेका एक दोष जिसका शोधन यदि न किया जाय तो खानेवालेका शरीर जड़ हो जाता है।

"मलं विषं वह्निगिरी च चापलं नैसर्गिकं दोषमुशन्ति पारदे।"

(भावप्रकाश)

८ दशनामी संप्रदायके अन्तर्गत एक प्रकारके संन्यासी। दशनामी देखो। मण्डनमिश्रके शिष्य 'गिरि' से इस सम्प्रदायका नामकरण हुआ है। इनमें कुछ लोग मठधारी महन्त हैं जो उस सम्प्रदायके प्रधान गिने जाते हैं। वर्तमान समय इस सम्प्रदायके बहुत मनुष्य वैष्णव धर्मावलम्बी हो गये हैं जो गिरिवैष्णवसे ख्यात हैं। उत्कलमें इस तरहके गिरि वैष्णव देखे जाते हैं।

ये गृहस्थ तथा शिष्यसे दान ग्रहण कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। यशोर जिलेमें ये योगी वैष्णवसे प्रसिद्ध है। ये विवाह नहीं करते। (त्रि०) ८ पूज्य, श्रेष्ठ। (स्त्री०) गृ भावे इ किच्च। १० निगरण, भक्षण। खाना। ११ बालमूषिका, चुहिया।

गिरिक (सं० पु०) गिरौ कैलासे कायति कै-क। १ शिव, महादेव।

"गिरिको हिमवत्यौ वृक्षः श्रीवः पुद्गल एव सः।" (भारत १३।३६८ अ०)

(त्रि०) गिरौ भवः गिरि-कन्। २ पर्वतजात, वह जो पर्वतसे उत्पन्न हो।

गिरिकच्छप (सं० पु०) गिरौ पर्वतस्थदरीषु कच्छपः। कच्छपविशेष, एक प्रकारका जलचर कछुआ। इस तरहका कच्छप सदा पर्वतके गह्वरमें रहता है। इस कच्छपको गृहमें रखनेसे पिशाच प्रभृति अपदेवताका उत्पात निवारण होता है:

'सरर्षोऽश्मदंष्ट्रा च तथैव गिरिकच्छपः।
आजाश्च सा विडालश्च छागः कृष्णो द्य पिङ्गलः॥
येषामेतानि तिष्ठन्ति गृहेषु गृहमेधिनाम्।
साकम्पशारम्भाराणि विशनामे: सुदारुणैः॥' (भारत अनु० १२१ अ०)

गिरिकण्टक (सं० पु०) गिरौ कण्टक इव तद्भेदकत्वात्। वज्र, बिजली।

गिरिकदम्ब (सं० पु०) गिरेः समुत्पन्नः कदम्ब मध्यलो०। नीप, धाराकदम्ब, कदम।

गिरिकदम्बक (सं० पु०) गिरिकदम्ब स्वार्थे कन्। नीप, धाराकदम्ब, कदम।

"देवदारु वचा हिङ्गु कुष्ठं गिरिकदम्बकः।" (सुश्रुत ३८ अ०)

गिरिकदली (सं० स्त्री०) गिरिजाता कदली मध्यलो०। पार्वतीय कदली, पहाड़ी केला। इसका पर्याय—गिरिरम्भा, पर्वतमोच, आरण्यकदली, बहुवीज, वनरम्भा, गिरिजा और गजवल्लभा है। इसका गुण—शीतल, मधुरस, बल और वीर्यवृद्धिकर, तृष्णा, पित्त, दाह और शोषनाशक है।

गिरिकन्दर (सं० पु०) गिरेः कन्दरः, ६-तत्। पर्वतगह्वर, पहाड़की कन्दरा।

गिरिकर्णा (सं० स्त्री०) गिरिकर्ण-टाप्। अपराजिता लता।

गिरिकर्णिका (सं० स्त्री०) गिरिः कर्ण इव यस्याः बहुव्री०। गिरिकर्ण-कप्, टाप्, अत इत्वंच। १ पृथ्वी। गिरेर्बालमूषिकायाः कर्ण इव कर्णाऽस्यस्याः गिरिकर्ण-ठन्-टाप्। २ श्वेतकिणिही वृक्ष, लटजीरा ३ अपराजिता लता। ४ श्वेतकटभी, छोटा रनजात। ५ आरग्वध, अमलतास।

गिरिकर्णी (सं० स्त्री०) गिरेर्बालमूषिकायाः कर्ण इव कर्णः पत्रमस्या बहुव्री०। गिरिकर्ण-ङीप्। १ अपराजिता लता।

"विष्णुक्रान्ता गिरिकर्णी च हंसपादी च निःश्रेणी।" (भावप्रकाश)

२ यवास, जवासा। (शब्दचिन्तामणि)

गिरिका (सं० स्त्री०) गिरि स्वार्थे-कन्-टाप्। १ बालमूषिका, चुहिया। २ पुरुवंशीय वसु राजाकी स्त्री। महाभारतमें इसकी कथा इस प्रकार है—पुरुवंशमें वसुनामके एक प्रबल पराक्रमशाली राजा रहे। इनका दूसरा नाम उपरिचर था। महाराज वसुने समस्त शत्रुओंको पराजित करनेके बाद कठोर तपस्या आरम्भ की। देवतागणने इनकी कठोर तपस्यासे भयभीत होकर तपस्या निवृत्त करनेको उनसे प्रार्थना की, एवं उसी समय देवराज-इन्द्रने नरराज वसुको एक आकाशगामी रथ प्रदान किया। महाराज वसु उस रथ पर चढ़कर आकाशको आने जाने लगे। उनकी राजधानीके निकट शुक्तिमती नामकी एक नदी प्रवाहित थी। कोलाहल नामके एक सचेतन पहाड़ने कामान्ध हो शुक्तिमती पर आक्रमण किया। महाराजने उस पर्वतका इस तरह अन्याय व्यवहार देखकर उसे पदाघात किया। राजाके पदाघातसे वह दुष्ट पर्वत विदीर्ण हो गया और उस प्रहारमार्गसे वेगवती शुक्तिमती नदी कल कल शब्द करती हुई बह निकली। समयानुसार नदीके गर्भसे कोलाहलकी एक कन्या और एक पुत्र उत्पन्न हुए। उस कन्याका नाम गिरिका पड़ा। महाराज वसु कन्याको रूप-लावण्य देख मुग्ध हो गये और उससे विवाह कर लिया। यह गिरिका महाराजकी अतिशय प्रियतमा रही।

गिरिकाण (सं० पु०) गिरिणा अक्षिरोगविशेषेण काणः एकनयनहीनः ३-तत्पु०। गिरिनामक चक्षुरोगसे जिसकी एक आँख नष्ट हो गई हो।

गिरिकानन (सं० पु०) पहाड़ी जङ्गल।

गिरिकूट (सं० पु०) पहाड़की शिखर, चोटी।

गिरिकौटजफल (सं० क्ली०) इन्द्रयव।

गिरिक्षित् (सं० त्रि०) गिरिणा क्षियति अवतिष्ठते क्षि-क्विप् तुगागमश्च, अलुक्समास: यद्वा गिरौ गिरिवदुन्नत-प्रदेशे क्षियति आतिष्ठते गिरि-क्षि-क्विप्। १ जो वाक्यमें अवस्थित है विष्णु। २ जो पर्वतके जैसे ऊंचे स्थान पर वास करते हों।

"प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे।" (ऋक् १। १५४ ३)

"गिरिक्षिते गिरिवाचि गिरिवदुन्नतप्रदेशे वा तिष्ठते।" (सायण)

गिरिक्षिप (सं० त्रि०) गिरिं क्षिपति गिरि-क्षिप-क। १ जिसको पर्वत उठानेको शक्ति हो। २ श्वफल्क राजाके पुत्र और अक्रूरके भाई। (हरिवंश)

गिरिगङ्गा (सं० स्त्री०) नदीविशेष, एक नदी जो पहाड़से निकलती है।

गिरिगुड़ (सं० पु०) गिरौ गुड़ इव। कन्दुक, गेन्दुक, गेन्द।

गिरिगैरिकधातु (सं० पु०) गिरिस्थित: गैरिकधातु:, मध्य-पदलो०। पर्वतस्थित गैरिक धातु। एक तरहकी लाल खड़ी।

"अथासृङ्मेऽस्रवद्घोरं गिरिगैरिकधातुवत्।" (भारत)

गिरिगोचर (सं० क्ली०) श्वेतमर्कट, उजला बन्दर।

गिरिचर (सं० त्रि०) गिरौ चरति चर-ट। १ पर्वतचारी, जो पहाड़ पर विचरण करता है।

"गिरिचर इव नाग: प्राणसारं बिभर्ति।" (शकुन्तला)

(पु०) २ चोर। ३ चोरगणोंके अधिपति रुद्रदेव।

"नम उष्णीषिणे गिरिचराय।" (वाजसनेय० १६।२२)

गिरिचारिन् (सं० त्रि०) गिरौ चरति अविदितं भ्रमति गिरि-चर-णिनि। पर्वतचारी, पर्वत पर भ्रमण करनेवाला।

गिरिज (सं० क्ली०) गिरौ जायते गिरि-जन-ड। १ शिलाजतु, शिलाजीत। २ लौह, लोहा। ३ अभ्र, अबरक। ४ गैरिक, गेरू। (पु०) ५ पार्वतीय मधुकवृक्ष, एक प्रकारका पहाड़ी महुआ। ५ [illegible] पर्याय गोरशाक, और स्वल्पपत्रक है। ६ काञ्चनारवृक्ष। (त्रि०) गिरि वाचि जायते गिरि-जन-ड अलुक्समा०। ७ जो वाक्यसे उत्पन्न हो, वाक्यजात। ८ पर्वतजात, पहाड़से उत्पन्न होनेवाला।

गिरिजधातु (सं० पु०) गैरिक, गेरू।

गिरिजा (सं० स्त्री०) गिरौ जायते गिरि जन-ड टाप्। १ पार्वती, हिमालय पर्वतकी कन्या, दुर्गा।

"यदा यदा स गिरिजा सह कामाश्रमागतम्।" (काशीखण्ड ६६।७०)

२ गङ्गा। ३ चकोतरा। ४ मातुलुङ्गवृक्ष, बिजौरा। ५ श्वेतवृक्षा। ६ त्रायमाण लता। ७ मल्लिका, चमेली। ८ गिरिकदली, पहाड़ी केला।

गिरिजाकुमार (सं० पु०) १ कार्त्तिकेय। २ शङ्कराचार्यके एक शिष्य।

गिरिजातनय (सं० पु०) गिरिजाया:, पार्वत्या: तनय:, ६-तत्। पार्वतीनन्दन, कार्त्तिकेय।

गिरिजातैज (सं० क्ली०) अभ्रधातु, अबरक।

गिरिजापति (सं० पु०) गिरिजाया: पति:, ६-तत्। पार्वतीपति, शिव।

गिरिजामल (सं० क्ली०) गिरिजेषु अमलं, ७-तत्, यद्वा गिरिजाया मलं वीजरूपं, ६ तत्। अभ्रक, अबरक। अभ्रक देखो।

गिरिजाबीज (सं० क्ली०) १ गन्धक। २ अभ्रक, अबरक।

गिरिजाल (सं० क्ली०) गिरिजालं, ६-तत्। गिरिसमूह, पर्वतकी पंक्ति।

"गिरिजालावृता दिश:" (रामा० ४।४।११)

गिरिजाह्वय (सं० क्ली०) शिलाजतु, शिलाजीत।

गिरिज्वर (सं० पु०) गिरिं ज्वरयति गिरिज्वर-णिच् अच्। वज्र।

गिरिणख (सं० पु०) गिरेर्णख: खण्डं, ६-तत्०। पर्वतका एक अंश।

गिरिणदी (सं० स्त्री०) गिरिसम्भूता नदी, मध्यपदलो०। पार्वतीय नदी, पहाड़से निकली हुई नदी।

गिरिणद्ध (सं० त्रि०) गिरौ नद्ध आवद्ध:, ७-तत्०। पर्वतसे आवद्ध हो, जो पहाड़से छिपा हो।

गिरिणितम्ब (सं० पु०) गिरेर्णितम्ब: ६-तत्। पर्वतके पार्श्व देश।

गिरित (सं० त्रि०) गिल क्त। भक्षित, खाया हुआ।

गिरित्र (सं० पु०) गिरौ कैलासे स्थित्वा त्रायते गिरि-त्रै-क। १ रुद्र, शिव।

"शिवा गिरित्र तां कुरु मा हिंसी पुरुषं जगत्।" (वाजसनेयसं० १६।३)

"गिरौ कैलासे स्थितो भूतानि त्रायते इति गिरित्र:।" (महीधर)

२ समुद्र, जब इन्द्रसे पर्वतोंके पर काटे गये थे तब

मैनाक पर्वत समुद्रमें जा छिपा था, इसीसे समुद्रका नाम गिरित्र पड़ा।

गिरिदुर्ग (सं० क्लो०) गिरौ दुर्गं, ६-तत् यद्वा गिरिरेव दुर्गं। पहाड़ पर बना हुआ किला। पर्वतके ऊपर और मध्य हो कर प्रवाहित नदी या प्रस्रवणादि युक्त स्थान पर यह दुर्ग निर्माण करना चाहिये, और ऊपर जानेके लिये एक क्षुद्र रास्ता भी रहे। दुर्गस्थानमें भांति भांतिके शस्यादिसे पूर्ण क्षेत्र और उद्यान प्रभृति भी प्रस्तुत करना उचित है। सर्व प्रकारके दुर्गसे गिरिदुर्ग ही प्रशस्त माना गया है। (मत्स्य० कुल्लूक)

गिरिद्वार (सं० क्लो०) गिरेर्द्वारं ६-तत्। पर्वत हो कर जानेका रास्ता।

गिरिधर (सं० पु०) १ विष्णु। २ एक वेदान्तिक। इन्होंने संस्कृत भाषामें ब्रह्मसूत्राणुभाष्यविवरण और शुद्धाद्वैतमार्त्तण्डकी रचना की है। ३ एक संस्कृत वास्तुशास्त्र-रचयिता। ४ विभक्त्यर्थनिर्णय नामक संस्कृत व्याकरण-प्रणेता, इनके पिताका नाम वागीश रहा। ५ एक वैष्णव कवि। इन्होंने १६७८ शकको आषाढ़ मासमें गीतगोविन्दका पद्यानुवाद बंगला भाषामें रचा था। जो अत्यन्त सरल और मधुर जान पड़ता था।

गिरिधर—हिन्दी भाषाके एक कवि। उनकी कविता इस प्रकार है—

> 'लोचन धूम रहे हरिसंग रजनी जागत।
> कमल प्रफुल्ल क्षीन भये डगमगात उठे दूर दूर देखत लाज लागत॥
> रति रस वस केली चसकी चाखे हंस हंस कामन फांसे लागत।
> लोचन गिरिधरके प्रभु समुद्र तरङ्ग झकोरन कागत॥"

गिरिधर कविराय—हिन्दी भाषाके एक कवि। १७१३ ई० को बारावंकी जिलेके होलपुर ग्राममें इनका जन्म हुआ। इन्होंने नीतिविषयक अच्छी कविता लिखी है। गिरिधर कविरायकी कुण्डलियां लोकप्रसिद्ध हैं।

गिरिधर गोस्वामी—ऊर्ध्वपुण्ड्रमाहात्म्य नामक संस्कृत ग्रंथकार।

गिरिधरदास—१ रामकथामृत नामक संस्कृत ग्रन्थकार। २ दिल्लीनिवासी एक भारतवर्षीय कवि। इन्होंने १७२२ ई०को हिन्दी भाषामें रामायणकी रचना की है। इनकी भाषा सरल, मधुर और ओजोगुणविशिष्ट है। इन्होंने तुलसीदास एवं अपने ग्रन्थके प्रमाण ले कर हिन्दी भाषामें एक व्याकरण प्रणयन किया है।

गिरिधरण (सं० पु०) श्रीकृष्ण।

गिरिधरमिश्र—दृग्गोलवर्णन नामक संस्कृत ज्योतिःशास्त्रकार।

गिरिधरलाल—हिन्दी भाषाके कोई कवि। उनकी कविता नीचे लिखी जैसी होती थी—

> "बड़े बड़ मन लाल लाल डार कारे कारे भौंरा भौंके मंडरात है।
> अति रस आतुर भये हैं हियकि वस भाके दृग देख मौन खञ्जन लजात है॥
> नीलों देखियत सखी नीलों पाइयत सुख देखके दरद दुख तेह मिटि जात है
> लाल गिरिधर पिय मोची नजर किये ल जके जहाज मानो मानो भरे जात है

गिरिधर सिंह—एक राजपूत सामन्त। ये सम्राट मुहम्मद शाहके राजत्व समयमें मालवदेशके शासनकर्त्ता थे। १७२८ ई०को पेशवा बाजीरावके साथ लड़ाईमें इनकी मृत्यु हुई। महाराष्ट्र इतिहासमें ये गिरिधर बहादुर नामसे प्रसिद्ध हैं

गिरिधातु (सं० पु०) गिरेर्धातुः, ६ तत्। उपधातुविशेष, गैरिक, गेरूमट्टी।

गिरिधारण (सं० पु०) श्रीकृष्ण।

गिरिधारी—हिन्दी भाषाके कोई कवि १८४७ ई०को बैजवाड़ेके [illegible] ग्राममें उनका जन्म हुआ। यह जातिके ब्राह्मण थे।

गिरिधारी भाट—हिन्दी भाषाके एक कवि। वह झांसी जिलाके मऊ-रानीपुरामें रहते थे १८८३ ई०को यह विद्यमान थे।

गिरिधि(डी)—छोटा नागपुरके हजारीबाग जिलान्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० २३° ४४ तथा २४° ४९' उ० और देशा० ८५° ३८ एवं ८६° ३४ पू०के मध्य अवस्थित है। ईष्ट-इण्डियन रेलवे कम्पनीकी मधुपुर शाखा गिरिडी तक फैली है। यहां उक्त कम्पनीका एक ष्टेशन है। गिरिडीके निकट करहरवाड़ी नामक स्थानमें कोयलेकी एक खान है। इस उपविभागका भूमिपरिमाण २००२ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः ४१७७८७ है यहां ३४०८ ग्राम और प्रायः मनुष्योंके गृह हैं। उस उपविभागमें एक दीवानी और दो फौजदारी अदालत एवं

उसके अन्तवर्त्ती पचम्बा, गवान, करग्दी, कोदर्म और दुमुर्ही स्थानोंमें एक एक थाना है। यहांकी जलवायु उत्तम होनेके कारण बहुत मनुष्य स्वास्थ्यकी उन्नतिके लिये यहां आकर रहते हैं। यह उपविभाग गिरिडी नामसे भी मशहूर है।

गिरिध्वज (सं० पु०) गिरिनाशकं ध्वजं वज्ररूपं यस्य बहुव्री०। इन्द्र।

गिरिनख (सं०पु०) गिरिणख देखो।

गिरिनगर (सं० क्ली०) गिरनार पर्वत पर बसा हुआ एक नगर यह स्थान जैनियोंका पवित्र तीर्थ माना गया है।

"गिरिनगरमनय: दृष्टं रमहेन्द्रमालिन्यामर तक्षा॥" (वृहत्सं० १४ अ०)

गिरिनदी (सं०स्त्री०) गिरिनदी देखो।

गिरिनद्यादि (सं० पु०) गिरिनदी आदिर्यस्य गणस्य बहुव्री। गिरिनदी, गिरिनख, गिरिनड, गिरिनितम्ब, चक्रनदी, चक्रनितम्ब, तूर्यमान प्रभृति शब्दको गिरिनद्यादिगण कहते हैं।

गिरिनन्दिनी (सं० स्त्री०) गिरेर्हिमालयस्य नन्दिनी। १ पार्वती, दुर्गा। २ गङ्गा। ३ नदी।

"कनिष्ठगिरिनन्दिनीम्टसुरद्रुमालिनी।" (रसगङ्गाधर)

गिरिनाथ (सं० पु०) महादेव, शिव।

गिरिनितम्ब (सं० पु०) गिरिणितम्ब देखो।

गिरिनिम्नगा (सं० स्त्री०) गिरिसम्भवा निम्नगा। पार्वतीय नदी, पहाड़से निकली हुई नदी।

गिरिनिम्ब (सं० पु०) गिरिसम्भूतः निंबः। १ महानिम्ब वृक्ष, बकायनका गाछ। २ कैटर्यनिंब।

गिरिपत: (सं० पु०) महानिंब, बकायन।

गिरिपाटिका (सं० स्त्री०) कपिकच्छु।

गिरिपीलु (सं० पु०) गिरिसम्भूतः पीलुः। परूषकवृक्ष, फालसा।

गिरिपुर (सं० क्ली०) आनर्त्त देशान्तर्गत एक नगर।

आनर्त्त देखो।

गिरिपुष्पक (सं० क्ली०) गिरिजातं पुष्पकं। शैलज, पथरकोड़ नामका एक पौधा।

गिरिपृष्ठ (सं० क्ली०) गिरेः पृष्ठं, ६-तत्। पर्वतके ऊपरका भाग।

गिरिप्रस्थ (सं० पु०) गिरेः प्रस्थः, ६-तत्। पर्वतके उपरिस्थ समतल स्थान।

गिरिप्रपात (सं० पु०) गिरेः प्रपातः ६-तत्। पर्वतके भृगु, उच्चस्थान।

गिरिप्रिया (सं० स्त्री०) गिरिः प्रियोऽस्याः, बहुव्री०। चमरीगव्या, सुरागाय।

गिरिबान्धव (सं० पु०) गिरिर्बान्धवः बन्धुर्यस्य, बहुव्री०। शिव, महादेव।

गिरिवृध (सं० त्रि०) पहाड़के उपर रहनेवाला, पहाड़ पर जन्मा हुआ।

गिरिवृध्रा (सं० स्त्री०) गिरिवृध्र इव यस्याः बहुव्री०। ततः टाप्। जल, पानी।

"गिरिवृध्रा उता च पः।" (शतपथब्राह्मण ७।४।२।१८)

गिरिभट्ट—संस्कारकौमुदी नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गिरिभिद् (सं० पु०) गिरिं भिनत्ति भिद्-क्विप्। १ वृक्षविशेष, पाषाणभेदक। २ इन्द्र। (त्रि०) ३ पर्वतके विदीर्ण करनेवाला। (कात्या० श्रौ० २४।१४।२०)

गिरिभू (सं० स्त्री०) गिरौ भवति भू-क्विप्। १ पर्वतमें उत्पन्न क्षुद्र पाषाणभेदक। २ पार्वती। ३ गङ्गा। गिरेः भूः, ६-तत्। ४ पर्वतभूमि, पहाड़ी जमीन।

(आर्यासप्तशती ६१५)

(त्रि०) ५ पर्वतोत्पन्न, जो पर्वतमें उत्पन्न हो।

गिरिभेद (सं० पु०) गिरिं भिनत्ति गिरि-भिद् अण्। पाषाणभेदकवृक्ष, हिमसागर।

गिरिमनोहर (सं० पु०) आरग्वधवृक्ष, अमलतास।

गिरिमल्लिका (सं० स्त्री०) गिरिजाता मल्लिकेव मध्यपदलो०। कूटजवृक्ष, कौरैया।

गिरिमान (सं० त्रि०) गिरेरिव मानं परिमाणं यस्य, बहुव्री०। १ जिसका परिमाण पर्वतके सदृश हो। (पु०) २ हस्ती, गज।

गिरिमाल (सं० पु०) गिरौ माल सम्बन्धो ऽस्य बहुव्री०। वाधकवृक्ष।

गिरिमालपञ्चक (सं० क्ली०) आरग्वधादि पाचन।

गिरिमृत् (सं० स्त्री०) गिरेर्मृत्, ६-तत्। १ गैरिक, गेरूमट्टि। २ पार्वतीय मृत्तिका, पहाड़ पर की मट्टी।

गिरिमृद्भव (सं० क्ली०) गेरूमट्टी।

गिरिमेद (सं० क्ली०) गिरेर्मेद इव मारोऽस्य बहुव्री०। विटखदिर, बबूलवृक्ष।

गिरियक (सं० पु०) गिरिं याति गिरि-या-क ततः संज्ञार्थे कन्। गेरुक, एक प्रकारकी जड़।

गिरिया—बङ्गालके मुर्शिदाबाद जिलेमें जङ्गीपुर सब डिविजनका रणक्षेत्र। यह अक्षा० २४° ३०' उ० और देशा० ८८° ६' पू०में सूतीसे दक्षिण अवस्थित है। १७४० ई०को अलीवर्दी खाँ तथा नवाब सरफराज खाँ और १७६३ ई०को नवाब मीर कासिम और ईष्ट इण्डिया कम्पनीसे वहां बड़ी लड़ाई हुई।

गिरियाक (सं० पु०) १ गिरियक देखो।

२ पटना जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा० २५° २' उ० और देशा० ८५° ३२' पू०में पञ्चान नदीके उपकूल पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः २४३ है। इस नदीके पूर्व तीर ग्रामके निकट एक पर्वतके उत्तर पूर्वमें बहुतसी प्राचीन कीर्त्तियोंके ध्वंसावशेष देखे जाते हैं। यहां १२ फुट प्रशस्त एक प्रस्थरमय रास्ता आज तक भी वर्तमान है जिस रास्तेसे गाड़ी घोड़ आदि आसानीसे आ जा सकते हैं। इस क्षुद्र पर्वतके पश्चिम भाग पर प्रस्तर निर्मित बहुत स्तम्भ और मन्दिरके भग्नावशेष दृष्टिगोचर होते हैं। पर्वतके पूर्व भागमें ४५ फुट चतुरस्र एक वेदी है जो "जरासन्ध चबूतरा" नामसे विख्यात है। इस वेदीके ऊपर ५५ फुट ऊंचाईका एक इष्टकनिर्मित स्तम्भ है जिसकी परिधि ६८ फुट है। बहुतोंका कहना है कि प्राचीन समयमें इस स्थान पर जरासन्धका प्रमोदगृह रहा। प्रवाद है कि भगवान् श्रीकृष्ण जरासन्धसे लड़नेके लिये इसी स्थान पर नदी पार हुए थे, इसी कारण आजकल भी बहुत मनुष्य कार्त्तिक मासमें इस नदीमें स्नान करने आते हैं। उक्त पञ्चान् नदीके दूसरे पारमें गिरियाक पर्वत है। इस स्थान पर जरासन्धकृत बहुतसी कीर्त्तियोंके ध्वंसावशेष देखे जाते हैं।

गिरिरम्भा (सं० स्त्री०) गिरौ समुत्पन्ना रम्भा मध्यपदलो०। गिरिकदली, पहाड़ी केला।

गिरिराज (सं० पु०) गिरिषु राजते राज-क्विप् ७-तत्। १ पर्वतश्रेष्ठ ऊंचा पहाड़। २ हिमालय।

गिरिराज—युक्तप्रदेशके मथुरा जिलेमें गोवर्धननगरका निकटस्थ पर्वत। यह अक्षा० २७° २८' तथा २७° ३१' उ० और देशा० ७७° २६' तथा ७७° २८' पू०के मध्य पड़ता है। इसका संस्कृत नाम अन्नकूट है।

गिरिवर्तिका (सं० स्त्री०) गिरिसमुत्पन्ना वर्तिका मध्यपदलो०। पार्वतीय पक्षिविशेष।

गिरिवासी (सं० पु०) गिरिं वासयति सुरभी करोति गिरि-वासि-णिनि। १ हस्तिकन्द वृक्ष २ पर्वतवासी।

गिरिव्रज (सं० क्ली०) गिरीणां पञ्चानां व्रजो यत्र, बहुव्री०। १ मगध देशान्तर्गत एक प्राचीन नगर। कुशात्मज वसुने यह नगर स्थापन किये रहे। यह नगर गङ्गा तथा शोण नदीके सङ्गमस्थल पर अवस्थित था। जरासन्धके समय यह मगधकी राजधानी थी। यह चारों ओर वैभार, वृषभ, ऋषिगिरि तथा चैत्यक नामक पर्वतसे घिरे रहनेके कारण शत्रुओंका वहां जाना असम्भव था। (भारत सभा २० अ०) राजगृह शब्दमें इसका विस्तृत विवरण देखो।

२ केकयराज अश्वपतिकी राजधानी। केकय देखो।

गिरिश (सं० पु०) गिरौ शेते गिरि-शी-ड, यद्वा गिरिरस्त्यस्य वसतित्वेन गिरि अस्त्यर्थे श। (लोमादि पामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः। पा ५।२।१००) अथवा गिरिं तत्सदृशं कर्माशयं श्यति तनूकरोति गिरि-शो-ड। शिव।

गिरिशचन्द्र घोष—कलकत्ता नगरके बागबाजारमें वसुपाड़ापल्लीस्थ सम्भ्रान्त कायस्थ कुलोद्भव स्वर्गीय नीलकमल घोषके मंझले पुत्र। सुप्रसिद्ध नाट्याचार्य तथा एक महाकवि।

१८४४ ई० (फाल्गुन शुक्लाष्टमी सोमवार)को इनका जन्म हुआ। पूर्ववर्ती कई एक कन्याओंके पीछे पुत्र होनेसे गिरिशचन्द्रका अत्यन्त आदर था। स्थानीय पाठशालामें प्राथमिक शिक्षा पूरी करके यह ७वर्षकी अवस्था पर गौरमोहन आढ्यकी ओरिएण्टल सेमिनारीमें भर्ती हुए वहां बङ्गला विभागमें थोड़े दिनमें ही पारदर्शिता लाभ करके इन्होंने अंगरेजी विभागमें योग दिया और शीघ्रही शिक्षकोंके प्रियपात्र बन गये। कुछ दिनमें ही उनके पिता और माता दोनोंका मृत्यु हुआ। उस समय इनका वयस १४ वर्ष मात्र था। संसारमें अन्य कोई पुरुष अभिभावक जैसा न रहनेसे १७ वर्षकी उम्रमें ही प्रवेशिका श्रेणी पर्यन्त पाठ करके उन्हें विद्यालयका संस्रव छोड़ना पड़ा। इसी बीच १६ वर्षकी अवस्थामें उनका विवाह हो चुका था। परन्तु यह लिखने पढ़नेमें लगे

रहे। अपने 'सब जज' भाई व्रजविहारी सोमके कहनेसे वह किताबके कोड़े बन गये, विश्वविद्यालय परीक्षाको छोड़ अपने मनकी पुस्तक पढ़ने और बराबर ज्ञानसञ्चय करने लगे। अंगरेजी कविताका मातृभाषामें अनुवाद करनेकी क्षमता इनमें बहुत थी। अन्यान्य विषयोंकी अपेक्षा साहित्य, इतिहास और दर्शन इन्हें अधिक प्यारा था। मरते समय तक इनकी ज्ञानार्जनप्रवृत्ति प्रबल रही। यह अच्छे नाटककार तथा अभिनेता भी थे। किन्तु नाट्यालयके असंख्य कार्योंमें वह जब कभी भी समय पाते, कोई न कोई पुस्तक वा सामयिक पत्रिकादि पढ़नेमें लग जाते थे। गिरिशचन्द्र बहुत वर्ष तक एशियाटिक सोसाइटीके सदस्य रहे। शहरमें यह कई पुस्तकालयोंका चन्दा देते थे। बाल्यकालसे ही मातृभाषा पर इन्हें बड़ा अनुराग था। पितामहीसे किस्सा सुनना और रामायण तथा महाभारत पढ़ना इनको बहुत अच्छा लगता था। वैष्णव भिक्षुकोंका धर्मसङ्गीत उनके मनमें अमृतधारा बहाता था। कवि होनेकी वासना उनके मनमें अल्प वयसको ही उठी थी

२० वर्षकी उम्रमें गिरिशचन्द्रने एटकिनसन टिलटन कम्पनीकी उम्मीदवारीकी और थोड़े दिन बाद ही हिसाब किताबमें होशियार हो गये। फिर उन्होंने कितने ही सौदागरी दफतरोंमें खजाञ्चीका काम किया। वहां भी मौका मिलने पर यह पढ़ने लिखनेसे चूकते न थे। १८६७ ई०को २४ वर्षकी उम्रमें पहले इन्होंने शौकीनोंकी एक नाटकमण्डली बनायी उसमें माइकेल मधुसूदन दत्तका 'शर्मिष्ठा' नाटक अभिनयके लिये मनोनीत हुआ। इन्होंने उसके जो गाने बनाये, पहले छपाये थे। उसके बाद नाटक लिखनेकी ओर यह झुके। १८६८ ई०को इन्होंने अवैतनिक नाट्यसम्प्रदाय (Baghbazar Amateur Theatre) बागबाजारमें प्रतिष्ठित किया। इन्हींकी तालीमसे 'सधवाकी एकादशी' खेल हुआ। कलकत्तेके कितने ही गण्यमान्य सज्जनोंने उसकी बड़ी प्रशंसा की थी। फिर 'लीलावती' आदि दूसरे अभिनय होने पर इनकी सुख्याति उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। इन्होंने 'मृणालिनी', 'मेघनादबध' 'विषवृक्ष' आदि कई अच्छे अच्छे पुस्तक वा नाटक लिखे हैं। इस समय तक वह आफिसमें बुककीपरी (बही खातेका काम) करते रहे। फिर भागलपुर गये, वहां भी यह कविता बनाते थे। फिर कलकत्ता आ करके पार्कर कम्पनीमें १५०) रु० मासिक पर नौकरी की। किन्तु इस ओर उनकी मति पलटी और उन्होंने नामके लिये डेढ़ सौ की नौकरी छोड़ सौ रुपये माहवारकी थियेटरकी सेवा मंजूर कर ली। इस समयसे वह एक बारगी ही नाट्यालयके काम काजमें पड़ गये और नयी नयी चालके नाटक बनाने लगे। 'रावणवध' प्रमुख इनके बनाये नाटक सुप्रसिद्ध हैं।

गिरिशचन्द्र घोष।

१८८३ ई०को उन्होंने कलकत्तेकी बीडन ष्ट्रीट पर विख्यात 'ष्टार थियेटर' खड़ा किया। इन्हींके सदुद्योगसे नाट्यशाला धर्मप्रचारका स्थान जैसी परिगणित हुई और जन साधारणकी श्रद्धा उस पर आकर्षित होने लगी। 'विल्वमङ्गल' आदि ग्रन्थोंने उन्हें अमर जैसा बना रखा है। यह कोई ५० वर्ष नाट्य जगत्‌में पड़े रहे। इन्होंने कलकत्तेकी प्रायः सब नाट्यशालाओंमें काम किया था नाट्यकलाकी उन्नति करना उनके जीवनका व्रत और एकमात्र लक्ष्य रहा।

कई पौराणिक नाटक लिखने पीछे यह सामाजिक खेल बनाने लगे। इन्होंने प्रायः सीता वनवास, दक्षयज्ञ, चैतन्यलीला, निमाई संन्यास, बुद्धदेवचरित, विल्वमङ्गल, रूपसनातन, नसीराम, प्रफुल्ल, हारानिधि, कालापहाड़, करम तिवारी, फणीमणि, बलिदान, शोराज-उद्-दौला, मीरकासिम, छत्रपति शिवाजी, अशोक, गृहलक्ष्मी आदि अस्सी नाटक, नाटिका प्रहसन लिपिबद्ध किये हैं। इनके निम्न लिखित कई एक भागोंमें बांट सकते हैं— १ पौराणिक, २ ऐतिहासिक, ३ सामाजिक इत्यादि। इनके बनाये गीत भले बुरे सब लोग गाया करते हैं। गिरिशचन्द्रका उपाधि नाट्यसम्राट है।

यही नहीं कि उन्होंने नाट्य जगत्‌में ही परमोच्च पद पाया, वरन् प्रतिभाशाली व्यक्ति-जैसा नाम भी खूब कमाया। यह समाजके परम हितैषी, उपदेष्टा और पथप्रदर्शक थे। श्रीरामकृष्ण देवके संस्रवसे उनकी प्रतिष्ठा और भी बढ़ गयी। शेक्स पीयरका 'माक बाथ' बङ्गलामें अनुवाद करके इन्होंने जो कमाल किया है, अंगरेज लोग भी दांतके नीचे उंगली दबाते हैं। विज्ञानकी चर्चामें भी यह बहुत दिन लगे रहे। अपने महल्लेमें वह होमिओपाथिक चिकित्सक जैसे प्रसिद्ध थे।

१८१२ ई०८ फरवरीको उन्होंने परलोक गमन किया

गिरिशचन्द्रराय—बङ्गाल प्रान्तीय नवद्वीपाधिपति राजा कृष्णचन्द्र रायके प्रपौत्र और ईश्वरचन्द्रके पुत्र। १८०२ ई०को पिताके मरने पर इनका वयस षोड़श वर्ष मात्र रहा। उसी समयसे इनके हृदयमें धर्मज्ञान बढ़ने लगा। वयः प्राप्त होने पर कुछ काल विषयकार्य पर्यालोचना करके इन्होंने कर्मचारियोंको कार्य भार सौंपा। अपने आप धर्मानुष्ठानमें प्रवृत्त हुए और प्रथमतः नवद्वीपमें गङ्गा किनारे तृणाच्छादित कुटीरमें अवस्थान करके अनेक पुरश्चरण किये। कृष्णनगरमें आनन्दमयी काली और आनन्दमय शिवका मन्दिर इन्होंने बनाया था। फिर इन्होंने उक्त मन्दिरोंके व्ययनिर्वाहार्थ कितनी ही निष्कर भूमि दे डाली। कुछ समय पीछे इन्होंने किसी रजनीको स्वप्नमें देखा, मानो कोई देवता उससे कहता था—"हम नवद्वीपके भागीरथीतीर पर मगर्भमें रहते हैं, हमको अपने निकेतनमें ले जा करके स्थापन करो।" दूसरे दिन इन्होंने अमात्यों और कर्मचारियोंके साथ सुरधुनी तीर पर उपस्थित हो करके कोई निर्दिष्ट स्थान खोदनेको आदेश किया था। इधर उधर खोदते किसी वालुकामय भूखण्डके ३ तीन हाथ नीचे एक गोपालमूर्ति देख पड़ी राजा बड़े समारोहसे इस विग्रहको अपने घर ले गये और प्रतिष्ठित करके 'नवद्वीपनाथ' कहने लगे। उनके लिये इन्होंने एक मकान दान किया। फिर यह उनकी नित्यनैमित्तिक क्रिया आदिमें अपर्याप्त अर्थ व्यय करने लगे। इसी अमितव्ययिताके दोष और कर्मचारियोंकी कुमन्त्रणासे दिन दिन उनकी सम्पत्ति घटने लगी, मौरूसी जमीन्दारीके ८४ परगनोंमें ७ परगने और थोड़ीसी निष्कर भूमि ही बच गयी। प्रथमा महिषीसे पुत्रादि नहीं हुए। माताका अनुरोधसे उन्होंने १८०८ ई०को फिर दारपरिग्रह किया और द्वितीय पत्नी भी पुत्रवती न होनेसे १८१८ ई०में शास्त्रोक्त विधिके अनुसार श्रीशचन्द्रको गोद लिया। उसी समय विलक्षण अर्थाभाव रहते भी इन्होंने नवद्वीपमें दो वृहत् मन्दिर प्रस्तुत करके एकमें भवतारिणी नामसे पाषाणमयी कालीमूर्ति और दूसरेमें भवतारण नामक शिवकी प्रकाण्डमूर्ति प्रतिष्ठा की। १८४१ ई०को ५५ वत्सर वयसमें इन्होंने मानवलीलाको संवरण किया।

यह अति सुश्री रहे और फारसी तथा संस्कृतमें अनर्गल बातें कर सकते थे। इनमें दया तथा धर्मनिष्ठा यथेष्ट थी। सङ्गीतमें इन्हें विशेष व्युत्पत्ति रही। यह शास्त्रालाप और रहस्यमें आनन्द अनुभव करते थे। इन्होंने अपनी सभाके कृष्णकान्त भादुड़ी नामक किसी ब्राह्मणको रससागर उपाधि दिया। इन्हींके आदेश पर लक्ष्मीकान्त न्यायभूषणकर्तृक "रथपद्धति" रचित हुई।

गिरिशन्त (सं० पु०) शं सुखं तनोति शं तन ड शन्तः गिरौस्थितः शन्तः मध्यपदलो०, यद्वा गिरि वाचि मेघे वा स्थितः शन्तः अलुक्स०, अथवा अम गतौ अमति गच्छति जानाति अम क्तः अन्तः सर्वज्ञः इतार्थः गिरिशश्चासौ अन्तश्चेति कर्मधा०। शिव। (वाजसनेयस० १६।२)

गिरिशय (सं० पु०) गिरौ कैलासे शेते शी-अच्। शिव। (वाजसनेयस० १६।२)

गिरिशायी (सं० पु०) पार्वतीय पक्षि, पहाड़की चिड़िया।

गिरिशाल (सं० पु०) गिरौ शालते शोभते शाल। अच्। एक प्रकारका बाज़ पक्षी। (सुश्रुत)

गिरिशालाह्न (सं० पु०) प्रनुदपक्षी।

गिरिशालिनी (सं० स्त्री०) गिरिं शालयति शोभयति गिरि-शाल-णिच-णिनि, ततो-ङीप्। अपराजिता लता। (वामनपुराण)

गिरिशेखर (सं० पु०) महावकुल

गिरिशृङ्ग (सं० पु०) गिरेः शृङ्गमाकारेण अस्त्यस्य गिरि-शृङ्ग-अच्। १ गणेश। गणेशके शुंड़ उत्तोलन करने पर पर्वतशृङ्गके आकारके जैसे मालूम पड़ता है। इस लिये गणेशका नाम गिरिशृङ्ग पड़ा। (क्ली०) गिरेः शृङ्गं, ६ तत्। २ पर्वतशिखर।

गिरिषद् (सं० पु०) गिरौ सीदति सद-क्विप्-षत्वं। महादेव, शिव।

गिरिष्ठा (सं० त्रि०) गिरौ तिष्ठति गिरि-स्था क्विप् षत्वञ्च। १ पर्वतस्थायी। (ऋक् १।१५४।२) (पु०) २ महादेव, शिव।

गिरिसर्प (सं० पु०) नितास०। दर्वीकर जातीय सर्प-विशेष।

गिरिसार (सं० पु०) गिरेः सारः, ६-तत्। १ लौह, लोहा। २ शिलाजतु, शिलाजीत। ३ वङ्ग, राङ्गा। ४ मलयपर्वत।

गिरिसारमय (सं० त्रि०) गिरिसारस्य विकारः गिरिसार-मयट्। गिरिसारसे बनाया हुआ।

गिरिसिन्दुक (सं० पु०) कृष्णनिगुण्डी।

गिरिसुत (सं० पु०) गिरेः सुतः, ६-तत्। मैनाकपर्वत।

गिरिसुता (सं० स्त्री०) गिरेः सुताः, ६-तत्। १ पार्वती। २ गङ्गा।

गिरिस्रवा (सं० स्त्री०) गिरेः स्रवति स्रु-अच् टाप्। पार्वतीय नदी, पहाड़से निकली हुई नदी।

गिरिस्वेदः (सं० पु०) शिलाजतु, शिलाजीत।

गिरिह्वा (सं० स्त्री०) गिरिं वालमूषिकाकर्णं, ह्वयति स्पर्द्धते तदाकारेण ह्वे-क-टाप्। १ अपराजिता लता २ वालमूषिका, चुहिया।

गिरी (हिं० स्त्री०) १ किसी बीजके भीतरका गूदा। २ "गिरि" देखो। ३ "गरी" देखो।

गिरीन्द्र (सं० पु०) गिरिरिन्द्र इव। १ हिमालय पर्वत। गिरेरिन्द्र, ६-तत्। २ महादेव, शिव।

गिरियक (सं० पु०) गिरियक निपातनात् दीर्घत्वं। गिरियक देखो।

गिरीश (सं० पु०) गिरेः कैलासस्य ईशः, ६ तत्। १ कैलासपति, शिव। गिरीणामीशः श्रेष्ठं, ६ तत्। २ हिमालय पर्वत। गिरां वाचां ईशः अधिपति, ६-तत्। ३ बृहस्पति।

गिरेबान (हिं० पु०) गलेमें पहननेका कपड़ेका वह भाग जो गरदनके चारो तर्फ रहता है।

गिरेवा (हिं० पु०) १ छोटी पहाड़ी। २ चढ़ाईकी रास्ता।

गिरेश (सं० पु०) १ ब्रह्मा। २ विष्णु।

गिरो (फा० वि०) रेहन, बंधक।

गिरोड़—बरार प्रान्तके वर्धा जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २०° ४० उ० और देशा० ७८° ८' ३०" पू०में वर्धा शहरसे ३७ मील दक्षिणपूर्वको अवस्थित है। इसके निकटवर्ती पर्वतमें शेख ख्वाजा फरीद पीरका मकबरा है। स्थानीय हिन्दू और मुसलमान भक्त सर्वदा वहां जाया आया करते हैं। धार्मिक फरीद ३० वत्सरकाल फकीरके वेशमें भारतके नाना स्थान परिभ्रमण करके १२४४ ई०को वहां जा बसे थे। इनके सम्बन्धमें अनेक आश्चर्य-घटनाएं सुन पड़ती हैं। पांच गांवोंकी आमदनीसे इस मकबरेका खर्च चलता है। यहां प्रति सप्ताह बाजार लगता है।

गिर्गिट (हिं० पु०) गिरगिट देखो।

गिर्जा (फा० पु०) गिरजा देखो।

गिर्द (फा० अव्य०) आसपास, चारों ओर।

गिर्दावर (फा० पु०) १ घूमनेवाला, दौरा करनेवाला। २ कामकी देख भाल करनेवाला।

गिर्याह्वा (सं० स्त्री०) गिरिं वालमूषिकाकर्णं आह्वयति स्पर्द्धते तदाकारेण गिरि-आ-ह्वे-क-टाप्। अपराजिता।

गिर्वणस (सं० पु०) गिरा वाचा वन्यते गिर-वन कर्मणि असुन् णत्वं दीर्घाभावश्च छन्दसः। १ देवविशेष। (त्रि०) गिरा वनन्ति स्तुवन्ति गिर वन कर्त्तरि असुन्। २ स्तव-कर्त्ता, स्तव करनेवाला।

गिर्वणस्यु (सं० त्रि०) १ जो स्तव करता है।

गिर्वन् (सं० स्त्री०) गिरां वनति स्तौति। स्तव करने-वाली स्त्री।

गिर्वाहस् (सं॰ त्रि॰) गिरा स्तुति वाचा उह्यते गिर्-वह-असुन् निपातनात् नोपपदस्य दीघत्वं । स्तुति वाक्य द्वारा जिसका आह्वान किया जाय इन्द्रादि देवगण ।

गिल (सं॰ त्रि॰) गिलति भक्षयति गिल-क । १ भक्षक (पु॰) २ मगर । ३ जंबीरी नीबू ।

गिल (हिं॰ स्त्री॰) १ मिट्टी । २ गारा ।

गिलकार (फा॰ पु॰) वह मनुष्य जो गारा वा पलस्तर करता है ।

गिलकारी (फा॰ स्त्री॰) गारा लगाने या पलस्तर करनेका काम ।

गिलकिया (हिं॰ पु॰) एक तरहकी तरकारी, नेनुवां ।

गिलगिट—काश्मीर राज्यके अन्तर्गत एक जिला और उपत्यका । यह अक्षा॰ ३५° ५५' उ॰ और देशा॰ ७४° २३' पू॰में समुद्रपृष्ठसे ४८४१ फुट उंचे अवस्थित है । यह हिन्दूकुश पर्वतके दक्षिण-उत्तर दिग् पर अवस्थित है । यसीन या गिलगिट नदी उपत्यकाका समस्त स्थान परिभ्रमण करके बुञ्जी नगरके ६ मील उत्तर सिन्धुनदसे जा करके मिल गयी है । पहले इस नगरमें ८ दुर्गोंसे परिवेष्टित समृद्धिशाली वासभूमि रही । यसीन और चितालवाले राजाओंके परस्परमें लड़नेसे यह दुर्ग विध्वस्त हुए और उसीके साथ समस्त गिलगिट उपत्यका सिखोंके अधिकारमें चली गयी । यह जिला प्रायः ४० मील विस्तृत है । इसका सदर गिलगिट शहर सिन्धुनदसे २४ मील दूर है । मध्यस्थानकी उर्वरा और जलवायु शुष्क और स्वास्थ्यकर है । पानी कम बरसता है ।

इस स्थानका प्राचीन नाम सर्गिन बदल करके पीछेको गिलित हो गया और सिखोंका अधिकार बढ़ने पर गिलगिट पुकारा जाने लगा । आज भी शीन जातीय स्थानीय अधिवासी उसको 'सर्गिनगिलित' कहते हैं । प्राचीन प्रस्तरमन्दिर और बौद्ध कारुकार्यका ध्वंसावशेष देखनेसे मालूम होता है कि ई॰ १५वीं शताब्दीसे पहले यहां हिन्दू राजाओंका राजत्व रहा लोग उन्हें 'राम' वा 'साही राय' उपाधि द्वारा सम्बोधन करते थे । हिन्दू राजवंशके अन्तिम राजाका नाम श्रीवहस था । किसी मुसलमान आक्रमणकारीने युद्धमें उनको निहत करके तदीय कन्याका पाणिग्रहण किया । इसी कन्याके वंशजात पुत्र 'एखने' वंशो जसे अभिहित हुए हैं । इस समय एखने वंशीय पुत्रगत वा उपाधिधारी किसी राजाका नाम नहीं मिलता

राजा श्रीभट्टतके समयको चित्राल, यसीन, तङ्गीर, दरेल, चिलास, गोर, असतोर, हुनजा, नागर और हरमोज प्रभृति स्थान गिलगिट राज्यके ही अन्तर्गत थे ।

इस पार्वत्य प्रदेशमें असंख्य उपत्यकाएं और गिरिशृङ्ग दृष्ट होते हैं । इनमें कोई १८०००, कोई २००००, कोई २२००० और कोई २४००० फुट ऊंचा है । किसी पर्वतमें ७०००० फुटके ऊपर भयानक जङ्गल है । इस वनके निम्नदेशमें पशमवाले असंख्य जङ्गली मेष चरते देख पड़ते हैं । इसी पहाड़में ११००० फुट ऊंचे बहुत ज्यादा जङ्गली प्याज पैदा होता है । चीना लोग इस पर्वतको शृङ्गलिङ्ग कहते हैं । गिलगिटमें बहुतसी छोटी छोटी नदियां प्रवाहित हैं । रकीपोश पर्वतसे निकली हुई नदीमें स्वर्ण मिलता है । पहाड़ी लोग शीतकालको उससे सोना निकाला करते हैं ।

गिलगिट नगर और सिन्धुनदके मध्यवर्ती स्थानमें बागरोत उपत्यका है । उसमें समृद्धिशाली अनेक ग्राम बसे हुए हैं । यहां सोना और खनिज रत्नादि पाये जाते हैं । गिलगिटके प्राचीन राजा शत्रु कर्तृक आक्रान्त होने पर उसी उपत्यकामें जा करके आत्मरक्षा करते थे । आजकल सभी अधिवासी शीनवंशीय हैं । यह लोग शीन भाषामें ही बात चीत करते हैं ।

गिलगिट नगरसे १ मील दक्षिणको हुनजा नदी जा करके गिलगिट नदीमें मिली है । इसीके किनारेसे उत्तरको चापरोत जिला है । यहां चापरोत ग्राममें एक दुर्ग बना हुआ है । यह किला नदीसङ्गम पर अवस्थित और शत्रुकर्तृक दुर्भेद्य है । स्थलपथ भिन्न इसमें दूसरी ओरसे घुसनेकी राह नहीं है । समय समय पर यह गिलगिल हुनजा और नागर राजाओंके अधिकारमें रहा, अब काश्मीरराजका अधिकारभुक्त है ।

उत्तर दिकसे रकीपोश पर्वतके अभिमुख टकटकी लगा करके देखनेसे मालूम पड़ता, मानो किसी नदीके किनारेसे क्रमान्वयमें ऊर्ध्वाभिमुखको पहाड़ उठा है । यह पार्वतीय दृश्य अति मनोरम है । चसीन, पोनियाल

और गिलगिट उपत्यकावासी जिस वंशसे उत्पन्न हुए, हुनजा और नागरके लोग भी उसी वंशसे सम्बन्ध रखते हैं। यह शीया सम्प्रदायभुक्त मुसलमान हैं। इनकी जातिका सरदार 'थुम' कहलाता है। थुमसरदार मगलोत और गरकश नामके २ यमज भ्राताओंके वंशधर हैं। ई० १५वीं शताब्दीके शेष भागको यह दोनों भाई विद्यमान थे। नागरका किला और थुमका घर मतमोल नामक नदीके कूलमें अवस्थित है। गिलगिटके राजवंशीय राजाओंके अधिकार कालको थुम सरदारने उनकी अधीनता मानी थी। १८६८ ई०को वह काश्मीरराजके अधीन हो गये। नागर सरदार प्रति वत्सर काश्मीरराजको करस्वरूप २१ तोला सोना देते हैं। इस पार्वत्य प्रदेशके उत्तर दिक्‌को 'छोटा गुजल' नामक बड़ो बड़ो प्रामसे घिरो हुई एक जगह है। यहां गोमेषादिके साथ एक भ्रमणकारी जाति रहती है। इसी राज्यके उत्तर पूर्वको पकपू और शचपू नामक दो जातियां रहती हैं। इनकी संख्या १० हजारसे अधिक होगी। यह हुनजा सरदारको वार्षिक कर देते हैं। यह देखनेमें अतिसुन्दर हैं। गात्रका वर्ण तांबे जैसा लाल्हा होता है। हुनजाके उत्तरको सिरीकोल नामक पार्वतीय राज्य है। हुनजा सरदारवंश 'अएस' अर्थात् स्वर्गीय कहलाता है। पूर्वका यह भी स्थाही राजाओंके अधीन थे। हुनजा ८ जिलोंमें विभक्त है और प्रत्येक जिलेमें एक एक किला बना है।

गिलगिटके शीन लोग हुनजा और नागरके अधिवासियोंको एशकुन जातीय बतलाते हैं। परन्तु शेषोक्त देशवासी अपनेको बरीस जातीय जैसा मानते हैं। सीन लोग इसलाम धर्ममें दीक्षित होते भी खूब गोभक्ति दिखलाते हैं। कट्टर शीन तो यहां तक कि जिस पात्रमें गोदुग्ध भी रखा जाता, नहीं छूते। बछड़ा जितने दिन दुध पीता, वह साधारणके लिये अस्पृश्य ठहरता है। इसीसे प्रसूत होते ही सवत्सा गाय एशकुनोंके पास भेज देते और वत्सके मातृस्तन त्याग करते ही फिर उसको उनके पाससे वापस मंगा लेते हैं। यही सब जातिगत आचारव्यवहार आलोचना करनेसे ध्यानमें आता शायद पूर्वकालको दक्षिण देशके किसी हिन्दू राजाने सिन्धुनद पार हो उसी सुन्दर देशमें जा करके हिन्दूकुश प्रान्तमें अपना राज्यस्थापन किया था।

१७६० ई०को अहमद शाह अब्दालोने जब मालेसे आक्रमण किया, काश्मीरियोंका एक दल जा करके गिलगिटमें बस गया। आज उन्हें 'कशारू' कहते हैं। काल परिवर्तनके साथ साथ इनका आचार भी बहुत बदला है। यह चित्रालके अधिवासियोंमें बिलकुल मिल जुल गये हैं।

गिलगिट नगरसे १८ मील उत्तरको पोनियाल जिला है। यह प्रायः २२ मील बढ़ करके चसीन राज्यकी सीमा तक चला गया है। गिलगिटके प्राचीन राजाओंके समयमें इसी जिलेके आयसे राजपुत्रों और कन्याओंका भरण पोषण होता था। १८६० ई०को यह भी काश्मीरराज्यके अधीन हो गया।

पहले हुनजा और गिलगिटके सरदारोंमें हमेशा लड़ाई लगी रहती थी। परन्तु १८६८ ई०को वह विवाद मिट गया। तदवधि थुम सरदार शीनराजको प्रति वर्ष दो घोड़े, २ कुत्ते और ५२॥ तोला सोना कर स्वरूप दिया करते हैं। बलटीत नामक स्थानमें थुमका भवन है।

कोई ३० वर्ष हुए हुनजा नागरोंके साथ वृटिश गवर्नमेण्टका युद्ध छिड़ा था। अब गिलगिट निकटवर्ती अधिवासी वृटिश गवर्नमेण्टका अधीनता स्वीकार करने पर वाध्य हुए हैं। सरकार गिलगिटकी फौज बढ़ाने और उसके चारों ओर पोख्ता किले बनानेमें लगी है।

गिलगिट वजारतमें २६४ गांव हैं। लोकसंख्या प्रायः ६०८८५ है। खेती खूब होती है। गोचरभूमि और पशु कम हैं। ऊनी पट्टू खूब बुना जाता है। नमकका कारबार बड़ा है। भारतको कई सड़कें आयी हैं। डाक और तारका भी भारतके साथ लगाव है। वजीर वजारत गिलगिट वजारतका प्रबन्ध करते हैं। यहां सरकारी फौज रहती है। अंगरेजी पोलिटिकल एजेण्टका भी निवास है। वह वजीरके कामोंकी देख भाल रखते हैं।

गिलगिल (सं० त्रि०) गिलं कुम्भोरं गिलति गिल-गिल-क। १ जो कुम्भोरको भी निगल सकता हो। (पु०) २ गिलग्राह, नक्र, नाक नामक जन्तु।

गिलगिलिया (हिं० स्त्री०) एक तरहको चिड़िया, जो आपसमें बहुत लड़ती है, सिरोही।

गिलगिली (हिं० पु०) घोड़ेकी एक जाति।

गिलग्राह (सं० पु०) गिलं गृह्लाति गिल-ग्रह अण्, उप-पदस०। गिलगिल देखो।

गिलजाई—अफगान जातिकी एक शाखा। इस जातिके मनुष्य अच्छे शूरवीर और साहसी होते हैं। अष्टादश शताब्दीमें इन्होंने युद्धविद्यामें श्रेष्ठता लाभ कर थोड़े समयके लिये स्पाहन नगरका सिंहासन भोग किया था। कन्दाहारके उत्तर काबुल नदीके तीरवर्ती स्थान जलाला-बाद पर्यन्त आज तक भी इनका राज्य फैला हुआ है। १८३८ ई०में अङ्गरेजके काबुल आक्रमण पर इन्होंने दोस्त मुहम्मदको सहायता दी थी।

ये देखनेमें तुर्कियोंके जैसे होते हैं।

गिलट (हिं० स्त्री०) १ सुवर्ण चढ़ानेका काम। २ श्वेत तथा चमकीले रङ्गकी एक प्रकारकी हलकी और कम मूल्यकी धातु।

गिलटी (हिं० स्त्री०) शरीरके मध्य सन्धिस्थानकी ग्रन्थि। कुहनी, बगल, गला और घुटनेमें ऐसी गांठ होती है। २ एक प्रकारका रोग। इसमें सन्धि स्थानकी कोई गांठ फूल जाती अथवा कोई दूसरी ग्रन्थि उत्पन्न हो आती है। रक्त मांसके दूषित हो जानेसे यह रोग जन्म लेता है।

गिलन (सं० क्ली०) गिल भावे ल्युट् गिल गिलने इति निर्द्देशात् न गुणः। ग्रासकरण, निगलना।

गिलन (अं० पु०) एक प्रकारका अङ्गरेजी माप जो प्रायः पांच सेरके बराबर होता है।

गिलबिला (अनु० वि०) अतिशय कोमल।

गिलबिलाना (अनु० क्रि०) स्पष्ट वचन नहीं बोलना।

गिलम (फा० स्त्री०) १ एक तरहका कालीन, जो नरम तथा चिकना होता है। २ अतिशय मोटा तथा कोमल बिछौना।

गिलमिल (हिं० पु०) एक तरहका वस्त्र जो प्राचीन काल-में प्रस्तुत होता था।

गिलसुर्ख (फा० स्त्री०) गेरूमिट्टी।

गिलहरा (हिं० पु०) एक प्रकारका सूती वस्त्र। इस वस्त्रमें मोटी मोटी धारियां होती हैं।

गिलहरी (हिं० स्त्री०) एक किस्मका छोटा जन्तु जो एशिया, युरोप और उत्तर अमेरीकामें पाया जाता है। यह छोटे फल तथा अनाज खाती है और सदा वृक्ष पर रहती है। इसके कान दीर्घ तथा नोकदार होते हैं और पूंछ कोमल बालोंसे ढकी रहती है। इसके पृष्ठ पर बहुत रंगकी धारियां होती है। यह स्वभाव होसे चंचल होती है। एक बारमें यह तीनसे चार तक बच्चे जन्माती है।

गिला—गिला नामक वृक्षका बीज। (Mimosa Scandens)। इसका गुण—रूक्ष, तीव्र और कटु है।

गिला (फा० पु०) १ उलाहना। २ शिकायत, निंदा।

गिलाई (हिं० स्त्री०) गिलहरी देखो।

गिलान (हिं० स्त्री०) ग्लानि, घृणा, नफरत।

गिलाफ (अ० पु०) अच्छे अच्छे कपड़े ढाकनेका वस्त्र, खोल। २ लिहाफ, रजाई। ३ म्यान।

गिलाय (अ० स्त्री०) गिलहरी।

गिलायु (सं० पु०) एक तरहका रोग। इसमें गलेके भीतर एक तरहकी गांठ हो आती है। यह बहुत दुःखद रोग है। इस रोगमें शस्त्र चिकित्सा करानेकी आवश्य-कता पड़ती है।

गिलावा (फा० पु०) ईंट जोड़नेकी गीली मिट्टी, गारा।

गिलास (हिं० पु०) १ पानी पीनेका एक गोल लम्बा बरतन। २ ओलची नामका एक पेड़ जिसका फल बहुत नरम और स्वादिष्ट होता है। इस तरहका फल श्रावण मासमें सिर्फ १५ २० दिन तक फलता है।

गिलित (सं० त्रि०) गिलि क्त। भक्षित।

गिलिम (फा० स्त्री०) गिलम देखो।

गिली (फा० स्त्री०) गुल्ली देखो।

गिलेफ (अ० पु०) गिलाफ देखो।

गिलोड्य (सं० पु०) एक तरहका वृक्षविशेष, इसके फल-का रस मधुर होता है।

गिलोय (फा० स्त्री०) गुरुच, गुड़ूची।

गिल्लोला (फा० पु०) गुलेलसे फेंके जानेका मिट्टीका बना हुआ छोटा गोला।

गिलौंदा (फा० पु०) गुलौंदा देखो।

गिलौरी (हिं० स्त्री०) कई एक पानोंका बीड़ा।

गिलौरीदान (हिं० पु०) पान रखनेका डिब्बा, पानदान।

गिल्टी (फा० स्त्री०) गिल्टी देखो।

गिल्ला (फा० पु०) गिला देखो।

गिल्ली (फा० स्त्री०) गुल्ली।

गिष्णु (सं० त्रि०) १ गायक, गवैया। (पु०) २ सामवेद-का गानेवाला, सामवेदवेत्ता।

गींजना (हिं० क्रि०) किसी कोमल पदार्थको हाथसे मींडना जिससे वह खराब हो जाय।

गींव (फा० स्त्री०) ग्रीवा, गर्दन, गला।

गी: (सं० स्त्री०) १ वाणी, बोलनेकी शक्ति। २ सरस्वती देवी।

गी:पति (सं० पु०) गिरां पतिः, ६-तत्। अहरादित्वात् विकल्पे विसर्गस्य न रेफः। गीर्पति देखो।

गीगामारन—बम्बई प्रान्तमें काठियावाड़का एक क्षुद्र राज्य। इसकी आबादी कोई ५८२ और आमदनी ६६००) है। मानिकवाड़से यह १६ मील दक्षिण-पूर्व पड़ता है। लोकसंख्या कोई ६२२ होगी।

गीदम (हिं० पु०) न्यून मूल्यका सादा गलीचा।

गीडर—काठियावाड़ प्रान्तके बांटवा तालुकका एक नगर। जूनागढ़से प्रायः १८ मील उत्तर यह नगर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १६५१ है। बांटवा बाबिस राज्यकी एक पृथक् शाखा उस पर अधिकार करती है।

गीड (फा० पु०) चक्षुका मैल।

गीत (सं० क्ली०) गान, गाना, धुरपद तराना आदि। यह नियमित स्वरनिष्पन्न शब्दविशेष है। सङ्गीतशास्त्र-के मतमें धातु तथा मात्रायुक्तको ही गीत कहा जाता है धातु नादात्मक और मात्रा अक्षरात्मक है। गीत सभी-के प्रीतिकर होते हैं। संसारी, वनवासी वा उदासीन प्रभृति सब लोग इसके पक्षपाती हैं। हरिण आदि वन्य पशुओं और पक्षियोंको भी गाना सुनना अच्छा लगता है यहां तक कि अच्छा गीत सुन पड़नेसे अहिकुल भी स्थिर चित्तसे अवस्थान करता है। बच्चे रोदन परित्याग करके दिल लगा गाना सुननेमें लग जाते हैं। वास्तविक प्राणि-योंके लिये ऐसे विनोदका हेतु दूसरा नहीं है। गीत दुःख-की यातना मिटानेका उपाय, सुखीकी प्रीतिका कारण और योगीकी उपासनाका प्रधान अङ्ग है। इसीसे प्राचीन सङ्गीतवेत्ता बतलाते कि प्रभु शङ्करने संसारको दुःखा-क्रान्त देख करके सांसारिकोंके दुःख निवारणका प्रधान उपाय गीत और वाद्य प्रकाश किया है। (सङ्गीतशास्त्र) धर्मशास्त्रमें भी लिखा है कि गीतज्ञ गीत द्वारा ही मुक्ति पा सकता है और किसी दूसरे कारणसे मुक्ति न मिलने पर वह रुद्रका अनुचर बन करके रुद्रलोकमें तो वास करता ही है।

गीत दो प्रकारका होता है वैदिक और लौकिक। मीमांसादर्शनके भाष्यमें शबरस्वामीने लिखा है—जिसमें आभ्यन्तरीण प्रयत्नसे स्वरग्रामकी अभिव्यक्ति होती, गीत कहलाता और साम शब्दमें भी उसीका उल्लेख किया जाता है। (सामसंहिताभाष्य) सामवेदमें सहस्र प्रकार गीत-का उपाय है। गायक इच्छानुसार उसमें किसी एकके अवलम्बनसे साम गान कर सकता है। (मीमांसा ८।१।२८ भाष्य) लौकिककी तरह वैदिक गानमें भी क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम और षष्ठ सात स्वर होते हैं। सामविधानब्राह्मणमें लिखित हुआ है कि उन्हीं ७ स्वरोंमें देवता क्रुष्ट, मनुष्य प्रथम, गन्धर्व तथा अप्सरा द्वितीय, पशु तृतीय, पितृलोक चतुर्थ, असुर एवं राक्षस पञ्चम और वनस्पति प्रभृति अपर जगत् षष्ठ स्वरसे परि-तृप्ति लाभ करता है। (सामविधानब्राह्मण १।१।८)

यही सात मौलिक स्वर अवान्तर भेदसे बहुविध हो जाते हैं।

लौकिक गान प्रथमतः दो भागोंमें विभक्त हुवा है—मार्ग और देशी। जो गीत सर्वप्रथम विरिञ्चिने प्रकाश किये थे और जिसको भरत प्रभृति गायक महादेवकी प्रीतिके लिये गाया करते थे, मार्ग कहलाता है। सङ्गीत-शास्त्रके मतमें मार्ग नामक गीत सर्वदा ही मङ्गल प्रदान करता है। विभिन्न लोगोंकी रुचि और रीतिके भेदसे विभिन्न रूपोंमें परिणत वा उत्पन्न गीतोंको ही देशी कहते हैं।

सङ्गीतरत्नाकर (१।२५) में लिखा है कि सभी गीतोंका मूल सामवेद है। ब्रह्माने सर्व प्रथम साम-वेदसे ही गीत सङ्ग्रह किया था।

यह गीत यन्त्र और गात्रभेदसे फिर दो प्रकार होता है। वेणु, वीणाप्रभृति यन्त्रोंमें जो गीत निकलते,

उनको यन्त्र और प्राणीके मुखसे गानेवालोंको गीत कहते हैं। किन्तु चलती बोलीमें यन्त्रको गीत न कह करके वाद्य नामसे उल्लेख करते और केवल मुखसे निकलनेवालेको गीत समझते हैं।

सब तरहके गानोंका मूल कारण नाद है। सङ्गीतशास्त्रके मतसे आत्मा वा चेतन जब कोई ध्वनि करना चाहता उसी इच्छासे अन्तःकरण चालित होता है। इससे शरीरस्थ अग्नि चोट खा करके भभक उठता और उसी उद्दीप्त अग्निके तेजसे ब्रह्मग्रन्थिस्थित वायु चालित हो करके ऊर्ध्व पथमें गमन करता है। चालित वायुके आघातसे क्रमशः नाभि, हृदय, कण्ठ, मूर्धा और मुख-प्रभृति स्थानोंमें ध्वनि होता है। इसीका नाम नाद वा श्रुति है। नाद—अतिसूक्ष्म, सूक्ष्म, पुष्ट अपुष्ट तथा कृत्रिम पाँच भागोंमें बंटा है। किन्तु गीत-व्यवहारमें उसको मन्द्र, मध्य और तार तीन ही भागोंमें विभक्त करते हैं।

हृदय, गलदेश और मूर्धा स्थानमें उत्पन्न नादको यथाक्रम मन्द्र, मध्य और तार कहा जाता है। मन्द्रसे मध्य और मध्यसे तार द्विगुण होता है। यह नियम शरीरमें चलता, वीणायन्त्रमें उसके विपरीत पड़ता है। (वा॰ ा॰ दे॰ो॰) कोई सङ्गीतविद् नाद वा श्रुतिको बाईस, कोई छ्यासठ और कोई ३ भागोंमें बांटता है। सङ्गीतरत्नाकरप्रणेता शार्ङ्गदेव लिखते कि ऊर्ध्व नाड़ी अर्थात् सुषुम्ना संलग्न २२ नाड़ियां वक्रभावसे अवस्थित हैं। उनके योगसे २२ प्रकारके नाद वा श्रुतियां निकलती हैं। इसीसे श्रुतिको २२ भागोंमें बांटना उचित है।

इन श्रुतियोंसे षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत और निषाद ७ स्वर उत्पन्न होते हैं।* गीतशास्त्रमें इन सातों स्वरोंको स, रि, ग, म, प, ध, नि—सात संक्षिप्त नामोंसे उल्लेख किया गया है। षड्जमें चार, ऋषभमें तीन, गान्धारमें दो, मध्यममें चार, पञ्चममें चार, धैवतमें तीन और निषादमें २हो श्रुतियां रहती हैं।

सङ्गीतदर्पण (५।३।५६) में इन २२ श्रुतियोंका नाम मिलता है। यथा—तीव्रा, कुमुद्वती, मन्द्रा, छन्दोवती, दयावती, रञ्जनी, रतिका, रौद्री, क्रोधा, वज्रिका, प्रसारिणी, प्रीति, मार्जनी, क्षिति, रक्ता, सन्दीपनी, आलापिनी, मदन्ती, रोहिणी, रम्या, उग्रा और क्षोभिणी। इनके मध्य तीव्रा प्रभृति चार षड्जमें, दयावती आदि तीन ऋषभमें, रौद्री तथा क्रोधा नामक दो गान्धारमें, वज्रिका प्रभृति चार मध्यममें, क्षिति आदि चार पञ्चममें, मदन्ती प्रभृति तीन धैवतमें और शेष २ श्रुतियां निषाद स्वरमें लगती हैं। (सङ्गीतदर्पण ५।३।५६)

मतङ्गके मतानुसार श्रुति ६६ भागोंमें बंटी है। उनका नाम है—मन्द्रा, अतिमन्द्रा, घोरा, घोरतरा, मण्डना, सौम्या, सुमना, पुष्करा, शङ्खिनी, नीला, उत्पला, अनुनासिका, घोषावती, नीलनादा, आवर्तिनी, रणदा, एकगम्भीरा, दीर्घतारा, नादिनी, मन्द्रजा, सुप्रसन्ना, ?ननादा। यह २२ श्रुतियां मन्द्रसप्तकमें हुवा करती हैं। नादान्ता, निष्कला, गूढ़ा, सकला, मधुरा, गली, एकाक्षरा, भृङ्गजाति, रसगीति, सुरङ्गिका, पूर्णा, अलङ्कारिणी, वांशिका, वैणिका, त्रिस्थाना, सुस्वरा, सौम्या, भाषाङ्गी, वार्तिका, सम्पूर्णा, प्रसन्ना और सर्वव्यापिनिका—२२ श्रुतियां मध्यसप्तकमें लगती हैं। ईश्वरी, कौमारी, सवराली, महार्का, शङ्खिनी, राका, भोगवीर्या, मनोरमा, सुस्निग्धा, दिव्याङ्गा, सुललिता, विद्रुमा, लज्जा, काली, सूक्ष्मा, अतिसूक्ष्मा, पुष्टा, सुपुष्टिका, रौकारी, कराली, विस्फोटान्ता और भेदिनी—तार सप्तककी २२ श्रुतियां हैं।

(संगीतरत्नाकरटीका ३।१३)

सङ्गीत-समयसार-प्रणेताके मतमें नासिका, कण्ठ, उर, तालु, जिह्वा और दन्त—षडविध स्थान सम्बन्धसे उत्पन्न होनेवाला स्वर षड्ज कहलाता है। नाभिमण्डलका ऊर्ध्वगत वायु कण्ठ तथा शीर्षदेशमें आहत होने ऋषभ अर्थात् वृषभके निनाद-जैसा स्वर निकलने पर ऋषभ नाम पड़ता है। गन्धर्वोंके अतिशय सुख हेतु जैसे तृतीय स्वरको गान्धार कहते हैं। नाभिका ऊर्ध्वगत वायु आहत हो करके हृदयमें जो स्वर उठता, मध्य ठहरता है। ओष्ठ, कण्ठ, शिर, हृदय और नाभि—पञ्च स्थानोंसे निकलनेवाला स्वर ही पञ्चम है। नाभिका उपरिगत वायु—कण्ठ, तालु, शिर और हृदयदेशमें धृत होने पर धैवत स्वर निकलता है। निषादमें अपर सकल स्वर अवस्थित वा स्थिरत होते हैं। (सङ्गीतरत्नाकर १।३ टीका)

* वेदषडङ्गके छन्दशास्त्रमें भी इन सातों स्वरोंका उल्लेख है।

कथित श्रुतिसमूहकी ५ जातियां हैं—दीप्ता, आयता, करुणा, मृदु और मध्या। षड्ज स्वरकी ४ श्रुतियां यथाक्रम दीप्ता, आयत, मृदु और मध्य जातीय होती हैं। इसी प्रकारसे ऋषभकी तीन करुणा, मध्या और मृदु, गन्धारको दो दीप्ता तथा आयता, मध्यमकी चार दीप्ता, आयता-मृदु एवं मध्या, पञ्चमकी चार मृदु, मध्या, आयता, करुणा, धैवतकी तीन करुणा, आयता और मध्या और निषादकी २ श्रुतियां दीप्त और मध्या हैं। दीप्तमें भी तीव्रा, रौद्री, वज्रिका और उग्रा—४ भेद पड़ते हैं। आयता ५ प्रकार है—कुमुद्वती, क्रोधा, प्रसारिणी, सन्दीपनी और रोहिणी। करुणा—दयावती, आलापिनी और मदन्तिका भेदसे तीन प्रकारकी होती है। मृदुके चार भेद हैं—मन्दा, रतिका, प्रीति और चिति। मध्य छह प्रकारकी कही हैं—छन्दोवती, रञ्जनी, मार्जनी, रक्तिका, रम्या और क्षोभिणी।

यही ७ मौलिक स्वर विकृत हो करके १२ प्रकारके बन जाते हैं। इनमें षड् स्वर विकृत होने पर च्युत और अच्युत दो प्रकारका ठहरता है। इसकी ४ स्वाभाविक श्रुतियोंमें अन्तिम हीन होनेसे च्युत और और पूर्व श्रुति हीन होनेसे अच्युत कहते हैं। ऋषभकी ३ स्वाभाविक श्रुतियां हैं। परन्तु षड्जकी अन्तिम श्रुति मिल जानेसे चतुः श्रुति विकृत ऋषभ कहलाता है। गान्धार—मध्यमकी प्रथम श्रुति ग्रहण करनेसे त्रिश्रुति विकृत और प्रथम और द्वितीय २ श्रुतियां लेनेसे चतुःश्रुति विकृत होता है। मध्यम भी षड्जकी तरह च्युत और अच्युत भेदसे दो प्रकार है। पञ्चम तृतीय श्रुतिमें संस्थित होनेसे त्रिश्रुति विकृत और यही विकृत मध्यमकी अन्तिम श्रुति ग्रहण करनेसे चतुःश्रुति विकृत ठहरता है। पञ्चमकी अन्तिम श्रुति धैवतमें प्रवेश करनेसे चतुःश्रुति विकृत धैवत होता है। निषाद षड्जकी प्रथम श्रुति लेनेसे त्रि[illegible] विकृत और षड्जकी श्रुतियां ग्रहण करनेसे च[illegible]कृत कहलाता है। मौलिक सात और विकृत [illegible] करके इक्कीस हो जाते हैं। (सङ्गीतरत्नाकर) [illegible]त शास्त्रमें लिखा है कि मयूरका षड्ज, [illegible] ऋषभ, छागका गान्धार, क्रौञ्चका मध्यम, को[illegible]म, भेकका धैवत और गजका स्वाभाविक स्वर निषाद है। (संगीतरत्नाकर १।४७)

इन्हीं सकल स्वरोंसे सकल प्रकारका राग उत्पन्न होते हैं। पूर्वकथित स्वर फिर वादी, संवादी, विवादी और अनुवादी भी होते हैं। जिस रागमें जो स्वर बार बार लगता, उसका वादी ठहरता है। रागमें वादी जो सर्वप्रधान है। दूसरे स्वर इसके अनुगत रहते हैं। २ स्वर जिस जिस श्रुति पर विश्रान्ति पाते, उसके बीच बारह अथवा ८ श्रुतियां रहनेसे एक दूसरेके संवादी कहलाते हैं। जैसे—षड्जस्वर छन्दोवती नामक चतुर्थ श्रुतिमें समाप्त और मध्यम मार्जनी नामक त्रयोदश श्रुतिमें विरत होने और छन्दोवती तथा मार्जनीके मध्य दयावती, रञ्जनी, रतिका, रौद्री, क्रोधा, वर्जिका, प्रसारिणी और प्रीति ८ श्रुतियां रहनेसे मध्यम षड्जका संवादी है। इसी प्रकार १२ श्रुतियोंका व्यवधान रहनेसे पञ्चम भी षड्जका संवादी ही होता है। ऋषभका धैवत, गान्धारका निषाद, मध्यमका षड्ज, पञ्चमका षड्ज, धैवतका ऋषभ और निषादका संवादी गान्धार है। (सङ्गीतरत्नाकर १।४६)

गीतके अंशरूपसे जो स्वर कल्पित होता, उसका संवादी स्वर लगानेसे राग बिगड़ता है। पूर्व संवादी स्थलमें उत्तर संवादीके प्रयोगसे रागका अभाव और उत्तर संवादीकी जगह पूर्व संवादी लगानेसे जाति हानि होती है।

निषाद और गान्धार अपर स्वरके विवादी हैं। परन्तु किसी सङ्गीतविद्के मतमें यह दोनों स्वर ऋषभ और धैवत स्वरोंके ही विवादी हैं, दूसरे किसीके भी नहीं। फिर कोई कोई सङ्गीतवेत्ता ऋषभ और धैवतको गान्धार तथा निषादका विवादी स्वर बतलाता है। गीतमें निर्दिष्ट स्वरके स्थान पर उसका विवादी लगानेसे रागका वादित्व, अनुवादित्व और संवादित्व नष्ट होता है। परस्पर संवादी वा विवादी न होनेवाले एक दूसरेके अनुवादी ठहरते हैं। गीतमें निर्दिष्ट वादी स्वरके स्थानमें अनुवादीको लगा सकते हैं, इससे जातिरागका कोई अनिष्ट नहीं है। (संगीतरत्नाकर १।४७)

शार्ङ्गदेवके मतानुसार षड्ज, मध्यम और गान्धार तीन देवकुल, पञ्चम पितृकुल, ऋषभ तथा धैवत ऋषि-

कुल और निषाद असुरवंशमें उत्पन्न हुआ है। षड्‌ज, मध्यम तथा पञ्चम ब्राह्मण, ऋषभ एवं धैवत क्षत्रिय, निषाद तथा गान्धार वैश्य और अन्तर एवं काकली शूद्र-वर्ण हैं। ७ मौलिक स्वर यथाक्रम—रक्त, ईषत् पीत, अतिपीत, शुभ्र, कृष्ण, पीत तथा कर्बुरवर्ण और जम्बु, शाक, कुश, क्रौञ्च, शाल्मली, श्वेत तथा पुष्करद्वीपमें उत्पत्तिलाभ किये हुए हैं। सङ्गीतशास्त्रमें वेदमन्त्रकी तरह सब स्वरोंके ऋषि, छन्द और देवताका उल्लेख मिलता है।

षड्‌ज तथा ऋषभ वीर, अद्भुत एवं रौद्रमें, धैवत वीभत्स तथा भयानकमें, गान्धार एवं निषाद करुणमें और मध्यम तथा पञ्चम हास्य अथवा शृङ्गाररसमें सम-धिक लगाना या वादी बनाना चाहिये।

(संगीतरत्नाकर २५६)

मूर्च्छना, तान, जाति और जात्यंशयुक्त स्वरसमूहका नाम ग्राम है। स्वरग्राम तीन होते हैं—षड्‌ज, मध्यम और गान्धार। मनुष्य लोकमें प्रथम तथा द्वितीय ग्राम अवलम्बनेसे ही गीत व्यवहार चलता है। गान्धारग्राम मनुष्योंमें नहीं देख पड़ता, केवल देवलोकमें ही रहता है। जिस स्वरसमूहमें पञ्चम अपनी चतुर्थ श्रुति पर अवस्थित अर्थात् अविकृत होता, षड्‌जग्राम कहलाता है। इसी प्रकार पञ्चम अपनी तृतीय श्रुतिमें विश्रान्त अर्थात् विकृत पड़नेसे स्वरसमूहको मध्यमग्राम कहते हैं। सङ्गीतदर्पणके मतानुसार स्वरसमूहके मध्य धैवत त्रिश्रुति वा अविकृत रहनेसे षड्‌जग्राम और उसके पञ्चमकी चतुर्थ श्रुति ग्रहण करके चतुःश्रुति वा विकृत होनेसे मध्यम ग्राम कहा जा सकता है। स्वरसमूहके बीचमें गान्धार ऋषभकी अन्तिम तथा मध्यमकी आदि-श्रुति धैवत पञ्चमकी अन्तिमश्रुति और निषाद धैवत-की अन्तिमश्रुति तथा षड्‌जकी आदि श्रुति ग्रहण करके विकृत होने पर गान्धारग्राम बनता है। दत्तिलके मतको देखते मध्यम ग्राममें पञ्चम, षड्‌ज ग्राममें धैवत और दोनों ग्रामोंमें मध्यम स्वरकी स्थिति आवश्यक है। इनके लोप वा उच्चारण न होनेसे ग्राम बिगड़ जाता है। परन्तु आवश्यक होने पर इसको छोड़ करके दूसरे स्वरों-का लोप करनेसे भी ग्राम बना रहता है।

(संगीतरत्नाकर ३।७)

षड्‌ज ग्रामके ब्रह्मा, मध्यमके विष्णु और गान्धार ग्रामके अधिपति महादेव हैं। हेमन्त ऋतुके पूर्वाह्णमें षड्‌ज ग्राम, ग्रीष्मके मध्याह्न मध्यम ग्राम और वर्षा-ऋतुके अपराह्णको गान्धार ग्राम अवलम्बन करके गाना चाहिये। (संगीतरत्नाकर ३।८)

क्रमानुसार ७ स्वरोंका आरोहण अर्थात् पर पर रूपसे षड्‌ज प्रभृति सातों स्वरोंका उच्चारण और व्युत्-क्रमसे अवरोहण अर्थात् पूर्व पूर्व भावसे निषाद प्रभृति स्वरोंका उच्चारण मूर्छा कहलाता है। वास्तविक पक्षमें उक्त आरोहण और अवरोहणयुक्त स्वरसमूहका नाम मूर्छना है। इसमें राग मूर्छित वा वर्धित होनेसे ही मूर्छना कहा जाता है। (मूर्च्छार्णव, संगीतरत्नाकर ३।९)

षड्‌जग्राममें उत्तरमन्द्रा, रजनी, उत्तरायता, शुद्ध षड्‌जा, मत्सरीकृता, अश्वक्रान्ता और अभिरुद्गता नामक ७ मूर्छ-नाएं हैं। इसी प्रकारसे मध्यम ग्राममें सौवीरी, हरि-णाश्वा, कलोपनता, शुद्धमध्या, मार्गी, पौरवी तथा हृष्यका सात और गान्धार ग्राममें नन्दा, विशाला, सुमुखी, चित्रा, चित्रवती, सुखा एवं आलापी नामक ७ मूर्छनाएं लगती हैं। गान्धार ग्राम मनुष्य लोकमें न चलने या न वर्तने-से लौकिक सङ्गीतशास्त्रमें उसकी विशेष कथा वा मूर्छना का लक्षण आदि समझ नहीं सकते।

(संगीतरत्नाकर ३।११ टीका)

मध्यस्थानस्थित षड्‌जसे आरम्भ करके निषाद पर्यन्त यथाक्रम आरोहण और निषादसे ले करके षड्‌ज पर्यन्त व्युत्क्रममें अवरोहण करने पर षड्‌ज ग्रामकी प्रथम मूर्छना उत्तरमन्द्रा उत्पन्न होती है। इसी प्रकार मन्द्र स्थानस्थित निषाद प्रभृति ६ स्वरोंसे आरम्भ करके निमित्त रूपमें आरोहण और अवरोहण लगाने पर रजनी प्रभृति दूसरी ६ मूर्छनाएं बनती हैं। मध्यस्थानस्थित मध्यम स्वरसे लगा करके यथानियम चढ़ने उतरने पर मध्यम ग्रामकी प्रथमा मूर्छना सौवीरी [illegible] नाभि— [illegible] कहलाती है। इसी प्रकार षड्‌ज स्थानस्थित [illegible] है। नाभिक अपर ६ स्वरोंसे शुरू करके आरोहण और हृदयदेशमें [illegible] करने पर हारिणा-श्वा प्रभृति दूसरी ६ निषादमें अपर [illegible] आ करती हैं। जिस स्वरसे चढ़ना आरम्भ (सङ्गीतरत्नाक [illegible] स्वरमें रुकना पड़ता और जिस स्वरसे उतर [illegible] के जिस तक मूर्छना

समाप्त होती, वह स्वरके संक्षिप्त नाम द्वारा नीचे लिखा गया है। सङ्गीतशास्त्रके नियमानुसार मन्द्रस्थानीय पर विन्दु और तारस्थानीय पर ऊर्ध्व रेखा लगाते और इसको छोड़ दूसरीको मध्यस्थानीय ठहराते हैं। वामदिकके प्रथमसे आरम्भ करके दक्षिण दिकके शेष स्वर पर्यन्त पहुंचनेका आरोहण और दक्षिण दिकका स्वर आदि बना करके वामक्रमसे ग्रामके शेष स्वर तक जानेका नाम अवरोह है। (संगीतरत्नाकर १।१२)

षड्ज ग्रामकी मूर्छना।

१ उत्तरमद्रा—स रि ग म प ध नि।

२ रजनी—नि स रि ग म प ध।

३ उत्तरायता—ध नि स रि ग म प।

४ शुद्ध षड्जा—प ध नि स रि ग म।

५ मत्सरीकृता—म प ध नि स रि ग।

६ अश्वक्रान्ता—ग म प ध नि स रि।

७ अभिरुद्गता—रि ग म प ध नि स।

मध्यम ग्रामकी मूर्छना।

१ सौवीरी—म प ध नि स रि ग।

२ हारिणाश्वा—ग म प ध नि स रि।

३ कलोपनता—रि ग म प ध नि स।

४ शुद्ध मध्या—स रि ग म प ध नि।

५ मार्गी—नि स रि ग म प ध।

६ पौरवी—ध नि स रि ग म प।

७ हृष्यका—प ध नि स रि ग म।

मध्यम ग्रामकी ४थ, ५म, ६ष्ठ, और ७ मूर्छनाके साथ षड्ज ग्रामकी १म, २य, ३य और ४र्थ मूर्छनाका आपाततः कोई भेद नहीं जैसा समझ पड़ता है। परन्तु वास्तविक पक्ष पर षड्ज ग्रामकी पांचवीं चतुःश्रुति और मध्यम ग्रामकी पांचवीं त्रिश्रुति होनेसे इनका परस्पर विलक्षण भेद होता है। मतङ्ग और नन्दिकेश्वरके मतानुसार प्रत्येक मूर्छनामें १२ स्वरतमें एक है। (मातंगी नन्दिकेश्वर) ६ सिद्ध मूर्छनाका आकार नीचे लिखा-जैसा बतलाते हैं—

षड्ज ग्रामकी मूर्छना।

१मा—ध नि स रि ग म प ध नि स रि ग।

२या—नि स रि ग म प ध नि स रि ग म।

३या—स रि ग म प ध नि स रि ग म प।

४र्थी—रि ग म प ध नि स रि ग म प ध।

५मी—ग म प ध नि स रि ग म प ध नि।

६ष्ठी—म प ध नि स रि ग म प ध नि स।

७मी—प ध नि स रि ग म प ध नि स रि।

मध्यम ग्रामकी मूर्छना।

१ली—नि स रि ग म प ध नि स रि ग म।

२री—स रि ग म प ध नि स रि ग म प।

३री—रि ग म प ध नि स रि ग म प ध।

४थी—ग म प ध नि स रि ग म प ध नि।

५वीं—म प ध नि स रि ग म प ध नि स।

६ठीं—प ध नि स रि ग म प ध नि स रि।

७वीं—ध नि स रि ग म प ध नि स रि ग।

आदि सङ्गीतशास्त्रप्रणेता भरतमुनिके मतमें गान वा वाद्यके समय जिस स्थल पर कण्ठ वा हस्त कम्पित होता मूर्छना कहा जाता है। हनुमान् उसीको मूर्छना बतलाते, जहां षड्जादि स्वरसे ऋषभादिके उत्थान पर विराम दिखलाते हैं।

यह सब मूर्छनाएं फिर चार प्रकारकी होती हैं—शुद्धा, सकाकली, सान्तरा और काकल्यन्तरयुक्ता। मूर्छनाका जो जो स्वर विकृत वा अविकृत उक्त हुवा है, ठीक वैसा ही रहनेसे शुद्ध मूर्छना कहते हैं। निषादस्वर षड्जकी २ श्रुतियां ले करके चतुःश्रुति होने पर काकली कहलाता और जिस मूर्छनामें वह आता उसको सकाकली कहा जाता है। गान्धारस्वर मध्यमकी २ श्रुतियां ग्रहण करके चतुःश्रुति होनेसे अन्तर बनता और उसके लगाये जानेसे मूर्छनाका नाम सान्तरा पड़ता है। कोई मूर्छना अन्तर और काकली लगनेसे काकल्यन्तरयुक्ता हो जाती है। यह ५६ प्रकारकी मूर्छना प्रथमादि स्वरके आरम्भ भेदसे फिर सात प्रकारकी बनती है। अतएव सब मिला करके ३९२ प्रकारकी (७ × २ = १४, १४ × ४ = ५६, ५६ × ७ = ३९२) मूर्छना है। (संगीतरत्नाकर १।४।१९)

यक्ष, राक्षस, नारद, ब्रह्मा, सर्प, अश्विनीकुमार और

यथा यथाक्रम षड्जग्रामकी ७ मूर्च्छनाओंकी अधिपति हैं। ब्रह्मा, इन्द्र, वायु, गन्धर्व, सिद्ध, द्रुहिण और भानु यथाक्रम मध्यमकी ७ मूर्च्छनाओंके अधिपति कहे गये हैं। जिस मूर्च्छनाका जो अधिपति निर्दिष्ट हुआ, उसी मूर्च्छनासे प्रीति लाभ करता है।

जैसे आरोह और अवरोहक्रमयुक्त स्वर समूहको मूर्च्छना कहते, केवल आरोहक्रमयुक्त स्वरोंको तान अभिधान करते हैं। तान प्रथमत: २ भागोंमें बंटा है—शुद्ध तान और कूटतान। मूर्च्छना एक स्वर न रहने षट्स्वर और दो स्वर न रहने पर पञ्चस्वर होनेसे शुद्धतान कहलाती है। षट्स्वर शुद्धतानको षाड़व और पञ्चस्वर शुद्धतानको औड़व कह सकते हैं।

षाड़व शुद्धतान सब मिला करके उञ्चास हैं। षड्ज ग्रामकी ७ मूर्च्छनाएं षड्ज, ऋषभ, पञ्चम वा गान्धार हैं। इनमें किसी एकके हीन होने पर अठाईस और मध्यम ग्रामकी ७ मूर्च्छनाएं षड्ज, ऋषभ और गान्धारमें कोई एक न रहनेसे २१ षाड़व शुद्धतान निकलते हैं

औड़व शुद्धतान ३५ प्रकारका होता है। षड्ज तथा पञ्चमहीन सात, गान्धार एवं निषादहीन सात और ऋषभ तथा पञ्चमहीन सात सब २१ तान हैं। इसी प्रकार मध्यम ग्रामकी मूर्च्छनासे ऋषभ तथा धैवत निकल जाने पर सात और गान्धार एवं निषादके अभावमें सात ये १४ तान लगते हैं। तानोंकी पूरी संख्या ८४ है।

पूर्ण वा असम्पूर्ण मूर्च्छना व्युत्क्रममें उच्चारित होने पर कूटतान कहलाती है। पूर्ण मूर्च्छनासे उत्पन्न होनेवालेको पूर्णकूटतान और असम्पूर्ण मूर्च्छनासे निकलनेवालेको असम्पूर्ण कूटतान कहते हैं। एक ही पूर्ण मूर्च्छनामें ५०४० कूटतान तक लग सकते हैं। पूर्ण मूर्च्छनाएं ५६ हैं। अतएव पूर्णकूटतान २८२२४० तक होते हैं।

पूर्ण मूर्च्छनाका एक भी अन्य न रहनेसे षट्स्वर असम्पूर्ण कूटतान हो जाते हैं। इसी प्रकार दोके अभावसे पञ्चस्वर, तीनके अभावसे चतु:स्वर, चारके अभावसे त्रिस्वर, पांचके अभावसे द्विस्वर और छहो अन्य स्वर न रहनेसे एक स्वर कूटतान कहला सकता है। इसी प्रकार प्रत्येक मूर्च्छनामें इसके हिसाबसे असम्पूर्ण कूटतान लगा करते हैं। षट्स्वरका षाड़व, पञ्चस्वरका औड़व, चतु:स्वरका स्वरान्तर, त्रिस्वरका साविक, द्विस्वरका गाथिक और एक स्वर कूटतानका नाम आर्चिक है। तान देखो।

पूर्वकथित स्वरोंमें कोई कोई स्वर दूसरे स्वरका साधारण हुवा करता है। यह दो प्रकारका है—स्वरसाधारण और जातिसाधारण। स्वर साधारण फिर काकली, अन्तर, षड्ज और मध्यम ४ भागोंमें विभक्त हुवा है। काकली और अन्तरका लक्षण पहले ही बतलाया जा चुका है। काकली षड्ज तथा निषाद और अन्तर स्वर गान्धार एवं मध्यमका साधारण होता है। गानक्रियामें षड्जके उच्चारण पीछे अवरोह क्रमसे पहले काकली और उसके बाद धैवतको लगाना चाहिये। इसी प्रकारसे मध्यमके पीछे अन्तर और ऋषभ प्रयोज्य है। शाङ्गदेवके मतानुसार जातिराग आदिमें काकली वा अन्तरका अल्प प्रयोग करना उचित है। निषाद और ऋषभ यथाक्रम षड्जकी आदि तथा अन्त्यश्रुति ग्रहण करने पर षड्ज साधारण कहला सकते हैं। गान्धार और पञ्चम क्रमानुसार मध्यमकी आद्य तथा अंतिमश्रुति अवलम्बन करनेसे मध्यम साधारण होते हैं। षड्ज साधारण, षड्जग्राम और मध्यम साधारण मध्यमग्राममें लगाना चाहिये। कैशिकमें दोनों साधारणोंका प्रयोग किया जा सकता है।

भरतमुनिके मतानुसार एक ग्राममें उत्पन्न समान अंश और स्वरयुक्त जातिमें परस्पर समान गानको साधारण कहनेमें कोई बुराई नहीं। (सङ्गीतरत्नाकर ४।१८)

सङ्गीतदर्पणके मतमें रागालापयुक्तको ही जाति साधारण कहा जाता है। कोई कोई सङ्गीतवेत्ता कैशिक प्रभृति रागोंको जाति साधारण बतलाता है।

स्वरको यथा नियम उच्चारण करनेका नाम वर्ण है। इसीको गान वा गीत शब्दमें उल्लेख करते हैं। यह गानक्रिया वा स्वरका उच्चारण चार प्रकार है—स्थायी, आरोही, अवरोही और सञ्चारी। किसी स्वरके निरन्तर पर पर उच्चारणका नाम स्थायी है। जैसे—षड्जका सा सा सा और मध्यमका मा मा मा इत्यादि। जिस उच्चारणमें आरोह और अवरोह आता, यथा

आरोही तथा अवरोही कहलाता है। इन तीनों लक्षण-युक्त उच्चारणका संचारी कहते हैं। कलावंतोंने इन्हीं गीतों और उच्चारणोंके कई एक दूसरे अलङ्कार भी दिखलाये हैं, उससे गानका सौष्ठव बढ़ता है।

गीतके आरम्भमें लगनेवालेको ग्रहस्वर, गीतसमापकको न्यासस्वर और गीतमें अधिक प्रयुक्त होनेवाले स्वरको अंशस्वर कहा जाता है।

सङ्गीतशास्त्रमें जातिके १३ लक्षण कहे हैं—ग्रह, अंश, तार, मन्द्र, न्यास, अपन्यास, संन्यास, विन्यास, बहुत्व, अल्पता, अन्तरमार्ग, षाड़व और औड़व। यही त्रयोदश लक्षण जिसमें देख पड़ते, जाति कहते हैं।

पूर्वको जिस ग्रामकी बात लिखी, उसी ग्रामसे राग निकलता है। मनुष्य प्रभृतिका चित्तरञ्जन करनेसे आदि सङ्गीतवेत्ताओंने इसका नाम राग रखा है। सङ्गीतदर्पण (रागाध्याय ८।११) में लिखा है कि शिव तथा शक्तिके योग पर शिवके मुखसे श्रीराग, वसन्त भैरव पञ्चम एवं मेघ और गिरिराजके मुखसे नटराग उत्पन्न हुआ इससे मालूम पड़ता कि सर्वप्रथम केवल छही राग थे, गानेवालोंने फिर उससे अपर राग, रागिणी, उपराग प्रभृति बना लिये। सङ्गीतशास्त्रमें सब मिला करके विंशति प्रकार राग और छत्तीस प्रकार रागिणी निरूपित हुई है और रागिणी रागकी भार्या जैसी कही गयी है। (रागरागिणी देखो।) विभिन्न कालको इन्हीं राग रागिणियोंसे शुद्ध तथा मिश्रित भावमें बहुतसे गीत आविष्कृत हुए हैं। प्राचीन तत्त्व पर्यालोचना करनेसे समझ पड़ता है कि भारतवासियोंसे ही सर्वप्रथम सङ्गीतविद्या निकली फिर दूसरे जातीयोंने उसमें उन्नति की। मुसलमानोंके आधिपत्य समयको सङ्गीतविद्याकी विशेष उन्नति हुई। २ बड़ाई, नाम बड़ी।

(त्रि०) गै कर्मणि क्त। ३ शब्दित, गाया हुआ। ४ स्तुत, जिसकी तारीफ की गयी हो।

गीतक (सं० क्ली०) गीतमिव [illegible]। गीत।

गीतकण्डिका [illegible]कण्डिका, ६-तत्। सामवेदमें प[illegible]

[illegible]क्रम (सं० पु०) गीतस्य क्रमः, ६-तत्। संगीतमें एक प्रकारकी त[illegible]गीत देखो।

गीतगोविन्द (सं० पु०) गीतो गोविन्दो यत्र, बहुव्रो०। महाकवि जयदेव कृत एक ग्रन्थ। इसको गीतकाव्य भी कह सकते हैं। जयदेवने इसमें कवित्वकी पराकाष्ठा दिखलायी है। कविता अतिशय मधुर, प्रसादगुणविशिष्ट और शृङ्गाररससंश्लिष्ट है। यह ग्रन्थ द्वादश सर्गोंमें विभक्त और उसमें प्रायः समस्त कृष्णचरित वर्णित हुआ है। संस्कृतमें ऐसे ठाटका काव्य प्रायः देख नहीं पड़ता।

गीतगोविन्दमें शृङ्गाररसका आधिक्य देख करके कोई कहता है—निर्गुण ब्रह्मकी उपासना दुःसाध्य होनेसे जब सगुण रूपमें कृष्ण धरेय हुए, जयदेवको उचित न था कि वह शृङ्गार भावको वर्णना करते। किन्तु क्या स्वदेशीय और क्या विदेशीय बुद्धिमान् तथा सङ्गीतग्राही पण्डितोंने गीतगोविन्दकी सूक्ष्मतत्त्व तथा भक्त्युद्दीपक प्रणालीसे मोहित हो उक्त कारण पर दोष व्यक्त न करके इसका अशेष गुणकीर्तन किया है। उन्होंने इसकी रूपकरचना भी बहुत अच्छी तरह समझा दी है। इस देशके सुप्राज्ञ भक्तोंकी बात छोड़ दीजिये। बहुतसे विदेशीय नाना विद्याविशारद भाषातत्त्वज्ञ प्रत्नतत्त्ववित् यह स्थिर कर न सके, मधुर भाव मधुरच्छन्द निर्मल भक्तिपीयूषसिक्त प्रबन्ध आलोचना करके किस वाक्यविन्यासमें उसका गुण कीर्तन करें। सबसे पहले सर विलियम जोन्सने अंगरेजी भाषा, लासनने लाटिन, रूकर्टने जर्मन और सुकवि एडविन आर्नलडने अंगरेजी काव्यमें इसको अनुवाद किया और ग्रन्थसम्बन्धीय महाप्रयोजनीय विषयका अल्पाधिक सुन्दर मन्तव्य लिखा। इन सब विद्वानोंने गीतगोविन्दका भागवताध्यात्मभावानुयायिक अर्थ समझने और समझानेकी चेष्टा की है। इसकी अनेक टीकाएं और अनेक देशीय भाषानुवाद दृष्ट होते हैं। गीतगोविन्दके पद मात्रावृत्तिमें बने हैं। इसकी रूपक-वर्णनामें गुह्य भाव पर नायक-नायिकाकी कथाके छलसे दिखलाया गया है—जीवात्मा परमात्माका एक रूप होते भी मायाबलसे अंशभावमें उसको विस्मृत हुवा करता है। यही फिर आराधनासे जाग करके स्मृतिपथारूढ़ होता है। उस समय जीवात्मा परमात्माके विरहमें व्याकुल हो उसको पानेके लिये घूमते घूमते तन्निकट उपस्थित हो सकते चित्तसे पवित्र प्रेमरसमें मुग्ध हो जाता

और उसीमें लीन हो करके परमानन्द पाता है। ऐसे ही गुह्य भावसे ईश्वरभक्ति की वर्णना फारसी भाषाके महाकवि हाफिजकी किताबमें मिलती है। बहुतसे विद्वानोंके मतानुसार गीतगोविन्द गौड़ाधिप लक्ष्मण-सेनके समयमें रचित हुआ। (जयदेव देखो।)

गीतज्ञ (सं० त्रि०) गीतं जानाति गीत-ज्ञा-क। गीत जाननेवाला। गायक, गीतशास्त्रमें निपुण।

गीतपुस्तक (सं० क्लो०) गीतस्य पुस्तकं ६-तत्। जिस पुस्तकमें गीतका विषय लिखा हुआ हो।

गीतप्रिय (सं० त्रि०) गीतं प्रियमस्य बहुव्री०। १ गानानुरक्त जिसे गीत अच्छा लगता हो। (पु०) २ महादेव, शिव।

गीतप्रिया (सं० स्त्री०) गीतं प्रियं यस्या बहुव्री०। कार्तिकेयकी एक मातृकाका नाम।

गीतमोदिन् (सं० पु०) गीतेन मोदते मुद-णिनि। १ किन्नर। (त्रि०) २ जो गीत गानेमें आनन्द लाभ करे

गीतवादन (सं० क्लो०) गीतका गाना।

गीतशास्त्र (सं० क्लो०) जिस शास्त्रमें गीतका विषय निर्णीत हो।

गीता (सं० स्त्री०) गीयते आत्मविद्या यत्र, ग-क्त-टाप्। १ गुरु तथा शिष्यकी कल्पना कर कही गई आत्मविद्या, उपदेशात्मक ज्ञानगर्भ कथा। जैसे—शिवगीता, रामगीता सावित्रीगीता, पाण्डवगीता, भगवद्गीता (अर्जुनगीता), अनुगीता, भगवतीगीता, उत्तरगीता, जीवन्मुक्तिगीता, ब्राह्मणगीता, गोपीगीता इत्यादि।

२ भगवद्गीता। गीता कहनेसे प्रायः भगवद्गीताका ही बोध होता है। शङ्कराचार्यने भी अपने नाना प्रबन्धोंमें जब उसके विविध श्लोकोंको उद्धृत किया, अपने शासनमें कहीं भगवद्गीता 'कहीं' गीता, कहीं बहुवचनान्त गीताः शब्द लिखा है। (शारीरकभाष्य)

कोई कोई उस ग्रन्थका नाम ईश्वरगीता बतलाते हैं। (शारीरकभाष्य २।१।१८, २।१।७५) परन्तु दूसरे लोग इस बातका प्रतिवाद करते हैं। कादम्बरीमें द्व्यर्थ बोधक रचना स्थलमें अनन्तगीता नामसे इसका उल्लेख है। अन्यान्तर और किसी किसी प्राचीन भाषानुवादमें उसको अर्जुनगीता भी लिखा गया है। *

कृष्णद्वैपायनने महाभारतसंहिताकी रचना की है। उसीका षष्ठ वा भीष्म पर्व ५८५६ श्लोकग्रथित और ११७ अध्यायोंमें विभक्त है। इसी पर्वमें अष्टादशाध्यायिनी ७०० श्लोकनिबन्धिता कृष्णार्जुनसंवादगता गीता है। जैसे महाभारत पञ्चम वेदकी भांति वर्णित हुआ, गीता वेदका शिरोभाग उपनिषद्, ब्रह्मविद्या और योगशास्त्र कही है। शङ्कराचार्यने उसके महोत्त्वभावसमन्वित विधि निषेध समष्टिको स्मृति-जैसा भी ग्रहण किया है। (शारीरकभाष्य १।१।३६६)

महाभारतके १८ पर्वोंमें प्रत्येकके मुख्य विभागको पर्वाध्याय कहते हैं। भीष्मपर्वमें ४ पर्वाध्याय हैं—१ जम्बूखण्डविनिर्माण, २ भूमिपर्व, ३ भगवद्गीता पर्वाध्याय और ४ भीष्मवध पर्व। प्रथम २ पर्वाध्याय १२ क्षुद्र अध्यायोंमें बंटे हैं। तृतीय अर्थात् भगवद्गीता पर्वाध्यायकी एक श्रेणी १३से २४ अर्थात् बारह और द्वितीय श्रेणी २५ से ७२ अर्थात् १८ क्षुद्राध्यायात्मक है। इस प्रकार दोनों श्रेणियोंमें सब मिला करके ३० छोटे अध्याय हैं। प्रथम श्रेणीके २२वें अध्यायका नाम कृष्णार्जुनसंवादपर्व है। उसके बाद २३वें अध्यायमें दुर्गास्तोत्र कहा गया है, जो उक्त संवादके मध्य ही परिगणित हुआ है। द्वितीय श्रेणीके २५वें अध्यायसे उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्रान्तर्गत कृष्णार्जुनसंवाद भगवद्गीता कहलाता है।

गीताके प्रथमावधि १८ अध्यायोंका नाम क्रमशः १ सैन्यदर्शन वा अर्जुनविषादयोग, २ सांख्ययोग, ३ कर्मयोग, ४ ज्ञानयोग, ५ कर्मसंन्यासयोग, ६ ध्यान अभ्यास वा आत्मसंयमयोग, ७ विज्ञानयोग, ८ तारकब्रह्मयोग, ९ राजविद्या राजगुह्ययोग, १० विभूतियोग, ११ विश्वरूपदर्शनयोग, १२ भक्तियोग, १३ प्रकृतिपुरुषविभागयोग, १४ गुणत्रयविभागयोग, १५ पुरुषोत्तमयोग, १६ दैवासुरसम्पद विभागयोग, [illegible]त्रयविभागयोग और १८ संन्यास वा मोक्षयोग [illegible]के नाना अनुसन्धेय [illegible]

[illegible], वह विशेष कौतुकावह है। [illegible] नाना मत मिलते [illegible] दिखलाया गया है। [illegible]

* अकबर बादशाहके समय फ़ैजीने महाभारतको फारसी भाषामें अनुवाद करनेकी पहली चेष्टा [illegible] भाषामें उसका और [illegible] अनुवाद बनाया था। उसमें अष्टादश पर्वके अन्तमें "अर्जुनगीता" नामसे गीताका अनुवाद दिया है।

हैं। साधारणतः अधिकांश ग्रन्थोंमें ७०० और किसी किसीमें ७०१, ७०२ वा ७४५ गणनाका उल्लेख है। १३ वें अध्यायका प्रथम श्लोक * अधिकांश गीताओंमें नहीं है। इसको जोड़ लेनेसे श्लोकसंख्या ७०१ हो जाती है। एशियाटिक सोसाइटीने देवनागराक्षरोंमें जो महाभारत छपाया, ७०० श्लोक रहते भी श्लोकोंके विच्छेदानुसार ७०२ अङ्क आया है। युक्तप्रदेशके लिखित महाभारतमें गीताके अन्तमें एक श्लोक है। उसमें बतलाया है कि गीतामें कृष्णोक्त ६२०, अर्जुनोक्त ५७, सञ्जयोक्त ६७ और धृतराष्ट्रोक्त १ श्लोक है। इन सभी अङ्कोंको जोड़नेसे ७४५ संख्या आती है। तैलङ्ग काशीनाथ त्र्यम्बकने अपनी गीताके अंगरेजी गद्यानुवादके मुखबन्धमें उक्त श्लोककी बात उठा करके कहा है---हम ७४५ संख्याका कोई कारण निर्देश कर नहीं सकते हां! यह अनुमान लगाते हैं कि वह श्लोक किसी प्राचीन समयको महाभारतमें प्रक्षिप्त हुए होंगे। फैजीने फारसी भाषामें गीताका जो अनुवाद किया है, उसके अन्तमें लिखा है—वैशम्पायनने संक्षेपमें गीताकी प्रशंसा करके कृष्ण, अर्जुन, सञ्जय और धृतराष्ट्रको उक्त संख्याको क्रमानुसार ६२०, ५७, ६७ और १ बतलाया है। उसको जोड़नेसे ७४५ आता है। इस ग्रन्थकी प्रतिलिपि १२२२ हिजरीको लखनऊ नगरमें प्रस्तुत हुई थी। यह पुस्तक राजा सर राधाकान्त देवके पुस्तकालयमें रखी है। परन्तु शङ्करभाष्यमें गीताके ७०० श्लोकोंका ही उल्लेख है।

गीता अपनी महोत्कृष्टताके कारण बहुकालावधि महाभारतसे उद्धृत हो पृथक् रूपमें निकलती आयी है और इसका महोज्ज्वल गम्भीर भाव और बहुतसा जटिलत्व मिताक्षरोंमें सन्निवेशित रहनेसे प्राचीन एवं नव्य विविध साम्प्रदायिक बुद्धिविशारद भक्त परिव्राजक प्रभृति महात्मा गीताके भाष्य, वृत्ति, टीका ... आचर... तथा विविध प्रकार व्याख्या ... कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड और ... ते रहे हैं। इन सभी व्यक्ति... ...र्चना और जगत्‌हितैषिता-व्रत इत्यादि... हैं और प्रकाशित ... हो रूपसे गीत... ...हातियां जो पूर्वकालको निकली थीं, लुप्त हुईं; भविष्यत्‌में वह आविष्कृत भी हो सकती हैं।

महाभारतके प्रायः सभी टीकाकारोंने नाना प्रणालियोंमें गीताका अर्थ सुबोधगम्य और तत्सम्बन्धीय तत्त्व तथा रस साधारणके हृदयग्राही बनानेका विशेष यत्न किया है। फिर भी उसमें अनेक कूट लक्षित होते हैं और कोई कोई कथा अभी भी अमीमांस्य हो रह गयी है। महाभारतको माहात्म्यसूचक रूपकवर्णनामें लिखा है कि व्यासजीके मस्तिष्कमें महाभारत-ग्रथित होने पर ब्रह्मा अपने आप उनके उत्साहवर्धनार्थ पहुंचे और गणेशजीने लेखकपद ग्रहण किया था। किन्तु जब गणेशजीने प्रस्ताव किया कि हम चारों हाथोंसे लिखेंगे और व्यासजीके कविता कण्ठोदित करने या रचनानुरोधसे क्षणकाल ठहरनेमें लेखनीका वेग रुकने पर लिखना छोड़ देंगे। व्यासजी मन ही मन कहने लगे—गणेशजी कविताके सकल स्थल विना समर्थ बूझे लिपिबद्ध कर न सकेंगे। व्यासजीको कण्ठनिःसृत कवितामें ८८०० कूट-श्लोक उच्चारित हुए। उसका प्रकृत अर्थ बोधगम्य करनेके लिये गणेशजीको समय समय पर सोचना और लेखनीका वेग रोकना पड़ा था। उन्हीं श्लोकोंका नाम व्यास कूट है। अतएव कौन कह सकता है कि गीताके मध्यमें भी व्यासकूट नहीं।

अनुपम अनन्यप्राप्य हृदयाकर्षणीय गुण रहनेसे भारतवर्षके प्रायः सभी सभ्य स्थानोंमें तत्तद्देशीय विविध सम्प्रदायी हिन्दुओंने स्वदेशप्रचलित अक्षरोंसे गीताका मूल लिख या छाप और अपनी २ देश भाषामें अनुवाद करके रखा है और करते जा रहे हैं। देशी और विदेशी नाना विरोधी धर्मावलम्बी लोग भी (जो हिन्दू नहीं हैं) गीताकी महिमाध्वनि सुन करके अपनी अपनी भाषाके गद्य-पद्यमें उसका अनुवाद, रहस्य, व्याख्या, समालोचना, अनुमोदित धर्मालोचना और प्रशंसावाद प्रकाश करते हैं।

किसी निरभिमानी फारसी इतिहासवेत्ताने ११२६ ई०को स्वीय रचित इतिहासमें लिखा है कि अबू सुलह कालके किसी प्राचीन संस्कृत ग्रन्थका अरबी भाषामें एक अनुवाद रहा। १०२६ ई०को यही अरबी अनुवाद अबुल-हसैन नामक एक व्यक्ति द्वारा फारसी भाषामें अनु-

* "प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च।
एतद् वेदितुमिच्छामि ज्ञानं ज्ञेयं च केशव॥"

वादित हुवा था। इसी शेषोक्त ग्रन्थको अनेक कथाएं उक्त इतिहासवेत्ताने अपने इतिहासमें सन्निवेशित की हैं। सुप्रसिद्ध इलियट साहबने उसको देख कर कहा है कि उसमें महाभारतकी बहुतसी कथाएं अविकल मिलती हैं। यदि यह बात सच हो, तो महाभारत-गीताका अनुवाद १००० वर्षसे बहुत पहले किया गया जान पड़ता है। यह विषय पुरातत्त्वविदोंको अनुसन्धेय है।

उन्नतहृदय राजनीतिज्ञ प्रजापालक अकबर बादशाह अपने राज्यमें हिन्दू मुसलमानोंके बीच धर्मसंक्रान्त विरोधजनक नाना प्रकार विप्लव पड़ते देख सर्वदा उसके निवारणके सदुपायकी चिन्ता किया करते थे। शास्त्रज्ञ तथा तत्त्वज्ञ विद्वानोंके साथ मुसलमान, यहूदी और ईसाई धर्मावलंबियोंका तर्क वितर्क उत्थापन तथा तत्त्वज्ञ मर्म जिज्ञासा करके उनकी धारणा हो गयी थी—मुख्य रूपमें सभी प्रचलित धर्मोंका मूलतत्त्व एक ही है, स्व स्व धर्मके सारग्राहियोंमें सुहृद्भाव नहीं टूटता। केवल मूढ़ वा बाह्यक्रियारत खण्डग्राही धर्मसांप्रदायिकों किंवा कूट अभिसन्धिसाधक लोगोंमें ही अनर्थक वाद विवाद उठा करता है। इसीसे उन्होंने स्थिर किया कि हिन्दू मुसलमान उभय धर्मावलंबियोंके ज्ञानगर्भ मनोरञ्जन प्रधान प्रधान ग्रन्थ एक दूसरेकी भाषामें प्रांजल रूपसे अनुवाद कराके उनके पाठार्थ व्यवस्था करने पर युक्तिसिद्ध कार्य होगा। १५८४ ई०को उनके आदेशसे संस्कृतज्ञ सुकवि राजमन्त्रि-भ्राता फैजीने महाभारतका फ़ारसी अनुवाद निकाला था। वह मुसलमानोंके पढ़नेको प्रचारित होने लगा। इसीसे गीता पृथक्‌रूपसे पाठ्य ग्रन्थ बन गयी।

१७४४ ई०को अङ्गरेजी राजत्वके प्रारम्भमें (Charles Wilkins) विलकिन्स साहबने मूल गीता पाठमें महानन्द अनुभव करके संस्कृत शास्त्रकी महोत्कृष्टता और भारतवर्षमें पुराकालावधि तत्त्वज्ञान तथा सुनीतिका जो प्रादुर्भाव रहा, उस समयके बड़े लाट वारन हेष्टिङ्गसको समझानेके लिये गीताका प्रथम अंगरेजी अनुवाद करके उपहार दिया था। बड़े लाट हेष्टिङ्गसने तत्पाठसे मोहित हो कोर्ट-अफ-डिरेक्टर्सके अधाचक्को ग्रन्थका मर्म और उसके ज्ञानसे लोगों—विशेषतः भारतके अङ्गरेजी राजपुरुषोंका क्या उपकार होता, दिखला करके कोर्टके अनुमतिक्रमसे १७४५ ई०में उसको प्रकाश कराया। उन्होंने इसी प्रथम संस्करणमें अपने आप गीताकी बहु प्रशंसात्मक मुखबन्ध-जैसी एक प्रस्तावना लिखी है। फिर भी कई गद्य-पद्यात्मक अङ्गरेजी उलथे हुए। १८२३ ई०को सुप्रसिद्ध संस्कृतज्ञ तथा तत्त्ववित् जर्मन (A.W. Schlegel) श्लेगेल साहबने देवनागराक्षरोंमें गीताका मूल और लाटिन भाषामें उसका अनुवाद एकही पुस्तकमें प्रकाश किया। इससे पहले उन्होंने अपने तत्त्वावधान पर पेरिस नगरमें देवनागराक्षर बनाये थे, उसीसे गीता मुद्राङ्कित हुई।

१८५८ ई०को सुप्रसिद्ध विद्वान् (H. H. Wilson) विल्सन साहबने लण्डन एशियाटिक सोसाइटीमें एक प्रबन्ध पढ़ा। उसमें कहा गया कि (Galenus Demetrius) देमेत्रिया नामक किसी यूनानी व्यक्तिने ग्रीक (यूनानी) भाषामें गीताका अनुवाद किया था। इन्होंने काशीमें संस्कृत पढ़ा और वहीं गीतानुवाद रचा। उनके मरने पर यह पुस्तक एथेन्स नगरमें छापा गया। फरासीसी (फ्रेञ्च) भाषामें गीताका अनेक प्रकार अनुवाद समय समय पर प्रकाशित हुआ। बहुतसी भाषाओंके ज्ञाता प्रत्नतत्त्ववित् (*Eugene Burnouf*) बरनूफ साहबने जो श्रीमद्भागवतके एकमात्र अनुवादक थे, १८२५ ई०को गीताका पहला फरासीसी अनुवाद किया था। फिर (Fauche) फोशे साहबने समस्त महाभारतके फरासीसी उलथा बनानेका सङ्कल्प किया और १८६३से १८७२ ई० तक १० वर्षके बीच आदिपर्व अवधि क पर्व पूर्ण करते करते वे कालग्रासमें पतित हुए। इस अनुवादमें गीताका भी उलथा यथास्थान पर छपा है। १८६८ ई०को संस्कृतवित् धर्मतत्त्वज्ञ (Dr. F. Lorinser) लोरिञ्जर साहबने जर्मन भाषामें अपने बहुमन्तव्य कथनके साथ गीताका अनुवाद निकाला था। उसमें इसके नाना अनुसन्धेय विषयोंकी जो आलोचना लिखी, वह विशेष कौतुकावह है। बाइबिलके साथ गीताका सौसादृश्य दिखलाया गया है। इसी प्रकार युरोपकी इटालीय, रूसी प्रभृति प्रायः सभी मुख्य भाषाओंमें गीताका अनुवाद प्रकाशित हुआ है। सिवा इसके यवद्वीपके

निकट वलिद्वीपमें 'कवि' नामकी किसी प्राचीन भाषामें महाभारतके अनेक भागोंका अनुवाद मिला है। सम्भव है, उसमें गीताका भी उलथा हो। काशीके एक विद्याविशारद धर्मपरायण संन्यासीने बतलाया है कि उसने चीन देशीय किसी परिव्राजकके हाथमें गीताका चीना अनुवाद देखा था। अमेरिकाके सर्वप्रधान कवि इमर्सन गीताके अद्वैत भावमें उन्मत्त रहे।

गरुड़पुराण, पद्मपुराण, वराहपुराण प्रभृति पुराणों और वैष्णवीय तन्त्र आदिमें गीतामाहात्म्य विविध भावसे प्रकाशित हुआ है। दूसरे यह भी सुस्पष्ट समझ पड़ता है कि श्रीमद्भागवतके किसी किसी अध्यायमें गीताके अनेक मनोहर भावोंकी विवृति की गयी है। श्वेताश्वतर उपनिषद्के भाष्यमें गीताके बहुतसे श्लोक उसके भाव परिचयार्थ उद्धृत हुए हैं।

गोस्वामी, वैष्णव आदि ज्ञान तथा भक्तिमार्गके बहुतसे ग्रन्थ गीतावलम्बनसे ही प्रकाश किये हैं। अब जिज्ञास्य है—क्या कारण है जो गीता इस प्रकार सर्वदेशका महादरणीय धन बनी हुई है। इसका प्रधान हेतु जो विशालतत्त्व गूढ़ानुगूढ़तत्त्व, सूक्ष्मानुसूक्ष्म विषय सकलजातीय ज्ञानियोंका आलोच्य एवं चिन्तनीय और जो लोकमात्रका आकाङ्क्षा तथा परित्याज्य है, उसीका साधन और वर्जनीय उपाय तथा फलाफल और जीवनयात्रानिर्वाहका सन्मार्ग विकाश श्रीमद्भगवद्गीतामें अतिमनोहर छन्दमें रचना-चातुर्यसे संक्षेपतया सदृश उच्च प्रबन्ध सम्भवपर प्राञ्जलताके साथ वर्णित हुआ है। अनन्त जगत्का निदान स्थिति तथा परिणाम जन्म, जीवन एवं मरण, सुख, दुःख, देह, मनः, ज्ञान और मूढ़ता, धर्माधर्म, पाप, पुण्य, कर्तव्याकर्तव्य, सद्गति एवं अधोगति, आत्मोन्नति, आत्मविवाद, स्वर्ग, नरक प्रभृति विषयोंका सदर्श तथा उसके सम्बन्धमें विविधप्रकार संस्कारापन्न लोगोंके लिये आचरणीय सहज सदुपदेश, कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड और भक्तिमार्ग, ब्रह्मानन्द, ब्रह्मार्चना और जगत्हितैषिता-व्रत इत्यादि विषयक परिचय हृदयग्राही रूपसे गीतामें पाया जाता है।

गीताकी शिक्षा—एक ही ईश्वर है। वह अनादि अनन्त और पूर्ण होता है। उसकी दुर्ज्ञेय आभावत् शक्तिमेंसे प्रकृति वा त्रिगुणात्मिका मायामेंसे यह अनन्त जगत् निकलता और उसीमें मिलता है। इसी प्रकार पुनर्जन्म और पुनर्लय अनन्तकालव्याप्त है। ईश्वर अपने आप निष्क्रिय होते भी मायावृत हो जीवलोकमें देहधारण करता है। वह देही (जीवात्मा) वा पुरुषपदवाच्य है और वही स्वयं पुरुषोत्तम है। प्रकृतिके नियमसे देहका जन्म, वृद्धि, ध्वंस अर्थात् विकार होता है। किन्तु देहनाशसे देही नहीं मिटता, देहान्तर मात्र धारण करता है। देही (आत्मा) अविनश्वर, अजात और अविकारी है। वही विशेष रूपमें परमात्मा वही सत् (एकमात्र विद्यमान) है। सुतरां समस्त जगत् उसीका मूर्तिस्वरूप है। उसका अंश ही अस्फुत भावमें जड़ और क्रमशः उत्तरोत्तर स्फूर्तिमें उद्भिद्, कीटपतङ्ग, पशुपक्षी, सिद्ध, ऋषि, भूमण्डलातीत ब्रह्माण्ड (द्युलोक) वासी दिव्यपुरुष (देवता) और महास्फूर्त भावापन्न अवतार होता है इसीलिये वह सत् तथा असत् (सूक्ष्म और असूक्ष्म) और इन दोनोंसे अतीत है। संसार प्राकृतिक नियमसे बनता और बिगड़ता है। विप्लव उठने पर अवतार आविर्भूत और उसकी क्रियासे यह शोधित होता है। संसारमें प्राकृतिक नियमसे सुखदुःख उद्भावित है। जीवमात्र सुखान्वेषी और दुःखदूरकरणेच्छु होता है। इन्द्रिय और तद्ग्राही विषयके संयोगसे जो सुख दुःख मिलता, उसका अस्तित्व नहीं देख पड़ता। ऐसा अनित्य विषय ईश्वरको आत्मा सौंपने और अभ्यास बलसे मनोविकार ला नहीं सकता। बुद्धिग्राह्य आन्तरिक सुख ही गीताके मतानुसार सेवनीय है।

ईश्वरके ध्यान, ईश्वरके महिमानुभव, तत्कीर्तन और तत्सम्बन्धीय उच्च भाव आत्मसात् करने और उसके बल पर स्वतः सर्वभूतका शत्रु मित्र भाव परित्याग करके हितसाधनमें रत होनेसे उक्त प्रकार अखण्डनीय चिरवर्धनधर्मी सुख उद्भूत, सर्वदुःख लुप्त और सर्वप्रकार अपर विषयक क्षुद्र सुख इसी महानन्दमें मज्जित होता है। फलाफल ईश्वरको अर्पण करके प्राकृतिक नियमसे जो काय अवश्य ही करना पड़ता, उसकी क्रियाके अनुष्ठानमें कभी भी दुःख नहीं लगता। परन्तु निज इन्द्रिय

त्यागिकर सुखसाधनाके लिये पुण्यादि कर्म अर्थात् सकाम अनुष्ठान करनेसे वैसी सिद्धि कहां मिलती, इससे मुक्ति-लाभमें बाधा पड़ती और नानाविध दुर्गति लगी रहती है। किसी अणुके सूक्ष्मानुसूक्ष्म अंशसे अति विशाल ब्रह्माण्ड और उसकी समष्टि तक जो अनन्ताकाशमें अनंत-कालावधि समुद्रवालुकावत् व्याप्त हो रहा है, सभी एक दूसरे पर स्व स्व धर्मानुयायिक कार्य करता है। मनुष्य-को गर्भच्युतिसे यावज्जीवन समस्त जगत् उस पर अपना कार्य देखाता और यह कार्यफल यावज्जीवन चला जाता है। अपना अपना नया कार्यगत फल इहलोक और जन्मजन्मान्तरमें भोग करना पड़ता है। सुतरां कर्म-बन्धमुक्त हो जीवात्माका परमात्मामें लय होना (निर्वाण-प्राप्ति) अनिर्वचनीय दीर्घकालव्यापी जटिल और दुर्ज्ञेय व्यापार है। योग नामक कर्मकौशल इस निर्वाणप्राप्ति का साधक है। योगकी नाना पन्थाएं नाना ग्रन्थोंमें विवृत हुई हैं। किन्तु आहारादिका नियम और अन्यान्य विविध चेष्टाओं द्वारा पिण्डविशुद्धकारी संयमन, सद्गुरुके निकट तत्त्वोपदेशग्रहण और अन्तमें भक्त्युद्दीपनसे आत्मज्ञान लाभ करके तन्मय हो जाना सद्योगका मुख्य उद्देश्य है। ईश्वरको यद्यपि लोग नाना प्रकारसे भजन करते और सर्वप्रकारसे कार्यानुरूप सिद्धि पाते रहते, तथापि आत्मज्ञानानुशीलनमें की जानेवाली भजनाको ही प्रकृष्ट समझते हैं। उस ज्ञानका चरम फल यही दृष्टोपलब्धि है कि सर्वभूतमें एकमात्र ईश्वर और सर्व-भूत ईश्वरमें अवस्थित है। सुतरां साधक सिद्ध होने पर अपने आपको ईश्वरसे भिन्न समझ नहीं सकता। इसी समय 'सोऽहं' (वह मैं हूं), 'अहं सः' (वह मैं), 'ब्रह्ममयं जगत्' (संसार ब्रह्मरूप है) भाव उसका दृढ़ निश्चय हो जाता है। वह ज्ञानचक्षुसे जगत् एवं संसार-सृष्टि दर्शन कर नहीं सकता। महाकविका विशाल भावानुभाव अतिक्रम और उसके शोभादर्शनमें महाविज्ञानशास्त्रविदोंकी तीक्ष्ण बुद्धिकी अपेक्षा भी सूक्ष्मबुद्धि-से अनन्तकौशलका निगूढ़ तत्त्व भेद करके साधक सदा-नन्दसागरमें डूबा रहता, उसका चित्त कभी भी किसी प्रकारसे विक्षुब्ध नहीं पड़ता और सर्वदा निर्भय लगता है। अपनी उपमामें सबका सुख दुःख सममावसे देख करके वह विश्व-दास्य-व्रतधारी, दयाशील, सत्यपरायण, बालवत् ऋजुस्वभावविशिष्ट, सटीकतात्मा, मृदुभावापन्न इत्यादि सब उज्ज्वल तथा महोत्कृष्ट गुणोंसे भूषित और सर्वप्रकार क्षुद्र अधम निकृष्ट भावसे अपरिचित हो जाता है। विषय कामनाएं सुबुद्धिको मलिन करती हैं। यही कामनाएं ईश्वरनिष्ठा सुतरां शान्ति और मुक्तिमें बाधा डालनेवाली हैं। ज्ञान तथा बुद्धिकौशल और अभ्यास-बलसे कामना न दबने पर सर्वनाशकारिणी हो जाती है। विश्वशृङ्खलके भिन्न भिन्न पर्वस्वरूप जो एक एक पृथक् वस्तु पड़ता, उसमें मनुष्य भी ठहरता है। अन्यान्य वस्तु जैसे अपने अपने प्राकृतिक नियम और गूढ़ भावसे परस्परकी अनुकूलता करते, मनुष्य तन्नियमवशतापन्न होते भी चित्शक्तिकी अपेक्षाकृत स्फूर्ति रहनेसे अपने बल पर स्वशरीर और मनको अन्यप्रकार बदल सकते हैं। मालूम पड़ता, इसीसे उनके पक्षमें उक्त प्रकारका कोई कार्य मानो स्वतन्त्रभावसे किया जा सकता है। परन्तु वास्तविक वह जहां तक बुद्धिमायोत्तीर्ण हो सकते, बुद्धि-शक्तिके नियमानुसार कार्य करते हैं और जब माया बुद्धिको महाजड़ीभूत बना डालती, इस मायाबलसे उक्त जञ्जीरकी कड़ी (मानव) अपना तथा अन्यान्य शृङ्खल-पर्वोंका प्रतिकूलाचरण लगाती है। ऐसा होने पर भावना ही मायाके प्रतिनिधि-जैसा कार्य करती है। उक्त अनु-कूलता ही पुण्य और प्रतिकूलता पाप है। इहलोक वा परलोकमें विषयभोग कामना ही पापका बीज ठहरती है। यह दुष्पूरण अग्निवत् कामना शुद्ध शरीर और शुद्ध-चित्तमें केवल ईश्वरके ध्यानसे दमित होती है। तब जीवभूत चिदंश चित्-मध्य (ईश्वर)में लगनेसे इस माया-की प्रतिनिधि कामना एककालको निर्वापित हो जाती, मनुष्य अपना और दूसरेका कल्याणसाधन करता है। इन्द्रिय, मन और बुद्धि कामनाका आधार हैं। सुतरां इन सबके दमनका कौशल समझना भी एक महत् कार्य है। यह गुरुतत्त्वविशेष गुरूपदिष्ट ज्ञानीको छोड़ कर-के किसी दूसरेका बोधगम्य नहीं—मनुष्यकी पापपुण्य विषयमें क्या स्वतन्त्रता और क्या परतन्त्रता है? इस विषयमें हठात् अज्ञानियोंके बुद्धिभेदकी चेष्टा करनेसे उनका विस्तर अनिष्टोत्पादन सम्भव है। उनके लिये

सद्धर्मका उपदेश यही ठहरता है कि ईश्वर आत्मरूपसे हृदयमें रहता और सर्वजीव यन्त्रारूढ़ पुत्तलिकावत् लगता अर्थात् मायासे चलता है। इससे दायित्व और अपने अपने कर्मके सुफल दुष्फलका अधिकारित्व सांसारिक व्यक्तिके मनमें न रहनेसे संसार ध्वंस होता है। जो लोग सम झते कि हम स्वतन्त्रताके बलसे कार्य करते और सुकृति दुष्कृतिके अनुसार पुण्यपापके भागी बनते, उनके मनका यह भाव अज्ञानावस्थामें रहना ही अच्छा समझते हैं। जिस तत्त्वज्ञानीने योगबलसे सोऽहं भाव परिष्काररूपमें अनुभव किया और जो भगवत्प्रेममें लीन हुआ है। उनके निकट पाप पुण्य–हेय उपादेय ज्ञान बिलकुल नहीं रहता। उसके द्वारा कल्याणकर कार्यको छोड़ करके और कुछ भी उद्भावित नहीं होता। फिर अपने आपके लिये किसी कार्यका प्रयोजन न पड़ते भी लोक हितार्थ कामनायुक्त लोगोंकी तरह उसे निष्काम ही करके पुण्य कर्मादि करना चाहिये। उसको देख करके दूसरे लोग वैसा ही करेंगे और इससे जगत्का उपकार होगा ज्ञानसोपानारोहेच्छु व्यक्ति यथासाध्य इन्द्रियदमन करके। ईश्वरकी चिन्तामें निमग्न होता है। साधनावस्थामें प्रकृतिके गुणबलसे (उसके अपनी चेष्टाभिन्न उपस्थित) वीतानुराग पर जो सुख अनुभव करता उसके पक्षमें मोक्षके प्रतिकूल नहीं पड़ता और इसी अवस्थामें प्रमाद क्रमसे एक दो बार यदि पाप भी करता, तो ज्ञानबलसे उसको समझ अनुतापग्रस्त हो ईश्वरके निकट बलप्रार्थना करके पुनः पुनः प्रतिज्ञाशील बनता और साधनपक्षका अनुसरण करते ही वह पाप मिटता है। सभी कर्मोंके प्रारम्भमें दोषका योग है। क्रमशः कौशल और अभ्यास बलसे दोषविमुक्त होते हैं। मन कामनादि रिपुओंसे मुक्त होने पर आत्माका बन्धु और इन सबके वशीभूत होने पर उसका शत्रु है।

रिपुक्षय व्यक्ति बाह्य और मानसिक पीड़ामें अन्य की भांति व्याकुल न हो करके ज्ञानबलसे इसको अवश्य भाविनी समझ अभ्याससे अटल पड़ जाता है। वह प्रशान्तात्मभावापन्न परमात्मसमाहित ज्ञान और विज्ञान से पूर्णचित्त हो संसारमें सकल आदरणीय और अनादरणीय विषयोंमें समदृष्टि रखता और इस सब प्रकार सांसारिक क्रियाके फलाफलमें ईश्वरका कोई दोष नहीं समझता। क्रमसे वह सर्वात्मभावमें उपस्थित होता है। अविचलित आत्मतत्त्वज्ञ भक्तिरसमें मग्न हो करके सदा ऊर्ध्वमुखी मतिसे उक्त अवस्था लाभ करने पर उपलब्धि नहीं करता, तदपेक्षा अधिक लाभ किसी दूसरेमें है या हो हो सकता है और कितनी ही बड़ीसे बड़ी सांसारिक वा अन्य प्रकार दुःख घटना क्यों न हो इसके उससे किञ्चित् मात्र भी विचलित नहीं कर सकती सदा ईश्वरचिन्ता, सदा सर्वभूतके हितकी चेष्टा और अपनी प्रकृतिके अनुसार जैसे जैसे जीविकानिर्वाह तथा हितकर कार्य कर सकता, वह स्वधर्म ज्ञानसे अवश्य साधनीय जान करके साधन करता और परपीड़नका भाव विसर्जन करके जीवनयात्रा भरता है। वह इस-लोकमें अति उन्नत मनसे पवित्र आनन्द अनुभव करता और कलेवर छोड़ने पीछे पुनर्जन्म नहीं रखता

इसी प्रकार उद्देश साधनार्थ नाना शास्त्रमें नाना उपाय और उपदेश विद्यमान हैं। किन्तु गीतामें ईश्वर अव्यक्त होते भी कैसे चिन्तनीय है, जगत्का उद्भव क्योंकर होता है, जगत्का उपादान क्या है, जीवन क्या है, मृत्यु, क्या है, कर्म क्या है, कर्तव्याकर्तव्य तथा निष्क्रिय होना किसे कहते हैं, मनोवृत्तिका मूल कहां है, शीतोष्ण सुख दुःखादिका द्वन्द्वभाव कैसे आता है, सृष्टिक्रियाके मूल मायाके सत्व रजः तमः तीनों गुणोंका लक्षण तथा कार्य और तदनुसार मनुष्यका स्वभावभेदसे चातुर्वर्ण्य और तत् तत् वर्णका कर्मभेद त्रिगुणका परस्पर सम्बन्ध तथा प्रादुर्भावका इतर विशेष और तत् तत् फल क्या है, इन गुणों और दूसरे किस किसके बलसे कर्मकी उत्पत्ति होती और गुणभेदसे ज्ञानबुद्धि-धैर्य-श्रद्धा-उपास्य पदार्थ-आहार यज्ञ-तपस्या दान-सुख-कर्म-कर्ता-कर्मत्याग सबकी उत्कृष्टता-मध्यम भाव तथा निकृष्टता भेद की जाती इत्यादि न्याय्यान्याय्य कार्यका हेतु क्या है इत्यादि अनेक मनोहर ज्ञानगर्भ भक्ति-उद्दीपक और मोक्षसाधक विषयोंकी कथा विवृत हुई है।

इन सब तत्त्वोंका संक्षेपमें प्रकाश कर पीछे सगुण तथा निर्गुण उपासना भेदसे जो उपदेश दिया गया है, वह कृष्णतत्त्व है और इसीमें विविध शास्त्रोंके मतामतको

मीमांसा पर दृष्टि रख करके कहा हुआ है कि अव्यक्त निराकार अनादि अनन्त निर्विशेष, अव्यय इत्यादि केवल अभावसूचक शब्द द्वारा अनिर्देश्य अचिन्तनीय ब्रह्मकी उपासना देहधारीके लिये दुःसाध्य है। फिर अपेक्षाकृत कथित् चिन्ताभाव (यथा—तमसः परस्तात्, दिव्यद्योतक भूतेश्वर, भूतभावन, स्थाणु, कवि, सर्वज्ञ, सर्वविद्यानिर्माता, समदृष्ट, सर्वभूतका बीज, परम पुरुष, विश्वनियन्ता, विधाता, विश्वपिता, विश्वमाता, स्रष्टा, रक्षक, संहर्त्ता, सुहृत्), मन, बुद्धि, ज्ञान, परिज्ञाता, प्राण, बल, वीर्य, सबका आदि-मध्य-अन्त इत्यादि भाव और सर्वप्रकार उज्ज्वल मनोवृत्तिका भाव (दया, सत्य, शम, दम, अभय, अहिंसा, क्षमा, पवित्रता, ऋजुता प्रभृति) तथा क्रमशः अनुभवातीत ज्योतिः (सूर्य, चन्द्र, अग्नि, प्राकृतिक महोज्ज्वल इन्द्रियगोचर पदार्थादि) और वेद, यज्ञ, तपस्या, दान, प्रणव इत्यादि (उसके पीछे वृहस्पति, शुक्राचार्य, व्यासमुनि तथा कपिलादि ज्ञानी और प्रह्लादादि भक्त पुराणवर्णित पुरुष इत्यादि) मूर्तिनिर्देशसे उपासना सुबोधगम्य बना दी गयी है। किन्तु शब्दोंका गूढ़ार्थ यही है कि निर्गुण ब्रह्मकी अभावसूचक शब्द द्वारा वर्णित उपरि उक्त तथा तदतिरिक्त गुणोंके साथ मिश्रित पूर्णब्रह्म घनीभूत आकारमें कृष्णावतार महासुलभचिन्ता है और उसके ध्यानमें तद्भावाविष्ट हो करके इहलोक और परजन्मान्तरमें उसकी प्राप्ति होती है।

कृष्णोपासक स्व स्व प्रकृति, शिक्षा, बुद्धि, पूर्व पूर्व कर्मफल और इहलोकके विविध सङ्गठनभेदसे नाना भावोंमें उनका ध्यान पूजादि करते हैं। सर्वोच्च श्रेणीके ब्रह्मव्यञ्जक ध्यानयोगसे रूपक भावमें उनकी उपासना उठाते हैं। कोई उन्हें चतुर्भुज नारायणकी एक द्विभुज मूर्ति देवताके भावमें देखता है। कोई उनकी भजना वृष्णिवंशीय यदुकुलोद्भव वासुदेव माधव मधुसूदन योगेश्वर महातेजस्वी पुरुष जगद्गुरु स्वरूप समझ करके ही किया करता है। कोई उन्हें कामदाता समझ करके नाना कामनाओंके पूर्ण होनेके लिये उनके स्तव पढ़ता है। इसी प्रकार उसकी बहुत अर्चना है। इसमें जो इहलोक वा परलोककी सर्वकामना सिद्धिके अभिलाष वर्जित हो मोक्षलाभ पर भी दृष्टि न डाल उनकी भक्ति और उनके प्रेममें मग्न 'तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः' बन ज्ञानयज्ञरत और सर्वभूतहितरत हुआ करते हैं, अति दुर्लभ हैं। वही सब श्रेष्ठ माने गये हैं। किन्तु अन्यान्य श्रेणियोंके उपासक जो पुष्प पत्र फल जल इत्यादि द्रव्य द्वारा तथा होमादि क्रियासे उनको पूजते, केवल तत् कर्म फलमात्र पाते हैं।

जिस कालको गीता रचित हुई, उस समय भी कृष्णमतकी अवहेला करनेवाले बहुतसे लोग रहे। उनके प्रति करुणाभावकी कथा भी गीतामें कही है। पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा, योगशास्त्र सबके आजकल जो जो ग्रन्थ देख पड़ते उनके मतोंकी अनेक कथाओंका मल और नास्तिक मत भी यथायोग्य कृष्णमतके साथ गीतामें प्रकाशित हुआ है।

गीताका पूर्वोक्त विषय—ईश्वर, जगत्, नरतत्व, कर्म, ज्ञान, भक्ति, पूजा प्रभृति शब्दोंमें द्रष्टव्य है।

यद्यपि महाभारतके संग्रह कालको तत्पूर्व समयके वेद उपनिषत् प्रभृतिके अनेक मत और उद्धृत वचन गीतामें सन्निवेशित हुए हैं, तथापि कृष्णमत अन्यान्य नूतन उपादानोंके साथ संघटित और विशेष विशेषस्थलमें "मे मतं" "मे मतिः" इत्याकारसे सुतेजित और समर्थित किया गया है।

सकल ज्ञानोंका सार और सब शास्त्रोंका मुख्योद्देश्य साधन मानवजातिके लिये सर्व प्रधान कर्तव्य है। गीतारहस्य यही है—आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्त अनन्त विषयका असीम विकास ७०० श्लोकगत चित्त कैसे गीतामें कौनसी प्रणाली और किस नियमसे सन्निविष्ट हुआ है। जैसे क्षुद्र वट वा अश्वत्थ बीजसे महाविशाल तरुशाखादि प्रवर्धित होते, गीताके प्रथम अध्यायमें अर्जुनकी विषादसूचक बहुत थोड़ी और द्वितीयाध्यायमें तदानुषङ्गिक सामान्य कथासे उपर्युक्त एक विशाल तत्त्व निकले हैं। अर्जुनने कुरुक्षेत्रमें युद्धोत्साही स्वीय तथा विपक्ष सैन्यदलको देख मोह प्राप्त हो करके अपने शरीर, मन और हृदयकी अवस्था तथा अपना उद्भावित मत कृष्णके समक्ष बतलाया था। इसी परिचयमें उन्होंने उपस्थित युद्धकर्म करनेकी अपनी अनिच्छा भी जतलायी और उसके लिये जो सब कारण निर्दिष्ट हुए, उनके

खण्डन पर कृष्णोक्ति भी आयी है। इसी उक्तिमें अर्जुनको सीधी रीति पर समझाने लिये अल्प प्रश्न पर एक एक अध्याय है। गीताके रचना समय पर अनेक मतामत मिलते हैं। महाभारत देखो।

३ सङ्कीर्ण रागका एक भेद। ४ २६ मात्राका एक छन्द जिसमें १४ और १२ मात्राओं पर विराम होता है। ५ वृत्तान्त, कथा, हाल।

गीतायन (सं० क्ली०) गीतस्य अयनं आश्रयः, ६ तत्। गीतयुक्त।

गीतासार (सं० पु०) गीतायाः सारो यत्र, बहुव्री०। यद्वा गीतासु सारः, ७ तत्। गरुड़पुराण पूर्वखण्डके २३३ अध्यायसे २३६ अध्याय पर्यन्त अंशविशेष। जिसमें गीताका सारांश संक्षेपमें कहा अथवा जो गीताकी अपेक्षा उत्कृष्ट हुवा, गीतासार कहलाता है। गीता वेदव्यासकी अमृतमयी लेखनीसे निःसृत पीयूषधारा है। इस गीतासारमें उसीका सारांश कहा हुवा है। इसके वक्ता स्वयं भगवान् हैं। गरुड़पुराणमें उसके श्रोताका कोई उल्लेख नहीं है। फिर भी इतना लिख दिया गया है—'भगवान्ने कहा कि उन्होंने पूर्वकालको अर्जुनके निकट जिस गीतासारका प्रकाश किया था, उसे कीर्तन करेंगे।' इससे मालूम पड़ता कि भारतयुद्धके आरम्भमें अर्जुनको मोह उपस्थित होने पर भगवान् श्रीकृष्णने उन्हें जो विस्तृत उपदेश दिया, मोहग्रस्त अर्जुनने उसको धारण न किया था। पीछेको भगवान् कर्तृक उसका सारांश पुनर्वार उपदिष्ट हुआ। इसीको गीतासार कहते हैं। भारतमें उसका कोई प्रसङ्ग नहीं है। गीताका प्रधान उद्देश्य हो प्रतिपादन करना है कि फलका अभिलाषी न हो केवल कर्तव्यता बोधसे लौकिक और वैदिक कार्यका अनुष्ठान करनेसे ही मनुष्य सुखी हो सकता है। किन्तु इस गीतासारमें उसकी कोई कथा उल्लिखित नहीं हुई। इसमें तत्त्वज्ञान मुक्तिका साक्षात् कारण और अष्टाङ्ग योग चित्तशुद्धिका कारण जैसा ठहराया है।

गीति (सं० स्त्री०) गै भावे क्तिन्। १ गान। २ मात्रावृत्तविशेष। इसके सम चरणोंमें १८ और विषम चरणोंमें १२ मात्राएं होती हैं। इसके अन्य नाम—उद्गाथा और उद्गाहा।

गीतिका (सं० स्त्री०। गीतिरिव कायति कै-क टाप्।) १ एकमात्रिक छन्द जिसके हरएक चरणमें २६ मात्राएं होती हैं। १४ तथा १२ पर यति होती है और अन्तमें लघु गुरु होते हैं। २ एकवर्णिक छन्द जिनके हरएक चरणमें सगण, जगण, भगण, रगण और लघु गुरु होते हैं। ३ गीत, गाना।

गीतिकाव्य (सं० क्ली०) गान-मिश्रितकाव्य।

गीतिन् (सं० त्रि०) गीतं गानमस्त्यस्य गीति-इनि। गान करनेवाला।

गीतिर्या (सं० स्त्री०) छन्दविशेष, जिसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरणमें १६ लघुपद रहते हैं।

गीतिरूपक (सं० पु०) कम गद्य तथा अधिक पद्यका एक तरहका रूपक।

गीथा (सं० स्त्री०) गै थक् टाप्। १ वाक्य। २ गीत, गान।

गीदड़ (हिं० पु०) शृगाल। सियार कुत्तेकी जातिका एक जन्तु जो लोमड़ीके सदृश होता है। यह झुंडके झुंड एशिया तथा अफ्रीकामें हरएक जगह पाया जाता है। दिनके समय पृथ्वीके भीतर मांदमें रहता और रात्रिकाल समूहमें बाहर निकलता और छोटे छोटे जानवरको पकड़ कर खाता है। यह मृत जन्तुके लाश भी खाता है। गीदड़ बहुत डरपोक जन्तु समझा जाता है।

गीदड़रूख (हिं० पु०) मध्यम आकारका एक तरहका पेड़। यह समस्त उत्तर, मध्य और पूर्व भारतवर्षमें होता है। इसके पत्ते छोटे, बड़े तथा कई आकारके होते हैं और पशु बहुत चावसे इसे खाते हैं। ग्रीष्मऋतुके आरम्भमें इसके समस्त पत्ते गिर जाते हैं। चैतसे जेठ मास तक इसमें बहुत छोटे छोटे लालरंगके पुष्प निकलते हैं और इसमें बेरसे कुछ छोटे फल भी होते हैं जो खानेके काममें आते हैं।

गीदर (हिं०) गीदड़ देखो।

गीदी (फा० वि०) जिसको हिम्मत नहीं, डरपोक, कायर।

गीध (हिं० पु०) गृध्र देखो।

गीधना (हिं० क्रि०) लुब्ध होना, परचना।

गीबत (अ० स्त्री०) १ अनुपस्थिति, गैर-हाजिरी। २ निंदा, चुगुलखोरी, चुगुली।

गोर (सं० स्त्री०) वाणी ।

गीरथ (सं० पु०) गी-रथ इवास्य, बहुव्री० । १ वृहस्पति । २ जीवात्मा ।

गीर्ण (सं० वि०) गृ कर्मणि क्त । १ वर्णित, कहा हुआ । २ स्तुत । ३ निगला हुआ ।

गीर्णि (सं० स्त्री०) गृ भावे क्तिन् । १ स्तुति । २ वर्णन । ३ ग्रास, निगलनेकी क्रिया ।

गीर्देवी (सं० स्त्री०) गिरोऽधिष्ठात्री देवी । सरस्वती, शारदा ।

गीर्पति (सं० पु०) गिरां पतिः, ६-तत् । अहरादित्वात् विसर्गस्य विकल्पे रेफादेशः । १ वृहस्पति । २ पण्डित, विद्वान् ।

गीर्लता (सं० स्त्री०) गीरिव विस्तीर्णा लता । महाज्योतिष्मती लता, बड़ी मालकंगनी लता ।

गीर्वत (सं० वि०) गीरस्त्यस्य गिर-मतुप् । वाक्ययुक्त ।

गीर्वाण (सं० पु०) गीरेव वाणः कार्यसाधनत्वात् अस्त्रविशेषो यस्य, बहुव्री० । देवतासुर ।

गीर्वाणकुसुम (सं० क्ली०) गीर्वाणप्रियं कुसुमं, मध्यपदलो० । लवङ्ग, लौंग ।

गीर्वाणयोगीन्द्र—एक ग्रन्थकार, इन्होंने प्रपञ्चसार नामक एक तन्त्रकी रचना की है ।

गीर्वाणेन्द्र सरस्वती—विश्वेश्वर सरस्वतीके छात्र, देवेन्द्र और नृसिंहाश्रमके गुरु । इन्होंने गायत्रीपुरश्चरणविधि और प्रपञ्चसार-सारसंग्रह नामके दो ग्रन्थ रचना किये हैं ।

गीला (हिं० वि०) भीगा हुआ, तर, नम ।

गीलापन (हिं० पु०) गीला होनेका भाव, नमी, तरी

गीली (हिं० स्त्री०) एक बहुत ऊंचा वृक्ष । इसकी लकड़ी सुर्खी लिये पीले रंगकी होती है जिससे मेज कुरसियां आदि बनाई जाती हैं । इसका पेड़ हिमालय पर्वतकी तराईमें बहुतायतसे होता है । बरमी ।

गीष्पति (सं० पु०) गिरां पतिः ६-तत् । १ बृहस्पति । २ पण्डित, विद्वान् ।

गुंग (हिं०) गूंगा देखो ।

गुंगचरी (हिं० स्त्री०) एक तरहका दीर्घ मत्स्य जो सर्पकी तरह दीख पड़ता है । बामी मछली ।

गुंगा (हिं०) गूंगा देखो ।

गुंगो (हिं० स्त्री०) दो मुखवाला सर्प । चुकरैंड़ ।

गुंगुआना (हिं० क्रि०) १ धुंआ देना, अच्छी तरह न जलना । २ गूं गूं आवाज करना, अस्पष्ट शब्द बोलना ।

गुंचा (अ० पु०) १ कली, कोरक । २ नाच रंग, विहार ।

गुंची (अ० स्त्री०) घुंघची ।

गुंजरना (हिं० क्रि०) १ गुंजार करना । भौरोंका गूंजना, भन भनाना । २ शब्द करना, गरजना ।

गुंजाइश (फा० पु०) १ स्थान, जगह । २ समाई ।

गुंजान (फा० वि०) घना, अविरल ।

गुंजिया (हिं० स्त्री०) एक तरहका आभूषण । इसे स्त्रियां कानोंमें पहना करती हैं ।

गुंटा (हिं० पु०) छोटा जलाशय, ताल ।

गुंठा (हिं० पु०) एक प्रकारका नाटे आकारका अश्व ।

गुंडई (हिं० स्त्री०) गुंडापन, शोहदापन । बदमाशी ।

गुंडली (हिं० स्त्री०) १ कुंडली फेंटा । गेंडुरी ।

गुंडा (हिं० वि०) १ दुर्वृत्ति, पापी । २ छैला, चिकनिया । (पु०) ३ दुष्टमनुष्य ।

गुंडापन (हिं० पु०) बदमाशी ।

गुंदला (हिं० पु०) दल दलके पास होनेवाली नागरमोथा नामकी घास ।

गुधना (हिं० क्रि०) जल मिला कर सानना ।

गुंधाई (हिं० स्त्री०) १ गूंधनेका भाव । २ गूंधनेकी मेहनताना या मजदूरी ।

गुंधावट (हिं० स्त्री०) १ गूंधनेकी क्रिया । २ गूंधनेका तरीका ।

गुंबज (फा० पु०) देवालयोंकी गोलछत ।

गुंबजदार (फा० वि०) जिस पर गुंबज हो ।

गुंबद (फा० पु०) गुम्बज देखो ।

गुंबा (हिं० पु०) मस्तक पर चोट लगनेसे एक प्रकारकी सूजन । गुलमा ।

गुंभी (हिं० स्त्री०) अङ्कुर, गाभ ।

गुंमो (हिं० स्त्री०) पाल खींचनेकी रस्सी ।

गुआ (हिं० पु०) सुपारी, गुवाक ।

गुआगुदी—एक जातीयवृक्ष । (Gumsea).

गुआर (हिं० स्त्री०) गोगाणी, ग्वार।

गुआरपाठा (हिं० पु०) ग्वारपाठा देखो।

गुआरी (हिं० स्त्री०) ग्वार देखो।

गुआलिन (हिं०) ग्वालिन देखो।

गुइयां (हिं० पु० स्त्री०) साथी, सखा, सहचरी।

गुइयांबावला—स्वनाम प्रसिद्ध वृक्षविशेष।

गुएला—द्राक्षा लताके सदृश एक तरहका वृक्ष (Vitis latiflora)। इसका फल देखनेमें ठीक द्राक्षाके जैसा होता लेकिन भीतर पोल रहता है।

गुखरू (हिं०) गोखरू देखो।

गुगरल (हिं० पु०) एक तरहकी बतख।

गुगानी (हिं० स्त्री०) जलके ऊपरकी हलकी हिलोर। खलमली।

गुगुलिया (हिं० पु०) बन्दर नचानेवाला, मदारी।

गुगेर—पञ्जाबके मोण्टगोमरी जिलेकी तहसील। यह अक्षा० ३०° ३८´ एवं ३१° ३३´ उ० और देशा० ७२° ५८´ तथा ७३° ४५´ पू० मध्य रावीको दोनों ओर अवस्थित है। क्षेत्रफल ८२४ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ११८६२२ है। इसमें ३४१ गांव बसे हैं। गुगेर ग्राम ही सदर है। मालगुजारी तथा सेस १३३००० रु० है।

गुग्गर (हिं० पु०) गुग्गुल देखो।

गुग्गुल (सं० पु०) गोजात गुप् क्विप्, गुक् रोगः ततो गुड़ति रक्षति गुक् गुड़-कस्य लकारः। १ स्वनामख्यात वृक्षविशेष। गुग्गुलु देखो। २ रक्तशोभाञ्जनवृक्ष।

गुग्गुलु (सं० पु०) गुक रोगस्तस्माद् गुड़ति रक्षति, गुड़-कु डस्य लकारः १ वृक्षविशेष, कोई पेड़। २ उक्त-वृक्षका निर्यास तथा सुगन्धि द्रव्यविशेष, गुग्गुलु पेड़का दूध और कोई खुशबूदार चीज। इसका संस्कृत पर्याय—कुम्भ, उलूखलक, कौशिक, पुर, कुम्भोल, खलक जटायु, कालनिर्यास, देवधूप, सर्वसह महिषाक्ष, पलङ्कषा, यवनद्विष्ट, भवाभीष्ट, शिवाटक, जटाल, पुट, भूतहर, शिव, शाम्भव, दुर्ग, यातुघ्न, महिषाक्षक, देवेष्ट, मरु-द्विष्ट रक्षोहा, रक्षगन्धक और दिव्य है। यह कटु, तिक्त, उष्ण, रसायनविशेष और कफ, वात, कास, कृमि, वातरोग, क्लेद, शोथ और अर्शोनाशक है। (राजनि०) भावप्रकाशके मतमें गुग्गुलु विशद, तिक्त, कटु तथा कषायरस, उष्णवीर्य, पित्तवर्धक, सारक, कटुविपाक, रूक्ष, अत्यन्त लघु, भग्नसन्धानकारक, शुक्रवर्धक, स्वर-प्रसादक, अग्निवृद्धिकारी, पिच्छिल, बलकारक, और कफ, वायु, व्रण, अपची, मेदोदोष, प्रमेह, अश्मरी, आमवात, क्लेद, कुष्ठ, आमवात, पीड़का, गण्डमाला तथा कृमि-नाशक है।

इसके मधुर रससे वायु, कषायसे पित्त और तिक्तरस-से कफ नष्ट होता है। नूतन गुग्गुलु मांसवर्धक तथा शुक्रजनक है। परन्तु पुरातन होने पर यह अत्यन्त लेखनगुणयुक्त अर्थात् अतिशय कृशकारक होता है। जो गुग्गुलु पके जम्बुफलकी भांति सुगन्धि, पिच्छिल और सुवर्णवर्ण आता, नया और शुष्क दुर्गन्धयुक्त विकृतवर्ण तथा वीर्यहीन होनेसे पुराना समझा जाता है। गुग्गुलु सेवनकारीके पक्षमें अम्लरस, तीक्ष्णद्रव्य, अजीर्णजनक अर्थात् गुरुपाकद्रव्य, मैथुन, परिश्रम, रौद्र, मद्य और क्रोध अतिशय अहितकर है।

गुग्गुलु जातिभेदसे पांच प्रकारका होता है—महि-षाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म और हिरण्य। देखनेमें अञ्जन जैसा महिषाक्ष कहलाता है। अतिशय नीलवर्ण-को महानील, कुमुदकुसुम जैसी आभाविशिष्टको कुमुद, पद्मवर्णको पद्म और सुवर्णवर्ण गुग्गुलुको हिरण्य कहते हैं। इसमें महिषाक्ष तथा महानील हाथीके लिये और कुमुद एवं पद्म घोड़ेके लिये आरोग्यजनक है। केवल-मात्र हिरण्य जातीय गुग्गुलुसे ही मनुष्यका उपकार होता है। अवस्थाविशेषमें महिषाक्ष भी आदमीके काम आता है। (भावप्रकाश पू० १ भाग)

बहुत खुशबूदार होनेसे गुग्गुलको भारतवासी धूप जैसा व्यवहार करते हैं। इसको अग्निमें डालने पर खुश-बूसे घर भर जाता और बड़ा आनन्द आता है। प्रयोगा-मृतके मतानुसार ग्रीष्मकालको मरुभूमिमें यह वृक्ष उत्पन्न होता है। पीछे शीत ऋतुको शिशिरके जलमें भीगने पर उससे एक प्रकार रस वा निर्यास निकलता है। इसीका नाम गुग्गुलु है। इसकी विशेष परीक्षा करके लेना चाहिये। विशुद्ध गुग्गुलु आगमें डालनेसे जल उठता, धूपमें उड़ता और जलमें निक्षेप करनेसे चिपचिपाने लगता है। पुरातन, अङ्गारवर्ण, गन्धहीन वा विवर्णकी

ग्रहण नहीं करते। (प्रयोगामृत) ३ मास पर्यन्त गुग्गुल पूर्ण वीर्य रहता. फिर गुण और वीर्य घटने लगता है।

इसको शोधनप्रणाली यह है कि उसको खण्ड खण्ड करके गुडूची तथा त्रिफलाके क्वाथ और दुग्धमें पाक करते हैं। शोधित गुग्गुलुको ही व्यवहार करना चाहिये। (रसचन्द्रिका) दशमूलके ईषदुष्ण क्वाथमें उसका निक्षेप करके आलोड़न किया जाता है। फिर बारीक कपड़े से छान करके धुपमें सुखा घी मिला देते हैं। ऐसा करनेसे वह शुद्ध होता है। (वैद्यकनिघण्टु)

यह वृक्ष भारतवर्ष और अफ्रीकामें स्थान स्थान पर उत्पन्न होता है। इसके निर्यासको चलती अंगरेजीमें (Bdelium) कहते हैं। देखनेमें यह राल जैसा। लगता है। किसी स्थानका गुग्गुलु पीला-जैसा और कहीं कहीं-का गहरा लाल होता है। इसमें थोड़ीसी मीठी महक भी रहती है। अंगरेजी मतानुसार वह तारपीनके तैल जैसा उत्तेजक है, खानेसे श्लेष्माकी झिल्ली विशेषतः फेफड़े पर उसका कार्य होते रहता है। कठिन कफरोग, बहु-कालस्थायी हृद्रोग, जलवत् श्लेष्मास्राव रोग और कण्ठनलीष रोगमें खाने या उसके धुएंका नास लेनेसे विशेष उपकार देख पड़ता है। कठिन व्रणरोग, क्षत और स्फोटकादिके पक्षमें भी वह तेजस्कर औषध है। १५ग्रेनसे २ ड्राम मात्रा तक उसको सेवन कराया जा सकता है।

गुग्गलुक (सं० त्रि०) गुग्गलुं पण्यमस्य, गुग्गलु-ठन्। गुग्गल-विक्रेता, गुग्गल बेचनेवाला।

गुग्गलुगन्धि (सं० पु०-स्त्री०) गुग्गलुर्गन्धो लेशो यस्य, बहुव्री०। गो, गाय। (त्रि०) गुग्गलोर्गन्ध इव गन्धा-ऽस्य, बहुव्री०। २ गुग्गलुके सदृश गन्धयुक्त।

गुग्गलुवटक (सं० पु०) वातव्याधि।

गुङ्ग (सं० पु०) वेदप्रसिद्ध एक जनपद। (ऋक् १०।४८।८)

गुङ्गमेरु—जनपदविशेष। ८१६ ई०को इस स्थान पर भोटराज रलपाचन और चीन राजामें सन्धि हुई थी। दोनोंकी मैत्रतासिबन्धनमें यहां एक मन्दिर निर्माण किया गया था। इस मंदिरके संलग्न एक प्रस्तरखण्डमें सूर्य तथा चन्द्रमाकी प्रतिमूर्त्तियां खुदी हुई है जिसके नीचे इस प्रकार लिखा है "जब तक सूर्य और चन्द्रमा आकाशमें भ्रमण करेंगे तब तक इन दोनों जातियोंमें सद्भाव रहेगा।"

गुच (हिं० स्त्री०) पञ्जाबकी डाढ़ीदार भेड़।

गुची (हिं० स्त्री०) सौ पानोंकी गुच्छ, आधी ढोली।

गुच्ची (हिं० स्त्री०) १ भूमिमें खोदा हुआ गढ़ा। २ छोटे छोटे लड़कोंके गुल्ली खेलनेका गड्ढा। (वि०) ३ बहुत-छोटी, नन्ही।

गुच्चीपारा (हिं० पु०) छोटे छोटे लड़कोंके कौड़ो फेंकने-का गड्ढा।

गुच्छ (सं० पु०) गु-क्विप्-गुत् शब्दविशेषः तं श्यति तनु-करोति निवारयति गुत्-शो-क। १ स्तवक। २ घास-की जूरी। ३ वह पौधा जिसमें मजबूत काण्ड वा पेड़ी न हो. सिर्फ पत्ते या पतली लचीली टहनियां फैलें। ४ बत्तीस लड़ीका हार। ५ मोतीका हार ६ मोरकी पूंछ।

गुच्छक (सं० क्ली०) गुच्छ संज्ञायां कन्। १ ग्रन्थिपर्ण, गठौला पत्र। (पु०) गुच्छ स्वार्थे कन्। २ स्तवक। इसका पर्याय—स्तम्ब, कुसुमोच्चय, गुच्छ, गुत्स, गुत्सक, रीठाकरञ्ज और गुलञ्च है। ३ एक प्रकारका वृक्ष। इस बीज डिम्बके सदृश होता और व्यास (घेरा) ¾ से ½ तक रहता है। इस वृक्षका बीज दृढ़ तथा मसृण होता और इसके चारो तरफ छाल होते हैं। इसका गुण बल-कारक और पाला ज्वरनिवारक है। पञ्जाबवासी इसमें हिङ्गु मिलाकर खाते हैं। इसका बीज दीर्घकाल स्थायी रहता है। चट्टग्रामके मनुष्य इसमें मरिच मिला कर वरी प्रस्तुत करते हैं। डाक्टर एनसलि साहबका मत है कि इसके तैलसे आक्षेप और पक्षाघातरोग आरोग्य हो जाते हैं।

गुच्छकच्छद (सं० पु०) ग्रन्थिपर्ण, गठौला।

गुच्छकणिश (सं० पु०)गुच्छवत् कणिशः, बहुव्री०। धान्य-विशेष, रागी धान।

गुच्छकन्द (सं० पु०) कन्द शाक।

गुच्छकरञ्ज (सं० पु०) गुच्छाकारः करञ्जः। एक प्रकारका करञ्ज। इसके पत्ते अतिशय स्निग्ध और पुष्प गुच्छाकार होते हैं, जो देखनेमें बहुत मनोहर लगता। इसका पर्याय-स्निग्धदल, गुच्छपुष्पक, नन्दी, गुच्छी, सानन्द और दन्तधावन हैं। इसका गुण कटु, तिक्त उष्ण, विष, वात-रोग, कण्डु विचर्चिका, कुष्ठस्पर्श एवं त्वक्-दोष,नाशक।

इसकी शाखा दन्तधावनके काममें आती हैं।

गुच्छगुल्मिका (सं० स्त्री०) स्नुहीक्षवविशेष।

गुच्छदन्तिका (सं० स्त्री०) गुच्छा गुच्छीभूता दन्ताः फलरूपा यस्याः, बहुव्री०। गुच्छदन्त-कप्-टाप। कदली वृक्ष, केलाका पेड़। इसका फल गुच्छाकारमें होनेके कारण यह गुच्छदन्तिका कहा जाता है।

गुच्छपत्र (सं० पु०)गुच्छाकृतीनि पत्राणि यस्य, बहुव्री०। तालवृक्ष, ताड़का पेड़।

गुच्छपुष्प (सं० पु०)गुच्छाकृतानि पुष्पाणि यस्य, बहुव्री०। १ सप्तच्छदवृक्ष, सतिवन या छतिवनका पेड़। २ अशोक-वृक्ष

गुच्छपुष्पक (सं० पु०) गुच्छपुष्प संज्ञायां कन्। १ रीठा। २ गुच्छकरञ्ज।

गुच्छपुष्पी (सं० स्त्री०) गुच्छपुष्प जातौ ङीष्। १ धातकी वृक्ष, धाईका पेड़। २ शिगूड़ी नामक क्षुप।

गुच्छफल (सं० पु०) गुच्छाकृतानि फलान्यस्य, बहुव्री०। १ रीठा। २ निर्मली। ३ दौना। ४ गुच्छकरञ्ज वृक्ष। ५ जलवेतस।

गुच्छफला (सं० स्त्री०) गुच्छफल-टाप्। १ अग्निदमनी वृक्ष। २ काकमाची मकोय। ३ द्राक्षा। ४ कदली वृक्ष, केलेका पेड़। ५ निष्पावी, लोबिया।

गुच्छबुध्ना (सं० स्त्री०) गुच्छेन बध्नाति बन्ध बाहुलकात् रक्-टाप्। गुण्डालिनी तृण, एक प्रकारकी घास, गोंदला।

गुच्छमूलिका (सं० स्त्री०) गुच्छाकृतिः मूलमस्याः, बहुव्री०। कप्-टाप्। गोंदला घास।

गुच्छमक्षा (सं० स्त्री०) धातकी।

गुच्छा (हिं० पु०) १ एक डालमें लगे पत्ते फूलों वा फलोंके समूह। २ फूलका झब्बा।

गुच्छातारा (हिं० पु०) कचपचिया नामका तारा।

गुच्छार्द्ध (सं० पु०) गुच्छ इव आप्नोति। चौबीस लड़ीका हार। (पु० क्लो०) गुच्छस्य अर्द्धं अर्द्धो वा ६ तत्। २ गुच्छका आधा।

गुच्छाल (सं० पु०) गुच्छमालाति, गुच्छ-आ-ला-क। १ भूतृण, एक तरहकी सुगन्धित घास। २ मूकदम्ब।

गुच्छालकन्द (सं० संयमी, मितृ... गुच्छ-आ-...-क।

गुच्छाः ... [illegible]

गुच्छी (सं० स्त्री०) गुच्छ जातौ ङीप्। १ करंज, कंजा। २ रीठा। ३ पंजाबके ठंढे स्थानोंमें उपजनेवाला एक तरहका पौधा। इसके फूलोंकी तरकारी बनती है और वे सुखा कर बाहर दूसरे देशमें भेजे जाते हैं।

गुजर (फा० पु०) १ गीत, निकास। २ प्रवेश, पैठ, पहुंच। ३ निर्वाह, कालक्षेप।

गुज़रगाह (फा० स्त्री०) १ रास्ता। २ नदीके पार होनेकी घाट।

गुजरत् (फा० पु०) हस्त द्वारा।

गुजरना (फा० क्रि०) १ समय व्यतीत करना। २ किसी स्थानसे होकर आना वा जाना। ३ नदी पार करना। ४ निर्वाह होना, निपटना।

गुजरबसर (फा० पु०) निर्वाह, कालक्षेप।

गुजरबान (फा० पु०) १ मल्लाह, पार करनेवाला। २ घाटकी उतराई वसूल करनेवाला मनुष्य, घटवार।

गुजरात—पञ्जाब प्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० ३२° १०' तथा ३३° १' उ० और देशा० ७३° १७' एवं ७४° २८' पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरपूर्व काश्मीरराज्य, उत्तर-पश्चिम झिलम जिला तथा वितस्ता नदी, दक्षिण-पश्चिम शाहपुर जिला और दक्षिण-पूर्वको गुजरानवाला तथा शियालकोट एवं तापी तथा चन्द्रभागा नदी पड़ती है। भूपरिमाण २०५ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः ७५०५४८ है चन्द्रभागाके उपकूलकी जमीन क्रमशः जलकी भीतरी ओरकी ऊंची हुई और जल तथा वृक्षादिविहीन मरु जैसी बन गयी है। पब्बी नामक गिरिश्रेणी ही यहां प्रधान है। छोटे छोटे गुल्मादिपूर्ण स्थानोंमें ही गोमहिष प्रभृतिके खाद्यका संस्थान है। चन्द्रभागा नदीकी निम्नतर तीरभूमि खूब उर्वरा है। पार्वतीय जलस्रोतसे एक नहर निकली जिससे खेतो सिंचती है और भी कई नदियां हिमालयसे निकल कर इस जिलेमें बही हैं। इस जिलेके वनोंमें बबादुरी लकड़ी होती है।

इस जिलेके प्रत्नतत्त्वका बहुल निदर्शन मिलता है। प्राचीन स्तूपादि, मुद्रा और इष्टकादि देखते ही अनुमित होता कि बहुत पहले यहां हिन्दुओंका वास रहा। आज भी उन्हीं पुराने हिन्दुओंके गृहमन्दिरादि शिल्प-

नैपुण्यका परिचय प्रदान करते हैं। कनिङ्गहम साहबने मोग नामक ग्रामके स्तूपोंमें कोई विकृताकार स्तूप देख करके ठहराया है कि वह अलकमन्दरका स्थापित 'निकाया' नगर था। उन्होंने पुरुराजको जय करके अपनी कीर्तिघोषणाके लिये इसको स्थापन किया। यह विकृताकार स्तूप पर्वी पहाड़से ६ मील पश्चिमको अवस्थित है। इसकी ऊंचाई ५०, लम्बाई ६०० और चौड़ाई ४०० फुट है। इन सब स्तूपोंके मध्यसे भारतवर्षके शक-राजाओंकी अनेक ताम्रमुद्राएं निकली हैं। यहां जाटों और गूजरोंका अधिक वास है।

दिल्लीके बादशाहोंमें सबसे पहले (१४५०-५४ ई०) बहलोल लोदी इस जिलेमें आ करके बसे थे। उन्होंने चन्द्रभागा नदीके तीर बहलोलपुर नगर स्थापन किया। उसके एक शताब्दी पीछे अकबरने यहां पहुंच गुजरात नगर बसा दिया। आज भी इस नगरके पुरुषानुक्रमिक 'काननगो' परिवारमें अकबरके राज्यशासनसंक्रान्त पत्र पाये जाते हैं। इनमें लिखा है कि अकबरके समयको वहां २५८२ ग्राम या मौजा और उसका राजस्व १६३४५५० रु० था। मुगलोंके सौभाग्यावनतिके समय रावलपिण्डीके गक्करोंने १७४१ ई०को इस प्रदेश पर अधिकार किया। अहमद शाह दुरानीके आक्रमणकालको यातायातके कारण यह स्थान विशेष उत्पन्न हुआ था। १७६५ ई०को गूजरसिंहने इसको अधिकार किया। गुजरसिंह देख। १७८८ ई०को गूजरसिंहके मरने पर उनके पुत्र साहबसिंह पितृसिंहासन पर अधिष्ठित हुए। राज्य-भार मिलते ही गुजरोंवालाके सामन्त मोहनसिंह और रणजित्सिंहके साथ उनकी लड़ाई छिड़ गयी। क्रमागत कई महीने लड़ने पीछे १७९८ ई०को इन्होंने रणजित्की अधीनता मानी थी। १८१० ई० तक साहबसिंह स्वराज्यमें प्रतिष्ठित रहे। पीछे सिख सम्राट् रणजित्सिंहके राज्यच्युत करने पर वह विना कुछ कहे सुने पार्वत्य प्रदेशको भाग गये। शेषको रणजितकी वदान्यतासे स्यालकोट जिलेकी कुछ जमींदारी उन्हें प्राप्त हुई। १८४६ ई०को यह जिला अङ्गरेजोंके हाथ लगा था। द्वितीय सिख युद्धके समय गुजरात रणक्षेत्र रूपमें परिणत हुआ। मुलतानके अवरोध समय सिख-सरदार शेरसिंह अपना सैन्य चन्द्रभागा नदीके उत्तरकूलमें रख करके रामनगरमें लार्ड गफके आनेकी प्रतीक्षा करते थे। १८४८ ई० २२ नवम्बरको लार्ड गफ शेरसिंह कर्तृक पराजित तथा विशेष क्षतिग्रस्त हो भाग खड़े हुए। पीछेसे सैन्याध्यक्ष जोसेफ थाकवेलने वजीराबादके निकट नदी पार हो शेरसिंहको आक्रमण और शादुल्लापूरमें उन्हें पराजय किया था। शेरसिंह भाग करके पर्वो और वितस्ता नदीके मध्यवर्ती स्थानमें अपने आपको बचाने लगे। इसी समय १८४९ ई० १३ जनवरीको चिलियांवालाका युद्ध आ पड़ा। उसमें सिख इतिहासका सौभाग्य और गौरवरवि प्रकाशित हुवा और अंगरेज लोग हार तथा उन्हें बड़ी भारी क्षति लगी।

६ फरवरीको शेरसिंह फिर लार्ड गफकी आंख बचा गये और लाहोर पर झपट पड़नेको दक्षिण ...अग्रसर पड़े। परन्तु अंगरेजोंने उन्हें पीछेसे खूब ...। २२ फरवरीको यह गुजरातमें लड़नेका ... में सिखोंकी शक्ति क्षीण हो गयी। पञ्जाब ... हाथ लगा और अंगरेजी शासनभुक्त हुआ।

यहां बहुतसे इसलामधर्मावलम्बी राजा ... शुरण्टि राजवंश प्रधान हैं। औरङ्गजेबके ... राजने इसलाम धर्म ग्रहण किया था। ... जित्सिंहके बाहुबलसे यह लोग सदा जेर ... हीन हो गये। गुजरातके सैयद बतलाते ... करके हम पहले पहल उसी जिलेमें बसे ... स्थानोंमें फैल पड़े।

इस जिलेमें नहर नहीं है। केवल ... सब काम चलता है। जलवायु खूब ...।

२ पञ्जाबके गुजरात जिलेकी ... अक्षा० ३२° २४' तथा ३२° ५३' उ० ... ४७' एवं ७४° २८' पू०के मध्य अव... है। इसका क्षेत्रफल ५५४ वर्गमील है।

३ पञ्जाबके गुजरात जिलेका बड़ा नगर और सदर। यह अक्षा० ३२° ३५' उ० और देशा० ७४° ७' पू०में चन्द्रभागा नदीके ... २॥ कोस उत्तरको अवस्थित है। लोकसंख्या ... तिः होगी।

प्राचीन ... नगर ... आबाद

है। प्रत्नतत्त्ववित् कनिङ्हम साहब अनुमान करते कि वहां जो प्राचीन नगर रहा, १३०३ ई०को विध्वस्त हुआ उसके प्रायः २०० वर्ष पीछे शेरशाहने इस अञ्चलकी दिक्को दृष्टिपात किया। उन्होंने या अकबरने इस नगरको बसाया होगा। शाहजहान्के समयको वहां पीर शाहदौला नामक कोई मुसलमान साधु रहते थे। वह इस नगरमें बहुतसे घर बनाये गये हैं। नगरके मध्यस्थलमें अकबरका निर्मित और गूजरसिंह कर्तृक संस्कृत दुर्ग आज भी खड़ा है। इसी जिलेमें तहसीली और मुनसिफी कचहरी है। सिवा इसके गुजरात नगरमें ६८ मसजिदें, ५२ हिन्दू मन्दिर और ११ सिक्ख धर्मशालाएं भी बनी हैं। यहां बढ़िया शाल टाशाला और सूती तथा ऊनी वस्त्र प्रस्तुत होता है। सोने, लोहे और पीतलकी गढ़ाईके लिये गुजरात शहर बहुत दिनोंसे मशहूर है। यहां म्युनिसपालिटी विद्यमान है।

४ बम्बई प्रेसिडेन्सीका उत्तर समुद्रकूलवर्ती विस्तीर्ण भूभाग। गुर्जर देखा।

गुजराती (हिं० वि०) गुजरात देशका, गुजरातका निवासी।

गुजराती—बम्बईके गुजरात प्रान्तकी भाषा। इसकी लिपि देवनागरीके आदर्श पर गठित है। कोई ८०० वर्ष पहले यह चली थी। साहित्य उन्नतिशील है। भील और खान देशके अधिवासी भी टूटी फूटी गुजराती बोलते हैं। गुजराती भाषा प्राचीन सौराष्ट्री प्राकृत पर आश्रित है। गौर्जरी इसीसे निकली है। यह कोई ८४३८८२५ लोगोंका भाषा है।

गुजराती जैन—बम्बई प्रान्तके अहमदनगर जिलेमें रहनेवाले जैन। इन्हें श्रावक भी कहते हैं। इनकी संख्या प्रायः ३०० है। वह अकोला, जामखेड़, कोपरगांव, सङ्गमनेर, शिवगांव और श्रिङ्गोदमें रहते हैं। अपनी ही वर्णनाके अनुसार वह अवधके रहनेवाले थे। सूर्यवंशीय किसी राजाके साथ उन्होंने जैन धर्म ग्रहण किया। गुजरातमें बस जानेसे वह गूजर कहलाये। मातृभाषा गुजराती और कुलदेवता जिनेन्द्र हैं। यह निरामिषभोजी, परिश्रमी, संयमी, मितव्ययी और आज्ञाकारी हैं। दूकानदारी, महाजनी और जमीन्दारीका काम करते हैं। यह दिगम्बरसंप्रदाय भुक्त हैं। अवदाह किया जाता है। बाल ववाह और बहुविवाह साधारणतः नहीं होता। इनमें विधवाविवाह नहीं होता।

गुजराती-पेटा—गञ्जाम प्रदेशके अन्तर्गत चिकाकोलके निकट लाङ्गुलिया नदीके दक्षिण तट पर अवस्थित एक नगर। यहां लक्ष्मी तथा नरसिंहस्वामीके मन्दिर हैं। मन्दिर बहुत प्राचीन कालके हैं। ऐसा प्रवाद है कि बल्लरामने इस मन्दिरको निर्माण किया था। प्रायः दो तीन शत वर्ष हुए होंगे यहां गुजराती व्यापारियोंने आकर उपनिवेश स्थापन किया है।

गुजराती बनिया—दाक्षिणात्यवासी वणिक जाति की एक शाखा। बम्बई प्रेसिडेन्सीके नाना स्थानोंमें इनका वास है। परन्तु अहमदाबादमें यह अधिक देख पड़ते हैं। इनमें वड़नगरी और विशनगरी २ श्रेणियां हैं। सब लोग अपनेको वैश्य जैसा बतलाते हैं। २१३ सौ वर्ष हुए यह गुर्जर देश छोड़ करके दक्षिणापथके नाना स्थानों में जा बसे हैं। गुर्जरके उत्तरस्थित वडनगर तथा विशनगरमें इनका आदिवास है। मालूम होता है कि इन दोनों नगरोंसे ही उनका जातिगत विभाग हुआ होगा।

उभय दल एकत्र भोजनादि करते, परन्तु परस्परके मध्य दानग्रहण अप्रचलित है। यह बहुत सुश्री और सुन्दर होते हैं। स्त्रियां मर्दोंकी अपेक्षा अधिक सुन्दर होती हैं। ये लोग मद्य मांस कुछ भी नहीं खाते। स्वास्थ्य भी इनका अच्छा रहता है। सिर्फ पानके साथ भांग और तम्बाकू खाते हैं। इनकी स्थिति अच्छी है।

ये लोग आचार व्यवहार और वेशविन्यासमें दक्षिण के ब्राह्मणोंका अनुकरण करते हैं। सबहीके सिर पर चोटी रहती है और दाढ़ी मुड़ी हुई रहती है। इनका स्वभाव भोलेपनका लिये हुए अच्छा है; पर दोष इतना ही है कि, ये लोग प्रायः कृपण होते हैं। वाणिज्य करना उनकी जातिगत उपजीविका है। जिसके पास पैसा नहो वे भी दूसरेका दासत्व स्वीकार नहीं करते, परन्तु किसी व्यापारीको दूकानका काम करना मंजूर कर लेते हैं।

ये लोग अपनेको ब्राह्मणोंसे नीचे और मराठी जातिसे

कर ये समझते हैं। ये लोग स्वजातीय ब्राह्मण, दाक्षिणात्यवासी शेनवी ब्राह्मण और पाञ्चालोंके स्पृष्ट अन्नके सिवाय और किसीके भी हाथका अन्न नहीं खाते। हिन्दुओंके समस्त देवता उनके लिए पूज्य हैं। ये लोग उच्च श्रेणीके हिन्दुओंको भांति उत्सव आदि भी करते हैं। तिरुपतिके बालाजी और पण्ढरपुरके विठोवा इनके कुलदेवता हैं। कभी कभी ये लोग हिन्दुओंके तीर्थमें जाकर पूजा आदि भी करते हैं। सब सवेरे शौच स्नान आदिके बाद नियमसे कुलदेवताकी पूजा करते हैं। इनकी गर्भाधान, विवाह और श्राद्धकी क्रिया गुजराती ब्राह्मण ही करते हैं; और उनके अभावमें उस देशके ब्राह्मण भी कर सकते हैं। इनमेंसे सब ही वल्लभाचार्य प्रवर्त्तित सम्प्रदायमें शामिल हैं। ब्राह्मण जातिके दस प्रकारके संस्कारोंमेंसे ये लोग नामकरण, चूड़ाकरण, विवाह, गर्भाधान, श्राद्ध आदि कुछ संस्कारोंका पालन करते हैं। बालकको पहिले पहल विद्यालयमें भर्ती करानेके लिए ये लोग शुभदिनको देख कर गाने बाजेके साथ ले जाते हैं। पहले बालकको ताड़पत्र और पुस्तकादि सरस्वतीके नामसे पूजा होती है। उस समय बालकसे सबसे पहिले "ॐ नमः सिद्धेभ्यः" लिखाया जाता है। इसके बाद शिक्षकको पान, सुपारी और रुपये दक्षिणामें दिये जाते हैं। बालिकाएं कुमारी अवस्थामें मंगला गौरीकी पूजा करती हैं।

इनमें बाल्यविवाह प्रचलित है। बहुविवाह और विधवा विवाह करनेवालेको जातिसे च्युत कर दिया जाता है। समाजमें कोई प्रकारका विभ्राट् हो जानेसे ये लोग उसे स्वयं ही शान्त कर लेते हैं। सब मराठी और गुजराती भाषामें बात चीत करते हैं। शोलापुरके गुजराती बनियोंमें हुम्बड़, खड़ायत, लाड़, नोध, नागर, पोरवाड़ और श्रीमाली आदि श्रेणियां हैं। तथा उनमें भी दशा और बीशा इस प्रकार दो भेद हैं। जो जातिच्युत हैं उन्हें दशा और जो जातिच्युत नहीं है, उन्हें बीशा कहते हैं। इन मूल श्रेणियोंमें एकत्र भोजन वा दान ग्रहण नहीं चलता। ये भी निरामिषभोजी होते हैं। पुत्र प्रसवके पांच दिन बाद छट्टी या षष्ठीकी पूजा करते हैं। बारह दिनमें पुत्रका नामकरण करते हैं, और एकसे दो मास तक चूड़ाकरण करते हैं।

पूनाके बनियोंमें दो स्वतंत्र नाम हैं। एक तो वल्लभाचार्यकी शिष्य सम्प्रदाय मिश्री और दूसरे दिगम्बर जैनसम्प्रदायके श्रावक नामसे प्रसिद्ध हैं। मिश्रीओंमें कपोल, खड़ायत, लाड़, मोध, नागर, पाञ्चाल, पोरवाल आदि तथा जैनियोंमें हूमड़, पोरवाल, श्रीमाली आदि कई शाखाएं हैं। मिश्रीओंके विवाहमें "लम्बान् गणेश" की वा गणपतिकी और जैनियोंके विवाहमें "गौतम गणधर" "सिद्ध परमेष्ठी" और "देव-शास्त्रगुरु" की पूजा होती है। ये लोग अशौच दश दिनका मानते हैं। मिश्री लोगोंके १०वें, ११वें और १२वें दिन श्राद्ध होता है और १२वें या १३वें दिन जातिभोज (तेरही) होता है। श्रावकोंके श्राद्ध आदि नहीं होता; वे १२वें दिन दिगम्बर जैनमन्दिरमें जाकर अक्षत पुष्प आदि अष्ट द्रव्योंसे अर्हन्त आदिकी पूजा करते हैं। ये लोग अशौचके ग्यारह दिनोंमें मन्दिरकी कोई भी वस्तु नहीं छूते और न जिनाभिषेक ही लगाते हैं। ये शास्त्र सभामें पृथक् बैठ कर शास्त्र सुनते हैं; तथा शङ्का समाधान भी करते हैं। श्रावकोंके १३वें दिन जातिभोज होता है; इसका नाम तेरहीं है।

गुजराती ब्राह्मण—किसी श्रेणीके दाक्षिणात्यवासी ब्राह्मण। प्रायः १०० वत्सर गत हुए यह गुर्जर छोड़ करके जगह जगह बस गये हैं। पूना जिलेमें औदीच्य, देशावल, खेड़ावल, नोध, नागर, श्रीगौड़, श्रीमाली प्रभृति देख पड़ते हैं।

यह निरामिषाशी होते, केवल मादकताके लिये अफीम, भांग और तम्बाकू सेवन करते हैं। यह स्वभावतः परिष्कार, सत्, कर्मठ, चतुर और आतिथेय हैं। इनमें कितने ही लोग वाणिज्य व्यवसायसे पौरोहित्य पर्यन्त किया करते हैं। कोई कोई जमीन खरीद करके जमीन्दार बना और उसकी उत्पन्न द्रव्यके आधे बंटवारे पर दूसरे किसानोंके हाथ उठा दिया है।

यह बालाजी, गणपति, मारुती, तुलजाभवानी और शङ्करको पूजा करते हैं। इन्हें अपदेवता, डाकिनी और भविष्यद्वाणी पर भी विश्वास है।

इनमें बाल्यविवाह और बहु विवाह प्रचलित है, परन्तु विधवाविवाह कोई नहीं करता। कोई सन्तान आदि प्रसूत होने पर मराठी धात्री वा स्वजातीय रमणी उसकी

नाड़ी चीर देती और फूलको किसी पात्रमें रख करके सूतिकागारमें नाबदानके पास गाड़ रखती है। तलवार, तीर, कागज, कलम और पट्टीसे षष्ठी माताकी पूजा करते हैं। अशौच १० दिनमात्र रहता है। १२वें दिनको आत्मीय कुटुम्बका भोजन होता और सन्ध्याके समय स्त्रियां सन्तानका नामकरण करती हैं। ४० दिन तक प्रसूति घरसे बाहर नहीं निकल सकती, फिर किसी दिनको सुन्दर वेशभूषा करके आत्मीय स्त्रियोंसे मिलती है। ५ माससे ५ वत्सरके मध्य पुत्रका चूड़ाकरण होता है। यदि कोई ठाकुरजीके नाम पर बाल रखता तो, वह थोड़े से बाल विवाह पर्यन्त कभी भी काटा नहीं सकता। विवाहके दिन यह बाल बनाते हैं। १२से २५ तक पुत्र और ८से १५ वर्ष तक कन्याका विवाह होता है। विवाहसे पूर्व आत्मीय कुटुंबको पान सुपारी भेज करके सूचना दी जाती है। इसीका नाम मङ्गनी है। इनका गर्भाधानसंस्कार नहीं होता। यह शवदाह किया करते हैं। शवदाहके ३ दिन पीछे भस्म पर दुग्ध, दधि, घृत, गोमय और गोमूत्र छोड़ आते हैं। अहमदनगरवासी गुजराती ब्राह्मणोंके बीच पितृ तथा मातुलगोत्रमें विवाह नहीं होता। इनकी 'त्रिवड़ि मं वदास' शाखामें भरद्वाज, शाण्डिल्य और वशिष्ठ तीन गोत्र चलते हैं। यह यजुर्वेदी होते और सब लोग शङ्कराचार्यको हिन्दूधर्मके प्रधान प्रदर्शक-जैसी भक्ति करते हैं। गणपति, महादेव और विष्णु इनके उपास्य देव हैं।

शोलापुर जिलेमें औदोच्य, नागर तथा श्रीमाली ३ श्रेणियां हैं। इन विभिन्न श्रेणियोंके लोग एकत्र आहारादि वा परस्पर दान ग्रहण नहीं करते। इनके मध्य आचारमें भट्ट, पाण्ड्या, रावल, ठाकुर और व्यास कई पदवियां प्रचलित हैं। एक पदवीधारी किन्तु विभिन्न गोत्र होनेसे विवाह किया करते हैं। अम्बाबाई और बालाजी इनके कुलदेवता हैं। औदीच्य कान्यकुब्ज ब्राह्मणोंका पौरोहित्य करते और युक्त प्रदेशके गांव गांव देख पड़ते हैं। बीजापुर जिलेमें इनको नागर, श्रीमाली और पोकर्ण ३ श्रेणियां हैं।

गुजराती राजपूत—बम्बईके कच्छ जिलामें रहनेवाले क्षत्रिय वा राजपूत। इनकी संख्या प्राय: १६५१७ है। प्रधान विभाग दो हैं।

गुजरान (फा० पु०) गुजर देखो।

गुजरान्‌वाला—पञ्जाबके लाहोर डिविजनका एक जिला। यह अक्षा० ३१° ३१' एवं ३२° ३१' उ० और देशा० ७३° १०' तथा ७४° २४' पू० मध्य रेचना-दोआबमें पड़ता है। क्षेत्रफल ३१९८ वर्गमील है। इसके उत्तरपश्चिम चिनाव नदी, पूर्व स्यालकोट, और पश्चिम झङ्ग है। बागों और फुलवारियोंमें बेर बहुत होता है। जलवायु स्वास्थ्यकर है। बौद्ध कालके मन्दिरोंका ध्वंसावशेष बहुत मिलता है। तत्कालीन मुद्राएं और बड़े बड़े इष्टक आविष्कृत हुए हैं।

मुसलमानोंकी अमलदारीमें यह जिला बढ़ा। अकबरसे ले करके औरङ्गजेबके समय तक यहां कितने ही कूप बने। दक्षिण उच्च भूमि पर जहां पहले गांव थे, अब घास और झाड़ी है। ६ जरखेज परगने लगते थे। मुसलमान साम्राज्यकी अन्तिम शताब्दीमें बार बार युद्ध होनेसे गुजरान्‌वाला उजड़ गया। सिखोंके अभ्युदय कालको यह उनका मटर बना।

लाहोरके अधिकार कालतक गुजरान्‌वालामें राजा रणजित्‌सिंहकी राजधानी रही। यहां रणजित्‌सिंह और उनके पिताका स्मारक बना है। सिखोंने कृषिको उन्नति की थी। १८४७ ई०को यह अंगरेजोंके हाथ लगा। और १८४९ ई०को अंगरेजी राज्यमें मिला।

गुजरांवालाकी लोकसंख्या प्राय ८९०५७७ है। इसमें ८ नगर और १३३१ गांव बसे हैं। तहसीलें चार हैं। अधिवासियोंमें जाटोंकी संख्या अधिक है। गेहूंकी फसल बड़ी होती है। कङ्करकी कोई कमी नहीं। काठ काटके औजार, चांदीकी मूंठवाली छड़ियां और गहने मशहूर हैं। सूती कपड़ा बहुत बुना जाता है। दरजनों पुतलीघर और कारखाने हैं। गेहूं, दूसरे अनाज, रुई, तेलहन, पीतलके सामान और घीकी रफतनी होती है। नार्थवष्टन रेलवे चला करती है। ७५ मील पक्की और १३०९ मील कच्ची सड़क है। डिपटी कमिश्नर बड़े हाकिम हैं। मालगुजारी और सेस कोई १२ लाख ९० हजार लगती है। मुनिसपालिटियां हैं।

गुजरान्‌वाला—पञ्जाब प्रान्तके गुजरान्‌वाला जिलेकी तहसील। यह अक्षा० ३१° ४९' एवं ३०° २०' और देशा०

७३° ४२ तथा ७४° २४ पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ७५६ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः २५२८६३ है। इसमें तीन नगर और ४४५ गांव आबाद हैं। मालगुजारी और सेस लगभग ३७८०००) रु० है।

गुजरान्वाला—पञ्जाब प्रान्तके गुजरान्वाला जिले और तहसीलका सदर। यह अक्षा० ३२° ८ उ० और देशा० ७४° ११ पू०में नार्थवेष्टर्न रेलवे और ग्राण्ड ट्रङ्क रोड पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः २८२२४ है। इसके नामसे मालूम होता है कि पहले उसे गूजरोंने बसाया था। परन्तु अमृतसरके सांसी जाटोंने वहां बस करके खानपुर नाम रखा। महाराज रणजित्‌सिंहकी यह जन्मभूमि है। रणजित् सिंहके पिताका अजायब घर बना है। १८६७ ई०को मुनिसपालिटी हुई। पीतलके सामान, लोहेके सन्दूकों, हाथी दांतकी चूड़ियों, मट्टीके बर्तनों और कपड़ेका काम है। राजा रणजित्‌सिंह-का स्मारक भी बना हुआ है।

गुजरिया (हिं० स्त्री०) गूजर जातिकी स्त्री, ग्वालिन, गोपी।

गुजरी (हिं० स्त्री०) १ कलाईमें पहननेकी एक तरहकी पौंची जिसे मारवाड़िनें बहुत पहनती हैं। २ दीपक-रागकी एक रागिणी। गुज्जरी देखो।

गुजरेटी (हिं० स्त्री०) गूजर जातिकी, गूजरकी बेटी। २ ग्वालिन।

गुजश्ता (फा० वि०) १ गत व्यतीत, बीता हुआ। २ खरच।

गुजायिन्ली—पंजाबके बसहर राज्यके अन्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह कोटकाईसे बुरिन्द गिरिसङ्कट जानेके रास्ते पर अवस्थित है। इस स्थानके मनुष्य निकटवर्त्ती पर्वतसे लोह आहर करते और इन्हें गलाकर परिष्कार करते हैं।

गुजारना (फा० क्रि०) बिताना, काटना।

गुजारा (फा० पु०) १ निर्वाह, गुजर। २ जीवन निर्वाह के लिये एक तरहकी वृत्ति। ३ नाव वा घाटकी उत राई। ४ महसूल लेनेकी स्थान। ५ नदी पार होने की नौका।

गुजारिश (फा० स्त्री०) निवेदन।

गुजी (फा० पु०) सूखा हुआ नाकका मल, नकटी।

गुजुवा (हिं० पु०) गोबरका कीड़ा, यह वर्षाकालमें पैदा होता है। गुबरैला।

गुज्जरी (सं० स्त्री०) रागिणीविशेष। अपर नाम गुर्जरी है। यह सम्पूर्ण रागिणी होती है। इसका ग्रह अंश न्यास "ऋ" है। मूर्छ ना सप्तमी लगाती है। इस रागि-णीसे बहुली बहुत मिलती है। यथा—ऋ ग म प ध नि स ऋ।

गुज्जरी रात्रिकालको शृङ्गाररसमें गायी जाती है। विरागमें गानेसे सुरस गुज्जरी लोग वा मोहप्रयुक्त किसी व्यक्तिका दोष दूर कर सकती है। गान्धार स्वर इसका वादी है। सङ्गीत-दामोदरके मतानुसार पूर्वाह्णमें उसका गान निषिद्व है। इसमें धा और नि कोमल होता है। यथा—ऋ ग म प ध नि सा।

रागविबोधके मतमें वह पञ्चमशून्य है। इसमें केवल मात्र ६ स्वर लगते हैं—ऋ ग म प ध नि सा।

सङ्गीतदर्पण गुज्जरीको भैरव रागकी सहचरी बत-लाता है। ग्रीष्म ऋतुमें प्रातःकाल एक प्रहर पर्यन्त उसको गाना चाहिये।

सोमेश्वरके मतमें रामकली और ललित योगसे वह बनती और प्रातःको भी गायी जा सकती है।

ब्रह्मा इसको भैरव रागकी पत्नी कहते हैं। परन्तु भरत तथा हनुमान्‌के मतमें वह मेघरागकी पत्नी जैसी उल्लिखित हुई है। मालीयाका ठाट है। आजकल गाने-वाले ११से १६ घड़ी दिन तक उसका वक्त बतलाते हैं। देशभेदसे कुछ बदल करके वह अनेक प्रकार बन गयी है। यथा—मालगुज्जरी, राहाल गुज्जरी, मङ्गल गुज्जरी, दक्षिण गुज्जरी, सौराष्ट्री गुज्जरी और महाराष्ट्री गुज्जरी।

सङ्गीतदामोदरमें केवल दक्षिण गुज्जरीकी ही मूर्ति वर्णित है। जैसे—यह श्याम वर्ण वा श्यामा स्त्रीकी भांति सकल गुणयुक्त है। मलयद्रुमके कोमल कोमल पल्लव उसके कर्णभूषण हैं। इसमें श्रुति और स्वरका विभाग स्पष्ट लक्षित होता है। मालूम होता है कि गुजर देशवासियोंको उसका गाना बहुत अच्छा लगता था। उसीसे इसका नाम गुर्ज्जरी पड़ गया। फिर आसा-नीसे कहनेको रेफ उड़ा दिया गया है। २ कोई राग। यह एकताली तालसे गायी जाती है। (गीतगोविन्द)

गुञ्ज (सं० पु०) गुञ्जति भ्रमरोऽत्र गुञ्ज अधिकरणे घञ्। १ ध्वनि, शब्द। २ पुष्पस्तवक।

गुञ्ज—बंबई प्रान्तके थाना जिलेका एक गांव। यह वाड़से कोई १० मील दक्षिण-पश्चिम है। गांवके पास एक तालावके किनारे अंबा मन्दिरका ध्वंसावशेष है। भागवराम पर्वतकी राह पर लगभग आध मील दूर ४०० वर्ष का पुराना भार्गवरामका मन्दिर खड़ा है। सम्भवतः जाह्नारके, जहांसे ५०॥ एकड़ जमीन माफी है, कोलि राजाने इसे बनाया था। इमारत बहुत अच्छी है। पत्थर पत्थर काट काट करके लगाया गया है। द्वार चार हैं। उनमें दो पर गणपतिकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। दालान २२ फुट लंबा और १२ फुट चौड़ा है। देवमूर्ति नराकार है।

गुञ्जकृत् (सं० पु०) गुञ्जं ध्वनिभेदं करोति कृ-क्विप्, भ्रमर, भौंरा।

गुञ्जन (सं० क्लो०) गुञ्जभावे ल्युट्। भौंरेका शब्द।

गुञ्जा (सं० स्त्री०) गुञ्जति, गुञ्ज-अच्-टाप्। १ लताविशेष, कोई बेल। (Abrus precatorious) हिन्दीमें इसका नाम घुंघची है। पत्ते इमलीकी तरह पतली होती है। फल शिंबी-जैसा आता और बीज रक्त तथा कृष्ण दिखलाता है। फलमें एक चूड़ा रहती है। वैद्यकशास्त्रके मतमें उसका मूल विषाक्त है। गुञ्जाका पर्याय काकचिञ्ची, कृष्णला, मञ्जुष्ठा, रक्तिका, काकाणन्तिका, काकादनी, काकतिक्ता, काकजङ्घा, शिखण्डिनी, चूड़ामणि, सौम्या, शिखण्डी, अरुणा, ताम्रिका, शीतपाकी, उच्चटा, कृष्णचूड़िका, रक्ता, कांबोजी, भिल्लभूषणा, वन्या, श्यामलचूड़ा और काकचिञ्चिका है।

गुञ्जाका बीज तीक्ष्ण और उष्ण होता है। (राजनि०) राजवल्लभने उसको कुष्ठव्रणनाशक कहा है। मूल वान्तिकारक और शूल तथा विषनाशक है। वशीकरण कर्ममें श्वेतवर्ण ही प्रशस्त रहता है। (राजनि०) भावप्रकाशके मतानुसार सफेद और सुर्ख दो तरहकी घुंघची है। श्वेतवर्ण गुञ्जा उच्चटा तथा कृष्णला और लालरंगवाली काकचिञ्ची, काकानन्ती, रक्तिका, काकादनी, काकपीलु एवं अङ्गारवल्ली कहलाती है। यह दोनो गुञ्जाएं केशवर्धक, शुक्रवृद्धिकर एवं बलकारक और वायु, पित्त, ज्वर, मुखशोष, भ्रम, श्वास, तृष्णा, मत्तता, चक्षुरोग, कण्डु, व्रण, क्रमि, इन्द्रलुप्त, कुष्ठ, रक्तदोष तथा धवलरोगनाशक हैं। (भावप्रकाश)

इसकी लकड़ीका बाहरी रंग कुछ पिङ्गल, किन्तु भीतरी ईषत् पीला होता है। यह गन्धहीन है। आस्वाद सुमिष्ट लगता और खानेसे मुंह चिनचिनाने लगता है। गुञ्जा मुलहटीके बदले काम आती है।

२ परिमाणविशेष, रत्ती। दो यवमें एक गुञ्जा होती है। (लीलावती)

वैद्यक परिभाषाके मत और कालिङ्गमानमें चार यव की एक गुञ्जा है। (शार्ङ्गधर)

गुञ्जति शब्दायते, गुञ्ज कर्तरि अच्-टाप्। ३ पटह, ढाक। गुञ्ज भावे अ। ४ कलध्वनि, मीठी बोली। ५ चर्चा, तजकिरा। आधारे अ। ६ मदिरागृह, शराबखाना। ७ मुस्ता।

गुञ्जाकिनी (सं० स्त्री०) १ गुञ्जा, घुंघची। २ पानीय भक्तवटी।

गुञ्जागर्भरस (सं० पु०) वैद्यकोक्त औषधविशेष, एक दवा १॥ तोला पारा, गन्धक, जयन्तीबीज वा हरीतकी तथा निम्बबीज प्रत्येक ६ तोला, गुञ्जाबीज ३ तोला और जयपाल १॥ तोला सबको काकमाची, धतूरे और जयन्तीके रसमें सान करके गोली बना लेना चाहिये। अनुपान घृत है। हिङ्गु एवं सैन्धव संयुक्त मण्ड पथ्य होता है। इसके सेवनसे हृद्रोग नहीं रहता। (रसेन्द्रचिन्तामणि)

गुञ्जातैल (सं० क्लो०) तैलविशेष, घुंघचीका तेल। कटु तैल ४ शरावक, गुञ्जा मूल तथा फल प्रत्येक ४ पल और ८ शरावक जल एक साथ यथाविधि पाक करनेसे यह तेल बनता है। इसको लगानेसे कुष्ठ तथा गण्डमाला रोग नहीं रहता। (भावप्रकाश) दूसरा गुञ्जातैल ४ शरावक कटुतैल, ८ पल गुञ्जाफल और ८ शरावक भीमराज रस साथ साथ पकानेसे तैयार होता है। (रसकौमुदी)

गुञ्जाद्यतैल (सं० क्लो०) तैलविशेष, एक तेल। गुञ्जामूल, करवीरमूल, वीजताड़कमूल, अर्कमूल वा निर्यास तथा सर्षप प्रत्येक ४ तोला, तैल १ शरावक और आठ शरावक गोमूत्र एक साथ यथाविधि पाक कर पिप्पली, पञ्चलवण एवं मरिचका २० तोला चूर्ण डालनेसे यह

प्रस्तुत होता है। इसको लगानेसे गलगण्ड रोग नहीं रहता। (रसरत्नाकर)

गुञ्जाभद्ररस (सं० पु०) वैद्यकोक्त औषधविशेष, एक दवा। १॥ तोला पारा, ६ तोला गन्धक, ३ तोला गुञ्जबीज और आध आध तोले जयन्तोबीज, निम्बुबीज तथा जैपालबीज सबको जयन्ती, धुस्तूरपत्र, जम्बीर एवं काकमाचोके रसमें अलग अलग भावना दे घीमें घोंट करके बटी बना लेना चाहिये। माता ४ रत्ती है। इसके सेवनसे अकस्तम्भ और हृद्रोग नष्ट होता है।

(रसेन्द्रसारस यह)

गुञ्जिका (सं० स्त्री०) गुञ्ज एव स्वार्थे कन्-टाप्। गुञ्जा तोल यव परिमाण।

गुञ्जित (सं० क्लो०) गुञ्ज भावे क्त। १ गुञ्जन, कल कल शब्द। (त्रि०) २ कल कल शब्दयुक्त।

गुञ्झा (हिं० पु०) गोभा नामकी बाँसकी कील। २ एक प्रकारका काँटायुक्त तृण। ३ गूदा, रेशेदार गूदा।

गुटकना (हिं० क्रि०) कबूतरकी तरह शब्दकरना।

गुटका (हिं० पु०) १ गुटिका देखो। २ छोटे आकारकी पुस्तक। ३ लड्डू। ४ गुपचुपमिठाई। ५ जाविती, पिस्ता, कत्था, लौंग, इलायची, सुपारी इत्यादिसे मिश्रित मसाला। इस तरहका मिश्रित मसाला कहीं कहीं पानके स्थान पर खाया जाता है।

गुटबैगन (हिं० पु०) एक तरहका कण्टकयुक्त पौधा, एक कंटीला पेड़।

गुटरगूं (हिं० स्त्री०) कबूतरोंकी बोली।

गुटलस्थलम्—मान्द्राज प्रेसिडेन्सीके कदापा जिलान्तर्गत एक ग्राम। यह मदनपल्लीसे ६ कोस उत्तरपश्चिममें अवस्थित है। यहांके सामन्तों और मुसलमानोंके मध्य इस ग्राममें घोर लड़ाई हुई रही, उसीके स्मरणार्थ यहां रक्त पहाड़ नामका एक वृहत् स्तूप विद्यमान है।

गुटि (सं० स्त्री०) गवते गु-क्विप् गुतं अव्यक्तशब्दं वटति वेष्टयति, गुत-वट-इ पृषोदरादित्वात् साधु यद्वा कुट्यते वक्रीक्रियते, कुट कर्मणि इ निपा०। १ वटिका, गोली। २ वतुलाकार पदार्थ, गोल चीज।

३ कीटविशेष शहतूतका कीड़ा। दूसरा नाम रेशमका कीड़ा है। इस जातीय कीटको अंगरेजीमें Bombycina कहते हैं। पहले वह छोटा कीड़ा जैसी लगती, फिर धीरे धीरे बढ़ करके रूप बदलती है। उस समय यह ऊपरसे सूखी पत्ती लपेट करके अपना शरीर छिपा लेती है। इसी डिम्बाकार अवस्थामें अंगरेज उसे Cocoon कहते हैं।

गुटि अपने गठनानुसार नाना श्रेणियोंमें विभक्त हैं। श्रेणीभेदसे यह भी भिन्न प्रकार होती और तरह तरहकी रेशम उत्पन्न करती है। अभी तक ६० किस्मका रेशमी कीड़ा स्थिर किया गया है। कीड़ा कोषमें बड़ा होने पर उसको काट करके कोई १० तितलियोंका आकार बनाता और बाहर निकल आता है। फिर उस कोषसे रेशम नहीं निकलता। इसलिये कीटके गुटिमें रहते ही रेशम खींच लेना आवश्यक है।

गुटिकी निम्नलिखित कई एक श्रेणियां प्रधान हैं—

चीन देशका Bombyx mori, बङ्गालमें उसको 'पाट' कहा जाता है। आजकल चीन, श्याम, भारतवर्ष, ईरान, फ्रान्स, अमेरिका और इटली प्रदेशमें इसको बहुत पालते हैं। चीनमें कहावत है कि ई० सन्‌से २६४० वर्ष पहले सम्राट् होयाङ्गतकी महिषीने सबसे पहले रेशमका कीड़ा देखा था। आज भी नानकिन नगरमें ३२° उत्तर अक्षांश पर उसकी खेती खूब होती है। परन्तु भारवर्षमें २६° अक्षांशके किसी स्थान पर गुटि तोड़ कर कहीं भी रेशम नहीं निकालते। इङ्गलेण्डके केण्ट नगरमें शहतूतके पेड़ पर वैसी गुटि मिलती है।

चीनके मुल्कमें Saturnia Pyretorum नामक दूसरी भी कोई जाति है।

Bombyx religiosa को हिन्दीमें देवमूंगा या जोड़ी कहते हैं। यह आसाम और कछार प्रदेशमें उत्पन्न होता है। इसका रेशम सबसे अच्छा और चिकना समझा जाता है।

Bombyx Huttoni हिमालय प्रदेशके मसूरी नगरके पास पर्वतमें जमीनसे कोई ७००० फुट ऊंचे और हिमालयके पश्चिम भागमें समुद्रपृष्ठ अपेक्षा कोई ३००० से ०० फुट ऊंचे तक सब स्थानों पर खूब उत्पन्न होता है। रंग कुछ पीलापन लिये रहता है। रेशम अन्यान्य जातीय रेशमोंसे ज्यादा मुलायम लगता है। यह अभी

टा बार उत्पन्न हुआ करता है। यहां Actias Selene नामकी दूसरी भी गुटि है। वह पर्वत पर ५००० से ७००० फुट ऊंचे तक उपजती है।

Bombyx Horsfieldi यवद्वीपीय है।

मन्द्राज प्रान्तमें Bombyx lugubris होता है।

जापानमें Bombyx Yama mai उपजता है। अब इङ्गलैण्डमें भी उसकी खेती है। जापान यह रेशम ज्यादा कीमती समझा जाता है। राजपरिवारमें उसके व्यवसायका एकाधिपत्य है।

Bombyx Pernyi, Actias sinenis, A. igne. scens और A. lolo चार जातियां उत्तर चीनमें मिलती हैं।

Bombyx Mylitta भारतीय है। इसका कोवा अन्यान्य भारतीय गुटियोंसे बड़ा होता है। भारतमें B. Arracanensis, fortunatus, sinensis textor प्रभृति कई भिन्न श्रेणीके रेशमी कीड़े हैं।

Cricula trifenestratra उत्तर पूर्व तथा दक्षिण भारत, श्रीहट्ट, आसाम, ब्रह्म और यवद्वीपमें उत्पन्न होता है। सिवा इसके C. drepanoides भी मिलता है।

Salassa lola और Actias Moenas श्रीहट्टदेश जात है।

Antheroea paphia वीरभूममें होता है। उसका नाम 'बुघी' है। सिंहल; दक्षिण, उत्तर-पूर्व एवं उत्तर पश्चिम भारत, वङ्ग, विहार, आसाम, श्रीहट्ट और यवद्वीपमें भी उसकी उत्पत्ति है। बहुत समयसे इस देशमें उस कीड़ेको रेशम टसरका कपड़ा बनानेको काम है।

Antheroea Pernyi चीन देशीय है।

Antheroea Roylii, Antheroea Aelferi और Attacus Edwardsi दारजिलिङ्गमें उत्पन्न होते हैं।

A. larissa और Antheroea Java यवद्वीपज है।

Antheroea Perottetti पूंदिचेरीमें होता है।

A. Simla शिमला और दारजिलिङ्ग पर्वतजात है।

A. Assama आसाममें होता है। आसामी भाषामें उसका नाम मूंगा है।

Antheroea मञ्चरियाकी गुटि है। फ्रान्सदेशमें उसकी खेती होने लगी है।

Loepa Ratinka आसाम, श्रीहट्ट, भोट और यवद्वीपमें उत्पन्न होता है। सिवा इसके L. miranda, L. Sikkima और L. Sivalika कई जातीय श्रेणीकी गुटि भी देख पड़ती है।

Attacus Attas का कोवा सबसे बड़ा होता है। सिंहल, चीन, ब्रह्म, यवद्वीप और भारतमें सर्वत्र उसकी उत्पत्ति है।

Attacus Cynthia और Attacus ricini को बङ्गालमें एंड़ी एंड़िया या एरण्डगुटी कहते हैं।

Attacus Guerini एरण्ड गुटीसे आकृतिमें क्षुद्र बैठता है। वङ्गदेशमें ही वह अधिक परिमाणसे उत्पन्न होता है। एतद्व्यतीत A. Canningii, A. lunula A. obscurus, A. Sillhetica, Caligula, Cachara, C. Simla, C. Thebeta, Neoris, Huttoni, N. Shadulla, N. Stolickzkana, Orcinara lactea O. Moorei, O. diaphama, Rhodia newara, Rinaca, Zullika, Theophila, Bengalensis, Th. Huttoni, Mandarina, religiosa, Sherwilli प्रभृति कई दूसरी किस्में हैं।

गुटिक (सं० पु०) मत्स्याण्डी।

गुटिका (सं० स्त्री०) गुटिरेव गुटि स्वार्थे कन्-टाप्। १ वटिका, वटी, गोली। २ वर्तुलाकार पदार्थ, गोल चीज।

गुटिकाञ्जनम् (सं० क्ली०) अञ्जन देखो।

गुटिका पात (सं० पु०) गुटिकायाः पातः, ६-तत्। किसी विषयके निरूपणार्थ गोली निक्षेप, किसी चीज पर निशान कर गोली फेंकना।

गुटिकाश्रय (सं० पु० क्ली०) लवणविशेष, एक प्रकारका नमक।

गुट्ट (हिं० पु०) समूह, झुण्ड, दल।

गुट्टा (हिं० पु०) लाखाकी बनी चौकोर लड़कियोंके खेलनेकी गोटी।

गुट्टिकोण्डा—कृष्णा जिलेके अन्तर्गत दाचिपल्लीसे ६ कोस दक्षिणमें अवस्थित एक ग्राम। यहां एक अति प्राचीन शिवालय है। ग्रामके निकट ही एक गुहा है। ऐसा प्रवाद है कि इस कन्दरामें मुचुकुन्द सोया करते थे।

मार श्रीकृष्णके अनुरोधसे इन्होंने कालयवनको मार था। मुचकुन्द देखो। पर्वतके ऊपर कर्णके समाधिस्थान और शिवमन्दिर विद्यमान हैं। शिवलिङ्गके निकट ही तलङ्ग अक्षरकी एक शिलालिपि विद्यमान है।

गुट्ठल (हिं० वि०) १ बड़ी गुठलीवाला फल। २ मूर्ख, जड़। ३ गुठलीके आकारका।

गुठली (हिं० स्त्री०) किसी फलका बड़ा एवं कठिन बीज।

गुड़ (सं० पु०) गवते अव्यक्तशब्दं करोति, गु-ड़। १ वर्तुलाकार पदार्थ, गोल। २ हस्तिसन्नाह, हाथीकी सज्जा। ३ ग्राम, कौर। ४ कड़ाहमें गाढ़ा उबाल कर जमाया हुआ ऊखका रस जो मृत्तिकादिके जैसे कठिनाकारमें परिणत हो जाता है। पर्याय—इक्षुसार, मधुर, रसपाकज, खण्डज, द्रव्यज, मिष्ट, मोदक, अमृतसार, शिशुप्रिय, सितादि, अरुण, रसज, इक्षुरसक्काथ, गगठोल, गुल, स्वादुखण्ड और स्वादु।

गुड़का साधारण गुण शुक्रवर्द्धक, स्निग्ध, वायुनाशक, मूत्रशोधक, पित्तनाशक एवं मेद, कफ, कृमि और बलवृद्धिकर है।

पुराने गुड़का गुण—लघु, हितकर, अनभिष्यन्दी, अग्निवर्द्धक, पुष्टिकारक, पित्तनाशक, शुक्रवृद्धिकर, वायुनाशक और रक्तपरिष्कारक।

नूतन गुड़का गुण—कफ, श्वास, काम, क्रिमि और अग्निवृद्धिकारी। अदरकके साथ गुड़ खानेसे कफ, हरीतकीके साथ पित्त एवं शोंठके साथ खानेसे अनेक तरहके वातरोग नष्ट होते हैं। ५ स्नुहीवृक्ष। ६ कार्पासी, कपास।

गुड़क (सं० त्रि०) गुड़ेन पक्कः बाहुलकात् कन्। १ गुड़पक्क, गुड़से बनाया हुआ। (पु०) गुड़ एव गुड़ स्वार्थे कन्। २ वर्तुलाकार पदार्थ।

गुड़करी (सं० स्त्री०) गुड़ं गुड़वत् सुमिष्टं श्रुतिसुखकरं करोति। रागिणी विशेष।

गुड़काष्ठ (सं० पु०) इक्षु, ऊख, केतारी।

गुड़कुष्माण्डक (सं० क्ली०) औषधविशेष, एक दवा। किसी पुराने सूखे कुम्हड़ेसे १०० पल अंश निकाल करके आग पर भर्म करना चाहिये। कुम्हड़ा उत्तम होने पर उसमें एक प्रस्थ या २ सेर घी और तेल छोड़ते हैं। फिर दालचीनी, तेजपत्र, धनिया, त्रिकटु, जीरा, इलायची, लाल चीत, नागरमथा, चित्रक, पीपल, सोंठ, सिंघाड़ा, कंधार, प्रलम्ब और तालमस्तक प्रत्येक एक पल परिमित ले चूर्ण करना चाहिये। इसके बाद १२॥ सेर गुड़ उक्त चूर्णमें मिला करके पहले तेल और घीके साथ पकाते हैं। गाढ़ा पड़नेसे इसमें ८ पल शहद डाला और सब पक आने पर पाक उतार लिया जाता है। इसीका नाम गुड़कुष्माण्ड है। अग्निमान्द्य रहते भी उस औषधको सेवन कर सकते हैं। इससे कफ, पित्त और वायु प्रशमित होता है। कृश व्यक्तिके लिये वह बलवृद्धिकर है। अनियम स्त्रीसम्भोगसे जो अतिशय क्षीणवीर्य हो गया है, उसके लिये गुड़कुष्माण्डक विशेष उपकारी है। इसके सेवनेसे काम, श्वास, ज्वर, हिक्का छर्दि और अरुचि रोग विनष्ट होता है। वह अतिप्राचीन औषध है। अश्विनीकुमारने ही सब प्रथम उसका आविष्कार किया था।

चक्रद०

गुड़खण्ड (सं० पु०) गुड़कृत खण्ड, गुड़की खांड यह मधुर, सित, वातपित्तनाशक, किञ्चित् शीतल, वल्य, वृष्य और रुचिप्रद है।

गुड़गुड़ (हिं० पु०) जलमें नली आदिके द्वारा वायु प्रवेश होनेका शब्द।

गुड़गुड़ा (सं० स्त्री०) यावनालशर्करा।

गुड़गुड़ापुर—बम्बई प्रान्तके धारवाड़ जिलेमें रानीबेन्नूर तालुकका नगर तथा तीर्थस्थान। यह अक्षा० १४° ४०′ उ० और देशा० ७५° ३५′ पू०में अवस्थित है। जनसंख्या कोई ८४७ होगी। अक्तूबर मासको मल्लारि (शिव) का जो मेला लगता, हजारों यात्रियोंका समागम रहता है। मल्लारिका एक मन्दिर है। उन्होंने भैरव रूप धारण करके मल्ल राक्षसको मारा था। इनके सेवक वागगप कुक्कुरका अवतार बतलाये जाते हैं। वह शेर या भालूके खाल पहन करके यात्रियोंको हंसाते और पैसा कमाते हैं। १८७८ ई०को यहां अस्थायी मुनिसपालिटी हुई।

गुड़गुड़ाना (सं० क्रि०) गुड़गुड़ शब्द होना।

गुड़गुड़ायन (सं० त्रि०) गुड़ गुड़ इत्येवं अयनं यस्य, बहुव्री०। जिससे गुड़गुड़का शब्द हो।

गुड़गुड़ाहट (हिं० स्त्री०) गुड़गुड़ शब्द होनेका भाव।

गुड़गुड़ी (हिं० स्त्री०) फारसी, एक तरहका हुक्का ।

गुड़गुड़ी—बम्बई प्रान्तके धारवाड़ जिलेका कसावा । यहां कल्लापका मन्दिर है । इसी मन्दिरमें १०३८ और १०७२ ई०के प्रदत्त दो प्रशस्ति खोदित हैं ।

गुड़ग्राम—राजगढ़के अन्तर्गत एक गण्डग्राम । यह बहुया नदीसे ६ कोश पश्चिममें अवस्थित है ।

गुड़ची (सं० स्त्री०) गुडं मिष्टरसं चिनोति गुड़ेन चीयते वा गुड़-चि-ड-ङीप् । गुड़ची देखो ।

गुडतृण (सं० क्ली०) गुड़साधनं तत् प्रधानं वा तृणं मध्यपदलो० । इक्षु, ऊख, केतारी ।

गुड़त्रिण (सं० क्ली०) गुड़प्रधानं तृणं निपातनं साधु । गुड़तृण देखो ।

गुड़त्वच (सं० क्ली०) गुड़तुल्यं त्वक् मध्यपदलो० । स्वनामख्यात गन्ध द्रव्य । यह मधुर रस तथा पीतवर्णका होता है । इसका पर्याय—सूत्कट, भृङ्ग, त्वक्पत्र, वराङ्गक, त्वच, चोल, त्वचा, पच, हृदय, सुरभिवल्कल और त्वक् है । राजवल्लभके मतसे इसका गुण-कफ, शुक्र और आमवातनाशक, मधुर एवं कटु है । किन्तु भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—लघु, उष्ण, कटु, मधुर और तिक्तरस, रूक्ष पित्तवर्द्धक एवं कफ, वायु, कण्डु, आमदोष, अरुचि हृद्रोग, वस्तिगत रोग, वातजनित अर्श, क्रिमि, पीनस और शुक्रनाशक है ।

यह पीतवर्ण सुगन्धि स्थूलत्वक् 'केशिया' नामक वृक्षकी छाल है । यह चीन तथा तातार देशमें उत्पन्न होती है । इसमें कुछ मिठास होनेके कारण इसे गुडत्वक् कहते हैं । यह केशादिको सुगन्धित करनेके लिये व्यवहृत होता है । इस तरहकी एक और पतली छाल होती है । जिसे दालचीनी कहते हैं । किन्तु इसका स्वाद कटुमिश्रित मीठा है । किसी किसी वैद्यक ग्रन्थके मतसे गुड़त्वक् शब्दका अर्थ दालचीनी कहा गया है ।

गुड़त्वच (सं० क्ली०) गुड़त्वक् राजभोग्य, जायत्री ।

गुड़दारु (सं० क्ली०) गुड़प्रधानं दारु मध्यपदलो० इक्षु, ऊख, केतारी ।

गुड़धनियां (हिं० स्त्री०) गेहूं और गुड़ मिश्रित एक तरहका लड्डू ।

गुड़धेनु (सं० स्त्री०) गुड़निर्मिता धेनुः, मध्यपदलो० । दानके लिये गुड़ द्वारा निर्मित धेनु, गुड़की गाय । हेमाद्रि दानखण्डमें उसका विधान इस प्रकार लिखा है-जहां गुड़धेनु दी जावेगी, गोमय द्वारा अच्छी तरह लीपना पड़ेगा । उस पर कुश वा दर्भपत्र विस्तीर्ण करके चार हाथका कोई कृष्णाजिन पूर्वमुख करके रखना और उसके निकट दूसरा छोटा कृष्णाजिन वत्सके लिये स्थापन करना चाहिये । पहले पर गुड़की एक गाय और दूसरे पर बछड़ा बनाते हैं । चार भार अर्थात् २५ मन गुड़से गो और एक भार पानी ६। मनसे वत्स प्रस्तुत करना उत्तम है । दो भार (१२॥ मन) गुड़की धेनु और आध भार (३ मन ५ सेर)का बछड़ा मध्यम होता है । दाता अपनी अवस्थाके अनुसार जितने चाहे गुड़से यह काम कर सकता है । धेनु और वत्स दोनोंका मुंह घृत द्वारा निर्मित होता और शुभ्रवर्ण सुन्दर वस्त्रसे आच्छादित करके रखना पड़ता है । कान सीपके, नयन मोतीके, शिराएं सफेद सूतकी, गलकम्बल श्वेत कम्बलके, ककुत् तथा पृष्ठदेश तांबेके और उजले चामरके रोम लगाते हैं । इसी प्रकार मूंगेसे भौंहें, नवनीतमय सौम वस्त्रसे स्तन एवं पुच्छ, कांस्य द्वारा दोह, इन्द्रनीलमणिसे चक्षुकी तारकाएं, सोनेसे सींग, चांदीसे खुर और विविध फलोंसे दांत बनाये जाते हैं ।

इसी प्रकार गुड़धेनु निर्माण करके धूप, दीप आदिसे उसकी पूजा करना चाहिये । प्रत्यक्ष पार्वणश्राद्ध कर्मकी तरह इसका भी विधान दृष्ट होता है । गुड़धेनु दानसे समस्त यज्ञका फल मिलता और सब पाप जाता रहता है । विषुवसंक्रांति, पुण्याह तिथि, व्यतीपात और ग्रहण समयको गुड़धेनु दान करना उचित है ।

गुड़नई—वासुदेवपुरसे दो योजन उत्तरमें अवस्थित एक प्राचीन ग्राम । (देशावली)

गुड़ना (हिं० क्रि०)एक तरहका लड़कोंका खेल । इसमें लड़के डण्डे या लाठीको इसतरह फेंकते हैं कि लाठी सिरेके बल पलटा खाती हुई बहुत दूर तक चली जाती है ।

गुड़पर्वत (सं० पु०) गुड़ेन निर्मितः पर्वतः, मध्यपदलो० । दानके लिये गुड़का बनाया हुआ पहाड़ । मत्स्यपुराणमें उसका विधान इस प्रकार लिखा है—तीर्थ, गोष्ठ वा गृहके प्राङ्गणमें एक चारद्वारी चतुरस्र मण्डप निर्माण

करना चाहिये। उसके बीचमें अच्छी तरह गोबरसे लीप करके कुश बिछा देते हैं। इस पर विष्कम्भ आदि पर्वत युक्त एक गुड़का पहाड़ बनाया जाता है। दश (६२॥ मन)का उत्तम, पांचका मध्यम और तीन भार गुड़का पर्वत अधम कहा है। दाताकी अवस्था बहुत हीन होनेसे इससे थोड़ेमें भी गुड़पर्वत बनाया जा सकता है। विष्कम्भ पर्वत, सुवर्णवृक्ष आदि धान्याचलके नियमानुसार रखते हैं। होम और लोकपालोंका अधिवास प्रभृति भी वैसा ही होता है। गुड़पर्वत दान करनेसे स्वर्ग मिलता है। धान्याचलके सिवा काम करके यह मन्त्र पढ़ते हैं—

"यथा देवेषु विश्वात्मा प्रवरोऽयं जनार्दनः।
सामवेदस्तु वेदानां महादेवस्तु योगिनाम्॥
प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा।
तथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसो मतः॥
मम तस्मात् परां लक्ष्मीं गुड़पर्वतदेहि मे।
यस्मात् सौभाग्यदायिन्या भ्राता त्वं गुड़पर्वत।
निवासश्चापि पार्वत्या तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे॥" (मत्स्य० ८५ अ०)

जो इस नियमसे गुड़पर्वत दान करेगा, पहले गौरी लोकमें रह करके सप्तद्वीपका एकाधिपत्य पा सकेगा।

मेरुदान देखो।

गुड़पाक (सं० पु०) गुड़स्य पाकः, ६-तत्। वैद्यशास्त्रोक्त पाकविशेष। चक्रदत्तके मतसे गुड़पाक करनेके समय एक जलपूर्ण पात्र उसके निकट रखना चाहिये। गुड़पाक भली भांति हुआ वा नहीं इसके जाननेके लिये थोड़ा गुड़ उठाकर रखे हुये जलपूर्ण पात्रमें छोड़ दें। यदि निक्षिप्त गुड़ एक स्थानसे दूसरा स्थान न जाय एवं उसका कोई अंश गल न जाय तो जानना चाहिये कि गुड़पाक अच्छी तरह हो गया। यदि गुड़ हाथमें लग जाय अथवा सूतेके सदृश हो जाय तो गुड़का पाक होना नहीं समझा जाता है। (चक्रदत्त)

गुड़पाटक (सं० पु०) इक्षु, ऊख।

गुड़पिप्पलीघृत (सं० क्ली०) गुड़पिप्पलीभ्यां सह पक्व, घृतं मध्यपदलो०। औषधविशेष। पीपर, गुड़ और घृतको मिश्रित कर चौगुना दूधके साथ पाक करनेको गुड़पिप्पलीघृत कहते हैं। यह अम्लपित्त और शूलरोगका एक महौषध है।

गुड़पिष्ट (सं० क्ली०) गुड़युक्तं पिष्टं मध्यपदलो०। गुड़ मिला हुआ एक तरहका पीठा।

गुड़पुष्प (सं० पु०) गुड़ इव मधुरं पुष्पमस्य बहुव्री०। मधुकपुष्प, मौलसरीका पुष्प।

गुड़पुष्पक (सं० पु०) गुड़पुष्प एव स्वार्थे कन्। मधुकपुष्पवृक्ष, मौलसरीका पेड़।

गुड़फल (सं० पु०) गुड़ इव मधुरं फलमस्य, बहुव्री०। १ पीलुवृक्ष। २ बदरवृक्ष।

गुड़फला (सं० स्त्री०) ह्रस्वकाकमाची, छोटी मकोय।

गुड़भल्लातक (सं० पु०) गुड़ेन पक्वो भल्लातकः, मध्यपदलो०। औषधविशेष, एक दवा। उसको इस तरह बनाते हैं—एक द्रोण पानीमें दो हजार भिलावें उबालना चाहिये। यह पानी चौथाई घटने पर भिलावें निकाल लेते और उसी पानीमें १२॥ सेर गुड़ डाल करके खौलने देते हैं। फिर फलोंको चार चार टुकड़े करके उसमें निक्षेप किया जाता है। भिलावां खूब पक जाने पर त्रिफला, त्रिकटु, अजवायन, नागरमोथा और सैन्धव एक एक कर्ष डालना चाहिये। फिर दालचीनी, इलायची, तेजपत्र और केसर छोड़ करके उतार लिया जाता है। इसीका नाम गुड़भल्लातक है। बलशाली व्यक्ति अग्निवृद्धि रहनेसे वह औषध सेवन कर सकता है। इसको सवेरे खाना चाहिये। गुड़भल्लातक लेनेसे प्लीहोदर, कास, कृमि और भगन्दररोग विनष्ट होता है।

(चक्रदत्त)

गुड़भा (सं० स्त्री०) गुड़ इव भाँति भाक। शर्करा, शक्कर।

गुड़मञ्जरी (सं० स्त्री०) १ कृष्णशाल्मली। २ जिङ्गिनी।

गुड़मण्डूर (सं० क्ली०) १ पुराना गुड़। २ अन्नद्रव शूल।

गुड़मूल (सं० पु०) गुड़ इव मूलं यस्य, बहुव्री०। १ ऊख, केतारी। २ स्वल्पमारिषशस्य,

गुड़योगफला (सं० स्त्री०) मधुरालावु, मिठी कद्दू।

गुड़र (सं० त्रि०) गूड़से बना हुआ।

गुड़ल (सं० क्ली०) गुड़ं कारणतया लाति गुड़-ला-क। १ गौड़ी नामक मदिरा, जो गुड़से प्रस्तुत किया जाता है। (त्रि०) गुड़ोत्पन्न।

गुड़सगी—बम्बई प्रान्तके बेलगांव जिलेका एक मौजा।

यहां कादसोध और पादसीध नामक दो लिङ्गायत देव प्रेत बाधा दूर करनेके लिये मशहूर हैं। तीन अमावस्याओंको बराबर भूतसे सताया हुआ आदमी वहां ले जानेसे अच्छा हो जाता है।

गुडलिह (सं० त्रि०) गुडं लेढि गुड-लिह-क्विप्। गुड चाटनेवाला।

गुडवीज (सं० पु०) गुड इव मधुरं वीजं यस्य बहुव्री०। मसूर।

गुडशर्करा (सं० स्त्री०) गुडजाता शर्करा। उत्तम चीनी।

गुडशिग्रु (सं० पु०) गुड इव मधुरः शिग्रुः। रक्तशोभांजन।

गुड़शुक्त (सं० क्ली०) अम्ल रसविशेष, किसी किस्मका सिरका। यह तेल, गुड़, पानी, कण्डशाक आदि एकत्र मिला करके बनाया जाता है। (शार्ङ्गधर)

गुड़हर (हिं० पु०) अड़हुलका पेड़ या फूल।

गुड़हल (हिं० पु०) गुड़हर देखो।

गुडा (सं० स्त्री०) गुड-टाप्। १ स्नुहीवृक्ष। २ वटिका गुटिका, गोली। ३ उशीरो तृण, एक तरहकी सुगन्धि घास। ४ गुड़ूची।

गुडाका (सं० स्त्री०) गुडयति सङ्कोचयति देहेन्द्रियादीनि स गुडः तं आकति प्रकाशयति गुड-आ-कै-क-टाप्। १ निद्रा, नींद। २ आलस्य।

गुडाकू (हिं० पु०) गुडमिश्रित पीनेका तम्बाकू।

गुडाकेश (सं० पु०) गुडः स्नुहीव केशा यस्य, बहुव्री०। गुडाकायाः निद्रायाः आलस्यस्य वा ईशः, ६-तत्। अर्जुन। "गुडाकेशः अर्जुनः" (उज्ज्वल) (त्रि०) जितनिद्र, जिसने निद्राको वशीभूत कर लिया हो। ३ जितालस्य, आलस्यशून्य। (पु०) ४ शिव, महादेव।

गुडाख्य (सं० पु०) स्नुहीवृक्ष।

गुडाचल (सं० पु०) गुडेन निर्मितः अचलः मध्यपदलो०। दानके लिये गुड द्वारा निर्मित पर्वत। गुडपर्वत देखो।

गुडादि (सं० पु०) पाणिनीका एक गण। गुड़, कुल्माष, सक्तु, अपूप, मांसौदन, इक्षु, वेणु, संग्राम, संघात, संक्राम, सम्बाह, प्रवाह, निवास और उपवास इन सभीको गुडादि गण कहते हैं।

गुडादिवटिका (सं० स्त्री०) औषधविशेष।

गुडापूप (सं० पु०) गुडेन मिश्रितोऽपूपः, मध्यपदलो०। गुडमिश्रित पिष्टक, गुड़पीठा।

गुडापूपिका (सं० स्त्री०) गुडा पूपाः प्रायेण [illegible] गुडापूप-कन् टाप् अत इत्वञ्च। पूर्णिमा तिथिविशेष।

गुडाम्बु (सं० क्ली०) गुड कृत जल। गुड़ मिला हुआ जल।

गुडारिष्ट (सं० क्ली०) गुडनिर्मितं अरिष्टं, मध्यपदलो०। मदिरा, दारू।

गुडाला (सं० स्त्री०) गुडं मधुरसं आलाति बाहुलकात् कः ततः टाप्। गम्भारिनीवृक्ष। इसका रस गुड़के सदृश मीठा लगता है।

गुडाशय (सं० पु०) गुड इव मधुर रस आशेते आश्रयः आ-शी आधारे-अच्, ६-तत्। अक्षोटवृक्ष, अखरोटका पेड़।

गुडाश्मक—पुराणोक्त एक जनपद।

"धर्मारण्या ज्योतिषिका गौरग्रीवा गुडाश्मकाः"

(मार्कण्डेयपुराण ५८।१०)

गुडाष्टक (सं० क्ली०) औषधविशेष, एक दवा। त्रिकटु, पिपरामूल, त्रिवृत्‌की जड़, दन्तीमूल और चीतकी जड़ बराबर बराबर चूर्ण करके गुड़के साथ सवेरे खाना चाहिये मात्रा अग्निबलके अनुसार दी जाती है। यह अजीर्ण और उदावर्त दूर करता है।

गुडसव (सं० पु०) गुडकृत आसव, गुड़की शराब। यह वातनाशक, तर्पण और दीपन है। (चरक)

गुड़िका (सं० स्त्री०) गुटिका, गोली।

गुड़िमेटला—मन्द्राज प्रान्तके कृष्ण जिलेका एक गांव। यह नन्दीग्राममे ८ मील दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है। यहां पहाड़ पर एक भग्न दुर्ग, टूटे फूटे मन्दिर आदिके प्राचीर और मण्डप प्रभृतिका ध्वंसावशेष देख पड़ता है। कहते हैं कि १३२८ से १४२७ ई०के बीच रेड्डी सामन्तोंने यह सब मन्दिर आदि बनाये थे। कोई कोई इसे तुरङ्गरायडू कहा करता है। ११८० शकको दिया हुआ राजेन्द्र चोड़के पुत्र काकतीय रुद्रमहाराज, १०८६ शकमें प्रदत्त वासुदेव और रुद्राम्बा देवीके राजत्वकाल पर लिखा हुआ भिन्न भिन्न शिलाफलक मिलता है।

गुड़िया (हिं० स्त्री०) कपड़ोंकी बनी हुई लड़कियोंके खेलनेकी पुतली।

गुड़िया—उड़ीसेकी एक जाति। यह हलवाईका काम करते हैं। गुड़की मिठाई बनानेसे ही उनको गुड़िया कहा जाता है।

गुड़िलो-मुहदाचलम्—मन्द्राजप्रान्तके विशाखपत्तन जिलेका एक पहाड़। यह विमलोपत्तन तालुकसे ८ मील पश्चिम पड़ता है। इसको मनावरम रास्तेसे एक मील दक्षिण रघुनाथ स्वामीका मन्दिर और उसीके पास पत्थर पर खुदी हुई एक लिपि है। सिवा इसके मण्डपके खम्भे पर पहाड़ और झरनेके निकट दूसरी भी कई एक अस्पष्ट शिलालिपियां देख पड़ती हैं। इसी स्थानसे एक मील दूर १० फुट गहरी और ३० फुट चौड़ी एक गुहा है।

गुडीवाड़—मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेका एक सबडिविजन और तालुक। यह अक्षा० १६° १६' तथा १६° ४७' उ० और देशा० ८०° ५५' एवं ८१° २३' पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५८५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १५११८१६ है। इसमें कोलार झील आ गया है। मालगुजारी और सेस कोई १०१८०००) रु० है। जमीनको सींच कृष्णा नदीको नहरसे होती है। एक नगर और २१२ गांव आबाद हैं।

गुडीवाड़—मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेमें गुडीवाड़ तालुकका सदर। यह अक्षा० १६° २७' उ० और देशा० ८१° पू०में पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ६७१८ है। गुडीवाड़ बहुत पुरानी जगह है। नगरके मध्यभागमें एक टूटाफुटा बौद्ध स्तूप देखते हैं। कहते हैं, कि उसमें पांच मटके मिले। पश्चिमको एक सुरक्षित जैन मूर्ति है। थोड़ी दूर आगे नगरका प्राचीन स्थान टीला है। यहां मट्टीके बड़े बर्तन, धातु, पत्थर तथा शीशे सब तरहकी मालाएं और ताम्र, कांस्य मुद्राएं आविष्कृत हुई हैं।

गुडी (सं० स्त्री०) १ स्नुहीवृक्ष। २ गुडूची।

गुड्डी (हिं० स्त्री०) पतंग, गुड्डी।

गुडूची (सं० स्त्री०) गुड बाहुलकात् ऊचत् ङीप्। गुरुच।

गुडूरु (हिं० स्त्री०) १ किवाड़की चूर। २ मण्डलाकार रेखा। ३ छोटा छिद्र।

गुड्डा (हिं० पु०) कपड़ेका बना हुआ लड़कोंके खेलनेका पुतला।

गुडूह—एक देशका नाम। (बृ-सं हि-१८।१३)

गडूची (सं० स्त्री०) गुड बाहुलकात् ऊचट् ङीप्। गुडूची बाहुलकात् उकारस्य ऊकारादेशः। लताविशेष, एक बेल। चलती बोलीमें गुर्च कहते हैं। (Cocculus cordifolius.) इसका संस्कृत पर्याय—वत्सादनी, छिन्नरुहा, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी गुडूची, गुडूचा, चक्र, लक्षणा, अमृतवल्ली, ज्वरारि, श्यामा, वरा, सुकृता, मधुपर्णिका, छिन्नोद्भवा, अमृतलता, रसायनी, सोमलतिका, भिषकप्रिया, कुण्डलिनी, वयस्था, नागकुमारिका, छिन्निका, चन्द्रहासा, अमृतवल्लरी, सुधाजीवन्ती, सोमा, चक्रलक्षणिका, वयस्या, मण्डली और देवनिर्मिता है।

गडूची कटु, तिक्त स्वादुपाक, रसायन, संग्राही, कषाय, उष्ण, लघु, बलकर, अग्निवृद्धिकारक, और त्रिदोष, आम, तृष्णा, दाह, मोह, कास, पाण्डु, कामला कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर, कृमि तथा वमिनाशक है। (भाव०) राजवल्लभके मतमें वह गुरु, वीर्यकर और भ्रमनाशक होती है।

गुर्चकी पत्ती अग्निवृद्धिकर सर्वप्रकार ज्वरनाशक, लघु, कषाय और दूसरे गुणोंमें लताके समान है घीमें मिली हुई गुर्चकी पत्ती वात, गुडयुक्त पित्त, एरण्डतैल योगसे उग्र वातरक्त और सोंठके मेलमें आमवात दूर करती है। (राजवल्लभ)

भावप्रकाशमें बतलाया है कि राम रावण युद्धमें राक्षसाधिपति रावणके हथियारोंकी कड़ी चोटसे रामचन्द्रका बहुतसा बानर सैन्य निहत हुआ। रामने उन्हें बचानेके लिये इन्द्रसे प्रार्थना की थी। सुरपतिके अमृत वर्षण करनेसे मरे हुए बानर जी उठे। उनके शरीरका अमृत चारों ओर मट्टीमें लगा था। उसी अमृतसे सबसे पहले गुर्च उपजी।

भारतवर्षके प्रायः सब वनोंमें गुडूची लता देख पड़ती हैं। जड़ काट डालनेसे भी यह नहीं जाती।

आमके दृसमें हो वह ज्यादा बढ़ती है। गुर्च दो प्रकार की है,—एकको काटनेसे उसके बीचमें चक्राकार चिह्न झलकता है। दूसरेमें वैसा नहीं होता। चक्राकार चिह्नयुक्त लता पद्मगुड़ूची भी कहलाती है। यह अपेक्षाकृत कुछ मोटी रहती और चालीस पचास हाथ बढ़ती है। इसकी गांठसे लम्बे लंबे रेशे निकलते हैं। नीमकी गुर्च सबसे अच्छी समझी जाती है।

युरोपीय चिकित्सकोंके मतमें वह बलकर, मूत्रकर और अल्प ज्वरघ्न है। ष्टुयार्ट, कांबेल आदि डाक्टरोंका कहना है कि सविराम ज्वरमें गुड़ूची बड़ा उपकार करती है। परन्तु डा० ओसफर्नेसी वह बात नहीं मानते। उनके मतानुसार गुर्चके काढ़ेका विशेष गुण यही है कि वह शैत्यनिवारक होते भी उष्ण नहीं। पुराने उपदंश रोगमें यह सालसेकी तरह काम आती है। ज्वर आदिके पीछे शरीर दुर्बल पड़ जाने पर इसको खानेसे क्षुधा, जीर्ण और बलवृद्धि होती है।

गुड़ूचीघृत (सं० क्ली०) घृतविशेष, गुर्चका घी। १२॥ शरावक गुर्च ४ श० गायके घी और ६४ श० पानीमें डाल खूब उबालते हैं। जब १६ श० जल घट आता, १ श० गुर्चका चूर्ण उसमें डाल दिया जाता है। इसीका नाम गुड़ूचीघृत है। यह वात-रक्तके लिये बहुत उपकारी होता है।

आमवातका गुड़ूचीघृत इस प्रकार बनता है—४ शरावक गव्यघृत और ६४ श० जलमें ६४ पल गुड़ूची डाल करके खूब उबालते और १६ श० पानी बचने पर उतार करके उसमें १ श० शुण्ठीचूर्ण मिलाते हैं।

गुड़ूचीतैल (सं० क्ली०) तैलविशेष, गुर्चका तेल। स्वल्प गुड़ूची तैल इस तरह बनता है—४ शरावक तिल तेल और ६४ श० जलमें १०० पल गुर्च उबाल करके १६ शरावक पानी बचने पर उतारते फिर उसमें १०० पल गुड़ूची चूर्ण मिलाते है।

मध्यम यथा—४ श० तिलतैल, १६ श० गुड़ूचीक्काथ और ४ श० दुग्ध यथाविधि पाक करनेसे मध्यम गुड़ूचीतैल प्रस्तुत होता है।

बृहत् यथा—८ श० तिलतैल और ६४ श० जलमें १०० पल गुड़ूची डाल करके १६ श० पानी बचनेसे क्काथ उतार लेना चाहिये। इसमें शुलफा, हर, त्रिकटु, गुर्च, मोथा, वन अजवायन, हलदी, दारुहलदी, कुट, धनियां, पद्मकाष्ठ, विडङ्ग, तेजपत्र, वच तथा जटामांसी चार चार तोले और ८ तोला लालचन्दन डालनेसे बृहत् गुड़ूचीतैल तयार होता है।

दूसरा गुड़ूचीतैल बनानेकी प्रणाली यह है—१६ श० तिलतैल, ६४ श० दुग्ध और ६४ श० जलमें १२॥ श० गुर्च उबाल करके १६ श० पानी रहनेसे उतारा जाता है। इसमें मुलहटी, मञ्जिष्ठा, ऋद्धि (अभावमें बला), वृद्धि (न मिलनेसे गोरक्ष-चाकुल्य), मेदा (न रहनेसे अश्वगन्धा), महामेदा (अभावमें अनन्ता), गुर्च, ऋषभक (न मिलने पर वंशरोचना), काकोली, क्षीरकाकोली, जीवन्ती, कुष्ठ, इलायची, अगुरु, द्राक्षा, जटामांसी, पद्मनखी, शटी, रेणुक, विकङ्कत, जटा, सोंठ, पीपल, मिर्च शुलफा, श्यामालता, अनन्तमूल, गुड़त्वक्, तेजपत्र, चव्य, वराहक्रान्ता, भूम्यामलकी, शालपर्णी, तगरपादुका, नागेश्वर, पद्मकाष्ठ, सौगन्धिक और रक्तचन्दन दो दो तोला पड़ता है। (सारकौमुदी)

यह तेल लगानेसे वातरक्त रोग मिटता है।

गुड़ूचीपत्र (सं० क्ली०) गुड़ूचीका पत्र, गुर्चको पत्ती। इसका शाक बनता है। गुण—आग्नेय, सर्वज्वरहर, लघु, कटु, कषाय, तिक्त, स्वादुपाक, रसायन, बल्य, उष्ण, संग्राही और तृष्णा, प्रमेह, दाह, कामला, कुष्ठ तथा पाण्डुघ्न है। (भावप्रकाश)

गुड़ूचीसत्व (सं० क्ली०) गुड़ूचीसार, गुर्चका सत।

गुड़ूच्यादि (सं० पु०) गुड़ूची आदिर्यस्य, बहुव्री०। वैद्यकशास्त्रोक्त एक गण। गुड़ूची, निम, धनियां, पद्मकाष्ठ और चन्दन इन सभीको गुड़ूच्यादि कहते हैं। इसका गुण—हिक्का, अरुचि, छर्दि, पिपासा और दाहनाशक है।

गुड़ूच्यादिकषाय (सं० पु०) पाचनविशेष। गुड़ूची, आतइच, धनियां, शूंठ, बिल्वमुस्ता और वाला इन समस्त द्वारा प्रस्तुत पाचनको गुड़ूच्यादिकषाय कहते हैं। इस पाचनके सेवनसे ज्वरातिसार, हिक्का, अरुचि, छर्दि, पिपासा और गात्रदाह नष्ट होते हैं।

गुड़ूच्यादिक्काथ (सं० पु०) पाचनविशेष। भावप्रकाश-

में तीन तरहके गुडूच्यादिक्वाथ निरूपित हैं। १म-गुरुच और आंवला संयुक्त खेतपापड़के क्वाथको एक तरहका गुडूच्यादि क्वाथ कहते हैं। इसके सेवनसे दाह, शोष और भ्रान्ति उपसर्गयुक्त पित्तज्वरमें विशेष लाभ होता है। २य—गुरुच, चिरौता, वाला, वेणाकी जड़, मोथा, तेउड़ी, आंवला, किसमिस, वासक और खेतपापड़ इन समस्त द्रव्यके क्वाथको भी गुडूच्यादि क्वाथ कहते हैं। इसके सेवनसे ज्वर विनष्ट होता है। प्रातःकाल मधुके साथ सेवनीय है। ३य—गुलञ्च, निम्बपत्र, धनिया, रक्तचन्दन और कटकी इन समस्त पदार्थसे जो क्वाथ प्रस्तुत होता है उसे गुडूच्यादिक्वाथ कहते हैं। यह पित्तश्लेष्मिक ज्वरमें सेवन करना उचित है। इसके सेवनसे पिपासा, दाह, अरुचि और वमि दूर हो जाते हैं

गुडूच्यादि लौह (सं० पु०) रसविशेष, एक दवा। गुरुचका सत, त्रिफला, विडङ्ग, मोथा तथा चीतको जड़ एक एक तोला और १० तोला लौह मिला करके माषाप्रमाण गोली बना लेना चाहिये। इसीका नाम गुडूच्यादिलौह है। यह रस सेवन करनेसे वातरक्त दूर होता है। (रसेन्द्रचिन्तामणि)

गुडूर—बंबई प्रान्तके बीजापुर जिलेका ग्राम (मन्दिरपुरी)। यह बादामीका एक छोटा गांव है। जनसंख्या प्रायः ११८२ है। ग्रामके मध्यभागमें रामेश्वरका एक प्राचीन मन्दिर है। उसमें लिङ्ग प्रतिष्ठित है। मठको छोड़ करके और सब गिर पड़ा है। मन्दिरमें १२ चौकोर और ६ गोल नक्काशीदार खम्भे हैं। द्वारकाष्ठ पर गजलक्ष्मीकी मूर्ति है। हाथी अपनी सूंडमें घड़े लिये उनके मस्तक पर जलधारा छोड़ रहे हैं। यहां कपड़े, तांबे पीतलके बर्तन और मूर्तियोंका काम होता है।

गुडेर (सं० पु०) गुड-एरक्। १ गुडक, वर्त्तलाकार पदार्थविशेष। २ ग्रास, कौर। ३ तृण, घास।

गुडेरक (सं० पु०) गुडेर स्वार्थे कन्। गुडेर देखो।

गुडोदक (सं० क्लो०) गुड़ मिश्रित जल।

गुडोद्भवा (सं० स्त्री०) गुड उद्भवोऽस्याः, बहुव्री०। १ शर्करा, शक्कर। (त्रि०) २ जो गुड़से बनाया गया हो।

गुडोद्भूता (सं० स्त्री०) गुडात् उद्भूता, ५-तत्। शर्करा, शक्कड़।

गुड्डुक (सं० पु०) गुड्शाली।

गुड्डा (हिं० पु०) गुड़ुआ देखो।

गुड्डी (हिं० स्त्री०) पतंग, कनकौवा।

गुड्डू (हिं० स्त्री०) १ गुड़ुआ देखो। (पु०) २ एक प्रकारका कीट जो धूलमें घर बना कर रहता है।

गुण (सं० पु०) गुण भावे कर्त्तरि वा अच। १ धनुषकी प्रत्यंचा। इसका पर्याय—मौर्वीज्या, शिञ्जिनी, शिञ्जा, ज्यावा, पतञ्चिका और जीवा है। २ रज्जु, रस्सी, डोरा। ३ शौर्यादि धर्म। ४ छह प्रकारकी राजनीति। सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और संश्रय इन सभीको गुण बोलते हैं। ५ सूत्र। "[illegible]" (कार्या० म० १६९) ६ ज्ञानविद्यादि। ७ अच्छा स्वभाव, शील, सद्वृत्ति। ८ सांख्यमतसिद्ध पदार्थविशेष, सांख्यमतमें माना हुआ एक पदार्थ। "गुण" शब्दसे साधारणतः द्रव्यके धर्मरूप रस आदि होका बोध होता है, किन्तु सांख्यमतमें गुणको ऐसा नहीं माना है, वे कहते हैं यह एक प्रकारका द्रव्य है और इसके भी कई एक धर्म हैं। विज्ञानभिक्षु कहते हैं, कि पुरुष वा आत्मारूप पशुके बन्धनके कारण महत्तत्त्व वा बुद्धिरूप रज्जु जिससे बनती है, उसीको सांख्यप्रणेता कपिलने गुण शब्दसे उल्लेख किया है। (सांख्य १.६१ भाष्य) इस गुणसे ही समस्त पदार्थ उत्पन्न होते हैं। इसी लिए समस्त जन्य पदार्थको त्रिगुणात्मक कहते हैं। ये गुण तीन प्रकारके हैं-सत्वः, रजः और तमः। सुख, लघुता और प्रकाश आदि जिसका धर्म है, उसे सत्वः, दुःख, उपष्टम्भ और चाञ्चल्ययुक्तको रजः तथा विषाद, गुरुत्व और आवरकत्व आदि जिसमें है उस गुणका तमः नामसे उल्लेख किया जाता है। इनमें एक एक जातीय अनन्त गुण हैं। सत्वजातीय अर्थात् जिसमें सत्वगुणका धर्म है, उसे सत्व, रजोजातीय सभी गुणोंको रजः और तमोजातीय समस्त गुणोंको तमः कहा जाता है। इन जातियोंको ले कर तीन गुण स्वीकार किये जाते हैं। वास्तवमें गुण सिर्फ तीन ही नहीं हैं। एक एक जातिके अनेक गुण हैं। विज्ञानभिक्षुके मतसे—आकाशके कारण जो गुण हैं, उन्हें छोड़ कर अन्य सभी गुण अणुपरिमाण हैं। इन गुणोंका कभी भी विनाश नहीं होता। ये समस्त पदार्थोंके रूपमें परि-

णत होती हैं। नैयायिक वा वैशेषिकगण भौतिक परमाणुओंको नित्य। नित्य मानते हैं। उनके मतसे परमाणु ही चरमद्रव्य है, उन्हींसे समस्त जन्य द्रव्योंकी उत्पत्ति होती है, किन्तु परमाणु किसी पदार्थसे उत्पन्न नहीं हैं। सांख्यप्रणेताने इस मतका युक्ति और प्रमाणों द्वारा खण्डन कर, परमाणुका उपादानकारण वा अवयव तन्मात्र, तन्मात्रके उपादानकारण अहङ्कार अहङ्कारके उपादानकारण महत्तत्त्व और उसके उपादानकारण सत्त्व रजः और तमोगुण हैं, ऐसा स्थिर किया है। इनके अवयव वा उपादानकारण नहीं हैं। ये नित्य हैं। ये गुण परस्पर परस्परके सहचारी और परिणामशील हैं और एक जातीय गुण अन्य जातीय गुणका अभिभव किया करते हैं।

भगवद्गीताके मतसे—सत्त्वगुण निर्मल कलुषादिसे रहित है; ज्ञान (वृत्ति) सुख और प्रकाशकत्व इसका धर्म है। तृष्णा, आसक्ति और रञ्जकत्व रजोगुणके धर्म हैं। मोह, प्रमाद, आलस्य और निद्रा तमोगुणके धर्म हैं। एक गुण दूसरे गुण पर आवरण डाल कर अपना कार्य करता है। (गीता १४ अ०)

ये गुण जब अपरिणत वा अकार्य अवस्थामें रहते हैं, तब इनका कोई भी धर्म उपलब्ध नहीं होता। किन्तु महत्तत्त्व आदि कार्य द्रव्य रूपमें परिणत होने पर इनके पृथक् पृथक् धर्मोंका अनुभव किया जा सकता है। परिणामके तारतम्यके अनुसार जिसमें जिस गुणकी अधिकता होती है, उसमें उसी गुणका धर्म प्रकट होता है।

गुणका सर्वप्रथम परिणाम महत्तत्त्व वा बुद्धि है, इसीमें गुणके पृथक् पृथक् धर्मोंका विशेष परिचय मिलता है गीताके मतसे महत्तत्त्व वा बुद्धिमें सत्वगुणका आधिक्य होने पर ज्ञानसे निरतिशय बुद्धि हो जाती है। बुद्धिमें सत्त्वगुणका आधिक्य होने पर आयुष्कर, बलकर, सुखकर, प्रीतिवर्द्धक, रसयुक्त और स्निग्ध आहार करनेकी प्रवृत्ति होती है। इस प्रकार रजोगुणके आधिक्यसे लोभ प्रवृत्ति, कार्यका उद्योग, सर्वदा कार्य करनेका निरतिशय आग्रह और स्पृहा होती है तथा कटु, अम्लरस, लवण, अतिशय उष्ण, तीक्ष्ण, रूक्ष और दुःख शोक वा रोगजनक द्रव्य खानेकी इच्छा होती है। तमोगुणकी वृद्धि होने पर ज्ञानकी अल्पता वा अभाव, कार्यमें अप्रवृत्ति, अनवधानता और मोह हुआ करता है तथा रसहीन, दुर्गन्धयुक्त, पर्युषित और उच्छिष्ट द्रव्य भक्षण करनेकी इच्छा होती है।

भावप्रकाशमें लिखा है—धर्म, मुक्ति और परलोक आदिमें विश्वास, सत् असत्का विवेचन करके भोजन (करना), क्रोधहीनता, सत्यवाक्यप्रयोग, मेधा, बुद्धि, भूतप्रीत, काम क्रोध और लोभ आदिके आवेगका अभाव, क्षमा, दया, विवेकज्ञान, पटुता, अनिन्दित कर्मका अनुष्ठान, स्पृहाका अभाव, नियम और रुचिके साथ धर्मकर्मका अनुष्ठान ये सब वर्द्धित मानसिक सत्त्वगुणके धर्म हैं। क्रोध, ताड़नशीलता, निरतिशय दुःख, अत्यन्त सुखकी इच्छा, कपटता, कामुकता, मिथ्यावाक्यप्रयोग, अधीरता, गर्व, ऐश्वर्य, मत्तता, अधिक आनन्द और भ्रमण, ये सब मानसिक वर्द्धित रजोगुणके धर्म हैं। नास्तिकता, अतिशय विषण्णभाव, अधिक आलस्य, दुष्टबुद्धि, निन्दित कर्मानुष्ठानसे उत्पन्न सुखमें प्रीति, सब समय निद्रा, सब विषयोंमें ज्ञानकी अल्पता, सर्वदा क्रोधान्धता और मूर्खता, ये सब मानसिक वर्द्धित तमोगुणके धर्म हैं। सत्व, रजः और तम, शब्दमें विशेष विवरण देखना चाहिये।

७ अप्रधान, गौण। (मेदिनी)

१० नैयायिक और वैशेषिक मतसिद्ध द्रव्याश्रित पदार्थ विशेष, नैयायिक और वैशेषिक मतमें माना हुआ एक द्रव्याश्रित पदार्थ। वैशेषिक-उपस्कारके कर्त्ताने गुणका लक्षण इस प्रकार लिखा है—

"सामान्यवत्वे सति कर्मान्यत्वे च सति गुणत्वं।"

कर्मसे भिन्न जातिविशिष्ट पदार्थका नाम गुण है।

सूत्रकारने इस तरहसे लक्षण किया है—संयोग और विभागके प्रति अन्यकी अपेक्षा न कर जो पदार्थ कारण नहीं होता और जो गुण शून्य है तथा द्रव्य ही जिसका आश्रय है, उसका नाम गुण है। (वैशेषिकसू० १।१६)

संयोग और विभागमें दूसरेकी अपेक्षा छोड़ करके जो पदार्थ कारण नहीं रहता, गुणशून्य पड़ता और द्रव्य हीको अपना आश्रय रखता, वही गुण कहलाता है।

मुक्तावलीके मतसे समवायि-कारणमें अपनी वृत्ति न रखते हुए भी नित्य पदार्थ वृत्ति रखनेवाले और सत्ताके

साक्षात् व्याप्य पदार्थका नाम गुण है। सिवा इसके मुक्तावलीकारने गुणके और भी कई एक लक्षण लिखे हैं। वैशेषिक-सूत्रप्रणेता कणाद सिर्फ १७ ही गुण मानते हैं। यथा—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष और प्रयत्न। (वैशेषिक १।०) किन्तु उपस्कारप्रणेता इस सूत्रके चकारसे सात गुण और मिला करके चौबीस बना देते हैं। तदनुसार भाषापरिच्छेद-प्रणेताने भी २४ गुणोंका उल्लेख किया है। नैयायिक भी इसी पक्षको समर्थन करते आते हैं। अतएव नैयायिकों और वैशेषिकोंके मतमें गुण चौबीस हैं—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व अपरत्व, ज्ञान, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, यत्न, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म और शब्द। इन्हीं सब गुणोंके अनुसार द्रव्यका विभाग होता है। नैयायिक कई द्रव्योंको मूर्त और कितनों ही को अमूर्त जैसा कहते हैं। इनके मतमें आकाश और आत्माको छोड़ करके बाकी सातो चीजें मूर्त होती हैं। पूर्वकथित चतुर्विंशति गुणोंमें रूप, रस, स्पर्श, गन्ध, परत्व, अपरत्व, द्रवत्व, गुरुत्व, स्नेह और वेग (संस्कार विशेष) कई गुण केवल मूर्त अर्थात् आकाश तथा आत्मा भिन्न और द्रव्योंके धर्म हैं। धर्म, अधर्म, भावना (एक संस्कार), शब्द, बुद्धि, ज्ञान, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष और यत्न गुण अमूर्त द्रव्योंमें होते हैं।

सांख्याचार्य और वेदान्तिकोंके मतमें वह चौबीस गुण द्रव्यसे अलग नहीं। इन्होंने धर्म और अधर्मका अभेद मान करके उनको द्रव्यस्वरूप जैसा ठहराया है।

१० वैयाकरणोंके मतानुसार एक आदेश। इईके स्थानमें एकार, उऊको जगह ओकार, ऋ ॠका अर और ऌ ॡसे अल् होनेका नाम गुण है।

११ आलङ्कारिक मतमें अङ्गीभूत रसके उत्कर्ष हेतु माधुर्य प्रभृति धर्म गुण कहलाते हैं। रसमें गुणकी स्थिति बहुत ही आवश्यक है। (काव्यप्रकाश)

साहित्यदर्पणमें ३ गुण कहे हैं—माधुर्य, ओजः और प्रसाद। किन्तु दण्डीके मतमें वह दश है। श्लेष, प्रसाद, समता, माधुर्य, उदारता, अर्थव्यक्ति, सौकुमार्य, ओजः, कान्ति और समाधि। वैदर्भी रीतिमें इन १० गुणोंका रहना निहायत जरूरी है।

१२ आवृत्ति, दुहराव। (मनु) १३ उत्कर्ष, बड़ाई। १४ विशेषण, तारीफ।

१५ पाणिनि भाष्यके मतानुसार द्रव्यको छोड़ करके जो पदार्थ द्रव्यके आश्रयमें रहता, कभी कभी उससे छूट पड़ता, भिन्न जातीय पदार्थ लगता और नित्यानित्य भेदसे दो प्रकार ठहरता, वह गुण है। जैसे घट आदि रूप और आकाश प्रभृतिका परिमाण। (म०।१।४।४४)

१६ देश एवं कालज्ञत्व आदि चौदह धर्म। यथा—देश, कालज्ञता, दृढ़ता, सर्व क्लेश सहिष्णुता, सर्व विज्ञानता, दक्षता, ओजस्विता, मन्त्रगोपन, असंवादिता, शौर्य, भक्तिज्ञता, कृतज्ञता, शरणागतवात्सल्य, अक्रोधनस्वभाव और अचञ्चलता। शास्त्रकारोंने इन्हें भी गुण जैसा लिखा है।

१७ भगवद्गीताके मतमें सब प्राणियोंके प्रति दया, क्षमा, अनसूया, शौच, अनायास, मङ्गल, अकृपणता और अस्पृहा आठ धर्म। १८ सूद, व्याज। १९ इन्द्रिय। २० त्याग। २१ बटी, गोली। २२ दोषभिन्न धर्म, भलाई। २३ मुक्तिसाधनविवेक, वैराग्य और सुमुक्षा प्रभृति। २४ अङ्ग प्रधानका निर्वाहक। (जैमिनिसूत्र) २५ वस्तुके साहित्य प्रभृति धर्म। २७ वर्णोत्पत्तिके अनन्तरजात विवार आदि बाह्य प्रयत्न।

२८ सुश्रुतोक्त अष्टविध वीर्य। उष्ण, शीत, स्निग्ध, रूक्ष, विशद, पिच्छिल, मृदु और तीक्ष्ण आठ प्रकारके वीर्यका नाम गुण है। यह सब द्रव्यमें रहा करते हैं।

२९ गणित। ३० भीमसेन। ३१ तन्तु, डोरा। ३२ व्यञ्जन। ३३ गणितविशेष, जरबा। [illegible]। ३४ त्रित्व संख्या, तीनकी अदद। ३५ कोई सोमवंशीभक्त राजा। यह पश्चात् मुनिकुलज थे। इनके पिताका नाम पद्मराग था। (हराद्रिखण्ड १।१।१२)

३६ जैनमतमें गुण [illegible] हैं जो द्रव्यके पूरे हिस्सेमें और उसकी प्रत्येक अवस्थामें (सर्वदा) विद्यमान रहे। यह सामान्य और विशेष नाम दो भेदोंमें विभक्त है। जो सर्व द्रव्योंमें व्यापक हो उसे सामान्य और जो सर्व द्रव्यमें व्यापक नहीं उसे विशेष गुण कहते

हैं। सामान्य गुणके प्रधानतः ६ भेद हैं—अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व और प्रदेशवत्त्व। (तत्त्वार्थ सू.व)

गुणक (सं० पु०) गुणयति आवर्त्तयति गुण-णवुल्। १ पूरकाङ्कविशेष, वह अंक जिससे किसी अंकको गुणा करें। २ गुण। ३ इन्द्रिय। ४ लघ्वादि धर्म।

गुणकर्णिका (सं० स्त्री०) इन्द्रवारुणी लता।

गुणकथन (सं० क्लो०) गुणस्य कथनं, ६-तत्। १ गुण-वर्णन। २ विरहमें कामकृत दश अवस्थाओंमेंसे चतुर्थ अवस्था।

गुणकर (सं० त्रि०) लाभदायक।

गुणकरी (सं० स्त्री०) गोण्डकिरी देखो।

गुणकर्णिका (सं० स्त्री०) इन्द्रवारुणीलता।

गुणकर्मन् (सं० क्लो०) गुणः गुणीभूतं कर्म, कर्मधा०। १ अप्रधान गौण कर्म। द्विकर्मक धातुके अर्थमें जिस कर्मका साक्षात् सम्बन्ध नहीं है, किन्तु वह अप्रधानीभूत क्रियाके साथ सम्बन्ध रखता है उसीको गुणकर्म कहते हैं। गुणानां कर्म, ६ तत्। २ सत्व, रज और तम गुणको कर्म।

गुणकली (सं० स्त्री०) एक रागिणी। गुणकरी देखो।

गुणकामदेव—नेपालके कोई राजा। बाद पार्वतीय वंशावलीके मतमें वह मानवदेववर्माके पुत्र थे, ३५ वर्षमात्र राजा रहे। नेपालके स्वयम्भूपुराणमें कहा है—एक बार नेपालमें सात वर्ष बराबर अनावृष्टि रहा। उससे राज्यमें दारुण दुर्भिक्ष पड़ा था। अनाहार बहुतसे लोग मरने लगे। उसी समय गुणकाम नेपालके राजा थे। इनके अनुरोधसे शान्तिकर एक अष्टदल पद्म उठा करके अष्टनागका मन्त्र पढ़ने लगे। अष्टनागने प्रसन्न हो करके प्रचुर वृष्टि की थी। शान्तिकरने अष्टनागका रक्त ले करके किसी जगह रख दिया। जहां वह रक्त स्थापित हुआ, नागपुर नाम पड़ गया।

पार्वतीय वंशावलीमें उनके पुत्रका शिवदेव और पौत्रका नाम नरेन्द्रदेव लिखा है। परन्तु स्वयम्भूपुराणको देखते गुणकामने बुढ़ापेमें अपने लड़के नरेन्द्रको राज्य दे करके संसार परित्याग किया था। स्वयम्भू और शान्तिकरके अनुग्रहसे उन्होंने देहान्त होने पर सुखावती धाम पाया। (स्वयम्भूपु० ८म भ०)

गुणकार (सं० त्रि०) गुणं व्यञ्जनं पाकजनितरसविशेषरूपं गुणं वा करोति गुण-कृ-अण्। १ सूपकार, रसोई करनेवाला, रसोईया। (पु०) २ भीमसेन। पाण्डवगणोंके अज्ञातवासके समय भीमने विराट राजाके दरबारमें सूपकारका कार्य सम्पादन किया था। इस लिये इनका नाम गुणकार पड़ा। ३ सङ्गीतविद्याका पूर्णज्ञाता। ४ पाकशास्त्रका ज्ञाता।

गुणकारक (सं० त्रि०) लाभदायक।

गुणकारी (सं० त्रि०) गुणकारक देखो।

गुणकिरी (सं० स्त्री०) एक रागिणी। यह ओड़व रागिणी है। ऋषभ और धैवत उसमें नहीं लगता। ग्रहांशादि निषाद स्वर है, मतान्तरसे षड्ज भी हो सकता है। यह रागिणी भैरव रागाश्रित है। यथा—

नि स० ग म प० नि।

सा० ग म प० नि स॥

किसीके मतमें इसका काम गुणकली है।

गुणकीर्त्ति—एक जैन ग्रन्थकर्त्ता। इनकी जाति गोलालारे थी। संवत् १०३७ में आश्विन शुक्ल १ को इनकी मृत्यु हुई।

गुणकेली (सं० स्त्री०) रागिणीविशेष। यह गुज्जरी तथा मालवके योगसे बनी हुई भैरवरागकी पत्नी है। मतान्तरमें वह आसावरी, देशकार, गुज्जरी, देश० टोड़ी और ललितके मेलसे निकली हुई मालकोषकी पत्नी भी बतलायी गयी है। कोई इसे ओड़व और कोई षाड़व कहता है।

"नि सा ऋ ग म प ध०; सा ऋ ग म०० नि" (रा-वि)

"नि सा ग म प०।" (सङ्गीतसारावाकर)

गुणकेशी (सं० स्त्री०) इन्द्रको सारथी मातलीकी कन्या तथा सुधर्माकी माता। भोगवती नगरीके अधिपति आर्यक नागके पौत्र और चिकुरनागके पुत्र सुमुखसे इनका विवाह हुआ था। (भारत उद्योग १०४ अ०)

गुणगर्त—नेपालस्थ शान्तिपुरके पूर्वमें अवस्थित एक गुहा। यह राजा शान्तिकरकी निर्माण की गयी थी और एक योजन विस्तृत है। नेपाली बौद्धगणोंका यह एक पुण्यस्थान माना गया है।

गुणगान (सं० क्लो०) गुणस्य गानं, ६-तत्। गुणकीर्त्तन।

गुणगाङ्गविजयादित्य—एक प्राच्य चालुक्य राजाका नाम और प्रथम कलिविष्णुवर्द्धनके पुत्र थे। इन्होंने ४४ वर्ष पर्यन्त राज्य किया था।

गुणगृह्य (सं० त्रि०) ग्रह पक्षार्थे क्यप् गुणस्य गृह्यः, ६-तत्। गुणपक्षपाती।

गुणगौरी (सं० स्त्री०) गुणै गौरी शुद्धा, ३-तत्। १ पतिव्रता स्त्री, सोहागिन स्त्री। २ पार्वतीके सदृश गुणवाली स्त्री। ३ स्त्रियोंका एक व्रत जो चैतमें चौथके दिन किया जाता है।

गुणग्राम (सं० पु०) गुणानां ग्रामः, ६-तत्। गुणसमूह, गुणकी खान।

गुणग्रहण (सं० क्ली०) गुणस्य ग्रहणं ज्ञानं ६-तत्। गुणवान् मनुष्यसे गुण ग्रहण।

गुणग्राहक (सं० त्रि०) गुणस्य ग्राहकः, ६-तत्। १ गुण ग्रहण करनेवाला, गुणग्राही। २ रस्सी धारण करनेवाला।

गुणग्राहिता (सं० स्त्री०) गुणग्राहिणो भावः गुणग्राहिन्-तल्। गुणज्ञता, गुणप्रियता।

गुणग्राहिन् (सं० त्रि०) गुणं गृह्णाति गुण-ग्रह-णिनि। गुणज्ञ, गुणकी खोज करनेवाला, गुणियोंका आदर करनेवाला।

गुणघातिन् (सं० त्रि०) गुणं हन्ति गुण-हन्-णिनि। गुणनाशक, गुण नाश करनेवाला।

गुणचन्द्र—१ एक संस्कृत ग्रन्थकार। ये देवसूरिके शिष्य थे। इन्होंने तत्त्वप्रकाशिका नामक सूत्रटीका और हैमविभ्रम प्रणयन किये हैं।

गुणचन्द्र—१ एक दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्त्ता। ये गोलापूरव जातिके थे। सम्वत् १०४८ में भाद्र शुक्ल चतुर्दशीको इनकी मृत्यु हुई। २ जैनोंके एक भट्टारक और ग्रन्थकार। ये संवत् १६०० में विद्यमान थे। इन्होंने जैनपूजापद्धति और अनन्तव्रतोद्यापन नामक दो ग्रन्थ लिखे हैं।

गुणज्ञ (सं० त्रि०) १ गुणका जाननेवाला। २ गुणी

गुणज्ञता (सं० स्त्री०) गुणकी जानकारी, गुणकी परख।

गुणता (सं० स्त्री०) गुणस्य भावः गुण-तल्। १ गुणत्व २ मुख्य ज्ञानके अधीन ज्ञान। ३ अधीनता।

गुणत्व (सं० क्ली०) गुणस्य भावः गुण-त्व। १ गुणता ... २ ...

गुणत्रय (सं० क्ली०) सत्व, रज और तम गुण।

गुणदेव (सं० पु०) गुणाढ्यके एक प्रधान शिष्य।

गुणाढ्य देखो।

गुणदेव—हिन्दी भाषाके एक कवि। इनका निवासस्थान बुंदेलखण्ड था। १७८५ ई०को इन्होंने जन्म लिया।

गुणदोषविचार (सं० पु०) गुणदोषयो विचारः, ६-तत्। गुण और दोषका विचार, गुणागुण विवेचना।

गुणधर (सं० त्रि०) गुणं धरति धृ-अच्। जिसको गुण हो, गुणवान्।

गुणधरस्वामी—दिगम्बर जैनोंके एक ग्रन्थकार, आचार्य और ऋषि। इन्होंने जयधवलसिद्धान्त नामक एक प्राकृत भाषाका जैन ग्रन्थ (जिसकी गाथा संख्या ८०० है) और 'चुर्णिसिद्धान्त' की संस्कृत टीका रची थी, जिसकी श्लोकसंख्या प्रायः ६ हजार है।

गुणधर्म (सं० पु०) गुणेन प्रवृत्तो धर्मः। क्षत्रियोंके प्रजा पालनादि रूप धर्म।

गुणन (सं० क्ली०) गुण भावे ल्युट। १ मन्त्रणा। २ अभ्यास। ३ एक अङ्कको दूसरे अङ्कसे गुणा। ४ गुणा। ५ आवृत्ति। ६ वर्णन।

गुणनन्दि—१ एक दिगम्बर जैन ग्रन्थकार। इनकी भट्टारक उपाधि थी। इनके बनाये हुए ग्रन्थोंमें त्रैकालिक चतुर्विंशतिका उद्यापन, ऋषिमण्डलविधान और रोटतृतीया कथा ये तीन ग्रन्थ पाये जाते हैं। २ उक्त सम्प्रदायके अन्य एक ग्रन्थकर्त्ता, इनकी जाति गोलापूरब थी। सम्वत् २६३ में जेठ शुक्ला ४थीको इनका शरीरान्त हुआ। ३ जैनेन्द्रप्रक्रिया नामक व्याकरणके रचयिता।

गुणनफल (सं० पु०) वह संख्या जो दो अङ्कोंके गुणासे हो।

गुणनिका (सं० स्त्री०) गुणयति अभ्यस्यति गुण-युच् स्वार्थे कन्। १ अभ्यास। २ नृत्य। ३ शून्याङ्क। ४ माला।

गुणनिधि (सं० पु०) गुणस्य निधिः समुद्र इव। १ गुणाधार, गुणका आश्रय। २ पुराणप्रसिद्ध कोई दुर्वृत्त ब्राह्मणकुमार। काशीखण्डमें उसका उपाख्यान इस प्रकार कहा है—

कास्पिल्य नगरमें यज्ञदत्त नामक एक दीक्षित रहते थे। उनके पुत्रका नाम गुणनिधि था। लड़कपनमें पिताके शासन और उपदेशसे यह सबके प्रशंसापात्र हो गये और उपनयनके बाद गुरुगृहमें रह करके लिखने पढ़ने लगे। यौवनके प्रारम्भमें ही गुणनिधिसे नागरिक युवकोंका मेल बढ़ा। उनका हाव भाव देख करके फिर यह रुक न सके, उन्होंका अनुकरण करते रहे। मांके पाससे चुपके चुपके रुपया ले जा करके उन्होंने जूआ खेला था। थोड़े दिनमें ही द्यूतक्रीड़ामें वह अत्यन्त आसक्त हुए। ब्राह्मणका आचार व्यवहार छोड़ करके उन्हें हमेश शास्त्रोंकी असारता प्रमाणित करना अच्छा लगता था। गीत, वाद्य आदि कुछ भी गुणनिधिसे जाननेको बाकी न बचा। उनकी जननी उन्हें नाना प्रकार उपदेश यह समझ करके देने लगीं कि लड़केका भाग्य फूटा था। किन्तु गुणनिधिने कोई बात न सुनी। वह सिर्फ रुपया लेनेके समय मातासे मिलते और हमेशा फड़ पर बैठे खेला कूदा करते थे। गुणनिधिके बाप एक सम्भ्रान्त व्यक्ति थे। सब लोग उन्हें बुलावा भेजा करते थे। वह प्रायः घरमें बैठ न सकते थे। जब वह घर जा करके लड़केकी बात पूछते, उनकी सहधर्मिणी कह देती थी—गुणनिधि अभी घरसे बाहर निकल गया है। माताने देखा, कितना हो उपदेश देनेसे भी कोई फल नहीं हुआ। इस पर उन्होंने पैसा देना बन्द कर दिया। फिर गुणनिधि मांसे पैसा न मिलने पर भी जूआके लिये छटपटाने लगे। इसीसे उन्होंने अपने घरमें चोरी करना सीखा था। थाली, लोटा, कटोरी आदिके पीछे मांकी धोती तक चुरायी गयी। जननी जान बूझ करके भी इकलौते बेटेके वात्सल्यसे कोई बात जाहिर न करती थीं। किसी दिन वह सोती थीं। लड़केने अवसर देख करके उनके हाथकी एक अंगूठी चुरा ली। जूआरियोंका कर्ज अदा करनेमें वह अंगूठी चली गयी। द्यूतकारोंके पास अपनी जानी मानी अंगूठी देख करके जब यज्ञदत्तने पूछा, उन्होंने गुणनिधिकी सब कच्ची बात बतला दी। यज्ञदत्तने यह खयाल करके कि मांके लाड़ प्यारसे ही लड़का बिगड़ गया है, [illegible]निधि और उसको जननी दोनोंको परित्याग किया।

उस समय गुणनिधि निरुपाय हुए। विद्या बुद्धि भी वैसी न थी। वह यह सोच करके घबरा उठे—कहां जायें, क्या करें, कैसे बचेंगे। एक दिन गुणनिधि भूखे थे। उन्हें दारुण चिन्ता हुई कि सन्ध्या पड़ती थी। उस पर क्षुधा तृष्णाका जोर था। गुणनिधिका जी घबराने लगा। उसी समय शिवरात्रिव्रतका उपवासी एक शिवभक्त नानाविध उपहार ले [illegible]के बाहर निकला था। उन्होंने इसके हाथमें खाने पीनेकी चीजें देख ठहरा लिया—जब यह व्यक्ति शिवकी पूजा कर [illegible] सब रखके चला आवेगा, मैं चुरा करके खा डालूंगा। इसी प्रकार विचार करके गुणनिधि उसके पीछे पीछे चल दिए। शिवभक्त मन्दिरमें प्रवेश करके आंसुओंसे छाती भिगो भक्ति गद्गद् स्वरसे शिवकी आराधना करने लगे। इन्होंने उसके बाहर आनेकी अपेक्षामें दरवाजे पर बैठ समस्त पूजा देखी थी। पूजाके अन्तमें वह मन्दिरसे बाहर न निकल वहीं सो गया। गुणनिधिने उसी सुयोग पर मन्दिरमें जा करके देखा चिराग ठण्ढा पड़ा है। यह ख्याल करके कि दीप न जलनेसे हमारे काममें अड़चन पड़ेगी, अपने वस्त्रके अञ्चलकी उन्होंने बत्ती बनायी और रौशनी जलायी। ब्राह्मणकुमार जब उपहार उठा करके बाहर निकलने लगे, इनके पैरकी आहटसे पूजककी आंख खुल गयी। वह चोर चोर कहके चिल्लाने लगा, चारों ओरसे चौकीदार जा पहुंचे। गुणनिधि नैवेद्य फेंक करके भागे थे। रक्षी गड़ बड़ देख करके उनको मारने पर उद्यत हुए। इनके दारुण प्रहारसे गुणनिधिकी जान निकल गयी।

यमराजने ब्राह्मणकुमारको ले जानेके लिये किङ्करोंसे अनुमतिकी थी। वह गुणनिधिको बांध करके ले चले। इधर शिवने भी अपने अनुचरोंको हुक्म दिया था—'तुम यहां बैठे क्या करते हो। नहीं देखते कि यमदूत गुणनिधिको लिये चले जाते हैं। जल्द जावो और रथ पर चढ़ा करके बड़े आदरके साथ उसको यहां ले आवो।' शिवदूत एक रथके साथ वहां जा पहुंचे और यम कङ्करोंको रोक करके कहने लगे शिवने इसको शिवपुरी ले जानेकी अनुमति दी है। यमदूतोंने भी आसामीसे छोड़ना न चाहा। वह शिवके अनुचरोंसे

लड़ने झगड़ने लगे। अनेक वादानुवादके बाद स्थिर हुआ ब्राह्मणकुमारने आचारभ्रष्ट और आजन्म कुकार्यरत रहते भी शिवरात्रिव्रतके दिन उपवास, शिवमन्दिरमें निर्वाणोन्मुख प्रदीपकी रक्षा और आद्योपान्त शिवपूजाको दर्शन किया था। इसीसे वह शिवपुरी जायेंगे यमदूतोंका उन पर कोई अधिकार नहीं। तजवीजमें हार करके यमकिङ्कर लौट गये। (काशीखण्ड १३ अ०)

२ कोई विख्यात संस्कृतग्रन्थकार। ये श्रीनिवासके पुत्र थे। इनकी बनाये हुए परमात्मविनोद (अलङ्कार), अन्नपूर्णास्तुति, ईशतुष्टिस्तुति, गणपतिस्तुति, भगवतीस्तुति विष्णुस्तुति, व्यासस्तुति और शिवशिखरिणीस्तुति नामक ग्रन्थ मिलते हैं।

गुणनी (सं० स्त्री०) गुण्यतेऽनया गुण-ल्युट्-ङीप्। पाठ्य ग्रन्थके दृढ़तर संस्कारके लिये बार बार अनुशीलन। इसका पर्याय—भविनी और शीलन है।

गुणनीय (सं० पु०) गुण्यते पुनः पुनरनुशील्यतेऽनेन गुण-अनीयर। १ अभ्यास। (त्रि०) २ गुणितव्य, गुणा करने योग्य।

गुणनीयक (सं० पु०) गुणनीय संज्ञार्थे कन्। जिस राशिसे दूसरी राशिमें भाग देनेसे भाग शेष कुछ नहीं बचे तो वह राशि दूसरी राशिका गुणनीयक है।

गुणपदी (सं० स्त्री०) गुणौ गुणितौ पादौ यस्याः, बहुव्री० जिस स्त्रीका पद गुणित है।

गुणपूर्ण (सं० त्रि०) गुणेन पूर्णः, ३-तत्। जिसमें अनेक गुण हो, गुणाधार।

गुणप्रत्ययअवधि (सं० पु०) जैन मतानुसार अवधिज्ञानका एक भेद। अवधिज्ञानके प्रधानतः दो भेद हैं—एक भवप्रत्यय और दूसरा गुणप्रत्यय। भवप्रत्यय अवधि देखो। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान आदि कारणोंकी अपेक्षासे अवधिज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम हो कर जो अवधिज्ञान होता है, उसे गुणप्रत्यय अवधि कहते हैं। अवधिज्ञान देखो। यह गुणप्रत्यय अवधिज्ञान पर्याप्त मनुष्यों और मनसहित पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च (पशु आदि) के भी (नाभिके ऊपर शङ्ख आदि शुभ चिह्नोंके आत्मप्रदेशोंमें होनेवाले अवधिज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमसे) होता है।

(गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा ३७१)

गुणप्रवृद्ध (सं० त्रि०) गुणैः प्रवृद्धः, ३-तत्। जो गुणसे वर्द्धित हो।

गुणप्रकर्ष (सं० पु०) गुणस्य प्रकर्षः, ६-तत्। गुणका आधिक्य।

गुणप्रभ (सं० पु०) एक बौद्धआचार्य, श्रीहर्षराजाके गुरु और वसुबन्धुके शिष्य। इन्होंने तत्त्वविभङ्गशास्त्र और तत्त्वसत्यशास्त्र रचना किये हैं। पहले पहल ये महायानमतावलम्बी रहे, किन्तु थोड़े समयके बाद विभाषा शास्त्र अध्ययन-करनेसे इन्होंने हीनयान मत ग्रहण किया। मतिपुरके निकट ये रहते थे। वर्तमान विजनौर जिलाके लालपुर ग्राममें जामा मस्जिदसे आध कोस दक्षिणपूर्वमें गुणप्रभ-सङ्घारामको भग्नावशेष देखा जाता है।

गुणप्रिय (सं० त्रि०) गुणः प्रियो यस्य, बहुव्री०। गुणानुरागी।

गुणभद्र (सं० पु०) १ एक चीनदेशवासी बौद्ध पण्डित।

गुणभद्र—२ एक जैनाचार्य। 'ज्ञानार्णव' नामक ग्रन्थकी लेखकप्रशस्तिके पढ़नेसे मालुम होता है कि, सम्वत् १५२१ में ये ग्वालियरकी काष्ठासंघ माथुरान्वय और पुष्करगणकी गद्दी पर आरूढ़ थे। ३ भट्टारक उपाधिधारी एक जैन ग्रन्थकार। इन्होंने पूजाकल्प, अनन्तव्रतोद्यापन, धन्यकुमार-चरित्र आदि कई एक ग्रन्थोंका प्रणयन किया था।

गुणभद्र आचार्य—१ त्रिभुवनाचार्यके एक शिष्य और जैन ग्रन्थकर्त्ता। इन्होंने कुन्दकुन्देन्दुप्रकाश काव्य और हरिवंशपुराण नामक दो ग्रन्थोंकी रचना की थी। यह हरिवंशपुराण जिनसेनाचार्यकृत हरिवंशपुराणसे पृथक् है।

४ दिगम्बर जैन सम्प्रदायके एक प्रसिद्ध और प्राचीन आचार्य, भगवत् जिनसेन आचार्यके अन्यतम शिष्य। इन्होंने—उत्तरपुराण, आत्मानुशासन, भावसंग्रह, जिनदत्तकाव्य, टिप्पण ग्रन्थ और आदिपुराणके उत्तर भागकी रचना की है। द्राविड़ भाषाके चूडामणिनिघण्टुके पढ़नेसे मालूम होता है कि ये दक्षिण अर्काट जिलेके अन्तर्गत तिरु(...)ण्डम् नामक ग्रामके रहनेवाले थे। इसके अतिरिक्त इनके रचित द्राविड़ भाषाके

ग्रन्थोंको देखनेसे भी यही अनुमान होता है कि ये कर्णाटक देशवासी होंगे।

ये ई० नवम शताब्दमें विद्यमान थे। इनके गृहस्थ अवस्थाके वंशका कुछ परिचय नहीं मिलता। परन्तु मुनिवंशका परिचय उनके ग्रन्थों और दूसरे उल्लेखोंसे भलीभांति मिलता है। महावीर भगवान्‌के निर्वाणके उपरान्त जब तक श्वेताम्बर सम्प्रदायकी उत्पत्ति नहीं हुई थी, तब तक जैनधर्म संघभेदसे रहित था। पीछे जब विक्रमकी मृत्युके १३६ वर्ष बाद श्वेताम्बर सम्प्रदाय पृथक् हुआ, तब दिगम्बर सम्प्रदाय मूलसंघके नामसे प्रसिद्ध हुआ। फिर इसके चार भेद हुए—१ नन्दिसंघ, २ देवसंघ, ३ सेनसंघ, और ४ सिंहसंघ। इनमेंसे सेनसंघकी परिपाटीमें गुणभद्र अवतीर्ण हुए।

गुणभद्रस्वामीके यों तो बहुतसे शिष्य थे; किन्तु दो का विशेष परिचय मिलता है—एक लोकसेन, जिनके लिये आत्मानुशासन ग्रन्थकी रचना हुई और दूसरे मण्डलपुरुष, जिन्होंने चुड़ामणिनिघण्टु नामक द्राविड़ भाषाका कोश बनाया।

गुणभद्रस्वामीके १ गुरुपरम्पराका इस प्रकार पता चला है—
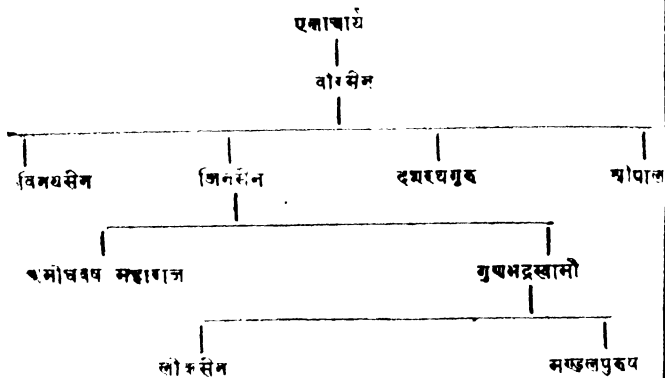
गुणभद्रस्वामीके समयमें अर्थात् विक्रमकी ७वीं शताब्दीमें दिगम्बर मुनि प्रायः भारतवर्षके सर्वत्र विहार किया करते थे और साथ ही धर्मोपदेश देते और ग्रन्थोंका प्रणयन किया करते थे। यही कारण है कि उत्तरपुराणकी समाप्ति धारवाड़ प्रान्तके अन्तर्गत बंकापुरमें हुई थी। उस समय वहांका राज्य अकालवर्षके सामन्त लोकादित्यके अधिकारमें था।

जैनोंका सबसे बड़ा प्रथमानुयोग (पौराणिक) ग्रन्थ आदिपुराण है, जिसमें कुल ४७ पर्व या अध्याय हैं। इस ग्रन्थके ४२ पर्व और ४३ पर्वके ३ श्लोक इनके गुरु जिनसेनाचार्यके रचे हुए हैं तथा शेषके ५ पर्व (१६२० श्लोक) गुणभद्रस्वामीने रचे हैं। इनकी रचना गुरुकी रचनासे मिल गई है, यही इनकी रचनाशक्तिका काफी परिचय है।

उत्तरपुराण—इनके उत्तरपुराणकी रचना ऐसी मनोहारिणी है कि, एक जैनेतर विद्वान (श्रीयुक्त पं० कुप्पुस्वामी शास्त्री) ने इससे जीवन्धरचरित निकाल कर छपा डाला है।

आत्मानुशासन—इस ग्रन्थकी रचना शैली भर्तृहरिके वैराग्यशतकके ढङ्गकी और वैसी ही प्रभावशालिनी है। यथा—

"सत्यं वदात्र यदि जन्मनि बन्धुकृत्य-माप्तं त्वया किमपि बन्धुजनाद्धितार्थम्।
एतावदेव परमस्ति मृतस्य पश्चात् सम्भूय कायमहितं तव भस्मयन्ति ॥ ८३ ॥"

हे भाई (आत्मा)! यदि तूने अपने इस जन्ममें अपने बन्धुजनोंसे कुछ बन्धुताका लाभ पाया हो, तो सच सच बता तो सही। हमें तो उनका इतना ही उपकार अनुभव होता है कि, मरनेके उपरान्त ये सब इकट्ठे हो कर तेरे अपकार करनेवाले इस शरीरको जला देते हैं।

"ज्ञानमेव फलं ज्ञाने ननु श्लाघ्यमनश्वरम्।
अहो मोहस्य माहात्म्यमन्यदप्यत्र मृग्यते ॥१७५॥"

ज्ञानका फल ज्ञान ही है, जो सर्वथा प्रशंसा योग्य और अविनाशी है। इसको छोड़ कर, अन्य जो सांसारिक फलोंकी इच्छा की जाती है, वह अवश्य ही मोह वा मूर्खताका माहात्म्य है। अभिप्राय यह कि, ज्ञानके रहनेसे जो निराकुलता रूप सुखका अनुभव होता है, उसको छोड़ कर लोग विषयसुखोंकी टटोलते फिरते हैं, वह नितान्त मूर्खता है!

गुणभद्राचार्य शक-सम्वत् ८२० तक जीवित थे। इनके स्वर्गवासका ठीक समय मालूम नहीं होता।

गुणभर—चोलदेशके एक शैव राजा। कोई कोई इन्हें पल्लववंशीय अनुमान करते हैं। त्रिशिरापल्ली पहाड़के ऊपर खोदी हुई शिलाफलक पर इनकी अनुशासनलिपि देख पड़ती है।

गुणभूषणकवि—जैनसम्प्रदायके एक कवि। इनकी रची हुई पुस्तकोंमेंसे सिर्फ एक ही पुस्तक प्राप्य है,—भव्यजनचित्तवल्लभश्रावकाचार।

गुणभोक्तृ (सं० त्रि०) गुणानां भोक्ता, ६-तत्। गुणका भोग करनेवाला।

गुणभृत् (सं० त्रि०) गुणं विभर्त्ति भृ-क्विप्, तुगागमश्च जिसमें गुण हो, गुणाधार। (पु०) गुणान् सत्वरजस्तमांसि विभर्त्ति अधिष्ठातृत्वेन आश्रयति भृ-क्विप्। २ परमेश्वर।

गुणभ्रंश (सं० पु०) गुणस्य भ्रंशः, ६-तत्। गुणका नाश।

गुणमति (सं० पु०) एक पण्डित इन्होंने अभिधर्मकोषकी व्याख्या रचना की है। चीनपरिव्राजक यूयेन चुयाङ्गने अपनी किताबमें लिखा है कि इन्होंने ही तत्र शास्त्रमें माधवको पराजय कर बौद्ध धर्मकी श्रेष्ठता प्रतिपादन की थी।

गुणमय (सं० त्रि०) गुणात्मकः गुणप्रचुरो वा गुण मयट्। २ गुणात्मक, गुणस्वरूप। १ गुणाढ्य, गुणयुक्त

गुणमहार्णव—कलिङ्गके एक गङ्गवंशीय राजा गाङ्गेय देखो।

गुणमहोदधि (सं० पु०) वैद्यकोक्त औषधविशेष, एक दवा। पारा, गन्धक, लोहा, संखिया, गुर्चका छाल, तांबा, वङ्ग एवं अभ्रक एक एक तोला और त्रिकटु, तेजपत्र, मोथा, विरङ्ग, नागकेशर, रेणुक, इलायची तथा पिपरामूल दो दो तोले बालक तथा पिप्पली क्वाथ और बिजौरा नीबूके रससे भावना देने पर गुणमहोदधि बनता है। मात्रा चनेके बराबर है। इस औषधकी सेवन करनेसे कासरोग विनष्ट होता है। (रसकौमुदी)

गुणयुक्त (सं० त्रि०) गुणेन युक्तः, ३-तत्। गुणविशिष्ट, जिसके गुण हो।

गुणयोग (सं० पु०) गुणेन योगः ६-तत। गुण गुणीके साथ सम्बन्ध। सम्बन्धीय।

गुणयोनि (सं० पु० स्त्री०) जैनमतानुसार योनि प्रधानतः दो प्रकारकी होती है, आकारयोनि दूसरी गुणयोनि। सम्मूर्छन, गर्भ और उपपाद जन्मकी आधारभूत सचित्त (आत्मप्रदेशोंसे युक्त पुद्गलका पिण्ड) शीत संवृत (ढकी हुई) और अचित्त उष्ण विवृत्त (खुली हुई) ये दो गुणयोनि कहलातीं हैं। (गोम्मटसार जीवकाण्ड ८१—८१)

गुणरत्न (सं० क्ली०) गुण एव रत्नं। गुणस्वरूप रत्न, रत्नके जैसा प्रशंसनीय वा आदरणीय गुण।

गुणरत्न आचार्य—एक जैन आचार्य, देवसुन्दर सूरिके शिष्य। इन्होंने संस्कृत भाषामें तर्कतरङ्गिणी, षड्दर्शनसमुच्चयटीका और क्रियारत्नसमुच्चय नामका एक व्याकरण ग्रन्थ रचा है।

गुणराग (सं० पु०) गुणेषु रागो निरितशयमभिलाषः, ७-तत्। गुणमें अनुराग या प्रेम, गुणप्रियता।

गुणराज—पद्मावती देवीभक्त सोनल्प मुनिकुलज एक राजा, नागराजके पुत्र। (सह्याद्रि० ११३३।५१)

गुणराजखाँ—बङ्गालके कुलीनग्रामवासी एक कवि। उनका असल नाम मालाधर वसु था। पिताको भगीरथ वसु कहते थे। गुणराज खांने सीधी बङ्गला कवितामें श्रीकृष्णकी लीला पर श्रीकृष्णविजय लिखा है। चैतन्यचरितामृत पढ़नेसे समझ पड़ता है कि चैतन्य महाप्रभु उस बङ्गला ग्रन्थका बड़ा आदर करते थे। यह पुस्तक १३८५ ई० में आरम्भ और १४०२ ई० में समाप्त हुई। ग्रन्थकारने लिखा है कि गौड़के राजाने उन्हें गुणराज खाँ उपाधि दिया श्रीकृष्णविजय बङ्गला भाषाकी बहुत पुरानी किताब है।

गुणराशि (सं० पु०) गुणानां राशिः, ६-तत्। १ गुणसमूह। २ शिव।

गुणलयनिका (सं० स्त्री०) गुणाः गुणमयाः पटाः लीयंते ऽस्यां ली आधारे ल्युट् स्त्रियां ङीप् ततः स्वार्थे कन् टाप् पूर्वह्रस्वश्च। वस्त्रनिर्मित गृह, कपडेका बना हुआ घर, तंबू। इसका पर्याय केणिका और पटकुटी है।

गुणलयनी (सं० स्त्री०) गुणाः गुणमयाः पटाः लीयन्ते ऽस्यां ली आधारे ल्युट् ङीप्। कपडेका बना हुआ घर, तम्बू।

गुणलुब्ध (सं० त्रि०) गुणे लुब्धः, ७-तत्। गुणग्राही, गुणको चाहनेवाला।

गुणवचन (सं० पु०) गुणमुक्तवान् वच कर्तरि ल्यु। १ गुणवाचक शब्द। २ गुणवद् द्रव्यवाचक शुक्लादि शब्द।

गुणवत् (सं० त्रि०) गुणो विद्यते अस्य गुण-मतुप् मस्य वकारः। १ गुणविशिष्ट, गुणी। (पु०)। २ यदुवंशीय सुनाभके दौहित्र।

गुणवती (सं० स्त्री०) १ एक अप्सरा। २ यदुवंशीय सुनाभकी एक दौहित्री। ३ गायत्रीस्वरूपा एक महादेवी। ४ गुणवाली, जिसमें कुछ गुण हो।

गुणवतीवर्ति (सं० स्त्री०) औषधविशेष, एक दवा। धनक, लोध्र, सिन्दूर, अतिविषा, हलदी, बहेड़ा, कम्पिल्लक, श्रीवास तथा गुग्गुलु बराबर बराबर घी और तेलसे अच्छी तरह रगड़ लेते हैं। फिर इस पिण्डकी तुल्य मोम डाल करके धीमी आंचमें पकाया जाता है। सब चीजें एकमें मिल जाने पर गुणवतीवर्ति प्रस्तुत होती है। यह व्रणरोगमें बहुत फायदामन्द है। (रसरत्नाकर)

गुणवत्तरा (सं० स्त्री०) जीवन्तीशाक।

गुणवत्ता (सं० स्त्री०) गुणवतो भावः गुणवत्-तल्। गुण धारण करनेवाली स्त्री।

गुणवन्तगढ़—एक पहाड़ और पहाड़ी किला। यह मलयसे सह्याद्रि पर्वतके दक्षिणपूर्व तक फैला और सतारा जिलेके पाटन नगरसे ६ मील दक्षिणपश्चिम बसा है लोग उसे मोड़गिरि भी कहते हैं। किला कोई १००० फुट ऊंच पर्वत पर है। वह बहुत टूट फूट गया है। इसीसे दक्षिण-पूर्वको पर्वतके नीचे गांव है। यह निरूपण किया जा नहीं सकता, किस समय वह दुर्ग निर्मित हुआ। ई० १८वीं शताब्दीको पन्थके प्रतिनिधिका पक्ष ले करके गुणवन्तगढ़के लोग गवर्नमेण्टसे बिगड़ थे। उसी समय पेशवाने लोगोंको रक्षाके लिये किलेमें फौज रखी। १८१८ ई०को जब महाराष्ट्र युद्ध होता था, यह दुर्ग विना लड़े भिड़े अङ्गरेजोंको मिल गया।

गुणवर्त्तन (सं० क्ली०) गुणे वर्त्तनं, ७-तत्। गुणवृत्ति, गुणका व्यवसाय।

गुणवर्त्तिन् (सं० त्रि०) गुणे वर्त्तते वृत्-णिनि। गुणवृत्ति अवलम्बन करनेवाला।

गुणवर्मन् (सं० पु०) १ तेजस्वतीके पिता। तेजस्वती देखो। २ एक कर्णाटक देशवासी जैन ग्रंथकार। इन्होंने पुष्पदन्तपुराण नामक एक जिनचरित्रकी रचना की है। ३ इस नामके और एक ग्रंथकारका पता चलता है, जो जैन कवि थे।

गुणवाचक (सं० त्रि०) गुणस्य वाचकः, ६-तत्। जो गुणको प्रगट करे।

गुणवाद (सं० पु०) गुणस्य वादः, ६ तत्। मीमांसामें अर्थवादविशेष। मीमांसावार्त्तिक-प्रणेता कुमारिलके मतसे अर्थवाद तीन तरहका है, गुणवाद, अनुवाद और भूतार्थवाद। जहां विशेषण और विशेष्यके समानाधिकरण पर अन्वय करनेसे ठीक अर्थ सिद्ध नहीं होता है, वहां विशेषणका कुछ दूसरा अर्थ मान लेते हैं उसे अन्यकथन वा गुणवाद कहते हैं। यथा जयमानः प्रस्तरः। इस स्थान पर जयमान विशेष्य और प्रस्तर विशेषण है। प्रस्तर शब्दका अर्थ कुशमुष्टि है; यहां विशेषण और विशेष्यका अभेद अन्वय किया नहीं जा सकता, इसी लिये यहां प्रस्तर शब्दका अर्थ प्रस्तरविशिष्ट अर्थात् कुशमुष्टधारी कर लिया गया है। अर्थवाद देखो।

गुणवान्—ब्राह्मणीदेवीभक्त माण्डव्य मुनि वंशीय एक राजा, वैतालकके पुत्र। (सं० त्रि०) २ गुणवाला, गुणी।

गुणविजयगणि—एक जैन ग्रंथकार, प्रमोदमाणिक्यके प्रशिष्य और जयसोमसूरिके शिष्य। इन्होंने खण्डप्रशस्ति-टीका, विशेषार्थबोधिका नामक रघुवंशकी टीका एवं दमयन्तीकथाटीका प्रणयन की हैं।

गुणविध (सं० त्रि०) गुणस्य विधा इव विधा यस्य, बहुव्री०। गुणतुल्य।

गुणविधि (सं० पु०) गुणस्य अङ्गस्य विधिः, ६-तत्। मीमांसामें वह विधि जिसमें गुण कर्मका विधान हो। जैसे 'दध्ना जुहोति' दधिसे अग्निहोत्र यज्ञ करना चाहिये। अग्निहोत्र करनेका विधिवाक्य दूसरा है। अतः उसी अग्निहोत्रके अन्तर्गत जो आहुतिका विधान है उसकी विधि इस वाक्यमें है।

गुणविशेष (सं० पु०) गुणस्य विशेषः ६-तत्। एक प्रकारका गुण।

गुणविष्णु (सं० पु०) एक वैदिक पण्डित, दामुकके पुत्र। इन्होंने छान्दोग्यमन्त्रभाष्य नामक सामवेदीय सन्ध्या और दशकर्म-पद्धतिकी टीका प्रणयन की हैं। टीका अतिसरल भाषामें लिखी गई है। वर्त्तमान समयके सभी विद्वान् पुरुष उक्त टीकाका आदर करते हैं। रघुनन्दन प्रभृति नव्यस्मार्त्तगणोंने इनका मत उद्धृत किया है।

गुणवृक्ष (सं० पु०) गुणानां नौकाकर्षकरज्जूनां

बन्धनाधारः वृक्षः। नौका या जहाजका मस्तूल।

गुणवृक्षक (सं० पु०) गुणवृक्ष स्वार्थे कन्। गुणवृक्ष, मस्तूल।

गुणवृत्ति (सं० स्त्री०) गुणेन वृत्तिः, ३ तत्। १ लक्षण-विशेष। (त्रि०) २ गुणके ऊपर जिसका सामर्थ्य है। (स्त्री०) गुणानां सत्वादीनां वृत्तिः ६-तत्। व्यापार परिणामविशेष, सत्वादि तीनों गुणोंकी वृत्ति। यथा—सत्वगुणकी वृत्ति सुख, रजोगुणका दुःख एवं तमोगुणकी वृत्ति मोह आदि। सत्वादि शब्द देखो।

गुणवैचित्र (सं० क्ली०) गुणानां वैचित्रं ६-तत। गुणकी विचित्रता, विभिन्नता।

गुणव्रत (सं० पु०) जैनियोंके मूलव्रतोंकी रक्षा करनेवाले तीन व्रत। यथा—दिग्व्रत, देशव्रत और अनर्थदण्डव्रत।

गुणशब्द (सं० पु०) गुणवाचकः शब्दः, मध्यपदलो०। गुणबोधक शब्द।

गुणशालिता (सं० स्त्री०) गुणशालिनो भावः गुणशालिन्-तल्। गुणाधारता, गुणवत्ता, गुणयोग।

गुणशालिन् (सं० त्रि०) गुणेन शालते शोभते शाल-णिनि। गुणविशिष्ट, गुणवान्।

गुणशील (सं० त्रि०) गुणयुक्तः शीलः स्वभावो यस्य, बहुव्री०। सच्चरित्र, जिसमें अनेक तरहके गुण हों।

गुणश्रेणीनिर्जरा (सं० स्त्री०) जैनमतानुसार—कर्मोंके असम्पूर्ण क्षयको निर्जरा कहते हैं। निर्जराके एक भेदका नाम गुणश्रेणी है। सातिशय मिथ्यादृष्टि, श्रावक-विरत, अनन्तानुबन्धी कर्मका विसंयोजन करनेवाले दर्शनमोहनीयकर्मके क्षय करनेवाले, कषायों (क्रोध मान माया, लोभ) को उपशान्त करनेवाले, कषायोंको उपशम और क्षपण करनेवाले ८, ९ १०वें गुणस्थानवर्ती जीव मोहको क्षीण करनेवाले और सयोगी अयोगी दोनों प्रकारके जिन. इन ग्यारह अवस्थामें स्थित जीवोंके द्रव्यकी अपेक्षा कर्मोंकी क्रमसे असंख्यातगुणी अधिक निर्जरा होती है, इसीको गुणश्रेणीनिर्जरा कहते हैं।

(गोम्मटसार जीव० ६६८-७)

गुणश्लाघा (सं० स्त्री०) गुणस्य श्लाघा, ६-तत्। गुणकी प्रशंसा।

गुणसंक्रमण (सं० क्ली०) जैनमतानुसार—ज्ञानावरणादि कर्मोंके समय समयमें श्रेणी (पंक्ति) रूप असंख्यातगुणे २ परमाणु अन्य प्रकृति रूप हो कर परिणमते हैं, उसका नाम गुणसंक्रमण है।

गुणसंकीर्त्तन (सं० क्ली०) गुणस्य संकीर्त्तनं ६-तत्। गुणकथन, गुणानुवाद।

गुणसंख्यान (सं० क्ली०) गुणाः संख्यायन्तेऽनेन संख्या करणे ल्युट्, ६ तत्। सांख्य या पातञ्जल शास्त्र।

गुणसङ्ग (सं० पु०) गुणेषु गुणकार्येषु सुखादिषु सङ्ग आसक्तिः ७-तत्। सुख प्रभृतिमें आसक्ति।

"कारणं गुणसङ्गोऽस्य" (गीता)

गुणसंमूढ (सं० त्रि०) गुणैः संमूढः, ३-तत्। गुणकार्य प्रभृतिमें आत्माभिमानविशिष्ट, जिसे अपने गुणका गौरव हो।

गुणसमुद्र (सं० पु०) गुणस्य समुद्र इव। गुणनिधि, गुणाधार।

गुणसागर (सं० पु०) गुणानां सागर-इव। १ गुणाधार। २ चतुर्मुख ब्रह्मा। ३ हिंडोल रागका एक पुत्र। ४ बुद्ध-विशेष।

गुणसिन्धु (सं० पु०) गुणस्य सिन्धु-इव। गुणाधार, गुण-सागर।

गुणसिन्धु—बुंदेलखण्डके एक हिन्दी कवि। १८२५ ई०-को उन्होंने जन्म लिया था।

गुणसू (सं० स्त्री०) कार्पासोत्तुप।

गुणस्थान (सं० क्ली०) जैनमतानुसार—मोह और योग (मन, वचन और शरीरका हलन चलन) के निमित्तसे सम्यग्दर्शन, १ सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्ररूप आत्माके गुणोंकी तारतम्य रूप अवस्थाविशेषको गुणस्थान कहते हैं। गुणस्थान चौदह होते हैं—१ मिथ्यात्व, २ सासादन, ३ मिश्र, ४ अविरतसम्यग्दृष्टि, ५ देशविरत, ६ प्रमत्तविरत, ७ अप्रमत्तविरत, ८ अपूर्वकरण ९ अनिवृत्तिकरण, १० सूक्ष्मसाम्पराय, ११ उपशान्तमोह, १२ क्षीणमोह, १३ सयोगकेवली और १४ अयोगकेवली। ये नाम मोहनीय कर्म और योगोंके कारण हुए हैं।

मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र और अविरतसम्यग्दृष्टि ये आदिके चार गुणस्थान दर्शनमोहनीय कर्मके निमित्तसे

होते हैं। इनके बादके ५वेंसे लगाकर १२वें तक आठ गुणस्थान चारित्रमोहनीय कर्मके निमित्तसे तथा १३वां और १४वां ये दो गुणस्थान योगोंके निमित्तसे होते।

१ मिथ्यात्व गुणस्थान—मिथ्यात्वप्रकृतिके उदयसे अतत्त्वार्थश्रद्धानरूप आत्माके परिणामविशेषको मिथ्यात्व गुणस्थान कहते हैं। इस गुणस्थानमें रहनेवाला जीव विपरीत श्रद्धान करता है और सच्चे धर्मको तरफ उसकी रुचि नहीं होती। जैसे पित्तज्वरवाले रोगीको दूध, मलाई, लड्डू आदि मिष्ट पदार्थ भी कड़वे लगते हैं। उसी प्रकार इस श्रेणीके जीवको भी समीचीन धर्म अच्छा नहीं लगता।

२ सासादन गुणस्थान – प्रथमोपशमसम्यक्त्वके समय अधिकसे अधिक ६ आवली और कमसे कम १ समय बाकी रहे उस समय किसी एक अनन्तानुबन्धी कषायके उदयसे सम्यक्त्वके नाश हो जानेसे जीवके भावोंकी जो अवस्था होती है, उसको सासादन गुणस्थान कहते हैं।

३ मिश्र गुणस्थान—सम्यक्त्व और मिथ्यात्व इन दोनों प्रकृतियोंके उदयसे जीवके जो डमाडोल परिणाम होते हैं। उस अवस्थाका नाम मिश्रगुणस्थान है।

४ अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान—दर्शमोहनीयकी तीन और अनन्तानुबन्धीकी चार इन सात प्रकृतियोंके उपशम वा क्षय अथवा क्षयोपशमसे और अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभके उदयसे व्रतरहित सम्यक्त्वधारी जीवके अविरत सम्यग्दृष्टि नामक ४र्थ गुणस्थान होता है।

५ देशविरत गुणस्थान—जीवके प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभके उदयसे यद्यपि संयम भाव नहीं होता; तथापि अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभके उपशमसे श्रावकव्रतरूप देशचारित्र होता है। इसीको देशविरत गुणस्थान कहते हैं। पाँचवें छठे आदि ऊपरके गुणस्थानोंमें सम्यग्दर्शन तथा उसका अविनाभावी सम्यग्ज्ञान अवश्य होता है; इनके बिना पाँचवें छठे आदि गुणस्थान नहीं होते। परिग्रह सहित गृहस्थों वा श्रावकोंके इससे ऊंचे परिमाण नहीं होते।

६ प्रमत्तविरत गुणस्थान—संज्वलन और नोकषायके तीव्र उदयसे संयम भावके हो जानेसे मनुष्यको वैराग्य आता है और वह उस वैराग्यके कारण समस्त परिग्रहको छोड़ कर खुद दिगम्बर (नग्न) मुनि हो जाता है। मुनिके होनेके उपरान्त उस जीवके सम्यक्त्वरूप जो परिणामोंकी अवस्था है, उसको प्रमत्तविरत गुणस्थान कहते हैं। छठे गुणस्थानसे लगाकर १४वे गुणस्थान तकके परिणाम दिगम्बर मुनिके ही होते हैं, अन्यके नहीं।

७ अप्रमत्तविरत गुणस्थान—संज्वलन और नोकषायके मन्द उदयसे प्रमाद (आलस) रहित संयमभावका नाम अप्रमत्तविरत गुणस्थान है।

८ अपूर्वकरण गुणस्थान—जिस करण (परिणाम) में उत्तरोत्तर अपूर्व हो अपूर्व परिणाम होते जायं अर्थात् भिन्नसमयवर्त्ती जीवोंके परिणाम सदा विसदृश हो हों और एक समयवर्त्ती जीवोंके परिणाम सदृश भी हों और विसदृश भी हों उसको अपूर्वकरण कहते हैं। और यही आठवां गुणस्थान है।

९ अनिवृत्तिकरण गुणस्थान—जिस करण (परिणाम) में भिन्न समयवर्त्ती जीवोंके परिणाम विसदृश ही हों और एक समयवर्त्ती जीवोंके परिणाम सदृश ही हों उसको अनिवृत्तिकरण कहते हैं। यही नवमां गुणस्थान है। इन तीनों करणोंके परिणाम प्रतिसमय अनन्तगुणी विशुद्धता लिये होते हैं।

१० सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान—अत्यन्त सूक्ष्म अवस्थाको प्राप्त लोभ कषायके उदयको अनुभव करनेवाले जीव (मुनि) के परिणामोंकी अवस्थाका नाम सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान है।

११ उपशान्तमोह गुणस्थान—चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके उपशम होने पर यथाख्यात चारित्रको धारण करनेवाले मुनिके परिणामोंकी स्थितिको उपशान्तमोह गुणस्थान कहते हैं। इस गुणस्थानका काल समाप्त होने पर जीव मोहनीयके उदयसे नीचेके छठे गुणस्थान तक उतर आता है, फिर क्षपक श्रेणीका अवलम्बन कर बड़ी कठिनतासे १२वें गुणस्थानमें पहुंचता है।

१२ क्षीणमोह गुणस्थान—मोहनीय कर्मके अत्यन्त क्षय होनेसे स्फटिक पात्रमें स्थित जलकी तरह अत्यन्त निर्मल अविनाशी यथाख्यात चारित्रके धारक मुनिके परिणामों-

की अवस्थाको क्षीणमोह गुणस्थान कहते हैं।

१३ सयोगकेवली गुणस्थान घातिया कर्मोंकी (ज्ञानावरणकी ५, दर्शनावरणकी ८, मोहनीयकी २८ और अन्तरायकी ५ =) ४७ और अघातिया कर्मोंकी १६, कुल ६३ प्रकृतियोंका क्षय होनेसे लोकालोकप्रकाशक केवलज्ञान तथा मनोयोग, वचनयोग और काययोगके धारक अरहंतके शुद्ध परिणामोंकी अवस्थाका नाम सयोग केवली गुणस्थान है। ऐसे परिणाम और ऐसा दिव्यज्ञान ईश्वरको होता है। जैनोंने इन्हींको अरहन्त वा ईश्वर माना है और येही मोक्षमार्गका उपदेश दे कर संसारमें मोक्षमार्गका प्रकाश करते हैं।

१४ अयोगकेवली गुणस्थान—उपर्युक्त अरहन्त मन, वचन और कायके योगोंसे रहित हो कर केवलज्ञान सहित जिस समय मोक्ष प्राप्त करते हैं उस समयसे अन्तर्मुहूर्त्त पहिलेके परिणामोंको अयोगकेवली गुणस्थान कहते हैं। 'अ इ उ ऋ ऌ' इन पाँच ह्रस्व स्वरोंके उच्चारण करनेमें जितना समय लगता है, उतना ही इसका काल है।

गुणस्थानकरण—१ जैनोंका एक धर्म ग्रन्थ। २ बौद्धोंका एक ग्रन्थ।

गुणहानि (सं० स्त्री०) जैनोंके अनुसार—गुणकाररूप हीन हीन द्रव्य जिसमें पाये जांय, इसको गुणहानि कहते हैं। जैसे—किसी जीवने एक समयमें ६३०० परमाणुओंके समूहरूप समय प्रबद्धोंका बन्ध किया और उसमें ४८ समयकी स्थिति पड़ी, उसमें गुणहानियोंके समूहरूप नाना गुणहानि ६, जिसमें प्रथम गुणहानिके परमाणु ३२००, द्वितीय गुणहानिके १६००, ३यके ८००, ४र्थके ४००, ५मके २०० और ६ठी गुणहानिके १०० परमाणु हैं। यहां उत्तरोत्तर गुणहानियोंमें गुणकाररूप हीन हीन परमाणु (द्रव्य) पाये जाते हैं, इसलिये इसको गुणहानि संज्ञा हुई। (जैनसिद्धान्तप्रवेशिका)

गुणहानि आयाम—जैनशास्त्रानुसार एक गुणहानिके समयके समूहको गुणहानि आयाम कहते हैं। गुणहानिका दृष्टान्त देखो। जैसे—४८ समयकी स्थितिमें ६ गुणहानि हैं, उस ४८में ६का भाग देनेसे प्रत्येक गुणहानिका परिमाण ८ हुआ, इसीका नाम गुणहानि आयाम है। (जैनसिद्धान्तप्रवेशिका)

गुणहीन (सं० त्रि०) गुणेन हीनः, ३-तत्। गुणशून्य, किसी प्रकारका गुण न हो।

गुणस्तम्भ (सं० पु०) गुणाधारः स्तम्भः। गुणवृक्ष, मस्तूल।

गुणा (सं० स्त्री०) गुणोऽस्त्यस्याः गुण अच, स्त्रियां टाप्। १ दुर्वा, दूब। २ मांसरोहिणी, एक प्रकारका सुगन्ध द्रव्य।

गुणा - मध्य भारतकी एक सब एजेन्सी। परोन और रघुगढ़ नामक दो विषय इसके अन्तर्भूत हैं। उक्त दोनों स्थानके सरदार ग्वालियरके अधीन रह कर जागीर स्वरूप भोगदखल करते आये हैं। परोन और रघुगढ़ देखो।

गुणा (हिं० पु०) गणितकी एक क्रिया।

गुणाकार (सं० पु०) गुणानामाकरः, ६-तत्। १ बुद्धविशेष। २ गुणयुक्त, गुणाधार। ३ महादेव शिव। ४ बुद्धके एक शिष्य। ५ सूक्तिकर्णामृतधृत एक प्राचीन कवि।

गुणाकार—हिन्दी भाषाके एक कवि। यह युक्त प्रान्तीय उनाव जिलेके कांठा गांवमें (१८८३ ई०) रहते थे।

गुणाकरसूरि—एक जैन ग्रन्थकार, गुणचन्द्रसूरिके शिष्य। इन्होंने षड्दर्शन समुच्चयटीकाकी रचना की है।

गुणाख्यान (सं० क्ली०) गुणस्य आख्यानं, ६-तत्। १ गुण कीर्त्तन, गुणकथन।

गुणागुण (सं० पु०) द्वन्द्वसमा०। गुण और दोष, अच्छा और बुरा।

गुणाङ्ग (सं० पु०) वह अङ्ग जिसको गुणा करना हो।

गुणाढ्य (सं० त्रि०) गुणैराढ्यः, ३-तत्। १ गुणयुक्त, गुणवान्, हुनरमन्द।

(पु०) २ कोई ब्राह्मणकुमार। कथासरित्सागरमें उनका उपाख्यान इस प्रकार कहा है—प्रतिष्ठान प्रदेशके सुप्रतिष्ठित नगरमें सोमशर्मा नामक कोई ब्राह्मण रहते थे। उनके वत्सक तथा गुल्मक नामसे दो पुत्र और श्रुतार्था नामकी एक मात्र कन्या थी। श्रुतार्थाके साथ यौवन समयको अलौकिक रूपलावण्यसे मोहित हो नागराज वासुकिके छोटे भाई कीर्तिसेनने गान्धर्व विवाह कर लिया। उन्हीं श्रुतार्थाके गर्भसे गुणाढ्यका जन्म हुआ। इनको शैशवावस्थाकी माता और मातुलद्वय अकाल कालग्रासमें पड़े थे। बालक गुणाढ्य किसी प्रकार उनका ऊर्ध्वदैहिक कार्य सम्पन्न करके विद्याभ्यासके लिये

दक्षिणापथको चले और थोड़े ही दिनमें विख्यात पण्डित हो गये। सब देशोंमें उनका पाण्डित्य फैल पड़ा।

उस समय महाराज शालिवाहन (सातवाहन) प्रतिष्ठान राज्यके अधिपति थे। यह उनकी सभामें पहुंचे। महाराज गुणाढ्यका पाण्डित्य देख परम आह्लादित हुए थे, यह बड़े आदरके साथ मन्त्रिपद पर रखे गये। गुणाढ्य वहीं किसी रमणीरत्नका पाणिग्रहण करके शिष्योंके साथ बड़े सुखसे समय बिताने लगे।

राजा शालिवाहन पहले मूर्ख थे, परन्तु उनकी रानी अतिशय विद्यावती थी। एक दिन राजा और रानी जलक्रीड़ामें प्रवृत्त हुये। विदुषी रानीने उनको संस्कृत वाक्यसे किसी विषयके लिये अनुरोध किया था। राजा इसका अर्थ समझ न सके और विपरीत आचरण करने लगे। उस पर रानीने इन्हें डांटा था। राजाको ज्ञानोदय हुआ। उन्होंने सोचा था—इस संसारमें विद्या ही मानवका प्रधान धन है, विद्याके अभावमें कोई सुख नहीं। रानीके तिरस्कारसे आज मेरे लिये संसार असार जैसा हो गया। यदि विद्याभ्यास कर न सकूं, तो जीनेसे क्या फल है? राजाका संकल्प मालूम होने पर गुणाढ्यने छह वर्षमें उन्हें व्याकरण पढ़ा देना स्वीकार किया था। उसी समय शर्ववर्मा नामक कोई पण्डित बोल उठे—मैं छह मासमें ही महाराजको व्याकरण सिखला सकता हूं। वह बात सुन करके यह चिढ़ गये और आपेसे बाहर हो कहने लगे-गर्वकारिन्! यदि ६ महीनेमें आप वह काम कर सकें, स्मरण रखें कि मैं संस्कृत, प्राकृत और देशी भाषा परित्याग करनेको दृढ़प्रतिज्ञ हूं। पण्डितप्रवर शर्वशर्माने असाधारण प्रतिभाबलसे संक्षिप्त कलाप-व्याकरण रचना करके ६ मासके मध्यमें ही महाराजको विद्वान् बना दिया। इन्होंने परास्त हो तीनों भाषाएं छोड़ी थीं। बात न करके जनसमाजमें रहना असम्भव समझ अपने प्रिय शिष्य गुणदेव और नन्दिदेवके साथ गुणाढ्यने निबिड़ अरण्यमें प्रवेश किया। मनुष्य सम्बन्ध परित्याग करके वह पिशाचोंके साथ रहने लगे। दिन दिन प्रतिवेशी पिशाचोंको कथावार्ता सुन करके उन्होंने पिशाचभाषा सीखी थी। कुछ दिन बाद वह काणभूतिसे मिले। इन्होंने मधुमय स्तुतिवाक्यसे उनको सन्तुष्ट करके पुष्पदंतकथित सप्तकथामय उपाख्यान सुना था। फिर गुणाढ्यने उसी उपाख्यानको अवलम्बन करके पिशाच भाषामें सात लाख श्लोकोंकी बृहत्कथा बनायी। इस बड़े ग्रन्थकी रचनामें सात ही वर्षका समय लगा था। इन्होंने अपने रक्तसे उक्त पुस्तक लिख करके काणभूतिको दिखलाया, वह शापमुक्त हो गये। काणभूति देखो।

गुणाढ्यने यह बृहत्कथा मानव समाजमें प्रचार करनेके विचारसे दोनों शिष्योंके साथ प्रतिष्ठाननगर पहुंच राजाके पास भेजी थी। किन्तु विद्यामदगर्वित सातवाहनने उस ग्रन्थका विशेष आदर नहीं किया। राजाके व्यवहारसे यह अतिशय क्रुद्ध हो ग्रन्थको आगमें जलाने लगे। वह एक एक पृष्ठ पढ़के जलाते जाते थे। पशुपक्षी अनाहार वह अमृतमयी कथा सुनने लगे। यह संवाद सुन करके महाराज सातवाहनने वह पुस्तक मांगी। उस समय सप्तकथाके ६ खण्ड जल चुके थे। महाराजको बहुत कहने सुनने पर इन्होंने वह दे डाली।

यह शिवके माल्यवान् नामक एक अनुचर थे, शापसे गुणाढ्य नामसे भूतल पर अवतीर्ण हुए और थोड़े दिन मर्त्यलोकमें रह करके शापसे छूट गये।

क्षेमेन्द्रकी बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेवका कथासरित्सागर दोनों ग्रंथ इनकी उसी बृहत्कथाके आधार पर रचित हुए हैं। दण्डी, सुबन्धु, त्रिविक्रम, गोवर्धन प्रभृति पण्डितोंने पैशाची भाषामें बनी हुई बृहत्कथाका उल्लेख किया है।

गुणाढ्यक (सं० पु०) गुणाढ्य संज्ञायां कन्। अङ्कोठवृक्ष, अखरोटका पेड़।

गुणातीत (सं० पु०) गुणान् सत्वादिगुणान् तत्कार्यं सुखादीन् अतीत, २-तत्। १ सुख दुःखादि शून्य परमेश्वर। आत्मज्ञ, स्थितप्रज्ञ, जीवन्मुक्त। भगवद्गीतामें भगवान्ने प्रिय शिष्य अर्जुनको उपदेशके छलसे बतलाया है, जो त्रिगुण अतिक्रम कर सकते, कभी नहीं जीते मरते और प्रारब्ध शेष होने पर निर्वाण लाभ करते हैं। भक्तिबलसे एकान्त चित्त हो करके ईश्वरकी सेवा करनेवाले ही गुणोंको अतिक्रम कर सकते हैं। ईश्वरकी सेवा छोड़ करके उसका कोई उपाय नहीं। जो गुणातीत हो जाते

हैं, अनभिलषित किसी घटनाका द्वेष या अभीष्ट विषयका आग्रह नहीं रखते। वह सब विषयोंसे उदासीन हो जाते हैं, कभी सुख, दुःख वा मोहमें पड़ करके नहीं घबराते। इनको विश्वास है कि वह सब गुणोंका काम है, जो होता है होता रहे। गुणातीत महात्मा सुख या दुःखमें सुस्थ चित्तसे अवस्थान करते हैं। सामान्य लोष्ट्र एवं महार्घ मणि, हिताहित, निन्दास्तुति और मान अपमान उनके लिये बराबर है। उनका कोई मित्र अमित्र नहीं। यह सब विषयोंका औत्सुक्य छोड़ देते हैं।
(गीता १४ अध्याय)

गुणादि (सं० पु०) पाणिनीय एक गण। गुण, अक्षर, अध्याय, सूक्त, छन्दस्, मान, इन सबोंको गुणादि कहते हैं।

गुणाधार (सं० पु०) गुणस्य आधारः ६-तत्। गुणवान्, गुणसम्पन्न व्यक्ति।

गुणाधिष्ठानक (सं० क्ली०) वक्षस्थलका वह स्थान जहां मेखला बांधा जाता है।

गुणानन्द विद्यावागीश—एक दार्शनिक, मधुसूदनके शिष्य। इन्होंने न्यायकुसुमाञ्जलीविवेक, शब्दालोकविवेक और आत्मतत्त्वविवेकटीका की रचना की है

गुणानुराग (सं० पु०) गुणेषु अनुरागः ७-तत्। गुणप्रियता, गुणमें आसक्ति, गुणका आदर।

गुणानुरोध (सं० पु०) गुणस्य अनुरोधः ६-तत्। गुणकी प्रतिष्ठा, गुणका अनुसरण।

गुणानुवाद (सं० पु०) गुणकथन, प्रशंसा, बड़ाई, तारीफ़

गुणान्तर (सं० पु०) अन्यो गुणः, नित्य-सभा। अन्यगुण

गुणान्तराधान (सं० क्ली०) गुणान्तरस्य आधानं, ६ तत्। किसी पदार्थके पूर्व गुण भिन्न अपर गुणके उत्पादन वा प्राप्तिको गुणान्तराधान कहते हैं

गुणान्तरापादन (सं० क्ली०) गुणान्तरस्य आपादनं, ६-तत्। भावान्तरकी प्राप्ति।

गुणान्वित (सं० त्रि०) गुणैरन्वितः युक्तः ३-तत्। १ विवेक ज्ञान या वैराग्य और उपशम प्रभृति मुक्तिके उपाय। २ गुणयुक्त, गुणवान्।

गुणापवाद (सं० पु०) गुणस्य अपवादः, ६-तत्। गुणकी निन्दा।

गुणाब्धि (सं० पु०) बुद्धविशेष।

गुणाभरण (सं० क्ली०) गुण एवाभरण। १ गुणरूप अलङ्कार। (त्रि०) गुण एवाभरणं यस्य। २ गुणरूप भूषणयुक्त, गुणालङ्कृत।

गुणायन (सं० क्ली०) गुणस्य अयनं आश्रयः, ६-तत्। १ गुणका घर, गुणवान्। (त्रि०) गुणोऽयनं आश्रयो यस्य, बहुव्री०। २ गुणाश्रित, गुणको धारण करनेवाला।

गुणायननन्दि—एक जैनग्रन्थकार। ये गगरी जातिके थे। सम्वत् ११८८ में मार्गशीर्ष शुक्ल ११शीको इनका स्वर्गवास हुआ।

गुणारिया—मन्दार पर्वतसे तीन मील दक्षिण-पूर्व पुनपुन और सुरहर नदीके सङ्गमस्थान पर अवस्थित एक नगर। इसका प्राचीन नाम श्रीगुणचरित है। पूर्व समयमें यहां एक बौद्धविहार था। वर्तमान समयमें भी बहुत से शिवमन्दिरका ध्वंसावशेष देखा जाता है।

गुणारिष्ट (सं० क्ली०) मद्य, मद, मदिरा।

गुणालङ्कृत (सं० त्रि०) गुणैरलङ्कृतः, ३-तत्। गुणभूषित, गुणवान्।

गुणालाभ (सं० पु०) गुणस्य अलाभः, ६-तत्। गुण अप्राप्ति, फलहीनता, वह पुरुष जिसको गुणका लाभ न हो।

गुणावली (सं० स्त्री०) गुणस्य आवली, ६-तत्। १ गुणश्रेणी। २ गुणा करनेकी प्रणाली।

गुणावा,—जैनियोंका एक तीर्थ (सिद्ध) क्षेत्र। यहांसे गौतम गणधर मोक्ष गये हैं। यहां तालाबके बीचमें एक विशाल (दि० जैनियोंका) मन्दिर है; जो कि भागलपुर प्रान्तमें नवादा ष्टेशनसे १॥ मील दूरी पर है।

गुणिका (सं० स्त्री०) गुण-ठन् स्वार्थे कन्-टाप्। शून्याङ्क।

गुणित (सं० त्रि०) गुण क। णि क्त। गुणन किया हुआ।

गुणिता (सं० स्त्री०) गुणिनो भावः गुणिन् तल्। गुणियोंका धर्म, गुण

गुणी (सं० पु०) गुणः ज्या विद्यतेऽस्य गुण-इनि। १ धनुः, धनुष। (त्रि०) गुणो विद्यादिरस्त्यस्य गुण-इनि। २ गुणयुक्त, जिसमें गुण हो, गुणवान्। ३ निपुण मनुष्य, कलाकुशल पुरुष हुनरमंद आदमी। ४ आवर्तकी।

गुणीभूत (सं० त्रि०) अगुणो गुणीभूतः गुण-च्वि-भू-क्त। अप्रधानीभूत, अवस्था या कार्यमें अप्रधान भावसे अवस्थित।

गुणीभूतव्यङ्ग्य (सं० क्ली०) गुणीभूतं अप्रधानीभूतं व्यङ्ग्यं यत्र, बहुव्री०। काव्यविशेष, किसी किस्मकी शायरी।

आलङ्कारिकोंके मतमें रसात्मक वाक्यको काव्य कहते हैं। यह काव्य प्रधानतः दो भागोंमें बंटा हुआ है—ध्वनि और गुणीभूतव्यङ्ग्य। काव्य देखो।

आलङ्कारिक शब्दकी तीन शक्तियां मानते हैं। यथा-अभिधा, लक्षण और व्यञ्जना। शब्दकी अभिधा शक्तिसे निकलनेवाला वाच्य और व्यञ्जनाका अर्थ व्यङ्ग्य कहलाता है। व्यञ्जना देखो।

गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य वही है, जिसमें व्यङ्ग्यार्थ वाच्यार्थसे न्यून वा समान लगे। यह गुणीभूतव्यङ्ग्य आठ प्रकारका है—१ इतराङ्ग, २ काक्वाक्षिप्त, ३वाच्यसिद्धाङ्ग, ४ सन्दिग्धप्राधान्य, ५ तुल्यप्राधान्य, ६ अस्फुट, ७ अगूढ़ और ८ व्यङ्ग्यासुन्दर।

व्यङ्ग्य किसी एक रसका वाच्य और अङ्ग होनेसे इतराङ्ग गुणीभूतव्यङ्ग्य कहलाता है। (साहित्यदर्पण ४ परि०) काव्यप्रकाशकारने उसका नाम अपरांग लिखा है।

(काव्यप्र० ५१ कारि०)

जिस स्थल पर वाक्यार्थ काकु द्वारा आक्षिप्त होता, काक्वाक्षिप्त-गुणीभूतव्यंग्य पड़ता है।

व्यङ्ग्यार्थको वाच्यार्थसिद्धिका हेतु होनेसे वाच्यसिद्ध्यङ्ग कहेंगे।

जो प्रस्तावमें उपयोगी और वर्णनीय दिखलाता, प्रधान-जैसा माना जाता है। किन्तु व्यंग्यार्थ और वाच्यार्थ दोनों प्रधान लगने अर्थात् उनमें कोई प्रधान जैसा ठहर न सकनेसे सन्दिग्धप्राधान्य कहते हैं।

वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ दोनों ही प्रधान वा प्रकृत रहनेसे तुल्यप्राधान्य होता है।

अस्फुट व्यंग्यार्थका नाम अस्फुटगुणीभूतव्यंग्य है।

जहां वाच्यार्थकी भांति व्यंग्यार्थ सहजमें ही बोधगम्य हो जाता, अगूढ़गुणीभूतव्यंग्य आता है।

व्यंग्यार्थसे वाच्यार्थका चमत्कार अधिक रहने पर व्यंग्यासुन्दर होता है।

दीपक और तुल्ययोगिता प्रभृति स्थलों पर जो उपमादि अलङ्कार व्यंग्य लगते, ध्वनिकारादिके मतमें उनको भी गुणीभूतव्यंग्य कहते हैं। आलङ्कारिकोंने इसको छोड़ करके गुणीभूतव्यंग्यके और भी कई भेद निरूपण किये हैं। (साहित्यदर्पण ४ प०)

गुणेश्वर (सं० पु०) गुणेरोश्वरः गुणानामीश्वरो वा। १ चित्रकूट पर्वत। २ तीनों गुण पर प्रभुत्व रखनेवाला, परमेश्वर, ईश्वर। (त्रि०) ३ गुणके अधिपति।

गुणोज्वला (सं० स्त्री०) क्षुद्रश्वेतयूथिका, छोटी सफेद जूही।

गुणोत्कर्ष (सं० पु०) गुणस्य उत्कर्षः ६-तत्। गुणातिशय, बहुत गुण।

गुणोत्कीर्त्तन (सं० क्ली०) गुणानामुत्कीर्तनं कथनं। नायक या नायिकाका प्रशंसादि कथन।

गुणोपेत (सं० त्रि०) १ गुणी, गुणयुक्त, जिसमें गुण हो। २ किसी कलामें निपुण।

गुण्टुनाल—मन्द्राज प्रान्तके करनूल जिलेका एक गांव। यह नन्द्यालसे १५ मील दक्षिण-पश्चिम पड़ता है। इस स्थानमें विजयनगरराज सदाशिवके राजत्व समयको रामराजवेङ्कटाद्रि देवके आदेशसे १४६८ शकका उत्कीर्ण एक शिलालिपि है।

गुण्टुपल्ली—मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेमें इल्लूर तालुकका एक गांव यह अक्षा० १७° उ० और देशा० ८१° ८' पू०में इल्लूर शहरसे २४ मील उत्तर पड़ता है। लोकसंख्या प्रायः १०८२ है। कहते हैं, पहले वहां जैनपुरम् नामक कोई नगर था। इस गांवकी पूर्व दिक्‌की पर्वतमें एक सुन्दर गुहामन्दिर है। मन्दिरका मध्य भाग गोल, छज्जे महराबदार और भीतरको ८ हाथ चौकोर तथा २ हाथ ऊंचा एक प्रस्तरमय वेदी है। उस पर २ हाथ ८ अंगुल ऊंचा गुम्बज और इसके ऊपर लिङ्गमूर्ति देखते हैं। मन्दिरके उभय पार्श्वको कोई २०० हाथ दूर तक पहाड़ तोड़ करके दोवार और घर वगैरह बनाये गये हैं। दालान ८० हाथ लम्बे और १२ हाथ चौड़े हैं। एक दालानमें छोटो गुहा देख पड़ती है। कहते हैं कि पूर्वकालको महादेवके स्नानार्थ उसी गुहासे जल जाया करता था। यहां प्रति वत्सर शिवरात्रिके समय बड़ा उत्सव होता है।

आजकल मन्दिरमें ब्राह्मण्य धर्मका प्रभाव रहते भी कोई सन्देह नहीं कि पूर्वकालको वहां बौद्ध सङ्घाराम

और चैत्य रहे। इस गोलाकृति मन्दिरको चारों ओर ११ फुट ७ इञ्च प्रदक्षिणा है। प्रदक्षिणासे ७ फुट ऊंचे 'दागोब' दृष्ट होता है। बारगेस साहबने इस गुहा मन्दिरसे जुबारकी बौद्ध कीर्ति तुलजालेनको तुलना किया। है। चैत्य गुहाके सामने एक भग्न दागोब है। इससे दक्षिण कुछ छोटे छोटे घर देख पड़ते हैं।

उत्तर दिकको विहार-गुहा है। इसके मध्य एक टुकड़े शिलाफलक पर दो छत्र खोदित लिपियां लगी हैं इनके अक्षर ई० प्रथम शताब्दी अथवा उससे भी कुछ पूर्व समयके जैसे अनुमित होते हैं।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रान्तका एक जिला। १८०४ ई०को यह नेल्लूरके ओङ्गोल तालुक और कृष्णा जिलेका कुछ अंश ले करके बना। १८५८ तक इसी नामका एक दूसरा जिला भी था। इसका क्षेत्रफल ५७३३ वर्गमील, लोकसंख्या प्राय: १४८०६३५ और मालगुजारी कोई ५६॥ लाख रुपया है।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रान्तके गुण्टूर जिलेका सबडिविजन।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रांतके गुण्टूर जिलेका तालुक। यह अक्षा० १६° ८' एवं १६° ३५' उ० और देशा० ८०° २० तथा ८०° ४१ पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५०० वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: २००५५७ है। इसमें दो नगर और १०८ गांव बसते हैं। मालगुजारी और सेस कोई ५१३०००) रु० पड़ती है। दक्षिणमें काली भूमि बहुत उपजाऊ है। सड़कें अच्छी हैं और दक्षिण-पूर्व कोणसे बकिङ्गनाल (नहर) निकल गयी है।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रांतके पुराने गुण्टूर जिलेका सदर। यह अक्षा० १६° १८' उ० और देशा० ८०° २८' पू०में पड़ता है। १८५८ ई०से गुण्टूर कृष्णाके सब कलक्टरका निवास स्थान रहा और हालमें नये गुंटूर जिलेका सदर हुआ। १८६६ ई०को मुनिसपालिटी पड़ी। सम्भवत: ई० १८वीं शताब्दीके उत्तरार्ध भागमें फ्रान्सासियोंने इसे बसाया था। तेलगु 'गुण्ट' शब्दसे जिसका अर्थ सरोवर है, गुण्टूर बना है। यह अपने प्रांतमें सबसे अधिक स्वास्थकर स्थान जैसा प्रसिद्ध है। पहले यह सलाबत-जङ्गकी जागीर था। १७७८ ई०को मन्द्राज गवर्नमेण्टने उनसे इसका पट्टा लिखाया और १७८०ई०को फिर उन्हें सौंप दिया। १७८८ ई०को यह अङ्गरेजोंके हाथ लगा और १८२३ ई०को बृटिश गवर्नमेण्टका अधिकार भुक्त हुआ। यहां दूसरी जगहोंकी ५ सड़कें आ करके मिली हैं। रूईका बड़ा कारबार है। कई एक पुतली घर चलते हैं। ईष्ट कोष्ट रेलवेका ष्टेशन बना हुआ है।

गुण्ठ (सं० पु०) तृणतृण।

गुण्ठन (सं० क्ली०) गुठि-ल्युट। १ आवरण, परदा। २ वेष्टन, घेरा।

गुण्ठित (सं० त्रि०) गुठि कर्मणि-क्त। १ आवृत, आच्छादित, ढका हुआ। २ धूलसे भरा हुआ, धूलमें लिपटा हुआ। ३ गुण्ठित, ढका हुआ।

गुण्ड (सं० पु०) गुड़ि अच्। १ तृणविशेष, एक घास (Scirpus kysoor)। इसका पर्याय—काण्डगुण्ड, दीर्घकाण्ड, त्रिकोणक, छत्रगुच्छ, असिपत्र, नीलपत्र और विकलक है। इसके कन्दको कशेरु कहते हैं। इसका गुण मधुर, शीतल, कफ, पित्त, अतीसार, दाह और रक्त नाशक है। यह तृण अनूपदेशमें उत्पन्न होता है। इसका काण्ड चार या पांच हाथ तक लम्बा रहता है। इसका शीर्षभाग छत्रके जैसा और मूल मोथाके सदृश होता है। इसके काण्डसे अच्छी अच्छी चटाईयां बनती हैं। गुड़ि भावे घञ्। २ चूर्णन, पेषण, पीसा या चूर्ण किया हुवा।

गुण्ड—बम्बई प्रान्तको काठियावाड़ एजेन्सीमें नवानगर राज्यके मानवाड़ महालका एक गांव। यह अपने प्राचीन सिंह शिलालेखके लिये प्रसिद्ध है। उसमें लिखा हुआ है—'क्षत्रप राजत्वकालके १०२ वर्षको स्वामी रुद्रसिंह राजा थे। इनके पिताका राजा महाक्षत्रप स्वामी रुद्रदामा, पितामहका राजा क्षत्रप स्वामी जयदामा और प्रपितामहका नाम राजा महाक्षत्रप स्वामी चष्टान था। वैशाख कृष्ण—पञ्चमीको श्रवणा नक्षत्रमें चन्द्रके रहते अहोर सेनापति वाहकके लड़के रुद्रभूतिने रसोपद्र ग्राममें पशुओंके लाभ और सुखके लिये यह कूप बनाया।' यह शिलालेख एक पुराने कूएंमें मिला था। गुण्डको लोकसंख्या कोई १०८६ होगी।

गुण्डक (सं० त्रि०) गुण्ड स्वार्थे कन्। १ मलिन, मैला, कुचैला।

(पु०) २ धूलि, धूर। ३ कलध्वनि, कलकलका शब्द। ४ सोपपात।

गुण्डकन्द (सं० पु०) गुण्डस्य कन्दः ६ तत्०। कशेरु, केशर।

गुण्डता (सं० स्त्री०) यावनाल शर्करा।

गुण्डबोलु—मन्द्राज प्रांतके नेल्लूर जिलेका एक गांव। इसकी दक्षिण दिक्को आने जानेकी राह पर तालाब है उसमें एक पत्थरके खम्भे पर तैलङ्ग अक्षरोंकी लिपि है। जलाशयके दक्षिण भी तामिल अक्षरोंमें खुदी हुई लिपि लगी है यह गांव आजकल उजाड़ हो गया है। गांववालोंका कहना है, किसी समय वहां राजप्रासाद था

गुण्डल—मन्द्राज प्रांतके करनूल जिलेका कसबा। यहां गोपाल स्वामीका मन्दिर बहुत पुराना है। इसी मन्दिरके पास एक पत्थर पर अनुशासनलिपि उत्कीर्ण है।

गुण्डलकम्म दाक्षिणात्यकी एक नदी। यह मन्द्राज प्रांतीय करनूल जिलेके नल्लमलय पर्वतसे अक्षा० १५° ४८' उ० और देशा० ७८° ५१' पू०में निकलती है। फिर जमपलेरु और एनुमलेरु नामक दो पहाड़ी नदियोंका सङ्गम है। उसके बाद यह कमबलघाटकी राह मैदान पहुंचती है। सींचनेके लिये कमबल तालाब बनाया गया है। यह करनूल, गण्टूर और नेल्लूर जिला होती हुई पेटदेवरमके पास अक्षा० १५° ३४' उ० और देशा० ८०° १०' पू० पर समुद्रमें प्रवेश करती है।

गुण्डलपाडु—मन्द्राज प्रांतके कृष्णा जिलेका एक गांव। यह मार्चलेसे १० मील और तुम्भिकोटरसे १८ मील दक्षिण पश्चिम पड़ता है। यहां दो प्राचीन मन्दिरोंका ध्वंसावशेष दृष्ट होता है। ग्रामके पश्चिम भाग पर शिवकेशवके मन्दिरमें एक भग्न शिलालिपि है। शिव तथा विष्णु मन्दिरके पास दुर्मति संवत्सर १२४३ शककी उत्कीर्ण हुई (सं०) त्रिजाप्रशस्ति मिलती है।

गुण्ड जिसको गुण्डा कर-प्रान्तके नेल्लूर जिलेका एक गांव। [illegible] गुण हो। [illegible]-पश्चिम पड़ता है। पर्वत पर तीन और [illegible] (मि० को०) मन्दिर है। पहाड़ पर भ्रमरेश्वर स्वामीका भी [illegible]क जो विद्यमान है। इस मंदिरमें ध्वजस्तम्भके [illegible] १४६३ शककी उत्कीर्ण एक प्रशस्ति है। फिर मन्दिरसे दक्षिणको एक टुकड़े पत्थर पर कोई शिलालिपि भी मिली है। नदीकी रेतमें अर्ध प्रोथित दो शिवमन्दिर हैं। कहते कि एक चोलराजने यह दोनों मन्दिर बनाये थे।

गुण्डलपेट—महिसुर राज्यके महिसुर जिलेका दक्षिण तालुक। यह अक्षा० ११° ३६' तथा १२° १' उ० और देशा० ७६° २४' एवं ७६° ५२' पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५३५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ७४८८७ है। इसमें एक नगर और १५५ गांव बसे हैं। मालगुजारी कोई १०००) रु० है। पश्चिम तथा दक्षिणको बड़ा जङ्गल है। पास ही पहाड़ों पर घनी बसती है। गोंडल नदी दक्षिणसे उत्तरको प्रवाहित है। सींचनेके लिये बांध है। यहां चावल और पान बहुत अच्छा होता है। नदियोंपर जङ्गली खजूरके बाग हैं।

गुण्डलमऊ—युक्तप्रदेशके सीतापुर जिलेका एक परगना। इसके उत्तर मछरेता तथा करौन परगना, पूर्व सरायन नदी और दक्षिण एवं पश्चिम गोमती नदी है। पहले यहां कंछेरा लोग रहते थे। बाछल क्षत्रियोंके तीन संतानोंने उन्हें भगा दिया। उनमें एकका नाम गोंडसिंह था। उन्होंने ही अपने नाम पर यह परगना स्थापन किया। इसमें कोई ६७ गांव हैं। उनमें आज भी ५३ गांवों पर बाछल अधिकार रखते हैं। जगह पहाड़ी और ऊंची है। अनाज वगैरह अच्छा नहीं होता। क्षेत्रफल ६५ वर्गमील है।

गुण्डलमाडु—मन्द्राज प्रान्तके कड़ापा जिलेका एक गांव। यह सिद्धवटसे १४ मील दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है। यहां मुक्तिकोटीश्वर स्वामीका एक प्राचीन मन्दिर दृष्ट होता है। प्रवादानुसार महर्षि नारदने वह मूर्ति स्थापन की थी। मन्दिरके पास ही एक अस्पष्ट शिलाफलक भी है।

गुण्डलूरु—मन्द्राज प्रान्तके कड़ापा जिलेमें पुलम्पेट तालुकका गांव। यह पुलम्पेटकी सदर अदालतसे ५ मील उत्तर-पश्चिम पड़ता है। स्थानीय प्राचीन विष्णुमन्दिरके पास दो पत्थरों पर ग्रन्थ और तेलगु अक्षरोंमें खोदित शिलालिपि है। इसके दक्षिण अगस्त्येश्वरके मन्दिरमें और भी कई एक ग्रन्थशिलालिपियां हैं। मल्लिकटस्थ वीरभद्रस्वामीके मन्दिरमें कितने ही ग्रन्थ और तेलगु

भाषाके शिलाफलक देख पड़ते हैं। उनमें एक १४७७ और दूसरा १४८० शकको उत्कीर्ण है। ग्रामवासी बतलाते कि ४१५ वर्षके अन्तर मन्दिरके लिङ्गको गङ्गा नहलाती, वह जल निर्दिष्ट दिवसको मन्दिरकी छतसे भूमि पर गिरता है।

गुण्डलूरु—मन्द्राज प्रान्तके कड़ापा जिलेमें बायलपाड़ तालुकका एक गांव। बायलपाड़की कचहरीसे यह १३ मील उत्तर-पूर्व पड़ता है। यहां एक शिलालिपि है, वह १५२१ शकको विजयनगरराज वेङ्कटपतिदेवके राजत्व समय पेन्नकोंडाके सरदार कर्तृक प्रदत्त हुई थी। गुण्डलूरुका विष्णुमन्दिर अति प्राचीन है।

गुण्डवा—युक्तप्रदेशके हरदोई जिलेका एक परगना। इसके उत्तर तथा पूर्व गोमती नदी एवं दलिहाद और पश्चिमको संडोला तथा कल्याणमल है। गोमती नदीका तीरवर्ती स्थान वालुकामय है। पहाड़ पर बीच बीच बड़ी खाड़ियां हैं। एक प्राचीन नदी खातमें रेत पड़नेसे अब यह जगह बड़े झील जैसी हो गयी है। कितनी ही छोटी नदियां और पहाड़ी झरने इस परगनेके बीच बहते हैं। खेतीबारीका खूब सुभीता है। क्षेत्रफल १४० वर्ग-मील है। ११७ गांव बसे हुए हैं।

गुण्डस (सं० पु०) सर्पजाति भेद, सांपकी एक जाति।

गुण्डा (सं० स्त्री०) काशतृण।

गुण्डाफली (सं० स्त्री०) देवदाली, एक प्रकारका पेड़।

गुण्डार—मन्द्राज प्रान्तके मदुरा जिलेकी एक नदी। यह अक्षा० ९° ३६´ उ० और देशा० ७८° १४´ पू०में अन्दि-पत्ति तथा वर्षनाड़ पर्वतोंसे प्रवाहित क्षुद्र क्षुद्र जल स्रोतोंसे मिल करके बनती और दक्षिण-पूर्वको प्राय: १०० मील चल करके किलराई नामक स्थान पर समुद्र-में गिरती है।

गुण्डार—मध्य प्रदेशस्थ रायपुर जिलेके सरदारकी एक डिही। इसके बीच ५२ गांव हैं। भूमिका परिमाण ८० वर्गमील है। जमीन उपजाऊ है। वर्तमान सरदार कोई ३०० वर्षसे इस स्थानको उपभोग करते आते हैं। गुण्डारडिही गांव अक्षा० २०° ५६´ ३०´´ उ० और देशा० ८१° २०´ ३´´ पू०में अवस्थित है।

गुण्डारोचनिका (सं० स्त्री०) गुण्डा सती रोचना इव। वृक्षविशेष। इसका पर्याय - काम्पिल्लक और रक्ताङ्ग है।

गुण्डारोचनी (सं० स्त्री०) गुण्डारोचनिका, एक प्रकारका सुगन्ध द्रव्य।

गुण्डाला (सं० स्त्री०) गुण्डं चूर्णं आलाति आ ला-प टाप्। १ एक तरहकी जलज लता या झाड़ी। इसका नामान्तर जलोद्भूता, गुच्छबधा और जलाशया हैं। इसका गुण कटु, तिक्त, उष्ण, शोथ और व्रणनाशक है २ गुण्डासिनीतृण, गांडर घास।

गुण्डासिनी (सं० स्त्री०) गुण्डासनो अस्ति अस् णिनि। तृणविशेष, एक प्रकारकी घास। इसका पर्याय-गुण्डाला, गुड़ाला, गुच्छमूलिका, चिपिटा, तृणपत्री, यवासा, पृथुला और विष्टरा है। इसका गुण कटु, पित्त, दाह, शोथ और व्रणदोषनाशक है।

गुण्डिक (सं० पु०) गुण्डोऽस्त्यस्य गुण्ड-ठन्। चूर्णीकृत तण्डुलादि, चावलका चूर्ण।

गुण्डिचा (सं० स्त्री०) पुरुषोत्तम क्षेत्रका एक मन्दिर। स्कन्दपुराणके उत्कलखण्डमें लिखा है—

जगन्नाथ देव बिन्दुसरोवरके तीरवर्ती गुण्डिचा मन्दिरमें रथारोहणके बाद ७ दिन तक रहे। पूर्व कालमें जगन्नाथ देवने राजाके प्रति सन्तुष्ट हो यह वर दिया था—हम सात दिन तक स्थिर भावसे गुण्डिचा मन्दिरमें वास करेंगे। पृथिवीके समस्त तीर्थ हमारे साथ वहां उपस्थित रहेंगे। जो मानव भक्तिभावसे बिन्दु तीर्थमें स्नान करके सप्ताह पर्यन्त गुण्डिचा मन्दिरमें बलराम तथा सुभद्राके साथ हमारा दर्शन करेगा, वह हमारा सायुज्य लाभ करेगा। इस मन्दिरके दर्शनसे दर्शकोंका सब पाप विनष्ट होता है। सब देवता इसकी पूजा करते हैं। यह मन्दिर ब्रह्मतेजको अवगुण्ठन जैसा करनेसे ही गुण्डिचा कहलाता है।

इसका विशेष प्रमाण नहीं मिलता कि यह मन्दिर कितने दिनोंका पुराना है। उड़ीसाके [illegible]में चन्द्रके [illegible] कि महाराज इन्द्रद्युम्नकी एक मूर्ति [illegible] रुद्रभूतिने रसोपद्र [illegible] था, उन्होंने यह मन्दिर बनाया, [illegible]के लिये यह कूप [illegible]। यह गुण्डिचा कहलाया। कूएंमें [illegible]देवने अपने शिष्यों और भक्तोंके साथ [illegible] मार्जना की थी। आजकल भी रथयात्राको बड़ी धूमधामसे जगन्नाथदेव गुण्डिचा मन्दिरमें आ करके रहते हैं।

गुण्ठित (सं० स्त्री०) गुड़ वेष्टने कर्मणि क्त। १ धूलि धूसरित, धूलसे भरा हुआ। २ चूर्णीकृत, चूर्ण किया हुवा।

गुण्डियाली—बम्बई प्रान्तको काठियावाड़ एजेन्सीका एक छोटा राज्य। इसको आबादी कोई १४६५ और मालगुजारी १७८३५) रु० है। यह राज्य अङ्गरेजोंको १४०८) रु० वार्षिक कर देता है।

गुण्डियाली—बम्बई प्रान्तके कच्छ जिलेका एक गांव। यह मांडवीके निकट सागर तट पर बसा हुआ है। जनसंख्या कोई ४०४६ होगा। एक ऊंचो भूमि पर वट वृक्षोंसे घिरा हुआ रावलपोरका मन्दिर है। १८१७ ई०-को वह सेठ सुन्दरजी तथा जेठा शिवजो कर्तृक पुनर्वार निर्मित हुआ। कहते हैं, कि ई० १४ वीं शताब्दीको रावलने अपनी माताका हथेलीके फोड़ेसे जन्म लिया था, फिर जखाऊमें उन्होंने धर्मनाथके भक्तोंको सतानेवाले मुसलमान संहार करके सुकार्ति अर्जन की। वर्षमें एक बार हिन्दू और मुसलमान वहां जाते और पत्थरके घोड़ोंको, जो मन्दिरको चारों ओर बने हुए हैं, फूलोंको मालाएं चढ़ा आते हैं।

गुण्डीकोलियाक—बम्बई प्रान्तको काठियावाड़ एजेन्सीका ग्रामद्वय, यह दोनों गांव आमने सामने मालेश्वरी नदीके उत्तर तथा दक्षिण तट पर भावनगरसे १३ मील दक्षिणपूर्व अवस्थित हैं। इनमें गुण्डो समधिक प्राचीन है। पहले वहां नागर ब्राह्मणोंका उपनिवेश था। आईन-इ-अकबरीमें इसको बन्दर और मीरत-अहमदीमें बारा लिखा है। जनसंख्या प्राय १७३७ है। गुण्डो खाड़ीके मुंहाने पर एक प्रस्तरमय नीलकण्ठको शिवमूर्ति है। कहते हैं कि उसको पाण्डवने स्थापन किया था।

गुण्ड भट्ट—तर्कभाषाके एक टीकाकार।

गुण्य (सं० त्रि०) गुण कर्मणि यत्। १ गुणनीय, वह अंक जिसको गुणा करना हो। २ प्रशस्त गुणयुक्त, जिसमें अच्छे अच्छे गुण हों।

"गुण्या ब्राह्मणाः।" (सि० कौ०)

गुण्याङ्क (सं० पु०) वह अंक जो गुणा किया जाय।

गुतला (हिं० पु०) एक प्रकारकी मछली, जो बंगु भी कहलाती है।

गुत्तल (गुट्टल)—बम्बईके धारवाड़ जिलेका एक कसबा। यह कड़जगीसे ६ कोस पूर्वको पड़ता है। १८६२ ई० तक वहां सदर अदालत रही। सप्ताहमें प्रति सोमवारको बाजार लगता है। गांवमें सङ्गमूसासे बना हुआ चूड़-शेखरका मन्दिर है। उसमें २४ और ८६ पंक्तियोंके दो लिखे हुए शिलाफलक लगे हैं। तालाबमें नहर खोद करके पानी लाया गया है। बांधके मुंहाने पर पत्थरको मेहराब बनी है।

११०३ शकको प्रव संवत्सरको उत्कोर्ण जो कलचुरि शिलालिपि है, उसमें गुट्टोलल नगरका नाम मिलता है। इस फलकमें लिखा है कि षष्ठ कलचुरिराज यादवमल्लके अधीन (११७६-११८३ ई०) गुट्ट सरदार उस नगरमें राजत्व करते थे। वह गुट्ट भोलल नगर वर्तमान गुट्टल जैसा समझ पड़ता है। फिर १२३७ ई०को देवगिरि यादववंशीय २य सिंहन प्रदत्त प्रशस्ति पढ़नेसे मालूम करते कि गुट्टनायक जगदेवको अनुमतिसे गुट्टल नगरके निकट उक्त शिलालिपि उत्कीर्ण हुई।

गुत्ता (हिं० पु०) १ लगान पर जमीन देनेका ढंग। २ लगान।

गुत्य (सं० पु०) गुत्स पृषोदरादिवत् साधु। १ ज्वार नामका धानविशेष। २ गुड़ूची, गुरुच

गुत्थ (हिं० पु०) १ हुक्केके नैचोंको बुनावट। २ चटाई सो बुनावटका नैचा।

गुत्थक (सं० क्लो०) गुच्छेन कायति गुच्छ कै-क, पृषोदरादित्वात् साधु। ग्रंथिपर्ण, गठिवन।

गुत्थमगुत्था (हिं० पु०) १ उलझाव, फसाव। २ भिड़न्त, लड़ाई।

गुत्थो (हिं० स्त्री०) कई वस्तुओंके एकमें गुथनेसे उत्पन्न गांठ, गिरह।

गुत्स (सं० पु०) गुध्यते तृणादिभिः परिवेष्टते गुध-स। १ ग्रंथिपर्ण वृक्ष, गठिवन। २ स्तवक, घासका गुच्छा। ३ द्वात्रिंशद् यष्टिकाहार। गुच्छ देखो।

गुत्सक (सं० पु०) गुत्स स्वार्थे कन्। गुत्स देखो।

गुत्सकपुष्प (सं० पु०) गुत्सकं स्तवकीभूतं पुष्पं यस्य, बहुव्री०। सप्तच्छदवृक्ष, एक तरहका पेड़।

गुत्सपुष्प (सं० पु०) गुत्सकपुष्प देखो।

गुत्मार्ह (सं० पु०) गुत्मस्य अर्हः, ६-तत्० । चोबीशनर हार ।

गुथना (हिं० क्रि०) १ कई चीजोंका तागेके द्वारा एकमें करना । २ भद्दी मिलाई होना टाँकना । ३ एकका दूसरेके साथ लड़नेके लिये भिड़ जाना ।

गुथनी—विहारमें सारण जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २६° ८´ ४५´´ उ० और देशा० ५४° ५´ पू०के मध्य छोटी गण्डक नदीके पूर्व उपकूल पर और छपरासे २१ कोस उत्तरपूर्वमें अवस्थित है। यहां चीनी स्वच्छ करनेके चार कल हैं । इस स्थानसे दूर दूर देशमें चीनीकी रफतनी होती है

गुथुवां (हिं० वि०) जो गुथकर बनाया गया हो।

गुथवाना (हिं० क्रि०) दूसरेके द्वारा गुथनका काम कराना ।

गुद (सं० क्ली०) गोदते खेलति चलतीति यावत् अपान वायुर्येन गुद-क। १ मलत्यागद्वार, जिस रास्तेसे मल बाहर निकलता है। इसका पर्याय—अपान, पाज, गुह्य और गुदवर्त्म है। सुश्रुतके मतसे गुह्यदेश पांच अङ्गुल आयतका है। इसमें कई एक स्थूल अन्त्र अर्थात् मलाशयसे मलद्वार पर्यन्त विस्तृत मल बाहर निकलनेकी प्रणालियां हैं। उन समस्त प्रणालियों वा स्थूल अन्त्रयुक्त पञ्चाङ्गुल परिमित स्थानको गुद कहते हैं। गुह्यदेशके अर्धाङ्गुलसे कुछ अधिकको दूरी पर प्रवाहणी, विसर्जनी और सम्वरणी नामको तीन वली हैं। वे तीनों वलियां चार अङ्गुल आयतके हैं। हाथीके तालुके जैसे इसका वर्ण है। गुह्यदेशजात रोएंके अन्तर्भागसे आधा यव परिमित स्थानको गुदौष्ठ कहते हैं। (अन्त्र देखो।) (पु०) २ वलयाकार गुदस्थान। ३ गुह्यदेशके निकटमें रहनेसे साधारणतः योनि शब्दके अर्थपर गुद शब्द व्यवहृत होता है।

गुदकार (हिं० वि०) गूदेदार, जिसमें गूदा हो। २ गुदगुदा, मोटा ।

गुदकील (सं० पु०) गुदे कील इव। अर्शरोग, बवासीर।

गुदकीलक (सं० पु०) गुदकील एव स्वार्थे कन्। अर्शरोग, बवासीर।

गुदकीलघ्न (सं० वि०) गुदकीलं हन्ति हन्-क्विप्। गुदकीलनाशक, जिससे अर्शरोग नाश हो, जिससे बवासीर अच्छा हो।

गुदकुट्टक (सं० पु०) शिशुका गुदज ताम्रवर्ण व्रणविशेष, बच्चेकी पाखानेकी जगह होनेवाला एक सुर्ख फोड़ा। यह मलके उपलेप वा स्वेदसे रक्त और कफके कारण गुदमें उत्पन्न हो जाता है, इसका रङ्ग लाल है । खुजली बहुत लगती है। कोई उसको मातृकादोष और कोई पूतन बतलाता है। (वाग्भट)

गुदगुदा (हिं० वि०) १ गूदेदार, मांसयुक्त । २ नरम, जिसकी सतह दबानेसे दब जाय।

गुदगुदाना (हिं० क्रि०) १ छोटे छोटे बच्चेको प्रसन्न करनेके लिये काँख या ठेहुनेमें हाथ देकर शब्द करना। २ मनबहलाव। ३ चित्तको चलायमान करना।

गुदगुदाहट (हिं०) गुदगुदी देखो।

गुदगुदी (हिं० स्त्री०) काँख और पेट आदि मांसल स्थानों पर अङ्गुली द्वारा सुरसुराहट वा मीठी खुजली।

गुदगुदो—बम्बईके धारवाड़ जिलेका एक क्षुद्र ग्राम। यह हांगलसे ५ मील उत्तरपश्चिम पड़ता है। आबादी कोई २३७ है। यहां कल्लपका एक मन्दिर है उसमें १०३८ और १०७२ ई०के दो शिलालिख लगे हैं।

गुदग्रह (सं० पु०) गुदं तद्व्यापारं गृह्णाति ग्रह-अच ६-तत्। १ उदावर्त रोग। कोष्ठबद्धका रोग। (उदावर्त देखो।) २ पायुवेदना। मलद्वारमें दर्द।

गुदजघ्न (सं० पु०) कटुशूरण जङ्गली जमीकन्द।

गुदजारि (सं० पु०) देवताड़वृक्ष, राम बांस।

गुदड़—१ गुदड़ी, संन्यासियोंके पहननेका वस्त्र। २ सम्प्रदाय विशेष, ब्रह्मगिरि इस सम्प्रदायके प्रवर्त्तक रहे। लोगोंके कथनानुसार गोरखनाथने ब्रह्मगिरिको मन्त्र न देकर कर्णकुण्डलादि प्रदान किये थे। ब्रह्मगिरिने भी गुदड़ प्रभृतिको इसे व्यवहारके लिये दिया। ये सदा गेरुआ वस्त्र परिधान करते हैं, इनके एक कानमें कुण्डल और दूसरे कानमें औघड़के पदचिह्नित ताम्बेकी गद्दी रहती है। ये अपने कुण्डलोंको खेचरीमुद्रा कहा करते हैं। ये हाथमें धूपदानी लेकर और उसमें धूप जलाते हुवे इधर उधर भिक्षाके लिये बाहर निकलते हैं। किसी संन्यासीकी मृत्यु होने पर वे उसकी अन्त्येष्टिक्रिया करते हैं।

गुदड़िया (हिं० पु०) गुदड़ी पहनने वा ओढ़नेवाला।

गुदड़ी (हिं० पु०) फटे हुए वस्त्रका बनाहुआ ओढ़ना या बिछावन।

गुदड़ीबाजार (हिं० पु०) जीर्ण पदार्थोंके बिकनेका बाजार।

गुदनहारी (हिं०) गोदनहारी देखो।

गुदना (हिं०) गोदना देखो।

गुदनी (हिं०) गोदनी देखो।

गुदपरिगड (सं० पु०) ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम।

गुदपाक (सं० पु०) गदस्य पाकः, ६-तत्। गुदस्थानका पाकविशेष, पाखानेकी जगहका पकाव। अतिशय अतीसार होनेसे वह रोग उठता है। इससे पीब बहा करता है।

सुश्रुतके मतमें बालककी गुदपाक रोग उपस्थित होनेसे पित्तघ्न क्रिया और पान तथा आलेपनमें रसाञ्जन व्यवहार करना चाहिये। (शारीर १० अध्याय) कुपथ्य सेवनकारी व्यक्तिको पित्तसे गुदपाक रोग निकलने पर पित्तनाशक द्रव्य सेवन और उसके क्वाथसे अनुवासन विधेय है। इस रोगमें वायुका योग रहनेसे दधिमण्ड, मद्य तथा विल्वके साथ तैल पाक करके पिचकारी लगाते हैं। चौरणी मूलके साथ दुग्ध पाक करके पीनेसे भी उपकार होता है। गुदपाकमें बहुत खून गिरने या वायु न खुलनेसे पिच्छिल वस्तिप्रयोग करना चाहिये। (सुश्रुत, उत्तर० ४० अ०)

गुदभ्रंश (सं० पु०) गुदस्य गुदमांसस्य भ्रंशः, ६-तत्। रोगविशेष, एक बीमारी। रूक्ष तथा दुर्बल व्यक्तिके प्रवाहन एवं अतीसार द्वारा मलद्वारका जो मांस बाहर निकल आता, गुदभ्रंश कहलाता है। (सुश्रुत निदान १३ अ)

इस रोगकी चिकित्सा करनेसे पहले वहिर्गत नाड़ी तथा मांस घृताक्त तथा स्विन्न अथवा स्वेद प्रयोग करके गुदमध्य पहुंचा देना चाहिये। फिर मलद्वार चर्म द्वारा बांधा जाता है। चमड़ेका जो अंश मलद्वारके छिद्रको आवरण करता, उसमें एक छेद रहता है। वायु निःसरणके लिये बार बार स्वेद प्रयोग करना उचित है।

[illegible] दुग्ध, महापञ्चमूल, अन्त्रशून्य मूषिकका देह और वातघ्न औषध सबके साथ तैल पका करके पीने और लगानेमें व्यवहृत होता है। इससे कष्टसाध्य गुदभ्रंश रोग भी आरोग्य हो जाता है। (सुश्रुत चिकित्सित २१ अ०)

अतीसार रोगमें गुदभ्रंश उभरनेसे मधुर एवं अम्ल योगसे तैल वा घृत पाक करके लगाते हैं। (सुश्रुत उत्तर ४० अ०)

गुदमा (हिं० पु०) एक तरहका नर्म और मोटा कम्बल। यह ठण्ढे पहाड़ी देशोंमें प्रस्तुत किया जाता है।

गुदरना (फा० क्रि०) १ त्याग करना, अलग रहना। २ निवेदन करना।

गुदरिया (हिं०) गुदड़ी देखो।

गुदरी (हिं०) गुदड़ी देखो।

गुदरैन (हिं० स्त्री०) १ पढ़ा हुआ पाठ भली भांति सुनाना। २ परीक्षा, इम्तहान।

गुदरोग (सं० पु०) गुदस्य रोगः, ६-तत्। गुदस्थानमें उत्पन्न एक प्रकार रोग, पाखानेकी जगह होनेवाली कोई बीमारी। शातातपके मतानुसार देवालय अथवा जलमें पेशाब करनेके पापसे जन्मान्तरको गुदरोग उठता है। यह उसी पापका चिह्नस्वरूप है। एक मास पर्यन्त देवार्चन तथा गोदान करके एक प्राजापत्य यज्ञ करनेसे उस रोगका प्रतीकार होता है।

भगन्दर और अर्श आदि गुदजात रोगोंका अन्यरूप कारण तथा प्रायश्चित्त है। इससे मालूम पड़ता है शातातपने जो गुदरोग लिखा, वह भगन्दर आदि रोगोंसे अलग है। परन्तु प्रचलित भिषग्शास्त्रमें गुदरोग नामका कोई पृथक् रोग लक्षित नहीं होता।

गुदवर्त्म (सं० क्ली०) गुदरूपं वर्त्म। मलद्वार, जिस रास्तेसे मल निकलता है।

गुदस्तम्भ (सं० पु०) गुदस्य तद्व्यापारस्य मलनिःसारणस्य स्तम्भः, ६-तत्। मलनिःसारका प्रतिरोधक रोगविशेष। वह रोग जिसमें मल कठिनतासे निकले।

शातातपका मत है कि अक्षयोनिमें गमन करनेसे गुदस्तम्भ रोग उत्पन्न होता है। एक मास पर्यन्त सहस्र कमल द्वारा शिवजीको स्नान करानेसे इसका प्रतिकार होता है।

गुदा (सं० स्त्री०) गुद विकल्पे टाप्। १ नाड़ीविशेष, शरीरकी समस्त नाड़ियां जो समान वायु द्वारा अन्नरस धातु स्थानमें ले जाती हैं उन्हींको गुदा कहते हैं।

२ मलद्वार। ३ पक्षीविशेष, एक तरहकी चोड़िया। (Loxia hypoxanthar)

गुदाङ्कुर (सं० पु०) गुदे अङ्कुर इव। अर्शरोग, बवासीर।

गुदाज (फा० वि०) गूदेदार, मांससे परिपूर्ण।

गुदाना (हिं० क्रि०) गोदनेकी क्रिया कराना।

गुदाम—जहां पर एक तरहके अनेक द्रव्य रखे जाते हैं, गोला। 'गुदाम' शब्दकी उत्पत्तिमें कुछ मतभेद देखा जाता है। किसीके मतसे 'Godown' शब्दका अपभ्रंश और किसीके मतमें मलयभाषा 'गदोङ्ग' शब्दसे 'गुदाम' निकला है। जिस घरमें माल रखा जाता है, तामिल भाषामें उस घरको 'किदङ्ग' और तैलङ्ग भाषामें 'गिदङ्गि' कहते हैं। सिंहलमें भी उपरोक्त शब्द 'गुदाम' नामसे व्यवहृत होता है। इसीसे मालूम होता है कि तामिल और तैलङ्गसे ही अपभ्रंश गुदाम शब्द निकला है।

गुदामय (सं० पु०) अर्शरोग।

गुदामयहर (सं० पु०) कटुशूरण, जङ्गली जमीकन्द।

गुदार (हिं० वि०) गूदेदार, जिसमें अधिक गूदा हो।

गुदा (फा० वि०) नदी पार होनेकी घाट।

गुदारा (फा० पु०) नौका द्वारा नदी पार होनेकी क्रिया, उतारा।

गुदियात्तम—मन्द्राजके उत्तर अरकाट जिलेका तालुक। यह अक्षा० १२° ४२' तथा १३° ५' उ० और देशा० ७८° ३५' एवं ७८° १६' पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ४४७ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १८५६६५ है। इसमें एक शहर और १८३ गांव आबाद हैं। मालगुजारी और सेस कोई ३२७५०० है। पालार नदीके उत्तर तटकी इसकी भूमि फैली हुई है। पश्चिम विभागमें पहाड़ है। सुर्ख मट्टीमें बालू मिली है।

गुदियात्तम—मन्द्राजके उत्तर अरकाट जिलेमें गुदियात्तम तालुकका सदर। यह अक्षा० १२° ५८' उ० और देशा० ७८° ५३' पू०में रेलवे ष्टेशन तथा पालार नदीसे कोई ३ मील उत्तर पड़ता है। जनसंख्या प्रायः २१३३५ है। १८८५ ई०को यहां मुनिसपालिटी हुई। सड़कें अच्छी हैं। प्रधान व्यवसाय कपड़ेकी बुनाई है। गुड़, चमड़ा, इमली, तम्बाकू और घी खूब बिकता है। प्रत्येक मङ्गलवार मवेशियोंके बाजारका दिन है।

गुदियारा (फा०) गुदकारा देखो।

गुदी (सं० स्त्री०) गुद-ङीष्। वह स्थान जहां नौकादि मरम्मत की जाती हैं।

गुदीगर—बंबई प्रान्तके कनाड़ा जिलेकी एक जाति। इनकी संख्या प्रायः ३८० है। यह सिरसी, सिद्दापुर, होनावाड़ और कुमतामें कुछ कुछ मिलते हैं। दूसरा नाम चितार है। प्रत्येक नामके पीछे 'सेठी' उपाधि लगता है। गोवासे पोर्तगीज राज्य स्थापित होने पर यह कनाड़ो आये। उनके क्षत्रिय होनेका दावा किया जाता है। किन्तु ब्राह्मण वह बात नहीं मानते। इनकी घरू बोली कनाड़ी है। परन्तु समुद्र तट पर रहनेवाले कोङ्कणी भी बोलते हैं। पुरुष शिल्पी होते भी चञ्चल, अमितव्ययी, और आलसी हैं, अपने काम पर ध्यान नहीं देते। यहां चन्दन, हाथी दाँत और आबनूस पर अच्छी नक्काशी की जाती है। प्रधान उपजीविका नक्काशी और रङ्गरेजी है। यह हाविग ब्राह्मणोंको छोड़ करके दूसरेका बनाया भोजन ग्रहण नहीं करते। महिसुरस्थ शृङ्गेरिमठके आचार्य इनके गुरु हैं। अपने कुलपुरोहित हाविग ब्राह्मणोंका यह बड़ा सम्मान करते हैं। कन्याओंका विवाह ६ और ११ वर्षके बीच होता है। बालकोंको कनाड़ी भाषा सिखलायी जाती है।

गुदुरी (हिं० स्त्री०) १ मटरकी फली। २ एक तरहका कीड़ा जो प्रायः मटर और चनेकी फसलको नष्ट कर देता है।

गुदौष्ठ (सं० पु०) गुदस्य ओष्ठ इव। १ गुदाके अवयव विशेष। २ मलद्वारका मुख।

गुद्दा (हिं०) १ गूदा देखो। २ वृक्षको मोटी डाल।

गुद्दी (हिं० पु०) १ किसी फलके मध्यका गूदा, गिरी। २ सिरका पिछला भाग, ल्योंड़ी। ३ हथेलीका मांस।

गुधित (सं० वि०) परिवेष्टित, घिरा हुआ।

गुधेर (सं० त्रि०) गुदयति वेष्टयति रक्षयति इत्यर्थः। गुध-एरक्, रक्षक, बचानेवाला।

गुन (हिं० पु०) गुण देखो।

गुनगुना (हिं० वि०) नाकसे बोलनेवाला।

गुनगुनाना (हिं० क्रि०) १ गुन-गुन शब्द करना। २ अस्पष्ट स्वरमें गाना। ३ नाकसे बोलना।

गुनतकल—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेमें गूती तालुकका गांव। यह अक्षा० १५° ८' उ० और देशा० ७२° २३' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: ६०५८ है। यहां रेलवेका बड़ा जङ्शन है। दक्षिण पश्चिमको उच्च भूमिपर प्राचीन कालके यन्त्रादि आविष्कृत हुए हैं।

गुनवन्त (सं० वि०) गुणी। जिसमें कोई गुण हो।

गुनहगार (फा० वि०) १ पापी। २ दोषी, अपराधी।

गुनहगारी (फा० स्त्री०) १ पाप। २ दोष, अपराध।

गुनही (फा० पु०) अपराधी गुनहगार।

गुना (हिं० पु०) एक प्रत्यय, जो सिर्फ संख्यावाचक शब्दोंके आखीरमें आता है। यथा दुगुना, चौगुना, दसगुना और बसोगुना। २ गुणा या गुणन्।

गुना—मध्य भारतके ग्वालियर राज्यमें ईसागढ़ जिलेका शहर और अंगरेजी छावनी। यह अक्षा० २४° ३८' उ० और देशा० ७७° १८' पू०में आगरा बंबई सड़क और ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवेकी बीना बारां शाखापर अवस्थित है। जनसंख्या प्राय: ११४५२ है। पहले वह एक क्षुद्रग्राम था, परन्तु १८४४ई०की छावनी पड़नेसे बढ़ गया। शहरमें खैराती शफा खाना, रियासती डाकघर, सराय और स्कूल हैं। छावनी नगरसे कोई एक मील पूर्व पड़ती है।

गुनाह (फा० पु०) दोष, पाप।

गुनाहगार (फा० वि०) १ अनिष्टकारी, बुराई करनेवाला। (पु०) २ दुष्ट।

गुनाही (फा० पु०) १ पापकरनेवाला। २ दोषी, अपराध करनेवाला।

गुनिया (हिं० पु०) गुणवान्, वह मनुष्य जिसमें गुण हो। (स्त्री०) २ राजों, बढ़इयों प्रभृति कारिगरोंके कोनेकी सीध मापनेका यन्त्र। (पु०) ३ नौकाकी गुण खींचनेवाला मल्लाह।

गुनी (हिं० वि०) गुणी देखो।

गुनी—सिन्धु प्रान्तके हैदराबाद जिलेका तालुक। यह अक्षा० २४° ३०' तथा २५° १०' उ० और देशा० ६८° २०' एवं ६८° ५०' पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ८८६ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: ८१५०६ है। इसमें एक शहर और १५८ गांव आबाद हैं। मालगुजारी और सेस २। लाखसे ज्यादा पड़ती है। हमवार मैदानमें सिर्फ दो छोटे छोटे पहाड़ हैं।

गुनुपुर—मन्द्राज प्रान्तके विजगपटम जिलेकी एजेन्सी तहसील। यह गञ्जाम सीमा पर पड़ती है। क्षेत्रफल ६०० वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: ११३६८२ है। इस में ११४८ गांव आबाद हैं।

गुनोबर (फा० पु०) एक तरहका देवदार या सनोबर। इसका पेड़ उत्तर-पश्चिम हिमालय पर्वत पर ६००० से १०००० फुटकी ऊंचाई पर होता है। इसके काठ बहुत मजबूत और कड़े होते हैं। चिलगोजा नामक मेवा इसी वृक्षका फल है।

गुन्यफल (सं० पु०) नारिकेलवृक्ष।

गुन्दगड़—हिमालयकी पश्चिम सीमा पर अवस्थित एक पर्वत। अङ्गरेजोंके आनेके पहले इस पर्वत पर लुटेरेका दल रहता था। इस पर्वतके उत्तर हरिपुरके सम्मुखभागमें मुरिग्राम है। विद्रोहके समय मेजर एवट इसी पर्वत पर आ छिपे थे।

गुन्दगुच्छक (सं० पु०) गुच्छकरञ्ज।

गुन्दल (सं० पु०) गुन् इति शब्देन दल्यते ऽसौ दल-णिच् कर्मणि अच। मर्द्दलध्वनि, मृदङ्गका शब्द।

गुन्दाल (सं० पु०) एक तरहका पक्षी, तीतर, दुराज।

गुन्दिकोटा—दाक्षिणात्यमें एक नगर और दुर्ग। यह दुर्ग कड़ापाके मध्यस्थलमें अक्षा० १४° ५१' उ० और देशा० ७८° २२' पू०के मध्य पर्वतशृङ्गके ऊपर अवस्थित है। इसके दक्षिणको ओर पर्वत फोड़ कर पेन्ना नदी कड़ापा जिला हो कर प्रवाहित है। १८०० ई०को निजामने यह जिला अङ्गरेजोंको दिया था।

गुन्द्र (सं० पु०) गुद्रि कर्मणि अच्। १ एक तरहकी घास। २ मूलयुक्त बृहत् तृण, जड़वाली बड़ी बड़ी घास। इसका गुण कषाय मधुररस, शीतवीर्य, पित्तघ्न, रक्तनाशक, मूत्रकृच्छ्र, स्तन्य, मूत्र और रजशोधक है।

(भावप्रकाश पू० १म भाग)

गुन्द्रमूला (सं० स्त्री०) गुन्द्रस्य मूलमिव मूलं यस्या: बहुव्री०। १ एरका तृण, एक तरहकी घास। (भावप्रकाश पूर्व० १ भाग) २ मुस्तकतृण।

गुन्द्रा (सं० स्त्री०) गुन्द्रः तत्सादृश्यमस्त्यस्य मूले गुन्द्र

अच्छुटाप्। १ एरका तृण। २ भद्रमुस्तक, एक तरहकी सुगन्धित घास। ३ प्रियङ्गु वृक्ष, यह औषधके काममें लाया जाता है। ४ गवेधुका, एक तरहका घास। ५ देवधान्य। ६ रोचनिका। ७ गुडूची। ८ शिरीषवृक्ष। ८ दर्भ कुश।

गुन्द्राल (सं० पु०) गुन्द्रं मिथ्यावचनं आलाति आ-ला-क। एक तरहका पक्षी, चकोर।

गुन्ना (गन्ना) बेगम, एक शाहजादी। यह नवाब अली कुली खाँकी लड़की थीं। पहले उनकी शादी नवाब सफदर जङ्गके बेटे शुजा उद्-दौलाके साथ हुई थी, परन्तु पीछेको वजीर इमदाद-उल-मुल्क गाजी-उद्-दीनको व्याही गयीं। धौलपुरके पास नूराबाद बागमें उनकी कब्र है। वह अपने काम और जहनके लिये मशहूर हैं। कविता बहुत उत्साहपूर्ण होती थी। उन्होंने हिन्दी भाषामें गाने बनाये, आज भी गाये और अच्छे समझे जाते हैं। १७७५ ई०को उनका मृत्यु हुआ।

गुन्नी (हिं० स्त्री०) एक तरहका कोड़ा। इसका व्यवहार व्रजमंडलमें होता है। होलीके अवसर पर स्त्री पुरुष इसी कोड़ेसे एक दूसरेको मारते हैं।

गुन्नौर—युक्तप्रदेशके बदाऊं जिलेकी उत्तरपश्चिम तहसील। यह अक्षा० २८° ६' तथा २८° २८' उ० और देशा० ७८° १६' एवं ७८° ३८' पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ३७० वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १६२२८१ है। एक नगर और ३१३ ग्राम प्रतिष्ठित हैं। मालगुजारी कोई २१६०००) और शेष २६०००) रु० है। जङ्गल बहुत पड़ता है।

गुन्नौर—युक्तप्रदेशके बदाऊं जिलेकी गुन्नौर तहसीलका सदर। यह अक्षा० २८° १४' उ० और देशा० ७८° २७' पू० में अवध रुहेलखंड रेलवेके बबराल ष्टेशनसे ४ मील दक्षिण पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ६६४४ है। अकबरको अमलदारीमें गुन्नौर किसी महाल या परगनेका सदर था। मट्टीके झोपड़े बहुत, परन्तु पक्के मकान थोड़े हैं। १८५६ ई०को २० वीं धाराके अनुसार शहरका इन्तजाम होता है। बबराला ष्टेशनको गुन्नौर हो करके बहुत माल जाता है।

गप् (सं० क्रि०) १ बचाना, रक्षाकरना। (पु०) २ न्यायकरनेवाला, रक्षाकरनेवाला, विष्णु।

गुपचुप (हिं० स्त्री०) १ एक तरहकी मिठाई जो मुखमें देनेसे ही गल जाती है। इस तरहकी मिठाई खोवे और मैदे या सिंघाड़ेके आटेको घीमें पका कर और शीरेमें डाल कर बनाई जाती है। २ लड़कोंका एक खेल। इसमें एक लड़का अपना गाल फुलाता है और दूसरा लड़का उस पर घूंसा मारता है। ३ एक प्रकारका खिलौना।

गुपाल (हिं०) गोपाल देखो।

गुपिल (सं० पु०) गोपायति गुप-इलच्-किच्च। राजा।

गुप्त (सं०त्रि०) गुप कर्मणि क्त। १ रक्षित, जिसकी रक्षा की गई हो। इसका पर्याय—त्रात, त्राण, रक्षित, अवित और गोपायित है। २ छिपा हुआ। ३ गूढ़, जिसके जाननेमें कठिनता हो। (पु०) ४ सङ्गत। ५ वैश्योंकी उपाधि। ६ परमेश्वर। ७ भारतवर्षके विख्यात प्राचीन राजवंश। गुप्तराजवंश देखो।

गुप्तक (सं० पु०) १ राजा जयद्रथके एक सेनापति। (भारत १२६४ अ०) (त्रि०) गुप्त स्वार्थे कन्। २ गुप्त। (पु०) ३ बौद्धोंकी एक शाखा।

गुप्तकथा (सं० स्त्री०) गुप्ता चासौ कथा चेति कर्मधा०। गूढ़वाक्य, वह बात जो सभीके सामने प्रकाश नहीं की जाती।

गुप्तकाल—गुप्तराजाओंका प्रतिष्ठित एक स्वतन्त्र अब्द। वह गुप्तनृपतिभुक्ति, गुप्तसंवत्, गुप्तनृपकाल प्रभृति शब्दों द्वारा भी उक्त हुआ है। यह स्थिर करनेके लिये, किस समय वह गुप्तसंवत् चला. पाश्चात्य और देशीय भारत-प्रेमिक प्रधान प्रधान प्रायः सब प्रत्नतत्त्वविद्ने लेखनी उठायी है। परन्तु बहुत दिनके अशेष अनुसन्धान और असाधारण अध्यवसायसे भी कोई असन्दिग्ध प्रकृत गुप्तकाल ठहरा न सका। थोड़े दिन हुए बड़ी चेष्टाके बाद सर्ववादि-सम्मत प्रकृत गुप्तकाल निर्णीत हुआ है। अब लिखते हैं, कैसे वह गुप्तकाल ठहराया गया—

१०३० ई०को अल बेरूनीने अरबी भाषामें भारतवर्षके विवरण सम्बन्ध पर एक पुस्तक बनायी थी। फरासीसी विद्वान् रेनोने सबसे पहले उस ग्रन्थका फारसी अनुवाद प्रकाशित किया। (१) उस अनुवादका तात्पर्य यह है—भारतके साधारण लोग श्रीहर्ष, विक्रमा-

दित्य, शक, वल्लभी और गुप्तके नामसे सम्वत्का व्यवहार करते हैं। शक-सम्वत्से २४१ वर्ष पीछे वल्लभी सम्वत् चला है। गुप्तकालके विषयमें ऐसा है—गुप्त नामके निष्ठुर और दुर्दान्त कुछ लोग थे, उनके उच्छेदके बादसे ही यह सम्वत् चला है। गुप्तोंके बाद वल्लभी सम्वत् चला। इसी तरह जिस समय यजदजिर्दका सम्वत् ४०० था, उस समय श्रीहर्ष सम्वत् १४८८, विक्रमसम्वत् १०८८, शक ८५३, वल्लभी और गुप्तकाल ७१२ था।

फरासीसी विद्वान् रेनोकी उक्त पुस्तकको पढ़ कर पहिले पहल प्रत्नतत्त्वविदोंने यह निर्णय किया कि, जब गुप्तवंशके ध्वंसके बाद शकसंवत् (२४१ ३१८-१८ ई०) से गुप्तकाल प्रारम्भ हुआ है, तब यह बात निश्चित है, कि गुप्तराजगण उससे बहुत पहले विद्यमान थे। गुप्त-सम्राटोंके जितने भी अनुशासन-पत्र आविष्कृत हुए हैं, उनमेंसे अधिकांशमें किसी निर्दिष्ट सम्वत्के अङ्क लिखे हुए हैं। अब उन अङ्कोंकी प्रथम किस समयसे गणना प्रारम्भ होती है, इसका निर्णय करनेके लिये सभीको बडी भारी समस्यामें पड़ना पड़ा है। सबसे पहले जेम्स् प्रिन्सेप साहबने कहाउम स्तम्भ पर खुदे हुए स्कन्दगुप्तके शिलालेखमें इस तरहके १३३ अङ्क देखे थे, उन्होंने भ्रमसे उस लिपिको स्कन्दगुप्तकी समसामयिक न लिख कर उसकी मृत्युके १३३ वर्ष पीछेकी लिखा है। (२)

इसके बाद टमस साहबने फरासी विद्वान्के मर्मानुसार और ८४५ वलभी सम्वत्के वेरावलके शिलालेखके अनुसार ऐसा स्थिर किया—वलभी सम्वत् ई० सं० ३१८ से प्रारम्भ हुआ है। यह सम्वत् सम्भवतः गुरुसेन द्वारा चलाया गया है। इलाहाबाद, जूनागढ़ और भितरीके शिलालेखमें वर्णित गुप्तराजाओंने उस समयसे पहले राज्य किया था। शकराजाओंके बाद ही सौराष्ट्रमें गुप्तराजाओंका एकाधिपत्य हुआ था। (३)

इसके उपरान्त उक्त टमस साहबने १८५५ ई०में गुप्तकालके विषयका एक निबन्ध प्रकाशित किया; जिसमें अपने लासेनके मत (४)का अवलंबन कर १५० से १६० ई०के भीतर भीतर (५) गुप्तराजाओंका अभ्युदयकाल स्थिर किया। परन्तु कुछ दिन बाद अपने इस मतको बदल दिया और लिखा कि, गुप्तराजोंके शिलालेखमें उत्कीर्ण संवत और शककाल दोनों एक ही हैं। (६)

१८४४ ई०में प्रधान प्रत्नतत्त्वविद् कनिङ्गहामने भेलसाके बौद्धस्तूपके विषयमें एक बड़ी पुस्तक प्रकाशित की थी, जिसमें लिखा था—"३१८ ई०से गुप्तकाल प्रारम्भ हुआ है। मालूम होता है रेनो साहबका अनुवाद ठीक नहीं, अथवा अबूरैहान (अलबोरुनी) ही भ्रममें पड़ गये होंगे। गुप्तवंशके ध्वंससे गुप्तकाल चला है, यह बिल्कुल असम्भव है। क्योंकि इस बातको हम निश्चयसे जानते हैं कि, इसकी ५वीं या ६ठीं शताब्दीमें गुप्तराजगण राजत्व करते थे (७) किन्तु इन्होंने थोड़े दिन बाद ही इस सिद्धान्तको बदल दिया और पीछे गहरी गवेषणाके बाद स्थिर किया कि, १६६-६७ ई०मे गुप्तसम्वत् प्रारम्भ हुआ है। (८)। इसी तरह फिज एडवर्ड हालने (बापुदेवशास्त्रीकी सहायतासे) १८०-८१ ई०से और भारतके सुपण्डित डाक्टर भाऊदाजीने ३१८ ई०से गुप्तकालका प्रारम्भ स्थिर किया है। भाऊदाजीके मतसे वलभीराज वंशका अन्त होने पर कुमारगुप्त और स्कन्दगुप्त राजा हुए थे (९)। इसके अतिरिक्त और भी बहुतसे ऐतिहासिकोंने विपरीत मार्गका अवलम्बन कर गुप्तसम्वत्के प्रारम्भकालके निर्णयका प्रयत्न किया है।

फार्गुसन साहबने १८६९ और १८८० ई०में गुप्तकालके विषयमें दो निबन्ध प्रकट किये थे (१०)। उन लेखोंमें आपने रेनो साहब द्वारा वर्णित अलबेरुनीके मतको

(१) M. Reinaud's Fragments Arabes et Persans, p. 138 ff.

(२) Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. VII p. 36-37.

(३) Journal of the Royal Asiatic Society, Vol. XII (O. S.) p. I ff.

(४) Indische Alterthumskunde, Vol. II.

(५) Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. XXIV. p. 371 ff.

(६) Fleet's Inscriptionum Indicarum, Vol. III. p. 32.

(७) Gen. Cunningham's Bhilsa Topes, p. 138 ff.

(८) Indian Eras, p. 53-59

(९) Journal Bombay branch R. A. S. Vol. VIII p. 36 ff.

अभ्रान्त माना है । इनके मतसे ३१८-१९ ई०से गुप्तकाल प्रारम्भ हुआ है। इनका मत सम्पूर्ण अभ्रान्त न होने पर भी कुछ ठीक है। इसमें सन्देह नहीं है। इसके बाद १८८४ ई०में बंबईके प्रसिद्ध प्रत्नतत्त्वविद् रामकृष्ण-गोपाल भण्डारकरने अपने दाक्षिणात्यके इतिहासमें इस गुप्तसंवत्की समालोचना की, जिससे स्थिर हुआ कि, शकसं० २४१ या ई० सं० ३१९से ही गुप्तसंवत् प्रारम्भ हुआ है (११)।

१८८७ ई०में गवर्मेण्टके आनुकूल्यमें फ्लिट साहबने कठिन परिश्रमसे पहलेके आविष्कृत गुप्तराजाओंके समस्त शिलालेखों और ताम्रशासनोंको एकत्र प्रकाशित किया था (१२)। इन्होंने पूर्ववर्ती लेखकोंके मतोंको एकत्र करके तथा उनका खण्डन कर स्थिर किया कि, ३१८-२० ई०से ही गुप्तसंवत् चला होगा। उसमें यह भी दिखाया कि, रेनो साहबका अनुवाद ठीक नहीं है। अलबिरूनीके मूल अरबी भाषाके वृत्तान्तको पढ़नेसे स्पष्ट मालूम होता है कि, उन्होंने—"गुप्तवंशके ध्वंससे गुप्त-काल प्रारम्भ हुआ"—यह बात कहीं भी नहीं लिखी है उन्होंने सिर्फ इतना ही लिखा है कि, गुप्तवंश दुर्वृत्त और बलवान् था। इस वंशके लोप हो जानेके बाद भी जनसाधारण इनकी गणना करते थे। (१३)

फ्लिट् साहबने शङ्कर बालकृष्ण दीक्षितकी सहायतासे शिलालेखोंके आधार पर गुप्तकालका इस प्रकार निर्णय किया है—

१म। एरनके स्तम्भ पर खुदे हुए शिलालेखमें गुप्त सम्वत् १६५=शक सं० ४०६ लिखा गया है।

२य। महात्मा टाड द्वारा प्रकाशित बेरावलके शिलालेखमें वलभी सं० ९४५=शक सं० ११८६ गत।

३य। पण्डित भगवान्लाल इन्द्रजी द्वारा प्रकाशित बेरावलके शिलालेखमें वलभी सं० ९२७=शक सं० ११६७ गत।

४र्थ। खेड़ासे प्राप्त ताम्रपत्रमें, वलभी सं० ३३० =शक सं० ८२६ और ८२७ गत।

५म। नेपालसे पण्डित भगवान्लाल द्वारा संग्रहीत मानदेवके (१४) शिलालेखमें, गुप्त सम्वत् ३८६=शक सं० ६२७ गत।

६ष्ठ। मोरवीसे प्राप्त जाइक्कदेवके ताम्रशासन पर, गुप्त सं० ५८५ गत=शक सं० ८२६ और ८२७।

उपर्युक्त प्रमाणोंसे ज्ञात होता है कि, अलबिरूनी द्वारा कथित २४१ शक, उनके मतसे गताब्द था। इस तरह शकसं० २४१=गुप्त सम्वत् ० और शकसं० २४२= गुप्त सं० १ होता है। इसी तरह उन्होंने शक २४१ गत को और वर्त्तमान २४२ अर्थात् ३१८—२० ई०को गुप्त सम्वत्का प्रारंभ काल बतलाया है। किन्तु यह नहीं बतलाया कि, उन्होंने गुप्त सम्वत्को गताब्द न समझ कर चलिताब्द क्यों समझा है। हमारी समझसे यद्यपि उन्होंने अपने ग्रन्थमें गभीर गवेषणा, प्रगाढ़ अनुशीलन और पुनः पुनः अनुसन्धानका काफी परिचय दिया है, तथापि वे जिस सङ्कल्पमें उपनीत हुए हैं, वह भ्रमशून्य नहीं कहा जा सकता।

अलबीरूनीने साफ लिखा है कि—विक्रम सं० १०-८८, शक ९५३, और वलभी या गुप्तकाल ७१२ परस्पर समान हैं। इस प्रकारसे गुप्त सं० १=शकसं० २४१= विक्रम सं० ३७६ हुआ। इस जगह गुप्त सं० ०=शक सं० २४० हुआ। सुतरां जब २४१ शक गताब्द है, तब १ गुप्त सं० भी गत समझना चाहिये, ऐसी दशामें फ्लिटके मतसे ३१९—२० ई०को छोड़ कर ३१८—१९ ई०को ही गुप्तसम्वत्का प्रारम्भकाल माना जा सकता है। इसके माननेका कारण भी है।

५८५ गुप्त गताब्दमें फाल्गुन मासकी शुक्लपञ्चमीके दिन मोरवीका ताम्रशासन उत्कीर्ण हुआ था। यह

(१०) Jour. Roy. A. S. Vol. IV. p. 105 ff. and Vol. XIII. p. 281.

(११) R. G. Bhandarkar's Early History of Dekan, p. 99 ff.

(१२) इस वृहत ग्रन्थका नाम है—Corups Inscriptionum Indicarum, Vol. III.

(१३) Fleet's Insecriptionum Indicarum, Vol. p. III. 30.

(१४) फ्लिट साहबने मानदेवके शिलालेखको ३८६ सम्वत्का बतलाया है, पीछे विचक्षण डाक्टर कीलहर्न भी इन्होंके अनुवर्त्ती हुए हैं, Jour. A. S. of Bengal for 1889, pt. I. Table Col. 19.) किन्तु दोनोंकाही सिद्धान्त युक्तिसिद्ध नहीं है।

ताम्रशासन सूर्यग्रहणके उपलक्षमें प्रदत्त हुआ था। फ्लिट साहबके मतसे ८०५ ई०में ७ मईको यह ग्रहण हुआ था। उक्त ग्रहणके ८ मास ४ दिन बाद वह ताम्रफलक खोदा गया था। परन्तु ८२६ शक गताब्दमें भी कार्त्तिक या मार्गशीर्षमें, अर्थात् ८०४ ई०में १६ जूनको भी ग्रहण हुआ था। यह ग्रहण उक्त ताम्रशासनके खोदे जानेसे ३ मास ४ दिन पहले हुआ था। ग्रहणके थोड़े समय बाद ही ताम्रशासन लिखे जानेकी बात है। विशेषतः पूर्ववर्त्ती सूर्यग्रहणका उल्लेख न हो कर उस ग्रहणके पूर्ववर्ती ग्रहणका उल्लेख होगा, यह सम्भव नहीं हो सकता। सुतरां जब शक ८२६ गताब्द और गुप्त ५८५ गताब्द मिल रहा है। तब २४१ शक गताब्द = १ गुप्तकाल गत स्वीकार करना पड़ेगा।

गुप्त राजाओंके समस्त शिलालेखोंका मनन करनेसे ३१८ ई०से ही गुप्तकालका प्रारम्भ मानना पड़ता है। डाक्टर पिटर्सन, भाण्डारकर और औलर्डनबर्गका भी ऐसा ही मत (१५) है। और भी नाना कारणोंसे मि० फ्लिटका सिद्धान्त समीचीन नहीं जंचता है।

गुप्तकाशी—हिमालय प्रदेशके गढ़वाल जिलेके अन्तर्गत नागपुर विभागमें स्थित एक ग्राम। यहां गैर नदी आकर मन्दाकिनीके साथ मिली है। पुण्यधाम काशीक्षेत्रमें जिस प्रकार बहुत शिवलिङ्ग देखे जाते हैं, यह भी वैसा ही है। इस प्रकारसे शिवलिङ्गकी बहुलता और स्थानका माहात्म्य कहते हुए यहांके लोग कहते हैं—"जितने कङ्कर उतने शङ्कर"—अर्थात् यह स्थान शिवमय है। काशीधाममें जिस तरह विश्वेश्वर और भागीरथीकी दो धाराओंसे पूजा होती है, उसी प्रकार यहां भी विश्वनाथ तथा यमुना और भागीरथीकी पूजा होती है। इन दोनों नदियोंका जल विश्वनाथके मन्दिरके सामनेकी पुष्करिणीमें आकर गिरा है। इस मन्दिरकी प्रात्यहिक सेवाके लिये गोरखालियोंने रुपये दिये हैं।

गुप्तगति (सं० पु०) गुप्ता गतिर्यस्य, बहुव्री०। १ गुप्तचर। (स्त्री०) गुप्ताचासौ गतिश्चेति कर्मधारय समास। २ गूढ़ गमन।

गुप्तगन्धि (सं० स्त्री०) एलबालुक, एक प्रकारका गन्ध द्रव्य।

गुप्तगोदावरी—एक क्षुद्र नदी। यह बुन्देलखण्ड जिलेमें चित्रकूट पर्वतसे ८ मील दक्षिण पूर्व पहाड़की कन्दरासे निकलकर गोदाईनालामें गिरती है। इसके पवित्र जलमें स्नान करनेके लिये दूर दूर देशके मनुष्य यहां आते हैं। इस गुहामें नागरी अक्षरसे लिखा हुआ एक शिलाफलक है।

गुप्तघाट—सरयूतीरस्थ एक तीर्थस्थान। इसी स्थानसे रामचन्द्रने स्वर्गारोहण किया। इसका वर्त्तमान नाम गोप्तारघाट जो फैयजाबादमें अवस्थित है।

गुप्तचर (सं० त्रि०) गुप्तश्चरो यस्य, बहुव्री०। १ जिसका गुप्तचर हो। (पु०) गुप्तश्चासौ चरश्चेति। २ दूतविशेष, जो किसी बातका चुपचाप भेद ले, भेदिया, जासूस।

गुप्तदान (सं० पु०) वह दान जिसे दाताके अतिरिक्त और दूसरा कोई जानने न पावे

गुप्तपत्र (सं० पु०) मध्वालु, एक प्रकारका कन्द।

गुप्तपुष्प (सं० पु०) सप्तपर्णवृक्ष, छतिवनका पेड़।

गुप्तवीज (सं० क्ली०) तृण, घास।

गुप्तमणि (सं० पु०) कुमारियोंकी क्रीड़ाविशेष।

गुप्तमार (हिं० स्त्री०) १ इस तरहकी चोट देना जिससे शरीर पर कोई चिह्न दीख न पड़े, भीतरीमार। २ छिपकर किया हुआ अनिष्ट।

गुप्तराजवंश—भारतवर्षका एक महाबली और प्रबल पराक्रमी राजवंश। विष्णु, वायु, ब्रह्माण्ड और मत्स्यपुराणमें इस राजवंशका उल्लेख है। यथा—

> "नव नागाः पुरीं चम्पां नागा भोक्ष्यन्ति सप्त वै।
> अनुगङ्गं प्रयागं च साकेतं मगधांस्तथा।
> एतान् जनपदान् सर्वान् भोक्ष्यन्ते गुप्तवंशजाः।"
>
> (ब्रह्माण्ड उपसंहारपाद)

नागवंशीय सात राजा मथुरापुरीका भोग करेंगे, किन्तु गुप्तवंशीय गण मथुरा, अनुगङ्ग, प्रयाग, अयोध्या और मगध इन सभी जनपदोंका उपभोग करेंगे।

वास्तवमें किसी समय गुप्तराजोंने सम्पूर्ण उत्तरभारतमें अपना आधिपत्य विस्तार किया था और प्रबल पराक्रमी राजचक्रवर्ती रूपसे प्रसिद्ध थे, यह बात गुप्तराजाओंके समयके शिलालेखोंसे भली भांति मालूम हो जाती है।

गुप्तवंशीयोंमेंसे एक वंश राजचक्रवर्ती और भारतका सम्राट् हुआ था, तथा अन्य कई एक वंश केवलमात्र जनपदविशेषके राजा हुए थे। पहले गुप्तसम्राटोंका ही इतिहास लिखा जाता है।

गुप्तसम्राट गुप्त—गुप्तगण किस जातिके थे, इसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता। अध्यापक उहलमनने गुप्त राजाओंको वैश्य जाति बतलाई है; उनके मतसे 'गुप्त' वैश्योंकी उपाधि है। परन्तु नाना स्थानोंके शिलालेखोंसे यह मालूम हुआ है कि, गुप्त नामके एक राजा हुए थे. वे ही इस वंशके आदिपुरुष थे। सम्भवतः इन्हींके परवर्ती गुप्तसम्राटोंने 'गुप्त' उपाधि व्यवहृत की होगी।

गुप्तवंशका उदयकाल ३१८ ई०से आरम्भ हुआ है। कुशन वंशके अधःपतनके समय उत्तरी विहारके लिच्छवि दक्षिणमें गङ्गाके उस पार तक अपना आधिपत्य जमाये हुए थे और उन्होंने पुरानी राजधानी पाटलीपुत्र भी अपने अधिकारमें कर लिया था। पहले ये लोग मगधके अजातशत्रुसे पूर्णरूपसे पराजित किये गये थे। चन्द्रगुप्त नामक एक स्थानीय प्रधान हिन्दूने लिच्छविकी लड़कीसे विवाह किया। अब ये पाटलीपुत्रके राज्यसिंहासन पर अभिषिक्त हुए और इन्होंने क्रमशः वहांकी आस पासकी दूसरी दूसरी शक्तियों पर अपना आधिपत्य फैला दिया। इनका प्रभाव यहां तक बढ़ गया कि उसी समय अर्थात् ३१८ ई०से इन्होंने गुप्त नामका एक शक चलाया। इनका राज्य उत्तर तथा दक्षिण विहार, अवध, गङ्गाकी उपत्यका और प्रयाग तक विस्तृत था।

थोड़े समय राज्य करनेके बाद इन्होंने अपने पुत्र समुद्रगुप्त पर राज्यभार अर्पण किया। कहा जाता है कि समुद्र गुप्त सब राजाओंसे उद्योगी, सहनशील और उत्साही थे। राज-सिंहासन पर बैठनेके बाद ही इन्होंने समस्त भारतवर्ष जय करनेकी इच्छा की। इन्होंने अपने असीम उत्साहसे विन्ध्य पहाड़के जङ्गलों और कई एक द्वीपों पर अपना अधिकार जमाया। शीघ्रही ग्यारह राज्य इनके अधिकारभुक्त हुए।

इनकी ख्याति यहां तक फैल गई कि एक दिन लङ्काके अधिपति मेघवर्माने एक दूतको बहुतसे अमूल्य उपहार देकर समुद्रगुप्तके निकट भेजा था। दक्षिणमें इनका आधिपत्य बहुत कम स्थानों पर था।

भारतवर्षके उत्तरमें इनका प्रभुत्व बहुत बढ़ा चढ़ा था। नौ राजा सिंहासन च्युत किये गये और उनके राज्य गुप्त राज्यमें मिला लिये गये। बहुत दूर तक इनका ऐश्वर्य तथा आधिपत्य फैल जानेके कारण ये अपनेको चक्रवर्त्ती समझते थे। इसी गौरवसे इन्होंने प्राचीन अश्वमेध यज्ञ किया था। यह यज्ञ चक्रवर्तीके अतिरिक्त दूसरे राजा नहीं कर सकते थे।

विन्ध्यपर्वतके जङ्गलवासी असभ्य जातियां समुद्रगुप्तके अधीन आ गई। इस समय इनका राज्य पूर्वमें ब्रह्मपुत्र, उत्तरमें हिमालय, पश्चिममें सतलज, यमुना और वेतवा नदी तथा दक्षिणमें नर्मदा तक विस्तृत था।

राजा समुद्रगुप्त कवि, गायक तथा संस्कृतके सच्चे प्रेमी थे। राजा दरबारके एक प्रसिद्ध कविने एक शिलालेखमें राजाका राज्य विवरण संस्कृतके गद्य तथा पद्यमें सुचारु रूपसे लिखा है।

यद्यपि समुद्रगुप्तकी मृत्युकी नियत तिथिका पूरा पता नहीं चलता है तथापि यह निश्चय है कि इन्होंने कमसे कम ५० वर्ष तक राज्य किया था। इनके मरनेके बाद प्रायः ३७५ ई०में इनके पुत्र चन्द्रगुप्त राजगद्दी पर बैठे। इनके पितामहका नाम भी यही होने कारण इन्होंने विक्रमादित्यकी उपाधि ग्रहण की। इनका राज्यकार्यके संचालन की ओर विशेष ध्यान था जिससे इनके पूर्वजोंका यश लुप्त न हो। पश्चिममें समुद्रगुप्तका अधिकार केवल मध्य भारत तक ही था। उन्होंने सुराष्ट्रके शकसत्रपके प्रबल राजाओंको जीतनेकी चेष्टा न की थी। इस लिये द्वितीय चन्द्रगुप्तने ३९० ई०में समस्त मालवा तथा सुराष्ट्र (काठियावाड़)के द्वीपोंको अपने राज्यमें मिला लिया। अब इनका राज्य पश्चिममें अरब समुद्र तक फैल गया। सत्रपवंश जो एक समय भारतवर्षमें एक बलिष्ठ तथा प्रभावशाली वंश गिना जाता था, वह इनके इस आक्रमणसे सदाके लिये लुप्त हो गया।

दिल्लीके लौहस्तम्भमें इनके सांग्रामिक यशका वर्णन संस्कृत भाषामें अच्छी तरहसे किया गया है। कहा जाता है कि इन्होंने अपने बाहुबलसे समस्त भारतवर्ष

पर आधिपत्य जमा लिया था। बहुत दिन राजा करनेके बाद ४१३ ई०में इनका प्राणान्त हुआ।

चीनके बौद्धयात्री फाहियनने चन्द्रगुप्तके राज्यका सम्पूर्ण विवरण अपने ग्रन्थमें लिखा है। ये ४०६ ई०में भारतवर्ष आये थे और कुछ वर्ष तक यहां रहे। इतने दिनोंमें इन्होंने चन्द्रगुप्तका सारा राज्य परिभ्रमण कर जो कुछ देखा या सुना उसे अपनी किताबोंमें लिख लिया था। वे लिखते हैं प्राचीन राजधानी पाटलीपुत्र अब भी एक उन्नति दशामें है और यहां बहुत मनुष्य वास करते हैं। इसके चारों ओर बड़े बड़े शहर हैं। प्रायः सभी मनुष्य सच्चे और धर्मात्मा दीख पड़ते हैं। राजधानीमें दो बौद्धमठ हैं जिनमें कमसे कम छह या सात सौ विज्ञ सन्यासी रहते हैं। कोई भी बौद्ध उत्सव बहुत धूमधामसे किया जाता और उसमें बहुतसा खर्च होता है। राज्यकार्य शान्त और सुचारु रूपसे चलाया जाता है। प्रजा पर किसी तरहका कर निरूपित नहीं। यात्री भी इच्छानुसार जहां तहां यात्रा कर सकते हैं। केवल जमीनकी मालगुजारी ही राज्यकी आमदनी है। अपराधीको साधारण दण्ड दिया जाता और राजकर्मचारियोंका वेतन नियत है। अच्छे कुलके आदमी शिकार नहीं कर सकते अथवा मछली भी नहीं बेचने पाते। यह सब काम नीच जातियोंके नियत है। अच्छे आदमी किसी प्रकारका मादक द्रव्य तथा मांस, मछली और लहसुन नहीं खाते। शहरमें एक भी कसाई तथा शराबकी दूकान नहीं दीख पड़ती। उस समय नेपालके पहाड़ी स्थानोंकी दशा शोचनीय थी। प्रसिद्ध श्रावस्ती शहर तथा कपिलवस्तु और कुसी नगरका भग्नावशेष दृष्टिगत होता था।

समस्त राज्यमें शान्ति फैली हुई थी। चोर या डकैतका नामोनिशान भी न था। यात्री भयरहित यात्रा कर सकते थे और विद्याकी यथेष्ट उन्नति थी।

ई०के ५३ वर्ष पहले उज्जैनके विक्रमादित्यके समयमें संस्कृतका जैसा आदर था चौथी शताब्दीको समुद्रगुप्त और उनके लड़के द्वितीय चंद्रगुप्तके समयमें भी संस्कृतको वैसा ही स्थान मिला था।

द्वितीय चन्द्रगुप्तकी मृत्युके बाद उनके लड़के प्रथम कुमारगुप्त सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। इनके समयमें कोई विशेष घटना न हुई थी। ये भी पिताकी भांति बड़े शूर वीर थे। राज्यके अंतिम समयमें विदेशी आक्रमणकारियोंसे इन्हें बहुत कष्ट झेलना पड़ा था।

४३० ई०में ख्वारिज्मके श्वेतहूण मध्य एशियाके रोमन राज्यके पूर्वीय प्रदेशों पर धावा करनेके लिये चले, उस समय वहांके राजा थिउडोस थे। इस बार वे लौट जानेके लिये बाध्य हुए। थोड़े समयके बाद पुष्यमित्र-वंशकी सहायता पाकर उन्होंने दूसरे रास्ते से पचबार भारतवर्ष पर चढ़ाई की।

इस आक्रमणसे कुमारगुप्त बहुत क्षति ग्रस्त हुआ, और राज्यका प्राय: समस्त भाग नष्ट भ्रष्ट हो गया। गुप्तवंशकी अवनति इसी समयसे आरम्भ हुई। इसी चिन्तासे कुमारकी मृत्यु हुई। बाद इनके पुत्र स्कन्दगुप्तने ४५५ ई०के अप्रेल मास राजसिंहासन पर आरोहण किया। इन्होंने अपने राज्यका खोया हुआ बहुतसा भाग पलटाया और पश्चिमीय तथा पूर्वीय प्रदेश पर पुन: अपना अधिकार जमाया था। इनके राज्य-शासनके अन्त समय अर्थात् ४८० में इन्हें शत्रुओंसे बहुत तकलीफ झेलनी पड़ी। इनकी मृत्युके साथ साथ गुप्तवंशकी श्री भी जाती रही। इनके मरनेके बाद इनके भाई पुरगुप्त तथा दो और उत्तराधिकारी राज्यके केवल पूर्वीय प्रदेशों पर शासन करते रहे।

पुरगुप्तके बाद इनके पुत्र नरसिंहगुप्त राजा हुए। इन्होंने और दूसरे दूसरे राजाओंकी सहायतासे हूणके प्रधान मिहिरकुलको ५२४ ई०में काश्मीरको मार भगाया। इस तरह राज्यके बहुतसे भागों पर इन्होंने पुन: अधिकार जमाया। इनकी मृत्युके बाद उनके पुत्र द्वितीय कुमारगुप्त ४७३ ई०में राज्याभिषिक्त हुए। इन्होंने सिर्फ तीन चार वर्ष तक राज्य किया। इनके बाद इनके उत्तराधिकारी बुटगुप्त हुए। इनके समयके बहुतसे शिलालेखोंसे पता चलता है कि इन्होंने २७वर्ष (४७७-४८६) तक राजा किया था। युएन चुअंगसे मालूम होता है कि ये शक्रादित्यके पुत्र थे। दिनाजपुर जिलेके दामोदर पुर ग्रामके दो ताम्रलेखोंसे पता चलता है कि बुध गुप्तका राजा पुण्ड्रवर्द्धनभुक्ति या उत्तरीय और पूर्वीय

बङ्गाल तक फैला हुआ था। वहांके शासनकर्त्ता ब्रह्मदत्त और जयदत्त थे। सारनाथकी बाद्धमूर्तियोंमें उत्कीर्ण लेखोंसे मालूम होता है कि इनका अधिकार काशीमें भी था।

बुधगुप्तके चलाये हुए सिक्के ४८५--६ ई०से प्रचलित हुए जिनसे पता लगता है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष पर इनका अधिकार था।

बुधगुप्तके बाद तथागतगुप्त राजसिंहासन पर बैठे। इन्होंने थोड़े दिनों तक राज्य किया। बाद बालादित्य राजगद्दी पर बैठे, इनके समयमें मध्य भारत पर हूनराज तोरमाणने पुनः चढ़ाई की, थोड़े समय तक हो हूनका अधिकार मध्य भारत पर बना रहा बाद ५२०-११ ई०में गोपराज तथा उच्चकल्पके राजा हस्तिन्की सहायतासे बालादित्यने हूनोंको मार भगाया। उच्चकल्पके महाराज परिव्राजक हस्तिन तथा संक्षोभ ये दोनों मध्य भारतको चार दीवारोंकी नाईं रक्षा किये हुए थे। हूनका अधिकार मध्य भारत वर्षसे सदाके लिये जाता रहा और मिहिरकुल ५१० ५११ ई०में कारिकिणको लड़ाईमें परास्त हुआ तथा मारा गया।

बालादित्यके बाद वज्रगुप्त वंशके उत्तराधिकारी हुए। परन्तु ये मन्दसौरके यशोधर्मन्से लड़ाईमें मारे गये। इनके बाद ईशानवर्मा तृतीय कुमारगुप्त, कृष्ण गुप्त, हर्षगुप्त और जीवितगुप्त कई एक राजा इस वंशमें क्रमशः हो गये। उनमेंसे बहुतोंको महाराजाधिराज और परम भट्टारक की उपाधि मिलि थी। इससे साबित होता है कि वे नाम मात्रके राजा नहीं थे।

अफसड़-लेखसे मालूम होता है कि कृष्णगुप्त एक बड़े शूरवीर राजा थे। इन्होंने कई एक शत्रुओंको परास्त किया था। यशोधर्मन् इनका कट्टर दुश्मन था।

हर्षके समयमें कोई विशेष घटना न हुई थी। युद्ध विद्यामें वे अच्छी तरह निपुण थे। इन्होंने कई एक लड़ाईयां जीती थीं। उनके वक्षस्थल पर कई जगह अस्त्रोंके आघातके चिह्न दीख पड़ते थे।

प्रथम जीवितगुप्त हर्षके लड़के थे। इनके समयमें गुप्तवंशको बहुत कुछ उन्नति हुई। समस्त राज्यमें शान्ति विराजती थी।

जीवितगुप्तके मरनेके बाद तृतीय कुमारगुप्त राजा हुए। इनका जीवन सुखसे व्यतीत न हुआ क्योंकि गौड़-वंशसे इन्हें अधिक कष्ट भोगना पड़ा था। आन्ध्रवंश भी उस समय बहुत प्रबल हो उठा था। इनके बहुतसी गजारोही तथा अश्वारोही सेना थी। गङ्गाकी उत्तर उपत्यकामें मौखरीवंश भी बहुत बढ़ा चढ़ा था।

मौखरी अपनेको उन सौ लड़कोंके वंशधर बतलाते थे जिन्हें राजा अश्वपतिने वैवस्वत (यम) से प्राप्त किया था। इनकी दो शाखायें थीं जिनमेंसे एक युक्तप्रदेशके जौनपुर और बाराबङ्की जिलेमें और दूसरी बिहारके गया जिलेमें रहती थी।

इस वंशके हरिवर्मा, आदित्यवर्मा और ईश्वरवर्माके सिर्फ महाराजा उपाधि थी। आदित्यवर्माकी स्त्रीका नाम हर्षगुप्ता था। ये सम्भवतः राजा हर्षगुप्तकी बहिन थीं। आदित्यके बाद ईश्वरवर्मा राजा हुए। इनकी स्त्रीका नाम उपगुप्ता था। ईश्वरवर्माके पुत्र ईशानवर्मा और उपगुप्ताने आन्ध्रको पूरी तरह परास्त किया था।

इनके बाद तृतीय कुमारगुप्त उत्तराधिकारी हुए। इनके समयमें भी मौखरोंने कई बार उन पर धावा किया परन्तु कुछ करा न सका। इनकी मृत्यु प्रयाग (इलाहाबाद) में हुई थी।

कुमारगुप्तके बाद उनके लड़के दामोदरगुप्त राजा हुए। इन्हें भी अपने जीवन भर मौखरोंसे लड़ना पड़ा था और उन्होंसे लड़ते लड़ते इन्होंने अपना प्राण भी त्याग किया।

दामोदरगुप्तके बाद उनके लड़के महासेनगुप्त राज्याभिषिक्त हुए। इन्होंने मौखरियोंको मार भगानेके लिये श्रीकण्ठके पुष्पभूतिवंशसे मित्रता की। इस समय कामरूपमें भगदत्तवंश प्रबल प्रतापी हो उठा था। राजा सुस्थितवर्माने महासेन पर चढ़ाई की, परन्तु पूरी तरहसे वह पराजित किया गया। इस लड़ाईसे राजा महासेनकी ख्याति बहुत दूरतक फैल गई।

इनके बाद इनके छोटे पुत्र माधवगुप्त सिंहासन पर बैठे। इन्होंने गौड़ राजासे मित्रता कर मौखरीकी राजधानी पर आक्रमण किया।

इनके बाद राज्यवर्द्धन तथा हर्ष इस वंशके क्रमशः

राजा होते गये। हर्षने कामरूपके राजा भास्करवर्मासे मिलकर गौड़ पर चढ़ाई कर दी और उनकी स्वतन्त्रता छीन ली। हर्षकी मृत्युके बाद आदित्यसेनने राजसिंहासन पर आरोहण किया। ये बड़े शूरवीर राजा निकले और इस समय यह वंश कुछ उन्नतिशिखर पर पहुंच गया था। इनके समयके बहुतसे शिलालेख पाये जाते हैं जिनसे पता चलता है कि इनका राज्य समुद्र किनारे तक विस्तृत था और उस समय ये एक चक्रवर्त्ती राजामें गिने जाते थे। कहा जाता है कि इन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया था। इन्हें महाराजाधिराज और परम भट्टारक उपाधि मिली थीं। शाहपुर-शिलालिपिसे मालूम पड़ता है कि ये ६७२-८३ ई०में विद्यमान थे।

देववरणारक लेखसे पता चलता है कि आदित्यसेनके बाद उनके लड़के देवगुप्त हुए और देवगुप्तके बाद उनके लड़के विष्णुगुप्त गुप्तवंशके राजसिंहासन पर अभिषिक्त हुए। इस वंशके अंतिम राजाका नाम जीवितगुप्त (२य) था इनके समयमें गौड़ वंशने पुनः धावा किया और इस बार गुप्त राजाको नष्ट भ्रष्ट कर दिया। एक समय जो गुप्तवंश एक उच्च शिखर पर चढ़ गया था अब उसकी श्री सदाके लिये जाती रही।

पृष्ठ ४१२ में गुप्तराजवंशकी तालिका देखो।

गुप्तवंश (सं० त्रि०) गुप्तः लुक्कायितः वंशोऽस्य, बहुव्री०। १ जो मनुष्य अपना उपयुक्त वंश छिपा कर दूसरा वंश धारण करे। (पु०) गुप्तश्चासौ वंशश्चेति। २ गूढ़वंश, जो दूसरे वंशमें होनेके कारण किसी दूसरेसे पहचाना न जा सके।

गुप्तस्नेह (सं० पु०) गुप्तःस्नेहो यत्र,बहुव्री०। १ अङ्कोठवृक्ष, अखरोटका पेड़ २ गूढ़स्नेह।

गुप्ता (सं० स्त्री०) गुप्त-टाप्। १ कपिकच्छु, कौंचका वृक्ष। २ परकीया नायिका, वह नायिका जो सुरति छिपानेका उद्योग करती है। कालके अनुसार इसके तीन भेद हैं—भूतसुरतिगुप्ता, वर्त्तमान सुरतिगुप्ता, और भविष्य सुरतिगुप्ता। ३ रक्षिता स्त्री। ४ चन्दनविशेष।

गुप्ताफल (सं० क्ली०) श्वेत शीमका बीज, सफेदसेमका बीया।

गुप्ति (सं० स्त्री०) गुप-क्तिन्। १ छिपानेकी क्रिया। २ आच्छादन। ३ रक्षण, रक्षा करनेकी क्रिया। ४ तंत्रके अनुसार ग्रहण किए जानेवाले मंत्रका एक संस्कार। ५ गुफा, कन्दरा। ६ कारागार, कैदखाना। ७ गड्ढा, खन्ता। ८ अहिंसा आदि योगके अङ्ग, यम। ९ गड्ढा बनानेके लिये जमीन खोदना। १० नावका छेद। ११ मन वचन कायका वह धर्म, जिससे संसार परिभ्रमणके कारणोंसे आत्माकी रक्षा की जाती है। सुप्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामी गुप्तिका स्वरूप ऐसा लिखते हैं—

"सम्यग्योगनिग्रहः गुप्तिः। (तत्त्वार्थसूत्र ९, अ० ९)

योग अर्थात् मन वचन और शरीरकी क्रिया, इनके यथेच्छ आचरण (स्वेच्छाप्रवृत्ति) को रोकनेका नाम योगनिग्रह है और योगका निग्रह ही गुप्ति है। इससे योगों द्वारा जो कर्मोंका आस्रव होता वह संवृत अर्थात् रुक जाता है। साधारणतः गुप्तिके तीन भेद हैं-मनोगुप्ति वचनगुप्ति और कायगुप्ति।

गुप्तिपाड़ा—इसका असली नाम गुप्तपल्ली अर्थात् गुप्त उपाधिधारी वैद्यजातिका वासस्थान है। बङ्गालमें हुगली जिलेकी उत्तर सीमामें अवस्थित एक प्राचीन गण्डग्राम वा नगरविशेष। कविकङ्कण मुकुन्दराम चक्रवर्ती प्रणीत चण्डीग्रन्थमें धनपति और श्रीमन्त सौदागरकी समुद्रयात्राके प्रसङ्गमें, कविवर कृष्णराम कृत शीतलामङ्गलमें ऋषिकेश सौदागरकी दक्षिणपाटनकी यात्राके प्रस्तावमें तथा गङ्गाभक्तितरङ्गिणी ग्रन्थमें भी इस गुप्तिपाड़ाका उल्लेख मिलता है। इन ग्रन्थकारोंने जिस समयमें गुप्तिपाड़ाका उल्लेख किया है, उस समय सुरतरङ्गिणी भागीरथी गुप्तिपाड़ाकी उत्तर दिशासे (अर्थात् उसे दक्षिणमें छोड़ कर) सागरकी ओर बहती थीं।

इस ग्राममें ब्राह्मण, वैद्य और कायस्थ आदि उच्च वर्णके बहुसंख्यक हिन्दू जातियोंका वास था। यहां बहुतसे बङ्गाली पण्डितों और गुणियोंका आविर्भाव हुआ है। प्रसिद्ध कवि पण्डित वाणेश्वर विद्यालङ्कार और उनके पूर्व पुरुषोंमेंसे बहुतोंका जन्म इसी गुप्तिपाड़ामें हुआ था।

इस गुप्तिपाड़ामें निदानके टीकाकार विजयरक्षित और अमरकोषके टीकाकार भरतमल्लिकका जन्म हुआ था। सङ्गीतविद्याविशारद सुकवि कालीमिर्जा भी यहीं आविर्भूत हुए थे।

गुप्तराजवंश

गुप्त
|
घटोत्कच — लिच्छविराज
|
चन्द्रगुप्त (१म) = कुमारदेवी
३१६ ई०
|
समुद्रगुप्त = दत्तदेवी
|
देवगुप्त (१म)
चन्द्रगुप्त (२य)
विक्रमादित्य (१म) = (१) ध्रुव देवी, (२) कुबेरनागा (४०१-४१३ ई०)
|
- कुमारगुप्त (१म) महेन्द्रादित्य (शक्रादित्य ?) = अनन्त देवी (४१०-४५५)
  - स्कन्दगुप्त (विक्रमादित्य (२य) (४५५-४६७)
  - पुरगुप्त = वत्सदेवी
    - नरसिंहगुप्त = महालक्ष्मी देवी (बालादित्य (१म)
      - कुमारगुप्त (२य) ४७३-७४)
        - वज्रगुप्त
  - बुधगुप्त (४७७-४९६)
    - तथागतगुप्त
      - बालादित्य २य (भानुगुप्त ?) ५५० ई०
        - वज्रगुप्त कृष्णगुप्त
- गोविन्दगुप्त
- गुप्तलके गुप्त
- प्रभावती
  - महाराष्ट्रके वाकाटक राजा

- हर्षगुप्त
  - जीवितगुप्त (१म)
    - कुमारगुप्त (३य)
      - दामोदरगुप्त
        - महासेनगुप्त
          - देवगुप्त (२य) ?
          - कुमारगुप्त (राज्य नहीं किया)
          - माधवगुप्त = श्रीमतीदेवी
            - आदित्यसेन = कोणदेवी
              - देवगुप्त (३य) = कमलादे
                - विष्णुगुप्त (चन्द्रादित्य ?) = इज्जादेवी
                  - जीवितगुप्त (२य)
        - महासेनगुप्ता
          - प्रभाकरवर्द्धन
            - राज्यवर्द्धन
            - सम्राट् हर्षवर्धन
- हर्षगुप्ता
  - ईश्वरवर्मा
    - ईशानवर्मा
      ५५४ ई०

यहांके स्त्री पुरुष दोनों ही इसग्रामसे सुरसिक और सुवक्ता कह कर प्रसिद्ध हैं।

गुप्ती (हिं० स्त्री०) एकतरहकी किरच या पतली तलवार जो छड़ीके अन्दर इस तरह रखी हुई रहती है कि आवश्यता हो आने पर बाहर निकाली जा सके।

गुप्तोत्प्रेक्षा (सं० स्त्री०) वह उत्प्रेक्षा जिसमें मानो', 'जानो' आदि सादृश्यवाचक शब्द न हो।

गुप्फा (हिं० पु०) १ फुंदना, झब्बा। २ फूलोंका गुच्छा।

गुफा (हिं० स्त्री०) कन्दरा, गुहा।

गुफ़गू (फा० स्त्री०) वार्त्तालाप, बात चीत।

गुबरैला (हिं० पु०) एक तरहका छोटा कीड़ा जो सदा गोबर या मलमें रहता और उसे खाता है।

गुबार (अ० पु०) १ गद, धूल। २ मनमें दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष।

गुबारा (हिं०) गुब्बारा देखो।

गुबिंद (हिं०) गोविन्द देखो।

गुब्बा (सं० पु०) रस्सीके मध्यमें डाला हुआ फन्दा।

गुब्बाड़ा (हिं०) गुब्बारा देखो।

गुब्बारा (हिं० पु०) लंबे आकारकी कोई चीज जिसमें गर्म वायु या किसी प्रकारकी वाष्प आदि देकर आकाशमें उड़ाते हैं। यह रेशम अथवा और दूसरे तरहके वस्त्रके थैलेमें रबरकी वार्निश चढ़ा कर बनाया जाता है और उसके वायु निकलनेका मार्ग बन्द कर दिया जाता है। उस थैलेके नीचे एक बड़ा सन्दूक या खटोला आदमीके बैठनेके लिये बाँध दिया जाता है। २ गुब्बारेके आकारका एक बड़ा गोला जो कागजका बना हुआ रहता है। इसके नीचे तेलसे भींगा हुआ कपड़ा जला कर रख दिया जाता है। इस कपड़ेके धूएंसे गोला भर जाता और आकाशमें उड़ने लगता है। विवाहादिके उपलक्षमें इसका व्यवहार किया जाता है। ३ एक प्रक[illegible] बड़ा गोला जो आकाशकी ओर फेंकने पर फट जाता [illegible] जिसमेंसे आतशबाजी छूटती है।

गु[illegible] [illegible] तुमकूर जिलेका दरमियानी तालुक। [illegible] २ तथा १३' २६ उ० और देशा० ७६' ४[illegible] एवं ७७' ० पू०के मध्य अवस्थित है। [illegible] मील और लोकसंख्या प्राय: ८७४६८। इसमें २ नगर और ४२१ गांव बसे हैं। मालगुजारी प्राय: १८२००० है। शिमसा नदीका कटब तालाब मशहूर है। उत्तर-पश्चिम सूने पर्वत हैं।

गुब्बी—महिसुरके तुमकूर जिलेमें गुब्बी तालुकका सदर। यह अक्षा० १३' १८' उ० और देशा० ७६' ५७' पू०में साउदर्न मरहट्टा रेलवे पर अवस्थित है। जनसंख्या प्राय: ५५८२ होगी। कहते हैं, प्राय: ई० १५वीं शताब्दीके समय नोनब वोक्कलीगको राजाने उसे बसाया था। यहां व्यापार खूब होता है। बाजारमें सब चीज बिकती है। यहां सुपारी और नारियलकी गिरी बहुत होती है। १८७१ ई०को मुनिसपालिटी लगी।

गुभ (हिं० पु०) समुद्रकी खाड़ी।

गुभीला (हिं० पु०) गोटा, जो मल रुकनेके कारण पेटमें पड़ जाता है।

गुम (फा० वि०) १ गुप्त, छिपा हुआ, अप्रकट। २ अप्रसिद्ध। ३ खोया हुआ।

गुमक (हिं० स्त्री०) गमक देखो।

गुमका (हिं० पु०) भूसीसे दाना पृथक् करनेका काम।

गुमगां—मध्यप्रदेशके नागपुर जिलेके अन्तर्गत एक नगर यह नागपुर नगरसे १२ मील दक्षिणमें बना नदीके किनारे अक्षा० २१' १' उ० और देशा० ७८' २' ३०' पूर्वमें अवस्थित है। यहांके अधिवासी प्राय: सभी कृषिजीवी हैं, सिर्फ कोष्टि जातिके लोग रुईका रोजगार करते हैं। यहां थानेके पास नदीके किनारे एक महाराष्ट्रीय दुर्गका खण्डहर देखनेमें आता है। इसके पास ही एक गणपतिका मन्दिर है। उक्त दुर्ग और मन्दिर दोनों ही राजा २य रघुजीकी पत्नी चीमाबाईने बनवाये थे और इन्हींके समयसे यह प्रदेश भोंसले-वंशके अधिकारमें रहता है।

गुमची (फा० स्त्री०) गुंजा, घुमची।

गुमटा (हिं० पु०) १ कपासके फूलमें रहनेवाला एक कीट। यह फूलका भारी शत्रु है। (पु०) २ वह गोल सूजन जो मस्तक पर चोट लगनेसे होती है।

गुमटी (फा० स्त्री०) मकानके उपरी भागकी छत।

गुमनायकन पल्ली—महिसुरके कोलार जिलेके अन्तर्गत बागपल्ली तालुकका एक ग्राम। यह अक्षा० १३' १४' उ०

और ७७´ ५५´ पू० तथा बागपल्ली शहरसे १० मील पूर्वमें अवस्थित है। यहांकी लोकसंख्या २०७ है। यह ग्राम १३५० ई०में स्थानीय सरदार गुमनायकसे स्थापित किया गया था और इसलिये उसीके नाम पर इस ग्रामका नाम पड़ा है। गुमनायक तथा उसके भाईने कड़ापासे डकैतोंका दल ला कर इस ग्रामको बसाया था। डकैतोंसे उसने शर्त करा लिया था कि जो कुछ वे लूट पाट लावेंगे उसमें आधा उसको मिलेगा। १४१२ ई०को इस ग्राममें शांति स्थापन करनेका एक नियम बना जिससे वहांके समस्त डकैत ग्राम छोड़ कर भाग चले। थोड़े समयके बाद यह विजयनगरके नायक-वंशके अधीन आ गया। बाद हैदरअलीके समयमें इस वंशका अधःपतन हुआ।

गुमनाम (फा० वि०) अप्रसिद्ध, अज्ञात, जिसे कोई नहीं जानता हो।

गुमर (फा० पु०) १ अभिमान, घमंड, शेखी। २ मनमें छिपाया हुआ क्रोध। ३ धीरे धीरेकी बातचीत।

गुमराह (फा० वि०) १ कुपथगामी, खराब रास्तेमें चलनेवाला। २ भूला हुआ, भटका हुआ।

गुमराही (फा० स्त्री०) १ भ्रम, भूल, कुपन्थ, बुरा मार्ग।

गुमल—गुमलनदीकी एक घाटी। यह दक्षिण वजीरिस्तान एजेन्सीके बीचसे मुरतजा और टोमण्डी हो करके अफगास्तानको चली गयी है। इस विभागमें यह सबसे पुराना कारबारका रास्ता है। हर साल हथियार बन्द काफिलोका सिल सिला इस राह अफगानिस्तसे आया करता है।

गुमल—भारतके उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्तकी नदी। यह अफगानस्तानके कोहनाक पहाड़से सरवन्दीके निकट निकलती और दक्षिण-पूर्वको बहती हुई टोमण्डीके पास अङ्गरेजी सीमामें पहुंचती है। यहीं कुन्दर नदीका सङ्गम है। वनातोई, तोईखुसला और जोब इसकी सहायक नदियां हैं। ऋग्वेदमें इस नदीका नाम गोमती लिखा है।

गुमल—विहार प्रान्तके रांची जिलेका दक्षिण-पश्चिम सबडिविजन। यह अक्षा० २२´ २१ तथा २३´ ३८´ उ० और देशा० ८४´ ०´ एवं ८५´ ६´ पू० मध्य पड़ता है। क्षेत्रफल १६२२ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ४३४६८८ है। इसमें एक नगर और ११५७ ग्राम बसे हैं।

गुमल—विहार प्रान्तके रांची जिलेमें गुमल सबडिविजनका सदर। यह अक्षा २३´ २´ उ० और देशा० ८३´ ३३´ पू०में अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ७७७ है। यह वर्धिष्णु वाणिज्यका केन्द्र हो रहा है।

गुमसुर—दाक्षिणात्यमें गञ्जाम जिलेके अन्तर्गत एक तालुक और नगर। यह अक्षा० १८´ ३५´ तथा २०´ १७´ उ० और देशा० ८४´ ८´ एवं ८४´ ५६´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ११४१ और लोकसंख्या प्राय: २०० ३५७ है। यह १८३५ ई० तक देशी राजाके अधीन रहा। उसी साल स्थानीय सर्दार अङ्गरेजके विरुद्ध लड़ने लगे। अन्तमें अङ्गरेजने उनका राज्य छीन लिया। उस समयमें भी यहां कन्ध जातिमें नरहत्या प्रचलित था। वृटिश गवर्नमेंटने इस प्रथाको सदाके लिये रोक दिया।

२ उक्त तालुकका प्रधान नगर। यह अक्षा० १९´ ५०´ और देशा० ८४´ ४२´ पू० पर अवस्थित है। यहां १८३५ ई०में एक राजप्रासाद था। यह नगर वहरमपुरसे ३८ मील उत्तर-पश्चिम अवस्थित है। उक्त राजाके अधीश्वर रघुनाथ भञ्जराजने यहां एक दुर्ग निर्माण किया था। प्रवाद है कि वे ही गुमसुर राजवंशके आदिपुरुष थे।

गुमान (फा० पु०) १ अनुमान। २ घमंड, अहङ्कार, गर्व।

गुमानसिंह—जैतपुरके एक राजा। इन्होंने बन्दा जिलेके केन नदीके बायें पार्श्वस्थित भूरागढ़ ग्राममें १७४६ ई०को एक दुर्ग निर्माण किया था।

गुमानि—१ सन्ताल परगणा होकर बहती हुई एक नदी। यह राजमहल पर्वतके दक्षिण भागसे निकल कर उत्तर-पूर्वमुख होती हुई वड़ाइत् उपत्यकामें आ मोरल नदीसे मिली है, और उस जगहसे दक्षिण-पूर्वकी ओर बहती हुई महादेवनगरके निकट गङ्गामें गिरती है।

२ उत्तरवङ्गके आत्रेयी नदीका दूसरा नाम। राजशाही जिलेके चलनविलसे दक्षिणार्क और प्रवाहित होती हुई पावना जिला पर्यन्त चली गई है।

गुमानिकवि—१ एक कवि। बिहुत जिलेमें इनकी बनाई हुई बहुतसी कवितायें प्रचलित हैं। यह कहांके रहने वाले एवं किसके पुत्र हैं यह आज तक किसीको कुछ मालूम नहीं है; किन्तु कोई कोई इनका [illegible]

पटनमें बतलाते हैं। इनके बनाये हुए श्लोक चार चरण-विशिष्ट हैं, प्रथम तीन संस्कृत भाषामें और शेष एक हिन्दी भाषामें रचित है। गुमानी देखो।

गुमानी (हिं॰ वि॰) अहंकारी, घमंडी।

गुमानी—बिहार प्रान्तीय पटनाके एक कवि। उनकी बनायी कविता विहारके लोगोंको कण्ठस्थ है। इसके प्रथम तीन पाद संस्कृत और चौथा हिन्दीकी लोकोक्ति है। जैसे—

"यावद्रामः शस्त्रधारी मायातीह लङ्कां दारो।
तावत्तको देया नारी ज्यौं भीजै त्यौं कम्बल भारी॥"

मन्दोदरी रावणसे कहती है—जब तक राम यहां हथियार बांध करके आपसे लड़ने न आवें, उनकी जानकी प्रत्यर्पण कर दो; क्यों कि जितना ही कम्बल भीगता, भारी पड़ता है।

गुमानजी मिश्र—युक्तप्रान्तके हरदोई जिलेमें साण्डीके रहनेवाले एक हिन्दी कवि। १७४० ई॰को उनकी खूब चहल पहल थी। संस्कृत और वाक्य रचनामें वह बहुत कुशल थे। युगलकिशोर भट्टके साथ गुमानजी दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहके दरबारमें जाते थे। फिर उनका प्रवेश अली अकबर खां मुहम्मदीकी सभामें हुआ। उन्होंने नैषधकी टीका काललिधि, पञ्चनलीय टीका सलिल और कृष्णचन्द्रिका ग्रन्थ लिखे।

गुमश्ता (फा॰ पु॰) कर्मकारक, प्रतिनिधि।

गुमाश्तागिरी (फा॰ स्त्री॰) १ गुमाश्तेका पद। २ गुमाश्तेका काम।

गुमिटना (हिं॰ क्रि॰) लिपटना, लपेटा जाना।

गुमूटी (सं॰ स्त्री॰) तृण धान्यविशेष।

गुम्फ (सं॰ पु॰) गुम्फ-नञ्। १ ग्रन्थन, गांठ। २ बाहुमें पहननेका आभूषण। ३ श्मश्रु, मूंछ।

गुम्फना (सं॰ स्त्री॰) गुम्फ-युच्-टाप्। १ वाक्यकी श्लिष्ट रचना, उत्कृष्ट रचना। २ ग्रन्थन, गिरह।

गुम्फित (सं॰ त्रि॰) ग्रथित, गूथा हुआ।

गुम्बज (फा॰ पु॰) मस्जिदका गोलाकार वृहत् छत, घरका गोल छत।

गुम्मट (फा॰ पु॰) गुबंद, गुंबज।

गुम्मा (हिं॰ पु॰) अंगरेजी ढङ्गकी इमारतोंमें देने लायक मोटी ईंट।

गुयासुवा—बङ्गालमें २४ परगनेके अन्तर्गत एक नदी। यह गङ्गाकी एक शाखा है जो अक्षा॰ २१° ३८' उ॰ और देशा॰ ८८° ५४' पूर्व पर समुद्रमें आ मिली है। यह नदी विस्तार होने पर भी मुहानाके निकट इतनी वक्र हो गई है कि इसमें प्रवेश करना दुःसाध्य है।

गुयिन्दी—चिङ्गलपट जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा॰ १३° उ॰ और देशा॰ ८०° १६' पू॰में मन्द्राजसे ४ मील दक्षिण-पश्चिम पर अवस्थित है। यहां मन्द्राजके गवर्नरके रहनेका एक सुन्दर घर है, और इसके निकट ही रोमसबागमें गवर्नमेण्टकी एक आदत एवं गार्हस्थ्य शिक्षाको एक विद्यालय भी है।

गुरंबा (हिं॰ पु॰) गुड़ंबा देखो।

गुर (हिं॰ पु॰) १ किसी कार्यकी सिद्धिके मूलमन्त्र। २ तीनकी संख्या।

गुरखई (हिं॰ स्त्री॰) एक तरहकी रेहन वा बंधक।

गुरखाई (हिं॰ स्त्री॰) एक तरहकी रेहन जिसमें रेहन रखनेवाला जमीनकी तत्यांश मालगुजारी देता है।

गुरगा (हिं॰ पु॰) १ शिष्य, गुरुका अनुगामी, चेला। २ अनुचर, टहलुआ, नौकर। ३ चर, दूत, गुप्तचर, भेदिया।

गुरगाबी (फा॰ पु॰) मुंडा जूता।

गुरच (हिं॰) गुरुच देखो।

गुरची (हिं॰ स्त्री॰) सिकुड़न, बल, बट।

गुरचीं (हिं॰ स्त्री॰) आपसमें धीरे धीरे बात करना, कानाफूसी।

गुरज (हिं॰) गुर्ज देखो।

गुरजा (हिं॰ पु॰) लोवा नामक एक तरहका पक्षी।

गुरड़ा—ब्राह्मण जातिविशेष। यह राजपूतानेमें रहते हैं। इनका प्रधान कार्य अछूत लोगोंकी वृत्ति है। उनका दानपुण्य लेते और विवाह आदि कार्य करा देते हैं। किसी विद्वान्‌के मतानुसार वह ब्रह्माके पुत्र मेघ ऋषिसे उत्पन्न हुए हैं। दूसरोंका कहना है कि उन्होंने एक मरी हुई गायको उठा करके फेंक दिया था। उसी समयसे यह पतित हुए और ब्राह्मणोंमें न रह सके। और प्रवाद है—गर्ग ऋषिके सन्तान पहले अछूत लोगोंका विवाह कराते थे। ब्राह्मणे उन्हें केवल विवाह कराने-

की आज्ञा दी थी, दक्षिणा लेनेकी नहीं। परन्तु इसके विपरीत वह सूतकी एक लच्छी अपनी पगड़ीमें छिपा करके ले गये। इस पर ब्रह्माने क्रुद्ध हो करके उन्हें जातिच्युत किया था। उसी समयसे इनको लोग गुरड़ा कहने लगे।

गुरदा (फा॰ पु॰) १ रीढ़दार जन्तुके भीतर कलेजेके निकटका एक अङ्ग। इसका रङ्ग भूरा और कुछ कुछ लाल भी है और यह आलूके कदका होता है जिसके चारो ओर चरबी रहती है। साधारणतः जन्तुमें दो गुरदे रीढ़के दोनों ओर लगे रहते हैं। इनका काम पेशाब-को बहिर्गत करना तथा लेहूको स्वच्छ करना है। इन-में किसी प्रकारकी गड़बड़ी होनेसे हो जीव निर्बल हो जाता है। मनुष्यमें बायाँ गुरदा कुछ ऊपरको और और दाहिना कुछ नीचे रहता है। जो प्रायः ८-९ अंगुल लंब ५ अंगुल चौड़े और दो अंगुलसे अधिक मोटे होते हैं।

२ साहस, हिम्मत। ३ एक तरहकी छोटी तोप। ४ गुड़ उबालनेका लोहेका बना एक बड़ा करछा या चमचा।

गुरियाल (हिं॰ पु॰) रताल, जमीकन्दकी जातिका एक कन्द। यह बङ्गाल और मध्य, पश्चिम तथा दक्षिण भारतमें होता है। यह कंद लाल छिलकाका होता है और इसको बहुत बड़ी लता होती है।

गुरमकोण्डा—मन्द्राज प्रदेशके कड़ापा जिलेके अन्तर्गत वायलपाड तालुकका एक दुर्ग और नगर। यह अक्षा॰ १३° ४७' उ॰ और ७८° २६' पू॰ में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १७१४ है। यह दुर्ग कड़ापासे सर्व प्रधान है। कहा जाता है कि यह गोलकोण्डाके सुल-तानोंसे निर्माण किया गया था। दुर्ग एक सुन्दर पहाड़ी की ५०० फुट ऊंचाई पर अवस्थित है। इसके तीन ओर की जमीन ढालू है, चौथी ओर ऊपर आने जानेके लिये एक सुगम पथ बना दिया गया है। इसके चारों ओर की पहाड़ियाँ चार दीवारोंका काम करती हैं। दुर्गके नीचे एक प्राचीन राजभवन था, आज कल उसमें राज-कर्मचारी आकर ठहरते हैं।

अठारहवीं शताब्दीके आरम्भमें इस नगरमें कर्णाट के हैदराबाद बालाघाट सरकारकी राजधानी थी। बाद यह पलिगार जातिके कड़ापाके नवाबके अधीन आ गया। १७६६ ई॰में मीरसाहब इस नगरको महाराष्ट्रीय जागिररूपमें भोग करने लगे। दो वर्षके बाद इन्होंने इसे अपने बहनोई हैदरअलीको प्रदान किया। १७७१ ई॰में हैदरके सैन्याध्यक्ष सयदशाहने यहांके दुर्गको त्रम्बक-राव पर अर्पण कर दिया। १७७३ ई॰में टीपूने इसे पुनः हस्तगत किया। १७८१ ई॰में निजामने ब्रटिश-सैन्याध्यक्ष कप्तान रेडकी सहायतासे गुरमकोण्डको अपने अधिकारमें कर लिया। १८०० ई॰में निजामने समस्त कड़ापा जिला तथा यह नगर अंगरेजोंको प्रदान किया।

गुरमकोण्डाका अर्थ 'घोड़ेका पहाड़' है। इस तरह क्यों नाम पड़ा इसका पूरापूरा पता नहीं चलता है। परन्तु स्थानीय प्रवाद है कि एक घोड़ा दुर्गकी रक्षाके लिये उस पहाड़ी पर रहा करता था। जब तक वह घोड़ा वहां रहता तब तक कोई शत्रु ऊपर नहीं जा सकता था। पहाड़की चोटी पर घोड़ेका अस्तबल था। अन्तमें एक दिन एक मराठा चोर पहाड़ीमें लोहेकी कील ठोक कर उसीके सहारे ऊपर तक चला गया। ऊपर आकर उसने अस्तबलमें प्रवेश किया और उस अद्भुत घोड़े को बाहर निकाला। घोड़ेको साथ लेकर वह किसी तरह नीचेको आया। जब वह विश्राम करनेके लिये जंगलमें बैठा था उसी समय राजकर्मचारियोंने उसे पकड़ा। वे उस चोरके असीम उत्साहसे चकित हो गये और इस दण्डमें उसके दोनों हाथ कटवा लिये। वह घोड़ा पुनः किलेको पहुंचाया गया। थोड़े दिनके बाद वह दुर्ग नष्ट भ्रष्ट हो गया। दुर्गके निकट टीपू सुल-तानके चचा मीर राजा अली खाँकी समाधि तथा और दूसरे दूसरे भवन हैं।

गुरमुख (हिं॰ वि॰) दीक्षित, जिसने गुरुसे मन्त्र लिया हो।

गुरम्मर (हिं॰ पु॰) मीठे आमका वृक्ष।

गुरव—दक्षिण देशके बीजापुर शोलापुर आदि जिलेमें रहनेवाली एक पुरोहित जाति। इनमें किसी प्रकारकी उपाधि नहीं है, सिर्फ स्थानके नामसे जातिगत पार्थक्य देखनेमें आता है। काश्यप और ईश्वर ये दो गोत्र ही इन लोगोंमें प्रधान हैं।

ये स्वगोत्रमें विवाह नहीं करते। देखनेमें ये कमाड़ियों जैसे लगते हैं। ये मद्य, मांस आदि कुछ भी नहीं खाते फसलके समय ये लोग खेतसे अनाज मांग लाते हैं। इनमेंसे कोई शैव और कोई हनुमान्‌के मन्दिरमें पोरोहित्य करते हैं। कोई तो दैवज्ञ हैं और कोई ब्राह्मण आदिके विवाहमें बाजा बजाने का काम करते हैं। कोई खेती-बारी कर अपनी जीविका चलाते हैं।

मारुती, सरस्वती, रामेश्वर, शिव, विष्णु और रावलनाथ इनके उपास्य देवता हैं। विवाह वा अन्यान्य सामाजिक संस्कार सुनार जातिके समान हैं। ये लोग अपनी जातिके सिवा अन्य किसी भी जातिका छुआ हुआ अन्न नहीं खाते।

बेलगांवमें विधवाविवाह प्रचलित है। ये दशवें दिन मरे हुए व्यक्तिको पिण्ड देते तथा ग्यारहवें दिन श्राद्ध और बारहवें दिन जातिभोज करते हैं। इनमें प्रायः सभी लोग कनाड़ी भाषा बोलते हैं।

गुरवक्र (सं० पु०) गरुड़शालि।

गुरवपिम्प्री—गुजरातके अहमदनगर जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह करजात नामक स्थानसे ७ मील दूरी पर अवस्थित है। यहां हेमड़पन्थियोंका पिम्प्रेश्वर महादेवका एक प्राचीन मन्दिर और रामेश्वर मन्दिरका खण्डहर देखनेमें आता है। पिम्प्रेश्वर-मन्दिरके आसपासके दलानों पर नौ गुम्मजें हैं। मन्दिरकी लिङ्गमूर्त्ति एक गड्ढेमें स्थापित है। इस मन्दिरके प्रवेशद्वारमें और भीतरके एक पृथक् स्तम्भ पर शिलालेख खुदा हुआ है।

गुरवार (हिं०) गुरुवार देखो।

गुरवी (हिं० वि०) अहंकारी, घमण्डी।

गुरसराय—युक्तप्रदेशके झांसी जिलेका राज्य। इसका क्षेत्रफल १५५ वर्गमील है। गवर्नमेण्टको २००००) मालगुजारी और ५५००) रु० शेष देना पड़ता है। राजा जमीन्दारोंसे ५४०००) रु० वसूल करते हैं। वह महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं, १७२७ ई०के लगभग आ करके बसे थे। इसी वंशके एक व्यक्ति पेशवाके अधीन आमील और दूसरे प्रान्तके [illegible] बलवेमें सरकारको साहाय्य करने पर "राजा बहादुर" उपाधि [illegible] दूसरा पुरस्कार मिला। किन्तु १८८५ ई०की पूरी मालगुजारी देनेका जो झगड़ा लगा, राजा उपाधि छिन गया और अङ्गरेजी इन्तजाम बन्धा। फिर १८९८ और १९०२ ई०को प्रिवी कौंसिलके फैसले पर उनको माफी बहाल हुई। गुरसराय नगरकी आबादी कोई ४३०४ है।

गुरसल (हिं० पु०) गिलगिलिया, सिरोही, किलहंटी।

गुरसी (हिं०) गोरसी देखो।

गुरसन (हिं० पु०) सोनारोंकी एक तरहकी छेनी।

गुरहा (हिं० पु०) १ नौकाके नीचे दोनों सिरों पर जड़ा हुवा तखता। २ एक बिलस्त लम्बे आकारकी एक तरहकी मछली। यह युक्तप्रान्त, बङ्गाल और आसामको नदियोंमें पाई जाती है।

गुराई (हिं०) गोराई देखो।

गुराब (हिं० पु०) १ एक तरहकी गाड़ी जिस पर तोप लादी जाती है। २ एक मस्तूलवाली बड़ी नाव।

गुराब (हिं० पु०) १ चौपायोंको खिलानेका चारा। २ चारा काटनेका हथियार, गड़ासा।

गुरिद (फा० पु०) गदा।

गुरिदल (हिं० पु०) १ जलाशयोंके निकट रहनेवाला किलकिलाकी जातिका एक पक्षी; यह मछली ही खाकर रहती है। २ कचनारका पेड़।

गुरिया (हिं० स्त्री०) १ किसी माला या लड़ीके एक अंशका दाना, मनका या गांठ। २ कटा हुआ गोल छोटा टुकड़ा। ३ दरी बुननेके करघेकी बड़ी लकड़ी। ४ हेंगेमें लगी हुई रस्सी। इसका एक सिरा हेंगेसे और दूसरे जूएके बीचमें बंधा रहता है।

गुरिल्ला (हिं०) गोरिल्ला देखो।

गुरु—(सं० पु०) गृणाति उपदिशति धर्मं गिरत्यज्ञानं वा गृ-कु उच्च। (उणा० १।२४) यद्वा गीर्यते स्तूयते देवगन्धर्वादिभिः गृ-कु उच्च। १ बृहस्पति, देवोंके गुरु वा आचार्य। (माघ २ स०)

२ प्रभाकर नामक एक सुप्रसिद्ध मीमांसकका दूसरा नाम। प्रभाकर बचपनमें ही शब्दशास्त्रका अध्ययन कर विशेष व्युत्पन्न हो गये थे। पीछे उन्होंने किसी एक प्रधान मीमांसकके पास मीमांसादर्शन पढ़ना शुरू किया। एक दिन इनके गुरु किसी एक छात्रको उस समयमें प्रचलित मीमांसा ग्रन्थ पढ़ा रहे थे। उस ग्रन्थमें "अत्र तत्-

मोक्तं तत्रापिनोक्तं अतः पौनरुक्त्यं" ऐसा पाठ निकला। अध्यापक महाशय अनेक चेष्टा करके भी इसका कोई सङ्गत अर्थ न लगा सके। इसका तो अर्थ ऐसा होता है कि— यहां भी नहीं कहा गया, वहां भी नहीं कहा गया, अतः पौनरुक्त्य हुआ। परन्तु यह अर्थ बिल्कुल ही असङ्गत था। छात्र और अध्यापक दोनोंने मिलकर बहुत कोशिश की, मगर इसका कुछ सङ्गत अर्थ न निकाल सके इससे अध्यापक अत्यन्त दुःखित हुए और चतुष्पाठीसे निकल घने जङ्गलमें जा कर इसका अर्थ विचारने लगे। प्रभाकरने अपनी प्रतिभाके बलसे इस पंक्तिका अर्थ लगा लेने पर भी उस समय—गुरुजी अपना अपमान समझ कर दुःखित होंगे—इस भयसे कुछ नहीं कहा। पीछे उस पुस्तकमें उन्होंने 'तुना' और 'अपिना' ऐसा एक पद कर दिया। इससे उस पंक्तिका यह अर्थ हुआ कि, यहां तु शब्द द्वारा कहा और वहां भी अपि शब्द द्वारा कहा गया है। इसलिये पौनरुक्त्य होता है। अध्यापक महाशय गभीर गवेषणा करके भी कुछ निर्णय न कर सके और चतुष्पाठीको लौट आये यहां उन्होंने पुस्तक निकाल कर देखी, तो उसमें पदच्छेद किया हुआ पाया। बहुत ही सन्तुष्ट हुए, पूछने पर उन्हें मालूम हुआ कि, वह प्रभाकर को ही करामात है। अध्यापकने प्रभाकरको अपना गुरु माना और उसी दिनसे इनका 'गुरु' नाम हो गया। प्रभाकर देखो।

३ निषेक आदि क्रियाका कर्त्ता। विधिके अनुसार जो सम्पूर्ण निषेक आदि कर्मोंका अनुष्ठान करते और अन्न दे कर पालते हैं, उन्हें गुरु समझना चाहिये। (मनु २।१४२)

४ शास्त्रोपदेशक, आचार्य। मनुके मतसे—थोड़ा हो चाहे ज्यादा, जो वेदका ज्ञान दे कर उपकार करते हैं, शास्त्रानुसार वे ही गुरु हैं। बालक हो कर भी यदि वेद या शास्त्रका उपदेश दे, तो उन्हें ही गुरु समझना चाहिये, वे वृद्धोंके भी माननीय हैं। प्राचीन समयमें भी शास्त्रज्ञ बालकोंसे वृद्धगण उपदेश लिया करते थे और उसे अपना गुरु मानते थे। मनुमें इस विषयकी एक आख्यायिका भी मिलती है—"अङ्गिराके एक पुत्र बचपनमें ही समस्त शास्त्रोंका पारदर्शी हो गये थे। ये अपने पितृव्योंको शास्त्रसे पराङ्मुख देख, उन्हें शास्त्र अध्ययन कराने लगे। एक दिन शास्त्रोपदेशके समय उक्त बालकने अपने पितृव्योंको पुत्र कह कर संबोधन किया, जिससे उनके हृदय पर बड़ी चोट पहुंची। आखिर अनेक वादानुवादके उपरान्त सबके सब देवसभामें उपस्थित हुए और देवोंसे इस बातकी शिकायत की। समस्त देवताओंने विचार कर उत्तर दिया कि, 'इसमें कुछ दोष नहीं; क्यों कि मूर्ख व्यक्ति वृद्ध होने पर भी बालक हैं और जो ज्ञानोपदेष्टा हैं, वह बालक होने पर भी पितृवत् पूजनीय हैं।' (मनु २।१४८-१५३)

मनुका मत है कि, गुरुके पास हमेशा होन दशामें बैठना चाहिये। गुरुके उठनेसे पहले उठना और सोनेके बाद सोना, यह शिष्यका परम कर्त्तव्य है। सोते हुए वा बैठ कर, भोजन करते हुए अथवा दूर खड़े हो कर वा दूसरी तरफ मुंह करके गुरुकी आज्ञा ग्रहण या उनके साथ सम्भाषण नहीं करना चाहिये। गुरु यदि आसन पर बैठ कर कुछ आदेश दें, तो शिष्यको चाहिये कि, वह खड़ा हो कर उनकी आज्ञाको ग्रहण करे। परोक्ष भी गुरुका नाम नहीं लेना चाहिये। शिष्य देखो।

५ आचार्य आदि ग्यारह पूजनीय व्यक्तियोंको गुरु कहते हैं। देवलमें लिखा है कि, शास्त्रोपदेष्टा, पिता, ज्येष्ठ भ्राता, राजा, मातुल, श्वशुर, त्राणकर्त्ता, मातामह, पितामह वर्णज्येष्ठ और पितृव्य इनको गुरु कहा जा सकता है। गुरुतल्पग देखो।

कूर्मपुराणमें—माता, मातामही (नानी), मामी, मौसी, सास, पितामही (दादी), बड़ी बहन और धात्री इनको भी गुरु कहा गया है

माता आदि अर्थमें गुरु शब्द स्त्रीलिङ्ग है। हिन्दीमें गुरु शब्दका स्त्रीलिङ्ग 'गुरुआनी' होता है।

६ सम्प्रदायप्रवर्त्तक। ७ धर्मोपदेशक ८ कपिकच्छु, कौंच। (राजनि०) ९ वर्णविशेष, दीर्घ अक्षर जिसकी मात्राएं दो समझी जाती हैं, दो मात्राओंवाला अक्षर जैसे—"लाल" का 'ला'। एक बार जानुमण्डल (घुटने) पर हाथ फिरानेमें जितना समय लगता है, उतने समयका नाम मात्रा है जिस वर्णके उच्चारण करनेमें दो मात्रा समय लगता है, उसको दीर्घवर्ण कहते हैं। दीर्घ, अनुस्वार, और विसर्गयुक्त तथा संयुक्त वर्णके पहलेके अक्षरको

(लघु होने पर भी) गुरु कहते हैं। पाद वा श्लोकके चरणका अन्तिम वर्ण विकल्पसे गुरु हुआ करता है। पिङ्गलमें गुरु वर्णका संकेत ऽ इस प्रकार है।

१० शिव (भारत १३।१।१२०) ११ परमेश्वर। (पातञ्ज समाधि०) १२ ब्रह्मा। १३ विष्णु। (भारत १३।१४९।९५) १४ द्रोणाचार्य। १५ पुष्य नक्षत्र। गुरु अर्थात् बृहस्पति इसके अधिष्ठाता होनेके कारण इनका नाम गुरु हुआ है। (ज्योतिस्तत्त्व) १६ बृहस्पति नामका ग्रह। १७ वह व्यक्ति जो अपनेसे विद्या, बुद्धि, बल, पद और उम्रमें बड़ा हो, गुरु जन। १८ किसी कला या विद्याका सिखानेवाला, शिक्षक, उस्ताद। १९ संगीतका एक ताल। जिसमें सिर्फ एक ही गुरु वा दीर्घ मात्रा हो, उसका नाम गुरु ताल है। (सङ्गीतदामोदर)

(त्रि०) २० अधिक ज्यादा। (मार्कण्डेय०) २१ दुर्जर, जो मुश्किलसे पचता हो। २२ दुष्पाक, जिसका पाक करना कठिन हो। (भावप्रकाश०) २३ गुरुत्वविशिष्ट, भारी, वजनी। २४ पूजनीय, माननीय। (...) २५ गम्भीर। २६ बलवान्।

(पु०) २७ तान्त्रिक मन्त्रोपदेष्टा, जो तंत्रकी दीक्षा दे। सारदातिलकके मतसे तान्त्रिक गुरुका लक्षण इस प्रकार है जो पवित्र कुलमें उत्पन्न हुए हों, जो शुद्धस्वभाव, जितेन्द्रिय, आगमपारदर्शी, तत्त्वज्ञ, परोपकारनिरत, जप और पूजामें तत्पर, सत्यवादी और शान्तिप्रिय हैं, वेद और योगशास्त्रमें जिनका अधिकार है, तथा जो सर्वदा हृदयमें देवताका चिन्तन किया करते हैं। उन्हींको गुरु बनाना चाहिये। इन गुणोंका होना ही गुरुका लक्षण है। अत्यन्त बालक, वृद्ध, पङ्गु, कृश, विकृताङ्ग और हीनाङ्ग, ये सब गुरु होनेके लायक नहीं हैं। (राघवभट्ट)

चिन्तामणिके मतसे —क्षयरोगग्रस्त, दुश्चर्मा, कुनखी, श्यावदन्तक, वधिर, अन्धा, कुसुम जैसी आँखोंवाला, खल्वाट (गंजा) और दन्तुर (जिसके दांत आगे निकले हों) इनको गुरु बनाना उचित नहीं है।

संस्कारहीन, मूर्ख, वेदशास्त्रविवर्जित, वैदिक और स्मार्त-क्रियाकलापशून्य, शुष्कभाषी, कुत्सित, याजनकर्मोपजीवीकामी, क्रूर, दम्भी, मत्सरी, व्यसनयुक्त, क्षपण, खल, नास्तिक, असत्सङ्गकारी, भीरु, महापातकी किसी एक चिह्नसे युक्त, देवता, अग्नि और गुरुपूजा आदिमें श्रद्धाहीन; सन्ध्या, तर्पण, पूजा और मन्त्र आदिके ज्ञानसे रहित; अलस विलासी और धर्महीन, इनमें गुरु होनेकी योग्यता नहीं है। मत्स्यसूक्तके मतसे अपुत्रक, गृहिणीशून्य, शक्तिविहीन और वृषलीपति, ये भी वर्जनीय हैं। (राघ भट्ट)

ज्ञानार्णवके मतसे —जो गृहस्थ हैं, जनके पुत्र और कलत्र हैं, उन्हें ही गुरु बनाना चाहिये। मुण्डमालामें लिखा है कि, वैष्णव और शैव मध्यम गुरु हैं। जो शक्तिमन्त्रसे दीक्षित हैं, वे ही उत्तम गुरु हैं।

तान्त्रिकगण गुरु शब्दके प्रत्येक वर्णका अर्थ कर उनका लक्षण करते हैं। उनके मतसे गकारका अर्थ सिद्धिदाता, रेफका अर्थ पापनाशक और उकारका अर्थ शम्भु है अर्थात् जो सिद्धि दे सकते हैं पापोंके विनाश करनेकी जिनमें क्षमता है और जो मङ्गलकार हैं, उन्हींको गुरु समझना चाहिये। अथवा गकारका अर्थ ज्ञान, रेफका अर्थ तत्त्वप्रकाशक और उकारका अर्थ शिव तादात्म्यप्रद है। अर्थात् जो तत्त्वज्ञानको प्रकट कर शिवके साथ अभिन्न करा देते हैं, उन्हें ही गुरु समझना चाहिये। (आगमसार

योगिनीतन्त्रमें लिखा है—पिता, मातामह, सहोदर कनिष्ठ और रिपुपक्षीय इनसे मन्त्र लेना उचित नहीं, अर्थात् इनको गुरु नहीं बनाना चाहिये। गणेशविमर्षिणीतन्त्रके मतसे यति, वनगामी वा आश्रम परित्यागी इनके पास दीक्षित होनेसे अमङ्गल होता है। परन्तु शक्तियामलके मतसे अर्थाचारपरायण, मन्त्री, ज्ञानी, समाधियुक्त और श्रद्धाविशिष्ट यतिसे मन्त्र ग्रहण करनेसे किसी प्रकारका अमङ्गल नहीं होता। रुद्रयामलमें लिखा है—भर्त्ता पत्नीका, पिता पुत्र वा कन्याको और भ्राता भाईको दीक्षित नहीं कर सकता। हां! स्वामी सिद्धमन्त्र होने पर स्त्रीको दीक्षा दे सकता है।

तन्त्रसंग्रहकारोंके मतसे—तन्त्रमें जो निन्दनीय गुरुओं और उनसे दीक्षा लेनेका निषेध किया गया है, वह केवल उन गुरुओंके लिए है जिनको मन्त्र सिद्ध नहीं हुआ हो। सिद्धमन्त्र होनेके उपरान्त फिर कुछ लक्षण देखनेकी आवश्यकता नहीं, जिसके पास जी चाहे उसीके पास दीक्षित हो सकते हैं। (तन्त्रसार)

कोई यदि व्यक्ति अज्ञानवश निन्दनीय वा वर्जनीय गुरुके पाससे दीक्षा ग्रहण कर ले, तो दस हजार गायत्री जपरूप प्रायश्चित्त कर उस मंत्रका परित्याग कर सकता है। (मार्गशीर्षमास्य०)

मत्स्यसूक्त मतसे निवीर्य पिताका मन्त्र शाक्त और शैवोंके लिये दोषावह नहीं है; ये लोग पिताका मन्त्र ग्रहण कर सकते हैं। कोई संग्रहकार मत्स्यसूक्तके प्रमाणको दीक्षाविषयक कौलिक मन्त्र बतलाते हैं और कोई कहते हैं कि, मत्स्यसूक्तमें तारामन्त्रके प्रस्तावमें यह बात कही गई है। बहुतसे तन्त्रोंमें पिता ज्येष्ठ पुत्रको अपने मन्त्रसे दीक्षित कर सकता है—ऐसा विधान मिलता है।

(तन्त्रसार)

भारतमें अति प्राचीन कालसे ही दीक्षाप्रणाली चली आ रही है। प्रत्येक दीक्षामें एक न एक गुरुकी आवश्यकता होती है। अस्त्र, शस्त्र और मन्त्रदीक्षा आदि सभीके एक एक गुरु होते हैं। गुरुके विना कोई भी दीक्षा नहीं हो सकती। ऋषियों और तान्त्रिकोंने गुरु शिष्यके विषयमें नानाप्रकारके कर्त्तव्याकर्त्तव्योंका निर्णय किया है। उनकी पर्यालोचना करनेसे मालूम होता है कि, जिस समय यह देश धर्मोन्नतिकी पराकाष्ठा तक पहुंच चुका था, उस समय इस देशके लोग गुरुको साधारण मानव न समझते थे, बल्कि उन्हें देवता समझ अपनेको उनके अधीन मानते थे। उन लोगोंका विश्वास था कि, गुरु जो चाहें वही कर सकते हैं। ये ही ईश्वर वा हमारे देवता हैं। गुरुगीतामें गुरुके जो लक्षण और नाम निरुक्तियां लिखी हैं, वे ठीक वेदान्तवर्णित ब्रह्मके लक्षणके समान हैं। दीक्षा, शिष्य आदि शब्दोंमें विशेष विवरण देखो।

२८ जैनोंके पञ्च परमेष्ठियोंमेंसे ३रे, ४थे और ५वें परमेष्ठी। रत्नकरण्डश्रावकाचारमें गुरुका लक्षण इस प्रकार लिखा है।

> विषयाशावशातीतो निरारम्भोऽपरिग्रहः।
> ज्ञान-ध्यान-तपोरक्तस्तपस्वी स प्रशस्यते॥ १०॥"

जो सांसारिक विषयोंके वशीभूत नहीं हों, आरम्भ—(ऐसी क्रिया जिससे हिंसा हो) रहित हों, चौबीस प्रकारके परिग्रहसे रहित हों, ज्ञान, ध्यान और तपमें लवलीन हों, वे ही तपस्वी अर्थात् गुरु प्रशंसा करने योग्य हैं। जैनशास्त्रानुसार ये तीन श्रेणियोंमें विभक्त हैं—आचार्य, उपाध्याय और साधु। १ आचार्य—जो मुनियोंके संघके अधिपति हों और संघके मुनियोंको दीक्षा (शिक्षा) प्रायश्चित्त (दण्ड) आदि देते हों तथा १२ प्रकारका तप, १० प्रकारका धर्म, ५ प्रकारका आचार, ६ प्रकारका आवश्यक-कर्म, ३ प्रकारकी गुप्ति इन ३६ गुणोंके धारण करनेवाले हों, उन ऋषियोंको आचार्य कहते हैं। २ उपाधाय—जो आचाराङ्ग, सूत्रकृताङ्ग आदि ११ अङ्ग और उत्पाद, अग्रायणी आदि १४ पूर्वके पाठी हों, उन्हें उपाधाय कहते हैं ये स्वयं पढ़ते और अन्य मुनियोंको पढ़ाया करते हैं। ३ सर्वसाधु—जो मुनि ५ महाव्रतों और ५ समितियोंको भलीभांति पालते हैं, और ५ इन्द्रियोंको संपूर्ण वशमें करते हैं, और जो समता, वंदना आदि ६ आवश्यक कर्म और स्नानत्याग आदि ७ प्रकारका त्याग स्वीकार करते (अर्थात् जो २८ मूलगुणके धारक) हैं, उनको साधु कहते हैं। इनके पुलाक, वकुश आदि और भी दश भेद हैं।

ये तीनों प्रकारके गुरु दिगम्बर (नग्न) अवस्थामें रहते हैं। इस समय ऐसे गुरुओंका प्रायः अभाव ही है।

२८ पिण्डालु, गोल आलू। ३० शीसधातु, राँगा।

गुरिल्ला (हिं०) गोरिल्ला देखो।

गुरुआइन (हिं० स्त्री०) १ गुरुकी स्त्री। २ शिक्षा देनेवाली स्त्री।

गुरुआई (हिं० स्त्री०) १ गुरुका धर्म। २ गुरुका कृत्य, गुरुका काम। ३ धूर्तता, चालाकी।

गुरुक (सं० त्रि०) गुरु स्वार्थे कन्। अतिशय भारयुक्त, भारी।

गुरुकण्टक (सं० पु०) गुरुः कण्टक स्तत्सदृश चिह्न विशेषो गात्रे यस्य, बहुव्री०। एक तरहका मयूर।

गुरुकार (सं० त्रि०) गुरं भारातिशय-युक्तं करोति गुरुकृ-अण्। १ अतिशय भारयुक्त करनेवाला मनुष्य। २ (पु०) २ उपासना,-गुरु पूजा।

गुरुकार्य (सं० त्रि०) गुरोः कार्यः ६-तत्। १ गुरुका कर्तव्य (क्ली०) २ गुरुका कर्म।

गुरुकुण्डली (सं० स्त्री०) गुरोः वृहस्पतेः कुण्डली, ६-तत्

ज्योतिषमें एक प्रकारका चक्र। इससे जन्मनक्षत्रके अनुसार एक एक वर्षके अधिपति ग्रहका निर्णय किया जाता है। इस चक्रके बीचमें वृहस्पति और उसके आठों तरफ आठ ग्रह स्थापन करने पड़ते हैं। इसमें गुरु प्रधान होनेके कारण इसका नाम गुरुकुण्डली पड़ा है।

गुरुकुण्डली बनानेका तरीका—ऊपरसे नीचेकी तरफ पांच रेखाएं खींच कर उसके बीच एक आड़ी रेखा खींचना चाहिये। फिर उक्त चक्रके प्रथमस्थान अर्थात् ऊर्ध्वमुखी जो रेखाएं खींची गई हैं उनमेंसे बाईं ओरकी रेखाके ऊपरके हिस्सेमें रवि, द्वितीय स्थान अर्थात आड़ी लकीरें जिस स्थानको भेदती हैं, वहां मङ्गल, तृतीयस्थान अर्थात् उक्त खड़ी रेखाके निम्न भागमें केतु रखना चाहिये। इसी तरह द्वितीय रेखाके मध्य स्थानमें चन्द्र, २य स्थानमें बुध, और ३य स्थानमें सुन्ना; तृतीय रेखाके १म स्थानमें सुन्ना, २य स्थानमें वृहस्पति, और ३य स्थानमें सुन्ना; चतुर्थ रेखाके १म स्थानमें सुन्ना, २य स्थानमें शुक्र और ३य स्थानमें सुन्ना तथा पञ्चम रेखाके १म स्थानमें शनि, २य स्थानमें शून्य और ३य स्थानमें राहु ग्रह रखे जाते हैं। जिस जिस स्थानमें ग्रह बैठाये गये हैं उस उस स्थानमें पुष्य आदि नक्षत्रोंको यथाक्रमसे बैठाना चाहिये। जिस जिस स्थानमें सुन्ना है, उस स्थानमें कोई भी नक्षत्र नहीं बैठाया जाता। पहले रविके स्थानमें पुष्य नक्षत्र स्थापन कर यथाक्रमसे राहुके स्थान पर्यन्त विशाखा नक्षत्र रखना चाहिये। और फिरसे रविके स्थानमें अनुराधा स्थापन कर क्रमसे राहुके स्थानमें पूर्वभाद्र बैठाना चाहिये। इसके बाद रविके स्थानमें उत्तरभाद्र और राहुके स्थानमें पुनर्वसु स्थापित किया जाता है। इसीका नाम गुरुकुण्डली है। जिसका जन्म नक्षत्र जिस स्थानमें पड़ेगा, वही ग्रह उसके प्रथम वर्षका अधिपति है।

केतुकुण्डलीमें जिस तरह वर्षाधिपतिके फलका वर्णन किया गया है, गुरुकुण्डलीमें भी वैसा ही फल जानना चाहिये। किसी किसी ज्योतिषीके मतसे प्रथम स्थानमें रवि, द्वितीयमें मङ्गल, तृतीयमें केतु, चतुर्थमें चन्द्र, पंचममें बुध, षष्ठमें वृहस्पति, सप्तममें शुक्र, अष्टममें शनि और नवममें राहुग्रहके स्थानमें क्रमसे पुष्य आदि नक्षत्रोंको स्थापन करनेसे उसको गुरुकुण्डली कहते हैं। (१)

पञ्चस्वराके मतसे—प्रथम स्थानमें रवि, २यमें चन्द्र, ३यमें मङ्गल, ४र्थमें बुध, ५वेंमें वृहस्पति, ६ठेमें शुक्र, ७वेंमें शनि, ८वेंमें राहु और ९वेंमें स्थानमें केतु ग्रहको रख कर रविसे लगा कर प्रत्येक ग्रहके स्थानमें कृत्तिका आदि नक्षत्र यथा क्रमसे स्थापन करने पड़ते हैं। (शब्दर०) इन तीन प्रकारकी गुरुकुण्डलियोंमेंसे पहली ही सबका आदरणीय हैं, इसलिये उसीका चित्र दिया गया है।

गुरुकुण्डली।

८।१७।२६	११।२०।२	०	०	१५।२४।६
रवि	चन्द्र			शनि
९।१८।१७	बुध	बृहस्पति	शुक्र	
मङ्गल	१२।२१।	३ १८।	२२।४।१४।	२३५ ०
केतु				राहु
१०।१९।१	०	०	०	१६।२५।७

गुरुकुल (सं० क्ली०) गुरोः कुलं, ६ तत्। १ गुरुका वंश। २ गुरुका वह स्थान जहां वे विद्यार्थियोंको अपने साथ रख कर शिक्षा देते हैं। प्राचीन समयमें हिन्दुस्थानमें यह प्रथा थी कि गुरु वा आचार्यका निवासस्थान बहुत दूर एकान्तमें रहता और मनुष्य अपने लड़केको पढ़नेके लिये वहीं भेजते थे; जब तक शिक्षा समाप्त नहीं होती थी तब तक बालक लौट कर घर नहीं आते थे। ऐसे ही स्थानको गुरुकुल कहते थे।

गुरुकृत (सं० त्रि०) गुरुणा कृतं अनुष्ठितं, ३-तत्। गुरुसे जिसका अनुष्ठान किया गया हो।

गुरुकोप (सं० पु०) अतिशय क्रोध, अत्यन्त गुस्सा।

गुरुक्रम (सं० पु०) गुरुरेव क्रमो यत्र, बहुव्री०। परम्परागत उपदेश, एक दूसरेको उपदेश देना।

गुरुगल (सं० त्रि०) गुरु सम्बन्धीय।

गुरुगन्धर्व (सं० पु०) इन्द्रतालके छह भेदोंमेंसे एक भेद।

गुरुगन्धिक (सं० क्ली० १ गुल्मविहदीका पेड़। २ मुसब्बरका वृक्ष।

गुरुगीता (सं० स्त्री०) गुरुस्तवनभूता गीता। गीता-

(१) "रविर्भौमश्च केतुश्च चन्द्रः सौम्यो बृहस्पतिः।
शुक्रः शनैश्चरो राहुः कुण्डली स्याद् बृहस्पतेः॥"

विशेष, जिसमें गुरुका स्तव, गुरुको ब्रह्मरूप वर्णना, गुरु के प्रति शिष्यका कर्त्तव्याकर्त्तव्य एवं आत्मतत्त्व उपदेश भली भांति वर्णित हैं। यह रुद्रयामलका एक अंश है।

गुरुगोविन्दसिंह—सिखोंके दशवें गुरु, तेजबहादुरका पुत्र। इनका जन्म १६६२ ई०को हुआ था। इन्होंने सिखधर्म में अनेक परिवर्त्तन और खाल्सा प्रथाको प्रचलन किया था। ये सिखोंमें सिंदोंचाके प्रवर्त्तक थे। गुरुमुखी भाषामें इनका बनाया हुआ ग्रन्थ-साहब है जो सिखोंको यथेष्ट भक्तिकी चीज समझी जाती है। ये ४८ वर्षकी अवस्थामें १७०८ ई०को गोदावरीके तीर नन्देर नामक स्थान पर दो पठानोंसे मारे गये थे। उक्त स्थान पर उनके स्मरणार्थ बना हुआ शिख-मन्दिर आजतक विद्यमान है। उनके मतानुवर्त्ती सिखगण "गोविन्दशाही" नामसे मशहूर हैं। नानक और सिख देखो।

गुरुघ्न (सं० पु०) गुरुं हन्ति हन-ठक्। १ गौरसर्षप, उजला सरसों। (त्रि०) २ गुरुनाशक, गुरुको मारडालनेवाला।

गुरुघ्न (गुरुङ्ग)—नेपाल देशमें रहनेवाली एक जाति। ये लोग बड़े साहसी और युद्धमें निपुण होते हैं। इनमें दसा गुरुङ्ग और बारहा गुरुङ्ग ये दो थोक और प्रायः ५८ घर या श्रेणी विभाग हैं। इनमें कन्याओंका विवाह बड़ी उम्रमें होता है। विवाह बंधन तोड़नेके लिए इनमें कन्याकी माताको रुपये देने पड़ते हैं। वह स्त्री फिरसे समारोह के साथ विवाह कर सकती है, किन्तु विधवाओंके लिए ऐसा नियम नहीं है। विधवाएं सिर्फ अपने देवरको ही स्वामीरूपसे ग्रहण कर सकती हैं। इस विवाहमें कोई संस्कार नहीं होता।

यह जाति किसी समय बौद्ध धर्मावलम्बी थी, पर अब सब हिन्दू हो गये हैं, पाण्डुके २य पुत्र भीमसेन ही इनके उपास्य देवता हैं। ये लोग गृह सम्बन्धी विपत्तियोंसे मुक्त होने तथा बीमारीसे छुटकारा पानेके लिये पर्वत और नदी आदिको पुष्प और खाद्य पदार्थों से उनकी पूजा करते हैं। ब्राह्मण ही इनका पौरोहित्य करते हैं, किन्तु उनके अभावमें गुआबुड़ी घरका कोई भी व्यक्ति जन्म, मृत्यु और विवाह आदि संस्कार करा सकता है।

ये लोग मुर्देको गाड़ देते हैं। इस जातिके उरुण्डा घरके लोग पर्वत पर मुर्देको जलाते और उसकी राखको शून्यमें उड़ा देते हैं। मुर्देको गाड़ते समय लेहलामा घरका कोई आदमी आ कर उसकी आत्माके प्रीतिके लिये मन्त्र पाठ पूर्वक पहले थोड़ीसी मिट्टी गड्ढेमें डाल देता है। इसके बाद जो क्रियाएं होती हैं, वे सभी सुनुवार जातिके समान हैं। ये लोग गाय सूअर आदिका मांस नहीं खाते, किन्तु भैंस, मुरगी आदिका खाते हैं।

इनमें छत्री वा खस, गुरुङ्ग, मगर और सुनुवार ये चार जाति-विभाग हैं, जिनमें गुरुङ्ग लोग ही मुख्य गिने जाते हैं। ये लोग दूसरी जातिसे व्याह शादी नहीं करते यदि कोई लड़कीको ले कर भाग जाय, तो उस लड़कीके व्याहमें रुपये देने पड़ते हैं। विवाहके बाद भी वह कन्या अपने पतिका भोजन नहीं बना सकती। इनमें यदि कोई दूसरा किसीकी स्त्रीको भगा लावे, तो उस स्त्रीसे उत्पन्न हुई सन्तान गुरुङ्ग कहाती है, पर कोई भी उस माताका छुआ हुआ अन्न जल नहीं खाता। किरान्ती श्रेणीकी कन्याके साथ विवाह करने से, उससे उत्पन्न हुई सन्तान गुरुङ्ग कहायेगी। खस वा मगरा पिता और गुरुङ्ग माताके गर्भसे उत्पन्न हुई सन्तान खस कहाती है, किन्तु वास्तवमें देखा जाय तो वह भी गुरुङ्ग हैं।

ये निम्न श्रेणीके क्षत्रिय हैं। इनका चेहरा कुछ कुछ तातार जातिके समान और स्वभाव चञ्चल है।

गुरुच (हिं० स्त्री०) गुरुची देखो।

गुरुचखाप (हिं० पु०) लकड़ी गोल करनेका बढ़इयोंका एक यन्त्र जो रंदाकी तरह होता है।

गुरुचांद्री (हिं० वि०) गुरु और चन्द्रमाकृति, जो गुरु और चन्द्रमाके योगसे होता है। गुरुचान्द्रीय।

ज्योतिषके अनुसार कर्कराशिमें बृहस्पति और चन्द्रमाको स्थितिको गुरुचान्द्री योग कहते हैं। जिसकी जन्मकुण्डलीके लग्न या दशम स्थानमें यह योग पड़ता है, वह भाग्यवान् और दीर्घजीवी समझा जाता है।

गुरुजन (सं० पु०) आदरणीय मनुष्य माता, पिता आचार्य प्रभृति।

गुरुराटक (सं० पु०) गुरुकराटक पृषोदरादिवत् मध्य-

ककारलोपे साधुः। एक तरहका मयूर जो तिलमयूर कहलाता है।

गुरुतण्डुला (सं० स्त्री०) उपसशालो, किसी किस्मका धान।

गुरुतम (सं० त्रि०) अतिशयेन गुरुः गुरु-तमप्। १ अति गुरु। माता पिता और आचार्य इन तीनोंको गुरुतम कहते हैं। २ माता पिता प्रभृति गुरुजन। ३ अतिशय गुरुत्वविशिष्ट, बहुत भारी। (पु०) ४ परमेश्वर, ईश्वर। (भारत १३।१४९।२०)

गुरुतल्प (सं० पु०) गुरोः पितुस्तल्पं भार्या यस्य, बहुव्री०। विमातृगामी, विमातासे गमन करनेवाला पुरुष। मनुने ऐसे मनुष्यको महापातको बतलाया है। उसको या तो जलते हुए तप्त लौहपात्रमें सोकर अथवा ज्वलन लौहमयी स्त्रीमूर्तिको आलिङ्गन कर मरजाना भला है। इस प्रकारसे प्राणत्यागसे भिन्न उसका और दूसरा कोई प्रायश्चित्त भी नहीं है। (मनु० ११।४९) गुरुस्तल्पः, ६-तत्। २ गुरुकी भार्या, गुरुकी स्त्री।

गुरुतल्पग (सं०) गुरुतल्प देखो।

गुरुतल्पिन् (सं० पु०) गुरोस्तल्पं गम्यत्वेनास्त्यस्य गुरु-इनि। विमातृगामी।

गुरुता (सं० स्त्री०) गुरोर्भावः गुरु-तल्-टाप्। १ गुरुत्व, भारीपन। २ महत्त्व, बड़प्पन। ३ गुरुपन, गुरुका कर्तव्य, गुरुआई। ४ जाड़ा, अङ्गकी जड़ता।

गुरुताप (सं० पु०) अधिक गर्मी, कड़ी धूप।

गुरुताल (सं० पु०) गुरुरेव तालो यत्र, बहुव्री०। तालविशेष, जिसमें सिर्फ एक गुरु रहे।

गुरुताई (सं० स्त्री०) गुरुता देखो।

गुरुतोमर (सं० पु०) एक तरहका छन्द, जो तोमरछन्दके अन्तमें दो मात्राएं और अधिक रख देनेसे बन जाता है।

गुरुत्व (सं० क्लो०) गुरोर्भावः गुरु-त्व। १ वैशेषिक मतसिद्ध चौबीस गुणोंके अन्तर्गत एक गुण। भाषापरिच्छेदके मतसे—पतनक्रियाका असमवायिकारण अर्थात् जिस गुणके रहनेसे द्रव्यका पतन होता है, उसको गुरुत्व कहते हैं। यह गुण अप्रत्यक्ष है, किसी भी इन्द्रिय द्वारा इसका प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। इस गुणवाले किसी द्रव्यको तराजूके एक तरफ रखनेसे उस पल्लाके झुक जानेके कारण इस गुणका अनुमान कर लिया जाता है। लौकिक व्यवहारमें इस गुणका रत्ती, माशा, तोला, सेर, मन इत्यादि भिन्न नामोंसे उल्लेख किया जाता है। (दिनकरी और कणादसूत्र) वल्लभाचार्यके मतमें स्पर्शविशेषको ही गुरुत्व माना गया है। उनके मतसे इसका प्रत्यक्ष होता है।

नैयायिक और वैशेषिकोंने सिर्फ जल मट्टीमें ही गुरुत्व गुण माना है। उनके मतसे—तेजः, वायु आदि अन्य किसी भी पदार्थमें गुरुत्व गुण नहीं है। यह गुरुत्व दो प्रकारका है—एक नित्य और दूसरा अनित्य। जल और मृत्तिकाके परमाणुओंमें जो गुरुत्व है, वह नित्य है; कभी भी उसका विनाश नहीं होता। इनके सिवा अन्य द्व्यणुक आदिका गुरुत्व अनित्य है। इनकी उत्पत्ति और नाश हुआ करता है। (भाषापरिच्छेद)

साङ्ख्यमतमें अतिरिक्त गुणका उल्लेख न होने पर भी सांख्याचार्य द्रव्यस्वरूपमें वैशेषिक मतसिद्ध बहुतसे गुणोंको मानते हैं। परन्तु द्रव्यके आश्रयके बिना गुणका अस्तित्व नहीं इसलिये वैशेषिक मतसिद्ध गुणोंको द्रव्यका स्वरूप ही मानते हैं, उसे द्रव्यके अतिरिक्त नहीं मानते। इनके मतसे मूल कारणके अन्यतम तमः गुणका धर्म गुरुत्व है, सत्व वा रजोगुणमें गुरुत्व नहीं है। (साङ्ख्यकारिका)

साङ्ख्यमतसे समस्त जन्य पदार्थ त्रिगुणमय अर्थात् सत्व, रजः और तमः गुणसे उत्पन्न हैं। महत्तत्त्व आदि सभी द्रव्योंमें कारणरूपसे तमोगुण है। सांख्यमतकी पर्यालोचना करनेसे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि, अन्य द्रव्य मात्रमें ही गुरुत्व है, तमोगुणके तारतम्यानुसार किसी द्रव्यमें इसकी अधिकता और किसीमें न्यूनता पाई जाती है। मिट्टी और पानीमें तमोगुणके अंश अधिक होनेके कारण, इन दोनोंका गुरुत्व सहज ही अनुभव होता है। परन्तु तेजः आदि पदार्थोंमें तमोगुणके अंश बहुत थोड़े होते हैं, इसलिये उनके गुरुत्वका सहजमें अनुभव नहीं होता। आधुनिक वैज्ञानिकोंने बहुतसे प्रमाणों द्वारा वायुमें गुरुत्व सिद्ध किया है।

वायु और वायुमानयन्त्र देखो।

जैनदर्शनमें रूपी पदार्थ मात्रमें गुरुत्व माना है।

इनके मतसे गुरुत्व पुद्गलका गुण है; जीवात्मा, धर्म-अधर्म, आकाश और काल इन पञ्चद्रव्योंके अतिरिक्त जगत-में जितने भी पदार्थ हैं, उन सबमें गुरुत्व गुण मौजूद है।

२ महत्त्व, गौरव, बड़प्पन। ३ अध्यापकत्व, उपदेश-कत्व, मुदर्रिसका काम। ४ पूज्यत्व, पूजापना। ५ काठिन्य-कठिनता।

गुरुत्वक (सं० पु०) भारीपन।

गुरुत्वकेन्द्र (सं० पु०) पदार्थविज्ञानमें पदार्थोंके बीच वह बिन्दु जिस पर यदि उस पदार्थका सारा विस्तार सिमट कर आ जाय तो भी गुरुत्वकर्षणमें कुछ प्रभेद न हो।

गुरुत्वलम्ब (सं० पु०) किसी पदार्थके गुरुत्वकेन्द्रसे सीधे नीचेकी ओर खींची गई रेखा।

गुरुत्वाकर्षण (सं० पु०) भारी चीजोंके पृथ्वी पर गिराने-का आकर्षण। भास्कराचार्यने १२०० संवत्में इस आक-र्षण-शक्तिका पता लगाया था। उन्होंने अपने सिद्धान्त-शिरोमणिमें स्पष्ट लिखा है—

"आकृष्टिशक्तिश्च मही तया यत्, खस्थं गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्त्या।
आकृष्यते तत्पततीव भाति, समे समन्तात्क्व पतत्वियं खे॥"

अर्थात् पृथ्वीमें आकर्षणशक्ति रहनेके कारण ही वह भारीसे भारी पदार्थोंको अपनी तरफ खींचती है; और यह निश्चय है कि कोई पदार्थ पृथ्वीके आकर्षणसे ही भूमि पर गिरता है। यूरोपके रहनेवाले न्यूटनने भी सन् १६८७ई०में गुरुत्वाकर्षणके सिद्धान्तका पता चलाया था। एक दिन अपने उद्यानमें बैठे हुए उन्होंने वृक्षसे एक फल नीचे पृथ्वी पर गिरते देखा। उसी समय उन्होंने अनुमान किया कि अगल बगल फल न गिरकर नीचे पृथ्वी पर ही गिरा इसका कारण पृथ्वीको आकर्षणशक्तिसे भिन्न दूसरा कुछ नहीं है।

गुरुत्वानुभावकता (सं० स्त्री०) गुरुत्वानुभावकस्य धर्मः गुरुत्वानुभावक-तल्-टाप्। जो वृत्ति द्वारा गुरुत्वका अनुभव कर सकता है।

गुरुदक्षिणा (सं० स्त्री०) गुरुप्रदेया दक्षिणा। अध्ययन समाप्त होने पर गुरुको सन्तुष्ट करनेके लिये जो कुछ भेंट दी जाती है उसे गुरुदक्षिणा कहते हैं। इस देशमें बहुत प्राचीन कालसे गुरुदक्षिणा देनेकी प्रथा चली आती थी। उतङ्क प्रभृति कई एक मुनिने गुरुदक्षिणासे उऋण होनेके लिये असाध्य साधन किया था। गुरु शिष्यसे दक्षिणा स्वरूपमें जो कुछ चाहते थे, शिष्य प्राणपणसे उसीको साधन करनेकी चेष्टा करते थे। उस तरहकी गुरुदक्षिणा-की प्रथा अब कहीं पर देखी नहीं जाती। विष्णुपुराणमें लिखा है कि कृष्णबलरामने गुरुदक्षिणा चुकानेके लिये सान्दीपनके मृत वा अपहृत पुत्रको ला अपने गुरुको दिया था। उतङ्क, कृष्ण प्रभृति शब्द देखो।

गुरुदासपुर—पञ्जाबके लाहोर विभागका एक जिला। यह अक्षा० ३१° ३५' से ३२° ३०' उ० और ७४° ५२' से ७५° ५६' पू०में अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल १८८८ वर्ग-मील है। इसके उत्तरमें काश्मीर, पश्चिममें सियालकोट जिला, दक्षिण-पश्चिममें अमृतसर, दक्षिण-पूर्व और पूर्वमें बिआस नदी, कपूरथल राज्य, होशियारपुर और कांग्रा जिला तथा उत्तरपूर्वमें चम्बाराज्य है।

यह विपाशा और रावी इन दोनों नदियोंके मध्य-वर्त्ती वारी दोआबके अन्तर्भुक्त तथा इरावती नदीके कूल तक विस्तृत हो कर सियालकोटसे त्रिकोणाकृति में हो गया है। यह जिला छोटी छोटी पहाड़ियोंसे परि-पूर्ण है और बीचमें हिमालय श्रेणीके एक पहाड़के सूत्र-के सहारे उत्तरको ओर जानेसे डलहौसीके पार्वतीय स्वास्थ्यनिवास तक पहुंच सकता है। डलहौसीका शैलावास धवलाधार नामक हिमावृत पर्वतके ऊपर अवस्थित है। पर्वतके नीचे स्थान स्थान पर वहादुरी काष्ठ तथा दूसरे दूसरे वृक्षोंसे परिपूर्ण अधित्यकाका समूह देखा जाता है।

साधारणतः जिलेका सम्पूर्ण क्षेत्र समतल है, केवल पश्चिमका भाग कुछ ढालू है। जिलेमें बहुतसी झीलोंके मध्य जमीन पड़ी है, जहां धान तथा सिंघाड़ेकी फसल अधिक होती है।

मोगल राजाओंके समय वटाला और पठानकोट इसके प्रधान नगर थे। बटाला नगरमें सम्राट्के सौतेले भाई समसेर खांका राजप्रसाद था और वहां उनकी बनायी हुई एक सुन्दर पुष्करणी आज भी विद्यमान है। पठानकोट नगरमें एक समय राजपूत राजाओंकी राज-धानी थी। प्रवाद है कि—१२वीं शताब्दीमें जैतपाल नामक एक राजपूतने दिल्लीसे आकर यह नगर स्थापन

किया। बाद उनके वंशधरोंने काङ्गड़ाके निकटवर्त्ती नूरपुर नगरमें अपना राजभवन निर्माण किया। कलानो नगरमें सम्राट् अकबरने उनके पिताकी मृत्युका सम्बाद पाया और उसी जगह उन्होंने स्वयं सम्राटकी उपाधि ग्रहण की थी। इरावतीकूलस्थ डेरा नामक नगर सिख-गुरु नानकका परिचायक था। उक्त नगरके निकटवर्त्ती एक ग्राममें १५३८ ई०में नानकको मृत्यु हुई थी। मोगल राजत्वके समयमें इस जिलेका कुछ विशेष इतिहास नहीं पाया जाता है। परन्तु सिख जातिके अभ्युदय होने पर एक पक्षमें राजकीय शासनकर्त्ता और दूसरे पक्षमें अहमद शाह दुरानोके विरुद्ध युद्ध करके सिख सर्दार क्रमशः अपने अपने आवश्यकतानुसार पञ्जाब और शतद्रुके दोनों पार्श्ववर्ती स्थानों पर अधिकार कर रहने लगे थे। कान्हिया दलके अधिपति मान जाटवंशीय अमरसिंहने बारी दोआवका पश्चिमांश हस्तगत किया तथा रामघरिया दलके सर्दार जगरासिंहने दोना नगर कलानोर श्रीगोविन्दपुर बटाला प्रभृति नगर अधिकारमें कर लिये। कान्हिया सर्दारसे जगरासिंह परास्त हो कर भाग चले, फिर भी १७८३ ई०में उन्होंने अपना राजा पलटा लिया। १८०३ ई०में जगरासिंहकी मृत्यु हुई। बाद उनके पुत्र योधसिंह राजा हुए। ये राजा रणजित-सिंहके मित्र थे। १८१६ ई०में इनकी मृत्युके बाद रणजितने वह स्थान अपने राज्यमें मिला लिया। १८०८ ई०में अमरसिंहका अधिकृत राज्य सिख शासनके अधीन आ गया। प्रथम सिखयुद्धकी समाप्तिके बाद १८४६ ई०में सिखोंसे पठानकोट और उसके निकटवर्त्ती पार्वतीय विभाग इष्ट इण्डिया कम्पनीको अर्पण किये गये। इस समय यह प्रदेश काङ्गड़ा जिलान्तर्गत था। बाद १८४६ ई०में बारी-दोआबका उत्तरांश स्वतन्त्र जिलेमें परिणत हुआ। इस समय बटाला नगरमें इसकी सदर अदालत थी।

१८५५ ई०को रावी नदीको दूसरी पारमें शकारगढ़की तहसील इसके अन्तर्भुक्त हो कर गुरुदासपुर नगरमें सदर अदालत स्थापित हुई। १८६१-६२ ई०में डलहौसी-शैलावास और उसके निकटस्थ समतल शैल समूह पर अङ्गरेज गवर्मेण्टने अपना अधिकार जमाया। कुछ काल तक बटालावासी सर्दार भगवानसिंह गुरुदासपुरके एक प्रधान भूम्यधिकारी थे। ये सिख सैन्याध्यक्ष तेजसिंह-के भागिनेय होते थे। १८६१ ई०में फिरोज शाह और सोब्रावनके युद्धमें तेजसिंहने अङ्गरेजोंसे बटालेका अधिकार पाया था।

इस जिलेमें बटाला, डेरानानक, दीना नगर, सुजान-पुर, कलानोर, श्रीगोविन्दपुर और गुरुदासपुर प्रभृति कई एक नगर हैं, जिनमेंसे डेरानानक और श्रीगोविन्दपुर नगर सिखोंके परम पवित्र स्थान हैं। डलहौसीका शैला-वास समुद्रपृष्ठसे ७६८७ फुट ऊंचे पर है। ग्रीष्मऋतु में यहां बहुतसे मनुष्योंका समागम होता है।

यहांके जङ्गलमें चीता, भेड़िया, बिल्लाव, सूअर, नील-गाय और हिरण पाये जाते हैं। इस जिलेकी जलवायु अत्युत्तम है। वर्षा भी यहां अधिक होती है। यहां लगभग १५ सेकेन्ड्री, १४२ प्राइमरी स्कूल, ५८ एलिमेण्ट्री स्कूल और ३ एङ्गलोवर्नाक्युलर हाई-स्कूल हैं। शिक्षा विभागमें प्रायः८२००० रुपये खर्च होते हैं, जिनमेंसे गवर्मेण्ट ७००० रुपये देती है।

जिलेकी प्रधान उपज गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, रुई और ईख है। १८६९-७० ई०में जो दुर्भिक्ष पड़ा था उससे अमृतसरके मनुष्योंको भी असीम कष्ट भोगना पड़ा था। देशके उत्पन्न द्रव्योंकी रफतनी करनी ही जिलेका प्रधान व्यवसाय है। आसपासके ग्रामोंमें रुईसे एक प्रकारके मोटे वस्त्र प्रस्तुत होते हैं।

२ पञ्जाब प्रदेशके अन्तर्गत गुरुदासपुर जिलेकी तह-सील। यह अक्षा० ३१° ४८´ से ३२° १३´ उ० और देशा० ७५° ६´ से ७५° ३६´ पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल प्रायः ४८६ वर्गमील है। इसके पूर्वमें बियास और उत्तर-पश्चिममें रावी है। इन दोनों नदियोंकी अधित्यका जङ्गलसे घिरी और उर्वरा है। यहांकी लोकसंख्या प्रायः २५८३७८ है। इसमें गुरुदासपुर, दीनापुर और कला-नौर शहर तथा ६६८ ग्राम लगते हैं।

३ इसी नामके जिले और तहसीलका सदर। यह अक्षा० ३२° ३´ उ० और ७५° २५´ पू० उत्तर-पश्चिमीय रेलवेकी अमृतसर-पठानकोट शाखा पर अवस्थित है। यह रेल द्वारा कलकत्तेसे १२५२ मील, बम्बईसे १९८१

मील और करांचीसे ८३८ मीलकी दूरी पर है।

सिपाही विद्रोहके समयका सिखोंके प्रधान बन्दाका बनाया हुआ यहां एक दुर्ग है। इसने बादशाह बहादुर-शाहको १७१२ ई०में मार डाला था। अन्तमें मोगलोंने इसे तथा इसके अनुयायियोंको मार डाला और दुर्ग अधिकार कर लिया था। आजकल यह सारस्वत ब्राह्मणों-का विहार बन गया है। शहरकी आय प्रायः १८००० रुपये और व्यय १७७०० रुपये है। यहां एक ईसाई वर्नाक्यु लर और एक अस्पताल है।

गुरुदत्त—१ रसरत्नावली नामक संस्कृत वैद्यक ग्रन्थकार। २ हिन्दीभाषाके एक कवि। १८३० ई०को उन्होंने जन्म लिया था। वह जयसिंहपुत्र शिवसिंह सवालको सभामें उपस्थित रहते थे।

गुरुदत्त शुक्ल—एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण। वह कानपुर जिले-के मकरन्दपुरमें रहते थे। १८१३ ई०को उनका जन्म हुआ। इनके देवकीनन्दन और शिवनाथ दो भाई थे। गुरुदत्तशुक्ल रचित प्रधान काव्यका नाम पक्षीविलास है। वह हिन्दी भाषाके अच्छे कवि थे।

गुरुदत्तसिंह—हिन्दी-भाषाके एक कवि। वह अवध प्रांत-में अमेठीके रहनेवाले राजा थे। उपनाम भूपति कवि था। १७२० ई० उनका अभ्युदयकाल रहा। वह कवि ही नहीं, कवियोंके पृष्ठपोषक भी थे।

गुरुदास (पु०) १ किसी एक गुरुका नाम।

गुरुदास—२ जैनग्रन्थकर्त्ता। इन्होंने प्रायश्चित्तसमुच्चयको टीका लिखी है।

गुरुदीक्षातन्त्र—(सं० क्लो०) दीक्षाप्रतिपादकं तन्त्रं दीक्षा-तन्त्रं गुरोरवलम्बनीयं दीक्षातन्त्रं मध्यपदलो०। एक तन्त्र जिसमें गुरुसे शिष्य किस तरह दीक्षित किया जा सकता है उसकी प्रणाली अत्यन्त सुन्दर रूपमें वर्णित है।

गुरुदीनपांडे—एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण। १८३४ ई०को उनका अभ्युदय हुआ। उन्होंने वाक्‌मनोहर पिङ्गल नामक एक आवश्यक ग्रन्थ (१८०३ ई०) लिखा था। इसमें केवल छन्द ही नहीं अलङ्कार, ऋतुवर्णन, नखशिख आदि अनेक विषय वर्णित हुए हैं।

गुरुदीनराय (वन्दोजन) युक्तप्रदेशस्थ सीतापुर जिलेके पातिय ग्रामवासी एक भाट। १८८३ ई०को वह जीवित थे खेरा जिलास्थ ईसानगरके राजा रणजितसिंह शाह जांगड़को सभामें इनका आना जाना रहा।

गुरुदेव (सं० पु०) गुरुश्चासौ देवश्चेति कर्मधा०। १ इष्ट-देवता। जिसके निकट दीक्षित होनेके लिये जाय उसीको गुरुदेव कहते हैं। २ वीरशैवप्रदीपिका नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गुरुदैवत (सं० पु०) गुरुर्वृहस्पतिर्दैवतमस्य, बहुव्रो०। पुष्यानक्षत्र।

गुरुद्वारा (हिं० पु०) गुरुका स्थान, गुरुके रहनेकी जगह।

गुरुपण्डित—एक नैयायिक पण्डित। इन्होंने भवानन्दी टीका और गुरुपण्डितीय नामक न्यायग्रन्थ प्रणयन किये हैं।

गुरुपत्नी (सं० स्त्री०) गुरोः पत्नी, ६ तत्। गुरुः आचार्यः पतिर्यस्याः। १ गुरुकी असवर्णा वा सवर्णा स्त्री। मनुने लिखा है कि गुरुकी सवर्णा स्त्री गुरुके सदृश पूजनीया है, किन्तु गुरुको असवर्णा स्त्रीको केवल प्रत्युत्थान और अभिवादनसे ही सम्मान करना चाहिए। शिष्यको गुरु-पत्नीका अङ्गराग, गात्रमार्जन और केशसंस्कार प्रभृति कार्य नहीं करना चाहिए। उन्हें स्नान भी करना उचित नहीं है। युवक शिष्य युवती गुरुपत्नीका पाद ग्रहण कर प्रणाम भी नहीं कर सकता।

गुरोः पितुः पत्नी, ६-तत्। २ माता। ३ विमाता।

गुरुपत्र (सं० क्लो०) गुरुभारयुक्तं पत्रं पत्राकारफलकं यस्य, बहुव्र०। धातुविशेष, रांगा, शीसा।

गुरुपत्रा (सं० स्त्री०) गुरु गुरुपाकं दुर्जरं पत्रमस्य बहुव्रो०, टाप्। तिन्तिड़ीवृक्ष, इमलीका वृक्ष।

गुरुपरिचर्या (सं० स्त्री०) गुरोः परिचर्या ६-तत्। गुरुकी सेवा, गुरुकी शुश्रूषा।

गुरुपाक (सं० त्रि०) गुरुः पाको यस्य, बहुव्रो०। दुष्पाच्य, जो सहजसे परिपक्व न हो।

गुरुपादुकागिरि—बौद्ध शास्त्रोक्त एक पवित्र पर्वत। इसका दूसरा नाम कुक्कुटपाद भी है। यह महानदीके पूर्वमें स्थित है।

गुरुपुत्र (सं० पु०) गुरोः पुत्रः ६-तत्। आचार्य प्रभृति गुरुके पुत्र।

मनुका मत है कि गुरुपुत्रको भी गुरुकी नाईं व्यवहार करना चाहिये। टीकाकार कामूकभट्टने लिखा है कि यदि गुरुपुत्र अल्प वयस्क वा अपना शिष्य न हो तो उसके प्रति गुरुसा भाव दिखलावे, किन्तु गुरुपुत्र बालक समानवयस्क या अपना शिष्य हो तो उसके प्रति वैसा व्यवहार करना नहीं चाहिए। जो पिताके शिष्यके पास अध्ययन करता है उसे चाहिए कि वह उनको गुरुकी नाईं मान्य करें।

शिष्यको न्यूनवयस्क वा समानवयस्क गुरुपुत्रका गात्रमार्जन, उच्छिष्टभोजन या पदमर्द्दन करना नहीं चाहिए एवं वैसे गुरुपुत्रको स्नान भी कराना मना है। (शिष्य देखो।)

तान्त्रिकोंका कथन है कि मनुका यह विधान सिर्फ आचार्य गुरुपुत्रके प्रति उपयुक्त है; किन्तु मन्त्रदाता गुरुपुत्र चाहे कैसाही क्यों न हो तो भी उन्हें गुरुसा व्यवहार करना चाहिये।

"गुरुवत् गुरुपुत्रेषु।" (तन्त्रसार)

वर्त्तमान सामाजिक नियमसे बहुतसे तान्त्रिक उपासकोंने गुरुके सदृश गुरुपुत्रको पादपूजा और उच्छिष्टादिका भोजन किया करते हैं।

गुरुपुष्प (सं० पु०) क्रमुकवृक्ष, सुपारीका पेड़।

गुरुपुष्य (सं० पु०) बृहस्पतिके दिन पुष्य नक्षत्रके पड़नेका योग। ज्योतिषी इसे शुभ योग मानते हैं।

गुरुपूजा (सं० स्त्री०) गुरोः पूजा, ६-तत्। गुरु वा मन्त्रदाताकी पूजा। दीक्षित हो कर जिस तरह प्रतिदिन इष्टदेवताकी पूजा करनी पड़ती है उसी तरह गुरुपूजा करनेका भी विधान है। (पूजा देखो।)

गुरुप्रमोद (सं० पु०) गुरोः प्रमोदः, ६-तत्। गुरुके प्रति प्रेम वा प्रीति। (त्रि०) गुरुं प्रमोदयति गुरु-प्र-मुद-णिच् अण। २ गुरुका सन्तोषकारक, जिससे गुरु सन्तुष्ट हो।

गुरुप्रसाद (सं० पु०) गुरोः प्रसादः, ६-तत्०। गुरुकी प्रसन्नता।

गुरुप्रिय (सं० त्रि०) गुरोः प्रियः, ६-तत्०। जिसको गुरु चाहते हों, जो गुरुका प्यारा हो। गुरुरेव प्रियो यस्य, बहुव्री०। गुरुपरायण, गुरुमें जिसकी अचला भक्ति हो।

गुरुबू—जातिविशेष। यह लोग शिवकी उपासना और भस्म धारण करते हैं। रुद्राक्षकी माला पहननेका भी उन्हें अधिकार है। शिवकी पूजामें जो चढ़ाया जाता, उनके घर आता है। ष्टील साहबने उन्हें शूद्र-जैसा लिखा है। यह दाक्षिणात्यके अधिवासी और शिव, मारुती, हनुमान् आदि मन्दिरोंके पुजारी हैं।

गुरुभ (सं० क्ली०) गुरोर्भं, ६-तत्। १ पुष्यानक्षत्र। बृहस्पति इस नक्षत्रका अधिपति होनेके कारण इसे गुरुभ कहते हैं। २ धनुराशि। ३ मीनराशि।

गुरुभाई (हिं० पु०) वैसे मनुष्य जिनमेंसे प्रत्येकका गुरु एक ही व्यक्ति हो।

गुरुभार (सं० पु०) १ मकड़ेके पुत्र। २ बहुत भारी।

गुरुभाव (सं० पु०) गुरोर्भावः, ६-तत्०। गुरुता, भारीपन, गुरुश्चासौ भावश्चेति कर्मधा०। १ अतिशय गौरवान्वित अभिप्राय। (त्रि०) गुरुर्गौरवयुक्तः भावोऽभिप्रायो यस्य, बहुव्री०। ३ जिसका अभिप्राय वा तात्पर्य गौरव युक्त हो।

गुरुभृत् (सं० पु०) गुरुं गुरुत्वं बिभर्त्ति गुरु-भृ-क्विप् तुगागमश्च। गुरुत्वयुक्त, जिसको गौरव हो

गुरुमत् (सं० त्रि०) गुरुः गुरुवर्णोऽस्य अस्ति गुरु मतुप्। १ जिसमें गुरुवर्ण हो। २ गुरुयुक्त।

गुरुमर्दल (सं० पु०) नित्यकर्मधा०। वाद्यविशेष, एक तरहका बाजा।

गुरुमुख (हिं० पु०) दीक्षित, जिसने गुरुसे मन्त्र लिया हो।

गुरुमुखी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी लिपि, इसे गुरु नानकने चलाया था। आज भी यह लिपि पञ्जाबमें प्रचलित

गुरुरत्न (सं० क्ली०) गुरु गौरवान्वितं रत्नं। १ पुष्परागमणि। पुखराज नामका रत्न। २ गोमेद नामक रत्न।

गुरुराज—१ एक वैदान्तिक। इन्होंने चन्द्रिका टीका प्रणयन की है। २ वृन्दावनाख्यानस्तोत्र-रचयिता।

गुरुरामकवि—सुभद्राधनञ्जय नामक संस्कृत नाटक प्रणेता।

गुरुराहु (सं० पु०) गुरुणा सह राहुर्यत्र, बहुव्री०। योगविशेष। बृहस्पति राहुके साथ एक नक्षत्रमें आनेसे 'गुरुराहु' योग होता है। इस योगमें विवाह, व्रत और यज्ञ प्रभृति कार्य निषिद्ध हैं। भविष्यपुराणमें लिखा

है कि गुरु और राहुके भिन्न भिन्न नक्षत्रमें रहने पर भी यदि एक राशिगत हों तो भी यह योग लगता है ।

कालामृत द्रष्टव्य।

गुरुवर्चोघ्न (सं० पु०) गुरुवर्चो वातादिप्रकोपजनित-कोष्ठरोधः तं हन्ति हन्-टक्। लिम्पाकवृक्ष, कागजी नीबूका पेड़।

गुरुवर्त्तिन् (सं० पु०) गुरौ गुरुकुले वर्त्तते व्रत-णिनि। १ ब्रह्मचारी। (त्रि०) २ गुरुकुलमें रहनेवाला।

गुरुवर्ष (सं० क्ली०पु०) वर्षविशेष, किसी एक वर्षका नाम। जैसे वैशाख मासके शेष दिन तकको सौर वर्ष कहते हैं, उसी प्रकार वृहस्पति मेष राशिके प्रथमांशसे चलना प्रारम्भ कर जितने समयमें मीन राशिके शेष अंशमें पहुंचते हैं उतने समयको गुरुवर्ष कहते हैं। वर्तमान समयमें मानवका दैनन्दिन व्यवहार सौरवर्षके अवलंबन से ही चला करता है। अन्य किसी ग्रहके वर्षकी उसमें जरूरत नहीं होती। परन्तु ज्योतिर्वेत्ताओंने सभी ग्रहों का एक एक वर्ष स्थिर किया है। (वर्षमान देखो।) वराह-मिहिरके मतसे वृहस्पतिकी माध्यमिक गतिमें एक राशि-के भोग-कालका गुरुवर्ष कहा जाता है।

वृहत्संहितामें लिखा है कि, वृहस्पति जिस मास और जिस नक्षत्रमें उदित होगा, उसके अनुसार मासके नामकी भांति उस वर्षका नाम होगा। वृहस्पतिके कुल बारह वर्ष हुआ करते हैं, जिसको वार्हस्पत्य मान (12-Years Cycle of Jupiter) कहते हैं। यथा—कार्त्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, जैष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्र और आश्विन कृत्तिका वा रोहिणी नक्षत्रमें वृहस्पतिके उदय होनेसे कार्त्तिक नामक वर्ष होता है। इस वर्षमें शकटजीवी, अग्निजीवी और गायोंको पीड़ा होती है। बहुतसे लोग व्याधिग्रस्त और शस्त्रके आघातसे मर्माहत होते हैं। लाल और पीले फूलोंकी वृद्धि होती है।

मृगशिरा वा आर्द्रा नक्षत्रमें वृहस्पतिका उदय हो तो उस वर्षका नाम मार्गशीर्ष होता है। इस वर्षमें सूखा पड़ती है और मृग, चूहे, पक्षी, और टिड्डीयों आदि-से अनाज नष्ट होता है। मनुष्योंको व्याधिका भय और राजाओंकी मित्रके साथ शत्रुता होती है।

पुनर्वसु वा पुष्य नक्षत्रमें वृहस्पतिका उदय हो, तो पौष नामका वर्ष होता है। इस वर्षमें धान्यका मूल्य दूना वा तिगुना हो जाता है। राजाको शत्रुका भय नहीं रहता और पौष्टिक कार्योंकी भी वृद्धि हुआ करती है।

अश्लेषा अथवा मघा नक्षत्रमें वृहस्पतिके उदय होनेसे, उसको माघवर्ष कहते हैं। इसमें पितृगणकी पूजाकी वृद्धि, समस्त प्राणियोंका मङ्गल, आरोग्य, सुवृष्टि धान्य सुलभ, सम्पदकी वृद्धि और मित्रोंका लाभ होता है।

पूर्वफाल्गुनी, उत्तर फाल्गुनी वा हस्ता नक्षत्रमें वृह-स्पतिका उदय होने पर वर्षका नाम फाल्गुन होता है। इस वर्ष मङ्गल, शस्यवृद्धि, स्त्रियोंका दुर्भाग्य, चोरोंकी बढ़ती और राजाओंको सर्वदा उग्रता रहती है।

चित्रा वा स्वाती नक्षत्रमें वृहस्पतिके उदयसे वर्षका नाम चैत्र होता है। इस साल थोड़ी वर्षा, राजाओंका मृदुस्वभाव, कोष और धान्यकी वृद्धि, [illegible] रूपवान् व्य-क्तियोंको पीड़ा होती है। इस वर्ष लोगोंको अन्नका कष्ट नहीं रहता।

जिस वर्षमें विशाखा वा अनुराधा नक्षत्रमें वृहस्पति उदित होता है, उस वर्षको वैशाख कहते हैं। इसमें राजा और प्रजाके धर्मकी वृद्धि और प्रसन्नता होती है। किसी तरहका भय नहीं होता।

जिस वर्षमें ज्येष्ठा वा मूला नक्षत्रमें वृहस्पतिका उदय होता है, वह वर्ष जैष्ठ कहलाता है। इस साल राजा और धर्मज्ञ व्यक्ति प्राधान्य लाभ करते हैं। कङ्गु और शमीके सिवा और सब धानोंकी हानि होती है।

पूर्वाषाढ़ा वा उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमें वृहस्पतिके उदय-से वर्षका नाम आषाढ़ होता है। इसमें सूखा पड़ती है और अलब्ध वस्तुओंका लाभ तथा लब्ध वस्तुकी रक्षा होती है। परन्तु राजाओंको व्यग्रता होती है।

जिस वर्ष वृहस्पति श्रवणा वा धनिष्ठा नक्षत्रमें उदित होता है, उस वर्षको श्रावण कहते हैं। इसमें सब तरहका अनाज निर्विघ्न पकता है, पर उक्त अनाज-को खानेसे मनुष्य और पाखण्डियोंको पीड़ा होती है।

शतभिषा, पूर्वभाद्र और उत्तरभाद्रपद, इनमेंसे किसी एकमें वृहस्पतिका उदय हो, तो उस वर्षको भाद्रवर्ष

कहते हैं। इस वर्ष सिर्फ लताजातीय शस्यकी वृद्धि होती है, और कोई अनाज बिल्कुल ही नहीं होता। कहीं कहीं भयङ्कर दुर्भिक्ष पड़ जाता है।

रेवती, अश्विनी और भरणी इनमेंसे किसी एक नक्षत्रमें बृहस्पतिका उदय हो, तो वह वर्ष आश्विन कहलाता है। इस वर्षमें अत्यन्त वर्षा, प्रजाको हर्ष और सम्पूर्ण प्राणियोंको सुख होता है। कहीं भी अन्न कष्ट नहीं रहता। (बृहत्सं० ८ अ०) (बृहस्पतिचार देखो)

गुरुवला (सं० स्त्री०) संकीर्ण रागका एक भेद।

गुरुवायङ्करी—दक्षिण कनाड़ा जिलेके उप्पिनङ्गडी तालुकके अन्तर्गत एक ग्राम। यह वेल्लतङ्गरीके पास तालुकको कचहरीसे १२ मील उत्तरपूर्वमें अवस्थित है। यहां एक जैन मन्दिर है। फर्गुसनने उक्त मन्दिरको 'गुरुशङ्करी' बतलाया है। उक्त मन्दिरके मण्डपकी छत पांच स्तम्भों पर डटी हुई है, और भित्तिके पास चारों तरफ पत्थरकी सब मूर्त्तियां खुदी हुई हैं। लोगोंका विश्वास है कि, यह मन्दिर बहुत प्राचीन कालका है।

गुरुवायूर—मन्द्राजके मलबार जिलेके अन्तर्गत पोनानी तालुकका एक ग्राम। यह अक्षा० १०° ३५´ उ० और ७६° ३´ पू० चौघाट पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ३३८३ है। यहां नंबुरि ब्राह्मण, नायर और उच्च श्रेणीके हिन्दुओंका वास अधिक है। यह पोनानासे १६ मीलकी दूरी पर बसा है, यहांके प्राचीन कृष्णमन्दिर तथा नगरके प्रवेशद्वारके गोपुरका शिल्पकार्य अत्यन्त सुन्दर है। १७८४ ई०में टीपू सुलतानने यहांके बहुतसे मन्दिरोंको नष्ट भ्रष्टकर दिया था। १७८४ ई०में कालिकटके सामुरिराजने कई एक जीर्ण मन्दिरोंका संस्कार किया था।

गुरुवार (सं० पु०) बृहस्पतिका दिन, बृहस्पतिजो देवताओंके गुरु थे इससे गुरु शब्दसे बृहस्पतिका ग्रहण हुआ।

गुरुवासी वैष्णव—गृहस्थ वैष्णवोंके एक सम्प्रदायका नाम। ये गृहस्थ होते हैं। इनमें न्यारे न्यारे मठ और महन्त हैं। ये महन्त बढ़ई, बनियां, नाई, पसारी, किसान, मालाकार इत्यादिको मन्त्र दे कर अपना शिष्य बनाते और उनसे खेती-बारी करा कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। इनकी पद्धति भी दूसरी तरहकी है। ये अन्यान्य वैष्णवोंके साथ एक पंक्तिमें बैठ कर भोजन नहीं करते।

गुरुवीज (सं० पु०) मसूर।

गुरुवृत्ति (सं० स्त्री०) गुरुषु वृत्तिर्व्यवहारः, ७-तत्। गुरुके प्रति शिष्यका कर्त्तव्य व्यवहार। (शिष्य देखो।)

गुरुशिंशपा (सं० स्त्री०) नित्यकर्मधा०। शिंशपावृक्ष, शीसमका पेड़।

गुरुशुश्रुषा (सं० स्त्री०) गुरोः शुश्रुषा, ६-तत्। गुरुसेवा।

गुरुश्रेष्ठ (सं० क्ली०) धातुविशेष, रांगा।

गुरुस (सं० पु०) गरुड़शाली, किसी किस्मका धान।

गुरुसारा (सं० स्त्री०) गुरुः गुरुत्ववान् सारो यस्य, बहुव्री०। १ शिंशपा, शीसमका वृक्ष। (त्रि०) २ महाभारयुक्त वस्तु, बहुत भारी चीज।

गुरुसिंह (सं० पु०) एक पर्व, त्योहार। जब बृहस्पति सिंह राशि पर आता है तो यह पर्व लगता है। इस त्योहारमें नासिक क्षेत्रकी यात्रा और गोदावरी नदीका स्नान पुण्य माना गया है।

गुरुसेवा (सं० स्त्री०) गुरोः सेवा, ६-तत्। गुरुकी शुश्रूषा।

गुरुस्कन्ध (सं० पु०) गुरुस्कन्धोऽस्य, बहुव्री०। १ एक पर्वत। २ क्षीरिकीवृक्ष, खिरनीका पेड़।

गुरुस्वेद (सं० पु०) अश्वका स्वेदविशेष, घोड़ेका पसीना।

गुरुह (सं० त्रि०) गुरुहन् देखो।

गुरुहन् (सं० पु०) गुरुं गुरुपाकं हन्ति गुरु-हन्-क्विप्। १ उजला सरसों। (त्रि०) गुरुं आचार्यादिकं हन्ति क्विप्। २ गुरुहन्ता।

गुरू (हिं० पु०) गुरु देखो।

गुरूघंटाल (हिं० वि०) १ अत्यन्त चतुर, चुस्तचालाक। २ चालबाज, धूर्त्त।

गुरूत्तम (सं० त्रि०) गुरुषु गुरूणां वा उत्तमः। १ पूज्यतम, सबसे अधिक पूज्य। (पु०) २ परमेश्वर।

(भाग० वि०)

पुरुषोत्तम और गुरूत्तम आदि पदोंके समासके विषयमें वैयाकरणोंका मतभेद है। किसी किसी वैयाकरणके मतसे गुरूत्तम आदिके स्थान पर गुरुषु उत्तमः इस प्रकारका सप्तमी तत्पुरुष समासही होता है, षष्ठी समास

नहीं। पाणिनीय सूत्र भी इन्हींके मतका समर्थना करता है। (न निर्धारणे। पा।२।२।१०) कैयटके मतसे—जिस स्थान पर निर्द्धार्य्यमाण, निर्द्धारणका कारण और जिससे निद्धारण किया जाता है—इन तीनोंका उल्लेख रहता है, वहां निर्द्धारणमें विहित षष्ठीका समास नहीं होता ; किन्तु इन तीनोंके न रहने पर हो जाता है। (कैयट)

जैसे—'मनुष्याणां द्विजः श्रेष्ठः' इस जगह निर्द्धार्य-माण द्विज, निर्द्धारणका कारण श्रेष्ठत्व और जिससे निर्द्धा-रण किया गया है वह अर्थात् मनुष्य, इन तीनोंका उल्लेख है, इस लिये षष्ठी समास नहीं हुआ। किन्तु गुरूत्तम आदिमें तीनोंका उल्लेख नहीं होनेके कारण वहां षष्ठी और सप्तमी तत्पुरुष ये दोनों समास हो सकते हैं।

गुरूपदेश (सं० पु०) गुरोरुपदेशः, ६-तत्। गुरुका वाक्य, गुरुका उपदेश।

गुरूपासना (सं० स्त्री०) गुरोरुपासना, ६-तत्। गुरुकी सेवा।

गुरेट (हिं० पु०) एक तरहका बेलन जिससे कड़ाहमें पकता हुआ ईखका रस चलाया जाता है। यह लगभग चार या पांच हाथके डंटेमें लगा रहता है।

गुरेरा (हिं० पु०) गुञ्जा देखो।

गुर्गांव (गुड़गांव) पञ्जाबके छोटे लाटके अधीन एक जिला। यह अक्षा० २७° ३८´ से २८° ३२´ उ० और ७६° १४´ से ७७° ३४´ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण १९४५ वर्गमील है। इसके उत्तरमें रोहतक, पश्चिम और दक्षिण-में अलवर, नाभा और झिन्द राज्य, दक्षिणमें मथुरा जिला, पूर्वमें यमुना नदी और उत्तरपूर्वमें दिल्ली जिला है। गुर्गांव नगरमें जिलेकी सदर अदालत है। परन्तु जिलेका रेवाड़ी नामक स्थान ही वाणिज्यके लिये प्रधान है।

दो छोटे पहाड़ जिलेके दक्षिणसे ले कर बराबर उत्त-रकी ओर समतल क्षेत्रतक फैले हुए हैं। इसके पश्चिममें एक और पहाड़ है जिसने अलवर राजाको स्वतन्त्र कर रखा है। इस पहाड़की एक शाखा दिल्ली तक चली गई है। दोनों पहाड़ोंमेंसे एक भी ६०० फुटसे अधिक ऊंचा न होगा। यहांकी जमीन वालुकामय है। कहीं कहीं पहाड़ भी हैं। पार्वतीय छोटे छोटे असंख्य जलस्रोत इस जिलेके मध्य प्रवाहित हो कर नजफगड़ नामक झीलमें परिणत हो गये हैं। यह झील गुर्गांव सदरसे रोहतक और दिल्ली जिला तक विस्तृत है। यहांके नीचे निकटवर्ती बारह ग्रामोंके कूपोंका जल लवणाक्त है तथा रोहतकके निकटवर्ती नजफगड़ झीलके समीप भी जलसे लवण प्रस्तुत किया जाता है इस पहाड़के दक्षिणके भागमें लोहेकी खान है जिलाके दक्षिण फिरोजपुरमें एक समय लोहे गलानेका कारखाना था। अन्यान्य खनिज धातुमें तांबा, सीसा, गेरूमट्टी, हरताल प्रभृति पाये जाते हैं। पश्चिम ओरके पहाड़के नीचे एक झरणा है जिसका जल गन्धकमिश्रित है। वात, क्षत तथा दूसरे दूसरे चर्मरोगोंके लिये यह जल बहुत उपकारी है। इस जिलेमें जङ्गल अधिक नहीं पाया जाता है, परन्तु पहाड़के ऊपर बाघ, चीता, हरिण, नीलगाय, शृगाल और खरगोस प्रभृति जन्तु देखे जाते हैं।

इस जिलेके प्राचीन इतिहासके विषयमें विशेष पता नहीं चलता है। मुसलमान इतिहासमें इस जिलेका नाम 'मेवात' अर्थात् मेव जातिका वासस्थान कह कर उल्लिखित है। अभी भी गुर्गांवके अधिवासियोंमें मेव जातिकी संख्या ही अधिक है। दिल्लीमें जब मोगल, प्रभाव जाज्वल्यमान था, तब ये मेव दस्युके दलमें दिल्लीके प्राचीर तक आकर लूट पाट किया करते थे। ये पहाड़ोंमें इस तरह छिप कर रहते थे कि मोगल सम्राट् किसी उपायसे उन्हें दमन नहीं कर सकते थे। १८०३ ई०में लोर्ड लेककी जयके बाद यह जिला अंगरेजोंके अधिकारमें आया।

१८३८ ई०से इस जिलेकी अधिक उन्नति हुई है। परन्तु दस्युका उत्पात और दुर्द्धर्ष राजपूत जातिका अत्या-चार आज भी नहीं गया है। पहले भरतपुरके राजाने जिलेकी समस्त जमीन इजारे पर लगा दी, बाद १८०४ ई०में भरतपुर युद्धकी गड़बड़ीमें समस्त बन्दोबस्त बन्द हो गया।

रेवाड़ीके निकट भरवा जातके सैनिकावासमें पहले इसी जिलेकी सदर अदालत थी, बाद १८२१ ई०में यह उठकर गुर्गांव नगरको चली गई। १८३२ ई०में यह जिला तथा दिल्लीका अधिकांश उत्तर-पश्चिम गवर्मेण्टके

अधिकारमें आ गया। १८५७ ई०के मईमासमें सिपाही विद्रोहके समय फरुक्खनगरके नवाब विद्रोही हो उठे, मेव जाति तथा राजपूत उनके अनुगामी हुए। १८५८ ई०में नवाबको विद्रोहीका सहकारी समझ कर उनकी समस्त सम्पत्ति सरकारने जब्त कर ली।

इस जिलेमें रेवाड़ी, फिरोजपुर, पलवल, फरुक्खनगर, गुर्गांव, सोहाना, होदल और भी ये कई एक नगर लगते हैं। यहां मेव, जाट, गूजर, अहीर, राजपूत, बेगिया, रङ्गर और मीना जातिका वास बहुत है। समस्त गुर्गांव जिलेमें शीतला देवीकी पूजा ही अधिक प्रचलित है।

जलकी विशेष सुविधा नहीं रहनेसे १७८३ ई० १८०३ १८१२, १८१७, १८३३, १८३७, १८६० और १८६८ में सात बार दुर्भिक्ष पड़ा था।

परन्तु १७८३ ई०का महामारी दुर्भिक्ष आज भी हिन्दुस्थानियोंके हृदयमें जाग्रत् है। यहां चार दातव्य चिकित्सालय है।

२ पञ्जावके गुर्गांव जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २८° १२´ से २८° ३३´ उ० और देशा० ७६° ४२´ से ७७° १५´ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ४१३ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १२५८६० है। इसमें गुर्गांव, सोहन और फरुखनगर नामक तीन शहर तथा २०७ ग्राम लगते हैं। तहसीलके उत्तरकी जमीन उर्वरा तथा पश्चिम की बालुकामय है।

३ उक्त जिले और तहसीलका प्रधान नगर। यह अक्षा० २८° २८´ उ० और देशा० ७७° २´ पू० राजपूताना मालवा-रलवेके गुर्गांव ष्टेसनसे ३ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। इस नगरसे प्रायः १ मील उत्तर-पूर्व बहादुरगढ़ जानेके रास्ते पर एक स्तम्भ है। जिसकी ऊंचाई ३ फुट, चौड़ाई १२३ इंच और मोटाई ५ इंचकी है। यहां शीतला देवीका एक मन्दिर, एक मिडिल स्कूल तथा १ चिकित्सालय है।

गुर्चनी (हिं० स्त्री०) १ गेहूं और चना मिला हुआ अनाज।

२ भारतके युक्तप्रान्तमें रहनेवाली एक अफगानजाति। इनमें कोई कोई समतल भूमि पर खेती बारी करते हैं और सभी लोग पर्वतों पर घूमा करते हैं। उक्त पर्वतोंके दक्षिणमें हुन्दर नामक एक स्थानमें एक दुर्ग है इस जातिको दमन करनेके लिये सबूनमझने यह दुर्ग बनवाया है। हुन्दरके पास कन्दाहार जानेके लिए एक गिरिसङ्कट है। १८५०, १८५२ और १८५३ ई०में अफगान सेना यहां दिखाई दी। इस पर ब्रटिश गवर्मेंटने घोषणा निकाली कि किसी भी अफगानको अङ्गरेजी राज्यमें पानेसे, उसे कैद कर लिया जायगा। १८५५ ई०में गुर्चनी-सर्दारके गिरिसङ्कटकी रक्षाके लिये नियुक्त होने पर, अङ्गरेजने उन्हें (खर्चके लिए) वार्षिक हजार रुपये देते थे। इस जातिकी लिशरी शाखा बहुत ही बलवान् है, ये लोग हर वख्त मुरीजातिके साथ युद्ध करनेमें लगे रहते हैं। गुर्चनी और लिशरी जाति पर्वतके सामने, तथा ट्रेशक जाति हन्दर और मिथुनकोटकी बीचकी समतल भूमि पर वास करती है।

गुर्ज (फा० पु०) गदा, सोंटा।

गुर्जमार (फा० पु०) एक तरहके मुसलमान फकीर। यह सदा लोहगुज हाथमें लिये इधर उधर घूमता है।

गुर्जर (सं० पु०) गुरुं जरयति जृ-णिच्-अण्। १ गुजरात देश। (बृहत्संहिता १४।१८)

गुजरात कहनेसे इस समय बम्बई प्रेसीडेन्सीके समुद्रकूलवर्ती सम्पूर्ण उत्तरांश अर्थात् उत्तरसीमामें राजपूताना, दक्षिणमें कोङ्कण, पूर्व विन्ध्य और पश्चिममें सागर तकका बोध होता है। इसके भीतर सूरत, भड़ौंच, खेड़ा, पञ्चमहल, अहमदाबाद, बड़ोदा, महीकांटा, रेवा, पालनपुर, राधनपुर, बालासिनोर, काम्बे, दङ्क, चौरार, बांसदा, पेट, धरमपुर थरड़, सचीन, बमरवा आदि नगर आते हैं। इसके सिवा इसमें १८० क्षुद्र राज्यविशिष्ट काठियावाड़ प्रदेश भी आता है। इन सबको लेकर गुजरातका भूपरिमाण प्रायः ४१५३६ वर्गमील होता है। यहां गुजराती, मराठी और कनाड़ी भाषा चलती है।

ऊपर जिस प्रकार गुजरातका आकार लिखा गया हैं, असली गुजरात राज्य पहले उतना बड़ा नहीं था। उक्त स्थानोंमें गुर्जरवासी गुजरातियोंके धीरे धीरे फैल जानेके कारण अन्तमें उक्त सभी जनपद गुजरातमें गिने जाने लगे। प्राचीन गुर्जर सुराष्ट्र, आनर्त, भरुकच्छ

(सिन्धु) आदि जनपदोंसे पृथक् ही था, यह बात पुराण आदि प्राचीन ग्रन्थों और युयेनचुआङ्के भ्रमण-वृतान्त-से भली भांति मालूम हो जाती है। प्राचीन गुर्जर वर्तमान बड़ोदा, खेड़ा और जावरा जिलके उत्तरसे राजपूतानाके दक्षिणसीमा तक विस्तृत था। अब भी उक्त प्रदेशको गुजरात कहते हैं। ७वीं शताब्दीमें जब चीन परिव्राजक युयेनचुआङ्ग (क्यु-चे-लो) गुर्जर राज्यमें आये थे, तब इसका भूपरिमाण ५००० ली अर्थात् प्रायः ४०० कोस था। उस समय यहां बीस वर्षकी उम्रवाले एक क्षत्रिय राजा राज्य करते थे, जिनकी राजधानी पि-लो-मो-लो अर्थात् राजपूतानास्थ बालमेरमें थी। ईसाकी ८वीं शताब्दीमें गुर्जरमें चापोत्कट राजाओंका अभ्युदय हुआ। इन चापोत्कट वंशके राज वनराजने गुजरातकी राजधानी अनहिलपत्तनमें स्थापित की। ६६८ विक्रमसंवत्में गुर्जरराजा चालुक्य राजाओंके हाथमें आया। (चापोत्कट और चालुक्य देखो।)

वि० सं० १३०२ में बघेलावंशीय वीसलदेवने गुर्जर पर अधिकार पाया। उसके बाद इनके पुत्रादि क्रमसे अर्जुनदेव, सारङ्गदेव और कर्णदेवने कुल ५८ वर्ष राज्य किया। पीछे सुलतान अलाउद्दीन्ने गुर्जर अधिकार किया। इनके पीछे उदय खाँने २५ वर्ष, सुलतान मुजफ्फरने १८ वर्ष, सुलतान अहमदने ३२ वर्ष ७ महीने ७ दिन (इन्होंने अहमदाबाद बसाया था), सुलतान कुतुब-उद्-दीनने १० वर्ष ५ मास ६ दिन, सुलतान दाउदशाहने ३६ वर्ष, (सम्वत् १५७८ में) सुलतान सिकन्दरने ८ दिन, (सं० १५८२ में) बादशाह महमूदने १ मास १० दिन और इनके बाद बादशाह बहादुरने १० वर्ष राज्य किया था। इन बहादुर शाहने गुर्जरराज्य बहुत कुछ बढ़ाया था। इनके बाद मोगल-सम्राट् हुमायूं ८ महीने गुजरातमें आ कर रहे थे। पीछे बहादुरने अधिकार पाया, किन्तु समुद्रमें उनकी मृत्यु हो गई। १५६३ सम्वत्में बादशाह मुहम्मद राजा हुए और उन्होंने १७ वर्ष राज्य किया। बहरा नामक किसी एक घातकके हाथ इनकी मृत्यु हुई। १६१७ सम्वत्में मुजफ्फर शाह राजा हुए। इनके समयमें अकबर बादशाहने आ कर गुजरात दखल कर लिया। तभीसे यह स्थान दिल्लीके मोगल बादशाओंके अधीन हुआ। सिन्धु-प्रदेशके अधिकार करनेके उपरान्त यह स्थान भी अंग्रेजी राज्यमें शामिल हो गया।

(बहु०) गुर्जरोऽभिजनोऽस्य गुर्जर अण्, बहुत्वे तस्य लुक्। २ गुर्जरदेशवासी, गुजरातके रहनेवाले।

३ गुजरातवासी ब्राह्मणोंका एक भेद, पञ्चद्राविड़ोंमें एकतम। (सह्याद्रि ३।११२) गुर्जर नामक स्थानमें रहनेके कारण इनका गुर्जर नाम पड़ा है। इनमें ८४ श्रेणियां हैं। यथा—

अक्षमाला, अगस्त्यवाल, अनवाल, इतावाल, उनेवाल, उदुम्बरा, कनोजिया, कन्दोलिया, कपिला, करखेलिया, करोरा, कलिङ्गा, खरयता, खेड़ावाल, गङ्गापुत्रा, गयावाल, गर्गवी, गिरनारा, गुर्जरगोरा, गुगला, गोमतीवाल, गोमित्रा, गोरवाल, चतुर्वेदीमोड़, चंवेश, चित्रोरा, जम्बू, झरोला, तंनोरिया, तलिङ्गा, तिलोक, तिलोकीय, उदीच्य, त्रिवाड़ीमिवारा, त्रिवेड़ामाड़, दधीच, दाहिया, दौमावाल, द्राविड़ा, नरसामपरा, नादोदर नापला, नार्मदिक निदुवाना, पगोरा, पर्श्लिया, पल्लीवाल, पुरवाल पुष्करणा, प्रेतवाल, भड़मेवावा, मनोरिया, भरडाना, मरोवा, मालवी, मारू, मेरतुवाल, मोतमेत्रा, मोताला, याज्ञिकवाल, राजवाल, रायपुरा, रायकोवाल, रोरवाल, ललाठ, बड़नगर, विमनगर, बयड़ा, बरकारा, बलोदरा, वाल्मीक, विष्णोदरा, शिहोराउदीच्य, सनोरिया, सजोदुरा, सथोदरा, सनोबिया, सहचोरा, सहस्र-उदीच्य, सारस्वत, सिन्दुवाल, श्रीगोड़ा, श्रीमाला. सोमपरा, सोरठिया और हरसोरा। (गुजराती ब्राह्मण देखो।)

गुर्जरी (सं० स्त्री०) गुर्जर उत्पादकत्वेन अस्त्यस्य गुर्जर अच्-बाहुलकात् ङीप्। १ रागिणीविशेष। प्राचीन सङ्गीतवेत्ताने इसे भैरव रागकी सहचरी कह कर वर्णन किया है। (सङ्गीतदर्प० राग० १६) दर्पणकारका मत है कि ग्रीष्म ऋतुमें भैरवरागके साथ यह रागिणी गान करना उचित है। प्रातः कालके एक प्रहरके बाद यह रागिणी गान गाया जाता है। २ गुजरात देशकी स्त्री।

गुर्जाल—कृष्णा जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह दाचे पल्लीसे ८ मील दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। "पलनाड़ वीर" नामक ग्रन्थमें इसका प्राचीन नाम पलनाड़ लिखा

है। यहां चार मन्दिरोंके खण्डहर पड़े हैं। मन्दिर बहुत ही प्राचीन मालूम होते हैं। यहां तीन शिलालेख मिलते हैं, जिनमेंसे १लेमें वीरेश्वर स्वामीके मन्दिरके प्रतिष्ठाता राजा राजनरेन्द्रको प्रशस्ति है। २य शिला लेख ध्वजस्तम्भके पूर्वको तरफ एक पत्थर पर है, इसमें शक १४३०के नन्दराज रामप्यदेवकी प्रशस्ति है। ३य शिलालेख वीरभद्रस्वामीके मन्दिरमें है, इसमें सत्याश्रय-वंशीय चालुक्यकुलतिलक तिरुमलदेवको प्रशस्ति है। मि० डिमवेलका कहना है कि, इस मन्दिरका मण्डप मुसलमानी ढङ्गका है परन्तु यह मुसलमानोंके आनेसे पहले बना था। मन्दिर आदिमें बौद्धोंके शिल्पनैपुण्यका बहुत निदर्शन मिलते हैं। यहां एक प्राचीन दुर्ग भी है।

गुर्ण (सं० वि०) चेष्टित।

गुर्द (फा० पु०) गुर्दिस्तानका निवासी

गुर्दिस्तान (फा० पु०) फारसके उत्तरका एक प्रदेश इस प्रदेशका कुछ अंश आजकल रूसराज्यके अधीन है। इसे कुर्दिस्तान भी कहते हैं।

गुर्दा (हिं० स्त्री०) भुनेहुए जौ।

गुर्वङ्गना (सं० स्त्री०) गुरो रङ्गना, ६-तत्। गुरुपत्नी, गुरुकी स्त्री०।

गुर्वादित्य (सं० पु०) गुरुणा सह आदितो यत्र, बहुव्री० योगविशेष। वृहस्पति और सूर्यके एक नक्षत्र और एक राशि पर मलनेको 'गुर्वादियोग' कहते हैं। इस योगमें, यज्ञ, विवाह प्रभृति कार्य करना निषिद्ध है। ज्योतिषमें एक और दूसरा ही वचन है। "गुर्वादित्ये दशाहिक" अर्थात् गुर्वादि योगमें दशदिन मात्र अकाल (कुसमय) रहता है, किन्तु संग्रहकारोंने विचार करके यह निश्चय किया है कि विभिन्न नक्षत्रमें अवस्थित वृहस्पति और रवि एक राशि गत होने पर दशदिन मात्र अशुद्ध समय है, किन्तु एक नक्षत्रमें रहनेसे जब तक यह योग रहेगा तब तक अकाल माना जाता है। काल शुद्धि देखो।

गुर्वर्थ (सं० वि०) गुरुः गोरवान्वितोऽर्थो यस्य, बहुव्री० १ जिसका प्रधान अर्थ हो, दुरवगाह व्याख्यायुक्त। २ समधिक प्रयोजन।

गुर्विणी (सं० स्त्री०) गुरुर्गर्भोऽस्त्यस्याः गुरु-इनि निपातनात् सिद्ध ततो ङीष्। सगर्भा, गर्भिणी, गर्भवती। गर्भिणी देखो।

गुर्वी (सं० स्त्री०) १ गर्भिणी, गर्भवती। २ गौरवयुक्त स्त्रीबोधक पदार्थ। ३ बड़ी वा श्रेष्ठ स्त्री। ४ गुवाक वृक्ष। ५ गुरुपत्नी। ६ गायत्री।

गुल (सं० पु०-स्त्री०) गुड़ इस्य लः। इक्षुका विकार, अस्वच्छ गुड़। २ जलाया हुआ तम्बाकू। ३ कोयलेकी गोटी। ४ विस्फोटक, शीतला। ५ एक तरहका वृक्ष।

गुल (फा० पु०) १ गुलाबका फूल। २ फूल पुष्प। ३ शोर, हल्ला।

गुल—पञ्जाब प्रान्तके करनाल जिलेमें कैथल तहसीलकी छोटी तहसील। इसका क्षेत्रफल ४५५ वर्गमील है। यहां २०४ गांव बसते हैं। गुल गांवमें ही सदर है। माल-गुजारी और सेस लगभग १ लाख २० हजार रुपया पड़ती है।

गुल-अजायब (फा० पु०) १ एक प्रकारका पुष्प। २ एक पुष्पका पौधा।

गुल-अनार (फा० पु०) एक तरहका दाड़िमका वृक्ष।

गुल-अब्बास (फा० पु०) अब्बास नामक पौधा। इसमें वर्षाकालके समय श्वेत या पीत रंगके पुष्प लगते हैं।

गुल-अब्बासी (फा० पु०) कुछ काले रंग लिये एक प्रकार-का लाल रंग। इस तरहका रंग चार छटांक शहाबके फूल १ छटांक आमकी खटाई और आठ माशे नीलको संयोग करनेसे बनता है। इसमें यदि नीलका रंग बढ़ा दिया जाय तो एक तरहका किरमिजी रंग बन जाता है।

गुल-अशर्फी (फा० पु०) एक प्रकारका पीले रंगका पुष्प।

गुलउर (फा०) गुलौर देखो।

गुल-औरंग (फा० पु०) एक प्रकारका गेन्दा।

गुलक (सं० पु०) गुण्डतृण, एक तरहकी घास।

गुलकंद (फा० पु०) १ गुलाबी मिठाई। २ खोरका मिष्टान्न, दूधकी बनी हुई मिठाई।

गुलगुटक (फा० पु०) कपड़े पर बेल बूटे छापनेका शीशम-का बना हुआ एक तरहका ठप्पा

गुलकार (फा० पु०) कपड़े पर बेल बूटे बनानेवाला कारीगर।

गुलकारी (फा० स्त्री०) १ बेल बूटे का काम। २ बेल बूटेदार काम।

गुलकेश (फा॰ पु॰) १ मुर्गकेशका पौधा। २ मुर्गकेशका पुष्प।

गुलखेरू (फा॰ पु॰) १ नीलरंग पुष्पवाला पौधा या उसका पुष्प।

गुलगचियां (फा॰) गिलगिलिया देखो।

गुलगपाड़ा (अ॰ पु॰) शोर-गुल, हल्ला।

गुलगीर (फा॰ पु॰) बत्ती काटनेकी कैंची।

गुलगुल (फा॰ वि॰) नरम, मोलायम, कोमल।

गुलगुला (हिं॰ पु॰) १ मैदा और घृत या तैलसे बना हुआ एक तरहका पकवान। २ आंख और कानके मध्यका स्थान, कनपटी।

गुलगुलिया (फा॰ पु॰) बंदर नचानेवाला, मदारी।

गुलगुली (हिं॰ स्त्री॰) हिमालयके झरनोंमें पाये जानेवाली एक प्रकारकी मछली। यह प्रायः दो हाथ तक लम्बी होती है। इसके मांसमें बहुत कांटे रहते हैं।

गुलगोथना (हिं॰ पु॰) कपोलका फुला हुआ मनुष्य, वह मनुष्य जिसका गाल फूला हो।

गुलचला (फा॰ पु॰) गोलाचलानेवाला, तोपची।

गुलचांदनी (फा॰ पु॰) पुष्प लगनेवाला एक तरहका पौधा। यह पुष्प श्वेत रंगका होता और प्रायः रात्रिकालमें ही खिलता है।

गुलचा (फा॰ पु॰) प्रेमपूर्वक तथा धीरे धीरे गालों पर किया हुआ आघात।

गुलचो (फा॰ पु॰) बढ़इयोंका एक प्रकारका यन्त्र, जो रन्देकी तरह होता है।

गुलचीन (फा॰ पु॰) कलमसे लगाये जानेवाला एक तरहका वृक्ष जो हर महिनामें फूलता है। इस वृक्षका पुष्प ऊपरसे श्वेत और भीतर कुछ पीले रङ्गका होता है। इस पुष्पमें केवल चार या पांच दल रहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि इस फूलका अधिक सुगन्ध लेनेसे पीनस रोग हो जाता है।

गुलछर्रा (हिं॰ पु॰) भोगविलास या आराम जो स्वच्छन्दता और अनुचित रीतिसे किया जाय।

गुलजलील (फा॰ पु॰) रेशम रङ्गानेका असबर्गका पुष्प। यह खुरासानमें उपजता है।

गुलजार (फा॰ पु॰) १ वाटिका, बाग, उद्यान। (वि॰) २ हराभरा, आनन्द और शोभायुक्त।

गुलजारीलाल—एक जैन कवि, इन्होंने 'आत्मविलास' नामक एक पद्य ग्रन्थ रचा था।

गुलझटी (हिं॰ स्त्री॰) १ तागे आदिका लपेट जो बैठ कर गोलीके आकारकी हो जाती है। २ सिकुड़न, शिकन।

गुलझड़ी (हिं॰) गुलझटी देखो।

गुलञ्चकन्द (सं॰ पु॰) गुलं गुड़ रसं अञ्चति अञ्च-अण्, गुलञ्च कन्दोऽस्य बहुव्री॰। कन्दविशेष, गुलकन्दा। इसका पर्याय—गुच्छाह्वकन्द, वलाह्वकन्द, और निघण्टिका है।

गुलतराश (फा॰ पु॰) १ बत्ती काटनेकी कैंची। २ बत्ती काटनेवाला नौकर। ३ बागके पौधोंको कतरने या छांटनेकी कैंची। ४ पौधोंको छांटनेवाला माली। ५ प्रस्तर पर पुष्प पत्ती बनानेका एक तरहका यन्त्र।

गुलता (हिं॰ पु॰) गुलेलमें छोड़े जानेवाली मिट्टीकी बनी गोली।

गुलतर्रा (फा॰ पु॰) एक तरहका पुष्प, मुर्गकेश, जटाधारी।

गुलथी (हिं॰ स्त्री॰) जमे हुए पानीकी गुठली वा गोली।

गुलदस्ता (फा॰ पु॰) १ कई तरहके सुन्दर पुष्प और पत्तोंका समूह जो एक साथ बंधे रहता है। फूलोंका गुच्छा। २ एक तरहका घोड़ा। इसे घोड़ेका अगला बांया पैर गांठ तक श्वेत और दाहिने पैरका रंग पिछले शेष पादोंके रंगके जैसा होता है। इस तरहका घोड़ा दोषी नहीं समझा जाता।

गुलदाउदी (फा॰ स्त्री॰) एक प्रकारका फूलका पौधा। (Chrysanthemum Indicum) कार्त्तिक मासमें इसमें फूल लगते हैं जो देखनेमें बहुत सुंदर होते हैं। वर्षाके पानीमें यह पेड़ नष्ट हो जाता है। इस लिये मनुष्य इसे गमलोंमें लगाकर छायामें रखते है। इस पौधेके पुष्पको भी गुलदाउदी कहते हैं।

गुलदाना (फा॰ पु॰) गुलदस्ता रखनेका चीनी मट्टी या कांचका पात्र।

गुलदाना (फा॰ पु॰) बुंदिया नामकी मिठाई।

गुलदार (फा॰ पु॰) १ एक तरहका श्वेत रंगका कबूतर। इसके शरीर पर लाल या काले रंगके छोटे छोटे बहुतसे चिन्ह होते हैं। २ एक प्रकारका कशीदा।

गुलदावदी (फा॰) गुलदाउदी देखो।

गुलदुपहरिया (फा० पु०) १ दो हाथ ऊंचाईका एक प्रकारका पौधा। इस पौधेकी पत्तियां लम्बी और कटावदार होती हैं। २ इसी पौधेका कटोरेके आकारका पुष्प जो गहरे लाल रंगका होता है। यह पुष्प सूर्यके ऊपर आने पर खिलता है।

गुलदुम (फा० स्त्री०) बुलबुल।

गुलनरगिस (फा० स्त्री०) एक तरहकी लता।

गुलनार (फा० पु०) १ अनारका पुष्प। २ अनारके पुष्पके जैसा लाल रंग। ३ एकतरहका फलहीन अनार वृक्ष। इसमें सिर्फ बड़े बड़े सुन्दर पुष्प ही लगते हैं।

गुलपपड़ी (फा० स्त्री०) एक तरहकी मिठाई जो पपड़ी भी कही जाती है।

गुलप्यादा (फा० पु०) सदा गुलाब, जिसमें सुगन्ध कम होता है।

गुलफानूम (फा० पु०) एक प्रकारका बड़ावृक्ष। यह सिर्फ शोभाके लिये लगाया जाता है।

गुलफिरकी (फा० स्त्री०) गुलाबी रंगके पुष्प लगनेवाला पौधा।

गुलफिरिङ्ग (फा० स्त्री०) एक तरहका फूलका पौधा। (Vinca rosea)

गुलफुंदना (हिं० पु०) खेतोंमें उगनेवाली एक तरहकी घास।

गुलबकावली (फा० स्त्री०) १ हलदी पेड़, एक प्रकारका पेड़। यह नर्मदा नदीके उद्गमके निकट अमरकंटकके वनमें होता है। २ इसी पौधेका श्वेत और सुगन्धित फूल। आंख आने पर यह फूल पीस कर लगाया जाता है।

गुलबक्सर (फा० पु०) नकसके खेलमें जीतकी बाजी।

गुलबदन (फा० पु०) एक प्रकारका धारीदार बहुमूल्य रेशमी वस्त्र। प्राचीन कालमें यह सिर्फ काशीमें बनता था, किन्तु आज कल पंजाबके कई नगरोंमें भी प्रस्तुत होने लगा है।

गुलवर्ग—हैदराबाद राज्यके दक्षिण पश्चिम कोणका डिविजन। इसको दक्षिण विभाग भी कहते हैं। यह अक्षा० १५° ११' तथा १८° ४०' उ० और देशा० ७५° १६' एवं ७७° ५१' पू० मध्य अवस्थित है। इसके पश्चिम तथा दक्षिण क्रमशः बम्बई और मन्द्राज प्रेसीडेन्सी पड़ती है। क्षेत्रफल १६५८५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः २४६२८२४ है। इसमें ४ जिले लगते हैं। ३२ शहर और ५६५२ गाव है।

गुलवर्ग—हैदराबाद राज्यके गुलवर्ग डिविजनका जिला। इसके उत्तर उसमानाबाद तथा बदर, पूर्व अतराफ बल्दा एवं महबूब नगर, दक्षिण महबूब नगर, रायचुर तथा लिङ्गसुगूर और पश्चिम उसमानाबाद बीजापुर तथा बम्बई प्रान्तका अकालकोट राज्य लगा है। गुलवर्ग जिला अक्षा० १६° ४०' एवं १७° ४४' उ० और देशा० ७६° २२' तथा ७८° २०' पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ४०८२ वर्गमील है। उत्तरसे दक्षिणपूर्वको पहाड़ चला गया है। जमीन उत्तरसे दक्षिण और दक्षिणपूर्वको ढालू है। नदियां कई एक हैं। सिवा पहाड़के दूसरी जगह जङ्गल नहीं। आबहवा कहीं ठण्डी कहीं गर्म है।

मुसलमानोंके अधिकारसे पहले गुलवर्ग जिला वरङ्गलके काकतीयोंका शासनाधीन था। ई० १४वीं शताब्दीके आदि भागको मुसलमानोंने उसे दिल्लीकी बादशाहतमें मिलाया। फिर यह बहमानी और बीजापुरका राज्य भुक्त हुआ। इसके बाद वह फिर दिल्लीकी बादशाहतमें लगा और हैदराबाद राज्य प्रतिष्ठित होने पर अलग हुआ। इसमें कई एक मशहूर किले और ११०८ शहर और गांव हैं। लोकसंख्या प्रायः ७४२७४५ है। लोग कनाड़ी, तेलगु, उर्दू और मराठी भाषा बोलते हैं। प्रधान खाद्य जुवार है। पशु बलिष्ठ हैं। १२६ वर्गमील जङ्गल है। खानसे पत्थर निकलता है। सूती और रेशमी साड़ियां, जरदोजी कपड़ा, मामूली सूती कपड़ा और सूत तैयार किया जाता है। गड़रिये कम्बल बहुत अच्छे बनाते हैं। दो एक कपास ओटने और कपड़े बनानेके पुतलीघर भी हैं। जुवार, बाजरा आदि अनाज, दाल, चमड़ा, रूई, गुड़ तेलहन, तम्बाकू और तरवरके बक्कलकी रफतनी होती है। ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे और निजामकी गारण्टीड ष्टेट रेलवे चलती हैं। ७८ मील सड़क है। यह जिला ३ सब डिविजनोंमें बंटा है। बुरे समयमें मवेशियोंकी चोरियां और डकैतियां बढ़ जाती हैं। १८७३

ई०को गुलबर्ग जिला हुआ। मालगुजारी कोई १७ लाख ४० हजार है। शिक्षा बहुत कम है।

गुलबर्ग—हैदराबाद राज्यके गुलबर्ग जिलेका दरमियानी तालुक। इसका क्षेत्रफल ६७४ वर्ग मील और लोकसंख्या प्रायः १०३ ५१ है। एक शहर और १४५ गांव आबाद हैं। मालगुजारी लगभग २ लाख ८० हजार रुपया है। जमीन काली है।

गुलबर्ग—हैदराबाद राज्यके गुलबर्ग डिविजन और जिलेका पुराना शहर और सदर। यह अक्षा० १७° २१' उ० और देशा० ७६° ५१' पू०में पड़ता है। आबादी कोई २८२२८ है। पहले वह हिन्दुओंका बड़ा नगर था। १३४७ ई०से अहमद शाह वालीके शासन कालतक यहां बहमानी राजधानी रहा, फिर बहमानी राजाओंकी इमारतें और मसजिदें गिर गयीं। यह काली जमीनके मैदानमें बसा हुआ है। १८७४ ई०के लगभग एक डिविजनका सदर होनेसे इसने तरक्की पायी। आजकल यहां सूबेदारका महल, बहुतसी सरकारी और अहलकारोंकी इमारतें, सेण्ट्रल जेल, लोगोंकी हवाखोरीका बाग, एक बड़ा तलाव, एक लंबा चौड़ा बाजार स्कूल, डाकखाना, दूसरे पबलिक दफतर और सूत तथा कपड़ेके पुतलीघर हैं। ग्रेट इण्डियनपेनिनसुला रेलवेका ष्टेसन शहरसे २ मील दूर है। वाणिज्य व्यवसायकी बड़ी धूम रहती है। उत्तर-पश्चिमकी पुराना किला है। परन्तु उसका दीवारें, दरवाजे और इमारतें बिगड़ गयी हैं। बाला-हिसार दुर्ग अभी अच्छा है। पुराने किलेकी मसजिद, जो पूरे तौर पर नहीं बनी, खूब लम्बी चौड़ी है।

गुलबादला (फा० पु०) एक तरहका पेड़, उदल। इसके रेशोंसे मोटे रस्से बनते हैं।

गुलबूटा (फा० पु०) बेल बूटा नक्काशी।

गुलबेल (फा० स्त्री०) एक तरहकी लता।

गुलभकमल (फा० पु०) एक प्रकारका पुष्पका पौधा। (Gomphrenaslobosa)

गुलमस्त (फा० पु०) औषधविशेष।

गुलमा (फा० पु०) बकरीको अंतड़ी, दुलमा, लगूचा।

गुलमुहम्मद खाँ—दिल्लीके एक मुसलमान कवि। इनका उपनाम नातिक था। उन्होंने जौहर-उल्-मुग्यजुम नामको किताब लिखी है। १८४८ ई०को इनका मृत्यु हुआ।

गुलमेंहदी (फा० स्त्री०) एक प्रकारका पौधा जो आश्विन मासमें फूलता है। इसके पुष्प कई रंगके होते हैं। (Impatiens balsamina)

गुलमेख (फा० पु०) गोलसिरेका एक प्रकारकी कील। फुलिया।

गुलरेज (फा० पु०) आतिशबाजीकी फुलझड़ी।

गुललाला (फा० पु०) पोस्तेके पौधेके सदृश एक प्रकारका पौधा। इसके पुष्पको भी गुललाला कहते हैं जो बहुत सुन्दर और कोमल दीख पड़ते हैं।

गुलशकरी (फा० स्त्री०) एक प्रकारकी गुलाबी मिठाई।

गुलशन (फा० पु०) उद्यान, वाटिका फुलवारी बाग।

गुलशन—फारसी भाषाके एक शुम्र कवि। यह उनका उपनाम है, प्रकृत नाम शेख सैद-उल्लाह था। कुछ दिनों वह दिल्लीमें रहे और कोई १००००० गजलें छोड़ चले। यह शाह अब्दुल अहद सरहिन्दीके चेले थे और उनके मक्का तीर्थ करने भी गये थे। १७२८ ई०को इनका मृत्यु हुआ।

गुलशन पीर—हिन्दी भाषाके एक पञ्जाबी कवि।

"यहां कोई अगबीच नगर न भावा। [illegible] सुनावा।
मनदी मुरादां वाती पुण्यानी मथां चला गुलशन [illegible] मनावा॥"

गुलअब्बी (फा० पु०) १ एक प्रकारका पौधा जो लहसुनके पौधे जैसा होता है। इसका हिन्दी पर्याय रजनीगंधा, सुगंधरा वा सुगंधिराज हैं। २ इसी पौधेका श्वेत और सुगन्धित पुष्प। ३ एक खेल जो टाप बुझाकर खेला जाता है।

गुलसुम (फा० पु०) सोनारोंका एक यन्त्र यह नक्काशी और फूल आदि बनानेके काममें आता है।

गुलसौशन (फा० पु०) हलके आसमानी रंगका एक प्रकारका पुष्प। यह पुष्प सिर्फ फारसमें होता है।

गुलजारा (फा० पु०) एक प्रकारका गुलगुला।

गुलहत्थी (फा० स्त्री०) गलहत्थी देखो।

गुला (सं० स्त्री०) गुलः गुड़ इव रसोऽस्त्यस्याः। गुल, खड़ी वृक्ष।

गुलाब, या गुलाबफूल—खनाम प्रसिद्ध एक पुष्पविशेष।

गुलाबके संस्कृत नाम—शतपत्री और पाटलि; आरब-वरद; पारसी—गुल, चीन-यिं'मि, मियांबे, मुदकाई-ह्वा, कोचीन-चीन-होयाहुङ-तो, ग्रीक रोडोन, रूष—रोजा, ओलन्दाज-रुम् अङ्गरेजी—रोज (Rose); मलय—मवर, तामिल—गुलाप्पु, तेलङ्ग—रोजायुवो, गुलपुवो।

Rose Centifolia वा मिरिया देशका गुलाब-वृक्ष। संस्कृत भाषामें इसे शतपत्री, हिन्दीमें करम कल्ला या काठ गुलाब और अङ्गरेजीमें कैब्बेज-रोज Cabbage Rose) कहते हैं। यूरोपमें, भारतमें सर्वत्र, पारस्य और चीन देशमें इसकी पैदायश होती है। इसी फूलसे गुलाब-का अतर और एसेन्स बनता है। भारतमें इसी फूलसे 'गुलकन्द' बनता है। गुलकन्द खानेमें अत्यन्त सुस्वादु और पित्त शान्त करता है।

इसके पानीको गुलाब-जल कहते हैं। इस फूलकी मधुर सुगन्धिसे सब ही का मन मोहित होता है, इसीलिये इसका विशेष आदर है। गुलाबके पेड़की डाली अत्यन्त काँटेदार होती है। पत्ते चिकने होने पर भी उनके किनारे नोंकदार खरखरे होते हैं। भारतमें यह फूल घरमें, बगीचोंमें और जङ्गलोंमें सर्वत्र पैदा किया जा सकता है और देखनेमें आता है। काश्मीर, लाहुल और भूटान जङ्गलोंमें पीले रङ्गके गुलाब अपने आप पैदा होते हैं। लाधमें समुद्रपृष्ठसे ११००० फीट ऊंचेमें पीले रंगके बड़े बड़े गुलाब देखनेमें आते हैं। चीनमुल्कमें भी ऐसे पीले गुलाब देखे जाते हैं। यह पेड़ दूसरे गुलाबके वृक्षोंसे बड़े और लता-जैसे होते हैं। इसी लिये हमारे देशमें इस वृक्षको बोते समय चारों ओर खपचे लगा देते हैं। अङ्गरेज लोग इस फूलको "मार्शलनील" कहते हैं। इसका गुच्छा बड़ा आदरनीय और भेंट देनेके काबिल होता है।

साधारणतः १८° अक्षांशसे ७०° अक्षांशके भीतर यह वृक्ष उपज सकता है। सूखी जमीन या मिट्टीमें अगर यह वृक्ष बोया जाय, तो जल्दी पैदा होते हैं। यूरोपके उत्तरांशमें सिर्फ इकहरी पापड़ीवाला फूल पैदा होता है। परन्तु इटाली, ग्रीस और स्पेन आदि देशोंमें बहुत पापड़ीवाले फूल काफी पैदा होते हैं।

Rose Glandilifera—पञ्जाबमें इसे गुल-शेउती या शेवती कहते हैं।

हिमालय प्रदेशमें समुद्रपृष्ठसे ४५०० से १०५०० फीट ऊंची जगहमें एक तरहका गुलाब (Rose Macrophylla) पैदा होता है। इसका फल जब पक कर काला हो जाता है, तब लोग उसे खाया करते हैं। यह खानेमें बड़ा मधुर और मीठा होता है।

पञ्जाबमें और हिमालयसे ५०००से ८५०० फीट ऊंची जमीनमें Rose webbiana नामका गुलाब होता है। इसका भी फल खानेमें मीठा और आदरनीय होता है।

फूल और बीज बेचनेवालोंके सूचीपत्रमें अब सैकड़ों तरहके गुलाबोंके नाम देखनेमें आते हैं। उनमेंसे (१) बसोरा वा पारस्य देशका उत्पन्न एक तरहका गुलाब, (२) स्थायीगन्ध दामास्क जातीय, (३) स्थायीगन्ध, मस्यजातीय (इङ्गलैण्डमें इस फूलका विशेष आदर है), (४) बुर्बुर्देशका गुलाब, (५) चीनिया गुलाब, और (६) चायकी गन्धयुक्त,—ये ही गुलाब प्रसिद्ध हैं। इसके सिवा जितने नामधारी गुलाब हैं, वे सब इन्हीं ६ श्रेणि-योंमें शामिल किये जा सकते हैं।

गुलाब फूल जैसा मनोहर है, उसका अतर और जल भी उतना ही प्रिय और उम्दा होता है। गुलाबका फूल मनुष्यका प्रिय है, इसलिए उसकी पैदायश भी खब की जाती है और इससे लाभ ज्यादा होनेके कारण गुलाबके पैदायशके लायक जमीनकी कीमत भी ज्यादा है। इटालीमें केनि नामक तरहटोंमें गुलाबके कुछ खेत हैं। उनमें प्रत्येक बीघाका मासिक लाभ तीन सौ रुपये है। वहां प्रति वर्षमें अढ़ाई लाख रुपयेके सिर्फ गुलाब फूल ही पैदा होते हैं। गाजीपुरमें भी ऐसे गुलाबके खेत हैं। गाजीपुरमें गुलाबकी खेतीके लिए साढ़े चार सौ बीघा जमीन मौजूद है। वह भी छोटे छोटे खेतोंमें विभक्त है। प्रत्येक खेतके चारों तरफ काँटोंकी झाड़ी और मिट्टीकी दीवार लगी हुई है। प्रत्येक बीघा पर ५) रु०के हिसाबसे कर और इसके अलावा १ हजार पेड़ पर २५) रु० और भी लिया जाता है—इस प्रकार कुल ३०) रुपये जमींदारोंको मिलते हैं। प्रति बीघामें ८) और भी खर्च पड़ता है। जलवायु और उत्तापके अनुकूल होनेसे उन एक हजार वृक्षोंमें लाखसे भी अधिक फल

होते हैं। आजकल एक लाख फूलोंका दाम ६०) से १००) तक है। इस पर भी कृषकोंको किसी तरहका नुकसान नहीं। फाल्गुनमासके अन्तमें गुलाबकी पैदायश होती है। उन दिनोंमें कृषक प्रातःकाल ही उठ कर स्त्री पुत्रोंको साथ ले फूल तोड़ने जाते हैं। उन फूलोंका व्यवसायी लोग खरीदकर उनसे गुलाब-जल और अतर बनाते हैं।

गुलाबकी कलम बनानेके नियम—पेड़की डालीको काट कर या कलम बाँध कर कुछ ऊंची मिट्टीमें गाड़ देनेसे लता उत्पन्न होती है। ज्यादा पानी देनेसे तथा सूखी जमीनमें कलम उत्पन्न नहीं होती। वर्सातमें अधिक पानी बरसनेके कारण जड़ गल जाती है। इसलिए कलम ऐसी जगह लगानी चाहिये जिससे उसकी जड़में पानी न जम सके। गरमियोंमें ज्यादा घाम होनेसे सूख न जाय, इसलिए कुछ कुछ पानी देते रहना चाहिये। इसके सिवा मार्चके महीनेमें इस वृक्ष पर एक तरहका कीड़ा बैठता है, जो पत्तोंको खाता रहता है। यह कीड़ा वृक्षके लिये बहुत अनिष्टकर है और तो क्या, इससे पेड़ सूख तक जाता है।

किसी किसीका कहना है कि, सूखे पत्तोंको जला कर मिट्टीके साथ मिला देनेसे एक तरहका सार बनता है। कोई कोई ऐसा भी कहते हैं कि, घासके छोटे छोटे टुकड़े करके उसको तवा पर सेक कर मिट्टीमें मिलानेसे अच्छा सार बनता है। अगर महीने महीने फूल उत्पन्न करनेकी इच्छा हो,तो पेड़को काटनेसे पहले जड़में ज्यादा मिट्टी लगा कर जमीनसे पेड़को उखाड़ लेना चाहिये। बादमें जब तक उस पेड़के तमाम पत्ते न झर जाँय, तब तक उसमें पानी न देना चाहिये। पत्तोंके झर जाने पर उस पेड़को पुनः मिट्टीमें गाड़कर उसमें उतना पानी देते रहना चाहिये, जिससे कि, वह उठे। फिर उसकी डाली छाँट कर थोड़ा थोड़ा पानी देते रहना चाहिये। ऐसा करनेसे छह सप्ताहमें फूल लगने लगेंगे। गुलाबका पेड़ साल साल भरमें उखाड़ कर गाड़ते रहनेसे अच्छे फूल पैदा होते हैं। यदि पेड़को उखाड़ कर दूसरी जगह लगाना चाहो, तो वर्सातके बाद अक्टोबर मासमें जड़की सब मिट्टी इकट्ठी करके २।३ सप्ताह तक जड़ निकाल रखनी चाहिये, पीछे गोबरके साथ नवीन मिट्टी उस स्थानमें देनी चाहिये। इससे वृक्ष पहलेकी तरह हरा-भरा और फूलोंवाला हो जायगा।

दिसम्बर और जनवरीमें गुलाब-वृक्षकी जड़ साफ करनेसे पेड़ खूब हरा भरा हो जाता है। उस समय उस पेड़की जड़से मिट्टी निकाल कर १ फुटकी दूरी पर चारों तरफ ऊंची मेंड़सी बनानी चाहिये फिर उस मेड़के भीतर एक पला नया गोबर डाल कर ऊंचेसे पानी डालनेसे, गोबरका पानी सहज ही मिट्टीमें घुस जायगा, यह पानी सारका काम करेगा अथवा कच्चा गोबर डाल देनेसे भी सारका काम चल जायगा।

जमीनमें गड़े हुए पेड़ोंसे जैसे फूल उत्पन्न होते हैं, टबमें गड़े हुए वृक्षोंसे वैसे नहीं होते। इस देशमें अधिकांश लोग टबमें ही गुलाब लगाते हैं। अक्टोबर मासमें टबकी मिट्टीमें खार मिला देनेसे, एक माहमें अच्छे फूल पैदा होते हैं।

कोई कोई ऐसे भी कलम बांधते हैं,—किसी एक पात्रमें सार वाली मिट्टी भर कर उसे जमीनमें गाड़ देते हैं, बादमें उसमें नियमके अनुसार फर्वरी मासमें कलम बाँध कर जमीनमें गाड़ देते हैं। फिर उस कलमके ऊपर दूसरे एक पात्रको आधा मिट्टी और आधा पानीसे भर कर रख देते हैं। उस पात्रका पानी क्रमशः चूकर कलमको हर वक्त भिजोता रहता है। वर्सातसे पहले उस कलमको काट कर गाड़ देते हैं।

यदि डालियोंको काट कर चारा बांधना हो तो नवम्बर मासमें डाली गाड़नी चाहिये। क्योंकि मार्चमासमें थोड़ी जड़ निकलती है, इस लिये उस समय उखाड़ कर टबमें लगा सकते हैं। गुलाबकी डाली बर्सातमें गाड़नेसे जल्दी जड़ निकलती है। डालीसे जल्दी पेड़ उत्पन्न करना हो, तो पत्थरके कोयलेके चूरके साथ तिहाई हिस्सा बालूको मिलाकर उसमें डाली गाड़नेसे जल्दी जल्दी पेड़ बढ़ता है और फूल भी खूब लगते हैं। उक्त मिली हुई मिट्टीमें पुराने पेड़की जड़ काटकर कलम बनानी चाहिये, उस कलमको टबमें रख, मिट्टीको जलर रख कर उस कमलके ऊपर एक कांचका ढकना रख देना चाहिये।

बोतलमें पानी भरकर उसमें गुलाबकी कलम लगाई जा सकती है। इसकी प्रणाली बहुत ही कठिन है। जिस नरम डालीसे पुष्प गिरा हो, इस प्रकारकी नरम एक या दो डालीको काटकर शीत ऋतुमें बोतलमें लगाना चाहिये। बोतलके पानीको साफ रखना चाहिये। रोज पानी बदलते रहना ही उचित है, नहीं तो डाली सड़ जानेकी सम्भावना रहती है। उन बोतलोंको घरके उत्तर-की तरफ या पर्देकी ओटमें ऐसी जगह रखना चाहिये जिससे उसमें सूर्यका प्रकाश और हवा जरा भी न लगने पावे। अथवा बिना ढक्कनके एक बकस उस बोतल पर रख कर सूर्यके उत्तापमें रख देना चाहिये। इसके लिए कमसे कम १० आउन्सकी बोतलकी जरूरत होगी।

एक गुलाबके प्रेमी उद्भिद्वेत्ताका कहना है कि एक सालकी पुरानी डालीके एक फुटके नापसे काटनी चाहिये। प्रत्येक डालीको गाड़नेकी तरफ समभावसे कलीकी गांठके पास काटना चाहिये, और ऊपरका भाग कलमकी तरह बनाना चाहिये और उसकी दो एक कलियोंके सिवा और सबको काट देना। चाहिये बाद को मार्चके महीनेमें ८ इञ्च ऊंची जगह पर वह कलम गाड़ देना चाहिये, और उसकी जड़ मिट्टीसे ढक देनी चाहिये। जुलाई और अगस्त माममें यह कलमी पौधा फूल देने लगता है। इसके बाद ऊंची जगहकी समतल करके पौदेकी जड़ जो मिट्टीके भीतर थी, उसे निकाल देना चाहिये। ऐसा करनेसे वह पौधा जड़से दो तीन इञ्च ऊंचाईमें ही फूल देने लगता है।

साधारणत: लोग जिस रीतिसे गुलाबकी कलम बनाते हैं, उसके नियम यह हैं—जहां पानी न जम सके, ऐसी जगहमें एक फुट अन्तर पर कुछ गड्ढे खोद करके उसमें सारयुक्त मिट्टी दे कर झुका झुका कर पौधे गाड़ते हैं फिर उन गड्ढोंको सिर्फ मिट्टीसे ढक देते हैं। दिनमें उन पर सूर्यकी रोशनी न पड़ने पावे, इस लिये उसके ऊपर फूस आदिका छप्पर डाल देते हैं, और रातको उसे उठा लेते हैं।

कहीं कहीं ऐसा भी देखनेमें आया है कि फूल-में केशर और पखड़ियोंका भी कुछ कुछ परिवर्त्तन हुआ है। गुलाबका पेड़ खूब नरम मिट्टीमें गाड़नेसे

गुलाबके फूलके भीतरसे डालीका निकलना।

कभी कभी उसके फूलमें केशर न पैदा हो कर डाली उत्पन्न हो जाती है।

ग्रीक लोगोंके प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखा है कि गुलाबका फूल डिउनिसास् देव और अफ्रोडाइट् (Aphrodite) नामक देवीको अतिप्रिय वस्तु है। पुराने रोमक भी गुलाब-उत्सव करते थे, उसका नाम रोसालिया (Rosalia) था। माकिदनमें मिदासका गुलाबका बगीचा पहिले बहुत प्रसिद्ध था, वह स्थान अब भी वर्त्तमानके बुल-गेरिया नगरमें है। अभी तक बुलगेरियाका गुलाबका अतर जगत् प्रसिद्ध है। पहिले भारतमें भी गुलाबका खूब आदर था, संस्कृत ग्रन्थोंमें शतपत्रीके नामसे गुलाब-का उल्लेख पाया जाता है। आत्रेय संहितामें लिखा है—

> "शतपत्री तु गन्धाढ्या सौमाग'नृप शिवप्रिया।
> सुशीता च सुवृत्ता च सुमना. शतपत्रिका॥
> शतपत्री हिमा तिक्ता सराकध्यानिलप्रणुत्।
> दाहज्वरासापसघ्नी कुष्ठविस्फोटकनाशिनी॥"

शतपत्रीकी दूसरी संस्कृत पर्याय ये हैं—गन्धाढ्या, सौम्यगन्धा, शिवप्रिया, सुशीता, सुवृत्ता, सुमना: और शतपत्रिका। गुलाबका फूल शीतल, तिक्त, सारक, रोचक, वायुनाशक, दाहनाशक, रक्त, पित्त, कुष्ठ, और विस्फोट-नाशक होता है। इस देशके वैद्योंका विश्वास है कि शतपत्री नाम सेवती होका है। गुलाब और सेवती दोनों भिन्न भिन्न पुष्प हैं। शतपत्रीका अपभ्रंश सेवती हो सकता

है, और पञ्जाबमें अब भी गुलाबको शेवती ही कहते हैं। शिवप्रिया, शिववल्लभा आदि शब्दोंसे ऐसा ज्ञात होता है कि, पहिले गुलाबका फूल भी शिवका प्रिय था। वास्तवमें शतपत्रीके कहनेसे प्रधानतः पाटलवर्णके गुलाबका और कठगुलाबका बोध होता है। इसको अंग्रेजीमें Damask rose (Rosa Damascena) और Hundred-leaved rose (Rose Centifolia muscosa) कहते हैं। पुराने पारसी ग्रन्थोंमें गुलाबको विशेष प्रशंसा लिखी है।

अरबी और पारसी ग्रन्थोंमें वर्द् एल् हमक (अर्थात् बाहरमें पीला और भीतरमें लाल गुलाब) दालिक (Dog rose) आदि पाँच तरहके गुलाब फूलोंका वर्णन पाया जाता है।

प्रसिद्ध पदार्थतत्त्ववित् लिनिने १२ प्रकारके गुलाब और उससे ३२ प्रकारकी औषध बननेका वर्णन किया है।

इस देशमें इस समय नाना प्रकारके गुलाब देखनेमें आते हैं। गुलाबकी पखुड़ियां बालकोंके लिए मृदुविरेचक (साधारण दस्तावर) औषध रूपमें व्यवहृत होती है।

हकीमी किताबोंमें गुलाबसे बननेवाली कुछ उपादेय वस्तुओंका उल्लेख मिलता है, उनके नाम ये हैं,—दुहनो-वरद्-ए-खाम, दुहनो-वरद्-ए-मतबुख, गुलकन्द, गुलङ्गबिन, गुलाब-जल और गुलाबका अतर।

गुलाबके पत्तोंको चन्दनके तेलमें डालकर उसे घाममें सुखा कर चुआनेसे जो खुशबूदार तेल निकलता है उस तेलको दुहनो-वरद्-एखाम कहते हैं। इसी प्रकारसे जो भट्टी पर चढ़ाकर चुआया जाता है, उसे दुहनो-वरद्-ए-मतबूख कहते हैं। हकीमोंके मतानुसार इन दोनों तेलोंके गुण ये हैं—यह मृदुविरेचक, सङ्कोचक और क्लेद (मवाद) का नाशक है। ऐसा ज्वार जिसमें कि प्राण बचनेका संशय हो शरीरमें प्रविष्ट होनेसे इसका सेवन करना चाहिये। यह बहुत फायदा पहुंचता है। गुलाबकी सूखी पखुड़ियां और मिश्री—दोनोंको आधी आधी मिला कर पीसनेसे गुलकन्द बन जाता है। भारतमें नाना स्थानोंमें हिन्दू और मुसलमान, बूढ़े और जवान, स्त्री और बालक—सब ही गुलकन्द खाना पसन्द करते हैं। प्रसिद्ध मुसलमान हकीम हबनसिनके सिद्धान्तानुसार—गुलकन्द बल और मेदको बढ़ानेवाला होता है। उन्होंने सिर्फ गुलकन्दको खिला कर यक्ष्मा रोगसे पीड़ित एक स्त्रीको आरोग्य कर दिया था। भारतमें बहुतसे लोग भाँगके साथ भी गुलकन्द खाया करते हैं। इसी गुलकन्दमें शहद मिलानेसे गुलङ्गबिन बन जाता है। उसके गुण भी गुलकन्द जैसे हैं।

गुलाब या गुलाब जल—गाजीपुरमें गुलाबसे इस प्रकार अतर बनाया जाता है। जिसमें एक मन पानी आ जाय ऐसा एक तांबेका पात्र (डेगची) होता है, जिसका मुंह सुराई सरीखा लम्बा होता है। उसके ऊपर तसला सरीखा एक तांबेका पात्र रहता है, उसके एक बगलमें एक छोटा छेद रहता है। उस छेदके मुंह पर एक बांसकी नली लगा कर, उसका नीचली हिस्सा भवका नामक पात्रसे जोड़ दिया जाता है। नलीसे भाफ निकलने न पावे, इस लिये नलीको रस्सीसे अच्छी तरह बाँध कर उस पर मैदा थोप दी जाती है। भवकाके भीतर ज्यादा गरम होनेकी सम्भावना है इस लिये वह पात्र पानीमें डुबा कर रखा जाता है। इस प्रकार जब वकयन्त्र (एक खास तरहका वाष्पयन्त्र) तयार हो जाय, तब उस डेगचीमें पानी और गुलाबके पत्ते छोड़ कर उसे चूल्हे पर चढ़ा देना चाहिये। अग्निके उत्तापसे पानी उबलता रहता है और उसकी भाफ जिसमें कि सुगन्धिके परमाणु रहते हैं, बांसकी नलीके द्वारा उस भवका नामक पात्रमें पहुंचती है। उस पात्रमें भाफ पहुंचते ही जल रूपमें परिणत हो जाती है, क्योंकि, वह पात्र ठण्डे पानीमें डूबा हुआ रहता है। इसीको हम लोग गुलाब या गुलाबजल कहते हैं। एक हजार गुलाबके फूलोंसे एक सेर गुलाब-जल जो बनता है, वही सबसे श्रेष्ठ है। इससे भी उत्कृष्ट गुलाब जल बनाना हो तो दस हजार गुलाबोंमें यथेष्ट जल मिला कर आध मन गुलाब-जल बनाना चाहिये, फिर आठ हजार गुलाबके फूलोंमें आध मन गुलाबजल मिला कर १८ अठारह सेर गुलाब-जल चुआना चाहिये। चुआए जानेके बाद २०, २५ दिन धूपमें रखना चाहिये, क्योंकि ऐसा करनेसे

गुलाबके खुशबूका अंश अर्थात् अतर पानीमें अच्छी तरह मिल जाता है, नहीं तो ऊपर ही अतर तैरता रहता है और इसीसे उसको खुशबू भी स्थायी नहीं रहती। आज कल बाजारोंमें जो गुलाब-जल बिकता है, वह एक हजार फूलोंसे दो सेर बनता है। बहुतसे दूकानदार तो अतरके बचे हुए पानीमें जरासा चन्दनका अतर मिला कर उसे ही बढ़िया गुलाब-जल कह कर बेचा करते हैं। गाजीपुरमें करीब चालीस जगह गुलाब बनता है, वहां गुलाबजलमें खर्च बाद देकर करीब ४० हजार रुपये लाभ होते हैं। इस देशमें गुलाब-जल बनाते समय फूलके डण्ठल नहीं तोड़ते, इस लिये उसकी खुशबू भी ज्यादा दिन नहीं रहती, शीघ्र ही खट्टापन आ जाता है अतएव गुलाब-जलकी सुगन्धि बहुत दिनों तक स्थायी रखनेवालोंको चाहिये कि, फूलोंके डण्ठल तोड कर गुलाब जल बनावें।

अ र ना नियम—गुलाब-जलकी तरह इसमें भी तांबेका डेगचीमें फूल और पानी रखकर उबालना पड़ता है, और उसमेंसे भाफ चूकर भवका पात्रमें आती है। इस प्रकारसे जब तमाम पानी जल जाय, तब उस भाफको एक चपटी डेगचीमें ढाल कर उसका मुह मोटे कपड़ेसे बांध देना चाहिये। बादमें २ हात नीची जमीन खोद कर उसे ठण्डकमें गाड़ देना चाहिये। सारी रात गड़ी रहनेसे, उस पानीके ऊपर तेल सरीखा अतर तैर निकलेगा। रातमें जितनी ठण्ड पड़ेगी, उतना ही ज्यादा अतर निकलेगा। इसलिये हेमन्त और शीतऋतुमें अतर बनाना चाहिये। सुबह उस तैरते हुए अतरको निकाल कर शीशेमें रखना चाहिये, और फिर घाममें सुखा लेना चाहिये। पहले पहल वह अतर देखनेमें कुछ कुछ हरा सा दीखता है। फिर कुछ दिन बाद असली अतरका वैसा रङ्ग नहीं रहता असली अतर एक सप्ताहके भीतर भीतर कुछ पीला हो जाता है। यही सबसे श्रेष्ठ है। ऐसा अतर एक लाख गुलाबोंसे एकही तोला बनता है और समय समय पर ८०) से १००) तोले तक बिकता है। ऐसा बहुमूल्य अतर सहजमें नहीं मिलता। बाजारोंमें जो अतर सबसे उत्कृष्ट कह कर बिकता है, वह भी इससे बहुत निकृष्ट है।

बजारू अतर ऐसे बनता है,—जिस पात्रमें भाफ आकर जमती है, उसमें पहिले हीसे चन्दनका तेल रखा रहता है। सुगन्धयुक्त भाफ पाकपात्रसे भवका पात्रमें आते ही उसका गन्धांश चन्दनके तेलके साथ मिल जाता है, और भाफ अलग हो जाती है। इस प्रकार थोड़ेसे गुलाबसे बहुतसा चन्दनका तेल सुवासित हो जाता है, और वही गुलाबका अतर कह कर बाजारोंमें बेचा जाता है। बेला, चमेली, जूही, केवड़ा आदिके अतर भी ऐसे ही बनते हैं। इस प्रकार चन्दनके तेलमें दूसरोंकी सुगन्धि घुसेड़ कर मिश्र अतर बनता है। विलायतमें अतर अग्निके उत्तापसे नहीं चुआया जाता। वहां गुलाबके ऊपर साफ चर्बी बिछाकर, उसके ऊपर ताजे फूल रखदेते हैं, इससे फूलोंकी खुशबू चर्बीमें मिल जाती है। इसी प्रकार १५—२० बार फूल रखकर बादमें चर्बीको सुरासार (शराब या तेजाब) में घोल कर रख देते हैं, इससे चर्बीकी सुगन्धि सुरासारमें आ जाती है, और चर्बी अलग हो जाती है। इससे बहुत बढ़िया असली अतर बनता है।

ऐसा प्रवाद है कि—सुप्रसिद्ध नूरजहान बेगमने १६१२ ई०में सबसे पहले अतरका आविष्कार किया था। सम्राट् जहांगीरके साथ उनके विवाहके समय गुलाब जलका स्रोत बहा था, बगीचेके नालेमें गुलाब जलके ऊपर तेल सरीखा कुछ तैरते देख नूरजहांनने उसे संग्रह करनेका हुक्म दिया। उन ही से फिर अतर बना था।

बम्बईमें गुलाबकी सूखी पखुड़ियां ३) रु० सेर बिकती हैं।

गुलाब—हिन्दीके एक कवि। कविताका नमूना यह है—

"गानहद हान लागे सुखद सुभोन लागे
पौन लागे विषद वियोगिनके हियरां।
सुन्दर सवाद लों सुभोजन लगन लागी
लगन मनोज लागे योगिनके जियरां॥
कहत गुलाब बन फूलन पलास लागे
सकल विलासनके समय सुनियरां।
दिन अधिराम लागे ऋतुपति धाम लागे
तान सुनाम लागे पान लागे पियरां॥"

गुलाबचश्म (फा० पु०) एक तरहका पक्षी। यह खैर रङ्गका

होता है। इसकी चोंच काली और पैर लाल होते हैं। यह बहुत मधुर स्वरसे गान करता है।

गुलाब-छिड़काई (हिं० स्त्री०) १ विवाहमें एक प्रथा। इसमें दोनों पक्षोंके मनुष्य आपसमें गुलाब जल छिड़कते हैं। २ दान, दहेज।

गुलाबजम (फा० पु०) एक प्रकारकी झाड़ी जो आसामको पहाड़ियोंमें होती है। इसकी छालके रेशेसे रस्सियां बनाई जाती हैं।

गुलाबजामुन (हिं० पु०) १ एक प्रकारकी मिठाई। इसके बनानेमें पहिले आटे और खोयाको मिलाकर छोटे छोटे टुकड़े किये जाते हैं और फिर घृतमें छानकर चाशनीमें डुबो देते हैं। २ एक प्रकारका वृक्ष जो शोभाके लिए उद्यानमें लगाया जाता है। ३ इस पेड़का फल जो खानेमें बहुत स्वादिष्ट होता है, इसके अन्दर एक कठिन बीज रहता है।

गुलाबतालू (फा० पु०) एक प्रकारका हाथी। इसे हाथीका तालू गुलाबी रंगका होता है जो शुभलक्षण समझा जाता है।

गुलाबपाश (फा० पु०) गुलाबजल रखनेका एक तरहका पात्र जो भारीके आकारका होता है।

गुलाबपाशी (फा० स्त्री०) गुलाबजल छिड़कनेकी क्रिया।

गुलाबराय—हिन्दीके एक जैन कवि, इन्होंने वि० सं० १८४२ में इटावामें मोतीराम और सिरलालके साथ रहकर 'शिखरविलास' नामक एक पद्य ग्रन्थ रचा था।

गुलाबसिंह—हिन्दी भाषाके एक कवि। वह पञ्जाबी थे। १७८८ ई०को उनका जन्म हुआ। उन्होंने रामायण, चन्द्रप्रबोध नाटक, मोक्षपन्थ आदि कई एक वेदान्त ग्रन्थ लिखे।

गुलाबसिंह—राजपूतवंशीय काश्मीरके महाराज और वर्तमान काश्मीराधीश्वर प्रतापसिंहके पितामह।

१८वीं शताब्दीमें काश्मीरके उत्तरवर्त्ती जम्बु प्रदेशमें ध्रुपदेव और उनके बाद उनके पुत्र रणजित् देव राज्य करते थे। ये अपनेको चन्द्रवंशीय राजपूत बतलाते थे। ध्रुपदेवके कुशदेव और सुरतदेव नामके दो पुत्र थे और कनिष्ठ सुरतदेवके वंशमें विख्यात गुलाबसिंह उत्पन्न हुए थे।

१७८० ई०में रणजित्देवके मृत्युके बाद उनके पुत्र विजयराय, इसके बाद विजयके पुत्र सफरीदेव और विजयके कनिष्ठ भ्रातुष्पुत्र जयसिंह जम्बुके राजा हुए। जयसिंहके अभिषेक वर्ष १७८८ ई०में गुलाबसिंह पैदा हुए थे।

पंजाबकेशरी रणजित्सिंहने मिश्र दीवान चंद नामक एक सेनापतिको जम्बु जीतनेके लिये भेजा था। यहां राजपूत राजाओंके साथ सिखसैन्यका घमसान युद्ध हुआ। उस युद्धमें अठारह वर्षके गुलाबसिंहने जिस तरह वीरत्व दिखलाया था, उससे सिख सेनापति दीवान चन्द मुग्ध होकर पंजाबसिंहके निकट गुलाबसिंहकी अधिक प्रशंसा की थी।

जम्बु शिखराजाके हाथ आ गया। जम्बु-राजपरिवार अत्यन्त विपन्न और विषन्न हो गया। उस समय गुलाबसिंह और उनके छोटे भाई ध्यानसिंह मीर्या मोती बहुत कष्टसे काल क्षेपण कर रहे थे। इस कारण वे थोड़ी ही उम्रमें अपनी अदृष्ट परीक्षाके लिये दशवर्षके लड़के ध्यानसिंहको साथ ले बाहर निकले। दीवान चन्दका प्रशंसावाद उन्हें कर्णगोचर हुआ। वे आशापूर्ण हृदयसे सिखमहाराजके अनुग्रह प्रार्थी हो लाहोर आ पहुंचे। किन्तु इस बार उनका इतना कष्ट और परिश्रम निष्फल गया, प्रायः तीन महीने लाहोरमें रहने पर भी महाराज रणजित्का उन्हें दर्शन न हुआ। इस लिये निराश हो अपने छोटे भाईको साथ ले जन्मभूमि लौट गये। यहां आकर भी आत्मीय स्वजनोंका कष्ट देख वे बहुत ही दुःखित हुए। उच्च राजपूतवंशमें जन्म ले घरमें कायर पुरुषको नाईं रहना उन्हें तनिक भी पसन्द न आया। इस समय ये अकेले ही बाहरको निकले। वितस्ता नदीके तीर आ वे बहुत ही श्रान्त हो गये। उस स्थानसे थोड़ी ही दूर पर मुञ्जला नामक दुर्ग अब स्थित है। संयोगवश किलेदार वहां टहलते हुए आ पहुंचे और गुलाबका सुन्दर और वीरोचित कान्ति देख उनसे परिचय पूछा। युवक गुलाबसिंह उस किलेदारके निकट ३) रु० मासिक वेतन पर एक सामान्य सैनिक पद पर नियुक्त हुए। किन्तु यहां भी अधिक दिन रह न सके। उनका युद्धनैपुण्य और कार्यकुशलता देख किले-

के दूसरे दूसरे सैनिक उनसे ईर्षा करने लगे थे। गुलाब थोड़े दिनके बाद ही मुर्कला दुर्ग छोड़ भीमवर सुलतान खाँके अधीन काम करने लगे। कुछ काल वे कोटाली दुर्गमें रहते थे। यहांके सरदारसे भी उन्हें अच्छा बनाव न था। इस लिये उक्त कार्य छोड़नेके लिये बाध्य हुए।

इस समय वीर गुलाबको चारो ओर निराशाकी विषादमय छवि दीख पड़ती थी 'किसकी सहायता लूं? किस तरह भविष्य उन्नत करूं?" इसी तरहकी भावना उनके हृदयमें उत्पन्न होने लगीं। हृदयकी व्यथा दूर करनेके लिये इस्माइलपुरमें पिताके निकट उपस्थित हुए। किन्तु यहां आकर भी वे संसारकी विषम वेड़ीसे निवद्ध हो अत्यन्त ही कष्ट पाने लगे। यहां उनके पिताने अपने दोनों पुत्रोंको उपयुक्त देख दुर्लभ नामके किसी मनुष्यसे बहुतसे रुपये कर्ज ले उन दोनोंका विवाह करा दिया। इस विवाहसे भी गुलाब कुछ भी प्रसन्न न हुए। उन्होंने देखा कि जिस तरह पिता ऋणजालमें जकड़े हुए हैं, सांसारिक कष्ट भी उसी परिमाणसे बढ़ता है। १८११ ई०के प्रारम्भमें गुलाब एक दिन पितासे बोले—"मुझे यहां रहना अच्छा नहीं लगता है। यदि आप घुड़—सवारका उपयुक्त पोशाक खरीद दें तो मैं एकवार और लाहौर दरबारमें जा अपने भाग्यकी परीक्षा करूं"। किन्तु उस समय उनके पिता किशोर सिंहके पास एक कौड़ी भी न थी। जो कुछ हो, रुपये लौटकर पानेकी कोई सम्भावना नहीं रहने पर भी दयालु दुर्लभने फिर भी कर्ज दे गुलाबकी अभिलाषा पूरी की। गुलाब और उनके भाई ध्यानसिंह मियाँमोतीसे एक सिपारिसी चिट्ठी ले दीवानचन्द मिश्रके निकट लाहौर जा पहुंचे। दीवानचंदने चिट्ठी पढ़ दोनों भाइयोंकी बहुत ही खातिर की और उनको यथासाध्य मदद देनेके लिये कटिबद्ध हुए। उस समय गुलाबसिंहने सुना कि उनके परम उपकारी मियां मोती विद्रोही दामोदरसिंह और ख्वालसिंहसे मारे गये हैं। यह सुन उन्हें जैसा दुःख हुआ था वह अकथनीय है। उनके हृदयमें प्रतिहिंसाकी आग जल उठी थी, किन्तु इस समय उनने मनकी आग मनमें ही शान्त की। इस अवस्थामें प्रतिहिंसावृत्ति दिखलाना उनके लिये अच्छा नहीं होता।

सुयोग पाकर मिश्र दीवानचंद दोनों राजपूत युवकोंको महाराज रणजित्सिंहके पास ले गये। पंजाब-केशरी पहलेसे ही गुलाबके वीरत्वकी कथा सुन रहे थे। आज दोनों भाईयोंकी सुश्री सुगठित वीरकान्ति देख बहुत ही संतुष्ट हुए, और दोनोंको प्रतिदिन ३) रु० वेतन पर अपना अनुचर बनाकर रखलिया। इसतरह दोनों भाइयोंने कुछ समय राजदरबारमें रह राजकीय अदब कायदा सीख लिया। १८१२ ई०में दोनों अश्वारोही सैन्यमें भर्ती किये गये। महाराज रणजित्सिंह ध्यानसिंहको बहुत ही चाहते थे। इस समय ध्यानसिंह प्रतिदिन ५) रु० और उनके ज्येष्ठ भ्राता गुलाबसिंह सिर्फ ४) रु० पाने लगे। थोड़े ही दिनोंमें दोनोंका वेतन दो गुनासे तीन गुना तक बढ़ गया। इस वर्षमें अन्तमें राजपूत वीरने अपने पिताके पास लगभग तीन हजार रुपये भेजे थे। गुलाब और ध्यानसिंहके ऐसे उन्नत समयमें उनके पिता किशोरसिंहकी मृत्यु हुई।

१८१३ ई०में महाराज रणजित्के अनुरोधसे गुलाबसिंह अपने बारह वर्षके कनिष्ठ भ्राता सुचेतसिंहको दरबारमें लाया। सुचेतसिंहने अपने रमणीय सुकुमार कान्ति-गुणसे रणजित्को विमुग्ध कर उनका यथेष्ट अनुग्रह लाभ किया। तीन सामान्य राजपूत युवकोंने लाहौरके दरबारमें शीर्षस्थान पाया। थोड़े ही दिनोंमें तीनों भाई सभोसे श्रेष्ठ गिने जाने लगे।

उक्त वर्षमें दामोदरसिंह और ख्वालसिंह लाहौरमें आये हुए थे। उनका आगमन सुन गुलाबसिंह और ध्यानसिंहके हृदयमें प्रतिहिंसा फिर भी जाग उठी। दोनों भाई आनरकुली नामक रास्ते पर घोड़े पर चढ़ कर उपस्थित हुए। इस स्थान पर मियाँमोतीके मारनेवालोंसे उनकी भेंट हो गई। गुलाबसिंहने दामोदरको अपना परिचय देते हुए बन्दूकका निशाना मारा। दामोदरने आर्त्तनाद करते हुए पृथ्वी पर गिर अपना प्राणत्याग किया। तब ख्वालसिंहने दोनों भाइयों पर आक्रमण किया। किन्तु गुलाबके दारुण अस्त्राघातसे वे भी परलोकको सिधारे। राजपथ पर इस तरहकी दुर्घटना

होतो देख, बहुतसे मनुष्योंने गुलाबसिंह पर आक्रमण किया। गुलाब और ध्यानसिंहने किसी तरह भाग कर मिश्र दीवानचन्दकी छावनीमें आ आत्मरक्षा की। वह हत्या कहानी महाराज रणजित्‌के कर्णगोचर हुई। किन्तु वे इससे तनिक भी दुःखित नहीं हुए, वरन् उन दोनों भाइयोंके ऊपर बहुत सन्तुष्ट हुए थे, साथ ही साथ उनकी पदवृद्धि भी की गई। अभी गुलाब विविध पारितोषिकके सिवा प्रतिदिन १८) रु० पाने लगे थे।

जम्बुराज्य सिखोंके हस्तगत होने पर रणजित्‌सिंहने दीवान भवानीदासको ससैन्य जम्बु शासन करनेके लिये भेजा। सिख सैन्यको देख कर ही जम्बुराजके परिवार शतद्रु नदीके दूसरे पार भाग आये। इसके बाद जम्बुवासी राजपूतोंके साथ सिखोंका सर्वदा विवाद रहा करता था, किन्तु इससे राजपूत ही अधिक कष्ट भोगते थे। इस समयमें दिद्दु नामके एक मनुष्यने पर्वतसे गुप्तभावमें जंबु आ सिखोंके ऊपर अत्यन्त ही अत्याचार करना आरम्भ किया। धीरे धीरे दिद्दुके उपद्रवसे जम्बुका राजकर तक भी बन्द हो गया। यह संवाद रणजित्सिंहके निकट पहुंचा। उस समय गुलाबसिंह पञ्जाबकेशरीके पास ही मौजूद थे। उन्होंने सिखराजसे कहा कि जम्बुका जमादार कुशियालसिंह स्वयं स्वाधीन होनेके लिये पार्वतीय जातिको सिखोंके विरुद्ध उत्तेजित कर रहा है। इसके पहले ही गुलाबने दीवानचंदको समझाया था कि उन लोगोंको मातृभूमिकी रक्षाका भार यदि उन्हीं पर सौंपा जाय, तो इस तरहका दुर्घटना कभी भी नहीं हो सकती है। दीवानचंदने भी गुलाबका पक्ष ले महाराज रणजित्सिंहके निकट जम्बुकी कथा कह सुनाई। पञ्जाबकेशरीने गुलाबको जंबु और भीमबटके निकटवर्त्ती चालीस हजार रुपये आमदनीकी सम्पत्ति जागीरमें दे उन्हें पार्वतीय जातिको दमन करनेके लिये नियुक्त किया।

गुलाबसिंह ५१६ सौ सैन्य साथ ले जम्बुकी ओर रवाना हुए। वे बहुत दिनके बाद अपनी जन्मभूमि पहुंचे। यहां राजपूतोंने उनका यथेष्ट सम्मान किया। चतुर गुलाब प्रधान प्रधान मनुष्योंको अर्थद्वारा वश करने लगे। इस तरह घूम देकर दिद्दुके पक्षके बहुत मनुष्योंको अपनी मुट्ठीमें कर लिया। थोड़े ही समयमें वे दिद्दुका छिन्न मुण्ड ले लाहोर पहुंचे। महाराज रणजित्‌ने गुलाबके कार्यसे संतुष्ट हो उन्हें प्रचुर अर्थ और बहुतसी जागीर प्रदान की। फिर भी रणजित्‌सिंहके आदेशसे गुलाबसिंह क्षणवा और जम्बुके उत्तरवर्त्ती पार्वतीय भूभाग जीतनेके लिये बाहर निकले। उनके सौभाग्यक्रमसे दुर्दान्त पार्वतीय जातियोंने सहज होमें उनकी वश्यता स्वीकार की थी। १८१७ ई०में राजपूतवीर सफलता लाभकर पंजाबकेशरीके निकट लौट आये। इस बार भी इन्होंने यथेष्ट पुरस्कार पाया था।

इस समय ध्यानसिंह देवड़ीवाला अर्थात् सर्वप्रधान द्वाररक्षकके पद पर नियुक्त हुए थे। रणजित्‌सिंह गुलाबकी अपेक्षा ध्यानसिंह और चेतसिंहको अधिक

गुलाब म० प्र०

चाहते थे। उन्होंने दोनों भाइयोंको "राजा" उपाधि अर्पण की। किन्तु ज्येष्ठ भाईको ऐसा उच्च उपाधिके न मिलने पर उन दोनोंने रणजित्‌सिंहसे कहा, "महाराज! हम दोनोंसे जो ज्येष्ठ हैं, सब कामोंमें जो हम लोगोंकी अपेक्षा उपयुक्त तथा वीर और विज्ञ हैं, जब उनके भाग्यमें ऐसी उपाधि न हुई, तो हम दोनों किस तरह राजाकी उपाधि ग्रहण कर सकते हैं?"

कनिष्ठ भाइयोंके ऐसे कौशलपूर्ण वचनोंसे महाराज रणजित्‌ने गुलाबसिंहको भी "राजा" उपाधि दी। इस तरह १८१८ ई०में सिख नरपति द्वारा गुलाब जम्बुके राजा, ध्यानसिंह भीमबर और कुशलके राजा तथा सुचेतसिंह रामनगर और चम्बा प्रभृति स्थानोंके राजा बनाये गये।

गुलाबसिंहने उपकारी सिखनरपतिसे बिदा ले बहुत ही समारोहके साथ जम्बु राज्यमें प्रवेश किया जो मनुष्य एक समय सिर्फ ३) रु० मासिक वेतनकी नौकरीके लिये लालायित हुआ था, आज वही मनुष्य जम्बु के एक स्वाधीन राजा हैं। अदृष्टचक्र किस तरह परिवर्त्तनशील है गुलाबसिंह ही इसका दृष्टान्त बन गये। बहुत धूम धामसे गुलाबसिंह जंबुराज्यमें अभिषिक्त हुए थे। सिख-राजके कर्मचारी और उनके अधीनस्थ सभी सैन्य जंबु-छोड़ पञ्जाब चले आये। गुलाबके साथ रणजित्सिंहका अब कोई लगाव न रहा। सिर्फ इतना निश्चित था कि राजा गुलाब प्रतिवर्ष दुर्गापूजाके समयससैन्य लाहोर आ पञ्जाबकेशरीके आनन्दको बढ़ावें।

गुलाब जम्बुका एकाधिपत्य लाभकर निकटवर्त्ती सर्दारोंको वशीभूत करने लगे। राज्यलिप्साके साथ उच्चा-भिलाष, परश्रीकातरता, परपीड़न और अर्थलाभ ये सब महादोष उनके हृदयमें आगये थे। यहां तक कि जम्बु के बालसे वृद्ध तक सबके सब गुलाबका नाम सुननेसे ही डरते थे।

बाहरसे गुलाब इतने सुखमधुर थे, उनके मुखमण्डल में ऐसा स्वच्छ सुन्दरआवरण था कि एक बार जो उन्हे देखता और उनके साथ आलाप करता वह उनकी मोहिनी शक्तिमें आकृष्ट हो जाता था।

१८२० ई०में गुलाबसिंहने राजोयारिके राजा अगरखाँ पर आक्रमण कर उन्हें बन्दी किया था।

१८३८ ई०में पंजाबकेशरी रणजित्सिंहकी मृत्यु हुई और इनके पुत्र वोरवर खड्गसिंह सिंहासन पर बैठे। गुलाबसिंह तथा उनके भाइयोंने समझा था कि रणजि-त्सिंहकी मृत्युके बाद उनके भाई ध्यानसिंहके पुत्र हीरासिंह पंजाबके सिंहासन पर अभिषिक्त होंगे, परन्तु उनका अभीष्ट सिद्ध नहीं होनेसे राजा ध्यानसिंह महा-[illegible] खड्गसिंहका नाश करनेके लिये षड़यन्त्र रचने लगे। राजा [illegible]सिंह भी इस निदारुण षड़यन्त्रमें शामिल हुए [illegible] कुमार नवनिहालसिंह खेवरसे पिता[illegible] ओर आ रहे थे, उस समय रा[illegible] गुलाब[illegible] उनसे मिल गये। गहरी रात्रिमें जिन लोगोंने मिल असहाय खड्गसिंहको बन्दी किया था, उनमेंसे गुलाबसिंह भी एक थे।

खड्गसिंह देखो।

जब खड्गसिंह कारागारमें और उनके पुत्र नवनिहाल सिंह पंजाबके सिंहासन पर बैठे थे, उस समय गुलाब सिंह प्रभृति तीन भाइयोंका एक तरह पंजाबमें आधि-पत्य था। रणजित्के पौत्र नवनिहालको यह अत्यन्त असह्य मालूम पड़ने लगा। खड्गसिंहकी अन्त्येष्टिक्रियाके दिन नवनिहालके माथे पर ढाल गिरा था जिससे उन्हें बहुत चोट आई थी। लोग कहते हैं कि उसीसे उनकी मृत्यु हुई। किन्तु किसी किसी ऐतिहासिकने लिखा है—"इस सामान्य आघातसे उनके मृत्यु होनेकी कोई सम्भावना नहीं थी।" सुप्रसिद्ध सिख-इतिहास-लेखक कनिंहमने लिखा है "जम्बुके राजा नवनिहालके हत्याके काण्डमें शामिल थे इसका यद्यपि कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता है तो भी इस घोरतर अपराधसे उन्हें छोड़ देना भी बिलकुल असम्भव है।" सचमुच ध्यानसिंह प्रभृतिके षड़यन्त्रसे ही प्रबल पराकान्त सिखराज्यके अधःपतनका आरम्भ हुआ।

नवनिहालकी मृत्युके बाद उनकी माता चाँदकुमारी राजगद्दी पर बैठीं। वह ध्यानसिंहको अच्छा तरह पहचानती थीं। उस समय भी ध्यानसिंह राज्यके शासन-सचिव थे। महारानी चाँदकुमारीने ध्यानसिंह-का उपेक्षा कर सिन्धुवाल उत्तरसिंहको प्रधान मन्त्रीके पद पर नियुक्त किया। रानी प्रबलप्रतापसे राज्य करने लगीं। क्रूरप्रकृति ध्यानसिंह बुद्धिमती विचक्षणा रमणी-को सिंहासनसे अलग करनेकी चेष्टा करने लगे। रण-जित्सिंहका शेरसिंह नामक व्यसनासक्त और मद्यपायी एक जारज पुत्र था। ध्यानसिंहने सोचा कि इसीको सिंहासन पर बैठाकर स्वयं राज्यके हर्त्ता कर्त्ता हो जावेंगे। चतुर गुलाबसिंहने भी भ्राताके साथ इस षड़यंत्रमें योग दिया था। ध्यानसिंहने शेरसिंहको अपना अभि-प्राय प्रगट करते हुए उन्हें ससैन्य लाहोर आनेको लिखा। १८३१ ई०की १२वीं जनवरीको सेरसिंह ससैन्य फतेगढ़ आ पहुंचे। रानी चाँदकुमारीने शीघ्र ही सिंहद्वार बन्द करनेका आदेश किया। द्वार बन्द किया

गया सही, किन्तु द्वारके रक्षक शेरसिंहके पक्षमें हो गये थे। मानो गुलाबसिंह और हीरासिंह चांदकुमारीके पक्षमें हो किलासे गोला बरसाने लगे। दुर्वृत्त ध्यानसिंहने फरासीसी सेनापति भेञ्चुराके साथ शेरसिंहका पक्ष अवलम्बन किया था।

अवरोधके सातवें दिन, रानी चांदकुमारीने देखा कि गुलाबसिंह और डोग्रा सैन्यके सिवा प्रायः सभी उनके विरुद्ध हो उठे हैं। आज महावीर रणजित्‌का पुत्रबधू अपने सम्मानकी रक्षाके लिये विकल हो उठीं। चतुर गुलाबसिंहने उनसे कहा, "अब राज्य रक्षाका कोई उपाय नहीं सूझता, अब भी आप उनके भाईके अभिप्रायानुसार शेरसिंहको राज्य छोड़ दें, तो वे आपकी इज्जतको रक्षाके लिये प्राणपणसे यत्न करेंगे।" उस समय अबला रमणी हाथ जोड़ रो रो कर कहने लगीं, "मैं समस्त भार आप पर सौंपती हूं, आपही मेरे एकमात्र रक्षक हैं, जिससे मेरी इज्जतकी रक्षा हो, वही कीजिए। दुष्ट शेरसिंह मेरा करप्रार्थी है, परन्तु मैं अपने पवित्र शरीरको बेच कुछ भी कलङ्कित नहीं हो सकती।" गुलाबसिंहने उन्हें बहुत कुछ आशा दी।

लड़ाई बन्द हो गई। महारानी चांदकुमारीने जंबूके निकट ८ लाख रुपये आमदनीका कहिकुदियाली नामक स्थान जागीरमें पाया। गुलाबसिंह महारानी और उनकी सम्पत्तिके रक्षक हुए तथा लाहोर दुर्गमें जो प्रचुर अर्थ रक्खा था वह समस्त उन्होंने चांदकुमारीसे उन्हींकी रक्षा करनेके बहाने अपने साथ कर लिया।

शेरसिंह पञ्चनदके सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। गुलाबसिंहने शेरसिंहको राजभक्ति दिखलानेकेलिये जगत् विख्यात कोहिनूर ला उन्हें पहना दिया था। उस समय शेरसिंहके साथ प्रायः ४।५ घण्टे तक गुलाबकी बात चीत हुई थी। उस सम्भाषणका यही कारण था—गुलाबने समझा था कि उनके साथ बहुत थोड़ी सेना हमारे लाहोरमें उपस्थित है। और जो बहुमूल्य मणिरत्न हड़प कर लिया है, उसे ले रास्तेमें जानेसे सम्भव है कि दुर्दान्त सिख-सैन्य लूट ले। ऐसे समय पंजाबपतिकी सहायताके बिना दूसरा कोई उपाय नहीं है। इसलिये ऐसा ही उपाय करना चाहिए कि जिससे वे निरापदसे जम्बु पहुंच जावें। इरावतीके तीर पर उपस्थित हो उन्होंने जम्बुसे दो हजार सैन्य मंगवाये। इस तरह गुलाब प्रायः करोड़ रुपयेकी सम्पत्ति ले स्वराज्यको लौट आये।

गुलाबसिंह जम्बु पहुंच स्थिर रह न सके। यहां आकर उन्होंने सुना कि काश्मीरके शासनकर्त्ता मीयांसिंह विद्रोही सैन्यसे मारे गये हैं और विद्रोहीगण बहुत ही ऊधम मचा रहे हैं। गुलाब शीघ्र ही काश्मीर पहुंचे। यहां दो दल राजद्रोही सैन्यके प्रत्येकका शिरश्छेदकर वे हजाराकी ओर अग्रसर हुए। चिनोलके नवाब पैन्ध खां हजारा अञ्चलमें बहुत ही उपद्रव मचा रहे थे। गुलाबसिंहने जा उन पर आक्रमण कर पूर्णरूपसे पराजय किया। यहां उन्होंने सुना कि वृटिश जातिके साथ काबुलमें लड़ाई हो रही है। बहुत दिनकी बात नहीं है कि वृद्ध अमीर जमानशाहने काबुलसे लौटते समय गुलाबसिंहकी कुछ विश्वस्त सेनाओं द्वारा सहायता पाई थी। उसी समयसे दोनोंमें मित्रता हो गई और हमेशा एक दूसरेकी खबर लिया करते। जमानशाहके प्रत्यागमनके थोड़े ही समयके बाद काबुलमें वृटिश सैन्यकी बड़ी दुर्गति हुई। इसके सिवा उक्त लड़ाईके पहलेसे ही वरकजई सदोजई प्रभृति काबुलके सर्दार गुप्तभावसे गुलाबसिंह और ध्यानसिंहको पत्र लिखा करते थे। इसी कारण अङ्गरेज लोग गुलाबसिंहके ऊपर विश्वास नहीं करते थे। चतुर गुलाबने इस संदेहको दूर करनेके लिए वृटिश सेनानायकको कहला भेजा कि वे कभी भी वृटिशके विरुद्ध हो नहीं सकते, परम् युद्धमें वे उनकी सहायता करेंगे। इस समय गुलाबसिंहके कथनानुसार सिख राज्यके सचिवने भी वृटिशको यों कहला भेजा "खैबर गिरिसङ्कटमें सिखसैन्य जा वृटिश सैन्यकी सहायता करेगा, प्रयोजन होने पर जलालाबाद तक जाकर भी साहाय्य कर सकता।

गुलाबसिंह उस समय हजारामें थे। वे भी वृटिश गवर्मेंटकी मदद देनेमें कटिबद्ध हुए थे, किन्तु उस समय किसी विश्वासी मनुष्यसे सुना कि वृटिश राजपुरुष उन पर अप्रसन्न हैं और दोषारोप कर रहे हैं। यह सुन कुछ क्षुब्ध हो तुरत हीससैन्य अटक लौट पाये। इसी नदीके उस पार सिख सैन्य ठहरे [illegible]

इधर काबुलमें बहुतसे अंगरेजी सैनिक मारे गए। सेनापति पोलक ससैन्य काबुल पहुंचे और गुलाबसिंह को इस लड़ाईमें योग देनेके लिये संवाद भेजा। गुलाबसिंह पहले दुविधामें पड़ गये, क्या करना चाहिए उनकी कुछ समझमें न आया। अन्तमें सेनाके साथ हजारासे पेशावर तेत्रको आये। किसी किसी अंगरेज ऐतिहासिकने लिखा है जिससे ब्रटिश सैन्य सहजमें ही खैवर पथ पर न पहुंच सके, एवं देशीय सैन्य जिससे भयभीत और विचलित हो जाय, गुलाबसिंह गुप्तभावसे वैसाही कार्य करनेकी चेष्टा करते थे। किन्तु जब उन्होंने देखा कि ब्रटिश सैनिक नानाप्रकारके दुःखोंको दूर करते हुए अपने कार्य में सफलता दिखला रहे हैं, तब उन्होंने निराश हो ब्रटिश सेनापतिको कहला भेजा कि "वह यथासाध्य ब्रटिशकी सहायता कर रहे हैं, किन्तु अभी साहाय्यका कोई प्रयोजन न जान वह स्वराज्यको लौटे जा रहे हैं।"

उक्त विदेशी ऐतिहासिकका कथन विश्वासयोग्य नहीं है। गुलाबसिंहने जिस तरह ब्रटिश गवर्मेंटको सैन्य द्वारा साहाय्य किया था, उसमें तनिक भी संदेह नहीं किया जा सकता। क्योंकि ब्रटिश राजपुरुषने गुलाब सिंहके कार्यसे संतुष्ट हो उन्हें जलालाबादका स्वाधीन अधिकार प्रदान किया था

इस समय लाहोरमें एक भयङ्कर दुर्घटना हुई। महारानी चान्दकुमारी नवनिहालके घरमें रहती थीं। शेरसिंहने उन्हें पानेकी इच्छासे अनेक तरहके उपाय रचे थे, किन्तु उनका अभीष्ट सिद्ध नहीं हुवा। वरं चांदकुमारीने अत्यन्त घृणासे शेरसिंहको इस तरह खबर दी थी "प्रसिद्ध कुण्यिावंशमें मेरा जन्म है, मैं सुविख्यात जयमालकी कन्या हूं, शेरसिंह जैसे रजकपुत्रके हाथ आत्मसमर्पण करनेमें अत्यन्त लज्जा होती है।" महाराज शेरसिंहने सोचा कि ध्यानसिंह और गुलाबसिंह चांदकुमारीके पृष्ठपोषक हैं, इस लिये अवस्थाहीन होने पर भी चांदकुमारीने उनकी अवज्ञा की। वे जानते थे कि चांदकुमारी ही उनके सिंहासनका एक मात्र कंटक है। इसलिये उन्होंने चांदकुमारीकी चार सहचरियोंको जागीरका लोभ दिखाकर वशीभूत किया और उनके द्वारा अत्यन्त कठोरतासे चाँदकुमारीका प्राणसंहार भी कराया। शेरसिंहने सोचा कि अब सिंहासनका दावा करनेवाला कोई न रह गया। किन्तु दुष्ट ध्यानसिंह भी जिससे उसके ऊपर किसी तरहका आधिपत्य कर न सके, उसकी भी कोई तरकीब सोचने लगे। सिन्धुवालाके सरदार लेनासिंह और अजीतसिंह राजाका पक्ष अवलम्बन कर ध्यानसिंहके नाशकी चेष्टामें थे।

धानसिंहने जम्बुमें भाईको सब खबर जतला कर उन्हें शीघ्र ही आने लिखा। गुलाबसिंह चांदकुमारी के मृत्यु संवाद पाकर निश्चिन्त हो गये। चांदकुमारीका रखा हुवा लाख रुपयेका मणिरत्न आज उन्हींके हाथ लगा। सर्वदा उन्हें एक यही चिन्ता लगी रहती थी कि यदि चांदकुमारी शेरसिंहके साथ मिल गई तथा उनके पास जो सब धन रत्न रखा हुआ है वह शेरसिंह जान जावें तो उन्हें एक भारी आपत्तिमें गिरनेकी सम्भावना है। जो हो, आज प्रसन्नचित्तसे गुलाबसिंह लाहौर पहुंचे। यहां अधिक दिन रहने पर शायद किसीके मनमें कोई संदेह हो जाय, इसी लिये वे धानसिंहको उपयुक्त सलाह देकर शीघ्र ही जम्बु राज्यको लौट आये। गुलाबसिंहके आदेशानुसार धानसिंहने रणजित्के एक पांच वर्षके उत्तराधिकारीको राज्यसिंहासन पर बैठाना स्थिर किया। उन्हींका नाम सुविख्यात दलीपसिंह था।

दलीपसिंह देखो।

शेरसिंह ध्यानसिंहके व्यवहारसे भयभीत हुए, इसलिये उन्हें ध्यानसिंहके विरुद्ध कोई कार्य करनेका साहस न हुआ। किन्तु यह उपयुक्त काल समझ दुष्ट सिन्धुवाला सर्दारोंने मदमत्त शेरसिंहसे ध्यानसिंहका शिरश्छेद करनेके लिये आदेशपत्र ले लिया। इधर उन्होंने राजाका दण्डादेश-पत्र देखा कर ध्यानसिंहको चिन्तामें डाला। उस समय दुष्ट सिन्धुवाला सर्दारने ध्यानसिंहसे कहा "यदि आप आज्ञा करें तो हमलोग अभी उस दुष्ट शेरसिंहका मस्तक दो खण्ड कर सकते हैं" धानसिंह इससे सहमत हुए। दूसरे दिन दुर्वृत्त सिन्धुवालाने महाराज शेरसिंह और धानसिंह दोनोंको मार डाला।

शेरसिंह और ध्यानसिंह देखो।

हीरासिंहके यत्नसे बालक दलीपसिंह पञ्चनदके सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। हीरासिंहने वजीरका

पद पाया। थोड़े समयके बाद ही हीरासिंह और उनके चाचा सुचेतसिंहमें द्वेष आरम्भ हुआ। सुचेतसिंहके ऊपर अनेक राजमहिलायें विमुग्ध थीं, यही हीरासिंहको द्वेषताका कारण था। यहां तक कि दलीपको माता महारानी चन्दा भी सुचेतको अत्यन्त पसन्द करती थी। पण्डित जल्ल नामके हीरासिंहके एक प्रियपात्र थे, सुचेतसिंहके सदृश राज अन्तःपुरमें वे भी जाते आते थे। संयोगवश एक दिन अन्तःपुरके शयनगृहमें दोनोंकी भेंट हो गई। इससे सुचेतसिंह पण्डितके ऊपर बहुत हो क्रोधित हो उठे। उन्हें मालम था कि पण्डित इस घटनाको हीरासिंहसे कह देंगे। जो कुछ हो, सुचेतसिंहने राजमाताको सहायतासे प्रधान मन्त्रीके पद पानेकी चेष्टा की, रानी चन्दाके भाई जवाहिरसिंहने भी इसमें योग दिया। हीरासिंहने ज्येष्ठ भ्राता गुलाबसिंहको सुचेतसिंहके इस व्यवहारके विषयमें लिख भेजा तथा उन्हें एक बार लाहोर आनेकी प्रार्थना की। किन्तु धूर्त गुलाबसिंह पहले आनेको राजी न हुए। अन्तमें न मालूम क्या सोचकर वे लाहोर आपसे आप आ पहुंचे। लाहोरवासियोंने उनका यथेष्ट सत्कार किया। यहां आ गुलाबसिंहने सुना कि—जवाहिरसिंह दलीपको ले वृटिश राज्यमें भाग जानेकी चेष्टा करते थे। सुचेतसिंह भी इस षड़यन्त्रमें लिप्त थे। सिख सैन्यके मालूम होने पर उन्होंने दलीपसिंहको जा घेरा। वजीर हीरासिंहके कहनेपर जवाहिरसिंह लोहेके पिंजड़ेमें बंधे हैं।

गुलाबसिंह सुचेतसिंह पर जिससे किसी तरहकी जोखिम न पहुंचे पहले उसीका वन्दोवस्त करने लगे। किन्तु तो भी हीरासिंहने किलेमें सुचेतसिंहके अधीन जो दो सैन्यदल थे, उन्हें भगा दिया और साथ ही साथ यह भी आज्ञा दी कि उनकी अनुमतिके विना सुचेतसिंह अथवा उनके किसी मनुष्यके साथ किसी तरहका सम्बन्ध न रक्खें।

गुलाबसिंहने हीरासिंहको बहुत समझा बुझा कर दर्बारका विवाद शान्त कर दिया। सुचेतसिंह उनके साथ जम्बू जानेको प्रस्तुत हुए। तब अर्थ गृध्नु गुलाबसिंहने हीरासिंहसे कहा, "यह तुम्हारा जो प्रधान प्रतिवन्धक था, उसे मैं अपने साथ ले जा रहा हूं। तिस पर भी तुम्हारे चारों ओर शत्रु हैं। जैसा मैं देखता हूं, उससे कब किस तरहकी आपत्ति आ पहुंचेगी, इसका कुछ ठीक नहीं है। मेरी इच्छा है कि तुम्हारे पिताकी और मेरी यहां जो समस्त बहुमूल्य अस्थावर सम्पत्ति है, उसे अभी हम लोगोंको पितृराज्य जंबूमें ले जाकर रखना ही ठीक है। उसमें तुम्हारी क्या सम्मति है?" हीरासिंह ज्येष्ठतातके कौशलपूर्ण वचनों पर किसी तरहका प्रतिवाद कर न सका। इस तरह गुलाबसिंहने कनिष्ठ सुचेतसिंह और असंख्य मणिरत्नादि ले स्वराज्यको प्रस्थान किया। उस समय ऐसा मालूम पड़ने लगा कि, लाहोरके राजभण्डारमें एक प्रकारकी चोरी हो गई है।

जंबूमें आ गुलाबसिंहने सुचेतसिंहसे कहा "भाई! देखो, मुझे तीन चार पुत्रसन्तान हैं, किन्तु तुम्हें एक भी सन्तान नहीं है, मेरी इच्छा है कि तुम मेरे एक पुत्रको दत्तक पुत्र बना लो।" ज्येष्ठ भाईके वचनों पर सुचेतसिंह राजी हो गये। इस तरह गुलाबसिंहके एक पुत्र सुचेतकी समस्त जागीर और भूसम्पत्तिके भावी उत्तराधिकारी हुए।

इस बार गुलाबसिंह अपने स्वार्थसिद्धिका दूसरा उपाय सोचने लगे। रणजित्सिंहके काश्मीरा और पेशोरा नामके दो पुत्र थे। गुलाबसिंहने उनके नामका जाल कर एक पत्र तैयार किया उसमें लिखा गया था कि सिन्धुवालाओंके राजहत्या और मंत्रिहत्याकाण्डमें उन्हीं दोनों भाइयोंका षड़यंत्र था। रणजित्सिंह काश्मीरासिंहको सियालकोट और पेशोरासिंहको चन्द्रभागाके गंड़यावाला दुर्ग दे गये थे। काश्मीराके अधीन मयूरसिंह नामक एक वृद्ध किलेदार थे। उनने भी दोनों भाइयोंके विरुद्ध झूठी गवाही दी। लाहोरसे उन दोनों भाइयोंको वन्दी और उनकी सम्पत्ति जब्त करनेका हुकम आया। लोभी जम्बुराजने सियालकोट और गंड़यावालेमें सैन्य भेजकर दोनों भाइयोंपर आक्रमण किया और उनकी समस्त धन सम्पत्ति लूट ली गई। काश्मीरा और पेशोरा स्वप्नमें भी नहीं सोचते थे कि इस तरहसे अकस्मात् उन दोनोंके ऊपर कोई आक्रमण कर सकेगा। जो हो, अभी उन्होंने निराश्रय अवस्थामें परिवारके साथ एक सिखगुरुका आश्रय ग्रहण किया। इस स्थानसे उन्होंने लाहोर और

जम्बुको एक पत्र यों लिख भेजा—"हम दोनों संपूर्ण रूपसे निर्दोष हैं, हमारे किसी शत्रुने मिथ्या दोषारोपण कर हम लोगोंको कलङ्कित किया है।" किन्तु दुर्वृत्त गुलाबसिंहने उनके कथन पर कुछ ध्यान न दिया अन्तमें उन दोनों राजपुत्रोंको वशीभूत करनेके अभिप्रायसे उन्हें जम्बु नगर आनेको लिखा, और धूर्त गुलाबने यहां उन्हें नजरबन्दी कर कहा "आप लोग यदि मुझे ७५ लाख रुपये दण्ड स्वरूपमें दें, तो भविष्यमें आप लोगोंके ऊपर किसी तरहका अत्याचार न होगा।" किन्तु वे इतने रुपये कहां पाते? महावीर रणजित्‌सिंहके पुत्रोंके प्रति इस तरहका अत्याचार होता देख खालसा-सैन्य सबके सब विरक्त हो उठे। उन्होंने गुलाबको खबर दी 'रणजित्‌सिंहके पुत्रोंके प्रति इसतरहका अत्याचार मानो खालसाका अपमान करना है। यदि आप शीघ्र ही उन-दोनोंको सम्मानपूर्वक छोड़ न देवेंगे तो खालसा सैन्य अस्त्रधारण करेगा। इस पर गुलाबसिंहने भयभीत हो सिर्फ २५ हजार रुपये ले काश्मीरा और पेशोरासिंहको छोड़ दिया।

कुछ दिनके बाद काश्मीरासिंहने उस दुष्ट किलेदारको एक सख्त सजा दी, जिससे उस अभागेकी मृत्यु हो गई। इस संवादको पाकर गुलाबसिंहने लाहोरको एक पत्र लिखा। फिर भी उन दोनों राजपुत्रोंको कैद करनेका आदेश आया: गुलाबसिंहने गड़ियावाला आक्रमण कर सात सौ सैन्य सियालकोट भेजे। इस समय काश्मीरासिंह पहलेसे ही सतर्क थे। उनने अपने दो सौ सैन्यको दुर्गरक्षाके लिये नियुक्त किया। उनके युद्ध कौशलसे गुलाबका सैन्यदल पराजित और विशेष क्षतिग्रस्त हो रणक्षेत्रसे भाग गया।

गुलाबसिंहने अपनी सेनाकी बेइज्जती पर क्रोधान्ध हो कई सौ अश्वारोही और पदाति सैन्य तथा तोपें दुर्ग जीतनेके लिये भेजीं। किन्तु इस बार भी उनकी सेनायें पूर्ववत् क्षतिग्रस्त हो लौटनेको वाध्य हुई। जब गुलाबसिंहने देखा कि दो [illegible] अश्वारोही और सात हजार [illegible] काश्मीरासिंहका साहस ज्योंका त्यों [illegible]ना है, तब उन्होंने लाहोरसे सिख सैन्य भेजनेका पत्र दिया। लाहोरसे मेजेतिया डोगरा और बहुसंख्यक मुसलमानसैन्य आये किन्तु वे भी काश्मीरासिंहका बालबांका न कर सके। गुलाबसिंहने देखा कि अब अपना मान-सम्भ्रम रखना ही करना उचित है, जब उनके बहुतसे सैन्य सामान्य सैन्यकी पराजय कर न सके, तब उनके इतने गौरव और इतने दम्भ पर धिक्कार है। इसलिये उन्होंने इसका बदला लेनेके लिये हीरासिंहको एक पत्र लिखा—खालसा सैन्य रणजित् सिंहके पुत्रके विरुद्ध युद्ध नहीं करेगा यह जान हीरासिंहने ध्यानसिंहके पराक्रान्त पांच हजार अश्वारोही और घोड़े परसे चलाये जानेवाले कई बृहत् कामान सियालकोटके दुर्ग ध्वंस करनेके लिये भेज दिये। इन योद्धाओंके गोला वर्षणसे सियालकोटका दुर्ग कांपने लगा था। काश्मीरासिंहके परिवारको चारों-ओर दावानल—जैसा दीखने लगा। वे सबके सब भयभीत हो गये और काश्मीरासिंहको लड़ाई बन्द कर देनेका अनुरोध किया। काश्मीरासिंहने भी देखा कि बचनेका अब कोई उपाय नहीं है, शीघ्र ही गुलाबका सैन्य दुर्ग अधिकार कर उनके सामनेमें ही उनके परिवारोंका अपमान करेगा, इसलिये वे गुप्तद्वार हो कर मधा प्रदेशको भाग गये। गुलाबकी सेनाने दुर्ग अधिकार कर लिया

इधर जब लाहोरसे ध्यानसिंहका सैन्यदल भेजा गया था तब खालसा सैन्य महाराज रणजित्‌के दोनों पुत्रोंपर भावी विपत्ति समझ उत्तेजित हो उठा। उन्होंने तीन दिन तक हीरासिंहको नजरबंद कर रक्खा और सुचेतसिंहको मंत्रीका पद दिलानेके लिये बुलाया। हीरासिंहने भयभीत हो उन्हें खबर दी कि वे रणजित् सिंहके पुत्रोंका कोई अनिष्ट न करेंगे, उनका पूर्व अधिकार लौटा देंगे और खालसा सैन्यके इच्छानुसार वे सब कार्य करेंगे। इस तरह हीरासिंहके साथ खालसा सैन्यका फिर भी मेल हो गया।

थोड़े ही समयके बाद सुचेतसिंहने लाहोर आ खालसा सैनाको अपने आनेकी सूचना दी। किन्तु उस समय खालसा और हीरासिंहमें मेल था। अत एव सुचेतसिंहकी आशा पर पानी पड़ गया। उस समय सुचेतसिंहके पास सिर्फ ४५ मनुष्य थे। हीरासिंह अपने चचा सुचेतसिंहका आगमन संवाद पाकर लगभग

चौदह पन्द्रह हजार सेना ले उन पर टूट पड़े और अन्तमें उनका प्राणान्त हो गया।

सुचेतसिंहकी मृत्युसंवाद पाकर गुलाबसिंह हीरासिंहके ऊपर बहुत रुष्ट हो गये थे। कुछ दिनके बाद उनने हीरासिंहको कहला भेजा कि ध्यानसिंह और सुचेतसिंहकी सम्पत्तिके वे ही (गुलाब) अधिकारी हैं। पत्र पाकर हीरासिंह बहुत क्रुद्ध हो गए और उनने भी वे समस्त सम्पत्ति और अपना स्थावर अस्थावर सम्पत्ति जो गुलाबके पास रक्खी हुई थी, समस्त उन्हींके हाथ सौंप देनी चाही। इस तरह दोनोंमें विवाद प्रारम्भ हुवा। हीरासिंहने लाहोरमें एक महासभा कर उपस्थित प्रधान प्रधान सर्दारोंको गुलाबके स्वार्थपरता की कहानी कह सुनाई और उनकी सम्मति ले कर जम्बुमें एक पत्र भेजा –

१, लाहोर-राजसरकारके अधीन जो समस्त सम्पत्ति गुलाबसिंह भोग करते रहे हैं, इसका चौथा भाग और अधिक मालगुजारी देनी होगी। २, उन्हें राजा सुचेत सिंह और राजा ध्यानसिंहकी जागीर और समस्त जायदाद लौटा देनी पड़ेगी और ३, उन्हें स्वयं लाहोर दरबारमें उपस्थित होना पड़ेगा।

शायद गुलाबसिंह इस पत्रको अग्राह्य करें, इसलिये २२ दल सिखसैन्य उनके विरुद्ध भेजे गये। किन्तु खालसा सैन्यने जाना कि गुलाबसिंहका भी सैन्यबल कम नहीं है। वे भी यदि चाहें तो समस्त पार्वतीय सर्दारोंको उत्तेजित कर सकते हैं, यहां तक कि काबुल, काश्मीर प्रभृति स्थानोंके शासनकर्त्ता ससैन्य आ गुलाबको सहायता अवश्य देंगे। गुलाबसिंहने पत्र पाकर उत्तर दिया कि हीरासिंहके कनिष्ठ भाई मियां जवाहिरसिंहके जंबु आने पर वे समस्त विषयोंको मीमांसा करेंगे। इस कार्यके लिये जवाहिरसिंहको जंबु आना पड़ा। चतुर गुलाबने उनके साथ परामर्श कर एक तरहकी निष्पत्ति कर ली और सपुत्र लाहोर आ पहुंचे। हीरासिंहने ज्येष्ठतातका स्वागत किया। इस समय गुलाबके निकट दारुण संवाद पहुंचा कि गुजरातमें उनके जितने सैन्य थे, वे सबके सब पेशोरासिंहसे मारे गये और उनका राजभण्डार लूट लिया गया है। ऐसी दुर्घटना होनेका कारण भी था। गुलाब और हीरासिंहमें जब विवाद चला था, उस समय जंबुराज गुलाबने पेशोरासिंहको सैन्यसंग्रह करनेको कहा था। उनके कथनानुसार पेशोराने गुलाबको सहायताके लिये लगभग दो हजार सैन्य एकत्र किये। किन्तु हीरासिंहके साथ मेल हो जाने पर गुलाबने सेनाओंको कुछ भी तनखाह न दे कर सबको भगा दिया था। उन्होंने आ कर पेशोरासिंहसे अपना वेतन मांगा। पेशोराने सेनाओंका प्राप्य चुका देनेके लिये गुलाबको कई बार पत्र लिखा था, अन्तमें गुलाबने उन्हें इस तरह उत्तर दिया था—"दुष्ट सेनाओंका अस्त्र शस्त्र छीनकर उन्हें मार भगावें।" पेशोरासिंहने उस पत्रको उन्हीं उत्तेजित सैनिकोंके सामने पढ़ा। गुलाबके आचरणसे अत्यन्त क्रुद्ध हो उन सेनाओंने गुजरातमें ऐसा भयङ्कर काण्ड कर डाला था। किंतु पेशोरासिंह उस समय वहां उपस्थित नहीं थे।

गुलाबसिंहने अपनेको निर्दोष बतलाते हुए, पेशोरासिंह पर दोष लगा कर लाहोरके दरबारमें उनके नाम पर अभियोग चलाया। परंतु इसका पेशोरासिंहको कोई पता न लगने पर उसने उनके विरुद्ध सेना न भेजी।

इसके थोड़े दिनके बाद ही महाराज दलीपके मामा जवाहिरसिंहने हीरासिंहके विरुद्ध खालसा सेनाओंको उत्तेजित किया। इस षड़यन्त्रमें हीरासिंह शत्रुओंसे मारे गए। इस समय गुलाबसिंह वरकजई जातिको खालसा सेनाके विरुद्ध उत्तेजित कर रहे थे। यह संवाद पाकर जवाहिरसिंहने उन पर शासन जमानेके लिये जंबुकी ओर सिख सेनाको भेजा। लालसिंह, श्यामसिंह अठरवाला, फतेसिंह मान और सुलतान मुहम्मद खाँ नामके प्रधान सर्दार तथा सेनापतिगणने सेना परिचालनका भार ग्रहण किया। गुलाबसिंहने सिख सेनाके आगमनको खबर पा हीरासिंहके भाई मीयां जवाहिरको सेनाके साथ यशरोता नामक स्थानको भेजा। सिखसेनाके यशरोता पहुंचनेके बाद सर्दार उत्तरसिंह प्र- खालसा सेनामें मिल गये और तब मीयां जवाहिरसिंह दोनों अनन्यान्य सेना भी छोड़ भागने लगी। फलतः मीयां जवाहिर वाध्य हो कर जंबुको भाग आये। तब खालसाकी सेना बहुतही उत्साहसे जंबु राजधानी पहुंचे। गुलाब-

सिंहने देखा कि अब विपद नजदीक आ गयी। दुर्दान्त सिखसैना सहजमें ही उन्हें छोड़ लौट नहीं जावेगा। उनने कहला भेजा कि यदि श्यामसिंह मेजेतिया, फतेसिंह मान, और सुलतान मुहम्मद आ उन्हें अभयदान दें तो वे लाहोर दरबारका आदेश पालन कर सकते हैं। परन्तु कोई सर्दार पहले पहल उस महाबली जंबु राजाके निकट जा अपने जीवनको सङ्कटमें डालनेके लिये सम्मत न हुआ। अनेक तर्क वितर्कके बाद रणजितसिंहके समयका वृद्ध सेनापति फतेसिंह मान गुलाबके पास जानेको राजी हुआ। जंबुपति गुलाबसिंहने उस वृद्धवीरका यथेष्ट सम्मान किया और कहा, कि हम तीन करोड़ रुपये कहां पावेंगे? हां! हीरासिंह और सुचेतसिंहकी जो सम्पत्ति है वह समस्त वे लाहोर दरबारमें अर्पण करनेको प्रस्तुत हैं। गुलाबसिंहने इस तरह फतेहसिंहको लालच देकर बिदा किया। किंतु वृद्ध सेनापति नगर छोड़ एक कोस भी जाने न पाया था कि कहींसे पाँच सौ डोगरा सैनाने आ कर अत्यन्त निष्ठुर भावसे उस वृद्ध सेनापति तथा उनके साथियोंको मार डाला। सिर्फ एक मनुष्य प्राण बचा कर भागा और उसने इस दारुण हत्याकाण्डकी खबर उन सबको कह सुनाई। वृद्धवीरकी अचानक मृत्युसे समस्त खालसा सैनाने धूर्त गुलाबको ही इस हत्याकांडका नायक जान प्रबलवेगसे जंबु नगर पर आक्रमण किया।

चतुर गुलाबने फतेहसिंहकी मृत्यु होने पर बहुतही शोक प्रगट किया और अपनेको निर्दोष साबित करनेके लिए बहुतसे मनुष्योंको कैद किया। अन्तमें जब देखा कि अब रक्षाका कोई उपाय नहीं है तो उन्होंने [illegible] प्रण की कि वे मजाके लिए
य, रास्ते में महाराष्ट्रसैन्य
गुलामकादरके नाक, कान, हा[illegible] उनके पासमें है वह
दिल्ली भेज दिये। थोड़े सम[illegible] हैं। यदि इच्छा हो तो
हो गया। आगरा जिलाके [illegible] धन सम्पत्ति बांट कर ले
[illegible] वनमें किसी तरहका अनिष्ट
में गुलामकी कब्र है।
लाहोर दरबारको नहीं जाते हैं।
गुलाम कुतबुद्दीन श[illegible]
[illegible] न्य उनकी रक्षा करें तो वे अपनी
कवि। यह शार[illegible]
[illegible] कर सकते हैं। यह कह कर उनने
इन्होंने 'मुसोव[illegible]
[illegible] उसे अधिक द्रव्य खालसा सेनाओंमें बांटने
ई०के २८

की आज्ञा दी। गुलाबके ऐसे मीठे वचन और अर्थ मोहिनी शक्तिसे अधिकांश खालसा सैनी उनकी जीवन रक्षा करनेके लिये कटिबद्ध हुए। तब चतुर गुलाब बन्दीरूपसे लाहोर आये और दरबारमें उपस्थित हो अपनी जागीरके सिवा समस्त अधिकृत प्रदेश और दण्ड स्वरूप ६८००००० रुपये देना स्वीकार किया। यहां थोड़े दिन ठहर कर विपदकी आशंकासे स्वराज्यको लौट गये

थोड़े दिनके बाद दुर्दान्त खालसा सैन्यने मंत्री जवाहिरसिंहको मारडाला। तब प्रधान प्रधान सर्दारोंने गुलाबसिंहको लाहोर आने और मन्त्रीका पद ग्रहण करनेका अनुरोध किया। किन्तु धूर्त गुलाबसिंह स्वाधीनताप्रिय सिख सैन्यों पर शासन करनेमें सहमत हुए।

१८४५ ई०में पहले पहल सिखयुद्धका आरम्भ हुआ। सिखयुद्ध देखो। दुर्द्धर्ष वृटिश सैन्यको धीरे धीरे शतद्रु नदी पार होते देख, समस्त प्रधान सर्दार विपन्न और चिन्तित हुए। इस समय सिखसैन्यका प्रधान सेनापतित्व ग्रहण करनेवाला पञ्जाबमें कोई नहीं था। महारानी दलीपसिंहकी माताने सर्दारोंकी सलाह लेकर गुलाबसिंहको बुलाया। १८४६ ई०की २५ वीं जनवरीको जम्बुराज गुलाबसिंह लाहोरके दरबारमें आ मन्त्री तथा प्रधान सेनापतिके पद पर नियुक्त हुए। उस समय शतद्रुनदीके तीर पर वृटिश और सिखसैन्यमें लड़ाई चल रही थी; किन्तु गुलाबसिंहने पंजाबके उस दारुण विपत्कालमें सर्वोच्च पद पर रह कर भी किसी तरहका साहाय्य न किया। वरन् युद्धकालमें जो समस्त अंगरेजी सैन्यबन्दी हुए थे, गुलाब उन्हें लाहोरमें डाक्टर साहब हनिगबर्जेके घरमें रख यथेष्ट अभ्यर्थना करने लगे थे। शीघ्र ही गुलाबने सुना कि अलिवाल क्षेत्रमें सिखसैन्य पराजित हुए हैं। सेनाओंको उत्साह देना तो दूर रहे, उन्हें निरुत्साह करनेके लिये बहुत गालियां दीं। दुष्ट सर्दारोंके षड़यन्त्र, स्वार्थपरता और अन्याय आचरणसे अजेय सिखसैन्य वृटिशके हाथसे हारने लगी। सोबराउनमें विजय लाभ कर स्वयं बड़े लाट हार्डिञ्ज लाहोरकी ओर अग्रसर हुए। इस बार ससैन्य बड़े लाटका आगमन संवाद पाकर गुलाबसिंह चिन्तित हो गये। जिससे गवर्नर जन-

रल लाहोर दरबारमें उपस्थित न हो सकें, उसी लिये वे कसूर नामक स्थानमें बड़े लाटसे आ मिले, किन्तु बड़े लाटने उनके कथन पर कुछ भी ध्यान न दिया। तब गुलाब सिंहने अभिमानसे कहा था—"यदि मैं युद्ध करता, तो दूसरे ही प्रकारसे लड़ाई समाप्त हो जाती। वैसा होनेसे अपने ही फंदेमें अपनेको बंधा न रखता। यदि मैं लड़ाईकी इच्छा करता तो दिल्ली और फिरोजपुरमें अस्सी हजार सैन्य जमा कर सकता।" वीरवर हार्डिञ्जने भी कहा था, "पंजाबकी राजधानीमें अंगरेजोंके रक्तपातका बदला लिया जायेगा।" गुलाबसिंह हताश हो लाहोर लौट आये। गुलाब कोई उपाय न देख बालक दलीपसिंहको ले ललियाना नामक स्थानमें लार्ड हार्डञ्जको छावनीमें पहुंचे। बड़े लाटने दलीपको अत्यन्त आदरसे ग्रहण किया और सर्दारोंको सम्बोधन कर कहा, "दलीप सिंह पंजाबके सिंहासन पर प्रतिष्ठित होगा तथा युद्धका खर्च डेढ़ करोड़ रुपये देना पड़ेगा। किन्तु विपाशा और शतद्रुके मध्यका प्रदेश वृटिश गवर्नमेण्टके अधीन रहेगा।"

उसके बाद लार्ड हार्डिञ्जने लाहोर आ दलीपको सिंहासन पर बैठाया। दरबारमें बड़े लाटने कोहिनूर देखना चाहा तब गुलाबसिंहने अपनेसे ही कोहिनूर ला अंगरेज राजपुरुषोंको दिखाया।

८ मार्च १८४६ ई०में बड़े लाटकी छावनीमें एक बड़ा दरबार लगा। उस दरबारमें सिख पक्षके महाराज दलीपसिंह और उनके समस्त प्रधान सर्दार उपस्थित थे। यहां वृटिश गवर्नमेण्ट और लाहोर दरबारमें सन्धि पत्र स्वीकार किया गया बड़े लाटने पहले ही से गुलाब सिंहके विषयमें कुछ विचार करनेका निश्चय कर लिया था। अब उन्होंने एक करोड़ रुपये ले गुलाबसिंहको काश्मीरके साथ विपाशा और सिन्धु नदीके मध्यवर्त्ती पार्वतीय राज्य बेच देनेका प्रस्ताव किया। गुलाब भी इस प्रस्तावमें सहमत हुए। वे उसी दिन एक स्वाधीन राजाके जैसा गिने गये। १५वीं मार्चमें अंगरेजोंने गुलाबको 'महाराज' की उपाधि दी। इस दिन स्थिर हुआ कि "सिन्धु नदीके पूर्व इरावती नदी पश्चिममें चम्पाके साथ जो विस्तीर्ण पार्वतीय भूभाग है, वृटिश गवर्नमेण्टको ७५ लाख रुपये देकर महाराज गुलाबसिंह उस विस्तीर्ण भूभागके स्वाधीन राजा हुए। वृटिश गवर्नमेंट तथा लाहोर दरबारमें इनका कोई संस्पर्श न रहा। गुलाबसिंह तथा उनके वंशधर स्वाधीन राजा हो कर उक्त राज्यका भोग दखल करते रहेंगे"

जो कुछ हो गुलाबसिंह इतने दिनों पर पूर्ण मनोरथ पाकर काश्मीरकी ओर रवाना हुए। उस समय लाहोर दरबारके अधीन शेख इमामुद्दीन काश्मीरके शासनकर्त्ता थे। वे सहजमें काश्मीरराज्य छोड़ने राजी न हुए। वृटिश सेनापति लोरेन्सने ब्रिगेडियर हुईलरको ससैन्य काश्मीर भेजा। वृटिश सेनाने इमामुद्दीनको वहांसे भगा दिया। बहुत समारोहके साथ महाराज गुलाबसिंह स्वाधीन राजाके सदृश काश्मीरके सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। सामान्य ३) रु० मासिक तनखाह पानेवाले सैनिकसे आज गुलाबसिंह काश्मीरके स्वाधीन राजा हो गये, यह कम आश्चर्यको बात नहीं है। इस महोच्च पद पर शोभायमान होते हुए उन्होंने जीवनके शेषकाल सुखस्वच्छन्द और शान्तभावसे व्यतीत किया। २री अगस्त १८५७ ई०में गुलाब अपने पुत्र रणवीर सिंहको काश्मीर राज्य प्रदान कर आप परलोकको सिधारे।

गुलाबसिंहभङ्गी—पञ्जाबके एक विख्यात भङ्गी सर्दार। इन्होंने महाराज रणजित्सिंहके विरुद्ध कई बार लड़ाई की थी। १८०० ई०में बालक गुरुदत्तसिंहको अपने स्थानपर रख आप परलोकको चल बसे। उनकी मृत्यु के संवादसे उत्साहित हो महाराज रणजित्ने भङ्गी सर्दारकी विधवा महिषी रानी सुखासे अमृतसरका लोहगड़ दुर्ग छीन लिया। विधवा तथा सनोपातगन्के साथ ले जंगल जा कर आत्मर किया। गुलाबसिंहने सिखें।

गुलाबसिंह मेजेतिया—पा हीरासिंहके भाई सीया रणजित्सिंहके पूर्व पुरुषगरोता नामक स्थानको भेजा। सिखधर्म्म ग्रहण किया था। के बाद सर्दार उत्तरसिंस्वप्र

गुलाबास (फा०) गुल अब्बास या अब्बे मीयां जवाहिरएिन दोनों

गुलाब-बाड़ी (हिं० स्त्री०) एक त सतछब में अभी उन्हों हर एक जगह शोभाके लिये गुलाबे। तब खाल्हका जाती हैं। यह उत्सव प्रायः चैत्र मासमें चे। गुलाब-

है। इसमें सभी मनुष्य गुलाबी रंगके कपड़े पहनते हैं।

गुलाबा (फा० पु०) एक तरहका पात्र।

गुलाबी (फा० वि०) १ गुलाबके रंगका। २ गुलाब सम्बन्धी। ३ गुलाब जलसे सुगन्धित किया हुवा। ४ थोड़ा हलका। स्त्री०) ५ म दरा पीनेका पात्र। ६ एक तरहकी मिठाई जो गुलाबकी पखड़ियोंसे बनाई जाती है। ७ एक तरहकी मैना। यह मध्य एसिया और युरोपमें पाई जाती है, यह समूहके समूह एक साथ रहती है। ग्रीष्म कालमें यह पर्वतों पर चली जाती है। यह चार पांच अण्डे एक समय देती है।

गुलाम (अ० पु०) १ खरीदा हुआ भृत्य। २ साधारण सेवक। ३ गंजीफेका एक रंग। ४ ताशके पत्तोंमेंसे एक। यह दहलेसे बड़ा और बेगमसे छोटा होता है।

गुलामअली—एक मुसलमान ऐतिहासिक। इन्होंने "शाह आलमनामा" नामका दिल्लीश्वर शाहआलम् और उसके राजत्व कालका इतिहास बनाया है।

गुलामकादर खाँ—एक रोहिला सर्दार। ये जाबिता खांके पुत्र और रोहिला सर्दार नाजिब उद्दौलाके पौत्र थे। यह सम्राट शाह आलमके दरबारमें रहते थे। अन्तमें विश्वासघातकतासे इसने रोहिलाओंको सम्राटकी आखें निकाल लेनेका आदेश किया था। १७८८ ई०के १० वीं अगस्तको वह जघन्य आदेश प्रतिपालन किया गया। दिल्लीश्वरके प्रति ऐसा अत्याचार करनेके बाद गुलामकादरने मुहम्मद शाहके पौत्र और अहम्मद शाहके पुत्र 'वेदर बकत' को दिल्लीके तख्त पर बैठाया।

बाद एक दिन वे अपने राज्य घोषगड़की ओर जा रहे थे, रास्ते में महाराष्ट्रसैन्य उन पर टूट पड़े। उन्होंने गुलामकादरके नाक, कान, हाथ, पांव खण्ड खण्ड कर दिल्ली भेज दिये। थोड़े समयके बाद गुलामका देहान्त हो गया। आगरा जिलाके अन्तगर्त आडल नामका स्थान में गुलामकी कब्र है।

गुलाम कुतबुद्दीन शाह—इलाहाबादवासी एक प्रसिद्ध कवि। यह शाह मुहम्मद फकीरके पुत्र थे। कवितामें इन्होंने 'मुसीवत्' नामसे आत्मपरिचय दिया है। १७२५ ई०के २८ वीं अगस्तको ये पैदा हुए थे और मक्का जाकर १७७३ ई०में मरे। इनके बनाये हुए "नान्कलेगा" और 'नानहलुयी" ग्रन्थमें प्रत्युत्तर रूपसे लिखा गया है।

गुलाम-गर्दिश (फा० स्त्री०) १ एक तरहकी छोटी दीवार जो परदेका काम देती है। यह इस तरह बनी रहती है कि स्त्रियां आँगनमें घूम फिर सकती है और बाहरके मनुष्यकी दृष्टि उनपर नहीं पड़ सकती है। २ नौकरोंके रहनेके लिये महलके चारो ओरका बरामद।

गुलाम नबी—युक्तप्रान्तके हरदोई जिलेमें बिलग्रामके रहनेवाले एक हिन्दी कवि। वह मुसलमान थे। उपनाम रसलीन रहा। सिवा अरबी और फारसीमें विद्वान् होनेके सैयद गुलाम नबी हिन्दी उर्दू भी खूब जानते थे। उन्होंने (१६३७ ई०) अङ्गदर्पण नख सिख और (१७४१ ई०) रसप्रबोध नामक हिन्दी भाषाका अलङ्कार ग्रन्थ लिखा।

गुलाम महम्मद—टीपू सुलतानके नाती। लगभग १८०१ ई०में ये अङ्गरेजके हाथसे वन्दी हुए थे। इसके बाद १८७१ ई०में इन्हें ब्रुटिश गवर्मेण्टसे नाइट कमाण्डर ओफ दी ष्टार ऑफ इण्डिया (K. C. S. I)की उपाधि मिली थी। ११वीं अगस्त १८७१ ई०को ७८ वर्षकी अवस्थामें इनका देहान्त हुआ।

गुलाम हुसैन खाँ—१ एक मुसलमान ऐतिहासिक और विख्यात पण्डित। इन्होंने १७८० ई०में जोज उदनी साहबके अनुरोधसे "रियज उस सलातीन" नामक बङ्ग देशका इतिहास पारसी भाषामें रचना की थी। इनकी बुद्धिमता देख मुग्ध हो नवाब इब्राहिम खाँने इन्हें निजामत अदालतके एक सभ्यपद पर नियुक्त किया था।

२ नवाब सैयद गुलामहुसैन नामसे प्रसिद्ध। इनका दूसरा नाम तिवा तिवाई था। ये हिदायत अली खाँ बहादुर आसदजङ्गके पुत्र थे। पहिले ये मुर्शिदाबादके नवाबके समय अमीर रूपसे गण्य रहे, इसके बाद इष्ट इण्डिया कम्पनीके समयमें भी बड़े लाटसे सम्मानित हुए। १७८० ई०में इन्होंने "सियार उल मुताखिरीन्" नामक पारसी भाषामें मुसलमान नवाबोंका इतिहास प्रणयन किया था। इस ग्रन्थमें उस समयके बङ्गकी अवस्था अति सुन्दर रूपसे वर्णित हुई है। बङ्गके ऐतिहासिक मात्र ही इस ग्रन्थका आदर किया करते हैं, इसमें अङ्गरेज

राजाओंकी भी यथेष्ट प्रशंसा की गई है। फरासीसी पंडित रेनिगेड वरफे मस्ताफा, व्रग और वाल्फोर साहब ने इस ग्रन्थका अङ्गरेजी अनुवाद प्रकाश किया है। उक्त पारसी ग्रन्थकी सहायतासे गुलाम अली साहब नामक एक मोलवीने १८५६ ई०में हिन्दुस्थानीमें "खुलासत्-ई-तवारिख-ई सियर उल मुताखिरीम" नामका एक इतिहास प्रणयन किया है।

उस इतिहासके अलावे गुलामहुसेन "वशारत उल् इमानत" नामका एक काव्य भी लिख गये हैं।

गुलाम-माल (अ० पु०) कंबल, लोई प्रभृति।

गुलामराम—हिन्दी भाषाके एक कवि। कहते हैं कि उनकी कविता अच्छी होती थी।

गुलामी (अ० स्त्री०) १ दासत्व, गुलामका भाव। २ सेवा, शुश्रूषा। ३ पराधीनता, परतन्त्रता।

गुलामो—एक हिन्दी कवि। उनकी कविता अच्छी होती थी।

गुलाल (सं० पु०) भूतृण, कोई घास।

गुलाल (फा० पु०) होलीके दिनोंमें एक दूसरेके मुख पर लगानेका लाल चूर्ण। यह चूर्ण जलमें भी मिलाकर बाँस या टीनकी बनी पिचकारीसे एक दूसरे पर छिटकते हैं।

गुलाल—हिन्दी भाषाके एक कवि। १८१८ ई०की उनका जन्म हुआ। गुलालका प्रधान ग्रन्थ शालिहोत्र है, जिसमें पशुओंकी चीरफाड़ बतलायी गयी है।

गुलालसिंह—हिन्दी भाषाके एक कवि। १७२३ ई०को उनका जन्म हुआ था।

गुलाला (फा०) गुल लाला देखो।

गुलिका (सं० स्त्री०) गुल: गोलाकारोऽस्त्यस्या गुल ठन्-टाप्। १ गुटिका, गोली। २ वसन्त रोग। ३ पक्व कुष्माण्डखण्डविशेष, पके कुम्हड़े का खण्ड। इसकी प्रस्तुत-प्रणाली इस तरह है—पुरातन शुष्क कुष्माण्डकी गोलाकार खण्ड करके घृत और गुड़में पाक करते हैं। थोड़े समयके बाद उसमें जीरा और मिर्च डाल देते हैं। भली भांतिसे सिद्ध होने पर वह नीचे उतार लिया जाता है, इसीको गुलिका कहते हैं।

गुलिकालवण (सं० क्ली०) गुटिकालवण, साँवर ममक।

गुलिङ्क स(ं०) कुलिङ्क देखो।

गुलिया (हिं० वि०) महुएके बीजसे निःसृत।

गुली (सं० स्त्री०) गुल: गुड़ाकारो ऽस्त्यस्याः गुल-अच गौरादित्वात् ङीष्। १ गुटिका, गोली, गुल्ली। २ वसन्त-रोग। वसन्तरोग देखो।

गुलुच्छ (सं० पु०) गुच्छ पृषोदरादिवत् साधुः। गुच्छस्तवक।

गुलुच्छकन्द (सं० पु०) गुच्छकन्द।

गुलुञ्छ (सं० पु०) गुड़ क्विप् गुलं गोलाकारं उञ्छति वध्नाति गुल-उञ्छति-अण्। १ गुच्छ, गुच्छा, बहुतसे फलोंका समूह। २ गुच्छकन्द।

गुलुञ्छक (सं० पु०) गुलं उञ्छति गुल-उञ्छ-ण्वुल्। स्तवक, गुच्छ।

गुलुफ (फा०) गुलुफ देखो।

गुलुह (सं०) गुड्ह देखो।

गुलू (हिं० पु०) १ एक तरहका पेड़ जो नेपालकी तराई, बुन्देलखण्ड और बङ्गालके छोटे छोटे पहाड़ों पर और दक्षिण भारत तथा बरमाके जंगलोंमें पाया जाता है। यह २५से ४० हाथ तक ऊंचा होता है, इसमें लम्बे लम्बे पत्ते होते हैं। जाड़ा ऋतुके आते ही इसके समस्त पत्ते नीचे गिर जाते हैं और माघ फाल्गुन मासमें इसमें पुष्प लगते हैं। इसका प्रत्येक अङ्ग औषधमें उपयोगी है। इसकी जड़ और बीजको गरीब मनुष्य खाते हैं जब यह वृक्ष पुरातन हो जाता तो चार पाँच हाथ लम्बे टुकड़े इसके तनेसे काटे जाते हैं। इसके मध्यमेंसे सुन्दर रेशा निकलता है जिससे रस्सी तथा कपड़े बनाये जाते हैं। इसके काष्ठसे भांति भांतिके खिलौने बनाये जाते। इसी वृक्षसे कतीरा नामका गोंद निकलता है। २ प्रायः एक हाथ लम्बी एक तरहकी मछली। ३ एक प्रकारको बटेर।

गुलूबंद (फा० पु०) १ एक विलक्षण चौड़ी कपड़ेकी पट्टी। यह सूत, उन या रेशमकी बनी होती है, जो सरदीसे बचनेके लिये कानों पर लपेटी जाती है। २ गलेमें पहननेका स्त्रियोंका एक आभूषण।

गुलेंदा (हिं० पु०) महुएका पका फल, कोलेंदा।

गुले (हिं० पु०) उत्तर भारतवर्षमें होनेवाला एक तरहका पेड़। इसके काष्ठ बहुत मजबूत तथा चमकीले

होते हैं। कोई कोई इसके बीजोंको माला बना कर पह-
नते हैं।

गुलेटन (हिं० पु०) मसाला रगड़नेका कुरंड प्रस्तरका
छोटा खण्ड।

गुलेड़गढ़—बम्बई प्रान्तके बीजापुर जिलेमें बादामी तालुक़
का नगर। यह अक्षा० १६° ३´ उ० और देशा० ७५°
४७´ पू०में बादामीसे ८ मील उत्तर पूर्व पड़ता है। लोक
संख्या प्रायः १६७८६ है। सूती और रेशमी कपड़ेका
यहां काम होता है। इसके पड़ोसमें पत्थरकी कीमती
खानें हैं। १८६७ ई०को मुनिसपालिटी हुई। १५८०
ई०को २य इब्राहीम आदिलके समय किला बना था।
वर्तमान नगर १७०६ ई०को एक सूखे ऋदकी जगह
निर्मित हुआ। १७५० ई०को रास्तिआलोंके एक अफस
रने उसे लूटा था। १७८७ ई०को टीपू सुलतानने उसे
अधिकृत किया। मराठोंके एक बार फिर लूटने पर कुछ
दिन तक नगर खाली पड़ा रहा। परन्तु देसाईने गुलेड़
गढ़ दोबारा आबाद किया था। नरसिंहने जब बलवा
किया, यह फिर लूटा और खाली हुआ। १८१८ ई०को
जनरल मुनरोने देसाई द्वारा अधिवासियोंका लौटनेका
प्रलोभन दिया था। १८२६ ई०को गुलेड़गढ़ अंगरेजोंके
हाथ लगा।

गुलेराना (अं० पु०) १ सुन्दर फूल। २ एक तरहका
पुष्प जिसका मध्यका भाग लाल और ऊपरका भाग
पीला होता है।

गुलेल (फा० स्त्री०) पक्षी मारनेका कमान या धनुष,
जिसमें मट्टीकी गोलियां चलाई जाती हैं।

गुलेलची (हिं० पु०) जो गुलेल चलानेमें निपुण हो।

गुलेला (फा० पु०) १ कमान या धनुषमें चलाए जानेकी
मिट्टीकी गोली जिससे चिड़िया प्रभृति मारी जाती हैं।
२ गुलेल।

गुलैंदा (हिं०) गुलेंदा देखो।

गुलोह (फा० स्त्री०) गुड़ूच।

गुलौठी—युक्तप्रदेशके बुलन्दशहर जिले और तहसीलका
नगर। यह अक्षा० २८° ३५´ उ० और देशा० ७७° ४८
पू० मेरठकी सड़क पर पड़ता है। आबादी कोई ७२०८
है। कहते हैं कि वह नगर मेवाती या गहलोत राज-
पूतोंका बसाया हुआ है। यहां प्रधानतः सैयद और बनिये
रहते हैं। कुछ दिन हुए मिहरबां अली नामक सैयदने
कई मकान, एक पुल, एक बड़ी मस्जिद, अरबी और
फारसीकी पाठशाला तथा काली नदी तक पक्की सड़क
बना गुलौठीकी बड़ी उन्नति की। १८५६ ई०की २०वीं
धाराके अनुसार शहरका इन्तजाम होता है। व्यापार-
की चलफिर रहनेसे लोग मजेमें हैं।

गुलौर (हिं० पु०) वह स्थान जहां रस पकानेका भट्ठा हो।

गुल्ला (हिं० पु०) लताकी तरह फैलनेवाला एक तरहका
ताड़ यह सुन्दरवनके पानीके किनारे, चटगांव, बरमा
आदि देशोंमें पाया जाता है। गोलफल नामके इसके
पुरातन फल बहुत बड़े बड़े होते हैं, ये इतने हलके
कि समुद्रमें बहुत दूर तक बहते बहते चले जाते हैं।
इसके पत्ते छप्पर बनानेके काममें आते हैं।

गुल्लाला—बामियानके निकटवर्त्ती एक प्राचीन नगर।
जङ्गीश खांने इस नगरको नष्ट कर दिया। यहां बहुतसे
गुहामन्दिर और पहाड़ काट कर [illegible] बना हुआ है।

गुल्लुलिया—भारतकी एक जाति। कोई इन्हें बेदिया
लोगोंकी एक शाखा बतलाते हैं। यह पशु पक्षियोंको
मार, नाना प्रकार औषधियां बेच, भीख मांग और बन्दर-
का नाच दिखला जीविका निर्वाह करते हैं। गयाके
गुल्लुलियोंमें कोई कोई कहता कि रुक्मिणी नामकी उन
में एक आदि रमणी रहीं। उन्होंने मोहबाब नामक एक
पुत्र प्रसव किया। मोहबाबको फिर सात लड़के हुए।
इन्हींमें एक गुल्लुलिया भी थे। उन्होंने तालके पेड़से कूद
अपने अपने बलकी परीक्षा ली। एक तो फांद करके
निकल गया, परन्तु दूसरा गिर पड़ा। मोहबाबाने यह
देख उनको कूद फांदसे विरत किया था। गुल्लुलिया-
को यह देख सुन करके आत्माभिमान हुआ कि उनके
भाई ताड़ी बेचते फिरते थे। वह आत्मीय स्वजनोंको छोड़
बाहर निकल पड़े उसी रोजसे इनके वंशधर नाना स्थानों
में घूमा फिरा करते, अपना कोई निर्दिष्ट वासस्थान नहीं
रखते।

गुलगुलिया लोग अपनेको हिन्दू कहते हैं। परन्तु
उनके देव देवी स्वतन्त्र हैं। पटनेके गुलगुलिया बाघता-
वर, राम ठाकुर, जगद् माई, बरेन, सेठी, गोरैया, बन्दी,

परमेश्वरी आदिकी पूजा करते हैं। हजारीबागमें पत्थरके एक टुकड़ेको पांच बुंदको सिन्दूर चढ़ा 'दामू' नामसे पूजते हैं।

इनमें बाल्यविवाह प्रचलित है। स्त्रियां बड़ी सच्चरित्रा होती हैं। व्यभिचार नहीं जैसा है। पुरुष अवस्थानुसार बहुविवाह कर सकते हैं। पतिके मरने पर विधवा अपने देवरसे विवाह कर लेती है। पञ्चायतसे पूछ लेने पर दूसरे आदमीके साथ शादी करनेमें भी कोई अड़चन नहीं।

यह मृत देहको भूमिमें गाड़ देते हैं। गोमांस छूगाह समझा जाता है। इनकी स्त्रियां दांतका कीड़ा निकालतीं और बात आदि रोगोंको अच्छा कर सकती हैं।

गुल्गुलु (सं० पु० गुग्गुल।

गुल्फ (सं० पु०) गल-फक् अकारस्य उकारः। १ पादग्रन्थि। एड़ीके ऊपरकी गाँठ।

गुल्फजाह (सं० क्लो०) गुल्फस्य मूलं गुल्फ जाहच्। गुल्फमूल।

गुल्म (सं० पु०) गुडति वेष्टयति, गुडकरणे बाहुलकात् मकत् स्य लकारः। १ प्रधान पुरुष वा अधिनायक द्वारा परिचालित सैन्यकी एक संख्या, कोई फौज।

एक रथ, एक हाथी, पांच पदातिक (पैदल) और तीन घोड़ोंके समुदायको पत्ति कहते हैं। तीन पत्तिका सेनामुख और तीन सेनामुखका एक गुल्म होता है। अर्थात् ९ रथ, ९ हाथी, २७ घोड़ा और ४५ पैदलकी फौजका नाम गुल्म है। (भारत १।२।१९—२०)

२ घट्ट देश, थाना, चौकी, घाँटी। ३ चौकी या घाटीकी फौज। ४ रक्षासमूह, सिपाहियोंका बेड़ा। (मनु ७।११४) ५ प्लीहा, लरक। एक मूलमें गुच्छाकार उत्पन्न तृण विशेष, जो घास एक ही जड़में गुच्छे जैसी लगती हो। (मनु १।४८) काण्डशून्य वृक्ष जाति, पेड़ जिसमें तना न रहे। ७ आड़ी। ८ ग्रन्थिपर्णवृक्ष, गंठवन। ९ उदरज रोगविशेष, पेटकी एक बीमारी। (A chroionic enlargement of the spleen or glandular enlargement of the abdomen.)

भावप्रकाशके मतमें अनियमित आहार और विहारसे वायु, पित्त तथा कफ अत्यन्त दूषित हो गुल्मरोग उत्पादन करते हैं। इसका कोई ठिकाना नहीं, पेटमें किस जगह गांठ पड़ेगी। हृदयके नोचेसे वस्ति पर्यन्त कहीं भी गुल्म उठ सकता है। यह गोली जैसा निकलता है।

यह गुल्म रोग प्रधानतः पाँच प्रकारका होता है—वातज, पित्तज, कफज, सान्निपातिक और गुल्मविशेष। प्रथमोक्त चार प्रकारका गुल्म तो स्त्री पुरुष दोनोंको हो जाता है, किन्तु शेषोक्त स्त्रियोंको आर्तव रक्त दूषित होनेसे निकलता है। यह पुरुषोंको इतना कम सम्भव है। किसीके मतमें पार्श्वद्वय, हृदय, नाभि और वस्ति पाँचो गुल्मस्थान जैसे निर्दिष्ट हैं।

हृदय एवं वस्तिके मध्यस्थलमें सचल वा निश्चल गोलाकार गुटिका निकलने और उसके घटते बढ़ते रहनेका नाम गुल्मरोग है।

गुल्म उठनेसे पहले अधिक उद्गार, मलका कठिनता, आहारमें अनिच्छा, उदरमें वेदनाके साथ गुड़गुड़ाहट, बलका लाघव, उदराध्मान, भुक्त द्रव्यका अपाक और शूल हुआ करता है।

सब तरहके गुल्ममें अरुचि, मल एवं मूत्रका कष्टके साथ निर्गम, पेटमें गुड़गुड़ाहट और अधिक उद्गार होता है।

रूक्ष अन्न पानीय, विषम भोजन, अतिशय भोजन, बलवान्के साथ युद्ध प्रभृति विरुद्ध चेष्टा, मलमूत्रादिके वेगधारण, शोकप्रयुक्त मनःक्षोभ, विरेचन आदि द्वारा अत्यन्त मल क्षय और उपवाससे वायु कुपित हो वातज गुल्मरोग उत्पन्न करता है। यह कभी कभी घटता बढ़ता, गोल या लम्बा पड़ता और पार्श्व आदि वा नाभिदेश पहुंचता है। उसमें जब तब वेदना भी होती है। मल और वायु तथा अधोवायुको वह रोकता और गले या मुंहको सुखाता है। शरीर काला और सुर्ख पड़ जाता, शीतज्वर आता और हृदय, कुक्षि, पार्श्व, अङ्ग तथा शिरोदेशमें वेदनाका प्राबल्य दिखलाता है। भुक्तान्न जीर्ण होनेसे वह बढ़ता और भोजन करनेसे कितनाही अच्छा रहता है। रूक्ष, कषाय, तिक्त तथा कटुरसयुक्त द्रव्य सेवनसे उसकी वृद्धि होती है।

कटु, अम्लरसयुक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, विदाही तथा रूक्ष द्रव्य सेवन, क्रोध, अतिरिक्त मद्यपान, रौद्र एवं अग्निके उत्ताप, लगुड़ आदिके अभिघात, आम अर्थात् विदग्ध अजीर्ण और किसी भी दूसरे कारणसे रक्त विगड़ने पर पित्तज गुल्म उठता है। पित्तजन्य गुल्मरोगमें ज्वर, पिपासा, शरीरकी अवसन्नता एवं रक्तवर्णता, घम उद्गम और भुक्त द्रव्यकी परिपाक अवस्थामें अतिशय वेदना होती है। यह व्रण जैसा दाहयुक्त और स्पर्शासह भी रहता है।

शीतल, गुरु एवं स्निग्ध द्रव्य सेवन, तृप्ति पूर्वक परिपूर्ण भोजन और दिवा निद्रासे श्लैष्मिक गुल्म निकलता है। वातज, पित्तज तथा श्लैष्मिक गुल्मके जो कारण कहे गये हैं, उनके समुदायसे सान्निपातिक गुल्मकी उत्पत्ति है।

श्लैष्मिक गुल्ममें रोगीको समझ पड़ता, मानो उसके सारे शरीरमें कोई तर कपड़ा लिपटा है। शीतज्वर, देहका भारीपन तथा अवसन्नता, वमन उद्वेग, खांसी, अरुचि, अग्निमान्द्य और थोड़ा दर्द,प्रभृति अपरापर समस्त श्लेष्मज लक्षण देख पड़ते हैं।

सान्निपातिक गुल्म पत्थरके टुकड़े जैसा कड़ा और उठा हुआ रहता है। उसमें बहुत पीड़ा और जलन होती है। शीघ्र विदाह, मनकी व्याकुलता, शरीरका दुबलापन, अग्निवैषम्य और कमजोरी आ जाती है। वह असाध्य है।

नवप्रसूता (प्रसवके बाद जिसकी अग्नि, बल, वर्ण, मांस आदि स्वाभाविक नहीं होता), आमगर्भ प्रसवा (नौ महीने पूरे होनेसे पहले ही जो प्रसव करती है) और ऋतुमती स्त्री यदि किसी प्रकार अहितजनक द्रव्य भोजन कर लेती उसका वायु रक्तद्वारा गर्भाशयमें गुटिकाकार गुल्मरोग उत्पन्न करता है। उसमें जलन और दर्द होता है। लक्षण लगभग पित्तके गुल्म जैसा है। सिवा इसके रक्तज गुल्ममें गर्भके समस्त लक्षण अर्थात् ऋतु न होना, मुंह पीला पड़ना, स्तनके अग्र भागका कालापन और दोहद प्रभृति देख पड़ते हैं। परन्तु गर्भजैसे हस्तादि अङ्ग प्रत्यङ्ग सञ्चालनपूर्वक निःशूल स्पन्दित होता है, रक्तज गुल्म वैसा नहीं करता। यह गुल्म वा रक्त पित्त बहुत दिन बाद वेदनाके साथ गर्भाशयमें [illegible] होता है। दश मास बीत जाने पर वैद्योंको [illegible] चिकित्सा छोड़ देना चाहिये।

जो गुल्म पत्थरके टुकड़े जैसा कड़ा, ऊंचा, वेदना तथा दाहयुक्त और मलकी व्याकुलता, शरीरको [illegible], अग्निवैषम्य एवं बल ह्रास करनेवाला हो, असाध्य समझा जाता है। वह गुल्म भी असाध्य है, जो कमाशयसे सञ्चित हो सारे पेटमें व्याप्त होता, धात्वन्तरके साथ मिल करके शिराजालमें लिपटता एवं कछुएकी तरह उठता और रोगीको दुर्बलता, अरुचि, हृल्लास, खांसी, कै, ग्लानि, बुखार, प्यास, तन्द्रा तथा प्रतिश्याय उत्पन्न करता है।

गुल्मरोगीको बुखार, दमा, कै और दस्त तथा दिल, तोंद, हाथ एवं पांवमें शोथ होनेसे फिर जीनेकी आशा नहीं रहती। जिस गुल्मरोगीको दमा, शूल, पसलीका विक्षेप और दौर्बल्य उपस्थित होता तथा ग्रन्थि जैसा गुल्म एकाएक विलुप्त हो जाता उसके भी जीनेकी उम्मेद कम होती है।

वातजन्य गुल्म रोगमें जुलाबके लिये रेंड़ीका तेल या दूधके साथ हरें पीना और चिकना भपारा लेना चाहिए। मज्जीखार २ माशा, कुट २ माशा और केवड़ेकी बोका चार ४ मासा रेंड़ीके तेलमें मिला करके पीनेसे वातज गुल्म विनष्ट होता है। वात गुल्मके रोगीको तीतर, मोर, मुर्गा, बगला और वर्त्तक पक्षीके मांसका रसा; घी, शालि चावलका भात और शराब देते हैं।

पित्तज गुल्ममें विरेचनके लिये त्रिफलाके काढ़ेमें त्रिवृत् चूर्ण अथवा शक्कर और शहदके साथ कमला गुड़ीका चूर्ण सेवन करना चाहिये। दाख या गुड़के साथ हरें खानेसे पित्तज गुल्म दब जाता है। वातज गुल्मको जो औषध बतलाया गयी हैं, श्लैष्मिक गुल्ममें भी प्रयोज्य हैं। कफघ्न क्रियासे भी उसका उपशम होता है।

हींग, पीपल, धनिया, जीरा, वच, चीत, आकनादि, शटी, अम्लवेतस, सामुद्रलवण, विटलवण, सेंधव, त्रिकटु, यवक्षार, सर्जिक्षार, अनार, हर, पुष्करमूल, खेखड़, हवुषा और काला जीरा सबका बराबर [illegible]

चूर्ण से करके अदरकके रसमें सात तथा बिजोरे नीबूके अर्कमें सात दिन भावना दे सवेरे गर्म पानीके साथ खाने पर गुल्मरोग मिट जाता है।

वातज प्रभृति तीन गुल्मोंकी जो चिकित्सा बतलायी है, बुद्धिमान् चिकित्सकको विवेचनाके साथ उसीसे और त्रिदोषनाशक क्रिया द्वारा भी सान्निपातिक गुल्ममें काम लेना चाहिये।

सामुद्रलवण, सैन्धव, काचलवण, यवक्षार, सोवर्चल, सोहागेकी फुली और खर्जिका क्षार सबका चूर्ण समभागमें ले मनसासिजके क्षारसे तीन और आकन्दके क्षारसे भी तीन दिन भावना दे करके धूपमें सुखाते हैं। फिर आकन्दके पत्तेसे इसको लपेट करके एक वर्तनमें रख छोड़ा जाता है। वर्तनका मुंह अच्छी तरह बन्द करके आग पर उसको पकाते हैं। क्षार बन जाने पर इसे उतार लेना चाहिये। फिर त्रिफला, त्रिकटु, अजवायन, जीरा और चीत बराबर बराबर ले समस्त चूर्ण जितना पूर्वोक्त क्षार होता, एकत्र मिला पानीके साथ एक एक तोला सेवन करनेसे गुल्मका उपशम होता है।

गुल्मरोगके पक्षमें सूखा मांस, मूली, मछली, सूखी सब्जी, दाल, मीठा फल और आलू अनिष्टकारी है। आरोग्य कामना करनेवालेको उन सबका खाना सर्वथा ही छोड़ देना चाहिए।

सुश्रुत टीकाकारके मतमें वैदल निषिद्ध जैसा उल्लिखित होते भी उड़द और करथीको बुरा नहीं समझते।

रक्त गुल्मरोगमें प्रथमतः स्निग्ध स्वेद, उसके बाद विरेचन प्रदान करना चाहिये। शुल्फा, जंगली करौंदेकी छाल, देवदारु, ब्रह्मयष्टि और पीपल सब समभागमें पीस तिलके काढ़ेमें पीनेसे रक्तगुल्मनिवारण होता है। तिलके क्वाथमें गुड़, त्रिकटु, घृत तथा ब्राह्मणयष्टि डाल करके पीनेसे आर्तव रक्तजनत और रजोबन्ध भी अच्छा हो जाता है। आंवलेका रस मिर्चका चूर्ण मिला करके पान करनेसे रक्त गुल्म मिटता है। रक्त गुल्मके रोगीको कमलागुड़िका चूर्ण शक्कर और शहदके साथ खिलाना चाहिये। पलासका क्षार पानीके साथ घी पका करके पीनेसे रक्तगुल्ममें रक्तस्राव होता है। यवक्षार, त्रिकटु और घृत एकत्र पान करनेसे रक्त गुल्म नहीं रहता। (भावप्रकाश)

सुश्रुतके मतमें लहसुनका अर्क, पञ्चमूलीका रस, शराब, कांजी, दही और मूलीका रस सबके योगमें घृत पाक करना चाहिये। फिर इसमें त्रिकटु, दाड़िम्ब, आम्लातक, यामानी, चीत, सैन्धव, हिङ्गु, अम्लवेतस और कृष्णाजीरक कई द्रव्योंका कल्क पाक करते हैं। इसके सेवनसे अम्लरोग अच्छा हो जाता है।

गुल्मक (सं० पु०) रक्तकरवीर वृक्ष।

गुल्मकालानल रस (सं० पु०) गुल्मस्य कालानल इव नाशको रसः। गुल्मरोगकी औषध। पारा, लौह ताम्र, हरिताल, गन्धक, यवक्षार, प्रत्येकके दो दो तोले, मोथा, मिर्च, सोंठ, पीपल, गजपीपल, हरीतकी (हरड़), वच, कूड़, प्रत्येकके चूर्णका एक एक तोला, इन सबको अच्छी तरह मिलाकर पितपापड़ा, मोथा, सोंठ, अपामार्ग और परवल इनके रससे भावना देकर हरीतकी क्वाथके साथ चार रत्ती परिमाण प्रत्येक दिन सेवन करना चाहिये। इसी औषधका नाम गुल्मकालानलरस है। इसके सेवन करनेसे वातिक, पित्तज, श्लैष्मिक, द्वन्द्वज और त्रिदोषज गुल्मरोग नष्ट होते हैं। वातगुल्ममें यह बहुत उपकारी है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

गुल्मकेतु (सं० पु०) गुल्मः केतुरस्य, बहुव्री०। अम्लवेतस। एक तरहका वेंत, सरकण्डा।

गुल्मकेश (सं० पु०) गुल्मकानां गुल्मानामीशः, ६-तत्। गुल्मका अधीश्वर, वह जिसके अधीन गुल्म रहे।

गुल्मगवेधुका (सं० स्त्री०) १ गवेधुका। २ देवधाना, एक तरहकी घास (Coixbarbata)

गुल्मघ्न (सं० क्लो०) हिंगु, हींग। (Ferula asafœtida)

गुल्ममूल (सं० क्लो०) गुल्म इव मूलं यस्य, बहुव्री०। आर्द्रक, अदरक।

गुल्मवज्रिणीवटिका (सं० स्त्री०) रसेन्द्रसारसंग्रहोक्त एक तरहकी औषध। पारा, गन्धक, ताँबा, काँसा, सोहागा, हरिताल प्रत्येकके आठ तोलेको चूर्ण करके शरीरके अवस्थानुसार सेवन करना चाहिये। इसीका नाम गुल्मवज्रिणीवटिका है। इसके सेवन करनेसे रक्तगुल्म, प्लीह,

अष्ठीला, यकृत्, आनाह, कामला, पाण्डु, ज्वर और शूल नाश होते हैं।

गुल्मवल्ली (सं० स्त्री०) गुल्मप्रधाना वल्ली। सोमलता।

गुल्मशार्दूलरस (सं० पु०) गुल्मस्य शार्दूल इव नाशको रसः। एक तरहकी औषध। पारा, गन्धक, लोह, गुग्गुल, पोप्पल, त्रिवृत् वाला, सोंठ, जीरा, धनियां और शठी प्रत्येकके आठतोले और जयपालके बारह तोले सभीं-को एकत्र करके घृतके साथ मर्दन कर ६ रत्ती परिमाण-की गोली बनाते हैं। इसीको गुल्मशार्दूलरस कहते हैं। अदरकके रस और उष्ण जलके साथ यदि उक्त औषध सेवन की जाय तो प्लीहा, यकृत्, गुल्म, कामला, उदरी, शोथ, वातिक, पैत्तिक, तथा श्लैष्मिक गुल्म नाश होते हैं। रक्तज गुल्मरोग भी इससे दूर हो जाता है। गहना-नन्दनाथ नामक किसी योगीने इस औषधका आवि-ष्कार किया था। (रसेन्द्रसार०)

गुल्मशूल (सं० पु०) गुल्मस्मूलकं शूलमत। शूलरोग-विशेष। शूल देखो।

गुल्मिक (सं० पु०) रक्तकरवीर, एक तरहका लालकनेर।

गुल्मिन् (सं० त्रि०) गुल्मोऽस्त्यस्याः गुल्म-इनि। गुल्मरोगयुक्त, जिसको गुल्मरोग हुआ हो।

गुल्मिनी (सं० स्त्री०) गुल्मोऽस्त्यस्याः गुल्म-इनि ततः ङीप्। विस्तृता लता, लम्बी लता। इसका नामा न्तर—वीरुत्, उलुप, विरुधा, अवरुत् है।

गुल्मी (सं० स्त्री०) गुल्मोऽस्त्यस्य गुल्म-अर्श आदित्वात् अच् ततो गौरादित्वात् ङीप्। १ आमलकी, आँवला। २ इलायची। ३ वस्त्रनिर्मित गृह, तम्बू, खेमा। ४ फलवृक्षविशेष, हरफरी। ५ गृहनखी वृक्ष। ६ कण्ट-कपालीवृक्ष, हिजल गरनाका पेड़।

गुल्मुहम्मद खाँ—दिल्लीके एक राजकवि। इनके बनाये हुए ग्रन्थोंमेंसे जहूर उल मुयाजिन नामक काव्य ग्रन्थ ही सर्वापेक्षा उत्कृष्ट है। कविताके प्रभावसे इन्हें "नातिक" की उपाधि मिली थी। १८४८ ई०को इनका देहान्त हुआ।

गुल्य (सं० वि०) गुड़ं तद्वत् रसं अर्हति गुड़-यत् डस्य लत्वं। मधुर, मीठा।

गुल्रिह—अयोध्याके उनाव जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २६° २४' उ० और देशा० ८०° १' पू०में अवस्थित है। प्रायः पाँच सौ वर्ष पहले गुलारसिंह ठाकुरसे यह नगर स्थापित किया गया था। यहां एक विद्यालय है। जिसमें गवर्मेण्टसे भी कुछ सहायता मिलती है।

गुल्लर (हिं० पु०) दैनिक आय रखनेका सन्दूक या थैली।

गुल्लर (हिं० पु०) गूलर देखो।

गुल्लर—रिचोड़में रहनेवाली एक जाति। इनमेंसे अड़वी गुल्लर और गड़ा गुल्लर ये ही दोनों विभाग स्वतन्त्र हैं। इसके सिवा कई एक विभाग और भी देखे जाते हैं। ये हैदराबाद और पूना जिलेके ग्रामसमूहमें तथा कुल-वर्गके निकटवर्ती सेलर ग्राममें रहते हैं। ये अपनेको 'गोल' या 'हनमगोल' कहते हैं।

अड़वी गुल्लर जातिके पुरुष ग्राम तथा वनके नाना स्थानोंमें जा कर देशीय कविराजोंके लिये फल फूल एवं औषधको लता लाया करते हैं, और उनकी स्त्रियां घर घर भिक्षा मांगती फिरती हैं। इनकी शारीरिक गठन-प्रणाली राजपूतानावासियोंके सदृश है, शरीरका वर्ण भी तदनुरूप है, किन्तु ये उनसे पतले तथा छोटे होते हैं। ये हिन्दी, कनाड़ी और तेलगु भाषा समझ तथा बोल सकते हैं। ये अपने वस्त्रको गेरू मट्टीसे रंगा कर पहनते हैं, और भेड़, छाग, खरगोश तथा गोमांसके भिन्न अन्यान्य जन्तुओंका मांस भक्षण करते हैं। वैद्य जातिकी नाईं ये भी कछुएका मांस खाते हैं। गड़ागुल्लर जातिके साथ ये अपने पुत्र वा कन्याका विवाह नहीं करते।

गड़ा गुल्लर जातिके मनुष्य कुत्ते तथा गदहे पालते और शिकारके लिये वन वन घूमते हैं। ये शृगाल, कछुए, शल्य या खरपुस्तका मांस खाते हैं। पुरुषगण चौर्य एवं दस्युवृत्तिमें पटु हैं।

गुल्ला (हिं० पु०) १ गुलेलमें फेंकनेको मट्टीकी बनी गोली। २ एक तरहकी मिठाई, रसगुल्ला।
(अ० पु०) ३ ऊंचा शब्द, शोर, हल्ला। ४ ईखका कटा हुआ छोटा टुकड़ा, गंडेरी, गोंड़ा। ५ पानी खींच-नेके लोटेकी रस्सीमें बंधी हुई छोटी लकड़ी। ६ नैनी-तालमें मिलनेवाला एक पहाड़ी पेड़। इसकी लकड़ी सुगंधित, हलकी और भूरे रंगकी होती है। ७ गोटा पट्टा बुननेवालोंका एक डोरा। इसके दोनों सिरों पर सर-

कांटेकी लकड़ी लगी रहती है। ८ डेढ़ बालिश्त लम्बी लोहेको छड़ जो रुई ओटनेकी चरखीमें लगी रहती है।

गुल्सानी—एक मुसलमान कवि। इनका यथार्थ नाम शेख सैयद उल्ला था। ये गुजरातराजमंत्री इस्लाम खांके वंशधर और शाहगुलके शिष्य थे। ये सर्वदा दरवेश रूपमें भ्रमण करते एवं 'गुल्सन कवि' से मशहूर थे। इन्होंने दिल्लीमें रहकर १००००० गजल रचना की थी। इनकी कवितायें गूढ़ार्थक होती थीं। ये अपने शिक्षा-गुरु शाह अब्दुल आहद सरहिन्दके साथ मक्का तीर्थस्थान गये थे। ११४१ हिजरीको दिल्ली नगरमें इनकी मृत्यु हुई।

गुल्लाला (फा० पु०) एक तरहका लाल पुष्प। इसके पौधे और पुष्प पोश्तके पौधे और पुष्पके जैसे होते हैं।

गुल्ली (हिं० स्त्री०) १ बीज। फलकी, गुठली। २ महुवेकी गुठली। ३ गोलाकार लंबोतरा छोटा टुकड़ा।

४ छोटे छोटे लड़कोंके खेल खेलनेका काठका टुकड़ा। यह चारसे छः अंगुल लम्बा होता है। इसके दोनों छोर जौकी तरह नुकीले होते हैं और गोल तथा मोटा होता है, अंटी। ५ पत्तेका मधुयुक्त स्थान। ६ केतकी, केवड़ेका फूल। ७ दाने निकाले हुए मकई की बाल। ८ एक प्रकारकी मैना, गंगा मैना। ९ ईखका काटा हुआ टुकड़ा, गांड़ा। १० छोटा गोल पासा।

गुवाक (सं० पु०) गुवति मलवत् त्यागमुत्सृजति गु आक। १ सुपारीका वृक्ष। इसका पर्याय—घोंटा, पूग, क्रमुक, खपुर, गूवाक, पूगवृक्ष, दीर्घपादप, वल्कतरु, दृढ़-वल्क, चिक्कण, पूगी, सुरञ्जन, गोपदल, राजताल और छोटे फल है। इसके फलका नाम क्रमुकफल पूग, चिक्कणी, उद्वेग, पूगफल और पूगीफलन है। इसके शेष भागका गुण - स्वादु, तिक्त, कषाय, बल, प्राण, शुक्रवृद्धि, भेद और मदकारक एवं मूत्ररोग नाशक है। इसके निर्यासका गुण—शीतल, मोहकद गुरु, उष्ण, सार, कुछ कुछ अम्लरस, वातघ्न और पित्तवृद्धिकर है। इसके फलका गुण—गुरु, शीतवीर्य, रूक्ष, कषाय, कफघ्न, पित्तनाशक, मदकारक, अग्निवृद्धिकर, रुचिकारक एवं मुखका विरसतानाशक है। अपरिपक्व सुपारीका गुण—गुरु, अभिष्यन्दी एवं अग्नि और दृष्टिनाशक है। सिद्ध की हुई सुपारी खानेसे त्रिदोष नाश होता है। भिषक्शास्त्रका मत है कि जिस फलका मध्यभाग कठिन होता है वही फल श्रेष्ठ है। (भावप्रकाश)

राजनिघण्टुके मतसे कच्ची सुपारीका गुण—कषाय, मुखमल, रक्ताम्लश्लेष्मा, पित्त और उदराध्मान नाशक, कण्ठ शुद्धिकारक और सारक है। सुपारीका गुण—कण्ठरोग-नाशक, रुचिकारक, पाचन और रेचक हैं, पानके साथ सुपारीका गुण पाण्डु, वात और शोथकारक है। राजवल्लभके मतसे इसकी पीकका गुण—पहली पीक विषतुल्य, दूसरी भेदक और गुरुपाक तथा तीसरी पानका उपयुक्त हैं।

डाक्टर सर्ट साहबका कहना है कि सुपारीका चूर्ण १०से १५ ग्रेण मात्रामें व्यवहार करनेसे दुर्बल मनुष्यका उदरामय अच्छा हो जाता है। मोरिण साहबने परीक्षा कर देखा है कि सुपारीमें टैनिक और गैलिक एसिडका भाग ही अधिक है (Journ. de Pharm. Vol VIII po 419) एसियाके प्रायः समस्तदेशोंमें यह प्रचलित है सुपारी वृक्षका मध्यभाग शून्य, है, यह तृण्सार जातीय तृणमध्यमें गिना जाता है। सुपारीका वृक्ष ४० से ५० हाथका लम्बा देखा गया है। अग्रहायण या पौष मासमें इसकी मुकुल (कली) बाहर निकलती है और चैत्र वैशाख मासमें फल लगते हैं। तथा आश्विन कार्त्तिक मासमें ये फल पक जाते हैं। थोड़े देशोंके मनुष्य सुपारी फलके छिलकेको अलग कर उसे पतले पतले खण्डोंमें काटते और पानके साथ खाते हैं। बङ्गालमें चार तरहकी सुपारी देखी जाती हैं। पहली 'देशाल' जो देखनेमें बड़ी और काटने पर मध्यभाग शुभ्रवर्ण सी होती, दूसरी 'भेटल' जो 'देशाल' सी होती और तीसरी चिक्कणी जो देखनेमें बहुत छोटी होती है। कोई कोई कहते हैं कि अपक्व फलको शुष्क करने पर चिक्कणी सुपारी बनती है चौथी 'रामपुग' जो इस देशमें नहीं होती है। यह सुपारी दक्षिण और पश्चिम प्रदेशमें पायी जाती है। एक तरहकी सुपारी और है जो दक्षिणसे इस देशमें लायी जाती है और जहाजी सुपारी कहलाती है।

गुवार (हिं० पु०) ग्वाल देखो।

गुवारपाठा (हिं० पु०) ग्वारपाठा देखो।

गुवारिच—अयोधयामें गोण्ड जिलेके अन्तर्गत एक परगना इसके उत्तरमें तोहि नदी और गोण्डपरगना, पूर्व में दिगसार परगना, दक्षिणमें घर्घरा नदी एवं पश्चिममें कुरासर परगना है। । यहां राजपूत राजाओंके सेनानायक सहल्लदेवने १०३२ ई०को मुसलमान-विजेता सैयद सालर मुसाउदको पराजित कर देशसे वहिष्कृत कर दिया था। थोड़े समयके बाद यह परगना गौड़राज्यके रामगढ गौड़िया परगनेमें मिलाया गया। वर्तमान गोण्ड, वस्ती और गोरखपुर प्राचीन गौड़राज्यके अन्तर्गत थे। गोण्डा देखो।

इस परगनेमें बहुतसी नदियां और छोटे छोटे स्रोत उत्तर-पश्चिमसे दक्षिण-पूर्व मुख हो कर प्रवाहित हैं। इस लिये भूमिका निम्नतर प्रदेश उर्वरा है। भूपरिमाण २६७ वर्गमील या १७०८६२ एकड है। जिनमेंसे ८८१-४२ एकड़ जमीनमें फसल होती है।

गुमल (हिं० पु०) गुमल देखो।

गुसांई—वैष्णव सम्प्रदाय विशेष। यह संस्कृत गोस्वामी शब्दका अपभ्रंश है। इन्द्रिय जय करनेवालेका ही नाम गोस्वामी वा गुसांई है। भारतके सब प्रधान पुण्यतीर्थों, तीर्थस्थानों और बड़े नगरोंमें गुसाइयोंके मठ या अखाड़े देख पड़ते हैं। इनके चिरदिन अविवाहित वा संसार निर्लिप्त रहनेकी बात है। परन्तु आजकल उस नियमका कम ख्याल रखते हैं। अखाड़ोंके महन्त विवाह नहीं करते। दाक्षिणात्यके गुसाईं पृथक्जाति बन गये हैं। वह सब वर्णोंके लोगोंको कुछ रुपया पाने पर अपने दलमें मिला सकते हैं। महाराष्ट्रवीर माधोजी सेंधियाके अभ्युदय कालको उन्होंने अस्त्रधारण किया था। पेशवाके पास गुसाइयोंकी बहुत फौज रही। कालपरिवर्तन द्वारा हो उनका विवाहकार्य सम्पन्न होता है। बङ्गालके गोसाईं कण्ठी और दाक्षिणात्यवाले रुद्राक्ष पहनते हैं। शिष्यको "ओं सोऽहम्" मन्त्रको दीक्षा दी जाती है। इनमें जाति भेदकी खटपट नहीं है।

गुसाँई आनन्दकृष्ण ब्राह्मण,—एक प्रसिद्ध कवि और पण्डित। इन्होंने फारसी भाषामें ४०००० श्लोकोंमें सप्त काण्ड रामायण, १२००० श्लोकोंमें मत्स्यपुराण और मिताक्षराका फारसी अनुवाद किया है। इन्होंने अपने अनुवादमें इस प्रकारसे अपना परिचय दिया है—शाहजहानाबादमें उनका जन्म हुआ था। १८३५ सम्वतमें ये काशी गये थे। १८४७ सालमें इन्होंने जोनाथन डङ्कन साहबके अनुरोधसे रामायणका अनुवाद किया था।

गुसांईकवि,—राजपतानेके एक प्रसिद्ध कवि। इनके दोहों का राजपूतों में बड़ा आदर है।

गुसाँईगञ्ज—लखनऊ जिलेका एक नगर। यह अमेथी दीनगुरनगरसे ३ माइल दक्षिणपश्चिममें है और लखनऊसे सुलतानपुर जानेके रास्ते में पड़ता है। हिम्मतगिरि गुसाँईने १७५४ई०में यह नगर बसाया था। यहां मिट्टीसे बने हुए एक बड़े किलेका ध्वंसावशेष अब भी मौजूद है। यहांके लोग एक प्राचीन मूर्त्तिको चतुर्भुज देवी मान कर उसकी पूजा करते हैं।

उक्त राजा १००० अश्वारोही राजपूत सेनाके नायक थे और सेनाके वेतन स्वरूपमें अमेथी परगनाके जागीरदार हो गए थे। एक समयमें उनका खूब बल था। वक्सर युद्धके बाद नवाब सूजा उद्दौलाने अङ्गरेजोंके डरके मारे इनसे आश्रय चाहा था। इन्होंने आश्रय नहीं दिया। बादमें नवाब और अङ्गरेजोंमें जब सन्धि हो गई; तब इनको भाग कर अपनी जन्मभूमि हरिद्वारमें जाना हो पड़ा। वहां उन्होंने अङ्गरेजोंसे एक छोटीसी जागीर पाई थी।

यह नगर बड़ा साफ सुथरा है। रास्ता आदिके साफ करनेमें जो खर्च होता है, वह प्रत्येक घरसे कर स्वरूप कुछ कुछ ले लिया जाता है। कानपुर और लखनऊ तक समान रास्ता होनेसे, यहांका रुजगार अच्छा चलता है। यहांकी अधिष्ठात्री देवीके उत्सवके उपलक्षमें सालमें दो बार मेला लगता है। इस मेलेमें करीब पांच सात हजार आदमियोंकी भीड़ होती है।

गुसा (अ० पु०) गुस्सा देखो।

गुस्ताख (फा० वि०) धृष्ट, ढीठ, बड़ोंका सङ्कोच न रखनेवाला।

गुस्ताखी (फा० स्त्री०) धृष्टता, ढिठाई, अशिष्टता अदबी।

गुस्ल (अ० पु०) स्नान।

गुसलखाना (अ० पु०) स्नानागार, नहानेका घर।

गुस्सा (अ० पु०) क्रोध, कोप, रिस।

गुस्सैल (अ० वि०) चिड़चिड़ाहा, जिसको छोटोसी बातमें क्रोध आ जाय।

गुषाण—शक जातिकी एक शाखा। किसी किसीका मत है कि महाराज कनिष्क इसी जातिके थे। कनिष्क देखो।

गुष्टि (सं० स्त्री०) गाम्भारी वृक्ष, गम्भारका पेड़।

गुष्फित (सं० क्लो०) गुम्फ भावे क्त निपातनात् मकारस्य षकारः। १ निर्गत शाखा, निकली हुई डाली। २ गुम्फन-वृक्षके शाखादि निर्गम, गुम्फन पेड़की डालियोंका निकलना।

गुह (सं० पु०) गुहति रक्षति देवसेनां गुह-क। १ कार्त्तिकेय, पार्वतीके पुत्र। इन्होंने देवसेनाको रक्षा की थी और ये गुहा या कन्दरामें रहते थे। इन्हीं दोनों कारणोंसे इनका नाम गुह पड़ा। २ अश्व, घोड़ा। ३ परमेश्वर। ४ शृङ्गवेरपुरके अधीश्वर एक चण्डाल जातीय राजा। महाराज रामचन्द्रजीके साथ इन्होंने मित्रता को थी। यह अतिशय धर्मपरायण और मित्रप्रिय रहे। ५ बङ्गाली कायस्थगणोंकी एक उपाधि। ६ सिंहपुच्छो लता, पिठवन। ७ शालपर्णी, सरिवन। ८ बुद्ध। ९ गुफा, कंदरा। १० हृदय। ११ माया। १२ मेढ़ा।

गुहक (सं० पु०) निषादराज, रामचन्द्रके मित्र।

गुहगुप्त (सं० पु०) एक बोधिसत्व।

गुहचन्द्र (सं० पु०) एक वणिकपुत्र। कथासरित्सागरमें इनकी कथा वर्णित है। ये धर्मगुप्तकी कन्या सोमप्रभाको देखकर उन्मत्त हो गये थे; फिर अनेक चेष्टा और कष्टके बाद उन्हें प्राप्त किया था। सोमप्रभा देखो।

गुहड़ा (हिं० पु०) चतुष्पद जन्तुका एक रोग। इसमें पशुके मुखसे लार निःसृत होतो है और शरीर गर्म हो जाता है एवं चलनेके समयमें वह लड़खड़ाता है।

गुहदवद्य (वै० त्रि०) प्रच्छन्नावद्य। (ऋक् १।१८।५)

गुहदेव—एक प्राचीन पण्डित। देवराजने इनका वेद-भाष्य और श्रीनिवासदेवने इनका वैदान्तिक मत उद्धृत किये हैं।

गुहर (सं० त्रि०) गुहेन निर्वृत्तः गुह अश्मादित्वात् र। गुह द्वारा निर्वृत्त, सम्पादित।

गुहराज (सं० पु०) प्रासादविशेष। मण्डल जिसका विस्तार १६ हाथका होता है। प्रासाद देखो।

गुहराना (हिं० क्रि०) पुकारना, चिल्लाकर बुलाना।

गुहलु (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक एक ऋषि।

गुहल्ल—गोपकपुरके कदम्बराजगणोंके आदि पुरुष।

गुहवाना (हिं० क्रि०) गुंधवाना, गुहनेका काम करना।

गुहशिव—कलिङ्गके एक राजा।

गुहषष्ठी (सं० स्त्री०) गुहप्रिया षष्ठी, मध्यपदलो०। अग्रहायन मासकी शुक्ल छठ। यह कार्त्तिकेयकी जन्म तिथि मानी जाती है। स्कन्दषष्ठी देखो।

गुहसेन (सं० पु०) १ वलभीके एक पराक्रान्त महाराज। ये महाराज धरपट्टके पुत्र थे। इनके चलाये हुए २४६, २४७ और २४८ गुप्त-वलभी सम्वत् अङ्कित तीन अनुशासनपत्र पाये गये हैं। वलभी राजवंश देखो।

२ ताम्रलिप्तनिवासी वसुदत्त नामक एक विख्यात वणिकके पुत्र। इनकी स्त्रीका नाम देवस्मिता था। इनका दाम्पत्य-प्रेम ऐसा प्रबल था कि गुहसेन एक क्षण भी स्त्रीको छोड़कर कहीं जा नहीं सकते थे। देवस्मिता भी उनको देखे विना एक क्षण भी रह न सकती थी। गुहसेनके पिताकी मृत्युके बाद उन्हें कटाहद्वीपमें वाणिज्य करनेके लिये जाना पड़ा। संयोग वश उन दोनोंने एक दिन दो कमलके फूल पाये। फूलोंमें विशेष गुण यह था कि यदि दो व्यक्तियोंमेंसे किसी एकका भ्रष्ट हो जाय तो दूसरेके हाथका कमल मलिन हो जाता। गुहसेन अत्यन्त कष्टसे देवस्मिताको परित्याग कर वाणिज्यके लिये चले। कटाहद्वीपमें पहुंचकर वे वाणिज्य करने लगे। एक दिन वहांके वणिककुमारोंने उस कमलके फूलका रहस्य प्रकाश करनेके लिये उन्हें कोई मादक वस्तु खिला दी। बाद उसका रहस्य जानने और देवस्मिताका चरित्र दूषित करनेके लिये उनमेंसे चार वणिक्-कुमार ताम्रलिप्तिकी ओर रवाना हुए। यहां पहुंचकर उन्होंने योगकरण्डिका नामकी एक परिव्राजिकाकी शरण ली। योगकरण्डिकाके सिद्धिकरी नामकी एक शिष्या (चेली) थी। वह अपनी शिष्याको साथ लेकर देवस्मिताके निकट पहुंची और उसे परपुरुषमें आसक्त होनेको यथेष्ट चेष्टा करने लगी। बुद्धिमती देवस्मि-

जान गई कि कोई उसके स्वामीके हस्तस्थित कमलका रहस्य जानकर उसका सर्वनाश करनेमें उद्यत हुआ है। इस लिये उस पापाशयको उपयुक्त दण्ड देनेका विचार कर उसने अपनी दासीको बुलाया और उसे धतुरा मिला हुआ शराव तथा कुत्तेके पद चिह्नयुक्त एक मोहर संग्रह करनेकी आज्ञा दी। बाद उसने योगकरण्डिकाको उसके पास एक वणिक्कुमार भेज देनेके लिये कहा। परिव्राजिकाके कथनानुसार एक वणिककुमार देवस्मिताके प्रेममें आसक्त हो सङ्केतस्थान पर उपस्थित हुआ। उस स्थान पर देवस्मिताका वेश धारण कर उसकी दासी वणिककुमारकी अपेक्षा कर रही थी। उसके मायाबलसे वह वणिक्कुमार धतुरा मिश्रित शराव पीकर अचेत हो पड़ा। अन्तमें दासीने उस कुत्तेके पद चिह्नयुक्त मोहरको तपाकर उसके कपालमें छाप दे दी और पासके किसी पानीके गड्ढेमें फेंक दी। इसी तरहसे एक एक कर चारों कुमार अपने कर्मका उपयुक्त दण्ड पाकर स्वदेशको लौट आये, परन्तु किसीने यह गुप्त रहस्य दूसरेके सामने प्रकट न किया।

इसके थोड़े समयके बाद ही देवस्मिताने परिव्राजिका और उसकी शिष्याको भी उसी तरह अचेत कर उनकी नाक और कान काट करके उसी जगह फेंक दी। बाद देवस्मिताने सोचा कि सायद वणिक्कुमार उसके पतिका कोई अनिष्ट भी न कर डाले इसी भयसे वह वणिक्वेशमें कटाहद्वीपको रवाना हुई। वहां पहुंच कर उसने राजासे कहा, "धर्मावतार! मेरे चार भृत्य यहां भाग आये हैं, अतः उन्हें मुझे प्रत्यर्पण करनेकी कृपा करें।" राजाने कर्मचारियोंसे उन भृत्योंका अनुसन्धान करनेकी आज्ञा दी। देवस्मिताने उन चार वणिककुमारोंको बतला कर कहा कि ये ही उसके भृत्य हैं। इस पर नगरवासी विशेषकर वणिक पुत्र क्रुद्ध हो उठे। देवस्मिता राजसभामें उपस्थित होकर बोली— 'राजन्! इसके कपालमें कुक्कुरपद चिह्नयुक्त मुहरकी छाप है, परीक्षा कर देखी जाय।" यह सुनकर सबके सब स्तम्भित हो उठे। सभीको ही उन चारों वणिककुमारोंको देवस्मिताके क्रीतदास स्वीकारना पड़ा। अन्तमें देवस्मिताने राजसभामें आदिसे अन्त तक इस रहस्यकी सच्ची बातें कह सुनाईं। यह सुनकर सब कोई उसकी यथेष्ट प्रशंसा करने लगे। महाराजने सन्तुष्ट होकर देवस्मिताके पातिव्रत्यका उपहारस्वरूप उसे अनेक धनरत्न दिये। बाद गुहसेन पत्नीके साथ ताम्रलिप्तिमें आकर परम सुखसे कालयापन करने लगे। (कथासरित्सागर)

गुहांजनी (हिं० स्त्री०) एक तरहकी फुड़िया जो कभी कभी चक्षुके पलक पर हुआ करती है।

गुहा (सं० स्त्री०) गुह-क टाप् च। १ सिंहपुच्छीलता। २ गर्त्त, गड्ढा। ३ गुफा, कन्दरा। ४ शालपर्णी, सरिवन। ५ पृश्निपर्णी, पिठवन लता। ६ हृदय। ७ माया। ८ गुहाधिष्ठात्री देवता। "गुहाभ्यः किरातं।" (वाजसनेय० ३०।१६) ९ बुद्धि। गुह भावे भिदादित्वात् अङ्। १० संवरण, आच्छादन, ढकना। ११ मेढा।

गुहागर—बम्बई प्रान्तके रत्नगिरि जिलेका एक बड़ा गांव। यह समुद्र तट पर अञ्जनवेलसे ६ मील दक्षिण पड़ता है। लोकसंख्या प्रायः ३४४५ है। पोतगीज इसे ब्राह्मणोंकी खाड़ी जैसा समझते थे। १८१२ ई० में पेशवा बाजीरावने ग्रामसे दक्षिण पर्वत पर एक मन्दिर निर्माण किया। १८२७ ई०को इसका बहुतसा सामान रत्नगिरिके सरकारी मकानोंमें उठा करके लगा दिया गया, परन्तु ध्वंसावशेष अब भी पड़ा है। ब्राह्मण अधिक रहते हैं। देवालय कई एक हैं।

गुहागृह (सं० क्ली०) गुहा गृहमिव। गुहावास, गुफाके जैसा घर।

गुहाचर (सं० क्ली०) गुह्यन्ते छाद्यन्ते यत्रात्मपदार्थाः अस्यां गुह घञ् गुहा बुद्धिः तस्यां विषयतया चरति गुहा-चर-ट। ब्रह्म, परमात्मा।

गुहादित्य (सं० पु०) सुप्रसिद्ध बाप्पाके पुत्र। इनका दूसरा नाम गुहिल था।

गुहामुख (सं० क्ली०) गुहाया मुखं, ६ तत्। गह्वरद्वार, कन्दराका द्वार।

गुहार (हिं० स्त्री०) रक्षाके लिये पुकार, दोहाई।

गुहाल (हिं० पु०) गोशाला। गायोंके रहनेका स्थान।

गुहावदरी (सं० स्त्री०) गुहा गुह्या वदरीव। शालपर्णी, सरिवन।

गुहावासा (सं० स्त्री०) गुहावुद्धिरावासो यस्याः बहुव्री०, [illegible] टाप् । गायत्री । (देवीभा० १२।६।४२)

गुहाशय (सं० पु०-स्त्री०) गुहायां गर्ते शेते गुहा-शी-[illegible] । १ मूषिक, मूसा, चूहा । २ जो समस्त जन्तु गुफामें वास करते हैं । भावप्रकाशमें लिखा है कि सिंह, व्याघ्र, वृक, भालू, तरक्षु, द्वीपी, बभ्रु, जंबुक और मार्जार प्रभृति जन्तु गुहाशय कहलाते हैं ।

[illegible]का—वातघ्न, गुरु, उष्ण, मधुर, स्निग्ध, बलकर एवं [illegible]को और गुह्यरोगोंके लिये विशेष उपकारी है ।

(पु०) गुहायां हृदि शेते गुहा-शी-अच् । ३ परमात्मा, ब्रह्म । ४ प्राण ।

गुहाहित (सं० त्रि०) गुहायां वुद्धौ हृदये वा आहितः, ७-तत् । हृदिस्थ, जो हृदयमें अवस्थान करता है ।

गुहिन (सं० क्ली०) गुह बाहुलकात् इनन् । वन जङ्गल ।

गुहिल (सं० क्ली०) गुह इलच् किञ्च । १ वन जङ्गल । (त्रि०) २ गुहाके निकटवर्ती देशादि । (पु०) ३ गहलोत् वंशके आदिपुरुष । गहलोत देखो ।

गुहेर (सं० त्रि०) गुह-एरक् । १ रक्षाकर्त्ता, रक्षक । (पु०) २ लौहकार, लोहार ।

गुहेरा (हिं० पु०) गोध, गोह नामका कीट ।

गुह्य (सं० क्ली०) गुह भावादौ यत् । १ गोपन, छिपाव । २ उपस्थ; भग, लिङ्ग आदि गोपनीयअङ्ग । ३ (त्रि०) छिपानेलायक । (पु०) ४ कमठ, कच्छप, कछुआ । ५ दंभ, छल, कपट । ६ विष्णु । ७ महादेव, शिव । ८ उपदेवताविशेष ।

गुह्यक (सं० पु०) गूहन्ति रक्षन्ति निधिं धनविशेषं गुह-[illegible] पृषोदरादिवत् यगागमे साधुः । गुह्यं कुत्सितं कायति कै क । यद्वा गुह्यं गोपनीयं कं सुखं येषां बहुव्री० । १ देवयोनिविशेष, कुबेरके खजानोंकी रक्षा करनेवाला यक्ष, निधि-रक्षक यक्ष । इनका आवासस्थान पिशाच लोकके ऊर्ध्व और गन्धर्व लोकके निम्नमें है । ब्रह्मवैवर्तपुराणमें लिखा है कि कृष्णके गुह्य देशसे पिङ्गलवर्ण अनुचरोंका जन्म हुआ था । इसीलिये वे गुह्यक कहलाये ।

(ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्म० ५।६०)

कालीखण्डका मत है कि जो सदुपायसे अधिक धन उपार्जन कर छिपा कर रखते और कभी भी अन्याय पथ पर पदक्षेप नहीं करते और जो अतिशय धनशाली अथच क्रोध वा असूयाशून्य हैं और आपसमें धन विभाग कर निर्विवादसे भोग करते हैं, जो सर्वदा सुखाभिलाषी हैं, किसी पुण्य तिथि, वार, संक्रान्ति वा पर्वदिनमें किसी तरहका पुण्य कार्यका अनुष्ठान नहीं करते या अनुष्ठान करना जानते ही नहीं, सिर्फ ब्राह्मणको ही पूज्य समझते और समय समय पर उन्हें गोदान किया करते एवं कभी भी ब्राह्मणवाक्य उलङ्घन नहीं करते वे ही मनुष्य मृत्युके बाद गुह्यलोकको प्राप्त होते हैं ।

२ पक्वान्नविशेष, एक तरहका मधुर खाद्य द्रव्य । मैदा या सूजीको घृतमें भूंज कर उसमें चीनी और किशमिश मिश्रित कर दें और सुगन्धिके लिये दो एक एलाची, लवङ्ग और कर्पूर भी दे दें । इतना करनेके बाद उसे एक समितालम्ब पात्रमें रखकर घृतसे पाक करें । भली भांति पाक होनेके पश्चात् चीनीका रस उसमें डाल दें । इसीको गुह्यक कहते हैं । यह अति उपादेय खाद्य है । इसका गुण—बृंहण, अतिशय हृद्यग्राही, वृष्य, पित्त और वायुनाशक, मधुर एवं गुरुपाक है ।

३ अङ्गिरा कुलज तमसादेवीके भक्त एक राजा, गोपालके पुत्र । (सह्याद्रि १।३३।३५)

गुह्यकाली (सं० स्त्री०) नित्य कर्मधा० । कालीमूर्तिविशेष । विश्वसारतन्त्रमें इनकी उपासनाकी कथा, दीक्षाप्रणाली और मन्त्रोद्धार लिखे हुए हैं । इनकी उपासनासे चतुर्वर्ग लाभ होते हैं, साधकका अभीष्ट यह सर्वदा पूर्ण किया करती हैं, दिनोंदिन साधककी भक्ति वृद्धि होती जाती एवं पाञ्चभौतिक देहपात होने पर उसे मोक्षकी प्राप्ति होती है । इनका मन्त्र यथा—(१)

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके ।"

अन्य विवरण दीक्षा शब्दमें देखो ।

गुह्यकेश्वर (सं० पु०) गुह्यकानां ईश्वरः, ६-तत् । कुबेर ।

गुह्यगुरु (सं० पु०) गुह्यो गोपनीयो गुरुः । शिव । तन्त्रशास्त्रमें बहुत जगह 'शिव' का 'गुह्यगुरु' नामसे उल्लेख किया है ।

गुह्यग्रन्थ (सं० पु०) गुह्यो गोपनीयो ग्रन्थः । १ गोपनीय ग्रन्थ, गुप्त पुस्तक । २ तन्त्रशास्त्र । ३ बौद्ध [illegible]

गुह्यतन्त्र (सं० क्ली०) गुह्यं च तन्त्रं चेति कर्मधा०

एक तंत्र। इसमें तांत्रिक धर्मकी बहुतसी गोपनीय कथायें अच्छी तरहसे लिखी हैं। तांत्रिक गणोंके पक्षमें यह विशेष आदरणीय है।

गुह्यदीपक (सं० पु०) स्वयं गुह्यं सन् दीपयति प्रकाशयति दीप-णिच्-ण्वुल्। खद्योत, जुगनू।

गुह्यदेश (सं० पु०) पायु, मलद्वार।

गुह्यनिष्यंदन (सं० पु०) गुह्यात् उपस्थात् निष्यन्दते नि-स्यन्द-अच्। मूत्र, प्रस्राव, पेशाव।

गुह्यपति (सं० पु०) गुह्यानां पतिः, ६-तत्। गुह्योंके अधिपति, वज्रधर, कुवेर। वज्रधर देखो।

गुह्यपिधान (सं० क्ली०) गुह्यस्य पिधानं, ६-तत्। गुह्यदेशका आवरण, गुह्य देश ढांकनेका वस्त्र।

गुह्यपुष्प (सं० पु०) गुह्यं गोपनीयं पुष्पं यस्य, बहुव्री०। अश्वत्थवृक्ष।

गुह्यभाषित (सं० क्ली०) गुह्यं गोपनीयं भाषितं। १ मंत्र। २ गुप्तकथा।

गुह्यमण्डल—पुराणोक्त एक पवित्र स्थान।

(वराहपु० १२७ अ०)

गुह्यमय (सं० पु०) गुह्य प्राचुर्य्यार्थे मयट्। कार्त्तिकेय।

गुह्यबीज (सं० पु०) गुह्यं बीजमस्य, बहुव्री०। भूतृण, गन्धखड़।

गुह्य स्थान—नेपालस्थ एक पवित्र स्थान।

गुह्याष्टक (सं० क्ली०) गुह्यानां तीर्थविशेषाणामष्टकं, ६-तत्। आठ तीर्थविशेष। भारभूति, आषाढ़ी डिंडिल, आकुली, अमरकण्टक, पुष्कर, प्रभास और नैमिष इन आठों तीर्थोंको गुह्याष्टक कहते हैं।

गुह्येश्वरी (सं० स्त्री०) गुह्यानां ईश्वरी, ६-तत्। १ गुह्यकगणोंकी अधिष्ठात्री देवी। गुह्या गोपनीया अप्रकाश्या ईश्वरी कर्मधा०। २ गोपनीय देवी, इष्टदेवी। ३ काली, आद्या, विद्या।

गूंगा (हिं० वि०) जो बोलनेमें असमर्थ हो। मूक, जिसके मुंहसे [illegible] शब्द न निकले।

गूंच (हिं० स्त्री०) [illegible] प्रकारकी बिछियां जिसे स्त्रियां [illegible] अंगुलीमें पहनती हैं।

गूंच (हिं० स्त्री०) एक तरहकी मछली।

गूंछ (हिं० पु०) एक तरहका मत्स्य जो लगभग चार हाथ लम्बा होता है इस तरहकी मछली भारतके प्रायः सभी नदियोंमें मिलती है यह अपना मुख सदा नीचेको ओर रखती हुई गहरे पानीमें चलती है।

गूंज (हिं० स्त्री०) १ कलध्वनि, भौरोंके गूंजनेका शब्द, २ प्रतिध्वनि, व्याप्तध्वनि। ३ लट्टूकी कील, जिस पर लट्टू घूमता है। ४ कानमें पहननेको बालियोंका छोटा पतला तार।

गूंजना (हिं० क्रि०) १ गूंजन करना, भौरोंका भिनभिनाना। २ प्रतिध्वनित होना।

गूंठ (हिं० पु०) पहाड़ी टट्टू, टांगन।

गूंदा (हिं०) गोंदा देखो।

गूंदी (हिं० स्त्री०) गिरगिट्टी जातिका गंधेला नामक पेड़।

गू (सं० स्त्री०) गच्छति अपानवायुना देहात् गम-क्रू-टिलोपश्च। १ विष्ठा। २ मल।

गूगल (हिं०) गुग्गुल देखो।

गूजर—पेशवा राघोजी भोंसलाकी लड़कीकी लड़कीके पुत्र वा पौत्र १८१८ ई०को अप्पासाहब जब सिंहासन च्युत हुए, यह मध्यप्रदेशके नागपुर राज्यमें अभिषिक्त हुए।

गूजर—युक्तप्रदेशवासी जातिविशेष। यह लोग शान्तभावसे कायिक परिश्रम करके जीविका चलाते हैं। इनके उत्पत्ति सम्बन्धमें बहुतसे आदमी बहुतसी बातें कहते। कोई कोई कहता है कि गुर्जरदेश अथवा पञ्जाब प्रदेशके गुजरांवाला या गुजरात नामक स्थानसे ही उनको नाम गूजर नाम पड़ा है। नागपुरके गूजर अपनेको राजपूत और श्रीरामचन्द्रजीके पुत्र राजा लवका वंशधर बतलाते हैं, परन्तु युक्तप्रदेशवाले अपनेको उतना ऊंचा नहीं समझते। पानीपथके रावल गूजर अपनेको खोखर राजपूतोंका वंशधर जैसा अनुमान करते हैं।

आजकल दिल्लीके निकटवर्ती स्थानसमूह, उत्तर दोआब और उत्तर रुहेलखण्डमें इन लोगोंकी संख्या अधिक है। गूजरोंमें ८४ भिन्न श्रेणियां होती हैं। पितृगोत्र, मातुलगोत्र और पितामही तथा मातामहीके गोत्रमें इनका विवाह नहीं होता। पानीपथके मुसलमान गूजरों-

को कनिङ्गहम साहब चीना, यूनानी तथा मुसलमानी ऐतिहासिक कथित तोखारी, कुशान या कयूखयाङ्ग (तातार) जाति जैसा अनुमान करते हैं। यह और भी बतलाते हैं कि उन्हींसे गुर्जरराष्ट्र तथा खुरमान दो राष्ट्रों-का नाम पड़ा है। कह नहीं सकते, वह अनुमान कहां तक सत्य है। परन्तु आवयविक गठन देख करके जाटों-से इनकी तुलना की जा सकती है। १३०३ ई०को प्राचीन गुर्जर नगरध्वंस हुआ था। १५४४ ई०का सम्राट् अकबरके राजत्वसमय इन्होंने उसको फिर निर्माण किया।

शोलापुरके गूजरोंमें बहुतसे गुजराती जैन श्रावक-वंशीय हैं। कोई १०० वर्ष हुए, गुर्जर देशसे जा कर के वह वहां रहने लगे हैं। इनके बीच स्वगोत्रमें विवाह होता और उसमें बड़ा खर्च पड़ता है। यह बड़े दान शील हैं। शोलापुरमें पार्श्वनाथके दो और कई एक अन्यान्य मन्दिर उन्हींके बनवाये हैं। व्रज भाषाके कवि योंने इस जातीय स्त्रियोंको 'गूजरि,' 'गूजरी' वा 'गुज-रेटी' लिखा है।

गूजर (हिं०) गुर्जर देखो

गूजर खाँ—रावलपिण्डी जिलाके दक्षिणपश्चिम और मूरि पर्वतसे २० मील दक्षिणमें एक तहसील। यह अक्षा० ३३° ४ तथा ३३° २६ उ० और देशा० ७२° ५६ एवं ७३° ३८ ३०" पू० पर अवस्थित है। भूपरिमाण ५६५ वर्ग मील है। यहांके विचारविभागमें एक तहसीलदार और एक मुन्सिफ है।

गूजरसिंह—एक सिख योद्धा। यह भङ्गी जातिके सरदार थे। १७६३ ई०को भङ्गियोंके जातीय एकता सूत्रमें आबद्ध होने पर इन्होंने उनके सैन्यको साथ ले फीरोजपुर आक्रमण और जय किया। फिर वहां पर इन्होंने दुर्ग संस्कार किया और अपना राज्य शतद्रु पर्यन्त बढ़ा दिया। १७६५ ई०को सरदार गूजरसिंहने लाहोरसे गक्करराज मुकारब खांके विरुद्ध यात्रा की और उन्हें पराजित करके गुजरात के बहिर्देशमें भगाया था। मुकारबने वितस्ताके पर पार-को पलायन किया था। वहां वह स्वजातिकर्टक निहत हुए। इसी समय गूजरसिंहने जा करके उसको विनाश किया और राज्य पर अधिकार कर लिया।

गूजरी (हिं० स्त्री०) गुर्जरी देखो।

गूजी (हिं० स्त्री०) एक तरहका छोटा काला कोट।

गूझा (हिं० पु०) १ पकवानविशेष। गुझाक देखो। २ गूदा। ३ फलके मध्यभागका रेशा।

गूटी (देश०) १ लीचीका पेड़ रोपनेकी एक तरकीब। २ चौपायोंका एक रोग।

गूटी—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेका सब डिविजन। इसमें दो तालुक लगते हैं।

गूटी—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेका उत्तर तालुक। यह अक्षा० १४° ४७ तथा १५° १४ उ० और देशा० ७७° ६ एवं ७७° ४८ पू० के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल १०५४ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १५६१५५ है। तीन नगर और १४२ ग्राम बसते हैं। मालगुजारी कोई ३१६०००) रु० है। दक्षिण और पश्चिम अञ्चलमें भूमि अधिक उर्वरा है। उसके ५से १० फुट नीचे तक चूनेका पत्थर मिलता जो पानीमें घुला करता है। पेड़ जैसे ही उनकी जड़ चुनेसे मिलती फिर नहीं फूलते फलते। उत्तर और पूर्वकी जमीन पथरीली है। पेन्नेर नदी ही अकेले इस तालुकमें बहती है।

गूटी—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेमें गूटी सबडिवि-जन और तालुकका सदर। यह अक्षा० १५° ७ उ० और देशा० ७७° ३८ पू०में मद्रास रेलवे पर पड़ता है। जन-संख्या प्रायः ८६८२ है। इसका मध्यभाग प्राचीन पार्वत्य दुर्गोंके लिये प्रसिद्ध है। बहुतसी जमीनको चारों ओर पहाड़ घेरे हुए हैं। पहाड़ोंको उस ओर एक मजबूत चहारदीवारी है। उस पर जगह जगह बुर्ज बने हैं। उत्तर और पश्चिम दिक्को शहरमें जानेके लिये इसी दीवारमें दो सूराक हैं। किला जमीनसे १००० फुट ऊंचा है। रक्षाके उपकारणोंमें कोई कमी नहीं। वह विना दुर्भिक्ष या छलनाके टूट नहीं सकता। पानीके लिये पहाड़ पर भी हौज मौजूद हैं। एक पहाड़ी पर 'मुरारी रावक डेरा' नामकी इमारत है। [illegible] वह शत-रञ्ज खेलते और के [illegible] धकेला [illegible] हुआ देखते थे। यहां १८[illegible]को गञ्जाम [illegible] पहाड़ी लोक कैद किये गये थे। जब यह जगह कम्पनी-

को मिली, वारीकोंमें ट्रोपो पैदल फौज रही। अब किले और इमारतोंकी देख भाल सरकार करती है।

शहर बहुत घना है। ग्रीष्म ऋतुमें गर्मी बहुत पड़ती है। इसीसे सब सरकारी दफ्तर मैदानमें उठ गये हैं। किलेका पूरा इतिहास अज्ञात है। वह विजयनगरके राजाओंका एक अति सुदृढ़ दुर्ग था। मुसलमान कितने ही समय तक उसे अधिकृत कर न सके। १७४६ ई०को मुरारिराव नामक महाराष्ट्र वीरने उसको मरम्मत की। १७७५ ई०को बहुत दिन तक घेरा डालनेके बाद हैदर अलीने उसे अधिकार किया था। १७८८ ई०को टीपूके मरने पर वह निजामके हाथ लगा। १८०० ई०से यह अंगरेजोंके अधिकारमें है। १८६० ई० तक वहां दो अङ्गरेजी फौजें रहीं।

गूड़ी (हिं० स्त्री०) बाजरेकी बालकी प्याली, जिसमें दाना लगा रहता है।

गूडूर—१ कृष्णा जिलामें मसुलीपत्तन तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह मसुलीपत्तन नगरसे ४ मील पश्चिममें अवस्थित है।

२ मन्द्राजमें कर्णूल जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यह कर्णूल नगरसे १८ मील उत्तर-पश्चिममें अक्षा० १५° ४३' उ० और देशा० ७८° ३४' ४०" पू०के मध्य अवस्थित है। यहां कार्पास और रेशमी वस्त्र प्रस्तुत होते हैं।

३ विजापुर जिलाके अन्तर्गत एक पुरातन ग्राम। रामेश्वरके प्राचीन मन्दिरके लिये यह प्रसिद्ध है। यहां प्रतिमा और ताम्बके बरतन या पात्र प्रस्तुत होते हैं।

गूढ़ (सं० त्रि०) गुह-क्त। १ गुप्त, छिपा हुआ। २ अभिप्राय-गर्भित, जिसमें बहुतसा अभिप्राय गुप्त हो। कठिन, जटिल अबोधगम्य। ३ संवृत। (पु०) ४ वास्तुतिमें पांच प्रकारके गवाक्षोंमेंसे एक गवाक्ष। ५ एक अलंकार।

गूढ़कामी (सं० पु०) काक, कौवा।

गूढ़गर्भक (सं० पु०) गर्भजरोगविशेष।

गूढ़चारिन् (सं० त्रि०) गूढ़: सन् चरति चर-णिनि। जो गुप्त रीतिसे विचरण करता है। गुप्तचारी।

गूढ़ज (सं० त्रि०) गूढ़े गुप्तस्थाने जायते गूढ़-जन-ड। गूढ़ोत्पन्न पुत्र। बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक पुत्र अपने ही गृहमें किसी गुप्त जारसे पैदा किया हुआ पुत्र।

गूढ़ता (सं० स्त्री०) गूढ़स्य भाव: गूढ़-तल्-टाप्। १ गुप्तता, छिपाव। २ अबोधगम्यता, गम्भीरता, कठिनता।

गूढ़त्व (सं० क्ली०) गूढ़स्य भाव: गूढ़-त्व। १ गूढ़ता, गुप्तता। २ गंभीरता, कठिनता।

गूढ़नाभि—वशिष्ठ गोत्रीय चण्डिकाभक्त पृथुवंशीय एक राजा, कूर्मके पुत्र।

गूढ़नीड़ (सं० पु०) गूढ़ं गुप्तं नीडं यस्य, बहुव्री०। खञ्जनपक्षी।

गूढ़पत्र (सं० पु०) गूढ़ं पत्रमस्य, बहुव्री०। १ अङ्कोठीवृक्ष, अखरोटका पेड़। २ करीलवृक्ष।

गूढ़पथ (सं० पु०) गूढ़ं पन्था यस्य बहुव्री०, समासान्त टच्। १ अन्त:करण, अन्तात्मा। २ गुप्तपथ।

गूढ़पद (सं० पु०) गूढं पादयति पद णिच क्विप्। यद्वा गुप्ता: पादा यस्य, बहुव्री०। निपातनेन साधु। सर्प, सांप।

गूढ़पाद (सं० त्रि०) गूढ़ आवृत: पादो यस्य, बहुव्री०। आवृत चरण, जिसका चरण आच्छादित हो।

गूढ़पुरुष (सं० पु०) गूढ़श्चासौ पुरुषश्चेति, कर्मधा०। राजप्रेरित छद्मवेशी पुरुष, गुप्तचर, भेदिया।

गूढ़पुष्पक (सं० पु०) गूढ़ानि संवृतानि पुष्पाण्यस्य, बहुव्री०। १ पीपल, बड़, गूलर, पाकर इत्यादि वृक्ष। २ बकुलवृक्ष, मौलसिरी।

गूढ़फल (सं० पु०) गूढं फलं यस्य, बहुव्री०। बेरका पेड़।

गूढ़फला (सं० स्त्री०) गृध्रनखी।

गूढ़मण्डप (सं० पु०) देवमन्दिरके भीतरका बरामदा या दालान।

गूढ़मल्लिका (सं० स्त्री०) अङ्कोलिवृक्ष, अखरोटका पेड़।

गूढ़माय (सं० त्रि०) गूढ़ा गुप्ता अन्यैरलक्षिता माया यस्य, बहुव्री०। जिसकी माया दूसरोंसे अलक्षित है।

गूढ़मार्ग (सं० पु०) नित्यकर्म०। गुप्तपथ, सुरङ्ग, पृथ्वीके नीचे खोदा हुआ रास्ता।

गूढ़मैथुन (सं० पु० स्त्री०) गूढं गुप्तं केनाप्यलक्षितं मैथुनं यस्य, बहुव्री०। काक, कौवा।

गूढ़लूट—मदुरा जिलाके पेरियकुड़म् तालुकके अन्तर्गत एक ग्राम। इस ग्राममें एक पुरातन शिवमन्दिरमें बहुतसी शिलालिपि देखी जाती हैं।

गूढ़वर्चस् (सं॰ पु॰-स्त्री॰) गूढ़ं वर्चोऽस्य, बहुव्रो॰। भेक, मेढक।

गूढ़वल्लिका (सं॰ स्त्री॰) अक्षोठवृक्ष, अखरोटका दरख्त।

गूढ़वल्ली (सं॰ स्त्री॰) १ अक्षोठवृक्ष । २ कृष्णा जिलाके रेपल्ली तालुकके अन्तर्गत एक छोटा ग्राम। यहां लक्ष्मी नरसिंहका पुरातन मन्दिर है।

गूढ़व्यङ्गदा (सं॰ स्त्री॰) गूढ़ं गुप्तं काव्यार्थभावनपरिपक्व-बुद्धिमात्रवेद्यं व्यङ्गं यत्र, बहुव्री॰। ततः टाप्। काव्यमें एक प्रकारकी लक्षणा।

साहित्यदर्पणके मतसे लक्षणा दो तरहकी हैं—गूढ़-व्यङ्गदा और अगूढ़व्यङ्गदा। इनका अभिप्रायः सर्व-साधारणको शीघ्र समझमें नहीं आ सकता।

गूढ़साक्षिन् (सं॰ पु॰) गूढ़श्चासौ साक्षीचेति कर्मधा॰। साक्षीविशेष। अर्थी या वादी अपनी इष्ट सिद्धिके लिये प्रत्यर्थी या विवादीको समस्त कथा जिस साक्षीको सुनाता है वही गूढ़साक्षी कहलाता है।

गूढ़ागूढ़ता (सं॰ स्त्री॰) गूढ़ागूढ़ास्य भावः गूढ़ागूढ़-तल्-टाप्। गूढ़ागूढ़त्व, जटिल, कठिन।

गूढ़ाङ्ग (सं॰ पु॰-स्त्री॰) गूढ़ानि अङ्गानि यस्य, बहुव्री॰। १ कच्छप, कछुवा। २ उपस्थ, भग, लिङ्ग आदि गोपनीय अङ्ग। (त्रि॰) गूढ़ं गुप्तं अङ्गं यस्य, बहुव्री॰। ३ गुप्त-देह, जिसका शरीर छिपा हुआ हो।

गूढ़ाङ्घ्रि (सं॰ पु॰-स्त्री॰) गूढ़अङ्घ्रि यस्य, बहुव्री॰। सर्प, सांप

गूढ़मल्लूर—अर्काटसे उत्तर वालाजापेट तालुकके मध्य एक पुरातन ग्राम। यह वालाजापेटसे ३ मील दक्षिणमें अव-स्थित है। यहां पाला नदीके तट पर आत्रेयमहर्षिके उद्देशसे चोलराज कर्तृक एक सबुज पत्थरका मन्दिर निर्मित है। मुसलमानोंने शाहदत्-उल्लाकी मस्जिदके निर्माणके लिये उक्त मन्दिरके बहुतसे पत्थर खोल कर अर्काट ले गये थे। किन्तु पीछे ग्रामवासियोंके यत्नसे गेणाद्दट प्रस्तर द्वारा मन्दिरका पूर्ण संस्कार किया गया।

गूढ़ोक्ति (सं॰ स्त्री॰) एक अलङ्कार। इसमें कोई गुप्त बात तृतीय मनुष्यके प्रति किसी दूसरेके ऊपर छोड़कर कही जाती है।

गूढ़ोत्तर (सं॰ पु॰) किसी गूढ़ अभिप्रायका उत्तर।

गूढ़ोत्पन्न (सं॰ पु॰) गूढ़मुत्पन्नः। द्वादश प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। मनुका मत है कि दूसरेके औरस (वीर्य) से यदि कोई सन्तान उत्पन्न हो और उसका यह प्रकृत सम्वाद दूसरा कोई नहीं जानता हो तो जिसकी स्त्री उसीका पुत्र कह कर वह गण्य है। इस तरहके गुप्त उत्पन्न पुत्रको शास्त्रकारगण गूढ़ोत्पन्न कहा करते हैं।

गूढ़ात्मन् (सं॰ पु॰) गूढ़श्चासौ आत्माचेति कर्मधा॰। परमात्मा।

गूथ (सं॰ पु॰-क्ली॰) गू-थक्। विष्टा, मैला।

गूथलक (सं॰ पु॰-स्त्री॰) गूथे विष्टायां रक्तोऽनुरक्तः, ७ तत्। गूथशालिक, एक तरहका पक्षी। इसका पर्याय—शरमल्ल, क्षुद्रचूड़ और मालिक है।

गूथना (हिं॰ पु॰) १ ग्रन्थन, कई चीजोंको एक सूतमें एकत्र करना। २ किसी पदार्थको दूसरे पदार्थमें सूई तागेसे अटकना। ३ भद्दी सिलाई करना, सीना, गाँथना।

गूद (हिं॰ पु॰) १ गूदा, मग्ज। (स्त्री॰) २ गर्त, गड्ढा। ३ निशान, दाग।

गूदगरी—बम्बई प्रान्तके कर्णाटक जिलेमें छोटी मिराज रियासतका सब डिविजन और इसीका सदर। यह धार-वाड़में लक्ष्मेश्वरसे ३ मील दक्षिण-पश्चिम पड़ता है। लोकसंख्या प्रायः ३१२८ है। सप्ताहमें एक बार बाजार लगता है। यहां मामलतदारका दफ्तर, थाना, बालक और बालिका-विद्यालय, डाकखाना तथा धर्मशाला है।

गूदर—हिन्दी भाषाके एक सुप्रसिद्ध कवि। कविताका नमूना यह है—

"जो कोई राम रटे सोई जाने।
जो जो भजो सो सुरपुर गयऊ नरक भक्ति बयाने॥
ताको महिमा क्या कहिबेको आगर दुहु सकुचाने॥
प्रिय मिलबेको सहज भाव है सहज हो दीनता बानी।
जाके जप तप मान मदीको वेदहु कहत बखानी॥
जाको मति मति अस आवत है तबे भाग ब[illegible]।
गावे गूदर गुरुको दया जब तब हो लगे[illegible]

गूदलूर—मन्द्राज प्रान्तके नीलगिरि जिलेका [illegible] वह विन्[illegible]। यह अक्षा॰ ११° २३' तथा ११° ४०' उ॰ [illegible] [illegible]१४' एवं ७६° ३६' पू॰ मध्य अवस्थित है। [illegible] [illegible]के १२ गांव हैं। लोग मुलायम भाषा व्यवहार[illegible] [illegible]कहवा, सोने और अबरकका काम बन्द हो जाने[illegible] लूर बिगड़ा है। लोकसंख्या प्रायः २११३८ और [illegible] गुजारी ५२०००) है।

गूदलूर—मन्द्राजके नीलगिरि जिलेमें गूदलूर तालुकका सदर गांव। यह अक्षा० ११° ३०´ उ० और देशा० ७६° ३०´ पू०में गूदलूर घाट पर्वतके नीचे अवस्थित है। लोक-संख्या प्रायः २५५८ है। साप्ताहिक बाजार अच्छा लगता है।

गूदा (हिं० पु०) १ किसी फलकी छिलकेके नीचेका सार भाग, गरी। २ भेजा, मगज, खोपड़ीका सारभाग।

गून (सं० त्रि०) गू-क्त तस्य नकारः। कृतविष्ठोत्सर्ग, जिस व्यक्तिने विष्ठा त्याग किया हो।

गून (हिं० स्त्री०) १ नाव खींचनेकी रस्सी। २ रोहातण।

गूना (फा० पु०) पीतल या सोनेका बना हुआ एक तरह-का सुनहला रङ्ग।

गूमड़ा (हिं०) गुम्म देखो।

गूमा (हिं० पु०) एक छोटा पौधा। इसके ग्रन्थन पर गुच्छासा रहता है, और इसमें श्वेत पुष्प लगते हैं। यह औषधके काममें आता है।

गूरण (सं० क्ली०) गूर उद्यमे भावे ल्युट्। उद्यम, उद्योग।

गूरा (हिं० पु०) गुल्ला, ढेला।

गूर्ण (सं० त्रि०) गूर-क्त तकारस्य नकारः। १ उद्यम-विशिष्ट। २ प्रशस्त।

गूर्त (सं० त्रि०) गूरी उद्यमे क्त निपातनात् नत्वाभावः। १ उद्यमविशिष्ट। २ प्रशंसनीय।

गूर्तमनस् (सं० त्रि०) गूर्तं उद्युक्तं मनो यस्य, बहुव्री०। जिसका मन उद्योगविशिष्ट है।

गूर्तवचस् (सं० त्रि०) गूर्तं उद्यतं वचो यस्य, बहुव्री०। जिसका वाक्य उद्यमविशिष्ट है।

गूर्तश्रवस् (सं० त्रि०) गूर्तं प्रशंसनीयं श्रवो यस्य, बहुव्री०। प्रशस्यान्न, जिसका भोजनीय द्रव्य प्रशंसनीय है।

गूर्तावसु (सं० त्रि०) गूर्तं वसु यस्याः, बहुव्री०, सांहितिको दीर्घश्च। दान करनेके हेतु जिसने अपने धन धारण किया हो।

गूर्ति (सं० त्रि०) गृणन्ति स्तुवन्ति गृ कर्त्तरि क्तिच्। १ स्तोता, स्तव करनेवाला। (स्त्री०) गूर भावे क्तिन्। २ स्तुति।

गूलर (हिं० पु०) वटवर्ग, पीपल और बरगदकी जाति-का एक वृहत् पेड़। उदुम्बर देखो।

गूलर-कबाब (फा० पु०) एक प्रकारका कबाब। यह सिद्ध मांसको चूर्ण कर उसके मध्य अदरक, पोदीना आदि भरकर भूननेसे बनता है।

गूलू (हिं० स्त्री०) पुंड्रक नामका एक तरहका पेड़। कतीरा नामक श्वेत गोंद इसे निःसृत होता है। इस-को छिलकासे रस्सियां बनाई जाती हैं। इसकी पत्तियां और शाखायें चारो और औषधका काम आती हैं। कोई कोई इसका जड़को तरकारीके काममें लाते हैं और थोड़ा गुड़ मिलाकर खाते हैं। यह उत्तर भारत, मध्य भारत, दक्षिण तथा वर्माके सूखे वनमें तथा पश्चिमी घाट-के पर्वतों पर मिलता है।

गूवाक (सं० पु०) गुवाक पृषोदरादित्वात् साधुः। गुवाक देखो।

गूषणा (सं० स्त्री०) मयूरचन्द्रक, मोरकी पूंछ पर बना हुआ अर्द्धचन्द्र चिह्न।

गूह (हिं० पु०) गलीज, विष्ठा, मल। गूथ देखो।

गूहन (सं० क्ली०) गूह-ल्युट्। गोपन, गुप्त।

गूहा छीछी (हिं० पु०) बुरे रूपका झगड़ा, बदनामी, कलङ्क।

गूहितव्य (सं० त्रि०) गूह-तव्य। गोपनीय, जो स्थान छिपाने योग्य हो। यथा—लिङ्ग, कुच (स्तन), भग और गुह्यदेश।

गृञ्ज (सं० क्ली०) गृञ्जन।

गृञ्जन (सं० क्ली०) गृञ्जाते अभक्ष्यत्वेन कथ्यते गृञ्जि ल्युट्। १ मृत पशुका मांस। २ मूलविशेष शलगम, गाजर। इसका पर्याय—शिखिमूल, यवनेष्ट, वर्तुल, ग्रन्थिमूल, शिखाकन्द और कन्द है। यूरोप तथा एसियाके नानास्थानोंमें यह पाया जाता है। वैद्यक मतसे इसका गुण—कटु, उष्ण, कफ, वातरोग और गुल्मरोगनाशक, रुचिकर, दीपन, हृद्य और दुर्गन्ध है।

मनुका वचन है कि—जान बूझकर गृञ्जन भक्षण करनेसे ब्राह्मण पतित हो जाता है; और यदि अज्ञानसे गृञ्जन खाय तो कृच्छ्रसान्तपन अथवा यति चान्द्रायण व्रत करके पापसे मुक्त हो सकता है। (मनु ५।१९-२०) (पु०) ३ मूलविशेष, लहसुन, रसुन। ४ लाल लहसुन।

गृञ्जनक (सं० पु०) गृञ्जन स्वार्थे-कन्। गृञ्जन।

गृञ्जर (सं० पु०) गर्जर, गाजर।

गृञ्जिम (सं० पु०) यदुवंशीय शूरके पुत्र, वसुदेवके भ्राता।

गृणीवन् (सं० पु०) स्तोत्र, स्तव।

गृत्कीव (सं० पु० स्त्री०) वृहत् शृगाल, बड़ा गीदड़।

गृत्स (सं० पु०) गृध्यति लिप्सति अनेन गृध सं-कित्, दकारान्तादेशः। १ कामदेव। (त्रि०) २ स्तवकर्त्ता, स्तवकरनेवाला। ३ स्तुत्य, जिसको स्तव करना उचित है। ४ मेधावी, पण्डित, विज्ञ। ५ विषयाभिलाषी।

गृत्सपति (सं० पु०) गृत्सानां विषयाभिलाषिणां मेधाविनां वा पतिः, ६-तत्। १ विषयाभिलाषीगणका प्रतिपालक रुद्र। २ मेधावी प्रतिपालक रुद्र, विद्वानोंके रक्षक रुद्र। गृत्स देखो।

गृत्समति (सं० पु०) एक राजा। इनका जन्म वृहस्पतिवंशीय सुहोत्रके औरससे हुआ था। (हरिवंश २१ अ०)

गृत्समद (पु०) १ एक मुनि, शुनक गोत्रके प्रवर-प्रवर्त्तक। विष्णुपुराणका मत है कि ये क्षत्रवृद्धवंशीय सुहोत्रके तृतीय पुत्र रहे। इनके पुत्रका नाम शुनक था। (विष्णुपुराण ४।८ अ०)

महाभारतमें लिखा है कि पूर्वसमयमें देवराज इन्द्रने सहस्रवर्षव्यापी एक यज्ञका अनुष्ठान किया था। महर्षि गृत्समद उस यज्ञमें सामवेद पाठ पढ़ते थे। उनका पाठ सम्यक् न होनेके कारण चाक्षुषमनुके पुत्र भगवान् वरिष्ठने उन्हें शाप दिया। इस शापसे उन्होंने मृगयोनिमें जन्म ग्रहण किया। ११८०० वर्ष पर्यन्त मृगरूपमें ये जलवायुविहीन विशाल जङ्गलमें रहे। तत्पश्चात् अपनी दुर्दशाको दूर करनेके लिये इन्होंने महादेवजीका स्तव किया। शिवजीके वरसे इनकी इन्द्रसे मित्रता हुई एवं शास्त्रके पारदर्शी हुए।

२ ब्रह्मर्षि वीतहव्यके पुत्र। ये देखनेमें ठीक देवराज इन्द्रसे मिलते जुलते थे। एक दिन इन्द्रद्वेषी दैत्यगण इन्हें इन्द्र समझ पकड़ कर ले गये, किन्तु अधिक चेष्टा करनेके उपरान्त उन्होंके हाथसे छुटकारा पाया। ऋग्वेदमें इनकी अनेक प्रशंसा की गई है। (भारत अनु० १० अ०)

गृद्धिन्— गर्द्धिन देखो।

गृधु (सं० पु०) गृध्यत्यनेनास्माद्वा गृध-कु। १ कामदेव कन्दर्प। (त्रि०) २ अभिलाषुक, इच्छुक।

गृधू (सं० पु०) गृध बाहुलकात् कू। १ बुद्धि। २ कुत्सित। ३ अपान।

गृध्न (सं० त्रि०) गृध्नु, पृषोदरादित्वादुकारस्य अकारः। गृध्नु देखो।

गृध्नु (सं० त्रि०) गृध्यति कामयते, लिप्सति वा धनमिति-शेषः। लुब्ध, लोभयुक्त।

गृध्नुता (सं० स्त्री०) गृध्नोर्भावः गृध्नु-तल्-टाप्। अभिलाष, अतिशय इच्छा, लुब्धता।

गृध्य (सं० त्रि०) गृध कर्मणि क्यप्। १ अभिलषणीय, वाञ्छनीय। (क्ली०) गृध भावे क्यप्। २ इच्छा, अभिलाष।

गृध्यिन् (सं० त्रि०) गृध्यमस्यास्ति गृध्य-इनि। अभिलाषयुक्त, अभिलाषी।

गृध्र (सं० पु०-स्त्री०) गृध्यति अभिकाङ्क्षति मांसं गृध-क्रन्। १ पक्षीविशेष, गिद्ध, गीध। इसका संस्कृत पर्याय—दाक्षाय्य, वज्रतुण्ड, दूरदर्शन है। मस्तकके ऊपर अथवा जिसके घरके ऊपर गृध्र भ्रमण करे उसका मृत्यु निकटवर्ती समझना चाहिये। २ जटायु पक्षी। (त्रि०) ३ लुब्ध, लोभी।

गृध्रकूट (सं० पु०) गृध्रं प्रधानं कूटं यस्य, बहुव्रो०। मगधदेशके निकटवर्त्ती एक पर्वत। यह पर्वत गिरिव्रजसे २३ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। इसका दूसरा नाम शैलगिरि है।

गृध्रचक्र (सं० पु०) गिद्ध और चकवा।

गृध्रजम्बुक (सं० पु०) शिवजीका एक अनुचर।

गृध्रनखी (सं० स्त्री०) गृध्रस्य नखस्तदाकारोऽस्त्यस्याः गृध्र नख-अच् गौरादित्वात् ङीष्। १ कण्टकपाली वृक्ष, काकादनीका पेड़। २ कोलिवृक्ष, बेरका पेड़।

गृध्रपति (सं० पु०) गृध्राणां पतिः, ६-तत्। गृध्रगणोंके अधीश्वर गिद्धोंका राजा, जटायु।

गृध्रपत्र (सं० पु०) गृध्रस्यपक्षमिव पत्रमस्य, बहुव्रो०। १ बाण, तीर। २ कार्त्तिकके एक सैनिकका नाम।

गृध्रपत्रा (सं० स्त्री०) गृध्रस्य पत्रमिव पत्रं यस्याः, बहुव्रो०। धूमपत्रा वृक्ष, तम्बाकूका गाछ।

गृध्रपुरीष (सं० पु०) गृध्र पक्षीकी विष्ठा।

गृध्रमल (सं० पु०) ६-तत्। गृध्र पक्षीकी विष्ठा

गृध्रभोजात्मक (सं० पु०) श्वफल्कके एक पुत्रका नाम।

गृध्रयातु (सं० पु०) गृध्ररूपेण याति या-तुन्। अथवा गृध्रैः परिकरभूतैः सह यातयति यात-उण्। राक्षस विशेष, जो गृध्र रूपधारण कर आकाशमें परिभ्रमण करता है।

गृध्रराज (सं० पु०) गृध्राणां पक्षिणां राजा, ६-तत्। गरुड़के पुत्र जटायु।

गृध्रवट (सं० पु०) गृध्रोपलक्षितो वटोऽत्र बहुव्री०। तीर्थविशेष, देवस्थान। इस तीर्थमें वृषवाहन शिवजीकी मूर्ति है। इस स्थान पर उपस्थित हो स्नान करके शरीरमें भस्म लगानेसे ब्राह्मणोंको द्वादशवार्षिक व्रतानुष्ठानके समान फल होता है, और दूसरे वर्णके समस्त पाप विनष्ट होते हैं।

गृध्रव्यूह (सं० पु०) गिद्धके (भारत ३।८४ अ०) आकारकी सेनाकी रचना।

गृध्रसद् (सं० त्रि०) गृध्रे सीदति गृध्रेण सीदति गच्छति वा सद्-क्विप्। जो गृध्र पर उपवेशन करता है अथवा जो गिद्ध पर चढ़ कर भ्रमण करता है।

गृध्रसी (सं० स्त्री०) गृध्रमपि स्यति सो-क गौरादित्वात् ङीप्। वातरोगविशेष। (Lumbago) भावप्रकाशमें इनका लक्षणादि यों लिखे हैं—कुपित वायु नितंबदेशमें आश्रय कर स्तब्धता और वेदना उत्पन्न करता, इससे नितम्बस्थान बार बार स्पन्दित हुआ करता है। इसीको गृध्रसी कहते हैं। क्रमसे रोग बढ़ कर गाढ़मूलसे ऊरु, कटि, पृष्ठ, जानु, जङ्घा और पदद्वयमें पहुंच जाता और स्थान स्थानमें स्तब्धता, वेदना तथा स्पन्दन उत्पादन करने लगता है।

यह गृध्रसी रोग दो तरहका है—असंसृष्ट वायुजनित तथा कफसंसृष्टवायुजनित। असंसृष्ट वायुज गृध्रसी रोगमें शरीरमें वेदना, तथा जानु, जङ्घा और ऊरुसन्धिमें स्तब्धता और स्फुरण होते हैं। कफ संसृष्टवायुजनित गृध्रसी रोगमें शरीरकी गुरुता, अग्निमान्द्य, तन्द्रा (उङ्घाई), मुखसे लालस्राव तथा अरुचि होती है।

गृध्रसी रोगाक्रान्त मनुष्यको सबसे पहले वमन द्वारा शोधन करना चाहिये। यदि रोगीमें आमदोष न रहे अथवा अग्निकी वृद्धि मालूम पड़े तो वस्तिक्रिया द्वारा चिकित्सा करना उचित है। विरेचन या वमनसे शोधन किये बिना वस्तिक्रिया करना निषिद्ध है।

प्रातःकाल गोमूत्रके साथ थोड़े परिमाणमें रेंड़ीका तेल एक मास तक सेवन करनेसे गृध्रसी रोग दूर हो जाता है अथवा आर्द्रकका रस, जम्बीर नीबूका रस, अम्लवेतस (खट्टा साग)का रस और गुड़ बराबर भाग लेकर तैल या घृत प्रक्षेप कर पान करनेसे गृध्रसी रोगका प्रतिकार होता है। रेंड़ीकामूल, बेलमूल, वृहती और कण्टकारी सर्व समेत २ तोलाको आधसेर पानीमें सिद्ध करें। आधा पाव या दो छटांक पानी रहने पर उतार लें। इसमें थोड़ा सौवर्चल लवण (सोरानमक) डाल कर पान करनेसे गृध्रसीजनित शूल नष्ट होता है। गोमूत्र और एरण्ड तैल ४ तोलाके साथ ४ माषा पिप्पली चूर्ण मिश्रित कर पान करनेसे पुराना वात और कफसे उत्पन्न गृध्रसी रोग दूर हो जाता है। वासक, दन्ती और सोंदाल २ तोला आधा सेर पानीमें सिद्ध कर आधपाव पानी रहने पर उतार लें और उसे अच्छी तरह छान कर थोड़ा एरण्डका तैल मिला कर पान करनेसे अचल गृध्रसी रोगीकी स्तब्धता दूर होकर गमनशक्तिका सञ्चार होता है। वात देखो।

गृध्राकार (सं० पु०) भाषपक्षी।

गृध्राण (सं० पु०) १ गृध्रके जैसा स्वभाव। २ गृध्रपत्रा वृक्ष, तम्बाकूका पेड़।

गृध्राणी (सं० स्त्री०) गृध्र इवानिति अन्-अच् गौरादित्वात् ङीष् संज्ञायां णत्वं। धूम्रपत्रावृक्ष; तम्बाकूका पेड़।

गृध्री (सं० स्त्री०) कश्यपको स्त्री ताम्राकी एक कन्या। (विष्णुपु० १।२१।१५)

गृभ (सं० पु०) गृह हकारस्य भकारः छान्दसत्वात्। गृह, घर।

गृभि (सं० पु०) ग्रह-कि संप्रसारणं छान्दसत्वात् हकारस्य भकारः। पकड़नेकी क्रिया, ग्रहण करनेका भाव।

गृभीत (सं० त्रि०) ग्रह-क्त-छान्दसत्वात् हकारस्य भकारः। १ गृहीत, पकड़ा हुआ, ग्रहणयुक्त। २ गृहीतयज्ञ, जिसने यज्ञ ग्रहण किया हो। (भागवत १०।८०।१४)

गृभीततात (सं० स्त्री०) गृभीताना गृहीतयज्ञानां तातिः, ६-तत्। गृहीतयज्ञसमूह।

गृष्टि (सं० स्त्री०) गृह्णाति सकृद्‌गर्भं ग्रह कर्त्तरि क्तिच् पृषोदरादिवत् साधु। १ छोटी गाय जिसने सिर्फ एक बार बच्चा जना हो, एक बार प्रसूत धेनु, इसे सकृत्प्रसूतिका भी कहते हैं। सकृत्प्रसूता स्त्री, युवती स्त्री जो सिर्फ एक बार प्रसव हुई हो। ३ वराहक्रान्ता। ४ बेर-का पेड़। ५ काश्मरी या गंभारीवृक्ष।

गृष्टिक्षीर (सं० क्ली०) सकृत्प्रसूतिका गोका दूध।

गृष्ट्या (सं० स्त्री०) वत्सा।

गृष्ट्यादि (सं० पु०) गृष्टिरादिर्यस्य, बहुव्री०। पाणिनीय एक गण। गृष्टि, हृष्टि, वलि, हलि, विश्रि, कुद्रि, अजवस्ति और मित्रयु, इन सभीको गृष्ट्यादिगण कहते हैं।

गृह (सं० क्ली०) गृह्णाते धर्माचरणाय ग्रह-क। १ गेह, घर, ईंट या मिट्टीसे बना हुआ वासस्थान। 'गृह' शब्द अर्द्धर्चादि गणान्तर्गत होनेसे दोनों लिङ्ग हो सकता है। पुंलिङ्गमें गृह शब्द बहुवचनांत है। उसका उत्तर एक वचन वा दो वचन नहीं होता।

"गृहैर्विशालैरपि भूरिशालैः।" (माघ)

पर्याय—गेह, उद्वसति, वेश्म, सद्म, निकेतन, निशांत, वस्त्य, सदन, भवन, अगार, मन्दिर, निकाय्य, निलय, आलय, वास, कूट, शाला, सभा, पस्त्य, सादन, आगार, कुटि, कुटीर, निकेत, माला, मन्दिरा, ओक, निवास, संवास, आवास, अधिवास, निवसति, वसति, केतन, गय, कुदर, गर्त, हर्म्य, अस्त, दुरोण, नील, दुर्या, स्वसराणि, अमा, दमे, कृत्ति, योनि, शरण, वरूथ, छर्दि, छया, शर्म, अज।

गृहस्थीवाले सब ही गृह (घर) में रहते हैं। धनी हो या दरिद्र, सब होके लिये गृहकी आवश्यकता है। गृहके बिना किसीकी भी गुजर नहीं हो सकती। इसी लिए आर्योंने गृह-निर्माण करनेकी विधि और उसका शुभाशुभ संस्कृत भाषामें लिखी है। उन सब प्राचीन ग्रन्थोंको देखनेसे मालूम होता है कि, पहिले गृह बनानेके कोई नियम ही नहीं थे। बादमें दिनों दिन उन्नति वा रुचिका परिवर्तन होनेसे आर्योंने बहुत गवेषणापूर्वक गृह-निर्माण करनेकी प्रणाली चलाई; पीछे उनहीको उन्नति होती आई और नये नये नियम बनते गये। मत्स्यपुराणमें लिखा है कि, "भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, नग्नजीत्, विशालाक्ष, पुरन्दर, ब्रह्मा, कुमार, नन्दीश्वर, शौनक, गर्ग, वासुदेव, अनिरुद्ध, शुक्र और वृहस्पति—ये अठारह हो वास्तुशास्त्रके उपदेष्टा हैं (१)।" इनमेंसे प्रत्येकका बनाया हुआ एक एक वास्तुशास्त्र हैं। उनमेंसे मयकृत मयशिल्प, विश्वकर्मा कृत विश्वकर्मप्रकाश, विश्वकर्मशिल्प, मानवसारशिल्प और राजवल्लभमण्डन—इन ग्रन्थोंमें घर बनानेके नियम विस्तृत मिलते हैं। इनके अलावा मत्स्यपुराण और वृहत्संहितामें भी बहुतसा विवरण मिलता है। उपर्युक्त प्राचीन ग्रन्थोंके अनुसार गृह निर्माण-प्रणाली लिखी जाती है।

जिस जगह घर बनवाना हो सबसे पहिले वहांकी मिट्टीकी परीक्षा करनी चाहिये। विश्वकर्माने मिट्टीकी परीक्षा करनेकी विधि इस प्रकार लिखी है—मिट्टी साधरणतः चार प्रकारकी होती हैं,—ब्राह्मणी, क्षत्रिणी वैश्या और शूद्राणी। जिस मिट्टीका रंग सफेद हो और अच्छी सुगन्धवाली तथा मधुर रसवाली हो, वह ब्राह्मणी है। जिसका रंग लाल हो, रक्तकी भांतिकी गन्धवाली और कषाय रसवाली हो वह क्षत्रिणी है। जो मिट्टी पीतवर्णवाली, मधुके समान गंधयुक्त और अम्लरसवाली होती है, वह वैश्या है। तथा जो मिट्टी काली, शराब जैसी गंधवाली और कड़ुई होती है, वह शूद्राणी कहलाती है। यह चार वर्णकी मिट्टी यथाक्रमसे चारों वर्णवालोंके लिये प्रशस्त है। चतुरस्र द्वीपाकार, सिंहाकृति, वृषभसदृश, गोलाकार, भद्रपीठ, त्रिशूल वा लिंग सदृश भूमि ही उत्तम होती है। त्रिकोण, शकटाकार, मृदंगतुल्य, सर्प वा भेक सदृश, गधा अजगर आदिकी भांतिकी भूमि तथा धनु वा परशु तुल्य, दुर्गन्धयुक्त भूमि वर्जनीय है, ऐसी भूमि पर गृह-निर्माण नहीं करना चाहिये। जो स्थान देखनेमें मनोहर हो, उसी स्थान-

---

(१) "भृगुरत्रिर्वशिष्ठश्च विश्वकर्मा मयस्तथा।
नारदो नग्नजिच्चैव विशालाक्ष पुरन्दरः॥
ब्रह्मा कुमारो नन्दीशः शौनको गर्ग एव च।
वासुदेवोऽनिरुद्धश्च तथा शुक्र-वृहस्पती॥
अष्टादशैते विख्याता वास्तुशास्त्रोपदेशकाः॥" (मत्स्यपुराण २५२अ०)

की परीक्षा करानी चाहिये। दृढ़ और नीची भूमि ब्राह्मणोंके लिये अच्छी होती है। क्षत्रियोंके लिए गहरी जमीन, वैश्योंके लिए ऊंची और शूद्रोंके लिए समान भूमि ही उत्तम है।

जिस स्थान पर कुश, काश, ब्राह्मी दुर्वा न पैदा होती हो, वह स्थान क्षत्रियोंके लिए, फल और पुष्पयुक्त स्थान वैश्योंके लिए; तथा साधारण तृणयुक्त स्थान शूद्रोंके लिये उत्तम है। जिस स्थानमें बड़े बड़े पत्थर हों, जो देखनेमें मूसल सरीखा हो, अतिशय वायुके वेगसे पीड़ित हो, विकटाकार हो, वल्लतृण वा भल्लकयुक्त हो जिस स्थानके आस-पास चैत्य, श्मशान, वल्मीक या धूर्तोंका वास हो, जो स्थान चतुष्पथ हो, देवालय या मन्त्रिभवनके निकटवर्ती हो और जिस स्थानमें बहुतसे गड्ढे हों, वह स्थान मनोरम होने पर भी त्याज्य है

जिस वर्णके लिए जिस रंगकी और जो गन्धयुक्त मृत्तिका प्रशस्त है, उस वर्णवालेको उसीमें धन, धान्य और सुखकी वृद्धि हो सकती है। परन्तु इसके विपरीत होनेसे विपरीत फल होता है। चतुरस्र भूमि पर घर बनवानेसे धनकी वृद्धि, सिंहाकार जमीन पर घर बनवानेसे गुणशाली पुत्रका लाभ, वृष सदृश स्थान पर बनवानेसे पशुवृद्धि, वृत्ताकारमें वित्तलाभ, तथा भद्रपीठ और त्रिशूलाकार भूमिमें वीरका जन्म और नाना प्रकारके सुखोंकी प्राप्ति होती है। लिङ्गाभ भूमि लिङ्गीके लिए प्रशस्त है। प्रासादध्वज सदृश स्थानमें पदोन्नति होती है, और कुम्भाकार, त्रिकोण, शकटाकार, तथा सर्प वा व्यञ्जन सदृश भूमि घर बनानेसे यथाक्रमसे धनवृद्धि, सुख सौख्य, अर्थ और धनहानि होती है। मृदङ्गाकार भूमि वंशनाशिनी है, सर्प वा मण्डूकाकार भूमि पर घर बनानेसे भय, गर्दभ सदृश स्थानमें धननाश, अजगर सदृश भूमिमें मृत्यु और चिपिटाभूमिमें पौरुषकी हानि होती है। चैत्यके पास घर बनवानेसे गृहस्वामीके लिए भय, धूर्तोंके वासस्थानके पास बनवानेसे पुत्रकी मृत्यु, चतुष्पथमें अकीर्ति और मन्त्रिभवनके पास गृह बनवानेसे धनकी हानि होती है। इस प्रकार निन्दनीय स्थानोंके बुरे फल और उत्तम स्थानोंके अच्छे फल शास्त्रकारोंने लिखे हैं। उन विवरणोंको मूलग्रन्थमें देखना चाहिये।

स्थान मनोनीत होने पर उस जगह एक हाथका एक गड्ढा खोदना चाहिये। उस गड्ढेकी मिट्टी बाहर निकाल कर फिर उसीमें डाल देना चाहिये। मिट्टी अगर ज्यादा हो तो उत्तम, समान हो तो मध्यम और कमती हो तो उस स्थानको जघन्य समझना चाहिये। जघन्य स्थानमें गृह निर्माण करनेसे गृहस्वामीका अमंगल होता है। अथवा उस गड्ढेको पानीसे भर कर एक सौ पैर चलना चाहिये; फिर लौट कर अगर गड्ढेका पानी जरा भी न घटे तो उस जमीनका सबसे उत्तम समझना चाहिये या उस गड्ढेमें चार सेर पानी डाल कर सौ पैर चलना चाहिये; और लौटकर यदि उसे ६४ पल पानी मिले तो उस भूमिको भी उत्तम समझना चाहिये। कच्चे मिट्टीके बरतनमें चार बत्ती जला कर उस गड्ढेमें रख देना चाहिये, जिस दिशाकी बत्ती जोरसे जले; उस दिशाका प्रशस्त समझना चाहिये। उस गड्ढेमें श्वेत, रक्त, पीत और कृष्णवर्णके चार फूल रखदेना चाहिये। दूसरे दिन सुबह तक जिस वर्णका फूल म्लान न हुआ हो उसी जातिके लिए वह स्थान मंगलकर होता है। वराहमिहिरका कहना है कि शास्त्रकारोंने भूमिकी बहुत तरहकी परीक्षाएं लिखी हैं, उसमेंसे गृहस्वामी जिस परीक्षाको पसंद करे, उस परीक्षा द्वारा जमीनकी जाँच करानेसे ही काम चल सकता है। इससे एक स्थानकी बार बार परीक्षा नहीं करनी पड़ती।

जो स्थान घरके लिये मनोनीत किया गया है, उस स्थानमें पहिले हल चला कर सर्वबीज बोना चाहिये। उक्त बीज तीन रात्रिमें अङ्कुरित हो, तो उसे उत्तम और पांच रात्रिमें अङ्कुरित हो, तो उसे अधम समझना चाहिये। व्रीहि, शालि, मुद्ग, गोधूम, सर्षप, तिल, और यव ये सात सब बीज हैं।

इस प्रकारसे वास्तु भूमिकी परीक्षा करके, फिर शुभदिन, शुभलग्न और शुभ शकुनमें गृहस्वामीको राज-मजूरोंको साथ लेकर उस स्थानमें जाना चाहिये।

बृहत्संहितामें लिखा है कि, घर बनानेसे पहिले उस जमीनमें हल चलाकर वहां बीजरोपण करना पड़ता है। बादमें उस जगह एक दिवारात्रि ब्राह्मण और गायको

रखना पड़ता है। इसके बाद उस जगह घर बनाना प्रारम्भ करना चाहिये। (वृहत्सं० ५३।९८)

गृहारम्भका शुभाशुभ चिह्न शकुन शब्दमें देखो।

वृहत्संहिताके मतसे—समस्त वास्तु गृह पांच भागोंमें विभक्त हैं, उनमेंसे प्रथम तो उत्तम है, द्वितीय उससे मध्यम और उससे अधम तृतीयादि हैं। परिमाणके अनुसार घरके ये पांच भेद होते हैं। जिस घरका विस्तार १०८ हाथ हो और दैर्घ्य विस्तारके साथ उसका चतुर्थांश मिलाकर १३५ हाथ हो, वही राजाके लिये उत्तम घर है और उसके विस्तारमेंसे यथाक्रम ८ ८ हाथ बाद देनेसे दूसरे चार घरोंका परिमाण निकलता है, वे चार घर एक दूसरेकी अपेक्षा परस्पर अधम हैं। २य प्रकारका विस्तार १०० हाथ और दैर्घ्य १ ५ हाथ है। ३य का विस्तार ९२ हाथ और दैर्घ्य ११५ हाथ है। ४थ प्रकारका विस्तार ८४ हाथ और दैर्घ्य १०५ हाथ तथा ५म प्रकारका विस्तार ७६ हाथ और दैर्घ्य ९५ हाथ है। सेनापतिके पांच प्रकारके गृहके १म घरका विस्तार ६४ हाथ और दैर्घ्य ७४ हाथ १६ अंगुलि है। इस विस्तारसे छह छह बाद देनेसे यथाक्रमसे बाकीके चार घरोंका परिमाण होगा। जैसे—२य—वि० ५८, दै० ६७।८; ३य—वि० ५२, दै० ६०।१६, ४र्थ—वि० ४६, दै० ५३।१६ और ५म—वि० ४०, दै० ४६।१६। मन्त्रीके पांच प्रकारके घरोंमेंसे प्रथम घरका विस्तार ६० हाथ होगा और दूसरे इससे चार हाथ कमती कमती होंगे। विस्तारके साथ उसका चौथाई और जोड़ देनेसे ही उसकी लम्बाई हो जाती है। १म—विस्तार ६०, दैर्घ्य ६७।१२ . २य—वि० ५६, दै० ६३; ३य—वि० ५२, दै० ५८।१२, ४र्थ—वि० ४८, दै० ५४ और पञ्चम वि० ४४, दै० ४९।१२। मन्त्रीके घरसे आधा विस्तार और लम्बाई वाला घर राजमहिषी (रानी) के लिये उपयुक्त है। युवराजके पाँच प्रकारके मकानोंका परिमाण,—१म—वि० ८०, दै० १०६।१६, २य—वि० ७४, दै० ९८।१६, ३य वि० ६८, दै० ९०।१६, ४र्थ—वि० ६२, दै० ८२।१६ और पंचम—वि० ५६, दै० ७४।१६। युवराजके अनुजोंका निवासस्थान इससे आधे विस्तार और दैर्घ्ययुक्त होना चाहिये। श्रेष्ठ राजपुरुषोंके घरका परिमाण उत्तमक्रमसे विस्तार ४८, ४४, ४०, ३६ और ३२, उत्तमक्रमसे दैर्घ्य—६७।१२, ६२।०, ५६।१२, ५१।०, और ४५।१२ है। कञ्चुकी, वेश्या और नृत्यगीतादि वेत्ताओंके घरका परिमाण उत्तमक्रमसे विस्तार २८, २६, २४, २२ और २० उत्तमक्रमसे दैर्घ्य २८।८, २६।८, २४।८, २२।८ और २०।८ है। अध्यक्ष और अधिकृत व्यक्तियोंके घरका परिमाण कोषगृह और रतिगृहके परिमाणके समान समझना चाहिये। कार्याध्यक्ष और दूतोंके घरका परिमाण उत्तमक्रमसे विस्तार २०, १८, १६ १४ और १२, दैर्घ्य ३५।८, ३५।१६, ३२।४, २८।१६ और २५।४ है। दैवज्ञ, पुरोहित और चिकित्सकोंके घरका माप उत्तमक्रमसे विस्तार ४०, ३६, ३२, २८ और २४, दैर्घ्य ४६।१६, ४२।०, ३६।१६, ३२।१६ और २८ हाथ है। वास्तु-गृहका जितना विस्तार हो, उसकी अगर उतनी ही ऊंचाई हो, तो वह मकान मङ्गलकर होता है। परन्तु जिन घरोंमें सिर्फ एक ही कमरा है, उस घरकी लम्बाई विस्तारसे दूनी होनी चाहिये। कोषगृह और रतिगृहका माप उत्तमक्रमसे विस्तार ४४, ४२, ४०, ३८, और ३६, दैर्घ्य ६०।८, ५७।१६ ५४।८, ५१।८ और ४८।८ हाथ है। (वृहत्सं० ५३ अ०)

ब्राह्मण आदि पृथक् पृथक् जातियोंका जिन जिन मकानों पर अधिकार है, उसका भी वर्णन वृहत्संहिता में लिखा है। ये वास्तु भी पूर्वप्रदर्शित घरोंकी भांति पांच भागोंमें विभक्त हैं। ब्राह्मणोंके पाँच प्रकारके गृहोंका विस्तार ३२, २८, २४, २० और १६ हाथ है। क्षत्रियोंके रहने योग्य चार प्रकारके मकानोंका विस्तार २८, २४, २० और १६ हाथ है। वैश्योंके रहने योग्य गृह तीन प्रकार हैं, उनका विस्तार २४, २० और १६ हाथ है। शूद्रके रहने लायक घर दो प्रकारके हैं उनका विस्तार २० और १६ हाथ है। इसके अलावा अन्त्यज जातियोंको सिर्फ एक प्रकारके १६ हाथके घरमें ही रहनेका अधिकार है। ब्राह्मणके पांच प्रकारके गृहका दैर्घ्य इस प्रकार है,—३५।४।४८, ३०।१८।१२, २६।९। ३६, २२।० और १७।१४।२२ है। क्षत्रियके चार प्रकारके गृहका दैर्घ्य ३१।१२, २७।०, २२।१२ और १८ हाथ है। वैश्यके तीन प्रकारके वास्तुका दैर्घ्य इस प्रकार

है,—२८।०, २३।१६ और २८।८। शूद्रोंके दो प्रकारके घरको लम्बाई २५ और २० हाथ हैं। अन्त्यजोंके घर-को लम्बाई १६ हाथसे ज्यादा न होनो चाहिये। सब हो जातियोंके लिये अपने अपने परिमाणसे ज्यादा वा कम मापके मकान अमङ्गलकर हैं। परन्तु पशुालय, प्रव्राजिकालय, धान्यागार, अस्त्रागार, अग्निशाला और रतिगृह वा बैठकका परिमाण अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं। कोई भी घर हो एक सौ हाथसे ज्यादा ऊंचा अच्छा नहीं और न करना हो चाहिये।

मकानके भीतरी हिस्सेको शाला कहते हैं। कौन-से मकानकी शाला किस मापकी होनी चाहिये, उसका परिमाण बृहत्संहितामें इस प्रकार लिखा है—राजा और सेनापतिके मकानके व्यासके साथ ७० को जोड़ कर २ से भाग देकर जो भागफल हो, उस १४ से भाग देने पर जो उपलब्ध होगा, वही नृप गृहकी शालाका माप शाला भित्तिके बाहिरके हिस्सेके सोपानयुक्त आंगनको प्राचीन वास्तुशास्त्रोपदेष्टाओंने अलिन्द नामसे उल्लेख किया है। पूर्वप्रदर्शित द्विविभक्त अंकको ३५से भाग करनेसे जो फल उपलब्ध होगा, वही राजाके गृहके आंगनका परि-माण है। दूसरी जातिके मकानकी शाला और आंगन-का परिमाण निकालना हो तो राजा और सेनापतिके घरके व्यासके योगफलके साथ ७० को जोड़कर, उसमेंसे अपनी जातिके व्यासांक घटा देना चाहिये। पीछे उसमेंसे आधे अंक घटा कर, उसको यथाक्रमसे १४ और ३५ द्वारा भाग करके जो दो अंक उपलब्ध होंगे, उसे अपनी जातिको शाला और आंगनका माप समझना चाहिये।

पहिले ब्राह्मण आदिके पांचप्रकार वास्तुपरिमाण जो कहे गये हैं, उसमें यथाक्रमसे ४।१७, ४।३, ३।१५, ३।१३ और ३ हाथ ४ अङ्गुलको शलाएं तथा ३।१८, ३।८, २।२०, २।१८ और २ हाथ ३ अंगुलके आंगन होने चाहिये। शालाका ½ अंश स्थान भवनके बाहर रखना चाहिये। प्राचीनकालमें वीथिका कहा जाता था। यह वीथिका मकानके पूर्वकी तरफ रहनेसे, उस मकान-को सोष्णीष, पश्चिममें रहनेसे सायाश्रय और उत्तर या दक्षिणमें रहनेसे उस मकानका सावष्टम्भ नामसे उल्लेख कर सकते हैं। यदि किसी मकानके चारों ओर वैसी वीथिका रहे, तो उसको सुस्थित कहते हैं। वास्तुशास्त्रमें इस प्रकारके मकानोंकी विशेष प्रशंसा की गई है। ये सब मकानहो गृहस्थके लिए मंगलजनक हैं।

मकानकी ऊंचाई या उच्छ्राय—उत्तम मकानके विस्तारके -अंशके साथ ४ हाथ और जोड़देनेसे जितना होगा, उस घरकी ऊंचाई उतनी हो होनी चाहिये। बाकीके चार प्रकारके घरोंकी ऊंचाई क्रमश: उससे बारहवें भाग घटती जायगी।

भीतका माप—जो भीतें पकी हुई ईंटोंसे बनाई जाती हैं, उनका परिमाण व्यासके १६ भागमेंका १ भाग करना चाहिये। परन्तु काठसे जो भीत बनाई जाती है, उसका परिमाण अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।

दरवाजेका परिमाण—राजा और सेनापतिके घरके व्यासके साथ ७० जोड़ कर ११से भाग देनेसे जो फल उपलब्ध होगा उतने हाथका विस्तार उसके दरवाजेका होगा। उस दरवाजेका विस्तार जितने अङ्गुलका होगा उतने हो हाथकी उसकी ऊंचाई होनी चाहिए तथा विस्तारसे आधा दरवाजेका फैलाव करना उचित है। ब्राह्मण आदि दूसरी जातिके लोगोंके गृहव्यासके पञ्चांशके साथ १८ अंगुल जोड़नेसे जितना हो, उतना हो उनके घरके दर-वाजेका माप है। द्वारके मापका अष्टांश, दरवाजेका फैलाव और फैलावसे दूनी ऊंचाई होनी चाहिये। दरवाजेकी ऊंचाई जितने हाथकी होगी, उतने अङ्गुल प्रमाण उसको दोनों शाखा होनी चाहिये, और शाखासे ड्योढ़ी चौखट होनी चाहिये। ऊंचाई जितने हाथकी होगी उतनी संख्याको १७से गुणा करके ८० सेभाग देनेसे जो फल उपलब्ध होगा उतना हो उसके पृथुत्व (मुटाई) का नाप समझना चाहिये। (बृ० सं० ५३।१-२०)

ऊंचाईको ५से गुणा करके ८०से भाग देने पर जितना लब्ध बचा हो उसमेंसे अपना १०वां अंश घटानेसे जो बचे उतने मापको स्तम्भको अगाड़ी करना चाहिये। स्तम्भ यदि समचतुरस्र या चौखूंटा हो तो उसे रुचक, अष्टास्त्रि या अठकोन हो तो वज्र, सोलह कोणवाला हो तो द्विवज्र, बत्तीस कोनवाला हो तो प्रलीनक और वृत्ताकार वा गोल हो तो उसे वृत्त कहते

हैं। ये पांच प्रकारके स्थान उत्तम होते हैं। गृहस्वामी इनमेंसे जैसा चाहे वैसा स्तम्भ बनवा सकता है। इनके अलावा दूसरे प्रकारके स्तम्भ नहीं बनाने चाहियें।

विश्वकर्मप्रकाशमें मकानकी लम्बाई चौड़ाईके हिसावसे, उसका शुभाशुभ फल जाननेका तरीका इस प्रकार लिखा है—गृहके विस्तारको दैर्घ्यसे गुणा करके ८ से भाग करनेसे जो बचेगा, उसके अनुसार ध्वजादि आय होती है। अर्थात् ८से भाग करनेसे यदि १ बचे तो ध्वज, २ बचे तो धूम, ३ बचे तो हरि, ४ बचे तो कुक्कुट, ५ बचे तो गाय, ६ बचे तो गर्दभ, ७ बचे तो हस्ती, और ८ या शून्य बचे तो वायस नामक आय होती है। यह ध्वजादि आठों आय यथाक्रमसे पूर्वादि आठों दिशाओंमें अवस्थित हैं। अपने अपने स्थानसे पांचवां स्थान इनके लिये वैरी है। घरको आय विषम होनेसे शुभफल और सम होनेसे शोक व दुःख होता है। अग्निशाला और अग्निजीवियोंके लिए धूम आय अच्छी होती है। किसी वास्तुशास्त्रोपदेष्टाका मत ऐसा भी है कि, म्लेच्छादि जातियोंके लिये कुक्कुर आय उत्तम होती है। वैश्यके घरके लिये गर्दभ आय और शूद्रोंके घरके लिये काक आय अच्छी है। वृष, सिंह और गज नामक आयमें प्रासाद और पुरगृह बनवाने चाहिये। हस्ती आयमें वा ध्वज आयमें हस्तिशाला, गर्दभ, ध्वज और वृषभ आयमें वाजिशाला, गज वृष वा ध्वज आयमें पशुशाला बनवानेसे शुभ फल होता है। ब्राह्मणके लिये ध्वज आय अच्छी है। ब्राह्मणोंको पूर्वकी तरफ द्वार करना चाहिये। क्षत्रियोंके लिये सिंह आय प्रशस्त है, दरवाजा उत्तरमें होना चाहिये। वैश्योंके लिए वृष आय शुभ है, दरवाजा दक्षिणमें करना चाहिये। सब आयोंमेंसे ध्वज आय ही सबसे श्रेष्ठ है। वृहस्पतिके मतानुसार ध्वज आय क्षत्रिय और वैश्योंके लिए प्रशस्त है। ब्राह्मणोंके लिए सिंह और वृषभ नामकी आय सर्वथा त्याज्य है। सिंह और कुक्कुर आयसे अल्प आयास, ध्वज आयसे पूर्ण सिद्धि, वृष आयसे पशुओंकी वृद्धि और गज आय होनेसे सम्पद की वृद्धि होती है। इसके सिवाय अन्यान्य आयोंसे दुःख और शोक होता है।

मकानके पिण्डाङ्कको ८से गुणा करके फिर ८से भाग देनेसे जो अवशिष्ट बचेगा, उसके अनुसार आय होती है। उसी प्रकार पिण्डाङ्कको ८से गुणा कर फिर ७से भाग करके जो अवशिष्ट बचेगा, उसके अनुसार रवि, भौम आदि वार होते हैं। पिण्डको ६से गुणा करके फिर उसको ८से भाग देनेसे अंश, ८से गुणा करके १२से भाग करनेसे धन, ३ द्वारा गुणा करके ८से भाग करनेसे ऋण वा व्यय, ८ द्वारा गुणा करके ७से भाग करनेसे नक्षत्र, ८से गुणा करके १५ द्वारा भाग देनेसे तिथि, ४ द्वारा गुणा कर २७से भाग करनेसे योग और गृहपिण्डके ८से गुणा करके फिर १२ द्वारा भाग करनेसे वर्ष जाना जाता है। (विश्वकर्मप्रकाश) इसका फल पीयूषधारामें ऐसा लिखा है कि—विषम आय शुभकारक और सम आय दुःख और शोकजनक होता है। सूर्य और मङ्गलके वार तथा राश्यंश अग्नि भयकर होते हैं। इसके सिवा दूसरे ग्रहोंके वार और राश्यंश अच्छे हैं। पहलेको प्रक्रियाके अनुसार गृहका नक्षत्र यदि स्थिराश्यात्मक हो तो मकान बनवाना चाहिये।

धन और ऋणका फल प्रक्रियाके अनुसार मकानके ऋणसे धन अधिक होनेसे धनकी वृद्धि होती है, पर धनसे ऋण ज्यादा होनेसे धनकी हानि होती है; इस लिए ऋण अधिक हो; तो घर न बनवाना चाहिये।

नक्षत्रफल—गृहका नक्षत्र गृहस्वामीके लिए विपत्तिकर तारा होनेसे विपत्ति, प्रत्यरि होनेसे अमङ्गल और निधनाख्य होनेसे गृहस्वामीकी मृत्यु हो जाती है। इन नक्षत्रोंमें घर न बनवाना चाहिये। क्योंकि ये नक्षत्र नाना उपद्रव्यवोंके कारण हैं। किसी किसी ज्योतिर्वेत्ताके मतसे जिस नक्षत्रमें गृहकार्य प्रारम्भ करना हो, वह नक्षत्र गृह नक्षत्रसे जितनी संख्यामें अवस्थित हो, उसको ८ से भाग करनेसे जो बचे उसके अनुसार जन्म सम्पद विपद तारा आदि होते हैं। इस नियमसे विपद, प्रत्यरि वा निधन तारा होनेसे उसदिन गृह नहीं बनाना चाहिये। इसके सिवा किसी किसी ज्योतिर्वेत्ताका यह भी कहना है कि, गृहकर्त्ताके नक्षत्रसे गृहनक्षत्रकी गणना करने पर जो संख्या होती है, उसको ८से भाग करनेसे जो अवशिष्ट बचे; उसके अनुसार जन्म आदि तारा होते हैं। घर और गृहस्वामीके एकसे नक्षत्र होनेसे स्वामीकी [illegible]

मृत्यु होती है। परन्तु वशिष्ठने ऐसा लिखा है कि, गृह और गृहस्वामीकी एकसी राशि तथा एकसे नक्षत्र होनेसे ऐसा होता है। भिन्न भिन्न राशिमें एकसे नक्षत्र होने पर भी मकान बनाया जा सकता है। इसमें कोई तरहका विघ्न नहीं आता। व्यवहारसमुच्चयमें ऐसा लिखा है—कृत्तिका आदि तीन तीन नक्षत्रोंके यथाक्रमसे नौ फल होते हैं जैसे,—१ रोगनाश, २ पुत्रलाभ, ३ धनकी प्राप्ति, ४ शोक, ५ शत्रुका भय, ६ राजाका भय, ७ मृत्यु, ८ सुख, ९ प्रवास।

वास्तुशास्त्रके अनुसार मकानके नक्षत्र अश्विनी, भरणी और कृत्तिका होनेसे मेषराशि, रोहिणी और मृगशिरा होनेसे वृषराशि आर्द्रा और पुनर्वसु होनेसे मिथुनराशि, पुष्या और अश्लेषा होनेसे कर्कट राशि, मघा, पूर्वफाल्गुनी और उत्तरफाल्गुनी होनेसे सिंह राशि, हस्ता और चित्रा होनेसे कन्या, स्वाती और विशाखा होनेसे तुला, अनुराधा और ज्येष्ठा होनेसे वृश्चिक, मूला, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा होनेसे धनु, श्रवणा और धनिष्ठा होने पर मकर, शतभिषा और पूर्वभाद्र होनेसे कुम्भ तथा उत्तरभाद्र और रेवती नक्षत्र होनेसे मकानकी मीनराशि होती है।

तिथिका फल—पूर्व प्रक्रियाके अनुसार घरकी तिथि रिक्ता वा अमावश्या होनेसे घर न बनाना चाहिये। इसके अलावा दूसरी तिथियोंमें घर बनानेसे मङ्गल होता है।

योगका फल—जो योग शुभ कहे गए हैं, घरके लिए वेही योग शुभ हैं। अशुभ योग होनेसे अमङ्गल होता है।

आयुका फल—प्रक्रियाके अनुसार जितने वर्षकी आयु निकलेगी उतने वर्ष तक मकानकी स्थित समझना चाहिये।

अंशका फल—द्वितीय अंशमें गृह बनानेसे मृत्युका भय, रोग और शोक उत्पन्न होते हैं। शुभग्रहके अंशको अच्छा और अशुभग्रहके अंशको अनिष्टकर समझना चाहिये।

इसी नियमके अनुसार घरका आय-व्यय आदि जाननेका [illegible]—कोई एक घर लम्बाईमें २८ हाथ और विस्तार-[illegible] है, तो उसकी लम्बाई २८ हाथको विस्तार [illegible] होनेसे प[illegible]नेसे २०३ होगा। यह घरका पिण्ड [illegible] [illegible]३को ९से गुणा करनेसे १८२७ होगा, [illegible] करनेसे बाकी बचेगा ३। इसलिये उस [illegible] हरी आय हुई।

वार—पिण्ड २०३को ९से गुणा करनेसे १८२७ होगा, उसको ७से भाग देनेसे बाकी ७ या शून्य बचेगा। इस प्रकार उस घरका शनिवार हुआ। (नक्षत्रांशक) पिण्ड २०३को ६से गुणा करनेसे १२१८ होता है, इसको ९से भाग करना चाहिये; बाकी बचेगा ३। इस प्रकार उस घरका अंशक ३ हुआ।

धन—पिण्ड २०३×८=१६२४÷१२ अवशिष्ट बचा ४। मकानका धन हुआ ४।

ऋण—पिण्ड २०३×३=६०९÷८=७६ बाकी ४ चा। इस प्रकार घरका ऋण १ हुआ।

नक्षत्र—पिण्ड २०३×८=१६२४÷२७=६० बाकी बचा ४। गृहका नक्षत्र रोहिणी।

तिथि—पिण्ड २०३×८=१६२४÷१५=१०८ अवशिष्ट रहा ४। गृहकी तिथि चतुर्थी हुई।

योग—पिण्ड २०३×४=८१२÷२७=३० बाकी बचा २। घरका योग प्रीति है।

आयु—पिण्ड २०३×८=१६२४÷१२०=१३ बाकी बचा ६४। मकानकी आयु ६४ वर्षकी हुई।

विश्वकर्मप्रकाशके मतानुसार ११ हाथसे लेकर ३२ हाथ तक ही आयादिकी चिन्ता करनी चाहिये। इससे ज्यादा होने पर आयादिकी चिन्ता करना व्यर्थ है। घरकी मरम्मत करते समय आय, व्यय वा मास शुद्धि आदि देखनेकी जरूरत नहीं। वास्तुके ईशान कोणमें देवगृह, पूर्वमें स्नानागार, अग्निकोणमें रसोई घर, दक्षिणमें शयनागार, नैऋत कोणमें अस्त्रशाला, पश्चिमकी ओर भोजनगृह, वायुकोणमें धान्यालय, उत्तरमें भाण्डागार, अग्निकोण और पूर्व दिशाके बीचमें दधिमन्थघर, अग्निकोण और दक्षिण दिशाके बीचमें घृतशाला तथा दक्षिण और नैऋत दिशाके मध्य भागमें पायुघर वा पैखाना करना चाहिये। नैऋत और पश्चिमके बीचमें विद्यालय, पश्चिम और वायु कोणके मध्यमें रोदनघर, वायु और उत्तर दिशाके बीचमें रतिघर वा बैठक, उत्तर और ईशान कोणके मध्यमें औषधालय, ईशाण और पूर्व दिशाके मध्य भागमें अन्यान्य घर बनवाने चाहिये। सूतिकाघर नैऋत कोणमें बनाना उचित है।

आँगन और दरवाजेके भेदसे घर १६ प्रकारका होता है।

१ ध्रुव—यह ऊर्ध्व मुख होता है। इसके किसी भी तरफ आँगन नहीं रखना चाहिये। ऐसे घरमें गृहस्थके धन, धान्य और सुखकी वृद्धि होती है।

२ धन्य- इसका आँगन और द्वार पूर्व दिशामें रखना चाहिये। इसमें धान्यकी वृद्धि होती है।

३ जय—इसका दरवाजा दक्षिणकी ओर होता है। इसका आँगन भी दक्षिण दिशामें करना चाहिये। इस घरमें रहनेवाला सर्वत्र विजय लाभ करता है।

४ नन्द—इसमें पूर्व और दक्षिणमें दो दरवाजे करना चाहिये, और दोनों ओर दो आँगन भी। इसमें गृहिणीकी अकालमृत्यु होती है।

५ खर—जिस घरका दरवाजा और आँगन पश्चिम दिशामें हो, वह खर कहलाता है। इससे धननाश होता है।

६ कान्त—जिस घरमें पूर्व और पश्चिममें दो द्वार तथा दो आँगन रहते हैं। उसे कान्त कहते हैं। फल—पुत्र और पौत्रकी वृद्धि।

७ मनोरम—जिस घरमें दक्षिण और पश्चिममें दो दरवाजे तथा दो आँगन होते हैं, वह मनोरम है। फल—धनकी वृद्धि।

८ सुमुख—जिस घरमें पूर्व पश्चिम और दक्षिणमें तीन दरवाजे तथा तीन आँगन हों, वह सुमुख कहलाता है। फल—भोगोंकी वृद्धि।

९ दुर्मुख—जिस मकानका दरवाजा और आँगन उत्तर दिशामें हो, उसको दुर्मुख कहते हैं। इसका फल—विमुखता है।

१० क्रूर—जिस गृहमें पूर्व और उत्तरमें दो दरवाजे और दो आँगन हों, वह क्रूर कहलाता है। इसमें रहनेवालेको सब तरहका कष्ट रहता है।

११ विपक्ष—जिस घरमें दक्षिण और उत्तरमें दो द्वार और दो आँगन होंगे, उसे विपक्ष कहते हैं। इसमें शत्रुका भय रहता है।

१२ धनद—जिस मकानमें पूर्व, दक्षिण और उत्तरमें तीन तीन दरवाजे और आँगन होंगे, वह धनद कहलावेगा। इसमें धनकी वृद्धि होती है।

१३ क्षय—जिस घरके पश्चिम और दक्षिणमें दो द्वार तथा दो आँगन हैं, उसका नाम क्षयगृह है। इसमें रहनेवालेका सर्वस्वनाश होता है।

१४ आक्रन्द—जिस गृहमें पूर्व, पश्चिम और उत्तर दिशामें तीन तीन दरवाजे और आँगन हैं, उस घरको ऋषिगणोंमें आक्रन्द नामसे उल्लेख किया है। इसका फल—शोकप्राप्ति है।

१५ विपुल—जिस घरमें दक्षिण, पश्चिम और उत्तरमें तीन तीन दरवाजे तथा आँगन होंगे, वह विपुल नामसे उल्लिखित होगा। इसमें वास करनेवाला विपुल अर्थ लाभ करेगा।

१६ विजय—इसमें चारों तरफ दरवाजे और आँगन होते हैं। सब मकानोंमें यही श्रेष्ठ होता है। फल—विजयलाभ।

विश्वकर्माके मतसे—वास्तुकी ऊंचाई विस्तारके समान करना चाहिये। परन्तु यदि एकशाल (एक मजला) मकान करना हो, तो उसकी ऊंचाई विस्तारसे दूनी होनी चाहिये। इस प्रकार चतुःशाल गृहकी ऊंचाई और व्यास समान करना चाहिये। इकमजले मकानकी विस्तारसे दूनी लम्बाई और विस्तारके बराबर ऊंचाई करनेसे भी काम चल सकता है। दुमजले घरकी दूनी, ति-मजलेकी तिगुनी, चौमजलेकी पाँचगुनी ऊंचाई करनी चाहिये। इससे ज्यादा ऊंचाई कदापि नहीं करना चाहिये।

किसी मकानमें यदि एक ही कमरा बनवाना हो, तो नागशुद्धि रहने पर उत्तरवालाके सिवाय दूसरी कोई भी शाला बनाई जा सकती है। परन्तु एकमजले मकानमें उत्तरशाला नहीं बनवानी चाहिये। ऐसे ही द्विशाल बनवाना हो तो दक्षिण और पश्चिममें तथा त्रिशाला बनवाना हो, तो दक्षिण पश्चिम और उत्तरमें अथवा पूर्व, दक्षिण और पश्चिममें तीन घर बनवाने चाहिये।

पराशरका कहना है कि जिस वास्तुमें घर बने उसकी पूर्वसीमासे लेकर पश्चिम सीमा ... भी भागोंमें विभक्त करना चाहिये। उनमेंकी गणना पहले तीन भागोंको छोड़ कर चौथे भाग करनेसे हैं। उस जगहमें घर नहीं बनवाना ... तारा हों।

विश्वकर्मप्रकाशके मतसे—ब्राह्मणके स्वामीता

क्षत्रियको ति-मजला, वैश्यको दु-मजला और शूद्रको एकमजला मकान बनवाना चाहिये । एकमजला मकान सबहीके लिए अच्छा है। इसमें किसीका भी अमङ्गल नहीं होता ।

बृहत्संहितामें जिस प्रकार प्रत्येकके लिए गृहका परिमाण लिखा है, वैसा विश्वकर्मप्रकाश और मयशिल्प आदिमें नहीं है। इनके मतसे प्रक्रियाके अनुसार आय, व्यय, वार और नक्षत्र आदि शुद्ध होने पर मकान बनाया जा सकता है। इसके सिवाय किसके लिए कैसा मकान अच्छा होता है, इसका संक्षिप्त वर्णन भी लिखा है। बृहत्संहितामें लिखा है कि—जिस वास्तुका आंगन प्रदक्षिणक्रमसे दरवाजेके नीचे तक विस्तृत है, उसका नाम वर्द्धमान है। उसका दरवाजा दक्षिण दिशामें नहीं होना चाहिये । वर्द्धमान नामका मकान सबके लिए अच्छा है।

जिस मकानके पश्चिमका एक और पूर्वका दो आंगन आखीरतक विस्तीर्ण होते हैं, और बाकीके दो दिशाओंके आंगन उत्थित तथा शेष पर्यन्त विस्तृत होते हैं, उसे स्वस्तिक कहते हैं।

जिस मकानके पूर्व और पश्चिमके आँगन शेष सीमा तक विस्तृत हैं तथा उत्तर और दक्षिण आंगन उनकी सीमाकी अवधिमें मिल गये हैं, उस वास्तुका नाम रुचक है। इसका द्वार उत्तर दिशामें करनेसे अमङ्गल होता है।

जिस वास्तुके आंगन प्रदक्षिणक्रमसे नीचे तक विस्तृत हैं उसका नाम नन्द्यावर्त्त है। इस मकानमें पश्चिमके सिवाय और तीन दिशाओंमें दरवाजे बनवाने चाहिये। नन्द्यावर्त्त और बर्द्धमान नामके वास्तु सबहीके लिए प्रशस्त वा उत्तम हैं, स्वस्तिक और रुचिक मध्यम तथा इसके अलावा दूसरे वास्तु राजाओंके वास्ते शुभ होते हैं।

जिस मकानमें उत्तरकी तरफ शाला नहीं रहती, उसे हिरण्यनाभ, पूर्वमें शाला न होनेसे सुक्षेत्र, दक्षिणकी तरफ शाला न रहनेसे चुल्लीविशालक और पश्चिममें शाला न होनेसे पक्षघ्न कहते हैं। इनमें पहलेके दो शुभ है। चुल्लीमें धननाश और पक्षघ्नमें पुत्रनाश तथा शत्रुता बढ़ती है। जिस मकानमें पश्चिम और दक्षिणमें दो ही शालाएं रहती हैं, उसका सिद्धार्थ, सिर्फ पश्चिम और उत्तरमें शाला रहनेसे यमसूर्य, उत्तर और पूर्वमें शाला रहनेसे दण्ड, पूर्व और दक्षिणमें शाला रहनेसे वात, पूर्व और पश्चिमकी ओर शाला रहनेसे घरचुल्ली, तथा सिर्फ दक्षिण और उत्तरकी ओर शाला विशिष्ट दु-मजले मकानको काच कहते हैं। सिद्धार्थ वास्तुमें अर्थ की प्राप्ति; यमसूर्यमें मालिककी मृत्यु, दण्डमें दण्ड वध, वातमें कलह और उद्वेग, चुल्लीमें द्रव्यका नाश, काच वास्तुमें जातिविरोध उपस्थित होता है।

(बृहत्सं० ५३।३२-३९)

विश्वकर्मप्रकाशके मतसे—दक्षिणमें दुमुख और पूर्वमें खर नामक वास्तु बनवानेसे, उस दुमजले मकानको 'वात' कहते हैं। ऐसे घरमें वास करनेसे वातरोगकी वृद्धि होती है। दक्षिणमें दुर्मुख और पश्चिममें धन्य नामक मकान बनवानेसे उसका नाम होगा यमसूर्य। इसमें मृत्युका भय है। पूर्वमें खर और उत्तरमें धान्य नामके घर बनवानेसे उसकी दण्ड संज्ञा होगी। इसमें दण्डका भय रहेगा। दक्षिणमें दुमुख और उत्तरमें जय नामके घर बनवानेसे उसका नाम बीची होगा। इसमें बन्धुका विनाश और धनका क्षय है। जिसके पूर्वमें खर नामक घर और पश्चिममें धान्य संज्ञक घर है, उसका नाम चुल्ली है। फल—धन धान्यका नाश है। दक्षिणमें धनद और पश्चिममें धनद-घर बनवानेसे, उस दुमजले मकानका इन्दु नाम होगा। इसमें पशु और धनकी वृद्धि होती है। जिसके दक्षिणमें विपक्ष और पश्चिममें क्रूर नामक घर रहे, तो उसका नाम शोभन समझना चाहिये। इसका फल—धन और धान्यकी वृद्धि है। जिस मकानमें दक्षिणकी ओर विजय और पश्चिमकी तरफ भी विजय नामक घर रहेगा उसका नाम कुम्भ होगा। इसमें रहनेवालेके पुत्र और कलत्रोंकी वृद्धि होगी। जिसके पूर्वमें धान्य और पश्चिममें भी धान्य संज्ञक घर रहेगा, उसका नाम नन्द है, फल—धन और शोभावृद्धि। किसी भी दो दिशामें विजय नामके दो घर बनवानेसे उसका नाम होगा। इसका शुभ फल है। वास्तुको नौ भागोंमें विभक्त करके, उसके शुभाशुभकी चिन्ता करनी चाहिये।

अपर विवरण वास्तु आदि शब्दोंमें देखो।

जिन वृक्षोंमें दूध या गोंद पैदा होता है, उसकी

लकड़ीसे मकानका कोई भी काम न लेना चाहिये । जिस पेड़ पर चिड़ियोंका घोंसला हो, उसकी लकड़ी भी मकानके काममें न लाना चाहिये । गजभग्न, विद्युत् [illegible] अनल वा वायुसे पीड़ित चैत्य अथवा देवालयसे [illegible] वज्रभग्न श्मशानजात देवाश्रित कदम्ब, नीम, बहेड़ा, कण्टकयुक्त वृक्ष, असार, बड़, पीपर, 'नगुण्डी, देवदार वृक्ष, शाल्मली और पलाश इन सब वृक्षोंकी लकड़ियोंसे भी घरका कार्य न लेना चाहिये ।

[illegible]भागका शिरोज्ञान करके जिस स्थान पर घर बनवानेसे किसी तरहके अमंगलकी सम्भावना न हो, वहाँ गृह निर्माण कराना चाहिये ।

वैशाख, श्रावण, आषाढ़, अगहन, फाल्गुन और कार्तिक इन मासोंमें घर बनवाना अच्छा है । शुक्लपक्षमें गृहारम्भ करनेसे सुख और कृष्णपक्षमें भय होता है । रवि और मङ्गलवारके सिवा अन्य वारोंमें घर बनवाना आरम्भ करना प्रशस्त है । पूर्णिमासे अष्टमी तक पूर्वद्वारी घर, नवमीसे चतुर्दशीके भीतर उत्तरद्वारी, अमावस्यासे शुक्ल अष्टमीके भीतर पश्चिमद्वारी और शुक्ल नवमीसे चतुर्दशीके भीतर दक्षिणद्वारी घर नहीं बनवाना चाहिये । वज्र, व्याघात, शूल, व्यतिपात, अतिगण्ड, विष्कुम्भ और गण्ड ये सब योग गृहारम्भमें वर्जनीय हैं । [illegible]आदित्यद्वय, रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, [illegible]त्रय, रेवती, मघा, अनुराधा और श्रवणा नक्षत्रमें, [illegible] वारमें, गण्डके सिवा दूसरे योगमें, रिक्ता और विष्टिके सिवा दूसरी तिथिमें गृहारम्भ करनेसे मङ्गल होता है । वृश्चिक, कर्कट, मेष, कुम्भ और धनु लग्नमें गृहारम्भ करनेसे कार्यमें विलम्ब तथा कन्या मीन और [illegible] लग्नमें गृहारम्भ करनेसे अर्थलाभ होता है [illegible] किसी ज्योतिर्विद्के मतसे कुम्भ, सिंह और वृष [illegible] गृहारम्भ करनेसे वृद्धि होती है—ऐसा भी है । गृहारम्भके जो जो नक्षत्र बतलाये गय हैं, उनमेंसे [illegible] और पुनर्वसुके सिवाय दूसरे नक्षत्रोंमें गृहप्रवेश किया जा सकता है । कन्या, कुम्भ, वृष, वृश्चिक, सिंह और मिथुन लग्नमें, तथा शुक्र, वृहस्पति सोम और बुध [illegible] गृहप्रवेश करना शुभ है । (युक्तिकल्पतरु)

[illegible] प्रकाशके मतानुसार—चैत्रमासमें गृहारम्भ करनेसे व्याधि, वैशाखमें धनरत्न, ज्येष्ठमें मृत्यु, आषाढ़में भृत्य और धनलाभ, श्रावणमें मित्रलाभ, भाद्रपदमें हानि, आश्विनमें युद्ध, कार्त्तिकमें धन और धान्य वृद्धि; अगहनमें धनलाभ, पौषमें चोरभय, माघमें अग्निभय और फाल्गुण मासमें लक्ष्मीवृद्धि होती है ।

([illegible]प्रकाश १ अ०)

गरुड़पुराणमें ऐसा लिखा है,—वास्तुपुरुष बाईं तरफ सोते हैं और तीन तीन महीने बाद एक दिशासे दूसरी दिशामें चले जाते हैं । इनकी गोदमें मकान बनवाना प्रशस्त है । सिंह, कन्या और तुलाराशिमें उत्तरद्वारी और बाकीके यथाक्रमसे वृश्चिक आदि तीन तीन राशिमें पूर्व, दक्षिण और पश्चिमद्वारी मकान बनाये जा सकते हैं । दरवाजेकी लम्बाईसे चौड़ाई आधी करनी चाहिये । दिशाओंके भेदसे मकानके आठ प्रकारके दरवाजे होते हैं । दक्षिणद्वारमें वीर्यहानि, अग्नि दिशाके द्वारसे बन्धन, वायुकोणके द्वारसे पुत्रलाभ और सन्तोष, उत्तरके द्वारसे राजपीड़ा, बन्धन और रोग, पश्चिमद्वारसे राजभय, सन्ताननाश और विरोध तथा पूर्व द्वारसे अग्निभय, बहुत [illegible] धन, सम्मान राजनाश और रोग होता है । ईशान दिशाके दरवाजेसे पूर्वदरवाजे सरीखा और नैऋतके द्वारसे पश्चिमद्वार जैसा फल होता है । (गरुड़पुराण ४६ अ०) गृह प्रारम्भ करते समय याग और वास्तुपुरुषकी पूजा आदि करनी पड़ती है ।

वास्तुप्रयोग और वास्तुविद्या शब्दमें इसका विशेष विवरण देखना चाहिये।

वृहत्संहितामें ऐसा लिखा है—वास्तु यदि पूर्व और उत्तरमें ऊँचा हो तो धन क्षय और पुत्रनाश होता है । दुर्गन्धयुक्त होनेसे पुत्रनाश, टेढ़ा होनेसे बन्धुनाश और दिक्भ्रमसे मकान बने तो नारीगणका वंशनाश होता है । वासभवनके चारों तरफ समानभावसे भूमि वर्द्धन करनेसे समस्त पदार्थोंकी वृद्धि होगी । यदि किसी भी कारणसे एक तरफ भूमि वर्द्धित करनेकी आवश्यकता पड़े तो पूर्व या उत्तरमें बढ़ा सकते हैं । वास्तुकी पूर्व आदि दिशा जलपूर्ण रहनेसे यथाक्रमसे सुतहानि, अग्निभय, शत्रुभय, स्त्रीकलह, स्त्रीदोष, निधन, धनवृद्धि और पुत्रवृद्धि ये आठ फल होते हैं । मकानके काममें लिये वृक्ष छेदन करना हो, तो [illegible] उसकी पूजा आदि करके, दूसरे दिन [illegible] प्रदक्षिणपूर्वक वृक्षच्छेदन करना

उचित है। कटा हुआ वृक्ष यदि उत्तर या पूर्व दिशामें गिरे, तो उसे शुभ समझना चाहिये। इसके अलावा दूसरी दिशाओंमें गिरनेवाले वृक्षकी लकड़ीको अशुभ जानना, ऐसी लकड़ी मकानमें लगाने लायक नहीं। पेड़को काटने पर यदि उस काटी हुई जगहका वर्ण विवर्ण न हुआ, तो उस लकड़ीको मकानके लिये उपयोगी समझना चाहिये। काटने बाद यदि वृक्षका सार भाग वर्णान्तरको प्राप्त हो जाय, तो उस लकड़ीसे मकान नहीं बनवाना चाहिये। घरमें प्रवेश करके अनाज, गो, गुरु, अग्नि वा देवतासे ऊंचे स्थान पर न सोना चाहिये। जहां बांस या सोटे पड़ीं हों, उससे नीचे सोना निषिद्ध है।

प्राचीन ऋषिगण प्रासाद, एकमञ्जल, दुमंजल, तिमञ्जल आदि मकान किस प्रकारसे बनाना चाहिये और किस प्रकारसे घरके खंभ, सन्धियां और भीतें आदि बनानी चाहियें, इसके अच्छे अच्छे नियम बना कर लिपिबद्ध कर गये हैं। उन्हीं नियमोंके अनुसार पहिले मकान बना करते थे। प्रासाद और वास्तुविद्या आदि शब्द देखो।

२ कलत्र, भार्या वा स्त्री। ३ नाम। ४ मेषादि राशि।

[गृहकच्छप] (सं० पु०) गृहे कच्छप इव। पेषण शिला, पत्थर।

गृहकन्या (सं० स्त्री०) एक तरहका पौधा, घृतकुमारी, घीकुवार, ग्वारपाठा।

गृहकपोत (सं० पु० स्त्री०) गृहे स्थितः कपोतः। पक्षीविशेष, घराल या पोसाज कबूतर।

गृहकरण (सं० क्ली०) घरका काम।

गृहकर्तृ (सं० त्रि०) गृहं करोति कृ-तृच्। १ घरकारक, घरबनानेवाला। २ एक तरहका पक्षी, चटक, गोरैया। (Sparrow) इसका पर्याय—धानाभक्षण, चम, भीरु, कर्षिदिष्ट, कणप्रिय है।

गृहकर्मन् (सं० क्ली०) गृहस्य कर्म, ६-तत्। १ घरनिर्माण। २ गृहकार्य।

गृहकर्मदास (सं० पु०) गृहकर्मणो दासः, ६-तत्। गृहकर्मका भृत्य, जिस नौकरके ऊपर घरका कार्यभार अर्पित है।

गृहकलह (सं० पु०) गृहे कलहः, ७-तत्। गृहविरोध, घरका झगड़ा।

गृहकारक (सं० पु०) गृहं करोति कृ-ण्वुल्, ६-तत्। १ वर्णसङ्कर जातिविशेष। पराशर-पद्धतिमें लिखा है कि कुम्भकारकके औरससे नापितकन्याके गर्भमें इस जातिकी उत्पत्ति हुई है। (त्रि०) २ गृहनिर्माणकर्त्ता, घरका बनानेवाला।

गृहकारिन् (सं० त्रि०) गृहं करोति कृ-णिनि। १ गृहकारक, घरका बनानेवाला। (पु०) २ एक तरहका कीट।

गृहकार्य (सं० क्ली०) गृहस्य कार्यं ६-तत्। गृहकर्म, घरका कामकाज।

गृहकुक्कुट (सं० पु० स्त्री०) गृहे रुद्धः कुक्कुटः। गृहपालित कुक्कुट, घरमुर्गा।

गृहकुमारी (सं० स्त्री०) घृतकुमारी, ग्वारपाठा, घीकुवार।

गृहकुलिङ्ग (सं० पु०) गृहे पुष्टः कुलिङ्गः। पक्षीविशेष, गृहचटक, एक तरहकी चिड़ीया, घराल गोरैया। इसके मांसका गुण—रक्तपित्तनाशक और शुक्रवृद्धिकर है।

गृहकूलक (सं० पु०) गृहस्य कूले समीपे भवः गृहकूलकन्। काशाक। चिचिण्डा, चचींडा

गृहकृत्य (सं० क्ली०) गृहस्य कृत्यं, ६-तत्। गृहकार्य, घरका काम।

गृहगोधा (सं० स्त्री०) गृहस्यगोधेव। ज्येष्ठी, छिपकली, टिकटिकिया। इसका पर्याय—पल्ली, मुसली, विश्वम्भरा, ज्येष्ठा, कुड्यमत्स्य, पल्लिका, गृहगोधिका, गृहगोलिका, माणिक्या, भित्तिका, गृहालिका।

गृहगोधिका (सं० स्त्री०) क्षुद्रा गोधा अल्पार्थे कन् टाप् अत इत्वं गृहस्य गोधिकेव। ज्येष्ठी, छिपकली।

गृहगोलक (सं० पु०) गृहस्थितः गोलोक इव। पुंजातीय टिकटिकी, छिपकली।

गृहगोलिका (सं० स्त्री०) गृहे गोधिका इव पृषोदरादित्वात् धकारस्य लकारः। ज्येष्ठी, घराल छिपकली।

गृहघ्नी (सं० स्त्री०) गृह-हन्-ङीप्। गृहनाशिका स्त्री, घरको नष्ट करनेवाली स्त्री।

गृहचटक (सं० पु०) गृहस्थितः चटकः। पक्षीविशेष, घराल गोरैया पक्षी।

गृहचुल्ली (सं० स्त्री०) गृहाणां चुल्लीव। दो घरवाला मकान, दो ऐसी कोठरी जिनमें एकका मुख पश्चिमकी ओर और दूसरीका पूर्वकी ओर हो।

गृहच्छिद्र (सं० क्लो०) गृहस्य छिद्रं, ६-तत्। गृहका छिद्र, घरका दोष, कलङ्क।

गृहज (सं० पु०) गृहे दास्यं जायते गृह-जन-ड। मनुकथित सात प्रकारके दासोंमेंसे एक, दासीपुत्र। (मनु० ८।४१५)

गृहजात (सं० त्रि०) गृहे जातः, ७-तत्। गृहोत्पन्न, जो घरमें उत्पन्न होता है।

गृहजालिका (सं० स्त्री०) कपटता, छल, धूर्तता।

गृहणी (सं० स्त्री०) १ काञ्जिक, काँजी। २ पलाण्डु, पियाज।

गृहतटी (सं० स्त्री०) द्वारपिंडी, गृहावग्रहणी, घरके सामनेको चबूतरा।

गृहदास (सं० पु०) गृहस्य दासः ६-तत्। गृहभृत्य, घरका नौकर।

गृहदाह (सं० पु०) गृहस्य दाहः, ६-तत्। घरका जलना।

गृहदीप्ति (सं० स्त्री०) गृहस्य दीप्तिः ६-तत्। १ घरकी शोभा। २ साध्वी स्त्री।

गृहदेवता (सं० स्त्री०) गृहे वासी स्थिता देवता। १ वास्तु पुरुषके देहस्थित अग्नि प्रभृति ४५ देवता। २ घरकी देवता।

गृहदेवी (सं० स्त्री०) गृहे गृहकुड्ये विलिख्य पूजा देवी। एक राक्षसी, जिसका दूसरा नाम जरा है। जो घरकी भीत पर इसकी मूर्त्ति अङ्कित कर भक्तिपूर्वक पूजा करता है 'जरा' उसे किसी प्रकारका अनिष्ट नहीं पहुंचाती। यह राक्षसी मनुष्यके गृहमें वास करती आन कर इसका नाम गृहदेवी पड़ा। (जरा देखो।)

गृहद्रुम (सं० पु०) गृहमिव द्रुमः। १ मेढ़शृङ्गीवृक्ष। २ शाकवृक्षभेद, सोहञ्जनका पेड़।

गृहद्वार (सं० क्ली०) गृहस्य द्वारं, ६-तत्। घरका दरवाजा।

गृहधूम (सं० पु०) गृहगतो धूमः, मध्यपदलो०। १ घरकी दोवार या छतमें धूआँ लगनेसे एक तरहके काले रोगका पदार्थ लग जाता है उसीको गृहधूम कहते हैं, झाला। २ एक तरहका वृक्ष।

गृहधूमाद्यतैल (सं० क्ली०) नासारोगका तेल। तिल-तैलके ६० तोलेमें झाला, पीपर, दारुहरिद्रा, यवक्षार, करञ्जबीज, सैन्धव, ब्राह्मणयष्टिका बीज प्रत्येकके दो तोले ४ मासे ६ रत्तीको चूर्ण कर मिला देनेसे उक्त तैल प्रस्तुत होता है।

गृहनमन (सं० क्ली०) गृहं नमयति नम-णिच्-ल्यु। वायु, हवा।

गृहनरक (सं० क्ली०) गृहस्य नरकं, ६-तत्। गृहके अपरिष्कृत स्थान, वह स्थान जहाँ उच्छिष्ट पदार्थ फेंका जाता है।

गृहनाशन (सं० पु०-स्त्री०) गृहं नाशयति नश-णिच्-ल्यु। कपोत, कबूतर।

गृहनीड़ (सं० पु०-स्त्री०) गृहे नीड़मस्य बहुव्री० चटक पक्षी, गौरैया।

गृहप (सं० पु०) गृहं पाति पा-क। १ गृहपालक, घरका मालिक। २ घरका रक्षक, चौकीदार। ३ कुत्ता। ४ अग्नि, आग।

गृहपति (सं० पु०) गृहस्य, पतिः, ६-तत्। गृहस्थ द्वितीयाश्रमावलम्बी, वह जो गार्हस्थ्य धर्मके दूसरे आश्रममें हो, गृहस्थ। २ मन्त्री। ३ धर्म। ४ यजमान। ५ यजमान जो योगका अनुष्ठान करता है। ६ अग्निविशेष। ७ (पु० स्त्री०) गृहस्वामी, घरका मालिक।

गृहपत्नी (सं० स्त्री०) गृहस्य पतिः, ६-तत्। गृहपति ङीष् विकल्पे नान्तादेशः। (विभाषा स पूर्वस्य। पा० ४।१।३४।) गृहपालिका पत्नी, घरकी रक्षा करनेवाली।

गृहपशु (सं० पु०) कुक्कुर, कुत्ता।

गृहपाल (सं० त्रि०) गृहं पालयति गृह-पालि-अण्। १ गृहरक्षक, जो घरकी रखवाली करता हो। (पु० स्त्री०) गृहे पाल्यतेऽसौ पालि-अच्। २ कुक्कुर, कुत्ता।

गृहपुलिका (सं० स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुवार, ग्वारपाठा।

गृहपोतक (सं० पु०) गृहे पोतः शिशुरिव यस्य, बहुव्री० कप्। वास्तु, वास, रहनेका स्थान।

गृहप्रवेश (सं० पु०) गृहे प्रवेशः, ६-तत्। १ नये घरके तैयार हो जाने पर शुभदिन और शुभनक्षत्रमें होमादि अनुष्ठान करके उसमें जाना। २ घरके भीतर जाना।

गृहबभ्रु (सं० पु० स्त्री०) गृहस्थितो बभ्रु। गृहस्थित नकुल, नेवला।

गृहवलि (सं० पु०) गृहे देयो वलिः। गृहका अनुष्ठेय-वलिकम, वैश्वदेव कर्म।

गृहवलिप्रिय (सं० पु०) गृहवलिप्रियोऽस्य, बहुव्री०। १ वक पक्षी, बगुला। २ चटक, गौरैया। ३ काक, कौवा।

गृहवलिभुज् (सं० पु०-स्त्री०) गृहे दत्तं वलिं अन्नादि भक्ष्यद्रव्यं भुङ्क्ते, भुज्-क्विप्। १ काक, कौवा। २ चटक गौरैया।

गृहभङ्ग (सं० पु०) गृहस्य भङ्गः, ६-तत्। १ वह मनुष्य जो घरसे बहिष्कृत किया गया हो २ गृहको जीर्णता, घरका तहस नहस हजा। ३ किसी मनुष्यकी अवनति।

गृहभञ्जन (सं० क्ली०) गृहस्य भञ्जनं, ६-तत्। गृहभङ्ग, वर्षादिसे घरकी बरबादी।

गृहभर्तृ (सं० त्रि०) गृहस्य भर्त्ता, ६ तत्। गृहस्वामी, घरका मालिक।

गृहभूमि (सं० स्त्री०) गृहस्य योग्या भूमिः। वास्तुभूमि, वासकरने योग्य जमीन। गृहदेही।

गृहभेदिन् (सं० त्रि०) गृहं भिनत्ति गृह भिद्-णिनि। गृह भेदकारक, घरमें लड़ाई करनेवाला।

गृहभोजिन् (सं० त्रि०) गृहे भोक्तुं शीलमस्य भुज-णिनि। घरके मनुष्य, एक परिवारके आदमी।

गृहमणि (सं० पु०) गृहस्य मणिरिव। प्रदीप, दीपक, चिराग।

गृहमाचिका (सं० स्त्री०) गृहे मचते गुप्तभावेन तिष्ठति मच-ण्वुल्-टाप् अत इत्वञ्च। चर्मचटी, चमगीदड़।

गृहमुध्री (सं० त्रि०) गृहचिन्तासे पीड़ित।

गृहमृग (सं० पु०-स्त्री०) गृहे मृग इव। कुक्कुर, कुत्ता।

गृहमेघ (सं० पु०) गृहसमूह, घरकी पंक्ति।

गृहमेध (सं० पु०) गृहेण दारैः मेधते संगच्छते मेध-अच् ३-तत्। १ वह जिसने स्त्रीको ग्रहण किया है, गृहस्थ। मेध हिंसायां भावे घञ्। २ पञ्चसूना रूपसे हिंसा, पशुके जीवनको नष्ट करनेके लिये प्रत्येक मनुष्यके घरमें पांच अस्त्र सदा मौजूद रहते हैं। यथा—अग्निकी जगह, झाड़ू मूसल, उखली और पानीका बरतन। उसीको पञ्चसूना कहते हैं। गृहे मेधा हिंसाहेतुको यज्ञो यस्य, बहुव्री०। ३ जिसने घरमें पञ्चयज्ञका अनुष्ठान किया है। गृहैः कर्तव्यो यज्ञो यस्य, बहुव्री०। ४ देवताविशेष। (ऋक् ७।५९।१०)

गृहमेधिन् (सं० पु०) गृहेण दारैः मेधते संगच्छते मेध-णिनि। १ गृहस्थ। २ मरुत्विशेष, वायु, हवा।

गृहमेध्य (सं० त्रि०) गृहमेधो देवतास्य गृहमेध-यत्। गृह-मेधि देवताओंको देने योग्य हविः प्रभृति, घरके देवता-ओंको ही अनाज इत्यादिका नैवेद्य।

गृहयन्त्र (सं० क्ली०) गृहे यन्त्रं ७-तत। गृहस्थित काष्ठादि निर्मित वस्त्र रखनेका आधारविशेष, कपड़ादि रखनेके लिये लकड़िकी बनी खूंटी।

गृहयाय्य (सं० त्रि०) गृहयते गृह णिच् आय्य। गृहस्थ।

गृहयालु (सं० त्रि०) गृहयते गृह्णाति। गृह-णिच्-आलु। ग्रहीता, ग्राहक, ग्रहण करनेवाला।

गृहराज (सं० पु०) गृहाणां राजा, ६-तत्। श्रेष्ठ गृह, बड़ा घर।

गृहलक्ष्मी (सं० स्त्री०) गृहस्य लक्ष्मीरिव। सुशीला, सच्च-रित्रा स्त्री, सुलक्षणा औरत।

गृहवाटिका (सं० स्त्री०) गृहसमीपे वाटिका इव आरामः। गृहके निकटवर्ती उपवन, घरके नजदीकका उद्यान।

गृहवास (सं० पु०) गृहस्य वास ६-तत्। १ घरका वास। २ गार्हस्थ्य धर्म

गृहवासिन् (सं० त्रि०) गृहे वसति वस णिनि। घरमें वास करनेवाला।

गृहविच्छेद (सं० पु०) गृहकलह, घर-झगड़ा।

गृहवित्त (सं० त्रि०) गृहं वित्तं यस्य, बहुव्री० गृह-स्वामी, घरका मालिक।

गृहशायी (सं० पु०) पारावत, कबूतर।

गृहसंवेशक (सं० पु०) गृहं गृहनिर्माणं संविशति उप जीवति सम्-विश्-ण्वुल्। जो घर बना बना कर अपनी जीविका निर्वाह करता है, स्थपति।

गृहस्थ (सं० पु०) गृहे दारेषु तिष्ठति अभिरमते गृह स्था-क। गृही, द्वितीयाश्रमस्थ, जो विवाहादि कर घरमें वास करे। इसका पर्याय—ज्येष्ठाश्रमी, गृहमेधी, स्नातक, गृही, गृहपति, सत्री, गृहयाय्य, गृहाधिप, कुटुम्बी, गृहाय-निक। २ घरबारवाला, बालबच्चोंवाला आदमी। (त्रि०) गृहे तिष्ठति गृह-स्था-क। ३ गृहस्थित।

गृहस्थधर्म (सं० पु०) गृहस्थस्य धर्म, ६-तत्। गृही वा द्वितीय आश्रमीके अवश्य करने योग्य धर्म, गार्हस्थधर्म।

कोई भी हो, चाहे बड़ा हो और चाहे छोटा, जब तक वह शरीर धारण करेगा, जब तक अज्ञानतिमिरमें आच्छन्न रह कर वास्तविक पथ पहचाननेमें असमर्थ है, तब तक उसे कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। रुचिभेदसे वा प्रकृतिके भेदसे भिन्न भिन्न कार्य भले हो करें, पर कार्य अवश्य करना पड़ेगा। ये काम दो प्रकारके होते हैं—एक मङ्गलकर और दूसरा अमङ्गलकर। मनुष्य अपनी अभिलाषका पक्षपाती हो कर कार्योंका अनुष्ठान किया करता है। मनुष्य अमंगल कार्योंका अनुष्ठान करके नरकोंका दारुण कष्ट स्वीकार करता है। पर अपनी अभिलाषको नहीं छोड़ता। परमकारुणिक परिणामदर्शी आर्य ऋषियोंने मानवकुलके मङ्गलके लिए अनेक गवेषणा और योगलब्ध प्रतिभाके बलसे उन सब कार्योंका फलाफल स्थिर करके कर्तव्याकर्तव्य निर्णय किया था। उन्होंने कर्तव्य कार्योंका चार विभागोंमें विभक्त कर अवस्थाके अनुसार मानवके लिए अनुष्ठेय वा अननुष्ठेय नामसे निरूपण किया है। वे चार विभाग ऐसे हैं,—ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और भिक्षुधर्म। मानवके जीवनकालको चार भागोंमें विभक्त कर यथाक्रमसे चार प्रकारके धर्मका अनुष्ठानाधिकार निर्णीत किया है। (कौनसे वर्णवाले किन किन गुणोंसे युक्त होने पर धमके अधिकारी होते हैं, वह उन उन शब्दोंमें देखना चाहिये। इन चार धर्मोंमें जो धर्म वा कर्मान्तर मानवजीवनके द्वितीय विभागमें अनुष्ठेय है, उसे गृहस्थधर्म वा द्वितीय आश्रम कहते हैं। आर्य-धर्मशास्त्रसम्मत गृहस्थके अनुष्ठेय कार्योंकी पर्यालोचना करनेसे उनको तीन भागोंमें विभक्त किया जा सकता है। तीन विभाग इस प्रकार हैं,—सामाजिक, शारीरिक और पारत्रिक अथवा गार्हस्थिक। जिन कार्योंसे समाजकी उन्नति हो और उसके अनुसार अपना भी कुछ लाभ हो, वह सामाजिक कार्य है। जिन कार्योंके करनेसे शरीर नीरोग रहे, बलवान् और कार्यसहाक्षम हो कर मनुष्यके गार्हस्थिक कार्य तथा [illegible] और जिनयता पहुंचावें, वह शारीरिक [illegible] (दूसरे भवमें) सुख और कार्योंके अनुष्ठानसे जन्मान्तरमें [illegible]ते हैं। आर्य[illegible] शान्ति मिले, उसे पारत्रिक कहते [illegible]ना [illegible], दुर्बल मा[illegible]ति सांसारिक प्रीतिको सुख नहीं [illegible]

जिस सुखके लिए सर्वदा लालायित रहती है, विवेकी ऋषियोंके लिए वह घोर दुःखकर और निकृष्ट है। वे मुक्ति (मोक्ष) को ही सुख मानते हैं और सबको उस सुखसे सुखी करनेका उनका अभिप्राय रहता है, (१) इसीलिए उनके प्रवर्त्तित सब धर्मोंका ही अन्तिम ध्येय मुक्ति है। किसी भी प्रकार अनुष्ठित क्यों न हो, आर्योंके किए हुए सारे कामही मुक्तिके अनुकूल हैं। धर्म और मुक्ति देखो। मुक्तिका प्रधान सहाय अन्तःकरण है। गृहस्थाश्रममें वह अन्तःकरण बनता है और मुक्तिका साक्षात् कारण सच्चे ज्ञानको उत्पन्न करके मानव मुक्तिकी प्रथम श्रेणीमें चढता है। सभी आश्रम या धर्मोंमें गार्हस्थ प्रधान और प्रशंसनीय है। इसीलिए सारे धर्मशास्त्रोंमें गृहस्थधर्मका थोड़ा-बहुत उल्लेख पाया जाता है। उनमें मनु, काशीखण्ड, महाभारत, गरुड़पुराण, याज्ञवल्क्य, व्याससंहिता और बृहत्पाराशरमें बहुत अच्छा और विस्तृत वर्णन मिलता है।

मनुके मतानुसार ब्रह्मचारीको गुरुकी अनुमति ले कर गृहस्थ धर्म अवलम्बन करना चाहिये। ब्रह्मचर्य समाप्त होने पर गृहस्थधर्मका अधिकारी बनता है। ब्रह्मचारी देखो। गृहस्थधर्ममें सबसे पहिले दारपरिग्रह (स्त्रीका परिग्रह) करना पड़ता है। दारपरिग्रह विना किये गृहस्थ नहीं बन सकता। भार्या गृहस्थधर्ममें प्रधान सहायक होती है। स्वयं उपयुक्त और कार्याधिकारी होने पर भी स्त्रीके दोषसे धर्ममें व्याघात होता है और वास्तविक मार्गसे विचलित हो कर दुःखकर कुमार्गमें जाना पड़ता है। इसीलिए आर्यगण दारपरिग्रहके बारेमें बहुतसे नियम [illegible] गये [illegible]। गृहस्थोंको उचित है कि, उन नियमोंको [illegible] ध्यानमें रखते हुए दारपरिग्रह करें। यदि [illegible]ग्रह न किया जायगा, तो तरह तरहके [illegible]ष आवेंगे। विवाह देखो। गृहलक्ष्मी (स्त्री) जिससे सुखसे काल बिता सके, उसका प्रयत्न गृहस्थको करना चाहिये। अलङ्कार और वस्त्र आदि देनेमें भी कभी सङ्कोच न करना चाहिये, जिस घरमें औरतें आनन्दित और आदृत होती हैं, उस घरमें देवताओंका वास

(१) "सुखं [illegible] सर्वदा कामा[illegible] तच्च धर्मसमुद्भवं।
तस्माद्धर्मोऽत्र कर्त्तव्यः [illegible] यत्नतः॥" (काशीखण्ड)

रहता है। अर्थात् जिस घरमें स्त्रियां सर्वदा प्रफुल्लचित्त रहती हैं, उस घरमें स्वर्गीय सुख विराजता है। बिना कारण अबलाओंको यातना देनेसे, उनके शोकनिःश्वाससे गृहस्थकी दिन दिन अवनति होती है।

गृहस्थको पञ्चसूना पापके विनाशके लिए पञ्चमहायज्ञका अनुष्ठान करना पड़ता है। ब्राह्मणके लिए अध्यापन, पितृयज्ञ, होम, बलि और अतिथिसत्कार ये महायज्ञ करना आवश्यक है। इसको छोड़ देनेसे गृहस्थ मिट्टीमें मिल जाता है। अहुत, हुत, प्रहुत, ब्राह्म्य हुत और प्राशित ये पांच यज्ञ भी गृहस्थके करने योग्य हैं। इष्ट मन्त्रका जप करना सो अहुत है, होमका नाम हुत, भौतिक बलिको प्रहुत, ब्राह्मणोंकी अर्चना करनेको ब्राह्म्याहुत और पितृश्राद्धको प्राशित कहते हैं। गृहस्थोंके लिए अथितिसत्कार एक प्रधान कार्य है, प्राण जाने पर भी गृहस्थको इससे विचलित न होना चाहिये। जब जैसी अवस्था हो, तब तैसी ही चीजोंसे अतिथिका सत्कार करना चाहिये। सबसे पहिले अतिथिको भोजन कराना चाहिये, पीछे गृहस्थको भोजन करना चाहिये।

अतिथि और श्राद्ध देखो।

मनुके मतसे—मानवजीवनका चार भागोंमें विभक्त करना चाहिये। प्रथमभाग—ब्रह्मचारी हो कर गुरुके घरमें रहना और यथाविधिसे शास्त्रोंका अध्ययन करना है। फिर गृहस्थ बन कर गृहस्थधर्म पालन करना यह दूसराभाग है। गृहस्थोंको ऐसा काम करना चाहिये जिससे किसी भी प्राणीको हिंसा न हो और रुजगार भी वही करना चाहिये ; जिससे किसी भी प्राणीका जी न दुखे। विपत्तिमें भी इस बातको ध्यानमें रख कर जीविका निर्वाह करना चाहिये कि; जिससे थोड़ी हिंसा हो। सब जातिके गृहस्थोंको अपना-अपना कार्य करना चाहिए कभी भी निन्दनीय कामोंमें हाथ न डालना चाहिए। जिन कार्योंके करनेसे शरीरको विशेष क्लेश न पहुंचे, ऐसा व्यापार करना चाहिए। शरीरको दुर्बल करके जो धनका सञ्चय किया जाता है उससे पाप होता है। गृहस्थोंके लिए ऋत, अमृत, मृत, प्रमृत और सत्यानृत ये पांच वृत्तियां प्रशंसनीय हैं और नौकरी निन्दनीय है। उञ्छवृत्तिको ऋत कहते हैं। याच्ञा नहीं करना, सो अमृत है। भिक्षालब्ध वृत्तिको मृत कहते हैं। कृषिकार्यका नाम प्रमृत और वाणिज्यका नाम सत्यानृत है। इनमेंसे पहिले पहिलेकी वृत्तियां उत्तम और पिछली वृत्तियां मध्यम और जघन्य हैं। सेवा करना नौकरी है गृहस्थको विपत्तियां झेलते हुए भी नौकरी नहीं करनी चाहिए। इसकी बराबर दुःखकर, लाघवकारिणी और निकृष्टवृत्ति दूसरी नहीं है। जो गृहस्थ तीन वर्ष तक गृहस्थी चलानेके लिये धन सञ्चय कर रखता है, उसे कुशूलधान्यक कहते हैं। जो एक वर्षके लायक रख कर काम करता है, उसे कुम्भीधान्यक कहते हैं। जो तीन दिनके लायक धन रख कर बाकीमेंसे खर्च करता है, उसे "त्र्यहैहिक" और जो दूसरे दिनकी परवाह नहीं रखता उसे अश्वस्तनिक कहते हैं। प्राचीन आर्योंने इनमें पीछे पीछेके गृहस्थोंकी प्रशंसा की है इन चार प्रकारके गृहस्थोंमेंसे प्रथम गृहस्थ अर्थात् कुशूलधान्यकको उञ्छशीलता, अयाचित, याचित, कृषि, वाणिज्य और अध्यापन ये छह वृत्तियाँ धारण करनी चाहिए। कुम्भीध्यानक कृषि और वाणिज्यको छोड़ कर बाकीकी चार वृत्तियोंमेंसे (जो हो) तीन वृत्तियोंको धारण करेगा। त्र्यहैहिक गृहस्थ कृषि, वाणिज्य और याचित इन तीन वृत्तियोंको छोड़कर बाकीसे तीन वृत्तियोंमेंसे दो वृत्ति ग्रहण करेगा। और अश्वस्तनिक सिर्फ ब्रह्मसत्र शिलोञ्छकी अन्यतमवृत्ति धारण करेगा।

अकुटिल शठताशून्य और शुद्ध जीविका ही ब्राह्मणको योग्य है। ब्राह्मणको सुखार्थी, संयत और सन्तोषी बनना चाहिए। सन्तोष ही सुखका मूल है बिना संतोष छह खंड का अधिपति चक्रवर्ती भी सुखी नहीं हो सकता वेदमें जिन जिनके लिए जो जो कर्म बतलाये हैं यदि वैसा मत करें तो मनुष्य हो कर भी स्वर्गीय सुखको प्राप्त कर देवोंके समान भोग भोग सकते हैं। तथा इन्द्रादि देवोंके साथ एकत्र वास कर सकते हैं। प्रसंग अर्थात् गीत वाद्य और अविहित वा अकुलोचित कार्य करके अर्थोपार्जन भी नहीं करना चाहिए। जीविका निर्वाहके लिए यदि यथेष्ट पैतृक धन मौजूद हो तो अर्थोपार्जन नहीं करना चाहिए। इन्द्रियोंको संयत रखनेके लिए गृहस्थको सदा प्रयत्न करते रहना चाहिये। इन्द्रियोंकी लालसाकी पूर्त्तिके लिये उसमें

आसक्त न हो जाना चाहिये। किसी भी विषयमें हदसे ज्यादा आसक्ति रखना ठीक नहीं। अगर किसी कारणसे किसी विषयमें ज्यादा आसक्ति हो गई हो तो उसका शीघ्र ही प्रतीकार कर देना चाहिये। ब्राह्मणोंको वेदाध्ययनके विरुद्ध किसी भी विषयमें अनुष्ठान न करना चाहिये। उमर, कार्य, धन, सम्पत्ति, पाण्डित्य और वंशके अनुसार ही वेश, वचन और बुद्धि ग्रहण करना चाहिये। ज्ञानके विकाश और उन्नतिके लिए प्रतिदिन शास्त्र और वैदिकनिगम अवलोकन करना चाहिए। शास्त्रके अध्ययनसे दिन दिन ज्ञानकी वृद्धि और विज्ञानकी अभिरुचि होती है। (मनु ४ अध्याय)

काशीखण्डमें लिखा है कि, बिना अर्थके कभी भी धन उपार्जन नहीं किया जा सकता। अर्थके अभावसे क्रियालोप और क्रियालोपके अभावसे धर्मकी हानि होती है। धर्म ही सुखका कारण है, बिना धर्मके सुखकी प्राप्ति हो नहीं सकती। गृहस्थ आश्रममें धनका उपार्जन, धर्मसाधन और थोड़ा-बहुत सुख होता है, इसीलिए गृहस्थ आश्रम उत्तम माना गया है। सच्चे मार्गसे उपार्जन किया हुआ धन पारलौकिक सुखके लिए सत्पात्रमें दान करना चाहिये, भूल कर भी कभी असत् पापाचारियोंको दान नहीं देना चाहिये। विपत्तिके समय अपने परिवारवर्गको पालन करनेके लिए और कर्ज चुकानेके लिए पापाचारियोंको दान देनेमें कोई दोष नहीं है। यथासाध्य परिवारवर्गका भरण पोषण करनेसे ऐहिक और पारिवारिक सुख होता है, और नहीं करनेसे पाप होता है। गृहस्थ मात्रका यह कर्त्तव्य है कि, वह अपने पोष्य वर्गका अच्छी तरह भरण पोषण करे। माता, पिता, गुरुपत्नी, सन्तान, आश्रित, अभ्यागत और अग्नि इन सात श्रेणियोंको शास्त्रकारोंने पोष्य वर्ग कहा है। गृहस्थोंका कर्त्तव्य होना चाहिये कि,—वे अनाथोंको दान दें, पोष्य वर्गका समान भावसे प्रतिपालन करें। दयालु व क्षमावान् बन कर देवता और अतिथिकी पूजा करें। घर पर अतिथिके उपस्थित होनेपर गृहस्थको मिष्टवचन बोलना, स्नेहदृष्टि रखना, मन और मुखको प्रसन्न रखना, अभ्युत्थान, स्नेहसम्भाषण, उपासना और अनुगमन करना चाहिये। आसन, पादशौच, यथाशक्ति भोजन, पृथिवी, शय्या, तृण, जल, अभ्यङ्ग (तैल-मर्दन) और दीप ये गृहस्थकी उन्नतिके कारण हैं। ब्राह्मणोंको यथारीतिसे अतिथि और देवोंकी पूजा कर रात्रिमें एक प्रहर बीत जानेके बाद यज्ञ शेष हवि भोजन करके शयन करना चाहिये तथा शेष प्रहरमें पुनः उठ कर सन्ध्यावन्दनादि कार्योंमें लग जाना चाहिये। खलता, परदाराभिलाष, परद्रोह, क्रोध, मिथ्या व्यवहार, अप्रिय आचरण, द्वेष, दम्भ और कपटता ये नौ विकर्म है। गृहस्थको ये सब त्याग देना चाहिए। स्नान, सन्ध्या, जप, होम, वेदाध्ययन, देवार्चना, वैश्वदेव, अतिथिसत्कार, और पितृतर्पण—ये नौ आवश्यक कार्य हैं। सत्य, शौच, अहिंसा क्षान्ति ज्ञान, दया, दम, अस्तेय और इन्द्रिय-संयम -ये नौ सब धर्मोंके साधन स्वरूप हैं। [इस आश्रममें स्त्रियोंका कर्त्तव्य आकाश व्य स्त्रीधर्म शब्दमें देखना चाहिये] गृहस्थको सर्वदा इनका अनुष्ठान करते रहना चाहिये। (काशीखण्ड ११ अध्याय)

व्याससंहिताके मतसे गृहस्थके करने योग्य कार्य तीन हैं,—नित्य, नैमित्तिक और काम्य गृहस्थको रात्रिके शेषभागमें शय्या छोड़ कर भक्तिपूर्वक विष्णुका ध्यान करना, और मांगलिक द्रव्योंका अवलोकन कर आवश्यक कर्म अनुष्ठान करना चाहिये। पहिले शौचक्रिया करके अग्निसेवन, दंतधावन और स्नान करके पवित्र भावोंसे सन्ध्या और देव देवीकी पूजा करनी चाहिये। इसके बाद यथारीति वेद वा वेदाङ्ग अध्ययन और इतिहास आदिका अभ्यासकर ब्राह्मणोंको उपयुक्त अधिकारी शिष्योंको पढ़ाना चाहिये। इसके बाद याग-यज्ञ आदि कर दैनिक व्यापार समापन करना उचित है।

(व्याससंहिता ३ अ०)

धर्मशास्त्रप्रणेता दक्षके मतसे—उदयसे अस्तकाल तक ब्राह्मणोंको क्षणभरके लिए भी निष्क्रिय न रहना चाहिये। सर्वदा कोई न कोई कार्य करते ही रहना उचित है। ब्राह्मणके दैनिक कर्त्तव्य कार्य—उषाकालसे यथाक्रम शौच, स्नान, दन्तधावन, प्रातःस्नान, सन्ध्याकी उपासना, होमके अनुष्ठान, देवतार्चन, गुरु और मांगलिक द्रव्योंका अवलोकन ; ये सब कार्य दिनके प्रथम भागमें करना उचित है। द्वितीय भागमें करने योग्य कार्य ये हैं—वेदाभ्यास, जप, दान और अध्यापना।

तृतीय भागमें करने लायक काम ये हैं;—परिवारवर्गके प्रतिपालन करनेके लिए अर्थोपार्जन और अन्नदान। चतुर्थ भागमें स्नान और मृत्तिका आहरण, पञ्चम भागमें पितृलोक और देवलोक आदिकी पूजा; तथा यथानियम से पोष्यवर्गको बाँट कर स्वयं बचे हुए भोजनको खाना चाहिये। भोजन करके जब तक न वह परिपाक हो, तब तक सुखचित्तसे अवस्थान करना चाहिये। इसके बाद इतिहास और पुराण आदिके प्रसङ्गमें छठा और सातवाँ भाग बिताना उचित है। अष्टमभागमें प्रयोजनीय लौकिक व्यवहारका अनुष्ठान, सन्ध्या, उपासना, होम, भोजन और सांसारिक कार्य यथाक्रमसे करना और फिर वेदका अध्ययन करना उचित है। फिर समय पर सो जाना चाहिये. तथा एक प्रहर रात्रि रहते हुए उठना चाहिये। (दक्षसंहिता)

जैनमतानुसार—धर्म दो प्रकारका है, एक सागार या गृहस्थधर्म और दूसरा अनागार या मुनिधर्म। मुनिधर्मका वर्णन मुनिधर्ममें किया जायगा, यहां गृहस्थधर्म वर्णन किया जाता है। गृहस्थ वह कहलाता है जो विवाह करके घरहीमें रह कर अणुव्रत पालता हुआ मुनिधर्मकी अभिलाषा रखता हो और धर्म अर्थ काम इन तीनों पुरुषार्थोंको समान भावसे पालता हो। ऐसे मनुष्य जिस धर्मका सेवन करते हैं, उस धर्मका नाम गृहस्थधर्म है। गृहस्थियोंके बारहव्रत होते हैं—पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत। अहिंसा,—किसी जीव वा प्राणीको मन वचन कायसे हिंसा न करना, सत्य दूसरेके लिए लाभदायक मिष्ट वचन बोलना, अस्तेय,—बिना दी हुई वस्तुको ग्रहण न करना, ब्रह्मचर्य—अपनी विवाहिता स्त्रीके सिवाय दूसरी स्त्रीकी मन-वचन-कायसे इच्छा न करना, परिग्रह परिमाण—जरूरतसे ज्यादा वस्तुओंका संग्रह न करना; तथा आत्मासे भिन्न पर द्रव्योंसे ममत्व भाव न रखना,—ये पाँच अणुव्रत हैं। तीन गुणव्रत ये हैं, दिग्व्रत, देशव्रत, और अनर्थदंडव्रत। दिशाओंका प्रमाण करना अर्थात् मैं अमुक दिशामें इतनी दूर तक जाऊंगा-ऐसे प्रमाण करना; सो दिग्व्रत है। अमुक देश तक जाऊंगा ऐसे नियम वा यम करनेको देशव्रत कहते हैं। पापके बढ़ानेवाले पाँच प्रकारके अनर्थ दण्डके आचरण करनेका त्याग करना है. वह अनर्थदण्ड त्याग व्रत नामक तीसरा गुणव्रत है। सामयिक, प्रोषधोपवास, भोगोपभोग परिमाण और वैयावृत्य—ये चार शिक्षाव्रत हैं। व्रतोंकी वृद्धिके लिए प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल इन तीनों सन्ध्याओंमें एकाग्रचित्त हो कर उत्तम, मङ्गल स्वरूप, शरण देनेमें अद्वितीय श्रीअर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु (१) इन पञ्चपरमेष्ठियोंको नुति, स्तुति एवं प्रतिक्रमण आदि आवश्यकोंको करना और द्रव्य क्षेत्र काल भावकी शुद्धि देख कर समस्त आरम्भोंकी निवृत्तिपूर्वक दो आसन (पद्मासन या खड्गासन), बारह आवर्त्त, चार नतिका मन-वचन-कायसे आचरण करना सामयिक शिक्षाव्रत है। प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशीको उपवास (सप्तमीके दिनमें बारह बजे खा कर नवमीके दिनके बारहबजे खाना; बीचमें कुछ न खाना; सो उपवास है) करनेको प्रोषधोपवासव्रत कहते हैं। उपवास कालमें निरन्तर शास्त्र स्वाध्याय करते रहना चाहिए और किसी प्रकारकी मनमें कलुषता न लानी चाहिये। अपनी आत्माके कल्याणके लिए भोग और उपभोगकी सामग्रियोंका जो प्रमाण करना है, वह भोगोपभोग परिमाणव्रत है। संयमी शुद्ध-पवित्रात्मा (जो सर्व परिग्रहके त्यागी हों; तथा रागद्वेषसे रहित हों ऐसे दिगम्बर मुनि) अतिथि पुरुषोंके लिए जो श्रेष्ठ प्रासुक चार प्रकारके आहारोंका दान देना है, वह वैयावृत्य नामक गृहस्थोंका उपासनीय चौथा शिक्षाव्रत है। इन बारह व्रतोंको शक्तिके अनुसार गृहस्थोंको अवश्य पालन करना चाहिये। इन बारह व्रतोंमें प्रत्येक व्रतके पांच पांच अतीचार होते हैं। अतीचाररहित जो व्रत पाले जाते हैं, वे निर्दोष हैं और जिन व्रतोंके पालन करनेमें अतीचार लग जाते है, वे सदोष हैं।

"यो दधाति नरो पूतं श्रावकव्रतमर्चितं।
मर्त्यामरश्रियं प्राप्य यात्यसौ मोक्षसम्पदं॥"

(सुभाषितरत्नसन्दोह श्लोक ८६४)

अर्थात् जो पुरुष इन पवित्र व्रतोंको निर्दोष रीतिसे

(१) जपनेका मन्त्र इस प्रकार है—णमो अरहन्ताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं अथवा "ॐ नमः सिद्धेभ्यः" आदि।

पालता है, वह अवश्य ही मनुष्य और देवोंके सुखोंको भोग कर मोक्षसुख प्राप्त करता है। इसलिए व्रतोंका निर्दोष पालना ही सर्वथा उचित है।

गृहस्थोंको चाहिये कि, वे अपने मनमें सर्वदा यही भावना रखें कि, मैं समस्त प्राणियोंसे मैत्री भाव रखूं, पूज्य निष्पक्ष विद्वानोंमें प्रमोद रखूं, समस्त प्राणियों पर दया भाव रखूं और शत्रुओंके साथ भी मध्यस्थ भाव रखूं (१)। इससे आत्मामें सदा शान्तिभाव रहता है।

यदि गृहस्थ इतने व्रतोंको पालन न कर सके तो कमसे कम उसे पांच अणुव्रत तो अवश्य ही पालना चाहिये तथा नित्य सुबह उठ कर शौचस्नानादिके बाद जिनमन्दिरमें जा कर सच्चे देव, शास्त्र, गुरुकी पूजा करनी चाहिये। सच्चे देव वह हैं जिनमें रागद्वेष नहीं (वीतरागी) है, सर्वज्ञ हैं और हितोपदेशी हैं। इनहीसे कहे हुए जो शास्त्र हैं, वे सच्चे शास्त्र हैं, और बाह्य आभ्यन्तर परिग्रहसे रहित दिगंबर मुनि सच्चे गुरु हैं। इनकी उपासना करनी चाहिये। इसके बाद शास्त्रोंका स्वाध्याय करना चाहिये। फिर सामयिक करनी चाहिये। गृहस्थ धर्मका विस्तृत वर्णन जानना हो तो "रत्नकरण्डश्रावकाचार" "गृहस्थधर्म" "अमितगति श्रावकाचार" आदि ग्रंथ देखने चाहिये। यहां संक्षेपसे वर्णन किया गया है। गृहस्थ धर्मका और विवरण जानना हो तो उन शब्दोंका तथा श्रावक शब्दको देखो।

गृहस्थान (सं० क्लो०) गृहस्य स्थानं, ६ तत्। वास करने योग्य स्थान, ऐसा स्थान जहां घर निर्माण किया जा सकता है। गृह देखो।

गृहस्थाश्रम (सं० पु० क्लो०) गृहस्थरूपमाश्रमं। गृहस्थके कर्तव्यधर्म चार आश्रमोंमेंसे दूसरा आश्रम।

गृहस्थधर्म देखो।

गृहस्थी (हिं० स्त्री०) १ गृहस्थाश्रम, गृहस्थका कर्तव्य। २ घरबार, गृहव्यवस्था। ३ कुटुम्ब, लडकेवाले, परिवार। ४ घरका सामान, माल ... करे। दयालु व क्षमा-

गृहस्थूल (सं० क्लो०) गृहस्य स्थूलं, ६ तत्, समासे क्लीवत्वं। गृहस्तम्भ, घरकी खूंटी या खम्भा।

गृहस्वामिन् (सं० त्रि०) गृहस्य स्वामी अधिपतिः, ६-तत्। गृहपति, घरका मालिक।

गृहहन् (सं० त्रि०) गृहं हन्ति हन् क्विप्। गृहनाशक, घरको नष्ट करनेवाला।

गृहाक्ष (सं० पु०) गृहस्याक्षीव समासे टच्। गवाक्ष, झरोखा, छोटो खिड़की।

गृहागत (सं० पु०) गृहमागतः, २-तत्। १ आगन्तुक, अतिथि। २ जो मनुष्य किसी दूसरेके घरमें आया हो।

गृहाधिप (सं० पु०) गृहस्य अधिपः, ६-तत्। १ गृहस्थ। (त्रि०) २ गृहस्वामी, घरका रक्षक।

गृहापिका (सं० स्त्री०) ज्येष्ठी, छिपकली।

गृहाम्ल (सं० क्लो०) गृहस्थितामम्लं। काञ्जिक, कांजी।

गृहाम्बु (सं० क्लो०) गृहे पर्युषितं अम्बु। कांजिक, कांजी।

गृहायनिक (सं० पु०) गृहरूपमयनं विद्यतेऽस्य गृहायन-ठन्। गृहस्थ।

गृहाराम (सं० पु०) गृहस्य आरामः, ६-तत्। गृहके निकटवर्ती उपवन, घरके नजदीककी फुलवाड़ी।

गृहार्थ (सं० पु०) गृहे निष्पादोऽर्थः, मध्यपदलो०। गृहकर्म, घरका कामकाज।

गृहालिका (सं० स्त्री०) गृहे आलिरिव कायति कै-क। गृहगोधिका, घरालू छिपकली।

गृहावग्रहणी (सं० स्त्री०) गृहं अवगृह्यते अनया अवग्रह करणे ल्युट्-ङीप्। देहरी, दीवार।

गृहावस्थित (सं० त्रि०) गृहेऽवस्थितः। गृहस्थित, जो घरमें स्थित है।

गृहाशया (सं० स्त्री०) गृहे इव च्छायायुक्तस्थाने आशेते आ-शी-अच्-टाप्। १ ताम्बूली, पानकी लता। २ पूगीवृक्ष।

उचित

गृहाश्मन् (सं० पु०) गृहस्थितोऽश्मा। पेषणी, मसालादि पीसनेकी शिला।

गृहाश्रम (सं० पु० क्लो०) गृहमेव आश्रमं। १ गृहरूपआश्रम, घरके सदृश रहनेकास्थान। २ गृहस्थके अनुष्ठेय धर्म, गार्हस्थ्य।

---

(१) "सत्त्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव॥"
(अमितगतिआचार्य)

गृहाश्रमिन् (सं० पु०) गृहाश्रममस्त्यस्य गृहाश्रम-इनि। गृहस्थ।

गृहासक्त (सं० त्रि०) गृहे भार्यायां आसक्तः। १ भार्यासक्त, घरकेसांसारिक काममें लवलीन। २ विषय वासनामें लगा हुआ। ३ गृहस्थित पक्षी, घराल चिड़िया।

गृहिन् (सं० पु०) गृहं भार्या अस्त्यस्य गृह इनि। गृहाश्रमी, गृहस्थ।

गृहिणी (सं० स्त्री०) गृहं गृहकर्तृत्वं गृहकृत्यं वा अस्त्यस्य गृह-इनि-ङीप्। १ भार्या, पत्नी, जिस स्त्रीके ऊपर घरका समस्त कार्यभार अर्पित हो। प्राचीन समयमें आर्यगण जिन नियमोंसे गृहिणी द्वारा गृहकार्य सम्पादन करते थे इतिहास और प्राचीन नीतिशास्त्रमें वे सब नियम लिपिबद्ध हैं। शुक्रनीतिके अनुसार ब्राह्मणगृहिणीका कर्त्तव्य स्वामिसेवा है। इसके अतिरिक्त स्त्रियोंको और कोई दूसरा धर्मानुष्ठान करना निषिद्ध है, किन्तु पति यदि कोई याग यज्ञका अनुष्ठान करे तो उस समय स्त्रीको सहायता देना उचित है। इसके अलावा स्वतन्त्र रूपसे दूसरा धर्मानुष्ठान उनके लिये नहीं है। गृहिणीको उचित है कि स्वामीके शय्या परित्यागके पहले उठ जावें। तत्पश्चात् शरीरको शुद्ध कर बिछावन उठा रखना तथा झाड़ूसे घर भली भांति परिष्कार कर लेप देना चाहिये। इसके बाद यज्ञकाष्ठ और जलपात्र नियम पूर्वक शोधन कर उपयुक्त स्थान पर रख दें। इस तरह आह्निक कार्यके समाप्त होने पर पाककार्यमें नियुक्त हो जांय। इस कार्यमें सबसे पहले पाकगृहके बरतनोंको बाहर कर घरको लेपना और तब उन्हें मार्जन करना चाहिये। इसके बाद स्नान कर रसोईका समस्त आयोजन करें। ये समस्त गृहिणीके पूर्वाह्न कार्य हैं। श्वशुर तथा श्वश्रूकी सेवा करना गृहिणीका मुख्य कर्त्तव्य है, सर्वदा स्वामीकी आज्ञानुवर्तिनी हो छायाकी नांई उनका अनुगमन और दासीकी नांई उनका आदेश प्रतिपालन करना चाहिये। इसके अनन्तर उपयुक्त समयमें पाक कर सबसे पहले गुरुजनोंको और तब घरके दूसरे २ मनुष्योंको भोजन करावें। अन्तमें स्वामीके अनुमतिक्रमसे आप भोजन करें। भोजनके बाद सायंकाल पर्यन्त गृहके आय व्यय और कर्त्तव्याकर्त्तव्य पर ध्यान दें। सन्ध्या उपस्थित होने पर पूर्वाह्नके जैसे समस्त गृहकार्य अनुष्ठान कर पाकमें लग जांय। पूर्ववत् घरके सभीको खिलाकर अन्तका आप भोजन करें, और इसके बाद शय्या प्रस्तुत करें। पतिके शयन करने पर उनकी चरणसेवामें नियुक्त हो जावें। पतिके सो जानेके बाद आप सोवें, एवं रात्रिके शेषको पति उठनेके पहले ही स्वयं शय्योत्थान करें। अनवधानता, मत्तता, रोष, ईर्षा वचन, परकी निन्दा, पिशुनता हिंसा, विद्वेष, मोह, अहङ्कार, धूर्तता, नास्तिकता, साहस और दम्भ इन सबका परित्याग करना साध्वीगृहिणीका एकान्त कर्तव्य है। (शुक्रनीति १ अ०)

एक समय कृष्णपत्नी सत्यभामा स्त्रीधर्म जाननेके हेतु द्रौपदीके निकट गई थीं। द्रौपदीने उन्हें भली भांति गृहिणीका कर्तव्याकर्तव्यका उपदेश दिया, जिसका विवरण महाभारतमें विस्तृतरूपसे वर्णित है। उपरोक्त नियमानुसार चलने पर स्त्रियां आनन्दपूर्वक समय व्यतीत कर सकतीं और अन्तको मोक्ष पाती हैं। स्त्रीधर्म देखो।

२ काञ्जिक, कांजी। ३ घरकी मालिकिन।

गृहीत (सं० त्रि०) ग्रह कर्मणि क्त। १ स्वीकृत, मंजूर किया हुवा। २ अवगत, ज्ञात, मालुम। ३ प्राप्त, हासिल किया गया। ४ धृत, पकड़ा गया। (क्ली०) ग्रह भावे क्त। ५ स्वीकार, मंजूर। ६ ज्ञान, बोध, समझ। ७ प्राप्ति, हासिल, धारण, पकड़।

गृहीतगर्भा (सं० स्त्री०) गृहीतो गर्भो यया, बहुव्री०। गर्भवती, [illegible]।

गृहीतदिश् (सं० त्रि०) गृहीता दिक् येन, बहुव्री०। १ पलायित, भगा हुवा। २ [illegible], गायब।

गृहीतनामन् (सं० त्रि०) गृहीतं प्रशस्तं पुण्यजनकं नाम यस्य, बहुव्री०। जिसका नाम प्रशस्त है, मशहूर, प्रशंसनीय।

गृहीतविद्य (सं० त्रि०) गृहीता अधीता विद्या येन बहुव्री०। जिसने विद्या ग्रहण किया हो, शिक्षित, पण्डित, अक्लमन्द।

गृहीतव्य (सं० त्रि०) ग्रह कर्मणि तव्य। १ ग्रहणयोग्य, जो प्राप्त करनेके लायक है। (क्ली०) ग्रह भावे तव्य। २ ग्रहण, प्राप्त, हासिल।

गृहीतास्त्र (सं० त्रि०) गृहीतमस्त्रं येन, बहुव्री०। अस्त्रधारी, जिसने हथियार धारण किया हो।

गृहीतिन् (सं० त्रि०) गृहीतं ग्रहणं अस्त्यस्य गृहीत-इनि। कृतग्रहण, जिसने ग्रहण किया है।

गृहीतृ (सं० त्रि०) ग्रह-तृ। ग्रहण करनेवाला, ग्रहीता।

गृहेशानिन् (सं० त्रि०) १ अवहुदर्शी, अज्ञान, जिसको समझ नहीं है। २ नितान्त निर्बोध, जिसको बोध नहीं है।

गृहेरुह (सं० पु०) गृहे रोहति रुह-क, अलुक्स०। गृहजात वृक्ष, घरमें जन्मा हुआ गाछ।

गृहेनर्दिन् (सं० पु०) गृहे एव नर्दति नर्द णिनि अलुक्स०। कापुरुष, कायर मनुष्य, डरपोक आदमी, वह मनुष्य जो लड़ाईमें भीरुता दिखलाता और घरमें बैठ कर लम्बी चौड़ी बात बोला करता है।

गृहेश (सं० पु०) गृहस्य ईशः, ६-तत्। १ घरके स्वामी, घरका मालिक। २ राशीश्वर।

गृहेश्वर (सं० पु०) गृहस्य ईश्वरः, ६-तत्। गृहके अधिपति, घरका मालिक।

गृहोत्पात (सं० पु०) गृहस्य उत्पातः, ६-तत्। घरका विघ्न, घरका उपद्रव।

गृहोपकरण (सं० क्लो०) गृहस्य उपकरणं, ६-तत्। गृह-सामग्री, घरको तैयार करनेमें जिन जिन चीजोंका प्रयोजन पड़ता है।

गृहोलिका (सं० स्त्री०) गृहे [illegible] बाहुलकात् संप्रसारण टाप् अत इत्वम्। ज्येष्ठी, छिपकली।

गृह्य (सं० पु०) गृह्यते [illegible]दिभिः ग्रह-क्यप्। १ गृहासक्त पक्षी, घरमें रखनेका पक्षी। २ गृहासक्त मृग। (क्ली०) गृह्यते आक्रम्यते रोगेण ग्रह-क्यप्। ३ गुदा, मलद्वार। (त्रि०) ४ परतन्त्र, पराधीन। ५ आयत्त, वश्य, विनीत, शासनीय। ६ पक्ष्य, पक्षपाती। गृहे भवः गृह-यत्। ७ गृहोत्पन्न, जो घरमें पैदा हो। (पु०) ८ गृह निमित्तक अग्नि। (क्ली०) ९ उस अग्नि सम्बन्धीय काम। (पु०) गृह्यन्ते संगृह्यन्ते वेदविहितानि कर्माणि काण्डानामत्र ग्रह-क्यप्। १० वैदिक सूत्रविशेष। इसमें गृहस्थके जन्मसे मृत्यु पर्यन्त कार्य कलापकी अनुष्ठान-प्रणाली और कर्त्तव्याकर्त्तव्य भलीभांति वर्णित है। हिन्दु गण बहुत दिनोंसे इस ग्रन्थके मतानुसार वैदिककार्य का अनुष्ठान करते आ रहे हैं। वर्तमान समयमें भी इसका मत आदरणीय है। सचराचर व्यवहार-में यह गृह्यसूत्र नामसे उल्लेख किया गया है। वेद एवं शाखाभेदमें बहुतसे गृह्यसूत्र हैं। इनकी भाषा प्रायः वैदिक भाषाकी नाईं है। सूत्र देखो।

गृह्यक (सं० त्रि०) गृह्य स्वार्थे कन्। १ गृहासक्त पक्षी, घरमें रखनेकी चिड़िया। २ घरालू मृग। ३ पराधीन।

गृह्यगुरु (सं० पु०) शिव, महादेव।

गृह्यग्रन्थ (सं० पु०) गृह्यसूत्र।

गृह्या (सं० स्त्री०) गृह्य-टाप्। बड़े ग्रामके नजदीक छोटा ग्राम।

गॄ (सं० क्रि०) १ शब्द करना, पुकारना, आह्वान करना, प्रशंसा करना, प्रकाश करना। २ खाना, निगलना, मुखसे गिरा देना। ३ जानना निशान करना, प्रकाश करना, सिखाना।

गेङ्गटा (हिं० पु०) कर्कट, केकड़ा।

गेण्ठी (हिं० स्त्री०) गृष्टि, वाराहीकन्द।

गेण्ड (हिं० पुं०) १ काण्ड, ऊखके ऊपरका पत्ता, अगौरा। २ गोष्ठ, घेरा जो ऊखके पत्ते, सरसोंकी डण्टी तथा अरहरके शुष्क काण्डसे बनाया जाता है, इसमें गृहस्थ भूसा देकर अन्न रखते हैं, ठेक।

गेण्डना (हिं० क्रि०) १ पतली छोटी दिवारसे खेत घेरना। २ अनाज रखनेके लिये ठेक बनाना। ३ घेरना। ४ कुल्हाड़ीसे काटना।

गेण्डली (हिं० स्त्री०) कुण्डली, कुण्डल, फेंटा।

गेंड़हिया (देश०) नानाप्रकारके रङ्गके रोएं या ऊन।

गेंड़ा (हिं० पु०) १ काण्ड, ईखके शीर्षभागकी पत्तियां। २ ईख, गन्ना, ऊख, केतारी। ३ खेतमें बोनेको ईखके छोटे टुकड़े। ४ पीतल और तांबेको लाल कर पीटने-की पत्थरकी निहाई।

गेंड़ुआ (हिं० पुं०) १ तकिया, बालिश, सिरहाना। २ वृहत् कन्दुक, बड़ा गेंद।

गेंडुरी (हिं० स्त्री०) १ कुण्डली, घड़ा रखनेका रस्सीका बना हुआ मेंडरा, बिड़वा। २ फेंटा। ३ सांपोंका वर्त्तु-लाकार होकर बैठना।

गेंडुली (हिं० स्त्री०) गेंडुरी देखो।

गेंती (हिं० स्त्री०) अवधमें छोटी २ नदियोंके किनारे और नेपालकी तराईमें होनेवाला एक तरहका पेड़ इसके पत्ते चार पांच अंगुलके चौड़े और लम्बे होते हैं। ग्रीष्म कालमें पीले रङ्गके फूलके गुच्छे भी इसमें निकलते हैं।

गेंट (हिं० पु०) गेंद देखो।

गेंदई (हिं० वि०) पीत रङ्गका गेन्दा पुष्पके रङ्गका। (पु० गेन्दा पुष्प कासा पीत रंग।

गेंदघर (हिं० पु०) १ गेंद, क्रिकेट, टेनिस खेल खेलनेका स्थान, क्लब घर। २ अङ्गरेजके विलियर्ड नामक खेल खेलनेका मकान, विलियर्ड रूम।

गेंदतड़ी (हिं० स्त्री०) एक दूसरेको गेंदसे मारनेका एक प्रकारका खेल। इस खेलमें लड़के आपसमें उसीको चोर बनाते हैं जिसको गेंद लगता है।

गेंदबल्ला (हिं० पु०) लकड़ीकी एक पटरीसे गेंद मारनेका एक तरहका खेल।

गेंदवा (हिं० पु०) गेण्डुक, तकिया, बालिश, सिरहाना।

गेंदा (हिं० पु०) एक तरहका पौधा जो दो ढाई हाथ ऊंचा रहता है और जिसमें पीले रङ्गके पुष्प लगते हैं। गेंदा फूल दो तरहके होते हैं, एक 'जङ्गली' जिसमें सिर्फ चार पांच दल होते हैं, दूसरा 'हजारा' जिसमें बहुत दल रहते हैं। फूलके रंग भी कई तरहके होते हैं, कोई हलके पीत रंगके, कोई नारंगी रंगके और कोई लाल रंगके होते हैं। गेंदेके पत्तोंको शुष्क कर यदि फिटकिरीके साथ पानीमें उबाला जाय तो गंधकी रंग प्रस्तुत हो जाता है। २ एक प्रकारकी आतिशबाजी (Fire works) जिसके गुल गेंदेके फूलसे निकलते हैं। ३ सुवर्ण या रौप्यका बना एक गोल घुंघुरूदार आभूषण, जो जोशन या बाजूमें घुण्डीकी जगह पर रहता और नीचेकी ओर लटकता है।

गेंदुवा (हिं० पु०) गेंदवा देखो।

गेंदौड़िया (हिं० स्त्री०) बगुलोंकी एक जाति।

गेंदौरा (हिं० पु०) एक तरहकी मिठाई, चीनीकी रोटी।

गेगम (देश०) एक धारीदार वस्त्र।

गेगला (देश०) १ एक तरहका पौधा जो मसूरकी जातिका होता और प्रायः ६००० फीटकी ऊंचाई पर उत्पन्न होता है। यह बिना बोये उपजता है, किन्तु कभी कभी पशुके चारेके लिये बोया भी जाता है। इसमें काले रङ्गके दाने भी निकलते जो देखनेमें गेहूंके सदृश होते हैं।

(वि०) २ मूर्ख, जड़, बेवकूफ।

गेगलापन (हिं० पु०) मूर्खता, जड़ता, भोंदूपन।

गेजुनिया (देश०) गुल दुपहरिया।

गेटिस (अनु० पु०) घुटनेसे लेकर एड़ी तक पैर ढाकनेका एक आवरण जो कपड़े या चमड़ेका बना रहता है, मोजा। २ मोजा आदि बांधनेका रबर, कपड़े या चमड़ेका फीता।

गेड़ना (हिं० क्रिया०) १ लकीरसे घेरना। २ परिक्रमा करना, चारों ओर घूमना।

गेड़ी (हिं० स्त्री०) १ लड़कोंका एक खेल। २ इस खेलमें रखनेको लकड़ी।

गेड़ो—बम्बई प्रान्तकी काठियावाड़ एजेन्सीका क्षुद्र राज्य। राजा झाला राजपूतवंशीय हैं। लोकसंख्या ५७४ और आय ४५००) रु० है। १३३८) रु० वार्षिक कर वृटिश गवर्नमेण्ट और जूनागढ़के नवाबको दिया जाता है।

गेण्डु (सं० पु०) गच्छति गम ड, गो गन्ता इन्दुरिव पृषोदरादिवत् इकारस्य तत्वे साधु। गेण्डुक, गेंद।

गेण्डुक (सं० पु०) गेण्डु स्वार्थे कन्। कन्दुक, कपड़ेका बना हुआ गोलाकार खेलनेका पदार्थ, गेंद।

गेदा (हिं० पु०) चिड़ियका छोटा बच्चा जिसे पर न निकले हों।

गेनुर (देश०) पशुओंके चारेके काममें आनेवाली एक तरहकी बारामासी घास।

गेप (सं० क्रि०) कांपना, थरथराना।

गेवा (देश०) तानेकी कंघीकी तीलियां जो लकड़ीकी चिरी हुई पतली पट्टियोंकी होती हैं। यह तानेके सूतको एक दूसरेमें मिलजाने या उलझनेसे बचाती हैं।

गेय (सं० क्लो०) गा-यत्। (अचो यत्। पा ३।१।९७) १ गीत, गान। (वि०) २ गायक, गानेके योग्य, गानेके लायक।

गेयप्रिय (सं० पु०) मुक्तपुष्पवृक्ष, गन्धराजका पेड़।

गेर (फा० पु०) ग्रन्थि, गांठ, गिरह।

गेरना (फा० क्रि०) १ गिराना। २ डालना। ३ डालना, आरोप करना।

गेरवां (फा० पु०) गेरांव, पशुके गलेमें लपेटनेका बंधन, गरदनी।

गेरसप्पा—बम्बई प्रान्तके उत्तर कनाड़ा जिलेमें होनावाड़ तालुकका एक गांव। यह अक्षा० १४° १४´ उ० और देशा० ७४० ३८´ पू०में शरावती नदी पर पड़ता है। इस नामका झरना कोई १८ मील दूर है। नारियलके पेड़ बहुत हैं। यहांसे कोई १॥ मील पूर्व नगरवस्तिकर नामक गेरसप्पा जैनोंकी राजधानीका ध्वंसावशेष है। कहते हैं, किसी समय वहां १००००० घर और ८४ मंदिर थे। एक जैनमन्दिरमें आज भी ४ हाथ लम्बी और ४ मूर्तियां रखी हैं। दूसरे पांच टूटे फूटे मन्दिरोंमें भी कुछ मूर्तियां और शिलालिपियां हैं। वर्द्धमानके मन्दिरमें २४वें जैनतीर्थङ्कर महावीरस्वामीकी एक काले रङ्गकी मूर्ति है।

कहते हैं, विजयनगरके राजाओंने (१३३६–१५६५ ई०) गेरसप्पाके किसी जैन वंशको कनाड़ामें शक्तिशाली बनवाया था। १४०८ ई०को महीने पास वुचामनमें गुणवन्ती मन्दिरके लिये गेरसप्पा अधिपति इतचय्या वोडेयारू प्रितानीके भूमिको उत्सर्ग किया। कहा जाता है वहां बहुत दिनों तक स्त्रियोंका राज्य रहा। ई० १७वीं शताब्दीमें बदनूरके वेङ्कटप्पा नायकने भैर देवीको हराया था। इटलीके परिव्राजक डेलावालेने लिखा है कि १६२३ ई०को गेरसप्पा एक प्रसिद्ध राजधानी था, यह देश मिर्चके लिये मशहूर है।

गेरसप्पा—बम्बई महिसूर सीमाका एक जलप्रपात। यह अक्षा० १४° १४´ उ० और देशा० ७४° ४८´ पू०में अवस्थित है। जो गांव पास रहनेसे उसको जोग झरना लोग कहते हैं। यह शरावती नदी पर गिरता है। दिसम्बर महीने झरना देखनेकी बहार है। १० मील ऊंची सड़क जङ्गलके बीच गेरसप्पा गांवसे आवशारको गयी है। भारतमें ऐसा कोई भी दूसरा झरना नहीं और ऊंचाई, लम्बाई चौड़ाई तथा सुघराईमें दुनियामें दूसरी जगह भी इसकी मिसाल कम मिलती है। सन्ध्याको सूर्यास्त समय झरनेमें एक सुन्दर इन्द्रधनु: बनता और रातको चन्द्रमा भी उसकी शोभा बढ़ाया करता है। महिसूर तटसे देखनेमें वह बहुत अच्छा लगता है। नदीके दक्षिण किनारे बांसका एक पुल है।

गेरांई (फा० स्त्री०) गेरांव।

गेरांव (फा० पु०) गेरवां देखो।

गेरुआ (हिं० वि०) १ गेरूके रङ्गका, मटमैलापन लिए लाल रङ्गका। २ गेरूमें रङ्गा हुआ, गैरिक, जोगिया। (पु०) १ गेरूके रङ्गका एक कीट। माघ मासके वर्षाकालमें इस तरहके कीटकी उत्पत्ति होती है। अन्नके खेतोंमें इसके लग जानेसे पेड़ पीले रङ्गके हो जाते हैं। २ गेहूं फसलका एक रोग। इस रोगमें गेहूंके पेड़ कम बढ़ते और क्रमशः कमजोर होते जाते हैं, जिसके कारण अन्न भी पैदा नहीं हो सकता है। इस रोगको गेरुई और कुकुही भी कहते हैं।

गेरुई (हिं० स्त्री०) गेरुआ देखो।

गेरू (हिं० स्त्री०) गवेरुकखानोंसे निकलनेवाली एक तरहकी लाल कठिन मिट्टी। इसके दो रूप हैं एक जो कड़ी नहीं रहती वरन् भुर भुरी होती है वह कच्ची गेरू कहलाती है दूसरी जो कड़ी होती है पक्की गेरू कहलाती। इस तरहकी मिट्टी बहुतसे काममें लायी जाती है, सोनार सोनेके आभूषणों पर इसके द्वारा रंग देते हैं, रंगरेज भी इसके संयोगसे कई तरहके रंग प्रस्तुत करते हैं। औषधमें भी इसका व्यवहार होता है, इसका पर्याय—लालमिट्टी, गिरमटी, गिरिमृत, सुरंगधातु, गवेरुक, गैरिक, ताम्रवर्णक और कठिन है।

गेर्द (फा० पु०) घेरा, गिर्द।

गेल (सं० पु०) विशिष्ट संख्या, खास मद्द।

गेला (अनु० पु०) छापेखानेमें बड़ी गेली।

गेली (अं० स्त्री०) छापेखानेकी छिछली किश्ती जो धातु या काठकी बनी होती है और जिसपर टाइप रखकर प्रथम बार वह कागज छापा जाता जो पीछे संशोधित किया जाता है।

गेल्हा (देश०) तेलीके तेल रखनेका चमड़ेका कुप्पा।

गेवर (देश०) एक पेड़। गंगवा देखो।

गेवराई—हैदराबाद राज्यके भीड़ जिलेका उत्तर तालुक। इसका क्षेत्रफल ५०६ वर्गमील, लोकसंख्या प्राय: ५८३६१ और मालगुजारी लगभग २ लाख ३० हजार है। उत्तर-

को गोदावरी औरङ्गाबाद जिलेसे उसे अलग करती है। १३५ गांव हैं। गेवराई गांवमें कोई ३८६५ आदमी रहते हैं।

गेवींखाली—बङ्गालके मिदनापुर जिलेमें तमलुक सब डिविजनका एक गांव। यह अक्षा० २२° १०´ उ० और देशा० ८७° ५७´ पू०में हुगली नदीके दक्षिण तटपर पड़ता है। जनसंख्या ५२४ है। यहां व्यापार बहुत होता है। ईष्टर्न बङ्गाल ष्टेट रेलवेके लिए एक जहाज डायमण्ड हारबर आता जाता है। स्थानीय आलोकगृह को 'कोकोलो' कहते हैं।

गेष्णु (सं० पु०) गा-इष्णु। १ रङ्गोपजीवी, जो नाचगा कर अपनी जीविका निर्वाह करता है, रण्डी, भाँड। २ सामगानकर्त्ता, सामवेदका गान करनेवाला। ३ पर्वग्रन्थि, अवयवभेद।

गेष्णु (सं० पु०) गा-इष्णुच। १ गायन, गानेवाला, गवैया, गायक। २ नट, भाँड। ३ सामगानकर्त्ता सामवेदका गायक, सामवेदका गान गानेवाला।

गेह (सं० क्ली०) गो गणेशो गन्धर्वो वा ईह ईप्सितो यत्र बहुव्री०। गृह, घर, मकान, निवासस्थान।

गेहदाह (सं० पु०) गेहस्य दाहः, ६-तत्। गृहदाह, घरका जलना। घरमें आग लगना।

गेहधूम (सं० पु०) गृहधूम, झूल।

गेहनी (हिं० स्त्री०) घरवाली, गृहिणी, भार्या, पत्नी।

गेहपति (सं० पु०) गेहस्य पतिः, ६-तत्। गृहपति, घरका मालिक।

गेहभू (सं० स्त्री०) गेहस्य भूः, ६-तत्पु०। गृहस्थान, वह जगह जहां घर निर्माण किया गया हो।

गेहिन (सं० पु०) गेहमस्यास्ति गेह-इनि। गृही, घरका मालिक।

गेहिनी (सं० स्त्री०) गेहिन् ङीप्। गृहिणी, घरवाली, भार्या।

गेहेक्ष्वेडिन् (सं० त्रि०) गेहे क्ष्वेडते क्ष्वेड-इनि पात्रे समितादित्वात् अलुक्‌समा०। डरपोक, कायर, वह मनुष्य जो लड़ाईमें अक्षम या भीरु रहता किन्तु घरमें बैठ कर अपने पराक्रमकी डींग हांकता है।

गेहेदाहिन् (सं० त्रि०) गेहे दहति दह-इनि अलुक्‌समा०। १ कापुरुष, कायर, डरपोक, भीरु। २ घरमें आगका लग जाना। घरका जलना।

गेहेदृप्त (सं० त्रि०) गेहेदृप्तः अलुक्‌समास०। कापुरुष, कायर, जो सिर्फ घरमें बैठ कर आत्मश्लाघा किया करता है।

गेहेधृष्ट (सं० त्रि०) गेहेधृष्टः अलुक्‌समा०। जो अपने घरमें धृष्टता प्रकाश करता है, गर्व्वयुक्त।

गेहेनर्दिन् (सं० त्रि०) गेहे नर्दति गर्जति नर्द-णिनि अलुक्‌समा०। कापुरुष, जो घरमें बैठकर गर्जता है, किन्तु बाहर जानेसे एक बात भी मुखसे नहीं निकालती।

गेहेमेहिन् (सं० त्रि०) गेहे मुह्यते मुह-णिनि। [illegible], आलसी। [illegible]

गेहेविजितम् (सं० त्रि०) गेहेविजितं अस्यास्ति गेहेविजित इनि। कापुरुष। गेहेक्ष्वेडिन देखो।

गेहेव्याड़ (सं० पु०) दाम्भिक, धूर्त्त, छली, कपटी।

गेहेशूर (सं० पु०) अलुक्‌समा०। कापुरुष, जो सिर्फ घरहीमें शूरवीर हों। गेहेदृप्त देखो।

गेहोपवन (सं० क्ली०) गेहे समीपवर्त्ती उपवनः। गृहके निकटस्थ उद्यान, घरके नजदीककी फुलवाड़ी।

गेह्य (सं० त्रि०) गेहे भवः गेहाय हितं वा। १ गृहोत्पन्न, जो घरमें उत्पन्न हुआ हो। २ घरके हितकर। (पु०) ३ धन, दौलत, जायदाद।

गेहुंअन (हिं० पु०) मटमैले रंगका विषधर सर्प।

गेहुंआ (हिं० वि०) बादामी, गेहूंके रंगका।

गेहूं (हिं० पु०) गोधूम देखो।

गैंटा (देश०) कुल्हाड़ी।

गैंड़ा—एक चतुष्पद जन्तु, कोई चौपाया जानवर। यह स्थूलचर्म और विभक्त खुरविशिष्ट पशुवोंमें गण्य, अतिशय दृढकाय और हस्तीकी अपेक्षा भी अधिक बलशाली रहता और भुक्त वस्तुको उद्गीरण करके फिर रोमन्थ नहीं करता। इसकी नासिकाके अग्रभागमें एक या दो खड्ग (सींग) निकल आते और चारों पावोंके खुर ३ भागोंमें विभक्त हो जाते हैं। यह पालनेसे हिल जाता, परन्तु हठात् किसी कारणसे कुपित होने पर वह सहजमें प्रसन्न नहीं आता। वनमें शावक आदिके साथ विचरण कालको यदि शत्रु आ करके इसको घेर लेता, तो प्राय

भयमें भागनेके बदले अपने उभरे सींगोंसे उसको मारने चल देता है। इसके निम्नलिखित कई एक संस्कृत नाम मिलते हैं—खड्गी, गण्डक, खड्गमृग, क्रोड़ि, भुङ्गमुख, वज्रचर्मा, युग्म, वली, वर्धीनस, खनोत्साह. एकचर, गण्डोत्साह और गण्ड। फारसोमें इसको गर्गदन कहते हैं।

भगवान् मनुने इस खड्गधारी जन्तुको पञ्चनखोंमें गिना है। एतद्भिन्न बाइबलके पूर्वभागमें बहुतसे स्थलों पर मिसर राज्यके गेंड़ेका (Rhinoceros unicorrnis) उल्लेख है। टेसियास (Ctasias) कल्पित खड्गविशिष्ट वन्य गर्दभका विवरण कुछ कहानी जैसा लगते भी अधिकांश गण्डककी प्रकृतिका परिचायक है। इन्होंने लिखा है कि उसके सींगसे पानपात्र बनते और उनमें भी पीनेसे वात तथा मृगीरोग छूटते हैं। उसका गुल्फास्थि सुन्दर रूपमें गठित, वृषभका जैसा दृढ़ और खुरविभिन्न होता है। वन्य वा पालित गर्दभ या किसी अपर एक शफ जन्तुको वैसी एड़ी नहीं पायी जाती आरिष्टटल अपने ग्रन्थमें टेसियासके विवरणका प्रतिवाद करके लिखते हैं कि उन्होंने एक खड्ग और एक शफ जीव नहीं देखा और केवलमात्र गुल्फ विशिष्ट एक खड्गी भारतीय गर्दभका उल्लेख किया है।

फिर ई०से १८० वर्ष पहले एगाथारकाइडिसने किसी खड्गी गण्डककर्तृक हस्तीके उदर विदारणकी बात लिखी। उसीसे अंगरेजीमें इसका नाम Rhinoceros पड़ा है। रोमराज्यकी अनेक प्राचीन मुद्राओंमें भी
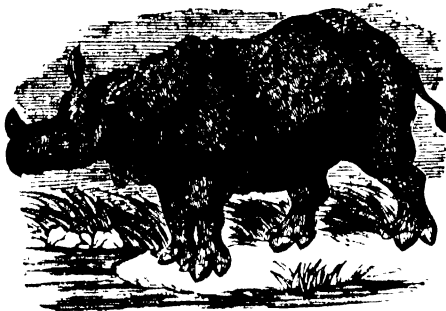
गेंड़ेको मूर्ति मिलती है। (Descripve Catalogue of a Cabinate of Roman Imperial large Brass medals) भारतमें एक जातीय गेंड़ा (R. Indicus) है। इसका गात्र ईषत् रक्ताभ पांशुवर्ण, गण्डविशिष्ट तथा लोमविहीन होता है। चर्म अतिशय स्थूल तथा स्वाभाविक रूपसे दृढ़ रहता और स्कन्धोपरि और सामने और पीछेके दोनों पैरोंके ऊपर दोपरता पड़ता है। उसीसे इसका शरीर अस्त्र अभेद्य है। लांगूलके अग्रभागमें और कानों ... तथा कठिन लोम निकलता (४०) १ गेंड़के रङ्गका खड्ग है। मत्स्यकी करोटीका आकार चूड़ा जैसा लगता है। अपराअर देशीय गण्डक ऐसे नहीं होते। इसके सब मिला करके ३६ दांत होते हैं।

भारतवर्षका गेंड़ा वहिर्भुत देशसमूह—विशेषतः वङ्ग, श्याम और कोचीनके जङ्गल, नदी तीरवर्ती स्थान और अनूप भूमिमें रहता है। यह घास पात और पेड़ोंके डालियां खा करके जीवन धारण करता है।

भारतवर्षमें उसकी अपेक्षा और भी एक जातीय छोटा गेंड़ा (R. Sodaicus) देख पड़ता है। सुन्दरवन, मेदिनीपुर, राजमहलके गङ्गानिकटवर्ती पार्वत्य प्रदेश और महानदीके तीरस्थ वन्य भूमिमें इसकी संख्या अधिक है। कोई कोई उसे यवद्वीपवासी गेंड़ेसे उत्पन्न जैसा बतलाता है।

यवद्वीप समूहमें एक प्रकार गेंड़ा R. Javanus) है। इसके गलेकी तह भीतरकी छिपी है। नासिका एक कचकड़ा निकलता है। यह दलबद्ध हो करके विचरण करता है।

भारतीय गण्डककी तरह इसकी तह नहीं होती, सिर्फ घुटनेके पास परत पड़ता है। सर्वाङ्गमें गोल गोल गण्ड होते हैं। इसका लोम छोटा तथा दृढ़ रहता और कर्णाग्रभाग और पूंछमें निकलता है। थुथन नर्म नर्म लगता और बढ़ानेसे बढ़ता है। मस्तक प्रायः त्रिकोणाकृति होता है। पिपरके बाद कचकड़े नीचे मुखका आयतन कुछ छोटा और दोनों पार्श्वका मांस गोल जैसा लगता है।

यवद्वीपवासी इस जातीय गण्डकको 'बरक' और मलयवासी 'बड़क' कहते हैं। साधारणतः यह ८ फुट लम्बा और ४ फुट ३ इञ्च ऊंचा होता है।

सुमात्रा द्वीपके गेंड़ाको २ कचकड़े आते और भारतीय तथा यवद्वीप गण्डककी भांति ३६ दांत देखे जाते हैं। गात्रचर्म वलियुक्त तथा पिङ्गलवर्ण लोमसे आच्छा-

दित रहता है। स्कन्ध और नितम्ब पर थोड़ा परत देख पड़ता, अपर सकल ही स्थान सरल लगता है। मस्तक

१ सुमात्रा द्वी-के, ३ अफ्रीकाके बोरिलो।
२ किटलोया, और ४ श्वेत खिवड्ग सामव॥
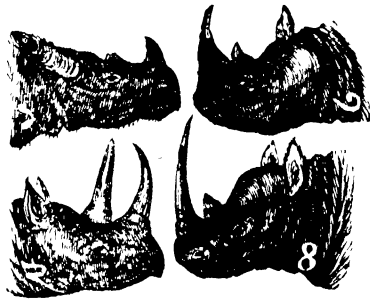
अपेक्षाकृत लम्बा, चक्षु छोटा तथा धुंधला, ऊपरी होंठ नुकीला और सामनेको लटकता हुवा, कान छोटा, पतला और चारों ओर झालर जैसे काले बालोंसे सजा हुआ सामनेका सींग पाछेका टेढ़ा और दोनों आंखोंके नीचे चूड़ाकृति और एक छोटा खड्ग होता है।

अफ्रीका देशीय गेंड़ेका (R. Adricanns.) वर्ण पोताभ कपिश, मस्तक तथा मुखविवरके पार्श्वमें बैंगन जैसा नीला कोखें लाल, आंखें धुधली और दोनों कचकड़ काले लगते हैं। सामनेका सींग पोछेवालेसे कुछ बड़ा और टेढ़ा पड़ता है। गले और मस्तकके सन्धिस्थलमें गोलगोल कटाव रहता और पूंछ तथा कानके अग्रभागमें कृष्णवर्ण लोम निकलता है। अपरापर देशीय गेंड़ाओंकी तुलनामें यह अलस रहता और अल्पमात्र खाया करता है। इसको केवलमात्र २८ चवण दन्त आते, छेदनदन्त बिलकुल देखे नहीं जाते। यह १० फुट ११ इञ्च लम्बा होता है।

अफ्रीकामें और भी तीन प्रकार गेंड़े हैं। इनमें प्रत्येक जातिको हो दो दो खड्ग निकलते हैं। यह कचकड़ भारतवर्षीय गेंड़ाओंके सींगसे बड़े होते हैं। इनका चमड़ा सोधा रहता और उसमें परत नहीं लगता। यह देखनेमें किसी बड़े सूअर-जैसे समझ पड़ते हैं।

दक्षिण अफ्रीकाका 'बोरिला' गेंड़ा। (R. Bicornis) [illegible] काला होता है। यह अति चतुर और दुर्धर्ष है। [illegible] उसको सिंहकी अपेक्षा स्वभावतः बलशाली [illegible] जैसा समझते हैं। 'कोटलोया' (R. Keitloa) जातीय गण्डक सर्वापेक्षा भयानक और बलिष्ठ है। इसके दोनों खड्ग बराबर रहते हैं। सम्मुखका पश्चात्को लटकता और पश्चात्का सम्मुखको झुकता है। ऊपरी होंठका अग्रभाग नोकदार और कुछ लटका हुआ होता है। होंठ नुकीला-जैसा होनेसे यह छोटो लता, गुल्म और वृक्ष आदिको ताजो ताजो पत्तियां छांट करके खा सकता है। अन्यान्य गेंड़ाओंको अपेक्षा इसकी गुद्दी ज्यादा लम्बी लगती है। जांघमें भीतरीके काले काले धब्बे और नाक पर तथा आँखके चारो पार्श्वों पर छोटे छोटे गड्ढे पड़ जाते हैं। इसका घ्राणेन्द्रिय अतिशय सूक्ष्म है। यह क्रोशाधिक दूरसे भी सूंघ करके शत्रुका आगमन मालूम कर सकता है। इसीसे गेंड़ेके आक्रमण कालको शिकारी वायुगतिको विपरीत दिकको गमन करने पर बाधा हैं। शत्रुको निकटवर्ती देख करके यह पलायन नहीं करता वरन् उसको विनाश करके ही शान्त पड़ता है। इसके चक्षु अति क्षुद्र और स्थूलकाय-प्रयुक्त हैं द्रुत गमनकालको यह हठात् पार्श्वमें दृष्टि डाल नहीं सकता। इस गेंडेके द्वारा आक्रान्त होने पर एकाएक किसी ओरको घूम करके ही बच जाना चाहिये। यह ११ फुट आध इञ्च लम्बा और ५ फुट ऊंचा होता है।

श्वेत खड्गी (R. Simus) देखनेमें कुछ कुछ पीत मिश्रित धूसर तथा पिङ्गलवर्ण है। कान और पूंछको जड़में काले काले कड़े बाल होते हैं। मुख कुछ कुछ गोका-जैसा लगता है। नाक पर २ खड्ग उठते हैं। अगले भागका कचकड़ा पिछलेको बनिस्बत चौगुना बड़ा होता है। चक्षु पोताभ पिङ्गल लगता है। शरीर १२ फुट १ इञ्च लंबा और स्कन्ध पर्यन्त ५ फुट ७ इञ्च ऊंचा होता है। अफ्रीकाके गेंड़ाओंमें यही जाति सर्वापेक्षा बृहत् है। यह अतिशय निरीह और केवलमात्र घास खा कर के जोवन धारण करनेवाला है। जहाँ घास प्रचुर परिमाणमें उपजती इसको रहना अच्छा लगता है। मधा अफ्रोकाके बेचुयाना लोग इसको 'मोहुरु' कहते हैं। इनमें प्रवाद है कि वही अफ्रीकाका आदि जीव है जो उनको पूर्वपुरुषोंके साथ एक ही गुहासे निकला था। सिवा इसके इसकी उत्पत्तिके संबन्धमें कोटलोयासे प्रभेद भी देख पड़ता है।

एशियाके हिनका गैंड़ेका सींग सुगमतासे नहीं मिलता। चीनवासी इस सींगको मोल ले करके उससे सुन्दर सुन्दर पानपात्रादि बनाते और उन्हें बिकनेके लिये भारत, श्याम, कोचीनचीन, सुमात्रा आदि निकटवर्ती राज्योंमें पहुंचाते हैं। काले रङ्गके नोकदार सींग विशेष आदरणीय हैं।

चाग्टावाड़ीके वनवासी मनुष्य जिस उपायसे गैंडे का शिकार करते, अति आश्चर्यजनक है। पहले वह किसी ठीस बांसका अग्रभाग छील करके पतला बना लेते और उसे आग पर गर्म करके कड़ा कर देते हैं। फिर वनमें प्रवेश करके चीत्कार और करतालि द्वारा गण्डकको ललकारते हैं। यह अपना स्वभावसुलभ मुख फाड़ते फाड़ते उनके प्रति धावित होता है। उस समय शिकारी कौशलक्रमसे वंशफलक इसके मुखविवरमें जोरके साथ घुसेड़ करके चारों ओर भागते हैं। यह यन्त्रणासे अस्थिर हो भूमि पर गिर करके चिल्लाता और प्रचुर रक्तपातके कारण क्रमशः निर्जीव हो जाता है। सिवा इसके वन-स्थलसे ग्रामको जानेवाले सभी प्रवेशपथ जालोंसे घेर करके शिकारी जङ्गलमें आग लगा देते और भागनेवाले गैंड़ाओंको गोलोंसे मार लेते हैं।

प्राचीन रोम राज्यमें गैंड़ेकी कई बार अनेक अद्भुत क्रीड़ायें देखी गयी हैं। पुस्तकादि पाठसे समझा जाता कि आगष्टसने क्लुपेटराको अपना जयघोषणा करनेको रोम नगरकी क्रीड़ाभूमिमें गण्डक और जलहस्तीकी लड़ाई देखलायी थी। एतद्भिन्न सम्राट् एण्टोनियास हेलो गबेलास और गार्डियानने भी वैसा ही गैंड़ेका तमाशा दिखलाया।

१५१३ ई०को प्रथम भारतवर्षसे युरोपमें पर्तुगाल-राज इमानुयेलके निकट एक गैंड़ा भेजा गया। फिर १७७१ ई०को भरसायल नगरमें गैंड़ेका एक शावक पहुंचा। कुवियार और बोर्फो साहब उसका सविशेष विवरण लिख गये हैं। वह जन्मसे २६ वत्सर जीता जागता रहा। १७९० ई०को जो गैंड़ा इङ्गलेण्ड ले जाया गया, बिङ्गले साहबने लिखा है—'यह जानवर पाल्तू लगता, चालकके मतानुसार चलता, दर्शकोंके हिट नोचने पर बिलकुल नहीं बिगड़ता और १८ ... १० बिसकुट तथा प्रचुर परिमाणमें ताजा पत्ती उदरस्थ करता है। दिनमें दो या ३ बार इसको ५ घड़ा पानी मिलता जो एक ही निश्वाससे पेटमें पहुंचता है।'

डाक्टर हर्सफोल्डने १८१६ ई०को यवद्वीपमें रहते समय किसी गैंड़ेके बारेमें कहा कि वह पृष्ठ पर चढ़नेसे हमें वहन किये रहता और मजेसे गूलरकी डालें और केले खाया करता था।

इसको साधारणतः कीचड़में रहना अच्छा लगता है उसीसे इसको दूसरे पुरुषोंसे अलग रखते हैं। बहुत दिनों बाद यह एक बच्चा देता है।

वैद्यशास्त्रके मतमें इसका मांस बलकर, बृंहण, गुरु, कफ तथा वायुनाशक, कषाय, पितृलोक तृप्तिकर, पवित्र, आयुको हितकर, मूत्रबद्धकारक और रूक्ष है। भगवान् मनुने भी इसका मांस भक्षणयोग्य-जैसा लिखा है। (मनु ५।१८) अफ्रीकामें स्थान स्थान पर आज भी यह मांस खाया जाता है।

मुगल सम्राट् बाबर अपने आप पेशावरमें गैंड़ेका शिकार खेलने निकलते थे। पादरी जर्डनास साहबने भी पञ्जाब और सिन्धुप्रदेशमें जीवित गण्डक होनेका उल्लेख किया है। एतद्व्यतीत भूतत्त्वविद् लोगोंके साक्ष्यसे मट्टीके बीच जो समस्त प्रस्तरीभूत गण्डास्थि मिला है, मालुम पड़ता कि परकालकी पृथिवी पर और भी कई प्रकारके गैंड़ोंका अस्तित्व रहा। यथा—(क्रामवे उपसागरके मध्यस्थित पेरिस द्वीपमें (१) Acerotherium Perimense, (२) १८७१ ई०को बेलगांव प्रदेशके गोकक तालुकसे ३॥ मील उत्तरपूर्व चिकदोली नालेके पार्श्वस्थानमें एक नाली निकालनेके लिये मट्टी खोदते खोदते ८ फुट नीचे भिन्न जातीय (R. Deccanensis.) गैंड़ाओंका दांत और पञ्जरास्थि. (३) पटवार प्रदेशमें R. Sivalensis (४) हिमालयके निकट शिवालिका गिरिश्रेणीकी उपत्यकामें R Palaeindicus, R. Platyrhinus तथा R. Planidens. तीन भिन्न जातीय, (५) नर्मदा नदीके उपकूलमें R. Namadicus, (६) ब्रह्मदेशके नाना स्थानों और आवा नगरमें R. Iravadicus, (७) चीन देशमें R. Sinasis, (८) मलका द्वीपपुञ्जमें R. Lasiotis और भारतवर्षमें भी किसी ... गैंड़ा जातिके अस्तित्वका निदर्शन मिलता है।

बयेड़ डंकिनने अपने बनाये प्राणितत्त्वमें कहा है कि टेम्स नदीके कंकरीले उपकूलमें किसी समय तीन भिन्न जातीय गैंड़ाओंका वास रहा। (Boyd Dawkins' Nat. Hist. Rev. 1865 p. 403.)

१६६८ ई०को लन्दन नगरकी मुद्रित 'चार्थानन्युज' नामक पत्रिकामें प्रकाशित हुआ कि उस शहरका कोई गिरा हुवा कूवां खोदते समय एक जातीय (R. ticho-rinus) गैंड़ेकी हड्डी निकली थी। प्राणितत्त्वविदुने उक्त जातीय गण्डका अस्थि फ्रान्स, जर्मनी और इटलीमें जगह जगह देखा है।

१७७१ ई० दिसम्बर मासको उत्तर साइबेरियाकी जिमोवे-दि-वोलीइसको नदीके वालुकामय उपकूलमें अर्ध प्रोथित किसी गण्डका देह मिला था। बहुत दिनों तक उसका गात्रचर्म नहीं गला। ओपेन साहबने उसी जातीय (ticherine) गैंड़ेका मस्तक और पदको इरकुटस्क नगरमें देखा था और भी मालूम हुआ है कि उस जातिके गैंड़े शीतप्रधान लीन नदी किनारे तक पहुंचते हैं। (सका विस्तृत विवरण Memoirs of the Academy of St. Petersburg नामक ग्रन्थमें द्रष्टव्य है।) इसेक्स प्रदेशके ओयालटन नगर और नारफोकके क्रोमार बन्दरमें भी किसी स्वतन्त्र जातीय गण्डकका अस्थि मिला। एक समय इङ्गलैण्ड और तन्निकटवर्ती द्वीप समूहमें उसी जातिके बहुतसे हिंसक्षी गैंड़े रहते थे।

गैंती (देश०) जमीन खोदनेका एक हथियार, कुदाल।

गै (सं० क्रि०) गीतगाना, गानमें प्रशंसा करना।

गैतो (देश०) हिमालयके किनारे पर होनेवाला एक पेड़ इसकी लकड़ी बहुत कठिन और अंदरसे सुर्ख होती है। इससे नानाप्रकारके सामान बनते हैं।

गैन (हिं० पु०) १ गैल, मार्ग रास्ता।

गैना (हिं० पु०) छोटा वृषभ, नाटा बैल।

गैफल (फा० पु०) जहाजका एक छोटा पाल।

गैफज कश्का (फा० पु०) पालको नीचे और ऊपर करनेकी रस्सी।

गैब (अ० पु०) परोक्ष, वह जो सामने न हो।

गैबदाँ (अ० वि०) परोक्षका जाननेवाला, सर्व देश और सर्वकालज्ञ, वह जो समस्त देश और कालका हाल जानता हो।

गैबर (देश०) एक तरहका पक्षी जिसके डैने, काली और पीठ उजले, दुम काली और चोंच तथा पैर लाल होते हैं।

गैबी (अ० वि०) १ गुप्त, छिपा हुआ। २ अज्ञात, अबोधगम्य, अजनयवी।

गैयर (अ० पु०) गजवर, हाथी।

गैया (हिं स्त्री०) गो, गाय, गऊ।

गैर (अ० वि०) १ अन्य, दूसरा। २ अपने कुटम्ब या समाजसे बाहरका मनुष्य।

गैर (अ० स्त्री०) अत्याचार, अनुचित कर्म्म, अंधेर।

गैर (सं० वि०) गिरौ भवः गिरि-अण्। १ पर्वतोत्पन्न, जो पर्वतसे उत्पन्न हो। २ एक वृक्षका नाम लाङ्गलीका पेड़।

गैरकंवल (सं० क्ली०) नीलकण्ठताजकोक्त वर्ष और लग्न कालिक ग्रह योग विशेष, नवम् ग्रह योग।

गैरखो (हिं० स्त्री०) गलेमें पहननेका एक तरह आभूषण, हंसुली।

गैरत (अ० स्त्री०) लज्जा, शर्म, ग्लानि।

गैरमनकूला (अ० वि०) स्थिर, अचल, वह पदार्थ जो एक स्थानसे दूसरे स्थान तक उठाकर न ले जा सके। यह शब्द सिर्फ 'जायदाद' शब्दमें व्यवहृत किया जाता है।

गैरमामूली (अ० वि०) १ असाधारण। २ नित्य नियमके विरुद्ध।

गैरमुनासिब (अ० वि०) अनुचित, अयोग्य।

गैरमुमकिन (अ० वि०) असंभव, न होने योग्य।

गैरवसली (अ० स्त्री०) घरकी छत बनानेकी क्रिया जिसमें बाँसकी पतली कमाचियोंको मजबूतीसे केवल तन देते हैं।

गैर वाजिब (अ० वि०) अयोग्य, अनुचित, बेजा।

गैर हाजिर (अ० वि०) अनुपस्थित, जो मौजूद न हो।

गैरहाजिरी (अ० स्त्री०) अनुपस्थिती, नामौजदगी।

गैरायण (सं० पु० स्त्री०) गिरेर्गोत्रापत्यं गिरि-फञ्। गिरिका गोत्रापत्य, गिरिगोत्रकी सन्तान।

गैरिक (सं० क्ली०) गिरौ भवः गिरि-घञ्। १ उपधातुविशेष, गेरूमिट्टी। इसका पर्याय—रक्तधातु, गिरिधातु, गवेधुक, धातु, सुरङ्गधातु, गिरिमृद्भव, वनालक्त, गवेरुक

प्रत्यश्या, गिरिभूत, लोहित-मृत्तिका, तथा गिरिज है। पीतवर्ण गैरिकका पर्याय—सुवर्णगैरिक, सुवर्ण, स्वर्ण-गैरिक, स्वर्णधातु, वभ्रुधातु और शिलाधातु है। इन दोप्रकारोंके गैरिकका गुण—मधुर,शीत, कषाय, विस्फोट, अर्श तथा अग्निदाह नाशक, निर्म्मल और स्निग्ध है। २ सुवर्ण, सोना। ३ एक तरहका वृक्ष।

गैरिकांबू (सं० क्लो०) गैरकांबु न देखा।

गैरिकाच (सं० पु०) गैरिकमिवाचि पुष्पमस्य, बहुव्री० समासान्त टच्। जलमधुक वृक्ष, जल महुआ।

गैरिकाञ्जन (सं० क्लो०) गैरिक निर्मित अञ्जन, गेरू मिट्टीका बनाहुआ अञ्जन।

गैरिचित (सं० पु०) गिरिक्षितस्य गोत्रापत्यं गिरिचित-अण्। गिरिचित वंशोत्पन्न एक अति प्राचीन राजर्षि। इनका दूसरा नाम त्रसदस्यु रहा। ऋग्वेदमें इनका उल्लेख है। (ऋक् ५।२७।८)

गैरी (देश०) १ खरही, खेतसे कटे हुए डंठलोंका ढेर। (सं० स्त्री०) २ लाङ्गली वृक्ष, विषलांगला। (हिं० स्त्री०) ३ गर्त्त, गड्ढा, कूड़ा, करकट, गोबर आदि फेंकनेका गर्त्त।

गैरेय (सं० क्लो०) गिरौ भवं-ठक्। शिलाजतु, शिला जीत।

गैल (हिं० स्त्री०) मार्ग, रास्ता, गली कूचा।

गैलड़ (हिं० पु०) किसी स्त्रीके प्रथम स्वामीका पुत्र जिसे लेकर वह द्वितीय स्वामीके यहाँ जाय।

गैलन (अं० स्त्री०) एक तरहका अङ्गरेजी माप जो तीन सेरके बराबर होता है। इससे जल, दूध प्रभृति द्रव्य या पदार्थ मापे जाते हैं।

गैलरी (अं० स्त्री०) १ नीचे ऊपर बैठनेका सीढ़ीके जैसा स्थान। इस तरहका स्थान थियटरों और व्याख्यानालयों आदिमें बनाया जाता है। २ सौदागरोंका सीढ़ीनुमा स्थान

गैला (हिं० पु०) १ गाड़ीके पहियेकी लीक, पहियेकी लकीर। २ गाड़ीका मार्ग, गाड़ी जानेका चौड़ा रास्ता।

गैलीलिओ—इटालीवासी प्रसिद्ध विज्ञानविद् पण्डित और क्रियासिद्ध विज्ञानके उद्भावक। इन्होंने १५६४ ई०में फरीवरीकी १५ तारीखमें पाईसा नगरमें फ्लोरेंस्थादन् रिवारमें जन्म ग्रहण किया था। पिताके धनाढ्य न होनेसे उन्हें चिकित्साशास्त्र और आरिष्टटल-प्रवर्तित दर्शनशास्त्रका अभ्यास करनेका आदेश मिला। परन्तु थोड़े दिन पढ़नेके बाद दार्शनिक मतोंसे उनका विश्वास हटने लगा।

जब उनकी उमर १८ वर्षकी हुई, तब उन्होंने आविष्कार करना प्रारम्भ किया। एक दिन गैलीलिओने पाईसाके धर्ममन्दिरमें एक जलती हुई बत्ती देखी जिसकी शिखा काँप रही थी। उन्होंने देखा कि नाड़ीकी चालके समयसे शिखाके काँपनेका समय एकसा मिलता है, बस इसीसे उन्होंने समय निरूपणकी एक अपूर्व युक्ति निकाल ली; बादमें ज्योतिर्विद्याके प्रचारके लिए एक घड़ी बनाई और उसमें अपना आनुमानिक "लटकन" (Pendulum) बनाया।

यन्त्र बनानेमें और परोक्षालब्ध विज्ञानशास्त्रमें उनको नितान्त इच्छा रहने पर भी, एक दिन उनने पितृबन्धु ष्टलिओ रिक्सिओके साथ वार्त्तालाप करते करते अङ्कविद्या सीखनेके लिए अनुरोध किया। इस पर अष्टलिओने उन्हें अङ्कशास्त्रमें प्रवेश करनेका सरल उपाय बता दिया, पुत्रके इस अनुरागको देखकर पिता बहुत खुश हुए उन्होंने उत्साह दिया। ज्यामितितत्त्वकी उन्होंने विशेष खोज की और कुछ ही दिनोंमें पानीमें किस चीजका आपेक्षिक वजन ज्यादा है, इस बातका निर्णय करनेवाले यन्त्र (Hydrostatic balance) का आविष्कार किया। इस यन्त्रसे भारी चीजका आपेक्षिक गुरुत्व (Specific gravity) सहजहीमें अच्छी तरह मालूम हो जाता है।

१५८८ ई०में इनकी अङ्कशास्त्रमें पारदर्शिताकी बात टाष्कानिके ग्रैण्ड डियुकके कानमें पड़ी। उन्होंने उनको पाईसाके विश्वविद्यालयमें अध्यापक नियुक्त किया। इस अवस्थामें भी उन्होंने बहुतसे वैज्ञानिक आविष्कार निकाल कर अपनी ज्ञान-ज्योतिका विकाश किया था। इसी समयमें वे गतिके नियमके (Laws of Motion) अनुधावनमें नियुक्त हुए थे। इन्होंने इस बातका निश्चय कर दिया कि, आकाशसे गिरे हुए छोटे और बड़े पदार्थ दोनों समानतासे नीचे गिरते हैं। इसमेंसे उन्होंने 'तीन प्रकारके गति-नियम' (Three laws of Motion) और

पतित पदार्थ को आकर्षण शक्तिका इसी नियमसे (क ई फिट २) आविष्कार किया था। इस गति-नियमको लेकर ऐरिष्टटल् मतावलम्बियोंसे बहुतसा झगड़ा हुआ, इसलिए उन्हें पाईसाको परित्याग कर पादुआ नामके नगरमें चला आना पड़ा था। यहाँ वे भिनिसियान् विश्वविद्यालयमें अठारह वर्षके लिए अङ्कशास्त्रकी वक्तृता देनेके लिए नियुक्त किये गये। कुछ दिन बाद उनकी इच्छा हुई कि, जन्मभूमिमें हो रहें। उन्होंने पाईसामें पहिलेके कामके लिए पुन: प्रार्थना पत्र भेजा। उनकी इच्छा पूर्ण हो गई ; पर शर्त इतनी रही कि, जब तक वे अध्यापकका कार्य करेंगे तब तक अपना निज अभिमत जनतामें न फैला सकेंगे। वे पाईसा पहुंच गये। पादुआमें वे जब तक रहे थे, तब तक उनकी वक्तृता सुननेके लिए यूरोपके नाना स्थानोंसे बहुतसी छात्रमण्डली आया करती थीं। उन्होंने पहिले पहिल दर्शनशास्त्रके उपदेशोंको सरल इटालीकी छन्दमें अनुवाद किया था। उनके आविष्कारोंमें एक प्रकारका तापयन्त्र, दिग्दर्शनयन्त्र और सर्व ज्योतिर्विद्याओंका आदरणीय दूरवीक्षणयन्त्र (Refracting telescope) ये तीन ही प्रधान हैं। १६०८ ई०में उन्होंने अपना आविष्कृत प्रथम दूरवीक्षण भिनिसके प्रधान विचारपतिको भेंटमें दिया था। इसी सालमें उन्होंने दूसरा एक अणुवीक्षणयन्त्र बनाया था।

इन दिनों वे अपने दूरवीक्षणोंसे ज्योतिष्कमण्डलीका परिदर्शन किया करते थे। १६१० ई०में ७ जनवरीकी रातको उन्होंने वृहस्पतिग्रहके ४ पारिपार्श्विक उपग्रह देखे थे। १६११ ई०में वे रोम नगरीमें गये थे। वहां पर उन्होंने खूब सम्मान पाया और 'लिवसियाई एकाडेमी'' नामके विश्वविद्यालयके सभासद बनाये गये। इसके कुछ ही दिनों बाद वे कोपर्णिकसके मतके समर्थक बन गये। इससे जनताने उन्हें नास्तिक मतका प्रचारक समझ कर निरादर किया था। उन्होंने किसीकी बात पर ध्यान न देकर 'सूर्यमें कलङ्क' नामक एक पुस्तक लिखी, उसमें उक्त मतका खूब ही समर्थन किया गया था। अपने मतके प्रसारके लिये वे दूसरी बार भी रोममें गये थे। परन्तु वहां पर उनकी आसन्न विपद् जान कर ग्रैण्ड डिउकने उन्हें टासकानिमें लौट आनेके लिए अनुरोध किया था। इसी समय पोपने उन्हें अपना मत छोड़ देनेके लिये आदेश दिया था। इस घटनाके थोड़े दिन पीछे गैलीलिओका एक प्रधान ग्रन्थ प्रकाशित हुआ, इसमें भी उन्होंने कोपार्णिकस, टलेमि और आरिष्टलके पक्षका समर्थन किया था। इस पर पोपने ऐसा आदेश दिया कि, जिससे वे फिर कोई भी पुस्तक न प्रकाशित कर सकें। परन्तु गैलीलिओने नाना प्रकारके कौशलोंसे पोपसे पुन: अनुमति ले ली और १६३२ ई०में लोरेन्स नगरमें "Un Dilogo intornoi due massimi Sistemi dal Mondo" नामकी एक पुस्तक प्रकाशित कराई था। पुस्तकके प्रकाशित होते ही विचारार्थ दण्डनायकोंके हाथमें पड़ी। पोपने पुस्तक पढ़ कर ऐसा समझ लिया कि, 'गैलीलिओने मेरी ही दिल्लगी उड़ानेके लिये यह पुस्तक प्रकाशित की है।"

उस समय गैलीलिओकी उम्र ७० वर्षकी थी। इस बुढ़ापेमें भी उन्हें विचाराधीन होना पड़ा था। उनके ऊपर काफी अत्याचार किया गया; जिससे वे उन्हें तङ्ग हो कर अपना मत परित्याग करना ही पड़ा था। इतने पर भी उन्हें छुटकारा न मिला, जेलकी सजा भुगतनी पड़ी थी। फिर टासकनिके ग्रैण्ड डिउकके बार बार प्रार्थना करने पर पोपने गैलीलिओको मुक्ति प्रदान की थी।

अन्तिम जीवन उन्होंने आर्सेट्री नामक स्थानमें बिताया था। उस समय वे आंखोंसे अच्छा देख न सकते थे। परन्तु तब भी उन्होंने जीवनके आखिरी दिनोंमें वैज्ञानिक चर्चा करते हुए ७८ वर्षकी उम्रमें १६४२ ई०की ८वीं जनवरीमें इह जीवन छोड़ा था। साण्टाक्रूशके मन्दिरमें उनका स्मृतिचिह्न अब भी मौजूद है।

गैस—१ एक प्रकारकी वाष्प विशेष। पहिले रासायनिकोंने दो प्रकारके गैसोंका निश्चय किया था,—एक स्थायी गैस (Permanent Gas) और दूसरी अस्थायी गैस (Nonpermanent Gas)। उनके मतसे, यथेष्ट उत्ताप और दबानेसे जो गैस नष्ट नहीं होती, उसे स्थायी गैस कहते हैं, जैसे अक्सिजन, हाइड्रोजन इत्यादि और जो गैस तरल की जा सके, वह अस्थायी गैस है।

प्रसिद्ध रासायनिक फारेडे साहबसे पहलेसे रासायनिकोंकी ऐसी ही धारणा थी। परन्तु उन्होंने जब स्थायी गैसको भी तरल कर दिखलाया, तब लोगोंकी धारणा पलट गई। उनके बादको मुख्य मुख्य रासायनिकोंने परीक्षा द्वारा स्थिर किया कि, आक्सजन, हाइड्रोजन आदि गैस भी यथेष्ट उत्ताप और दाब पड़नेसे तरल और जड़ी भूत हो जाती है।

२ कोयलेसे पैदा हुआ तीव्र गन्धयुक्त आलोकप्रद वाष्पविशेष।

सौ वर्ष पहले कोई भी नहीं जानता था कि, कच्चे कोयलेको भाफ या गैससे आलोक उत्पन्न होता है। विलियम् मरडक नामके एक अंग्रेज विलायतमें कोयलेकी खानमें काम करते थे, उनने सबसे पहले १७८२ ई०में कोयलेकी खानके कोयलेको लोहेके पात्रमें बन्द करके उत्ताप गैस बनाई थी। इसी समयमें फरासीदेशमें लवेन नामके एक फरासीने ऐसे ही गैस बनाई, और उसके गुण और अवगुणोंका आविष्कार किया था।

परीक्षा करके मरडकने जब देखा कि, उस गैसके आलोकसे घरमें खूब ही उजियाला हुआ, तब उनने अपने इष्ट मित्रोंसे गैसको उपकारिताकी चर्चा की। पहले तो सबने हंस कर उनकी बातको उड़ा ही दिया। वे निःसहाय दरिद्र थे, इसलिए 'पेटेण्ट' न कर सके। क्रमशः लोगोंको गैसके आलोककी उपकारिता मालूम होकर ·लगी। रासायनिकोंकी सहायतासे विलायतमें गैलन (अं ·ारखाना खुल गया। परन्तु वह सुचारुरूपसे ·सेरके बराबर हे.मरडकके एक शिष्यने उस कारखानेका या पदार्थ मापे जात·ा दिया। फिर गैसके कारखानेमें गैलरी (अं० स्त्री०) १ ·.। इस नफेको देख कर बहुतोंने स्थान। इस तरहका स्थान·से * हो गैस पैदा कर गली लगों आदिमें बनाया जाता है। कोई कोई बकससें भर कर गुमा स्थान ·ो करने लगे। अब विला-
गैला (हिं० पु०) १ गाड़ीके पहियेमें गैसके कारखाने हो लकीर। २ गाड़ीका मार्ग, गाड़ी
गैलीलिओ—इटालीवासी प्रसिद्ध वि क्रियासिद्ध विज्ञानके उद्भावक। ६ फरीवरीको १५ तारीखमें पाईसा नगरमें

·रन्तु उसमें खर्च ज्यादा पड़ता ·रामसिंहने तेलसे गैस

पत्थरके कोयलोंको जलनेसे जो वाफ निकलती है, उसे रोक कर कोयलेकी गैस बनाई जाती है। हाइड्रोजन और अङ्गारके सिवा यह कोई दूसरा चीज नहीं है। सबसे बढ़िया कोयला, जो पत्थरके समान दीखता है और जिसमें अङ्गारका भाग अधिक रहता है, उससे उत्तम गैस बनती है। जिन कोयलोंमें तेलका भाग अधिक हो (Bituminous Coal), उससे ही सबसे अच्छी गैस बनती है। जिन कोयलोंसे गैस बनती है, उनको बाहर न रखना चाहिये। क्योंकि वर्षा होनेसे उनमें पानी लग जायगा, और वह पानी भाफके साथ मिल जायगा। इस पानीको गैससे पुनः निकालना पड़ता है। पत्थरके कोयलेमें आग लगानेसे उसमेंसे जो खूब घना और काला धुआं निकलता है, वही जलानेकी गैस है। परन्तु इसमें बहुतसे कोयलेके सूक्ष्म टुकड़ रहते हैं, और उनसे घरमें कारौंच पड़ती है। कभी कभीतो बत्तीके धुएँके साथ उड़ कर घरसे बाहर जमीन पर भी गिरते हैं। अङ्गरेज लोग जिस मिट्टीके पाइपमें तमाखू पीते हैं, उसमें अगर पत्थरके कोयलेको चूर रख कर ऊपरका भाग मिट्टीसे ढक दिया जाय, और फिर उसको आगमें रक्खा जाय, तो उस पाइपके मुंहसे धुआंसा निकलेगा। यही गैस है। उस धुएंमें आंच लगा देनेसे वह जलने लगेगा। इसी प्रकार बड़े बड़े लोहे या मिट्टीके पात्रोंमें कोयलेको चूर भर कर नीचे आग जला देनेसे बहुत गैस पैदा होती है, इन पात्रोंको रिटर्ट (Retort) कहते हैं। पहले लोहेके पात्रमें कच्चे कोयले बन्द करके गैस बनाई जाती थी; अब भी बहुत जगह मिट्टीके पात्र भी काममें आने लगे हैं। क्योंकि, अग्निके उत्तापसे मिट्टीका पात्र जल्दी बिगड़ता नहीं। अब लोग ज्यादा उत्ताप देकर जल्दी जल्दी गैस बना कर बेचते हैं। परन्तु साधारण उत्तापसे जो गैस पैदा होती है, उजियाला उसीका अच्छा होता है।

गैस बनानेके पात्र साधारणतः १०।१२ हाथ लम्बा होता है। कोई कोई पात्रके ऊपर और नीचे, दोनों तरफ ढक्कन रखते हैं। कच्चे कोयलोंसे गैस निकल जाने पर वह कोक् कोयला अर्थात् वह रसोई करनेके काममें आता है। दोनों तरफ ढक्कन रखनेसे कोक्-कोयला

आसानीसे निकल आते हैं ; और पात्र साफ करनेमें भी आसानी होती है। इसीलिए दोनों तरफ ढक्कन बनाये जाते हैं। कोई पात्र बिल्कुल गोल और कोई गोलाई लिए हुए लम्बे होते हैं। गैसके कारखानोंके ये पात्र जमीनसे ऊंचे और सिलसिलेवार लगाये जाते हैं। एक पंक्तिमें बारह पात्र तक लगाये जा सकते हैं। गैस बनाते समय नीचेका ढक्कन बन्द कर देना पड़ता है ; और फिर कोयला भर कर ऊपरका ढक्कन भी बन्द करना पड़ता है। सिर्फ ऊपरमें दोनों तरफ दो छेद रह जाते हैं। इसमें गैस निकलते रहनेके लिए दो नल लगे रहते हैं। इस प्रकारसे जब पात्र कोयलेसे भर जाते हैं, तब उनके नीचे आग जला दी जाती है। पात्रके आसपास भी आग जलाई जा सकती है। एक पंक्तिके सब पात्रोंमें जिससे समान भावसे आंच लगे, उसका भी विशेष ध्यान रखना चाहिये। कमती-बढ़ती होनेसे किसी पात्रके कोयले तो कच्चे ही रह जाते हैं, और किसी किसीके बिल्कुल जल भी जाते हैं। इसके सिवा और भी बहुतसे दोष उत्पन्न हो जाते हैं। पत्थरके कोयलेमें कुछ गन्धकका भी भाग रहता है। यह गन्धक भाफ रूपमें परिणत हो कर जिस गैसके साथ मिल जाती है, वह गैस बहुत ही अनिष्टजनक होती है।

पात्रोंमें गैस निकलनेके लिए दो नल रहते हैं। गैस बननेके साथ साथ उन नलों द्वारा वह निकलती रहनी चाहिये। देरी होनेसे पात्रके अन्दरसे कण्से झरने लगते हैं, जिससे पात्र शीघ्र ही खराब हो जाता है; और गैसकी आलोकदायिका शक्ति घट जाती है। पात्र या रिटर्टके भीतरके कोयले जब पूर्ण पक जाते हैं, तब उन्हें कोक-कोयला कहते हैं। कोक-कोयलासे वाष्पीय भाग निकल जाता है। इसलिए वह देखनेमें जला हुआसा मालूम पड़ता है। कच्चे कोयलोंसे यह हलके होते हैं। इसमें अङ्गारका भाग (Carbon) भी ज्यादा रहता है। जलाते वख्त इनसे धुआं कम निकलता है और दुर्गंध भी कम होती है। इसलिए यह रसोई करनेके काममें लाया जाता है।

समुदय गैसके निकल जाने पर पात्रके दोनों ढक्कनोंको खोल कर पके हुए कोयले निकाल लेने चाहिये। इस समयमें उन दोनों नलोंके मुंहको बन्द कर देना चाहिये जिससे कि, गैस निकलती है। ऐसा नहीं करनेसे बाहरकी हवा उस नलमें घुस जायगी या उसकी गैस बाहर निकल जायगी। बाहरकी हवा नलमें घुस कर गैसमें मिल जानेसे बत्तीका उजाला कम हो जाता है। इसलिए कलकत्तेमें जिस प्रकार इंजन जोड़नेमें S अक्षरके माफिक नलको टेढ़ा कर देते हैं, गैसके नलको भी बहुतसे लोग वैसा ही टेढ़ा कर देते हैं। नलको ऊपरकी ओर चढ़ा कर फिर नीचे झुका देनेसे ऐसा टेढ़ा हो जाता है। इस स्थानका तल भाग नलसे मोटा है इसे एक गड्ढा भी कहा जा सकता है। इसको 'हाइड्रौलिक मेन' (Hydraulic main) कहते हैं। इस गड्ढेके भीतर हमेशा पानी या अलकतरा भरा हुआ रहता है। पात्रसे गैस बन कर पहिले नल द्वारा ऊपर चढ़ती है। फिर वह गैस गड्ढेके पास आजाती है। वहां पर जाकर सामने पानी या अलकतरा देखती है। पात्रमें यदि जल्दी जल्दी गैस न बने और नीचेसे अगर जोरसे धक्का न आवे तो गैस उस अलकतरेको पार कर आगे नहीं बढ़ सकती। परन्तु ऐसा नहीं होता। पात्रमें बराबर कोयले सिकते रहते हैं गैस भी बराबर बनती रहती है और धक्का भी बराबर जारी रहता है। इसलिए पीछेकी गैस आगे गैसको धक्का देती हुई अलकतरेमें प्रवेश करती है। अलकतरासे गैस हलकी होती है। इसलिए अलकतरेमें घुस कर बुदबुदाकारमें ऊपर आजाती है। ऊपरमें आनेसे फिर कोई चिन्ता नहीं। फिर वह नलकी रास्तासे बराबर चली जाती है। कोक-कोयला निकालते समय भी वह फिर निकल नहीं सकती; क्योंकि, उसके पीछेसे कोई धक्का नहीं लगता। न लौटे तो सामने अलकतरा है, उसे पार करनेकी ताकत नहीं, इसलिए पुनः वह लौट जाती है। इसी प्रकार बाहरकी वायु भी अलकतराको पार कर भीतर नहीं जा सकती।

कोयला सिकने पर पहिले पहिले जो गैस निकलती है, वह विशुद्ध नहीं होती। कोयलेमें जो तैलादि पदार्थ रहते हैं, वे ही उत्ताप लगनेसे वाष्पाकार धारण करते हैं और गैसके साथ मिल जाते हैं। इसके बाद ठण्डे होने पर जम जाते हैं। जम कर जो पदार्थ बनता है, उसे अलकतरा कहते हैं। अलकतरा जम कर गैससे अलग

होने पर भी वह गैस विशुद्ध नहीं होती। उस अवस्थामें भी गैसमें अमोनिया, गन्धक, अङ्गाराम्ल (Carbonic acid) आदि पदार्थ वाष्पाकारमें मिश्रित रहते हैं। ये सब कच्चे पत्थरके कोयलेमें भी रहते हैं। कोयला जब उत्तापसे सेके जाते हैं, तब ये वाष्पाकार धारण कर गैसके साथ मिल जाते हैं। गैसके ठण्डे होने पर अलकतराकी तरह यह पृथक् नहीं होते। ये वाष्पकी भाँति बराबर गैसके साथ रहते हैं। इसलिए गैससे इनको पृथक् करनेमें बड़ी दिक्कत उठानी पड़ती है, और कभी कभी पूर्णतया पृथक् करना असाध्य जान पड़ता है। परन्तु साध्यानुसार पृथक् करना ही पड़ता है। क्योंकि, वे पदार्थ लोगोंके घरमें जलनेसे नाना तरहके अनिष्ट कर सकते हैं और करते भी हैं। इसलिए गैस नलके भीतर पहुंचने पर जहां तक बने, इसको विशुद्ध करनेका प्रयत्न करना चाहिए। पहिले गैससे अलकतरा निकाल लेनेका प्रयत्न किया जाता है। क्योंकि अलकतरायुक्त गैस ज्यादा दूर तक जानेसे नलमें जम कर नल बंद हो जाते हैं। गैससे अलकतराके पृथक् हो जानेपर अमोनिया, गन्धक आदिको पृथक् करनेका प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए गैसको नलोंके और नाना तरहके यन्त्रोंमें घुमाना पड़ता है। जिसप्रकार बांध द्वारा बाढ़ रोकी जाती है, उसी प्रकार ये यन्त्र उस गैसके वेगको रोक देते हैं। जिस प्रकार बाँधके पास बहुतसा पानी इकट्ठा होकर बांधके ऊपरसे पानी निकल जाता है। उसी प्रकार उन यन्त्रोंके पास बहुतसी गैस इकट्ठी होकर फिर आगे बढ़ती है। सामने इस प्रकार विलम्ब होते रहनेसे पीछेको गैसका वेग क्रमशः घटता जाता है। हाइड्रोलिक मेनके लिए उस अलकतराको पार करना कष्टकर हो जाता है। कोयलाके रिटर्ट पात्रमें भी गैस जम जाती है। ऐसा होनेसे सब तरहसे विपत्तिकी सम्भावना रहती है। इसलिए पीछेसे गैसको जोरसे ढकेलनेके सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं। साधारणतः बाहरकी वाष्प द्वारा ही यह काम किया जाता है। हाइड्रोलिक मेनके उस अलकतरेके पास गैस पहुंचनेके पहिले वह यन्त्र लगाया जाता है। वाष्पीय बलसे वह यन्त्र गैसको बराबर ठेलता रहता है। इससे वह गैस बड़ी आसानीसे अलकतरेको पार कर जाती है। और सामनेकी अन्यान्य बाधाओंको अतिक्रम करती हुई वेगसे चलती रहती है।

गैस जब नलके द्वारा पहिले पहल ऊपर चढ़ता है, तब उसमें अलकतराका जो अंश रहता है, उसे निकाल कर गैसको साफ करना पड़ता है। गैस जब गरम रहती है, तब उसमें अलकतराके अंश वाष्पाकारमें मिले रहते हैं, और उसके ठण्ड होते ही अलकतरा जम कर पृथक् हो जाता है। नलके भीतर गैसके पहुंचने पर उससे कुछ अलकतरा तो अपने आप ही पृथक् हो जाता है और वह एक हौदमें जा करके जमता रहता है। इसके बाद गैस जब ठण्डी हो जाती है तब उससे अवशिष्ट अलकतरा भी निकल जाता है। उत्तप्त गैसको सहसा शीतल न करना चाहिये। ऐसा करनेसे नलमें नमक सरीखा एक पदार्थ जम कर उसके छिद्रोंको बन्द कर देता है। इस पदार्थका नाम नैफथालिन् (Naphthalin) है। नैफथालिन्का भी मूल्य है। इसे लत्तोंमें बांध कर कपड़ोंमें रख देनेसे उनमें कीड़े नहीं लगते। परन्तु गैस बनाते समय नलमें नैफथालिन्को जमने देना ठीक नहीं क्योंकि उससे नलके अनिष्ट होनेकी ही सम्भावना रहती है। इसके सिवाय गैसकी कुछ आलोकप्रदायिनी शक्ति जम कर इस नैफथालिन्का आलोक सृष्टि होती है। इस लिए जिस गैससे नैफथालिन् निकला हो वह गैस अच्छी नहीं अतएव उत्तप्त गैसको सहसा ठण्डी न कर धीरे धीरे शीतल करना योग्य है। कोयलेके रिटर्ट पात्रसे गैस निकलते ही उसे ठण्ढी करना ठीक नहीं बल्कि उसे बहुतसे नलोंमेंसे चलाना ही उचित है। नलोंमेंसे गैस ऊंची नीची होती हुई क्रमशः ठण्डी होती रहती है। अन्तमें स्निग्ध नल और पात्रोंमें गैसके चलते-फिरते रहनेसे अलकतरा बिल्कुल पृथक् हो जाता है। बहुतसे खड़े नल जिसमें बाहरकी हवा लग कर भीतरकी गैसको ठण्ढी करती है; उन्हें स्निग्ध नल कहते हैं। किसी किसी कारखानेमें इन नलोंके भीतर कोक-कोयले या ईंटके टुकड़े भी रहते हैं। इनके सहयोगसे गैसका अलकतरा जल्दी ही पृथक् हो जाता है। और कहीं कहीं ये स्निग्ध नल पानीमें भी बिछा दिये जाते हैं। इससे भी

गैससे अलकतरा जल्दी अलग हो जाता है। इस प्रकार नाना स्थानोंमें अलकतरा जम कर हौदमें इकठ्ठा होता है। बादमें फिर वह वहाँसे उठाकर बेच दिया जाता है। विलायतमें अलकतरा पहिले बहुत कम कीमतमें बिकता था। अब उससे मंजिष्ठा, नील, पीत, लोहित आदि तरह तरहके रंग बनने लगे हैं। इससे इसका मूल्य बढ़ गया है। इसके अलावा इससे सैकेरिण नामकी एक प्रकारकी चीनी भी बनने लगी है। इससे मीठी दूसरी चीज दुनियामें नहीं है। यह बड़े आश्चर्यकी बात हैं, इसमें सन्देह नहीं।

अलकतराके हाथसे बचने पर गैससे आमोनियाको पृथक् करना पड़ता है। गैसके साथ नौसादर नामका पदार्थ वाष्परूपमें मिला हुआ रहता है। घरोंमें अगर गैस और नौसादरवाष्प एक साथ जले, तो पीतल, कांसे आदिमें दाग पड़ जाते हैं। आमोनिया गैस एक यौगिक पदार्थ है। मूल पदार्थ नहीं। यह एक भाग नाइड्रोजन और तीन भाग अक्सिजनसे बनता है। आमोनिया गैस जिस समय जलती है, अर्थात् जब वह वायुकी अक्सिजनके साथ मिलती है, तब दोनों तरफ नये दो यौगिक पदार्थों की सृष्टि होती रहती है। यवक्षारजन (Nitrogen) के साथ पहिले कुछ अक्सिजेन मिल कर नाइट्रस एसिड, फिर उसमें और भी अक्सिजेन मिलनेसेना इटिक् एसिड या सोराका द्रावक बनता है। दूसरी ओर उदजनके साथा अम्लजन मिल कर पानी हो जाता है। पानी हो जाय, तो कुछ हर्ज नहीं पर घरके भीतर नाइट्रिकएसिड उत्पन्न होते रहनेसे विशेष क्षति होती है। घरकी हवा खराब होनेके सिवा पीतल, काँसे आदिके बरतन भी बिगड़ जाते हैं। इसलिए आमोनियाका अलग करना बहुत ही जरूरी है।

उक्त आमोनियासे ही नौसादर बनता है। नौसादर कुछ फेंक देनेकी चीज नहीं है, इसकी भी कीमत है। पहिले विलायतमें नौसादरका ज्यादा प्रचार न था। पहिले मिसर देशमें ऊंटकी विष्ठासे नौसादर बनता था। वही विलायतमें थोड़ा बहुत पहुंचा करता था। गैस बनाते बनाते विलायतके सुचतुर व्यक्तियोंने देखा कि, गैससे ही बहुत आमोनिया निकलती है। निकालनेसे ही रुपये आवेंगे। तब उन्होंने उसे पृथक् करनेका प्रयत्न किया। उन्होंने यह भी देखा कि, जलके साथ आमोनियाका खूब ही सद्भाव है। पानी आमोनिया-गैसके साथ इतना मिलता है कि, एक भाग जल ७७० गुणी आमोनियागैसके साथ बिना मिले वह तृप्त नहीं होता।

पहिले-पहल लोग बड़े बड़े पानीके हौदोंमें एक तरफ गैस डुबो देते थे, और दूसरी ओर बड़े बड़े बुद-बुदोंके साथ गैस तैरने लगती थी। इस प्रकार गैसकी आमोनिया धोई जाती थी, अर्थात् आमोनिया पानीके साथ मिल जाती थी। परन्तु इसमें देर बहुत लगती है। हौदमे जाकर गैसको बहुत देर तक ठहराना पड़ता है। पाछेकी तरफ गैसकी द्रुतगति मन्द हो जाती है। इस प्रकारसे गैसके धोनेमें और भी एक यह दोष है कि, गैसके चारो तरफ पानी नहीं लगने पाता। बड़े बड़े बुदबुदोंके समान जो गैस है, उसमें बाहर तो पानी लग जाता है, पर भीतर नहीं लगने पाता। भीतरमें जो आमोनिया रहती है, वह पानीके साथ नहीं मिलती. इसलिए गैसमें आमोनिया रह जाती है।

फिर इसके लिए एक व्यक्तिने कृत्रिम वर्षाकी सृष्टि की। जलकलके द्वारा मूसलधारसे पानी वर्षाया जाता था, और उस वर्षाको भेद कर गैस ऊपर चढ़ती रहती थी। इससे गैस चारों तरफसे धुल जाती थी। और आमोनिया गैस भी पानीके साथ मिल जाती थी। इस तरकीबसे कुछ लाभ तो अवश्य हुआ, पर पीछे इसमें भी दोष दीखने लगे। वास्तवमें कोयलेकी गैस एक प्रकार-की हाइड्रोकारबोन है, अर्थात् हाइड्रोजेन और कारबोन (अङ्गार) मिश्रित एक यौगिक पदार्थ है। इस हाइड्रोकारबोनको जलानेसे उत्ताप और प्रकाशकी उत्पत्ति होती है। उस कृत्रिम वर्षासे केवल आमोनिया ही निकल जाती हो, ऐसा नहीं, बल्कि उसकी हाइड्रो-कारबोन भी बहुत नष्ट हो जाया करता था। जिससे गैसकी आलोक और उत्ताप-प्रदायिका शक्ति भी घट जाती थी। इसके लिए और एक महाशयने एक नया उपाय निकाला। बहुतसे खड़े किये हुए बड़े बड़े नलों-में कोक-कोयला रख कर उससे गैस चला दी। गैसके

चलते समय उन पर थोड़ा थोड़ा पानी छिड़का जाने लगा। उस पानीके साथ सिर्फ आमोनिया तो मिली, पर हाइड्रोकारबोन नष्ट नहीं हुआ। परन्तु गैससे आमोनिया पृथक् करनेके लिए और एक व्यक्तिने इससे भी बढ़िया युक्ति निकाली। एक नये प्रकारकी कल निकाली गई, जिसके नलोंमें कुछ चक्र लगे हुए हैं। इन चक्रों पर ब्रुस लगे हुए हैं। चक्र घूमनेके साथ साथ ब्रुस भी पानी में भीग जाया करते हैं इसके भीतरके गैस जाते समय उसके पानीमें आमोनिया लग जाती है। इसका मूल्य लगभग ४५०००) रुपये हैं। परन्तु मूल्य अधिक होने पर भी इससे लाभ ज्यादा होता है। इससे निकाला हुआ आमोनियाका पानी बाजारोंमें बिकता है। इससे लोग नौसादर बनाते हैं। जिस कारखानेमें ४५०००) रुपयेकी मशीन काममें लायी जाती है, उस कारखानेमें इतना नौसादर पैदा हो सकता है, जिससे साल भरमें उस मशीनके दाम वसूल हो जाय।

गैससे आमोनियाके पृथक् होने पर इससे फिर गन्धक और कारबोनिक एसिड निकालनी पड़ती है। कारबोनिक एसिड थोड़ी ही रहती हैं, और वह ज्यादा हानिकर भी नहीं होती। परन्तु गन्धक अत्यन्त अपकारी है। गन्धक होनेसे गैससे बहुत बुरी बदबू निकलती है और उससे घरकी चीजें भी बिगड़ जाती हैं। सर्वथा गन्धक दूर करना तो दुःसाध्य है, परन्तु चूनेके भीतरसे गैस चलाई जाय तो गैसको छोड़ कर गन्धक चूनेके साथ मिल जाता है, यह निश्चित है। कारबोनिक एसिड भी चूनेके साथ मिल जाती है। इस तरकीबसे भी बहुत-से लोग गैसको साफ किया करते हैं। लोहेकी चरके भीतरसे गैस पृथक् करनेसे भी गन्धक अलग हो जाता है।

इस प्रकार गैसके साफ होनेके बाद उसे इकट्ठी कर सुरक्षित रखना पड़ता है।

गैस रखनेका पात्र लोहेसे बना हुआ बकस जैसा गोल होता है। इसका नीचेका भाग खुला रहता है। यह पात्र एक जगहसे उठा कर दूसरी जगह भी रक्खा जा सकता है। इसके तल भागमें एक बड़ा पानीका हौद रहता है। उस हौदके भीतरसे गैसका नल आता है और उसका मुंह पानीसे कुछ ऊंचा रहता है। कारखानोंमें गैस बन कर जब इस नलके मुखसे बाहर निकलती रहती है तब लोहेका पात्र उतार दिया जाता है। इसके चारों किनारे हौदके पानीमें डूब जाते हैं। नलके मुंहसे गैस निकल निकल कर उस पात्रमें भर जाती है। इसके चारों किनारे पानीमें डूबे हुए रहते हैं, इसलिए गैस बाहर नहीं निकलने पाती। यह गैस फिर आवश्यकतानुसार नलों द्वारा लोगोंके मकानों और रास्तोंके लिए छोड़ी जाती है।

विलायतमें गैसके लिए प्रतिवर्ष तीस करोड़ मन कोयला खर्च होता है और सिर्फ एक लण्डन शहरमें ही पांच करोड़ रुपयेकी गैस बिकती है। बम्बई और कलकत्ता आदिमें भी गैसका खर्च कुछ कम नहीं है।

गोंइंठा (हिं० पु०) गोबरका शुष्क चिप्पड़ जो जलानेके काममें लाया जाता है।

गोंइंड़ (हिं० पु०) ग्रामका किनारा, ग्रामकी सीमा, गाँव की आस-पासकी जगह।

गोंइंया (हिं० स्त्री०) गोइयाँ देखो।

गोंईं (हिं० स्त्री०) बैलोंकी जोड़ी

गोंगवाल (देश०) वैश्योंकी एक जाति।

गोंच (हिं० पु०) गोचन्दना, जोंक।

गोंछ (हिं० स्त्री०) गलमोछा, गलगोंछा।

गोंटा—उत्तर भारतवर्ष, पेशावर, भूटान, दक्षिणभारत तथा जावामें पाये जानेवाला एक तरहका छोटा पेड़। वर्षा समयमें इस पर छोटे छोटे पुष्प और जाड़ेके समयमें कृष्णवर्णके छोटे मीठे फल लगते हैं जो खानेमें बहुत मीठे मालूम पड़ते हैं।

गोंठ (हिं० स्त्री०) गोष्ठ, कमर परकी धोतीकी लपेट।

गोंठनी (हिं० स्त्री०) लोहे या पीतलका बना एक हथियार।

गोंड़—मध्यभारतके पहाड़ी देशोंकी बोली। बहुतसे गोंड़ोंने अपनी भाषा छोड़ हिन्दीको अपनाया है। प्रकृत गोंड भाषा द्राविड़ तथा आन्ध्रकी मध्यस्थानीय है। इसमें कई जबानें हैं। उसकी लिखा नहीं जाता और न कोई साहित्य ही देखनेमें आता है।

गोंड़—मध्यप्रदेशकी एक असभ्य जाति। वर्त्तमानमें

इनमेंसे बहुतसे मध्यभारतके खानदेशमें और उड़िषाके अधित्यकामें तथा नर्मदा, ताप्ती, वर्द्धा, वेणगङ्गा आदि नदीप्रवाहित स्थानोंमें तथा वैतूल, छिन्दवाड़ा, सिवनी और मण्डला इत्यादि जिलोंमें भी वास करते हैं।

इस जातिका किसीने गोण्ड और किसी किसीने गण्ड नामसे उल्लेख किया है। हिस्लोप साहबका अनुमान है कि, सम्भवतः तेलगू कोण्ड (पहाड़) शब्दसे मुसलमान ऐतिहासिकोंने "पहाड़ी जाति" ऐसे अर्थके अपभ्रंशमें गोण्ड लिखा है। भू-वेत्ता टलेमी भी इन लोगोंको "गोण्डलोइ" (Gondaloi) नामसे उल्लेख कर गये हैं। मुसलमान इतिहासमें इनकी वासभूमि "गोंडवन" लिखी है। गोण्डवन देखो। पहिले उक्त स्थानमें समृद्धिशाली गौड़राज्य था। ७८० ई०से लेकर ८०८ ई० तक राष्ट्रकूटराज गौड़ने मरुदेश पर आक्रमण किया था। मरुदेशाधिपति वत्सराज गौड़राजके धनसे ही धनी थे। ८१२ ई०में लाटेश्वरराज कर्क राष्ट्रकूटने गौड़राजके हाथसे मालवराजको बचाया था। १०४२ ई०में गौड़राज्य चेदिराज कर्णदेवके राज्यमें मिला हुआ था। उक्त प्रमाणोंसे मालूम होता है कि, पहिले एक गौड़देश ही चेदि, मालव, राष्ट्रकूट और बरारराज्यका सीमान्तवर्त्ती था। सम्भव है कि, वह गौड़देश पञ्च गौड़ोंमेंसे एक हो। गौड़ देखो। गौड़देशवासी होनेके कारण इस जातिका नाम गोंड़ पड़ा हो,ऐसा भी संभव हो सकता है।

गोंड लोगोंमें राजगोंड़, रघुवल, दादावे, कतुल्या, पाड़ाल, ढोली, ओफियाल, ठोटियाल, कैलाभूताल, कैकोपाल, कोलाम, मादियाल और नोचपाड़ाल इतनी श्रेणीयाँ भी पाई जाती हैं। राजगोंड़, रघुवल और दादावे श्रेणीके गोंड़ खेती करते हैं, इन लोगोंमें रोटीका व्यवहार तो है; पर बेटीका व्यवहार चालू नहीं है। इन लोगोंने हिन्दुओंकी क्रियायोंका बहुतसा अनुकरण किया है और धीरे धीरे हिन्दुओंमें मिलनेका प्रयास भी करते हैं। खाजरादादके गोंड़राज अपनेको हिन्दू कह कर परिचय देते हैं। ये लोग दरिद्र राजपूत कन्याओंका पाणिग्रहण करते हैं। पाड़ाल श्रेणीके लोग धर्मोपदेशकका काम करते हैं। कहीं कहीं इनको पाथाड़ी या राजवर्द्धन वा देशाद भी कहते हैं। ढोली लोग ढोलक बजाते हैं। नागारची या छिरक्या नामसे इनमें एक नीची श्रेणी भी है। इस श्रेणीके मर्द लोग बकरियोंको चराते हैं और इनकी स्त्रियां दाईका काम करती हैं। ओझियाल लोग मंजीरा बजाते हुए गाते फिरते हैं। ठोलियाल लोग शीतला देवीके उपासक होते हैं। चेचक फैलनेके समय ये लोग उसको उपशम करनेके लिए घर घर जा कर शीतला देवीके गीत गाया करते हैं। इसीलिए कहीं कहीं इनको मातिपाल, ठाकुर और पेण्डा बढ़िया भी कहते हैं।

कैलाभूताल लोग भी सड़कों पर गाते फिरते हैं। इनकी लड़कियां भी नर्त्तकीका काम करती हैं। कैकोपाल वा गोड़गोपाल लोग ग्वालोंका काम करते हैं। मादियाल गोंड सबसे ज्यादा असभ्य और जङ्गली होते हैं। वैलाडिला पर्वत पर ये लोग कुल्हाड़ी हाथमें लेकर सर्वथा नङ्गे घूमा करते हैं। इनकी स्त्रियाँ भी कपड़ा पहनना नहीं जानतीं। सिर्फ कुछ पत्तोंको लेकर कमरके आगे पीछे बांध लेती हैं। बस्तारके लोग इनको जोधिया कहते हैं। ये लोग अपरिचित व्यक्तिको देखते ही डरसे भाग जाते हैं। वास्तारके राजाको ये लोग कई तरहसे कर देते हैं। कर वसूल करते समय तहसीलदार गांवके बाहर आकर ढोल बजवा कर कहीं छिप जाता है, पीछे ये लोग उस स्थान पर जाकर अपनी इच्छानुसार कर रख कर भाग जाते हैं। वर्द्धा नदीके दक्षिणमें पिण्डी पहाड़ पर कोलास श्रेणीका वास है। ये लोग अपनी जातिके साथ बैठ कर खाते पीते हैं. पर ब्याह शादी नहीं करते। ये लोग भीमसेनकी पूजा करते हैं।

इसके अलावा छिन्दवाड़ा और महादेव पर्वतके बीचमें रहनेवाले मादि या गोंड़ हिन्दुओंकी भाषा और धार्मिक क्रियाकलापोंका बहुतसा अनुकरण करते हैं। वस्तार, भण्डारा, और रायपुर जिलेके हलवा गोंड़ वस्तार-राज-प्रदत्त यज्ञोपवीत धारण कर अपनेको उच्च श्रेणीका मानते हैं। वस्तारके गोत वा कैतोर और माड़िया लोगोंकी उपजीविका प्रधानतः खेती पर ही निर्भर है। वेणगङ्गाके [illegible]के नेकड़ोंने हिन्दुओं जैसा अपना वेष बना लिया है। ये लोग शिकार करके अपना

पेट भरते हैं। जङ्गल और घास काटकर भी पड़ोसियोंको बेचा करते हैं। ये गऊका मांस नहीं खाते। समय समय पर चोरी और डकैती करके पड़ोसियोंका धन लूट लेते हैं।

इनकी धार्मिक कार्यप्रणाली अन्य जातिके समान है। ये लोग जीवित घोड़के बदले देवको मिट्टीके घोड़े चढ़ाते हैं। प्रेतलोकके पितृपुरुषोंको तृप्त करनेके लिए मिट्टीका घोड़ा, चाँवल, उड़द, अण्डा, मुरगा और भेड़ चढ़ाते हैं। भोन्स्ले-राजने इनके प्रचलित गोवधप्रथाको सर्वथा बन्द कर दिया था। लड़के लड़कीयोंके मर जाने पर ये लोग उन्हें जमीनमें गाड़ देते हैं, कहीं कहीं वृद्धोंको भी गाड़ देते हैं परन्तु वस्तारको मादिया जाति और हिन्दूधर्मानुसारी गोंड़ लोग मुर्देको दाह क्रिया करते हैं।

ये लोग तीस देव देवियोंकी पूजा करते हैं। इनमें बूढ़ादेव और दुल्लादेवको अधिक सम्मान करते हैं। कभी कभी सृष्टिकर्त्ताको स्तुति द्वारा पूजा करते हैं। और उनके उद्देशसे घी और चीनी द्वारा होम भी किया करते हैं।

ये लोग प्रति वर्ष फसलके समयमें बूढ़ादेव वा बूड़लपेन (सूर्य) के लिए शूकर उत्सर्ग करते हैं। बूढ़ुलपेनको व्याघ्रमूर्त्ति लोहेसे बनी हुई है। मातियाल अोलसा देवीको कहते हैं। भण्डारा जिलेके दक्षिणमें परस्पर जुड़ी हुई चौखूंटे काठ पर कुछ मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं, उनका नाम बङ्गरबाई है ऐसी किम्बदन्ती सुननेमें आती है कि घण्टराम, चम्पाराम, नेकाराम, पोतलिङ्ग आदि उनके पाँच भाई हैं और दन्तेश्वरी (काली) नामकी एक बहिन है। गोंड़ जातिके लोगोंकी ऐसी धारणा है कि, ये ही देवदेवियां जीवोंकी मृत्युका कारण हैं। नागपुरके रहनेवाले गोंड़ इन देव-देवियोंकी विशेष भक्ति करते हैं, और बहुत डरते भी हैं।

जगदलपुरसे ६० मील दक्षिण-पश्चिममें शङ्करी और इन्द्रवती नदी हैं, इन नदियोंकी दक्षनशाखाके संयोगस्थल पर वस्तारके निकटवर्त्ती दण्डेवार नामक ग्राममें दन्तेश्वरी (काली) का मन्दिर है। वस्तारराजने किसी कार्यके उपलक्षमें १८३५ ई०में उक्त देवीके सामने २५ आदमियोंकी बलि दी थी। यह सम्वाद धीरे धीरे १८८३ ई०में तक नागपुरके राजाके पास पहुंचा था। बम्बुकवृक्षके नीचे अली, गोङ्गरा मल, दली, गण्डावा, खास वा कड्ड, बूड़लपेन और मानियाल इन सात देवताओंकी एक साथ "सातदेवल"के नामसे पूजा की जाती है।

इसके सिवा कोटोपेन, मातुआ, फार्सपेन, हरदेल, बङ्गाराम, भोवासु वा भीमसेन, मसरकन्द, वाघोव, सुलतान शाकद, शकलदेव वा शक्रपेन और सान्यालपेन वा सेनल्कदन देवताओंकी पूजा भी प्रचलित है।

मण्डलावासी गोंड़ोंमें 'लमृजिना' विवाह प्रचलित है। इस प्रथाके अनुसार वरको विवाहसे पहले कुछ दिनों तक कन्याका आज्ञावाही बनकर रहना पड़ता है। कन्या अपनी इच्छानुसार पुरुषके साथ चली आ सकती है। इनमें जो विवाह जबरदस्ती किया जाता है, उसका नाम है,—'साधवन्धनी'। यदि कन्या वरके घर पर विवाह करने आवे तो उस व्याहको 'सांदिवेथो' कहेंगे। इस जातिकी विधवायें अपने देवरके साथ या और किसी भी पुरुषके साथ अपना व्याह कर सकती हैं।

पुरुषके मर जाने पर वह जला दिया जाता है और स्त्रीको गाड़ देते हैं।

बङ्गदेशको गोंड़ जातिमें राजगोंड़, धोकड़ गोंड़, टोरोया गोंड़ वा नायक, भोरा आदि चार थोक हैं। इनमें राजगोंड़ ही गण्य-मान्य हैं। क्योंकि बहुतोंका ऐसा अनुमान है कि, ये असलमें ये ही गोंड़राजवंशप्रसूत हैं। धोकड़ लोग रास्तोंपर भीख मांगा करते हैं। सिंहभूममें टोरोया गोंड़ोंकी ज्यादा संख्या है। कर्णल डेल्टन साहबने लिखा है कि, ये टोरोया गोंड़ ही बामनघाटोके महापात्रको सेनामें भर्त्ती थे। अपने स्वामीके विरुद्ध अस्त्र धारण करनेके अपराधसे ये लोग बामन घाटीसे निकाल कर सिंहभूममें रखे गये थे।

इन लोगोंमें बाल्यविवाह और यौवनमें विवाह अब भी प्रचलित है। हिन्दूधर्मके संस्पर्शसे ये लोग क्रमशः बाल्यविवाहके पक्षपाती होते जाते हैं। सिन्दूरदान और आम्रवृक्षके साथ विवाह ही इसका प्रधान अङ्ग है। कहीं

कहीं विवाहबन्धनके समय नाई आकर वर और कन्याके ऊपर एक एक गागर पानी ढाल जाता है। विधवाएं अपने देवरसे विवाह कर सकती हैं। परन्तु ऐसे विवाहमें कोई क्रिया नहीं होती, और तो क्या ब्राह्मण और नाई तककी भी जरूरत नहीं पड़ती। सिर्फ अपनी जातिके भाइयोंके सामने वर उस विधवाको एक नई साड़ी और चूड़ी देता है, तथा "इस विधवाका भरणपोषणका भार मेरे ऊपर रहा" ऐसा अङ्गीकार करने पर उपस्थित जातिभाइयोंकी अनुमति लेकर विवाह कर दिया जाता है।

बिहारके गोंड़ क्रमशः अपनेको कट्टर हिन्दू कह कर अपना परिचय देने लगे हैं। ये लोग हिन्दुओंके बहुतसे देव-देवियोंकी पूजा करते हैं। इसके अतिरिक्त बूढ़ा देव और दुल्हादेवकी भी पूजा किया करते हैं। देवपूजा और विवाह आदिके कामोंमें निम्न श्रेणीके ब्राह्मण ही पौरोहित्यका काम करते हैं। ये लोग मृतदेहको दाग देते हैं। पातक तीन दिनका मानते हैं। ये लोग दाढ़ी-मूछ और सिर मुड़ा कर स्नान करके शुद्ध होते हैं, और मृत आत्माके लिए दूध रोटी चढ़ाते हैं।

पहले लिखा जा चुका है कि, गोण्डवानाके अन्तर्गत भूमि पर प्राचीन गौड़राज्य था और उन राजाओंके समयमें उक्त प्रदेशमें गड़ा और मण्डला नामकी दो राजधानियां थीं। इन दो स्थानोंके प्राचीन ध्वंसावशेषों और हिन्दूराजाओंके समयके शिलालेखोंसे पहिलेकी समृद्धिकी काफी प्रमाण मिलते हैं। अब वैसी समृद्धि नहीं रही, गड़ा और मण्डला ये दोनों नगर अपना पूर्व-परिचय मात्र दे रहे हैं। पहले जो गौड़ वा गोंड़ राजगण गड़मण्डलमें राज्य करते थे, वे अपनेको हिन्दू और क्षत्रिय बताते हैं। गड़मण्डल शब्द देखो।

प्राचीन समयमें मालवके राजपूत राजाओंके साथ इन गौड़राजाओंका समय समयपर युद्ध होता था, इस लिए सम्भव है कि, उस समयसे ही दोनों जातियोंमें विवाह सम्बन्ध प्रचलित हुआ हो। उनके वंशके लोग अब भी राजपूत या राजपूतगोंड़के नामसे अपना परिचय देते हैं। गड़ाके राजा नागदेवके मर जाने पर उनके दामाद यादवराय उस राज्यके उत्तराधिकारी हुए थे और उन्होंने गड़ानगरको ही अपनी राजधानी बनाया था। ६८८ ई०में यादवरायके वंशधर गोपालशाहने मण्डला पर दखल जमाया था। संग्रामशाहने जब १४८० ई०में राज्यारोहण किया था, तब वे सिर्फ एक ही जिलेके राजा थे। पीछे उन्होंने ५२ जिलों पर दखल जमा लिया था। १५३० ई०में ये मर गये।

फिरिस्ताके पढ़नेसे मालूम हो सकता है कि, १५६३ ई०में आसफ् खाँने जब गड़ा पर आक्रमण किया था, तब वहांके राजा वीरनारायण थे। इस युद्धमें इनकी मृत्यु हुई थी। फिर १६६० ई०में हृदयेश्वर वहांके राजा हुए थे। इन्होंने रामनगरमें मोतीमहल नामका एक प्रासाद बनाया था। उस मोतीमहलके १०० फीट दक्षिण-पश्चिममें उनकी पत्नी रानीसुन्दरीका बनाया हुआ एक विष्णुमन्दिर है। उस मन्दिरमें विष्णु, शिव, गणेश, दुर्गा और सूर्यदेवकी मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं मन्दिरकी लम्बाई चौड़ाई कुल ५६ फुट है। इसके भीतरमें २८ फीट चतुरस्र एक घर है, उसकी छत पर गुम्बज है। यह मन्दिरकी बनावट मुसलमानोंकी मसजिद जैसी है। बङ्गालके लोग इसे पत्थरका मन्दिर कहते हैं। १७४२ ई०में शिवराजशाहने राज्यभार ग्रहण किया था। महाराष्ट्रीय सर्दार बालाजी बाजीरावके साथ इनका युद्ध हुआ था।

सातपुरा पर्वतके दक्षिणकी तरफ छिन्दवाड़ाके अन्तर्गत देवगढ़में और बैतूलके अन्तर्गत खेरला ग्राममें दूसरे गोंड़ राजा राज्य करते थे। १४३३ ई०में खेरलाके राजा नरसिंहराय मालवराज हुसङ्ग घोरीके युद्धमें पराजित हो कर मारे गये। औरङ्गजेबके राजत्वकालमें शिवलीगढ़में एक पार्वतीय राजा स्वाधीनभावसे राज्य करता था। महाराष्ट्रोंने ई० सं० १७६०से ७५के भीतर भीतर इसकी स्वाधीनता नष्ट कर दी थी। वर्द्धा नदीके पास चन्दानगर है, इसमें भी गोंड़वंशके लोग रहते हैं।

गोंडकिरी (हिं० स्त्री०) एक रागिणी जो गोंड रागका एक भेद समझी जाती है।

गोंडरा (हिं० पु०) १ मोटके मुख पर बांधे जानेकी एक गोल लकड़ी वा लोहेकी छड़। २ कुण्डलके आकारकी कोई चीज। ३ परिधि, लकीरका गोल घेरा।

गोंडरी (हिं० स्त्री०) कोई गोलाकार पदार्थ।

गोंडला (हिं० पु०) परिधि लकीरका गोल घेरा।

गोंड़ा (हिं० पु०) १ बाड़ा, घिरा हुआ स्थान। २ ग्राम, गांव, मोहल्ला, पुरा, बस्ती। ३ खेतोंका उतना घेरा जितना एक किसानका हो और एक ही जगह पर हो। ४ बड़ी चौड़ी सड़क। ५ आंगन, चौक। ६ परकृत।

गोंडा—देहरादून, अवध, गोरखपुर, बुंदेलखंड, बङ्गाल और मध्यभारतके जङ्गलोंमें उत्पन्न होनेवाली एक तरहकी लता। थोड़े ही वर्षोंमें यह बहुत फैल जाती है। समय समय पर यह काटी नहीं जानेसे जङ्गलोंको बहुत हानि पहुंचाती है। इसके पत्ते बहुत लम्बे चौड़े होते जो चारे के काममें आते हैं। ग्रीष्म कालमें इसकी टहनियोंके शीर्ष पर गुच्छेके पुष्प लगते हैं।

गोंड़ी—विहारकी मत्स्य और कृषिजीवी एक जाति। इन्हें गुंड़ी, मल्लाह, मछुआ, आदि भी कहते हैं। गोंडियोंका कहना है कि "जिन निषादने श्रीरामचन्द्रको नदी पार कराया था, हम लोग उन्होंके वंशके हैं।" निषाद देखो। इनकी आकृति अनार्योंसे कुछ कुछ मिलती है। इनकी उपाधियां ये हैं,—चौधरी, जेथमन, मन्दर, मुखियार, नाखुदा और महतो। इनमें कुरिन्, ग्वुनौत्, कोल, चाव या चावो, पहाड़ी कुरिन् और बनपर आदि कई एक श्रेणियां हैं। उक्त श्रेणियोंमेंसे कोल और कुरिन् आपसमें बेटी-बेटीका व्यवहार रखते हैं, परन्तु इतर श्रेणियों के लोग दूसरी श्रेणीके साथ बेटी-व्यवहार नहीं करना चाहते। बालिकाविवाह ही इन लोगोंमें प्रचलित है; परन्तु ऋतुमती होनेके बाद भी लड़कियोंका व्याह होता है, इसे ये लोग निन्दनीय नहीं समझते। पहिली स्त्रीके वन्ध्या या चिररुग्न होने पर ही ये लोग दूसरा विवाय करते हैं, अन्यथा नहीं। इनकी विधवायें अपनी इच्छानुसार दूसरी बार विवाह कर सकती हैं। आपसमें कुछ खट-पट या और कोई कारणसे विद्वेष हो जाय तो ये लोग पञ्चायतकी आज्ञा लेकर विवाह-बन्धनको तोड़ डालते हैं। गोंडियोंमें अधिकांश वैष्णव ही मिलेंगे; और कुछ थोड़ेसे सौर भी देखनेमें आते हैं। निम्न श्रेणीके मैथिल ब्राह्मण लोग इनके पुरोहित हैं। ये लोग पाँचपीर, कैलाबाबा, बाराही, जयसिंह, अमरसिंह चन्द्रसिंह, दियालसिंह, केवल, मरङ्ग, बन्दी, गोराइया, कमलाजी और हनुमानकी पूजा करते हैं। कैलाबाबाको ये लोग गङ्गाजीका बेलदार बतलाते हैं। बाराहीपूजामें ये लोग ब्राह्मण पुरोहितको बिना बुलाये ही एक शूकरका बच्चा चढ़ा देते हैं। जयसिंह गोंड़ी जातिके थे और वे उज्जयिनीमें रहते थे। किसी समयमें सुन्दरवनके राजाके साथ एक लकड़ीके पीछे इनको झगड़ा चला था, उसमें राजाने सात सौ गोंडियोंको कैद किया था। जयसिंहने राजाको मार कर इनका उद्धार किया था। तब हीसे ये लोग जयसिंहकी पूजा करते हैं। ये लोग मुर्देको जलाते हैं। तेरहवें दिन इन लोगोंमें श्राद्ध हुआ करता है।

मछली मारना और नाव चलाना ही इनकी उपजीविका है। परन्तु अब बहुतोंने यह काम छोड़ दिया है, और वे खेती करने लगे हैं। वे लोग शराब, मछली, चूहे, कछुए और शूकर खाना पसन्द करते हैं। हां, इनमें जो भगत हैं वे मद्य, मांस कुछ भी नहीं खाते। विहारके उच्चश्रेणीके ब्राह्मण इनके हाथका पानी नहीं पीते। वहां ये कुम्हारोंसे भी नीच समझे जाते हैं। ये लोग केवल, धानुक आदि नीच जातिके हाथका पानी और मिठाई आदि भी खाते हैं। विहार-बङ्गाल भरमें ६ लाखके करीब गोंडी रहते हैं।

गोंद (हिं० पु०) चिपचिपा या लसादार पसेव जो पेड़ोंके तनेसे निकलता है। यह शुष्क होने पर कठिन और चमकीला हो जाता है।

गोंदनी (हिं० स्त्री०) गोंदीका पेड़। गोंदी देखो

गोंदपंजरी (हिं० स्त्री०) प्रसूता स्त्रीको खिलानेकी गोंद मिश्रित पंजीरी।

गोंदपाग (हिं० पु०) गोंद और चीनीके संयोगसे बनी हुई एक तरहकी मिठाई, पपड़ी।

गोंदमखाना (हिं० पु०) गोंद मिश्रित भूना मखाना। नाके मम हु

गोंदरा (हिं० पु०) १ मोलायम घास या पोआलका बना हुआ एक प्रकारका बैठनेका आसन। २ गोनरा घास।

गोंदरी (हिं० स्त्री०) जलमें उत्पन्न होनेवाली एक तरहकी घास जो बहुत लम्बी और गर्म होती है। २ इसी तृणकी बनी हुई चटाई। ३ खड्की चटाई।

गोंदला (हिं० पु०) गुन्द्रा, जलाशयोंके किनारे होनेवाला बड़ा नागरमोथा। इसकी ऊंचाई लगभग एक गज की होती है।

गोंदा (हिं० पु०) १ भुने चनेका बेसन। यह पानीमें गूंध कर बुलबुलोंको खिलाया जाता है। २ गारा मिट्टीका कपसा।

गोंदी (हिं० स्त्री०) एक तरहका पेड़ जो मौलसिरीके सदृश होता है। फागुन चैत मासमें इसमें लाल रंगके छोटे छोटे पुष्प लगते हैं। इसके फल पुष्प छाल आदि औषधके काममें आते हैं। यह जङ्गलों तथा मैदानोंमें उपजता है।

गोंदीला (हिं० पु०) वह जिसमेंसे गोंद निकलता हो। यथा—बबूल, ढाक प्रभृति।

गो (सं० पु० स्त्री०) गच्छति गम कर्त्तरि डो। यद्वा गच्छन्त्यनेन वृषस्य यानसाधनत्वात् स्त्रीगवाश्च दानेन स्वर्गसाधनत्वात् तथात्वं। गो शब्द योगरूढ़ है। 'रूढा गवादय: प्रोक्ता यौगिका: पाचकादय:।" (वैयाकरण) वाचस्पत्य गोशब्दकी व्युत्पत्ति प्रदर्शन स्थल पर आलङ्कारिक प्रधान दर्पणकार विश्वनाथकी भूल पकड़ कर कहते हैं कि, 'गम धातुके उत्तर करणवाच्यमें डो प्रत्यय होनेसे गोशब्द निष्पन्न होता है। उणादि प्रत्यय कर्तृवाच्यमें हो ऐसा कोई नियम नहीं है"। किन्तु दर्पणकारका कथन है कि, "यदि व्युत्पत्तिलभ्य अर्थको ही केवल मुख्यार्थ कहकर स्वीकार किया जाय तो "गौ शेते" इत्यादि स्थलमें भी यह लक्षण हो सकता है। गम धातुके उत्तर डो प्रत्यय होनेसे निष्पन्न गो शब्दके शयनकालमें प्रयोग लक्षण व्यतीत असम्भव है।' वाचस्पत्यके मतसे दर्पणकारका ऐसा कहना भूल है, यह अनवधानतासे अथवा विना समझे बूझे लिखा गया है, क्योंकि करणवाच्यमें डो प्रत्यय होनेसे निष्पन्न गोशब्दका शयनकालमें प्रयोग होनेसे किसी तरहकी बाधा नहीं है। कर्तृवाच्यमें उणादि प्रत्यय हो ही नहीं सकता ऐसा कहीं वचन नहीं है। ताभ्यामन्यत्रोणादय:। पा ३।४।७५। इस सूत्रके अनुसार केवल संप्रदान और अपादानवाच्यमें उणादि प्रत्यय नहीं होता, किन्तु इसके अतिरिक्त कर्त्तृकर्म प्रभृति समस्त वाच्यमें उणादि प्रत्यय लगा ही करता है। दर्पणकारने कर्तृवाच्यमें निष्पन्न गोशब्दकी व्युत्पत्ति लभ्यार्थ "गमनकर्त्ता" धर कर ऐसा लिखा है। वाचस्पत्यमें गो शब्द देखो।

१ स्वनामख्यात चतुष्पद पशुविशेष, वृष तथा गौ, चौपाया पशु, बैल और गाय, मवेशी। (Bovina) स्त्रीगोका पर्याय—माहेयी, सौरभेयी, उस्रा, माता, शृङ्गिणी, अर्जुनी, अघ्न्या, रोहिणी, माहेन्द्री, इज्या, धेनु, अघ्ना, दोग्ध्री, भद्रा, भूरिमही, अनडुही, कल्याणी, पावनी, गौरी, सुरभि मही, विलिनाचि, सुरभी, अनड्वाही, हिड़ा, अधमा, बहुला, मही, अदिति, इला, जगती और शर्करी है।

पुंगोका पर्याय अनड्वाह् शब्दमें देखो। गृहस्थोंके लिए गोके जैसा उपकारी पशु दूसरा कोई नहीं है। वृहत्संहितामें इसका शुभाशुभ लक्षण इस प्रकार लिखा है—जिस गोके दोनों नेत्र रूक्ष और मूषिक सदृश हों तथा उनके कोणमें सर्वदा मल देखा जाता हो, तो वह गौ अशुभसमझी जाती है। जिन गौओंकी नासिका विस्तृत, शृङ्ग प्रचलनशील, वर्ण गर्धके सदृश तथा देहकरटा तुल्य हो एवं जिनकी दन्तसंख्या १०, ७ या ४ हो, मुण्ड तथा मुख लम्बमान, पृष्ठ विनत, ग्रीवा ह्रस्व और स्थूल रहे, गति मध्यम तथा खुर विदारित हो, वे गौ गृहस्थको अमङ्गल उत्पादन करती हैं। जिस गौका जिह्वा कृष्णवर्ण और पीतमिश्र, गुल्फ (एड़ी) अतिशय सूक्ष्म वा स्थूल, ककुद (धौना अपेक्षाकृत वृहत्, देह कृश तथा कोई एक अङ्गसे हीन हो, तो वह गाय गृहस्थके लिए मङ्गलकर नहीं है। गायके विषयमें जो लक्षण कहे गये हैं, उन लक्षणोंके वृष भी अशुभप्रद हैं।

जिस बैलका मुख स्थूल और अतिशय दीर्घ हो, क्रोड़देश शिराजालसे परिव्याप्त हो और गण्डदेशका स्थूल शिरासमूह देखा जाय तथा जो बैल स्थानत्रयमें मूत्रत्याग करता हो, उस बैलको अशुभकर जानना चाहिए। जिसके नेत्र मार्जारके जैसे तथा शरीर कपिल वर्णका हो इसे ही करट कहते हैं। ऐसा बैल अशुभ समझा जाता है। केवल ब्राह्मणोंके लिये उक्त लक्षणका बैल प्रशस्त है। वृषके ओष्ठ, तालु और जिह्वा कृष्ण वर्णके रहें तथा सर्वदा निदारुण श्वास चलता हो तो वह बैल अपने मालिकके सब मवेशियोंको नाश करता है। जिस बैलका विष्ठा, मणि और शृङ्ग स्थूल, उदर श्वेतवर्ण तथा दूसरे अङ्गका वर्ण

कृष्णसार मृगके सदृश हो यदि ऐसा बैल गृहजात भी हो तोभी उसे परित्याग करना चाहिये। जिसके शरीरका वर्ण भस्ममिश्रित ईषद् रक्त, दोनों नेत्र मार्जारके जैसे तथा जिसके शरीरमें पुष्पाकार श्यामवर्ण चिह्न लक्षित हो वह बैल ब्राह्मणोंके लिये तो अच्छा किन्तु दूसरोंके लिये अशुभकर है। जिस बैलको ग्रीवा कृश तथा दोनों आंखोंसे कातरता भाव लक्षित होता हो, जो भार ढोनेमें अक्षम हो, उसका ओष्ठ ताम्रवर्ण, मृदु तथा संहत हो, स्फिक् अप्रशस्त हो, जिह्वा और तालु ताम्रवर्णका हो, कर्ण छोटा, ह्रस्व तथा उच्च हों एवं पेट देखनेमें सुन्दर मालूम पड़ता हो, जिसके खुर ईषत् ताम्रवर्णके हों, वक्षःस्थल विपुल और विस्तृत हो, ककुद् वृहत्, गात्रत्वक् स्निग्ध, रोम मनोहर और ताम्रवर्णके हों, जिसका लाङ्गूल क्षुद्र क्षुद्र लोमविशिष्ट और भूतलस्पर्शी हो, चक्षु रक्ताक्त, स्कन्ध सिंहके सदृश और गलकम्बल सूक्ष्म तथा छोटा हो, ऐसे वृषोंको सुगत कहते हैं, यह शुभफलप्रद हैं। जिस बैलके चक्षु वैदुर्य, मल्लिका और बुदबुदके सदृश हों, चक्षुका आवरण स्थूल और पार्श्व अस्फुट हो, वही बैल वहनक्षम और प्रशस्त फलप्रद माना गया है।

जिस वृषभको नासिकाके निकट वलि रहे, मुख ठीक मार्जारके जैसा हो, लाङ्गूल सुन्दर, गति व्याघ्रके सदृश, वृषण अपचाकृत वृहत्, उदर मेषके सदृश नील वर्ण तथा वङ्क्षण और क्रोड छोटा हो, उसी जातिका वृषभ भार ढोनेमें अक्षम और प्रशस्तफलप्रद माना गया है। जिस वृषभके शरीरका रंग उजला, चक्षु पिङ्गलवर्ण, शृङ्ग ताम्रवर्ण और मुख बड़ा हो उसीका नाम हंस है। यह शुभफलप्रद एवं इसे पालनेवाले व्यक्तिकी उन्नति होती है। जिस बैलका लाङ्गूल पुच्छयुक्त और भूतलस्पर्शी हो, वङ्क्षण ताम्रवर्ण, ककुद् लाल तथा शरीरका रंग श्वेत और कृष्णमिश्रित हो वह बैल थोड़े ही समयमें अपने स्वामीको लक्ष्मीको बढ़ा देता है। जिस वृषभका एक चरण श्वेतवर्ण और दूसरा चरण तथा शरीर भिन्न भिन्न वर्णके हों वह वृषभ गृहस्थोंके लिये अत्यन्त शुभफलप्रद है।

गोके इङ्गित (चेष्टा) देख कर पालकके भावीका शुभाशुभ फल जाना जा सकता है। वृहत्संहितामें लिखा है कि, गोके अतिशय दीन भाव अवलम्बन करनेसे राजाका अमङ्गल होता, इसीतरह परसे भूमि कोड़ने पर रोग, चक्षु अश्रुपूर्ण होने पर मृत्यु एवं अकारण अविरत डकारने पर पालकको चौरभय हुआ करता है। रात्रिकालको गायके अकारण शब्द करने पर भय होता, किन्तु वृषभके शब्द करने पर मङ्गल हुआ करता है।

यदि गो छोटी छोटी मक्षिका और छोटे छोटे कुत्तेसे ताड़ित हो तो शीघ्र ही वृष्टि होती है। जब मैदानसे गाय सन्ध्या समय लौटती है यदि उस समय हम्बा शब्द करती हुई बछड़ोंके साथ गोष्ठमें प्रवेश करे तो गोष्ठकी वृद्धि होती है। गोगणके आर्द्राङ्गी और हृष्टलोमा होने पर धन तथा हर्षकी उन्नति होती। (वृहत्संहिता ९२)

देवलका मत है कि गो अष्ट माङ्गल्य द्रव्योंमेंसे एक है। इसका दर्शन, नमस्कार, अर्चना और प्रदक्षिण करनेसे आयुकी वृद्धि हुआ करती है। गो प्रणामका मन्त्र यह है—

'नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमोनमः॥" (ब्रह्मपुराण)

यह मन्त्र पढ़ कर गोको नमस्कार करनेसे गोदानका फल होता है। भविष्यपुराणके मतानुसार गायको अंगमर्दन और नमस्कार कर प्रदक्षिण करना चाहिये। गायके प्रदक्षिण करने पर सप्तद्वीपा पृथ्वीप्रदक्षिणका फल होता। गोको अस्थि लङ्घन करना निषेध है।

विष्णुके मतसे गोके विष्ठा, मूत्र, क्षीर, घृत, दधि और रोचना ये छह पदार्थ पवित्र हैं।

गोगण रोमन्थक जातिके अन्तर्गत है। साधारणतः इस जातिके पशु अतिशय निरीह और सहजमें ही पोष मानते हैं। ऐसा देखा गया है, कि मनुष्यके इसके स्तनसे मुख द्वारा दुध पान करने पर भी यह किसी तरहकी बुराई नहीं करती। इसके पांवके खुर खण्डित तथा मस्तक पर दो शृङ्ग होते हैं। विपक्ष कर्तृक आक्रान्त होने पर यह पद और शृङ्गसे ही आत्मरक्षाको चेष्टा करती।

इसके मस्तककी करोटी (खोपड़ी) कुछ स्थूल होती तथा ललाट देश वृहत् होता है। मुखविवर लम्बा और

बड़ा होता, ओष्ठद्वय कृष्णवर्ण एवं मस्तक पर दो छोटी छोटी आंखें हैं। इसके वक्षके दोनों पार्श्वमें १३।१३ पञ्जरास्थि रहती हैं। गर्दन मोटी तथा छोटी होती है। बहुतसे गोके पृष्ठ और स्कन्धके मध्यस्थल पर एक मांसपिण्ड रहता जिसे ककुद् कहते है। तातार और भोट देशीय गोको ककुद् नहीं होता। भारतीय गोको अपेक्षा इसका आकार छोटा और लाङ्गूलके लोम दीर्घ और चिक्कण होते हैं। लोमसे उस देशके मनुष्य चामर प्रस्तुत करते तथा चीनदेशके धनाढ्य भक्ति उक्त लोमको भिन्न भिन्न रंगोंसे रञ्जित कर टोपीके ऊपर धारण करते हैं। इस जातिके गोको हमारे देशमें चमरी गो कहा करते।

(चमरी देखो।)

गाय मनुष्यके सदृश कमसे कम दो सौ अस्सी दिनों तक गर्भधारण कर एक समयमें एक हो सन्तान प्रसव करती है। कभी कभी गायको यमज वा एक समयमें तीन सन्तान प्रसव करती भी देखा गया है। किसीके नवप्रसूता गायके निकट जाने पर वह उसे शृङ्ग सञ्चालन द्वारा भगा देती है। दुग्धदोहन समयमें गाय अपने स्तनके मांसपेशी आकुञ्चित कर अपने बच्चेके लिये दुग्ध चुरा रखती है तथा बच्चेके गात्रलेहन कर मातृस्नेह प्रकाश किया करती है।

गायका अपत्यस्नेह अतिशय प्रबल है। स्तन्यपायी बच्चेके मर जाने पर यह तीन चार दिन तक कुछ भी नहीं खाती तथा समय समय पर शोकका कातरताव्यञ्जक चीत्कार किया करती है। इसी कारण कभी कभी इसको आंखोंसे अश्रुपात होता देखा गया है। एतद्भिन्न प्रतिपालकके कोई आकस्मिक विपद पर भी इसके चक्षुमें आंसू आ जाता।

पुंगोको सचराचर सांढ़ या बैल कहते हैं। कृषकगण इसके स्कन्ध पर हलयोजन कर भूमिकर्षण करते हैं। हम लोगोंके देशमें सामान्य पण्यव्यवसायी इसके पृष्ठ पर धान्य प्रभृति रख कर एक स्थानसे दूसरे स्थान ले जाते हैं। ये पृष्ठ पर पांच मन तक बोझा वहन कर सकते तथा बीस या बाईस मन बोझा समेत गाड़ी खींच लेते हैं।

गोमें विलक्षण ज्ञानशक्ति भी है। कोई कोई इसे भालूके सदृश खेल सिखाकर ग्राम ग्राम और नगर नगरमें कौतुक देखाया करते हैं सवेशो जिस स्थान पर एक बार पालित होते, वहांसे किसी दूसरी जगह ले जाने पर वे अपने पूर्व स्थानको फिर भी भाग कर चले आते हैं। ये प्रतिपालकके भक्त हैं। प्रतिपालकके वास-परिवर्तन करने पर भी ये उनके अनुगामी होते हैं। कलकत्तेमें सवेशी को बाहर छोड़नेका नियम नहीं है। किन्तु ऐसा देखा गया है कि कलकत्ते से गृहस्थके सवेशी प्रतिदिन रात्रिकाल बाहर होते और समस्त रात्रि सड़क पर पड़ी हुई चीजोंको खाते हुए प्रातःकाल फिर भी अपने स्वामीके घर पहुंच जाते हैं। इसलिए उन्हें कोई पकड़ नहीं सकते।

गो जाति भारतवासियोंका सर्वस्व धन है। क्या धनी क्या निर्धन सबके सब इन्हें सेवा-शुश्रूषा किया करते हैं। अति प्राचीनकालमें भी भारतवर्षके राजगण गो पालते थे। महाभारतमें लिखा है कि विराट राजाके छह हजार गायें थीं। आइन अकबरीके पढ़नेसे जाना जाता है कि अकबर बादशाहको कई सौ गो और बैल थे। बादशाह गो जातिको बहुत सेवा शुश्रूषा किया करते। मुसलमान होने पर भी उन्होंने भारतवर्षसे गो-हत्याको प्रथा सदाके लिए उठा दी थी। पूर्वकालसे वर्त्तमान समय तक भी गोदान एक महापुण्यके जैसा उक्त है। आजकल भी हम लोगोंके देशको बालिकायें गोकालव्रत नामसे गोको पूजा करती है। इस देशके सवेशी कमसे कम बारह वर्ष जीवित रहते हैं।

गो जातिके शरीरके समस्त द्रव्य व्यवहारमें आते। दुग्ध हम लोगोंका प्राणाधार है। चमड़ेसे जूते और मशक प्रभृति प्रस्तुत होते हैं। अस्थिसे छाता और छूरीके बेंट (मूठ) तथा बटन (बुताम) निर्मित होते हैं। लोमको जमा कर एक तरहका वस्त्र बनाया जाता है। शृङ्ग और खुरको गला कर सरेश होता तथा नाड़ीसे वाद्ययन्त्रके तांत तैयार होते हैं। मूत्र धोबोके वस्त्र धोने और विष्ठा सुखा कर जलानेके काम आते हैं।

मुसलमान तथा चमार इसका मांस खाते हैं। लेहूसे सुरापरिष्कार किया जाता है। प्रुसिया देशमें गोरक्तसे एक तरहका रंग बनता है।

कुमारिका अन्तरीपसे हिमालयके प्रान्तदेश पर्यन्त जङ्गलोंमें गो देखे जाते हैं। भारतवर्षके पश्चिम नीलगिरि, वायनाड़, कुर्ग, बाबाबुदन और महाबलेश्वर पर्वतोंमें ये झुण्डके झुण्ड रहते हैं। नर्मदा और ताप्ती नदीके मध्यवर्ती वनोंमें पुलने, दुण्डिगल पहाड़, आन्दामङ्गल पर्वत पर तथा बेल्लूरके निकटवर्ती सर्वरव पर्वत पर गोदावरी और कृष्णा नदीके मध्यवर्ती स्थानमें, कटक, मेदिनीपुर, मध्यभारत, महिसुर, नेल्लूर, अयोध्या, रोहिलखण्ड, शाहाबाद और मुजफ्फ़रनगरके निकटवर्ती दोआबमें ये जंगली अवस्थामें देखे जाते हैं।

हिमालय प्रदेशके हिमावृत स्थानोंमें एक तरहका वन्य गो (Poephagus Srunniens) देखा जाता है एवं वहांके रहनेवाले खेतीके काममें लानेके लिए चमरी गो (Yak) पोषते हैं। चमरी गो देखो। ब्रह्मपुत्र नदके पूर्वस्थ पार्वतीय स्थानोंमें, आसाम उपत्यकाके मिश्मि पहाड़ और उसके निकटवर्ती स्थानसे उत्तर और पूर्वमें चीनदेशके प्रान्तसीमा पर्यन्त एक दूसरी तरहका गोजाति देखी जाती है। (Gavocus frontalis) हम लोगोंके देशमें इस तरहके मवेशीको गयाल या मिथुन कहते हैं। ये बहुत जल्द हिल जाते हैं। त्रिपुरा, चट्टग्राम प्रभृति स्थानोंमें इनकी संख्या अधिक है। श्रीहट्टमें एक प्रकारका सङ्कर गो (Ros sylhetanus) पाया जाता है। ब्रह्मदेशके 'बेनटेङ्ग' नामक जंगली गाय (Gavacus Sondaicus) उत्तरमें चट्टग्राम तथा दक्षिणमें मलय तक समस्त स्थानोंमें रहती है।

युरोपीय प्राणितत्त्ववेत्ता पालित गोके मध्य जिसे ककुद होता उसे Zabu श्रेणी तथा ककुद्विहीन गोलाकार-शृङ्गविशिष्ट गोको Tanrees और ककुद्हीन चिपटेशृङ्ग गोको Gavalus श्रेणीके पशु कहते हैं।

युरोपके पोलैण्ड, कार्पेथीयपर्वत, लिथुयनीया तथा एसियाके ककेसस् पर्वतके निकटस्थ वनमें एक जातिका गो रहता जिसे वाइसन (Bison) कहते हैं। बहुतोंका अनुमान है कि वर्तमान गृहपालित मवेशी वाइसनसे ही उत्पन्न हुवे हैं। उत्तर अमेरिकामें जो वाइसन देखे जाते उनका शरीर बड़े बड़े महिषोंसे भी बृहत् होता है। इनके मस्तकके लोम विशेषत: गर्दनके जमीन पर लटकते रहते हैं। एक गुच्छा लोम तौलामें चार सेर होता है। लोमसे जो सूत प्रस्तुत होते उनसे उत्कृष्ट वस्त्र और दस्ताना बनाये जाते हैं। प्रात: और सन्ध्या समय ये दल बान्ध कर बाहर चरने निकलते। रौद्रमें वृक्षकी छाया में शयन किया करते हैं। मनुष्यका इन्हें बड़ा भय रहता है। आहत होने पर ये क्रोधान्वित हो आक्रमणकारी-

का विनाश करनेके लिए दौड़ते हैं। उक्त देशके असभ्य मनुष्य अग्नि जला कर इन्हें किसी अपरिसर स्थानमें ले जाते और सबके एकत्र होने पर मार डालते हैं।

लिथुयेनियाके विस्तृत अरण्यमें इउउरस नामकी एक जाति देखी जाती है। चार्लस् मेकेञ्जि साहबने लिखा है कि इनका शरीर हाथीके सदृश वृहत्, चक्षु उज्ज्वल और रक्तवर्ण ग्रीवा छोटा होती है और सींग मोटे तथा छोटे इनका सम्पूर्ण शरीर कृष्णवर्ण लोमसे ढका रहता और गात्रसे साधारणतः एक तरहका दुर्गन्ध निर्गत होता है।

अमेरिकाके जंगलोंमें पहले एक भी मवेशी नहीं था। स्पेनवासी दूसरी जगहसे गौ ला कर उसे जंगलमें छोड़ दिया करते। आजकल उनसे इतनी वंशवृद्धि हो गई है कि एक पम्पाके वनमें ही लाख लाख गौ देखे जाते हैं। शिकारीगण जंगल जा इस गौकी शिकार कर घर ले आते हैं।

वैद्यक मतके अनुसार गोमांसका गुण—सुस्निग्ध, पित्त और श्लेष्मवृद्धिकर, वृंहण, बलकर, पीनस और प्रदरनाशक है। (भावप्रकाश) गोदुग्धका गुण—पथ्य, अत्यन्त रुचिकर, स्वादु, स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, पवित्र, कान्ति, प्रज्ञा, अङ्गपुष्टि और वीर्यवृद्धिकर है। दधिका गुण—अति पवित्र, शीत, स्निग्ध, दीपन, बलकर, मधुर, अरुचि और वातरोगनाशक एवं ग्राही। नवनीत (मक्खन) का गुण—शीतवर्ण, बल, शुक्र, कफ, रुचि, सुख, कान्ति और पुष्टिकर, अतिमधुर, संग्राही, चक्षुको हितकर, व त, सर्वाङ्गशूल, कास, श्रम और त्रिदोषनाशक है। इसका घृतका गुण—मुखप्रिय, वृद्धि, कान्ति, स्मृति, बल, मेधा पुष्टि, अग्नि, शुक्र और शरीरको स्थूलता वृद्धिकर, वात, श्लेष्मा, श्रम और पित्तनाशक है। हव्यमें गौका घी श्रेष्ठ बहुगुणविशिष्ट है। राजनिघण्टुके मतसे प्रत्यूषकालमें गोदुग्ध गुरु, विष्टम्भी और दुर्जर है। इसी कारण सूर्योदयके एक प्रहर पीछे दुग्ध ग्रहण करना अच्छा है। यह पथ्य दीपन और लघु है। दूसरा विवरण दुग्ध शब्दमें देखो। मठा या पके आमके साथ गोदुग्धफेन खानेसे ग्रहणी रोग दूर हो जाता है।

गोमूत्रका गुण—क्षार, कटु, तिक्त और कषायरस, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, लघु, अग्निदीप्तिकारक, मेधाजनक, पित्तवृद्धिकर, कफ, वायु, शूल, गुल्म उदर, आनाह, कण्डु, नेत्ररोग, किलास रोग, आमवात, वस्ति, वेदना, कुष्ठ, कास, श्वास, शोथ, कामला और पाण्डुरोगनाशक है। सब तरहके मूत्रसे गोमूत्र ही अधिक गुणविशिष्ट है। (भावप्रकाश पूर्व २ भा०)

गम्यते ज्ञायते अनेन गम करणे डो यद्वा शीघ्रं गच्छति गम् कर्तरि डो। (पु०) २ रश्मि, किरण, प्रकाश। ३ यन्त्र। ४ हीरक, हीरा। गम्यते बहुदानादिभिः गम् कर्मणि डो। ५ स्वर्ग। गम्यते इष्टयापूर्त्यादि कर्मणा डो। ६ चन्द्र, चांद। गच्छति प्राप्नोति भुवनं स्वतेजसा गम कर्तरि डो। ७ सूर्य ८ गोमेधयज्ञ। ९ ऋषभ नामकी एक तरहकी औषध। (स्त्री०) गम्यते विषयो यया गम करणे डो। १० चक्षु, आंख। ११ बाण, तीर। गम कर्मणि डो। १२ दिक्, दिशा। १३ वाक्य। गम्यतेऽस्यां गम् अधिकरणे डो १४ पृथिवी जमीन। १५ जल, पानी। १६ पशु, यथा बकरी, भैंस, भेंड़ी प्रभृति दुग्ध देनेवाला पशु। १७ माता। १८ पुलस्त्यकी भार्याका नाम। इसका दूसरा नाम गविजाता था। गविजाता देखो।

१९ नवसंख्या, नौका अङ्क। २० इन्द्रिय। (पु० क्ली०) गम्यते ज्ञायते स्पर्शसुखमनेन गम करणे डो। २१ लोम, रोम। (पु०) २२ वृषराशि। २३ घोटक, घोड़ा। २४ गायक, गवैया, गानेवाला। २५ प्रशंसक। २६ आकाश। २७ नंदी नामक शिवगण। (स्त्री०) २८ विजली। ३० सरस्वती। ३१ जिह्वा, जीभ।

गोअग्र (सं० त्रि०) गावो ऽग्रे यस्य, बहुव्री, सन्धिनिषेधः। १ जिसके अग्रभागमें गौ रहे जिसके आगेमें गाय हो। (पु०) २ गोसमूह, गायका झुण्ड।

गोअजन (सं० त्रि०) अजति चालयति अज ल्यु, गवां अजनः ६-तत्। गोचालक।

गोअर्घ (सं० त्रि०) एक गौका मूल्य, एक गायका दाम।

गोअर्णस् (सं० त्रि०) गावो ऽर्णं उदकमिव प्रवृद्धा यस्मिन् बहुव्री०। जिसमें जलकी नाईं गायकी वृद्धि हो।

गोअश्व (सं० क्ली०) गोश्च अश्वश्च, द्वन्द्वः। गौ और अश्व, गाय और घोड़ा।

गोअश्वाय (सं० पु०) सामभेद।

गोआ—मलवार उपकूलमें पोर्त्तगीज अधिकृत एक भूभाग। यह अक्षा० १४° ५३' तथा १५° ४८' उ० और देशा० ७३° ४५' एवं ७४° ४३' पू०के मध्य अवस्थित है। उत्तरसीमामें

तोरकूल या अरोणम् नदी सावन्तवाड़ी राज्यमें इस भूभाग को पृथक् करती है, दक्षिणमें उत्तर कनाड़ा जिला, पूर्वमें पश्चिमघाटकी श्रेणी इस भूभागको बेलगांम जिला और उत्तर कनाड़ासे पृथक् करती हैं। तथा पश्चिममें अरबसागर है। भूपरिमाण १३०१ वर्गमील है, इसके मध्य उत्तरदक्षिणमें इसकी लम्बाई ६२ मील और पूर्व पश्चिममें चौड़ाई ४० मील है। लोकसंख्या प्रायः ५ लाख होगी।

गोआ पर्वतमय है पश्चिमके सिवा तीनों ओर सह्याद्रि गोआको घेरा हुआ है। यहां सह्याद्रिके कई एक उच्च शृङ्ग हैं, जिनमेंसे सतरोमहलमें शोनसागर (समुद्र पृष्ठसे ३८२७ फुट ऊंचा), काट्लञ्चिमोली (३६२३ फुट) वागुदरिम् (३५०० फुट) और मोर्लिम् चगोर (समुद्र पृष्ठसे ३००० फुट ऊंचा), पूर्व और पश्चिमके पोरागमें सिद्धनाथ, चन्द्रवतीमें चन्द्रनाथ, अस्त्रागारमें कोणसिद्ध तथा एम्बर्वाकम् नामक स्थानमें दृष्टिग्रागार नामका शृङ्ग है।

इस राज्यमें असंख्य नदी प्रवाहित हैं, जिनमें २ नदी प्रधान हैं। सह्याद्रिसे निःसृत नीलकूल या अरागड्म् नदी पहले सावन्तवाड़ी होती हुई प्रायः १४ मील जा कर पर्णम् महलको उत्तर सीमामें और गोआके भीतर प्रवाहित हो अरबसागरमें जा गिरी है। रामघाटसे निःसृत कोलवली या चपोरा नदी—वारदेश, विचोलिम्, सङ्कुलिम्, पर्णम, सलेम, रेवोरा, कोलवली और चापोरा ग्राम होती हुई सागरमें गिरी है। पर्वरघाटसे निर्गत माण्डवी नदीकी लम्बाई प्रायः ३८ मील है। यह नदी गोआ राज्यके मध्य सभीसे प्रधान है। इसीके तीर पर गोआका समस्त प्राचीन और वर्तमान नगर अवस्थित हैं। इसकी बहुतसी शाखायें मपुसा, तिविम्, अखनरा प्रभृति ग्राम होकर प्रवाहित हैं। वागा और सिंकुरिम् नामक नदियां वारदेशसे उत्पन्न हैं। पहली नदी १ मील और दूसरी ३½ मील विस्तृत है। दिग्निघाटसे उत्पन्न जुआरीनदीकी लम्बाई प्रायः ३८ मील है, यह मर्मगोआ उपसागरमें जा गिरी है। इसकी भी कई एक शाखा और प्रशाखा हैं। साल नामकी नदी प्रायः १५ मील विस्तृत है, यह वेतुल दुर्गके निकट समुद्रमें सिली है। तलपोणा नदी अम्बुघाटसे निकल तलपोणा नामक क्षुद्र दुर्गके निकट सागरमें जा गिरी है। इनके अतिरिक्त हिन्दुओंके लिए पुण्यप्रद अघाशी, कुशवती प्रभृति क्षुद्र नदियां भी यहां प्रवाहित हैं। उक्त नदियोंमें तीनानामक नाव जाती आती है। इस राज्यमें अनेक नदियोंके प्रवाहित होनेसे रेतीली मट्टी जम गई है और स्थान स्थान पर छोटा छोटा द्वीप उत्पन्न होगया है। इसके नाना स्थानोंमें अच्छे अच्छे बन्दर हैं। इसीलिये विदेशीय जहाज आनेकी विशेष सुविधा है।

यह राज्य स्वास्थ्यकर है। कभी कभी ज्वर, अजीर्ण और अतिसार हुआ करता है।

यहा सर्वत्र मोगनीपत्थर देखा जाता है। जाम्बुली, वना, सतरी और पर्णमर्में लोहा पाया जाता है।

यहां पोर्त्तगीज कर्तृक गोआ दो भागमें विभक्त हुआ है। एक पूर्वविजित (Velha) और दूसरा नवजित (Novas conquise) है। महाभारत और हरिवंशमें यह स्थान गोमन्त, सह्याद्रिखण्डमें गोमाञ्चल और गोराष्ट्र एवं कादम्ब राजाओंके अनुशासनपत्रमें गोपराष्ट्र और गोपकपुरी नामसे वर्णित है। पूर्वतन अरब ग्रन्थकारने "सिन्दबुर" नामसे इसका उल्लेख किया है।

हरिवंशके पढ़नेसे जाना जाता है कि जरासन्धके भयसे भीत हो कृष्ण बलराम दाक्षिणात्यमें परशुरामके निकट पहुंचे। दोनोंने परशुरामसे सह्याद्रिस्थ गोमन्त पर्वतका पता लगा लिया। परशुराम रामकृष्णको गोमन्तशैलको ले आये। रामकृष्णने गोमन्त शैल पर चढ़ कर देखा कि यहां विविध पनस, आम्रातक, आम, वेतस, तिनिश, चन्दन, तमाल इलायची, मरीच, पिप्पली, विचित्र इङ्गुद, सर्ज, शाल, निम्ब, अर्जुन पाटली, हिन्ताल, जम्बू, रुद्र, चम्पक, अशोक, विल्व तिन्दुक, नानाप्रकारके स्थलज और जलज कुसुम शोभा पा रहे हैं। कहीं दरीमुखभ्रष्ट नदी प्रपातकी झर-झर ध्वनि! नानाप्रकारके विहङ्ग कूजन! कहीं सानु समुदाय गैरिकादि धातु नि दिव्याङ्ग, पापदेशमें निर्झरिणी, दरीमुखमें कानन, शुभ्रवर्ण मेघमाला विस्तारित है। शिखर अनेक औषधियोंसे उद्दीप्त और वानप्रस्थोंकी आश्रयस्थ। परशुराम यहां रामकृष्णको रख कर आप शूर्पारक गये। यह स्थान दोनों भाइयोंके लिए प्रीतिकर

राम यहां कादम्ब-मद्य पान कर आनन्दसे उत्फुल्ल हुए थे। कृष्णको विनाश करनेके लिये मद्र, चेकितान, वाह्लिक, काश्मीरराज गोनर्द, करूषाधिपति द्रुम, किम्पुरुष, पुरु-वंशीय वेण्डदारि, विदर्भाधिपति सोमक, रुक्मी, भोजराज, सूर्याक्ष, मालव, पञ्चालाधिपति द्रुपद, विंद अनुविन्द, दंतवक्र, छागली, पुरुमित्र, विराट, कौशाम्ब्य, शतधन्वा, विदूरथ, भूरिश्रवा, त्रिगर्त, वाण, पञ्चनद, उलूक, कैतवेय, एकलव्य, दृढ़ाक्ष, जयद्रथ, उत्तमौजा, शाल्व, केरल देशीय कौशिक, वैदिश वामदेव, सुकेतु, दरद और चेदिराजको सङ्ग ले जरासन्ध उपस्थित हुए। कृष्ण पर आक्रमण करनेके लिये सबने मिल कर गोमन्तको अवरोध किया। किन्तु बहुत दिन गोमन्त घेर रहने पर भी जब जरासन्ध कुछ न कर सका तब गोमन्तको चारों ओर इन्होंने आग लगा दी। इस भयानक अग्निप्रभावसे गोमन्तके पादपराजिसे पशु पक्षिगण सब भेदी आर्तनाद करने लगे। यह देख राम-कृष्णके मनमें अत्यन्त कष्ट हुआ। गोमन्तकी रक्षा करनेके लिए दोनों भाई विपक्ष सैन्य समुद्रमें कूद पड़े। दीर्घकाल युद्धके बाद जरासन्ध परास्त और निरस्त हो गए। इस समय महारथगण धीरे धीरे भागने लगे। जरासन्ध भी रणक्षेत्रको परित्याग कर ना दो ग्यारह हो गए। रामकृष्णने पितृस्वसृपति चेदिराजके अनुरोधसे उनके रथ पर चढ़ कर वीरपुरको प्रस्थान किया। (हरिवंश ८५-९९ अ०)

प्राचीन शिलालिपिके पढ़नेसे मालूम होता है कि यहां पहले पहल कदम्ब-राजगण राजत्व करते थे १२४७ ई०को षष्ठदेवक गोपकपुरमें राज्य करते देखे गये हैं। इससे अनुमान किया जाता है कि उस समयके बाद भी कदम्बराजगण थोड़े काल गोपकपुर (गोआ) में राजत्व करते थे। १३१२ ई०को मालिक तुग्लिन नामक एक मुसलमानने गोआको अपने अधिकारमें कर लिया। इसके बाद १३७० ई०को विजयनगरराज हरिहरके प्रधान मन्त्री सुप्रसिद्ध वेदभाष्यकार माधवाचार्यसे मुसलमानोंके हाथसे यह नगर उद्धार किया गया। तत्पश्चात् दूर हो... इन्होंने प्रायः सौ वर्ष यहां राज्य शासन किया। गो... ई०को वाह्मणीके राजा २य मुहम्मदके सेनापति तीक्षा, गोआ जीत वाहमनी राज्यमें मिला लिया था। पिसहडिवजाओंके अधःपतन और भास्को-डि-गामाके भारत अवतरण कालमें यह भूभाग विजापुरके आदिल-शाही वंशके अधीन हुआ। १५१० ई०को १७वीं फरवरीको आलफान्सो डि आल्वुकार्कने २० जहाज और १२०० सेना साथ ले गोआ पर आक्रमण किया। इसके पहले किसी एक योगीने कहा था कि बहुतसे विदेशी मनुष्य आ गोआमें राजत्व करेगा। पोर्तगोजके आक्रमण काल गोआके रहनेवाले योगीकी बात पर विश्वास कर देश छोड़ भागने लगे थे, सुतरां गोआ अधिकार करनेमें आल्वुकार्कको यथेष्ट परिश्रम न करना पड़ा। राज्यके प्रधान प्रधान मनुष्योंने अवनतशिरसे आ आल्वुकार्कको प्रवेशद्वारसमूहकी चाभी दे दी। पोर्तगोजने बहुत धूम धामसे गोआ नगरीमें प्रवेश कर पोर्तगोज जयपताका उड़ाई। नगरके रहनेवालोंने स्वर्ण तथा रौप्यका पुष्प वर्षण कर विजेताको सम्वर्धना की थी। उक्त वर्षके १२ अगस्तको बीजापुरके राजा युसफ आदिलशाहने बहुतसी सैन्य ले गोआको अपने दखलमें लिया। घटनाक्रमसे पोर्तुगलसे एक सुशिक्षित सैन्य दल आ पहुंचा। आल्वुकार्कने उनकी सहायतासे २५ नवम्बरको फिर भी गोआ नगर पर आक्रमण किया था। इस लड़ाईमें प्रायः दो सहस्र मुसलमान शत्रुके हाथसे मारे गये थे। उस समय अधिवासियोंको जैसा कष्ट झेलना पड़ा वह अकथनीय है। पोर्तगोजराजने लूटका पञ्चमांश प्रायः दो लाख रुपये पाये रहे। आल्वुकार्कने दुर्ग संस्कार और नगर सुदृढ़ करनेकी व्यवस्था की। इस समयसे एसियास्थ पोर्तगोजके अधीन दूसरे स्थानोंको अपेक्षा गोआ ही प्रधान हो उठा। मार्टिन आलफन्सो पहले पहल गोआके शासनकर्ता हो कर आये थे, उनके साथ सेण्ट जेवियर भी थे। उनके शासनकालमें १५४३ ई०को इब्राहिम आदिल शाहके अधीनस्थ सालसिट और वारदेश नामक महाल पोर्तगोजोंके अधिकारभुक्त हुए। भविष्यत्में सहसा मुसलमानके आक्रमण निवारणके लिये गोआके पश्चिमांशमें एक दृढ़ प्राचीर निर्माण किया गया। १५७० ई०को आलि आदिलशाहने लगभग लक्षाधिक सैन्य ले गोआ नगर अवरोध किया था, किन्तु इस समय पोर्तगोजके राजप्रतिनिधि उन-लुइ-दि-आथेडिने अल्पसंख्यकसैन्य ले अति विचक्षणरूपसे नगर रक्षा की थी। दश मास घेरे रहनेके बाद मुसलमान

सैन्य वाध्य हो लौट गये। इस समय पोर्तगीजको एक दूसरा संकट आ पड़ा। पोर्तुगल और स्पेनराज्यमें परस्पर विशेष सम्बन्ध था। यद्यपि ओलन्दाज स्पेनकी अधीनतासे मुक्त हो गये थे तोभी पोर्तगीजों पर उनका अधिक डाह था। ये भारतके उपकूलमें आ पोर्तगीजके ऊपर अनिष्ट करनेकी चेष्टा करने लगे।

ऐसी गड़बड़ी और उत्पातमें भी गोआ श्रीहीन नहीं हुवा। मोगलबादशाहके प्रबल आधिपत्यकालमें दिल्ली और आगराका जैसी श्रीवृद्धि हुईथी और १६वीं शताब्दीमें पोर्तगीजके अधीन गोआ भी वैसी ही समृद्धि और अपूर्व श्री धारण की थी। इनकी समुच्च सौधावली, पृथ्वीके नाना स्थानके वणिकोंका समागम, ईसाई धर्ममन्दिरके नित्य उत्सव और योद्धृगणोंके अस्त्रकी झनझनाहटसे दर्शकोंके लिए यह नगरी सुरपुरी सदृश समझी जाती थी। उस समयके भ्रमणकारियोंने मुक्तकण्ठसे इनके गौरवकी घोषणा की है।

पोर्त्तगीजोंने जिस तरह अस्त्रबलसे आधिपत्य विस्तार किया था, उसी तरह अपने अस्त्रके जोरसे ही सैकड़ों व्यक्तियोंको ईसाई धर्ममें दीक्षित किया था। धर्मप्रचार ही इनके अधःपतनका कारण हुआ। ईसाई देखो।

१६वीं शताब्दीमें जिनके वीरदर्पसे भारतभूमि कंपित हो उठी थी, १७वीं शताब्दीमें वेही वीरतेजा पोर्त्तगीजगण अत्यन्त विलासी हो गये। विलासिता ही इनके अधःपतनका अन्यतम कारण था। उस समय गोआ नगरमें यद्यपि पान्थनिवास नहीं था तौभी नगरके सर्वत्र जूआ खेलनेके अड्डे और प्रमोदगृह मौजूद थे। जुआ खेलनेका अड्डा आजकलके अच्छे अच्छे बैठकखानोंके सदृश अतिसुन्दर रूपसे सज्जित रहा करता था। पोर्तगीज गवर्मेण्ट उन अड्डाओंसे यथेष्ट कर लिया करती थी। प्रमोदगृहसमूहमें दिन रात गायिका, नर्तकी, नटनटी, वाजीकर और शराब रहा करती थी। सकल श्रेणीके मनुष्य प्रमोदगृहमें आया जाया करते थे।

पोर्त्तगीजकी स्त्रियां देशीय रमणियोंके जैसे वस्त्र पहन अन्तःपुरमें रहती थीं। पुरुष भी घरमें देशीय वस्त्र पहनते थे, किन्तु बाहरमें ये अपनेको सुसज्जित रखते थे। कोई कोई रास्तेमें घोड़ेको मणि मुक्ता और स्वर्ण रौप्यके अलङ्कारोंसे सजा कर चलते और भृत्यगण आसा सोटा छत्र चामर और पानका दोना हाथमें ले साथ साथ जाते थे। देखनेसे मालूम पड़ता है कि कोई नवाबपुत्र जा रहे हों। गरीब मनुष्य भी धनी मनुष्यका अनुकरण करते हैं. सुतरां उनका पेट भरे या नहीं बाहरसे वे सजधज कर रहते थे। थोड़ा अवकाश पानेसे ही अधिकांश मनुष्य जूआके अड्डे या प्रमोदगृहमें जा आमोद करते थे। इधर उनकी स्त्रियां भी विलासितामें डूब कर इतनी मत्त हो जाती थीं कि, उन्हें घरके काम-काजका भी होश न रहता था और कभी कभी वे अच्छी अच्छी पोशाकोंसे अपनेको सजा कर नौजवानोंके साथ सङ्गम करनेकी कोशिश करती थीं।

कोई-कोई अपने पतिको मादक वस्तु पिला अचेतन कर दूसरे पुरुषके साथ सुख भोग करतीं थीं। पोर्त्तगीज राज्यकी ऐसी अवस्था थी। इसी धूमधामके समयमें १६०३ ई०को ओलन्दाजोंने गोआ अवरोध किया था। यद्यपि उस समय उनका उद्यम निष्फल हुआ था, तथापि उन्होंने अपने पैर पीछे न हटाये, क्रमशः पोर्त्तगीजकी बहुतसी रणतरि (फौजी जहाज) हस्तगत कर लीं। इस समय गोआके चारो ओर प्रबल ज्वरका प्रादुर्भाव हुआ। १६३५ ई० तक इस ज्वरसे अधिवासियोंको यथेष्ट कष्ट हुवा। १६३८ ई०को फिर भी ओलन्दाजोंने गोआ अवरोध किया था। इस समय भी उनको पूर्ववत् पृष्ठ प्रदर्शन करना पड़ा था। इन समस्त दुर्घटनाओंसे गोआ धीरे धीरे श्रीहीन होता गया। १६४८ ई०को टावारनियरने गोआकी सौधावलीके शिल्पनैपुण्यकी अधिक प्रशंसा की थी, किन्तु उन्होंने अपने प्रथमागमनमें गोआके थोड़े पोर्तगीज परिवारको जिस प्रकार सुखसे रहते देखा था, इस बार उन्हें संपूर्ण विपरीत पाया। उन्होंने लिखा है—"कई वर्ष पहले जिनकी यथेष्ट सम्पत्ति थी, अभी वे गुप्तभावसे भिक्षाद्वारा जीविकानिर्वाह करते हैं। किन्तु इतना होने पर भी इनका अभिमान घटा न था। अब भी बहुतसी दरिद्र पोर्तगीज रमणियां पालकीमें बैठ नौकरको साथ ले दूसरेके दरवाजे पर जातीं और नौकर उस रमणीकेलिये घरके मालिकसे भिक्षा प्रार्थना करता।" इस समय १६६६ ई०को थेवेनो (Kevenot) ने लिखा है—"गोआ नगरी

में प्रासादमाला सुन्दर सुसज्जित, अत्युच्च गिर्जा और अच्छे अच्छे मठ हैं। भारतमें पोर्तगीजकी नाईं धनवान् संसारमें बहुत थोड़े हैं, किन्तु यह धनगौरव ही इन्होंके ध्वंसका मूल है।" १६७५ ई०को एक दूसरे मनुष्यने गोआ प्रदर्शन कर लिखा है,—"भारतमें यह रोम नगरके जैसा समशैलके ऊपर अवस्थित है। चारो ओर विश्वविद्यालय, उच्च भजनालय और बड़ी बड़ी अट्टालिका हैं, किन्तु अधिकांश ध्वंस हो जाने पर यह नगरी लज्जासे अधोवदन की हुई मालूम पड़ती है।"

१६८३ ई०हो शम्भाजीने अकस्मात् गोआमें प्रवेश कर नगर लूटा था,उस समय किसीसे सहायता पानेकी आशा न थी। ऐसे समयमें सह्याद्रिसे बहुतसे मोगलसैन्यने आ महाराष्ट्रोंकी पराजय और वशीभूत किया। थोड़े दिनोंके बाद फिर सावन्तवाड़ीसे भोनसलेने आकर गोआ राज्य पर आक्रमण किया, परन्तु वे भी पोर्तगीजोंसे परास्त हो गये।

इस समय पोर्तगीजोंने महाराष्ट्रोंके अधिकृत विचोलिम् दुर्ग ध्वंस तथा कोर्युतम् और पनलेम् नामक द्वीप अधिकार कर लिया। १७१७ ई०को वारदेश और चपोराकी सीमामें दो दुर्ग निर्मित हुए। १७३२ ई०से १७४१ ई० तक पोर्तगीजोंके साथ महाराष्ट्रका युद्ध होता रहा। इस समय भोन्सलेसे गोआ राज्यके नानास्थानोंमें लूटमार करते थे। अन्तमें नये राजप्रतिनिधि मारक्विस ओफ लरिश्रालने १२०० यूरोपीय सैन्यके साथ ले वारदेशमें महाराष्ट्रोंको पराजित किया और गोआ राज्यसे उन्हें भगा कर पोराडा तथा दूसरे कई एक छोटे छोटे दुर्गों पर अधिकार कर लिया। इस समय भोन्सलेके सर्दार खेमसामन्त पोर्तगीजके करदरूपमें गण्य हुए थे। इस घोर युद्धके बादभी महाराष्ट्र शान्त न हुए, उन्होंने भोन्सलेके साथ मिल पोर्तगीजके साथ फिर भी लड़ाई ठान दी। बोर मारक्विस ओफ काष्टेलो (Marquis of Cashtilo Novo ने आलोर्मा, तीरकूल, निउतिम्, ररिम् और सङ्कुलिम्को दखल किया। १७६० ई०को पोर्तगीजके प्रतिनिधि मारक्विस ओफ तवोराने सुन्दाके राजाको पराजय कर पोरो दखल किया। इसके बाद राजप्रतिनिधि आल्वारके समयमें महाराष्ट्रोंके साथ घमसान युद्ध हुआ था। इस समय ररिम और बिउतिम् पोर्तगीजके हाथसे निकल गये। पोर्तगीजराज्यके प्रतिनिधि भी दुर्गके अवरोधकालमें मारे गये। पोरो और जिम्बम् दुर्ग सुन्दाराजाको तथा विचोलिम्, संकुलिम् और अलोर्णा खेमसामन्तको लौटा देनेके लिए पोर्तगीजने आदेश दिया, उस समय हैदरअलीके हाथसे बचनेके लिए सुन्दाराजाने पोर्तगीजको जांबुली, रामेश्वर और कोणाकोण नामक भूभाग अर्पण किये। एक वर्षके बाद खेमसामन्तने पोर्तगीजके साथ फिर भी विरोध ठाना, अन्तमें पोर्तगीजोंसे परास्त हो, उन्हें आलोर्णा, पर्णम्, सङ्कुलिम् और चिरोलिम् छोड़ देने पड़े। सैकड़ों आक्रमणों और मरी रोगसे गोआ नगरी धीरे धीरे उजाड़ होने लगी।

पोर्तगीज गवर्नमेण्टने राजधानीका पुनः संस्कारकी चेष्टा की। अधिक रुपये व्यय होने पर भी कुछ सफलता हाथ न आई। पहलेसे ही अधिवासीगण धीरे धीरे नदीके मुहाने पर अवस्थित पञ्जीम् या नये गोआमें बस रहे थे, तब यहां नयी राजधानी स्थापित हुई। १८वीं शताब्दीमें गोआकी अवस्था बहुत शोचनीय हो गई थी, यहां तक कि आयसे भी वहांका खर्च अधिक था; और सेनाध्यक्ष (Captain) ६) रु०से अधिक वेतन नहीं पाते थे। महाराष्ट्रोंसे रक्षाके लिये जो दो हजार यूरोपीय सेना नियुक्त हुई थी, उनका खर्च पोर्तगलके राजाको ही देना पड़ता था। कप्तान हमिल्टन लिख गये हैं कि उस समय भी गोआके निकट पर्वतके ऊपर बहुत गिर्जे और कुमारीमठ तथा प्रायः तीस हजार रोमन कैथोलिक याजक थे।

१७३८ ई०को महाराष्ट्रोंने गोआ राज्य पर बहुत उपद्रव मचाया था। ईसाई यति और संन्यासियोंने भीति हो मार्गाव नामक स्थानमें आश्रय लिया था। जो कुछ हो गोआकी दरिद्रता घटी नहीं। पदस्थ राजपुरुष और सेनाओंको अमितव्ययिता भी दूर नहीं हुई।

१८०१ ई०को फरासीसीओंके युद्धकालमें अंगरेज पोर्तगीजोंके साथ मिले थे। १८१७ ई०को पोर्त्तगीजके प्रतिनिधि काउण्ट ओफ लिओपर्दोने उष्पा और ररिमके दुर्ग पर आक्रमण किया था। १८३५ ई०को राज्ञी (२रो) डोनामेरियाने वार्नार्डो पेरेय्र-डा-सिलभा नामक एक

गोआके रहनेवाले पोर्त गीजको पोतु गालके अधीन भारतीय राज्यसमूहका शासनकर्त्ता बनाये थे। उन्होंने राजाका इन्तजाम तो अच्छा किया था। लेकिन इनका शासनकाल १७ दिनसे अधिक स्थायी न रहा। इस समय इनके विरुद्ध कुछ लोगोंके षड़यन्त्र रचने पर इन्होंने बम्बई भाग कर आत्मरक्षा की। इसके बाद १६ वर्ष गोआमें और किसी तरहका उपद्रव न हुआ। १८४५ ई०को सामन्तवाड़ीमें विद्रोह उपस्थित हुवा। बहुतसे विद्रोहियोंने गोआ आ कर आश्रय लिया था। इन्हींके लिए पोर्त्त गीजोंके साथ वृटिश गवर्नमेण्टके विवाद होनेका सूत्रपात हुवा। इस समय पेस्ताना गोआके शासनकर्त्ता थे। १८५२ ई०को दोपजीके भड़काने पर सतरीकी रानी विद्रोही हुई। १८७१ ई०को गोआके रहनेवाले देशीय सैन्य अपनी प्रार्थनाके अनुसार वेतन न पानेके कारण विद्रोही हो उठे। विद्रोहियोंके दमन करनेके लिये पोर्तु गलके राजाके भाई डोम अगष्टो स्वयं ससैन्य पहुंचे। इन्होंने आकर शान्ति स्थापन और विद्रोहियोंको निरस्त्र किया था।

पहली सेनाका पुनःसङ्गठन हुआ न था और देशी सेनाएं मुट्ठीभर युरोपी फौजके लिए खतर नाक हो सकती थी। फिर समस्त भारतमें अङ्गरेजोंके शान्ति रखनेसे उनकी कोई आवश्यकता भी न थी। १८८५ ई०को जब सरकार गोआ फौजकी जो मोजम्बिक बलवाई काफरोंको दबानेके लिए भेजी जा रही थी, मांग पूरी कर न सकी पैदल सिपाहियोंने बलवा कर दिया। सतारीकी रानी विद्रोहियोंसे मिल गई। जब तक लिसबनसे हिज हाइनेस इनफाण्ड डोम अल्फोन्सो हेनरिक कुमक ले कर न आये, अशान्ति बनी रही। १८८७ ई०में साधारण क्षमाप्रदान की गई। १८०१ ई०की रानी फिर बिगड़ी। यह बलवा ६ नवम्बरको वलपाय (सतारी) में एक अफसरको मार डालने पर शुरू हुआ था। हत्यारे और बहुतसे रानीके नेता पकड़े गये और दण्डित हुए। रानी लोग ति मोरको निर्वासित किये गये।

गोआके प्रधान नगर (नये) गोआ या पञ्जीम, मर्गाओ और मयुगा है। डमान, दिउ, मोजाम्बिक, मकाओ, और तिमोर प्रभृति विभिन्न जनपद भी गोआके शासनकर्त्ताके अधीन हैं।

पुण्यस्थान—गोआ राज्य हिन्दू तथा ईसाई सम्प्रदायका पुण्यस्थानके जैसा गण्य है। यहां बहुतसे हिन्दू तीर्थ तथा प्राचीन देवालय हैं, जिनमें चन्द्रवती महालके चन्द्रनाथ और नवजित गोआके अन्तर्गत माङ्गेश, महालसा, शान्तादुर्गा, कपिलेश्वर, नागेश और रामनाथ प्रसिद्ध हैं। चन्द्रनाथ या चन्द्रचूड़का माहात्म्य स्थलपुराण और सह्याद्रिखण्डमें विस्तृतरूपसे वर्णित है। सह्याद्रिखण्डका मत—

"पूर्वकालमें किसी समय दश हजार वर्ष तक अनावृष्टि हुई थी। दारुण अनावृष्टिसे पृथ्वी पर हाहाकार मच गया। अन्तमें बहुतसे ऋषि मिल कर अगाध सलिल कुशवती नदीमें उपस्थित हुए एवं जल पानेके लिए देवदेव महादेवका स्तव करने लगे। शिवजी इनके स्तवसे सन्तुष्ट हो वृहत् पर्वत रूपमें अवतीर्ण हुए। इसकी ऊंचाई एक योजन था। इसके शिरोदेश पर चन्द्रकान्त पत्थर है, इसीसे जल निःसृत हो अनावृष्टिसे पीड़ित समस्त भूमण्डलकी रक्षा हुई। फिर भी अनावृष्टि होने पर क्या उपाय किया जाय। यह सोच कर ऋषियोंने शिवजीको वहीं रहनेका अनुरोध किया। ऋषियोंके अनुरोधसे महादेव उसी पर्वतशिखर पर लिङ्गरूपमें रहने लगे। इसका नाम चन्द्रचूड़ है। इनका दर्शन करनेसे समस्त पाप नाश होते हैं। थोड़े दिनके बाद भूतनायक भैरव शिवजीको देखने आये। शिवजीकी अनुमतिसे ये भी इसी स्थान पर रहने लगे। इसके बाद नानादेशीय ऋषिगण इस स्थानमें आ वास करने लगे। तीर्थके प्रभावसे सब किसीने सिद्धि लाभ की है। जिस स्थान पर जिस ऋषिकी सिद्धि मिली है, वह स्थान उन्हींके नाम पर तीर्थ हो गया है। इसके मध्य कपिल, गौतम, सोम, भरद्वाज, चन्द्रोदय, सुशर्मिष्ठ और अम्बष्ठ तीर्थ ही प्रधान हैं।" परमें

"चन्द्रचूड़के पश्चिममें कुशवती प्रभृति कई एक पुण्यकारको सलिला नदियां तथा इसके चारों ओर प्रसिद्ध तीर्थ हैं न हैं। कुशवती ब्रह्माके पदसे उत्पन्न हुई है। इस नदीके दोनों कूल पर बहुतसे कुश हैं इस लिये ऋषियोंने इसका था। बल-

कुशवती रखा। किसी समय अगस्त्य ऋषि, हाटकेश्वरका देखने जा रहे थे, रास्तेमें कुशवतीके साथ इन्हें भेंट हुई। ऋषिके आदेशसे कुशवती प्रवाहित हो हाटकेश्वर तक चली गई। स्थानविशेषमें इसका नाम पंचनदी पड़ा। इसमें स्नान करनेसे समस्त पाप विनष्ट होते हैं।''

(चन्द्रचूड़ा ११ अ०)

'कुशवतीके निकट अम्बष्ठ नामक एक पापी व्याध रहता था। चौर्यवृत्ति ही उसकी जीविका थी। दुराशय व्याध बाल्यकालसे ही निर्दयतासे पशुओंका शिकार करता था। धीरे धीरे व्याधको बुढ़ापा आया। किसी श्रावणी पूर्णिमा तिथिके सोमवारको देश विदेशसे तीर्थयात्रिगण झुण्डके झुण्ड चन्द्रचूड़ तीर्थको जा रहे थे, पहले उन्हें कुशवती नदीको देख कर ही वहां जाना पड़ता। इन तीर्थयात्रियोंको देख अम्बष्ठके मनमें एक दूसरा ही भाव उत्पन्न हो आया, और वह यात्रियोंके साथ ही चन्द्रचूड़को पहुंचा। यात्रियोंका भक्तिभाव, पूजा और आचार व्यवहार देख व्याधको भक्तिका संचार हो गया। उस दिन इसने कुछ भी न खाया। सन्ध्याके बाद शिवजीके उद्देशसे एक दीप जला कर क्षुधा और पिपासासे कातर हो ज्योंही वह खाने लगा त्योंहीं प्रथम ग्रास गलेमें अटक उस व्याधकी मृत्यु हो गई। मृत्युके बाद यमकी आज्ञासे यमदूत उसे लेजा रहा था, रास्तेमें शिवानुचर रुद्रगणने उन्हें रोक दिया। अनेक वादानुवादके बाद स्थिर हुआ कि बाल्यकालसे पापाचारी होने पर भी तीर्थ और दिनमाहात्म्यमें यह रुद्रलोकमेंही वास करेगा। यमदूतने उनके वचनसे पराजित हो अपन राह ली। अम्बष्ठ रुद्रानुचरके साथ रुद्रलोकको चला गया। इसीलिए वह स्थान अम्बष्ठतीर्थ नामसे विख्यात है। श्रावणमासके सोमवारको पूर्णिमा तिथि होने पर योग होता है इस दिन वहां जा स्नान दान करनेसे शिवलोकको प्राप्ति होती है।

'कपिल नामक एक राजा शत्रुसे पराजित हो इस तीर्थमें रहते थे। यथाविधि स्नान दान और शिवजीकी आराधना कर पुनर्वार अपना राज्य प्राप्त किया था। वे जिस स्थान पर रह शिवजीकी आराधना करते थे, वह कपिलतीर्थ नामसे प्रसिद्ध है।

'चन्द्रचूड़शिखरके दाक्षिणको ओर गौतमतीर्थ है। पूर्वकालमें गौतम नामक ब्राह्मणने कठिन तपस्या, शतरुद्रीय सूक्त एवं सद्योजात मन्त्रसे शिवजीको आराधना की थी। उनकी आराधनासे शिवजी सन्तुष्ट हो गुहाद्वारसे उनके निकट उपस्थित हुए तथा गौतमको प्रार्थनासे उसी स्थान पर लिङ्गरूपसे अवस्थान करना अङ्गीकार किया। वही स्थान गौतमतीर्थ नामसे प्रसिद्ध है। उसमें स्नान, दान और भक्तिपूर्वक गौतमलिङ्ग दर्शन करनेसे समस्त पाप जाते रहते और सब अभिलाष पूर्ण होते हैं।

'दानवोंके उपद्रवसे भीत हो जगत्पति हरि इसके एक गुहामें जा शिवजीको आराधना करने लगे। उपवासी रह तीन बार स्नान और मृत्युञ्जय मन्त्र जप कर अभीष्ट वर और एक उत्कृष्ट रथ पाये थे। इसी कारण वह कन्दरा सोमतीर्थ नामसे विख्यात है। इसके प्रस्रवणमें स्नान करनेसे सर्व यज्ञके फल तथा छह बार वेदपाठ करनेका फल होता है।

'क्षयरोगग्रस्त कोई नरपति इस पर्वतके अग्निकोणमें मनोहर सोमोदकमें स्नान कर शिवजीको आराधना करके क्षयरोगसे मुक्त हुए थे। इसीसे वह चन्द्रोदयतीर्थ कहा जाता है। इसमें स्नान करनेसे क्षयरोगका प्रतीकार होता है।

'पर्वतके उत्तरको ओर कामप्रपूरण नामक एक तीर्थ है। कोई मुनिकन्या वहां रह तपस्या करती थी। तपस्याके फलसे मुनिकुमारी पार्वतीकी सखी हो कैलासवासिनी हो गई।

'शर्मिष्ठा नामकी एक अप्सरा थी। उसने यज्ञनिरत किसी ब्राह्मणके साथ विवाह करनेकी इच्छा की। समस्त ब्राह्मण उसके रूप देख मोहित हो गये थे शर्मिष्ठाने किसीको भी पसन्द न किया। एक दिन वह महर्षि और्वके आश्रमको पहुंची और मुनिके शापसे कुत्सित हो उसने जन्मग्रहण किया। शर्मिष्ठा चिररोगग्रस्त हो दारुण यातनासे काल बिताने लगीं। अन्तको कामप्रपूरणतीर्थमें रह दश वर्ष पर्यन्त प्रतिदिन नियमित रूपसे स्नान करने लगीं। तीर्थप्रभावसे पूर्वकी

नाई' अलौकिक रूपलावण्य या स्वर्ग को चली गईं। इससे तीर्थ का नाम सुप्रसिद्ध हुवा।'

(सह्याद्रिखण्ड मत्स्कु' अ० ६ अ०)

'चन्द्रचूड़के ईशान कोणमें मूलगङ्गातीर्थ है। यह शिवजीकी जटासे निकली है। एक मास इसमें स्नान करनेसे समस्त रोगोंका प्रतिकार होता है। इसके स्नानसे साध्वी वीरप्रसविणी, दरिद्र धनवान्, क्षत्रिय राजा और राजा सम्राट् हो जाते हैं। शकुन्तलाने इसमें स्नान कर राजचक्रवर्त्ती पुत्र पाया था। जो मूलगङ्गाके जलमें स्नान कर चन्द्रचूड़ दर्शन करता, वह शिवलोकको प्राप्त होता है।

'चन्द्रचूड़के पश्चिममें मालती नदी है। इसके जलमें स्नान कर चन्द्रचूड़ अवलोकन करनेसे मुक्ति प्राप्त होती है। स्वयं शिवजीने इस तीर्थको निर्माण किया था।"

(सह्याद्रि सनत्कुमार ८ अ०)

'नागाह्वय या नागेश—इसका मन्दिर गोआवासीके लिए प्रसिद्ध है। सह्याद्रिखण्डमें लिखा है—"क्षत्रियकुलान्तक परशुरामने सह्याद्रिके पश्चिममें समुद्रके निकट अघाशी नदीके तीर पर एक मनोहारिणीपुरी निर्माण की थी। गरुड़के भयसे कातर हो नागोंने इस स्थान पर रह एक शत दिव्य वर्ष तपस्या की थी। तपस्यासे सन्तुष्ट हो परशुरामने सर्पोंकी गरुड़से रक्षाके लिए कैलास जा शिव और पार्वतीको लाया था। शिवजी और पार्वतीके इस क्षेत्रमें पहुंचने पर नागगण स्तव करने लगे। सर्पोंके स्तवसे तुष्ट हो एवं परशुरामकी प्रार्थना पर शिव और पार्वती इस तीर्थमें रहने लगे। एक दिन खगपति गरुड़ क्षुधार्त हो सर्प खानेकी इच्छासे इस स्थान पर पहुंचे। सर्पोंने सोचा कि अभी शिवजीकी आश्रय सिवा और दूसरा कोई उपाय नहीं है इसलिए समस्त सर्प शिवजीके शरीर पर चढ़ उन्हें जोरसे पकड़ा। शिवजीने कहा—"गरुड़! तुम इस तीर्थस्थित सर्पोंको भक्षण मत करो।" महादेवकी आज्ञासे गरुड़ कुछ न कर सका। सर्प भी निर्भयसे रहने लगे। इसी कारण इस तीर्थका नाम नागाह्वय या नागेश पड़ा। फणिगण-विभूषित शिव और पार्वती नियत इस स्थान पर रहने लगे। इसके बाद शान्त नामक कोई मुनि भगवतीकी आराधना करते थे। उनकी आराधनासे संतुष्ट हो भगवती भी बालिकाभषमें आविर्भूत हुई एवं मुनिको अनिरुद्धकी आराधना करनेकी अनुमति दी। ब्राह्मण देवीके आदेशसे अनुरुद्धकी उपासना करने लगे, तथा उनकी आराधनासे संतुष्ट हो अनिरुद्ध साक्षात् हुए। मुनिने शान्तादेवीके साथ उन्हें इस स्थान पर रहनेकी प्रार्थना की। तभीसे शान्तादेवी तथा अनिरुद्ध इस स्थान पर अवस्थान करते आ रहे हैं। इन्हें छोड़ विघ्नराज और भूतनाथ ये दो देवता भी इस क्षेत्रमें नियत अवस्थान करते हैं। यहां देवदर्शन, जप और होमादि करनेसे अनन्त फल होते हैं।' (नागाह्वयमा०)

शान्ता अभी शान्ता दुर्गा नामसे ख्यात है।

वरुणापुर—किसी समय वरुणको नगरीमें जा बहुत से मनुष्य परशुरामकी उपासना की थी। रामजीने संतुष्ट हो वरुणको एक पुरी निर्माण करनेकी अनुमति दी वरुणने भी अपना पूर्व सदृश एक मनोहर पुर बना दिया। परशुरामने खुश हो उस पुरका नाम वरुणापुर रखा था। किसी एक वर्ष वैशाख मासके शुक्रवारके नवमी तिथिमें सात दिन पर्यन्त रामोत्सव होता था वरुणापुरवासी आमोदमें मतवाले हो गये थे। उस समय समुख नामक एक दैत्य मौका पा कर सबको कष्ट पहुंचाने लगा। पुरवासियोंने असुरके हाथसे रक्षा पानेके लिये परशुरामकी उपासना की। परशुरामने दैत्यनाशका उपाय करनेके लिये एक देवमूर्ति स्थापन कर सकल पुरवासियोंको उसकी आराधना करनेकी अनुमति दी थी। इन्होंको उपासनासे संतुष्ट हो देवीने भीषण खड्गाघातसे माघ मासकी शुक्लपक्षीय षष्ठी तिथिमें उस असुरको विनाश किया था। उक्त तिथिमें इस देवीकी आराधना करनेसे मनोभीष्ट पूर्ण होता है। दुर्गा, भद्रकाली, विजया, वैष्णवी, कृष्णा, माधवी, कन्यका, माया, नारायणी, शान्ता, शारदा, अम्बिका, कात्यायणी, बालदुर्गा, महायोगिनी, अधीश्वरी, योगनिद्रा, महालक्ष्मी, कालरात्रि और मोहिनी इन नामोंसे उक्त देवीमूर्तिकी आराधना की जाती हैं। इस देवी मूर्तिका नाम महालसा है। (स्कन्दपुराण) गोआके रहनेवाले हिन्दू इन्हें "मालसा" कहा करते हैं।

माङ्गेश—किसी समय शिवजी पार्वतीके साथ द्यूत

क्रीड़ा कर रहे थे। दैवक्रमसे खेलनेमें पार्वतीकी जीत हुई। गृहिणीने द्यूतक्रीड़ामें पराजित पतिको दो एक उपहास या चाटुवाक्यसे तिरस्कार किया। शिवजीके मनमें बहुत दुःख हुवा। वे घर छोड़ वनवासी हो गए थे। वृद्ध भोला सांसारिक सुखकी आशा पर जलाञ्जलि दे वन वनमें घूमने लगे। इन्होंने पहले कृष्णा और वेणीके सङ्गम पर तपस्या की थी। वह स्थान सङ्गमेश्वर नामसे प्रसिद्ध हुवा। परशुरामसे वह स्थान ब्राह्मणोंको दान दिए जाने पर शिवजी वह स्थान छोड़ सागरके निकट जा रहने लगे इसके बाद चम्पावतीमें आए अनेक दिन तपस्या की थी। इस स्थानमें रामेश्वर नामके एक लिङ्गकी दक्षिण ओर स्वयं सदाशिव विराजमान हैं। इसके बाद शिवजी गोमन्तक पर्वत पर गए थे। इस स्थान पर शिवजी गोमन्तकेश नामसे सर्वजनप्रसिद्ध लिङ्गरूपमें आविर्भूत हुए। इस लिङ्गको पूर्व और ब्रह्मा विष्णु प्रभृति समस्त देवता विराज करते हैं। लिङ्गके पश्चिममें यमेश, उत्तरमें ब्रह्मवादी ऋषिगण एवं दक्षिणमें भैरवादिशिवगण अवस्थित हैं, ऋषियोंने शिवके दर्शन पानेके लिए सातकरोड़ वर्ष तक अघाशी नदीके तीर पर तपस्या की थी। शिवजीके साक्षात् होने पर ऋषियोंने इन्हें लिङ्गरूपमें उस स्थान पर रहनेको प्रार्थना की। उनकी प्रार्थनासे उस स्थान पर सप्तकोटीश्वर नामक एक लिङ्ग स्थापित हुआ। पञ्चनदीमें स्नान कर सप्तकोटीश्वरका अवलोकन करनेसे मनोभीष्ट पूर्ण होता है।

'गोमन्तके दक्षिण भागमें सागरके निकट अघाशी नामकी एक नदी है। यह नदी सह्याद्रिके पाददेशसे उत्पन्न हुई है। अघाशीके तीर पर प्रसिद्ध कुशस्थलीपुरी है। इस पुरीमें लोमश नामक एक पुण्यात्मा ब्राह्मण रहते थे, लोमश किसी समय चन्द्रग्रहण उपलक्षको सङ्गमस्थलमें स्नान करनेके लिए पहुंचे। ज्योंही उस ब्राह्मणने नदीमें प्रवेश किया त्योंही एक भीषण मगरने उन्हें पकड़ लिया। दारुण विपदसे लोमश शिवजीका स्तव करने लगे। शिवने दर्शन दे उनकी रक्षा की थी। उस स्थान पर लोमश नामका एक लिङ्ग स्थापित हुआ। शिवजीने लोमशको कहा था कि "इस गोमन्तक पर्वत पर शतसहस्र लिङ्ग हैं, किन्तु उनमें मैं पूर्णांशसे अवस्थित नहीं हूं। कलिकालमें अघाशी नदीके तीर पर इसी लोमश लिङ्गमें हो पूर्ण भावसे वास करूंगा। कलिकालमें यही तेत्र मेरा एकमात्र वसतिस्थान होगा।" इसके दर्शन करनेसे समस्त दुःख विनाश होते।

'इधर पतिके वनवासी होनेके बाद पार्वती भी उन्हें ढूंढ़नेके लिए बाहर निकली थीं। किन्तु कहीं भी पतिको न पाया। अन्तमें अघाशी नदीके तीर पर पहुंच शिवकी तपस्या करने लगीं। शिवजी पार्वतीको जांचनेके लिए एक भयङ्कर व्याघ्रमूर्ति धारण कर उपस्थित हुए। व्याघ्रको देख पार्वती भयभीत हो गई। भयसे "मां गिरीश रक्ष" ऐसा कहनेमें 'मांगीश' बोल उठीं। इसके बाद शिवजीके साक्षात् होने पर पार्वती बोलीं, "नाथ! आप इस स्थान पर माङ्गीश नामसे प्रतिष्ठित हो वास करें।" शिवजी भी इस पर सहमत हुए। उस स्थान पर माङ्गीश नामसे शिवलिङ्ग और देवी मूर्ति स्थापित हुए। पहले ये दोनों जलके मध्य स्थापित थे। "मांगीश" यह नाम उच्चारण करनेसे समस्त यज्ञका फल होता और इनका दर्शन करनेसे सब दुःख दूर होते हैं।

'थोड़े दिनके बाद कान्यकुब्जनिवासी वात्स्य गोत्रीय देवशर्मा नामक एक ब्राह्मण अपनी स्त्रीके साथ तीर्थयात्रा करते हुए अघाशी-सङ्गममें पहुंचे। वहां ब्राह्मणने देखा कि एक गाय जलमें गोता लगा कुछ काल ठहरनेके बाद बाहर निकली। ब्राह्मणने इसका रहस्य न समझ अधिवासियोंसे इसका कारण पूछा, किन्तु कोई भी कुछ कह न सका। इसके बाद दूसरे दिन ब्राह्मणने गौकी पूंछ पकड़ जलके नीचे जा तेजोमय लिङ्ग और देवीमूर्ति देखे। देवशर्माने भक्तिपूर्वक लिङ्गकी पूजा और आराधना की। शिवजीने दर्शन दे अपना माहात्मा और माङ्गीश नामका कारण कह सुनाया, उन्होंने यह भी कहा कि प्रतिदिन कपिलाधेनु यहां आ मुझे दुग्ध दे स्नान करके लौट जाती हैं, अतएव इसका नाम कपिलतीर्थ होगा। इस तरहसे जलमग्न तीर्थ और लिङ्गमूर्तिका प्रकाश हुआ। इसके दर्शनसे मनोवाञ्छा पूर्ण होती है।

'गोमन्तके दक्षिणमें समुद्रके निकट शङ्खावली नगरी है। इस नगरमें एक सिद्ध ब्राह्मण रहते थे। सिद्ध सर्वदा शिवजीकी उपासना किया करते। राक्षसीरूप-

धारिणी सुमुखी नामकी एक ब्राह्मणकन्या वहां जा कर सबोंको कष्ट दिया करती थी। एक दिन कई एक स्त्रियां आ रही थीं, राक्षसीने उन पर आक्रमण किया। स्त्रियां जोरसे चिल्लाने लगीं। सिद्धपुरुषने ऐसा देख और रक्षाके लिए अपनेको असमर्थ समझ शिवजीका आह्वान किया। दीनवत्सल भगवान्ने आविर्भूत हो एक ही हुङ्कारसे राक्षसोंका विनाश किया; तथा वे लिङ्गरूपसे उस स्थानमें रहने लगे। सिद्धने आराधना की थी इस-लिए उनका नाम सिद्धेश्वर हुआ है। इनके दर्शनसे समस्त पाप विनष्ट होते हैं।' (सह्याद्रि० माङ्गीशमा०)

फिर भी सह्याद्रिखण्डके उत्तरार्द्धमें लिखा है कि "परशुरामने त्रिहोत्रपुरसे भारद्वाज, कौशिक वत्स्य, कौं-डिय, कश्यप, वसिष्ठ, जमदग्नि, विश्वामित्र, गौतम और अत्रिगोत्र इन दश ब्राह्मणोंको ला कर श्राद्धयज्ञादि निर्वाहके लिए उन्हें पञ्चक्रोशी गोमाञ्चलके मध्य स्थापन किया था। इसके सिवा त्रिहोत्रसे उन्होंने माङ्गिरीश, महादेव, महालक्ष्मी, महालसा, शान्तादुर्गा, नागेश और सप्तकोटीश्वर प्रभृति बहुतसे देवता ला गोमन्तमें स्थापित किये थे।" (सह्याद्रिखण्ड उत्तरार्द्ध १म अ० ४८-५४ श्लो०)

गोआके देशीय ईसाईओंको गोआइज कहते हैं। पोर्तगोजोंने गोआ पर अधिकार कर बहुतसे मनुष्योंको ईसाई बनाये थे, उनके वंशधर आजकल गोआइज नामसे मशहूर हैं। ये सफेद जिनके पाजामा और कोट पहनते हैं, सर पर जरीदार टोपी और पनहीं पहनते हैं। स्त्रियां घरमें रंगीन साड़ी और चोली व्यवहार करती, किन्तु गिर्जा जाते समय सफेद साड़ी और ओढ़नी काममें लाती हैं। इनका खान-पान बङ्गालियों और उड़ियोंसे बहुत कुछ मिलता-जुलता है। प्रातः कालमें काञ्जि, मध्याह्न-में भात और सन्ध्याके बाद भात खाते हैं। इनके ईसाई होने पर भी उनमें अब भी वर्णभेदकी प्रथा पाई जाती है। प्रसिद्ध ईसाई-धर्मप्रचारक सेन्ट-जेभियरको ये विशेष भक्ति श्रद्धा करते हैं। पोर्तगोजोंके प्रथम प्रतिष्ठित प्राचीन गोआमें सेन्टजेभियरका समाधिस्थान है। गोआइज लोग वहां जा हाथ जोड़ कर भक्तिभावसे उस सिद्धपुरुषको पूजा कर आते हैं। इसी सेन्टजेभियरके लिए गोआ ईसाईयोंका महापुण्यस्थानके जैसा गण्य है। १८४२, १८७८ और १८९० ई०को उनका मृतदेह प्रदर्शित हुआ था। उस समय पृथ्वीके नाना स्थानोंसे सर्व सम्प्रदायके ईसाई विशेषतः लाखों कैथोलिक और बहुतसे हिन्दू भी उनके पवित्र देहकङ्कालको देखनेके लिये आये थे। बहुतोंका कथन है कि, उनके मृतदेहकी ऐसी महिमा रही कि अनेक असाध्य रोगी भी दर्शन और स्पर्शनसे रोगमुक्त हो गये थे सेन्टजेभियरके शवाधारकी एक चाभी गोआके विशप और दूसरी रोमके पोपके निकट है।

यहां एक तिहाई भूमिमें खेती होती है। कितनी ही जगह कङ्कर पत्थर भरा है। खाद बहुत डालते हैं। चावलकी उपज अधिक है। इसकी दो फसलें होती हैं। गर्मीमें सींचसे काम लिया जाता है। नारियल लगानेकी भी बड़ी चाल है। फलोंमें आम और कटहल प्रधान है। वेलहास कनक्विसताम प्रान्तमें कृषकोंका दशा खेतीकी चीजोंका दाम बढ़ने और अङ्गरेजी राज्यको लोगोंके चले जानेसे सुधरी, किन्तु नोवस कनक्विसतासमें कहते हैं जमीन्दारोंके अत्याचारसे बिगड़ी है।

नोवस कनक्विसतासमें ११६ वर्गमील जङ्गल है। कुमरी (परिवर्तनशील) खेतीसे कीमती पेड़ मारे गए हैं। जङ्गलकी आमदनी कोई २५ हजार रुपया सालाना है। कई जगह लोहा निकलता है। अपने अभ्युदयके समय गोआ पूर्व तथा पश्चिमके मध्य व्यवसायका प्रधान स्थान था। ईरानी खाड़ीके साथ घोड़ोंका कारबार अधिक रहा। किन्तु पोर्तगीज साम्राज्यका अधःपतन होने पर गोआमें व्यवसाय कम पड़ गया। कोई बड़ा काम काज नहीं होता नारियल, सुपारी, आम, तरबूज, कटहल, अन्यान्य फल, मिर्च, गोंद, रस्सीकी चीजें, जलानेकी लकड़ी, चिड़ियों और नमककी खास रफतनी है। चुङ्गीसे सालाना कोई ५ लाख रुपया आता है। मरमा-गोआसे दक्षिण मराठा-रेलवे मिली हुई है। १८ सड़कें चालू है।

पोर्तगालके राजा गोआ, दमन और डिउ प्रान्तके लिए एक गवर्नर जनरल नियुक्त करते हैं। उनका कार्य-काल ५ वर्षमें पूरा होता है। वहां जङ्गीलाटका भी काम करते हैं। उसके चीफ सेक्रेटरी नामक मन्त्रीकी भी नियुक्ति पोर्तगाल-नरेश ही करते हैं। गवर्नर-जनरल

प्रधान अधिकारी तो हैं, परन्तु वह विना पोर्तगाल सरकारकी आज्ञाके नया कर नहीं लगा सकते, वर्तमान कर नहीं उठा सकते, ऋण नहीं ले सकते, नई नियुक्तियां नहीं कर सकते, पुरानी जगहको तोड़ नहीं सकते। नौकरोंकी तनखाहें नहीं घटा सकते, काननके खिलाफ कोई खर्च नहीं कर सकते और न किसी प्रकार अपना प्रान्त छोड़ सकते हैं।

प्रबन्धमें गवर्नर जनरलको एक कौंसिल, जिसमें चीफ सेक्रेटरी, गोआके बड़े पादरी, हाइकोर्टके जज, गोआके दो बड़े फौजी अफसर, सरकारी वकील, इन्सपेक्टर, स्वास्थ्य विभागके अफसर और म्युनिसपालिटीके सभापति रहते हैं, साहाय्य करती है। दूसरी भी पाँच कौंसिलें होती हैं। किन्तु गवर्नर-जनरल इनके प्रस्तावोंको तब तक स्थगित रख सकते हैं, जब तक पोर्तगाल सरकार से उसके बारेमें पूछ न लिया जावे। गोआ प्रान्त पुराने और नये अधिकार दो भागोंमें विभक्त है। पुराने अधिकार या वेलहासमें ३ जिले और ८५ परगने हैं। पुराना अधिकार ७ भागोंमें बंटा हुआ है। प्रत्येक जिलेमें म्युनिसपालटी है। उसकी सालाना आमदनी लगभग १॥ लाख रुपया होती है। जजका इजलास हफ्तेमें दो बार लगता है। उनकी अपील हाइकोर्टमें होती है।

वार्षिक आय प्रायः २० लाख और व्यय भी लगभग उतना ही है। गोआमें टकसाल नहीं है। १८७१ ई०के पहले यहां देशी सेना बहुत थी। किन्तु इसी वर्ष विद्रोह उठ खड़ा होनेसे वह तोड़ दी गयी और पोर्तगालसे केवल युरोपीय फौज भर्ती हो करके आयी। सब मिलाकर कोई २७३० फौज और ३८० पुलिस है। उसमें कुल १ लाख वार्षिक व्यय होता है।

कुछ सालसे गोआमें शिक्षा प्रचार बढ़ गया है। पोर्तगीज भाषाके कितने ही अखबार निकलते जिन्हें देशी लोग लिखते हैं।

२ पोर्त्तगीजके अधिकृत उक्त गोआ राज्यका एक प्रधान नगर। यह अक्षा० १५° ३०' उ० और देशा० ७३° ५७' पू०के मध्य अवस्थित है। इस नामकी तीन नगरी हैं, पहली कदम्बराजाओं द्वारा प्रतिष्ठित प्राचीन गोपकपुरी, जो नदीके किनारे अवस्थित है। मुसलमानोंआक्रमणके पहले यहीं पर राजधानी थी। अभी पूर्व अट्टालिकाओंका चिन्ह मात्र भी नहीं है। २रा पोर्त्तगीजोंकी प्रथम अधिकृत गोआ नगरी, जो अभी पुरातन गोआ नामसे विख्यात है। १४७८ ई०की मुसलमानोंने इस गोआकी स्थापन किया था। यह कदम्बराजधानी गोपकपुरीसे प्रायः ५ मील उत्तरमें अवस्थित है। १५१० ई०को आलवुकार्कने इस नगरको अपने अधिकारमें लाया था और एसियास्थ पर्तगीजोंकी राजधानी रूपमें परिणत हुआ। १६वीं शताब्दीमें यह उन्नतिकी चरम सीमा तक पहुंचा था, और यह भारतका एक प्रसिद्ध वाणिज्यस्थान समझा जाता था इसके बाद पोर्तगीजोंके प्रबल प्रताप खर्व होने पर यह स्थान ईसाई धर्ममंडलीका एक प्रधान अड्डा बन गया। बार बार प्लेग होनेसे यहांके अधिवासियोंने इस नगरको परित्याग कर दिया था। इसके बाद पंजीम् या नये गोआमें राजधानी आने पर पूर्वतन समृद्धिशाली गोआ नगरी एक बारगी श्रीहीन हो गई थी। इस समय प्रधान गिर्जा और ईसाई मठसमूहमें अति सामान्य मनुष्य रहते हैं। परिव्राजक यहांके प्राचीन अस्त्रागार, वोम जिसकी बृहत् गिर्जा, सेण्ट फ्रान्सिसका इठ, सेण्टजेभियरकी समाधि, सेण्ट कईटानोंका कैथिड्रल, सेण्टमणिकामठ प्रभृति देखने आते हैं मणिका मठमें कई एक देशीय और पोर्तगीज कुमारी आजीवन ब्रह्मचारिणी हो ईसाइ की सेवामें दीक्षित हैं, जिधर वे रहतीं है उधर पुरुष जा नहीं सकते। १६०६ ई०को यह मठ बनाया गया था। सेण्टकइटानो कैथिड्रलमें पोर्तगीज शासनकर्त्ताओंका अभिषेक होता और मृत्यु होने पर पोर्तगाल पठानेको पूर्वावधि तक मृतदेह रक्षित रहता है। यहांके गिर्जासमूहमें ईसाई याजकोंका जैसा मूल्यवान् पोषाक है, भारतके किसी दूसरे गिर्जामें वैसा देखा नहीं जाता है। एक एक वस्त्रका मूल्य ४।५ लाख रुपये होगा। उपरोक्त गिर्जाके अलावा सेण्टअगष्टिन, सेण्ट जनडितिउस, और सेण्ट रोजारी भी बड़े बड़े मठ और गिर्जा रहे थे जो अभी भग्न अवस्थामें पड़े हैं। पूर्वोक्त गिर्जाओंको छोड़ प्राचीन गोआमें अब वासगृह नहीं हैं। अभी चारों ओर नारियलका बागान शोभा दे रहा है।

१७५८ ई०को नदीमुख पर पञ्जीम या नये गोआमें राजधानी स्थापित हुई जो ३रा गोआ कहलाता है उक्त वर्षमें येशुट लोग भाग गये, इनके साथ साथ गोआका वाणिज्य जगत् भी अन्धकार हो गया। नये गोआ ही अभी पोर्तगीज-भारतकी राजधानी है। पञ्जीम्, रिवन्दर और पुराना गोआका कुछ अंश निकले हुए नगर ६ मील विस्तृत और माण्डवी नदीके वामकूल पर अवस्थित हैं। पूर्व समय पञ्जीममें सिर्फ वीरजातिके मनुष्य रहते थे, यूसफ आदिल शाहने यहां एक दुर्ग निर्माण किया था। १८४३ ई०से यह दुर्ग पोर्तगीज राजप्रतिनिधिका सुंदर वासभवन हो गया है। इसके अतिरिक्त यहां उच्च अदालत, सेसनकोर्ट, शुल्कग्रहणालय, पुलिस, डाकघर, टेलीग्राफ आफीस, विश्वविद्यालय, पाठागार, साहित्य और विज्ञानसमिति सैनिक अस्पताल, कारागार, बहुतसे बाजार और नमकके गोले हैं। अङ्गरेज गवर्मेण्टने यहां नमक प्रस्तुत करनेका ठीका लिया है। यहां प्राय: पन्द्रह हजार मनुष्य रहते और लगभग चार हजार घर हैं।

गोआलन्द—१ बङ्गालमें फरिदपुर जिलेके अन्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० २३° ३२' तथा २३° ५५' उ० और देशा० ८९° १८' एवं ८९° ४८' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४२८ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय: ३१८२८५ है। इस उपविभागमें ११७८ ग्राम और नगर लगते तथा गोआलन्द, बेलगाछी और पांगसा नामक स्थानमें तीन पुलिस थाना हैं। इस उपविभागके उत्तर और पूर्वमें पद्मा नदी प्रवाहित है। भूमि उर्वरा है। दूसरे सब-डिविजनोंकी अपेक्षा इसकी कुरसी ऊंची हैं, परन्तु जलवायु कुछ भी स्वास्थ्यकर नहीं। मलेरिया ज्वरका प्राबल्य रहता है। यहां ईष्टर्न बङ्गाल ष्टेट रेलवेका पूर्व भाग आ गया है। जहाजोंसे भी लोग यातायात करते हैं।

२ उक्त जिलेकी नदीकूलस्थित प्रधान वाणिज्य स्थान और नगर। यह अक्षा० २३° ५१' उ० और देशा० ८९° ४६' प०में गङ्गा और ब्रह्मपुत्र नदी पर अवस्थित है ५० वर्ष पहले यह सिर्फ मछली बेचनेका स्थान था। उस समय यह एक सामान्य ग्राम रूपसे परिचित रहा डकैत नदी पर आरोहियोंके ऊपर बहुत उत्पात मचाया

[illegible]

वाणिज्यका शीर्षस्थान अधिकार किया है। यहां ईष्टर्न बेङ्गाल ष्टेट रेलवेका अन्तिम ष्टेसन और आसाम जाने आनेके लिये ष्टीमर छोड़नेका अड्डा है। नदीकी दुर्धर्ष गतिसे नगरकी अवस्था क्रमशः बढ़ती जाती है। इस नगरमें रलवे कम्पनीका ष्टेसन, बाजार और दोनों नदीके सङ्गम स्थान पर बालुकामय जमीनके ऊपर अदालत हैं। ष्टीमर या नौकासे रेलगाड़ीमें माल लदनेके लिये शीतकालमें नदीके कूल पर रेलपथ दिया रहता है, किन्तु आषाढ़ और श्रावण मासमें जब नदीकी बाढ़से निकटवर्ती ग्राम जलमग्न हो जाते तब वह रेलपथ उठा लिया जाता है। एक सप्ताह पहले जिस नदीके कूल पर सर्वदा माल ले रेलगाड़ी जाती आती थी, कुछ दिनके बाद वह स्थान समुद्रकी नाईं देख पड़ता है। इस समय नदीके उत्तर अथवा पूर्व अंशकी ओर दृष्टि करनेसे लगभग ३।४ माइल विस्तृत अखण्ड जलराशि ही दीख पड़ती। तूफान आने पर देशीय मांझी नौकाओंको किसी दूरवर्ती खंतेमें रख छोड़ते हैं। समय समय पर ष्टीमर भी कुष्ठिया हाटमें रखे जाते, क्योंकि वहां तुफानसे कोई उपद्रव होनेकी सम्भावना नहीं रहती है। १८७० ई०को गोआलन्दसे कुष्ठिया तक रेलपथ खोला गया तथा नदीकूल पर बाँध दे कर ष्टेसनकी रक्षा की गई है। यह बाँध तैयार करनेमें लगभग १३०००००) रु० लगे थे, किन्तु उक्त वर्षके अगस्त मासमें नदीमें इस तरहकी बाढ़ आई कि उस बांधका सुदृढ़ स्तम्भ, रेल ष्टेसन, और निकटस्थ ग्रामके बहुतसे अंश नष्ट हो गये थे।

नदीस्थ नौका या ष्टीमरसे रेलगाड़ी द्वारा माल बोझ कर लाना ही गोआलन्दको व्यवसाय है। आसाममें होनेवाले द्रव्योंको छोड़ पार्श्वस्थ जिला समूहकी उत्पन्न फसल उक्त रेल द्वारा कलकत्ता भेजी जाती है। गोआलन्दसे कई एक ष्टीमर आसाम, सिराजगञ्ज, ढाका और काछाड़ आते जाते हैं।

गोइंजी (देश०) छिलका रहित एक प्रकारकी मछली जिसका मुख और पूछ एक ही तरहके होते हैं।

गोइंठा (हिं०) गोइंठा देखो।

गोइंठौरा (हिं० पु०) गोइंठा रखनेका स्थान वह जगह

[illegible]

गोइंड़ (हिं०) गोंड़ देखो।

गोइंदा (फा० पु०) गुप्तचर, गुप्त भेदिया, जो गुप्तरूपसे गोपनीय संवाद संग्रह करता है।

गोइनका (देश०) मारवाड़ी वैश्योंकी एक उपाधि।

गोइयां (हिं० स्त्री०) साथी, सहचर, साथमें रहनेवाला।

गोइयार (देश०) एक छोटा पक्षी जिसका वर्ण खाकी रंगका होता है।

गोइलवाला (हिं० पु०) वैश्योंकी एक उपाधि।

गोउ (हिं० वि०) चुरानेवाला, हरण करनेवाला, छिपानेवाला।

गोओपदेश (सं० त्रि०) गाव ओपशाः समीपवर्तिन्य. यस्य, बहुव्री०। जिसके निकट गाय सोई पड़ी हो।

गोकण्ट (सं० पु०) गो पृथिव्याः कण्ट इव। गोक्षुरवृक्ष, गोखरूका पेड़।

गोकण्टक (सं० पु०) गोः पृथिव्याः कण्टक इव। १ गोक्षुर वृक्ष, गोखरूका पेड़। इसका पर्याय—गोक्षुर, गोक्षुरक, त्रिकण्ट स्वादुकण्ट, गोकण्ट, श्वदंष्ट्रा और इक्षुगन्धिका है। २ गो पादके खुर, गाय पैरका खुर ३ गाय या बैल जानेका रास्ता। ४ गो खुरका चिह्नित स्थान। ५ विकण्टक वृक्ष, एक तरहका पेड़। ६ माष तैल।

गोकण्टी (सं० स्त्री०) गोपघण्टा।

गोकन्या (सं० स्त्री०) कामधेनु।

गोकर (सं० पु०) सूर्य, भानु, रवि।

गोकर्ण (सं० पु०) गौर्नेत्रं कर्णं यस्य, बहुव्री०। १ सर्प, सांप। गोरिव कर्णं यस्य, बहुव्री०। २ अश्वतर, खच्चर। ३ कुलचर, मृगविशेष, गोहरिण।

इसके मांसका गुण - मधुर, स्निग्ध, मृदु, कफनाशक और रक्तपित्तनाशक है। ४ शिवजीके एक गणका नाम। ५ परिमाणविशेष, बालिश्त, बित्ता। ६ काशीस्थ एक शिवलिङ्ग। ७ काश्मीर देशके एक प्राचीन राजा, गोपादित्यके पुत्र।

८ बम्बई प्रान्तके उत्तर कनाड़ा जिलेमें कुमता तालुकका नगर। यह अक्षा० १४° ३२' उ० और देशा० ७४° १८' पू०में कुमता नगरसे १०मील उत्तर पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ४८३४ है। यह हिन्दुओंका एक पवित्र तीर्थस्थान है। समस्त भारतवर्षके साधु देवदर्शनको आते हैं। प्रति वर्ष फरवरी मास मेला लगता है। रामायण और महाभारत दोनों ग्रन्थोंमें गोकर्णका उल्लेख है। इस पुण्यक्षेत्रका उल्लेख कूर्म, गरुड़, नारगखण्ड प्रभृति पुराण तथा वृहन्नीलतन्त्रमें किया गया है। स्कन्दपुराणीय तापीखण्डमें और नारदपुराणमें (उप० ७४ अ०) इसका माहात्म्य सविस्तर वर्णित है। भागवतके मतसे इस तीर्थमें सर्वदासे शिव अवस्थान करते हैं। हिन्दू तीर्थयात्रीगण यहांके गोकर्णेश्वर और महाबलेश्वर शिवलिङ्गके दर्शनके लिए आया करते हैं। रावण तथा कुंभकर्णने इसी स्थान पर तप किया था। १८७० ई०को म्युनिसपालिटी हुई। यहां महाबलेश्वरका मन्दिर, २० क्षुद्र मठ, ३० लिङ्ग और ३० नहानेका घाट हैं। स्मार्त और लिङ्गायत उनको श्रद्धा भक्ति किया करते हैं।

९ धुंधकारीके एक भ्राताका नाम जिससे भागवत सुन कर धुंधकारी उद्धार हो गया था। १० एक मुनिका नाम। ११ गायका कान। १२ नृत्यमें एक प्रकारका हस्तक। १३ नीलग्राम। १४ अश्वगन्धा (त्रि०) १५ जिसके गौके समान लम्बे कान हों।

गोकर्णा (सं० स्त्री०) अश्वगन्धा।

गोकर्णी (सं० स्त्री०) गोः कर्ण इव पत्रमस्याः बहुव्री०। ङीप्। १ मुरहरी, चुरनहार। २ मूर्वालता। मूर्वा देखो। ३ वाजिवल्लणभेद। ४ तृणविशेष।

गोकर्णेश्वर—१ गोकर्ण तीर्थस्थ एक शिवलिङ्ग। तापीखण्ड और नारदपुराणमें इसका माहात्म्य लिखा है। २ नेपालस्थ एक पवित्र लिङ्ग। स्वयम्भुपुराणमें इसका प्रसङ्ग है।

गोका (सं० स्त्री०) गौरिव गो स्वार्थे कन् टाप्। गोक, गो, गाय।

गोकाक—बम्बई प्रान्तके बेलगांव जिलेका पूर्व तालुक। यह अक्षा० १५° ५७' एवं १६° ३०' उ० और देशा० ७४° ३८' तथा ७५° १८' पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ६७१ वर्गमील है। इसमें एक नगर और ११३ ग्राम बसे हैं। लोकसंख्या प्राय: ११६१२७ है। मालगुजारी १॥ लाख और सेस १३०००) रु० पड़ती है। आबहवा बहुत खराब है। जाड़ेमें मलेरिया बुखार बढ़ता और गर्मीमें जो घबराने लगता है। बलुवे पत्थरके पहाड़ोंसे शीत-

कालको पानी वरम जाता और यहां दुर्भिक्ष पड़ने नहीं पाता। गोकाक नहरसे २८ वर्ग एकर जमीन सिंचती है। घाटप्रभा नदी पर गोकाकका सुप्रसिद्ध निर्झर है।

गोकाक—बम्बई प्रान्तके बेलगांव जिलेमें गोकाक तालुकका सदर। यह अक्षा० १६ १० उ० और देशा० ७४ ४८ पू०में दक्षिण-मराठा-रेलवेके गोकाक रोड ष्टेशनसे ८ मील दूर पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ८८६० है। पहले यहां रंगाई और बुनाईका काम बड़ा होता था। लकड़ी और मट्टीके खिलौने भी खूब बनाये जाते थे। १८५३ ई०को मुनिसपालिटी हुई। नगरके पश्चात् भागमें एक निर्जन पर्वत शिखर पर दुर्ग है। कहा जाता है कि उसको बीजापुरके आदिलशाही सुलतानोंने बनाया था। १६८५ ई०को यह एक सरकारका सदर रहा। १७१७ और १७५४ ई०को सावनूरके नवाबोंने गोकाक अधिकार करके मसजिद गंजो खाना निर्माण किया। १८३६ ई०को गोविन्दराव पटवर्धनके मरने पर यह अङ्गरेजोंके हाथ लगा

नगरसे ३॥ मील दूर गोकाक झरना है। यहां घाटप्रभा नदीका पानी एक चटान पर १७० फीट नीचेको गिरता है। घाटीका शोभा विचित्र है। वर्षा ऋतुमें उसको देखते ही बनता है। नदीके दक्षिण तट पर रूईका पुतली घर है। १८८६—१८०२ ई०को गोकाक बांध १७ लाखकी लागतसे तयार हुआ था।

गोकाम (सं० त्रि०) गां कामयते गो-कामि-अण्। गो इच्छुक, जो गाय लेनेकी इच्छा करे।

गोकामुख (सं० पु०) भारतवर्षस्थ एक पर्वत, हिन्दुस्तानके एक पहाड़का नाम।

गोकारु—उत्तर कनाड़ाका एक नगर। यह गोकर्णतीर्थके आस पास अवस्थित है। यहां तीर्थयात्री आकर ठहरते हैं, विशेष कर माघ महीनेके मेलेमें प्रायः आठ दश हजार संन्यासी साधु और तीर्थयात्री यहां टिकते हैं।

गोकिराटिका (सं० स्त्री०) गां वाचं किरति गो-कृ-क तथा सती अटति अट-गवुल्-टाप्। सारिकापक्षी, मैना।

गोकिराटी (सं० स्त्री०) गोकिरा वाचं रटन्ती सती अटति अट अच् गौरादित्वात् ङीष्। सारिका पक्षी, मैना।

गोकिल (सं० पु०) गोः पृथिव्याः कील इव। १ मूसल, २ लाङ्गल, हल।

गोकील (सं० पु०) गोः पृथिव्याः कील इव। गोकिल देखो।

गोकंट (त्रि० पु०) भारतकी दक्षिणकी नदियोंमें पायी जानेवाली एक तरहकी मछली।

गोकुञ्जर (सं० पु०) खूब मोटा ताजा और बलिष्ठ बैल।

गोकुल (सं० क्ली०) गोः कुलं, ६-तत्। १ गोसमूह, झुण्ड। २ गोष्ठ, गौओंके रहनेकी जगह, गोशाला, गुहाल। ३ मथुरासे दक्षिण कोण पर और यमुनाके वाम तीरवर्त्ती एक पुण्यस्थान। गोपराज नन्द इसी ग्राममें रहते थे। कृष्ण और बलरामने अपनी बाल्यावस्था इसी स्थानपर बिताई थी। पूतनावध, शकटभञ्जन प्रभृति अलौकिक कार्यका अनुष्ठान भी यहीं पर हुआ था। कृष्णलीलाक्षेत्र समझ कर गोकुल वैष्णवोंका एक तीर्थ है। यहां कई एक देव मन्दिर भी हैं। शिवशतनाम पाठ करनेसे जाना जाता है कि गोकुलमें गोपीश्वर नामक एक शिव विद्यमान हैं।

गोकुल—एक जैन ग्रन्थकार। इनके ग्रन्थोंमें 'सुकुमालचरित्र भाषा' नामक सिर्फ एक ही ग्रन्थ मिलता है।

गोकुलचन्द्र—१ आह्निकचन्द्रिका नामक संस्कृत ग्रन्थरचयिता। २ भगवद्गीतार्थसारके प्रणेता। ३ रसिकचन्द्रिका नामक गोवर्द्धनकृत आर्यासप्तशतीका एक टीकाकार।

हिन्दीके एक भगहर कवि। इन्होंने बहुतसी कवितायें रची हैं, जिनमेंसे एक नीचे दी जाती है :—

ए मन मेरो लागोर श्याम सुन्दरवा सों।
गोकुलचन्द मनोहर मूरत चित चटकों बाही लङ्गरवा सों॥

गोकुलजित् (सं त्रि०) गोकुलं जयति जि-क्विप्, तुगागमश्च। जिसने गोकुल जय किया है।

गोकुलजित्—एक स्मार्त पण्डित। इनके पिताका नाम हीरजित् था। इन्होंने इलदुर्गाधिपति कल्याणवर्माके आदेशसे १६३२ ई०को संक्षिप्ततिथिनिर्णयसार नामक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किया था।

गोकुलजी सम्पतिराम जाला—सुराष्ट्रके एक विख्यात वेदान्तिक एवं पारस्य संस्कृत और अङ्गरेजी भाषावित् पण्डित। आप एक समय जूनागढ़के प्रधान सचिव थे। लड़कपनसे ही आपको वेदान्तमें अनुराग उत्पन्न हुआ। एक समय जब जूनागढ़में रामबावा नामक एक वेदान्तिक

संन्यासी आये थे, तब आपने उनके मुखसे वेदान्तका विमल उपदेश सुनकर उनका शिष्यत्व स्वीकार किया। तत्पश्चात् आपने परमहंस सच्चिदानन्द स्वामीके निकट वेदान्तका गूढ़ तात्पर्य मालूम किया। इसके थोड़े समयके बाद आपने उच्च पदगौरव और विषयसम्पत्ति परित्याग कर वानप्रस्थ अवलम्बन किया। उन्नीसवीं शताब्दीके शेष भागमें आपने ईश्वरके ध्यानमें ही अपना जीवन उत्सर्ग किया।

गोकुलदेव—तीर्थकल्पलता नामक संस्कृत ज्योतिःशास्त्रकार।

गोकुलनाथ—एक विख्यात पण्डित। इन्होंने सुललित संस्कृत भाषामें करणप्रबोध, प्रमाणप्रबोध, भक्तिरसामृतसिन्धु, शाण्डिल्यसूत्रकी भक्तिसिद्धान्तविवृति नामक टीका प्रणयन की है

२ जयविलास नामका संस्कृत ज्योतिःशास्त्रकार। ३ मिथिलाके एक प्रधान पण्डित। यह मैथिल महामहोपाध्याय नामसे प्रसिद्ध हैं। यों तो इन्होंने बहुतसे संस्कृत ग्रन्थ रचे हैं। परन्तु उनमें निम्नलिखित ग्रन्थ ही प्रधान हैं—द्वैतनिर्णयकी कादम्बरी नाम्नी टीका, माससीमांसा, रसमहार्णव, शिवशतकस्तोत्र, रश्मिचक्रतत्त्व, चिन्तामणिटीका, तत्त्वचिन्तामणिदीधितिद्योत, तर्कतत्त्वनिरूपण, न्यायसिद्धान्ततत्त्व और पदवाक्यरत्नाकर।

४ काशीके रहनेवाले एक विख्यात हिन्दी कवि। ये कवि रघुनाथके पुत्र थे। पञ्चक्रोशीके अन्तर्गत चौरागाँवमें इनका जन्म हुआ था। काशीराज चेतसिंह कविके प्रतिपालक थे। प्रतिपालकके इतिहास अवलम्बन कर इन्होंने चेतचन्द्रिका नामक ग्रन्थ, गोविन्दसुखदविहार और हिन्दी भाषामें महाभारत तथा हरिवंशका अनुवाद रचना किया।

गोकुलप्रसाद—एक हिन्दी कवि। ये कायस्थ जातिके थे। गोंडा जिलेके अन्तर्गत बलरामपुरमें ये रहते थे। इन्होंने राजा दिग्विजयसिंहसे सम्मानार्थ १८६८ ई०में दिग्विजयभूषणकी रचना की थी, जिसमें प्रायः १९२ हिन्दी कवियोंकी कविताओंका संग्रह हैं।

गोकुलबिहारी—हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि। इनका जन्म १६०१ ई०में हुआ था।

गोकुलभट्ट—हरिरायके वेदान्तकारिका ग्रन्थका एक टीकाकार।

गोकुलस्थ (सं० त्रि०) गोकुले तिष्ठति गोकुल-स्था-क। १ गोकुलवासी जो गोकुल ग्राममें रहता हो। २ कृष्ण उपासक सम्प्रदायविशेष। ३ तैलङ्ग ब्राह्मणोंका एक भेद।

गोकुलाष्टमी (सं० स्त्री०) गवां कुलं पूजनीयं यस्यां, बहुव्री०। तादृशी अष्टमी, कर्मधा० पुंवद्भावश्च। दाक्षिणात्यमें श्रीकृष्णकी जन्माष्टमी इसी नामसे प्रसिद्ध है।

जन्माष्टमी देखो।

गोकुलिक (सं० त्रि०) गोर्नतस्य कुलमत्र गोकुल ठन्। १ कंकर, गंचा, भेंगा। गविपङ्कस्थगव्यां कुलिकः जड़ इव पङ्कस्थ गव्युपेक्षक, पङ्कमें गिरी हुई गायकी उपेक्षा करनेवाला।

गोकुलेश—हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि। इनकी बनाई हुई बहुतसी अच्छी अच्छी कवितायें हैं जिनमेंसे कुछ नीचे दिये जाते हैं—

आगे तू जो आज मधुवनकी गलियन छत ब्रजराज कुंवर खेले होरी।
गुलाल अबीर रङ्ग कुङ्कुमा भाजन भरे भरी है झोरी॥
सङ्ग ब्रजलाल ग्वाल अरु बालक करत कोलाहल अतिशय भोरी।
यह छबि जो सहोसकि जिय गोकुलेश प्रिय रसिक किशोरी॥
रङ्ग न रङ्ग रङ्गे हैं बिहारीलाल गोवर्द्धनधारी।
ग्वालबाल सब संग सखा लिए और सकल ब्रजनारी॥
बाजत बीणा मृदङ्ग चङ्ग डफ झांझनकी झनकारी।
गोकुलेश प्रभु होरी खेले गावत दे दे तारी॥

गोकुलोद्भवा (सं० स्त्री०) गोकुलं उद्भवं यस्याः, बहुव्री०। दुर्गा, महामाया।

गोकृत (सं० क्ली०) गोभिः कृतं, ३-तत्। १ गोमय, गोबर। (त्रि०) २ गोकर्तृक अनुष्ठित।

गोकोस (हिं० पु०) १ उतनी दूरी जहाँ तक गौके बोलनेका शब्द सुन पड़े। २ छोटा कोस, हलका कोस।

गोक्ष (सं० पु०) जोंक नामक कोड़ा।

गोक्षीर (सं० क्ली०) गवां क्षीरं, ६-तत्। गोदुग्ध, गायका दुध।

गोक्षीरज (सं० क्ली०) गोक्षीरात् जायते जन-ड। १ घृत, घी। २ तवक्षीर, तसमै, खीर।

गोक्षुर (सं० पु०) गोः पृथिव्याः क्षुर-इव। १ गोखरू नामक क्षुप या उसका फल (Tribulus launginosus)

इसका संस्कृत पर्याय—त्रिकण्ट, स्थलशृङ्गाट, गोकण्टक, त्रिपुट, कण्टकफल, क्षुर, गोक्षुरक, इक्षुगन्धा, स्वदंष्ट्रा, स्वादुकण्टक, गोकण्ट, वनशृङ्गाटक, क्षुरक, भक्ष्यकण्ट, इक्षुगन्धिका, क्षुरङ्ग, स्वदंष्ट्रका, कण्टकी, भद्रकण्ट, व्यालदंष्ट्र, षड्ङ्ग, गोखुर, त्रिकट त्रिक और इक्षुर है। गोखरू देखनेमें चना या बूंटके सदृश होता है।

इसका गुण—शीतल, बलकर, मधुर, बृंहण, कृच्छ्र, अश्मरी, मोह और दाहनाशक एवं रसायन है। भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—स्वादु, वस्तिशोधक, दीपन, पुष्टिकर, श्वासकाश, अर्श और व्रणनाशक है। राजवल्लभके मतमें गोक्षुरका गुण—वायुनाशक एवं वृष्य है। इसके शाकका गुण—तिक्त, वृष्य और स्रोतशोधक है। गोक्षुरके दो भेद हैं—क्षुद्राकार और बृहत्। इन दोनोंमें बृहत् गोक्षुर ही प्रशस्त है। दुर्भिक्षके समय पश्चिमाञ्चलके मनुष्य गोक्षुरके बीजको चूर्ण कर जीवन पालते हैं।

२ एक तरहका वृक्ष। (Ruellia longifolia) ३ गोखरूके फलके आकारके धातुके बने हुए गोल कंटीले टुकड़े। मस्त हाथियोंको पकड़नेके लिए ये टुकड़े उनके रास्तेमें फैला दिये जाते हैं। चलते समय जब ये उनके पैरोंमें चुभ जाते तो ये चल नहीं सकते। ४ एक प्रकार का साज जो गोटे और बादलेके तारोंसे गूथ कर बनाया जाता है। ५ एक प्रकारका आभूषण जो कड़ेके आकारका होता है। यह हाथों और पैरोंमें पहना जाता है। ६ काँटा गड़नेके कारण तलवे हथेली आदिमें पड़ा हुआ घट्टा।

गोक्षुरक (सं० पु०) गोक्षुर स्वार्थे कन्। गोक्षुर देखो।

गोक्षुरादिगण (सं० पु०) गोक्षुर आदिर्यस्य, बहुव्री० ततः कर्मधा०। भैषज्यशास्त्रोक्त एक गण। गोक्षुर, क्षुरक, व्याघ्री, सिंहपुच्छी और कुशिम्बिका, इन सबको गोक्षुरादिगण कहते हैं। इसका गुण वातश्लेष्म नाशक है।

गोक्षुरि (सं० पु०-स्त्री०) गोक्षुर देखो।

गोक्षुरीबीज (सं० क्ली०) गोक्षुर्या बीजं, ६ तत्। गोक्षुरका बीज। इसका गुण-शीतल, मूत्रवृद्धिकर, शोथनाशक वृष्य, आयुष्कर, शुक्र, मेह और कृच्छ्रनाशक है।

(भावप्रकाश)

गोक्ष्वेडक (सं० पु०-स्त्री०) एक प्रकारका पक्षी। मयूर देखो।

गोखग (हिं० पु०) थलचर, पशु, जानवर।

गोखले—दक्षिण प्रान्तके कोंकनस्थ ब्राह्मण सम्प्रदायकी एक उपाधि। ये महाराष्ट्र जातिके अन्तर्गत हैं और पूना, सतारा और कोल्हापुरमें रहते हैं। पूनेमें इस श्रेणीके ब्राह्मणोंकी बड़ी प्रतिष्ठा है। इस जातिमें ऐसी प्रथा है कि हरएक मनुष्यके नामके साथ उसके पिताका नाम भी साथमें ही बोला जाता है। इस जातिमें बड़े बड़े भारतके भूषण अनेकों भद्र पुरुष हो गये हैं जिनमेंसे सुप्रसिद्ध लोकमान्य प्रातःस्मरणीय महात्मा गोपाल कृष्ण गोखलेको कौन नहीं जानता।

गोखरू (हिं०) गोक्षुर देखो।

गोखा (सं० स्त्री०) गां भूमिं खनत्यनया खन-ड। १ नख, नाखून।

गोखा (हिं० पु०) १ मोखा, झरोखा।

गोखुर (सं० पु०) खुरति विलिखति खुर-अच्। १ अस्त्रविशेष। गोः पृथिव्याः खुर इव। २ गोक्षुरवृक्ष, गोखरूका पेड़। (क्ली०) गवां खुरं, ६-तत्। ३ गौके खुर।

गोखुरा—एक तरहका तीव्र विषधर सर्प, करैत साँप। इसका फन गौके खुरका जैसा होता है, इसी लिये इसका नाम गोखुरा पड़ा। सर्प देखो।

गोखुरि (सं० पु०) गवां खुरैरिव। गोक्षुर देखो।

गोगा (हिं० पु०) छोटा काँटा, मेख।

गोगा चौहान—१ एक सिद्ध वीरपुरुष। हिमालयसे नर्मदा तक क्या हिन्दू क्या मुसलमान सबके सब इन महापुरुषकी भक्ति श्रद्धा किया करते हैं। हिन्दू इन्हें गोगा चौहान या गोगा वीर तथा मुसलमान "गोगापीर" वा "जाहिरपीर" कहा करते हैं। हिन्दुओंका कथन है कि घघरा नदीके तट पर धर्मरक्षाके लिये इन्होंने मुसलमानोंके विरुद्ध अस्त्रधारण किया था। इसीलिये ये पूजनीय हैं। मुसलमान कहते हैं कि गोगा इस्लाम् धर्ममें दीक्षित होनेके कारण उन लोगोंके सम्मानार्ह थे।

प्रवाद ऐसा है—बागड़ देशसे राजा वत्सराज चौहानने तोमरराज जयमलकी दो कन्याओंसे विवाह किया था। उन कन्याओंके नाम वाचल और काचल थे। वाचलका दूसरा नाम शीलवती था। यमुना तीरस्थ शिर्शावा नगरमें दोनों कन्याओंका जन्म हुआ था। बहुत

दिन तक उनके कोई सन्तान न हुई। संयोगवश गुरु गोरक्षनाथ बागड़देशको आ राजोद्यानमें अवस्थान करने लगे। बहुत दिनों तक बाचल रानीने गोरक्षनाथकी सेवा शुश्रुषा की। एक दिन काचल अपनी बहिनका पोषाक पहन गोरक्षनाथके निकट आकर आशीर्वाद प्रार्थना करने लगी। महापुरुषने उसे दो जौ खानेके लिए देकर कहा कि इसीसे दो पुत्र उत्पन्न होंगे। अन्तको बाचल गुरुके सामने उपस्थित हुई। अपनी बहनकी चातुरी तथा अपना दुःख जना कर रोने लगी। अनेक अनुनय-विनयके अनन्तर गोरक्षनाथने उसे एक गुगुल दे कर कहा—तुम्हारी बहनके पुत्रके दास होंगे। यथा समय शीलवती रानीको गर्भ रहा। काचलने उसके गर्भ को नष्ट करनेकी बहुत चेष्टायें कीं परन्तु सब निष्फल गईं। ८ मास गर्भधारण कर बाचलने भाद्रमासकी नवमी तिथिमें एक पुत्र रत्न प्रसव किया। गुगुलसे जन्म होनेके कारण पुत्र का नाम गुगा या गोगा पड़ा। यथाकाल गोगा बागड़देशके राजा हुए। काचलके दो पुत्र अर्जुन और सर्जनने दिल्लीके राजाकी सहायता या बागड़ देश पर अधिकार करनेकी चेष्टा की। किन्तु गोगाने दोनोंको परास्त तथा निहत कर उनके छिन्न मुण्डको अपनी माताके पास भिजवा दिया। रानीबाचल अपने पुत्रके दुर्व्यवहार पर अत्यन्त सन्तप्त और क्रुद्ध हो उठीं और शोक प्रगट कर बोलीं—जिस स्थान मेरी बहिनके लड़के गये उसी स्थान पर मेरे पुत्र भी जांय। माताकी इस वचनसे गोगाके हृदयमें एक भारी आघात पहुंचा, और तब प्रार्थना कर पृथ्वीसे बोले "माता वसुन्धरे! आप विदीर्ण हो जावें, और मैं आपकी गोदमें शयन करूं, इस पाप मुखको अब किसीसे दिखानेकी इच्छा नहीं करता।" उनकी प्रार्थना पर पृथ्वी विदीर्ण हो गई और वे जवादिया नामक घोड़े पर चढ़ भूगर्भमें सदाके लिये छिप रहे।

अवशेषको वे एक दिन जवादिया घोड़े पर चढ़ पर्वत को छेदते हुए बाहर निकल उठे। उनकी वह अश्वारोही प्रस्तरमय भीममूर्त्ति राजस्थानके मन्दर राजधानीमें आज तक भी रक्षित है।

मुसलमानोंका ख्याल है कि गोगापीरकी प्रार्थनासे पहले पृथ्वी नहीं फटी, किन्तु जब वे मक्का जा रतन-हाजीका शिष्यत्व ग्रहण कर लौटे तब वसुन्धराने उन्हें ग्रहण किया था। गोगाकी स्त्रीका नाम शिरियाल था। प्रति रात्रिको जाहिरपीर अपनी स्त्रीसे मुलाकात करते तथा उसे भांति भांतिके अलङ्कारसे भूषित करते थे।

पश्चिमाञ्चलकी रमणियां गोगाके जन्म-तिथि उत्सवमें उनका स्तुतिगान किया करती हैं। किसी किसीके मतसे गोगा दिल्लीपति पृथ्विराजके सम सामयिक थे राजस्थानके मरुवासी गोगावत् नामक राजपूत उनके वंशधर हैं। इसके अतिरिक्त इसलामधर्मावलम्बी बहुतसे चौहान अपनेको गोगा वंशीय बतलाते हैं। चहिल देखो।

२ माचाड़ाके एक राजा, आसलदेवके पुत्र। फिरोज शाहके राजत्व कालमें १३०४ ई०का उत्कीर्ण इनका एक शिलालेख पाया जाता है। (Cunnigham's Ach. Sur. Report, Uol VI Plat IIIX.)

गोगापीर (हिं० पु०) एक पीर वा साधु। राजपुताना तथा पञ्जाब देशोंकी नीच जातिके हिन्दु और मुसलमान इनकी पूजा करते हैं। गोगा चौहान् देखो।

गोगृष्टि (सं० स्त्री०) गोश्चासौ गृष्टिश्चेति कर्मधा०। एक बार प्रसूता गाभी, वह गाय जिसने सिर्फ एक बार बच्चा दिया हो।

गोगोयुग (सं० क्ली०) गोर्द्वित्वं गो द्वित्वार्थे गो-युगच् प्रत्ययः। गोका द्वित्व संख्या। गाय या बैलकी जोड़ी। (मुग्धबोध)

गोगूंड—राजपूतानास्थ उदयपुरके गोगूंड राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४° ४६' उ० और देशा० ७३° ३२' पू०में अरावली पर्वत पर समुद्रपृष्ठसे २७५७ फुट ऊंचे अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः २४६३ है। इस राज्यमें ७५ गांव आबाद हैं। राजा झाला राजपूत वंशीय सरदार हैं। राज्यका आय प्रायः २४०००) रु० है। २०४०) रु० कर उदयपुर दरबारको दिया जाता है।

गोगोष्ठ (सं० क्ली०) गोः स्थानं गोस्थानार्थे गोष्ठच् प्रत्ययः। गोस्थान, गाय रहनेका स्थान।

गोग्रन्थि (सं० पु०) गोभ्यो जातो ग्रन्थिरिव। १ करीष, शुष्क गोमय, सूखा गोबर। गोग्रन्थियंत्र, बहुव्री०। २ गोष्ठ, गौ रहनेकी जगह, गोशाला। ३ गोजिह्विका, एक तरहकी औषध।

गोग्रास (सं० पु०) सिद्ध अन्न जो खानेके समय या श्राद्धादिकके आरम्भमें गौके लिये अलग रख दिया जाता है।

गोघरी (हिं० स्त्री०) भड़ौंच और बरोदामें होनेवाली एक प्रकारकी कपास।

गोघा—बम्बई प्रान्तके अहमदाबाद जिलेमें धनधुक तालुकका नगर। यह अक्षा० २१° ४१´ उ० और देशा० ७२° १७´ पू०में खम्भातकी खाड़ी पर पड़ता है। जनसंख्या कोई ४७८८ है। नगरसे पौन मील दूर एक अच्छा बन्दर है। वल्भी राजाओंके समय सम्भवतः उसे गुण्डीगर कहते थे। १३२१ ई०में फ्रियर जोर डानसने उसको Caga जैसा लिखा। गोघाके लोग भारतवर्षमें सबसे अच्छे मल्लाह समझे जाते हैं। यहां जहाज रसद पानी ले और मरम्मत करा सकते हैं। मुंहानेके दक्षिण जो आलोकगृह बना, १० मील तक देख पड़ता है। कुछ वर्षसे इसका काम काज बिगड़ गया है। अमेरिकामें जब गृहयुद्ध चलता, यह काठियावाड़में रूईका खास बाजार था। नगरसे उत्तर और दक्षिण नमकके झील हैं। १८५५ ई०को मुनिसपालिटो हुई।

गोघात (सं० पु०) गां हन्ति गो-हन् अण्। गोहन्ता, गोहत्या।

गोघातक (सं० पु०) गवां घातकः, ६-तत्। गोहत्याकारी, गोहिंसक, गायको मारनेवाला, बूचर, कसाई।

गोघातिन् (सं० त्रि०) गां हन्ति गो-हन्-णिनि।

गोघातक देखो।

गोघृत (सं० क्ली०) गोः पृथिव्याः घृतमिव शस्यपोषकत्वात्। १ वृष्टिजल, वर्षाका पानी। गोघृतं, ६-तत्। २ गव्यघृत, गौका घी। घृत देखो।

गोघ्न (सं० पु०) १ गौको मारनेवाला, गौका वध करनेवाला। २ अतिथि, मेहमान, पाहुना। प्राचीन समयमें किसी अतिथिके आने पर मधुपर्कके लिए गोहत्या करनेकी प्रथा थी, इसीसे अतिथिका नाम गोघ्न पड़ा है।

गोङ्गधिकारी—कनाड़ा जिलेके मैलापुर और भिद्दापुरमें रहनेवाली एक नीच जाति। ये शहर और ग्रामोंमें हिन्दुओंके साथ रहते हैं। कहा जाता है कि, ये महिसुरसे आकर उक्त देशोंमें बस गये हैं। इनकी मातृभाषा कनाड़ी है। ये वीरभद्रको अपना कुलदेवता मानते हैं। इनकी दो शाखायें हैं—टस्मोसक और मुलजनस। एक दूसरेमें आदान प्रदान चलता है। ये नाटे और मजबूत होते, इनकी नाक चिपटी होती और शरीरका रंग काला होता है। इनका प्रधान भोजन चावल है। ये शराब नहीं पीते लेकिन मांस मछली इत्यादि खाते हैं। इनके कपड़े लत्ते बहुत मैले रहते हैं। ये सच्चे, ईमनदार और शान्त स्वभावके होते हैं। ये ब्राह्मणोंको अपना पुरोहित मानते हैं। नीच जातिके होने पर भी ये कट्टर धार्मिक होते हैं। ये अपने घरमें कुलदेवताकी मूर्त्ति स्थापन करते और प्रतिदिन भक्तिपूर्वक उनकी पूजा किया करते हैं। मृतदेहको ये पृथ्वीमें गाड़ देते हैं और तेरह दिनों तक अशौच मानते हैं।

गोचना (हिं० क्रि०) रोकना छंकना, किसी चीजकी चाल रोकना। (पु०) चना मिश्रित गेहूं।

गोचनी (हिं० स्त्री०) गोचना देखो।

गोचन्दन (सं० क्ली०) गोशीर्षाख्यं चन्दनं, मध्यपदलो०। सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका चन्दन।

(सुश्रुत चिकित्सा० १८ अ०)

गोचन्दना (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी जोंक। सुश्रुतका मत है कि जिस जोंकका अधोभाग या पुच्छदेश गोवृषणकी नाईं दो भागोंमें विभक्त एवं मुख बहुत छोटा हो वही गोचन्दना कहलाता है। इसके काटनेसे मूर्च्छा, ज्वर, दाह वमन, मत्तता या मनकी विकृति और शरीरको अवसन्नता होती हैं, और काटाहुआ स्थान सूज आता है। ऐसी अवस्थामें 'अगद' नामक औषधका पीना, दंशनस्थान पर लेप देना और उसका नस लेना उपयोगी है।

गोचर (सं० पु०) गाव इन्द्रियाणि चरन्त्यस्मिन् गो-चर-अच्। गोचर सञ्चर वह व्रज व्यज आपणनिगमाश्च। पा ३।३।११८। १ इन्द्रिय जिसे ग्रहण करता है, विषय, रूपरस आदि।

"भ्रान्ति गोचरं गताः।" (भाषा-दि०)

२ ज्ञानविषय "अदसत्नम ग्रयगोचरादरी।" (नैषध०)

(त्रि०) गवि भूमौ चरति गो-चर कर्त्तरि अच्। ३ भूचर, जमीन पर रहनेवाला।

(पु०) गावश्चरन्त्यस्मिन् पूर्ववत्साधु। ४ गोप्रचारका स्थान, गोष्ठ, चरागाह, चरो।

"उपारताः पश्चिमरात्रिगोचरादपारयन्तः पतितुं जवेन गाम् ॥"
(किरात० ४।१०)

५ गन्तव्य देश।

"इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्।" (कठोपनिषत्)

६ देश।

"अब्रवीत् प्राञ्जलिर्भूत्वा गुहो गहनगोचर ॥" (रामायण २।८५।५)
'गहनं वनं गोचरो देशो यस्य सः ॥'

गावो व्योमगतयो ग्रहाश्चरन्त्यस्मिन् पूर्ववत् साधु।

७ जन्मराशि तक ग्रहाक्रान्त राशिका नाम। फलित ज्योतिषके मतसे ग्रह अपनी गतिके अनुसार जिस राशिमें उपस्थित हो, वह राशि जन्मराशिको अपेक्षा जिस संख्याकी राशि होती है, उस संख्यावाली राशिके शुद्ध होने पर ग्रह शुभफल देता है और अशुभ होनेसे अशुभफल देता है। ग्रहके लिए कोई भी राशि अशुद्ध या बुरी नहीं है। परन्तु ज्योतिषशास्त्रोंमें जन्मराशिकी अपेक्षा किसी किसी राशिमें ग्रहका ठहरना शुभ माना गया है और किसी किसी राशिमें अशुभ ऐसा निश्चित हुआ है। जिस स्थान पर जिस ग्रहकी अवस्थिति अशुभप्रद है, वही ग्रह उस राशिमें रहनेसे उसे गोचर अशुद्धि और जिस राशिमें रहनेसे शुभ फल हो, उस स्थानमें ग्रहके ठहरनेसे गोचर शुद्धि कही जाती है।

वैज्ञानिक मतानुसार—मनुष्य अपने अपने कर्मोंके अनुसार समय समय पर सुखी और दुखी हुआ करते हैं। खगोलके ग्रह उसमें कारण नहीं। परंतु ग्रहोंके अवस्थानके अनुसार मानव और जन्तुओंका भावी मङ्गल या विपत्तियोंका अनुमान किया जा सकता है। ग्रहोंके अनुसार भविष्यमें विपत्तिकी सम्भावना होने पर, उसको रोकनेके लिए शान्तिका अनुष्ठान करनेसे फिर विपद्‌ग्रस्त नहीं होना पड़ता। किसी किसी ज्योतिषिकका मत है कि दूसरे कारणोंकी भांति ग्रहोंका अवस्थान भी मनुष्योंके सुख दुःखमें अन्यतम कारण है। कुछ भी हो, ग्रहोंके अवस्थानसे भी मनुष्योंको शुभाशुभ फलोंकी प्राप्ति होती है, इसे सब ही स्वीकार करेंगे; और प्रत्यक्षमें भी देखनेमें आता है। प्राचीन फलित ज्योतिषमें इस विषयमें बहुतसे मताभेद हैं। परंतु प्राचीन आर्यगण ग्रहोंके अवस्थानके अनुसार किस तरहसे वैसे फलाफलका निरूपण करते थे, उसका कोई भी उपाय उन्होंने प्रकाश नहीं किया। सिर्फ फल होता है—इतना ही निरूपण कर गये हैं।

केतु, राहु, रवि, चन्द्र, मङ्गल और शनि ये सब ग्रह जन्मराशिसे तृतीय या षष्ठ स्थान पर रहें तो शुभ फल समझना चाहिये और जन्मराशिसे दशम स्थानमें हों तब भी शुभ फल समझना चाहिये। यदि ये ग्रह जन्मराशिसे सप्तम, नवम वा पञ्चम स्थानमें रहें तो भी शुभ फल देते हैं। बुधके जन्मराशिमें अवस्थित रहनेसे और शुक्रके षष्ठ, सप्तम और दशममें सिवा अन्य राशिमें रहनेसे शुभ फल होता है। एकादश राशिमें कोई भी ग्रह हो वह मनुष्यके लिये शुभ हो है। ग्रहगण वक्र अथवा अतिचार आदि कोई भी अवस्थामें क्यों न हो, सब ही दशामें शुभाशुभ फल देनेवाले होते हैं। सब ही ग्रह वक्री वा अतिचारी हो कर जिस राशिमें ठहरेंगे, उसी राशिको शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। परन्तु बुध और वृहस्पति जिस राशिसे वक्री वा अतिचारी होंगे, उसी राशिका निरूपित फल देते हैं। चन्द्रको राशिमें जाते समय यदि नक्षत्र शुभ हो, तो सब ही राशिमें चन्द्र शुभ फल देता है और रविके चलते समय चन्द्रके शुद्ध रहने पर भी शुभ फल होता है। मङ्गल आदि ग्रहोंके सञ्चारकालमें यदि रवि शुद्ध रहे, तो भी शुभ फल होता है। रवि, मङ्गल और शनिके चलते समय यदि नाड़ीनक्षत्र हो, तो गोचर अत्यन्त अशुभ फल और क्लेश देता है।

चन्द्रशुद्धि और ताराशुद्धि देखो।

जन्मराशिमें चन्द्रके रहनेसे मिष्टान्न भोजन, शुक्रके रहने पर आमोद प्रमोद, रवि या मङ्गलके रहनेसे शत्रुवृद्ध, शनिके रहनेसे प्राणहानि, बुधके रहनेसे बन्धन और वृहस्पतिके रहनेसे शत्रुके बलकी वृद्धि और क्लेश उत्पन्न होता है।

द्वितीय स्थानमें यदि रवि रहे तो मित्रोंमें हर्ष, चन्द्र रहे तो क्लेश, शनि रहे तो वित्तनाश, बुध हो तो लाभ, मङ्गल हो तो हानि, शुक्र हो तो भोग और वृहस्पति रहे तो ज्ञानकी वृद्धि होती है।

तृतीय स्थानमें रवि, मङ्गल, शनि और शुक्रके रहनेसे हमेशाके लिए कोई एक स्थानकी प्राप्ति, चन्द्र और बुधके

रहने पर शत्रुनाश तथा बृहस्पतिके रहनेसे मानसिक पीड़ा उत्पन्न होती है।

चतुर्थ स्थानमें बृहस्पतिके रहनेसे मनुष्यमें शास्त्रोंके विरुद्धमें तीव्रावृत्ति पैदा होती है। रविके होनेसे महा दुःख, चन्द्रके रहनेसे उदररोग, बुधके रहनेसे आरोग्यता, शुक्रके रहनेसे रोगका नाश, मङ्गलके होनेसे शत्रुका भय और शनिके रहनेसे वित्तनाश होता है।

चन्द्र यदि जन्मराशिसे पञ्चम स्थानमें रहे तो दौर्भाग्य, मङ्गल होनेसे मानसिक उद्वेग, शनि होनेसे नाना प्रकार के दोषोंकी उत्पत्ति, रवि होनेसे प्रिय व्यक्तिका विच्छेद, बुध होनेसे दौर्भाग्य और बृहस्पतिके पञ्चम स्थानमें रहनेसे मनुष्यको सब विषयोंमें [illegible]वकी प्राप्ति होती है।

छठे स्थानमें रवि [illegible] र, बुध और शनि ग्रह रहें, तो बहुत धनधान्यादिकी प्राप्ति होती है। बृहस्पतिके छठे स्थानमें रहनेसे शत्रुवृद्धि और मानसिक कष्ट होता है तथा शुक्र रहे तो नाना प्रकारकी शत्रुता नष्ट हो जाती है।

जन्मराशिको अपेक्षा सातवीं राशिमें चन्द्र रहे तो स्त्रीलाभ, शनि रहे तो मानसिक उद्वेग, मङ्गल रहनेसे धनक्षय, बृहस्पतिके रहनेसे सम्पत्ति लाभ, शुक्रके रहनेसे रोगोंकी वृद्धि और रविके रहनेसे नाना प्रकारका अनिष्ट होता है।

मङ्गल यदि जन्मराशिसे अष्टम स्थानमें रहे तो अग्निभय, बुध रहे तो सुख, शनिसे धन हरण, शुक्रसे अर्थलाभ, रविसे मृत्यु, बृहस्पतिसे स्थानका नाश और चन्द्रके रहनेसे नेत्ररोग होता है।

जन्मराशिसे नौवें स्थानमें शनिके रहनेसे अर्थनाश, बुधसे रोग, मङ्गल या शुक्रसे अर्थलाभ, चन्द्रसे त्रास, रविसे शोक और क्लेश तथा बृहस्पतिके रहनेसे सम्मान और पशु आदिका लाभ होता है।

जन्मराशिसे दशवें स्थानमें बुधके रहनेसे मनमें सुस्थता, रविसे इच्छानुरूप कीर्ति, मङ्गलसे सम्पत्ति-लाभ चन्द्रसे प्रधान पदकी प्राप्ति, रविसे कार्यकी सिद्धि, शुक्रसे मित्रोंके यशकी वृद्धि और बृहस्पतिके रहनेसे प्रीतिकी हानि होती है।

रवि, चन्द्र, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि— ये जन्म राशिके ग्यारहवें स्थानमें रहें तो मनुष्यके धन, धान्य और मानकी वृद्धि होती है। ग्यारहवें स्थानमें रह कर कोई भी ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

बृहस्पति, रवि, शनि, राहु, मङ्गल और चन्द्रके जन्म राशिसे बारहवें स्थानमें जानेसे मनुष्यके लिए वध और बन्धनका भय रहता है। बुध या शुक्रके बारहवें स्थानमें रहनेसे धैर्यकी वृद्धि होती है।

किसी किसी ज्योतिषशास्त्रोंमें गोचरोंका फल इस प्रकार लिखा है,—रवि यदि जन्मराशिमें प[illegible]चे तो मनुष्य स्थानभ्रष्ट होता है। ऐसे हो द्वितीयस्थानमें रहनेसे भय, तृतीय स्थानमें स्त्रीलाभ चतुर्थमें मानहानि, पञ्चममें दैन्य, षष्ठमें शत्रुनाश, सप्तममें अर्थनाश, अष्टममें पीड़ा, नवममें कान्तिपुष्टि, दशममें कार्यकी सिद्धि, ग्यारहवेंमें सम्पत्ति वृद्धि और बारहवें स्थानमें रविके रहनेसे सम्पत्तिका नाश हो कर मनुष्य घोर विपत्तिमें पड़ जाता है।

जन्मराशिमें चन्द्रके रहनेसे अर्थलाभ, द्वितीयराशिमें चन्द्रके रहनेसे वित्तनाश, तृतीयमें द्रव्यलाभ, चतुर्थमें उदर पीड़ा, पञ्चममें कार्यहानि, छठे स्थानमें वित्तलाभ, सातवेंमें स्त्रीलाभ, आठवेंमें मृत्यु, नौवेंमें राजभय, दशवेंमें महासुख, ग्यारहवेंमें धनकी वृद्धि और बारहवें स्थानमें रहनेसे रोग और धनक्षय होता है।

जन्मराशिमें मङ्गलके रहनेसे शत्रुभय, द्वितीय स्थानमें रहनेसे धननाश, तृतीयमें अर्थलाभ, चौथेमें शत्रुभय, पाँचवेंमें प्राणनाश, छठेमें वित्तलाभ, सातवेंमें शोक, आठवेंमें अस्त्राघात, नौवेंमें कार्यहानि, दशवेंमें शुभ फल, ग्यारहवेंमें भूमिलाभ और बारहवें स्थानमें रहनेसे रोग, अर्थनाश और अमङ्गल होता है।

जन्मराशिमें बुध रहनेसे बन्धन, द्वितीयमें धनलाभ, तृतीयमें धन और शत्रुकी वृद्धि, चौथेमें अर्थलाभ, पाँच[illegible]में तङ्गी, छठेमें अशुभ फल, सातवेंमें नाना तरहके रोग और विपत्तियां, आठवेंमें धनलाभ, नौवेंमें असाध्य रोग, दसवेंमें शुभफल, ग्यारहवेंमें अर्थलाभ और बा[illegible]हवें स्थानमें जानेसे वित्तलाभ होता है।

जन्मराशमें बृहस्पतिके रहनेसे भय, द्वितीय स्थानमें बृहस्पतिके रहनेसे अर्थलाभ, तीसरेमें शारीरिक क्लेश, चौथेमें अर्थनाश, पांचवेंमें शुभ फल, छठेमें अशुभफल,

सातवेंमें राजपूजा, आठवेंमें धननाश, नौवेंमें धनवृद्धि, दशवेंमें प्रीतिनाश, ग्यारहवेंमें धनलाभ और बारहवें स्थानमें रहनेसे शारीरिक और मानसिक पीड़ा होती है।

शुक्र यदि जन्मराशिमें रहे तो शत्रुनाश, द्वितीय स्थानमें रहनेसे अर्थलाभ, तृतीयमें शुभफल, चौथेमें धनलाभ, पांचवेंमें पुत्रलाभ, छठेमें शत्रुवृद्धि सातवेंमें शोक, आठवेंमें अर्थलाभ, नौवेंमें वस्त्रोंकी प्राप्ति, दशवेंमें शुभफल, ग्यारहवेंमें बहुतर धनका लाभ और बारहवें स्थानमें रहनेसे धनका आगमन होता है।

शनि जन्मराशिमें रहनेसे वित्तनाश और सन्ताप, द्वितीय स्थानमें चित्तमें क्लेश, तीसरेमें शत्रुनाश और वित्त लाभ, चौथेमें शत्रुओंकी वृद्धि, पांचवेंमें पुत्र और भृत्यादिका नाश छठेमें अर्थलाभ, सातवेंमें अनिष्ट, आठवेंमें शारीरिक पीड़ा, नौवेंमें धनक्षय, दशवेंमें मानसिक उद्वेग, ग्यारहवेंमें वित्तलाभ और बारहवेंमें स्थानमें शनि रहनेसे निश्चयत अमङ्गल होता है।

जन्मराशिमें द्वितीय, पञ्चम, सप्तम, अष्टम, नवम, और दशम राशिमें राहु रहनेसे अर्थका क्षय, शत्रुका भय, कार्यकी हानि, रोग, अग्निभय और मृत्यु हुआ करती है। इनके अलावा दूसरे स्थानोंमें राहुके रहनेसे कोई अनिष्ट नहीं होता, बल्कि शुभफल ही होता है।

जन्मराशिसे ग्यारहवीं, तीसरी, दसवीं वा छठी राशिमें केतु रहे तो सम्मान, भोग, राजपूजा, सुख और अर्थलाभ होता है और आज्ञाकारी पुरुष वा स्त्रीसे सुखभोग और पुण्य सञ्चय होता है।

गोचरके ग्रहोंका फलाफलनिर्णय—रवि और मङ्गल ये दो ग्रह प्रवेश करते समय फल देते हैं। वृहस्पति और शुक्र ये दोनों मध्य समयमें, शनि और चन्द्र आखिरमें तथा बुध ग्रह हरवक्त अपना फल देता रहता है।

रवि चन्द्र आदि शब्दोंमें विशेष विवरण देखो

मूहूर्तचिन्तामणिके मतानुसार—सूर्य गन्तव्य राशिसे पहले पांच दिन फल देता है। मङ्गल गन्तव्य राशिसे पहिले आठ दिन, बुध गन्तव्यराशिसे पहले सात दिन, चन्द्र गन्तव्य राशिसे पहले तीन दण्ड, राहु गन्तव्यराशिके पहिले तीन मास, शनि छह मास और वृहसपति दो मास पहले अपना फल देता है।

रवि और मङ्गल प्रथम दशांशोंमें रह कर ही अपना सम्पूर्ण फल दे देता है। इसके सिवा दूसरे अंशोंमें रहते हुए कुछ कुछ फल होता रहता है। इसी प्रकार शुक्र और वृहस्पति बीचके दशांशोंमें, बुध तीस अंशोंमें, चन्द्र और शनि चरम दशांशोंमें रहते हुए फल देते हैं। इसके सिवा दूसरे अंशमें रहते हुए थोड़ा फल देते हैं। ग्रह यदि गोचरमें विरुद्ध हों, तो शान्तिके लिए दान और ग्रहपुरश्चरणादि करना पड़ता है। इससे फिर किसी तरहके अमङ्गलकी सम्भावना नहीं रहती।

गोचरी (हिं० स्त्री०) भिक्षावृत्ति, भीख मांगनेका पेशा

गोचर्म (सं० क्ली०) गवां चर्म ६-तत्। १ गौका चमड़ा। तन्त्रमें लिखा है कि स्तम्भनकार्यमें गो चर्म पर बैठना उचित है। २ परिमाणविशेष, एक नाप। वृहस्पति के मतसे सात हाथका एक दण्ड, तीस दण्डका एक निवर्तन एवं दश निवर्तनका एक गो चर्म अर्थात् २१०० हाथ लम्बी और इतनी ही चौड़ी होती है। महाभारतमें लिखा है कि जो एक गोचर्मपरिमित भूमि दान करता है उसका ज्ञान और अज्ञानकृत समस्त पाप विनष्ट हो जाते हैं। (अनुश सन० ६२ अ०)

गोचर्मकण्टक (सं० पु०) पर्पटक, औषध उपयोगी एक तरहका पौधा।

गोचर्मवसन (सं० पु०) गोचर्म वसनं यस्य, बहुव्री०। महादेव, शिव। (भारत १३।१७ अ०)

गोचारक (सं० त्रि०) गां चारयति घासादि गो-चर-णिच् ण्वुल्। गोरक्षक, गौको रक्षा या पालन पोषण करनेवाला।

गोचारण (सं० क्ली०) गवां चारणं, ६-तत्। गौका चराना, गौको खिलानेकी क्रिया

गोचारिन् (सं० त्रि०) गौरिव चरति चर-णिनि। गौके पीछे पीछे चलनेवाला, एक तरहका तपस्वी।

(भारत अनु० १४)

गोची (सं० स्त्री०) गामञ्चति अनच् क्विप् ङीप् नलोपे अलोपः। १ मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। गाः शिवस्तुतिरूपाः वाचः अञ्चति अनच् क्विप् ङीप्। २ हिमालयपत्नी, हिमालयकी स्त्रीका नाम।

गोच्छगल (सं० पु०-क्ली०) गोमय, गोबर।

गोच्छाल (सं० पु०) गां भूमिं छादयति छद-णिच् अच् पृषोदरादित्वात् साधु। भूकदम्ब, कुकुशिम नामका पौदा।

गोच्छाला (सं० स्त्री०) गोरक्षमुण्डी।

गोज (सं० पु०) सङ्कर जातिविशेष। उशनाका मत है कि प्रमाद क्रमसे नृपके ओरससे नृपाके गर्भमें जो पुत्र उत्पन्न होता है उसे गोज कहते हैं। यह जाति भी क्षत्रियान्तर्गत मानी गई है, क्योंकि इनका आचार व्यवहार क्षत्रियोंकी नाईं है, किन्तु इनमें अभिषेकका प्रथा नहीं है।

(क्ली०) २ गौ वा छागी (बकरी) दुग्धका विकार विशेष। भावप्रकाशमें लिखा है कि, गोदुग्ध या छागी दुग्धसे जो फेन उत्पन्न होता है, उसे गोज वा गोफेन कहते हैं।

इसका गुण—त्रिदोषघ्न, रुचिकारक, बलवृद्धिकर, अग्निवर्द्धक, हितकर, भोजन मात्रमें तृप्तिकारक, लघु, अतीसार, अग्निमान्द्य और जीर्णज्वरमें प्रशस्त है।

(भावप्र० पूर्वखण्ड २ भाग)

(त्रि०) ३ गोजात, गायसे जो उत्पन्न हो। यथा—दुग्ध, दही, घृत, मक्खन प्रभृति।

गोज (फा० पु०) अपान वायु, पाद।

गोजई (हिं० स्त्री०) गेहूं और जौ मिश्रित अन्न।

गोजर (सं० त्रि०) गोषु मध्ये जरो जीर्णः। वृद्ध बलीवर्द, बूढ़ा बैल। (भागवत ४।१०।१४)

गोजर—पञ्जाब प्रान्तके लायलपुर जिलेकी तोबटेक तहसीलका नगर। यह अक्षा० ३१° ८′ उ० और देशा० ७२° ४२′ पू० में अवस्थित है। जनसंख्या कोई २५८८ होगी। यहां लायलपुर जैसी मण्डी लगती है। रूईके कई कारखाने हैं।

गोजरा (हिं० पु०) जौ मिश्रित गेहूं।

गोजल (सं० क्ली०) गवि जातं जलं। गोमूत्र, गायका मूत।

गोजा (सं० त्रि०) गवि पृथिव्यां व्रीह्यादिरूपेण जायते गो-जन विट् आत्वं। १ व्रीहि प्रभृति। (ऋक् ४।४०।५) धान, चावल, तण्डुल। (स्त्री०) २ गोलोमिका वृक्ष। (राजनि०) (त्रि०) ३ सुरभिजात, जो पृथ्वीसे उत्पन्न हो। ४ जो दूधसे प्रस्तुत किया गया हो।

गोजा (हिं० पु०) १ छड़ी या लाठी जिसके द्वारा चरवाहा गौ हाँकता है।

गोजागरिक (सं० क्ली०) गवि स्वार्थे जागरः अप्रमत्तताऽस्त्यस्य गोजागर-ठन्। १ मङ्गल, आनन्द। (पु०) गवि भूमौ जागरिकः प्रहरीव अस्त्ररूपकण्टकधारित्वात्। २ कण्टका वृक्ष, एक तरहका पेड़ जो काँटेसे भरा रहता है। (त्रि०) गोषु व्रीह्यादिषु जागरोऽस्त्यस्य गोजागर-ठन्। ३ भक्ष्यद्रव्य रक्षा करनेवाला, पाचक, रसोईया।

गोजात (सं० पु०) गवि जातः। १ गो नामक पुलस्त्यको पत्नीका गर्भजात, पुलस्त्यकी स्त्री 'गो'के गर्भसे जो उत्पन्न हुआ हो। (त्रि०) २ गायसे जो उत्पन्न हो। यथा घृत, दही प्रभृति। गोः स्वर्गात् जातः। ३ स्वर्गजात, जो स्वर्गमें उत्पन्न हो, जो स्वर्गमें वास करे। (ऋक् ७।३५।१४)

गोजापर्णी (सं० स्त्री०) गोजा दुग्धफेन इव शुभ्रत्वात् पर्णमस्य, बहुव्री०। गौरादित्वात् ङीष। दुग्धफेनी वृक्ष, एक तरहका पेड़ जिससे दूधके फेनके जैसा रस निःसृत होता है दूधिया।

गोजि (सं०) गोजी देखो।

गोजिका (सं० स्त्री०) १ गोजिह्वा, गायकी जीभ। २ एक तरहकी लता।

गोजिकाण (सं० पु०) मध्यमाश्व, मध्य आकारका घोड़ा।

अश्व देखो।

गोजित् (सं० त्रि०) गां पृथिवीं जयति गो-जि क्विप् तुगागमश्च। १ पृथ्वीको जय करनेवाला। (ऋक् १।१०।११) (पु०) २ राजा बाहुबलसे जो पृथ्वीको जय करता है उसीको गोजित् कहते हैं। ३ (क्रि०) गौका जीतना, गायका प्राप्त करना।

गोजिया (हिं० स्त्री०) गोजिह्वा, गोभी या वनगोभी नामकी घास।

गोजिह्वा (सं० स्त्री०) गोर्जिह्वेव। १ लताविशेष। (Premna Esculenta) औषधके काममें आनेवाली गोभी नामकी घास। इसका संस्कृत पर्याय—दार्विका, दर्विका, दार्विपत्रिका, खरपत्री, वातोना, अधोमुखा, अनडुज्जिह्वा, अधःपुष्पी, दर्वी और गोजिह्विका है।

इसका गुण—कटु, तीक्ष्ण, शीतला, विसर्प, दन्त और विषार्त्तिनाशक एवं व्रण उत्पादक है। (राजनि०)

भावप्रकाशके मतसे इसका गुण वातवृद्धिकर, शीतल, ग्राही, कफ और पित्तनाशक, प्रमेह, काश, रक्त, व्रण और ज्वरनिवारक, लघु, कषाय, तिक्तरस और स्वादुपाक है। २ गुन्द्रा, गंटपटेर। ३ देवधान्य।

गोजिह्विका (सं० स्त्री०) गोजिह्वा स्वार्थे कन्-टाप्, अतः इत्वञ्च। गोजिह्वा देखो।

गोजी (सं० स्त्री० १ गोजिह्वालता। (सुश्रुत)

गोजी (हिं० स्त्री०) १ गौ हाँकनेकी छड़ी या लाठी। २ लट्ठ, बड़ी लाठी।

गोजीत (सं० वि०) जितेन्द्रिय, जिसने इन्द्रियोंको जीत लिया हो।

गोजीर (सं० त्रि०) पशुप्रेरक, जो स्तोटगणके उद्देशसे पशुप्रेरणा करता है। (ऋक् ८।११०।३)

गोझनवट (हिं० पु०) अंचल, पल्ला। स्त्रियोंकी साड़ीका वह अंश जो पीठ और सिर पर रहता है।

गोझा (हिं० पु०) १ गुझक, एक तरहका पकान्न जो मैदे तथा मेवेके संयोगसे बनाया जाता है। २ एक प्रकारका कंटीला तृण। ३ जेब, खींसा, खलीता।

गोञ्जालिस्—एक विख्यात पोर्तगीज दस्यु (डकैत)। इसका यथार्थ नाम—सिबाष्टियाँ गोञ्जालिस् था। १६०८ ई०को आराकानसे जब पोर्तगीज दस्युका अड्डा (डेरा) उठाया गया और जब वे शनद्वीपमें आ बसे थे, उस समय गोञ्जालिस् एक सामान्य सैन्य और लवण-व्यवसायी था। इससे कुछ पीछे एक आराकान राजाने स्वराज्यसे भगाये जाने पर शनद्वीपमें आ आश्रय ग्रहण किया था। यहां राजाको गुञ्जालिस्ने सहायता दी एवं मग सैन्योंको पराजय कर उसने अपनेको स्वाधीन राजाके जैसा घोषणा कर दी। उस दुष्टने आश्रित राजाकी बहनसे बलपूर्वक विवाह कर लिया और गुप्त रीतिसे राजाको मार डाला। इसके अनन्तर गोआके पोर्तगीज-राजप्रतिनिधिको आराकान पर आक्रमणके लिए बुलाया।

१६१५ ई०को गोञ्जालिस् ५० हजार सैन्य लेकर आराकान पहुंचा। उसके अत्याचारसे मग जातिने नितान्त उत्पीड़ित हो ओलन्दाजका साहाय्य ग्रहण किया। ओलन्दाज तथा आराकान राज्यको सेनाओंने एकत्र हो दस्युपति गोञ्जालिस् पर आक्रमण किया। इस युद्धमें पोर्तगीजके नौ-सेनापति निहत हुए, बादको गोञ्जालिस् अपनी सहाय सम्पत्ति खोकर बहुत कष्टसे मरा।

गोट (हिं० स्त्री०) गोष्ठ, कपड़ेके किनारे शोभाके लिए लगाये जानेवाली फीता, मगजी। २ किसी तरहका किनारा। (पु०) ३ गोष्ठ, गाँव, खेड़ा, टोली। (स्त्री०) ४ मंडली, गोष्ठी। ५ नगरके बाहर किसी बाग या उपवनको सैर या परिभ्रमण।

गोटबस्ती (हिं० स्त्री०) वह जमीन जिस पर ग्राम बसा हो।

गोटा (हिं० पु०) १ सुनहले रंगका पतला फीता, जो वस्त्रके किनारे शोभा बढ़ानेके लिये लगाया जाता है। २ भूनी या सादी धनियाकी गिरी। ३ इलायची सुपारी और खरबूजे तथा बादामके एकत्र छोटे छोटे खण्डोंका गिरो। ४ सूखा हुवा मल, कंडो, सुद्दा।

गोटी (हिं० स्त्री०) १ लड़कोंके खेल खेलनेके कंकड़, गेरू तथा पत्थरका छोटा गोल टुकड़ा। २ चापड़ खेलनेका मोहरा जो हाथीदाँत, हड्डी, लकड़ी इत्यादिका बना रहता है, नरद। इस खेलमें १६ गोलियां होती हैं जिनमेंसे ४ लाल, ४ हरे ४ पीले और ४ काले रंगको रहती हैं। ३ एक प्रकारका खेल जो आड़ी और सीधी रेखाएं बना कर खेला जाता है। इसमें ८,१५,१८ या इससे ज्यादे गोटियां रख कर खेला जाता है। ४ उपाय, युक्ति, तदवीर।

गोठ (हिं० स्त्री०) १ गोष्ठ, गोशाला, गोस्थान। २ गोष्ठ श्राद्ध। ३ सैर सपाटा।

गोठिल (हिं० वि०) कुण्ठित, जिसको धार तेज नहीं हो, कुन्द।

गोड़ (सं० पु०) १ उन्नतनाभि, बढ़ी हुई नाभी।

गोड़ (हिं० पु०) पैर, पाँव।

गोड़इत (हिं० पु०) १ ग्राममें चौकसी देनेवाला, चौकीदार। २ प्राचीन कालका हरकारा या कर्मचारी। उसका काम एक ग्रामसे दूसरे ग्राममें पत्र पहुंचाना था।

गोड़गाव (हिं० पु०) घोड़ेके पिछले पैरमें बांधनेकी रस्सी।

गोड़न (हिं० पु०) मिट्टीसे नमक बनानेकी क्रिया।

गोड़ना (हिं० क्रि०) कोड़ना।

गोड़म्बी (सं० स्त्री०) भल्लात नामक लताका बीज।

गोड़ली (हिं० पु०) संगीतविद्यामें खास कर नृत्यमें प्रवीण पुरुष या स्त्री।

गोड़वांस (हिं० पु०) पशुओंके पैरमें फंसाकर खूंटेसे बांधनेवाला रस्सा।

गोड़वास्तुक (सं० पु०) वास्तुकशाक, एक तरहका शाक।

गोड़संकर (हिं० पु०) एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां पैरोंमें पहनती हैं।

गोड़सिहा (हिं० पु०) द्वेषी, डाह करनेवाला, जलनेवाला।

गोड़हरा (हिं० पु०) एक तरहका गहना जो पैरमें पहना जाता है, काड़ा।

गोड़ांगी (हिं० स्त्री०) पायजामा।

गोड़ा (हिं० पु०) पैर तथा जांघके मध्यकी सन्धि, घुटना। २ पलंग प्रभृतिका पाया। ३ घोड़िया। ४ सैन या दौरीकी रस्सी जिसे पकड़ कर खेतमें पानी फेंका जाता है।

गोड़ाई (हिं० स्त्री०) १ गोड़नेकी क्रिया या भाव। २ गोड़नेकी मजदूरी।

गोड़ारी (हिं० स्त्री०) १ हरीनाम। २ पलंगका वह सिरा जिधर पैर रखा जाता है, पैताना। ३ जूता।

गोड़िम्ब (सं० पु०) गोभूमेर्डिम्ब इव। शृगाल, जम्बुक, गीदड़।

गोड़िया (हिं० स्त्री०) १ छोटा पैर। (पु०) २ उपाय लगानेवाला, तरकीब लड़ानेवाला। (पु०) मल्लाह, मांझी।

गोड़ी (हिं० स्त्री०) लाभ, फायदा।

गोडुम्ब (सं० पु०) गां भूवं तुम्बति अर्दति। गोतुम्बक पृषोदरादित्वात् साधुः। कालिङ्गलता, तरबूजकी लता।

गोडुम्बा (सं० स्त्री०) गोडुम्ब-टाप्। गवादनी, (Cucumis madraspatanus, Cucumis melo.) फलशाकलताविशेष।

गोडुम्बिका (सं० स्त्री०) गोडुम्बा स्वार्थे कन् टाप् अत इत्वञ्च। गोडुम्बा देखो।

गोडमड़ि—मान्द्राज प्रदेशके अनन्तपुर जिलामें ताड़पत्रि तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन गण्डग्राम।

गोण (सं० पु०) वृषभ, सांढ़, बैल।

गोणा (सं० स्त्री०) मनःशिला।

गोणिक (सं० क्ली०) एक तरहका ऊनी वस्त्र।

गोणिकापुत्र—१ एक प्राचीन वैयाकरण। २ कामशास्त्र और पारदाराधिकरण नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गोणी (सं० स्त्री०) गोण आवपनार्थे ङीष्। १ अन्न ढोनेका आधारविशेष, गोन, बोरा। २ छिन्नवस्त्र, झीना कपड़ा। ३ परिमाणविशेष। वैद्यक परिभाषाके मतसे एक गोणी दो सूर्पके बराबर होती है।

गोणीतरी (सं० स्त्री०) ह्रस्वा गोणी गोणी-ष्टरच् षित्वात् ङीष। क्षुद्र गोणी, छोटा बोरा।

गोण्ड—१ नीच जातिविशेष। गोंड देखो।
२ उन्नतनाभि, बड़ी हुई नाभी। (त्रि०) ३ जिसकी नाभि बड़ी हो।

गोण्डउमरी—मध्यप्रदेशमें भण्डारा जिलाके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। यह शानिगड़से १० मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। इसके अन्तर्गत १० दश ग्राम हैं जिनमेंसे गोण्डउमोरी नामक ग्राम ही वृहत् है। यहां सिर्फ एक विद्यालय है, अधिवासियोंमें गोंड और धरजातिकी संख्या अधिक है। यहांके सामन्तगण ब्राह्मण-वंशीय हैं।

गोण्डकिरी (सं० स्त्री०) एक तरहकी रागिणी।
(गीतगोविन्द)

गोण्डक्री (सं० स्त्री०) गोण्डकिरी रागिणी।

गोण्डवन—स्थानविशेष। गोण्ड जातिके रहनेके कारण इसका नाम गोण्डवन पड़ा। यह नाम मुसलमानोंने रखा था। इसका वर्तमान नाम मध्यप्रदेश है।
गोंड और मध्य प्रदेश देखो।

गोण्डब्राह्मण—मध्यप्रदेशके ब्राह्मणोंकी एक जाति। पूर्वसमय मध्यप्रदेशमें गोण्डोंका राज्य था। आजकल भी जब्बलपुरसे नागपुर प्रान्तके देशोंमें गोण्डब्राह्मणोंके बहुतसे ग्राम हैं। इसी कारण उस देशका नाम गोण्डवाना पड़ा और वहांके रहनेवाले गोण्डब्राह्मण कहलाये। किसी एक दूसरे विद्वान्‌का मत है कि ये झारा ब्राह्मण भी कहलाते हैं क्योंकि इनका देश सघन वनसे आच्छादित है। फिर किसीका मत है कि ये शुक्ल यजुर्वेदके माननेवाले हैं, अतएव ये पहले शुक्ल या गौर यजुर्वेदी

ब्राह्मण कहलाते थे, पीछे धीरे धीरे गौर या गौड़ (गौड़ ब्राह्मण कहलाने लगे हैं। इनकी माध्यन्दिनी और काण्व शाखा है तथा आपस्तम्बसूत्र है। इनमेंसे थोड़े ऋग्वेदी आश्वलायनशाखाके अन्तर्गत हैं। ये शास्त्रधारानुसार सदाचारी ब्राह्मण सम्प्रदाय हैं। ये मछली मांस नहीं खाते हैं। इनकी विद्यास्थिति भी अच्छी है।

गोण्डवा—सिंहभूमके अन्तर्गत एक ग्राम। बड़ा बाजारसे १६ मील दक्षिण-पश्चिम चाइवासा जानेके रास्ते पर अवस्थित है। गोण्डग्राम तथा धेमनालालाके निकटवर्त्ती विजक पहाड़के पाददेशमें बहुतसी शिलालिपियां खोदित हैं। इनमेंसे दो शम्बूकाकृति अक्षरमें और दो उड़िया अक्षरमें खोदी हुई हैं। शेषोक्त दो शिलाफलक देखनेसे मालूम होता है कि उड़िशाके राजा मुकुन्ददेवके शासनकालमें ये लिपि खोदी गई थीं। मुकुन्ददेव हुगली पर्यन्त राजत्व करते थे तथा उन्हींके राज्यकालमें इस ग्राममें दोनों प्रदेशोंका प्रधान व्यवसाय स्थान था।

उक्त शम्बूकाकृति अक्षर बहुत दिनके हैं। कनिंहम् साहबका अनुमान है कि राजा मुकुन्ददेवके बहुत पहले ई० ७म शताब्दमें राजा शशाङ्क राज्य करते थे, उन्हींके समयमें इस तरहका अक्षर प्रचलित था। उस समयसे आजकल ग्रामकी अवस्था समृद्धिशाली है।

गोण्डवाना—मध्यप्रदेश और मध्यभारतका एक पुराना मुसलमानी प्रान्त। अबुल फजलने निम्नलिखित रूपसे उसकी सीमाका निर्देश किया है—पूर्व रतपुर, पश्चिम मालव, उत्तर पन्ना और दक्षिणमें दाक्षिणात्य। यह वर्णन वर्तमान सातपुरा अधित्यकाका बोधक है। मुसलमान गोंड़ोंके देशको गोंडवन समझते थे, परन्तु आजकल वह नाम द्राविड़ोंका है। इस विषयमें कि द्राविड़ोंको गोंड कैसे कहा गया पुरातन तत्त्वविद् कनिङ्गहाम साहबने लिखा है—गोंड शब्द "गौड़" का अपभ्रंश है। वाराणसीके एक शिलाफलकसे विदित होता है कि तेवार (जवलपुरके निकट)-के एक चेदिराज मालव प्रान्तके पश्चिम गौड़ जिलेमें रहते थे और भी चार पांच शिलाफलकोंमें वहीं गौड़ होनेको कहा गया है।

गोण्डा—अयोध्याके फैजाबाद विभागका एक जिला। यह अक्षा० २६° ४६' तथा २७° ५०' उ० और देशा० ८१° ३३' एवं ८२° ४६' पू०में अवस्थित है। इसको उत्तरको सीमामें हिमालयके नीचेकी पर्वतश्रेणी है, पूर्वमें बस्ती जिला, दक्षिणमें फैजाबाद, बाराबाङ्की और घर्घरा नदी तथा पश्चिममें बराइच है। भूमिका परिमाण २८१३ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय: १४०३१८५ है।

तमाम जिला समतल जान पड़ता है। कहीं कहीं थोड़ा बहुत ऊंचा नीचा भी है। यहां कहीं आमकी और कहीं महुआके पेड़ोंकी पंक्ति नजर आती हैं। इस जिलेकी जमीन तराई, ऊपरहार और तरहार इन तीन भागोंमें विभक्त है। तराई या पानीकी जगह जिलेकी उत्तर सीमासे दक्षिणकी तरफ राप्ती नदीसे दो मील दक्षिण तक विस्तृत है, इसी बीचमें बलरामपुर और उतरौला ये दो नगर भी हैं। यहांकी भूमि कीचड़वाली है, सिर्फ जिन जिन स्थानोंमें पावतीय जलस्रोत जिलेमें हो कर राप्ती और बूढ़ी राप्ती नदीमें जा पड़ा है। उन उन स्थानोंमें बाढ़ आनेके समयमें पहाड़की धूली हुई बालू जम गई हैं, जिससे वहां कीचड़ नहीं है। तराई भूमिके बाद गोण्डा नगरसे दो मील दक्षिण तक ऊंची भूमि है। यहांकी जमीनमें कीचड़ और बालू दोनों हैं। इसके बाद घर्घरा नदीके किनारे तक तरहार जमीन है। यहांकी तीनों तरहकी जमीन ही ज्यादा उपजाऊ हैं। इस जिलेमें उत्तर पश्चिमसे दक्षिण पूर्वकी तरफ बहनेवाली कुछ नदियां हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—बूढ़ी राप्ती, राप्ती, सुवावन, कुवाना, विशुही, चमनाई, मनवर, तिरही सरयू और घर्घरा। इन नदियोंमेंसे सिर्फ घर्घरा और राप्ती नदीमें ही नाव चला करती हैं। राप्ती नदीमें सिवाय वर्षातके दूसरे महीनोंमें नाव नहीं चलती। जिलेके भीतर भी बहुतसे जल मौजूद हैं। गरमियोंमें ये सूख जाते हैं, और वहां छोटे छोटे महुआ, जामुन, आदिके पेड़ पैदा हो जाते हैं। नदीके किनारेके बालू बड़े भयावने होते हैं। जगह जगह छोटे छोटे ह्रद या तालाव भी देखनेमें आते हैं। इन तालावोंसे खेतवालोंको खूब सुविधा होती है। जिलेके उत्तरांशमें पर्वतके सीमान्तवर्ती वनविभागमें, जो कि गवर्मेण्टके अधीन है, शाल, आवलूश और बबूल आदिके पेड़ ही अधिक है। इस जङ्गलमें शेर, चीता, भालू, भेड़िया,

तरह तरहके हरिण और जङ्गली सूअर देखनेमें आते हैं। नदियोंमें मछली, मगर और कछुए आदि भी असंख्य हैं। यहां दीर्घचञ्चु, वनकुक्कुट, मयूर, कबूतर आदि नाना प्रकारके पक्षियां देखनेमें आते हैं।

इस जिलेका प्राचीन इतिहास श्रावस्ती नगरके पुरातत्त्वसे सम्बन्ध रखता है। कूर्म और लिङ्गपुराणमें इस भूमिका गौड़देशके नामसे उल्लेख मिलता है। सूर्यवंशीय श्रावस्तीके पुत्र वंशकने यहां श्रावस्ती नगरी बसाई थी।* नगर श्रीरामचन्द्रके पुत्र लवकी राजधानी थी। उस नगरीका वर्त्तमान नाम सहमहेट् है।

श्रावस्ती और गौड़ देखो।

ईस्वीकी ३य शताब्दीमें अयोध्याके राजा विक्रमादित्यके राजत्वके समयमें यह राज्य बहुत ही समृद्धिशाली था। परन्तु उनकी मृत्युके कई वर्ष बाद गोण्डाका राजदण्ड गुप्तवंशीय राजाओंके हाथमें आया। ब्राह्मण और बौद्धधर्मके परस्परके विद्वेषसे यह नगर क्रमशः नष्ट हो गया। चीनपरिव्राजक जब श्रावस्ती और कपिलवास्तु नगर देखनेके लिए आये थे, तब उन्होंने उक्त दोनों नगरोंकी बीचकी रास्ताओंमें जङ्गल देखा था। इतिहासके पढ़नेसे मालूम होता है कि, गोण्डाके जैन राजा सोहिल देवने गजनीवाले मामूदके बहनोई सैयद मसारको सेना सहित मार डाला था। जिस समय मुहम्मद घोरीने भारत पर आक्रमण किया था, उस समय यहां डोमराजा राज्य करता था और गोरखपुरके पास ही डोमनगढ़में उसकी राजधानी थी; इस वंशके प्रसिद्ध राजा उग्रसेनने महादेव परगणाके डुमरियादि ग्राममें एक छोटासा किला बनवाया था। उन्होंने थारू, डोम, भर, पासी आदि जातियोंको बहुतसे गांव दिये थे।

ई० १४ वीं शताब्दीमें यह डोमराज्य कलहंसी, जनवाड़ और विशेन-वंशीय क्षत्रियोंके अधिकारमें आ गया था। कलहंसी राजाओंने हिसामपुरसे लेकर गोरखपुर तक अपना आधिपत्य फैला लिया था। ऐसा प्रवाद सुनते हैं कि,—दिल्लीके किसी तोगलक सम्राट्की सेनाके साथ कलहंसियोंके सर्दार सहाजसिंह नर्मदानदीकी तरहटीसे यहां आये थे। पीछे इनको सम्राट्ने हिमालय और घर्घराके मध्यवर्त्ती लोगोंको वश करनेके लिए नियुक्त किया। उन लोगोंने पहले वर्त्तमानके कुराशा नगरसे २ मील दक्षिणकी तरफ जो कोएली जङ्गल है; उसे अपना वासस्थान बनाया था। प्रत्येक सर्दारको ३५ कोसके जमीन जायगीर मिली थी।

गोण्डा-राजवंशके पतनके विषयमें ऐसा प्रवाद है कि, राजा अचलनारायणसिंह किसी ब्राह्मण जमींदारकी कन्याको बलपूर्वक चुरा लाये थे। इससे उस लड़कीके पिताने उस अत्याचारी राजाके दरवाजे पर बिना कुछ खाये ही अपना प्राण त्यागा और मरते समय "छोटी रानीके गर्भस्थ पुत्रके सिवा समस्त राजवंशका शीघ्र ही नाश हो"—ऐसा अभिशाप दे गये। उनका यह अभिशाप फल गया। शीघ्र ही सरयू नदीने किला और राजप्रासादको डूबा दिया। राजा और उनका परिवारवर्ग भी उसमें डूबकर मर गया। सिर्फ छोटी रानी सपुत्र बच गयी। ई० १५ वीं शताब्दीके अन्तमें ऐसी दुर्घटना हुई थी। बभनीपाईके वर्त्तमान कलहंसी जमींदार लोग उसी छोटी रानीके पुत्रके वंशज हैं। इससे कुछ दिन पहिले जनवाड़ोंने इस जिलेको तराई भूमि पर अधिकार जमाया था। सम्राट् अकबरके समय में इकौना और उतरौलाके सिवा अयोध्या प्रदेशमें और दूसरी जगह दूसरा कोई बलवान् सर्दार नहीं था। विशेन और बन्दलघोरी ये दो जातियाँ इस जिलेके अवशिष्ट अंशमें वास करती थीं। गोण्डाके विशेन राजाओंकी उन्नतिके समय, उनका राज्य १००० वर्गमीलके करीब विस्तृत हो गया था, बलरामपुर, तुलसीपुर और माणिकपुरमें भिन्न भिन्न जनवाड़ सर्दार राज्य करते थे।

दिल्लीसे अयोध्या तक स्वातन्त्र्य लाभ करनेसे पहिले सयादत् खांने कुछ दिनों तक स्वाधीनभावसे राजत्व-सुखका उपभोग किया था। बराइचके प्रथम शासनकर्त्ता आलावल खाँ गोण्डाके राजाके विरुद्ध युद्ध करके मर गये थे। फिर गोण्डाराजके विरुद्धमें सेना भेजी गई थी, परंतु इस बार भी उन्होंने मुसलमानोंको परास्त कर दिया था। इनके बाद करीब ७० वर्ष तक विशेन राजाओंने

* अथ महात्मा श्रावस्तः ततोऽभवत्।
निर्मिता येन श्रावस्ती गौडदेशे द्विजोत्तमः॥
(लिङ्ग पु० ६५।३४)

अपना स्वाधीनताकी रक्षा की थी और पैत्रिक राज्य गोण्डा, पहाड़पुर, दिगसार, महादेव और नवाबगञ्ज इन पांच परगनाओंका स्वतन्त्रतापूर्वक शासन किया था। अन्तमें राजा उदयपत्‌सिंहकी मृत्यु होने पर पाँडे ब्राह्मणों की सहायतासे गुमान्‌सिंहने गोण्डाराज्य पर आधिपत्य जमाया था, बलरामपुर और तुलसीपुरके सर्दारोंने बहुत युद्ध करके अपना स्वाधीनताकी रक्षा की थी। परन्तु माणिकपुर और भदनिपाईके सर्दार नाजिमको कर दिया करते थे। गोण्डा और उतरोला राज्यके अधःपतनके समयमें नाजिमने सहजमें कर वसूल होनेके लिए कुछ ग्रामोंमें जमींदार नियुक्त किये थे। उतरौला और गोण्डा पदच्युत राजाओंने उक्त जमींदारोंके पानेके लिए प्रयास किया था। उतरौलाके राजाने कई वर्ष बाद जमींदारी पाई थी और गोण्डाके विशेनराज विश्वम्भपुरकी जमींदारी पाकर उसका उपभोग करने लगे थे। नाजिमके कर्मचारी बलपूर्वक कर वसूल करते थे। इसलिए वहांकी प्रजा बहुत ही नाराज थी। पीछे अयोध्या जब अंग्रेजोंके हाथ-में आई तब ये सब अत्याचार दूर हो गये। सिपाही-विद्रोहके समय गोण्डाके राजा पहले अंगरेजोंके पक्षमें थे। पीछे फिर विद्रोही हो कर लखनऊमें जाकर अयोध्या-की बेगमके साथ मिल गये थे। बलरामपुरके राजा बरा-बर राजभक्त थे। इन्होंने गोण्डा और बराइचके कमिश्नर विङ्गफिल्ड तथा अन्यान्य अंगरेज कर्मचारियोंको अपने किलेमें आश्रय दिया था। गोण्डाराजने सेना सहित जाकर चमनाईके तीरवर्ती लम्पती नगरोंमें तम्बू गाड़े थे। थोड़ासा युद्ध करके ये अपनी सेना सहित नेपालकी तरफ भाग गये थे। जमींदारोंने इस राजद्रोहके लिए क्षमा मांगी थी। परन्तु गोण्डाराज और तुलसीपुरकी रानीके क्षमा नहीं मांगनेसे, उनका राज्य छीन लिया गया था। फिर गवर्मेण्टने वह राज्य बलरामपुरके महाराज दिग्विजयसिंहको और शाहगञ्जके महाराज सर मानसिंहको बांट दिया था।

इस जिलेमें गोण्डा, बलरामपुर, कर्णलगञ्ज, नवाब-गंज, उतरौला, कातरा, और खड़्गपुर आदि नगर हैं। देवीपाटन ग्राममें पाटेश्वरीदेवीका मन्दिर, छापियाका ठाकुरद्वार महादेव परगणाके विलेश्वरनाथ, मछलीगांध-के केदारनाथ, बलरामपुरकी विलेश्वरी देवी और खड़्ग-पुरके पचरानाथ व पृथ्वीनाथका मन्दिर ये हो यहांके हिन्दुओंके महापुण्यके स्थान हैं।

१ तराईमें धान बहुत होता है, परन्तु आब उतना अच्छी नहीं और बाढ़ आनेका भी डर रहता है। अपरो जमीन चिकनी है। गेहूं और चावलकी खेती चना और अरहर मिला करके ज्यादाकी जाती है। गांवोंके पास ईख तथा पोस्त और तालाबोंके करीब जड़हन बोते हैं।

स्थानिक पशु अच्छे नहीं होते। भेड़ और बकरे बहुत हैं। तालाबों और झीलोंमें आब पाशी होती है।

२ उक्त प्रान्तके गोंड़ा जिलेका सदर तहसील। यह अक्षा० २७° १' तथा २७° २६' उ० और देशा० ८१° ३५' एवं ८२° १८' पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ६९८ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ३८४०२१ है। इसमें ७८४ गांव और ३ शहर बसे हुए हैं। मालगुजारी कोई ४८१०००) और सेस प्रायः ५००००) रू० है। इसमें सुभीता बहुत कम गांवोंमें देख पड़ेगा। १६२ वर्गमील सुरक्षित जङ्गल है। इससे सालाना कोई ५००००) रू० की आमदनी होती है। खानसे केवल कङ्कर निकलता जो सड़क पर बिछाने और चूना बनानेमें लगता है।

सिवा खेतीके इस जिलेमें दूसरा काम काज थोड़ा है। कई जगह स्थानिक व्यवहारके लिए मोटा सूती कपड़ा बुना जाता है परन्तु बारीक सूत तयार नहीं होता। मट्टीके खुशनुमा बर्तन भी बनाते हैं। चावल, मटर, ज्वार, अफीम और लकड़ीका खास करके रफ्तनी होती है। नेपालके साथ भी थोड़ा कारबार किया जाता है। रेल और सड़ककी कोई कमी नहीं। यहां बङ्गाल और नार्थ वेष्टर्न रेलवेकी प्रधान लाइन दौड़ती है। ६०६ मील सड़कमें ११० मील तक पक्की है। अपराध सामान्य प्रकारका होता है।

१८१० ई०में इस जिलेके उत्तरपूर्व बहुतसी जमीन अङ्गरेजोंको सुपुर्द की गयी थी, परन्तु १८१३ ई०में उन्होंने यह अवधके नवाबको वापस दी। १८५६ ई०को अब गोंडा अंगरेजी राज्य भुक्त हुआ, मालगुजारी ६ लाख ७० हजार रही। १८७६ ई०को दूसरा बन्दोबस्त

किया गया। आजकल गोंड़ा किलेकी मालगुजारी कोई २३ लाख १७ हजार रुपया है।

यहां २ मुनिसपालिटियां और दो 'नोटीफाइड एरिया' है। ४ शहरोंका इन्तजाम १८५६ ई०की २०वीं दफासे होता है। सिवा इसके स्थानिक प्रबन्ध डिष्ट्रिक्ट बोर्ड करते हैं। १७ पुलिस थाने हैं। लोग ज्यादा पढ़े लिखे नहीं। सौमें कोई ३ आदमी ही शिक्षित हैं। पाठशालाओं और छात्रोंकी संख्या बढ़ रही है। शिक्षामें कुल ४६०००) रु०का खर्च है। भूमि बहुत उर्वरा है। उत्तरकी कुवाना पड़ती जहां जङ्गल मिलता है। तिरही दक्षिण और विसुही उत्तरके आरपार प्रवाहित है। कोई ४२२ एकड़ खेतीमें १८७ एकड़ सींच है

३ युक्त प्रान्तके गोंडा जिले और तहसीलका सदर। यह अक्षा० २७° ८' उ० और देशा० ८१° ५८' पू० में बङ्गाल और नार्थ वेष्टर्न रेलवेकी कई शाखाओंके जङ्क्शन पर पड़ता है। आबादी लगभग १५८११ है। यह नाम गोंठा (गोठ) शब्दका अपभ्रंश है। कहते हैं, बिशेन राजपूत मानसिंहने जो सम्भवतः अकबरके प्रथम राजत्व कालकी जीवित रहे, उसे बसाया था। १८५७ ई०के बलवेमें गोंड़ाके राजाने विद्रोहियोंका साथ दिया। उसीसे इनका राज्य जप्त करके अयोध्याधिपतिको सौंपा गया। नगरकी शोभा दो तालाबोंसे बढ़ी हुई है। १८६८ ई०से यहां मुनिसपालिटी है। कृषिजात द्रव्योंका अधिक व्यवसाय होते भी कोई उद्योग देख नहीं पड़ता।

४ उक्त जिलेका प्रधान नगर। फैजाबादसे २८ मील उत्तर-पश्चिममें अक्षा० २७° ७' ३०" उ० और देशा० ८२° पू०में अवस्थित है। पहिले यहां जङ्गल ही जङ्गल था, और अहीर लोग यहां रातमें अपनी गायें बांधा करते थे। बादमें फिर कुरासाके राजा मानसिंहने यहां अपना प्रासाद और-किला बनाया था। तबहीसे यहां राज-था। कलहंसो राजाओंने ही गई है। नगर भी तबहीसे तक अपना आधिपत्य फैलो

हैं कि—दिल्लीके किसी तोगाधाकुण्ड सरोवर, औषधालय,

[illegible] बनाया हुआ तालाब, विद्यालय [illegible] मान-ए-रिफा नामका प्रासाद

५ बदौसा तहसीलमेंका एक ग्राम। बान्दासे ३० मील दक्षिण पूर्वमें अवस्थित है। यहां पर दो चन्देली मन्दिर हैं। उक्त मन्दिरोंमें गङ्गा, यमुना, शिव, काली, गणेश, ब्रह्मा और विष्णुकी मूर्त्तियां हैं।

६ अयोध्याके प्रतापगढ़ जिलेका एक नगर। यहां अष्टभुजादेवीका मन्दिर है, इसी लिए इसकी प्रसिद्ध है।

गोण्डाल—१ बम्बई प्रान्तकी काठियावाड़ पोलिटिकल एजेन्सीका देशी राज्य। यह अक्षा० २१° ४२' तथा २२° ८' उ० और देशा० ७०° ३' एवं ७१° ७' पू०के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल १०२४ वर्गमील है। सिवा उसमान् पहाड़के बाकी सब देश बराबर है। कितनी ही नदियां प्रवाहित हुई हैं। जलवायु अच्छा है।

गोण्डालके राजा जाड़ेजा वंशीय राजपूत हैं। इनको ठाकुर साहब कहा जाता है, आईन-अकबरी और मीरात अहमदीमें लिखा कि गोण्डाल सोरठ सरकारको बधेला रियासत था। १म कुम्भोजीने इसे स्थापित किया था २य कुम्भोजीने उसे इस हालतको पहुंचाया। १८०७ ई०को अङ्गरेजोंके साथ गोण्डालके राजाकी सन्धि हुई। उन्हें गोद लेनेका अधिकार है। ११ तोपोंकी सलामी होती है।

गोण्डालकी लोकसंख्या प्रायः १६२८५९ है। इसमें ३ नगर और १८८ गांव बसे हैं। सींचने और पीनेके लिये ५॥ लाख रुपया लगा कर पानीका एक कारखाना खोला गया है। घोड़ों और बैलोंकी नस्ल बढ़ानेके लिये कई सांड़ हैं। रूई और अनाजकी खास पैदावार है। सूती तथा ऊनी कपड़े, जरदोजी, तांबे पीतलके बर्तन, लकड़ीके खिलौने और हाथी दांतकी चूड़ियां बनाते हैं। ११॥ मील पक्की सड़क है। लाखों रुपयेका रियासतमें पैदा हुआ माल हर साल बाहर भेजा जाता है। यहां भावनगर गोण्डाल-जूनागढ़-पोरबन्दर रेलवे चलती है। जेतलसर-राजकोट रेलवेकी भी एक शाखा है, इन दोनों में रियासत हिस्सादार है।

काठियावाड़में गोण्डाल प्रथम श्रेणीका जैसा रा[illegible] है। वार्षिक आय प्रायः १५ लाख है। उसमें १२ लाख मालगुजारी आती है। यह राज्य ब्रटिश गवर्नमेण्ट, बड़ोदाके गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको ११०७२१)

रु० कर देती है। पांच मुनिसपालिटियां हैं।

२ बम्बईकी काठियावाड़ पोलिटिकल एजेन्सीके गोण्डाल राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २१° ५७' उ० और देशा० ७०° ५३ पू०में गोण्डाली नदीके पश्चिम तट पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १८५८२ है। गोण्डालसे राजकोट आदि कई स्थानोंको अच्छी सड़क लगी है। यहां रेलवे ष्टेशन भी है।

गोण्डिया—मध्य प्रदेशके भण्डारा जिलेकी तिरोरा तहसील का एक गांव। यह अक्षा० २१° २८' उ० और देशा० ८०° १३' पू०में बङ्गाल नागपुर रेलवे पर पड़ता है। यहां सातपुरा-रेलवेका जङ्कशन है। जन संख्या कोई ४४५७ होगी। गोंडियेमें दूसरे जिलोंसे कितना ही माल चालानके लिये आ आ करके इकट्टा होता है। सप्ताहमें अनाजका बड़ा बाजार लगता है। हिन्दी पाठशाला स्थापित है।

गोत (हिं० पु०) १ गोत्र, कुल, वंश, खानदान। २ समूह, जत्था।

गोतम (सं० पु०) गोभिर्ध्वस्तं तमो यस्य, बहुव्री०। पृषोदरादिवत् साधु। १ एक मुनि, गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि महाभारतमें इस नामकी व्युत्पत्तिके विषयमें लिखा है कि इनके शरीरके तेजसे समस्त अन्धकार नष्ट हुवा जान कर इनका नाम गोतम पड़ा। वायुपुराणमें लिखा है कि इन्होंने श्वेतवराहकल्पमें ब्रह्माके मानसपुत्ररूपसे जन्म ग्रहण किया था। (वायु गया० २ अ०) इन्होंने न्यायदर्शन प्रणयन किया है। न्याय देखो। (पु० स्त्री०) १ अतिशयेन गौः गो-तम। अतिशय जड़, भारी जड़। २ बुद्ध भेद।

गोतमस्तोम, १ सूक्तविशेष। २ एक प्रकारका यज्ञ।

गोतमस्वामिन् (सं० पु०) जैन-धर्मावलम्बी एक ब्राह्मण। ये तीर्थङ्कर महावीरस्वामीके एक प्रधान गणधर थे, इनका दूसरा नाम इन्द्रभूति भी था। भारतके नाना स्थानोंमें तथा सम्मेदशिखर पर्वत पर इनकी सुबृहत् पाषाण-मूर्तियां देखनेमें आती है। इनकी मूर्त्ति कर्णाट और तवार उपकूलमें ही अधिक है। महिसुरस्थ श्रावण-गोलामें ५६ फीट, जैनूरमें ३५½ फीट और कर्कोला स्थानमें ४१⅚ फीट ऊंची गोतम स्वामीकी पाषाण मूर्ति बनाई हैं। गौतम गणधर देखो।

गोतमान्वय (सं० पु०) गोतमोऽन्वयो वंशप्रवर्त्तको यस्य बहुव्री०। मायादेवीके पुत्र शाक्यमुनि।

गोतमी (सं० स्त्री०) गोतमस्य भार्या गोतम-ङीष्। गोतम-ऋषिकी स्त्री अहल्या। कृत्तिवासी रामायणमें लिखा है कि अहल्या गोतम ऋषिके शापसे एक शिला हो गई थी, किन्तु वाल्मीक रामायणका मत है कि अहल्या गोतमके शापसे नितान्त कुरूप होकर तपस्या करने लगी थी। तपस्याके बलसे उनका शरीर ज्योतिर्मय हो गया, उस रूपको रामचन्द्रजीने देखा था। (उत्तरकाण्ड)

गोतमीपुत्र (सं० पु०) गोतम्याः पुत्रः, ६-तत्। अहल्याका पुत्र, शतानन्द।

गोतमेश्वर (सं० पु०) गोतम ईश्वरो यस्य, बहुव्री०। तीर्थविशेष। (पद्मपुराण)

गोतार्द—बम्बईमें रेवाकान्ताविभागके मध्यवर्त्ती एक क्षुद्र राज्य यह चार मन्तर्कोंके अधान है। लोकसंख्या प्रायः २२८ है। मालाना आमदनी ४७८) रु० उनमेंसे ३२७) रु० बरोदा गायकवाड़को कर दिया करते हैं।

गोतल्लज (सं० पु०) प्रशस्तो गौः नित्यसमास। उत्तम गौ, सुन्दर गाय।

गोता (सं० पु०) जल आदिमें डूबनेकी क्रिया, डुब्बी।

गोताखोर (अ० पु०) गोता लगानेवाला, डुबकी मारनेवाला।

गोतामार (हिं० पु०) गोताखोर देखो।

गोतिया (हिं० वि०) अपने गोत्रका, गोती।

गोती (हिं० वि०) गोतीय, अपने गोत्रका, जिसके साथ शौचाशौचका संबन्ध हो, भाई बन्धु।

गोतीत (सं० वि०) अगोचर, जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके।

गोतीर्थ (सं० क्ली०) गवां कृतं तीर्थं मध्यपदलो०। १ गोष्ठ, गौ रहनेका स्थान। २ कन्नौजके अन्तर्गत तीर्थविशेष। (भागवत ३।१।२१)

गोतीर्थक (सं० पु०) वैद्यशास्त्रोक्त एक प्रकारकी छेदन प्रणाली। (सुश्रुत) फोड़े आदि चीरनेकी एक तरकीब जिसके अनुसार कई छेदों वाले फोड़े चीरे जाते हैं।

गोतैल (सं० क्ली०) गोवशा, बांझ गाय।

गोत्र (सं० पु०) गां पृथिवीं त्रायते रक्षति गो-त्रै-क। आतोऽनुपसर्गे कः। पा० ३।२।३। १ पर्वत, पहाड़।

"नाद्य' नदुनद्यो नान्तु गोत्रा नामस्थि संहति:।" (भाग० २।६।१९)

(क्लो०) गवते शब्दायतेऽनेन गु करणे त्र। ग-ष्ट्रंत्र पीत्र पौत्र यमि मदि चादिभा ष्ट्र उण् ४।१६६। २ आख्या, नाम। ३ सम्भावनीयबोध, वह ज्ञान जिसमें कुछ सन्देह हो। ४ कानन, वन, जङ्गल। ५ क्षेत्र। ६ मार्ग, सड़क। (मेदिनी) ७ राजाका छत्र। (हेम) ८ सङ्घ, समूह। ९ वृद्धि, बढ़ती (शब्दचन्द्रिका) १० धन, वित्त, दौलत। (विश्व) गवते शब्दायते पूर्वपुरुषान् यत्, पुत्र। (भरत) ११ बन्धु, भाई। १२ एक प्रकारका जातिविभाग। १३ वंश, खानदान। संस्कृत पर्याय—सन्तति, जनन, कुल, अभिजन, अन्वय, वंश, अन्ववाय, सन्तान। (अमर०)

अति प्राचीन कालसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंमें गोत्रका नियम चला आ रहा है। प्राचीन आर्य-शास्त्रोंकी पर्यालोचना करनेसे जाना जाता है कि, पहिले गोत्रका नियम नहीं था। क्रमशः मनुष्यसंख्या वृद्धि होते रहनेसे, आर्य ऋषियोंने गोत्रनियम बनाये और उसी समयसे आर्योंमें गोत्र नियम चला आ रहा है। दि० जैन शास्त्रोंमें ऐसा पाया जाता है कि, प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभ देवके पुत्र भरत चक्रवर्तीने जाति आदिके नियम चलाये थे। (आदिपुराण) हिन्दुओंको जात कर्मसे लेकर अन्त्येष्टि तक प्रत्येक कार्यमें ही आत्मपरिचय देते समय गोत्रका उल्लेख करना पड़ता है। गोत्रका उल्लेख करते समय यदि कुछ भूल या गड़बड़ होनेसे किसी भी कार्यकी सिद्धि नहीं होती। इसके सिवा विवाहोंमें भी गोत्रकी जरूरत पड़ती है। मनु आदि स्मृतिप्रणेताओंने; बौधायन, आपस्तम्ब आदि सूत्रकारोंने और मत्स्य आदि पुराणकारोंने समान गोत्रोंमें विवाह निषिद्ध बतलाया है। भ्रम या और किसी कारणसे यदि सगोत्रमें विवाह हो जाय तो नियमानुसार प्रायश्चित्त करना पड़ता है। प्रायश्चित्तके बाद उस स्त्रीसे माताके समान व्यवहार करना पड़ता है। कभी भी उस स्त्रीको ग्रहण करना उचित नहीं और स्त्रीको भी उस पुरुषको पुत्रवत् देखना चाहिये। इस लिए प्रत्येक हिन्दूको अपने गोत्रके विषयमें खूब ज्ञान रखना चाहिये।

मेदिनी और अभिधान-चिन्तामणि आदिके कर्त्ताओंके मतसे गोत्र शब्दका अर्थ सन्तान या वंश है। इस देशके लोग 'मेरा शाण्डिल्यगोत्र है', 'मेरा गोत्र काश्यप है', 'मैं गर्ग गोत्रका हूं' इस प्रकार भिन्न भिन्न गोत्रोंका उल्लेख करके अपना परिचय दिया करते हैं।

बौधायन, आपस्तम्ब, सत्याषाढ़, कुटिल, भरद्वाज, लौगाक्षि, कात्यायन और आश्वलायन आदिके रचे हुए श्रौतसूत्र, मत्स्यपुराण, महाभारत आदि इतिहास और मनु आदिको रची हुई स्मृतियोंमें थोड़ा-बहुत गोत्रका कथन मिलता है। इनमें परस्परमें कुछ विरुद्ध कथन भी है, जिनका वास्तविक अर्थ सर्वसाधारणके समझमें नहीं आ सकता है। इसलिए और शास्त्रोंकी आलोचनाकी शिथिलता देखकर पण्डितप्रवर पुरुषोत्तमने 'गोत्रप्रवरमञ्जरी' नामका एक संस्कृत ग्रन्थ लिखा था। इसके सिवा धनञ्जयकृत धर्मप्रदीप, बालभट्ट और महादेव दैवज्ञ द्वारा रचित गोत्रप्रवर, विश्वपण्डित कृत गोत्रप्रदीप, अनन्तदेव, आपदेव, केशव, गोवर्द्धन, नारायणभट्ट, भट्टोजी, माधवाचार्य और विश्वनाथदेव रचित गोत्रप्रवरनिर्णय, लक्ष्मणभट्ट कृत प्रवररत्न और गोत्रप्रवरभास्कर तथा कमलाकरकृत गोत्रप्रवरदर्पण नामक कुछ ग्रन्थ भी मिलते हैं। इनमेंसे 'गोत्रप्रवरमञ्जरी' ही सबसे श्रेष्ठ है। इसमें समस्त पुरातन मतोंकी पर्यालोचना और मीमांसा की गई है।

गोत्रकी आलोचना करनेसे पहिले इस बातका भी निर्णय कर लेना चाहिये कि, गोत्र किस चीजका नाम है और उसका लक्षण क्या है? अभिधानके कर्त्ताओंने गोत्रका लक्षण जैसा लिखा है, उसके अनुसार तो गोत्रोंके भेद असंख्यात हो जाते हैं, अर्थात् सब ही अपने अपने पुरखाओंमेंसे किसी एकका नाम लेकर अपने गोत्रका परिचय दे सकते हैं। ऐसा होनेसे तो गोत्रका नियम रहना-न-रहना बराबर हो हो जाता है। लौकिक व्यवहारमें भी ऐसा नहीं पाया जाता, सब ही लोग अति प्राचीनकालसे चला हुआ एक ही नामसे गोत्रका परिचय देते हैं। कोई भी बदल कर दूसरा नाम नहीं कहता। इसलिए यह कहा जा सकता है कि, अभिधानके अनुसार गोत्र व्यवहार नहीं होता, अर्थात् इस गोत्र शब्दसे मामूली तौरसे वंश या सन्तानका बोध नहीं होता (गनेमेण्ट,

"अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्।" (पाणि० ४।१।१६२) पाणिनि ११०७२१)

परिभाषाके अनुसार जाना जाता है कि, पौत्र आदि सन्तानोंका नाम गोत्र है पाणिनीसम्मत अर्थको स्वीकार करने परभी पहिला दोष नहीं छूटता। इसीलिए बोधायन आदि सब ही ग्रन्थकारोंने गोत्र शब्दका दूसरा एक पारिभाषिक अर्थ किया है कि,—

"विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतमः।
अत्रिर्वशिष्ठः कश्यप इत्येते सप्त ऋषयः॥
सप्तानां ऋषीणामगस्त्याष्टमानां यदपत्यं तद् गोत्रम्॥" (१) (बोधायन)

विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ, कश्यप और अगस्त्य इन आठ मुनियोंके पुत्र और पौत्र आदि सन्तानोंमेंसे जो मुनि हो सके हैं, वे ही उससे पूर्ववर्ती और परवर्ती सब होके गोत्र हैं, अर्थात् उन्हींके नामसे उस वंशका गोत्र चलता है।

अतएव विश्वामित्रको सन्तान देवरात आदि विश्वामित्रके गोत्रके हैं और जमदग्निको सन्तान मार्कंडेय आदि जमदग्निके गोत्रके हैं (२)। आश्वलायन-श्रौतसूत्रकी नारायणकृत वृत्तिमें लिखा है कि विश्वामित्र आदि आठ ऋषियोंको सन्तानोंको उनके गोत्र समझना चाहिये। जैसे—जमदग्नि ऋषिके गोत्र वत्स आदि, गौतमके गोत्र आयस्यादि भरद्वाजके दक्ष, गर्ग आदि, (३)। अब बात इतनी ही है कि, बोधायनके "विश्वामित्र" इत्यादि वाक्यमें कश्यप और गौतमका उल्लेख है। इसलिए नारायणकृत वृत्तिको स्वीकार करें तो कश्यप गोत्र और गौतमवंशियोंको गौतम गोत्रीय मानना पड़ेगा। परन्तु प्राचीन समयसे काश्यप गोत्र और गौतमगोत्रका व्यवहार चला आ रहा है। इसके सिवा वशिष्ठ, भरद्वाज आदि वंशमें उत्पन्न लोगोंको यथाक्रमसे वशिष्ठ और भरद्वाज गोत्र कहते हैं।

और फिर कोई कोई कहते हैं कि गोत्र शब्द स्वभावसे ही नपुंसक लिङ्ग है, पूर्वोक्त व्याख्याके स्वीकार करनेसे कहना पड़ेगा कि, विश्वामित्रगोत्र, वशिष्ठगोत्र और भरद्वाजगोत्र इत्यादिमें षष्ठीतत्पुरुष समास होको स्वीकार करना पड़ेगा। व्याकरणके नियमानुसार तत्पुरुष समासका उत्तरपद जो लिङ्ग होगा, समास होने पर भी वह शब्द वही लिङ्ग होता है। तो गोत्रशब्दके नपुंसकलिङ्ग होने पर विश्वामित्रगोत्र आदि शब्द भी नपुंसकलिङ्ग हुए जाते हैं, और "विश्वामित्रगोत्रमहं", "वशिष्ठगोत्रमहं", "भरद्वाजगोत्रमहं" तथा "विश्वामित्रगोत्राणि वयं" इत्यादि का भी व्यवहार किया जा सकता है। परन्तु लौकिक और वैदिक ग्रन्थोंमें ऐसा नहीं पाया जाता। बल्कि विश्वामित्रगोत्रोऽहं, भरद्वाजगोत्रोऽहं और विश्वामित्रगोत्रावयं ऐसा ही देखनेमें आता है। आश्वलायन (१२।१०।१) श्रौतसूत्रको नारायणकृत वृत्तिमें भी "मित्रयुवगोत्रोऽहं, मुद्गलगोत्रोऽहं" ऐसा प्रयोग मिलता है। अतएव बोधायन आदि द्वारा कहे हुए गोत्र लक्षणके "यदपत्यं तद्गोत्रं" इस अंशकी व्याख्या दूसरी तरह माननी पड़ेगी। विश्वामित्र आदि आठ ऋषियोंकी सन्तानोंके गोत्र, विश्वामित्र आदि इस प्रकार होनेसे विश्वामित्रगोत्र, वशिष्ठगोत्र, भरद्वाजगोत्र इत्यादि स्थलमें विश्वामित्रो गोत्रं यस्य—ऐसा बहुव्रीहि समास हो सकता है (४)। बहुव्रीहि समास होनेसे वह शब्द वाच्यलिङ्ग होगा, इस लिये "विश्वामित्रगोत्रोऽहं" इत्यादि लिखनेमें कोई भी बाधा नहीं आती। अगर ऐसा न मानें, तो "भारद्वाजगोत्रस्य अमुकी देव्याः" ऐसा अभूतपूर्व वाक्य भी स्वीकार करना पड़ेगा। परन्तु इस व्याख्याके अनुसार भी गौतमगोत्र और काश्यपगोत्रका व्यवहार किया जा सकता है। यदि उस जगह गौतम

(१) ग्रन्थोंमें बहुत जगह पाठभेद देखनेमें आता है। उनमें जो पाठ संगत और बहुतसे ग्रन्थोंमें मिला है। वही पाठ लिखा गया है। "विश्वकोष कार्यालय" में संगृहीत हस्तलिखित गोत्रप्रवरमंजरी और वाचस्पत्यमें "गोतम" और छपी हुई आश्वलायन श्रौतसूत्रकी वृत्ति और "विश्वकोष कार्यालय" में संगृहीत हस्तलिखित गोत्रप्रवरदर्पणमें "गौतम" पाठ मिलता है; इनमेंसे यहां पर "गौतम" पाठ ही संगत मालूम पड़ता है।

(२) "एतदुक्तं भवति अगस्त्याष्टमसप्तर्षीणां मध्ये यस्यापत्यं ऋषित्वं प्राप्तं तस्यैव गोत्रमुच्यते" (गोत्रप्रवरमंजरी)

"येषां पुत्रपौत्रादीनामृषित्वमुक्तं तत्पूर्वभाविना स्वनाम्नैवाभिधेयं गोत्रमित्यभिधीयते।" (गोत्रप्रवरदर्पण)

(३) "एतेषामपत्यमिति ये सन्तानास्ते सगोत्रमित्युच्यते यथा जमदग्नेर्गोत्रं वत्सादयः तथा गौतमस्यायस्यादयः।" (आश्वलायन १२।१ श्रौत)

४ "अपरे तु विपरीतं गोत्रलक्षणमाहुः। ... अगस्त्याष्टमानां यदपत्यं तद्गोत्रमुच्यते। यथा—देवरातादीनां गोत्रं विश्वामित्रं इति मार्कण्डेयादीनां जमदग्न्यादीनि गोत्राणीति।" (गोत्रप्रवरमंजरी)

इस पक्षमें "यदपत्यं तद्गोत्रं" इस अंशकी संस्कृत व्याख्या ऐसे हो जानी पड़ेगी—अगस्त्याष्टमानां सप्तर्षीणां मध्ये यस्य ऋषेः अपत्यं पुत्रपौत्रादिः यस्य (तत्) तद्गोत्रं स ऋषिः गोत्रं यस्य तत् तद्गोत्रं भवतीति शेषः।

और काश्यप पाठ कर दिया जाय तो कोई गड़बड़ ही न रहे। छपे हुये आश्वलायनश्रौतसूत्रमें और हस्तलिखित गोत्रप्रवरदर्पणमें गोतम पाठ है।

किसीके मतानुसार बौधायनने गोत्रसंग्राहक श्लोकोंमें जिन आठ गोत्रोंका उल्लेख किया है, उसके अतिरिक्त भी बहुतसे गोत्र देखनेमें आते हैं और अन्यान्य ग्रन्थोंमें उनका उल्लेख भी है। इसलिये उस रचनाको उपलक्षण मानना पड़ेगा और बौधायनने लिखा भी है कि—

"गोत्राणां तु सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च।
ऊनपञ्चाशदेवैषां प्रवरा ऋषिदर्शनात्॥"

अर्थात्—गोत्रोंकी कुछ संख्या तीन करोड़ है। व्याख्याकारोंने इस श्लोकका ऐसा अर्थ किया है कि,—वास्तवमें तीन करोड़ गोत्रोंका प्रतिपादन करना—इस वचनका उद्देश्य नहीं है। हाँ, सहस्ररश्मि, सहस्रपाद, सहस्रशीर्षा इत्यादि शब्द जिस प्रकार अनियत संख्याके लिए प्रयोग किये जाते हैं, वैसे ही इसका भी प्रयोग किया गया है। अन्यान्य ग्रन्थोंमें गोत्रोंकी संख्या जितनी लिखी है, वही मान्य है। असलमें बात यह है कि, बौधायन भी उक्त श्लोकमें यह स्वीकार करते हैं कि, इन आठ गोत्रोंके सिवा और भी गोत्र हैं, और इस वचनको उपलक्षण समझना चाहिये। ऐसी अवस्थामें गोतम और कश्यप पाठ होने पर भी कोई हर्ज नहीं, क्योंकि बौधायनने उक्त रचनामें काश्यप और गौतमगोत्र हीका निरूपण किया है। सुप्रसिद्ध काश्यप और गौतमगोत्रका निश्चय अन्यान्य ग्रन्थोंके अनुसार करना पड़ेगा, क्योंकि बौधायनने शाण्डिल्य, सावर्ण आदि दूसरे प्रसिद्ध गोत्रोंकी भांति काश्यप और गौतमगोत्रका उल्लेख नहीं किया।

मञ्जरीके कर्त्ता पुरुषोत्तम शेषोक्त व्याख्याको स्वीकार ही नहीं करते। उनके मतसे यदि वह व्याख्या स्वीकार कर ली जाय तो बौधायनके उस वचनसे यह समझा जाता है कि वे सिर्फ आठ ही गोत्र मानते हैं और फिर "गोत्राणां तु सहस्राणि" इस वचनसे बहुतसे गोत्रोंका उल्लेख करते हैं, इसलिए शेषोक्त व्याख्या स्वीकार कर ली जाय तो स्वयं बौधायनके वचनोंमें ही परस्पर विरोध आता है (१)। [illegible] अन्तकी व्याख्या असङ्गत ही प्रतीत होती है। किसी तरह "यदपत्यं तद्गोत्रं" इस अंशकी वैसी कूट व्याख्या कर लो तो क्या, परन्तु रघुनन्दन और धनञ्जय आदि ग्रन्थकारधृत "एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यन्ते" इत्यादि वचनोंका अन्य किसी प्रकारकी व्याख्या हो ही नहीं सकती। इनके पुत्रपौत्र आदि सन्तानोंको उनके गोत्र समझना चाहिये। ऐसी दशामें यही व्याख्या स्वीकार करनी पड़ेगी।

"बृहस्पतिं गौतमञ्च संवर्त्तमृषिमुत्तमम्।
उतथ्यं वामदेवञ्च अगस्त्यमृषिमं तथा॥
इत्येते ऋषयः सर्वे गोत्रकाराः प्रकीर्त्तिताः।
तेषां गोत्रसमुत्पन्नान् गोत्रान्वै निबोध मे॥" (मत्स्यपु० ८६।५ ६)

यहां पर जो "तेषां गोत्रसमुत्पन्नान्" ऐसा पाठ है, उससे साफ ही मालूम हो रहा है कि, गोत्रप्रवर्त्तक ऋषियोंके साथ गोत्र शब्दका षष्ठी समास होता है। आश्वलायनके वृत्तिकार नारायण, मञ्जरीकर्ता पुरुषोत्तम और दर्पणकार कमलाकर आदिके मतसे गोत्र शब्दका अर्थ अपत्य वा सन्तान है। गोत्रप्रवर्तक ऋषियोंके वंशधरोंके साथ गोत्र शब्दका अभेद अन्वय होता है। परन्तु ऐसा होनेसे तो "कश्यपगोत्रस्य श्रीमतया अमुकीदेव्याः" यह वाक्य भी बन सकता है। इसके अलावा "स गोत्राद् भ्रश्यते नारी विवाहात् सप्तमे पदे। पतिगोत्रेण कर्त्तव्या तस्याः पिण्डोदकक्रियाः॥" ऐसा भी देखनेमें आता है। ऐसी दशामें गोत्रप्रवर्त्तक ऋषियोंके वंशधरोंके साथ गोत्र शब्दका भेदान्वय (अर्थात् पतिका गोत्र यह है) है, वह भी स्वीकार करना पड़ेगा। इसलिए इन विरोधोंकी मीमांसाके लिए उभय लिङ्ग स्वीकार कर लिया जाय तो झगड़ा ही निपट जाय।

१-गोत्र शब्द नपुंसकलिङ्ग है, उसके तीन अर्थ हैं—१म वंश, कुल। * २य वंश परम्परा प्रसिद्ध आदि पुरुष †। ३य अपत्य, सन्तान, पुत्र पौत्रादि ‡। २-गोत्र

---

(१) "अत्र ब्रूमः बौधा[illegible] व्याख्येयं, "गोत्राणान्तु सहस्रा-णीत्यवचनस्योक्ते गोत्राणि [illegible] कानि कानीत्याकाङ्क्षायां विश्वा-मित्रजमदग्न्यादीनागस्त्यान्तानामष्टौ गोत्राणीत्युक्तेः पूर्वापरविरोधादसङ्गतं स्यात् [illegible]दीयपक्षे तु नास्ति कश्चिद् दोषः." (गोत्रप्रवरमञ्जरी)

* 'गोत्रं चाभिजनः कुलं' (अमर)। 'गोत्रा भूगवार्थागोत्रः शैले गोत्रं कुलाख्ययोः।' मेदिनी।

† "अतएव विज्ञानेश्वरः गोत्रं वंशपरम्पराप्रसिद्धं" (गोत्रप्रवरदर्पण)। "गोत्रं वंशपरम्पराप्रसिद्धमादिपुरुषं ब्राह्मणरूपं।" (शब्दकल्पद्रुम)

‡ "एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यन्ते।" (धनञ्जयकृत धर्मप्रदीप) "अपत्यं पुत्रपौत्रप्रभृतिगोत्रम्"। (पा० ४।१।९२)

शब्द पुत्रादिकी भांति उभय लिङ्ग है, विशेष्यके अनुसार अपने लिङ्गको छोड़ कर स्त्रीलिङ्ग वा पुंलिङ्गमें व्यवहृत होता है। (९) कर्मकाण्डमें जिस वाक्यादिकी रचना करनी पड़ती है, उसमें द्वितीय गोत्र शब्दका ही प्रयोग होता है। इसके अतिरिक्त दूसरी जगह अपनी इच्छानुसार कोई भी शब्दका प्रयोग किया जा सकता है। इस अवस्थामें किसी प्राचीन शास्त्रमें विरोध नहीं पड़ता।

गोत्र कितने हैं? प्राचीन मुनि वा ऋषियोंमेंसे किन किनके नामसे गोत्र चले हैं? इन विषयोंका निरूपण प्राचीन शास्त्रों और संग्रह ग्रन्थोंकी ही आराधनासे करना पड़ेगा। परन्तु सम्यक् अनुशीलनके अभावसे अथवा लेखकोंके प्रमादसे उन मूल ग्रन्थोंका तथा संग्रह-ग्रन्थोंका पाठ इतना बिगड़ गया है कि उसके वास्तविक पाठका पता लगाना असाध्य है। इसी लिए संग्रहकार पुरुषोत्तमने अपने मञ्जरी ग्रन्थमें आपस्तम्ब आदिके मत को ले कर उनके परस्परके विरोध मिटानेका बहुत प्रयत्न किया है। उनके बादके संग्रहकार कमलाकरने अपने गोत्रप्रवरदर्पणमें ऐसा लिखा है, "कात्यायनापस्तम्बादि सूत्रभाष्यालोचनेन न्यूनाधिक्यभावात् गोत्राणां प्रवराणाञ्च गणसंख्यास्वरूपसंख्याप्रवरविकल्पवादिभिर्विसम्वादाच्च सर्वसूत्रपुराणोपसंहारेण निर्णयः कार्य इत्युक्तं भवति मञ्जर्याम्।" अर्थात् पुराणादि सब ग्रन्थोंका सामञ्जस्य रखते हुए ही गोत्र निर्णय करना चाहिये।

मत्स्यपुराणमें १८५ से २०२ अध्याय तक गोत्र और प्रवरका निरूपण किया गया है। उसमें "गोत्रकारान् ऋषान् वक्ष्ये" इत्यादि लिख कर पीछेसे जिन ऋषियोंका नाम लिखा है, शायद वे ही (मत्स्यपुराण-अभिप्रेत) गोत्रोंके नाम हैं। यद्यपि यह कल्पना की जा सकती है कि किसी समय उन नामोंके गोत्र प्रचलित थे, तथापि यह मानना पड़ेगा कि, बहुत दिन पहले ही उन गोत्रोंका लोप हो चुका है, अब उनका चिह्न तक नहीं मिलता।

(९) "लोकव्यवहारेषु त्रिलिङ्गत्वोभयमात्र गोत्रशब्दस्य उभयलिङ्गत्वादविरुद्धं पुत्रशब्दवत् यथा वशिष्ठस्य पुत्र कुण्डिन इति तथा वशिष्ठगोत्र कुण्डिन इति।" (गोत्रप्रवरमञ्जरी) पुरुषोत्तमकी इस लिपिके सिवा और कहीं उभयलिङ्ग गोत्र शब्दका प्रमाण नहीं मिलता।

बोधायन आदि सूत्रकारोंने कुछ गोत्रगण और प्रवरगणका निरूपण किया है। स्मृत्यर्थसार आदि ग्रन्थोंके मतानुसार ऐसा मालूम होता है कि, गोत्रगणमें जिन जिन ऋषियोंके नाम हैं, उन उन नामके एक एक गोत्र भी हैं। जैसे—वत्स, विद, आर्ष्टिषेण, यस्क, शुनक, मित्रयुव और वैन्यभृगुके ये सात गोत्रगण हैं। इस नामसे ये सात गोत्र और इनके गणमें अन्यान्य दूसरे नामके भी गोत्र प्रचलित हैं। इसी प्रकार अत्रिगोत्रगण और विश्वामित्रगोत्रगण आदि भी निरूपित हैं। परन्तु वे सब गोत्र अब प्रचलित नहीं।

धनञ्जयकृत धर्मप्रदीपमें गोत्रप्रवर्त्तक ऋषियोंके कुछ नाम लिखे हैं। वे इस प्रकार हैं—१ जमदग्नि, २ भरद्वाज, ३ विश्वामित्र, ४ अत्रि, ५ गोतम, ६ वशिष्ठ, ७ काश्यप, ८ अगस्त्य, ९ सांकालीन, १० शौनल्य, ११ पराशर, १२ वृहस्पति, १३ कात्स्वन, १४ विष्णु, १५ कौशिक, १६ कात्यायन, १७ आत्रेय, १८ कण्व, १९ कृष्णात्रेय, २० साङ्कृति, २१ कौण्डिन्य, २२ गर्ग, २३ आङ्गिरस, २४ अनावृकाक्ष, २५ अव्य, २६ जैमिनि, २७ वृद्धि, २८ शाण्डिल्य, २९ वात्स्य, ३० आलम्बायन, ३१ वैयाघ्रपद्य, ३२ घृतकौशिक, ३३ शक्ति, ३४ काण्वायन, ३५ वासुकि, ३६ गौतम, ३७ शुनक और ३८ सौपायन। बोधायन, आपस्तम्ब और आश्वलायन आदि सूत्रकारों और पौराणिकोंने, पहिले कुछ गोत्रकाण्डोंका उल्लेख करके फिर उनके कुछ गोत्रगणोंका भी उल्लेख किया है। एक गोत्रगणमें जितने गोत्रोंका उल्लेख किया गया है, उनके प्रवर समान हैं। जैसे-भृगुगोत्रकाण्डके आर्ष्टिषेण गोत्रगणके अन्तर्गत जितने गोत्र हैं, उन सबहीके भार्गव, च्यवन, आप्नवान्, आर्ष्टिषेण और आनूप ये पांच प्रवर हैं। (आर्ष्टिषेणानां भार्गवच्यवनाप्नवानार्ष्टिषेणानूपेति। आश्व० श्रौ० १२।१०।८) प्रवरका लक्षण जाननेके लिए प्रवर शब्द देखो। जिसप्रकार समान गोत्रमें विवाह निषिद्ध है, उसीप्रकार समान प्रवर होने पर भी विवाह निषिद्ध है।

बोधायन आदिने जिन जिन गोत्रगणोंका उल्लेख किया है, उनके नाम आदि नीचे लिखे जाते हैं—

भृगुगोत्रकाण्डमें वत्स, आर्ष्टिषेण, विद, यस्क, मित्रयुव, वैन्य और शुनक—इन सात गोत्रगणोंका उल्लेख है। बोधा-

यनने इनके प्रत्येक गणके अन्तर्गत जितने गोत्र हैं, उन सबका निर्णय किया है। इस लिए यहां सिर्फ बौधायनके मतानुसार गोत्रगण लिखे जाते हैं।

वत्स, मार्कण्डेय, माण्डुकेय, माण्डव्य, कार्षायण, दार्भायण शार्कराच, देवलायन, शौनकायन, माधुकेय, वार्षिक, शाक, प्रभायण, पैल, पैलायन, वाध्र्यकि, वाह्यकि, वैश्वानरि, वैहिनरि, विरोहिन, वाह्य, लुब्ध, गोष्ठायन, टिकी, कारश, क्षुण, वादभूतक, ऋतभाग, रौहिनायन, जानायन, पाणिनि, वाल्मीकि, स्थौलपिण्डि, शातन, जिह्विनि, सावर्णि, वाक्यायन, वाल्नायन, मौद्गति, मण्डविष्टि, हस्ताग्नि, मार्कायण, कात्यायण, वायकव, वायनो, शाकारव, कारवच, चान्द्रमस, गाङ्गेय, नौर्धेय, याज्ञिय, वाहु, मित्रायण, आपिशलि, वैष्टपुरेय, लौहितायन, ...नसृक्त, मालायन, शारदतायन, रजतशाह, वात्स्य और वात्स्यायन—...गण हैं। इनके प्रवर इस प्रकार हैं,—भार्गव, च्यवन, आप्नवान, और्व और जामदग्न्य। (बौधायन १ प्रवराध्याय)

२ विद, शैल, अवट, प्राचीनयोग्य, अभयदि, काण्डरथि, वैनर्माय, पुलस्ति, आर्कायन, ताग्नायन, क्रौञ्चायन और फामन—इनको विदगण कहते हैं। इनके भी पांच प्रवर हैं, भार्गव, च्यवन, आप्नवान, और्व और वैद।

(बौधायन, ४ प्रवराध्याय)

३। आर्ष्टिषेण, रथि, कादम्बायन, कौलायन, चन्द्रायण, पौढ़कलायन, सिद्ध, सुमनायन, गोरभी और आश्व—ये आर्ष्टिषेणगण हैं। इनके प्रवर भी पांच प्रकारके हैं—भार्गव, च्यवन, आर्ष्टिषेण, आप्नवान और आनूप। (बौधायन ५ प्रवराध्याय)

४ यस्क, मौनसूक, वाधूल, वर्षपुष्प, भागलेय, राजितायन, भागनेय, उद्दिन, भास्कर, रैवतायन, वार्फान, माध्यमेय, वार्मि, काशाम्बेय, क्राविन्य, सात्वकि, चित्रसेन, भागुरि और कापिशायन इतने यस्कगण हैं। इनके प्रवर तीन हैं,—भार्गव, वैतहव्य और साचेतस।

(बौधायन ६ प्रवराध्याय)

५ मित्रयुव, रौचायण, सापिण्डित, सुरभिनि, माहा महावाह्या, ताचायण, उच्चायण, वाजायन, मोजाधय, कौषतवायन—इनको मित्रयुवगण कहते हैं। इनके भी तीन प्रवर हैं,—भार्गव, दैवदास और वाध्र।

(बौधायन ७ प्रवराध्याय)

६ शुनक, गृत्समद, यज्ञपति, सौगन्धि, खार्दमायण गाभारण, मत्स्यगन्ध, श्रोत्रिय और तैत्तिरीय—इनको शुनकगण कहते हैं। इनका एक ही प्रवर है—शुनक अथवा गार्त्समद। (बौधायन ८ प्रवराध्याय) कात्यायनके मतानुसार इनके दो प्रवर हैं,—एक भार्गव और दूसरा गार्त्समद। आश्वलायनके मतसे इनके प्रवर तीन हैं,—१ शौनक, शौनहोत्र और गार्त्समद। (आश्व० श्रौ० १२।१०।१३)

७ वैन्य, पार्थ और वाल्कल—ये वैन्यगण कहलाते हैं। आश्वलायनके मतसे—वैन्यकी जगह 'श्येत' पाठ भी मिलता है। (आश्व० श्रौ० १२।१०।११) इनके प्रवर तीन हैं—भार्गव, वैन्य और पार्थ। (बौधायन प्रवरा०)

गौतम गोत्रकाण्ड—

१। आयस्य, ओशिचेय, मिढ़रथ, सात्यकि, स्वैदेह, कौमारवत्य, तौड़ि, दार्भि, ...र्ति नत्यमुग्नि, का... ...ाह्य, वोवर, नैकरि, तैषिकि, किलालि, करुणि, कठौक ...मि और कंचि, इनको आयस्यगौतमगण कहते हैं। आङ्गिरस, आयस्य और गौतम ये तीन इनके प्रवर हैं।

(बौधायन गौतमकाण्ड १ अ०)

२। शरद्वन्त, अभिजित, रौहिण्य, चीरकरम्भ, सौमुचि, सौयागुण, कौपिन्दु, रहुगण, गणि और माषण्य—ये शरद्वन्तगौतमगण कहलाते हैं। इनके भी प्रवर तीन हैं,—आङ्गिरस, गौतम और शरद्वन्त। (बौधायन गौ० का० २ अ०)

३। कौमण्ड, मामन्दु, ईषणा, यासुराच, कार्ष्ठरषि और आञ्ज्यन—ये कौमण्ड-गौतमगण हैं। इनके पांच प्रवर इस प्रकार हैं,—आङ्गिरस, औतथ्य, काक्षिवत्, गौतम और कौमण्ड। (बौधायन गौ० का० ३ अ०)

४। दीर्घतमागणके भी पांच प्रवर हैं,—आङ्गिरस, औतथ्य, काक्षिवत्, गौतम और दीर्घतमस्।

(बौधायन गौ० का० अ०४)

५। औशनस, आदित्य, अनुपप्रशस्त, सुरूपाच, महोदर, विकन्दत, सुवुधा, निहत, इनको औशनसगण कहते हैं। इनके तीन प्रवर हैं—आङ्गिरस, गौतम और औशनस।

(बौधायन गौ० का० ५ अ०)

६। कारेणपालि, खैतोय, गोजिष्ठ, यौदञ्ज्ञायन

माधुहार और अजगन्धि—इनको कारिणपालिगण कहते हैं। इनके प्रवर तीन हैं,— आङ्गिरस, गौतम और कारिणपालि। (बौधायन गौतम काण्ड ६ अ०)

भरद्वाज-गोत्रकाण्ड—

१। भरद्वाज, क्षाम्यायण, मङ्कड़ा, देवश्वानुदुवहव्या, प्रगयोमि, सौमायन, तैटेह, अक्ताश्वा, योचाभूरि, पारिणहेय, केश्रवेय, इषुवत्, वौदयेधि प्रवाहणेय, कम्योण, स्तम्बि, संयोय, प्रकृतपर, हैरि, मैद्ययद्रुग, क्षारि, ग्रीवि, औपमि, वायाक्षि, भेद, अग्निरेह्याघट, गौरि, वायवि, कर्ण, धाक्ष, मानविय, कङ्कवमेका, खोज्वलि, खारुड़ादि, तरुङ्क्य, भद्रामय, सौरभ, मैत्र्यकेय, कौण्डायन, कौण्डलप्य, प्रवाहणेय, वल्भीकि, कड़ाङ्गपथ, शालाहनि, वेदवेलायण, नृत्यायन, शालालय, शार्दूलि, ब्रह्मस्तम्ब, अग्निस्तम्ब, वायुस्तम्ब, सूर्य्यस्तम्ब, सोमस्तम्ब, विष्णुस्तम्ब, यमस्तम्ब, इन्द्रस्तम्ब, आपस्तम्ब तथा अन्यान्य स्तम्बान्त शब्द, आरण्याकि, सिन्धुसौगन्धि, शिखायन, आत्रेयायण, कुत्ता, कौकाक्षि, पतैनैतृति, दार्भिस्यामेय, मश्वकाथ, काकणायन, कारुपथि, कारिषायण और कारत्म इन सबको भरद्वाजगण कहते हैं। इनके प्रवर तीन प्रकार हैं—आङ्गिरस, वार्हस्पत्य और भरद्वाज।

(बौधायन भरद्वाज गोत्र काण्ड)

केवलाङ्गिरस गोत्रकाण्ड—

१। हरित, शङ्खोदन, सौभग, लोमरव, मल्लायु, नावोदर, नैमिश्र, आमिश्रोदन, कौतप, कारिषि, कौलि, यौलि, पौण्डल, माधूय, साधातु और माण्डकारि इनका गण हरित है। इनके प्रवर तीन हैं-आङ्गिरस, आम्बरीष और यौवनाश्व।

२। कद्रु, योपमकरायण, वाल्कल, पौलहानि, लोमाञ्जि माञ्जि, सौधिगान्ध, विजिवाजि और वाजश्रवस, ये सब कद्रुगण हैं। इनके तीन प्रवर हैं—आङ्गिरस, आजमीढ़ और काद्रव।

३। रथीतर, हस्तिदासि, कात्त्यायण, नौतिरक्षु, शैलालि, भिलेभि, लिड़ायन, सावहव, मैत्रावाह और हैमनाबाद—इनको रतिगण कहते हैं। इनके भी प्रवर तीन हैं—आङ्गिरस, वेरूप और रथीतर।

४। विष्णुवृद्ध, शटामरण, भद्राण, मद्राण, वादायन, गल्यप्रायण, धात्यकि, सात्यकायन, नेतुण्ड, सुतर, भाहल्य और देवस्थानो—इनको विष्णुवृद्धगण कहते हैं। ३ प्रवर ये हैं—आङ्गिरस, पौरकुत्स और त्रासदस्य।

५। सङ्कृति, मलक, पौलस्तण्डि, शम्बशैभव, तारक, आधारि, ग्रीवाशिषय, औतायन, रायग्नायन, आग्नापि और पूतिमाष—ये सब सङ्कृतिगण हैं। इनके ३ प्रवर—आङ्गिरस, गौरवीत और सांकृत्य हैं।

६। कपि, वैतल, अनाश्व सायन, पतञ्जल, अन्तरस्विन, ताण्डिन, आम्भोज, सिनाङ्काश, स्वनाङ्कर, शिखंडायन, आमोषितकि, सागमह और वौष्ठि—इनको कपिगण कहते हैं। इनके आङ्गिरस, आमहीय और उरुक्षयस ये तीन प्रवर हैं। (बौधायन)

अत्रिगोत्रकाण्ड—

१। अत्रि, छान्दादि, पौष्टिका, माहुलय, नेपाक्करा, लाक्कनाकि, शोणभावा, गौरिग्रीव, योग, विशिष्ठिरा, शिशुपाल, कृष्णात्रेय, गौरात्रेय, अरुणात्रेय निनात्रेय श्वेतात्रेय, महात्रेय, पालियेता, गेयरामरथि, वैतभाव, सौद्रेय, कौद्रेय, गोपवत्य, काल्लायचय, अनिल्लायन, आनङ्गि, मानङ्गि, सौरङ्गि, गौरङ्गि, पुष्पय, सैव्य, साकेतायन भारद्वाजायन और इन्द्रातिथि—इनको अत्रिगण कहते हैं। इनके प्रवर तीन प्रकारके हैं,—आत्रेय, आर्चनान और आनमश्याव।

२। वाभ्रुतकगणके तीन प्रवर ये हैं,—आत्रेय, आनसश्याव और वाभ्रुतक।

३। गविष्ठिरगणके तीन प्रवर—आत्रेय, आर्चनान और गविष्ठिर।

४। मुद्गल, व्याशि, संधि, आरणाक्ष, बोधाक्ष, गविष्ठिर, वैतवाह, शिविषय शालिमन, गारिति, गारकि और वायवन इनको मुद्गलगण कहते हैं। इनके भी तीन प्रवर हैं-आत्रेय, आर्चनान और मौद्गल्य।

(बौधायन, अत्रिगोत्रकाण्ड)

विश्वामित्रगोत्रकाण्ड—

१। कुशिक, पर्णजंघ, वारकय, औदलि, मागि, बृहदग्नि, वानर्विरा, यज्ञिरापद्दाधा, कामलका, वर्द्धकथा, चिकि, ताल, मकरायण, शालङ्कायन, शाङ्गायन, लौक, गौर, सौगस्ति, यमदूत, अम्रभिव, शनवकायन,

चौबल, जाबालि, याज्ञवल्क्य, उपगहाटवलि, सौसुतया, औपदहन्य, उदम्भरि, भाष्यग, श्यामेय, चैत्रेय, वला, मयूराम, शौश्रताशत्रि, नव, सयस्तायन, तानूत, काम्यान्तरयच्य, कालि और उत्सरि। इनको कुशिकगण कहते हैं। इनके तीन प्रवर हैं,—वैश्वामित्र, अष्टक और लोहित।

२। रोत्तक, स्वौदहल और रेवग—इनके तीन प्रवर ये हैं,—वैश्वामित्र, रोत्तक और रेवण।

३। वैश्वामित्र, दैवरात, श्रवस, दैवतवस, भितिज्याम, कारण और काकायनिन्—इनके तीन प्रवर ये हैं—विश्वामित्र, दैवस्रवस और देवतवस।

४। अज, माछ्य और मधुच्छन्द—इनके तीन प्रवर इस प्रकार है—विश्वामित्र, मधुच्छन्द और मार्जात।

५। अघमर्षण गोत्रगणके तीन प्रवर ये हैं,—विश्वामित्र, अघमर्षण और कौशिक।

६। इन्द्रकौशिक गोत्रगणके दो प्रवर हैं,—विश्वामित्र और इन्द्रकौशिक। (बौधायन विश्वामित्र-गोत्रकाण्ड)

काश्यपगोत्रकाण्ड—

१। काशप, आङ्गिरस, भारद्वाज, एतिसायन, भृत्य, वैशिप्रा, धूर्मायन, साम्य, धर्मायण, औदबुच्च, प्रग्रायण, पैधकि, प्राचर्य, हृद्रोग, आतप, पाञ्चायतिक, नैयातिक, मामसि, मासरि, सावचि, सायस्य, आस्तवायन, छागव्य, सानि, स्थपर्काशि, वार्षि, औपव्य, लाच्चण, क्रोष्टाज्ञोव, खाड़ायन, रोहितायन, मितकुम्भ, पिङ्गाच्चि, मारायण, पचवर, कर्णेय, कौषीतकी, धूमलहायन, सुरा, गौरिवायन, महाचक्रेय, यैञ्चिनसा, पाणस्पाणि, षगण, दाच्चपाणि, भालन्दन, माङ्गमित्रेय, हरित्या, जारमात्य, औरमाणिश, विश्रावस, वैशम्पायन, खैरकि, काशलि, उत्कायनि, मार्जनायन, कांसलायन, देवहोता, मूंचि, रभि, भागुरि, पथिकायन, गामायन, हिरण्यरश्मि, अग्निदेवी, सौशल, आविश्रेय, सुश्रुतदला, मन्वित, वैकर्णि और स्थूलारिन्दम—ये सब निध्रुवगण हैं। इनके तीन प्रवर इस प्रकार हैं—निध्रुव, आपसार और काशप।

२। रेभगोत्रगणके तीन प्रवर हैं—काशप, आपसार और नैध्रुव।

३। शाण्डिल्य, पाचक, वायिक, ओदमेध्या, सौदान, सावचस, कारिय, कौकण्ठकि, तैत्ति, माहकि, बहोदकि, कोषि, मोञ्जायन, जाणवंश, खर्वायण, गावभाव, सभालि, गोभिल, वदायन, वात्स्यायन, बह्लदरि, भागुरि, खादंतोमुख, हिरण्यबाहु, तैदेह, गोपुला, वाक्यष्ठा, जालन्धरि और धन्वन्तरि, इनको शाण्डिल्यगण कहते हैं। इनके काशप, आपसार और देवल ये तीन प्रवर हैं।

४। लौगाच्चि, दाभपग, मैत्रवादि, पह्लववादि, हषाम्बुचि, तथाकलि, कसपात, कायनितावस्त, विरोधकि, कोनामि, सौलय, मैति, किष्टि, भरोनिष्टि, चैरत्ति, बौप्यन, पौत्रकालक, चय और जप, ये सब लौगाच्चिगण कहलाते हैं। इनके काशप, आपसार और वसिष्ठ—ये तीन प्रवर हैं। (बौधायन काश्यपगोत्रकाण्ड)

वशिष्ठगोत्रकाण्ड—

१। वैतनकि, बाहरकि, मारग, गौरिध्वंश, आश्वलायन, कपिष्ठ, ······मौचि,······वाह्यकायनि, गार्यनि, कौशायन, मुन्दहरित, सौपवसायन, आनन्तायन, पर्णव्यायन, पणिवाङ्क, देवन, गौरवाश्म, वाहव्यथि, अवाकि, वश्वपाय, पूतिमाष और सप्रावन—ये वैतानिकगोत्रगण हैं। इनका प्रवर सिर्फ एक ही है,—वाशिष्ठ।

२। कुण्डिन, लोहायन, युग, कौक्रीका, माङ्गनिन्, पेटक, नवयि, हिरण्याच्चयन, पैप्यनादि, भोज्याच्चि, मध्योटिन, स्यान्ति और शौपामिन्, इनको कुण्डनगोत्रगण कहते हैं। इनके प्रवर तीन हैं—वशिष्ठ, मैत्रावरुण और कौण्डिन्य।

३। पराशर, कद्रुषि, वाजि, वामिति, वेमतायन और गौराणि, इनको कृष्णपराशर, प्ररोहि, वेकलि, प्राच्चि, कौमुदि और हर्षवाश्वि, इनको गौरपराशर तथा काम्पायनि, गोप्रायण, स्याति और वारुणि, इनको अरुणपराशर कहते हैं। भानुकि, राजानि, क्यानहायन, कौकुलेय और क्रैमथायो, इनको नीलपराशर तथा कृष्णाजिन, कपिमुख, श्वाश्यापायन, श्वेतमुखि और पौष्करसादि इनको श्वेतपारशर गोत्रगण कहते हैं। इनके भी प्रवर तीन है—पराशर, शक्ति और वशिष्ठ। (बौधायन वशिष्ठ गोत्रकाण्ड)

अगस्तिगोत्रकाण्ड—

१। काण्वायन, आदक्षकि, माषदाण्डव, [illegible], बरंह, वैरणि, बुधौदि, शौरपथि, शाल्पतप, [illegible].

पाथोद्गत, हारिग्रीवा रौहिण्य और नोग्रनहि, इनका नाम अगस्तिगोत्रगण है। इनके अगस्ति, दार्ढ्यच्युत और इध्मवाह—ये तीन प्रवर हैं। (बौधायन अगस्तिगोत्रकाण्ड)

बौधायनके अनुसार गोत्र और प्रवरका विषय लिखा जा चुका है।* कात्यायन-प्रणीत श्रौतग्रन्थमें और मत्स्यपुराणमें भी ये सब गोत्रकाण्ड लिखे हैं। परन्तु तीनों ग्रन्थोंमें एकसा नहीं लिखा, कहीं पर किसी ग्रन्थमें दो एक गोत्र ज्यादा भी है और कम भी। (गोत्रप्रवरमञ्जरी)

गोत्रप्रवरदर्पणके कर्त्ता कमलाकरने अपने ग्रन्थमें बौधायनोक्त भृगुगोत्रकाण्डका उल्लेख करते हुए कहा है कि, "एते बौधायनोक्ताः यद्यपि प्रवरमञ्जरीष्टतबौधायनसत्र आकरसूत्रे च भूयान् न्यूनाधिकभावः तदप्यभयानुसारेण वदामः।" अर्थात्—यद्यपि ये बौधायनके कहे हुए गोत्र हैं, परन्तु तो भी प्रवरमञ्जरीमें बौधायनके जो जो सूत्र उद्धृत किये गये हैं, उनमें और (जो प्राप्त है) बौधायनके मूल ग्रन्थमें बहुतसे पाठोंमें व्यतिक्रम या न्यूनाधिकता पायी जाती है। ऐसी दशामें हम यहां दोनोंके मतानुसार ही लिखेंगे। इसीसे साफ हो जा रहा होता है कि, बौधायनके मूलग्रन्थके साथ पुरुषोत्तमकृत प्रवरमञ्जरीका पाठ बहुत जगह मिलता नहीं। कमलाकर भी यह निश्चित नहीं कर सके कि, किसका पाठ यथार्थ है और किसका भ्रमात्मक। इसी लिए उन्होंने दोनोंके अनुसार लिखा है। अतिप्राचीन हस्तलिखित प्रवरमञ्जरीमें जैसा पाठ लिखा है, वहां वैसा ही पाठ सन्निवेशित किया गया है। बौधायनने जिन जिन गोत्रों और प्रवरोंका उल्लेख किया है, वर्तमानमें उनका प्रचार बहुत ही कम देखनेमें आता है। जितने भी गोत्र देखे जाते हैं, उनके प्रवर बौधायनोक्त प्रवरसे भिन्न हैं। अत एव धनञ्जयकृत धर्मप्रदीपमें जितने गोत्र और प्रवर लिखे हैं, यहां भी उनका उल्लेख करना जरूरी था।

* मत्स्यपुराण, कात्यायन-श्रौतसूत्र, आश्वलायन-श्रौतसूत्र, आपस्तम्ब श्रौतसूत्र आदि ग्रन्थोंको देखना चाहिये।

† हस्तलिखित पोथी देख कर बौधायनोंके गोत्र और प्रवरके नाम लिखे गये हैं। इसलिए नामोंमें बहुत जगह सन्देह भी है।

वर्तमानमें प्रचलित गोत्र और प्रवरोंके नाम (१) इस प्रकार हैं—

	गोत्रोंके नाम।	प्रवरके नाम।
१	जमदग्नि	जमदग्नि, और्व और वशिष्ठ।
२	विश्वामित्र	विश्वामित्र, मरीचि और कौशिक।
३	अत्रि	अत्रि, आत्रेय और शातातप।
४	गौतम	गौतम, वशिष्ठ और वार्हस्पत्य।
५	वशिष्ठ	वशिष्ठ। मतान्तरसे वशिष्ठ, अत्रि और साङ्कृति।
६	काश्यप	काश्यप, अप्सार और नैध्रुव।
७	अगस्त्य	अगस्ति, दधीचि और जैमिनि।
८	मौकालीन	मौकालीन, आङ्गिरस, वार्हस्पत्य, अप्सार और नैध्रुव।
९	मौद्गल्य	और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवत्।
१०	पराशर	पराशर, शक्ति और वशिष्ठ।
११	बृहस्पति	बृहस्पति, कपिल और पार्वण।
१२	काञ्चन	अश्वत्थ, देवल और देवराज।
१३	विष्णु	विष्णु, वृद्धि और कौरव।
१४	कौशिक	कौशिक, अत्रि और जमदग्नि।
१५	कात्यायन	अत्रि, भृगु और वशिष्ठ।
१६	आत्रेय	आत्रेय शातातप और सांख्य।
१७	कारव	कारव, अश्वत्थ और देवल।

(१) "जमदग्निर्भरद्वाजो विश्वामित्रात्रिगौतमाः।
वशिष्ठः काश्यपोऽगस्त्यो मुनयो गोत्रकारिणः॥
एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्वते।
एषदुत्पन्नमन्येषां सापि दर्शनात् तथाच।
मौकालीनकस्य दुगल्यो पराशरबृहस्पती॥
काञ्चनो विष्णु कौशिकौ कात्यायनस्तु यकाश्यपः।
कृष्णात्रेयः साङ्कृतिश्च कौण्डिन्यो गर्ग स शुकः॥
आङ्गिरस इति ख्यातः अन्य काश्यप भिन्नः।
भरद्वाजमिनोध् दायवाः शाण्डिल्यो व तथ एव च।
सावर्णिमथानवैयाघ्रपदश्च घृत कौशिक।
शक्तिः कात्यायनश्च वासुकी गौ मन्यथा॥
शुनकः सौपायनश्च मुनयो गोत्रकारिणः।
एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यते॥" (धर्मप्रदीप)

	गोत्रके नाम	प्रवरके नाम
१८	कृष्णात्रेय	कृष्णात्रेय, आत्रेय और आङ्गिरस। मतान्तरमें आङ्गिरसकी जगह आवास।
१९	माङ्कृति	अव्याहार, अत्रि और माङ्कृति।
२०	कौण्डिल्य	कौण्डिन्य और तिमिकौत्स।
२१	गर्ग	गार्ग्य, कौस्तुभ और माण्डव्य।
२२	आङ्गिरस	आङ्गिरस, वशिष्ठ और वार्हस्पत्य।
२३	अनावृकाक्ष	गार्ग्य, गौतम और वशिष्ठ।
२४	अव्य	अव्य, वलि और सारस्वत।
२५	जैमिनि	जैमिनि, उतथ्य और माङ्कृति।
२६	वृद्धि	कुरुवृद्ध, आङ्गिरस और वार्हस्पत्य।
२७	शाण्डिल्य	शाण्डिल्य, असित और देवल।
२८	वात्स्य	और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवत्।
२९	सावर्ण	
३०	आलस्यान	आलस्यायन, शालङ्कायन और शाकटायन।
३१	वैयाघ्रपद्य	माङ्कृति।
३२	घृतकौशिक	कुशिक, कौशिक और घृतकौशिक मतान्तरमें बन्धुल।
३३	शक्ति	शक्ति, पराशर और वशिष्ठ।
३४	काण्वायन	आङ्गिरस, वार्हस्पत्य, भरद्वाज और अजमीढ़।
३५	वासुकि	अक्षोभ्य, अनन्त और वासुकि।
३६	गौतम	अपसार, गौतम, आङ्गिरस, वार्हस्पत्य और नैध्रुव, मतान्तरमेंगौतम, आङ्गिरस और आवास।
३७	शुनक	शुनक शौनक और गृत्समद। मतान्तरमें शुनक, सुनहोत्र और गृत्समद।
३८	सौपायन	और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवत्।

ब्राह्मण ऋषि ही गोत्रके प्रवर्तक हैं। उनके वंशके लोगोंके गोत्र उन्हींके नामसे चलते हैं। क्षत्रिय आदि अन्यान्य वर्णोंके लिए यह बात असम्भव जान पड़ती है। उनके गोत्र उन्हींके पुरोहितोंके नामसे चलते हैं। अति प्राचीन समयमें या गोत्रके नियम बननेके बाद हो, जिन पुरोहितके नामसे जिनने अपने गोत्रका परिचय दिया था, वर्तमानमें उनके वंशधर भी उसी गोत्रका नाम लेते हैं। हालके पुरोहितोंके नामसे कोई भी अपने गोत्रका परिचय नहीं देता।

"पुरोहितप्रवरो राज्ञां।" (आश्व० श्रौ० १२।१५।५)

'क्षत्रियवैश्ययोरप्यनिर्दिष्टानिदिष्टगोत्रं शूद्रस्यानिदिष्टातिदिष्टगोत्र'

(उद्वाहतत्त्व)

गोत्रक (सं० क्ली०) गोत्रमिव गोत्र स्वार्थे कन्। गोत्र देखो।

गोत्रकर्तृ (सं० पु०) गोत्रस्य कर्त्ता ६-तत्। गोत्रप्रवर्तक। (भारत १३।४)

गोत्रकर्म (सं० पु०) दिगम्बर जैन सिद्धान्तानुसार—आठ कर्मोंमें गोत्रकर्म सातवाँ कर्म है। यह कर्म जीवोंको ऊंच और नीच गोत्रको प्राप्त कराता है। इसके दो भेद हैं,—

"उच्चैर्नीचैश्च।" (तत्त्वार्थसूत्र ८ अ०)

ऊंच गोत्र और नीचगोत्र ये दो गोत्र कर्मकी प्रकृतियां हैं। जिसके उदयसे लोकपूज्य और महान् कुलमें जन्म हो उसे गोत्रकर्म कहते हैं। जैसे—इक्ष्वाकुवंश, चन्द्रवंश, सूर्यवंश आदि और जिसके उदयसे निन्दा तथा दरिद्रताके साथ अप्रसिद्ध, दुःखसे व्याकुल—ऐसे वंशमें जन्म हो, वह नीच गोत्रकर्म है। जैसे—भङ्गी, चमार, डोम, धोवी आदि।

गोत्रकारिन् (सं० पु०) गोत्रं करोति कृ-णिनि। गोत्रकर्त्ता गोत्रप्रवर्त्तक।

गोत्रकीला (सं० स्त्री०) गोत्रः पर्वतः कील इव विष्टम्भकत्वात् यस्याः, बहुव्री० टाप्। पृथ्वी।

गोत्रज (सं० त्रि०) गोत्रे समानगोत्रे जायते गोत्र-जन-ड। १ एकही गोत्रमें उत्पन्न, एक ही पूर्वजको सन्तान। २ चौदह पुरुष (पिढ़ियों) तक एक गोत्रोत्पन्न मनुष्योंको 'गोत्रज' कहते हैं।

गोत्रद्रुम (सं० पु०) धन्वन वृक्ष।

गोत्रभित् (सं० पु०) गोत्रं पर्वतं मेघं वा भिनत्ति भिद्-क्विप्। १ इन्द्र। गोत्रं नाम भिनत्ति भिद्-क्विप्। नामभेदक, जो मनुष्य एक नाम उच्चारण करनेके समय दूसरा नाम उच्चारण करता है। २ पर्वत।

गोत्ररिक्थ (सं० क्लो०) गोत्रस्य रिक्थं, ६-तत्। गोत्रधन।

गोत्रवत् (सं० त्रि०) गोत्रं अस्त्यस्य गोत्र-मतुप् मकारस्य वकारः। गोत्रयुक्त, जिसको गोत्र है।

गोत्रवृक्ष (सं० पु०) गोत्रजातः वृक्षः। धन्वनवृक्ष। (भावप्रकाश)

गोत्रसुता (सं० स्त्री०) पर्वतकी पुत्री, पार्वती।

गोत्रस्खलन (सं० क्लो०) गोत्रे नामनि स्खलनं ७ तत्। एक नाम बोलनेके अभिप्रायसे किसी दूसरे नामका उच्चारण, मनुष्य अतिशय गाढ़ चिंतामें मग्न रहता है तो इस तरहकी घटना घटती है किन्तु आलङ्कारिक गणोंका मत है कि नायक और नायिकाका अनुराग वर्द्धित होने पर गोत्रस्खलन हुआ करता है।

गोत्रा (सं० स्त्री०) गाः पशून्, सर्वान् जीवान्, त्रायते त्रै क-टाप्। १ पृथ्वी। गवां समूहः गो-त्र-टाप्। २ गोसमूह, गायका झुण्ड। ३ गायत्रीस्वरूपा महादेवी (देवीभा० १२।६।४१)

गोत्रादि (सं० पु०) पाणिनीय एक गण। गोत्र, ध्रुव, प्रवचन, प्रहसन, प्रकथन, प्रत्यायन, प्रपञ्च, प्राय, न्याय, प्रचक्षण, विचक्षण, अवचक्षण, स्वाध्य, भूमिष्ठ और वानाम इन सबोंका गोत्रादि गण कहते हैं। गोत्रगण तिङन्तके बाद होने पर अनुदात्त हो जाता है।

गोत्रान्त (सं० पु०) गोत्रस्यान्तः ६-तत्। गोत्रका विनाश, वंशका नाश।

गोत्रान्तर (सं० क्लो०) नित्यस०। अन्य गोत्र, दूसरा गोत्र।

गोत्रिक (सं० त्रि०) गोत्रे भवः गोत्र इकन्। गोत्रोत्पन्न, गोत्रिय

गोत्री (सं० त्रि०) समान गोत्रवाले, गोत्रज, गोतिया।

गोत्व (सं० क्लो०) गोर्भावः गोत्व। १ जातिविशेष, जिस जातिको सिर्फ गौ हो है, दूसरा कोई पदार्थ नहीं, उसीको गोत्व जाति बोलते हैं। २ गौका धर्म।

गोद (सं० पु०) गां नेत्रं दायति शोधयति दै-क। १ मस्तिष्क, मगज। (वि०) गां ददाति दा-क। २ गोदाता, गोदान करनेवाला। (पु०) ३ गोदावरीके निकटस्थ एक देश।

गोद (हिं० स्त्री०) १ उत्सङ्ग, कोरा, ओली। २ वक्षस्थलके पासका स्त्रियोंकी साड़ीका एक भाग।

गोदगुदली (हिं० पु०) गूलू नामका पेड़।

गोदत्र (सं० क्लो०) गोदं त्रायते त्रै-क। १ मस्तिष्क-रक्षक, मुकुटादि। (पु०) २ इन्द्र। (वि०) ३ गोदान करनेवाला।

गोदधि (सं० क्लो०) गायका दही।

गोदनहर (हिं०) गोदनहारी देखो।

गोदनहरा (हिं० पु०) टीका लगानेवाला, माता छापनेवाला।

गोदनहारी (हिं० स्त्री०) नटजातिकी स्त्री जो गोदना गोदनेका काम करती है।

गोदना (हिं० क्रि०) १ गड़ाना। २ किसी कामके लिए बार बार यत्न करना। ३ छेड़ छाड़ करना। ४ हाथीको अंकुश देना। (पु०) ४ एक विशेष प्रकारका काला चिन्ह जो तिलके आकार होता है। नट जातिकी स्त्रियां अपनी सूईको नील या कोयलेके पानीमें डुबा कर मनुष्यके शरीरमें छेद देती हैं। इसमें दो तीन रोज तक शरीरमें बहुत वेदना मालूम पड़ती है। किन्तु उसके बाद वह चिन्ह सदाके लिए रह जाता है।

गोदना—सारण जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २५° ४७' उ० और देशा० ८४° ३८' पू०में गङ्गा और घघरा नदीके सङ्गम पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ६७६५ है। सारण जिलेमें यही नगर प्रधान वाणिज्य स्थान है। चम्पारण, नेपाल, बङ्गाल और उत्तर-पश्चिम भारतके द्रव्यजातकी रफतनी और आमदनी इसी स्थानसे हुआ करती है। निम्नबङ्गसे जो समस्त नावें चावल और लवण बोझ कर युक्तप्रदेश जाती हैं, उनका माल गोरक्षपुर और फैजाबादकी नावोंमें रख कर पश्चिमाञ्चल भेजा जाता है। प्रतिवर्ष दो बार कार्तिक और चैत्र मासमें यहां मेला लगता है। ऐसा प्रवाद है कि न्यायदर्शनकार गौतम ऋषि अहल्याके साथ यहां वास करते थे। एक भग्न कुटीरमें काष्ठपादुका भी देखी जाती है। अधिवासी यात्रियोंको वही स्थान गौतमका आश्रम बतलाया करते हैं।

१८८८ ई०को रेवल साहब गवर्मेण्टके शुल्क संग्रहकर्त्ता होकर यहां आये थे। जिन्होंने एक बाजार तथा शुल्क संग्रहके लिये एक घर निर्माण किया था। आजकी

भी बाजारके मनुष्य उनकी कब्रको देखते और भक्ति प्रदर्शन करते हैं।

गोदनी (हिं० स्त्री०) गोदना गोदनेकी सूई।

गोदन्त (सं० क्ली०) गोदन्त इवावयवोऽस्य। १ हरिताल। २ गौका दांत। ३ दानवविशेष।

गोदन्ता (सं० स्त्री०) दारुमोचभेद, एक स्थावर विषका नाम।

गोदरी (सं० पु०) इन्द्र।

गोदा (सं० त्रि०) गां स्वर्गं ददात दा-क-टाप्। १ गोदावरी नदी। २ गायत्रीस्वरूपा महादेवी। (त्रि०) गां ददाति गो-दा क्विप्। ३ गोदाता, गोदान करनेवाला।

गोदागारी—बङ्गालके राजशाही जिलेमें सदर सबडिविजन का गांव। यह अक्षा० २४° २८ उ० और देशा० ८८° १८ पू० में महानन्दा और पद्मा नदी सङ्गमस्थलके निकट अवस्थित है। जनसंख्या प्राय: १२३५ है। यहां नदीको तरह युक्त प्रदेश तक व्यवसाय चलता है।

गोदान (सं० क्ली०) गाव: केश लोमानि वा दीयन्ते खण्डयन्ते यत्र आधारे ल्युट्। १ द्विजातिका एक संस्कार, द्विजातियोंकी एक क्रिया, इसका दूसरा नाम केशान्त संस्कार भी है। (केशान्त देखो।) गवि पृथिव्यां दीयते निधीयते दा कर्मणि ल्युट्। २ दक्षिणकर्णका समीपवर्त्ती स्थान। गोर्दानं, ६-तत्। ३ गाय या बैलका दान। अपना सत्व परित्याग कर दूसरेको गोदान करनेकी क्रिया। हेमाद्रिके दानखण्डमें गोदानप्रणाली इस तरह लिखी है—विश्वामित्र-के मतानुसार वत्सयुक्त गौको पूर्वमुखी कर रखना चाहिए। दाता स्नान और शिखा बन्धन कर गौके पुच्छकी ओर उपवेशन करें। जिस ब्राह्मणको गोदान करना हो उसे उत्तरमुखी कर बैठावें। तदनन्तर दाता एक घृतपूर्ण पात्र-में कुछ सुवर्ण लेकर उसमें गोपुच्छ धारण करे। ब्राह्मण-के हाथमें तिल दे पूर्वमुखी कर रखें। इसके बाद तिल और कुशादि ले यथानियमसे ऐसा कहना पड़ता है—

"यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघप्रणाशिनी। विश्वरूप: यथादेव: प्रीयतामनया गवा॥"

यह मन्त्र पढ़ ब्राह्मणके हाथमें जल अर्पण करना चाहिए ब्राह्मणके गौ ले जानेके समय उन्हें भी गौका अनुगमन करते हुए गोमती मन्त्र जपना पड़ता है।

(विश्वामित्र)

गोमती मन्त्र यथा—

"गाव: सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगन्धिका:।
गाव: प्रतिष्ठा भूतानां गाव: स्वस्त्ययनं महत्॥
अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम्।
पावनं सर्वभूतानां रक्षन्ति च वहन्ति च॥
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि।
ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमप्रतिष्ठिका:॥
सर्वेषामेव भूतानां गाव: शरणमुत्तमम्।
गाव: पवित्रं परमं गावो मङ्गलमुत्तमम्॥
गाव: सर्वस्य लोकस्य गावो धन्या: सुखावहा:।
नमो गोभ्य: श्रीमतीभ्य: सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम:॥
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति॥" (यम)

महाभारतमें दूसरी तरहका गोमतीमन्त्र लिखा है।

(तिलधेनु देखो।)

गोदानका फल—कृष्णवर्ण गौ पट्टवस्त्रसे आच्छादित तथा सुवर्णालङ्कार द्वारा अलङ्कृत कर दान करनेसे उस व्यक्तिको यमलोक जाना नहीं पड़ता तथा आयु:, आरोग्य, ऐश्वर्य्यवृद्धि और मनोभीष्ट पूर्ण होते हैं। रत्नालङ्कार, घण्टामाला और पुष्प द्वारा परिशोभित गौके मुखमें घृत दे शृङ्ग सुवर्णमय और चार खुर रौप्यमय निर्माण कर पट्टवस्त्र द्वारा आच्छादन करें। इस प्रकार श्वेतवर्ण गो-दान करनेसे उसके तथा उसके वंशजके पाप विनष्ट होते हैं। इस तरह गौरवर्ण गाय दान करे तो वह हजार करोड़ वर्ष पर्यन्त स्वर्गवास करता, नीलवर्ण गो दान करे तो हजार करोड़ वर्ष वरुणलोकमें बसते हैं एवं उसके पूर्व पुरुष नरकसे मुक्तिलाभ करते हैं। (वशिष्ठ)

कपिलवर्ण वत्सयुक्त और दुग्धवती धेनु दान करनेसे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। इस प्रकार वत्सयुक्त दुग्धवती रोहिणी धेनुदानसे इन्द्रलोक, विचित्रवर्ण धेनुदान करने-से चन्द्रलोक, कृष्णवर्ण धेनुदानसे अग्निलोक, वातरेणुके जैसा वर्णयुक्त धेनुदानसे वायुलोक धूम्रवर्ण धेनुदानसे यमलोक, सुवर्णवर्ण धेनुदानसे वरुणलोक, पिङ्गलवर्ण चक्षुयुक्त हिरण्यवर्ण धेनुदानसे कुबेरलोक, गौरवर्ण धेनु-दानसे वसुलोक एवं पांडुकम्बलवर्ण धेनुदान करनेसे गन्धर्व लोकमें वास करता है। जो शुद्धचित्त तथा पवित्र

भावसे अनवरत गोदान करते. वे सूर्यवर्ण विमानमें आरोहणकर स्वर्गको गमन करते हैं। स्वर्गीय रमणियां क्रीड़ा कौतुक कर सर्वदा उनको आनन्दित किया करतीं हैं। (महाभारत)

विष्णुधर्ममें लिखा है कि पुण्य दिनको स्नान कर प्रथम पितृतर्पण करे। इसके पूर्व दिन केवल पञ्चगव्य खाकर रहे। तदनन्तर घृत और क्षीरद्वारा विष्णु या शिवजीका अभिषेक कर पुष्पादि उपहारसे भक्तिपूर्वक उनकी अर्चना करे। इसके बाद एक दुग्धवती दृष्टि धेनुको उत्तरमुखी कर स्थापन करे, गौके शृङ्ग सुवर्णमय और खुर रौप्यमय हों। अन्तको मन्त्र पाठपूर्वक ब्राह्मणको अर्पण करे उसमें यथाशक्ति दक्षिणा दी जाती है।

दानका मन्त्र—

"गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहं॥
इमां म … लिङ्गरूप … ता मया तव।
म मे … गोविन्दः प्रीयतामिति॥" (वह्निपु०)

भारत अनुशासन ६६ अध्याय प्रभृतिमें भी गोदानकी प्रशंसा और नियम लिखे हैं। भविष्यपुराणमें लिखा है कि धेनु सूर्यकी कन्या हैं. सर्व लोकके मङ्गल और यज्ञसिद्धिके लिए इसकी उत्पत्ति हुई है। ब्राह्मण तथा गौ एक कुलसे ही उत्पन्न हैं। गौसे यज्ञकी सिद्धि होती है। देव और षड़ङ्ग चतुर्वेद इसीसे उत्पन्न हुए हैं। गौके शृङ्गके अग्रभागमें समस्त तीर्थ तथा चराचर, शीर्ष पर सर्वभूतमय शिव, ललाटाग्रमें देवी, नासिकाके अग्रभाग पर कार्त्तिकेय, दोनों नासापुटोंमें कम्बल और अश्वतर नाग, कर्णद्वयमें अश्विनीकुमारयुगल, दोनों आँखोंमें चंद्र तथा सूर्य, दन्तमें वायु, जिह्वामें वरुण, कक्षदेशमें राक्षसगण, हुङ्कारमें सरस्वती, मुण्डमें यम और यक्ष, ओष्ठ पर सन्ध्या, ग्रीवामें इन्द्र, वक्षस्थल पर साध्यगण, जङ्घादेश पर धर्म, खुरके अग्रभाग पर पन्नगगण, खुरके पश्चाद्भाग पर अप्सरागण, पृष्ठ पर वसुगण, श्रोणितटमें पितृलोक, लाङ्गूलमें चन्द्र, केशमें सूर्यरश्मि, मूत्रमें गङ्गा, गोमयमें यमुना, दुग्धमें सरस्वती, दधिमें नर्मदा, घृतमें हुताशन, रोमकूपमें २८ करोड़ देवता, उदरमें पृथिवी तथा अङ्गमें चतुःसागर और पयोधर अवस्थान करते हैं। इस तरह समस्त ब्रह्मांड ही गौमें अवस्थित है।

गोदानिक—गोदानिक देखो।

गोदाम (हिं० पु०) माल असबाब रखे जानेका सुरक्षित स्थान।

गोदाय (सं० त्रि०) गां ददाति गो-दा-अण् उपपदस०। गोदाता, गो दान करनेवाला।

गोदारण (सं० क्ली०) गां भूमिं दारयति दृ णिच-ल्यु। १ हल। २ जमीन खोदनेकी कुदाल।

गोदावरी (सं० स्त्री०) गां स्वर्गं ददाति दा-वनिप् ङीप् रश्चान्तादेशः। यद्वा गोदानां वरी श्रेष्ठा, ६-तत्। नदीविशेष। यह नदी बहुत दिनोंसे हिन्दुओंको आदरणीय है; हिन्दू इसे एक पुण्यतीर्थके जैसा समझते हैं। समस्त कार्यके पहले ही जलशुद्धि करनेके लिये मन्त्र द्वारा इस नदीका भी आवाहन करना पड़ता है। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है कि कोई ब्राह्मणी अकेली तीर्थयात्रा कर रही थी। जाते जाते रास्तेमें एक निविड़ निर्जन पुष्पोद्यानके मध्य किसी एक कामुकने उसे देखा। युवतीका सुन्दर रूप देख वह कामुक कुछ देर भी स्थिर न रह सका। ब्राह्मणीने उसे बहुत वारण किया, किन्तु अन्तमें उस कामुकने बलपूर्वक अपनी पाशववृत्ति चरितार्थ की। ब्राह्मणीको गर्भसञ्चार हुआ। ब्राह्मण यह देख कर क्या कहेंगे इस भयसे ब्राह्मणीने उसी समय गर्भ परित्याग किया और उससे उसी समय तप्तकाञ्चनवर्ण एक पुत्र उत्पन्न हुआ। पुत्रका सुन्दर मुख देख ब्राह्मणी उसे फेंक न सकी, इस सद्योजात बालकको गोदमें ले रोती रोती ब्राह्मणके निकट पहुंची और समस्त घटना साफ साफ कह सुनाई। ब्राह्मणने पुत्रके साथ उसे परित्याग किया। लज्जा और अभिमानसे ब्राह्मणीने योग करना आरम्भ किया। योगबलसे वह नदी हो गई। उसीका नाम गोदावरी है। (ब्रह्मवै०पु०)

गोदावरीका दूसरा नाम—गौतमी है। ब्रह्माण्ड उपपुराणके अन्तर्गत गौतमीमाहात्म्यमें गोदावरीकी उत्पत्ति-कथा अन्य रूपसे वर्णित है—जब महर्षि गौतम ब्रह्मगिरिके आश्रममें रहते थे, उस समय एक बार बारह वर्ष अनावृष्टि रही, जिससे चारों ओर दारुण दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ। वशिष्ठादि ऋषिगण गौतमके आश्रमको पहुंचे। गौतमने ऋषियोंको अन्न दे रक्षा की। वे

प्रतिदिन सवेरे मैदानमें बीज बोते और उनके तपोबल द्वारा उस बीजसे अङ्कुर, गाछ तथा फल निकलते थे। सन्ध्याके पहलेही पक्व शस्य काट कर चावल प्रस्तुत किये जाते और उसे सिद्ध कर ऋषि आहार करते थे। द्वादश वर्षके बाद सुवृष्टि हुई, जिससे वसुमती फिर भी शस्य-शालिनी हो गई। इस समय कैलासमें एक विभ्राट् आ पड़ा। शिवजी गङ्गाको अपने जटाके मध्य रखे हुए हैं, ऐसा जानकर एक दिन पतिसोहागिनी हैमवती (पार्वती) को बड़ी ईर्षा हुई। वह कातर हो शिवजीसे बोली-"नाथ! आपने गङ्गाको मस्तक पर और मुझको गोदमें धारण किया है इससे मेरा अपमान होता है। इस लिए आप शीघ्र ही गङ्गाको नीचे उतार रक्खें।" शिवजीने उनकी बात पर कुछ भी ध्यान न दिया, इससे पार्वतीको और अधिक दुःख हुआ। पार्वतीने गणेशको अपने मनको व्यथा कह सुनाई। गणपतिने अपनी माताके दुःख दूर करनेको प्रतिज्ञा ठानी। वे कार्त्तिकके साथ वृद्ध ब्राह्मणके भेषमें गौतमाश्रमके वहिर्भागमें आ ऋषियोंको देख कर बोले-"ब्राह्मणगण! अब सर्वत्र ही शस्य उपज गये हैं, इस समय आप लोगोंको परान्न पर निर्भर करना उचित नहीं, आप लोग अपने अपने आश्रमको चले जांय।" ऋषियोंने गौतमके निकट आ बिदा मांगी। गौतमने उन्हें उत्तर दिया-'दुर्दिनमें आप लोगोंको अन्न दिया है, अभी अच्छा समय देख आप लोग मुझे छोड़ जाते यह उचित नहीं है। मेरी इच्छा है कि आप यहीं ठहरें।" वृद्ध ब्राह्मणवेशी गणेशने ऋषियोंसे यह कथा सुनी। वे वहांसे चल कार्त्तिकके निकट आ बोले—भाई! तुम गौ हो कर गौतमके क्षेत्रमें जा समस्त शस्य नष्ट कर डालो। गौतमके ताड़ने पर तुम मृतवत् हो जमीन पर पड़ रहोगे।" कार्त्तिक भी गौ रूपमें गौतमके क्षेत्रमें जा समस्त शस्य नष्ट करने लगे। गौतमकी दृष्टि उस पर पड़ी। ज्योंही वे गौको मारनेके लिए दौड़े, त्योंही गौ मृतवत् हो पृथ्वी पर लेट गई।

आश्रममें गोहत्या हुई है, यह सुन कर ऋषि लोग जानेकी तैयारी करने लगे। इस समय भी गौतम ऋषिने उन्हें ठहरनेका अनुरोध किया। किन्तु उन्होंने उत्तर दिया—'यदि आप भगीरथकी नाईं गङ्गाजीको ला गौको पुनर्जीवित कर सकें तब हम लोग ठहर सकते नहीं तो किस तरह इस अपवित्र स्थानमें रहें!' गौतम ऋषि उनकी बात पर सम्मत हुवे। उन्होंने ऋषियोंको आश्रममें रख त्र्यम्बक पहाड़ पर जा हरपार्वती और गङ्गाकी पृथक् पृथक् तपस्या कर उन्हें सन्तुष्ट किया। त्र्यम्बकेश्वर पार्वतीके साथ गौतमको दिखाई दिये और उन्होंने वर मांगनेका आदेश किया। गौतमने प्रार्थना की—यदि आप मुझे वर देनेकी इच्छा करते हैं तो अपनी जटास्थित गङ्गा मुझे प्रदान करें, मैं उन्हें ले जाकर मृत गौको पुनर्जीवित करूंगा।" महादेवजीने उनकी प्रार्थना स्वीकार की। गौतमने पुनः एक और वर मांगा—'भगवन्! गङ्गा मृत गौको जीवन दान कर सागरमें गमन करें तथा मेरे नामसे विख्यात होवें।' शिवजीने कहा—'यह गौतमी गङ्गा और गोदावरी नामसे ख्यात होंगी। जिस तरह भागीरथी सागरसङ्गम पर, यमुना त्रिवेणीसङ्गम पर तथा नर्मदा अमरकण्टकमें पुण्यप्रदा, हैं, उसी तरह गौतमी गङ्गा भी सर्वत्र पुण्यप्रदा होंगी एवं मैं इनके दोनों तीर पर लिङ्गरूपमें अवस्थान करूंगा।" ऐसा कह शिवजीने गङ्गाको गौतमके हाथ समर्पण किया। गौतम हृष्टचित्तसे जटाके साथ गङ्गाको ले ब्रह्मगिरिस्थ आश्रमको पहुंचे। इस स्थान पर गङ्गाजी त्रिधारा हुई। एक धारा ब्रह्मगिरिस्थ मृत गौको पुनर्जीवित कर दक्षिणसागरमें मिल गई, दूसरी ब्रह्मगिरि भेदकर पाताल को चली गई और तीसरी धारा आकाशमार्गको जा वियद् गङ्गा नामसे विख्यात हुई।

गोदावरी नदी मध्य भारतके पश्चिम घाटसे पूर्वघाट पर्वत तक विस्तृत है। जलकी पवित्रता, दोनों कूलोंका सौन्दर्य तथा मनुष्यकी उपकारिताके सम्बन्धमें यह गङ्गा और सिन्धु नदीके तुल्य है। यह ८९८ मील लम्बी एवं प्रायः ११२२०० वर्गमील भूमिके ऊपर हो कर बहुत वेगसे प्रवाहित है। मनुष्योंसे सुना जाता है कि नासिक जिलेके त्र्यम्बक ग्रामके पश्चाद्वर्ती पहाड़से उस नदीकी उत्पत्ति है। इस स्थान पर एक कृत्रिम कूप है। जिससे नीचे जानेके लिये ६९० एक एक कदमवाली सीढ़ियां हैं। यहां खोदित मूर्त्तिके ओष्ठ प्रान्तसे बुन्द बुन्दमें जल टपकता है।

स्वभावतः नदीकी गति दक्षिण पूर्ववाहिनी है। पहले नासिक जिला अतिक्रम कर अहमदनगर और निजाम राज्यके सीमारूपमें प्रवाहित हो, सिरोञ्चा नामक स्थानमें आ प्राणहिता नदीके साथ मिली है। तदनन्तर वर्द्धा, पेन गङ्गा और वेणगङ्गा ये सब नदियां आ इसके जलमें मिल गई हैं। सिरोञ्चासे जिस स्थान पर यह पूर्वघाट पर्वत अतिक्रम करती है वहां इसकी मध्यवर्ती नदीके दक्षिण कूल पर निजाम राज्यभुक्त तथा उत्तर तीर पर गोदावरी जिला सीमारूपमें परिणत है। गोदावरीके दक्षिण कूल पर प्राचीन तैलङ्गराज्यके ध्वंसावशेष आज भी देखे जाते हैं। ध्वंसलेश्वर ग्रामके निकट नदीमें एक डेल्टा है। यहां समीपवर्त्ती बांध द्वारा जल खेतोंमें पहुंचाया जाता है। गोदावरीके सप्तमुखोंमेंसे गौतमी गोदावरी ही सबसे बड़ी है, इसके कूल पर फरासीसी अधिकारभुक्त यूनान नगर अवस्थित है। समुद्र कूल पर इस शाखाके ऊपर कोरिङ्ग बन्दर है। नरसपुरके निकट वशिष्ठ-गोदावरीकी वैनतैसू गोदावरी नामकी शाखा निर्गत हो समुद्रमें गिरी है।

इस नदीके वाम भाग पर भद्राचलम् नगर और इससे १०० मील उत्तरमें राजमहेन्द्री नगर है। राजमहेन्द्री नगर तथा कोटिफली ग्राम गौतमी शाखाके ऊपर अवस्थित है।

भिषकशास्त्रके मतसे इसके जलका गुण—पथ्य तथा पित्तार्त्ति, रक्तार्त्ति, वायु, पाप, कुष्ठादि दुष्टरोग और तृष्णानाशक है। (राजनि०)

गोदावरी सात भागोंमें विभक्त हो बङ्गोपसागरमें मिली हैं, इन सात भागोंके नाम तुल्या, आत्रेयी, भारद्वाजी गौतमी, वृद्धगौतमी, कौशिकी और वशिष्ठा हैं। काकनाड़ासे २ मीलकी दूरी पर चोल्लङ्गी ग्रामके निकट तुल्या वर्तमान है। यहां चोलङ्गेश्वर महादेवकी मूर्ति स्थापित हैं। कोरिङ्ग बन्दरके निकट गोदावरीके उत्तर तीर पर आत्रेयीसङ्गम है। धवलेश्वरके दूसरे बगल विजयेश्वर ग्राममें विजयेश्वर शिवलिङ्ग हैं। धवलेश्वर और विजयेश्वरसे गोदावरी दो भागोंमें विभक्त हो सागराभिमुखको गई है। उसके उत्तर भागके स्रोतका नाम गौतमी और दक्षिणका वशिष्ठा है। गौतमीके उत्तर भागमें यथाक्रमसे तुल्या, आत्रेयी और भारद्वाजी नामकी तीन शाखायें, दक्षिण भागमें वृद्धगौतमी एवं वशिष्ठाके वाम तीरसे कौशिकी नामकी शाखा प्रवाहित हो सागरमें मिली हैं। ये सप्तशाखायें सप्तगोदावरी नामसे ख्यात हैं। जहां ये सप्तशाखायें मिली हैं वहां उनका नाम सप्तगोदावरी सागरसङ्गम पड़ा है। भागीरथीका सागर-सङ्गम जैसा महापुण्य तीर्थ माना गया है वैसा ही दाक्षिणात्यमें सप्तगोदावरी सागरसङ्गम महापुण्यप्रदके जैसा विख्यात है।

गौतमीमाहात्म्यमें प्रत्येक भागका माहात्म्य इस तरह लिखा है—

तुल्यभागा—चन्द्रमा रोहिणीको ही अधिक चाहते थे इसलिए दूसरी स्त्रियोंकी उत्तेजनासे दक्ष कर्तृक अभिशप्त हो वे क्षयरोगको प्राप्त हुए। पापमुक्तिके लिए उन्होंने विष्णुकी तपस्या की। विष्णुने सन्तुष्ट हो उन्हें तुल्यासङ्गममें स्नान करनेका आदेश किया। चन्द्र भी यथाविधि तुल्यासङ्गममें स्नान कर शापमुक्त हुए। माघ मासकी सोमवार अमावस्याको तुल्यासङ्गममें स्नान कर सोमेश्वरकी पूजा करनेसे कोटिगुण फल होते हैं। इस स्थान पर तर्पण और पिण्डदान करनेसे अश्वमेधका फल और सहस्र जन्मके पाप दूर होते हैं। (गौतमी० १०)

आत्रेयी—आत्रेय ऋषि गौतमीसे जिस नदीको लाये थे वही आत्रेयी नाममें ख्यात है। इसके तीर पर ऋषिने इन्द्रत्व लाभके लिए महायज्ञ किया था। इस स्थान पर मारीच कुरंगरूपसे महादेवकी तपस्या किया करता था।

भारद्वाजी—पूर्वकालमें भरद्वाज ऋषिने गौतमीके पूर्वतीरसे ऋषिकुल्याको लाकर उसके तीर पर तपस्या की थी, इसीसे इसका नाम भारद्वाजी हुआ है। इसका दूसरा नाम रेवतीसङ्गम भी है। भारद्वाजके रेवती नामक एक अतिकुत्सिता भगिनी (बहिन) थी वयस्था होने पर भी कोई उसे विवाह करना नहीं चाहता था। एक दिन भरद्वाज ऋषि अपने आश्रममें बैठ रेवतीके विवाहके विषयमें सोच रहे थे, इसी समय कठ नामक एक खुबसूरत ब्राह्मण कुमारने आश्रममें आ उनका शिष्य होनेके लिये प्रार्थना की। ऋषिने उसे शिष्य रूपमें ग्रहण कर समस्त विद्या सिखा दीं। इसके अनन्तर कठने गुरु

दक्षिणा देनेके लिये प्रार्थना की। इस पर भरद्वाज उसको बड़ाई कर बोले—'तुम इस कन्यासे विवाह करो, इसीसे तुम्हारी गुरु-दक्षिणा हो जायगी।' कठ गुरुका आदेश उलङ्घन कर न सका, उसी समय उसने कुत्सिता कामिनी-का पाणिग्रहण किया। तदन्तर कठने नवविवाहिताके साथ भरद्वाजीसङ्गमके निकट शिवलिङ्ग प्रतिष्ठापूर्वक वेदोक्त स्तवसे शिवजीकी आराधना की। शिवजी साक्षात् हो उसे सस्त्रीक भारद्वाजीसङ्गममें स्नान करनेका आदेश कर अन्तर्हित हुए। उसी समय उन दोनोंने सङ्गममें स्नान किया। स्नान कर ज्योंही बाहर निकले, त्योंही रेवती सुश्री और परमा सुन्दरी दीखने लगी। स्नान कर रेवती-के सुन्दर हो जाने पर सङ्गमका दूसरा नाम रेवतीसङ्गम हुवा है। (गौतमीमाहात्म्य)

गौतमीसङ्गमका दूसरा नाम अहल्यासङ्गम भी है। गौतमीमाहात्म्यमें लिखा है—ब्रह्माकी कन्या अहल्या जैसी सुन्दरी और रूपवती कोई स्त्री न थी। इन्द्रादि देवगणने अहल्याके पानेकी इच्छा की थी, किन्तु ब्रह्माने गौतमको उपयुक्त पात्र स्थिर कर उन्हें अपना कन्यारत्न सम्प्रदान किया। गौतम अहल्याको साथ ले ब्रह्मगिरि आश्रममें सुखसे रहने लगे। इन्द्र अहल्याके रूपमें मुग्ध हो कुअभिप्रायसे आश्रमके निकट अवस्थान करने लगे। एकदिन उन्होंने गौतमका रूप धर अहल्याके साथ संभोग किया था। संयोगवश उसी समय गौतम ऋषि सशिष्य आश्रम आ पहुंचे। इन्द्र गौतमके भयसे विड़ालरूप धर अपेक्षा करने लगे। गौतम गृहमें प्रवेश कर अहल्याकी अवस्था देख क्रुद्ध हो बोले—'पापीयसि! तू यह क्या कर रही है।' इसके बाद उस विड़ालको देख गौतमने कहा—'तुम कौन हो। सत्य सत्य बोलो, नहीं तो अभी तुझे भस्म करता हूं।' इस पर मार्जाररूपी इन्द्र भयसे कृताञ्जलिपुटमें बोले—'प्रभो! मैंने मायासे विमुग्ध हो यह पापकार्य किया है, अब आपका शरणापन्न हुआ हूं कृपया मेरी रक्षा कीजिए।' ऋषिने यह कह कर उनको शाप दिया—'पापके प्रतिफलस्वरूप तुम्हारे शरीरमें एक हजार भग होंगे।' तदन्तर अहल्यासे कहा—'पापीयसि! तुम भी अतिकुत्सित हो।' इस समय अहल्या रो कर बोली—'स्वामिन्! इस पापिष्ठने आपके रूपसे मोहित कर मुझे सर्वनाश किया। मैं पापिनी नहीं हूं। मुझे क्षमा कीजिए।' गौतम ऋषि ध्यान योगसे सब जान फिर बोले—'अहल्ये! तुम नदीरूपमें प्रवाहित हो मुझसे पुनः मिल जावोगी।' बाद इन्द्रको अपने चरणों पर निपतित देख कहा—'इन्द्र! तुम भी गौतमीमें स्नान कर पापमुक्त हो सहस्रचक्षु लाभ करोगे।' अहल्या नदी रूपसे फिर भी पतिके साथ मिल गई। इन्द्रने भी इस अहल्यासङ्गममें स्नान कर सहस्र चक्षु लाभ किये। तभीसे इस सङ्गमका और एक नाम इन्द्रतीर्थ हुआ। सङ्गम स्थल पर अभी तीर्थलमण्डी नामका ग्राम देखा जाता है।

¹ वृद्ध गौतमीकी नामोत्पत्तिके सम्बन्धमें भी गौतमी-माहात्म्यमें इस तरह लिखा है,—"महर्षि गौतमने एक वृद्धासे विवाह किया था। एक दिन वशिष्ठादि कई एक ऋषि गौतमके आश्रम पहुंचे और उस वृद्धाको देख उनमें-से एकने कहा—'गौतम! इस वृद्धासे तुम्हें पुत्रोत्पादन की सम्भावना नहीं है।' यह सुन अगस्त्यने गौतमसे कहा—गौतमी नामकी तुम्हारी लायी हुई नदीके तीर पर वृद्धाके साथ ईश्वराराधना करनेसे तुम्हारा मनस्काम सिद्ध होगा।' यह सुन गौतम गौतमीतीरको आ शिव, गङ्गा और विष्णुकी आराधना करने लगे। गङ्गाजीने साक्षात् हो दोनोंके अङ्ग पर पवित्र जल छिड़क दिया। इससे वे दोनों बहुत अच्छे देख पड़ने लगे। गङ्गासे अभिषिक्त वह जल नदीरूपमें वह सागरको जा मिला; वही वृद्धगौतमी नामसे ख्यात है। गौतम ऋषिने इसके तीर पर वृद्धेश्वर नामक शिवलिङ्ग स्थापन किया था। स्वयं शिवजी इस वृद्धासङ्गममें स्नान कर ब्रह्महत्याजनित पापसे मुक्त हुए थे। इस स्थानमें स्नान करनेसे बन्ध्या स्त्री भी पुत्ररत्न लाभ कर सकती है।"

कौशिकी—गौतमीमाहात्म्यमें लिखा है कि विश्वा-मित्रने ब्राह्मणत्व पानेके उद्देशसे वशिष्ठासे कुल्या नामकी नदी ला उसके तीर पर तपस्या की थी। कौशिकसे लाये जाने पर यह कौशिकी नामसे मशहूर है। इसके दोनों तीर पर पुण्यप्रद रामेश्वरक्षेत्र और लक्ष्मणेश्वरक्षेत्र हैं। यहां राम और लक्ष्मणने शिवलिङ्ग स्थापन किया था।

वशिष्ठके गौतमीसे कुल्या लाने तथा उसके तीर पर तपस्या करनेके कारण इसका नाम वशिष्ठासंगम पड़ा। सागर और वशिष्ठाके मध्य त्रिकोणाकृति भूभाग अन्तर्वेदी नामसे विख्यात है। यहां नरसिंह देव विद्यमान हैं, यह वैकुण्ठ सदृश पुण्यभूमि है। माघ मासको रविवार शुक्ल एकादशीको वशिष्ठासङ्गममें स्नान कर नरसिंह देवकी पूजा करनेसे समस्त पाप दूर हो जाते हैं।

गोदावरी–मन्द्राज प्रान्तका एक जिला। यह अक्षा० १६° १८ एवं १८° ३ उ० और देशा० ८०° ५२´ तथा ८२° ३६ पू०के बीच उत्तरपूर्व सागरतट पर पड़ता है। क्षेत्रफल ७८७२ वर्गमील है। इसके उत्तरपूर्व विजगापट्टम् जिला, उत्तर विजगापटम् जिला तथा मध्यप्रदेश, पश्चिम निजाम राज्य और दक्षिण-पश्चिम कृष्णा जिला है गोदावरीके तीन विषम विभाग हैं—एजेन्सी प्रान्त, गोदावरी नदीका सिंघाड़ा और ऊंचा तालुक। उत्तर पूर्व कोणमें छिन्न भिन्न पर्वत श्रेणियां हैं। गोदावरी नदी मध्य भागसे प्रवाहित हुई है। धवलेश्वरम् बांधसे समुद्रतट तक धानके खेत हैं। वर्षाकालको वहां कितना ही पानी भर जाता और सिवा गांवों, नहरके किनारों, सड़कों तथा खेतको मेंड़ोंके कुछ भी देखनेमें नहीं आता। धान बढ़ने पर सारा प्रान्त खेत जैसा देख पड़ता है। नदीके वाम तटको पूर्व सिंघाड़ा, दक्षिण तटको पश्चिम सिंघाड़ और पानीसे घिरी हुई बड़ी तिखुटी जमीनको मध्य सिंघारा कहते हैं।

इस जिलेमें १७२ मील तक समुद्रका किनारा है। सिवा गोदावरी साबरीके दूसरी कोई भी बड़ी नदी नहीं। चिड़ियां बहुत अच्छी होती हैं। जिलेका स्वास्थ्य अच्छा है, परन्तु शीतकालको ज्वरका प्राबल्य रहता है। रोगसे बचनेके लिये लोग अफीम खूब खाते हैं। वर्षा कालको बाढ़ आनेका बड़ा भय है।

पूर्वकालको गोदावरी जिला कलिङ्ग और वेंगी राज्यमें लगता था। प्राचीन राज्य जहां तक मालूम है, आन्ध्र थे। ई०से २६० वर्ष पहले अशोकने उन्हें जीता। किन्तु पीछेको वह ४०० वर्ष तक राज्य करते रहे। उनका साम्राज्य बम्बई और मैसूर तक विस्तृत था। ई० ३य शताब्दीके पूर्वकाल पल्लव राजाओंने उनका स्थान अधिकृत किया। ई० ७वीं शताब्दीको यह प्रान्त पूर्व चालुक्योंका अधिकारभुक्त हुआ। ९९९ ई०को वह चोल साम्राज्यके इस शर्त पर जागीरदार बने कि लड़ाईके समय मदद देंगे। १२वीं शताब्दीके मध्य वरङ्गलके राजत्व हुआ। परन्तु यह क्षुद्र क्षुद्र राजाओंमें विभक्त थे। १३२४ ई०को कुछ समयके लिये मुसलमानोंने गोदावरी पर अधिकार किया। परन्तु कोंडवीड और राजमहेन्द्रीके राजाओंने उन्हें निकाल बाहर किया था। १५वीं शताब्दीके बीच उड़ीसाके गजपति राजा हुए। इसके बाद फिर मुसलमान पहुंच गये। १४७० ई०को गुलबर्गके सुलतानको यह प्रान्त उनके साहाय्यके बदले मिला था। कुछ वर्ष बाद उन्होंने सब गजपति राज्य अपने अधिकारमें कर लिया। परन्तु गुलबर्ग राज्य छिन्न भिन्न होनेसे शताब्दी समाप्तिके पहले ही गजपतियोंका राज्य पुनः प्रतिष्ठित हुआ। १५१५ ई०को विजयनगरके सबसे बड़े राजा कृष्णदेवने कुछ समयके लिए इस प्रान्तको अपना अधीनस्थ बनाया था। परन्तु १५४३ ई०को गोलकुण्डाके पहले सुलतान और गजपति राजाओंसे झगड़ा हुआ। उन्होंने इनसे कृष्णा और गोदावरीके बीचका सब देश मांगा था। इससे उन प्रान्तोंमें बलवा हो गया। राजमहेन्द्रके गजपति राजाने जब विद्रोहियोंको साहाय्य किया, मुसलमान बिगड़ उठे। उन्होंने गोदावरी पार करके सुदूर उत्तर पूर्व तक अपना अधिकार बढ़ाया था। १५७२ ई०को राजमहेन्द्र हस्तगत हुआ और कुछ वर्ष बाद गोदावरीके उत्तर समग्र देशों पर उनका आधिपत्य हो गया। १६८७ ई०को औरंगजेबने गोलकुण्डाके सुलतानको परास्त किया था। उस समय सब बड़े बड़े जमीन्दार स्वाधीन हो गये। १७६५ ई०को अंगरेजोंसे यह जिला पाया था। पहले गोदावरी जिलेका पट्टा फौजदार हुसेन अली खांके नाम लिखा गया, किन्तु १७६८ ई०को प्रकृत अंगरेजी अधिकार हुआ। जमीन्दारोंकी सरकशीसे फिर कलेक्टरी बनाये गये। १८५९ ई०को गोदावरी जिला कायम हुआ। १८४० ई०को गोदावरीका बांध बना था। १८७९ ई०को पार्वत्य प्रदेशमें रम्पा विद्रोह फूट पड़ा, जो १८८१ ई०को शान्त हुआ। इस जिलेमें विस्तर्न हो बौद्ध मठोंका ध्वंसावशेष और हिन्दू-कीर्त्ति निदर्शन मिला है।

गोदावरी जिलेकी लोकसंख्या प्राय: २३०१७५८ है। इसमें २६७८ शहर और गांव आबाद हैं। यह जिला १६ तालुकों और तहसीलोंमें बंटा हुआ है। पहाड़ोंमें कोई और मैदानोंमें तेलगु लोग रहते हैं। हिन्दुओंमें प्रति शत ५ ब्राह्मण हैं।

मवेशियोंमें बीमारी बहुत होती है। कृमक्का भेड़ अपने रूएंके लिये मशहूर है। गोदावरीका जङ्गल अधिक मूल्यवान् है। इससे वार्षिक कोई १॥ लाख रुपया आता है। ५॥ मील कोयलेकी खान है। किन्तु कोई अच्छी तरह नहीं मिली। ग्रेफाइट कई जगह निकाला जाता है। एजेन्सीमें लोहेके कामके चिह्न पाये जाते हैं। सिंघाईमें गन्धकको दो छोटी छोटी खानें हैं। ऊनी कालीन और मोटे कम्बल बनाये जाते हैं। पहले यह जिला अपने नफीस सूती कपड़ेके लिये प्रसिद्ध था। परन्तु अब वह बहुत थोड़े गांवोंमें होता है। मोटा सूती वस्त्र कितनी ही जगह बुना करते हैं। शकर और शराबका भी कारखाना है। ताड़का गुड़ खूब तैयार होता है। इसके लिये जिलेमें कोई ४००००० पेड़ोंका रस खींचा जाता है। धानकी कुटाई भी कम नहीं चलती। रेड़ीके तेल और चमड़ेके कुछ कारखाने हैं। एक जगह लोहा गलाया जाता है। नीलकी कई कोठियां हैं। दो सरकारी और एक साधारण कुल तीन स्थानों पर नमक बनता है। चावल, दूसरे अनाज, तम्बाकू, तेलहन, घी, नारियल, चमड़े और फलकी रफ्तनी होती है। दक्षिणसे रूई भी ला करके विदेश भेजते हैं। सालमें कोई ८४ लाखका माल विलायत जाता है। प्रधान व्यवसायी मारवाड़ी हैं। वह कपड़ेके साथ अफीमका विनिमय खूब करते हैं। छोटा मोटा काम कोमतियोंके हाथमें है। कितने ही हफ्तावार बाजार लगते हैं।

मन्द्राज रेलवेकी ईष्टकोष्ट शाखा इस जिलेमें चलती है। ८१८ मील पक्की और २८८ मील कच्ची सड़क है। ८१४ मील तक उस पर दोनों ओर पेड़ लगे हैं। ४८३ मील नहरमें नावें चलती हैं।

प्रबन्धके लिये गोदावरी जिलामें ४ उपविभाग हैं। एजेन्सी प्रान्तको ५वां सब-डिविजन समझते जिसका प्रबन्ध एक युरोपीय डिपटी कलेक्टर करते हैं। मामूली चोरी बहुत होती है।

मुसलमानोंके समय सैनिक स्थानोंको छोड़ करके यह जिला जमीन्दारियोंमें बंटा था। वह उपजका पञ्चमांश पाते थे। १८०२-३ ई०को बङ्गाल जैसा दायमी बन्दोबस्त हुआ। किन्तु जमीन्दारोंके बिगड़ जानेसे बहुतसी जमीन गवर्नमेण्टके हाथ लगी। १८४६ ई०को मालगुजारी कायम की गयी और उसको दे देने पर किसान सब तरह आबाद हुए। गोदावरीको आबपाशी खुल जानेसे १८६२ ई०को सब जिलेमें रैयतवारी बन्दोबस्त कायम किया गया। १८८६ ई०को पैमायश पूरी हुई। १८९८ ई०को दूसरी पैमायश की गयी थी। फिर मालगुजारी बढ़ करके एक तराई पहुंची। इस जिलेकी कुल मालगुजारी ४२३२००००) रुपया है।

यहां ३ मुनिसपालिटियां हैं। इसके बाहर जिला-बोर्ड और तालुक बोर्ड इन्तजाम करते हैं। २५ छोटे शहरोंका इन्तजाम १८८४ ई० को ५ मन्द्राज धाराके अनुसार होता है। शिक्षाका प्रभाव पहले बहुत अच्छा था, किन्तु अब बिगड़ गया। इसमें प्रति वर्ष कोई ३८०००० रु० खर्च होता है। यहां दूसरे जिलेकी बनिस्बत मुसलमान ज्यादा पढ़े लिखे हैं। मन्द्राजके जिलोंमें तालीमकी निगाहसे गोदावरीकी गणना छठी है। एजेन्सी प्रान्त शिक्षामें सबसे पिछला है। बालिकाओंको भी शिक्षा दी जाती है। सौमें चारसे अधिक आदमी शिक्षित नहीं। १९०४ ई०को गोदावरी जिलेमें सब मिला करके १७४० शिक्षण संस्थाएं थीं।

गोदी (हिं० स्त्री०) १ बड़ी नदी या समुद्रमें घेरा हुआ स्थान। इस स्थान पर जहाज मरम्मतके लिए वा तूफान आदिके उपद्रवसे रक्षित रहनेके लिए रखे जाते हैं। (पु०) २ बरार पञ्जाब और अवधमें होनेवाला एक तरहका बबूल। यह नहरोंके किनारेके ऊंचे स्थान पर लगाया जाता है।

गोदुग्ध (सं० क्ली०) गायका दूध। भावप्रकाशमें वर्णके भेदसे गोदुग्धका गुण लिखा है—कालीगायके दूधका गुण वायुनाशक और अत्यन्त उपकारी है। पीली गायके दूधका गुण पित्त और वायुनाशक है। सफेद गायके दूधका गुण कफकारक और गुरुपाक है। लाल या विचित्रवर्णकी गायके दूधका गुण वायुनाशक है। बत्सहीना गायके

दूधका गुण त्रिदोषनाशक है। बहुत दिनोंकी प्रसूता गायके दूधका गुण—त्रिदोषनाशक, तृप्तिकारक और अत्यन्त बलकारी है। जो गाय जङ्गलमें तथा पहाड़ पर विचरती है उसके दूधका गुण गुरु और स्निग्ध है। जो घास बहुत कम खाती है उसके दूधका गुण गुरुपाक, बलकारी, अत्यन्त शुक्रवृद्धिकर तथा सुस्त मनुष्योंके लिए बहुत उपकारी है। जो गाय पयाल, घास या कपासका बीज खाती है उसका दूध रोगीके लिये हितकर है।

(भावप्रकाश)

गोदुग्धदा (सं० स्त्री०) गोदुग्धं ददाति सम्पादयति दा-क। एक प्रकारकी घास, चणिका तृण।

गोदुग्धा (सं० स्त्री०) १ चणिका तृण, एक प्रकारकी घास। २ इन्द्रवारुणी लता। ३ गोडुम्बा। ४ चिर्भटिका। ५ ककड़ी।

गोदुह् (सं० त्रि०) गां दोग्धि दुह क्विप्, ६-तत्०। १ गाय दूहनेवाला। (पु०) २ गोप, ग्वाला।

गोदूनिका (हिं० स्त्री०) पूर्वीय बंगाल और आसाम आदि प्रदेशोंमें होनेवाला बेतकी जातका एक वृक्ष। इस की चिकनी और चमकीली टहनियां स्याही बनानेके काममें आती हैं।

गोड़ो—बङ्गाल प्रान्तमें रहनेवाली एक जाति। यह शब्द गढ़का अपभ्रंश है। जो गढ़ (Fort) के स्वामी थे वे गोढ़ी कहाते कहाते धीरे धीरे गोदो कहलाने लगे। किसी दूसरे विद्वान्का मत है कि गदाको धारनेवाले महावीर जाति गोदो कहलाई। अनेक प्रमाणोंसे जान पड़ता है। कि पूर्व बंगालमें हिन्दू या मुसलमान राजा या बादशाहों-के समय यह जाति बड़ी वीर गिनी जाती थी और फौजोंमें भरती की जाती थी। आजकल यह जाति पलासीके आस पास जुल्मी पेशा करनेवाली मानी जाती है। वृटिश गवर्नमेण्टके राज्यसे पहले यह जाति लूट मार करनेमें प्रसिद्ध थी। परन्तु ऐसी दशा इस जातिकी सर्वत्र नहीं है। आजकल बहुतसे खेती और व्यापार करते हैं और मान प्रतिष्ठा भी इन्होंने कुछ बढ़ा ली है। ये बड़ी बड़ी वीरताके चिह्न प्रकट करते हैं। ये कठिनसे कठिन जमनास्टिक (कसरत) कर सकते हैं।

गोदोह (सं० पु०) गवां दोहः ६-तत्०। १ गोदोहन, गायका दूहना। २ गोदुग्ध, गायका दूध। ३ कालविशेष, गाय दूहनेमें जितना समय लगे।

गोदोहन (सं० क्ली०) गोर्दोहनं, ६-तत्। १ गोका दोहन, गायका दुहना। २ गोदोहनकाल, गाय दुहनेका समय।

(भागवत १।१८।३८)

गोदोहनी (सं० स्त्री०) गावो दुह्यन्तेऽस्यां गो-दुह आधारे ल्युट् ङीप्। गोदोहनपात्र, वह पात्र जिसमें गाय दूही जाती है।

गोद्दा—छोटानागपुर प्रान्तके सन्ताल परगनेका सब डिवि-जन। यह अक्षा० २४° ३०´ तथा २५° १४ उ० और देशा० ८७° ३ एवं ८७ ३६ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ८६७ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः २८०३२३ है। यहां पश्चिम तथा दक्षिण जङ्गल एवं पहाड़ और पूर्वको उपजाऊ जमीन है। इसमें १२७४ गांव बसते हैं।

गोद्दा—छोटा नागपुर प्रांतके सन्ताल परगने जिलेमें गोद्दा उपविभागका सदर। यह गांव अक्षा० २४° ५०´ उ० और देशा० ८७° १७ पू०में पड़ता है। आबादी कोई २२०८ है।

गोद्रव (सं० पु०) द्रवति द्रु-अच्-गोर्द्रवः, ६-तत्। गोमूत्र, गायका मूत।

गोध (हिं० स्त्री०) गोह नामक जंगली जानवर।

गोध—ये हिन्दीके एक प्रसिद्ध कवि थे। इनका जन्म १६८४ ई०में हुआ था।

गोधज (सं० पु०) गोधा।

गोधन (सं० क्ली०) गवां धनं समूहः, ६-तत्। १ गोसमूह, गायोंका झुण्ड। (त्रि०) गौरेव धनमस्य, बहुव्री०। २ जिसकी गोरूपी सम्पत्ति है। (क्ली०) गौरेव धनं। ३ गोरूप धन, गो रूपी सम्पत्ति। (पु०) धनं रवे भावे अच् गोधनं रव इव धनं रवो यस्य, बहुव्री०। ४ स्थूलाग्र वाण, एक तरहका तीर जिसका फल चौड़ा होता है।

गोधन (हिं० पु०) एशिया, युरोप तथा अफ्रिकामें पाये जानेवाला एक तरहका पक्षी। इसकी चोंच लाल, मस्तक भूरा और पैर हरे रंगके होते हैं। एक बार यह ५ से ८ अण्डे देता है।

गोधना (सं० स्त्री०) एक प्रकारका औषध।

गोधन्य—चीनपरिव्राजक वर्णित एक विस्तृत महाद्वीप

गोधर (सं० पु०) गां पृथिवीं धरति धर-अच्। १ पर्वत, पहाड़। २ प्रभासखण्ड वर्णित एक प्राचीन पुण्यतीर्थ, यहां भगवान् गोपति विराजमान हैं। ३ काश्मीरके एक राजाका नाम।

गोधरा—बम्बई प्रांतके पांचमहाल जिलेका उत्तर तालुक। यह अक्षा० २२° ४३' एवं २३° ६' उ० और देशा० ७३° २२' तथा ७३° ५८' पू०के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल ५८५ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: ८६४०६ है। मालगुजारी और सेस कोई ८२०००) रु० पड़ता है। इस तालुकमें खेती कम और जंगल भारी बहुत है। उत्तर को ग्रेनाइट पत्थरका चट्टानें पड़ी हैं। आबहवा अच्छी नहीं। ज्वार ज्यादा बोई जाती है।

गोधरा—बम्बई प्रांतके पाँचमहाल जिलेमें गोधरा तालुकका सदर। यह अक्षा० २२° ४६' उ० और देशा० ७३° ३७' पू०में गोधरा-रतलाम रेलवे पर पड़ता है। जनसंख्या प्राय: २०८७५ है। पहले वहां अहमदाबादके मुसलमान नवाबोंका एक सूबेदार रहता था। आजकल यह रेवाकाण्ठा पोलिटिकल एजेन्सीका भी सदर है। १८७३ ई०को मुनिसपालिटी हुई। चमड़ेके दो कारखानोंमें रंगाईका मामूली काम होता है। लकड़ीका बड़ा कारबार है। शहरके पास ही ७० एकरका पक्का तालाब है।

गोधर्म (सं० पु०) गोर्धर्म:, ६-तत्०। पशुकी नाईं अविचारशून्य मैथुन, पशुओंकी भांति समागम करना।
(भारत १।१०४ अ०)

गोधम (सं० पु०) अङ्गिरा वंशके एक ऋषिका नाम।

गोध सामन् (सं० पु०) साम भेद।

गोधा (सं० स्त्री०) गुध्यते परिवेष्ट्यते बाहुरनया गुध करणे घञ्-टाप्। १ धनुषके गुणाघातनिवारणार्थ वामप्रकोष्ठनिबद्ध चर्मनिर्मित पट्टिका, धनुषके गुणाघात निवारणके लिए बायें प्रकोष्ठमें बंधी हुई चमड़ेकी पटरी। (भारत ४।१७।४) २ जन्तुविशेष, गोह नामक जन्तु। ३ वटपत्रा पाषाणभेद। मनःशिला।

गोधाख्य (सं० पु०) गोधा सर्प, गोसांप।

गोधाङ्घ्रि (सं० स्त्री०) गोधाया इव अंघ्रि: मूलमस्या:, बहुव्री०। गोधापदी नामकी लता। गोधापदी देखो।

गोधापदिका (सं० स्त्री०) गोधाया इव पादो मूलमस्या, बहुव्री०। १ गोधापदी लता। २ तालमूली। रक्तलज्जालुका।

गोधापदी (सं० स्त्री०) गोधाया इव पादो मूलमस्या:, बहुव्री०। स्वाङ्गत्वात् ङीप् पद्भावश्च पूर्ववत्। लताविशेष, हंसपदी नामकी लता (Cissus Pedata) इसका संस्कृत पर्याय—सुवहा, हंसपदी, गोधाङ्घ्री, त्रिफला, त्रिपदी, मधुस्रवा, हंसपादी, हंसपादिका, हंसाङ्घ्रि, रक्तपादी, त्रिपदा, घृतमण्डिका, विश्वग्रन्थि, त्रिपादिका, त्रिपादी, कीटमारी, कर्णाट, ताम्रपादी, विक्रान्ता, ब्रह्मादनी, पदाङ्गी, शीतांगी, सूतपादिका, सञ्चारिणी, पदिका, प्रह्लादी, कोटपादिका, धार्त्तराष्ट्रपदी, गोधापदिका, वली, छिदला और हंसवती है। इसका गुण कटु, उष्ण, विष और भूतभ्रान्तिहर, अपस्मारदोषनाशक एवं रसायण है। (राजनि०)

इस लताके मूल या पत्रकी सादृश्यमें मतभेद देखा जाता है। किसी भिषक्शास्त्रवेत्ताके मतसे इसके पत्त गोधा या हंसचरणके जैसे त्रिदलविशिष्ट हैं, और कोई कोई कहता है कि पत्तेका मूल ही गोधा या हंसके पद सरीख है एवं मूल हंसचरणके जैसा रक्तवर्ण है। पत्तेका सादृश्य देख चिकित्सकगण हंसपदी लताको ही गोधापदी कहा करते हैं। इस लताके तीन भेद हैं। जिसके वृन्तस्थित दोनों वृन्तोंमें तीन तीन पत्ते रहते उसे चिकित्सकगण प्रकृत गोधापदी कहते हैं। जिस जातिके गोधापदीके केवल एक वृन्तमें तीन तीन दल रहते एवं प्रत्येक दलके पास छोटे छोटे छेद देखे जाते उसे तीन पत्ती या छोटी गोधापदी कहते हैं। तृतीय जातिको बड़ी गोधापदी मानते हैं इसके प्रत्येक वृन्तमें एक एक पत्ता रहता जो देखनेमें बड़ा कलमीके पत्तेके जैसा लगता किन्तु उसकी अपेक्षा कुछ छोटा और गोलाकृति होता है। यह लता ग्रन्थियुक्त और अत्यन्त विस्तृत होती है। इसके फल मटराकृति, गुच्छ भावापन्न तथा पकने पर कृष्णवर्णके हो जाते हैं।

२ मूसली नामकी औषध।

गोधामांस (सं० क्ली०) गोधा सर्पका मांस।

गोधायस (सं० स्त्री०) गां ददाति गो-धा बाहुलकात् असुन्। गोधारक, गो धारण करनेवाला।

शीतल और दाह, वमन, पित्त, अतिसार और ज्वरनाशक है। यह कल्पवृक्ष नामसे भी विख्यात है।

गोरख-ककड़ी (हिं० स्त्री०) एक तरहकी ककडी।

गोरख डिब्बी (हिं० स्त्री०) गर्म जलका कुण्ड या स्रोत।

गोरखधंधा (हिं० पु०) १ कई तारों कड़ियों या लकड़ीके टुकड़ोंका समूह। २ झगड़ा या उलझनका काय। ३ झगड़ा, उलझन पेच।

गोरखनाथ—गोरक्षनाथ देखो।

गोरखपंथी (हिं० वि०) गोरक्षनाथका अनुगामी, गोरख नाथके उपदेशका माननेवाला।

गोरखपुर—१ युक्त प्रदेशके उत्तर-पूर्वका एक विभाग। यह अक्षा० २५° ३८ से २७° ३०´ उ० और देशा० ८२° १३´ से ८४° २६ पू०में अवस्थित है यह विभाग नेपालकी तराईसे लेकर घर्घराके उत्तर तक फैला है। इसका उत्तरीय भाग बहुत आर्द्र है तथा चारों ओर जङ्गलसे घिरा है। भूपरिमाण ८५३४ वर्गमील और जनसंख्या लगभग ६३३३०१२ है। इसमें गोरखपुर, बस्ति और आजमगढ़ नामक तीन जिला लगते हैं। गोरखपुर और बस्ति घर्घरा नदी पर तथा आजमगढ़ उससे कुछ दक्षिणमें अवस्थित है। इस विभागमें कुल १८१३५ ग्राम पड़ते हैं। यहांके प्रधान वाणिज्य स्थान गोरखपुर, आजमगढ़, बरहज बरहलगञ्ज, उसका, पटरौना और गोला है।

२ युक्त-प्रदेशका एक पूर्वीय जिला। यह अक्षा० २६° ५´ तथा २७° २८´ उ० और देशा० ८३° ४ एवं ८४° २६ पू०में अवस्थित है। यह जिला वाराणसी विभागके अन्तर्गत है। इसके उत्तरमें नेपालराज्य, पूर्वमें सारण और चम्पारण जिला, दक्षिणमें घघरा नदी तथा पश्चिममें बस्ति और फैजाबाद जिला है। भूपरिमाण प्राय: ४५३५ वर्गमील होगा। लोकसंख्या प्राय: २८९ ७०७४ है।

हिमालय पर्वतसे बहुतसे वेगवान् जलस्रोत पहाड़के वालुकणाको साथ लिये निकले हैं। वह वालू क्रमश: जमकर जिलेके वालुकामय क्षेत्रमें परिणत हो गया है। इस जिलेमें एक भी बड़ा पर्वत नहीं है। यहां बहुतसी नदियां और जलस्रोत प्रवाहित है। स्थान स्थान पर जलाभूमि और गहरी झील देखी जाती है। अधिक पानी रहनेके कारण समूचा जिला उर्वरा तथा वृक्षादिसे परिपूर्ण है। जिलेके उत्तर और मध्यांशमें विस्तीर्ण शालवन है

पर्वत श्रेणीके निम्नभागमें तराई है। घने जंगल हो कर अनेक जलस्रोत प्रवाहित हैं। यहांके पहाड़ी अधिवासी देखनेमें ठीक गोर्खा या नेपालीके जैसे होते हैं। उनमेंसे थारू जातिकी ही संख्या अधिक है। सिर्फ थारू जातिके मनुष्य वर्षाऋतुमें तराई भूमिमें रह सकते दूसरी कोई जाति रह नहीं सकती है, क्योंकि इस समय भयानक महामारी फैला करती है। जिलेके दक्षिणकी ओर जितना ही अग्रसर होते जांय उतनाही सुशोभित खेतकी कतार दृष्टिगत होती है।

अधिक वर्षा होनेसे अमि उपत्यकाका जल पूर्व ओरकी झीलमें मिल कर एक समुद्रका आकार धारण करता है। इस जिलेकी प्रधान नदियोंके नाम ये हैं—राप्ती, घर्घरा, बड़ी गण्डक, कुआना, रोहिणी, अमि और गुड़घी। इसके अलावा रामगड़, नन्दौर, नवर, भीड़ि, चिल्लूरा, और अमियरताल प्रभृति कई एक झील हैं।

घर्घरा नदीके उत्तर तथा अयोध्या और बिहारके मध्य जो सब स्थान वर्तमान समयमें गोरखपुर और बस्ति जिलेमें बंटे हैं, वे प्राचीन कोशल राज्यके अन्तर्गत थे और अयोध्या नगरी उक्त राज्यकी राजधानी थी। गौतम बुद्ध इस जिलेके निकट कपिलवास्तु नगरमें पैदा हुये थे। वर्तमान तराईके 'भूइला' नामक स्थानमें उनकी मृत्यु हुई थी। आजतक भी उनके समाधिस्थानके ऊपर एक खोदी हुई बड़ी मूर्त्ति विद्यमान है।

ऐसा प्रवाद है कि अयोध्याके सूर्यवंशीय किसी राजाने इस जिलेमें काशीधामके सदृश गौरवविशिष्ट एक बड़ी नगरी स्थापन करनेकी चेष्टा की थी। जब वे उक्त नगरकी सम्पूर्ण रूपसे निर्माण कर चुके, तब उस समय थारू और भरजातिने आ उन्हें परास्त किया तथा नगरको बरबाद कर डाला। बहुत समयसे यह जाति अयोध्या और गङ्गाके उत्तर पूर्व स्थान पर राज्य करती रही। बौद्ध धर्मके उत्थानके साथ साथ फिर भी इनको अनेक घटनाएं

जाती जाती हैं। भरजातिके सर्दार पहले स्वाधीन भावसे राजत्व करते थे, अन्तको वे मगधके बौद्धराजाके आश्रित हुए। बौद्धोंके अधःपतनके बाद हिन्दुओंकी प्रधानता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। ६०० ई०को कनौजके हिन्दू राजाओंने इस जिले पर आक्रमण तथा वर्तमान गोरखपुर नगर तक अधिकार किया था। चीनपरिव्राजक युएनचुयाङ्ग जब इस देशको देखने आये उस समय वे बहुतसे बौद्धमठ और स्तूपादि देख गये थे। ८०० ई०में दोमहतार नामक किसी ब्राह्मणके दलने राठोरोंको गोरखपुरसे भगा दिया था। ११वीं शताब्दीमें नागरराज विष्णुसेन इस राज्यके सामन्त (राजा) थे, किन्तु उस समय भरजाति भी जिलेके पश्चिममें राज्य करती थी। इसके बाद मोगलसम्राट् अकबरके समयमें जयपुरके राजासे उन दोनोंका सम्पूर्ण रूपसे अधःपतन हुआ। १४वीं शताब्दीके प्रारम्भमें मुसलमानोंसे भगाये हुए राजपूत राजगण इस जिलेमें आये। उनमेंसे धूरचंद धूड़ियापाड़में और चन्द्रसेन शतासी नामक स्थानमें आ कर रहने लगे थे। चन्द्रसेन दोमानगढ़ पर (वर्तमान गोरखपुर दुर्ग) आक्रमण कर दोमहतारके सर्दारको मार कर आप राजा बन बैठे। इसी शताब्दीमें बतवल और बंसीके राजाओंके साथ घमसान युद्ध होनेसे जिलेका अधिकांश मरुभूमिसा हो गया था। १३५०से १४५० ई० तक शतासी और मझहौलीके राजाओंमें अविच्छेद युद्ध होता रहा।

प्रायः १४०० ई०में गोरखपुर नगर स्थापित हुआ। उक्त ई०के बाद यह जिला क्रमशः विभक्त होने लगा। मझहौलीवंशने दक्षिणपूर्व अधिकार किया था और धूरचन्दके वंशधर दक्षिण-पश्चिमांशमें राज्य करते थे। इसके बाद आवनला और शतासी राज्य तथा जिलेके उत्तर पश्चिमांशमें छोटा बनवल राज्य संगठित हुए। उक्त राजगण स्वाधीनभावसे राज्य करते थे।

मोगल राजत्वके पहले थोड़े मुसलमान घर्घरा नदी पार हुए थे। लेकिन वे इस प्रदेशको आ न सके १५७६ ई०में बङ्गश [illegible] खांको परास्त कर अकबरका सैन्य दल इस जिला[illegible] आया था तथा जिन राजाओंने उसे जाते रोका [illegible]के सेनापति फदाई खाँने उन सबको पराजित कर गोरखपुर दखल किया। औरङ्गजेबके समयमें उनके लड़के बहादुरशाह शिकारके उद्देशसे इस जिलेको देखने आये थे। परन्तु १७२१ ई०में लखनऊ नगरमें अयोध्याके नवाब वजीरके प्रतिष्ठित होनेके पहले मुसलमानोंका गोरखपुरके ऊपर विशेष लक्ष्य न था। उस समय देशीय राजा इस प्रदेशमें राज्य करते थे। नवाब सयादत् अली राजगद्दी पर बैठ गोरखपुर पर अधिकार करनेका यत्न करने लगे थे। १७५० ई०में अली कासीम खाँने बहुतसी सेना ले गोरखपुर हस्तगत किया। इस समय मुसलमान गोरखपुरके राजासे कर ले लेते और कोई उत्पात नहीं मचाते थे, देशीय राजाओंसे जो कुछ मिलता, उसे ही सहर्ष ग्रहण करते थे। १८ वीं शताब्दीमें वञ्जाराके उपद्रवसे यह जिला विशेष क्षतिग्रस्त हो गया। १७२५ ई०में वञ्जारा पहले पहल देखे गये थे। तीस वर्ष तक वे शान्त रहे, इसके बाद ये बंसीके राजाके साथ मिल दूसरे दूसरे सर्दारोंको कष्ट पहुंचाने लगे थे। इस समय अयोध्याके नवाबके मनुष्य प्रजाकी धन सम्पत्ति लूट रहे थे। प्रजाके हाहाकारसे आकाश विदीर्ण हो उठा। १७६४ ई०में बक्सरकी लड़ाईके बाद एक ब्रटिश सेनापतिके ऊपर नवाबके सैन्य परिचालन और गोरखपुरसे कर वसूल करनेका भार सौंपा गया। इन्होंने बहुतसे ताल्लुकदारोंकी जमीन ठीका दे दी। ठीका पाकर वे प्रजासे मन माना कर लिया करते थे। १८०१ ई०की सन्धिके अनुसार अयोध्याके नवाबने ब्रटिश गवर्मेण्टको यह जिला दे दिया। ब्रटिश गवर्मेंटने गोरखपुर, आजमगढ़ और वस्ति जिलेमें शासनका सुप्रबन्ध कर दिया। समय समय पर प्रजाओंके राजत्वको भी घटाने लगे। १८१३ ई०में नेपालियोंने गोरखपुर पर आक्रमण किया, किन्तु थोड़े समयके बाद ही वे लौट जानेके लिये वाध्य हुए। इस समयसे लेकर सिपाही विद्रोह तक यहां किसी तरहकी गड़बड़ी न हुई। १८५७ ई०के अगस्त मासमें मुहम्मद होसेनके अधीनमें विद्रोहियोंने इस जिलेपर अधिकार किया था १८५८ ई०को ६ठी जनवरीको जङ्गबहादुरने गोर्खासैन्यके साथ आ मुहम्मद होसेन और दूसरे दूसरे विद्रोहियोंको गोरखपुर जिलेसे भगा दिया। तभीसे यह जिला ब्रटिश

में गोधूम १०० पल, जल ३२ श० डाल कर काढ़ा प्रस्तुत करे जब अन्तमें केवल ८ शराव बच जाय तो उसे नीचे उतार ले और गोधूम, मुञ्जाफल (अभावमें तालमुस्तक), माषकलाय (उरद), द्राक्षा (दाख), परुषफल (नोली कटसरैया) काकोली, क्षीरकाकोली, जीवन्ती, शतमूली, अश्वगन्धा, पिण्डी खर्जुर, मधुक फल, त्रिकटु, शर्करा, भल्लातक (अभावमें रक्तचन्दन) और आत्मगुप्तफल या मूल प्रत्येकके ३॥ तो ४॥ र को चूर्ण कर उसमें मिलाते हैं। इसके बाद गुड़त्वक् (दारचीनी), एला (इलायची) पिप्पली, धन्याक (धनियां), कर्पूर, नागकेशर प्रत्येकके १०॥ तोले और शर्करा ८ प०, मधु ८ प०को उसमें डाल कर इक्षुकाण्डसे उसे अच्छी तरह घोटना चाहिए। बाद १ २ प० सेवन करनेका विधान है।

(चक्रपाणिदत्त कृत संग्रह)

गोधूमी (सं० स्त्री०) गां धूमयति धूम-णिच्-अण्-गौरादित्वात् ङीप्। गोलोमिका, श्वेतदूर्वा, एक तरहकी घास जिसमें पुष्प भी लगते हैं।

गोधूलि (सं० स्त्री०) गवां क्षुरोत्थिता धूलिः। कालविशेष, संध्या समय। ज्योतिषशास्त्रमें लिखा है कि गोधूलि लग्न सब कार्योंमें ही प्रशस्त है। इससे नक्षत्र, तिथि, करण, लग्न, वार, योग और जामित्रादि दोषोंका भय नहीं रहता, गोधूलि समस्त दोषोंको नाश करती है। लल्लादि ज्योतिर्वेत्ताओंके मतसे शुभ दिन या शुभलग्नके अभावमें अगत्या गोधूलिमें अपरिहार्य कार्य किया जा सकता है, किन्तु शुभलग्न पाने पर गोधूलिमें कार्य करना निषिद्ध है, करने पर अमङ्गल होता है।

नारदके मतानुसार पूर्वदेश और कलिङ्गदेशवासियोंके लिए गोधूलि शुभप्रद है। गोधूलिमें गन्धर्वादि विवाह और वैश्योंका विवाह हो सकता है। दैवज्ञ मङ्गलके मतसे शूद्रके पक्षमें गोधूलि प्रशस्त है, किन्तु द्विजोंके लिये प्रशस्त नहीं है।

गोधूलि समयका निरूपण लेकर ज्योतिषशास्त्रमें मतामत लक्षित होता है। किसी किसी ज्योतिर्विद्के मतसे सूर्यबिम्बके कुछ अस्त होनेके बाद दो दण्ड समयको गोधूलि कहते हैं। थोड़े ज्योतिषिक कहते हैं कि सूर्यबिम्बके तीन भागोंमें दो भागोंके अदृश्य होनेके बाद दो दण्ड समयको गोधूलि कहते हैं। मूहूर्त्तचिन्तामणिके टीकाकारका कथन है कि उपरोक्त दो मत देशभेद और आचारभेदसे आदरणीय हैं। मुहूर्त्तचिन्तामणिके मतसे हेमन्त और शीत ऋतुमें सूर्य पिण्डाकृति होने पर गोधूलि होती है। इस प्रकार चैत्र, वैशाख, ज्यैष्ठ और आषाढ़ मासमें सूर्य अर्द्धास्त, तथा श्रावण, भाद्र, आश्विन और कार्तिक माममें सूर्य मण्डलके संपूर्ण अस्त होने पर गोधूलि हुआ करती है।

मुहूर्त-चिन्तामणिके मतसे बृहस्पतिवारमें सूर्यके अस्त होने तथा शनिवारमें स्थित रहने पर गोधूलि शुभप्रद है। गोधूलि समयके लग्नसे अष्टम या षष्ठमें चन्द्र रहे ऐसे गोधूलि समयमें विवाह देनेसे कन्याको मृत्यु होती है। लग्नमें या अष्टममें मङ्गल रहे तो वरकी मृत्यु, होती तथा चन्द्र एकादश वा द्वितीय राशिमें रहे तो वर और कन्या अनेक तरहके सुख पाते हैं।

ज्योतिस्तत्त्वके मतसे अग्रहायण और माघ मासके गोधूलि योगमें विवाह करने पर कन्या विधवा होती, फाल्गुनके गोधूलि लग्नमें विवाह करनेसे पुत्र, आयु और धनकी वृद्धि होती है। इसी तरह वैशाखमें शुभ और प्रजावृद्धि, ज्यैष्ठमें वरकी सम्मानवृद्धि एवं आषाढ़ मासके गोधूलि लग्नमें विवाह करनेसे धन, धान्य और पुत्र वृद्धि हुआ करती है।

गोधेनु (सं० स्त्री०) गौरेव धेनुः। दुग्धवती गाभी, दुधारी गाय।

गोधेर (सं० त्रि०) गुध बाहुलकात् एरक्। रक्षक, रक्षा करनेवाला।

गोधेरक (सं० त्रि०) गोधेर स्वार्थ कन्। १ रक्षक। (पु०) गोधेर संज्ञायां कन्। २ चतुष्पद सर्पविशेष।

गोध्र (सं० पु०) गां भूमिं धरति गो धृ-मूलविभुजादित्वात् क। भूधर, पर्वत, पहाड़।

गोध्रा—गुजरातके पांचमहल जिलेके गोध्रा उपविभागके अन्तर्गत एक प्रधान नगर। यह अक्षा० २२° ४६' ३०" उ० और देशा० ७३° ४०' पू० पर अवस्थित है। यहां जिलेकी सदर अदालत, दिवानी अदालत, डाकघर, कारागार और औषधालय हैं।

गोन (हिं० स्त्री०) १ अनाज भरनेका चमड़ा, या कंबलकी

बनी हुई छोटी थैली। इसमें अनाज भरकर बैलोंकी पीठ पर रख एक स्थानसे दूसरे स्थान पर ले जाते हैं। २ साधारण बोरा। ३ टाटका कोई थैला। ४ नाव खींचनेकी रस्सी। (देशज) एक प्रकारकी घास जिसका साग भी बनता है।

गोनन्द (सं॰ पु॰) १ कार्तिकेयके एक गणका नाम। २ काश्मीरके एक राजा, ये गोनर्द नामसे परिचित थे। काश्मीर देखो। ३ मत्स्यप्रदेश।

गोनन्दन—सूक्तिकर्णामृत धृत एक कवि।

गोनन्दी (सं॰ स्त्री॰) गवि जले नन्दति नन्द-अच् गौरादित्वात् ङीप। सारसी पक्षी।

गोनरखा (हिं॰ पु॰) नावका मस्तूल।

गोनरा (हिं॰ पु॰) एक प्रकारकी लम्बी घास जो उत्तर भारतवर्षमें होती है।

गोनर्द (सं॰ पु॰) गवि जले नर्दति नर्द-अच्। १ सारस पक्षी। (Crane) २ देशविशेष। वृहत्संहिताके कूर्मविभागमें इस देशका उल्लेख है। यहाँ महर्षि पतञ्जलिका जन्म हुआ था। (क्ली॰) ३ कैवर्तमुस्तक, एक प्रकारको घास, नागरमोथा। ४ काश्मीरके एक राजा। (हरिवंश ९१ अ॰) (पु॰) गवि वृषे नर्दति नर्द-अच्। ५ महादेव, शिवजी। (भारत १३।२८९ अ॰) ६ एक प्राचीन ग्रन्थकार। मल्लिनाथने इनके बनाये कामशास्त्रको उद्धृत किया है।

गोनर्दीय (सं॰ पु॰) गोनर्दे देशे भवः गोनर्द-छ। १ पतञ्जलि मुनि।

गोनस (सं॰ पु॰-स्त्री॰) गौरिव नासिका यस्य, बहुव्री॰। अच नासिकाया नसादेशश्च। १ सर्पविशेष, एक प्रकारका साँप। इसका पर्याय—तिलित्स, गोनास, घोनस, मण्डली और वोड़ है। वोड़ा देखो। (पु॰) २ वैक्रान्तमणि।

गोनसी (सं॰ स्त्री॰) गोनसस्तदाकारो ऽस्त्यस्याः गोनस-अच गौरादित्वात् ङीष। औषध वृक्षविशेष। गोनस सर्पके शरीरके जैसा मण्डलाकार कृष्णवर्ण चिन्ह युक्त रक्ताभ पत्रविशिष्ट मूलप्रधान वृक्षको गोनसी कहते हैं। सुश्रुतमें लिखा है कि यह वृक्ष कृष्णवर्ण मण्डलयुक्त, भूमिजात होता है और इसमें सिर्फ दो पत्र रहते हैं। इसका रंग लाल होता है और ऊंचाई लगभग डेढ़ हाथकी रहती है। (सुश्रुत चिकित्सा॰ ३० अ॰)

गोनाड़ीक (सं॰ पु॰) चञ्चुशाक, चञ्चु नामक एक प्रकारकी लता।

गोनाथ (सं॰ पु॰) गोर्नाथः, ६-तत्। १ वृष, बैल, सांड़। २ भूमिपति, राजा। ३ गोस्वामी।

गोनाय (सं॰ पु॰) गां नयति नी-अण्। १ गोप, ग्वाला।

गोनास (सं॰ पु॰) गोर्नासा इव नासा यस्य, बहुव्री॰। गोनससर्प। (हेम॰ ४।३।११) (क्ली॰) गोर्नासा इव आकृतिर्यस्य, बहुव्री॰। २ वैक्रान्त मणि।

गोनिकोप्पल—कोड़गप्रदेशके अन्तःपाती एक नगर।

गोनिवाला—बम्बई प्रदेशवासी मुसलमान शस्यविक्रेता, इनका आचार व्यवहार शेखोंके जैसा है। शेख देखो।

गोनिया (हिं॰ स्त्री॰) १ दीवारकी सिधाई मालूम करने का बढ़ई तथा राजका औजार। यह औजार समकोणकी आकृतिका होता और लोहे तथा लकड़ीका बना रहता है।

(पु॰) २ बोरा ढोनेवाला। ३ रस्सी बाँध कर नाव खींचनेवाला।

गोनिष्क्रमण—एक पुण्यतीर्थ। वराहपुराणके १४१ अध्याय में इसका माहात्म्य वर्णित है।

गोनिष्यन्द (सं॰ पु॰) गोनिष्यन्दते निष्यन्द अच ५-तत्। गोमूत्र, गायका मूत।

गोनी (हिं॰ स्त्री॰) १ टाटका थैला, बोरा। २ पटुआ, सन।

गोनुपल्ली—मन्द्राज प्रदेशस्थ नेल्लुर जिलेके रायपुर तालुकके अन्तर्गत एक ग्राम। यह रायपुरसे ५ मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। यहां एक पुराना विष्णुमन्दिर है, इसके निकटवर्त्ती पर्वतके ऊपर पिङ्गलकोण मन्दिर पर प्रति वर्ष एक बड़ा मेला लगा करता है।

गोन्दोलि—सतारा जिलेमें मान नदीसे निःसृत एक विस्तृत नहर। १८६७ से १८७२ ई॰ पर्यन्त इस नहरको बनानेमें लगा था। गोन्दोलि ग्रामसे इसका नामकरण हुआ है।

गोन्धलगार (गोन्धालो) बम्बई प्रदेशवासी मराठाकी एक जाति। ये नृत्य कर जोविका निर्वाह करते, इसीलिए इनका नाम गोन्धलगार या गोन्धालो हुवा है। इनकी उपाधि गरोड़, गुरु, पवाङ्ग और बुगड़े हैं। इनका गठन लम्बा और दृढ़काय है। ये अपरिष्कार और बहुत छोटे

घास फूसके घरमें रहते तथा कंगनीके दाने नित्य आहार करते हैं। सिर्फ पर्व दिनमें ही मिष्टान्न और मांस खाते हैं। मादक सेवनमें ये बड़े पटु हैं। पुरुष जाति भी कानमें पीतलके कुण्डल धारण करते हैं। इनके गुरु नहीं होते हैं, तब कभी कभी कोई निकृष्ट ब्राह्मण इनका पुरोहित हो जाता है।

सन्तानके भूमिष्ठ होने पर उसकी नाड़ी काट कर फेंक दी जाती और गृहस्थ जातिभोज देते हैं। ७वें दिनको शिशुका नामकरण और दोल रोहण होता है। इसके बाद विवाह पर्यन्त और कोई उत्सव ये नहीं मनाते। इनके विवाहके पूर्व दिन वर और कन्याके शरीरमें हलदी लगाई जाती है। विवाहकालमें गाँवका ग्रहविप्र आ वरको पूर्वमुख और कन्याको पश्चिममुख खड़ा कर मन्त्र पाठ करते और शरीर पर धान फेंक कर आशीर्वाद देते हैं। तदनन्तर दोनों पक्षका ज्ञातिभोज हो विवाह उत्सव हो जाता है। इन लोगोंमें बाल्यविवाह, विधवा-विवाह और पुरुषके लिए बहुविवाह प्रचलित है। जातिमें किसी तरहको घटना हो जाने पर पञ्चायतसे उसकी मीमांसा होती है। ये मुर्देको जलाते हैं। समस्त हिन्दू पर्वमें और मुसलमानके मोहर्रममें योग देते हैं।

प्रतिदिन चार पांच गोन्धलगार मिल कर वाद्यादि साथ ले द्वार द्वार घूमा करते हैं। किसीको इच्छा हो जाने पर ये उसके प्राङ्गणमें समस्त रात्रि गोन्धल नाच करते हैं। प्रभात होनेके कुछ पहले इनमेंसे एक व्यक्ति अम्बा देवीको लेकर उन्मत्तकी नाँई कूदता और नाचता तथा भविष्यत् वाक्य कहना आरम्भ करता है। इस समय प्रत्येक दर्शक उसके चरण पर दो दो पैसे रख उसे प्रणाम करता है और फिर वह गोन्धलगार जलती हुई मसाल ले अपने शरीरमें लगा कर खड़ा रहता है। इसके बाद देवीके शरीरकी हलदी ले आगन्तुकोंके कपालमें स्पर्श करता और अपुत्रक स्त्रियोंको पुत्रोत्पन्न तिथि कह दिया करता है। प्रातःकाल होने पर वे विदाई ले अपने अपने घरको चले आते हैं।

गोन्धोधस् (सं० पु०) गमनशील, जो दुग्धमें प्रवाहित हो।

गोप (सं० पु०-स्त्री०) गां पाति रक्षति गो-पा-क। १ जाति विशेष, ग्वाला, आहीर। इसका संस्कृत पर्याय-गोसङ्ख्य, गोदुह, आभीर, वल्लव और गोपाल है। साधारणतः ग्वाल नामसे मशहूर है। पश्चिमाञ्चलमें सब जगह आहीर और दाक्षिणात्यमें गाव्ली नामसे अभिहित है।

आहीर और गाव्ली देखो।

पूर्व कालसे यह जाति गोप और आभीर नामसे प्रसिद्ध है। मनुके मतानुसार ब्राह्मणके औरस और अम्बष्ठ कन्याके गर्भसे आभीरका जन्म हुआ है (१)। परशुराम-पद्धतिके मतसे कसेरो और मणिकार (जहौरी) की कन्यासे गोप जातिकी उत्पत्ति है। (२) किन्तु रुद्रयामलोक्त जातिमालामें लिखा है कि जुलाहा और मणिवन्ध-कन्याके संभोगसे गोपजीवका जन्म ग्रहण हुआ है (३)। ब्रह्मवैवर्तके मतानुसार श्रीकृष्णके लोमकूपसे गोपगण उत्पन्न हुए हैं (४)। ये सत्शूद्रमें गण्य हैं।

यह जाति पूर्वकालसे ही गोपालन करती आ रही है, इसीलिए ये गोप कहलाये। मनुसंहितामें लिखा है कि गोप वेतनप्रार्थी नहीं है, वह गोस्वामीकी अनुमति ले दश गौओंमेंसे एक श्रेष्ठ गौका दुग्ध दोहन कर ले जा सकता है। व्याससंहिताके विकृत वचनमें ये अन्त्यज जातिके मध्य गण्य हैं। किन्तु यम, पराशर, मनु प्रभृति संहितामें ये शूद्र और भोज्यान्नके जैसे गृहीत हैं (५)।

वर्तमान समयमें इस जातिके मध्य अनेक श्रेणी और शाखाभेद देखे जाते हैं। बङ्गदेशमें ग्वालाकी कई एक श्रेणियाँ हैं—राढ़ी, वागड़ी, वारेन्द्र, पल्लव या वल्लव, गौड़ या घोषग्वाला, मधुग्वाला, गुमिया, करञ्जी, काजाल

(१) "आभीरोऽम्बष्ठकन्यायां।" (मनु० १०।१५)

(२) "मणिपुर्य्यां कांस्यकारात् गोपालस्य च सम्भवः।" (भार्गवरामकृत जातिमाला)

(३) "मणिबन्ध्यां तन्तुवायात् गोपजीवस्य सम्भवः।" रुद्रयामलोक्त जातिमाला।

(४) "कृष्णस्य लोमकूपेभ्यः सद्यो गोपगणो मुने।
आविर्बभूव रूपेण वेशेनैव च तत्समः॥
त्रिंशत्कोटीपरिमितः कमनीयो मनोहरः।
संख्याविद्भिश्च संख्यातो बल्लवानां गणः श्रुतौ॥" (ब्रह्म० ५।४५-४५)
"गोपनापितभिल्लाश्च तथा मोदककूवरौ॥
इत्येवमाद्या विप्रेन्द्र सच्छूद्राः परिकीर्तिताः॥" (ब्रह्मख० १०।१८)

(५) "दासनापितगोपालकुलमित्रार्धसीरिणः।
एते शूद्रेषु भोज्यान्ना यश्चात्मानं निवेदयेत्॥" (यम २०, पराशर ११।२०)

आहीर या महिषा ग्वाला, मगल या मागधो और भोगा। वारेन्द्र गोपोंके मध्य पन्नाल, लाहिड़ि, मूलगावां, दागानिया प्रभृति, तथा भोगा श्रेणीके मध्य सादा ग्वाला और लाल ग्वाला है।

उत्तरपश्चिममें—देशो, नन्दवंशी, यदुवंशी, सूर्यवंशी, ग्वालवंशी, अहीर प्रभृति श्रेणियां हैं।

विहारमें—गोरिया या दहियारा, मजरौत्, सातमूलिया या किष्नौत्, कनौजिया, बर्गांवार, धनरोआर, चौआनिया, चौथा, गुजिआर या गोदागा, गोइन, काँटीताहा, पुहोया, सेपारो और बनपूर प्रभृति मूल हैं।

उड़ीसामें—दुमाला, यदुपुरिया, मगधा, मथुरा वा मथुरावंशी, गौड़ या गोपपुरिया प्रभृति श्रेणियाँ हैं।

छोटानागपुरमें—किष्नौत्, गोरो, चौआनिया, मझवत्, लारि, भोगता, सदोर और माओड़ां प्रभृति शाखायें हैं।

बङ्गालके ग्वालोंके मध्य वारिक, चोमर, ढालि, घोष, जाना, मण्डल, परामाणिक प्रभृति पदवियां और अलमासि वा आलम्यान, भरद्वाज, गौतम, काश्यप, मदुऋषि वा मधुकुल्य और शाण्डिल्य गोत्रादि प्रचलित हैं।

विहारमें—भांड़ारो, भोगत, चौधरी, घोरैला, मिराहा, महतो, मण्डर, माझी, मारिक, पञ्जियारा, राय, रास्त और सिं प्रभृति पदवियां देखी जाती हैं।

युक्तप्रदेश, विहार और छोटानागपुर प्रभृति स्थानोंके ग्वालोंमें मूल वा श्रेणीके अतिरिक्त गाँजिके सदृश और कई एक 'थाक' या गोष्ठ प्रचलित हैं।

बङ्गके 'पल्लव' या 'वल्लव' श्रेणीका ख्याल है कि श्रीकृष्णके पसीनासे घामघोष पैदा हुए, यही घामघोष उन लोगोंके आदिपुरुष हैं। किन्तु वागड़ी श्रेणीवाले कहते हैं कि उन लोगोंके पूर्वपुरुष उज्जयिनोसे आ वागड़ी अञ्चलमें रहते थे, इसोलिये वे उज्जैनिया नामसे भी मशहूर हैं। राढ़ी गोप बैलके शरीरमें तप्तलौह द्वारा अङ्कित तथा वधिया करते हैं, इसीसे वे दूसरे दूसरे श्रेणियोंके निकट हेय और नोच गिने जाते हैं। गोड़गोप बहुत दिनोंसे बङ्गालमें लाठियाल नामसे विख्यात हैं, ये अपनेको सत्शूद्रके जैसे परिचय देते एवं दूसरे किसी श्रेणीके साथ आदान प्रदानमें आपत्ति नहीं करते हैं। प्रधानतः ढाका जिलामें लाल और सादा ग्वाले वास करते हैं। लाल ग्वाला विवाहकालमें लाल वस्त्र और सादा ग्वाला सफेद वस्त्र परिधान करते हैं। इन दोनोंमें सादा गोप अपनेको प्रधान समझते और लाल ग्वालेसे कन्यादानके समय बहुत रुपये लिया करते हैं। बङ्गालके ग्वाले स्वगोत्र और मातामह गोत्रमें विवाह नहीं करते। इन लोगोंमें कन्याका बाल्यविवाह हो आदरणीय है; विधवा-विवाह प्रचलित है। विवाह-प्रणाली उच्चश्रेणीके हिन्दूके जैसा है। इन लोगोंमें अधिकांश वैष्णव तथा शाक्त और शैव अल्प है। इनके ब्राह्मण पुरोहित भी स्वतन्त्र हैं जो इस देशमें निम्नश्रेणीमें गिने जाते हैं।

विहारके ग्वालोंमें गोत्रनियम प्रचलित नहीं है, ये मूल लक्षकर विवाहादि सम्बन्ध निर्णय करते हैं। सप्तमूल और नवमूल छोड़ कर आदान प्रदान किया करते हैं। सप्तमूल वा किष्णौत अपनेको कृष्णसे उत्पन्न बतलाते हैं। इन दो श्रेणियोंके गोप दधि प्रस्तुत नहीं करते, वे सिर्फ दुग्ध विक्रय किया करते हैं। गोरिया या दहियारा मूलके गोप दुग्धको गरम किये विना उससे दधि तैयार कर लेते इसलिये वे पतित गिने जाते हैं। काँटिताहा मूलका ग्वाला गौके शरीरमें काँटोसे दाग देता इसी कारण इसका ऐसा नाम रखा गया है। कनौजिया और बर्गांवार उत्तर-पश्चिमसे आ विहारमें बस गये हैं, ये अपने ही हाथसे नवप्रसूत शिशुको नाड़ो काटा करते हैं इसीलिये दूसरे मूलके गोप इन्हें नीच समझते हैं। विहारके गोपोंमें बाल्यविवाह प्रचलित है तथा पतिको मृत्यु पर विधवा देवरसे विवाह कर सकती है। यहांके ग्वाले विषहरी, गणपत्, गोंसावन, कालामांझी और भूतको विशेष भक्ति श्रद्धा किया करते, तथा वर्षमें एक बार सत्यनारायणको पूजा करते हैं। विहारमें शैव और शाक्त अधिक हैं।

उड़ीसाके गोप अपनेको बङ्ग और विहारके गोपजातिको अपेक्षा श्रेष्ठ तथा शुद्ध समझते हैं। उच्चश्रेणीके हिन्दूकी नाईं ये शास्त्रके मतसे चलते हैं। इनका आचार व्यवहार बहुत कुछ विहारके गोपोंसे मिलता जुलता है। ये कहते हैं कि यदि विवाहके पूर्व लड़की ऋतुमती हो जाय तो उस कन्याको पहले एक नितान्त वृद्ध मनुष्यसे व्याहना चाहिए और विवाहके बाद वह वृद्ध भी उसे

परित्याग कर दे। तदन्तर वह स्त्री विधवाकी नाईं किसी दूसरेसे विवाह कर सकती है। इनके रमणियां पूर्ण गर्भा होने पर एक स्वतन्त्र उष्ण घरमें रखी जाती हैं। प्रसवके २१ दिन पर्यन्त उन्हें गर्म घरमें रहना पड़ता है। इक्कीस दिनों तक पति और पत्नी दोनों अशुचि रहते और कोई कार्य कर नहीं सकते हैं।

छोटा नागपुरके ग्वालोंमें बाल्यविवाह और ज्यादे उमरमें विवाह दोनों प्रचलित हैं। विवाहके चार मास बाद 'रोकमदि' या कन्या श्वशुरालय जाती है। इन लोगोंमें जब तक रोकमोधि नहीं होती तब तक विवाह सिद्ध नहीं समझा जाता है। विधवा विवाहको प्रथा भी इनमें प्रचलित है।

ये गोमेषादि पालन तथा दधिदुग्धादि विक्रय कर जीविका निर्वाह करते हैं। किसी किसी स्थानमें कुछ गोप खेती भी करते हैं।

(पु०) २ ग्रामाधिकारी, गांवका मालिक। ३ भूपाल, राजा। ४ गोष्ठाध्यक्ष, गोशालाका प्रबन्ध करनेवाला। (त्रि०) ५ गोरक्षक, गौकी रक्षा करनेवाला। गोपायति गुप-अच्। ६ रक्षक, रक्षा करनेवाला। ७ उपकारक, भलाई करनेवाला। ८ बोर, क्षारजल, मुर या बोल नाम की औषध। ९ गन्धर्व विशेष, एक गन्धर्व का नाम।

गोपक (सं० त्रि०) गोप स्वार्थे कन् गुप्-ण्वुल् वा। १ गोप, ग्वाला। २ बहुतसे ग्रामोंके एक अधिपति। ३ रक्षक, रक्षा करनेवाला। ४ वर्तमान गोआका प्राचीन नाम। गोआ देखो।

(पु०) ४ वणिक् द्रव्यभेद। ५ रक्तवाले। ६ शारिवा, अनन्तमूल। ७ नौसादर।

गोपकन्या (सं० स्त्री०) गोपस्य कन्येव प्रियतरा। १ औषध विशेष। गोपस्य कन्या, ६-तत्०। गोपजातीय कन्या, ग्वालाकी लड़की।

गोपकपुरि—गोआ देखो।

गोपकर्कटिका (सं० स्त्री०) गोपप्रिया कर्कटिका, मध्य पदलो०। गोपालकर्कटी, गोपाल कांकरी या कुन्दरू।

गोपक्षेत्र—प्रभास खण्ड वर्णित एक पुण्य स्थान।

गोपघोण्टा (सं० स्त्री०) गोपप्रिया, घोण्टा, मध्यपदलो०। १ वृक्षविशेष, कोई पेड़। निविड वनमें इस जातिका वृक्ष देखा जाता है। इसका फल तथा गाछ बेरके जैसे होते हैं। २ हस्तिकोलिवृक्ष। ३ विकङ्कतवृक्ष। ४ कर्कोटी, करेलो। ५ पूगभेद, एक प्रकारको सुपारी।

गोपता (सं० स्त्री०) गोपस्य भावः गोप तल्-टाप्। गोपका धर्म।

गोपति (सं० पु०) गोः पतिः ६ तत्। १ शिव, महादेव। २ वृष, सांढ़, बैल। ३ विष्णु। ४ भूमिपति, राजा। ५ किरणपति, सूर्य। ६ स्वर्गपति, इन्द्र। ७ ऋषभ नामको औषध। ८ भोजवंशीय एक राजा। कृष्णने इरावती नगर में इसे निहत किया। ९ गन्धर्वविशेष। १० नौ नन्दोंमें से एक। ११ गोपाल, ग्वाला। १२ बाचाल, मुखर।

गोपतिचाप (सं० पु०) इन्द्रधनुषः।

गोपत्य (सं० क्ली०) गोपति-यत्। गोपतिका धर्म, ग्वालाका भाव।

गोपथ (सं० पु०) अथर्व वेदका एक ब्राह्मण। ब्राह्मण देखो।

गोपद (सं० क्ली०) गोः पदं पदस्थानं योग्यस्थानं। १ गौओंके रहनेकी जगह। २ पृथ्वी पर चिह्नित गौका खुर।

गोपदल (सं० क्ली०) गोपदं गोचरणन्यासयोग्यं स्थानं तदाकारं वा लाति-ला क। गुवाकवृक्ष, सुपारीका पेड़।

गोपटी (सं० त्रि०) गायके खुरके समान अत्यन्त छोटा।

गोपन (सं० क्ली०) गुप भावे ल्युट्। १ अपह्नव, छिपाव, दुराव। २ रक्षण, रक्षा। ३ कुत्सा, घृणा, तिरस्कार। ४ व्याकुलता। ५ दीप्ति। ६ तेजपत्र तेजपत्ता। ७ ग्रन्थिपर्ण।

गोपना (सं० स्त्री०) गुप दीप्तौ भावे युच्। दीप्ति, कान्ति।

गोपनाथ—हिन्दीके एक प्रसिद्ध कवि। ये १६१३ ई०में विद्यमान थे।

गोपनीय (सं० त्रि०) गुप कर्मणि अनीयर्। १ अप्रकाश्य, जिसका प्रकाश करना उचित नहीं, छिपाने योग्य, गोप्य, २ रक्षणीय।

गोपवधू (सं० स्त्री०) गोपस्य वधूरिव प्रियत्वात्। १ शारिवा, अनन्तमूल। गोपस्य वधूः ६-तत्। २ गोपपत्नी, ग्वालेकी स्त्री।

गोपवधूटी (सं० स्त्री०) वधू अल्पार्थे टी गोपस्य वधूटी, ६ तत्। युवती गोपाङ्गना, युवती ग्वालिन्।

गोपभट्ट—गोभट्ट देखो।

गोपभद्र (सं० क्ली०) शालूक वृक्षविशेष ।

गोपभद्रिका (सं० स्त्री०) गाम्भारीवृक्ष । (Gmelina arborea)

गोपमाउ—युक्त प्रदेशमें हर्दोई जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० २७° १२' उ० और देशा० ८०° १८' पू०के मध्य अवस्थित है। यह हर्दोई सदरसे ७ कोस उत्तर पूर्वमें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५६५६ है। प्रवाद है कि पूर्वकालमें ठठेरोंने जंगल काट यहां मव्वा बसाया या मव्वाचाचर स्थापित किया था। १०वीं शताब्दीमें राजा गोपने यहां अपने नाम पर एक नगर बसाया। ठठेरोंसे प्रतिष्ठित इस स्थानकी कोरैरुदेव और बादल देवकी प्रस्तरमूर्त्तियां आज भी पूजी जाती हैं। १०३२ ई०को ससायुदके अधीन लालपीर गोपमाउ नगर पर आक्रमणके लिये आये थे। किन्तु वह लड़ाईमें मारे गये और विजेताने उन्हें गोपीनाथके मंदिरमें गाड़ दिया। १२३२ ई०को अल्तमासके आदेशसे ख्वाजा ताज उद्दीन-हौसेन यहां ससैन्य उपस्थित हुये। इन्होंने यहां एक मस्जिद निर्माणकी जो १७८५ ई०को अर्काटके सुबादार नवाब मुहम्मद अलीखांके यत्नसे मरम्मत हुई थी। अकबरके समय इस नगरमें ६२ फुट ऊंची एक जुम्मामस्जिद निर्मित हुई और १६८८ ई०में नौनिदराय कर्तृक यहां [illegible] गोपीनाथका मन्दिर स्थापित हुवा। इस [illegible] मन्दिरमें संस्कृत शिलालेख है।

गोपरस (सं० पु०) गां जलं पिवति पा क। गापा. [illegible] स्य, बहुव्री०। घोल, क्षारजल।

गोपराजपण्डित—एक ज्योतिर्विद्, ग्रहणगणितकल्पतरु वामनाभाष्यके रचयिता।

गोपराज—भानुगुप्तके अधीन एरणका एक राजा।

गोपराष्ट्र (सं० पु०) गोपप्रधानाः राष्ट्राः। भारतवर्षस्थ एक प्रदेश, ग्वालियर प्रान्तका एक प्राचीन नाम। यह गोपगणोंका प्रधान वासस्थान था। महाभारतमें इस जनपदका उल्लेख है।

गोपरिचर्या (सं० पु०) गोः परिचर्या, ६-तत्०। गोसेवा, गौका प्रतिपालन। हिन्दूशास्त्रमें लिखा है कि प्रत्येक गृहस्थको गौ प्रतिपालन करना उचित है। पूर्वकालमें राजा महाराज गौ सेवा किया करते थे। गृहस्थ मात्र ही गौ द्वारा उपकृत हैं, उनके लिये गोधन सदृश दूसरा धन नहीं है। इन मवेशियोंका आहार वन्यतृण और वासस्थान अरण्य है। जो जल दूसरेके पीने लायक नहीं वही वन्य जल पीकर अपना जीवन पालते हैं। गौ प्रतिपालन करनेमें गृहस्थको विशेष आयास करने नहीं पड़ते, वरन् वे इनके दुग्धसे बहुत लाभ उठाते हैं। गौका मूत्र और विष्ठा प्रभृति गृहस्थके लिए प्रयोजनीय और उपकारी है, गृहस्थ मात्र ही गौके ऋणसे आबद्ध हैं। बाल्यकालमें माता और गौ इन्हीं दोनोंके स्तन पान कर जीवन धारण किया जाता है, इसी लिए दोनोंको समान भावसे भक्ति करनी चाहिये। ब्रह्मपुराणके मतसे गृहस्थको प्रतिदिन गौ पूजा, नमस्कार और उनकी सेवा करनी उचित है। गोष्ठमें जा गौओंका प्रदक्षिण करनेसे चराचर भूमण्डल परिभ्रमणका फल होता है। गोमूत्र, गोमय, घृत, दुग्ध, दधि और रोचना गौके ये छः द्रव्य मङ्गलकर और सकल पापनाशक हैं। गायको ग्रासदान करने पर स्वर्गवास होता है। गौके शरीर पर हाथ फेरनेसे सब पाप दूर हो जाते हैं।

पद्मपुराणके मतानुसार गौको देख कर पहले "नमो गोभ्यः" इत्यादि मन्त्र पाठकर नमस्कार करना चाहिये। रामायणमें लिखा है कि रामचन्द्रके पूर्वपुरुष महाराज दिलीप स्वर्गसे लौट आनेके समय गौको नमस्कार करना भूल गये थे। इसी पापसे अनेक दिन पर्यन्त ये पुत्ररत्नसे वञ्चित थे।

आदित्यपुराणका मत है कि गौको यथाशक्ति लवणदान करनेसे पुण्यलोकको प्राप्ति होता है। जो प्रतिदिन विना खाये गौको खिलाता है, उसे सहस्र गोदानका फल होता है। देवीपुराणमें लिखा है कि मक्षिका और डांस प्रभृतिसे निवारणके लिए गोगृहमें धूम देना चाहिये।

गोगृहमें धूम नहीं देनेसे गोपालक मक्षिकालीन नरकको जाता एवं नरककी भीषण मक्षिकायें उसके चर्मको फाड़ कर रक्त पान करती हैं। गौका बच्चा मर जाने पर इसे दूहना नहीं चाहिए, ऐसा करनेसे उस नराधमको नरकमें वास कर क्षुधाके लिये हाहाकार करना पड़ता है। (देवीपुराण)

महाभारतका मत है कि तृष्णार्त गोको जलपान करते समय जो व्यक्ति बाधा देता उसे ब्रह्मघातक कहते हैं। जो शीत तथा वायुरोधक गोगृह निर्माण करता है, उसके सात कुल उद्धार होते हैं।

गृहस्थके अपने घरमें कुलक्षणा गायको उत्पन्न होने पर उसे परित्याग करना नहीं चाहिये। शीतकालमें अनाथ मवेशियोंका घर निर्माण कर देना उचित है।

(ब्र॰पु॰)

गायके प्रसव कालसे दो मास पर्यन्त उसे दुहना नहीं चाहिये। तृतीयमासमें सिर्फ दो स्तन दुहनेका विधान है और शेष दो स्तन बच्चाके लिए छोड़ देवें। चतुर्थ मासमें तीन स्तन दुहना चाहिये, किन्तु दुहते समय यदि गाय किसी तरह कष्ट अनुभव करे, तो उसे अच्छी तरह न दुहे। आषाढ़ी, आश्विनी और पौष पूर्णिमाको गोदोहन करना निषेध है। युगादि, युगान्त, षड़शीति, विषुवत् संक्रान्ति, उत्तरायण एवं दक्षिणायण प्रवृत्तिके दिनमें चन्द्र या सूर्य ग्रहणमें एवं पूर्णिमा, अमावस्या, चतुर्दशी, द्वादशी और अष्टमी तिथिमें गोपूजा करनी चाहिए तथा ४ पल लवण, ८ पल घृत, १६ पल अपर दुग्ध और ३२ पल शीतल जल गोको खाने देना उचित है। किन्तु रुचि और दुग्धके परिमाणानुसार आहारीय परिमाण वृद्धि या ह्रास करना पड़ता है। प्रातःकाल लवण और इसके बाद जल तथा तृण खानेके लिये देना चाहिए। रात्रिको गोगृहमें दीप, तन्त्रीवाद्य और पौराणिक कथाका प्रसङ्ग करे। मनुष्य मात्रको ही गौओंको तृण जलादि द्वारा प्रतिपालन, पूजा और प्राणके साथ भक्ति करना उचित है। तथा उठते, बैठते, खाते, पीते, सोते समय सर्वदा अपने मनमें निम्नलिखित मन्त्र पाठ करना चाहिये।

मन्त्र यथा—

"तृणादकार्थे षु सर्वेषु सत्ता क्रीडन्तु गावः सवषः सवत्साः।
और प्रसुवन्तु सुखं स्वन्तु शीतातपव्याधिभयैर्विमुक्ताः॥"

इस प्रकार गोपरिचर्या करनेसे ऐहिक सुख भोग और परकालमें स्वर्ग लाभ होता है। (ब्रह्मपुराण)

सर्वदा सन्तोषके साथ गोको घास खानेके लिये देना चाहिए। ताड़न, आक्रोश या खेद स्वप्नमें भी न करें। गोमय या गोमूत्रको कभी भी घृणा दृष्टिसे न देखें। शुष्क क्षार द्वारा हमेशा गोगृह परिष्कार कर डालें। ग्रीष्मकालमें शीतल वृक्षकी छायामें और शीतकालमें गर्म तथा कर्दमविहीन गृहमें तथा वर्षा और शिशिरकालको अल्पोष्ण और वायुविहीन घरमें गौको रखना चाहिए। उच्छिष्ट, मूत्र, विष्ठा, कफ, काश तथा दूसरे किसी तरहका मल गोगृहमें परित्याग न करें। रजस्वला, कुलटा या नीच जातिको गोशालामें प्रवेश होने न दें। कभी भी गोवत्सका लङ्घन न करें। गोशालाके निकट क्रीड़ा करना निषिद्ध है। जूता पहन कर अथवा हाथी, घोड़ा या गाड़ी पालकी प्रभृति पर आरोहण कर गौके मध्य गमन न करना चाहिए। पिता तथा माताकी नाईं श्रद्धा सहित गौओंका प्रतिपालन करें। महा कोलाहल, घोर दुर्दिन और देशमें विप्लव उपस्थित होने पर मवेशियोंको तृण और शीतल जल खानेके लिये देना चाहिए।

(ब्रह्मपुराण)

विष्णुधर्मोत्तरमें लिखा है कि राजाओंके लिये गौ प्रतिपालन करना उचित है। गोमय और गोमूत्र द्वारा अलक्ष्मीका विनाश होता है। इन्हें कभी भी घृणा दृष्टिसे न देखें। उतनी ही संख्यामें गौ रखें जितनी संख्याको प्रतिपालन अच्छी तरह कर सकें। कभी भी क्षुधार्त्त हो गौ कष्ट न पा सके, उसके प्रति विशेष लक्ष्य रखना चाहिए। जिसके घरमें गाय क्षुधासे कातर हो रोदन करती है, वह व्यक्ति नरकको प्राप्त होता है। दूसरेकी गौको ग्रास दान करनेसे अधिक पुण्य होता है। समस्त शीतकालमें दूसरेकी गौको ग्रासदान एवं आठ वर्ष पर्यन्त अग्रभक्त प्रदान करने पर भी स्वर्गको प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति मवेशियोंके गृहमें शीत निवारणका उपाय और जलपात्रको जलसे परिपूर्ण कर देता वह वरुण लोकको जा अप्सराओंके साथ नृत्य-गीत कर सकता है।

सिंह, व्याघ्र, भयत्रस्त एवं पङ्क या जलमग्न गायको उद्धार करने पर एक कल्प पर्यन्त स्वर्गभोग होता है। घरमें एक गाय मात्रके रहने पर रजस्वला स्त्रीका कभी भी गर्भदोष नहीं होता, तथा उस घरकी मिट्टी किसी तरह दूषित रहने पर भी अच्छी हो जाती है। गौके निःश्वास-वायुसे वह घर सर्वदाके लिये शान्तियुक्त हो जाता

है। गोकी हड्डी कभी भी लङ्घन न करनी चाहिए। गायकी मृत्यु होने पर उसकी गन्ध परित्याग न करें। वह गन्ध जहां तक फैलती है, वहां तक जमीन पवित्र हो जाती है। जननीके सदृश गाय भी सर्वदा रक्षणीय पूजनीय तथा पालनीय है, जो मनुष्य इन्हें ताड़ना करता, उसे रौरव नरक होता है। जब गाय क्रुद्ध हो आघात करनेके लिए उद्यत हो जाय उस समय जो मनुष्य "नम मातः" ऐसा कहकर स्थिर रह जाता है, उसे गौ आघात नहीं पहुंचाती और वह परम पदको पाता है।

(हेमाद्रि दानखण्ड)

गोपवन (सं० क्ली०) गोपभूयिष्ठं वनं मध्यपदलो०। १ जिस वनमें बहुत बहुत ग्वाला वास करें। (पु०) २ एक ऋषिका नाम।

गोपवनादि (सं० पु०) गोपवन आदिर्यस्य, बहुव्रो०। पाणिनीय एक गण। इस गणके उत्तरवर्त्ती अपत्य प्रत्यय-का लोप नहीं होता है। न गोपवनादिभ्यः। पा २।४।६७ गोपवन, विन्द भाजन, अश्वावतान, श्यामाक, श्यामक, श्यापर्ण, हरित, किन्दास, वह्यस्क, अर्कलूष, वध्योग, विष्णु, विश्व, ब्रह्म, प्रतिवोध, रथीतर, रथन्तर, गविष्ठिर, निषाद, शवर, अलस, मठर, मृड़ाकु, सृपाकु, मृदु, पुनर्भू, पुत्र, दुहित, ननान्द परस्त्री और परशु इन सबको गोपवनादि, गण, कहते हैं।

गोपवरम्—मन्द्राज प्रदेशस्थ कड़ापा जिलाके अन्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह प्राद्दुरसे ३ मील उत्तरको अवस्थित है यहां आञ्जनेयस्वामीके मन्दिरमें तीन पुरातन शिला-लिपि विद्यमान हैं।

गोपवल्लिका (सं० स्त्री०) गोपवल्ली स्वार्थे कन्-टाप्। गोपवल्ली।

गोपवल्ली (सं० स्त्री०) गां पाति गो-पा-क-टाप्। गोपा चासौ वल्ली चेति, कर्मधा०। १ मूर्व्वा नामका पेड़, जिस-की रेशासे धनुषका गुण और मेखला बनाये जाते हैं। २ शारिवा, अनन्तमूल। ३ श्यामालता।

गोपशु—(सं० स्त्री०) यज्ञिया गौ, यज्ञको गाय।

गोपस (सं० त्रि०) गुप-असुन्। रक्षिता, रक्षक, बचाने-वाला।

गोपा (सं० स्त्री०) गां पाति पा-क-टाप्। १ श्यामालता। २ महाभल्लातक गुड़। ३ अनन्ता। ४ माष्ठशारिवा। ५ गाय पालनेवाली, ग्वालिन।

(त्रि०) गां पाति पा क्विप्। ६ गोरक्षक। ७ गुप्त करनेवाला, छिपानेवाला (स्त्री०) ८ शाक्य किङ्किनी-श्वरकी कन्या एवं सिद्धार्थबुद्धकी स्त्री। एक दिन बुद्ध रथ पर चढ़ कर घरको लौटे जा रहे थे, रास्तेमें गोपाकी दृष्टि उन पर पड़ी। बुद्धदेवने गोपाके मनोहररूप पर मुग्ध हो कर उसी जगह रथको नीचा किया और उसके रूपकी छटा देखने लगा। सिद्धार्थको इस तरह मोहित देख कर किसीने गोपाकी कथा राजा शुद्धोदनसे कह सुनाई। राजाने गोपाको ला अपने पुत्रसे विवाह कर दिया। भोट ग्रन्थ दुल्वके पढ़नेसे पता लगता है कि जब बुद्धदेव श्रावस्ती नगरमें रहते थे देवदत्तने गोपाको हरण करने-की इच्छासे उसका हाथ पकड़ा, किन्तु गोपाने अपना हाथ छुड़ा कर उसीका हाथ इतना जोरसे मचोड़ा कि हाथसे रक्त गिरने लगा। तत्पश्चात् गोपाने उसको घरको छत्तसे बोधिसत्व (बुद्ध)के प्रमोद सरोवरमें फेंक दिया। 'दुल्व' ग्रन्थमें बुद्धदेवकी यशोधरा, गोपा और मृगदजा तीन स्त्रियोंका उल्लेख है। सिफनर साहबका कहना है कि गोपाका दूसरा नाम यशोधरा भी था। यशोधरा देखो।

गोपा—हिन्दी भाषाके एक सुप्रसिद्ध कवि। इनका जन्म १५३३ ई०में हुआ था। इन्होंने रामभूषण तथा अलङ्कारचन्द्रिका रचना की है।

गोपाङ्गना (सं० स्त्री०) गोपस्याङ्गना, ६-तत्। १ गोपस्त्री, ग्वालाकी स्त्री। २ शारिवा, अनन्तमूल नामकी औषध।

गोपाचल (सं० पु०) १ ग्वालियरका प्राचीन नाम। २ ग्वालियरके निकट एक पहाड़।

गोपाजिह्व (सं० त्रि०) गोपा गोपी 'मा बिभीत' इति वाक्योच्चारिणी जिह्वा यस्य, बहुव्रो०। जिसकी जिह्वा 'भय नहीं' ऐसा शब्द उच्चारण करती है जिसे कुछ भी भय नहीं है। (ऋक् ७।१।८)

गोपाटविक (सं० पु०) गोपाल, जो वन वन गौ चराता फिरता है।

गोपातीर्थ—बौद्धोंका तीर्थविशेष। भद्रकाल्पावदान ग्रन्थ-में लिखा है कि देवदत्तने यशोधारासे प्रेम रखनेके लिए प्रार्थना की, किन्तु यशोधाराको उसका यह व्यवहार

पसन्द न आया। इसोसे देवदत्त यशोधाराका चिरशत्रु हो गये एवं २१ वर्ष तक उसका प्राणनाश करनेकी चेष्टा करते रहे। एक समय देवदत्तने यशोधाराको पुष्करिणी में निक्षेप किया। ऐसा करने पर भी यशोधारा मरी नहीं एवं पुष्करिणीस्थित सर्पराज कर्तृक सुरक्षित हो कर पितृसदन लाई गई। उक्त पुष्करिणी यशोधाराके दूसरे नाम 'गोपातीर्थ' से बहुत समय तक प्रसिद्ध थी।

गोपादित्य (सं॰ पु॰) १ काश्मीरके एक राजाका नाम। ई॰के ४०० वर्ष पहले ये काश्मीरके सिंहासन पर आरोहण हुए थे। ये अतिसशृङ्खलासे राज्यशासन एवं ब्राह्मणोंको बहुत भूमिदान किया करते थे। २ सुभाषितावलीधृत एक प्राचीन कवि।

गोपाध्यक्ष (सं॰ पु॰) गोपानामाधाक्षः, ६-तत्। गोपालकोंके कर्त्ता, गोपति, श्रीकृष्ण। (महाभारत ४।९५ अ॰)

गोपानसी (सं॰ स्त्री॰) गां जलं पाति निवारयति गोपानं छादं सेधति प्राप्नोति गोपान-सिध्-ड-ङीप्। १ वड़भी, घरको छतका निम्नस्थ वक्र काष्ठ। २ कर्णिका, विष्कम्भि काष्ठ। ३ वक्रीभूत धारणकाष्ठ, घरमें लगानेकी टेढ़ी धरन।

गोपानीय (सं॰ क्ली॰) गोमूत्र, गायका मूत।

गोपायक (सं॰ त्रि॰) गोपायति गुप्-आय-ण्वुल्। रक्षक, बचानेवाला

गोपायन (सं॰ क्ली॰) गुप्-आय भावे ल्युट्। १ गोपन, छिपाव। २ रक्षक।

गोपायित (सं॰ त्रि॰) गुप्-आय कर्मणि क्त। १ रक्षित। (क्ली॰) गुप्-आय भावे क्त। २ गोपन, छिपाव।

गोपायितृ (सं॰ त्रि॰) गुप्-आय-तृच। रक्षक।

गोपाल (सं॰ पु॰) गां भूमिं पशुविशेषं पालयति पालि-अण्, उपस॰। १ राजा। २ गोरक्षक, गोपालक, ग्वाला। ३ संकीर्ण जातिविशेष। पराशरके मतानुसार क्षत्रियके औरस और शूद्रकन्याके गर्भसे गोपालकी उत्पत्ति है। ब्राह्मणोंके लिए इसका अन्न भोज्य कहा गया है। *

दाक्षिणात्यके मन्द्राज और वेलगांव जिलेमें गोपाल जातिके बहुतसे मनुष्य वास करते हैं। कहीं कहीं ये 'गोल्ल' नामसे परिचित हैं।

ये देखनेमें कृशकाय, आकृति मध्यम, मुख लम्बा, गाल चिपटा तथा गला छोटा और लम्बा है। सबके माथेमें चोटी, अल्प दाढ़ी और मूंछ रहते हैं। साधारणतः ये दाल और रोटी खाते और मत्स्य, छाग, भेड़ा, खरगोस, मुरगाका शिकार कर उनका मांस भी खाते हैं। मादकताके लिए ये ताड़ी, गाँजा और तम्बाकू सेवन करते। ये धातु एवं नाना प्रकारके वृक्षोंसे औषध प्रस्तुत करना जानते हैं। स्त्रियां तथा छोटे छोटे लड़के घरमें रह एक तरहकी चटाई तैयार करते और बाजार जा विक्रय किया करते हैं।

ये ब्राह्मणोंके प्रति विशेष श्रद्धा भक्ति रखते एवं विवाहादि कर्ममें उन्हें पौरोहित्यमें नियुक्त करते हैं। सिर्फ विवाहमें ही ये जातिभोज देते हैं। ये हिन्दू देव-देवीकी पूजा करते, इसके अलावा मारुती, व्यङ्कोवा, नर्शोवा और यल्लमादेवीकी मूर्ति अपने अपने घरमें रख पूजते हैं।

पुत्र प्रसूत होने पर ये षष्ठिव देवीको पूजा, एवं नवम दिनको पुत्रका नामकरण करते हैं। ये शवको गाड़ते और ५ सप्ताह काल अशौच मानते हैं। लिङ्गायत पुरोहित आ शङ्ख बजाकर इनका अशौच दूर करते हैं।

४ विष्णुका अवतारविशेष नन्दनन्दन श्रीकृष्ण पद्मपुराणमें लिखा है कि ये सर्वदा वालकमूर्त्ति धारण करते हैं। इनके शरीरका वर्ण नवीन जलधरके जैसा है। गोपकन्या और गोपबालक सर्वदा इन्हें वेष्टन किया रहते हैं। ये गोपवेश परिधान करते। इनका मुख हमेशा मृदु मधुर हास्ययुक्त दोख पड़ता है। ये वृन्दावनके कदम्बमूलमें रहना बहुत पसन्द करते हैं। शैवशाक्तको नाई बहुतसे इन वालगोपालको उपासना करते हैं। जगदोश तर्कालङ्कार और गदाधर भट्टाचार्य प्रभृति नैयायिक ग्रन्थकारने ग्रन्थारम्भमें इष्टदेव वालगोपालको नमस्कार किया है। तन्त्रसारमें इनको उपासनाप्रणाली लिखो हुई हैं।

गोपालका ध्यान—

"अव्यात् व्याकोष नीलाम्बुज [illegible]
[illegible] ॥"

* "क्षत्रियात् शूद्रकन्यायां समुत्पन्नस्तु यः सुतः।
स गोपाल इति ज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न संशयः॥" (पराशर)

दीर्भ्रां छियक्रवीन' दध दति विमलं पायसं शिशुवन्दी)
गो।गो।गोगोपवोतोक्ष कमनविलसत् कण्ठभूषं स्थिरं वः।" (तन्त्रसार)

५ राजा कीर्तिवर्मदेवके प्रधान मंत्री और सेनापति इन्हींके उत्साहसे प्रवोधचन्द्रोदय नाटक रचा गया था। ६ मन, इन्द्रियोंका पालनेवाला। ७ पन्द्रह मात्राओंका एक छन्द, इसमें ७ और ८ पर ज्योति होती है।

गोपाल—विदेहराज विरुढ़कके मंत्री, सकलके ज्येष्ठपुत्र। सकल विदेह परित्यागपूर्वक सपुत्र वैशाली नगरमें आ वास करते थे। गोपाल साहसी और वीर पुरुष थे। प्राचीन बौद्धसूत्रमें लिखा है कि बुद्धदेव वैशालीसे गोपाल और सिंहके शालवनको आये थे। सबकी मृत्युके बाद उनके लड़के सिंहने पितृपद प्राप्त किया था। गोपाल अपनेको उपेक्षित समझ वैशालीका परित्याग कर राजगृहमें आ बिम्बिसारके राजाके प्रधान मंत्री होकर रहने लगे। थोड़े समयके बाद राजा बिम्बिसारने गोपालको भ्रातृकन्या वासवीके साथ विवाह करा दिया।

गोपाल—इस नाम पर बहुतसे संस्कृत ग्रन्थकारोंके नाम पाये जाते हैं।

१ एक धर्मशास्त्रकार, श्रोदत्तने श्राद्धकल्पमें इनका मत उद्धृत किया है।

२ वृत्तदर्पणकार जानकीनन्दनके पितामह और रामानन्दके पिता। इन्होंने कणादसूत्रको टीका और काव्यकौमुदी रचना की हैं।

३ संस्कृत चैतन्य-चरितामृतरचयिता।

४ द्रव्यगुण नामक वैद्यक ग्रन्थप्रणेता। १६०६ ई०-को यह ग्रन्थ रचा गया था। इन्होंने चक्रपाणि और नारायणकृत द्रव्यगुण उद्धृत किया है।

५ पद्योपाख्यानरचयिता।

६ एक ज्योतिर्विद्। ये भास्वतोके टोकाकार।

७ विवेकामृत नामक वैदान्तिक ग्रन्थरचयिता। ८ शालवंशग्रन्थमुक्तावली नामक ग्रन्थकार। ९ शुल्वसूत्रका एक टोकाकार। १० विषमार्थदीपिका नामक सारस्वत व्याकरणका एक टोकाकार। ११ विवादमहार्णवका एक संग्रहकार। १२ राजानक गोपाल नामसे प्रसिद्ध र हैं। इन्होंने दीनक्रन्दनस्तोत्र, प्रद्युम्नशिखरपीठाष्टक, महाराज्ञीस्तव और शिवमालाकाव्य प्रणयन किये हैं। १३ ये "परमहंस परिव्राजकाचार्य गोपाल" नामसे ख्यात हैं। ये गणपति और नृसिंहके गुरु हैं। इन्होंने बहुतसे वैदिक ग्रन्थोंकी रचना की हैं जिनमेंसे थोड़े ये हैं—आपस्तम्बसूत्रविवरण, आपस्तम्बशुल्वरहस्य, कात्यायनपरिशिष्टिमूल्याध्यायभाष्य, गोपालकारिका, बौधायणीय चातुर्मास्यप्रयोगकारिका, दर्शपूर्णमासादिकारिका, पत्नयागटोका, बौधायनीय पशु प्रयोगकारिका, प्रायश्चित्तकारिका, बौधायनीयश्रौतसूत्रविवरण, भरद्वाजसूत्रटीका, यज्ञप्रायश्चित्तविवरण, श्रौत्रकारिका और सोमकारिका।

गोपाल आचार्य—१ आदेशकौमुदोखण्डन नामक एक वैदान्तिक ग्रन्थ रचयिता। २ विष्णुपूजाक्रम नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गोपालक (सं० त्रि०) गां पालयति पाल-ण्वुल् ६ तत्। १ गोरक्षक, ग्वाला। २ भूपाल, राजा। (पु०) ३ शिव, महादेव। गोपाल स्वार्थे कन्। ४ नन्दनन्दन। ५ चण्ड महासेन नरपतिका एक पुत्र।

गोपालकक्ष (सं० स्त्री०) गोपालानां कक्ष व। १ भारत वर्षके पश्चिम भागमें अवस्थित एक प्रदेश। (पु०) २ तद्देशवासी, गोपालकक्षके रहनेवाले।

गोपालककटो (सं० स्त्री०) गोपालस्य गोरक्षकस्य प्रिया कर्कटो। क्षुद्र कर्कटो, ग्वाल ककड़ो। इसका संस्कृत पर्याय—वन्या, गोपकर्कटिका, क्षुद्रर्वारु, क्षुद्रफला और चिर्भिटा है। इसका गुण—शीतवीर्य, मधुर, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, मेह, दाह, और शोषनाशक है।

गोपालकवि—१ एक विख्यात हिन्दी कवि। इनका जन्म १६५४ ई०को हुआ था। ये राजा मित्रजित्सिंहके सभाकवि थे। २ वाघेलखण्डके रेवाजिलान्तर्गत वन्धो ग्रामके रहनेवाले एक कवि। ये जातिके कायस्थ एवं वन्धोके महाराज विश्वनाथसिंहके मन्त्री थे। १८३० ई०में इन्होंने गोपाल पचीसी नामक एक प्रसिद्ध हिन्दी ग्रन्थ रचा। ३ आनन्दलहरी नामक वैद्यक ग्रन्थकार।

गोपालकृष्ण—१ एक विख्यात संस्कृत ग्रन्थकार। इन्होंने अम्बाष्टिशती, आर्यवर्णमालिका, उग्रनृसिंहस्तव, महेश्वराष्टक, कुमारकर्णामृत, दुर्गानवरत्न, देवोनवरत्न, पञ्चदशवर्णमालिका, वासुदेवद्वादशाक्षरी, वासुदेवनन्दिनी-

चम्पू, वीरराघवस्तव, श्वेताद्रिराघवाष्टक, सौभाग्यलहरी प्रभृति प्रणयन किये हैं।

२ रसेन्द्रसारसंग्रह नामक वैद्यक ग्रन्थकार।

गोपालकृष्णगोखले—ये दक्षिण प्रान्तस्थ महाराष्ट्र ब्राह्मण। जातिमें कोंकनस्थ ब्राह्मणके अन्तर्गत थे। इनका जन्म १८६६ ई०में कोल्हापुरमें हुआ था। मातापिताकी अवस्था शोचनीय होने पर भी इन्हें कालेजकी शिक्षा मिली थी इन्होंने दक्खिन कालेज Deccan College और एलफिनष्टन कालेज (Elphinston College) पढ़ा था और वहींसे १८८४ ई०में बी०ए पास किया था। संस्कृत पण्डितोंके समाजमें भी ये एक प्रसिद्ध पण्डित गिने जाते थे। इसके बाद दक्षिण एजुकेसनल सोसाइटीमें बीस वर्षके लिये १५ रुपये मासिक पर पढ़ानेके लिये प्रतिज्ञाबद्ध हुए। देशहित, देशसेवा और परोपकारी कार्य करनेका इनको इतना अधिक प्रेम था कि कालेजकी छुट्टीके दिनोंमें देशसेवाका चंदा एकत्र करनेके लिये इन्हें पाँव पाँव घर घर घूमने और अनेक तरहके कष्ट सहने पड़ते थे। स्वर्गवासी रानाडे अपने पीछे अपने शिष्य मिष्टर गोखलेको ही देशसेवाके लिये अपना उत्तराधिकारी कर गये थे। कुछ दिन तक ये पूना सार्वजनिक सभाके पत्र (Quarterly Journal) क्वार्टर्ली जर्नलके सम्पादक हुए। बाद इन्होंने चार वर्ष तक एङ्गलो मरहाठी भाषाके सुधारक नामक पत्रका सम्पादन किया और ये चार वर्ष तक (Bombay Provinicial Council) बम्बई प्राविन्सियल कौंसिलके मन्त्रीके पद पर भी कार्य करते रहे। १८८५ ई०को जब पूनामें (Indian National Congress) जातीय महासभाका अधिवेशन हुआ तब उसके मन्त्री पद पर ये ही निर्वाचित हुए थे। १८८७ ई०में अन्य प्रसिद्ध सार्वजनिक पुरुषोंके साथ ये भी भारतीय व्ययसम्बन्धी (Welby Commission) वेल्बी कमीशनके सम्मुख अपनी सम्मति देनेके लिये इङ्गलैंड भेजे गये। वहां इनके कौशलसे सबके सब दंग रह गये। सदस्योंने इन्हें नीचा दिखानेका बहुत कुछ प्रयत्न किया, परन्तु इनकी विद्वत्ता और अभिज्ञताके सामने उनकी एक न चली। विलायतमें रहते समय उनके पास पूनेसे थोड़े पत्र गये थे जिनमें गवर्नमेंटकी प्लेगसम्बन्धी नीतिके विरुद्ध शिकायतें थीं और गोरे सिपाहियोंके अत्याचारोंका वर्णन था। पत्र पढ़कर देशवासियोंके दुःखमें इनका हृदय पिघल गया और तुरंत ही उन पत्रोंका आशय इंगलेंडके समाचारपत्रोंमें छपा दिया। इस पर इंगलेंडमें बड़ी हलचल मचा।

१९०० ई०में इन्होंने प्रान्तीय व्यवस्थापक कौंसिलके निर्वाचित सदस्यकी हैसियतसे बहुत कुछ उपयोगी काम किया। १९०२ ई०में ये वाइसरायकी व्यवस्थापक कौंसिलके सदस्य चुने गये। बजटके सम्बन्धमें इनकी प्रथम वक्तृताने लोगों पर बड़ा भारी प्रभाव डाला। इनकी योग्यताको देख कर इनके विपक्ष मुक्तकण्ठसे इनकी प्रशंसा करते थे। यहां तक कि लार्ड कर्जन जैसे निरंकुश शासनकर्ता भी इनकी खूब तारीफ की थी और इसीके उपलक्ष्यमें इन्हें सी, आई, ई, की उपाधि भी मिली थी।

१९०५ ई०में गोखलेने भारतमें अपने ढंगकी निराली और अत्यन्त उपयोगी संस्था-भारत सेवक समिति संगठित की क्योंकि इनका विश्वास था कि भारतको इस समय ऐसे सेवकोंकी आवश्यकता है जो मातृभूमिकी सेवामें अपना जीवन अर्पित कर दें। इस वर्ष इन्हें पुनः देशका भलाईके लिये विलायत जाना पड़ा। इस समय वहां लाला लाजपतराय भी उपस्थित थे। दोनोंने मिल कर असाधारण परिश्रम किया तथा भारतवासियोंके स्वत्वोंके लिये और लार्ड कर्जनके कुशासनके विरुद्ध खब आन्दोलन मचाया। जब ये बम्बई और पूनेको लौटे तो वहां इनका यथेष्ट स्वागत हुआ। स्वागतकर्त्ताओंमें श्रीयुत लोकमान्य पण्डित बालगङ्गाधर तिलक भी सम्मिलित थे। १९१४ ई०में श्रीयुत गोखलेके ऊपर सचमुच बड़ा कार्यभार पड़ा। इनके अस्वीकार करने तथा स्वास्थ्य खराब होने पर भी इन्हें काशीमें कांग्रेसका सभापति होना ही पड़ा। इस समय प्रतिकूल अवस्था होने पर भी इन्होंने इस कठिन कार्यको बड़ी योग्यतासे निबाहा। अपनी वक्तृताके आरम्भ होमें इन्होंने लार्ड कर्जनकी औरंगजेबसे तुलना की और फिर बंगालियोंके द्वारा विदेशी वस्तुओंके बहिष्कार किये जानेका समर्थन किया।

प्रवासी भारतवासी भी श्रीयुत पण्डित गोपालकृष्ण गोखलेके अत्यन्त कृतज्ञ रहेंगे क्योंकि इन्हींके उद्योगसे नेटालको प्रतिज्ञावद्ध कुलियोंका जाना बन्द हुआ। १९१२ ई०में ये अपने दुर्दशाग्रस्त भाइयों और बहिनोंकी दशा देखनेके लिये दक्षिण अफ्रिकाको गये। वहां इन्होंने राजमन्त्रियोंसे मिल कर वार्तालाप की इस वार्तालापका फल लाभदायक निकला। इन्होंने सोचा था कि देश तब तक उन्नति नहीं कर सकता है जब तक अशुल्क अनिवार्य आरम्भिक शिक्षा प्रारम्भ न हो। इस विषयका बिल इन्होंने कौंसिलमें पेश किया, परन्तु अस्वीकार किया गया। इससे ये किञ्चित् निरुत्साहित तथा हताश न हुए। इन्होंने स्वयं कौंसिलमें इस तरह कहा, "मैं हतोत्साह नहीं हुआ हूं और न मैं शिकायत ही करता हूं क्योंकि यह सब कोई जानते हैं कि १८७० ई०के अनिवार्य शिक्षा एक्ट पास होनेके पहले इङ्गलैण्डके लोगोंको कैसे कैसे उद्योग करने पड़े थे। इसके सिवा मुझे यह भी मालूम है तथा बहुत बार कह भी चुका हूं कि वर्तमान पीढ़ीके हम भारतवासियोंको असफलता द्वारा ही स्वदेश-सेवा करनी बदी है।"

१९१३ ई०में ये (Public Service Commission) पबलिक सर्विस कमीशनके सदस्य नियुक्त हुए थे। १९१४ ई०में सम्राट् इन्हें सरकी उपाधि देते थे, परन्तु इन्होंने उसे सधन्यवाद अस्वीकार कर दिया। इनका विश्वास था कि 'सर'को उपाधि ग्रहण करनेसे देशसेवामें बाधा पहुंच सकती है। भारतवासियोंके अभाग्यसे ऐसे महापुरुषका देहान्त १९१५ ई०को १९ फरवरीको हो गया। इनके शवके साथ तथा श्मशानगृहमें लगभग बीस हजार मनुष्योंकी उपस्थिति थी। इनकी मृत्यु पर लोकमान्य पण्डित बाल गङ्गाधर तिलकने श्मसानभूमिमें आंसू बहाये थे और बड़े लाट साहबने भी अपनी कौन्सिलकी बैठक एक दिनके लिये बन्द की थी।

गोपालकेशव (सं० पु०) कृष्णकी एक मूर्ति।

गोपालगञ्ज—१ वङ्गके फरिदपुर जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २३° ० २२´ उ० और देशा० ८९° ५२´ पू०के मध्य मधुमती नदीके तीर अवस्थित है। धान, लवण, पाट, दधि और शीतलपटी (चटाई) के लिए यह नगर प्रसिद्ध है।

२ दिनाजपुरके अन्तर्गत एक गण्डग्राम। यहां एक सुन्दर देवमन्दिर है।

३ विहार प्रान्तके सारन जिलेका उत्तर सब डिविजन। यह अक्षा० २३° १२´ तथा २६° ३९´ उ० और देशा० ८३° ५४ एवं ८४° ५५´ पू०में पड़ता है। क्षेत्रफल ७८९ वर्गमील और लोकसंख्या कोई ६३५०४७ है पूर्वको गण्डक नदी बहती है। इस उपविभागमें एक नगर और २१४८ ग्राम हैं।

४ विहार प्रान्तके सारन जिलेमें गोपालगञ्ज सब डिविजनका सदर। यह अक्षा० २६° २८ उ० और देशा० ८४ २७ पू०में अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १६१४ होगी। यहां साधारण पबलिक दफतर बने और सब जेलमें १८ कैदी रह सकते हैं।

गोपालगिरि—एक गिरि। संस्कृत ज्योतिर्ग्रन्थ यन्त्रराजके मतसे यह २७।२९ अक्षांश पर स्थित है।

गोपाल चक्रवर्त्ती—एक विख्यात टीकाकार। इनका बनाया हुआ भागवत और अध्यात्मरामायणकी टीका प्रचलित है।

गोपालचन्द्रसाहु—एक विख्यात हिन्दी कवि। ये प्रसिद्ध हिन्दीकवि हरिश्चन्द्रके पिता थे। इनका दूसरा नाम गिरधर बनारसी था। इन्होंने दशावतार काव्य और भाषाभूषनका भारतीभूषन नामक हिन्दी टीका रचना की है।

गोपालताताचार्य—एक विख्यात नैयायिक। इन्होंने संस्कृत भाषामें अनेक ग्रन्थ रचे हैं—जिनमेंसे कुछके नाम ये हैं—अनुपलब्धिवाद, अनुमितिमानसत्वविचार, अन्तर्भाववाद, आत्मजातिसिद्धिवाद ईश्वरवाद, ईश्वरसुखवाद, एकत्वसिद्धिवाद, कारणता, ज्ञानकारणवाद, द्वन्द्वलक्षणवाद, नव्यमतवाद, परामर्शवादार्थ, बाधबुद्धिवाद, राजपुरुषवाद, वादार्डिण्डिम वादफक्किका, विधिवाद, शिष्यशिक्षावाद, समाधिवाद और सादृश्यवाद।

गोपालतापनीय (सं० क्लो०) गोपालस्तापनीयः सेव्यो यत्र, बहुव्री०। उपनिषद्विशेष। किसी किसी जगह गोपालतापन नामसे इसका उल्लेख मिलता है। शङ्कराचार्य, जीवगोस्वामी, नारायण, विश्वेश्वर प्रभृतिका रचा हुआ गोपालतापनीका भाष्य अथवा टीका पाई जाती है।

गोपालदारक (सं॰ पु॰) जैनियोंके एक आचार्यका नाम।

गोपालदास—१ पारिजातहरण नामक संस्कृत नाटकके रचयिता एवं छन्दोमञ्जरीकर्ता गङ्गादासके पिता। २ वैद्यसारसंग्रह नामक संस्कृत चिकित्साग्रन्थ-प्रणेता। ३ करटिकौतुक नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता। इनके पिता का नाम बलभद्र था। ४ भक्तिरत्नाकर नामक वैष्णव ग्रन्थकार। इन्होंने इस ग्रन्थको १५६० ई॰में रचा था। ५ वल्लभाख्यान नामक प्राकृत ग्रन्थकार। ६ एक प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थकार। ये सिद्धेश्वरके पुत्र और रामरामके पौत्र थे। इन्होंने १७७१ ई॰को योगामृत नामक संस्कृत चिकित्सा ग्रन्थ और सुबोधनी नामक उसकी टीका रची है। ७ एक स्मार्त पण्डित। इनकी उपाधि सिद्धान्त वागीश भट्टाचार्य थी। इनका बनाया हुआ व्यवहारालोक नामका स्मृतिसंग्रह पाया जाता है। ८ व्रजके एक हिन्दी कवि। ये ई॰ सतरहवीं शताब्दीमें विद्यमान थे

इनकी प्रायः सभी कवितायें खड़ी बोलीमें हैं, जिनमें एक नीचे दी जाती है—

"मेरे महरवा मोरी डोलिया फन्दाय।
त्रिकुटी चढ़कर देखन लागी कैतीक दूर मोर पियक घर गोय॥
इस डोलियामें दस दरवजवा चार कहार मिल घर पहुँचाय।
कहत गोपालदास कहरवा चरण-कमलको में बलि बलि जाय॥"

गोपालदास बरैया न्यायवाचस्पति—दिगम्बर जैन सम्प्रदायके एक प्रसिद्ध विद्वान् और ग्रन्थकार। इनके पिताका नाम लक्ष्मणदास और माताका नाम लक्ष्मीमती था। वि॰ सं॰ १९२३में आगरेमें इनका जन्म हुआ था। जैसवाल जाति और बरैया इनका गोत्र था। सातवर्षकी उम्रमें (सं॰ १९३० में) इनके पिताका देहान्त हो गया। माताने बहुत कष्टसे इनको मेट्रिकुलेशन तक पढ़ाया। गणितमें ये बहुत ही निपुण थे। २० वर्षकी उम्रमें हाईस्कूल छोड़ दिया। इनका १४ वर्षकी उम्रमें विवाह हो गया था। अजमेरमें इन्होंने पण्डित मोहनलालके पास रहकर दो वर्ष तक गोम्मटसार सरीखे महान् ग्रन्थका अध्ययन किया।

इसके उपरान्त ये ग्वालियरके अन्तर्गत मुरैना नामक स्थानमें रहने लगे। यहां रहकर इन्होंने "जैनसिद्धान्त विद्यालय" नामका एक जैन विश्वविद्यालय स्थापन किया। इनकी विद्वत्तासे मुग्ध हो कर कलकत्तेके पण्डित-समाजने इन्हें 'न्यायवाचस्पति' उपाधि दी थी। इसके सिवा अन्य सभाओंसे इनको 'स्याद्वादवारिधि' और 'वादिगजकेशरी' इत्यादि कई एक उपाधियां प्राप्त हुई थीं। इनके स्वार्थत्यागके लिये समस्त जैन-समाज अब भी उनका स्मरण करता रहता है। आपके द्वारा जैन-समाजमें न्याय और कर्मसिद्धान्तके जाननेवाले पचासों विद्वान् तयार हुए हैं। इस समय जो "जैनमित्र" नामक साप्ताहिकपत्र निकल रहा है, उसको सबसे पहले इन्होंने निकाला था। इन्होंने सुशीला उपन्यास, जैन-सिद्धान्तदर्पण, जैनसिद्धान्तप्रवेशिका आदि कई एक हिंदी ग्रन्थ लिखे हैं। पिछली पुस्तकका जैनसमाजमें खूब प्रचार है।

इनका स्थापित गोपालजैनसिद्धान्तविद्यालय आजकल भी जीवित और सुचारु रूपसे कार्य कर रहा है। इसमें ये अवैतनिक अध्यापन करते थे।

१९१७ ई॰में ग्वालियरके अन्तर्गत मोरेना नामक स्थानमें इनकी मृत्यु हुई।

गोपालदेव—१ राष्ट्रकूटवंशीय राजा भुवनपालके एक पुत्रका नाम। २ भोजप्रबन्धवर्णित कुण्डिन नगरका एक कवि। ३ एक प्रसिद्ध वैयाकरण। इनका दूसरा नाम मन्युदेव था, ये शम्भुदेवके पुत्र और कृष्णदेवके कनिष्ठ भ्राता थे। इन्होंने परिभाषेन्दुशेखर, वैयाकरणभूषण, लघु वैयाकरणसिद्धान्तभूषण और लघुशब्देन्दुशेखरकी टीका रचना की है।

गोपालदेशिकाचार्य—एक विख्यात संस्कृतवित् पण्डित। इन्होंने संस्कृत भाषामें निक्षेपचिन्तामणि और सारस्वादिनी नामक वेदान्त, रामनवमीनिर्णय और आह्निकपद्धति प्रणयन किये हैं।

गोपालधानी (सं॰ स्त्री॰) गोपालो धीयतेऽत्र धा आधारे ल्युट् ङीप्। गोष्ठ, गो रहनेका स्थान।

गोपालनगर—बङ्गमें नदिया जिलेके अन्तर्गत एक वाणिज्य-प्रधान नगर यह अक्षा॰ २३° ३ ५०´ उ॰ और देशा॰ ८८° ४८ ४०´ पू॰ पर अवस्थित है।

गोपालनन्द वाणीविलास—भगीरथ मिश्रके पुत्र। इन्होंने सारावली नामक कुमारसम्भवकी एक उत्कृष्ट टीका लिखी है।

गोपालनायक—भारतवर्षके एक प्रसिद्ध गायक। दाक्षिणात्यमें इनका जन्मस्थान था। सुलतान अला-उद्दीन-सिकन्दर सानीके राजत्वकालमें इन्होंने ख्याति प्राप्त की थी। ये गायक अमीर खुशरूके समसामयिक थे। ऐसा प्रवाद है कि जब गोपाल दिल्लीकी राजसभामें जा गान करते थे तो उस समय दिल्लीमें उनके समान श्रेष्ठ गायक दूसरा कोई नहीं था। सम्राट अपने गायक अमीर खुशरूको सिंहासनके नीचे छिपा कर गोपालको गानेको आज्ञा देते थे। अमीर खुशरूने गुप्त स्थानसे गोपालके गीत और सुर तानका अभ्यास कर लिया था, एवं एक दिन गोपालके अनुकरणसे इन्होंने 'कोवाल' और 'तराण' गा कर सभाके सकल मनुष्योंको चमत्कृत कर दिया। गोपाल भी इस घटनाको देख कर आश्चर्यान्वित हुए थे।

इनको कुछ कवितायें नीचे दी जाती हैं।

"कहा वे गनी ना भाख नाद शब्द गान कर थाक गावे।
मारग देश ....
....
सिद्ध गरु साध चारे सो पञ्चम सध दर पावे॥
छगि युक्ति भक्ति मति गम होवे ध्यान लगावे।
तब गोपालनायक भट सिद्ध मत निज्ज जान जगत म य पावे॥
लग गुरु समझ ईश्वरे ज्यो कहि ग्रन्थन गुरुन प्रमाण।
जोलि लग तन्हो गुरु लग गुरु विते क ध कर लख
सोई उनट धरेर ज्यो कहि ग्रन्थन गुरुण प्रमाण॥
मगन मगन नगन ग भ न मगन यगन न जान।
छन्द वनध प्रनध मङ्गल मत गोपालनायक करत विनान॥"

गोपाल न्यायपञ्चानन भट्टाचार्य—बङ्गदेशीय एक विख्यात स्मार्त पण्डित। ये वैदिक ब्राह्मण वंशके थे। इनके पाण्डित्यसे मुग्ध हो कर महाराज कृष्णचन्द्रने इन्हें अपना सभासद् नियुक्त किया था। ये अंगरेज गवर्मेण्टके भी एक व्यवस्थापक थे, जिसके लिये इन्हें मासिक वेतन भी मिला करता था। एक समय ढाकाके राजा राजवल्लभने विधवा-विवाहके प्रचारके लिये नाना स्थानके पण्डितोंसे मत ले कर एक मनुष्यको राजा कृष्णचन्द्रके भी निकट भेजा। कृष्णचन्द्रके आदेशसे पहले दूसरे दूसरे पण्डितोंने विधवाविवाहको शास्त्रीयता प्रतिपादन की, किन्तु राजसभाके विख्यात पण्डित गोपाल न्यायपञ्चाननने विधवा-विवाहको अशास्त्रीयता और देशाचार-विरुद्धता बतलाया। इस पर नवद्वीपके कोई भी विद्वान् विधवाविवाहका आनुकुल्य मत दे न सका। इस तरह राजवल्लभकी विधवाविवाह प्रचलनार्थ समस्त चेष्टायें निष्फल हुईं। इन्होंने आचारनिर्णय, उद्वाहनिर्णय, कालनिर्णय तिथिनिर्णय, दायनिर्णय, प्रायश्चित्त निर्णय, विचारनिर्णय, शुद्धिनिर्णय, श्राद्धाधिकारनिर्णय संक्रान्तिनिर्णय और सम्बन्ध निर्णय ग्रन्थ रचे हैं।

गोपालपण्डित—गृह्यभाष्य और प्रायश्चित्तकदम्ब नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गोपालपट्टनम्—मन्द्राजमें विशाखपत्तन जिलेके अन्तर्गत एक गण्डग्राम जो सर्वसिद्धिसे ८ कोस दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित है। ग्रामके पूर्व एक छोटे पहाड़के ऊपर पाण्डकुलमिट्ट नामका एक पुरातन मन्दिर है। ऐसा प्रवाद है कि पाण्डवोंने इस मन्दिरको स्थापन किया था। इसी पहाड़के निकट प्रस्तरकी पद्ममूर्त्ति एवं प्रवेशपथ पर अस्पष्ट शिलालिपि भी है।

गोपालपुर—१ मन्द्राजके गञ्जाम जिलेका बड़ा बन्दर। यह अक्षा० १९° १६' उ० और देशा० ८४° ५३' पू०में भरतपुरसे ८ मील दक्षिणपूर्व पड़ता है। लोकसंख्या प्रायः २५१० है। यहां ब्रिटिश-इण्डिया-ष्टीम-नेविगेशन कम्पनीके और बहुतसे दूसरे जहाज आ कर के लगते हैं। अनाज, दाल चमड़ा, खाल, साल लकड़ी, सन, रस्सीकी चीजों और तेलहनकी खास रफ्तनी है। सालमें १४।१५ लाखका माल जाता है। बन्दरको रोशनी १० मील तक देख पड़ती है। एक लोहित आलोक भी है, उसका प्रकाश ३ मील तक पहुंचता है। जहाज कोई १॥ मील दूर लङ्गर डालते हैं। परन्तु रेलवे खुल जानेसे काम कम पड़ गया है।

२ गोदावरी जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम यहां पुरातन विष्णु मन्दिर पर अस्पष्ट शिलालिपि उत्कीर्ण है।

३ गोरखपुर जिलेके धुरियापार परगनाके अन्तर्गत एक ग्राम, जो गोरखपुरसे ३३ मील दक्षिण है। ग्रामके पश्चिमांशमें बहुतसे स्मृति चिन्ह पड़े हैं जो प्राचीन नगरके अवस्थानका परिचय देते हैं।

४ त्रिहुत जिलेके अन्तर्गत एक परगना। यहांकी जमीन नीची रहनेके कारण वर्षाकालमें इसका अधिकांश भाग जलमग्न हो जाता है।

गोपालभट्ट—इस नामके कई एक ग्रन्थकार हैं।

१ गोपाल रत्नाकर नामक संस्कृत धर्मशास्त्रकार। २ गोपालपद्धति नामका संस्कृत ज्योतिर्ग्रन्थके रचयिता। ३ चैतन्यभक्त एक वैष्णवग्रन्थकार। इनका बनाया हुआ भगवद्भक्तिविलास नामक संस्कृत ग्रन्थ है। जो वङ्गीय वैष्णव समाजमें विशेष समादृत है। ४ मिताक्षराके न्यायसुधा नामकी टीकाकार। ५ मीमांसातत्वचन्द्रिका नामका संस्कृतग्रन्थकार। ६ संस्कृत भाषामें मानन्दगोविन्द नामक नाटककार। ७ सुभगार्चनचन्द्रिका नामका संस्कृत ग्रन्थकार। ८ महिम्नस्तवका स्तुतिचन्द्रिका नामक उत्कृष्ट टीकाकार। ९ गीतगोविन्दका अर्थरत्नावली नामका टीकाकार। इनके पिताका नाम दुर्गादास और पोतामहका नाम ज्ञान था। १६७९ ई०को इन्होंने उक्त टीका प्रणयन की थी। १० एक दार्शनिक जो मङ्गनाथ भट्टके पुत्र और कृष्णभट्टके पौत्र थे। इन्होंने मीमांसाविधिभूषण नामक संस्कृत ग्रन्थकी रचना की है।

११ एक विख्यात तान्त्रिक। ये आगमवागीशके पौत्र और हरिनाथके पुत्र थे। ये तत्वदीपिका नामक एक तान्त्रिक ग्रन्थ लिख गये हैं।

१२ एक द्राविड़ीय पण्डित, हरिवंश द्राविड़के पुत्र। आपने कई एक संस्कृत ग्रन्थ रचे हैं, जिनमेंसे प्रसिद्ध ये हैं,—कालकौमुदी नामक स्मृतिसंग्रह, कृष्णकर्णामृतकी कृष्णवल्लभा, शृङ्गारतिलककी रसतरङ्गिणी एवं रसमञ्जरीकी रसिकरञ्जिनी नाम्नी टीका। १३ पद्यावलीधृत एक प्राचीन कवि।

गोपालपुत्रिका (सं० स्त्री०) चिर्भिटा, ककड़ी।

गोपालभट्टगुरु—गणेशसहस्र नाम व्याख्याके रचयिता।

गोपालभाँड़—नवद्वीपाधिपती महाराज कृष्णचन्द्ररायके एक विख्यात सभासद्। रायगुणाकर भारतचन्द्रने अन्नदामङ्गलके प्रारम्भमें कृष्णचन्द्रके सभावर्णन उपलक्षमें राजपरिवार, अमात्य, पण्डित, भृत्य, प्रभृति सभोंका उल्लेख किया है। किन्तु गोपालभाँड़का नाम उसमें लिखा नहीं है, इसमें कोई कोई अनुमान करत[illegible] कि गोपालभाँड़ भारतचन्द्रके समकालीन नहीं [illegible] अथवा जिस समय अन्नदामङ्गल र[illegible] गोपाल कृष्णचन्द्रकी सभामें [illegible] [illegible]स्वा

[illegible] गोपालके [illegible] आदरपूर्वक

कृष्णचन्द्र भारतचन्द्रकी अपेक्षा गोपाल भाँड़को अधिक चाहते थे जिस कारण ईर्षावशतः रायगुणाकरने गोपाल भाँड़का नामोल्लेख न किया हो। जो कुछ हो, गोपालभाँड़ किस तरह भारतचन्द्रको मानते और भक्ति श्रद्धा करते थे उसका एक सामान्य उपाख्यान इस तरह प्रचलित है।

गोपाल जानते थे कि भारतचन्द्रके ऊपर पण्डित वाणीश्वर विद्यालङ्कार और जगन्नाथ तर्कपञ्चानन प्रभृतिके ईर्षा बनी है। एकदिन भारतचन्द्र अन्नदामङ्गलका ग्रन्थ वाणीश्वरको पढ़ने दिया। वाणीश्वरको अश्रद्धाभावसे उक्त ग्रन्थ लेते और विपर्यस्त भावसे इधर उधर ग्रन्थको उलटाते देख गोपाल उनके निकट जा करबद्ध हो उच्चस्वरसे कहने लगे, 'महाशय, यह क्या कर रहे हैं? यह शुष्क न्याय शास्त्र नहीं वरन् रसपूर्ण काव्य है, सावधा[illegible] पकड़िये नहीं तो समस्त रस गिर जायगा।" [illegible]। श्री- ऐसे रसपूर्ण वचनसे विद्यालङ्कार कुण्ठि[illegible] ग्रन्थ देखने लगे। [illegible]तः। एक प्रकार-

वङ्गला क्षितीशवंशावलीके म[illegible]समझा जाता है। जातिके नापित थे और शान्तिपु[illegible]-पा-यक् निपातने था। किन्तु गुप्तिपाड़ा और शान्ति[illegible] २ रक्षण, रक्षा। ऐसा सुना जाता है कि गोपाल कायस्थ जे[illegible] गुप्तिपाड़ामें इन्होंने जन्म ग्रहण किया था। गोपीथ-

गोपालमिश्र—गोपालपूजापद्धतिके रचयिता।

गोपालयज्वन्—गार्ग्य गोपाल देखो।

गोपालयोगी—कठवल्लीभाषाविवरणका प्रणेता।

गोपालराय—हिन्दीके एक प्रसिद्ध कवि। इन्होंने बहुतसी अच्छी अच्छी कवितायें रची हैं।

गोपाललाल—हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि। ये लगभग १७६५ ई०में विद्यमान थे। इन्होंने शान्तिरसकी बहुतसी कवितायें रची हैं जिनमेंसे कुछ इस तरह हैं—

"मैं तो सांवरे सङ्ग खेलन अइ हूं घर बैठे कहा लौं जोबन तरसैं हूं।
मत कोई मुझे हट कीरो सखी आज बबाकी सौं मैं विष खै हूं॥
और रङ्ग सब फीके लागी पियरे पटसों छियरा हुलसै हूं।
प्यारे गोपाल सोहात यही मन मोहन मिस छिए लपटै हूं॥
खेलन आई रङ्गराती छोरी बाल।
सांवल गोरी लैलै छोरी भर भर मुठी गुलाल॥
इतसे आई नवल राधिका उतते आए नन्द लाल।

इनकी सङ्ग सब गोप वधू हैं उनकी सङ्ग सब ग्वाल ॥
बहुत दिनन पर भेंट भई है यह दिन दीनदयाल ।
मन मानेका फगुवा लै हौं जैहो कहां गोपाल ॥" बालगोपाल देखो।

गोपालवन्दीजन—बुन्देलखण्डके अन्तर्गत चरखाड़ी-निवासी एक कवि। ये १८४० ई०में चरखाड़ीके राजा रतनसिंहकी राजसभामें विद्यमान थे।

गोपालव्यास—नारायणभट्टके शिष्य और उमेशभट्टके पुत्र। इन्होंने संस्कृतभाषामें नवरात्रनिर्णय प्रणयन किया है।

गोपालशरण—ये राजा गोपालशरण नामसे मशहूर हैं। इन्होंने तुलसीकृत 'शतसई' ग्रन्थके प्रबन्धघटना नामक एक सुंदर हिन्दी टीका रचना की है।

गोपालशर्मन्—१ एक विख्यात कवि। इन्होंने सूर्यशतक रचा है। २ एक विख्यात राढ़ीय ब्राह्मण कुलाचार्य। इन्होंने ध्रुवानन्दमतव्याख्या नामका कुलग्रन्थ प्रणयन
"कहा

मारग ...
१का आनवार्य ग्मि... क व्रजवासी हिन्दीग्रंथकार। इनका
किया है। सिद्ध गक माध च सौशब्दार्थ प्रकाश नामक ग्रंथ व्रजके
गोपालसिंह— ... विशेष आदरणीय है।
बनाया हुआ तुल ... चमाला नामक धर्मशास्त्रकार।
मैं षावमण्डलोमें ... पुर राज्यके महिसुर जिलेमें गुण्डल-
गोपालसिद्धांत—अशौ ... । पहाड़। यह अक्षा० ११ ४३ उ० और
गोपालस्वामी बेट्ट—सर्व ... ३५ पू०में ४७७० फुट ऊंचा पड़ता है।
पेट तालुकका ... घेर १६ मील और चढ़ाई ३ मील है। बादल
देशा० ७६ पाल कुहरेसे आच्छादित रहनेके कारण हिमवद्गोपाल
आधारका स्वामी कहते हैं। पौराणिक नाम कमलाद्रि वा दक्षिण
और गोवर्धनगिरि है। इसमें झरने बहुत हैं। प्राय: ई० ११वीं शताब्दीको नवाबनायकोंने उसकी किलेबन्दी की और १५वीं शताब्दीको समाप्तिसे १७वीं शताब्दीके मध्यभाग तक वह कोटे या बेट्टकोटे राजाओंका दुर्ग रहा। किलेमें गोपाल स्वामीका मन्दिर है। यात्री विष्णु भगवान्के दर्शन करने जाते हैं।

गोपालि (सं० पु०) गां वृषभं पालयति पालि-इन्। १ शिव, महादेव। २ प्रवरविशेष।

गोपालिका (सं० स्त्री०) गोपालकस्य पत्नी गोपालक-टाप् अत-इत्वं। १ गोपाङ्गना, ग्वालिन, अहीरिन। २ शारिवा, अनन्तमूल। ३ कीटविशेष।

गोपाली (सं० स्त्री०) गोपालस्तदाकारोऽस्त्यत्र। १ गोपालञ्च्। ककटी। २ गोरक्षो नामक महाक्षुप। गोपालस्य पत्नी ङीष्। ३ गोपपत्नी ग्वालाकी स्त्री। गां पालयति गो-पालि-अण् ङीष्। ४ जो स्त्री गौ पालन करती है, गौ पालनेवाली। ५ कार्तिकेयकी सहचारिणी मातृका विशेष।

गोपावत् (सं० त्रि०) गोपा रक्षणमस्त्यस्य गोपा मतुप् मस्य व:। रक्षणयुक्त, गुप्त, रक्षित।

गोपाष्टमी (सं० स्त्री०) गोपप्रिया अष्टमी। कार्त्तिक शुक्लाष्टमी, इसी दिन कृष्णने गोचारण आरम्भ किया था। इस दिन संयत हो कर गोपूजा, गोग्रासदान, गोप्रदक्षिण और गवानुगमन करनेसे अभीष्ट सिद्ध होता है।

(कूर्मपुराण)

गोपिका (सं० स्त्री) गोपी-कन् टाप् पूर्व ह्रस्वश्च। १ जो स्त्री गोपालन करती है, गोपालिका। गोपी स्वार्थे कन् टाप् पूर्व ह्रस्वश्च। २ गोपपत्नी, गोपकी स्त्री। गोपायति रक्षति वा गुप ण्वुल्-टाप् अत इत्वं। ३ रक्षित्री, छिपानेवाली। ४ कृष्णशारिवा।

गोपिचेट्टिपालैयम्—मन्द्राज प्रांतके कोयम्बतोर जिलेमें सत्य मङ्गलं तालुकका सदर। यह अक्षा० ११° २७' उ० और देशा० ७७° २६' पू०में एरोड रेलवे ष्टेशनसे २५ मील उत्तर-पश्चिम पड़ता है। आबादी कोई ... यहां धनी लोग रहते हैं। कोरण्डम् धातु खूब पाया जाता है।

गोपित (सं० त्रि०) गोपा गोपनं जातास्य गोपा इतच्। छिपाहुआ, गुप्त।

गोपित्त (सं० क्ली०) गोः पित्तमिव। गोरोचना, गोरोचन नामक सुगन्ध द्रव्य।

गोपिन् (सं० त्रि०) गोपायति गुप-णिनि। रक्षक, रक्षा करनेवाला।

गोपिनी (सं० स्त्री०) गोपिन् ङीष्। १ गोपी। २ श्याम लता। ३ नायिकाविशेष। जो नायिका वीराचारनिरता होकर पश्वाचारीके निकट आत्मगोपन कर सकती हो उसे गोपिनी कहते हैं। (त्रि०) ४ छिपानेवाली।

गोपिया (हिं० स्त्री०) गोफना, ढेलवांस।

गोपिल (सं० त्रि०) गोपयति रक्षति गुप-इलच् निपातने साधु। गोप्ता, छिपानेवाला, रक्षा करनेवाला।

गोपिलपुरम्—मन्द्राजमें वृद्धाचल तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह वृद्धाचलसे ५ मील पूर्व दक्षिणमें अवस्थित है। यहांके पुरातन शिवमन्दिरमें अनेक शिलालिपि उत्कीर्ण हैं।

गोपिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन गोपी इष्ठन् टिलोपः। गोप्तृतम।

गोपी (सं० स्त्री०) गोपस्य स्त्री गोप ङीष्। गोपपत्नी, ग्वालिनी। पूर्व समयमें ये समस्त कृष्णकी सेवा करती थीं। वृन्दावनकी गोपी कृष्णके प्रेममें मतवाली हो कर अपने पतिपुत्रको छोड़ कृष्णके साथ रहा करती थी। साधारण मनुष्य उन्हें मानुषी समझते एवं कृष्णके साथ रहनेके कारण उनके चरित्रमें कलङ्क ठहराते थे, किन्तु प्राचीन हिन्दुशास्त्रके प्रति लक्ष्य करनेसे जाना जाता है कि गोपीगण सामान्य मानवी नहीं, पार्थिव-सुखके लिए वे कृष्णकी वन्दना नहीं करती और वे कृष्ण को नन्दगोपके नन्दन कह कर भी नहीं समझती, वरन् उनको विराट, अव्यय, सच्चिदानन्द और जगत्पति मानती थीं, इस लिए सांसारिक सुख परित्याग कर मान, लज्जा और लोभभयको जलाञ्जली दे कर उन्होंने कृष्णमें आत्मसमर्पण की थी।

पद्मपुराणके पातालखण्डमें लिखा है कि गोपीगण मानवी थीं। श्रुति, देवकन्या और मुनिकन्यागण ही गोपीरूपसे वृन्दावनमें वास करती रहीं। इनमेंसे राधा, चन्द्रावली, विशाखा और ललिता प्रभृति कई गोपियां प्रधान थीं।

गोपायति रक्षति गुप्-अच् गौरादित्वात् ङीष्। २ शारिवा, अनन्तमूल। ३ रक्षिका, रक्षा करनेवाली।

गोपीक—सूक्तिकर्णामृतधृत एक प्राचीन कवि।

गोपीकान्त—वेणीदत्तके पुत्र, न्यायप्रदीप नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता।

गोपीकामोदी (सं० स्त्री०) कामोद और केदारी योगसे उत्पन्न रागिणीविशेष।

गोपीगीता (सं० स्त्री०) भागवतके दशम स्कन्धान्तर्गत गोपीगण कृत कृष्णकी स्तुति।

गोपीचन्द—ये हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि थे। इन्होंने कई एक कवितायें रची हैं जिनमें एक नीचे देते हैं—

"दान कर्ण समान भुजपति ग्राम विक्रम गोन दीप माधव वुन विमान।
गोपीचन्दको दीनो ए राजा राम रावण मार सीता गहे लाओ चतुर सुजान"

गोपीचन्दन (पु०) एक प्रकारको पीली मट्टी। वैष्णवगण इस मट्टीका तिलक लगाते और समस्त अङ्ग पर हरिनामका छाप देते हैं।

द्वारकाका गोपीचन्दन ही सर्वश्रेष्ठ है। बहुतोंका विश्वास है कि जब कृष्ण लीलासम्बरण कर स्वर्ग चले गये तब विरहकातरा गोपीगणने एक पोखरमें डूब कर अपना प्राण त्याग किया था। उसी पोखर (तालाब) की मट्टी गोपीचन्दनसे प्रसिद्ध है।

गोपीचन्द्र—१ रङ्गपुरके एक राजाका नाम। इनका गान अब तक भी रङ्गपुर अञ्चलमें प्रचलित है। कोचविहार और कामरूप देखो।

२ सूक्तिकर्णामृतधृत एक प्राचीन कवि।

गोपीजनवल्लभ (सं० पु०) गोप्य व जनस्तस्य वल्लभः। श्रीकृष्ण।

गोपीत (सं० पु० स्त्री०) गो गोरचनेव पीतः। एक प्रकारका खञ्जनपक्षी जिसका देखना अशुभ समझा जाता है।

गोपीथ (सं० क्ली०) गां पशून् पाति गो-पा-थक् निपातने साधु। १ तीर्थस्थान। २ सोमपान। ३ रक्षण, रक्षा। ४ राजा। ५ गौके जल पीनेका सरोवर।

गोपीथ्य (सं० क्ली०) गोः पृथिव्याः पीथं पालनं गोपीथमेव गोपीथ-स्वार्थे यत्। पृथ्वीपालन।

गोपीनाथ (सं० पु०) गोपियोंके स्वामी, श्रीकृष्ण।

गोपीनाथ—१ अग्रद्वीपके प्रसिद्ध विष्णुविग्रह, चैतन्यदेव कर्तृक अभिषिक्त और गोविन्दघोष ठाकुर कर्तृक प्रतिष्ठित। अग्रद्वीप और गोविन्दघोषठाकुर देखो। २ अग्न्याधानप्रयोग नामक संस्कृत ग्रन्थकार। ३ अनुमानवाद नामक न्यायग्रन्थकार। ४ एक विख्यात स्मार्त पण्डित। इन्होंने आह्निकचन्द्रिका, तुलापुरुषमहादानपद्धति, प्रेतदीपिका, मासिकश्राद्धपद्धति, संस्काररत्नमाला, सापिण्ड्यविषय प्रभृति संस्कृत ग्रन्थ रचे हैं। ५ त्रिविक्रमशतश्लोकी नामक ज्योतिर्ग्रन्थका और दुर्गमाहात्म्यका टीकाकार। ६ न्यायविलासके रचयिता। ७ पदवाक्यरत्नाकरके प्रणेता। ८ ग्रामपतिके पुत्र। इन्होंने शब्दालोकरहस्यकी रचना की है। ९ जातिविवेक रचयिता। ये व्यासराजके पुत्र

और सामराजके पौत्र थे। १० पशुपत्याचार्यसिंहके पुत्र और कातन्त्रपरिशिष्टप्रबोध रचयिता।

गोपीनाथ कविराज—एक प्रसिद्ध टीकाकार। इन्होंने कविकान्ता नामक रघुवंशकी टीका, सुमनोहरा नामका काव्यप्रकाशकी टीका, हर्षहृदया नामक नैषधकी टीका एवं दशकुमारकथा और सप्तशती नामक दो संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किए थे।

गोपीनाथदीक्षित—श्रावणकर्म्म नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गोपीनाथदेव—उड़ीसाके एक राजाका नाम। आपने १७१८ से १७२८ ई० तक राज्य किया था।

गोपीनाथपन्थ—एक विचक्षण महाराष्ट्र ब्राह्मण। १६५८ ई०को जिस समय विजापुरके मुसलमान राजदरबारमें अमात्योंके मध्य गोलयोग चल रहा था, उस समय अफ़जल खाँ नामक एक सम्भ्रान्त वीरपुरुष शिवाजी पर शासन करनेके लिये नियुक्त हुवे। ये ५००० अश्वारोही और ७००० उत्कृष्ट पदातिक सैन्य साथ ले रवाना हुए। उस समय शिवाजी प्रतापगढ़में थे, इन्होंने कौशलक्रमसे अफ़जल खाँको लिख भेजा कि विजापुरके विरुद्ध अस्त्र धारण करना उनके लिये अभिप्रेत नहीं है। यदि अफ़जल खाँ मनोयोग करें तो वे सुलतानके आश्रय ग्रहण कर सकते हैं। अफ़जल खाँने देखा कि वन जंगल होकर शिवाजी पर आक्रमण करना सहज नहीं है। इस सुयोगमें शिवाजीको यदि हस्तगत कर सकें तो उनके गौरवकी सीमा न रहेगी। इस लिये इन्होंने गोपीनाथको अनुचरके साथ प्रतापगढ़को भेजा। गढ़के निकटवर्त्ती पार नामक ग्राममें गोपीनाथके पहुंचने पर शिवाजीने स्वयं आ उनका आदर सत्कार किया। गोपीनाथने शिवाजीको कहा "अफ़जल खाँ भी आपके साथ मित्रता स्थापन करनेके लिये अभिलाषी है, वे सुलतानके निकट आपके हेतु क्षमा प्रार्थना कर आपको जागीरदार बना देंगे।" शिवाजी इस पर सम्मत हो गये और गोपीनाथका वासस्थान कुछ दूरमें निर्दिष्ट करा दिया। ठीक दो प्रहर रात्रिको शिवाजी अकेले गोपीनाथके घरमें प्रवेश कर उनसे भेंट की। गोपीनाथ ब्राह्मण थे, सुतरां शिवाजीने साष्टाङ्गसे प्रणिपात पूर्वक अपनी अभीष्ट भक्ति दिखलाई। गोपीनाथ ऐसी गभीर रात्रिमें शिवाजीको अपने शयनकक्षमें देख चकित हो उठे, एवं अति समादरसे उनके आनेका कारण पूछा। शिवाजी धीरे धीरे बहुत गम्भीरतासे बोले—"मैं भवानीके आदेशानुसार गोब्राह्मणकी रक्षाके लिये नियुक्त हुआ हूं, म्लेच्छके कराल कवलसे गोब्राह्मणका परित्राण करूंगा, यही मेरा एक मात्र अभिप्राय है। आप स्वयं ब्राह्मण हैं! ब्राह्मण होकर क्या स्वजाति और स्वदेशकी रक्षा कर नहीं सकते! यदि आपने अर्थके लिये मुसलमानका दासत्व स्वीकार किया है तो मैं आपका यह अभाव दूर करनेमें प्रतिश्रुत हूं। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यदि आप अनुकूल होवें तो हेवरा नामक ग्राम सदाके लिये आपको प्रदान कर दूं।" ऐसा सुन कर गोपीनाथकी आंखोंमें अश्रु आ गया, और आलिङ्गनकर शिवाजीको कहा—'मैं भवानीका आदेश शिरोधार्य करता हूं, अवश्यही मैं आपकी सहायता करूंगा।"

ऐसा कह कर इन्होंने अफ़जल खाँ की दुरभिसन्धि और मनका भाव प्रकाश किया। बहुतही थोड़े समयमें परामर्श स्थिर कर शिवाजी घर लौट आये। दूसरे दिन इन्होंने गोपीनाथके साथ कृष्णाजी भास्कर नामक एक ब्राह्मणको अफ़जल खाँके निकट भेजा। गोपीनाथ और कृष्णाजीने शिवाजीसे भेंटके लिये अफ़जलखाँके निकट अनेक अनुनय विनय किया। गोपीनाथका वचन मान वे शिवजीके साथ मुलाकातके लिये प्रस्तुत हुए। इधर शिवाजीने अफ़जलखाँको अभ्यर्थनाके लिये प्रतापगढ़के नीचे एक स्थानको सुसज्जित किया और घनजंगल कटवा कर उनके आनेका रास्ता परिष्कार करवा दिया। पथके चारों ओर रीतिमत सेना रखी गई। अफ़जल अल्पसंख्यक सैन्य और गोपीनाथको साथ ले शिवाजीसे मुलाकातके लिये आये। जिस स्थान पर दोनों साक्षात् होते वहां अपने अपने पक्षका सिर्फ एक एक व्यक्ति सङ्ग ले उपस्थित हुवे। शिवाजीकी कमरमें बाघनख नामक दारुण अस्त्र रक्षित था। दोनोंमें ज्योंही परस्पर आलिङ्गन होनेको था त्योंही शिवाजीने कटिस्थ 'बाघनख' से अफ़जलका उदर विदीर्ण कर हृत्पिण्ड छिन्न कर डाला। थोड़े ही समयमें अफ़जलखाँ निहत हो गए। शिवाजीने भी अपना अङ्गिकार पालन

किया। गोपीनाथने अधिक अर्थ और महाराष्ट्र-सैन्यके मध्य उच्च पद लाभ किया। शिवाजी देखो।

गोपीनाथपुर—उड़ीसाके कटक जिलेके अन्तर्गत गण्डग्राम यह कटक नगरसे प्रायः ५ कोस उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। यहां सुवृहत् गोपीनाथजीके मन्दिरकका ध्वंसावशेष पड़ा है। गोपीनाथका मूल और गर्भगृहका कुछ भी चिह्न नहीं है। भग्न नाटमन्दिरके मध्यस्थलमें एक नूतन गृह निर्मित हुआ है जिसमें दधिवामन मूर्ति विराजित है। भग्नावशेष नाटमन्दिरके चारों ओर उत्कृष्ट शिल्प-नैपुण्ययुक्त स्तूपाकार प्रस्तर पड़ा हुआ है। नाटमन्दिर जानेकी सीढ़ीकी वामपार्श्वको ओर प्राचीरगात्रमें प्राचीन उत्कलाक्षरसे उत्कीर्ण शिलाफलकमें प्रशस्ति वर्णित है। इसके पढ़नेसे जाना जाता है कि उड़ीसेमें कपिलेन्द्र नामक एक सूर्यवंशीय राजा थे। इन्होंने बाहुबलसे दिल्लीके राजाओंको पराजय एवं गौड़ और मालव राज्यको जय किया था। इनके लक्ष्मण नामक एक पुरोहित और मन्त्री रहता रहा। लक्ष्मणके नारायण नामक एक पुत्र था और उनके अनुजका नाम गोपीनाथ था। इन्होंने अपने नाम पर गोपीनाथका उक्त देवमन्दिर निर्माण कर जगन्नाथ, बलराम और सुभद्राकी मूर्त्ति स्थापन की थी।

इस ग्राममें ब्राह्मणशासन है। यहांके एक घर ब्राह्मण अपनेको गोपीनाथ महापात्रके वंशधरके जैसे परिचय देते हैं। इन्हींके मुखसे ऐसा सुना गया है कि गोपीनाथने सिर्फ दो घण्टेके लिए कपिलेन्द्रका मन्त्रित्व पाया था, इन दो घण्टोंके मध्य उक्त गोपीनाथका मन्दिर निर्माण किया गया था। किन्तु दो घंटेमें इस तरहका मन्दिर निर्मित होना नितान्त असम्भव है।

गोपीनाथ बन्दीजन—बनारसके रहनेवाले एक बन्दी। इनके पिताका नाम गोकुलनाथ था। बनारसके राजा उदितनारायणके आदेशसे इन्होंने तथा इनके शिष्य मनिदेवने सम्पूर्ण महाभारतका अनुवाद हिन्दीमें किया था। ये १८२० ई०में विद्यमान थे।

गोपीनाथभट्ट—१ हिरण्यकेशिसूत्रके 'ज्योत्स्ना' नामक टीकाकार। २ निर्णयरत्नाकर नामक धर्मशास्त्रकार।

गोपीनाथमिश्र—१ क्रियाकौमुदी नामक संस्कृत ग्रंथप्रणेता। २ तत्त्वचिन्तामणिसार नामक न्याय ग्रन्थकार।

गोपीनाथमौलिक—एक विख्यात नैयायिक और वाबेरोके राजा जयसिंहके सभापति। इन्होंने राजा जयसिंहके अनुरोधसे सिद्धान्ततत्त्वसार नामक पदार्थविवेकको टीका और न्यायकुसुमाञ्जलिविकाश प्रणयन किये हैं।

गोपीनाथ शर्मन्—१ शब्दमाला नामका संस्कृत अभिधानकार।

गोपीनाथशैव—माधवशैवके पुत्र और स्नानसूत्र दीपिकाके प्रणेता।

गोपीनारायण—एक विख्यात स्मार्त्त। इन्होंने राजा सूर्यसेनके आदेशसे निर्णयामृत नामक धर्मशास्त्र रचे हैं।

गोपीन्द्रतिप्पभूपाल—वामनके काव्यालङ्कारवृत्तिका काव्यालङ्कारकामधेनु नामक टीकाकार।

गोपीरमण—आनन्दलहरीके एक टीकाकार।

गोपीयन्त्र—एक तार वाद्ययन्त्रविशेष एक प्रकारका बाजा, जिसमें केवल एक ही तार लगा रहता है। आध हाथका गाँठदार एक पतले बांसके डण्डेका ऊपरके ग्रंथियुक्त भागका छह या सात उङ्गली छोड़ कर शेष अंशको बराबर चार भागोंमें विभक्त करते हैं। उन चार भागोंके परस्पर विपरीत दो भागोंको फेंक कर शेष दो भागोंके सिरे पर कद्दूका गोल खोखला अंश बांध देते हैं और उसमें केवल एक तार लगा दिया जाता है। यह तार बाँसके दो खण्डोंके मध्य रहना चाहिये और तारका एक सिरा अखण्डित बांसके डंडेमें कीलके साथ और दूसरा सिरा कद्दूके खोखलेमें आबद्ध रहता है। इसीको गोपीयन्त्र कहते हैं। कुछ जातिके लोग इसे बजाकर दरवाजे दरवाजे भीख मांगते हैं।

गोपीलाल—हिन्दीके एक जैन कवि। इन्होंने नागकुमार चरित्र, जम्बूद्वीपपूजा और तीसचौबीसी पूजा ये तीन पद्यग्रंथ बनाये हैं।

गोपुच्छ (सं० पु०) गोः पुच्छ इव पुच्छो यस्य, बहुव्री०। एक तरहका बन्दर जिसकी पूंछ गायकी सी होती है। (क्ली०) गोः पुच्छः, ६-तत्। २ गौकी पूंछ, गायकी दुम। (पु०) ३ एक तरहका गायदुमा हार। ४ प्राचीन कालका एक बाजा।

गोपुर (सं० पु०) क्षुद्रमुस्ता, छोटा मोथा।

गोपुटा (सं० स्त्री०) गोरिव पुटमस्याः बहुव्री०। बड़ी इलायची।

गोपुटीक (सं० क्लो०) गो: शिवव्रषस्य पुटिकं पुटयुक्तं मस्तकं। शिवव्रषका मस्तक, महादेवजीके बैलका मस्तक।

गोपुत्र (सं० पु०) गो: पुत्रं, ६-तत्०। १ गोवत्स गायका छोटा बच्चा। २ सूर्यके पुत्र, कर्ण।

गोपुर (सं० क्लो०) गो: स्वर्गवत् रम्यं पुरं यस्मात् यद्वा गोपायति रक्षति नगरं गुप् बाहुलकात उरच्। १ पुरद्वार शहरका फाटक। २ किलेका फाटक। ३ फाटक, दरवाजा। गवा जलेन विपत्तिं पूरयति आत्मानं पृ-क। ४ कैवर्त्तीमुस्तक। (पु०) ५ वेदशास्त्रके प्रणेता एक प्राचीन ऋषि ६ दाक्षिणात्यमें मन्दिरोंके सम्मुख निर्मित समुच्च प्रवेशगृहविशेष। इस गोपुरका तल बहुत ऊंचा है, इसके शिल्पनैपुण्य और चित्रकार्यके निरीक्षण करनेसे विस्मित होना पड़ता है।* ७ स्वर्ग, गोलोक।

गोपुरक (सं० क्लो०) गोपुर स्वार्थे कन्। १ गोपुर। (पु०) गो: पृथिव्या: पूरक:, ६-तत्०। २ कुन्दुरकवृक्ष। गवा पूरक:, ६-तत्०। ३ जो गोपालन करता है।

गोपुरी—गोशा देखा।

गोपुरीष (सं० क्लो०) गो: पुरीषं ६-तत्०। गोमय, गोबर।

गोपुष्ट (सं० क्लो०) परिपेलतृण, एक तरहकी घास।

गोपेन्द्र (सं० पु०) गोपुषु इन्द्र: श्रेष्ठ:, ६-तत्०। १ श्रीकृष्ण। गोपानामिन्द्र ईश्वर:, ६-तत्०। २ गोपाधिपति नन्द, ये वृन्दावनके गोपोंके अधीश्वर थे।

गोपेश (सं० पु०) गोपानामीश:, ६-तत्०। १ नन्दगोप। २ शाक्य मुनि।

गोपेश्वर—१ आत्मवाद और वादकथा नामक वेदान्तिक ग्रन्थकार, ये कल्याणरायके पुत्र थे। २ कुमाऊं जिलामें नागपुर परगनाके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यहां एक अति प्राचीन सुन्दर शिवालय है, जिसके अन्दर १५ फोट ऊंचा एक लोहेका त्रिशूल गड़ा हुवा है और इसके एक हाश्वपार्श्वमें उत्कीर्ण प्रशस्ति संलग्न एवं और कई एक शिलालिपि देखी जाती हैं।

इस खोदित लिपिसे जाना जाता है कि राजा अनेकमल्लने केदारभूमिको जय कर ११३८ शकको एक राजकीय मन्दिर निर्माण किया था।

* Fergusson's History of Indian and Eastern Architecture. p. 368.

गोपीक—सूक्तिकर्णामृतधृत एक कवि।

गोशव्य (सं० त्रि०) गुश कर्मणि तव्य। १ अप्रकाश्य, जो प्रकाश करने योग्य नहीं है। २ रक्षणीय।

गोप्तृ (सं० त्रि०) गुप-तृच्। १ रक्षक। २ संवरक, आच्छादनकारी। ३ विष्णु। (स्त्री०) ४ गङ्गा।

गोप्य (सं० त्रि०) गुप-ण्यत्। १ रक्षणीय। २ गोपनीय, अप्रकाश्य, छिपाने योग्य। ३ दासीपुत्र।

गोप्यक (सं० पु०) गोप्य एव स्वार्थे कन्। दासीपुत्र।

गोप्यादित्य (सं० पु०) गोपिभि: स्थापित आदित्य: मध्यपदलो०। प्रभासतीर्थमें गोपियोंसे स्थापित एक सूर्यमूर्त्ति। स्कन्दपुराणके प्रभास खण्डमें लिखा है कि प्रभास तीर्थकी भूतेशमूर्त्तिसे थोड़ी दूर वायुकोण पर गोप्यादित्य मूर्त्ति अवस्थित है। नारद प्रभृति प्रभासवासी मुनिगणके द्वारा सोलह हजार गोपियोंने सूर्यकी मूर्त्ति स्थापित कर ऋषियोंको विपुलधन दान दिया था। ऋषिगणने संतुष्ट हो कर इस सूर्यमूर्त्तिका नाम 'गोप्यादित्य' रखा।

गोप्राधि (सं० पु०) गोपाशासौ आधिश्चेति कर्मधा०। आधिविशेष। आधि देखो।

गोप्रकाण्ड (सं० क्लो०) प्रशस्ता गौ: नित्य कर्मधा०। श्रेष्ठ गो, उत्तमा गाय।

गोप्रचार (सं० पु०) प्रचरत्यस्मिन् प्रचर आधारे घञ्, ६-तत्। गोचारणस्थान, गाय रहनेकी जगह, गोष्ठ। २ तीर्थविशेष। (स्कन्दपु० प्रभास०)

गोप्रतार (सं० पु०) गवां प्रतार: प्रतरणतुल्य: संवड्डो ऽत्र बहुव्री०। १ सरयूतीर्थविशेष। महाराज रामचन्द्रजी सरयूमें जिस स्थान पर पाञ्चभौतिक शरीर त्याग कर स्वर्ग गये थे वही स्थान 'गोप्रतारतीर्थ' से विख्यात है। इस तीर्थमें स्नान करनेसे समस्त पाप विनष्ट होते और मरनेके बाद आत्माको स्वर्गकी प्राप्ति होती है। (भारत ३८४ अ०)

२ शिव। गवां प्रतार:, ६-तत्। ३ गौओंका अवतरण।

गोप्रवेश (सं० पु०) गोः प्रवेश, ६-तत्। १ गौओंका वनसे घर प्रत्यागमन। २ गोप्रवेशकाल, जिस समयमें गो चर कर घर लौटती हैं, संध्या, गोधूली।

गोफ (सं० पु०) १ दास, सेवक। २ दासीपुत्र। ३ गोपियोंका झुंड। ४ दृष्टबंधक, एक तरहका रेहन जिसमें रेहन रखी हुई चीज पर महाजनको कोई अधिकार न रहे वरन् वह सिर्फ सूद लेनेका अधिकारी हो।

गोफणा (सं० स्त्री०) फोड़े और जखम आदि बांधनेका एक प्रकारका बन्धन जिसका व्यवहार चिवुक, नासिका, ओष्ठ, स्कन्ध आदिको बांधनेके लिये होता है।

गोफा (हिं० पु०) नया निकला हुवा पत्ता, गाभा।

गोबध (सं० क्लो०) गौका मारना।

गोबर (हिं० पु०) गोमय, गायकी विष्ठा, गौका मल।

गोबरगणेश (हिं० वि०) १ भद्दा, जो देखनेमें अच्छा न मालूम हो। २ मूर्ख, बेवकूफ़।

गोबरहारा (हिं० पु०) गोबर उठाने या पाथनेवाला नौकर।

गोबरिया (हिं० पु०) हिमालय तथा नेपालमें होनेवाला एक तरहका पौधा। इसकी जड़ विष है।

गोबरी (हिं० स्त्री०) १ कंडा, उपला, गोहरा। २ गोबरका लेपन।

गोबरैला (हिं० पु०) गोबरमें रहनेवाला एक तरहका कोड़ा।

गोबरौरा (हिं०) गोबरैला देखो।

गोबल्य (सं० पु०) श्वेत यावनाल, सफेद ज्वार।

गोबाल (सं० क्लो०) गौका बाल, गायका रोआं।

गोबालधी (सं० स्त्री०) चमरीमृग।

गोबाली (सं० स्त्री०) गोबाला वालोऽस्याः बहुव्रो० ङीप्। औषध विशेष, एक दवा।

गोबिया (देश०) आसामकी पहाड़ियोंमें पाया जानेवाला एक तरहका छोटा बांस। यह देखनेमें सुन्दर होता और इसमें लम्बी लम्बी घनी पत्तियां रहनेके कारण इसकी छाया सघन होती है। इसके पत्ते पशुओंके चारेके काम आते और लकड़ीसे तीर कमान, टोकरे बनाये जाते हैं। दुर्भिक्षके समय दीन मनुष्य इस बीजोंका भात भी बना कर खाते हैं।

गोबी (हिं०) गोभी देखो।

गोभ (हिं० पु०) पौधोंका एक रोग।

गोभगडोर (सं० पु०-स्त्री०) गवि जले भगडोरः अग्निवाचालः। जलकुक्कुभपक्षी।

गोभानु (सं० पु०) तुर्वसु राजाके पौत्र और वह्निके पुत्र।

गोभिरामा (सं० स्त्री०) रामतरुणी। (वैद्यक निघण्टु)

गोभिल (सं० पु०) एक गृह्यप्रणेता ऋषि। इन्होंने सामवेदीय गृह्यसूत्र प्रणयन किया है।

गोभिलपुत्र—गोभिलके पुत्र, एक स्मृतिकार।

गोभी (हिं० स्त्री०) १ गोजिह्वा, गायकी जीभ।

२ एक तरहकी तरकारी। यह प्रायः समस्त देशोंमें उपजायी जाती है। यह तीन प्रकारकी होती है—फूलगोभी, गांठ गोभी और पातगोभी। फूलगोभीका डण्ठी लगभग एक बलिश्तकी होती और जमीनमें गड़ी रहती है। इसके ऊपर चारों तरफ चौड़े, मोटे और बड़े पत्ते रहते हैं और इनके मध्यमें फूलका गुथा हुआ समूह होता यही तरकारीके काम आते हैं। गोभी कार्तिक मासके अन्त तक तैयार हो जाती और जाड़ा पर्यन्त रहती है। दूसरी ऋतुओंमें खानेके लिये गोभी शुष्क कर रखी जाती है।

३ पौधोंका गोभ नामक रोग।

गोभुज (सं० पु०) गां पृथिवीं भुनक्ति गो-भुज्-क्विप्। भूपाल, राजा।

गोभृत् (सं० पु०) गां भूमिं बिभर्ति भृ-क्विप्, तुगागमश्च। पर्वत, पहाड़।

गोम (देश०) १ घोड़ोंकी नाभी और छातीके मध्यकी भंवरी। ऐसा घोड़ा बुरा माना जाता है। २ पृथिवी।

गोमक्षिका (सं० स्त्री०) गोः क्लेशदायिका मक्षिका। एक तरहकी मक्खी।

गोमघ (सं० वि०) गां मङ्हति दानार्थं मलङ्करोति गो मङ्हि-क, निपातनान्नकारलोपः। गोदाता, जो गो दान करता है।

गोमण्डल (सं० क्लो०) गवां मण्डलं, ६-तत्। १ गोसमूह, गायका झुण्ड। गोमण्डलं, ६-तत्। २ भूमण्डल। ३ किरणसमूह।

गोमत् (सं० वि०) गौरस्त्यस्य गो-मतुप्। १ गोस्वामी।

२ गोयुक्त, जिसे गो हो। ३ किरणशाली, जिसमें प्रकाश हो। ४ स्तुतिवादक, स्तुति करनेवाला।

गोमत (सं० क्लो०) गवां मतं, ६-तत्। अध्वपरिमाण, गव्यूति, दो कोस।

गोमतल्लिका (सं० स्त्रो०) प्रशस्ता गोः नित्यस० परनिपातः। प्रशस्त गो, अच्छी गाय।

गोमती (सं० स्त्रो०) गोमत्-ङीप्। १ स्वनामख्यात नदीविशेष, एक नदीका नाम।

स्कन्दपुराणके प्रभासखण्डमें इसको उत्पत्ति, माहात्म्य और स्नानादि फलके लिए इस तरह लिखा है—

"गङ्गासरस्वतीपुण्या यमुना च महानदी।
गोदावरी गोमती च नदी तापी च नर्मदा॥
नद्यः समुद्रसंयोगात् सर्वाः पुण्याः प्रभावहाः"

अर्थात् गङ्गा, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, गोमती, तापी और नर्मदा प्रभृति पुण्यशलिला नदियां समुद्रमें जा मिली हैं, इनका जल पवित्र है। उक्त वचनसे जाना जाता है कि गङ्गा प्रभृतिको नाईं गोमती नदी भी पर्वतसे निकल समुद्र तक चली गई है। किन्तु महाभारतके मतसे गोमती नदी काशीके उत्तर गङ्गासे मिश्रित है। (भारत ३।८४) गोमती गङ्गासङ्गममें स्नान करनेसे अग्निष्टोमका फल होता और कुलका उद्धार होता है। रामतीर्थमें स्नान कर गोमतीमें स्नान करनेसे अश्वमेधका फल और कुल पवित्र होता है। गोमतीमें शतसाहस्रक नामका एक तीर्थ है। इसमें संयत भावसे स्नान करने पर सहस्र गोदानका फल होता है। (भारत ३।८४)

गोमती नदी उत्तरपश्चिम प्रदेशके शाहजहानपुर जिलेके अन्तर्गत फलजरताल नामक क्षुद्र ह्रदसे निर्गत है। यह अक्षा० २८° ३७´ उ० और देशा० ८०° ७´ पू०में अवस्थित है। देश्रोहा और घर्घरा नदीके मध्यवर्ती वालुकामय भूमि हो कर प्रायः ५००मील प्रवाहित हो अक्षा० २५° ३´१ उ० और देशा० ८३° २३ पूर्व गङ्गाके वामकूलमें आ मिली है। प्रबल स्रोतमें दक्षिण-पूर्व गतिसे ४२ मील प्रवाहित हो अक्षा० २८° ११´ उ० और देशा० ८०° २०´ पूर्वमें अयोध्याके खेरी जिलेमें आ गिरी है। अक्षा० २७° २८ उ० और देशा० ८०° २७ पूर्वमें कथ्‌ना नामक एक शाखा नदी आ इसके वामकूलमें मिली है। इस स्थानसे प्रायः ८० मील दक्षिण-पूर्वाभिमुख आकर सरायण नामक एक शाखा देखी जाती है। इसके बाद लखनऊ शहर है। यहां नदीके ऊपर ५ सेतु हैं। इस स्थान पर सब ऋतुओंमें नदीके मध्य हो कर नौका द्वारा लोग आते जाते हैं। लखनऊ नगरके दक्षिण गोमती नदी क्रमशः सङ्कीर्ण होती गई है। इस स्थान पर चारो धाराका दृश्य अतिशय मनोहर लगता है। अयोध्या नगरसे १७० मील दक्षिणपूर्व सुलतानपुरके निकट यह नदी २०० हाथ चौड़ी एवं स्रोतका वेग घण्टामें प्रायः दो मील होगा। गोमती सुलतानपुरसे ५२ मील दक्षिण जौनपुर जिला तक आई है। यहाँ नदीके ऊपर एक सुन्दर पुल है। जौनपुरसे १८ मील दक्षिण वाराणसी जिलेकी निन्दनदी आ गोमतीके दक्षिणकूलमें मिली है। जहाँ गोमती गङ्गाके साथ मिली है वहांसे कुछ नौका संलग्नसेतु हो कर ग्रीष्म और शीत ऋतुमें गोमती पारापार होते हैं। वर्षाके समयमें नौकाके अलावा पार होनेका दूसरा कोई उपाय नहीं है। टिलवार घाटसे खेरी जिलेके मुहम्मदी नामक स्थान तक नदीमें सब समय ५०० सौ मनी नौका जाती आती हैं।

गोः गोपदमाधिक्यं न विद्यतेऽस्य गो मतुप् ङीप्। २ विद्याविशेष, गोदान प्रभृति करनेका मन्त्र। गोदान देखो। ३ गङ्गा।

४ पीठस्थानकी अधिष्ठात्री गोमन्त पर्वत पर अवस्थित भगवती मूर्त्ति।

"गोमन्ते गोमती देवी मन्दरे कामचारिणी।" (देवीभागवत ७।३०।५७)

गोस्तुदस्थि यत्रास्ति गो-मतुप्-ङीप्। मृत सवेशी फेंकनेका स्थान। ५ वङ्गमें त्रिपुरा जिलेके अन्तर्गत एक नदी। त्रिपुरपर्वतश्रेणीके अतारमुरा और लङ्गधरा नामक पहाड़से उत्पन्न चाइमा और राइमा नदी दुमरा प्रतापके ऊपर एकत्र मिल कर गोमती नाम धारण किया है। कुमिल्लासे प्रायः ७ मील पूर्व बीबीबाजार ग्रामके निकट त्रिपुरा राज्यमें प्रवेश करती है। इसके बाद पश्चिमाभिमुख हो दाउदकान्दी ग्रामके निकट अक्षा० २३° ३१´ ४५´ उ० और देशा० ८° ४४´ १५´ पू० पर मेघना नदीमें मिली है। इस नदीका लम्बाई प्राय ६६ मील होगी। वर्षाकालमें इसकी गभीरता एवं स्रोतका

वेग बढ़ जाता है। पार्वतीय त्रिपुरा राज्यमें इस नदीके उत्तरकूल पर काशोगञ्ज, पिथरागञ्ज, और मैलाक-चेरल नामक तीन शाखाएं हैं। नदीके कूल पर कुमिल्ला, जाफरगञ्ज और पाँचपुखुरिया ये तीन प्रधान नगर हैं। कुमिल्ला, कम्पनीगञ्ज और नुरपुरमें नदी पार होनेके लिए नौकादि हैं।

६ गोरोचना।

गोमतीशिला (सं० स्त्री०) हिमालयकी वह चट्टान जिस पर पहुंच कर अर्जुनका शरीर गल गया था।

गोमत्स्य (सं० पु०) गौरिव स्थूलो मत्स्यः। सुश्रुतके अनुसार एक तरहकी मछली।

गोमन्त (सं० पु०) एक पर्वतका नाम। इसके ऊपर एक पीठस्थान है जिसकी अधिष्ठात्री देवीका नाम गोमती है। गोमती, गोआ, जरासन्ध और कृष्ण देखो।

गोमन्द (सं० पु०) पर्वतविशेष। यह क्रौञ्चद्वीपमें अवस्थित है, कमललोचन सर्वदा इसी पर्वत पर वास करते हैं। (भारत भीष्म० १२ अ०)

गोमय (सं० पु०-क्ली०) गोः पुरीषं गो-मयट्। १ गौकी विष्ठा, गोबर। इसका गुण गो शब्दमें देखो। स्मृतिका मत है कि वन्ध्या, रोगपीड़िता और नवप्रसूता एवं वृद्धा गौका गोमय ग्रहण करना उचित नहीं है। पुराणमें लिखा है कि एक समय समस्त गौने मिल कर आपसमें इस बातका परामर्श किया कि उन सबकी उन्नतिका क्या उपाय है। अनेक वादानुवादके बाद स्थिर हुवा कि जो मनुष्य उनके गोबर तथा मूत्रसे स्नान करेगा उसीका शरीर पवित्र होगा. ऐसा होनेसे ही उनकी उन्नति होगी अन्यथा नहीं। इसके लिये समस्त गौने एक शत वर्ष कठोर तपस्या की। प्रजापतिने तपस्यासे संतुष्ट हो कर वही वर दिया जो उनका अभीष्ट था। उसी समयसे गौका गोमय और मूत्र पवित्र माना जाता है। गोमय द्वारा देवदेवियोंके अभिषेक करनेका विधान है। महाभारतके दानधर्म में लिखा है कि एक समय गौने लक्ष्मीजीसे कहा कि "हम सब आपका सम्मान करेंगे और आप हमारे गोमय और मूत्रमें वास कीजिए।" लक्ष्मी उनकी प्रार्थनाको अङ्गीकार कर तभीसे गोमूत्र और गोमयमें वास करने लगी। कोई कोई इन्हें साक्षात् यमुना कह कर वर्णन करते हैं। (काशीखण्ड)। ऐसा प्रवाद है कि गोमयसे वृश्चिक होता है। (त्रि०) २ गोस्वरूप।

गोमयच्छत्र (सं० क्ली०) गोमयजातं छत्रमिव। करक, कुम्भी, कुकुरमुत्ता।

गोमयच्छत्रिका (सं० स्त्री०) गोमये गोमयप्रचुरस्थाने जाता छत्रिकेव। गोमयच्छत्र, छातेके आकारका एक छोटा गाछ जो प्रायः गोमयकी ढेर पर निकला करता।

गोमयतैल (सं० क्ली०) नेत्ररोगका तैल।

गोमयप्रिय (सं० क्ली०) गोमयं प्रियमस्य उत्पादकत्वात्। १ भूतृण, एक तरहकी सुगन्धि घास। २ बालक, सुगन्ध बाला।

गोमयाद्यघृत (सं० क्ली०) नेत्ररोगका घृत, आंखकी बीमारीका घी। इसकी प्रस्तुत प्रणाली इस तरह है—छागघृत ४ शराव, गोमयरस ४ शरावमें काकोली, क्षीर-काकोली, जीवक, ऋषभक, मुद्गपर्णी, माषाणी, मेदा, महामेदा, गुलुञ्च, कर्कटशृङ्गी, वंशलोचन, पद्मकाष्ठ, पुण्डरिया, ऋद्धि, वृद्धि, किशमिश, जीवन्ती और यष्टिमधु इन सबके १ शराव चूर्ण मिलाते हैं। इसके बाद उसमें १६ शराव जल डाल दिया जाता है।

गोमयोत्था (सं० स्त्री०) गोमयादुत्तिष्ठति उद्-स्था-क टाप्। १ गोमयजात कीटविशेष, एक तरहका कीड़ा जो गोबरसे उत्पन्न होता है, गोबरीला, पर्दभी।

गोमयोद्भव (सं० त्रि०) गोमय उद्भव उत्पत्तिस्थानं यस्य बहुव्री०। १ गोमयजात, जो गोबरसे उत्पन्न हो। (पु०) २ आरग्वध, अमलतास।

गोमर्द (सं० पु०) सारस पक्षी।

गोमर (हिं० पु०) बूचर कसाई।

गोमरी (सं० स्त्री०) वार्त्ताकुविशेष, रामबैंगन।

गोमल (सं० पु०) १ गोमय, गोबर। २ पंजाबके पश्चिम सुलेमान पहाड़से निःसृत एक नदी। ऋग्वेदमें यही नदी गोमती नामसे वर्णित है। इस नदीके निकट ही गोमल नामका गिरिसङ्कट पंजाबसे अफगानिस्तान तक गया है।

गोमहिषदा (सं० स्त्री०) गाः महिषांश्च ददाति भक्तेभ्यः गो-महिष-दा-क-टाप्। कार्त्तिकेयकी अनुगामिनी मातृकाविशेष।

गोमांस (सं० क्ली०) गोमांस ६-तत्। गोका मांस। चरकके मतसे इसका गुण—वायु, पीनस, विषमज्वर, शुष्क कास, श्रम, अग्निवृद्धि और क्षयरोगनाशक है। (चरक सूत्र० २७ अध्याय) सुश्रुतके मतसे इसका गुण—श्वास, कास, प्रतिश्याय और विषमज्वर वायुनाशक एवं श्रमजीवी और वर्द्धिताग्नि मनुष्यके लिये विशेष हितकर हैं। (सुश्रुत सू० ४६ अ०) हिन्दूधर्मशास्त्रके मतसे इसका मांस खानेसे बहुत पाप होता है। अज्ञानसे गोमांस खाने पर प्राजापत्य व्रतका अनुष्ठान कर पवित्र हो सकता है। "गोमांस भक्षणे प्राजापत्यं चरेत।" (सम्बर्त) यदि सज्ञानसे गोमांस भक्षण करे तो उसके प्रायश्चित्तके लिये समुद्रगामिनी किसी नदीके तीर जा चान्द्रायण व्रतका अनुष्ठान करे। व्रतकी समाप्ति होने पर ब्राह्मणभोजन करावे और प्रत्येक ब्राह्मणको एक वृष और एक दुग्धवती गाय दान दे। ऐसा करने पर ज्ञानकृत गोमांस भक्षणका प्रायश्चित्त होता है। (शातातप)

सज्ञानसे यदि अनेक बार गोमांस खाया जाय तो संवत्सर कृच्छ्र व्रतका अनुष्ठान करने पर पाप नाश होता है। (उक्त)

द्विजजातिके लिए उपरोक्त प्रायश्चित्त करनेके बादभी पुनर्वार उपनयनादि संस्कार करना उचित है।

(प्रायश्चित्तविवेक)

गोमांसभक्षण (सं० क्ली०) गोमांसस्य भक्षणम्, ६-तत्। १ गौका मांस खाना। २ तालुस्थानमें जिह्वाका प्रवेश।

गोमाची (सं० स्त्री०) कर्णस्फोट, एक प्रकारकी लता।

गोमातृ (सं० स्त्री०) गवां माता, ६-तत्। १ सुरभि, कश्यपकी स्त्री। २ मरुत् देवता।

गोमायु (सं० पु० स्त्री०) गां विकृतां वाचं मिनोतीति मा-उण्। १ शृगाल, सियार, गीदड़। इसका मूत्र और पुरीषादि भक्षण निषिद्ध है। द्विजाति यदि मूत्रादि भक्षण करे तो उसे चान्द्रायणव्रत करना चाहिये। इसके शब्द-से शुभाशुभका विचार किया जाता। शृगाल देखो। २ एक गन्धर्वका नाम। (हरिवंश २४ अ०) (क्ली०) ३ वंशलोचन।

गोमायुभक्ष (सं० पु०) गोमायुं भक्षयति भक्ष-अण् उपपदस०। नीच जातिविशेष।

गोमित्री—दक्षिण देशमें रहनेवाली वाल्मीक ब्राह्मणोंके अन्तर्गत एक श्रेणी। इनकी उत्पत्तिके विषयमें प्रवाद है कि जब श्रीरामचन्द्रजीने वाल्मीकि ऋषिको यथेष्ट धन दिया था तब ऋषिने उस धनका सदुपयोग करनेके लिए एक यज्ञ करना निश्चय किया और इस हेतु आबू पहाड़ पर वाल्मीकेश्वरी देवीके मन्दिरमें अपना आश्रम स्थापित किया। यज्ञारम्भके लिए उन्होंने दूर दूरसे ऋषियोंको बुलाया। यज्ञमें गौतमजी, वशिष्ठजी, कण्व, च्यवन आदि ऋषियोंके साथ साथ एक लाख अन्य ऋषिगण उपस्थित हुए

"सर्वे ते ऋषयो लक्षैकसुत्तमा वेदवित्तमाः।
तेषां विंशतिसंख्यानां गोत्राणि विमलानि च॥ १६॥"

(मिश्र० ब्र० मा० पृ० ५।६)

अर्थात् उस यज्ञमें आये हुए एक लाख ऋषि थे। वे सब वेदपारग थे। उनमेंसे उन पचास हजार ऋषियों-की गोमित्री संज्ञा हुई। जो गौवोंकी रक्षा करनेके लिए नियत किये गये थे।

इनके गोत्र ये हैं—

	गोत्र	प्रवर
१	भरद्वाज	
२	वशिष्ठ	वसिष्ठ।
३	काश्यप	काश्यप, वत्स ध्रुव।
४	गार्ग्य	काश्यप, वत्स, ध्रुव।
५	आत्रेय	आत्रेय, अर्चनान्, श्यावाश्व।
६	गौतम	
७	वत्स	
८	कौण्डिन्य	वशिष्ठ, मैत्रावरुण, कौण्डिन्य।
९	भार्गव	भार्गव, च्यवन, आप्नवान, आर्ष्टिषेण और अनुपेक्षा
१०	मुद्गल	आङ्गिरस, ब्राह्म, मुद्गल।
११	जमदग्नि	जमदग्नि, भार्गव, और्व।
१२	आङ्गिरस	आङ्गिरस, ब्राह्म, मुद्गल।
१३	कुत्स	मान्धाता, आङ्गिरस, कौत्स।
१४	कौशिक	
१५	विश्वामित्र	विश्वामित्र, दैवत, दैद, अघस।
१६	पुलस्त्य	

१७ अगस्ति — विश्वामित्र, स्मररथ, वाधूल।
१८ शाण्डिल्य
१८ कात्यायन — भार्गव, च्यवन, और्व, जमदग्नि, वत्स।

गोमिथुन (सं० क्ली०) गवां मिथुनं, ६-तत्०। वृष और गाभी, गाय और बैल।

गोमिन् (सं० त्रि०) गावो विद्यन्तेऽस्य गो-मिनि। १ गोमान्, गोवाला, जिसको गौ है। २ उपासक। (पु०) ३ शृगाल, गीदड़। ४ बुद्धके एक शिष्यका नाम। ५ पृथ्वी।

गोमीन (सं० पु०-स्त्री०) गौरिव स्थूलो मीनः। मत्स्य विशेष, एक तरहको मछली।

गोमुख (सं० पु०) गोर्मुखमिव मुखं यस्य, बहुव्री०। १ नक्र, कुम्भीर, मकर, ग्राह। २ वृक्षविशेष। ३ मातलीके पुत्र। (भारत कर्ण० ८८ अ०) ४ कुटिलाकारवाद्ययन्त्र, शृङ्गादि नरसिंहा नामका बाजा। (क्ली०) ५ लेपनविशेष, घरको भीतमें गोमुखाकारका चित्र बनाना। ६ गोमुखाकृति सन्धिविशेष, गौके मुखके आकारका एक तरहका सेंध। ७ माला रख कर जपनेकी थैली जिसका आकार गोमुखके सदृश होता। शाक्त, सौर, वैष्णव प्रभृति गोमुखमें हाथ रख कर माला द्वारा इष्टमन्त्र जप किया करते हैं। गोमुख छब्बीस आङ्गुल या एक हाथका बना रहना चाहिए, जिसमें आठआङ्गुल परिमाणका मुख और अठारह आङ्गुल परिमाणकी ग्रीवा रहे। ८ आसनविशेष। पृष्ठके वाम पार्श्वमें दक्षिण गुल्फ (ठेहन) और दक्षिण पार्श्वमें वामगुल्फके योग करनेसे गोमुखाकृति गोमुखासन बनता है। (हठदीपिका) ८ वत्सराज मन्त्रीके पुत्र। (कथासरित्सा० २१।५७)

१० नरवाहनदत्तके प्रतिहारी। (नरवाहनदत्त देखो।)

११ गौका मुख। १२ गौके मुंहके आकारका एक तरहका शङ्ख। १३ टेढ़ा मेढ़ा घर। १४ लेपन

गोमुखव्याघ्र (सं० पु०) एक तरहका व्याघ्र, जिसका मुख गौके मुखके जैसा हो।

गोमुखी (सं० स्त्री०) गोमुखमिव आकृतिरस्याः, बहुव्री०। ङीप्। १ हिमालयसे गङ्गाके पतन स्थान पर अवस्थित एक गुहा या कन्दरा। २ राढ़देशस्थ एक नदी।

गोमुती—भारतीय द्वीपपुञ्जजात वृक्षविशेष। (Arenga saccharifera)। यह देखनेमें नारियल या ताड़के वृक्ष जैसा होता है। इसके स्कन्धके ऊपर घोड़ेकी दुमके बाल जैसा रोआं रहता है। जिसको मलयवासीगण गोमुती कहते हैं। इसकी भी छिलकासे मजबूत रस्से आदि बनते हैं जो नारियलके रस्सेकी अपेक्षा दृढ़ और बहुकाल स्थायी होते हैं।

गोमुद्रा (सं० स्त्री०) प्राचीनकालका एक बाजा, जिस पर चमड़ा मढ़ा रहता हैं।

गोमूढ़ (सं० त्रि०) बैलके सदृश निर्बोध।

गोमूत्र (सं० क्ली०) गोर्मूत्रं, ६ तत्०। गौका प्रस्राव या पेशाब। इसका संस्कृत पर्याय-गोजल, गोअम्भ, गोनिष्यन्द और गोद्रव है। कृच्छ्रसान्तपनव्रतमें गोमूत्र भक्षण करनेका विधान है।

गोमूत्रवीजक—(सं० पु०) रक्तवीजासन वृक्ष।

गोमूत्राभ (सं० पु०) मन्दविष वृश्चिकविशेष।

गोमूत्रिका (सं० स्त्री०) गोमूत्रस्येव वक्रसरलाकृतिरस्त्यस्याः गोमूत्र-ठन् टाप्। १ तृणविशेष, एक प्रकारको घास जिसके बीज सुगन्धित होते हैं। इसका संस्कृत पर्याय—रक्ततृणा, क्षेत्रजा, कृष्णभूमिजा है। इसका गुण—मधुर-वृष्य एवं गायके दुग्धवृद्धिकारक है। गोमूत्रिका तृण देखनेमें ताम्रवर्ण है।

गोमूत्रस्येव गतिरस्यत्र गोमूत्र ठन्-टाप्। २ चित्र काव्यविशेष। इस काव्यके पढ़नेकी तरकीब है कि पहली पंक्तिके एक वर्णको दूसरी पंक्तिके दूसरे वर्णसे मिलाकर फिर पहलीके तीसरेको दूसरीके चौथेसे फिर पहलीके पांचवेंको दूसरीके छठेसे और फिर आगे इसी प्रकार पढ़ते चलते हैं। जिस श्लोकके अर्धद्वयका एकान्तर वर्ण समान होते अर्थात् प्रथमार्द्धके द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, चतुर्दश और षोड़श अक्षर एवं द्वितीयार्द्धके द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, चतुर्दश और षोड़श अक्षर एक ही हों। उसीको गोमूत्रिकाबन्ध कहते हैं।

उदाहरण—

प्र ह से त्रि क स त्रा सं सा ध ने प्य वि वा दि भिः।
व ह पे वि क स त्रा सं यु ध मा प्य वि षा दि भिः॥

इसे वर्षामूतन भी कहते हैं।

गोमूत्रप्रकार: गोमूत्र प्रकारार्थ कन् टाप्। अत इत्वञ्च। २ गौमूत्रके सदृश वक्र और सरल प्रचारादि।

गोमूत्री (सं० स्त्री०) रक्तकुलत्थिका, लालकुलथी।

गोमृग (सं० पु० स्त्री०) गवाकृतिर्मृग:। गवय, नील गाय।

गोमेद (सं० पु०) गां जलं मेदयति स्नेहयति गो-मिद णिच् अच्। १ गोमेदकमणि। गोमेदक देखो। २ द्वीपविशेष। युक्तिकल्पतरु ग्रन्थमें लिखा है कि पूर्व समय इस द्वीपमें गोपति नामके एक राजा रहते थे, इन्होंने गोमत्र नामक यज्ञ किये थे। गोपति अग्नितुल्य तेजस्वी औतथ्य-गणके यजमान थे। किसी समय महाराज गोपतिने किसी दूसरे यज्ञमें भृगुवंशीयोंको वरण दिया था। इस पर गौतमने क्रुद्ध होकर शाप दिया जिससे गोपतिका अकालमृत्यु हुआ एवं मुनिके अमोघ कोपाग्निसे यज्ञकी समस्त गायें भस्म हो गईं। भस्मीभूत गौका चार उक्त द्वीपके समस्त भूभाग पर आच्छादित हुआ जान कर द्वीपका नाम गोमेद पड़ा। (युक्तिकल्पतरु) ३ प्लक्षद्वीपका एक वर्षपर्वत। (क्ली०) ४ तेजपत्र।

गोमेदक (सं० पु०) गोमेद स्वार्थे कन्। १ स्वनामख्यात मणिविशेष, गोमेद। इसका पर्याय:—राहुमणि तमोमणि स्वर्भानव और लिङ्गस्फटिक है। इसका गुण—अम्ल, उष्ण, वायुके कोप और विकारनाशक, दीपन, पाचन एवं धारण करने पर पापनाशक है। (राजनिघण्ट) हिमालय पर्वत पर तथा सिन्धु नदीमें गोमेद मणिकी उत्पत्ति है। यह मणि स्वच्छकान्ति, भारयुक्त, स्निग्ध, दीप्तियुक्त एवं शुक्लवर्ण वा पीतवर्ण होती है। इस प्रकारका गोमेद अच्छा समझा जाता है। इसके चार भेद हैं। यथा—शुक्लवर्ण गोमेदको ब्राह्मण, रक्तवर्णको क्षत्रिय, ईषत् पीतवर्णको वैश्य एवं ईषत् नीलवर्ण गोमेदकको शूद्र जाति कहते हैं। गोमेद मणिकी छाया भी चार प्रकारकी है, यथा—श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण। गुरु या भारयुक्त, प्रभाशाली, शुक्लवर्ण, स्निग्ध, मृदु और अधिक पुरातन एवं स्वच्छ गोमेद धारण करना चाहिये। इसके धारणसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है। लघु, कुत्सिताकार, अस्वच्छ, स्नेहोपलिप्त और मलिन गोमेद मणि पहनना नहीं चाहिए, इसके धारण करनेसे सम्पत्ति, भोग, बल एवं वीर्य नष्ट हो जाते। गोमेद मणिकी परीक्षा अग्निमें की जाती है। शुद्ध गोमेद मणिका मूल्य सुवर्णसे द्विगुण है। चारों प्रकारके गोमेद धारण योग्य हैं। सुश्रुतके मतसे गोमेद मणिसे अस्वच्छ जल परिष्कार हो जाता है।

(क्ली०) २ पीतमणि। ३ काकोल नामक विष जो काला होता है। ४ पचक नामक साग।

गोमेदसन्निभ (सं० पु०) दुग्धपाषाण

गोमेध (सं० पु०) मेध हिंसायां भावे घञ्। गवां मेधो हिंसा यत्र, बहुव्री०। यज्ञविशेष। इसका दूसरा नाम गोसवयज्ञ भी है। यह यज्ञ कलिकालमें निषिद्ध समझ कर वर्तमान समयमें जिन ग्रंथोंमें यज्ञादिका विधान पाया जाता है, उसमें गोमेध यज्ञका विशेष विवरण नहीं है। कात्यायनश्रौतसूत्रमें गोसवयज्ञ नामसे इस यज्ञका उल्लेख है।

मनुके मतसे अज्ञानकृत ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्तके लिये अश्वमेधके जैसा इस यज्ञका अनुष्ठान किया जाता है। इसकी अनुष्ठान प्रणाली अश्वमेधके सदृश है।

कात्यायनश्रौतसूत्रमें इस यज्ञका विधान इस तरह है—

"उक्थ्यो गोसवो ऽयुतदक्षिण:।" (कात्यायन २२।११।६)

अर्थात् गोसव नामक यज्ञ उक्थ संस्थित हुआ करता है। उक्थ्य देखो। इस यज्ञमें दश हजार दुग्धवती गाय दक्षिणा देना पड़ता है।

किसी किसी मुनिके मतसे केवल वैश्यगणके लिये ही यह यज्ञ करनेका विधान है, दूसरा कोई वर्ण इस यज्ञका अनुष्ठान कर नहीं सकता। दूसरे दूसरे मुनिका कथन है कि ब्राह्मण क्षत्रिय प्रभृति अपर वर्ण भी गोसव यज्ञका अनुष्ठान कर सकते हैं। मनुसंहिताके ११।१५ श्लोककी व्याख्यामें टीकाकार कुल्लूकभट्टने इस यज्ञको त्रैवर्णिक अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णोंका अनुष्ठेय कहा है। कात्यायनके मतानुसार राजा और प्रजा जिसको सम्मान करें वह गोसवयज्ञके अधिकारी हैं, दूसरा इस यज्ञका अनुष्ठान कर नहीं सकता।

है। आहवनीय अग्निको दक्षिण और एक स्थण्डिल प्रस्तुत करें, यजमान उस स्थण्डिलमें उपवेशन कर धारोष्ण दुग्ध द्वारा अभिषिक्त होवें। जो गोसवयज्ञका अनुष्ठान करते, उन्हें सब कोई स्थपति कह कर पुकारते हैं। वैश्यस्तोम दक्षिणाका जो सब लिङ्ग वा चिन्ह विहित हैं इसमें भी उसी तरहको रीति प्रचलित है। सहोदरगण या मित्रगण परस्पर मिल कर इस यज्ञका अनुष्ठान कर सकते हैं। इसका और एक नाम गणयज्ञ है।

(कात्यायनश्रौतसूत्र २२।११।४।१२)

गोऽम्भस् (सं० क्लो०) गवामम्भः, ६ तत्। गोमूत्र, गायका मूत।

गोय (फा० पु०) गेंद।

गोयज्ञ (सं० पु०) गवाकृतो यज्ञः, मध्यपदलो०। १ गोमख-यज्ञ, गौके द्वारा जो यज्ञ किया जाता है।

गोभिलगृह्यसूत्रके मतसे पुष्टिकामनाके लिये गोयज्ञ किया जाता है इस यज्ञमें अग्नि, पूषा, इन्द्र और ईश्वर ये चारो देवताएं अर्चनीय हैं। वृषभकी पूजा ही गोयज्ञ-का प्रधान अङ्ग है। यज्ञ देखो। (गोभिलगृह्य ३।६।१०-१२)

२ वृन्दावनवासी गोपगणके लिए कृष्ण कर्तृक अनु-ष्ठित महोत्सव। हरिवंशमें लिखा है कि वर्षाकालके अवसान पर वृन्दावनके समस्त गोपगण शक्रोत्सव किया करते थे। एक समय जब वर्षाकाल समाप्त हो गया तब सकल ग्वाले हर्ष और उत्साहसे शक्रोत्सवके आयोजन कर रहे थे, उसी समय गोपीजनवल्लभ श्रीकृष्णचन्द्रने उन्हें रोक कर कहा कि "हम लोग ग्वाले हैं, जिससे गौको उन्नति हो वही हम सबोंका एकान्त कर्त्तव्य है। इस लिए मैं समझता हूं कि गिरिपूजा कर गोयज्ञ करना चाहिये, क्योंकि पर्वत ही वृन्दावनके समस्त गौओंको पालन करता और अगर उन्हें पर्वत परको घास नहीं मिलती तो वृन्दावनमें आज तक एक भी गौ बची न रहती।" श्रीकृष्णचन्द्रके ऐसे वचनको सुन कर समस्त ग्वाले गिरिपूजा ही करनेको वाध्य हुए, एवं महाधूम धामसे गिरियज्ञ और गोयज्ञका अनुष्ठान किया।

(हरिवंश ७४ अ०)

गोया (फा० क्रि० वि०) मानो, जैसे। गोया देखो।

गोयीचन्द्र (सं० पु०) संक्षिप्तसारके एक टीकाकार। इन-की टीका अत्यन्त सरल भाषामें लिखी है। इन्होंने अपनी टीका प्रमाणित करनेके लिए कई जगह कलापटीका उद्धृत कर उसकी मीमांसा की है।

गोयुक्त (सं० त्रि०) गवा युक्तः, ३ तत्। गोविशिष्ट, जो गाय या बैलसे खींचा जाता हो।

गोयुग (सं० क्लो०) गवां युगं, ६-तत्। गोयुगल, एक जोड़ा गौ।

गोयुत (सं० त्रि०) गवा युतः, ३-तत्। गोयुक्त।

गोयुति (सं० स्त्री०) गोर्यु ति गमनं, ६-तत्। गौका गमन, गायका जाना।

गोर (फा० स्त्री०) मृत शरीर गाड़नेका गड्ढा। कब्र।

गोर (अ० पु०) फारसदेशके एक प्रान्तका नाम।

गोर (हिं० वि०) १ गोरा। २ श्वेतवर्णका, जिसका रंग सफेद हो।

गोरक (सं० पु०) विषधरसर्प, एक तरहका जहरीला सांप।

गोरका (देश०) दक्षिणी भारतमें पाये जानेवाला अरपल नामका वृक्ष।

गोरक्ष् (सं० त्रि०) गां रक्षति गो-रक्ष-क्विप्। गोरक्षक, गौकी रक्षा करनेवाला।

गोरक्ष (सं० पु०) गां रक्षति गो-रक्ष-अण् उपस०। १ लता-विशेष। २ नागरङ्ग, नारङ्गी। ३ ऋषभ नामक औषध। (त्रि०) ४ गोपालक, गौकी रक्षा करनेवाला। रक्ष भावे घञ्। ५ गोरक्षण, गोप्रतिपालन। ६ गोमाञ्चलमें स्थापित एक प्राचीन तीर्थ।(सह्याद्रि० ३१।२९)

गोरक्षक (सं० त्रि०) गां रक्षति रक्ष-ण्वुल्, ६-तत्। गो-पालक, ग्वाला।

गोरक्षकर्कटी (सं० स्त्री०) गोरक्षा चासौ कर्कटी चेति कर्मधा०। चिभटा, भुकुर। इन्द्रवारुणी।

गोरक्षचालुक्य, गोरक्षतण्डुला देखो।

गोरक्षजम्बू (सं० स्त्री०) गोरक्षा चासौ जम्बू चेति कर्म-धा०। १ गोधूम, गेहूं। २ गोरक्षतण्डुला, कोई वृक्ष। ३ घोण्टावृक्ष, एक तरहका पेड़। ४ बला, बाला।

गोरक्षतण्डुला (सं० स्त्री०) गोरक्षतण्डुलो बीजं यस्याः, बहुव्री० टाप्। वृक्षविशेष। (Hedysarum lagopodioides)। इसका संस्कृत पर्याय—गाङ्गेरुकी, नाग-बला, झषगवेधुका, खरयष्टिका और विश्वदेवा है। इसके

पत्ते मोहड़ा वृक्षके पत्ते जैसे होते हैं, किन्तु मोहड़ाका वृक्ष इनसे मोटा और लम्बा होता है। इसकी शाखायें बड़ी बड़ी लम्बी छड़की नाईं बढ़ कर पीछे नम्र हो जाती है। इसमें छोटे छोटे पुष्प लगते जो शुक्ल-वर्ण और ईषत् पीताभ वर्णके होते हैं। भाद्र आश्विन मासको इसमें छोटे छोटे फल भी लगते हैं।

गोरक्षतण्डुली (सं० स्त्री०) गोरक्षस्तण्डुलो यस्याः, बहुव्री०, गोरादित्वात् ङीष्। गोरक्षतण्डुला देखो।

गोरक्षतुम्बी (सं० स्त्री०) गोरक्षा चासौ तुम्बी चेति कर्मधा०। कुम्भाकार तुम्बी, एक तरहकी मोठी लौकी।

गोरक्षदुग्धा (सं० स्त्री०) गोरक्षं गोपोषकं दुग्धं निर्यासो यस्याः, बहुव्री०। क्षुपविशेष, एक तरहकी लता। इसका पर्याय—गोरक्षी, ताम्रदुग्धा, रसायनी, बाहुपत्री, अमृता, जीव्या और अमृतसञ्जीवनी है। इसका गुण—मधुर, वृष्य, संग्राही, शीतल, सर्ववश्यकर, रससिद्धि गुणवर्द्धक।

गोरक्षनाथ—एक महासिद्ध पुरुष। कणफट योगी प्रभृति बहुतसे शैव सम्प्रदाय इन्हें शिवावतारके जैसा विश्वास करते हैं। प्रवाद यों है—

"आदिनाथके नाती मच्छन्दरनाथके पूत। मैं योगी गोरखअवधूत॥"

उक्त प्रवाद वचनसे जाना जाता है कि गोरक्षनाथ मत्स्येन्द्रनाथके पुत्र थे। हठयोगप्रदीपिका प्रभृति ग्रन्थमें ये नौ नाथके एक नाथ अर्थात् नौ प्रधान गुरुके एक गुरु माने गये हैं। महात्मा कबीरके बनाये हुए बीजक पढ़नेसे एक स्थानमें ऐसा पाया जाता है कि इसके पहले ही गोरक्षनाथ विद्यमान थे। हिन्दी भाषामें कबीर और गोरक्षनाथके प्रबन्ध देखे जाते हैं। इससे अनुमान किया जा सकता है कि गुरु गोरक्षनाथ और कबीर एक ही समयमें अर्थात् पन्द्रहवीं शताब्दीमें विद्यमान थे।

कबीर देखो

जिस समय चैतन्यदेवके विशुद्ध धर्मोपदेशसे बङ्गदेश मतवाला हो उठा था, प्रायः उसी समय उत्तरपश्चिममें गोरक्षनाथके अमृतमय वचन और असाधारण योगकौशलसे मोहित हो उत्तरपश्चिमके सैकड़ों मनुष्य उनके मतमें दीक्षित हुए थे। चैतन्य महाप्रभु जिस तरह उच्च नीच सभी वर्णोंके मनुष्योंको अपनाया था, गुरु गोरक्षनाथने भी उसी तरह सर्व जातिके मनुष्योंके मध्य अपना मत प्रचार किया था। राजासे रङ्क तक उनका आदर करते और वे सभीको समान भावसे देखते थे। गुरु गोरक्षनाथ बहुतसे पातञ्जलका मत प्रचार करते थे। उनके मतसे योगी ही संसारमें सभीसे श्रेष्ठ माने गये हैं, क्योंकि योगबलसे मानव सब प्रकारके ऐश्वर्य और सर्वोच्च अवस्था पा सकते हैं। वे हठयोगके भी प्रवर्त्तक थे। नेपालकी तुषारमय गिरिकन्दरसे लेकर भारतके प्रायः सभी स्थानोंमें गोरक्षनाथके सम्बन्धमें बहुतसे अलौकिक गल्प प्रचलित हैं। ये सिर्फ योगी और महासिद्ध पुरुष ही नहीं थे, वरन इनके बनाये हुए हठयोग सम्बन्धीय अनेक अच्छे अच्छे ग्रंथ हैं जिनमेंसे गोरक्षकल्प, गोरक्षसंहिता, गोरक्षसहस्र और गोरक्षपिष्टिका प्रभृति ग्रंथ पाये जाते हैं। ई० ८मसे १०म शताब्दीके मध्य गुरु गोरक्षनाथका अभ्युदय हुआ था। कणफट और गोरखा देखो।

गोरक्षा (सं० स्त्री०) गावां रक्षा, ६-तत्। १ गोपालन। गां रक्षति रक्ष-अच्-टाप्। २ वह स्त्री जो गौ रक्षा करती है।

गोरक्षी (सं० स्त्री०) गोरक्ष-ङीष्। १ गोरक्षदुग्धा, लता-विशेष। २ कुम्भतुम्बी। ३ क्षुद्र क्षुपविशेष, एक तरहकी छोटी लता जो मालवदेशमें पायी जाती है। इसका पर्याय—सर्पदण्डी, सुदण्डिका, चित्रला, पञ्चपर्णिका, गन्धबहुला और गोपाली है। इसका गुण—मधुर, तिक्त, शीतल, दाह, पित्त, विस्फोट, वान्ति, अतिसार और ज्वर दोषनाशक है। इसका फल खर्जुजाके फलके जैसा मीठा होता है। ४ ऋषभक।

गोरख इमली (हिं० स्त्री०) दक्षिण भारतमें होनेवाला एक तरहका वृक्ष। इसका धड़ बहुत मोटा एवं इसकी शाखायें बहुत दूर तक फैली रहती हैं। इसकी लकड़ी बहुत कमजोर और छाल बहुत नर्म होती है। छालके रेशेसे चटाइयां, रस्से और कहीं कहीं कपड़े भी बनाये जाते हैं। इसमें पद्मके आकारके बड़े बड़े पुष्प श्रावण भाद्र मासमें लगते हैं। अफ्रिकाके मनुष्य इसके पत्तेको चूर्णकर भोजनके साथ खाते हैं। इस वृक्षमें फल भी लगते हैं। जिनके बीज औषधके काममें आते हैं। ज्वर निवारणके लिये यह रामबाण है। इसका गुण मधुर

गोधावती (सं० स्त्री०) गोधा तत्पदसादृश्यं विद्यतेऽस्याः गोधा मतुप् मस्य वः ङीप् च । १ गोधापदी । २ वटपत्री, वट वृक्षकी पत्ती ।

गोधावल्ली (सं० स्त्री०) गोधासदृशी लता । १ गोधावती २ हंसपदी नामकी लता

गोधावीणाका (सं० स्त्री०) गोधायाश्चर्मणा नद्धा वीणा, कृत्वा गोधावीणा, कृस्वार्थे कन् । गोधाके चर्म द्वारा आवद्ध सुद्रवीणा, गोहके चमड़े से बंधा हुआ वीणा ।

गोधास्कन्द (०) गोधास्कन्द देखो।

गोधास्कन्ध (सं० पु०) गोधेव स्कन्धोऽस्य, बहुव्री० । अरिमेद नामका एक तरहका वृक्ष ।

गोधि (सं० पु०) गौर्नेत्रं धीयतेऽस्मिन् धा अधिकरणे कि । १ ललाट । गुध्नाति सहसा कुप्यति गुध-इन् । २ गोधिका गोह जंतु । (शब्दरत्नावली)

गोधिका (सं० स्त्री०) गुध्नाति गुध-ण्वुल्-टाप् । १ गोधा गोह । २ एक तरहकी छिपकिली ।

गोधिकात्मज (सं० पु०) गोधिकाया आत्मजः, ६-तत् । १ एक तरहका जानवर जो नर सर्प और मादा गोहके संयोगसे उत्पन्न होता है । २ गोहको आकृतिका एक प्रकारका छोटा जंतु । यह वृक्षके कोटर (खोंढ़र) में रहता है । कभी कभी यह बहुत भयानक शब्द भी किया करता है । बहुतोंका विश्वास है कि उसकी अवस्था जितनी अधिक होती जाती है उतनी ही बार यह शब्द किया करता है । इसका पर्याय—गौधेय, गौधेर और गौधार है ।

गोधिकासूदन (सं० पु०) गोधेरक, जलगोह, वह गोह जो जलमें रहता है ।

गोधिनी (सं० स्त्री०) गोधः क्रीड़ाविशेषोऽस्त्यस्याः गोध-इनि । सविका, कटाई, बरहंटा ।

गोधी (हिं० स्त्री०) गोधूम देखो।

गोधीश (सं० पु०) द्रोण पुष्पी ।

गोधुम (सं० पु०) गुध बाहुलकात् उम् । गोधूम, गेहूं ।

गोधूम (सं० पु०) गुध्यते वेष्टयते त्वगादिभिः गुध-ऊम् । १ नागरंग, नारंगी । २ व्रीहिविशेष । इसका संस्कृत पर्याय—बहुदुग्ध, अपूप, म्लेच्छभोजन, यवन, निस्तुषक्षीर

रपत्र और सुमनसा । बङ्गला भाषामें इसे गम, गोम, और हिन्दीमें गेहूं कहते हैं, फारसीमें गुन्दुम, अरबीमें हिन्त, तामिलमें गोदुम्बी, तेलगुमें गोदुमलु, मलयमें गन्दुम, पञ्जाबमें खानक, ग्रीकमें पाभि, हिब्रूमें खित्ता, इटालीमें ग्रेनो, (Grano) जर्मनमें Weetzen. रूषमें Pscheniz, सुइसमें Hvete; पोर्तगीजमें Trigo, ओलन्दाजमें Tarw; डेनमारमें Hvede; फरासीसीमें Froment, Bled और अंगरेजीमें इसे Wheat कहते हैं । इसका पौधा डेढ़ या पौने दो हाथ ऊंचा होता है और इसमें कुशको तरह लम्बी पतली पत्तियां पेड़ीसे लगी हुई निकलती हैं । पेड़ीके बीचसे सीधे ऊपरकी ओर एक सींक निकलती है । इसीमें बाल लगती है । गेहूंकी खेती अत्यन्त प्राचीन कालसे होती आई है । गेहूंसे समस्त देशोंमें मैदा और आटा प्रस्तुत होता है । पृथ्वीके नानास्थानोंमें यह शस्य उत्पन्न होता है । यूरोपके अटलाण्टिक महासागरके उपकूल पर ३०से ५० अक्षान्तरवर्ती स्थानमें, रोकी पर्वतके पश्चिम और उत्तरमें, दक्षिण अमेरिकाके पश्चिम कूलमें एवं उष्णकटिबन्धके मध्यवर्ती समतल और उच्च भूमिमें गेहूं अधिकतासे उत्पन्न होता है ।

बरार, कोयम्बतुर और ब्रह्मदेशमें भी गेहूं अधिक हुआ करता है । भारतवर्षमें जिस तरहके गेहूं उपजाये जाते हैं उनका नाम यह है,—

१ Triticum vulgare var. hybernum शीतकालिक ।

२ T. Vulgare, var, aestinum. वासन्तिक ।

३ T. Compositum, मिसरदेशजात ।

४ T. Tpelta फरासीय ।

५ T. Monococcum. (इस गेहूंका दाना अन्य गेहूंकी नाई दो भागमें बंटे नहीं हैं ।)

इङ्गलेण्डमें शरत् और वसन्त कालमें पूर्वोक्त प्रथम दो जातिके गेहूं उपजाये जाते हैं, किन्तु भारतवर्षमें समस्त प्रकारके गेहूं पैदा होते हैं । कार्त्तिक मासमें अथवा माघ मासके आरम्भमें जो गेहूं बोया जाता एवं वैशाख मासमें काट लिया जाता है । पर्वतके ऊपर १२०००से १५००० फीट ऊंची भूमि पर भी गेहूं जमता है ।

कमान वेबसाहबने हिमालय पर्वतके दक्षिणको ओर १२००० फुट ऊंची स्थान पर गेहूंकी उपजको देखा था। स्पिति उपत्यकाके लाड़ा और लदङ्ग नामक स्थानमें १३००० फीट ऊंची जगह पर एवं सिन्धुनदीके निकट वर्त्ती उपत्यकाके मध्य उगमी और चिमरा नामक स्थानमें ११०००से १२००० फीट ऊंची भूमि पर गेहूं उपजाया जाता है। युक्तप्रदेशमें एक तरहका सफेद गेहूं होता है जिसको 'दुग्ध गोधूम, कहते हैं। शतद्रु नदीके दोनों उपकूल पर एवं उनके किनारेकी जलसिक्त वालुकामय भूमि पर इस तरहके गेहूं उपजते देखे गये हैं। पञ्जाब प्रदेशके गेहूंमें बाल होते हैं और उसके आटेकी रोटी लाल और हल्दी रंगकी होती है। मुलतानके गेहूंमें बाल नहीं होते। अयोध्या प्रदेशमें श्वेत मोरिलवा, बालहीन, रामोदवा और लालिया ये चार प्रकारके गोधूम उपजते हैं। सम्बलपुर जिलेमें भी गेहूंकी खेती बहुत होती है। जब्बलपुर, नरसिंहपुर, होसेङ्गाबाद, मन्द्राज प्रदेश और ब्रह्मराज्यमें प्रचुर परिमाणमें गेहूंकी फसल होती है। बम्बई प्रदेशका गेहूं काठियावाड़ जिलेके गेहूंसे कुछ सफेद और भारी होता है, इसलिये उसमें सूजी और मैदा अधिक प्रस्तुत होता है।

परीक्षा कर देखा गया है कि भारतवर्षका गेहूं पृथ्वीके समस्त स्थानोंके गेहूंसे उत्कृष्ट है। इसी कारण भारतवर्षसे प्रतिवर्ष सात करोड़ रुपयेके गेहूं विलायत भेजे जाते हैं।

चीन देशमें भी गेहूंका प्रचुर व्यवहार देखा जाता है।

यूरोपीय चिकित्सकके मतसे इसका गुण—स्निग्ध और बलकारक है। रक्तपित्त रोगमें और दैहिक प्रदाहमें इसका प्रलेप विशेष स्निग्धकर है। विष खाने पर मैदा और जलके साथ पारा, ताम्र, दस्ता, रूपा, लौह और अयोडाइन मिला कर सेवन करनेसे विषका प्रतिकार होता है। क्षत स्थान पर मैदेकी पुलटिस लाभ दायक है।

वैद्यकशास्त्रके मतसे इसका गुण-स्निग्ध, मधुर, वात, पित्त और दाहनाशक, गुरुपाक, श्लेष्मा, मत्तता, मल, रुचि और वीर्यकारक। (राजनि०) वृंहण, जीवनका हितकारक शीतवीर्य, भग्नसन्धान और धैर्यकारी एवं सारक है। (राजवल्लभ) भावप्रकाशमें लिखा है कि गोधूम तीन प्रकारका होता है—महागोधूम, माधुली और नान्दीमुख। महागोधूम इस देशमें बड़ गोधूमा नामसे प्रसिद्ध है, यह पश्चिम देशसे लाया जाता है और माधुलीसे कुछ बड़ा रहता है। माधुली गोधूम मध्यदेश वा प्रयाग प्रदेशके पश्चिमसे यहां लाया जाता है। नान्दीमुख गोधूम बलहीन और दीर्घाकृतिके होते हैं।

महागोधूमका गुण—मधुर रस, शीतवीर्य, वातघ्न, पित्तनाशक, बलकारक, स्निग्ध, भग्नसन्धानकारक, धातु वृद्धिकर, रुचिकारक, वर्णप्रसादक, व्रणका हितकर, रुचिकर और शरीरका स्थिरतासम्पादक है। नया गेहूं खानेसे कफकी वृद्धि होती है, किन्तु पुराना होने पर उसमें कफवृद्धि नहीं होती। मधुली गोधूमका गुण-शीतवीर्य, स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर रस, लघुपाक, शुक्रवर्द्धक, शरीरका उपचयकारक और सुपथ्य है।

नान्दीमुख गोधूमका गुण मधुली गोधूमके सदृश। (भावप्रकाश पूर्वखण्ड १ भाग)

गोधूमक (सं० पु०) गोधूम इव कं शिरो यस्य, बहुव्री०। सर्पविशेष, गेहुंअन नामक सांप। (सुश्रुत)

गोधूमचूर्ण (सं० क्ली०) गोधूमस्य चूर्णं, ६-तत्। चूर्णीकृत गोधूम, मैदा, आटा।

गोधूमज (सं० पु०) तवक्षीर, पायस, तसमै, खीर।

गोधूमफल (सं० क्ली०) गोधूम, गेहूं।

गोधूममण्ड (सं० पु०-क्ली०) गोधूमकृत मण्ड, गेहूंका बना मण्ड।

गोधूमसम्भव (सं० क्ली०) सम्भवत्यस्मात् सं भू अपादाने अप् गोधूमः सम्भवो यस्य, बहुव्री०। मैदाकी बनी खड़ी लप्सी।

गोधूमसार (सं० पु०) गोधूमस्य सारः, ६-तत्। गोधूमका सारांश, गेहूंका निर्यास। प्रस्तुत प्रणाली यों है—गेहूंको अच्छी तरह साफ कर ऊखलमें चूर्ण करते हैं। सन्ध्या समयके पहले इस चूर्णको मट्टीकेपात्रमें रख कर जलसे भर देते हैं। दूसरे दिन सवेरे जलको फेंक कर उसे सुखा लेते, इसीको गोधूमसार कहते हैं।

गोधूमक्षीरिका (सं० स्त्री०) गेहूंकी खीर।

गोधूमाद्यघृत (सं० क्ली०) रसायनाधिकार। इसकी प्रस्तुत प्रणाली इस तरह है—घृत ४ शराव, दुग्ध १६ श०

गवर्मेण्टके अधीन आ रहा है। यहां एक एक राजाके अधीन बहुतसे परगने हैं।

यहां ज्वार, बाजरा, जौ, गेहूं, उर्द और मूंग बहुत उपजते हैं। जंगलमें शहद यथेष्ट पाया जाता है। यहांका बड़ाज नामक स्थान वाणिज्यके लिये प्रधान है। फैजाबाद, अकबरपुर, जमानिया प्रभृति स्थानमें अनेक तरहके कारबार हैं।

इस जिलेको जलवायु स्वास्थ्यकर है। पर्वतके निकट होनेके कारण गरमी और जाड़ा अधिक नहीं पड़ता। परन्तु तराई और जङ्गल अंशमें मलेरिया ज्वरका यथेष्ट प्रादुर्भाव है। गोरखपुर, रुद्रपुर, कशिया और बड़लगञ्जमें दातव्य औषधालय हैं। यहाँ ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ, कुर्मी, शेख, सैयद, मोगल और पठान रहते हैं। हिन्दू अधिवासियोंमें ब्राह्मण और कुर्मी जाति तथा मुसलमानोंमें शेखोंकी संख्या अधिक है।

यहां चीनी परिष्कार करनेका प्रधान व्यवसाय है तथा नीलका भी कारबार यहां अधिक होता है। यहांसे चावल, जौ, गेहूं और चीनीकी रफतनी दूर दूर देशोंमें होती है और दूसरे देशसे नमक, धातु, मट्टीका तेल इत्यादि आते हैं। घघरा नदी तथा B. N. R. द्वारा व्यापार किया जाता है। यहांकी सड़क अच्छी नहीं होनेके कारण व्यापारमें कुछ बाधा पहुंचती है। गोरखपुर शहरसे गाजीपुर और फयजाबाद तथा बरहजसे पटरौना तक जो सड़क गई है वही कुछ कुछ अच्छी है। और सब जगहकी सड़क वर्षाके दिनोंमें कीचड़से भर जाती हैं। यहां कई बार भयानक दुर्भिक्ष पड़ा है। औरङ्गजेबके समय तथा १८वीं शताब्दीमें ऐसा अकाल हुआ था कि जंगली हिंसकपशु मनुष्योंको पकड़ पकड़ खानेको ले जाते थे। अब गवर्मेण्टने दुर्भिक्षसे बचनेके लिये अच्छी व्यवस्था कर दी है।

पटरौना तहसील एक स्वतन्त्र उपविभाग हो गया है और यह इण्डियन-सिविल-सर्विसके मेम्बरोंके अधीन है। तथा हाता तहसील डेपुटी कमिश्नरको देख भालमें है। इसके अलावा यहाँ तीन जिला मुन्सिफ और एक सबजज हैं। इन्हींके हाथमें समस्त गोरखपुर तथा बास्तके राज्य कार्यका प्रबन्ध है। पहले यहां राजस्वविभागका प्रबन्ध अच्छा नहीं था, किन्तु अब उपजके अनुसार मालगुजारी ली जाती और प्रजा चैनसे रहती है। यहांकी राजस्व आय २५ लाख रुपये की है।

यह जिला शिक्षामें बहुत पीछे पड़ा हुआ है। अब गवर्मेण्टने विद्योन्नतिके लिए अधिक रुपये खर्च करके बहुत से स्कूल खोले। आजकल यहां ८० स्कूल गिने हैं जिनमें गवर्मेण्ट कुछ आर्थिक सहायता देती है और थोड़ेको सरकार स्वयं चलाती है। स्कूलके अतिरिक्त यहां अब कालिज भी संगठित हुए हैं। स्कूल विभागमें लगभग ८४००० रुपये खर्च होते हैं।

यहां १३ चिकित्सालय हैं, बहुतोंमें रोगी भी रखे जाते हैं।

३ उक्त जिलेको एक प्रधान तहसील। यह अक्षा० २६° २८´ से २७° ७´ उ० और ८३° १२´ से ८३° ३८´ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ६५ वर्गमील और लोकसंख्या लगभग ४८६०११ है। इसमें १०८० ग्राम और दो शहर लगते हैं। यह तहसील राप्ती आमी और रोहिणी नदियोंसे बंट गई है।

४ उक्त जिले और तहसीलका नगर और शहर। यह अक्षा० २६° ४५´ और देशा० ८३° २२´ पू०में बङ्गाल और उत्तर पश्चिम रेलवे किनारे राप्ती नदी पर पड़ता है। यह लगभग कलकत्तेसे रेलद्वारा ५०६ मील और बम्बईसे १०५६ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। कहा जाता है कि यह शहर १४०० ई०में सतासी परिवारको किसी अंशीसे स्थापित किया गया है। अकबरके समयमें यह अवध सूबाके सरकारका सदर था। १६१० ई०में हिन्दुओंने मुसलमानको भगा कर अपना अधिकार इस पर १६८० तक जमाया। अठारवीं शताब्दीमें यह अवधमें मिला दिया गया। यहां जिलेका सदर अदालत, विचारालय, कारागार, दातव्य औषधालय और म्युनिसपालिटी हैं।

गोरखमुंडी (हिं० स्त्री०) एक तरहको घास जिसकी पत्तियां लगभग एक अङ्गुल लम्बी होती हैं। इसमें गुलाबी रंगके पुष्प लगते जो रक्तशोधनके लिये बहुत उपकारी हैं।

गोरखर (फा० पु०) पश्चिमी भारत और मध्य एशियामें पाये

जानेवाला एक तरहका पशु जो गधेसे बड़ा और घोड़ेसे छोटा होता है। यह प्रायः तीन हाथ ऊंचा और पांच छः हाथ लम्बा होता है। इसका पेट श्वेत और शेष अङ्ग हिरनके रंगका होता है। यह द्रुतगामी एवं इसके कर्ण बड़े और दुम पर रोंए होते हैं। ये मैदानमें झुंडके झुंड रहते और हरी घास तथा पत्तियां खा कर जीवन निर्वाह करते हैं।

गोरखा (हिं० पु०) १ नेपालके अन्तर्गत एक प्रदेश। २ गोरख देशका रहनेवाला। गोर्खा देखो।

गोरखाली (हिं० पु०) नेपालके मध्य गोरखा नामक प्रदेश।

गोरङ्कु (सं० पु०-स्त्री०) गवा वाचारङ्कुरिव। १ एक तरहका जलपक्षी। २ लम्पक, जमीनदार। ३ वन्दी, कैदी।

गोरचकरा (देश०) एक तरहका जंगली पौधा जो मन जातिका होता और जिसके पत्ते घीकुआरकी तरह चिकने और लम्बे होते हैं। फिलहाल शोभाके लिये यह पौधा उद्यानमें लगाया जाता है। इसमें छोटे छोटे फल भी लगते हैं। यह दवाईमें बहुत उपयोगी है। इसका गुण कड़ुआ, गरम, भारी दस्तावर, और प्रमेह, कोढ़, त्रिदोष, रुधिरविकार तथा विषमज्वरनाशक है।

गोरज (सं० पु०) गौके खुरोंसे उड़ी हुई गर्द वा धूल।

गोरट (सं० पु०) गवि रहति रट-अच्। खदिर, खैर।

गोरटा (हिं० वि०) गोरे रंगवाला, गोरा।

गोरण (सं० क्ली०) गुर भावे ल्युट्। उत्तोलन, उद्यम।

गोरराटल—मन्द्राजके कर्णूल जिलेके अन्तर्गत और कर्णूल नगरसे ८३ कोस दक्षिणमें अवस्थित एक ग्राम। यहां बहुतसे प्राचीन मन्दिर और उनमें उत्कीर्ण शिलालिपि हैं।

गोरथ (सं० पु०) मगधदेशस्थित एक मनोरम पर्वत।

गोरथक (सं० पु०) गोयान, बैलकी गाड़ी।

गोरन (देश०) एक तरहका छोटा पेड़। इसकी लकड़ी लाल होती है। और किश्तियां बनाने और इमारतके काममें आती हैं। चमार इसके छिलकेसे चमड़ा सिझा करता है। यह वृक्ष सिंध, बंगालकी नदियों और समुद्रके किनारेकी भींगी जमीनमें अधिकतासे होता है।

गोरमा (सं० स्त्री०) तृणविशेष, एक तरहकी सुगन्धि घास।

गोरभस (सं० त्रि०) गोः पयस्तद्रभसं वेगो वीर्यं यस्य, बहुव्री०। वीर्यवान्, बलिष्ठ।

गोरया (देश०) अग्रहायण मासमें होनेवाला एक तरहका धान। इस धानका चावल बहुत दिन तक रख सकते हैं।

गोरल (देश०) एक तरहका जंगली बकरा।

गोरवा (देश०) एक तरहका बांस। इसकी छोटी छोटी टहनियोंसे हुक्केके नीचे बनाये जाते हैं।

गोरवाल—गुजरात प्रदेशका एक ब्राह्मण जाति। उदयपुरके राजाने इन ब्राह्मणोंको बुलाकर अपने यहां यज्ञ किया था। यज्ञको समाप्ति होने पर इन्हें राजाकी ओरसे बाईस गांव दान दक्षिणामें मिले थे जिनमेंसे गोल नामक ग्राम प्रसिद्ध था। उसी गोलके नामसे ये गोलवाल या गोरवाल ब्राह्मण कहलाने लगे हैं।

गोरस (सं० पु०) गवां रसः, ६-तत्। १ गोदुग्ध, गायका दूध। २ दधि, दही। ३ तक्र, मठा, छाछ। ४ वाक्यगत रस इंद्रियोंका सुख।

गोरसज (सं० क्ली०) गोरसात् जायते गोरस-जन-ड। १ तक्र, मठा, छाछ। (त्रि०) जो गोरससे तैयार हो।

गोरसर (देश०) बाँसके पंखोंकी डंटीमें बंधी हुई पतली कमाची।

गोरसा (हिं० पु०) गायके दूधसे पाला हुआ बच्चा।

गोरसी (हिं० स्त्री०) दूध गर्म करनेकी अंगीठी।

गोरस्थान (फा० पु०) कब्र, मुर्दा गाड़नेकी जगह।

गोरा (हिं० वि०) १ गौरवर्ण, श्वेत और स्वच्छ वर्णमाला। (देश०) २ नीलके कारखानेकी एक तरहकी कल। ३ लंबोदरा आकारका एक तरहका नीबू।

गोराई (हिं० स्त्री०) १ गोरापन। २ सुन्दरता, सौंदर्य।

गोराचन्द—एक मुसलमानधर्मावलम्बी फकीर। ये पीर-गोराचन्द नामसे मशहूर हैं। ऐसा प्रवाद है कि एक समय ये मक्का दर्शन कर सुन्दल नामक नौकरके साथ लौटे आ रहे थे। हतियागढ़ परगनेके निकट दो पिशाचने उन पर आक्रमण किया। बहु काल युद्धके बाद उनमेंसे एक मारा गया, किन्तु दूसरेने गोराचन्दको विशेष रूपसे चोट दी और उनके कंधेकी दो खण्ड कर दिये

रक्तके स्रोतमें गोराचन्द बहने लगे इन्होंने सुन्दलको पान ला कर क्षतस्थानको बांध देनेके लिए कहा, किन्तु पान कहीं भी पाया न गया। तब गोराचन्द पानके अन्वेषणमें बालान्दा परगनेको गये। वहां वे घोड़ेसे गिर मृतवत् हो गये। इस समय गोराचन्दने सुन्दलको माताके पास जा कर यह संवाद देनेके लिए कहा इस स्थानमें कालुघोषको कपिला नामकी एक गाय थी, वह गाय गुप्तभावसे जङ्गलमें आ गोराचन्दको दूध दे जाती थी। वही दूध पीकर गोराचन्द जीवन धारण करते थे। ग्वाला कालुघोषने देखा कि कपिला गाय अब उसे दूध नहीं देती, इसका क्या कारण है? अन्तमें धीरे धीरे उसने कपिलाके इस रहस्यको जान लिया। कालु कपिलाको मारनेके लिए दौड़ा। यह देख गोराचन्द कालुको शाप देनेके लिये उद्यत हुए। तब कालुने उनका पैर पकड़ कहा "प्रभो! आज्ञा कीजिए मैं और मेरे भाई मिल आपका सत्कार करें।" अन्तमें गोराचन्द कह गए थे "देखो! इस बालांदामें कोई भी पानकी खेती न करे, जो पान उपजायगा, वह सवंश नाश होगा।" यह कहते हुए वे परलोकको सिधारे कालुघोष और उसके भाईने गोराचन्दको गाड़ दिया तथा उनकी कब्रके ऊपर वे प्रतिदिन प्रकाश दिया करते थे। थोड़े दिनके बाद उस स्थान पर एक मस्जिद निर्मित हुई।

बालान्दाके अन्तर्गत हाढ़ोया नामक ग्राममें प्रतिवर्ष फाल्गुन मासको गोराचन्दके समानार्थ एक बड़ा मेला लगा करता है, इसमें हजारों मनुष्य जुटते हैं। कालुघोषके वंशधर आज भी गोराचन्दको कब्रके ऊपर फल और दूध उत्सर्ग करते हैं। तभीसे बालान्दामें कोई मनुष्य पानकी खेती नहीं करते हैं।*

गोराज (सं० पु०) गवां राजा, ६ तत्, समानान्त टच्। श्रेष्ठवृष, साँढ़

गोराटिका (सं० स्त्री०) गां वाचं रटति रट-ण्वुल्। शारिका पक्षी, मैना।

गोराटी (सं० स्त्री०) गां वाचं रटति रट-अण् ङीष्। शारिका पक्षी मैना।

* Ralph Smyth's Statistical and Geographical Report of the 24 Pergunnahs p. 83-84

गोराड़ (देश०) बालू मिश्रित मट्टी जिसमें कोदो बहुत उत्पन्न होता है। यह मट्टी गुजरातमें बहुत होती है।

गोरामूंग (हिं० पु०) एक प्रकारको जङ्गली मूंग जो दुर्भिक्षके समय दीन मनुष्य खाते हैं।

गोरिका (सं० स्त्री०) गोराटिका पृषोदरादित्वात् साधु। शारिका।

गोरिल्ला (अं० पु०) अफ्रिकामें पाया जानेवाला एक तरहका वनमानुष। यह काले वर्णका होता एवं इसके कान छोटे और हाथ बहुत बड़े होते हैं। यह बहुत बलिष्ठ पशु है, इसकी ऊंचाई प्रायः साढ़े पांच फुटकी होती है। यह वृक्ष पर झोपड़ा बना कर रहता है। इसका प्रधान भोजन फल है। इसके शरीरकी बनावट मनुष्यसे बहुत कुछ मिलती जुलती है।

गोरिबिन्दूर—महिसुरमें कोलार जिलेके अन्तर्गत एक तालुक। इसका भूपरिमाण १५३ वर्गमील है। यहांकी जमीन उर्वरा होनेके कारण धान, हरिद्रा (हल्दी), नारियल, सुपारी और ईख यथेष्ट होती हैं।

२ उक्त तालुकका प्रधान नगर। यह अक्षा० १३° ३७´ उ० और देशा० ७७° ३२´ पू० पू०में पिनाकिनी नदीके वाए तीर पर अवस्थित है। यह नगर बहुत प्राचीन है।

गोरी (हिं० स्त्री०) सुन्दर और गौर वर्णकी स्त्री, रूपवती स्त्री।

गोरीमर (सं० पु०) मालमा, उशवा।

गोरुकल्लु—मन्द्राजमें कर्णूल जिलेका एक विध्वस्त प्राचीन नगर। यह नन्द्यालसे सात मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। यहां केशव तथा वीरभद्रके ध्वंसावशिष्ट अति प्राचीन मन्दिर हैं।

गोरुची (सं० स्त्री०) गोरोचना देखो।

गोरुत (सं० क्ली०) गवां रुतं, ६-तत। १ गोरव, गौका शब्द। गोरुतं श्रुतिगोचरत्वेनास्त्यस्य गोरुत अर्शआदित्वादच्। २ दो कोस

गोरू (हिं० पु०) १ सींगवाला पशु, गाय, बैल, भैंस प्रभृति मवेशी। २ दो कोसका मान।

गोरूप (सं० क्ली०) गवां रूपं, ६-तत्। १ गौका रूप, गौकी आकृति। (पु०) २ शिव, महादेव। (भारत १३।१७।१४)

गोरोच (सं० क्लो०) गवा किरणेन गोचते रुच-अच्। हरिताल, हरताल।

गोरोचना (सं० स्त्री०) गोभ्यो जाता रोचनेव। पीले रंग-का एक तरहका सुगन्धि द्रव्य, गौके मस्तकस्थित शुष्क पित्त। इसका संस्कृत पर्याय—रुचि, शोभा, रुचिरा, शोभना, शुभा, गौरी, रोचनी, पिङ्गा, मङ्गल्या, शिवा, पीता, गौतमी, गव्या, चन्दनीया, काञ्चनी, मेध्या, मनोरमा, श्यामा, रामा, वन्द्या, रोचना है। इसका गुण—शीतल, तिक्त, वश्य, मङ्गल और कान्तिकारी, विष, अलक्ष्मी, ग्रह, उन्माद, गर्भस्राव और क्षतरक्तनिवारक है। (भाव प्रकाश) तन्त्रके मतसे गोरोचना द्वारा देवयन्त्र प्रस्तुत किया जा सकता है। पण्डितगण इससे देवताओंके कवच प्रभृति लिखा करते हैं।

गोर्खा—नेपाल राज्यके अन्तर्गत एक जिला। यह गण्डकी नदीके उत्तरपूर्वमें अवस्थित है। मर्सियांदि और त्रिशूल गङ्गा नदीके मध्यवर्त्ती समुदाय भूभाग इस जिलेका अन्तर्गत है। यहां लगभग दो हजार घर और राज-प्रासाद हैं। राजप्रासाद अत्यन्त भग्नावस्थामें पड़ा है।

गोर्खा—उक्त जिलेके रहनेवाले। ये गोर्खाली भी कह-लाते हैं। अभी नेपाल और उसकी तराईके रहनेवाले मनुष्य अपनेको गोर्खा कहा करते हैं। किन्तु जिनके पूर्व-पुरुष गोर्खा नामक जनपदमें वास कर स्वाधीन और प्रबल हो उठे थे, वे ही यथार्थ गोर्खा या गोर्खाली हैं। पृथ्वीनारायणके अभ्युदयमें उनके साथ ये भी नेपालके भिन्न भिन्न स्थानोंमें फैले हुये थे। नेपालमें गोर्खा राजाओं-का विवरण देखो। इनका कथन है कि एक समय गुरु गोरक्ष-नाथ नेपालको आये, जिस स्थानमें रह कर उन्होंने १२ वर्ष तक कठोर तपस्या की थी, वही स्थान उनके नामा-नुसार गोर्खा नामसे परिचित हुआ है। ये भी गोरक्ष-नाथको विशेष भक्ति श्रद्धा करते और शिवावतार गोरक्ष-के शिष्यके जैसे परिचय देते हुए "गोरखा" या गोर्खा नामसे अभिहित हैं।

गोर्खा कोई भिन्न जाति नहीं है। गोर्खाराज पृथ्वी-नारायणके साथ ब्राह्मण, क्षत्रिय, मगर, गुरुङ्ग, कामाई, धामाई प्रभृति नाना जातियोंने अस्त्रधारण किया था, आजकल वे ही गोर्खा नामसे परिचित हैं।

गाढ़ बलिष्ठ, साहसी, दृढ़काय, सत्यवादी और कष्ट-सहिष्णु होते हैं। पार्वतीय युद्धमें इनके समान योद्धा भारतमें और दूसरे नहीं हैं। इनके शरीरको गठन चीन या तातारीसी तथा आँख छोटी और नाक चिपटी होती है।

११ वीं शताब्दीमें मुसलमानके आक्रमणसे पीड़ित हो हिन्दूराजाओंने ससैन्य नेपालके पार्वतीय प्रदेशमें आ आत्मरक्षा की थी। किसी किसीका मत है कि उन्हीं हिन्दुओंके साथ यहांके मगर, गुरुङ्ग प्रभृति जातिको स्त्रियोंके संस्रवसे गोर्खाकी उत्पत्ति है। नेपालके गोर्खा नामक स्थानमें यही गोर्खा बहुत दिन तक निरापदसे शान्तिसुख भोग करते थे। उनके सर्दार नाममात्र नेपाल-राजाके अधीन थे। १७६८ ई०के कुछ पहले मुहम्मद तुगलक नेपाल जीतनेके लिये आगे बढ़े थे, किन्तु चीन सैन्य आ तुगलकको पराजय कर नेपालसे भगा दिया। इस समय भाटगांव, काठमांडू और ललितपत्तनके राजा-ओंमें शत्रुता थी। पृथ्वीनारायण उस समय गोर्खाओंके राजा थे। वे अपनेको उदयपुरके राणाके वंशधर बत-लाते थे। भाटगाँवके राजाने दूसरे राजाओंके विरुद्ध पृथ्वीनारायणका साहाय्य प्रार्थना की थी, किन्तु जब उन्होंने देखा कि पृथ्वीनारायणसे सहायता पाना तो दूर रहे, गोर्खाधीप ही उनके विपक्ष हो उठे हैं। तब उक्त तीन स्थानके राजा और उनके अधीनस्थ सामन्त सबके सब गोर्खाराज पृथ्वीनारायणके विपक्ष हो लड़ने लगे। किन्तु एक एक कर सब राजधानी गोर्खा सर्दारके हाथ आने लगी। अन्तमें एक राजा युद्धक्षेत्रमें मारे गये, दूसरे वन्दी हो कर कारागारमें मरे और शेष तीसरे राजा भाग कर वृटिश गवर्मेण्टके आश्रयमें आकर रहे। वृटिश गवर्मेण्टने उनकी सहायताके लिये सेना भेजी थी, किन्तु वे कुछ कर न सके। पृथ्वीनारायणकी मृत्युके बाद उन-के पौत्रके प्रतिनिधि गोर्खावीर बहादुर शाहने गोर्खासैन्य-के साहाय्यसे समस्त नेपाल और भोटके बहुत अंशों पर अधिकार जमा लिया।

अब गोर्खा सिकिम रा[illegible] लिये अग्रसर हुए। १८१४ ई०में वृटिश गवर्मेण्ट [illegible] लड़ाई छिड़ी। पहले गोर्खाने बहुतसी अंगरेजी [illegible] नष्ट कर दी।

दूसरे वर्ष सर डेविड अक्टरलोनीने वृटिश गौरवका बचानेके लिये प्रवल प्रतापसे गोर्खों पर आक्रमण किया, किन्तु वे भी कुछ विशेष हानि पहुंचा न सके। १८१६ ई०में वृटिश गवर्मेण्ट और नेपाल राजामें सन्धि हो गई, जिससे वृटिश गवर्मेण्टने कौशलक्रमसे गोर्खोंके कई एक स्थान ले लिये।

सन्धिके अनुसार नेपालकी राजधानी काठमाण्डूमें एक वृटिश रेसिडेण्ट रहने लगा। १८४०-४१ ई०में सिख युद्धके समय नेपालके गोर्खा भी अंगरेजके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेके लिये प्रस्तुत थे, किन्तु वृटिश रेसिडेण्ट सुविज्ञ ब्रायण हजसन साहबके कौशलसे कोई घटना न होने पायी थी। १८३३ ई०में हजसन साहबने गोर्खा सैन्यके युद्धनिपुणताका परिचय देते हुए वृटिश गवर्नमेण्टको एक पत्र लिखा तथा नेपालसे गोर्खा-सैन्य संग्रह कर वृटिश सैन्यमें नियुक्त करनेका अनुरोध किया था। वृटिश गवर्मेण्टने आदरपूर्वक इनके प्रस्तावका समर्थन किया। गोर्खा भारतवासियोंको "मधेशिया" समझ कर घृणा करते हैं। पहले वे वृटिशके अधीन नौकरी करना नहीं चाहते थे, परन्तु जो गोर्खा सैन्य नेपालराज-सरकारमें नियुक्त नहीं थे, वे ही हजसन साहबके बहकानेसे वृटिश राज्य आनेमें स्वीकृत हुए थे। धीरे धीरे इसी तरह प्रायः तीस हजार सैन्य वृटिश सेनामें भर्त्ती हुए। उस समय चतुर नेपाल राजाने छेड़ छाड़ की थी कि वृटिश गवर्मेण्ट नेपालसे किसीको भी ले जा नहीं सकती क्योंकि ऐसा होने पर नेपालराजका बल ह्रास होनेकी सम्भावना है। तभीसे वृटिश सरकार नेपालसे यथार्थ गोर्खा सेना संग्रह नहीं कर सकी, वृटिश अधिकारभुक्त नेपालकी तराईमें जो गोर्खा वास करते हैं, उन्हींमेंसे उपयुक्त मनुष्य ले कर वृटिश गवर्नमेण्टके गोर्खासैन्य-दल संगठित हुआ है। गोर्खा सैन्य अत्यन्त प्रभुभक्त, सत्यवादी और साहसी हैं। वृटिश सरकार गोर्खा सेनासे जितना उपकार पाती वह अकथनीय है। जङ्ग बहादुरने गोर्खा सैन्यकी सहायतासे सिपाही विद्रोहके समय वृटिश राजत्वकी रक्षा की थी। नेपाल राजाके अधीन भी प्रायः लाखसे अधिक गोर्खा सैन्य हैं।

गोर्छा—जातिविशेष। यह युक्तप्रदेशके खेरी जिलेमें रहते हैं। संख्या ८६३ से अधिक नहीं। कहते हैं, पहले वह कलहण क्षत्रिय थे, गोरखपुरसे खेरीमें जा करके रहने पर गोरखिया कहलाये। फिर गोरखिया शब्द बिगड़ करके गोर्छा बन गया। यह अपनेको चित्तोरसे आया हुआ बतलाते हैं। पहले छह भाई थे। जब किसी शत्रुने उन पर आक्रमण किया, सिर्फ दो भाई जा करके लड़े—चार भयभीत हो छिप करके बैठ रहे। विजयी होने पर दोनों वीर भाइयोंने अपने चार भीरु भ्राताओंको निकाल बाहर किया और उनसे अपना सब सम्बन्ध तोड़ लिया। इनकी वंशावली भी थी परन्तु जहन गोर्छोंकी संरक्षतामें आगसे जल करके भस्मीभूत हुई।

इनमें गोत्रको बहुत कम बतला सकते हैं विधवायें प्रायः अपने पतिके किसी सम्बन्धीको ले करके रहती हैं। यह आस्तिक हिन्दू है। किसी अपने लोगोंके दूसरोंके हाथकी कच्ची या पक्की रसोई नहीं खाते। कहते हैं, कभी वह जमीन्दार थे। आजकल गोर्छा किसानी और मजदूरी करते हैं।

गोर्द (क्ली०) गुरु ददन् निपातने साधु। पञ्चादयश। उण ४९८। १ मस्तिष्क, मगज़, मस्तिकस्थ घृत, मगजका घी।

गोलंबर (हिं० पु०) १ गुंबद, गुंबज। २ गोलाई। ३ उद्यानमें बना हुआ गोल चबूतरा। ४ कालिब।

गोल (सं० पु०) गुड़ अच् डस्य लः। १ वर्त्तुलाकार पदार्थ, जिसका घेरा वृत्ताकार हो, चक्रके आकारका हो। २ मदनवृक्ष, मैन फलका पेड़। ३ विधवाका जारज पुत्र। ४ मुर नामकी औषध। ५ भास्कराचार्यका बना हुआ गोलाध्याय नामक ग्रन्थ। ६ वृत्त, क्षेत्रविशेष। (क्ली०) ७ मण्डल, गोलाकार पिंड, वटक। ८ ग्रहयोग विशेष। प्रश्नकौमुदीके मतसे एक राशिमें छह ग्रहके रहनेसे गोलयोग हुआ करता है। ऐसे योगमें देवराज इन्द्र भी नाश हो सकते। मनुष्यगण राक्षस प्रकृतिके हो जाते, माता पुत्रके प्रति दया माया परित्याग करती, समस्त राजाओंका विनाश होता, वसुधामण्डल भीषण अनलमें ज्वलित हो जाता और नद नदी तड़ाग जलाशय सबके सब शुष्क पड़ जाते हैं। मयूरचित्रकके मतसे सात ग्रहोंके एक राशिमें आ जानेसे गोलयोग होता है। ऐसी

अवस्थामें दुर्भिक्ष, राष्ट्रपीड़ा और राजाओंका विनाश होता है। (ग्रह देखो।)

गोल—भारतवर्षके प्राचीन ज्योतिषियोंसे आविष्कृत और व्यवहृत एक प्रकारका यन्त्र। पाश्चात्य ज्योतिषियोंके व्यवहृत ग्लोब (Globe) यन्त्रका जैसा प्रयोजन और लक्षण है, गोलका प्रयोजन तथा लक्षण भी उसी तरह है। यह गोलयन्त्र काष्ठमय शलाका द्वारा निर्माण करना पड़ता है। प्रायः सभी प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थोंमें इसका प्रयोजन और प्रस्तुत करनेकी प्रणाली लिखी हुई है तथा मतामत भी देखा जाता है। सूर्यसिद्धान्त और सिद्धान्त-शिरोमणिके गोलाध्यायमें गोलका विषय जो कुछ लिखा है वही इस स्थानमें लिखा गया है।

सूर्यसिद्धान्तमें लिखा है कि ज्योतिषशास्त्रमें गोलके समस्त वर्णन रहने पर भी सिर्फ उसे पढ़ लेनेसे ही गोलकी प्रकृत अवस्था जानी नहीं जा सकती। विशेषतः हम लोगोंके अधोभाग या पार्श्वदेशमें हमलोगोंके सदृश मनुष्य वास करते हैं। बड़े बड़े पर्वत स्थिरभावसे विद्यमान हैं, नदियां बहती हैं, तथा उस स्थानवासियोंके मस्तक पर भी ग्रह एवं ज्योतिष्कमण्डल निरन्तर समान भावसे भ्रमण करते हैं, ये सब विषय प्रत्यक्ष नहीं होने पर धारण करना दुःसाध्य है।

ज्योतिःशास्त्रप्रतिपाद्य विषयोंको अच्छी तरह हृदयङ्गम करना ही पृथ्वीका कृत्रिम गोल या गोलयन्त्रका प्रधान उद्देश्य है। गोलयन्त्र काष्ठ द्वारा निर्माण करना पड़ता, इसकी परिधिके परिमाणका कोई स्थिर नियम नहीं है; इच्छानुसार छोटा या बड़ा किया जा सकता है। काष्ठ द्वारा बड़ा बैगनके जैसा गोल प्रस्तुत कर उसके ऊपर ज्योतिःशास्त्रवर्णित महादेश, देश, नगर, सागर, उपसागर, ह्रद (झील) और नदी उपयुक्त स्थानमें अङ्कित करें। इसे भूगोलक कहते हैं। इस गोलकके ठीक बीचो बीच एक छिद्र करना पड़ता है। उस छिद्र हो कर एक काष्ठकी शलाका प्रवेश कर देवें जिससे शलाकेके दोनों प्रान्तभाग गोल भेद कर बाहर निकल जाँय। लेकिन ख्याल रहे कि बहिर्गत दोनों प्रान्तभाग समान परिमाणके हों। गोलके मध्य छिद्रका आयतनकी अपेक्षा शलाका कुछ पतली करनी पड़ती है अर्थात् दण्डविद्ध गोलको इस तरह रखें, जिससे शलाका स्थिर रख गोलको घुमाने फिरानेमें किसी तरहकी बाधा न हो। यह दण्ड कृत्रिम भूगोलका मेरुदण्ड कहलाता है।

इसके ऊपर बहुतसे वृत्त या कक्षा बनाना पड़ता है। वृत्त या कक्षाको बांसकी शलाकासे प्रस्तुत करें भूगोलके दोनों पार्श्व जिधर दण्डके अग्रभाग निकले रहते, उधर समान अन्तरको एक एक वृत्त बना देवें। इन्हीं दोनों वृत्तको आधारकक्षा कहते हैं। खगोलबन्धनके लिये इसका प्रयोजन हुआ करता है। दोनों वृत्तके वहीं रहनेसे भूगोलकी चारों ओर खगोलबन्धन किया नहीं जा सकता। इसी तरह भूगोलका बन्धन कर उसके ऊपरमें खगोलका बन्धन किया जाता है। उक्त दोनों आधार कक्षाके मध्य एक और छोटा वृत्त बनावें। इसको विषुवद्वृत्त कहते हैं। इसी कक्षाको ही खगोलका मध्यवृत्त कल्पना करना पड़ता है। इसके बाद बराबर बराबर व्यासार्द्ध ले मेष, वृष, और मिथुन राशिके तीन वृत्त प्रस्तुत करें। इन तीनों वृत्तोंमें ३६० अङ्गुल परिमाणके समान भागपर अंश अङ्कित किये जाते हैं। इसका परिमाण विषुवत् कक्षाके परिमाणानुसार करना पड़ता है अर्थात् पहले जिन तीन वृत्तोंका उल्लेख किया गया है। उनमेंसे विषुवत् कक्षाका परिमाण आधारकक्षाके परिमाणके बराबर हों, अतएव मेषान्तवृत्त विषुवत् कक्षासे परिमाणमें छोटा, मेषान्तसे वृषान्त छोटा और वृषान्त कक्षासे मिथुनान्त कक्षा छोटा बनाना पड़ता है। तीनों वृत्तोंके बनाये जाने पर उन्हें दृष्टान्त गोल या कृत्रिम गोलके उत्तर भागमें आधार वृत्त पर यथाक्रमसे बांध करना चाहिये।

क्रान्तिवृत्तके विषुवत्प्रदेशसे विच्छिन्न प्रदेशका जितना अन्तर है, विषुवद्वृत्त और क्रान्तिवृत्तके उतना ही अन्तर पर इन तीनों वृत्तोंको बांधना चाहिए। इन तीनों वृत्तोंको क्रमानुसार मेषान्तवृत्त और मिथुनान्तवृत्त कहते हैं। पहले लिखे हुए नियमसे कर्कट सिंह और कन्याके तीन और वृत्त प्रस्तुत कर पूर्वोक्त तीन वृत्तके विपरीत भावसे रखें। इन्हें कर्कान्त, सिंहान्त और कन्यान्तवृत्त कहते। इसके बाद नियमानुसार तुला, वृश्चिक और धनु राशिके तीन वृत्त बना कर मेषादि वृत्त रखनेके अनुसार

विषुवत् वृत्तके दक्षिण भाग आधारवृत्तमें बांध दें। इन्हें तुलान्त वृश्चिकान्त और धनुरन्त-वृत्त कहते हैं। इसी नियमसे मकर, कुम्भ, और मीन राशिकी ओर तीन कक्षा बना कर तुला, वृश्चिक और धनुरन्त वृत्तके विपरीत भावसे बद्ध करना चाहिए।

अश्विनी प्रभृति सत्ताइस नक्षत्रविम्बके सत्ताइस कक्षा बना कर गणितशास्त्रमें दक्षिण और उत्तर गोलके जिन जिन स्थानोंमें जिस जिस नक्षत्रका अवस्थान निर्णीत है, उसी नक्षत्रविम्बकी कक्षा उसी स्थानमें आधारवृत्तसे बद्ध करें। इसके अलावे अभिजित्, सप्तर्षि, अगस्त्य, ब्रह्म, लुब्धक और अपांवत्सादि नक्षत्रविम्बकी कक्षा भी नियत स्थान पर खींची हुई रहे। विषुवत् कक्षाकी सब कक्षाके सदृश मध्यमें रख दूसरा वृत्त या कक्षा बनाना होता है

विषुवद्वृत्त ऊर्ध्व और अधस्तन आधार वृत्तमें दो जगह संलग्न होता है। उन दोनों सम्पातोंके ऊर्ध्व-सम्पातसे दक्षिणको ओर चौबीस अंशोंको दूरी पर आधार वृत्तके जिस स्थान पर मकरादिका अहोरात्रवृत्त लग्न होता है, उसे उत्तरायण सन्धिस्थान तथा अधस्तन सम्पात से उत्तर चौबीस अंशकी दूरी पर आधार वृत्तके जिस स्थान पर कर्कटादि अहोरात्रवृत्त लग्न होता, उसे दक्षिणायन सन्धिस्थान कहा करते हैं। इस प्रकार अयन और विषुवत्वृत्त स्थिर कर उसके बीचमें मेषादि स्थान स्थिर करें। ऐसा हो जानेसे एक तरहका गोलयन्त्र तैयार हो जाता है

वृक्ष रहित बड़े मैदानमें खड़ा रह कर चारो ओर देखनेसे ऐसा मालूम पड़ता है कि आकाश एक बड़ा कटाह (कटाई) के जैसा पृथ्वीकी चारो ओर समान भावमें संलग्न हो कर हमलोगोंकी दृष्टिका परिच्छेद कर रहा हो। जिस स्थानमें आकाश संलग्न हुआ है उस स्थान पर गोलाकार एक वृत्त कल्पना करनेसे वह क्षितिजवृत्त कहलायगा। (खगोल देखो) भूगोलका क्षितिज वृत्तके जैसा दृष्टान्त गोलमें भी एक स्थिर वृत्त बनाना पड़ता है, उसे दृष्टान्त गोलका क्षितिवृत्त कहते हैं। इसी तरह गोलयन्त्र बना कर उसको स्वयंवह अर्थात् मनुष्यकी सहायताके विना नाक्षत्रिक साठ दण्डमें इस पश्चिमकी ओरसे जिसमें एक बार घूम जाय, इसी तरह रखना चाहिए।

गोलका समस्त अवयवको वस्त्रसे ढांक उस वस्त्रके ऊपर पूर्व प्रदर्शितवृत्त अङ्कित करें, किन्तु पहले जिस क्षितिजवृत्तकी बात लिखी गई है, उसको बाहरमें रखें, उसको वस्त्रसे ढांक न दें। गोलके ऊपर क्षितिजवृत्तको इस तरह रखें कि वह सर्वदा स्थिर रहे। इसीका दूसरा नाम लोकालोक है।

प्राचीन आर्यशास्त्रकारोंका विश्वास था कि सब विषय पुस्तकोंमें लिखे रहनेसे गुरुका गौरव जाता रहेगा। क्योंकि सब कोई ग्रन्थ देख अभ्यास कर लेंगे, कोई भी गुरुके उपदेश ग्रहण करनेकी चेष्टा न करेगा। इसीलिये उन्होंने कठिन विषयोंको ग्रन्थमें नहीं लिखा है, वे इन्हें छिपा गये हैं। सूर्यसिद्धान्तमें किस तरह गोलक स्वयंवह किया जाता, उसके अस्पष्ट विवरणके बाद लिखा

> "गोप्यमेतत् प्रकाशोक्तं सर्वगम्यं भवेदिह।
> तस्माद् गुरूपदेशेन रचयेत् गोलमुत्तमम्॥"
>
> (सू॰ सि॰ ज्योतिषो॰ १७ श्लोक)

गोलको किस तरह स्वयंवह किया जाता है यह विषय गोपनीय है, इसी कारण यहां पर साफ साफ लिखा नहीं गया। स्पष्ट रूपसे लिख देने पर सब कोई जान जावेंगे और इसका गौरव नहीं रहेगा। इसलिये किस तरह गोल स्वयंवह किया जाता है, यह गुरुमुखसे सुनकर गोल प्रस्तुत कर लेवें।

भारतवासी प्राचीन आर्योंके ऐसे संस्कारसे ही भारतका शास्त्रगौरव धीरे-धीरे लुप्त हो गया है। उन्नतिकी चरम सीमा गणित शास्त्रके फललाभसे भारत-सन्तान वञ्चित हो गई है। यथार्थमें जिसका कारणसे हो गोल किस तरह स्वयंवह किया जा सकता, उसका स्पष्ट उपाय किसी प्राचीन शास्त्रमें साफ तौरसे लिखा नहीं हैं। सूर्यसिद्धान्तके अस्पष्ट वचनोंको ले टीकाकार रङ्गनाथने जिस तरह स्थिर किया है, वही इस स्थान पर लिखा हुआ है।

स्वयंवह करनेका उपाय—गोलयन्त्रको वस्त्राच्छन्न कर उसके आधारदण्डके दोनों प्रान्त दक्षिण और उत्तर-

को नलिकामें इस तरह रखें जिससे दण्डका अग्रभाग ध्रुवाभिमुखी हो। इसके बाद दण्डके आगे सरलपथमें पूर्वाभिमुखी एक जलप्रवाह ऐसा बनावें कि उसमें गोल के नीचेका भाग उसके पश्चात् भागमें आहत हो। आघात सबको देखनेमें न आवे, इसीलिये वस्त्रसे ढांक देनेके लिये ऊपर कहा गया है कोई कोई कहते हैं कि आकाशकी नाईं प्रस्तुत करना ही वस्त्राच्छादनका उद्देश्य है। वह वस्त्र जलसे भींगने न पावे, इसीलिये उसको चिकनी वस्तु द्वारा अर्थात् जिसके लेप देनेसे वस्त्र न तो जले और न भींगे ऐसे द्रव्योंसे लेपना चाहिए। गोलके चारों ओर खाईकी नाईं इस तरहकी दीवार बनी रहे जिससे क्षितिजवृतके सदृश उस खाईमें गोलका अधोभाग आच्छन्न रह कर दृष्टिगोचर न हो। आधार दण्डका दक्षिण भाग शिथिल करना चाहिए, नहीं तो गोल घूम नहीं सकेगा और पूर्व परिवा विभागके बाहर अदृश्य जल प्रवाह करना चाहिए।

स्वयंवह करनेका दूसरा उपाय। गोल छेद कर वहिर्गत आधारदण्डके दोनों प्रान्तमें इच्छानुसार दो या तीन जगह परिधिकी तरह नेमि (चारखी) बना कर ताड़के पत्तेसे अच्छी तरह आच्छादन करें और उसमें एक छिद्र भी रहे। इस छिद्र द्वारा परिधिका आधा भाग परिमित पारा और दूसरे अर्द्धपरिमित जल देकर पूर्ण कर दें। छिद्रको बन्द कर देना चाहिए। दण्डका अग्रभाग दोनों ओरकी नलीमें इस तरहसे रखें जिससे गोल शून्य भावसे रह सके। पारा और जलमें आकर्षणशक्ति है। दोनोंके आकर्षणसे दण्ड आपसे आप घूम जायगा और उसके आश्रित गोल भी भ्रमण करने लगा।

सिद्धान्त-शिरोमणिके मतसे गोल तीन प्रकारका है, खगोल, भूगोल और दृकगोल। इसका विशेष विवरण उन्हीं शब्दोंमें किया गया है। किस तरहसे गोल बांधा जाता है उसीका ब्योरा इस स्थानमें दिखलाया गया है। चिकनी, गोल तथा भागचिन्हयुक्त सोधी बाँसकी शलाकासे गोल प्रस्तुत करें। एक सुन्दरका शालवन काष्ठका डंटा तैयार कर डंटेके मध्यस्थानमें शिथिलभावसे भूगोल बांध दें। उसके बाहरमें यथाक्रम चन्द्र, बुध, गुरु, सूर्य, मङ्गल, वृहस्पति और शनिके ग्रहगोल और उपयुक्त स्थान पर भूगोल स्थापन करना पड़ता है। इसके बाहरको नलीमें खगोल और दृगगोल रखना चाहिए। इस गोलके यथा स्थान पर गणित-शास्त्रानुसार पूर्व-पश्चिमवृत्त दक्षिणोत्तरवृत्त और कोणवृत्तद्वय प्रभृति वृत्त या कक्षा खीचें।

पहले जिन चार वृत्तोंकी कथा लिखी गई है, उन्हींके नीचे क्षितिजवृत्त रखना चाहिए। पहले कहे हुए दक्षिणोत्तरवृत्तके मध्य उत्तर क्षितिजवृत्तके ऊपर एक ध्रुव चिन्ह और दक्षिण क्षितिजवृत्तके ऊपर एक दूसरा ध्रुव-चिन्ह अङ्कित कर दें। समवृत्त और क्षितिजवृत्तके दोनों स्थानमें सम्पात है। उसके पहलेको पूर्व सम्पात और दूसरेको पश्चिम सम्पात कहा जा सकता है। संपातसे ध्रुव-चिन्ह तक एक मण्डल करें। इसका नाम उन्मण्डल है। इसी मण्डल द्वारा दिन और रात्रिका क्षय और वृद्धि जानी जाती है। पूर्व और पश्चिम सम्पातमें संलग्न दक्षिणोत्तरवृत्तके स्वस्तिक स्थानसे दक्षिण तथा अध: स्वस्तिक स्थानसे उत्तरमें अक्षांशकी दूरी पर एक वृत्त खीचें। इसका नाम विषुवद्वृत्त है।

ऊर्द्ध और अधस्तन स्वस्तिक स्थानमें दो कील मजबूतीसे रख उन पर दृग्वलय बाधना पड़ता है। दृग्वल[illegible] पूर्वोक्त वृत्तोंसे छोटा करना होता है। जिससे [illegible]नमें उसको अच्छी तरह घुमाया जा सके। यदि ग्रहगो[illegible] एक रहे, तो एक दृङ्मण्डल बनानेसे ही काम चल सकता है। ग्रहलोक जिस स्थान पर रहेगा, इस मण्डलको घुमा कर उसके ऊपर ले जाना पड़ता है; ऐसा होनेसे दृगज्या और शङ्कु (कील) प्रभृति देखने आते हैं अथवा अलग अलग आठ दृङ्मण्डल बनावें। इसीका दूसरा नाम दृकक्षेप मण्डल है।

खगोलके ध्रुवचिन्ह स्थानमें दो नली बांध उसमें खगोलके बाहर तीन अङ्गुलकी दूरी पर दृग्गोल बनावें। खगोलवृत्त, भगणवृत्त, क्रान्ति और विमण्डल प्रभृति इस गोलमें निवद्ध रहेंगे। खगोलमें अवस्थित क्षितिज और दक्षिणोत्तरवृत्तकी नाईं दो आधारवृत्त मजबूतीसे ध्रुवदण्डमें बाँधकर उसके ऊपर समान मण्डलाकारका एक दूसरा वृत बनावें। इस वृत्तको बराबर बराबर साठ भागोंमें विभक्त कर चिन्हित करना पड़ता है। इसका नाम नाड़ीवृत्त है।

नाड़ी-वृत्तके बराबर एक दूसरा वृत्त खींच कर उसमें मेषादि द्वादश राशि अङ्कित करें अर्थात् बराबर बराबर बारह भागोंमें विभक्त करके चिह्नित करें। इसके नाम क्रान्तिवृत्त है। सूर्य इसी वृत्तमें भ्रमण करते हैं। रविसे आधी छायाके अन्तर पर पृथ्वीकी छाया है। इस वृत्तमें क्रान्तिपात मेषादिका विलोम क्रमसे घूमता है। ग्रहोंका विक्षेप पात भी इसीमें भ्रमण करता है इस वृत्तमें क्रान्तिपातादि स्थान अङ्कित करना चाहिए।

इस वृत्तमें एक क्रान्तिपात चिह्न कर उससे ६ नक्षत्रकी दूरी पर एक दूसरा चिह्न करें। यह चिह्न दो नाड़ीवृत्तके साथ योग कर पातचिह्नके आगे तीन नक्षत्रके अन्तर पर नाड़ीवृत्तसे २४ अंश उत्तरमें तथा दूसरे विभागमें तीन नक्षत्रके अन्तर पर २४ अंश दूर रहे। इसी तरह बांधना चाहिए। क्रान्तिवृत्तके जैसा एक दूसरा वृत्त खींच कर उसमें राशि अङ्क और मेषादिका क्षेपपातस्थान चिह्नित करें, इसका नाम विमण्डल है। क्रान्तिवृत्त और विमण्डलके दोनों क्षेपपातमें सम्पात कर उससे ६ नक्षत्रकी दूरी पर एक सम्पात करें। क्षेपपातके आगेसे तीन नक्षत्रके अन्तर पर क्रान्तिवृत्तके उत्तरस्फुट क्षेपभाग जितना होगा, उतनी ही दूरी पर तथा उसके पश्चाद् भागसे तीन नक्षत्रके अन्तर पर क्रान्तिका उतना ही भाग दक्षिणमें स्थिर कर विमण्डलको स्थापन करना चाहिये। इसी तरह चन्द्रादि ग्रहोंके छह विमण्डल करने होते हैं। चन्द्रप्रभृति ग्रहगण विमण्डलमें भ्रमण करते हैं।

क्रान्तिवृत्तके स्फुटग्रहस्थानके नाड़ीवृत्तसे वक्ररूपमें जितना अन्तर होता है, उसीको क्रान्ति कहते हैं। विमण्डलके ग्रहस्थानसे क्रान्तिवृत्तसे तिर्यक् रूपमें जितना अन्तर होगा, उसे विक्षेप और विमण्डलके ग्रहस्थानसे नाड़ीवृत्तके तिर्यक् अन्तरको स्फुटक्रान्ति कहते हैं।

विषुवद्वृत्त और क्रान्तिवृत्तके सम्पातको क्रान्तिपात कहते हैं। यह क्रान्तिपात एक स्थानमें स्थिर नहीं रहता, धीरे धीरे पीछेकी ओर हट जाता है, अर्थात् मेषादिके पृष्ठभागमें विषुवद्वृत्त और क्रान्तिवृत्त आपसमें मिल जाता है उसीका नाम क्रान्तिपात है।

इस क्रान्तिको स्थिर कर ग्रहका स्फुट करना होता है। क्रान्तिवृत्त और विमण्डलके सम्पातको क्षेपपात कहते हैं। ग्रहसाधन करनेमें इसकी भी आवश्यकता होती है।

भूगोलके मध्य ग्रहगोल बांधना पड़ता है। पूर्व नियमके अनुसार ग्रहगोलमें भी विषुवद्वृत्त और क्रान्तिवृत्त बांध दें। क्रान्तिवृत्तको कक्षामण्डल मान कर छेद्यकोक्त विधिके अनुसार प्रतिमण्डल बांधना होता है। प्रतिमण्डलमें गणितके अनुसार मेषादिका पातस्थान करें। एक दूसरा राशि अङ्क और क्रान्तिपातचिह्न अङ्कित करना चाहिए। इसको विमण्डल कहा जा सकता है। प्रतिमण्डल और विमण्डलके पातचिह्नमें एक सम्पात कर उसके आधेके अन्तर पर एक दूसरा सम्पात करें। पातके अगले और पिछले भागसे तीन नक्षत्र अन्तर पर प्रतिमण्डलके दक्षिण और उत्तरमें जितना अंश विक्षेप होगा, उतने अंशकी दूरी पर विमण्डल स्थापन करें। इस मण्डलमें मन्दस्फुट गतिके ग्रह भ्रमण करते हैं। मेषादिके अनुलोमसे मन्दस्फुट चिह्न करना पड़ता है। प्रतिमण्डलसे जितने दूर पर मन्दस्फुट हो, उस स्थान पर उतना ही विक्षेप हुआ करता है। ग्रह वृत्तके सम्पातस्थ होने पर विक्षेपका अभाव होता तथा तीन नक्षत्र दूरमें रहनेसे सर्वाधिक विक्षेप होता है। मध्यस्थित कालमें अनुपात अनुसार विक्षेप स्थिर करना चाहिए।

नाड़ी-वृत्तके उत्तर और दक्षिणमें इष्ट क्रान्ति जितनी होगी, उतनी ही दूरमें अहोरात्रवृत्त बन्धन करना है। इसको साठ बराबर बराबर भागोंमें विभक्त करें। इस मण्डलमें सूर्यकी दैनिक गति हुआ करती है।

भूगोलके जैसा ग्रहगोल भी ध्रुवदण्डसे बांधना पड़ता है, भूगोलके अपमण्डलके नीचे सूत बांधकर ग्रहकक्षाको उससे निबद्ध करें; इस प्रकार भूगोलको दण्डमें मजबूतीसे बांध कर दण्डकी दोनों ओर बंधी हुई दोनों नलियोंमें खगोल और दृग्गोल रख भूगोलका भ्रमण अवलोकन करें। विशेष विवरण खगोल और भूगोल शब्दमें लिखा गया है।

गोल—दाक्षिणात्यमें विजापुर जिलेके रहनेवाले ग्वालोंकी जाति। कहीं कहीं इन्हें गोल्ल या गोलेर कहा करते हैं। इनमें आड़वि, हनमु, [illegible], पा[illegible] और [illegible] प्रभृति

कई एक शाखायें हैं। एक शाखा दूसरी शाखासे पान भोजन और आदान प्रदान नहीं करती। कृष्णगोल किसी किसी स्थानमें यादव नामसे परिचित है। ये कनाड़ी भाषामें बोलते हैं, इससे अनुमान किया जाता है कि ये लोग निजाम राज्यसे इस प्रदेशमें आये हुए हैं।

कृष्णगोलमें कोई भी जनेऊ धारण नहीं करता है, इन्हीं लोगोंमेंसे एक स्वजाती गुरू होता जो 'उस्मोर' कहलाता है। वह गुरु विवाहके समय उपस्थित रहता है। इनका मृत शरीर जलाया जाता है।

मुद्देविहाल उपविभागके तालिकोट, नलतियाद और कोर नामक स्थानमें भिङ्गिगोल नामका एक दूसरी श्रेणीका वास है। ये देखनेमें 'इनम्'से मिलते जुलते हैं। ये साधारण गृहस्थ हैं। हनुमानके मन्दिरमें याजकता करनी ही इनका प्रधान कार्य है। इनके गुरुका नाम 'सोमेर' और सोमनाथ ही इन लोगोंका कुलदेवता है। ये मृत शरीरको जमीनमें गाड़ते हैं। इसके सिवा निजाम राज्यमें केङ्गुगे नामकी एक और शाखा है। सफेद भेड़ा या बकराका व्यवसाय ही इनकी उपजीविका है। ये लोग भी हनुमान और कृष्णकी पूजा करते तथा मृतदेह जमीनमें गाड़ रखते हैं। प्रवाद है कि जिस समय बादामी उपविभागमें मनुष्योंका वास नहीं था, उसी समय अदेवानी या अदोनी प्रदेशसे ये इस प्रदेशमें आ कर बसे हैं

आड़वि या तेलगू गोल रास्ते रास्ते औषध बेचा करते हैं। इनमें याधव, मोरि, पवार, शिन्दे, यादव और महाराष्ट्रीयोंकी पदवी देखी जाती हैं। एक ही पदवीके वर और कन्यामें विवाह नहीं चलता। ये तेलगू और मराठी भाषा बोलते हैं, कुछ कुछ हिन्दुस्तानी भाषा भी जानते हैं।

ये रविवार और मङ्गलवारको गृहदेवताकी पूजाके लिए स्नान किया करते हैं। जिसे गृहदेवता नहीं होता, वह मारुती मन्दिरमें जा पूजा करता है। विवाहके बाद ये तुलजा भवानीके सामने बकरा बलिदान देते हैं। ये मद्य, ताड़ी, गाँजा, भाँग, तम्बाकू और अफीम खाना बहुत पसन्द करते हैं।

इस जातिके मनुष्य मितव्ययी, अभिमानी, चतुर और अपरिष्कार होते हैं। जब ये निशा नहीं खाते तब ये कर्मठ और मितव्ययी होते हैं। कार्त्तिक मासके अन्तमें जब वर्षा नहीं रहती, तब ये प्रायः दो तीन महीनों तक वन वनमें औषधियां खोज कर संग्रह करते हैं।

स्त्रियां चटाई बुनतीं और खेतोंके समय पुरुषोंको मदद करती हैं।

ये बड़े धार्मिक होते। श्रावण मासमें प्रति मङ्गलवार और शनिवारको स्नान कर मारुतीकी पूजा किया करते हैं। व्यङ्कोव, तुलजाभवानी, मरगाइ, पारसगढ़के जल्लमा और मिराजके मीर साहब इनके पूज्य हैं। समाजमें किसी तरहकी घटना उपस्थित होने पर वृद्ध मनुष्यसे इसका निबटारा करा लेते हैं।

गोलक (सं० पु०) गुड़-ण्वुल् ड़स्य लः। १ मणिक, अलिञ्जर। २ गुड़। ३ गन्धरस ४ कलाय, मटर। गोल स्वार्थे कन्। ५ गोलाकृति पदार्थ। ६ गोलपिण्ड। ७ काल मुष्ककवृक्ष। ८ रक्त सुगन्ध वोल। ९ सुगन्ध रोहिषतृण। (क्ली०) १० गोलोकधाम। ११ आँखका डेला। १२ आंखकी पुतली। १३ मट्टीका बड़ा कुण्डा। १४ पुष्पोंका निकला हुआ सार, इत्र १५ गुम्बद। १६ रुपये रखनेकी थैली या सन्दुक। १७ रोजाना आमदनी रखनेकी थैली या सन्दुक। १८ मनुप्रोक्त विधवाके गर्भोत्पन्न जारज पुत्र। (मनु० ३।१५६) ये अपनेको गोवर्द्धन ब्राह्मण कह कर परिचय देते हैं। बम्बई प्रदेशके नासिक, पूना धारवार, बेलगांव, शोलापुर प्रभृति स्थानमें वास करते हैं। शोलापुरमें इस जातिके मुण्ड, पुण्ड और रण्ड गोलक, बेलगाम और धारावारमें कुण्डगोलक और रण्डगोलक एवं नासिक जिलामें इनकी कई एक शाखायें हैं। केशमुण्डनकारिणी विधवा पुत्रका नाम मुण्डगोलक, पति मृत्युके एक वर्षके मध्य विधवासे जो पुत्र उत्पन्न होता उसे पुण्डगोलक, विवाहित होनेके पहले ब्राह्मण कन्यासे दूसरे ब्राह्मण द्वारा जो पुत्र उत्पन्न होता उसे कुण्डगोलक एवं विधवा ब्राह्मणीके गर्भजात पुत्रका नाम रण्डगोलक है। इनके भारद्वाज, भार्गव, काश्यप, कौशिक, सांख्यायन, वशिष्ठ और वत्स प्रभृति गोत्र हैं। भिन्न शाखा और एक गोत्रमें इस लोगोंका विवाह नहीं होता है। ये समस्त अपनेको प्रकृत ब्राह्मण कह कर परिचय देते हैं, किन्तु

दाक्षिणात्यके उच्च श्रेणीके ब्राह्मण इन्हें शूद्र समझते हैं। इनका आहार, व्यवहार और साजसज्जा देशस्थ ब्राह्मण ब्राह्मणोंके जैसा है। देशस्थ ब्राह्मण देखो।

दूसरे ब्राह्मणोंकी जैसे ये भी उपनयनादि संस्कारके अधिकारी हैं, किन्तु किसी स्थानमें ब्राह्मण इन्हें वेदपाठ करने नहीं देते।

गोलकमल (हिं० पु०) चाँदीके पत्तर परकी नक्काशी ठीक करनेकी एक तरहकी छेनी।

गोलकली (हिं० स्त्री०) दक्षिण और मध्यभारतमें होनेवाला एक तरहका अंगूर।

गोलकुण्डा—(गोलगोण्डा) मन्द्राजमें विशाखपत्तन जिलेके अन्तर्गत गवर्मेण्टका एक खास तालुक। यह अक्षा० १७° २२´ तथा १८° ४ उ० और देशा० ८२° एवं ८२° ५´ पू०के मध्य अवस्थित हैं। इस तालुकमें ५१७ ग्राम लगते और १५७४३६ मनुष्योंके वास हैं। क्षेत्रफल प्राय: १२६३ वर्गमील है। यह तालुक पर्वतसे घिरा है और लगभग ७३८० वर्गमील गवर्मेण्टका वनविभाग है। पहले यह जयपुर राजाके करद राज्यकी भूसम्पत्ति थी। १८३५ ई०में रानीके हत्याकाण्डके बाद गवर्मेण्टने इसे दखल किया था और जमीन्दार भी कारागार भेजे गये थे। दूसरे वर्ष गवर्मेण्टने नीलाम पर इसे खरीद किया। १८४५ ई०में स्थानीय सर्दार विद्रोही हो तीन वर्ष तक गोलकुण्डाको अपने अधिकारमें रखा था। फिर भी १८५७।५८ ई०में उनके विरुद्ध सेना भेजी गई और जमींदारी गवर्मेण्टके तालुकभुक्त हुई। नर्मापत्तनमें इसकी सदर अदालत और पुलिस है। इस तालुकके एक दूसरे प्रधान नगरका नाम गोलकुण्डा है। यह अक्षा० १७° ४० ४०´ उ० और देशा० ८२° ३०´ ५०´ पू०में अवस्थित है।

गोलकुण्डा—निजाम राज्यके अन्तर्गत एक ध्वंसावशिष्ट नगर और दुर्ग। यह अक्षा० १७° २३´ उ० और देशा० ७८° २४´ पू०में हैदराबाद नगरसे ७ मील पश्चिममें अवस्थित है। यह दुर्ग वरङ्गलके राजासे निर्माण किया गया था। राजाने १३६४ ई०में इसे गुलवर्गके मुहम्मद शाह बाहमनी पर सौंप दिया। कुछ काल तक यह मुहम्मद नगर नामसे प्रसिद्ध था। १५१२ ई०में यह बाहमनी राजासे कुतबशाहीके हाथ चला गया। कई वर्षों तक उनकी राजधानी यहीं रही। बाहमणी वंशके अधःपतनके बाद गोलकुण्डा दक्षिणमें एक वृहत् समृद्धिशाली राज्यमें परिणत हुआ था। १६८६ ई०में औरङ्गजेबने इसे अधिकार कर अपने राज्यमें मिला लिया था। ग्रेणाइट पर्वतके शिखर पर गोलकुण्डा दुर्ग स्थापित है। यह शत्रुसे दुर्भेद्य और पूर्ण संस्कृत है। इस दुर्गसे ६०० गजकी दूरी पर प्राचीन राजाओंकी बनाई हुई बहुतसी ऊंची ऊंची मस्जिद हैं। समय पाकर इनके बहुत अंश टूट फूट गये हैं। दुर्ग चारों ओर कंगुरेदार पत्थरकी दीवारोंसे घिरा है। इसमें आठ दरवाजे लगते हैं जिनमें आजकल केवल चारही काममें लाये जाते हैं। इसके चारों ओर पानीसे भरा हुआ खंदक है। दुर्गसे आध मील दक्षिणमें कुतब शाही राजाओंके समाधि-मन्दिर हैं। इनके बनानेमें बहुत रुपये खर्च हुए थे और उस समयकी चमक दमक अपूर्व थी। किन्तु औरङ्गजेबकी चढ़ाईके समय उनका अधिकांश तहस नहस हो गया। दुर्गके दक्षिणमें मुसी नामकी नदी प्रवाहित है। यहां आजकल तोपखाना है और रक्षाके लिये अरबी सेना रखी गई है। यह दुर्ग अभी निजाम राजके कोषागार और राजकारागार रूपमें व्यवहृत है।

गोलक्षण (सं० क्ली०) गोर्लक्षणं, ६-तत्। गौका शुभाशुभ सूचक चिन्ह विशेष। गो देखो।

गोलगप्पा (हिं० पु०) एक तरहका खानेका पदार्थ जिसे खटाईके रसमें डुबा कर खाते हैं।

गोलत्तिका (सं० स्त्री०) गवि भूमौ लत्तिकेव। वनचर स्त्रीजातीय पशुविशेष, एक तरहका जंगली मादिन पशु।

गोलदार (फा० पु०) दुकानदार, क्रय और विक्रय करनेवाला।

गोलदारी (फा० पु०) गोलदारका कार्य्य।

गोलन्दाज (फा० पु०) तोपमें गोला रख कर चलानेवाला।

गोलन्दाजी (फा० पु०) गोला चलानेका काम या विद्या।

गोलपंजा (हिं० पु०) मूंडा जूता।

गोलपत्ता (हिं० पु०) सुंदरबनमें पाये जानेवाला गुल्ला नामक ताड़।

गोलफल (सं० पु०) मदनवृक्ष, मैनाका पेड़।

गोलफल (हिं० पु०) गुलगा नामक ताड़का फल।

गोलवत् (सं० क्लो०) प्रियङ्गु, पुष्प फुलप्रियङ्गु।

गोलमाल (हिं० पु०) गड़बड़, अव्यवस्था।

गोलमिर्च—१ स्वनाम प्रसिद्ध वृक्षविशेष। २ उसी वृक्षका फल, काली मिर्च।

गोलमुंहाँ (हिं० पु०) वर्तन गहरा करनेका कसेरोंको एक हथौड़ी।

गोलमंथी (हिं० स्त्री०) उत्तरी भारत, कमाऊं, बरमा, अफ्रिका और अमेरिकामें होनेवाला मोथेकी जातिका एक पेड़। इसके डंठलोंसे चटाइयाँ बनती हैं।

गोलयन्त्र (सं० क्लो०) यन्त्रविशेष। गोल देखो।

गोलयोग (सं० पु०) ग्रहयोगविशेष। गोल देखो।

गोलर (देश०) कसेरू।

गोलरा (हिं० पु०) हिमालय पर्वत पर होनेवाला एक तरहका बहुत दीर्घ एवं सुन्दरवृक्ष। इसकी छाल चिकनी और श्वेत एवं शख्त होती है। इसके पत्ते चमड़े सिझानेके काम आते हैं।

गोललम्ब (हिं० पु०) जहाजके शीर्ष परको गोल लकड़ी जिसपरसे पालकी रस्सियां खींची जाती है।

गोलवण (सं० क्लो०) गवेदेयं परिमितं लवणं। गौको जिस परिमाणसे लवण देनेका विधान है उतना ही परिमाणका लवण।

गोलविद्या (सं० स्त्री०) पृथ्वीको गोलाई, आकार विस्तार, चाल ऋतु परिवर्तन आदि बातें जाननेका ज्योतिषशास्त्रका एक अङ्ग।

गोला (हिं० पु०) १ किसी पदार्थका वर्तु लाकार पिंड। २ युद्धमें तोपोंके सहायतासे शत्रुओं पर फेंकनेका लोहेका गोल पिण्ड। ३ एक तरहका रोग, वायगोला। ४ दीवारके ऊपरकी लकीर जो शोभाके लिये बनाई जाती है। ६ भीतरसे खोखला किया हुवा बेलका फल। ७ पहाड़ी बांधनेका मिट्टी या काष्ठका बना हुआ गोलाकार पिण्ड। ८ जङ्गली कबूतर। ९ नारियल गरीका गोला १० गोदाम, जहां एक जातिके बहुत अनाज रखे जाते हैं। ११ घासका गट्ठर। १२ रस्सी, सूत, सूत आदिकी लपेटी हुई पिंडी। १३ एक तरहका ठोस जङ्गली बाँस जो छड़ी या लाठी बनानेके काममें आता है। (सं० क्लो०) १४ गोदावरी नदी। १५ सखी, सहेली। १६ पलाञ्जन। १७ मणिक। १८ मण्डल। १९ लड़कोंके खेलनेकी काष्ठादि निर्मित छोटी गोली। २० दुर्गा। २१ मनःशिला।

गोला—युक्तप्रदेशमें गोरखपुर जिलेके अन्तर्गत बांसगांव तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २६ २१ उ० और देशा० ८३ २१ पू०में घर्घरा नदी किनारे अवस्थित है, लोकसंख्या लगभग ४९४४ है। उक्त जिलेके जितने शहर दक्षिणमें हैं सभोसे गोला प्रसिद्ध है। शहरके आस पास आलूका व्यवसाय अधिक होता है। यहांकी आय १२०० रु० है। यहां बालक तथा बालिकाओंके शिक्षालय हैं।

२ युक्तप्रदेशके खेरी जिलान्तर्गत मुहमदी तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २८ ५ उ० और देशा० ८० २८ पू०में लखनऊ-बरेली-स्टेट-रेलवे किनारे अवस्थित है। यहांकी जन-संख्या लगभग ४९१३ है।

इसके पास ही अर्द्धचन्द्राकृति पहाड़ है जो शाल वृक्षसे परिपूर्ण है। इसके दक्षिण एक ह्रद है। यहाँ मठधारी गोसाइयोंके दल और उनमेंसे प्रधान प्रधान मनुष्योंके समाधिमन्दिर देखे जाते हैं। शहरके दक्षिणको ओर प्रसिद्ध गोरखनाथका मन्दिर है जो चारों ओरसे छोटे छोटे मन्दिरोंसे घिरा है। अवधके समस्त मन्दिरोंसे यह मन्दिर प्रसिद्ध समझा जाता है। प्रवाद है कि यह मन्दिर राजा रावणसे स्थापित किया गया है। औरङ्गजेबने एकबार इस मन्दिरको नष्ट करनेकी चेष्टा की, किन्तु मन्दिरसे अग्निकी ज्वाला निकली और उन्हें गोरखनाथ देवतासे क्षमा मांगनी पड़ी थी। यहां चीनी और अनाजका विस्तृत कारबार हैं। फाल्गुन और चैत्र मासमें गोरखनाथकी पूजा और उत्सवके लिए दो बार मेला लगता है, जिसमें लाखसे अधिक मनुष्य एकत्र होते हैं। यहां चिकित्सालय और एक विद्यालय है।

गोला—राजपूतानेमें रहनेवाली एक जाति। ये राजपूत जातिके हैं। जिस तरह मुसलमानोंमें गुलाम होता है, उसी तरह राजपूतोंमें गोला होते हैं। इनके नामके आगे क्षत्रिय चिह्न राना शब्द सदा प्रयोग किया जाता है। इनके कई भेद हैं—राठोड़, चौहान, बगेल, पवार, कछवाहा, सोलङ्को, गहलोत, सीसोदिया, गोड़, गोयल, टांक भाटी, तंवर और बड़ गूजर। प्रवाद है कि परशुराम